

उपनिषन्नामादिसूची ।

उपनिषन्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• १ अक्षमालोपनिषत्	अ. मा.	वाक्यात्मकः मंत्रात्मकश्च		
• २ अक्षुपनिषत्	अक्षु.	*वाक्यात्मकः *पद्यात्मकश्च		
• ३ अथर्वशिसोपनिषत्	अ. शिसो., अ. शि.	वाक्यात्मकः		
• ४ अथर्ववेदसंहिता	अथर्व., अथर्व. सं.	कांडात्मकः		
• ४ अथर्वशिरउपनिषत् (शिवोप. रुद्रोप.)	अ. शिरः.	खंडात्मकः	वाक्यात्मकः मंत्रात्मकश्च	
• ५ अद्वयतारकोपनिषत्	अद्वयता., अ. ता.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ६ अद्वैतप्रकरणम् (मांडू.)	अद्वैत.	पद्यात्मकः		
• ७ अद्वैतोपनिषत्	अद्वैतो.	वाक्यात्मकः		
• ८ अद्वैतभावोपनिषत्	अद्वैत. भा.	वाक्यात्मकः		
• ९ अध्यात्मोपनिषत्	अध्यात्मो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• १० अनुभवसारोपनिषत्	अनु. सा.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ११ अन्नपूर्णोपनिषत्	अ. पू.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १२ अमनस्कोपनिषत्	अमन.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १३ अमृतनादोपनिषत्	अमृतना., अ. नादो.	पद्यात्मकः		
• १४ अरुणोपनिषत्	अरुणो.	मंत्रात्मकः		
• १५ अलातशान्तिप्र.	अ. शां.	पद्यात्मकः		
(माण्डूक्योपनिषत्कारिकाः)				
• १६-१ अवधूतोपनिषत्	१ अवधू.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• १७-२ अवधूतोपनिषत्	२ अवधू.	पद्यात्मकः		

* गद्यं पद्यमिति प्राहुर्वाङ्मयं द्विविधं बुधैः । वर्णमात्रप्रभेदेन पद्यं बहुविधं स्मृतम् ॥ पद्यं चतु-
ष्पदी, तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा । वृत्तमक्षरसङ्ख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत् ॥ वाक्यं स्याद्योग्यता-
काङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः । वाक्योच्चयो महावाक्यमित्थं वाक्यं द्विधा मतम् ॥ स्वार्थबोधसमाप्तानां
मङ्गाङ्गित्वव्यपेक्षया । वाक्यानामेकवाक्यत्वं पुनः सम्भूय जायते ॥ ॥ बहिपुराणे— प्राप्यते ज्ञानकथनं
परलोकसुभाषितम् । स्वर्गापवर्गसिद्धयर्थं भाषितं यत्सुशोभनम् ॥ वाक्यं मुनिवरैः शान्तैस्ताद्विज्ञेयं
सुभाषितम् ॥ रागद्वेषानृतक्रोधकामतृष्णानुसारि यत् ॥ वाक्यं निरयहेतुत्वात्तदभाषितमुच्यते ॥ संस्कृते-
नापि किं तेन मृदुना ललितेन वा ॥ अविद्यारागवाक्येन संसारकेशहेतुना ॥ यच्छ्रुत्वा जायते पुण्यं
रागादीनां च संक्षयः । निरुद्धमपि तद्वाक्यं विज्ञेयमतिशोभनम् ॥ [इति श. चिं. कोशः]

उपनिषद्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• १८ अव्यक्तोपनिषत्	अव्यक्ता.	वाक्यात्मकः		
१९ आगमप्रकरणम्	आगम.	पद्यात्मकः		
(मांडूक्योपनिषत्कारिकाः)				
• २० आचमनोपनिषत्	आचम.	वाक्यात्मकः		
(आचमनीयो.)				
• २१ आत्मपूजोपनिषत्	आ. पू.	वाक्यात्मकः		
• २२ आत्मप्रबोधोपनिषत्	आत्मप्र.	वाक्यात्मकः		
(आत्मबोधो.)		पद्यात्मकश्च		
• २३-१ आत्मोपनिषत्	१ आत्मोप.	वाक्यात्मकः		
२४-२ " "	२ आत्मो.	पद्यात्मकः		
• २५ आथर्वणद्वितीयोपनिषत्	आथ. द्वि.	वाक्यात्मकः		
	आथर्व. द्वि.	मंत्रात्मकश्च		
• आपस्तम्बश्रौतसूत्रम्	आप. श्रौ.सू.			
२६ आयुर्वेदोपनिषत्	आयुर्वे.	पद्यात्मकः		
• २७ आरुणिकोपनिषत्	आरुणि., आरु.	वाक्यात्मकः		
(आरुण्येयुप.)				
• २८ आर्षेयोपनिषत्	आर्षे., आर्षेयो.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• २९ आश्रमोपनिषत्	आश्रमो.	वाक्यात्मकः		
• ३० इतिहासोपनिषत्	इतिहा.	वाक्यात्मकः		
		पद्यात्मकश्च		
• ३१ ईशावास्योपनिषत्	ईशावा., ईशा.	मंत्रात्मकः		
३२ उपनिषत्स्तुतिः	[शिवरहस्यान्तर्गताऽध्याप्यलब्धा.		अध्या. ५४]	
• ३३ ऊर्ध्वपुण्ड्रोपनिषत्	ऊर्ध्वपु.	वाक्यात्मकः		
	ऊर्ध्वपुं, ऊ.पुं.	पद्यात्मकश्च		
• ऋग्वेदसंहिता	ऋक्सं.,	अष्टकात्मकः	अध्यायात्मकः	वर्गात्मकः
अष्टकात्मिका	ऋ. अ.	"	"	"
मंडलात्मिका	ऋ.मं.	मण्डलात्मकश्च	सूक्तात्मकः	मंत्रात्मकः
• ऋग्वेदखिल.	ऋ.खि.श्री.सू.	मंत्रात्मकः		
• ३४ एकाक्षरोपनिषत्	एकाक्ष.ए.उ.	पद्यात्मकः		
• ३५-१ ऐतरेयोपनिषत्	१ ऐत.	अध्यायात्मकः	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः
३६-२ " (आत्मषट्को.)	२ ऐत.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
३७-३ " "	३ ऐत.	अध्यायात्मकः	खंडात्मकः	वाक्यात्मकः
• ३८ कठरुद्रोपनिषत्	कठरु.	वाक्यात्मकः		
(कण्ठो.)		पद्यात्मकश्च		

उपनिषद्नामानि	संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• ३९ कठोपनिषत्	कठो.	वाक्यात्मकः	पद्यात्मकः	
• ४० कठ्युत्थुपनिषत्	कठश्च.	वाक्यात्मकः		
• ४१ कलिसन्तरणोपनिषत् (हरिनामोप.)	कलिसं.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ४२ कात्यायनोपनिषत्	कात्याय.	वाक्यात्मकः		
• ४३ कामराजकीलितो. द्वारोपनिषत्	कामरा. कामराज.	वाक्यात्मकः		
• ४४ कालामिरुद्रोपनिषत्	कालामि., का.रु.	वाक्यात्मकः		
• ४५ कालिकोपनिषत्	कालिको.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ४६ कालीमेघादीक्षितोप.	का.मे.दी., का.मे.	वाक्यात्मकः		
• ४७ कुण्डिकोपनिषत्	कुण्डि. कुंडि. कुंडिको.	पद्यात्मकः वाक्यात्मकश्च		
• ४८ कृष्णोपनिषत्	कृष्णो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ४९ केनोपनिषत्	केनो.	खण्डात्मकः	पद्यात्मकः वाक्यात्मकश्च	
• ५० कैवल्योपनिषत्	कैव.	खण्डात्मकः	पद्यात्मकः	
• ५१ कौलोपनिषत्	कौलो., कौलोप.	वाक्यात्मकः		
• ५२ कौषीतकिब्राह्मणोप.	कौ.उ., कौ.त.	अध्यायात्मकः	वाक्यात्मकः	
• ५३ क्षुरिकोपनिषत्	क्षुरिको.	पद्यात्मकः		
• ५४ गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत्	गणप.	वाक्यात्मकः		
• ५५ गणेशपूर्वतापिन्युपनिष. (वरदपूर्वतापिन्यु.)	ग. पू.	उपनिषदात्मकः	वाक्यात्मकः	
• ५६ गणेशोत्तरतापिन्यु. (वरदोत्तरतापिन्यु.)	ग. शो.	उपनिषदात्मकः	वाक्यात्मकः	
• ५७ गर्भोपनिषत्	गर्भो.	वाक्यात्मकः		
• ५८ गान्धर्वोपनिषत्	गान्धर्वो.	वाक्यात्मकः		
• ५९ गायत्र्युपनिषत्	गायत्र्यु.	वाक्यात्मकः		
• ६० गायत्रीरहस्योपनिषत्	गायत्रीर.	वाक्यात्मकः		
• ६१ गारुडोपनिषत्	गारुडो.	पद्यात्मकः मंत्रात्मकश्च		
• ६२ गुह्यकाव्युपनिषत्	गुह्यका.	पद्यात्मकः		

उपनिषद्नामानि

संकेतनामानि

प्रथमांकः

द्वितीयांकः

तृतीयांकः

१३ गुह्योदान्यासोपनिषत्	गुह्यो., गु. सं.	वाक्यात्मकः		
१४ गोपाठपूर्वतापिन्युपनिषत्	गो. पृ.	गद्यपद्यात्मकः		
१५ गोपालोत्तरतापिन्यु.	गोपालो.	खण्डात्मकः	गद्यपद्यात्मकः	
१६ गोपीचन्दनोपनिषत्	गोपीचं.	वाक्यात्मकः		
		पद्यात्मकश्च		
१७ चतुर्वेदोपनिषत्	चतुर्वे.	वाक्यात्मकः		
		पद्यात्मकश्च		
१८ चाक्षुषोपनिषत्	चाक्षुषो.	मंत्रात्मकः		
(चक्षुरूप., चक्षुरोगोप., नेत्रोपनिषदिति नामान्तराणि.)				
१९ चित्युपनि.	चित्यु.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
७० छागलेयोपनि.	छाग., छागले.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
७१ छान्दोग्योपनिषत्	छांदो., छान्दो., छां. उ., छां.	अध्यायात्मकः	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः
७२ जाबालदर्शनोपनिषत्	जा. द.	खण्डात्मकः	पद्यात्मकः	
७३ जाबालोपनिषत्	जाबालो. जाबाला.,	वाक्यात्मकः		
७४ जाबास्युपनिषत्	जाबास्यु.	वाक्यात्मकः		
७५ तारसारोपनिषत्	तारसा.	गद्यपद्यात्मकः		
		मंत्रात्मकश्च		
७६ तारोपनिषत्	तारोप.	वाक्यात्मकः		
७७ तुरीयातीतोपनिषत्	तुरीया.	वाक्यात्मकः		
७८ तुरीयोपनिषत्	तुरीयो.	वाक्यात्मकः		
७९ तुलस्युपनिषत्	तुलस्यु.	गद्यपद्यात्मकश्च		
० तैत्तिरीयमारण्यकं	तै. आ.	मंत्रात्मकः		
८० तेजोविन्दूपनिषत्	ते. विं.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
० तैत्तिरीयसंहिता	तै. सं.			
८१ तैत्तिरीयोपनिषत्	तैत्ति.	वाक्यात्मकः	अनुवाकात्मकः	वाक्यात्मकः
			मंत्रात्मकश्च	
८२ त्रिपाद्विभूतिमहा- नारायणोपनिषत्	त्रि. म. विं., त्रि. म.	अध्यायात्मकः	वाक्यात्मकः	
८३ त्रिपुरातापिन्युपनि.	त्रि. ता.	उपनिषदात्मकः	मंत्रात्मकः	
			वाक्यात्मकश्च	
८४ त्रिपुरोपनिषत्	त्रिपुरो.	मंत्रात्मकः		

उपनिषद्नामानि	संकेतनामानि	प्रयत्नाः	द्वितीयकः	तृतीयकः
८९ त्रिपुरामहोपनिषत्	त्रि.म., त्रि.महो.	मंत्रात्मकः		
• ८९ त्रिष्टिसिन्धोपनिषत्	त्रि. म.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	पद्यात्मकश्च
८७ त्रिसुपर्णोपनिषत्	त्रिसुप.	मंत्रात्मकः		
• ८८ दक्षिणामूर्त्युपनिषत्	द. मृ.	वाक्यात्मकः		
• ८९ दत्तात्रेयोपनिषत्	दत्तात्रे.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
९० दत्तोपनिषत्	(अशुद्धमजुषा)			
९१ दुर्वासोपनिषत्	दुर्वासो.	पद्यात्मकः		
• ९२ देव्युपनिषत्	देव्यु.	मंत्रात्मकः		
		पद्यात्मकश्च		
९३ २ ,, [शिवरहस्यान्तर्गताऽप्यद्याप्यलब्धा. अ. ९९]				
• ९४ द्वयोपनिषत्	द्वयो.	वाक्यात्मकः		
		पद्यात्मकश्च		
• ९५ ध्यानविन्दूपनिषत्	ध्या. वि.	पद्यात्मकः		
• ९६ नादविन्दूपनिषत्	ना. वि.	पद्यात्मकः		
• ९७ नारदपरिव्राजकोपनिषत्	ना. प.	उपदेशात्मकः	वाक्यात्मकः	पद्यात्मकश्च
• ९८ नारदोपनिषत्	नारदो.	वाक्यात्मकः		
• ९९ नारायणपूर्वतापिन्यु.	ना. पू. ता.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १०० नारायणोत्तरतापिन्यु.	ना. उ. ता.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १०१ नारायणोपनिषत्	नारा.	वाक्यात्मकः		
(नारायणाथर्वशीर्षोप.)				
• १०२ निराळम्बोपनिषत्	निरा., निरा.उ.	वाक्यात्मकः		
	निरा. लं.			
• १०३ निरुक्तोपनिषत्	निरुक्तो.	अध्यायात्मकः	वाक्यात्मकः	पद्यात्मकश्च
• १०४ निर्वाणोपनिषत्	निर्वाणो.	वाक्यात्मकः		
• १०५ नीलरुद्रोपनिषत्	नीलरु.	खण्डात्मकः	मंत्रात्मकः	
• १०६ नृसिंहपूर्वतापिन्युपनिषत्	नृ. पू.	उपनिषदात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १०७ नृसिंहषट्चक्रोपनिषत्	नृ. षट्च.	वाक्यात्मकः		
• १०८ नृसिंहोत्तरतापिन्युपनिषत्	नृसिंहो.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १०९ पञ्चब्रह्मोपनिषत्	पञ्चब्र., पं. ब्र.	वाक्यात्मकः		
		पद्यात्मकः		

उपनिषद्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• ११० परब्रह्मोपनिषत्	परब्र.	वाक्यपद्यात्मकः		
• १११ परमहंसपरिब्राजकोष.	प. हं. प.	वाक्यात्मकः		
• ११२ परमहंसोपनिषत्	प.हंसो., प.हं.	वाक्यात्मकः		
• ११३ पारमात्मिकोपनि.	पारमा.	अनुवाक्यात्मकः	मंत्रात्मकः	
• ११४ पारस्करगृह्यसूत्रम्	पा. गृ. सू.			
• ११५ पारायणोपनिषत्	पारायणो.	मंत्रात्मकः		
• ११६ पाशुपतब्रह्मोपनिषत्	पा. ब्र.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ११७ पिण्डोपनिषत्	पिण्डो.	पद्यात्मकः		
• ११८ पीताम्बरोपनिषत्	पीताम्बरो.	वाक्यात्मकः		
• ११९ पुरुषसूक्तोपनिषत्	पु. सू.	मंत्रात्मकः		
• १२० पैङ्गलोपनिषत्	पैङ्गलो.	अध्यायात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
• १२०-१ प्रणवोपनि.	१ प्रणवो.	पद्यात्मकः		
• १२०-२ „	२ प्रणवो.	वाक्यात्मकः		
• १२१ प्रश्नोपनिषत्	प्रश्नो.	प्रश्नात्मकः		
• १२२ प्राणाग्निहोत्रोपनिषत्	प्राणाग्नि., प्रा. हो.	खण्डात्मकः	मंत्रात्मकः वाक्यात्मकश्च	
• १२३ बटुकोपनिषत्. (बटुकोप.)	बटुको.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• १२४ बहुचोपनि.	बहुचो.	वाक्यात्मकः		
• १२५ बाष्कलमन्त्रोपनि.	बा. मं.	वाक्यात्मकः		
• १२६ १ बिल्वोपनि.	१ बिल्वो.	पद्यात्मकः		
• १२६ २ „	२ बिल्वो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकः		
• १२७ बृहज्जाबालोपनि.	बृ. जा., बृहज्जा.	ब्राह्मणात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
• १२८ बृहदारण्यकोपनि.	बृ.उ., बृह.	अध्यायात्मकः	ब्राह्मणात्मकः	वाक्यात्मकः
• १२९ ब्रह्मबिन्दूपनिषत् (अमृतबिन्दूप.)	ब्र. बिं.	पद्यात्मकः		
• १३० ब्रह्मविद्योपनिषत्	ब्रह्मवि., ब्र.वि.	पद्यात्मकः		
• १३१ ब्रह्मोपनि.	ब्रह्मोप., ब्रह्मो.	वाक्यपद्यात्मकः		

उपनिषद्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
१३४ भगवद्गीतोपनिषत्	भ. गी.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
१३५ भवसन्तरणोपनि.	भवसं.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १३६ भस्मजावाडोपनि.	भ.जा., भस्मजा.	अध्यायात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १३७ भावनोपनि.(कापिलोप.) भावनो.		वाक्यात्मकः		
• १३८ भिक्षुकोपनिषत्	भिक्षुको.	वाक्यात्मकः		
• १३९ मठाम्नायोपनिषत्	मठाम्ना.	वाक्यात्मकः		
• महावाक्यरत्नावलिः	म. वा. र.	प्रकरणात्मकः		
• १४० मण्डलब्राह्मणोपनि.	मं. ब्रा.	ब्राह्मणात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १४१ मंत्रिकोपनिषत् (चूलिकोप.)	मंत्रिको.	पद्यात्मकः		
१४२ मल्लायुपनि.	(अशुद्धमचुरा कोशासंगृहीतवाक्या)			
• १४३ महानारायणोपनि.	महाना., म.ना.	खण्डात्मकः	मंत्रात्मकः	
(बृहन्नारायणो.—उत्तरनारायणो.)				
• १४४ महावाक्योपनि.	महावा.	वाक्यात्मकः		
• १४५ महोपनिषत्	महो.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १४६ माण्डूक्योपनिषत्	माण्डू.	वाक्यात्मकः		
• १४७ मुक्तिकोपनिषत्	मुक्तिको., मुक्ति.	अध्यायात्मकः	वाक्यपद्यात्मकः	
• १४८ मुण्डकोपनि.	मुण्डको., मुण्ड.	मुण्डकात्मकः	खंडात्मकः	मंत्रात्मकः
• १४९ मुद्गलोपनिषत्	मुद्गलो.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	मंत्रात्मकः
• १५० मृत्युलांगूलोपनिषत्	मृत्युलां.	वाक्यात्मकः		
		पद्यात्मकश्च		
• १५१ मैत्रायण्युपनिषत्	मैत्रा.	प्रपाठात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १५२ मैत्रेय्युपनिषत्	मैत्रे., मैत्रे.उ.	अध्यायात्मकः	गद्य-पद्यात्मकः	
• १५३ यज्ञोपवीतोपनिषत्	यज्ञोप.	वाक्यात्मकः		
		पद्यात्मकश्च		
• १५४ याज्ञवल्क्योपनिषत्	याज्ञव.	वाक्यात्मकः		
		पद्यात्मकश्च		
• १५५ योगकुण्डल्युपनिषत्	योगकुं.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १५६ योगचूडामण्युपनिषत्	यो. चू.	पद्यात्मकः		
		वाक्यात्मकश्च		

उपनिषद्नामानि	सत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• १९७-१ योगतत्त्वोपनिषत्	१ यो. त.	पद्यात्मकः		
१९८-२	२ योगत.	पद्यात्मकः		
• १९९ योगराजोपनिषत्	योगरा.	पद्यात्मकः		
• १६० योगशिसोपनिषत्	यो. शि.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
१६१ योगोपनिषत्	योगो.	पद्यात्मकः		
• १६२ राजश्यामला- रहस्योपनिषत्	रा. श्या. र.	वाक्यात्मकः		
१६३ राधिकोपनिषत्	राधिको.	वाक्यात्मकः		
• १६४ राघोपनिषत्	राघो.	प्रपाठात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १६५ रामपूर्वतापिन्युपनि.	रा. पू., रामपू.	उपनिषदात्मकः	पद्यात्मकः	
• १६६ रामरहस्योपनिषत्	रामर.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १६७ रामोत्तरतापिन्युपनि.	रामो., रामोत्त.	खण्डात्मकः	मंत्रात्मकः	वाक्यात्मकश्च
• १६८ रुद्रहृदयोपनिषत्	रुद्रहृ.	पद्यात्मकः		
• १६९ रुद्राक्षबाबालोपनि.	रु. जा.	पद्यात्मकः		
• १७० रुद्रोपनिषत्	रुद्रो., रुद्रोप.	वाक्यात्मकश्च		
१७१ रुद्रम्युनिषत्	रुद्रम्यु.	वाक्यात्मकः		
• १७२ लांगूलोपनिषत्	लांगूलो.	मंत्रात्मकः		
• १७३ लिङ्गोपनिषत्	लिङ्गो.	वाक्यात्मकः		
० वासनेयीसंहिता (यजुर्वे.)	वा. सं.	अध्यायात्मकः	मंत्रात्मकः	(कंडिकात्मकः)
• १७४ वज्रपञ्जरोपनिषत्	व. पं.	वाक्यात्मकः		
• १७५ वज्रसूचिकोप.	व. सू., वज्रसू.	वाक्यात्मकः		
• १७६ वनदुर्गोपनिषत्	वनदु.	वाक्यात्मकः		
• १७७ वराहोपनिषत्	वराहो.	पद्यात्मकश्च		
• १७८ वासुदेवोपनिषत्	वासुदे., वासु.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १७९ विश्रामोपनिषत्	विश्रामो.	वाक्यात्मकः		
१८० विष्णुहृदयोपनिषत्	विष्णुहृ.	पद्यात्मकः		
१८१ वैतथ्यप्रक. (मांडू.)	वैतथ्य.	खण्डात्मकः	मन्त्रात्मकः	
		पद्यात्मकः		

उपनिषद्नामानि	संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• १८२ शरभोप.	शरभोपनिषत्	पद्यात्मकः वाक्यात्मकश्च		
• १८३ साध्यायनीयोपनिषत्	साध्याय.	पद्यात्मकः वाक्यात्मकश्च		
• १८४ साण्डिल्योपनिषत्	सांदि., साण्डि., साण्डिल्यो., सां.	अध्यायात्मकः	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च
• १८५ शारीरकोपनिषत्	शारीर.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• १८६-१ शिवसङ्कश्योपनिषत्	१ शिवसं.	मन्त्रात्मकः		
• १८७-२ शिवसङ्कश्योपनिषत्	२ शिवसं.	मन्त्रात्मकः		
• १८८ शिवोपनिषत्	शिवो.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १८९ शुक्रहस्योपनिषत्	शुक्र., शु. र.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
• १९० शौनकोपनिषत्	शौनको.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकश्च	
• १९१ श्यामोपनिषत्	श्यामोप.	वाक्यात्मकः		
• १९२ श्रीचक्रोपनिषत् (श्रीमद्भगवद्गीतोपनि.)	श्रीचक्रो.	मन्त्रात्मकः	वाक्यात्मकश्च	
• १९३ श्रीविद्यातारकोपनि.	श्रीवि. ता.	पादात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
• १९४ श्रीसूक्तम्	श्रीसू.	मन्त्रात्मकः		
• १९५ श्वेताश्वोपनिषत्	श्वेता., श्वेताश्व.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः मन्त्रात्मकः	
• १९६ षोडोपनिषत्	षोडो.	वाक्यात्मकः		
• १९७ सङ्कर्षणोपनिषत्	सङ्कर्ष., संक.	वाक्यात्मकः		
• १९८ सदानन्दोपनिषत्	सदानं.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• १९९ संध्योपनिषत्	सन्ध्यो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• २००-१ सन्यासोपनिषत्	१ सं. सो.,	अध्यायात्मकः		
• २०१-२ सन्यासोपनिषत्	२ सन्यासो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकः		
• २०२ सरस्वतीरहस्योप.	सरस्व.	मन्त्रात्मकः पद्यात्मकश्च		

उपनिषद्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• २०३ सर्वसारोप. (सर्वोपनि.)	सर्वसारो., सर्वसा.	वाक्यात्मकः		
२०४ सहवै. (सहव.उ.)	सहवै.	वाक्यात्मकः मन्त्रात्मकश्च		
२०५ संहितोपनिषत्	संहितो.	वाक्यात्मकः मन्त्रात्मकश्च		
• २०६ सामरहस्योपनिषत् ० सामवेदः	सामर. सामवे.	वाक्यात्मकः		
• २०७ सावित्र्युपनिषत्	सावित्र्यु.	वाक्यात्मकः		
२०८ सिद्धान्तविट्ठलोपनिषत्	सि.वि.	वाक्यात्मकः		
• २०९ सिद्धान्तशिखोपनिषत्	सि. शि.	पद्यात्मकः मन्त्रात्मकश्च		
• २१० सिद्धान्तसारोपनिषत्	सि. सा.	आवरणात्मकः	वाक्यात्मकः	
• २११ सीतोपनिषत्	सीतो., सीतोप.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• २१२ सुदर्शनोपनिषत्	सुदर्श.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• २१३ सुबालोपनिषत्	सुबालो.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• २१४ सुमुख्युपनिषत्	सुमुख्यु.	गद्यात्मकः		
• २१५ सूर्यतापिन्युपनिषत्	सूर्यता.	पटलात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
• २१६ सूर्योपनिषत्	सूर्यो.	वाक्यात्मकः		
• २१७ सौभाग्यलक्ष्म्युपनि.	सौभाग्य. सौ. ल.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• २१८ स्कन्दोपनिषत्	स्कन्दो.	"		
• २१९ स्वसंवेद्योपनिषत्	स्वसंवे.	वाक्यात्मकः		
• २२० हयग्रीवोपनिषत्	हयग्री.	वाक्यात्मकः		
• २२१ हंसषोढोपनिषत्	हं.षोढो., हंसषो.	मन्त्रात्मकः		
• २२२ हंसोपनिषत् ० हिरण्यकेशीगृह्यसूत्रम्	हंसो. हि. गृ. सू.	वाक्यात्मकः		
• २२३ हेरम्बोपनिषत्	हेरम्बो.	गद्यपद्यात्मकः		

॥ इत्युपनिषदः ॥



ॐ

ॐङ्कारोऽयमजरोऽमरोऽभयोऽमृतः ।

ॐङ्कारेण सर्वा वाक् सन्तृण्णा । ॐङ्कार एवेदं सर्वम् ।

उपनिषद्वाक्यमहाकोशः

ॐ

ॐ ॐ ॐ इति त्रिरुक्त्वा
चतुर्थः शान्त आत्माप्लुत...

ॐ ॐ नमो भगवते नारायणाय

ॐ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ ॐ वाचि प्रतिष्ठा

ॐ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ऌ
ए ऐ ओ औ अं अः

ॐ अघोराय पुरुषाय पुरुषरूपाय
वासुदेवाय नमो नमः

ॐ अङ्कार मृत्युञ्जय सर्वव्यापक
प्रथमेऽक्षे प्रतितिष्ठ

ॐ अदामो ३ पिबा ३ मो देवो
वरुणः सविता २

ॐ अनिरुद्धाय पुरुषाय पुरुषरूपाय
वासुदेवाय नमो नमः

ॐ अपानात्मने ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवः

ॐ अहं बृक्षस्य रेखि

ॐ आङ्काराकर्षणात्मक सर्वगत

द्वितीयेऽक्षे प्रतितिष्ठ

ॐ आदौ नम उच्चार्य ततो भगवते पदं

१

अ.शिखो. १

त्रि.म. ना. ७।९

त्रि.म. ना. ७।९

बह्वचो. २

त्रि.म.ना.७।१०

विष्णुह. २।२४

अ. मा. ४

छां.ड.१।१२।५

विष्णुह. २।८

गोपालो. ३।४

शांतिपाठः

अ. मा. ४

व. मू. २

ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म

भूर्भुवः सुवरोम्

ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म

भूर्भुवः स्वरो [मैत्रा. ६।३५+

ॐ आपोऽमृतमर्त्यस्य... जन्यते

पुरुषोत्तमात्

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्प्राणः

ॐ इङ्कार पुष्टिद क्षोभकर तृतीयेऽक्षे

प्रतितिष्ठ

ॐ इति तिस्रो मात्राः, एताभिः

सर्वमिदमोतं प्रोतं चास्मिन्

ॐ इति प्रतिपद्यन्ते

ॐ इतिप्रयुक्तआत्मज्योतिःसकृदावर्तते

ॐ इति ब्रह्म [तैत्ति. १।८।१+

ॐ इति ब्रह्म भवति

ॐ इति ब्रह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपा-

प्रवानीति

ॐ इति ब्रह्मा प्रसौति

ॐ इति ब्रह्मेति व्यष्टिसमष्टिप्रकारेण

ॐ इति शंसंति

महाना. ११।७

त्रि.म.ना.७।११

कृ. पु. सि. ३

शांतिपाठः

अ. मा. ४

मैत्रा. ६।३

शौनको. १।५

अ. शिखो. १

ना. प. ८।२

तारसा. १।४

तैत्ति. १।८।१

तैत्ति. १।८।१

ना. प. ८।१

छां.ड.१।१।९

ॐ इति सत्यम्	१ ऐतरे. ३।६।४	ॐ इत्येतदक्षरमुद्रीयमुपासीत	छां. उ. १।१।१ +१।४।१
ॐ इति संहरजानुसन्दध्यात्	नृसिंहो. ४।१	ॐ इत्येतदक्षरमुद्रीयः	छां. उ. १।१।१
ॐ इति सामानि गावन्ति	तैत्ति. १।८।१	ॐ इत्येतदक्षरमुपासीत	छां. उ. १।४।१
ॐ इति होवाच व्याज्ञासिष्ठा इति	बृ. उ. ९।२।१, +६।२।१	ॐ इत्येतदक्षरस्य चैतत्	मैत्रा. ६।४
[२, ३	+६।२।१	ॐ इत्येतदक्षरं परं ब्रह्म, अस्य पादा- श्रवणः	अ. शिखो. १
ॐ इति होवाच [बृ. उ. ३।९।१, १, १	छां. उ. १।१।१ +१।४।१	ॐ इत्येतदक्षरं परं ब्रह्म तदेवोपा- सितव्यं	तारसा. २।१
ॐ इति ह्युवाच तस्योपव्याख्यानं	नृसिंहो. ८।९	ॐ इत्येतदनुकृति इ स्म वा अप्योश्रावय	तैत्ति. १।८।१
ॐ इति होवानुजानाति	छां. उ. १।५।१, ३	ॐ इत्येतदनुकृति इ स्म...	तैत्ति. १।८।१
ॐ इति होव स्वरमेति	तैत्ति. १।८।१	आश्रावयन्ति (मा.)	नारा. ३
ॐ इतीदं सर्वम्	सन्ध्यो. २०	ॐ इत्येतद्व्याहरेत्	अ. ना. २१
ॐ इत्यक्षरम्	तैत्ति. १।८।१	ॐ इत्येतेन (एकेन) रेचयेत्	छां. उ. १।१।८
ॐ इत्यग्निहोत्रमनुजानाति	भ. जा. २।३	ॐ इत्येव तदा होवा एव समृद्धिः	
ॐ इत्यग्ने व्याहरेत्	तैत्ति. १।८।१	ॐ इत्येव यदुद्धृतं ज्ञानं ज्ञेयात्मकं शिवम् । असंस्पृष्टविकल्पांशं प्राणस्पन्दो निरुध्यते	शाण्डि. १।३४
ॐ इत्यध्वर्युः प्रतिगरं प्रतिगृणाति	नृसिंहो. ९।१	ॐ इत्येवं ध्यायथ आत्मानं, स्वस्ति वः	मुण्ड. २।२।६
ॐ इत्यनुजानीध्वं ब्रूतेनमिति	मैत्रा. ६।४	ॐ इत्येवं ध्यायंस्तथाऽऽत्मानं युञ्जीत	मैत्रा. ६।३
ॐ इत्यग्नेनैत उपासीताजस्रं	मैत्रा. ६।२६	ॐ ईङ्कार वाक्प्रसादकर निर्मल चतुर्थेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ इत्यग्नेनोद्धृत्यानामयेऽग्नौ जुहोति	मैत्रा. ६।२२	ॐ ईशानाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. २।२६
ॐ इत्यग्नेनोर्ध्वमुत्क्रान्तः	शौनको. १।९	ॐ ई ओ नमो भगवते श्रीमहा- गरुडाय ...	गारुडो. १०
ॐ इत्यग्निनिधापयन्ति	शौनको. १।५	ॐ ईसचरतिसचरति... वज्रेण स्वाहा	गारुडो. १२
ॐ इत्यभ्याददते	शौनको. १।५	ॐ उश्न ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ	कठो. १।१
ॐ इत्यस्याददते	महाना. १७।१३	ॐ उङ्कार सर्वबलप्रद सारतर पञ्चमेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ इत्यात्मानं युञ्जीत	छां. उ. १।१।१	ॐ उदानात्मने ॐ तत्सद्भुवः सुवः	गोपालो. ३।८
ॐ इत्याश्रावयति	छां. उ. १।१।१ +१।४।१	ॐ उङ्कारोच्चाटनकर दुस्सह षष्ठेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ इत्युवाच [छां. उ. १।१।१+१।१।९	ना. प. ८।२	ॐ ऋङ्कार सङ्क्षोभकर चञ्चल सप्तमेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ इत्येकाक्षरमन्तःप्रणवं विद्धि	अ. ना. २१	ॐ ऋङ्कार सम्मोहनकरोज्ज्वलाष्टमेक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म [ध्या. वि. ९+	+१ प्रणवो+२		
ब्रह्मवि. २+महाना. ११।९+सूर्यो. ९	भ. गी. ८।१३		
अमृ. २०+ तारसा. २।१	तारसा. १।३		
ॐ इत्येकाक्षरमात्मस्वरूपं	तारसा. २।१		
ॐ इत्येकाक्षरं परं ब्रह्म तदेवोपासितव्यं	ध्या. वि. ९		
ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म ध्येयं	अ. जा. २१		
ॐ इत्येकेन (एतेन) रेचयेत्	अ. शिखो. १		
ॐ इत्येतदक्षरमादौ प्रयुक्तं ध्यानं ध्यायितव्यं	माण्डू. १+		
ॐ इत्येतदक्षरमिदं सर्वं, तस्योपव्या- ख्यानं भूतं भव्यं भविष्यदिति	नृसिंहो. १।२		
नृ. पू. २।२+४।२+			

ॐ लङ्कार विद्वेषणकर मोहक नवमेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ लङ्कारमोहकरदशमेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ लङ्कार सर्ववश्यकर शुद्धसत्त्वैका- दशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ ऐङ्कार शुद्धसात्त्विक पुरुषवश्यकर द्वादशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ ऐ ही श्री आनन्देश्वराय विद्महे सुधादेव्यै... प्रचोदयात्, ततो अर्धनारीश्वरः प्रचोदयात्	वनदु. १४६
ॐ ओङ्काराखिलबाह्य नित्यशुद्ध त्रयोदशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ ओङ्कार सर्वबाह्य वश्यकर चतुर्दशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ अङ्कार गजादिवश्यकर मोहन पञ्चदशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ अःकार मृत्युनाशनकर रौद्र षोडशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ कङ्कार सर्वविषहर कल्याणद सप्तदशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ कार एवेदं सर्व	छां. उ. २।२४।४
ॐ कारध्वनिनादेन	ध्या. बि. २३
ॐ कारप्रभवं सर्व	ध्या. बि. १६
ॐ कारमात्मानमुपविदेश	नृसिंहो. ९।१
ॐ कारप्रभवा देवाः	ध्या. बि. १६
ॐ कारप्रभवाः स्वराः	ध्या. बि. १६
ॐ कारप्लवेन... पारं तीर्त्वा	मैत्रा. ६।२४
ॐ कारप्लवेनान्तर्हृदयाकाशस्य पारं	मैत्रा. ६।२८
ॐ कारस्तु तथा योज्यः [ब्र. बि. १२+	प्रणवो. १२
ॐ कारस्त्रिविधो विचित्रकरणैः प्राणश्च वायोर्जयः...	अमन. २।१०७
ॐ कारस्योत्पत्तिं विप्रो न जानाति, तत्पुनरुपनयनं	२ प्रणवो. १४
ॐ कारस्वरभूषितं	पञ्चम. १४
ॐ कारं तत्र चिन्तयेत्	१ यो. शि. १।७१
ॐ कारं प्रणवात्मानं तन्मेमनःशिव...	२ शिवसं. २१
ॐ कारं रथमारुह्य	अमृ. बि. २
ॐ कारं सर्वेश्वरं द्वादशान्ते	नृसिंहो. ६
ॐ कारास्त्रावित्री	बहुको. २७

ॐ काराहयाहतिरभवत्	गायत्रीर. १
ॐ कारान्तरालिकं मनुमावर्तयेत्	गो. पू. ३।१०
ॐ कारेण सर्वा वाक् सन्तृप्णा	छां. उ. २।२३।४
ॐ कारेण ममात्मानं परमं ब्रह्म नृसिंहमन्विष्य ...	नृसिंहो. ७।१
ॐ कारो परे ब्रह्मणि पर्यवसितः	नृसिंहो. ६।३
ॐ कारो बाणः शक्तिरेव पीठं	लिंगोप. २
ॐ कारोऽयमजरोऽमरोऽभयोऽमृतः	गोपालो. २।१४
ॐ कारो यूपः	प्रा. हो. ४।३
ॐ कारो वेदानामुत्तरोपनिषदं व्याख्यास्यामः	२ प्रणवो. १४
ॐ काली कपालिनी	कालिको. १
ॐ कुमारीपदत्रिहारबाणोऽमूर्तये ... स्वाहा	लांगूलो. ७
ॐ केशवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. २।१०
ॐ क्रतो स्मर कृतं स्मर[ईशा. १७+	बृ. उ. ५।१५।१
ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन ... स्वाहा	त्रि. म. ना. ७।१०
ॐ क्षङ्कार परात्पर तत्त्वज्ञापक... शिखामणौ...	अ. मा. ४
ॐ खङ्कार सर्वक्षोभकर व्यापकाष्टा- दशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ खं ब्रह्म, खं पुराणं वायुरंस्त्रमिति	बृ. उ. ५।१।१
ॐ खेचराय नमः... सत्त्वाय नमः	अक्षयु. १
ॐ गङ्कार सर्वविघ्नशमन महत्तरैकोन- विंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ गं गणपतये नमः	गणप. ७
ॐ गोविन्दाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. २।११
ॐ घङ्कार सौभाग्यद स्तम्भनकर विंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः	त्रि. म. ना. ७।११
ॐ ङङ्कार सर्वविषनाशकरोऽमैक- विंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ चक्षुश्चक्षुश्चक्षुस्तेजः स्थिरो भव	चाक्षुषो. २
ॐ चङ्काराभिचारघ्न क्रर द्वाविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४

ॐ छद्गार भूतनाशकर मीषण त्रयोविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ जङ्गार कृत्यादिनाशकर दुर्धर्ष चतुर्विंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ झङ्गार भूतनाशकर पञ्चविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ ञङ्गार मृत्युप्रमथन षड्विंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ टङ्गार सर्वव्याधिहर सुभग सप्तविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ ठङ्गार चंद्ररूपाष्टाविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ डङ्गार गरुडात्मक विषम शो- भनैकोनत्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ ढङ्गार सर्वसम्पत्प्रद सुभग त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ णङ्गार सर्वसिद्धिप्रद मोहकरैक- त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. २४
ॐ तङ्गार धनधान्यादिसम्पत्प्रद प्रसन्न द्वात्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ तत्पुरुषाय पु...पु...वासु...	विष्णुह. २।२५
ॐ तत्पुरोर्नमः	महाना. १६।१
ॐ तत्सद्विति निर्देशः	भ. गी. १७।२३
ॐ तत्सत्यम्, ॐ तत्सर्वम्	महाना. १६।१
ॐ तत्सद्यत् परं ब्रह्म	रामो. २।४
+गणेशो. १४+	श्रीवि. ता. ४।१
ॐ तत्सर्वम् ॐ तत्पुरोर्नमः	महाना. १६।१
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि [त्रि. म. ना. ७।१।११+	महाना. ११।७
+वनदु. ९+सूर्यो. २+	पारायणो. ११
ॐ तदात्मा ॐ तत्सत्यम्	महाना. १६।१
ॐ तदेति । सद्योजातात्पृथिवी	बृ. जा. १।५९
ॐ तद्गणेशः, ॐ सद्गणेशः, ॐ परं गणेशः	ग. शो. १।२
ॐ तद्ब्रह्म ॐ तद्वायुः	महाना. १६।१
ॐ तद्ब्रह्मात्मकाः सच्चिदानन्दाख्याः	रामो. २
ॐ तद्ब्रह्मेति चोच्चार्य	बृ. जा. ३।२४
ॐ तद्रामभद्रः परं ज्योती रसोऽहं	रामो. २।४
ॐ तद्वायुः, ॐ तदात्मा	महाना. १६।१

ॐ तस्मै महामासाय महादेवाय शुक्तिने	हरमो. २४
ॐ त्रिविक्रमाय पुरुषाय पुरुषरूपाय...	विष्णुह. २।१६
ॐ थङ्गार धर्मप्राप्तिकर निर्मल त्रय- स्त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ दक्षिणामूर्तिरीश्वरोम्	त्रि. म. ना. ७।९
ॐ दङ्गार पुष्टिबृद्धिकर प्रियदर्शन चतुस्त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ धङ्गार विषज्वरनिघ्न विपुल पञ्चत्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ नङ्गार भुक्तिमुक्तिप्रद शान्त षट्त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे विन्याय भास्कराय	चाक्षुषो. २
ॐ नमस्ते गणपतये	गणप. १
ॐ नमस्ते भगवति मन्ममातृके... विश्वामृत्यो...	अ. मा. ६
ॐ तमस्ते भगवति मन्ममातृके- ऽक्षमाले उच्चाटन्यो...	अ. मा. ६
ॐ तमस्ते भगवति मन्ममातृके- ऽक्षमाले शेषस्तम्भिनि	अ. मा. ६
ॐ नमस्ते भगवति मन्ममातृके- ऽक्षमाले सर्ववशङ्करि	अ. मा. ६
ॐ नमः करुणाकरायामृताय	चाक्षुषो. २
ॐ नमः प्रत्यगानन्दं ब्रह्मपुरुषं प्रणवस्वरूपं	आ. प्र. १
ॐ नमः शिवाय	त्रि. म. ना. ७।९
ॐ नमः शिवायेति बाजुषमन्त्रो- पासको रुद्रत्व...	त्रि. ता. ४।१
ॐ नमः श्रीराधारसिकानन्दाभ्याम्	सामर. ८०
ॐ नमः सर्वकोटिसर्वविद्याराजाय ह्रीं स्वाहा	त्रि. म. ना. ७।९
ॐ नमो नारायणादन्यो मन्त्रः... नास्ति	ना. उ. ३।१
ॐ नमो नारायणाय इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः	ना. पू. २।१
ॐ नमो नारायणाय शङ्खचक्रगदाधराय	आ. प्र. १
ॐ नमो नारायणाय सहस्रार हुं फट् स्वाहा	ना. उ. २।३
ॐ नमो नारायणाय [त्रि. म. ना. ७।९+	महाज्ञा. ३।१

ॐ नमो नारायणाय स्वाहा	ना. पू. ५।२
ॐ नमो नारायणायैति मंत्रोपासको	
वैकुण्ठमुवनं गमिष्यति [आ.प्र.१ +नारा. ४	
ॐ नमो नारायणाष्टाक्षरसंज्ञावरण-	
देवतापूजा कर्तव्या	ना. पू. ६।१
ॐ नमो नारायणेति तारकं चिदात्मक-	
मित्युपासितव्यम्	तारसा. १।३
ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वमये	सहस्र. १२५
ॐ नमो भगवति माहेश्वरि ह्रीं	
श्रीं ह्रीं...	वनदु. १, २५
ॐ नमो भगवते आवित्याय... स्वाहा	चाक्षुषो. ५
ॐ नमो भगवते कालामिरोद्बन्धुमते...	लांगूलो. ७
ॐ नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते	लांगूलो. ४
ॐ नमो भगवते चिन्तामणिहनुमते...	लांगूलो. ५
ॐ नमो भगवते दत्तात्रेयाय	
सर्वकामप्रदाय	दत्तात्रेयो. २।१
ॐ नमो भगवते दधिवामनाय	त्रि.म.ना. ७।९
ॐ नमो भगवते दावानलकालामि-	
हनुमते	लांगूलो. ३
ॐ नमो भगवते नारायणाय	त्रि.म.ना. ७।९
ॐ नमो भगवते पातालगरुडहनुमते	लांगूलो. ६
ॐ नमो भगवते भद्रजानिकटरुद्र-	
वीर हनुमते	लांगूलो. ८
ॐ नमो भगवते भस्माङ्गराय...	
ह्रीं फट् स्वाहा	त्रि. ता. ३।५
ॐ नमो भगवते महागरुडाय...	
हुं फट् स्वाहा	गारुडो. १३
ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय हुंफट्	त्रि.म. ना. ७।९
ॐ नमो भगवतेऽमृतवर्षाय रुद्राय	वनदु. ९८
ॐ नमो भगवते रुद्राय	वनदु. ३८
ॐ नमो भगवते वासुदेवायेति	
द्वादशं परिकीर्तितं	ना. पू. ३।१
ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूता-	
त्मने...	त्रि.स.ना. ७।१२
ॐ नमो भगवते श्री श्रीमन्महागरु-	
डाय...महागरुड...	वनदु. १६०
ॐ नमो भगवते श्रीमहानृसिंहाय...	
पञ्च पञ्च स्वाहा	त्रि.म.ना. ७।९

ॐ नमो भगवते श्रीमन्नारायणाय	
महाविष्णवे	ना. व. २।३
ॐ नमो भगवते श्रीसूर्यावाक्षितेजसे	अव्यु. १, चाक्षु. १
ॐ नमो भगवते श्रीसूर्यावाक्षित्या-	
वाक्षितेजसेऽहोऽवाहिनि...	अव्यु. ३
ॐ नमो विश्वरूपाय	गो. पू. ४।४
ॐ नमो विष्णवे इतिषडक्षरं विज्ञातं	ना. पू. ३।१
ॐ नमो विष्णवे ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं...	त्रि.म.ना. ७।९
ॐ नमो विष्णवे सुरपतये महाबलाय	
स्वाहा	त्रि.म.ना. ७।१०
ॐ नारसिंहाय पुरुषाय पुरुषरूपाय...	
वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. २।२८
ॐ नारायणाय पुरुषाय पुरुषरूपाय	
वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. २।११
ॐ नित्यं शुद्धं बुद्धं निर्विकल्पं	यो. च. ७२
ॐ नृसिंहाय विष्णवे वज्रनखाय	
भीमहि	नृ. पू. ४।३
ॐ पङ्कार विषविघ्ननाशक भय	
सप्तत्रिंशोऽक्षे...	अ. मा. ४
ॐ पञ्चनाभाय पुरुषाय पुरुषरूपाय	
वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. २।२०
ॐ पुरुषोत्तमाय पुरुषाय...वासु-	
देवाय नमो नमः	विष्णुह. ३।२९
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं	शान्तिपाठः
ॐ प्रणवेन्दुविष्णुसहस्रनेत्राय	
पुरुषाय पुरुषरूपाय... नमः	विष्णुह. २।२७
ॐ प्रद्युम्नाय पुरुषाय पुरुषरूपाय...	विष्णुह. २।७
ॐ फङ्काराणिमादिसिद्धिप्रद ज्योती-	
रूपाष्टत्रिंशोऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ बङ्कार सर्वदोषहर शोभनैकैत-	
चत्वारिंशोऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ ब्रह्मणो महिमेत्येवैतदाह	मैत्रा. ४।४
ॐ ब्रह्ममेवया [त्रिसुप. २+	महाना. १२।३
ॐ ब्रह्ममेवया [त्रिसुप. ३+	महाना. १२।३
ॐ भङ्कार भूतप्रशान्तिकर भयानक	
चत्वारिंशोऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः...	शान्तिपाठः
ॐ भद्रं नो अपि वातय नमः	शान्तिपाठः
ॐ भवोद्भवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय	विष्णुह. २।९

ॐ भुवः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. २।२ ना. प. ४।४६	ॐ यो हवै...श्रीपरमात्मा नारायणः	तारसा. ३१
ॐ भुवः सत्यस्तं मया	ना. प. ४।४६	ॐ यो हवै...नारायणः स भग- वान्...भगवती सीता...	तारसा. ३।७
ॐ भूर्नमो भगवते दाषानल...	ठांगूलो. २	ॐ यो हवै श्रीपरमात्मा...विन्दु- स्वरूपः सत्रुप्रो...	तारसा. ३।४
ॐ भूर्भुवः स्वः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय...	विष्णुह. २।४	ॐ यो हवै श्रीपरमात्मा...मकार- वाच्यः शिवस्वरूपो...	तारसा. ३।३
ॐ भूर्भुवः स्वरिति व्याहृतयः	२ प्रणवो. १८	ॐ यो हवै श्रीपरमात्मा नारायणः स भगवान्...	तारसा. ३।१
ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं	सूर्यो. २	ॐ यो हवै श्रीपरमात्मा नारायणः स भगवान् तत्परः परमपुरुषः	
ॐ भूर्भुवः स्वः सत्यस्तं मया	ना. प. ४।४६	नित्यशुद्धपुष्ट...ब्रह्मवाहं रामोऽस्मि भूर्भुवः...	तारसा. ३।८
ॐ भूर्लक्ष्मीर्भुवर्लक्ष्मीः स्वर्लक्ष्मीः कालकणी...	नृ. पू. ४।३	ॐ रङ्गार दाहकर विकृत त्रिचत्वा- रिंशोऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं [महाना. ११।७+]	त्रि.म.ना. ७।११	ॐ रामचन्द्राय नमः ॐ भू ॐ रामाय हुं फट् स्वाहा	त्रि.म. ना. ७।९
ॐ भूः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. २।१ ना. प. ४६, ४७	ॐ लङ्कार विश्वम्भर भासुर चतु- श्चत्वारिंशोऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ भूः सत्यस्तं मया		ॐ वङ्कार सर्वाप्यायनकर निर्मल पञ्चचत्वारिंशोऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा...	प. हं. प. ५	ॐ वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता	शांतिपाठः
अनेन जातरूपधरो भूत्वा	सं. सो. २।६	ॐ वामनाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. १।१७ २३।३०
ॐ भूः स्वादेति शिक्षामुत्पाद्य		ॐ विष्णवे पुरुषाय पुरुषरूपाय...	विष्णुह. २।१६
ॐ भूः स्वादेत्यप्सु बर्षं कटिसूत्रं च विसृज्य [सं. सो. २।६+]	ना. प. ४।४७	ॐ व्यानात्मने ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवः	गोपालो. ३।६
ॐ मङ्कार विद्वेषिमोहनकरैकचत्वा- रिंशोऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४	ॐ शङ्कार सर्वफलप्रद पवित्र षट्चत्वारिंशोऽक्षे...	अ. मा. ४
ॐ मत्स्यावताराय नमः	ना. पू. ५।२	ॐ शिवं ॐ शिवं ॐ शिवं	गणशो. २।१
ॐ मधुसूदनाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय...नमः	विष्णुह. २।१५	ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः	शांतिपाठः
ॐ माधवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय...	विष्णुह. २।१२	ॐ शीक्षां व्याख्यास्यामः	तैत्ति. १।२।१
नमो नमः		ॐ शोमिति शस्त्राणि शंसन्ति	तैत्ति. १।८।१
ॐ यङ्कार सर्वव्यापक पावन द्विचत्वारिंशोऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४	ॐ श्रीकृष्णाय देवकीनन्दनाय ॐ तत्सत्	गोपालो. ३।९
ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः	शांतिपाठः	ॐ श्रीकृष्णाय रामाय ॐ तत्सद्भूर्भुवः	गोपालो. ३।७
ॐ यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं	शांतिपाठः	ॐ श्रीकृष्णायानिरुद्धाय ॐ तत्सत्	गोपालो. ३।९
ॐ यो हवै श्रीपरमात्मा...उकार- वाच्य उपेन्द्रस्वरूपा...	तारसा. ३।२	ॐ श्रीगोपालाय निजस्वरूपाय...	गोपालो. ३।११
ॐ यो हवै श्रीपरमात्मा...कला- स्वरूपो लक्ष्मणो...	तारसा. ३।६	ॐ भीधराय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. २।१८
ॐ यो हवै श्रीपरमात्मा...नाद- स्वरूपो भरतो...	तारसा. ३।५		

ॐ श्रीमो नमो भगवते रघु- नन्दनाय...रामाय...	त्रि.म.ना.७।११ ना. पू. ३।१	ॐ सोऽहं सोऽहं सोऽहं ॐ सुवः सज्यस्तं मया ॐ स्वाहेति शिखामुत्पाद्य ॐ लङ्कार सर्वबाह्य निर्मलैकोन- पञ्चाशदक्षे प्रतितिष्ठ	गणेशो. २।१ ना. प. ४।४७ ना. प. ४।४६ अ. मा. ४ त्रि.म.ना.७।११
ॐ श्री ह्रीं नमो भगवते लक्ष्मीना- रायणाय विष्णवे	ना. पू. ३।३	ॐ हंसः सोहम् ॐ हि ॐ हि ॐ हीत्येतदुपनिषदं विन्यसेत्	अ. मा. ४ त्रि.म.ना.७।११
ॐ लङ्कार धर्मार्थ कामद बल सप्तचत्वारिंशोऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४	ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदने...	आरुणि. ५
ॐ सङ्कुर्याय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुह. २।६	ॐ ह्रीं दुर्गेशाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो...	विष्णुह. २।१९
ॐ लङ्कार सर्वकारण सार्ववर्णि- काष्टचत्वारिंशोऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४ कालाभि. ५	ॐ ह्रीं दुर्गेशाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो...	अ. मा. ४
ॐ सत्यमित्युपनिषत्	नृसिंहो. ९।९	ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदने...	वनदु. १६०
ॐ सत्यं तदेतत्पण्डिताएव पश्यन्ति	विष्णुह. २।२३	ॐ ह्रीं दुर्गेशाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो...	वनदु. १६०
ॐ सद्योजाताय पुरुषाय पुरुष- रूपाय वासु...नमो नमः	गोपालो. ३।१० ना. प. ४।४७	ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदने...	सावित्र्यु. १२
ॐ समानात्मने ॐ तत्सर्वसुखः सुवः	शांतिपाठः	ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदने...	त्रि. म. ना. ७।९
ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहा	त्रि.म.ना.७।१०	ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदने...	लांगूलो. ६
ॐ सह नावतु, सह नौ भुनक्तु...	विष्णुह. २।३	ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदने...	त्रि. म. ना. ७।९
ॐ सुदर्शन महाचक्राय कीमरूपाय ...स्वाहा		ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदने...	
ॐ सुवः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय		ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदने...	

अ

अ इति ब्रह्म । तत्रागतमहमिति अ क च ट त प य शान् सृजते अकथ्यं सुखमुत्तमम् अकरणमलक्षणं अकर्तारं च पश्यति अकर्ता विज्ञाता भवति अकर्ताऽहमभोक्ताऽहम् अकर्तृकसरङ्गं च गगने चित्रमुत्थितं अकर्मणश्च बोद्धव्यं अकर्मणि च कर्म यः अकर्म मंत्ररहितम् अकर्मा स्वामीव स्थितः अकलोऽमृतो भवति अकल्पकमजं ज्ञानं ज्ञेयभिन्नं प्रचक्षते अकल्पितभिक्षाशी	१ ऐत. ३।८।६ त्रि. ता. १।५ वैतथ्य. ४७ नृसिंहो. ९।९ भ. गी. १३।३० छां. उ. ७।९।१ अध्यात्मो. ६९ महो. ५।५४ भ. गी. ४।१७ भ. गी. ४।१८ ना. प. ३।८ परब्र. १ प्रश्नो. ६।५ अद्वैतो. ३३ निर्वाणो. १	अकस्मान्मुद्गरदण्डायैस्ताडितवद्भया- ज्ञानाभ्यां... अकाण्ड इवेमा न ह वै परमित्था कश्चनाश्रोति अकाममस्थिरत्वं चञ्चलत्वं... अकामयत बहु स्यां प्रजायेयेति अकामयमानो योऽकामः अकामो निष्काम आप्तकामः अकायमव्रणमन्त्राविरं अकायो निर्गुणो ब्रह्मात्मा, तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु अकार उकार मकार इति अकार उकारो मकार इति त्र्यक्षरं प्रणवं तदेतदोमिति अकार उकारो मकार इति [ॐ कारः]	पैङ्गलो. २।९ आर्षे. ८।१ मैत्रा. ३।५ शाण्डि. ३।१।३ बृह. ४।४।६ बृह. ४।४।६ ईशा. ८ २ शिवसं. २२ माण्डू. ८ आ. प्र. १ नारा. ४
--	---	--	--

अकार उकारो मकार एते		अकारेणेममात्मानमन्विष्य	नृसिंहो. ७।१
प्रणवमयोर्ध्वपुण्ड्राः	वासुदे. ४	अकारेणेममात्मानमुकारं	
अकार उकारो मकारश्चेति त्रयो वर्णा-		पूर्वार्द्धमाकृष्य...	नृसिंहो. ७।१
स्यो वेदास्यो लोकाः...		अकारे तु उयं प्राप्ते प्रथमे प्रणवांश्चे	व्या. वि. १०
एवं प्रणवः प्रकाशते	यो. चू. ७४	अकारे रेचितं पञ्चमुकारेणैव...	१ यो. त. १३८
अकारतुरीयांशाः प्रथमद्वितीयतृतीय-		अकारे लीयते ब्रह्मा सुकारे...हरिः	यो. चू. ७७
भूमिकाः	बराहो. ४।१	अकारे बहिरित्याहुः सुकारे हृदि...	न. वि. ६९
अकारणं परं ब्रह्मोम्	नारा. ४	अकारे शोचितं पञ्चमुकारेणैव भिद्यते,	
अकारमात्रं विश्वः स्यात्	अक्षुप. ४७	मकारे लभते नादमर्धमात्रा तु	२ योगत. १०
अकारमिममात्मानमुकारपूर्वार्धं	नृसिंहो. ७।१	निश्चला	न. वि. ७१
अकारमूर्तः रक्ताक्षी...वाला गायत्री	शाण्डि. १।६।१	अकारे संस्थितो ब्रह्मा सुकारे...हरिः	गायत्रीर. ३
अकारश्चायुतावयवान्वितः [तुरीयो. १+]	ना. प. ८।३	अकारोकारमकाररूपोदात्तादिस्वरा-	
अकारस्थूलांशो जाग्रद्विश्वः	बराहो. ४।१	रिमका (गायत्री)	
अकारस्य शरीरं तु व्याख्यातं	१ प्रणवो. ४	अकारोकार-मकारार्धमात्रानादविन्दु-	
अकारं परं ब्रह्म ओम् [पाठः]	नारा. ४	कलाशक्तिश्चेति (ॐकारोऽष्टधाभिद्यते)	ना. प. ८।२
अकारं ब्रह्माणं नाभौ	नृसिंहो. ३।४	अकारोकारमकारनादविन्दुकलानु-	
अकारमुकारं पूर्वार्धमाकृष्य...[पा.]	नृसिंहो. ७।१	सन्धानध्यानाष्टविधा अष्टाक्षरं	
अकारः पीतवर्णः स्याद्रजोगुण		भवति	ना. पू. ता. १।३
उदीरितः	ध्या. वि. १२	अकारोकारमकाराः (पाठः)	वासु. ४
अकारः प्रथमकूटाक्षरो भवति	श्रीवि. ता.	अकारोकाररूपोऽस्मि	मैत्रे. उ. ३।११
अकारः प्रथमाक्षरो भवति [रामो. १।२+]	तार. २।१	(तस्मात्) अकारोकाराभ्यामिममा-	
अकारः प्रथमा मात्राऽऽप्रेरादिमत्त्वात्	माण्डू. ९	त्मानमाप्ततममुत्कृष्टतमं चिन्मात्रं	
अकारः प्रथमोकारो द्वितीया मकार-		सर्वद्रष्टारं सर्वसाक्षिणं	नृसिंहो. ५।७
स्तृतीयाऽर्धमात्रा चतुर्थी	ना. प. ८।५	अकारो जाग्रति नेत्रे	यो. चू. ७४
अकारः सद्योजातो भवति	ना. पू. १।३	अकारो दक्षिणः पक्ष उकारस्तूत्तरः स्मृतः	ना. वि. १
अकाराक्षरसम्भूतः सौमित्रिर्विश्वभावनः	रामो. १।३	अकारो नयते विश्वं	आगम. २३
अकाराक्षरसम्भूता वारभवा विश्व-		अकारो मध्यमरूपम्	गणप. ७
भाविता	श्रीवि. ता. १।३	अकारो राजसो रक्तो ब्रह्मा चेतनः	यो. चू. ७५
अकारादभवद्ब्रह्मा जाम्बवानिति-		अकारो वै सर्वा वाक्	१ ऐत. ३।६।७
संज्ञितः	तारसा. २।२	अकार्यकार्यवकीर्णी स्तेनो भ्रूणहा	महाना. ६।८
अकारादि स्वराभ्यक्षं पञ्चब्रह्मात्मकं		अकीर्तिकरमर्जुन	भ. गी. २।२
बृहत्	पं. ब्र. १५	अकीर्तिं चापि भूतानि	भ. गी. २।३४
अकारादिक्षकारान्तवर्णजातकलेवरं	श्रीवि. ता. १।३	अकुर्वन्वापि कुर्वन्वा जीवः	
अकारादिक्षकारान्तान्यक्षराणि		स्वात्मरतिक्रियः	अ. पू. २।१०
समीरयेत्	१ यो. शि. ३।६	अकृतं कृतात्मा ब्रह्मलोकमभिसम्भवामि	छां. उ. ८।१३।१
अकारादित्रयाणाम्...एकाक्षरं परं		अकृत्वा प्रमादेन...गायत्रीं जप्त्वा...	भस्मजा. १।६
ज्योतिः...प्रणवं...	शाण्डि. १।६।१	अकृत्स्न एव तावन्मन्यते	बृह. १।४।१७
अकारादिस्वराभ्यक्षमाकाशमथविग्रहम्	पञ्चब्र. १५	अकृत्स्नो हि स प्राणमेव प्राणो	
अकारे जाग्रद्विश्वः	प. हं. प. १०	नाम भवति	बृह. १।४।७

अकृत्स्नो हि स प्राणमेव प्राण-

नामा...(मा. पा.)

अकृत्स्नो ह्येष आत्मा यद्वाक्

अकृत्स्नो ह्येषोऽस्य एकैकेन भवति

अकृष्टपच्योपधिवनस्पतिभिः

अक्रिययैव जुष्टम्

अक्रोधाद्या नियमाः सिद्धिबुद्धिकराः

अक्षयोऽक्षोऽय एव च

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सस्त्रायः

[अक्षसं. ८।२।२४मं. १०।७१।७]

अक्षते अच्युते लोकेऽक्षतेऽमृतत्वं च

गच्छत्योम्

अक्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं

अक्षय्यमपरिमित...सुखं

अक्षयं निरञ्जनं

(?) अक्षया क्षान्तिरेव च

अक्षयोऽहमलिङ्गोऽहं

अक्षरत्वाद्दरेण्यत्वात्, ..अवधूत

इतीर्यते

अक्षरमतिशिष्यते, त्र्यक्षरं तत्समम्

अक्षरमनिर्देश्यं कूटस्थमचलं ध्रुवं

अक्षरमहं क्षरमहम्

अक्षरं तमसि विलीयते, तमः परे देवे

अक्षरं दहति सृत्युं दहति

अक्षरं परमं पदं (प्रभु-पा.)

अक्षरं परमं ब्रह्म निर्विशेषं निरञ्जनम्

अक्षरं परमो नादः शब्दब्रह्मेति कथ्यते

+ (?) अक्षरं प्रणवं तदेतदोमिति

अक्षरं ब्रह्म परमं

अक्षरं ब्रह्म यत्परम्

अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्

अक्षरं भित्त्वा सृत्युं भिनक्ति

अक्षरं वा एषः (आत्मा)

अक्षरं वाऽन्नं सृत्युरन्नादः

(?) अक्षरं वेदयते यस्तु

अक्षरः शुद्धः पूतोभान्तःक्षान्तःशान्तः

अक्षराज्जायते कालः कालाद्यापक

उच्यते

अक्षराणामकारोऽस्मि

बृह. १।४।७

१ ऐत. ३।५।३

वृ. उ. १।४।७

आश्रमो. ३

निर्वाणो. ७

शिवो. ७।१०१

भ. गी. २।२४

ना. पू. ता. ४।९

आत्मप्र. १

बटुको. २३

मैत्रा. ६।३०

निर्वाणो. १

वैतथ्य. ४०

त्र. वि. ८३

१ अवधू. १

छां. २।१०।३

त्रि. म. ना. ७।७

अ. शिरः १।१

सुबालो. २।२

सुबालो. १।५।२

महाना. ९।१

१ यो. शि. ३।१६

१ यो. शि. ३।२

आत्मप्र. १

भ. गी. ८।३

कठो. ३।२

महाना. ११।६

सुबालो. ११।२

शौनको. १।६

सुबालो. १४।१

प्रभो. ४।१०

मैत्रा. ७।६

बटुको. २६

भ. गी. १०।३३

अक्षरादपि चोत्तमः

अक्षराद्विधाः सौम्य भावाः प्रजायन्ते

अक्षराणां न्यासमुपदिशन्ति ब्रह्मवादिनः

अक्षराणां सायुज्यं सरूपतां सलोक-

तामश्नुते पुत्री...

(हि) अक्षरात् परतः परः

अक्षरात्मा चिदात्मकः

अक्षरात्सञ्जायते कालः

(तथा) अक्षरात् सम्भवतीह विश्वम्

अक्षरे खल्विमे अविकर्षजनेकीकुर्वन्

अक्षरेभ्यः पदानि स्युः पदेभ्यो

वाक्यसम्भवः । सर्वे वाक्यात्मका

मन्त्रा वेदशास्त्राणि सर्वशः

अक्षरोऽहमस्मिन्

अक्षरोऽहमोङ्कारोऽयमजरोऽमरो-

ऽमयोऽमृतो ब्रह्माभयं हि वै

अक्षसूत्राङ्कुशधरा पाशपुस्तकधारिणी

(?) अक्षाध्यक्षोऽवदातमनाः

अक्षिणि पुरुषो दृश्यत एष आत्मा

अक्षिणि पुरुषो दृश्यते...तदुक्तं

अक्षिणी निरभिद्येतामक्षिभ्यां चक्षुः

अक्षिण्युपस्थितो हि पुरुषः सर्वाङ्गेषु

चरति

अक्षिण्यवस्थितो...(पा.)

अक्षितमस्यच्युतमसि

अक्षिरूपन्दं च दुस्खप्नं...सदानाशय

अक्षिभ्यां चक्षुश्चक्षुष आदित्यः

अक्षुब्धा निरहङ्कारा द्वन्द्वेष्वननुपा-

तिनी । प्रोक्ता समाधिशब्देन

मेरोः स्थिरतरा स्थितिः

अक्षेत्रज्ञा उपर्युपरि सञ्चरन्तः

अक्षयन्तस्तारकयोश्चन्द्रसूर्यप्रतिफलनं...

अखण्डचिद्ब्रह्मानन्दस्वरूपं (ब्रह्म)

अखण्डपरमानन्दविशेषं

अखण्डबोधोऽहमशेषसाक्षी

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं

अखण्डलक्षणाखण्डपरिपूर्णसम्बिदा-

नन्दस्वप्रकाशं भवति

भ. गी. १५।१८

मुण्ड. २।१।१

नृ. पू. २।२

३ ऐत. २।२।३

मुण्ड. २।१।४

ते. वि. ४।७८

अ. शिरः ३।१५

मुण्ड. १।१।७

३ ऐत. १।५।३

१ यो. शि. ३।६

गोपालो. २।१४

गोपालो. २।१४

सरस्व. २७

मैत्रा. ६।१

छां. ४।१५।१

छां. व. १।७।५

२ ऐत. १।४

मैत्रा. ६।६

मैत्रा. ६।६

छां. ३।१७।६

वनदु. १६

२ ऐत. १।४

अ. पू. १।४९

छां. उ. ८।३।२

(?) त्रि. म. ना. ४।१

त्रि. म. ना. ७।८

कुंडिको. १७

मठान्ना. २

त्रि. म. ना. ४।१

अखण्डगुह्यचैतन्यनिजमूर्तिविशेषविग्रहं	त्रि.म.ना.७।८	अखण्डैकरसं स्थूलं	ते. बि. २।११
अखण्डाकारमस्यहं	मैत्रे. ३।२०	अखण्डैकरसः पविः	ते. बि. २।१३
अखण्डाकाशरूपोऽग्निः	मैत्रे. ३।२०	अखण्डैकरसः पिना	ते. बि. २।१३
(भगवन्) अखण्डाद्वैतपरमानन्द-		अखण्डैकरसः शान्तः	ते. बि. २।१८
लक्षणपरब्रह्मणः साकारनिराकारौ		अखण्डैकरसादन्यन्नास्ति	ते. बि. २।९
विरुद्धधर्मौ	त्रि.म.ना.८।२	अखण्डैकरसानन्दस्तारकब्रह्मवाचकः	रामो. ५।२
अखण्डाद्वैतपरमानन्दलक्षणपरब्रह्मणः		अखण्डैकरसान्नास्ति	ते. बि. २।१०
परममूर्तिपरमतेजःपुंज...	त्रि.म.ना.७।८	अखण्डैकरसा भूमिः	ते. बि. २।३
अखण्डानन्दतेजोराश्यन्तर्गतं	त्रि.म.ना.७।९	अखण्डैकरसा माता	ते. बि. २।१३
अखण्डानन्दतेजोराश्यन्तरस्थितं	त्रि.म.ना.७।९	अखण्डैकरसा विशा	ते. बि. २।८
अखण्डानन्दनिरस्तसर्वहेतुकप्रमलः	मं. ब्रा. ३।३	अखण्डैकरसास्ताराः	ते. बि. २।१७
अखण्डानन्दपीयूषपूर्णब्रह्ममहार्णवे	अध्यात्मो. ६६	अखण्डैकरसो गुरुः	ते. बि. २।६
अखण्डानन्दपूर्णः कृतार्थो भवति	मं. ब्रा. ३।२	अखण्डैकरसो जीवः	ते. बि. २।४
अखण्डानन्दब्रह्मचैतन्याधिदेवतास्वरूपं	त्रि.म.ना.७।८	अखण्डैकरसो ज्ञाता	ते. बि. २।१२
अखण्डानन्दमात्मानं विज्ञाय	अध्यात्मो. २७	अखण्डैकरसो देहः	ते. बि. २।७
अखण्डानन्दविग्रहः	मैत्रे. ३।८	अखण्डैकरसो बन्धुः	ते. बि. २।१९
अखण्डानन्दस्वभावमप्रमेयं		अखण्डैकरसो ब्रह्मा	ते. बि. २।५
(आत्मानमपरोक्षीकृत्य)	व. सू. उ. ९	अखण्डैकरसो मन्त्रः	ते. बि. २।२
अखण्डानन्दस्वरूपमनिर्वाच्यं	त्रि.म.ना. ७।७	अखण्डैकरसो रविः	ते. बि. २।१७
अखण्डानन्दामितवैष्णव... विष्णोः		अखण्डैकरसो रुद्रः	ते. बि. ३।३५
परमपदं विराजते	त्रि.म.ना. १।४	अखण्डैकरसो वाऽइं	ते. बि. ५।७
अखण्डानन्दासुतविशेषं	त्रि.म.ना. ७।७	अखण्डैकरसो विराट्	ते. बि. २।१४
अखण्डैकरसं किञ्चित्	ते. बि. २।९	अखण्डैकरसोऽस्म्यहं	ते. बि. २।५
अखण्डैकरसं गुह्यं	ते. बि. २।१२	अखण्डैकरसो हरिः	ते. बि. २।५
अखण्डैकरसं गृहं	ते. बि. २।१६	अखण्डैकरसो होमः	ते. बि. २।२३
अखण्डैकरसं गोत्रं	ते. बि. २।१६	अखण्डैकरसो ज्ञात्मा	ते. बि. २।६
अखण्डैकरसं चान्तः	ते. बि. २।१५	अखिलकार्यकारणस्वरूपं (ब्रह्म)	त्रि.म.ना. ४।१
अखण्डैकरसं जगत्	ते. बि. २।१	अखिलप्रमाणातीतं	त्रि.म.ना. ७।७
अखण्डैकरसं ज्योतिः	ते. बि. २।२२	अखिलप्रमाणागोचरं ब्रह्म	त्रि.म.ना. १।३
अखण्डैकरसं दृश्यं	ते. बि. २।१	अखिलमिदमनन्तमात्मतत्त्वं	अ. पू. १।५५
अखण्डैकरसं ध्यानं	ते. बि. २।२१	अखिलात्मा ह्यमेयात्मा...	ते. बि. ४।७०
अखण्डैकरसं ब्रह्म	ते. बि. २।४, ४१	अखिलापवर्गपरिपालकं (विष्णुवसेनं)	त्रि.म.ना. ६।६
अखण्डैकरसं मनः	ते. बि. २।७	अगदो ह भवति	छां. उ. ३।१६।४
अखण्डैकरसं राज्यं	ते. बि. २।२०	अगदो ह्यैव भवति	छां. उ. ३।१६।२
अखण्डैकरसं सर्वं	ते. बि. २।२८	अगन्मज्ज्योतिरुत्तमं [क्र.मं. १।५०।१०	छां. उ. ३।१७।७
अखण्डैकरसं सर्वं चिन्मात्रमिति		अगमयेति स यदाहासतो मागमयेति	बृह. १।३।२८
भावयेत्	[२।२४	(?) अगम्यगम्यकर्ता च (पा.)	ते. बि. १।४
अखण्डैकरसं सुखं	ते. बि. २।२७	अगम्यागमकर्ता यो गम्यागमन-	ते. बि. १।४
अखण्डैकरसं सूत्रं	ते. बि. २।१४	मानसः । मुखे...	ना. उ. ३।१
		अगम्यागमनात्पूतो भवति	

अगुणमविक्रियमव्यपदेदयं

अगस्त्यः कलशे जात इति श्रुतत्वात्

अगृह्यो नहि गृह्यते [बृ. उ. ३।१।२६+

४।२।४+४।४।२२

अगोचरं मनोवाचापवधूतादिसम्प्लवम्

अगोचरे यदा लीला

अगोत्रमजरमभयममृतमरजोऽशब्दं

अगोत्रमवर्णमचक्षुःप्रोत्रं

अगोत्रोऽहमगात्रोऽहं

अमआयाहि वीतये इत्येव...कृत्वा

साम...अधीते

अम आयुषि पवस आसुवोर्जमिषं च

नः[ऋक्सं. ७।२।१०=मं. ९।६६।१९ सहवै. ६

अमय इत्याह तस्मादमय आधातव्याः

अमयश्च स्वाध्यायप्रवचने च

अमये स्वाहाऽनुमतये स्वाहा देवाय

सवित्रे सत्यप्रसवाय स्वाहेति हुत्वा

अमयो वै त्रयी विद्या देवयानः पन्थाः

अमावाज्यस्य हुत्वा मन्ये...अवनयेत्

अमावेव देवेषु लोकमिच्छन्ते

अग्निना दाहो हिमसेचनमिव (यत्र)

अग्निदले रक्तवर्णे यदा विश्राम्यते मनः

अग्निना प्रज्वलिता रज्जुर्दृश्यमाना

अग्निरेवाभाति

अग्निना मुखेन न वै देवा अभन्ति...

अग्निना वै होत्रा चक्रं पाञ्चजन्यं...

धारयेत्

अग्निनैव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति

अग्निनैवाग्नमत्ति (पा.)

अग्निनैवायं ज्योतिषास्ते पत्ययते...

अग्निमात्मन्यारोप्य

अग्निमिच्छध्वं भारताः

अग्निमीडे(ले)पुरोहितं[ऋक्सं. १।१।१]

इत्येवमार्दि कृत्वा ऋग्वेदमधीते

अग्निमुपसमाधाय [बृ. उ. ६।३।१+

कौ. उ. २।३, १५

अग्निमेवाप्येति योऽग्निमवास्तमेति

अग्निमेवेतरेण सर्वेण

अग्निरन्नादः

अग्निराकाशेनाह्वयति

नृसिंहो. ९।९

व. सू. ५

+४।५।१५

मैत्रे. १।१४

२ तत्त्वो. ६

बृ. उ. (१)

मुं. १।१।६

प्र. वि. ८४

२ प्रणवो. २१

सहवै. ६

महाना. १६।१२

तैत्ति. १।९।१

बृ. उ. ६।४।१९

महाना. १७।८

छां. उ. ५।२।४

बृ. उ. १।४।१५

महो. ४।२६

विश्रामो. २

सामर. ३२

छान्दो. ३।६।१

सुदर्श. ४

छान्दो. ३।६।३

मैत्रा. ६।१०

बृह. ४।३।४

प. हं. प. ५

अरुणो. १

२ प्रणवो. २१

२ सङ्ख्यासो. १

सुबालो. ९।६

सहवै. २२

बृह. १।४।६

छां. ७।१२।१

अग्निरिति भस्म, वायुरिति भस्म...

[अ. शिरः ३।१।२+ जाबाल्यु. ६,

+का. रुद्रो. २+रुद्रो. +२ वदुको. २४

अग्निरित्यादिमन्त्रेण प्रमृज्य (भस्म)

अग्निरिन्द्रो विष्णुः...कर्मन्दित्र्यदेवताः

अग्निरिव कक्षं दहति ब्रह्मपृष्ठमना-

वृतम्...

अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व

[ऋक्सं. ८।३।१९=मं. १०।८४।२+

अग्निरिवाग्निना विहितः

अग्निरिवाधूमकस्तेजसा निर्वहन्निवा-

त्सविद्वगवाञ्छाकायन्यः

अग्निरीकारः

अग्निरूपं प्रणवं सन्दध्यात्

अग्निरूपाअन्नपानादिप्राणिनांक्षुत्तृष्णा

त्मिका...नित्यानित्यरूपा भवति

अग्निरेनास्वदनायतीदमाहरतेति

अग्निरेव सविता पृथ्वी सावित्री

अग्निरेवाऽस्य ज्योतिर्भवति

अग्निर्ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरो-

हितः[सहवै. ७ +ऋक्सं. ७।२।१०=

अग्निर्गायत्रं त्रिवृद्रथन्तरं...

तपन्ति वर्षन्ति

अग्निर्ज्योतिरिहः शुक्रः

अग्निर्ज्योतिरित्यादिभिरमौ जुहुयात्

अग्निर्देवता ब्रह्म इत्यार्ष

अग्निर्द्विहोता

अग्निर्धूमः (तस्य)

अग्निर्भस्मेति मन्त्रेण गृहीयाद्भस्म

अग्निर्मा तस्मादिन्द्रश्च संविदानौ

प्रमुञ्चतां

अग्निर्मा तस्मादेनसो गार्हपत्य...

अग्निर्मा तस्मादेनसो गार्हपत्यः प्रमुञ्चतु

अग्निर्मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या

अयम् [ऋक्सं. ६।३।३९।१=

मं. ८।४४।१६

अग्निर्यजुर्भिः

अग्निर्यत्राभिमथ्यते

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं

प्रतिरूपो बभूव [कठो. ५।९+

भस्मजा. १।३

बृ. जा. ३।२६

ग. शो. ४।४

संहितो. ३।७

वनदु. १०८

मैत्रा. ६।८

मैत्रे. १।१।२

छां. १।१३।१

रामो. ३।४

सीतो. ८

१ ऐत. १।७।१

सावित्र्यु. १

बृह. ४।३।४

मं. ९।६६।२०

मैत्रा. ७।१

भ. गी. ८।२४

भस्मजा. २।३

महाना. ११।५

चित्यु. ७।१

बृ. उ. ६।२।११

बृ. जा. ३।२६

सहवै. ९

सहवै. १०

सहवै. ४

मुण्ड. २।१।४

वनदु. २९

चित्यु. ८।१

श्वेता. २।६

बृ. जा. २।१

अग्निर्व्यष्टयश्चेतयः स्तोतव्यो-

ऽभिध्यातव्यः

अग्निर्लोको मनो ज्योतिः

अग्निर्वा अग्नेनाभिज्वलति

(१) अग्निर्वा अग्नेनोज्ज्वलति

अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्रादिशत्

अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्रादिशत्

(अथ) अग्निर्वायुरादित्य इति

भास्वत्येषा

अग्निर्वायुरादित्यः कालो यः प्राणोऽन्नं

अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमा नक्षत्राणि

अग्निर्वायुरादित्यः स उद्गीथः

अग्निर्वै देवाः (वेदाः) सर्वविश्वाभूतानि

प्राणावा इन्द्रियाणि पञ्चोऽन्नममृतं

सम्राट् स्वराड्विराट् तत्साम्नः

प्रथमं पादं जानीयात्

अग्निर्वै भर्गः

अग्निर्वै भीतस्तिष्ठति

अग्निर्वै मुखात् (अजायत)

अग्निर्वै मृत्युः सोऽपामन्नं

अग्निर्वै वरेण्यम्

अग्निर्वै वेदा इदं सर्वं...तत्साम्नः

प्रथमं पादं जानीयात्

अग्निर्ह वै प्राणः प्राणमेव तथा करोति

अग्निर्हि प्राणः प्राणमेवैतया करोति

[+ना. प. ३।७७

अग्निर्हिङ्गारः

अग्निर्होता

अग्निलोकमागच्छति स वायुः

अग्निलोकाद्वायुलोकं

अग्निवर्णं निष्कामति...वनं गच्छति

संयतः

अग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षं

चादित्यश्च द्यौश्च चन्द्रमाश्च

नक्षत्राणि चैते वसवः, एतेषु...

अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च...

सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा

अग्निश्च हव्यवाहनस्तदिदं

अग्निश्चोमे पार्श्वे भवतः

मैत्रा. ६।२४

बृह. ३।९।१०

मैत्रा. ६।१२

मैत्रा. ६।१२

२ ऐत. २।४

केनो. ३।४

मैत्रा. ६।५

मैत्रा. ४।५

तैत्ति. १।७।१

छां. २।२१।१

नृ. पू. १।४

सावित्र्यु. १०

ग. शो. ४।५

ग. शो. ३।११

बृह. ३।२।१०

सावित्र्यु. १०

ग. पू. २।१

जावा. ४

याज्ञव. १

छां. उ. २।२०।१

चित्त्यु. ३।१

कौ. उ. १।३

दुर्वासो. १।१५

२ सत्र्यासो. ७

बृह. ३।९।३

महाना. ११।३

इतिहा. ५

हंसो. ५

अग्निष्टपकंमुखं तेनमुखेनेमं...अस्ति

अग्निष्टत् रिष्टकृद्विद्वान् रिष्टं सुहुतं

करोतु नः स्वाहा

अग्निष्ट पादं वक्तेति

अग्निष्टोमसहस्राणि...तेषां पुण्य-

मवाप्नोति

अग्निसंस्थानि पूर्वाणि दारुषात्राण्यग्नौ

जुहुयात्

अग्निस्तां अग्ने प्रमुमोक्तु देवः

अग्निस्तृप्यत्यग्नौतृप्यतिपृथिवीतृप्यति

अग्निस्थाने पित्तं

अग्निहोत्रमसिताच्छिवभक्त...

अग्निहोत्रमित्याहुतस्मादग्निहोत्रेरमन्ते

अग्निहोत्रसमुद्भूतं विरजानलमनुकल्पं

अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रवचने च

अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः

अग्निहोत्रं जुह्वानो लोभजालं भिनत्ति

अग्निहोत्रं बलीवृद्धाः कालेचातिथिरागताः

निर्वहन्त्यवमानिताः

अग्निहोत्रे समूदाते

अग्निहोत्रं सायम्प्रातर्गृहाणां निष्कृतिः

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं;

अस्य यज्ञस्य...[ऋक्सं. १।१।२२

=मं. १।१२।१

अग्निं पृथिव्याः (प्राबृहत्)

अग्निं प्रणीयोपसमाधाय द्विशज्यो-

पधातं जुहोति

अग्निं प्रपद्ये वायुं प्रपद्ये आदित्यं प्रपद्ये

अग्निं युगपदानीय धारयेत् प्रयत्नतः

अग्निं वागप्येति

अग्निं स्तंभयति सूर्यं स्तंभयति

अग्निं हृदयेन

अग्निः कला सूर्यः कला चन्द्रः कला

विशुत्कलैष वै सौम्य चतुष्कलः पादः

अग्निः पुच्छस्य प्रथमं काण्डं

अग्निः पूर्वरूपम्

अग्निः प्रतिहारः

अग्निः प्रस्तावः

अग्निः सवितुश्च रश्मयः पुनन्त्वन्नं...

यदन्यत्

कौ. उ. २।९

वृ. उ. ६।४।२४

छान्दो. ४।६।१

गोपीचं. १९

कठमु. २

चित्त्यु. ११।११

छां. ५।२१।२

गर्भो. २

कद्रोप. १

महाना. १६।१२

बृ. जा. ३।३४

तैत्ति. १।९।१

मैत्रा. ६।३६

मैत्रा. ६।३८

इतिहा. २१

बृह. ४।३।१

महाना. १७।९

वनदु. ४०, ५३

छां. उ. ४।१७।१

सहवै. २२

छां. उ. ३।१५।६

शिवो. ७।७१

बृ. उ. ३।२।१३

ग. शो. ५।१

चित्त्यु. २१।१

छां. उ. ४।७।३

सहवै. २३

तै. उ. १।३।४

छां. उ. २।२।२

छां. उ. २।२।१

मैत्रा. ६।९

अग्निः साम तदेतदेतस्यामृचि...

अग्निरमः

अग्नीषोमात्मकं जगत् [च.जा. २।५+

रामपू. ४।६+

अग्नीषोमात्मकरूपं रामवीजे प्रतिष्ठितं

अग्नीषोमौ पक्षाबोद्धारः शिरः

अग्नीषोमात्मकं विश्वमित्यग्निराचक्षते

अग्ने अत्रिक्वमसा गृणानः [ऋ.सं.

अग्ने जातान् प्रणुदानः सपत्नान्...

जातवेदो नुवस्व

अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्

[महाना. ६।१५+

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्

[ऋक्सं. २।५।१०।१=

ईशा. १८+

अग्ने एवस्वस्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यं

[ऋक्सं. ७।२।११=मं. ९।६।२१

अग्ने यो नोऽभितो जनो वृको वारो

जिघांसति

अग्ने यो नो भिदासति समानो यश्च

अग्नेरधश्चेज्ज्वलनं जगद्भवतु सर्वदा

अग्नेरमृतनिष्पत्तिरमृतेनाग्निरेधते

अग्नेरिष ज्वलत्त उपजृणोति

अग्नेरापः, अद्भ्यः पृथिवी

अग्नेरापः [तै.उ. २।११।१+सुबा. १।१+

पैङ्ग. १।३+

अग्नेरिव शिखा नान्या यस्य ज्ञानमयी

शिखा। स शिखीत्युच्यते विद्वान्नेतरे

केदाधारिणः [ब्रह्मो. १२+परब्र. १४+

अग्नेरुद्गीथः

अग्नेरुपरि जलं स्थाप्य जलोपर्यन्ना-

दीनि संस्थाप्य...तेनैव सह

मारुतः प्रयाति.

अग्नेरुपासकास्ते यज्ञकर्मवासना-

श्मक...उत्पत्तिं भजन्ते

अग्नेरुर्ध्वं मवत्येषा यावत्सौम्यं

परामृतम्

अग्ने रूपं स्पर्शाः, वायोरूष्माणः,

आदित्यस्य स्वराः

अग्नेरोद्धारोऽभवत्

छां.उ. १।६।१

ऋग्व. ९

रामपू. ५।१०

हंसो. ६

च.जा. २।२१

महाना. ६।१६

सहवै. ७

वनदु. ११६

मं. १।१८९।१

बृह. ५।१५।१

सहवै. ६

सहवै. ७

सहवै. ७

ते. वि. ६।८३

च.जा. २।५

छां.उ. ३।१३।८

ना. उ. १।५

यो. चू. ७२

ना.प. ३।८४

छां.उ. २।२२।१

शाण्डि. १।४।८

सामर. ९९

च.जा. २।७

३ऐत. २।५।१

गायत्रीर. १

अग्नेर्ज्योतिर्निचाप्य पृथिव्या

अध्याभरत्

अग्नेर्भस्मासीति भस्म संगृह्य

अग्नेर्मथनं, आज्ञेः सरणं, दृढस्य

धनुष आयमनं

अग्नेर्यदौष्ण्यमाविष्टं

अग्नेर्वीर्यं च तद्भस्म सोमेनाप्लावितं

अग्नेर्वीर्यमिदं प्राहुस्तद्वीर्यमस्मयत्ततः

अग्नौ चाधूमके यज्ज्योतिश्चित्रतरं

अग्नौ तु चालिते कुक्षौ वेदना जायते

अग्नौ तृप्यति पृथिवी तृप्यति

अग्नौ पुरुष एतमेवायं ब्रह्मोपासे

अग्नौ पुरुषत्वमेवाहमुपासे

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते

अग्नौ सन्धारयेद्विज्जमग्निना दहते न सः

अग्नौ हुत्वा मन्ये संस्त्रवमवनयति

अग्न्ययस्कारादयो नाभिभवन्ति...

अग्न्यंशे च महेशानमीश्वरे

चानिलांशके

अग्न्युपासका ये ब्राह्मणा ब्रह्मवर्चसो-

पासका एव ते

अग्न उ एवोभयम्, अन्तरेणोभयं

व्याप्तं भवति

अग्नं च मध्यं च बहिश्च पुरस्ताज्ज्यो-

तिरित्यहमेव

अग्राह्यमचलं ध्रुवं...

अग्राह्यमगोत्रमव्रणं...

अग्राह्यमलक्षणं [ग. शो. १।४+

अग्राह्यमलक्षणमचिन्त्य-

मव्यपदेश्यं [नृ. पू. ४।२+

अग्राह्यमव्यवहार्यं स्वांतःस्थितः

स्वयमेव

अग्ने कामदुघा, षट्कोणे सुमुखादयः

अग्नेधृतोऽर्थनाशाय मध्ये चैव प्रजाक्षयः

अग्ने पर्वाणि चत्वारि...मध्ये पर्वा-

ण्यथाष्टौ च

अग्ने मध्यस्थमध्यस्थं मूले मध्यस्थ...

मध्ययोः

अग्ने मध्येऽवसाने सर्वं यथावस्थितं

श्वेता. २।१

भस्मजा. १।५

छां.उ. १।३।५

मैत्रा. ६।३१

च.जा. २।१३

च.जा. २।११

मैत्रा. ६।१७

वराहो. ५।८

छां.उ. ५।२१।२

च. उ. २।१।७

कौषीत. ४।८

मैत्रा. ६।३७

१यो. शि. ५।५०

बृ. उ. ६।३।२

मैत्रा. ६।२७

जा. द. १०।६

सामर. ७५

३ ऐत. १।३।२

अ. शिरः १।१

अमन. १।११

मुण्ड. १।६

रामो. २।४

नृसिंहो. १।६

ना.प. ९।२०

ग.पू. २।१०

३ आत्मो. १

३ आत्मो. ३

३ आत्मो. २

स्वसंवे. १

अग्ने मध्यस्थमप्यस्थं...धारयित्वा		अङ्गारावर्तनं चन्दनचर्चव (यत्र)	महो. ४।२६
प्रयत्नेन	३ आत्मो. २	अङ्गारेह सयुग्वानमिव रैफमास्थेति	छां. उ. ४।१।५
अग्ने माहिषिकं दृष्ट्वा...निगशाः		(१) अङ्गिरसश्चन्द्रमा ऊर्ध्वा उद्यन्ति	मैत्रा.
पितरो गताः	इतिहा. ७१	अङ्गिरसं मन्यतेऽङ्गानां यद्रसः	छां. उ. १।२।१०
अघस्य त्वा धारया विध्यामि	वनदु. १६०	अङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः	मुं. उ. १।१।३
अघायुरिन्द्रियारामः	म.गी. ३।१६	अङ्गिरसो विष्णिष्यैरग्निभिः	चिन्त्यु. ८।१
अघासुरो महाव्याधिः	कृष्णो. १५	अङ्गीभवति, नाङ्गेन विमूर्च्छति	छां. उ. २।१९।२
अघोरबीजमंत्रेण करयोर्धारयेत्सुधीः		अङ्गुलिस्फोटनं कुर्यात् सा मात्रा	
(रुद्राक्षं)	रु. जा. २२	परिगीयते	१ यो. त. ४०
अघोरं सलिलं चन्द्रं...दक्षिणाग्नि-		अङ्गुल्यग्रे देवतीर्थं, कनिष्ठिकामूले	
रुद्रादृतम्	पथ्यप्र. ३	भार्षिकं	आचम. २
अघोरः सर्वसाधारणस्वरूपः	पा. प्र. २	अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां तु हस्ताभ्यां धारयेद्दण्डं	योगकुं. १।१२
अघोरेण (मंत्रेण) गले धार्यं (रुद्राक्षं)	रु. जा. २१	अङ्गुष्ठतर्जन्योर्मध्ये पैतृकं, अङ्गुष्ठमूले	
अघोराच्छूरास्तत्पुरुषाच्छिवस्य	सि. शि. ९	ब्रह्मतीर्थं	आचम. २
अघोराद्वह्निः, तस्माद्विद्या	बृ. जा. १।५	अङ्गुष्ठप्रादेशशरीरमात्रं प्रदीपप्रताप-	
अघोरा पापकाशिनी (देवस्य तनूः)	शांडि. ३।१।४	वह्निस्त्रिधा हि	मैत्रा. ६।३८
अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः	महाना. १०।६	अङ्गुष्ठमात्रमात्मानं सधूमज्योतिरूपकं ।	
अघोरो मकारो भवति	ना.पू. १।३	प्रकाशयन्तमात्मानं ध्यायेत्कूटस्थ-	
अघोषमव्यञ्जनमस्वरं च	अ. ना. २५	मव्ययम् [पैङ्गलो. ३।५+	योगकुं. ३।२६
अघ्राता रसयिता भवति	मैत्रा. ६।११	अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽङ्गुष्ठंचसमाभितः	महाना. १६।५
अङ्गुशेनविनामत्तो यथादुष्टमतङ्गजः	मुक्तिको. २।४४	अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो ज्योतिरिवाधूमकः	कठो. ४।१३
अङ्गुशो मार्गः	निर्वाणो. ३	अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सप्त	
अङ्गुचेष्टार्पणं बलिः	द. मू. १६	जनानां हृदये सन्निविष्टः [कठो. ६।१७	श्वेता. ३।१३
अङ्गहीनानिवाक्यानिगुरुर्नोपदिशेत्		अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तर्लक्ष्यमित्येके	मं. ब्रा. १।५
पुनः । सषडङ्गान्युपदिशेन्महा-		अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि	
वाक्यानि कृत्स्नशः	शुकर. १।१।४	तिष्ठति	कठो. ४।१२
अङ्गसङ्गं करिष्यामि	कृष्णो. ४	अङ्गुष्ठमात्रो रवितुल्यरूपः सङ्कल्पा-	
अङ्गादङ्गात्सम्भवसिद्धदयादभिजायसे		हङ्कारसमन्वितो यः	श्वेता. ५।८
[बृ. उ. ६।४।९+	कौ. उ. १।११	अङ्गुष्ठमूले ब्रह्मतीर्थं, मध्ये अग्नितीर्थं	आचम. २
अङ्गादङ्गादनुप्राविशत्सर्वान्...भूतये	पारमा. ३।३	अङ्गुष्ठादिस्वावयवस्फुरणादशनेरपि,	
अङ्गानांमर्दनंकृत्वाश्रमसञ्जातवारिणा,		...जानीयात्क्षयमात्मनः	त्रि. ब्रा. २।१२१
कटुम्ललवणत्यागी क्षीरभोजन-	यो. चू. ४१	अङ्गुष्ठावधि गृहीयाद्धस्ताभ्यां	
माचरेत् (क्षीरपानरतः सुखी-पा.)	ध्या. बिं. ७१	...पद्मासनं भवेत्प्राज्ञ	जा. द. ३।५
अङ्गानां समतां विद्यात्	ते. बिं. १।२८	अङ्गुष्ठेन निबन्धीयात् ..पद्मासनं...	शाण्डि. १।३।३
अङ्गानां हि रसः	बृह. १।३।१९	अङ्गैर्यज्ञम्	चिन्त्यु. ४।१
अङ्गानि विना रामा विन्नकरो भवति	हनुम. १।८	अचक्षुर्विश्वतश्चक्षुरकर्णौ...	भस्मजा. २।७
अङ्गानि वेदाश्चत्वारः...विद्या ह्येता-		अचक्षुश्चोत्रनामकं	१ यो. शि. ३।१९
श्चतुर्दश	ना. पू. ५।९	अचक्षुश्चोत्रमत्यर्थं तदपाणिपदं तथा	
अङ्गान्यन्या देवताः	तैत्ति. १।५।१	नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं [रुद्रह. ३१	पा. प्र. ३४
ङ्गारा भवन्ति स प्रतिहारः	छां. उ. २।१२।१	अचक्षुश्चोत्रं तदपाणिपादं	मुं. १।१।६

अचक्षुष्मनामगोत्रमशिरस्कं	सुबालो. ३।२	अच्युतमना उपवक्ता	चित्त्यु. ५।१
अचक्षुष्मगोत्रमवाक्	बृह. ३।८।८	अच्युतश्रितये स्वाहा	महाना. १५।१
अचरं चरमेव च	भ. गी. ३।१६	अच्युतां बहुलां श्रियम्	चित्त्यु. ११।७
अचलममृतमच्युतं ध्रुवं	मैत्रा. ६।३८	अच्युतोऽस्मि महादेव तव कारुण्य...	स्कन्दो. १
अचलश्चालेपोऽव्ययः निस्पृहः	मैत्रा. २।११	अच्युतो विष्णुर्नारायणः	मैत्रा. ७।७
अचलसम्पूर्णभावाभावविहीनकैवल्य- ज्योतिर्भवति	मं. ब्रा. २।६	अच्युतोऽहमचिन्त्योऽहं	प्र. वि. ८१
अचलं परं ब्रह्म प्राप्नोति	मं. ब्रा. ३।१	अच्योष्ठा उत्तराभ्यां स्थानाभ्या- मित्येनं ब्रूयात्	३पेत्. १।३।१
अचलोऽयं सनातनः	भ. गी. २।२४	अच्योष्ठावराभ्यां स्थानाभ्या- मित्येनं ब्रूयात्	३पेत्. १।३।१
अचित्तचित्तमात्मानं	तेजोवि. ९	अज आत्मा महान् ध्रुवः	बृह. ४।४।२०
अचित्तत्वं परं पदम्	महो. ५।६०	अज आत्मा महान् परः (पा.)	बृह. ४।४।२०
अचित्तं चित्तमव्ययं...तच्च लिङ्गं निराश्रयम्	मैत्रा. ६।१९	अजकुक्षौ जगन्नास्ति ह्यात्मकुक्षौ जगन्नहि	ते. वि. ६।९९
अचिन्त्यमतिनिर्मलं	१यो. शि. ३।१७	अजडोगलितानन्दः [अ. पू. ४।१७+	४, ६३
अचिन्त्यमप्रबुद्धं च न सत्यं न परं	ते. वि. १।११	अजत्वादमरत्वादजरत्वादमृतत्वादशो- कत्वादमोहत्वात्...नृसिंहमन्त्रिष्य	नृसिंहो. ७।१
अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमव्ययम्	स्कन्दो. १३	अजपा गायत्री	निर्वाणो. ३
अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तरूपं	कैव. ६	अजपा नाम गायत्री योगिनां मोक्षदा सदा [ध्या. वि. ६३+	यो. चू. ३३
अचिन्त्यमव्यपदेश्यं [ग. शो. १।४+	रामो. २।४	अजय्या (अजेया) वैष्णवी माया	कृष्णो. ५
अचिन्त्यरूपं दिव्यं देवमसङ्गं शुद्धं तेजस्कामरूपं सर्वेश्वरमचिन्त्यम- शरीरं (आत्मानं पश्यन्ति विद्वांसः)	सुबालो. ८।१	अजमजेन ज्ञेयेन सर्वज्ञं	अद्वैतो. ४७
अचिन्त्यशक्तिमान्योगी नानारूपाणि धारयेत् संहरेच्च	१यो. शि. १।४४	अजमनिद्रमस्वप्नं प्रभातं भवतिस्त्रयम्	अ. शां. ८१
अचिन्त्यशक्तिर्भगवान् गिरीशः	शरभो. २१	अजमनिद्रमस्वप्नमनामकं...सकृ- द्विभाति (तं)	अद्वैतो. ३६
अचिन्त्यं गुह्यमुत्तमं	मैत्रा. ६।१९	अजममरमनाद्यमाद्यमेकं पदममलं	अ. पू. ३।२३
अचिन्त्यं चाप्रमेयं च...तन्मे मनःशिव-	२ शिवसं. १२	अजरमभयममृतमरजोऽशब्दम्	बृ. उ. ३।८।८
अचिन्त्यं चिन्मयात्मानं यद्वयोम परमं स्थितम्	ते. वि. १।९	अजरत्वादमृतत्वात्... परमं ब्रह्म...	नृसिंहो. ७।१
अचिन्त्यान्भूतवत्स्पृशेत्	१अ. शि. ३।१७	अजरममरमक्षरमव्ययं प्रपद्ये	कुण्डिको. १४
अचिन्त्यायाप्रमेयाय	मैत्रा. ५।४	अजरममरममृतमभयं (ब्रह्म)	नृसिंहो. १।२
अचिन्त्योऽमूर्तो गभीरो गुप्तोऽनवद्यः	मैत्रा. ७।१	अजरममरमक्षरमव्ययं प्रपद्यते	२सक्यासो. १७
अचिरेणेति भूमित्वं	मैत्रा. ६।२७	अजरममृतमभयमशोकमनन्तं	सुबा. ५।१, १४
अचिरेणाधिगच्छति	भ. गी. ४।३९	अजरममृतमभयं ब्रह्मैव...	नृसिंहो. २।३
अचेतनं चाजडं च (स्वरूपं) तन्मयो-	महो. ५।५०	अजरामरपिण्डो यो जीवन्मुक्तः स एव हि [१यो. शि.	१।१६१
अच्छायमतमोऽवायु (अक्षरं ब्रह्म)	बृह. ३।८।८	अजरोऽमरोऽभयोऽमृतो ब्रह्माभयं हि वै	गोपा. २।१।४
अच्छायमशरीरमलोहितं	प्रभो. ४।१०	अजरोऽमरोऽमृतोऽभयो ब्रह्म	बृ. उ. ४।४।२५
अच्छिद्रया जिह्वा	चित्त्यु. ४।१	अजरोऽमृतो न... कर्मणा	कौ. त. ३।९
अच्छिन्नं तन्तुमनुसंचरेम	सहवै. ९	अजरोऽस्म्यमरोऽस्म्यहं	ते. वि. ३।२१
अच्छेद्योऽयमदाहोऽयं [भ. गी. २।२४+	भवसं. २।३९	अजरोऽस्म्यमरोऽस्मीति	अध्यात्मो. ५५
अच्युतपाजा अमीत	चित्त्यु. ५।१		

अजरोऽहमव्ययोऽहं	आ. प्र. ४	अजायमानो बहुधा मायया जायते	अद्वैतो. २४
अजस्यावकचेतसः	कठो. ५।१	अजायमानो बहुधा विजायते	मुद्रलो. ३।१
अजस्रं व्योतिर्नभसा सर्पदेति	चित्त्यु. ११।८	[यजुस्सं. ३१।१६+तै. आ. ३।१३।३	चित्त्यु. १३।१
अजस्रं ब्रह्मधीयात्म्यं वाऽत्रैव	मैत्रा. ७।११	अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां	
अजस्रं सृजति विसृजति वासयति	नृ. पू. २।५	[महाना. ८।४+	ना. पू. ता. ५।५
अजस्रं सृजति विसृजति वासयत्युद्धा-		अजाऽहमनजाऽहम्	देव्यु. १
ह्यत उद्धृत्यते	नृ. पू. २।४	अजा हिङ्कारः	छां. २।१८।१
अजस्रां त्वासादयामि	चित्त्यु. १५।१	अजा ह्येका भोक्तृभोगार्थयुक्ता	श्वेताश्वो. १।५
अजं ध्रुवं सर्वतत्त्वं विशुद्धं ज्ञात्वा देवं		अजाह्वैः पृथ्वीस्तपस्यमानान् ब्रह्म	
मुच्यते सर्वपाशैः	श्वेता. २।१५	स्वयम्भ्यभ्यानर्षन्	सहस्रै. १३
अजं वरेण्यं वरदं ब्रह्माणमीशं पुरुषं		अजिता हि सदा भूतिः	योगो. २९
नमस्ते	विष्णुह. १।६	अजिह्वः षण्डकः पङ्क्तान्बोवधिर एवच	ना. प. ३।६२
अजं सर्वमनुस्मृत्य	अद्वैतो. ४३	अजीर्यताममृतानामुपेत्य जीयन्मर्त्यः	कठो. १।२८
अजः कल्पितसंवृत्त्यापरमार्थेननाप्यजः	अ. शां. ७४	अजेया वैष्णवी माया	कृष्णो. १।५
अजः स्वतन्त्रः स्वे महिम्नि तिष्ठति	मैत्रा. २।४, ६।८	अजेष्वजमसंक्रान्तं धर्मेण ज्ञानमिष्यते	अ. शां. ९६
अजामन्त्रप्रनिद्रस्य यत्ते रूपं...	महो. ५।५०	अजेतराऽभवद्वस्त इतरः...	बृह. १।४।४
अजाच उमवस्तुत्वं विज्ञानं शान्तमद्वयं	अ. शां. ४५	अजे सौम्ये तु ये केचिन्नविष्यन्ति...	अ. शां. ९५
अजात इत्येवं कश्चिद्भीरुः प्रतिपद्यते	श्वेता. ४।२१	अजोऽनर्क्योऽचिन्त्यः	मैत्रा. ६।१७
अजातमग्ने स हिरण्यरेताः	एकाक्षरो. २	अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः	कठो. २।१८
अजातमभूतमप्रतिष्ठितमशब्दम्	सुबालो. ३।१	(आत्मा) [भ. गी. २।२०+	भवसं. २।३६
अजातशत्रुं काश्यपात्रज्योवाच		अजोऽपि सन्नव्ययात्मा	भ. गी. ४।६
(बालाकिः) [बृह. २।१।१+	कौ. उ. ४।१	अजोऽमरश्चैव तथाऽजरोऽमृतः	मुक्ति. २।७५
अजातस्य कुतो नाशः	अध्यात्मो. ५८	अजोऽसि सहोऽसि बलमसि	
अजातस्यैव धर्मस्य जातिमिच्छन्ति		देवानां धाम नामाऽसि	महाना. ११।७
वादिनः	अ. शां. ६	अजोऽस्मि किमतः परं	स्कन्दो. ३
अजातस्यैव भावस्य जातिमिच्छन्ति		अजो हिङ्कारोऽवयः प्रस्तारो गाव	
वादिनः	अद्वैतो. २०	उद्रीथोऽश्वाः प्रतिहारः पुरुषो निधनं	छान्दो. २।६।१
अजातस्यैव सर्वस्य...	अ. शां. ७७	अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते	महाना. ८।५+
अजातं जायते यस्मादजातिः		[ना. पू. ता. ५।५+	श्वेता. ४।५
प्रकृतिस्ततः	अ. शां. २९	अज्जलौ मन्थमाधाय	छान्दो. ५।२।६
अजाति समतां गतं	अद्वैतो. ३८	अज्ञश्चाश्रद्धानश्च	भ. गी. ४।४०
अजातिं रूपापयन्ति ते	अ. शां. ४	अज्ञस्य दुःखौघमयं ज्ञस्यानन्दमयं	
अजातिः परिदीपिता	अ. शां. १९	जगत्	वराहो. २।२२
अजातिः प्रकृतिस्ततः	अ. शां. २९	अज्ञस्यार्धप्रबुद्धस्य सर्वब्रह्मेति योवदेत्	महो. ५।१०५
अजातेऽसतां तेषां	अ. शां. ४३	अज्ञानचक्षुर्नेक्षेत भास्वन्तं भानु-	
अजातो ह्यमृतो धर्मो मर्त्यतां		मन्धवत् [वराहो. २।१८+	महो. ४।८०
कथ्यतेऽप्यति	अ. शां. ६	अज्ञातमपि चैतन्यं प्रमेयमितिकथ्यते	कठर. ४३
अजातो ह्यमृतो भावो मर्त्यतां कथं...	अद्वैतो. २०	अज्ञातसतां तेषां...जातिदोषो न	अ. शां. ४३
अजाद्वै जायते यस्य दृष्टान्तस्तस्य...	अ. शां. १३	सेत्स्यति (पाठः)	शिवो. ७।४१
अज्ञानता महिमानं तवेदं	भ. गी. ११।४१	अज्ञानपङ्कनिर्ममं यः समुद्धरते	

अज्ञानजनबोधार्थं प्रारब्धमिति चोच्यते	ना. विं. २९	अणीयान् ह्यतर्क्यमणुप्रमाणात्	कठो. २।८
अज्ञानजन्यकर्त्रादिकारकोत्पन्नकर्मणा	वराहो. २।४८	अणीयान् ब्रीहैर्वा यवाद्वा (आत्मा)	छां. उ. ३।१४।३
अज्ञानभूः सप्तपदा ह्यभूः सप्तपदैव हि	महो. ५।१	अणुकोटरविस्तीर्णैर्लोक्यं चेज्जगद्भवेत्	ते. विं. ६।८७
अज्ञानमलपट्टं यः क्षालयेज्ज्ञान-		अणुत्वे सति चैतन्यं	भवसं. २।३१
तोयतः । स एव सर्वदा शुद्धो नान्यः		अणुमात्रलसद्रूपमणुमात्रमिदं जगत्	ते. विं. ६।४०
कर्भरतो हि सः	जा. द. ६।१४	अणुमात्रेऽपि वैधर्म्यं जायमाने...	अ. शां. ९७
अज्ञानमेव न कुतो जगतः प्रसङ्गो...	वराहो. २।७३	(?) अणुमेतमाप्य स मोदते	कठो. २।१३
अज्ञानमुपनाकारा घनाहङ्कारनाशिनी	मुक्तिको. २।६२	अणु रक्ताश्च पीताश्च...	धुरिको. ८
अज्ञानहृदयमन्येर्निश्शेषविलयस्तदा	अध्यात्मो. १७	(?) अणुरेष धर्मः	कठो. १।२१
अज्ञानकीदृशं चेति प्रविचार्यमुमुक्षुणा	यो. शि. १।१५	अणुः पन्था विततः पुराणः	बृह. ४।४।८
अज्ञानं चाभिजातस्य	भ. गी. १६।४	अणोरणीयानहमेव तद्वत्	कैव. २०
अज्ञानं तमसः फलम्	भ. गी. १४।१६	अणोरणीयान्महतो महीयान्	कठो. २।२०
अज्ञानं तुच्छाऽप्यसती कालत्रयेऽपि		[+ना. प. ९।१३ +शरभो. १९+	महाना. ८।१
पामराणां वास्तवी च सत्त्वबुद्धि-		ना. उ. १।३+	पारमा. ९।३
लौकिकानामिदमित्थमित्थनिर्व-		अणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः	भ. गी. ८।९
चनीया वक्तुं न शक्यते (माया)	सर्वसारो. ६	अणोरणीयांसमिममात्मानमोद्धारं	
अज्ञानं यदतोऽन्यथा	भ. गी. १३।१२	नो व्याचक्ष्व	नृसिंहो. ५।१
अज्ञानात्तु बहिस्तापेन तापितः		अणोरप्यण्व्यं ध्यात्वा	मैत्रा. ६।३८
चिदाभासो...	योगकुं. ३।३०	(?) अणोर्ब्रह्मणुर्द्विरणुः कण्ठदेशे	मैत्रा. ७।११
अज्ञानादेव संसारः	१ यो. त. १६	अण्डपरिपालकमहाविष्णोः स्थिति-	
अज्ञानान्धतमोरूपं	वराहो. २।१२	प्रलयौ... अहोरात्रे एकं दिनं	त्रि. म. ना. ३।५
अज्ञानान्मलिनो भाति ज्ञानाच्छुद्धो		अण्डजं जीवजं भूतजमिति (बीजत्रयं)	छान्दो. ६।३।१
विभात्ययं (आत्मा)	जा. द. ५।१४	अण्डजं स्वेदजमुद्भिज्जं जरायुजं...	
अज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्	भ. गी. ३.२६	मनुष्यमजीजनत्	बह्वचो. १
अज्ञानां भावनार्थाय प्रतिमाः परि-		अण्डजानि च जारुजानि च	
कल्पिताः	जा. द. ४।५९	स्वेदजानि चोद्भिजानि...	२ ऐत. ५।३
अज्ञानिकृतमार्गं सुष्ठु वदन्ति	स्वसंवे. ३	अण्डजान् स्वेदजान्वापि	अ. शां. ६३
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं	भ. गी. ५।१५	अण्डजाः सर्वखगरूपा जायन्ते	ना. पू. ५।६
अज्ञानेनोपहतो बाल्ये यौवने		अण्डस्थानि तानि तेन विना	
वनिताहतः	महो. ६।२३	स्पन्दितुं चेष्टितुं वा न शेकुः	पैङ्गलो. १।५
अज्ञानेबुद्धिविलयेनिद्रासाभण्यतेबुधैः	वराहो. २।५६	अण्डं ज्ञानाग्निना तप्तं लीयते कारणैः सह	योगकुं. ३।२३
अज्ञासिषं पूर्वमेवमहमित्यथ तत्पितुः	महो. २।१७	अण्डं ज्ञानाग्निना दग्धं कारणैः सह	
अज्ञानागर्भसम्भूत... हनूमन्नक्ष रक्ष	लांगूलो. ३	परमात्मनि लीनं भवति	पैङ्गलो. ३।४
अज्ञालौ मन्थमाधाय	छां. उ. ५।२।६	अण्डाकृति तिरश्चां च द्विजानां च	
अणिमादिर्कर्मैश्वर्यमचिरात्तस्य जायते	यो. शि. २।७, २०	चतुष्पदाम्	त्रि. ब्रा. २।५९
अणिमादिपदं प्राप्य राजते...	यो. शि. १।१३८	अण्डाद्ब्रह्मा भवति [अ. शिरः ३।१५+	बटुको. २७
अणिमादिर्भजत्येनं यूनां वरवधूरिव	रामर. ४।७	अण्डाद्ब्रह्माऽभवत्	गायत्रीर. १
अणिमाद्यष्टैश्वर्याशासिद्धसङ्कल्पोबन्धः	निरा. २१	अण्वय इवेमा धाना भगवः...	छान्दो. ६।१२।१
(?) अणिष्ठो वाङ्मेऽङ्गे समानयति	मै. २।६	अत ऊर्ध्वमनशनमपां... वा गच्छेत्	कठरु. ३
		अत ऊर्ध्वममन्त्रवदाचरेत्	आरु. २

अत ऊर्ध्वं न संशयः	भ. गी. १२।८	(?) अतः कार्यमजं यदि	अ. शां. १२
अत ऊर्ध्वं मर्दयेद्ब्रह्मणेन	बृ. जा. ३।१	अतः परं नान्यदणीयसं हि परात्परं	महाना. १।५
अत ऊर्ध्वं विमोक्षाय ब्रूहि	बृह. ४।३।१४	(?) अतः परमाकाशम्	मैत्रा. ६।३८
अत एकेनैव भवति	बृह. १।४।७	अतः परं ब्रह्मभूतोभूतात्मानोपलभ्यते	आयुर्वे. २७
अत एव न निमित्तमत एव न विद्या	स्वसंवे. १	अतः पराऽस्य धारणा	मैत्रा. ६।२०
अत एव शुद्धोऽवाप्यस्वरूपो		(अथ) अतः पवमानानामेवाभ्यारोहः	बृह. १।३।२८
बुद्धः सुखस्वरूप आत्मा	नृसिंहो. ९।६	अतः पापमकरवं	बृह. ४।४।२२
अतएव सुमेरुदातारो गोदातारो वा	स्वसंवे. २	अतः पुरुषोऽप्यवसाय...बद्धः	मैत्रा. ६।३०
अत एवोच्यतेऽज्ञयाऽनन्ताऽलक्ष्या-		अतः पौरुषमाश्रित्य चित्तमाक्रम्य...	महो. ४।१०४
ऽजैका नैकेति	देव्यु. २०	अतः प्रपञ्चानुभवः सदा नहि	वराहो. २।३१
अतएवहिकालाभिरधस्ताच्छक्तिरूर्ध्वगा	बृ. जा. २।८	अतः प्रैतीतदिदं सर्वमस्ति...	१ ऐत. १।२।७
अत ओमित्युक्तेनैताः प्रस्तुता		अतः सद्ब्रह्मणि सत्यभिलाषिणि	
अर्चिता...भवन्ति	मैत्रा. ६।५	निवृत्तो...सुखमाक्रम्य तिष्ठति	मैत्रा. ६।३०
अतत्त्वार्थबदल्पं च	भ.गी.१८।२२	अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वेऽस्मात्स्यंदते	
अतन्त्रो देवः सद्यमेव प्रार्थः	चित्त्यु. १४।२	सिधवः सर्वरूपाः [मुण्ड.२।१।९	महाना. ८।३
अतद्यावृत्तिरूपोसौसमाधिर्मुनिभावितः	मुक्तिको.२।५५	अतः सम्मोहंछित्तवानक्रोधान्स्तुन्वानः	मैत्रा. ६।३८
अतप्रतनूर्न तदामो अश्नुते	सुदर्श. ५	(अथ) अतः सर्वजितः कौषीतके-	
[अक्सं. ७।३।८=मं. ९।८।३		स्त्रीण्युपासनानि भवन्ति	कौ. उ. २।७
अतमाविष्टमागच्छति	मैत्रा. ६।२४	अतः सर्वे जगच्चित्तगोचरम्	मं. ब्रा. ५।१
अतमाः सच्चिदानन्दरूपः	नृसिंहो. ७।१	अतः सर्वा ओषधयो रसाश्च [मा.पा.]	मुण्ड. २।१।९
अन्तरतोऽलोमका हि योनिरन्तः		(अथ) अतः सांयमनं प्रातर्दनमानन्तर-	
[अतरतः-मा. पा.]	बृ. उ. १।४।६	मग्निहोत्रमित्याचक्षते	कौ. त. ४५
अन्तरा यदाकाशः स समानः	प्रश्नो. ३।८	अतिज्वलन्नतिसर्वतोमुखः	नृसिंहो. ७।३
अतर्क्यमणुप्रमाणात्	कठो. २।८	अतिघ्नीमानन्दस्य गत्वा शयीतैवमेष	
अतर्क्योऽचिन्त्यः (आत्मा)	मैत्रा. ६।१७	एतच्छेते	बृह. २।१।१९
अतश्च कारणं नित्यमेकमेवाद्वयं खलु	पं. ब्र. ३३	अतितरामात्मानन्दे मग्ना अन्यरसं	
अतश्च विश्वा ओषधयो रसाश्च येनैष		न भावयन्ति	सामर. ७५
भूतस्तिष्ठत्यन्तरात्मा	महाना. ८।३	अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च	तैत्ति. १।९।१
अतश्च सर्वा ओषधयो रसाश्च येनैष		अतिथिदेवो भव	तैत्ति. १।११।२
भूतैस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा	मुण्ड. २।१।९	अतिथिर्नमस्यः, नमस्तेऽस्तु	कठो. १।९
अतश्चात्मनि कर्तृत्वमकर्तृत्वं च	महो. ४।१४	अतिदिव्यमङ्गलाकारं [ब्रह्म]	त्रि.म.ना. ४।१
अतश्चिद्धन एव, नह्ययमोतोनानुज्ञाता	नृसिंहो. ८।५	अतिदीर्घे जीविते को रमेत	कठो. १।२८
अतश्चिरं ध्यात्वाऽमन्यतान्यतात्मानो		अतिधुम्न एव ब्राह्मणं ब्रूयात्	३ ऐत. १।३।४
वैतेऽसुराः	मैत्रा. ७।१०	(?) अतिधन्वा शौनकः	छां. उ. १।९।३
अतस्तद्विपरीतो मुक्तः	मैत्रा. ६।३०	अति नमाम्यत्यहं भूत्वा	नृसिंहो. ७।६
अतसीपुष्पसंकाशं नाभिस्थाने प्रति-		अतिनिर्मलानन्तकोटिरविप्रकाशैक-	
ष्ठितं...महाविष्णुं विचिन्तयेत्	ध्या. बिं. ३०	स्फुलिङ्गं (परं ब्रह्म)	त्रि.म.ना. ७।७
अतस्तप्तोर्वेव सः	मैत्रा. ६।२६	अतिनृसिंहोऽतिभीषणः	नृसिंहो. ७।७
अतस्ताभिः सहैवोपर्युपरिलोकेषुचरति	मैत्रा. ४।६	अतिपिता वताभूरतिपितामहो...	बृ. उ. ६।४।२८
अतः कल्याणमकरवमित्युभे उ...	बृह. ४।४।२२	अतिप्रभान् पृच्छसि ब्रह्मिष्ठोऽसीति...	प्रश्नो. ३।२

अतिबाह्यतथाबाह्यमन्तराभ्यन्तरं धियः	महो. २।७३
अतिभद्रोऽतिमृत्युमृत्युरतिनमामि	नृसिंहो. ७।६
अतिभयङ्करज्वर-माहेश्वरज्वर-	
विष्णुज्वर...भेदय भेदय ॐ ह्रीं ह्रीं	लांगलो. ४
अतिभावस्वरूपोऽहं	ते. वि. ३।३४
अतिमहानतिविष्णुरतिज्वलन्नि-	
सर्वतांमुखः	नृसिंहो. ७।६
अतिमानुषचेष्टादि तथा सामर्थ्यं...	१ यो. त. ५५
अति मा सृजनम्	कठो. १।२१
अतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्मान्...	केनो. १।२
अतिमृत्युमृत्युरतिनमाम्यस्यहं भूत्वा	नृसिंहो. ७।६
अतिमोक्षा अथ सम्पदः	बृह. ३।१।६
अतिमोहकरी माया मम विष्णोश्च...	शरभो. २२
अतिवर्णाश्रमं रूपं सच्चिदानन्दलक्षणम्,	
यो न जानाति सोऽविद्वान्	वराहो. २।६
अतिवर्णाश्रमाणां तु स्मशानाग्नि-	
समुद्भवं (भस्मोपयुक्तम्)	यृ. जा. ५।७
अतिवर्णाश्रमी योगी अवधूतः सकथ्यते	१ अवधू. २
अतिवादांस्यजेत्तर्कान्	ना. प. ५।३६
अतिवाद्यसीत्यतिवाद्यस्मीति श्रूयात्	छां. उ. ७।१५।४
अतिवादांस्तितिक्षेत	ना. प. ३।४२
अतिष्ठाः सर्वेषां भूतानां मूर्धागजेति वा	बृह. २।१।२
अतिशून्यो विमर्शश्च मेरीशब्दः...	सौभाग्य. १२
अतिसर्वतांमुखोऽतिनृसिंहोऽतिभीषणः	नृसिंहो. ७।६
अतिसिंहोऽतिभीषणोऽतिभद्रः	नृसिंहो. ७।६
अतिमूक्ष्मां च तन्वीं च शुक्लां नाडीं	
समाश्रयेत्	क्षुरिको. ९
अतिसृष्ट्यां हास्यैतस्यां भवति य	
एवं वेद	बृह. १।४।६
अतिसेवापरभक्तगुणवच्छिष्याय वदेत्	दत्तात्रे. १।३
अतिह्रस्वः (इतित्रिः)	ग. शो. २।३
अतीतः सर्वभावेभ्यो बालाग्रादप्यहं	
तनुः...मोक्षाय निश्चयो जायते	महो. ६।५६
अतीतानागतं वेत्ति खेचरी च	
भवेद्भ्रुवम्	१ यो. त. १२७
अतीतान् स्मरेद्भोगान् तथाऽनाग-	
तानपि । प्राप्तान्श्च नाभिनन्देद्यः	ना. प. ३।२५
स कैवल्याश्रमे वसेत्	भ. गी. १४।२१
अतीतो भवति प्रभो	

अतीन्द्रियं गुणातीतं मनो लीनं यदा भवेत् । अनूपमं शिवं...सदाविशत्	ना. वि. १८
अतीन्द्रो ह वै देवानामभिप्रवव्राज (माध्वपा.)	छां. उ. ८।७।२
अतीव गोप्याय भवता प्रयत्नतो देया परस्मै न...(उपनिषत्)	१ वित्त्वो. १४
अतीवनिमलीभूतंमानन्दंचसुलीनकं अतुले त्वतुलायां हि हरिरेकोऽस्ति	अमन. २।९७
नान्यथा (?) अत्रणमहमन्तरिक्षे पौलोमान्	तुलस्यु. ७
पृथिव्यां कालकाञ्चान्	कौ. उ. ३।१
अतेजस्कमप्राणममुखममात्रं	बृह. ३।८।८
अतो ज्यायांश्च पूरुषः [ऋक्सं.	८।४।१७=
मण्ड. १०।९०।३-यजुः ३।१।३	चित्स्यु. १२।१
अतो देवा अवन्त इत्येतन्मन्त्रैः...	वासुदे. ३
धारयेत् (गोपीचंदनं)	ना. पू. ता. ३।१
अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे [ऋक्सं. १।२।७।१=मं. १।२२।१६	ऊर्ध्वपुं. २
‘अतो देवा अवन्तु नः’ इति विष्णु- गायत्र्या...अभिमंज्य	गोपीचं. ३
‘अतो देवा अवन्तु नः’ इत्येताभिः अभिमंज्य	कौ. उ. २।१२
अतो दैवः परिमर एतद्वै ब्रह्मा	कौ. उ. २।४
अतो दैवस्मरो यस्य प्रियो ब्रभूषेत्	मैत्रा. ६।९
अतोऽद्भिर्भूय एवापरिष्ठात्परिदधाति	
अतोऽनग्निहोत्र्यनग्निचिदज्ञानभिध्या- यिनां ब्रह्मणः पदव्योमानुस्मरणं	मैत्रा. ६।३४
विरुद्धं	
अतो निर्विषयं नित्यं मनःकार्यमुमु- क्षुणा...मनसो मुक्तिरिष्यते	त्रि. ता. ५।१
अतो नैनामभिधीयेत	मैत्रा. ७।९
अतोऽन्नमात्मेत्युपासीतेत्येवं ब्रूह	मैत्रा. ६।१२
अतोऽन्नेनैव जीवन्त्यथैतदपियन्त्यन्ततः	मैत्रा. ६।११
अतोऽन्यतममेतेषामुक्तं तदिमे मूढाः	मैत्रा. ७।१०
अतोऽन्यदार्ति [बृह. ३।४।२+३।५।१+	३।७।२३
अतो मृत्युञ्जयायेत्थममृतप्लावनंसताम्	बृ. जा. २।१४
अतो यद्वेदेष्वभिहितं तत्सत्यं	मैत्रा. ७।१०
अतो यो रसोऽस्त्वत्स उद्गीथं वर्षति	मैत्रा. ६।३७
अतो लोके वेदे श्रीराधा गीयते	सामर. ३
अतोऽविशेषविज्ञानं विशेषमुपगच्छति	मैत्रा. ६।२४

अतो ब्रह्माभ्यर्कपण्यं... यथा न		अत्र पिताऽपिता भवति	बृह. ४।३।२२
जायते किञ्चित्	अद्वैतो. २	अत्र यजमानः परस्तादायुषः स्वाहा	छां. उ. २।२।४।६
अतो ब्रह्मन् दर्निष्प्रपतरं... अन्नमसि	छां. ५।१०।६	अत्र वायुकिञ्चिदस्योभयननिभास्यसे..	छां. ६।१३।२
अतोऽग्निं लोके वेदे च	भ. गी. १।५।१८	अत्र शूरा महेश्वासाः	भ. गी. १।४
अतो हि सर्वाणि कर्माण्युत्तिष्ठन्ति	बृह. १।६।३	अत्र स्तेनोऽस्तेनो भवति	बृह. ४।३।२२
अतो हि सर्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्ति	बृह. १।६।१	(१) अत्र रामोऽनन्तरूपः	रामो. ४।५
अतो हि सर्वाणि रूपाण्युत्तिष्ठन्ति	बृह. १।६।२	अत्र ह न किञ्चन वीर्याय	छान्दो. ४।१।३
अत्ता विश्वस्य मत्पतिः	प्रश्नो. २।११	अत्र हि जन्ताः प्राणेषूत्क्रममाणेषु हृद्-	
अस्ति ह वै नामैतद्वद्विगिति	बृह. २।२।४	स्तारकप्रधान्याचष्ट [जाबालो. १+	
अनृत्वादप्रन्धाद्वीरत्वान्महत्त्वा-		रामो. १।१+	तारका. १।१
द्विष्णुत्वात्	नृसिंहो. ७।५	अत्र हि मिहामेव मन्यमानः अतथा	
अत्यतिष्ठद्गङ्गाङ्गुलं [ऋक्सं. ८।४।१७=	मं. १०।१०।१	सहस्रधा भिन्नः... मृत्युमाप्नोति	नृसिंहो. ८।७
यजुः ३१।१+चिन्त्य. १२।१	श्रुता. ३।१४	अत्र हि सर्वे कामाः समाहिताः	मंत्रा. ६।३०, ३५
अत्यन्तमलिनादेहो देहीचात्यन्त-		अत्र हि सर्वे कामाः समाहिता इत्यत्रो-	
निमलः । उभयोरन्तरं ज्ञात्वा कस्य		दाहरन्ति [मंत्रा.	६।३०, ३५, ३८
शौचं विधीयते [जा. द. १।२+	मुक्ति. २।६७	अत्र ह्यस्येते सत्याः कामास्तद्यथापि	
(१) अत्यन्तमात्मानमाचारं कृते...	छां. उ. २।२।३।९	(मा. पा.)	छां. उ. ८।३।२
अत्यन्तं पश्यति प्रिय भवति	छां. ५।१३।२	अत्र ह्यस्येते सत्याः कामा अनृता-	
अत्यन्तं सुखमश्नुते	भ. गी. ६।२८	पिधानास्तद्यथापि...	छान्दो. ८।३।२
अत्यन्तं वासनाबद्धो जीवः	सामर. १००	अत्र ह्येते सर्वे एकं भवन्ति	बृह. १।४।७
अत्यन्तान्नः करणमलिनविशेषात्	त्रि. म. ना. ५।३	अत्र ह्येव न विचिकित्स्यमित्यो	नृसिंहो. ९।९
अत्यर्थमचलं नित्यमादिमध्यांतवर्जितं	जा. द. ९३	अत्रात्मत्वं दृढीकृतं	अध्यात्मो. १८
अत्यल्पमपि न वेदं... ब्रह्मभूयाय कल्पते	सि. शि. २६	अत्रान्तरं ब्रह्मविदो (विदविदो) विदित्वा	श्रुता. १।७
अत्यानन्दोऽयं लोकः	सामर. ४९	(१) अत्रान्तरा यदाकाशः स समानः	प्रश्नो. ३।८
अत्याशनादनीषानाद्यश्च उग्रप्रति-		अत्रायं पुरुषः स्वयं स्योतिर्भवति	बृह. ४।३।९, १४
ग्रहान । तन्नो बरुणो... हवमश्नुते	महाना. ५।१८	अत्रैतदेकशतं नाडीनां... एकै-	
अत्याश्रयं गतो रुद्रो बद्धाञ्जलिः सन्		कस्यां... व्यानश्चरति	प्रश्नो. ३।६
नारायणं स्तौति	सामर. ५४	(अथ) अत्रैतद्वहं पुण्डरीकं कुमुद-	
(१) अत्याश्रमस्थः सकलेन्द्रियाणि	कैव. ५	मिवानेकधा विकसितं यथाकेशः...	सुबालो. ४।४
अत्याश्रमाणां मध्ये लिङ्गधारी श्रेष्ठः	लिङ्गो. १	अत्रैव ते लयं यान्ति लीनाश्चा-	
अत्याश्रयानन्तविभूतिसमष्ट्याकारं	त्रि. म. ना. ६।६	व्यक्तशालिनः	मंत्रिको. २०
अत्याहारमनाहारं नित्ययोगीविवर्जयेत्	अ. ना. २८	अत्रैव मा भगवान्मोहान्तमापीपिबत्	बृह. ४।५।१४
अत्युग्रोऽतिवीरोऽतिमहानतिविष्णुः	नृसिंहो. ७।६	अत्रैव मा भगवानममूहं प्रेत्य	
अत्योते तत्सर्वमिदं विदित्वा	भ. गी. ८।२८	संज्ञाऽस्तीति	बृह. २।४।१३
अत्र कारणमद्वैतं शुद्धचैतन्यमेव हि	पञ्चत्र. ३४	अत्रैव समवलीयन्ते (प्राणाः)	बृह. ३।२।११
अत्र कोमोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः	वराहो. ४।४२	अत्रैव देवः स्वप्नाय पश्यति	प्रश्नो. ४।६
अत्र दृष्टं नाम प्रत्ययम्	मैत्रा. ६।१०	अत्रैव देवः स्वप्ने महिमानमनुभवति	प्रश्नो. ४।५
अत्र निशाकर-चतुर्मुख-दिग्वातार्क-		अत्यन्तं पश्यसि प्रियमत्यन्तं पश्यति...	छां. ५।१२।२+
वरुणाश्व्यग्नीन्द्रोपेन्द्रप्रजापतियमा		[१३।२+१४।२+१५।२+१६।२	
इत्यक्षाधिदेवतारूपैः... प्राणा एव	त्रि. ब्रा. ५		

अथ कथन्धीकात्यायन उदेत्यपप्रच्छ

प्रश्नो. १।३

(१)अथ कर्म कुर्वीय

बृ.उ.१।४।१७

अथ कर्मणामात्मेत्येतदेयामुक्तयम्

बृ. उ. १।६।३

अथ किमन्तैर्मन्यानां शोषणं महान्-
नानां...ध्रुवस्य प्रचलनं...

मैत्रे. १।३

अथ कुम्भकः, स द्विविधः सहितः
केवलश्चैति

छां. १।७।१४

अथ कृत्स्नक्षय एकत्वमेति पुरुषस्य

मैत्रा. ४।६

अथ केन प्रयुक्तोऽयं

भ. गी. ३।३६

अथ कौण्ठेरभ्यस्त्रीणि पष्टिस्तान्य-
क्षराणां

३ ऐत. २।१।१

अथ खलु ऋतुमयः पुरुषः

छांदो. ३।१४।१

अथ खलु य उद्गीथः स प्रणवः

छांदो. १।५।१

अथ खलु सौम्येदं पारिव्राज्यं नैष्ठिकं

शाट्याय. २६

अथ खलुद्गीथाक्षराण्युपासीत

छां. उ. १।३।४

अथ खल्वमुमादित्यं सप्तविधं
सामोपासीत

छां. उ. २।९।१

अथ खल्व्वात्मसम्मिसमसिमृत्यु

सप्तविधं सामोपासीत

छांदो. २।१०।१

अथ खल्व्वाहुर्निर्मुञ्जवक्ताः

३ ऐत. १।५।१

अथ खल्वियं देवी धीणा भवति

३ ऐत. २।५।२

अथ खल्वियं सर्वस्यै वाच उपनिबत्

३ ऐत. २।५।१

अथ चक्षुरत्यवहत्

बृह. १।३।१४

अथ च रामकृष्णाद्यवतारेष्वद्वैतपरमा-

नन्दलक्षणपरब्रह्मणः परम..श्रूयते

त्रि.म.ना. २।४

अथ चिन्तं समाधातुं

भ. गी. १२।९

अथ चेदशक्नुवन्तं मन्येत प्राणं वशं

३ ऐत. १।४।१

अथ चेत्त्वमहङ्कारात्

भ.गी.१८।५८

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं

भ. गी. २।३३

अथ चेदशुभोभावस्त्वांयोजयति

मुक्तिको. २।४

अथ चैनं नित्यजातं

भ. गी. २।२६

अथ जुहोति नम आदित्येभ्यश्च

विश्वेभ्यश्च...

छां. २।२४।१४

अथ जुहोति नमोऽग्नये पृथिवीक्षिते...

छां. २।२४।५

अथ तत ऊर्ध्वं उदेत्य नैवोदेता

छां.उ.३।११।१

अथेतथैवोपास्तेऽन्नेवान्वायत्तो भवति

आर्षे. ४।३

अथेतथोपास्तेऽन्वायत्तोहैवास्मिन्भवति

आर्षे. २।३

अथ तस्य भयं भवति

तैत्ति. २।७

अथ तस्यायमादेशः

नृसिंहो. २।७

अथ तर्ह्येत एव समतिसृष्टाः...

छां. १।११।३

अथ तु कामकलाभूतं कामकूटमाहुः

त्रि. ता. १।१०

अथ तावपि (द्वावहङ्कारौ) सन्त्यज्य
सर्वाहङ्कृतिवर्जितः

महो. ५।९६

अथ तैरेव रश्मिभिरूर्ध्वमाक्रमते
(ऊर्ध्व आक्रमते-मा. पा.)

छां. उ. ८।६।५

अथ दक्षिणावृत्तपुनिष्कामतितपिता..

कौ. उ. २।१५

अथ दैवीः (समाह्वाः)

तैत्ति. ३।१०।१

अथ धीरा असूतत्वं विदित्वा

ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते

कठो. ४।२

अथ नप्यायतेजन्तुरालस्यावप्रमादतः

यो.शि. १।७६

अथ नामधेयं सत्यस्य सत्यम्

बृह. २।३।६

अथ नारदः पितामहमुवाच

ना. प. ६।१

अथ नु मीमांस्यमेव ते मन्ये विदितं

केनो. २।१

अथ नोचेत्समुत्सृष्टं स्वशरीरं प्रियं यदि

१यो.त. १०८

अथ परमतत्त्वरहस्यं जिज्ञासुः परमेष्ठी..

त्रि.म.ना. १।१

अथ परमात्मानाम यथाक्षर उपासनीयः

१ आत्मो. ३

अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते

मुंड. १।५

अथ पितामहः स्वपितरमादि-

नारायणं...पप्रच्छ

प. हं. प. १

अथ पुत्रमाह-त्वं ब्रह्म त्वं

यज्ञस्त्वं लोक इति

बृह. १।५।१७

अथ पुनरब्रवीत् वा व्रती वा...विरजेत्

जाबा. ४

अथ पूर्वस्थितो लिङ्गे गर्भः...

शिवो. २।१

अथ पैप्पलादो भगवान्भो किमादौ

किं जातं, सद्योजातं...

पं. ब्र. १

अथ प्रणिपत्य कात्यायनो ब्रह्माण-

मन्वयुक्क

कात्याय. १

(१) अथ प्राणमत्यवहत्

बृ.उ.१।२।१३

अथ प्रणिपत्य नारदो ब्रह्माणं प्रायुक्क

नारदो. १

अथ ब्रह्मस्वरूपं कथमिति नारदः पप्रच्छ

ना. प. ९।१

अथ ब्राह्मणः, स ब्राह्मणः केन स्यात्

बृह. ३।५।१

अथ ब्रह्माजन्मद्वारेण ब्रह्माण्डान्तर्गतं..

ग.शो..३।६

अथ ब्रह्माणं भगवन्तं सनत्कुमारः

पप्रच्छ

ना. पू. ३।१

अथ भगवन्तं...कमलासनं

सनत्कुमार उपससार

सूर्यता. १।१

अथ भगवान् कात्यायनः (न्यः)

सुप्रीतोऽब्रवीद्वाजानम

मैत्रे. १।४

अथ भगवान् शाण्डिल्यः परमेष्ठिनं...

अधीहि भो ब्रह्मेति

गान्धर्वो. १

अथ भर्गः... भामिर्गतिरस्य हीति भर्गः

मैत्रा. ६।७

अथ भारद्वाजः कुमारं पप्रच्छ

सि. शि. १

अथ मुसुण्डः कालामिरुद्रं... (भस्म-)

माहात्म्यं ब्रूहि...

वृ. जा. ६।१

अथ मुसुण्डः कालामिरुद्रं विभूति-

योगमनुब्रूहीति होवाच

वृ. जा. ३।१

अथ मुसुण्डः... भस्मस्नानविधि...

वृ. जा. ४।१

अथ मत्स्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्मसमश्नुते

[कठो. ६।१४+

बृह. ४।४।७

अथ मा प्रातरुपसीदथाः

छां. ६।१३।१

अथ य आत्मा स सेतुः

छां. उ. ८।४।१

अथ य इच्छेत्पुत्रो मे पण्डितो विगीतः...

(विजिगीतः-मा. पा.)

वृ. उ. ६।४।१

(?) अथ मूत्रद्वारेण निष्क्रान्तं

मैत्रा. ३।४

अथ य इमाः परा सम्पद्यमाना

एवोपास्ते

आर्वे. ८।४

अथ य एवं वेद ब्रह्मवशः स्यात्

२ प्रणवो. ९

अथ यच्छुद्धे अक्षरे अभिव्याहरति

३ ऐतरे. ३।२

अथ यत्तेर्नियमः कथमिति पृष्ठं...

पितामहः... विरक्तः सन् यो...

ना. प. ७।१

अथ यदतः परो दिवो ज्योतिर्दीप्यते

विश्वतः पृष्ठेषु...

छां. उ. ३।१३।७

अथ यदा सुषुप्तो भवति यदा न

कस्यचन... वेद

वृ. उ. २।१।१९

अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा

वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्

तैत्ति. १।११।३

अथ यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे दहरं

छां. उ. ८।१।१

अथ यदि द्विमात्रेण मनसि सम्पद्यते

प्रश्नो. ५।४

अथ यदि महज्जिगमिषेत्

छान्दो. ५।२।४

अथ यदु चैवास्मिच्छव्यं कुर्वन्ति

छां. ४।१५।५

अथ यदुत्तरं सा द्यौर्मूर्तिमत्स्वगृहे-

ष्वभिजायते

संहितो. ४।२

अथ यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव

छां. उ. ८।५।१

अथ यद्यल्पविश्वित्तवान् भवति

छान्दो. ७।५।२

अथ यद्युदक आत्मानं पश्येत्

(परिपश्येत्—मा. पा.)

वृ. उ. ६।४।६

अथ यद्येनमूष्मस्रपालभेत प्रजापतिं...

छान्दो. २।२२।४

अथ यद्येनं निर्भुजं ब्रुवन्तमुपवदेत्

३ ऐतरे. ३।१

अथ यद्येनं निर्भुजं ब्रुवन्तं परउपवदेत्

३ ऐतरे. ३।३

अथ यद्येनं प्रतृणं ब्रुवन्तमुपवदेत्

३ ऐतरे. ३।१

अथ यद्येनं प्रतृणं ब्रुवन्तं परउपवदेत्

३ ऐतरे. ३।३

अथ यद्रपित्तमिव विरुदितमिव सा

वाक् शङ्खः

संहितो. १।२

अथ यद्ययमनुसंहितमृचो धीमहे

३ ऐत. २।६।३

अथ यस्य जायामार्तवं विन्देत् ज्यहं

कंसेन पिबेत्

बृह. ६।४।१३

अथ या एता हृदयस्य नाड्यस्ताः...

छां. उ. ८।५।१

अथ या मध्यायनी संपूर्णा संस्तृष्टा...

वाक् सा पुत्र्यपशव्या

संहितो. १।४

अथ यावतीयत्रयीविद्या... एतद्वितीयं

पदमाप्नुयात्

गायत्र्यु. ४

अथ यावदिदं प्राणिति यस्तावत्प्रति-

गृहीयान्

गायत्र्यु. ५

अथ येऽस्य दक्षिणा रश्मयस्ता एवास्य

दक्षिणा मधुनाड्यः

छां. उ. ३।२।१

अथ यो दक्षिणे प्रमीयते पितृणामेव

महिमानं गत्वा...

महाना. १८।१

अथयोऽन्यादेवतामुपास्तेऽन्योऽसौ...

अथ रात्रावग्निहोत्रभस्मनाऽग्नेभंसित-

मिदं विष्णुस्त्रीणि पदेति मंत्रैः...

वासुदे. १६

अथर्वणस्य शाखाः स्युः पञ्चाशद्दे-

दनो हरे

मुक्तिको. १।१३

अथर्वणवेदसिद्धस्थिरकालाभि-

निराहारक...

छांगूलो. ३

अथर्वणां चन्द्रमा दैवतं तदेव ज्योतिः

अथर्वणे यां प्रवदेत् ब्रह्माऽथर्वा तां...

२ प्रणवो. २१

अथर्ववेदश्चतुर्थः पादः (गायत्र्याः)

अथर्ववेदस्वरूपकंपञ्चाशत्स्वरवर्णाख्यं

मुण्ड. १।१।२

अथर्ववेदेऽनुदात्तोदात्तद्विपद अ उ

इत्यर्ध... मात्राः

गायत्रीर. ३

अथर्वशिरश्शिखाध्यापकशतमेकमेकेन

तापनीयोपनिषदध्यापकेन तत्समं

पं. ब्र. ११

अथर्वशिरः सकृज्ज्वा

अथर्वश्चतुर्थः पादः

नृ. पू. ५।१६

अथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं

[+४।१।२+

अ. शिरः १६

अथर्वाङ्गिरस एव मधुकृत इतिहास...

अथर्वाङ्गिरसरूपसामभ्रग्यजुरात्मकम्

ग. पू. १।१३

अथर्वाङ्गिरसरूपसामभ्रग्यजुरात्मकम्

सीतो. १४

वृ. उ. २।४।१०

४।५।११

छान्दो. ३।४।१

अथर्वाङ्गिरसः पुच्छः प्रतिष्ठा
 अथर्वाङ्गिरसश्चतुर्थात् (पाशदकल्पयन्)
 अथर्वा तां पुरोवाचाङ्गिरे ब्रह्मविद्यां
 (?)अथर्वा देवो मृत्योः प्राञ्चंसनान्
 अथवा कृतकृत्येऽपि...वर्तेऽहं...
 अथवागीश्वरीधामशिरोवस्त्रेण वेष्टयेत्
 अथवाचतुर्विंशतिवर्षाणिगुरुकुलवासी
 अथ लोकान् पर्यटन सनत्कुमारो
 ह वैदेहः...लोकान्...प्राप
 अथवा तमपि त्यक्त्वा चैत्यांशं...
 जीवस्तिष्ठति संशान्तो...
 अथवा न कुर्यादामेयामेव कुर्यात्
 अथवा नित्यकर्माणि...प्रत्याहारः सः
 अथवा बहुनैतेन
 अथवा यथाविधिश्चेज्जातरूपधरोभूत्वा
 अथवा योगिनामेव
 अथ वायुमश्रुवन्, वायवेतद्विजानीहि
 किमेतथक्षमिति
 अथवा वायुमाकृष्य...प्रत्याहारो-
 ऽयमुक्तस्तु...
 अथवा सत्यमीशानं ज्ञानमानन्दमद्वयं
 अथवा सर्वकर्तृत्वमकर्तृत्वं च...
 सर्वं त्यक्त्वा...स्थिरो भव
 अथ वेज्ञान्तान् पुष्करिणीः स्रवन्तीः
 सृजते स हि कर्ता
 अथवेशातान्पुष्करिण्यःस्रवन्त्यः (मा.)
 अथ वै तेऽहं तद्वक्ष्यामि यत्र
 गमिष्यामीति
 अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा
 अथ शाकल्यस्य-पृथिवी पूर्वरूपं
 अथ शुद्धं भवेद्वस्तु यद्वै वाचामगोचरं
 अथ शैवपदं यत्र तद्ब्रह्म ब्रह्म तत्परं
 अथ शैवं पदं यत्र तद्ब्रह्म तत्परायणम्
 अथ श्रीवराहरूपिणं भगवन्तं...
 सनत्कुमारः पप्रच्छ
 अथ श्रोत्रमत्यवहत्
 अथसांकृतिर्भगवन्तंदत्तात्रेयं...पप्रच्छ
 अथ सावित्री गायत्री त्रिरन्वाह
 अथ सोऽभयं गतो भवति

तैत्ति. २।३
 अथर्वाङ्गिरसः ६
 मुं. उ. १।१२
 बृ. उ. २।६।३
 अवधू. २३
 योगकुं. २।३२
 आश्वमो. १
 लक्ष्यु. १
 अ. पू. २११
 याज्ञव. १
 जा. द. ७।४
 भ.गी. १०।४२
 ना. प. ३।८७
 भ. गी. ६।४२
 केनो. ३।७
 जा.द. ७।६-९
 जा. द. ९।३
 महो. ६।४
 बृ.उ. ४।३.१०
 बृ.उ. ४।३।१०
 बृह. ४।२।१
 भ. गी. १।२०
 ३ ऐत. १।२
 ते. विं. १।४९
 कुण्डिको. २०
 २सञ्ज्ञासो. १९
 ऊर्ध्वपुं. १
 बृह. १।३।१५
 १ अवधू. १
 सहवै. १५
 तैत्ति. २।७

अथ ह कुमारः शिवं पप्रच्छाऽखण्डै-
 करस-विन्मात्रस्वरूपमनुग्रहि
 अथ ह चक्षुरुपासाञ्चक्रिरे
 (?)अथ ह जनकोवैदेहोयाज्ञ...उवाच
 अथ ह पैङ्गलोयाज्ञवल्क्यमुपसमेत्य...
 परमरहस्यकैवल्यमनुग्रहीति...
 अथ ह प्राणा अहं श्रेयसि व्यूदिरे
 (?)अथ ह प्राण उत्क्रमिष्यन्
 अथ ह प्राण उत्क्रमिषन् (माध्वपा.)
 अथ ह प्राण उत्क्रमिषन्स यथा...
 अथ ह प्राणमत्यवहत्, स यदा...
 अथ ह प्राणमृचुस्त्वं न उद्गायेति
 अथ ह मन उद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे
 अथ ह मनोऽत्यवहत्, तद्यदा...
 अथ ह एवायंमुख्यःप्राणस्तमुद्गीथ-
 मुपासाञ्चक्रिरे
 अथ ह यज्जनकश्च वैदेहोयाज्ञवल्क्य-
 श्चाग्निहोत्रे समूदाते
 अथ ह याज्ञवल्क्य आववाज
 अथ ह याज्ञवल्क्यस्यद्वेभार्येभभूवतु-
 मेंत्रेयी कात्यायनी च
 अथ ह याज्ञवल्क्यः स्वमेव ब्रह्म-
 चारिणमुवाच
 अथ ह वाचक्रव्युवाच
 अथ ह वाचमुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे
 अथ ह वै स्वयम्भूर्ब्रह्माप्रजाःसृजानीति
 अथ ह शौनकंचकापेयमभिप्रतारिणं
 च...ब्रह्मचारी विभिक्षे
 अथ ह श्रोत्रमुपासाञ्चक्रिरे
 अथहसांकृतिर्भगवानादित्यलोकंजगाम
 अथ ह हंसा निशायामतिपेतुः
 अथ हामयः समूदिरे
 (?)अथ हास्मा अर्घ्यं चकार
 अथहास्माएतत्कृष्णहारीतोवाग्ब्राह्मण...
 अथ हास्य पुत्र आह-प्रातीवोधी पुत्रः
 अथ हिरण्यमेवापः कनको भवति
 स ह सैलभते
 अथ हेन्द्रोऽप्राप्यैव देवानेतद्भयं ददर्श
 अथ हैतत्पुरुषःस्वपितिनामतद्गृहीतएव
 अथ हैतानि नामानि गायन्ति श्रुतयः

ते. विं. २।१
 छान्दो. १।२।४
 जावालो. ४
 पैङ्गलो. १।१
 छान्दो. ५।१।६
 छां. उ. ५।१।१२
 छां. उ. ५।१।१२
 छां. ५।१।१२
 छां. ५।१।१२
 बृह. १।३।३
 बृह. १।३।३
 छान्दो. १।२।६
 बृह. १।३।६
 छान्दो. १।२।७
 बृह. ४।३।१
 बृह. ४।१।१
 बृह. ४।५।१
 बृह. ३।१।२
 बृह. ३।८।१
 छान्दो. १।२।३
 पा. ब्र. १
 छान्दो. ४।३।५
 छान्दो. १।२।५
 अक्ष्यु. १
 छान्दो. ४।१।१
 छां. उ. ४।१।०।४
 बृ. उ. ६।२।४
 ३ ऐत. २।६।१
 ३ ऐत. १।५।३
 संहितो. ५।१
 छान्दो. ८।९।१
 बृह. २।१।१७
 राधिको. ६

अथ हैनमत्रिः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यम्	जाबालो. २।५	अथ हैनं सौर्यायणी गार्ग्यः पप्रच्छ	प्रश्नो. ४।१
अथ हैनमथर्वाणं शाण्डिल्यः पप्रच्छ	शाण्डि. ३।२।१	अथ हैनां ब्रह्मरन्ध्रे सुभगां ब्रह्मास्त्र-	
अथ हैनमन्वाहार्यपचनोऽनुशशास	छां. उ. ४।१२।१	स्वरूपिणीमाप्नोति	पीताम्बरो. १
अथ हैनमसुरा ऊचुर्ब्रवीतु भवानिति	बृह. ५।२।१	अथ हैनां ब्रह्मरन्ध्रे तारिणीमाप्नोति	तारोप. १
अथ हैनमाहवनीयोऽनुशशास	छां. उ. ४।१३।१	अथ होवाच जनं शार्कराक्ष्यं कं त्व-	
अथ हैनमुद्रातोपससाद	छां. उ. १।११।६	मात्मानमुपास्से	छां. ५।१५।१
अथ हैनमुपससाद किं ब्रवीमि भो इति	छान्दो. ६।७।२	अथ होवाच जनं शार्कराक्ष्यं, शार्क-	
अथ हैनमृषभोऽभ्युवाच सत्यकाम उवाच इति	छान्दो. ४।४।५	राक्ष्यं कं त्वमात्मानं... (मा. पा.)	छां. उ. ५।१५।१
अथ हैनं कह्लोः कौपीतकिः पप्रच्छ	बृह. ३।४।३	अथ होवाच बुद्धिमाश्वतराग्नि (मा. पा.)	छां. उ. ५।१६।१
अथ हैनं कालामिरुद्रं मुमुण्डः पप्रच्छ	रु. जा. १।१	अथ होवाच बुद्धिमाश्वतराग्नि	छां. ५।१६।१
अथ हैनं कौसल्यश्चाश्वलायनः पप्रच्छ	प्रश्नो. ३।१	अथ होवाच सत्ययज्ञं पौलुषि	छां. ५।१३।१
अथ हैनं गार्हपत्योऽनुशशास	छां. उ. ४।११।१	अथ होवाचेन्द्रगुप्तं भाल्लवेयं	छां. ५।१४।१
अथ हैनं चक्षुरुवाच	छां. उ. ५।११।३	अथ होवाचोद्दालकमारुणि...	छां. ५।१७।१
अथ हैनं जनको वेदेहो याज्ञवल्क्य-		अथाकाशोऽन्तःकरणमनोबुद्धि-	
मुपसमेत्योवाच	जाबालो. ४	चिन्ताहङ्काराः	त्रि. प्रा. १।३
अथ हैनं जारत्कारवार्तभागः पप्रच्छ	बृह. ३।२।१	अथाङ्गिराः (उवाच) त्रिविधः	
अथ हैनं नारदः पितामहं पप्रच्छ [ना. प.]	३।१+५।१	पुरुषोऽजायत आत्मा...	१ आत्मो. १
अथ हैनं पैङ्गलः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यं	पैङ्गलो. ४।१	अथाजातपुत्रस्याह-आप्यायस्वसमेतुते	कौ. उ. २।८
अथ हैनं पैप्पलादोऽङ्गिराः सनत्कुमार-		अथात आत्मादेश एव	छां. ७।२५।२
आथर्वणमुवाच	अ. शिखो. १	अथात आदेशो नेति नेति नष्टो-	
अथ हैनं पैप्पलादो ब्रह्माणमुवाच	शरभो. १	स्मादिति	बृह. २।३।६
अथ हैनं प्रतिहर्तोपससाद	छां. उ. १।११।८	अथात एकधनावरोधनं यदेकधन-	
अथ हैनं प्रस्तोतोपससाद	छां. उ. १।११।४	मभिध्यायात्	कौ. उ. २।३
अथ हैनं ब्रह्मचारिण ऊचुः किं		अथातः पितापुत्रीयं सम्प्रदानमिति	
जप्येनामृतत्वं ब्रूहीति	जाबालो. ३	चाचक्षते	कौ. उ. २।१५
अथ हैनं ब्रह्मरन्ध्रे ब्रह्मरूपिणीमाप्नोति	कालिको. १	अथातः पवमानानामेवाभ्यारोहः	बृह. १।३।२८
अथ हैनं भगवन्तं कालामिरुद्रं पप्रच्छ	रु. जा. २।४	अथातः प्रजापतिसंहिता	३ ऐत. १।६।८
अथ हैनं भगवन्तं परमेष्ठिनं नारदः...	ना. प. ८।१	अथातः शौव उद्रीथस्तद्ध बको...	छां. १।१२।१
अथ हैनं भगवन्तं सर्वे... पप्रच्छुः	ना. प. २।१	(७०) अथातः श्रीमद्भूयोत्पत्तिः	द्वयोप. १
अथ हैनं भार्गवो वैदर्भिः पप्रच्छ	प्रश्नो. २।१	अथातः सम्प्रतिर्यदा प्रैष्यन्मन्यते	बृह. १।५।१७
अथ हैनं मन उवाच-यदहमायतनं	छां. ५।११।४	अथातः संहिताया उपनिषत्	३ ऐत. १।१।१
अथ हैनं यजमान उवाच भगवन्तं	छां. १।११।१	अथातश्चत्वार आश्रमाः षोडश भेदा	
अथ हैनं वागुवाच-यदहं वसिष्ठो...	छां. ५।११।३	भवन्ति	२ अवधू. १
अथ हैनं वागुवाच-यदहं वसिष्ठोऽस्मि		अथातश्चाक्षुषीं पठितसिद्धविद्यां...	चाक्षुषो. १
(मा. पा.)	छां. उ. ५।११।३	अथातो धर्मजिज्ञासा	कौलो. १
अथ हैनं विदग्धः शाकल्यः पप्रच्छ	बृह. ३।९।१	अथातो निर्भुजप्रवादाः	३ ऐत. १।३।१
अथ हैनं श्रोत्रमुवाच-यदहं सम्पदस्मि	छां. ५।११।४	अथातो निश्प्रेयसादानं-एता ह वै	
अथ हैनं शैब्यः सत्यकामः पप्रच्छ	प्रश्नो. ५।१	देवताः... विवदमानाः	कौ. उ. २।१४
अथ हैनं सुकेशा भरद्वाजः पप्रच्छ	प्रश्नो. ६।१	अथातोऽनुप्रभाः	तैत्ति. २।६

अथातोऽनुव्याहाराः, प्राणो वंश इति ३ ऐत. १।४।१
 अथातो ब्रह्मजिज्ञासा च सीतो. ६
 अथातो ब्रह्मनिष्ठानां योगिनां कोऽयं
 मार्गः का स्थितिरिति दत्तात्रेयो
 दक्षिणामूर्तिं पप्रच्छ अनु. सा. १
 अथातो महोपनिषदमेव तदाहुः चतुर्वे. १
 अथातो रहस्योपनिषदं व्याख्यास्यामः शुक्र. १।१
 अथातो रेतसः सृष्टिः १ ऐत. १।३।१
 अथातो वाप्रसो यस्यां संसृजमानो वा
 भाषमाणो वा न विरुचिष्येत... ३ ऐत. २।५।४
 अथातो व्रतमीमांसा बृह. १।५।२१
 अथातोऽङ्गारादेश एवाहमेवावस्ता-
 दहमुपरिष्ठादहं पश्चादहंपुरस्तादहं छां. उ. ७।२।५।१
 अथात्मनेऽन्नायमागायत् बृ. उ. १।३।१७
 अथादित्य उदयन्यत्प्रातर्ची दिशं
 प्रविशति प्रश्नो. १।६
 अथार्थं शान्भवं द्वितीयं शार्कं च कामराज. २
 अथाज्ञस्याये द्रष्टा भवति छां. उ. ७।९।१
 अथाज्ञस्याशी द्रष्टा भवति (मा.पा.) छां. उ. ७।९।१
 अथाधिदैवतम्-अलिप्याम्येवाहं बृह. १।५।२२
 अथाध्यात्मम्-पुरुषो ह वा अयं सर्व... ३ ऐत. १।२।२
 अथाध्यात्मम्-वाक्पूर्वरूपम् ३ ऐत. १।१।२
 अथानन्दाभूतेनैतांश्चतुर्धा संपूज्य नृसिंहो. ३
 (?)अथानु किमनुशिष्टोऽवोचयाः छां. उ. ५।३।४
 अथान्तरात्मा नाम पृथिव्यप्तेजो...
 दिभिः स्मृतिलिङ्ग उदात्तानुदात्त-
 ह्रस्व...दिभिः श्रोता घ्राता...
 विज्ञातात्मा पुरुषः, पुराण...कर्म-
 विशेषणं करोत्येषोऽन्तरात्मा १ आत्मो. २
 अथापश्यन्महादेवं श्रिया जुष्टं ग. पू. १।७
 अथापरं वेदितव्यं-उत्तरो विकारो-
 ऽस्यात्मयज्ञस्य मैत्रा. ६।१०
 अथापिधानमस्यमृतत्वायोपस्पृश्य प्रा. हो. १।१२
 अथापि यत्र छिद्र इवादित्यो दृश्यते ३ ऐत. २।४।५
 अथापियाज्ञिकायज्ञे युक्ताभ्युदिशन्ति संहितो. ३।३
 अथाप्यपिधाय कर्णा उपशृणुयात् ३ ऐत. २।४।६
 अथाप्यपिधायाक्षिणी उपेक्षेत ३ ऐत. २।४।६
 अथाप्यस्यारूपस्यब्रह्मणस्त्रीणिरूपाणि शाण्डि. ३।१।२

अथाभिप्रातरेव स्थालीपाकावृताज्यं
 वेष्टित्वा...जुहोति बृ. उ. ६।४।१९
 अथाभ्यसेत्सूर्यमेवं..स्यावतुष्टयकुम्भकः यो. शि. १।८८
 अथाभ्याख्यातेषु-ये तत्र ब्राह्मणाः तैत्ति. १।११।४
 अथामूर्त-प्राणश्च, यश्चायमन्तरात्म-
 नाकाश्च एतदमृतम् बृह. २।३।५
 अथामूर्त-वायुश्चान्तरिक्षं चैतदमृतं बृ. उ. २।३।३
 अथायमादेशः [नृ. पू. ४।२+ नृसिंहो. १।४
 अथाविष्टं भित्त्वाऽकातचक्रमिव...
 पर्यपश्यत् मैत्रा. ६।२४
 अथान्यातं(त्तं)वा इदमासीत् मैत्रा. ६।६
 अथाश्रद्धायनो भगवन्तं परमेष्ठिनं... कैव. १।१
 अथास्मै सम्प्रयच्छति, वाचंमेत्वयि... कौ. उ. २।१५
 अथास्य दक्षिणं कर्णमभिनिधाय बृ. उ. ६।४।२५
 अथास्य दक्षिणे कर्णे जपति कौ. उ. २।११
 अथास्य देवस्यात्मशक्तेरात्मक्रीडस्य.. शाण्डि. ३।१।४
 अथास्य नाम करोति वेदोऽसीति... बृह. ६।४।२६
 अथास्य भजनं भवति गोपालो. १।१६
 अथास्य मातरमभिमन्त्रयते बृ. उ. ६।४।२८
 अथास्य या सहजाऽस्त्यविद्या मूल-
 प्रकृतिर्माया...तया...देवः... शाण्डि. ३।१।२
 अथास्या ऊरु विहापयति बृ. उ. ६।४।२९
 अथास्यायमितरआत्माकृतकृत्यो..प्रेति २ ऐत. ४।४
 अथाह वै देवानां पत्नीं भजते का. मे. १
 अथेतरेषां पशूनामशनापिपासे
 एवाभिज्ञानम् १ ऐत. ३।२।४
 अथेतोऽप्यद्वैतपुरुषस्य पूर्णं ब्रह्म... २ अद्वैतो. ३
 अथेत्यम्भूततन्मात्रवेष्टितंनुताजहत् महो. ५।१५२
 अथेत्यभ्यमन्यत्स मुखाच्च योने-
 र्हस्ताभ्यां चाभिमस्तृजत बृह. १।४।६
 अथेदानीं ज्ञानोपसर्गाः मैत्रा. ७।८
 अथेन्द्रमब्रुवन्, मध्वमेतद्विजानीहि
 किमेतद्यक्षमिति केनो. ३।११
 अथेममेव नामोत् बृ. उ. १।५।२१
 अथेममेवाकाशमभिनिष्पद्यन्ते बृ. उ. ६।२।१६
 अथैतन्मूलं वाचो यदनृतं १ ऐत. ३।६।५
 अथैतदप्यशक्तोऽसि भ. गी. १२।११
 अथैतयोः पथोर्न कतरेण च छां. उ. ५।१०।८
 अथैतयोः पथोर्न कतरेणचन(मा.पा.) छां. उ. ५।१०।८

अथेतस्मात्तप्यमानास्तत्त्वकामाचीण्य-		अथो आबुखोवतासो न कर्तुमिः	१ ऐत. १।६।२
क्षराण्यजायन्त, तिस्रो व्याहृतयः...शाण्डि.३।१।३		अथो आहुर्वर्षपूर्णमासाविति	बृह. १।५।२
अथेतस्मादपरं तृतीयं शक्तिभूतं		अथो खत्वाहुरिन्द्रो वा चैतदक्षरम्	शौनको. १।५
प्रतिपद्यते	त्रि.सा. १।१४	अथो खत्वाहुःसप्तभिरेनंस्वारयन्तीति	शौनको. ४।७
अथेतास्तिस्रः संहिता भवन्ति-		अथो तम एवापहते	अव्यक्तो. ६
देवहूरेका, शहूरेका, मित्रहूरेका	संहितो. १।१	अथोताप्याहुः साम नो वतेति	छान्दो. २।१।३
अथेतै सर्व एवोपसमेत्योचुः	छाग. २।३	अथोत्तरेणतपसात्रय्यचर्येणअश्रया...	प्रश्नो. १।१०
अथैनदपि यन्त्यन्ततः	तैत्ति. २।२।१	अथोत्तरो द्वौ द्वादशकौ वर्गौ...	
अथैनमभये हरन्ति तस्याभिरेवा...	बृ.उ. ६।२।१४	व्याख्याता...	२ प्रणवो. १८
अथैनमभूम क पारिक्षिताअभवमिति	बृह. ३।३।१	अथोपानेष्ट नैतदत्यगादिति किं	
अथैनमभिसृजति भ्रमदसिञ्चदसि..	बृह. ६।३।४	तदिति होचुः	छाग. २।१
अथैनमाचामति-तत्सवितुः...मधु		अथो प्रज्ञातयैव प्रतिपदां छंदांसि	
वाता...भूस्वाहा (इतिमंत्रेण)	बृह. ६।३।६	प्रतिपद्यते	सहवे. १५
अथैनमुच्यच्छति । आरं स्यामं हि ते...	बृह. ६।३।५	अथो बलीयान्बलीयांसमाशंसते...	बृ.उ. १।४।१४
अथैनयोरेतदन्नं, य एषोऽन्तर्हृदये	बृ. उ. ४।२।३	अथोयद्विषुधिस्तवारेअस्मिन्निवेदितं	नीलक. २।८
अथैनं गार्हपत्योऽनुशशास पृथि-		[वा.सं. १६।१२+	तै.सं.४।५।१४
व्यभिरन्नमादित्य इति यः-	छां. ४।११।१	अथोयेअस्यसत्त्वानस्तोभ्योऽहमकरं...	नीलक. २।३
अथैनं सदानन्दः संवर्तोऽजैगीषव्यश्च		[वा. सं. १६।८+	तै.सं.४।५।१३
नीललोहितं रुद्रमुवाच	सदानं. १	अथो वागेवेदं सर्वमिति	३ ऐत. १।६।५
अथैनं शाण्डिल्योऽथर्वाणं पप्रच्छ		अथो विस्फुरन्तीव धावन्तीवोत्स-	
यदेकमक्षरं...	शाण्डि.३।१।१	वन्तीवोपस्मिन्त्यतीव...	आर्षे. ५।४
अथेनामभिपद्यतेअमोऽहमस्मिन्सात्वं...	बृह. ६।४।२०	अथो ह्येवमेवैषामेकं वृणीष्वेति	इतिहा. ८५
अथेनां मेधादीक्षितरूपिणी भावयेत्	का. मे.दी. १	अद उ एषबृहद्बुवनेष्वन्तरसावादित्यः	१ ऐत. १।१।३
अथैवाङ्गिरास्त्रिविधः पुरुषः	२ आत्मोप. ४	अदत्तानामुपादानं...शारीरं	
अथैष आर्चिको निगदो भवति	संहितो. ३।६	त्रिविधं स्मृतम्	भवसं. ५।५
अथैष ज्ञानमयेन तपसा चीयमानो-		अदस्तूलमयं पितैते पुत्राः	१ ऐत. १।८।१
ऽकामयत...	शाण्डि. ३।१।३	अदिग्देशकालं, अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं...	त्रि.म.ना. ७।७
अथैषा दुस्स्पृष्टा संहिता भवति		अदितिर्देवा गन्धर्वा मनुष्याः	
सर्वेभ्यः कामेभ्यः	संहितो. १।६	पितरोऽसुरास्तेषां...मातामेदिनी	महा. १०।१४
अथैषा नाढ्यन्नबहुमित्येषाऽमोहुत-		अदितिर्माता स पिता स पुत्रः	३ ऐत. १।६।८
मादित्यं गमयति	मैत्रा. ६।३७	[ऋक्सं. १।६।१६=	मं. १।८९।१०
अथैषा निर्भुजा संहिता भवति सर्वेभ्यः		अदितिर्वेद्या, सोमो दीक्षया	चित्त्यु. ८।१
कामेभ्यः	संहितो. १।७	अदितिर्हीदंसर्वयदिदंकिञ्चपिताच..	३ ऐत. १।६।८
अथैषा परमा विद्या ययाऽऽत्मा...	रुद्रह. ३०	अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातव	देव्यु. १०
अथैषा यजनीयेऽहनि लभते	संहितो. ५।१	[ऋक्सं. ८।३।१।=	मं. १०।७२।५
अथैषा शुद्धा संहिता भवति, सर्वेभ्यः		अदीर्घशत कथमिवेति	छाग. ६।१
कामेभ्यः	संहितो. १।५	अदीर्घत्वाच्च कालस्य गत्वादेशान्..	वैतथ्यो. २
अथो अन्नेनैव जीवन्ति [तैत्ति.२।२।+	मैत्रा. ६।११	अदीर्घमजमव्ययं, अशब्दमस्पर्श	यो. शि. ३।१९
अथोअ विदितादधि	केनो. १।४	अदीर्घमलोहितमखेहमच्छायं	बृह. ३।८।८

अनुष्ठा इव धेनवः	अ. शिरः २।४	अथानो देव सवितः प्रजावत्सावीः	
अदूरगतसाध्या सुपुमस्योपलभ्यते	अ. पू. १।५२	सौमगम् [अ. ४।४।२५=मं. ४।८२।४	महाना. १२।२
अनुष्यन् सर्वा मार्गं	ना. प. ४।१८	अद्यास्तमेतु वपुराशक्षितारमास्तां...	
(१) अदृश्यत्वादिमाद्यत्वात्	मैत्रा. २।७	मम चित्तपुयो विक्षेपः	वराहो. २।६६
अदृश्यं न व मे दे हे दिव्यं च भुस्तथाऽमलं	हंसो. १०	अथेहाददानमग्रहधानमयजमानमाहुः	छां. उ. ८।८।५
अदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्ते	तैत्ति. २।७।१	अथैकमृतिरायातुकल्पान्तनिषयेनवा	अ. पू. १।३९
अदृश्योऽहमवर्णोऽहमखण्डोऽस्मि	ब्रह्मवि. ६	अथैव कुरु यच्छ्रेयो मा स्तां	
अदृष्टमव्यवहार्यमप्राप्तमलक्षणं	माण्डू. ७+	कालोऽत्यगान्महान्	भवसं. १।३९
[नृ. पू. ४।२+	नृसिंहो. १।६	(तस्मात्) अद्वय एवायमात्मा	नृसिंहो. ९।५
अदृष्टपूर्वं दृष्टितोऽस्मि दृष्ट्वा	अ. गी. ११।४५	अदृष्टाऽप्रोताऽमन्ताऽबोद्धाऽकर्ता-	
अदृष्टं ब्रह्मभुतं ओत्रमतं	वृ. उ. ३।८।११	ऽविज्ञाता भवति	छान्दो. ७।९।१
अदृष्टो ब्रह्माऽप्रतः ओता	वृ. उ. ३।७।२३	अदृष्टकं स्वानुभवमनिद्रस्वप्रदर्शनम्	महा. ५।५४
अदेक्षकाले यदानम्	अ. गी. १७।२२	अद्रेष्यमप्राप्तमगोत्रमवर्णमचक्षुः ओत्रं	मुण्ड. १।१।६
अदोऽम्भः परेण दिवं यौः प्रतिष्ठा	२ ऐत. १।२	अद्रोहो नातिमानिता	अ. गी. १६।३
अग्निर्गात्राणि शुद्धयन्ति	भवसं. ३।१	अद्वयतारकोपनिषदं व्याख्यास्याप्रो	
अग्निभूय एवोपरिष्ठात्परिदधाति	मैत्रा. ६।९	यतये जितेन्द्रियाय	अद्वयता. १
अग्निः पुरस्तात् परिदधाति	मैत्रा. ६।९	अद्वयब्रह्मरूपेण व्याप्रोऽहं	ना. प्र. १४
अग्निः पूताभिराचरेत् (स्नानादि)	२ सञ्ज्ञा. २।१४	अद्वयं च द्वयाभासं चित्तं स्वप्ने	अ. शां. ६१
अग्निः सौम्यशुद्धेन तेजोमूलमन्विच्छ	छां. उ. ६।८।४	अद्वयं च द्वयाभासं तथा जाग्रज्ज	
अद्भुतं रोमहर्षणम्	अ. गी. १८।७४	संशयः [अद्वैतो. ३०+	अ. शां. ६२
अद्भुतानन्दश्चर्यविभूतिविशेषाकारं	त्रि. म. ना. ४।१	अद्वयं च द्वयाभासं मनःस्वप्नेन संशयः	अद्वैतो. ३०
अद्वय एव तदव्यक्तायं जायते	छान्दो. ६।२।४	अद्वयं पश्यत हंसः सोऽहमिति	नृसिंहो. ९।९
(१) अद्वय एव पुरुषं समुद्भूत्य	२ ऐत. १।३	अद्वयं सदानन्दचिन्मात्रमात्मैव	नृसिंहो. ९।८
अद्वयश्चैनं चंद्रमसश्च देवः प्राण		अद्वयानन्दमात्रोऽहं	ते. बि. ६।६५
आविशति	वृ. उ. १।५।२१	अद्वयानन्दविज्ञानघनोऽस्म्यहं	अ. वि. ८९
अद्वयः पृथिवी	सुबालो. १।१+	(१) अद्वयेन च कल्पितः	वैतथ्य. ३३
[यो. चू. ७२+पैङ्गलो १।३	तैत्ति. २।१।१	अद्वयो ह्ययमात्मैकल एव	नृसिंहो. ८।१
अद्वयः पूर्वमजायत	कठो. ४।६	अद्वितीय ओतश्च प्रोतश्च	नृसिंहो. ८।१
अद्वयः सम्भूतः पृथिव्यै रसाय	चित्त्यु. १३।१	अद्वितीयत्वादविकल्पो ह्ययमोद्धारः	नृसिंहो. ८।७
अद्वयः सम्भूतो हिरण्यगर्भः	महाना. १।११	अद्वितीयपरमानन्दशुद्धबुद्धमुक्त... ब्रह्म..	त्रि. म. ना. १।३
अद्वयः स्थावरजङ्गमो भूतप्रायः		अद्वितीयपरसंविदंशकं तत्सदाहं	वराहो. ३।८
सम्भवति	२ प्रणवो. २१	अद्वितीयब्रह्मतत्त्वं न जानन्ति यथा तथा	वराहो. २।५७
अद्वयोऽर्णवः सुवो राजकं च	महाना. ६।११	अद्वितीयमखिलोपाधिविनिर्मुक्तं तत्स-	
अद्वयोवाभूयोऽस्तीतितन्मे भगवान् ..	छां. ७।१०।२	कलशकृत्युपबृंहितं (ब्रह्म)	निरालं. ५
अद्यतेऽस्ति भूतानि तस्मादन्नं तदुच्यते	मैत्रा. ६।१२	अद्वितीयमनाद्यंतं यदाद्यमुप...	अ. पू. ५।६४
[तैत्ति. २।२+		अद्वितीयमनीश्वरं भवति	त्रि. म. ना. ४।१
अद्यजातां यथा नारीं तथा	ना. प. ३।६४	अद्वितीयं स्वयम्प्रकाशमनिशंज्वलति	त्रि. म. ना. ७।७
षोडशवार्षिकी		(एवमाकारं) अद्वितीयाखण्डानन्द-	त्रि. म. ना. ४।१
		ब्रह्मस्वरूपं	

अद्वितीयामेकामनन्तमोक्षसाधाय-

लक्ष्मीम्

त्रि.म.ना. ६।७

अद्वितीयेपरेतत्त्वेन्योमवत्कल्पनाकुतः

२ आत्मो. ३०

अद्वैता सर्वभूतानां

भ.गी. १२।१३

अद्वैतप्रस्थिः... यद्वाङ्मलक्षणप्रका-

स्वरूपो हंसः

पा. ब्र. ३

अद्वैतपरमानन्दलक्षणपरमप्राणः परमा-

विद्यानमण्डल

त्रि.म.ना. ७।८

(तथाविधस्य) अद्वैतपरमानन्द-

लक्षणस्यादेनारायणस्योन्मेष-

निमेषाभ्यामूलाविशोदय...

त्रि.म.ना. २३

अद्वैतपरमानन्दात्मा

गमो. ५

अद्वैतपरमानन्दोविभुर्नित्यानिष्कलङ्कः

त्रि.म.ना. १।५

अद्वैतपुरुषस्य न द्वितीयो मेवाऽस्ति

अद्वैता. १

अद्वैतभावना भक्ष्यं अभक्ष्यं...

मंत्र. २।१०

(?) अद्वैतभावनां वक्ष्ये

अद्वै. भा. १

अद्वैतभावमुक्तोऽस्मिन्विद्वानन्दलक्षणः

अ. पू. ५।६८

अद्वैतमचिन्त्यमलिङ्गं स्वप्रकाशमा-

नन्दधनं शून्यमभवत्

नृसिंहो. ६।२

अद्वैतमिति चोक्तञ्च प्रकाशाव्यभि-

चारतः

पा. ब्र. २५

अद्वैतयोगमास्थाय

त्रि.म.ना. ८।३

अद्वैतसदानन्दो देवता

निर्वाणो. ५

अद्वैतं चतुर्थं ब्रह्मविष्णुरुद्रातीतं

भस्मजा. १।१

अद्वैतं द्वैतमित्याहुस्त्रिधातपञ्चधातथा

मंत्रिको. १५

अद्वैतं नावमाश्रित्य जीवन्मुक्तत्व-

माप्नुयात्

सं. सो. २।९६

अद्वैतं परमानन्दं शिवं

रुद्रह. ४७

अद्वैतं परमार्थतः

आगम. १७

अद्वैतं परमार्थो हि द्वैतं तद्वेद उच्यते

अद्वैतो. १८

अद्वैतभावयेद्भक्त्यागुरोर्देवस्यचात्मनः

यो.शि. ५।५९

अद्वैतं समनुप्राप्य जडवलोकमाचरेत्

वैतथ्यो. ३

अद्वैतं सर्वाधारमनाधारमनिरीक्ष्यं

भस्मजा. २।९

अद्वैतः सर्वभावानां देवस्तयोर्विभुः

आगम. १०

अद्वैताखण्डपरिपूर्णनिरतिशयपरमा-

नन्दशुद्धबुद्धमुक्तसत्यात्मकब्रह्म

त्रि.म.ना. २।१

(?) अद्वैते परमस्थितिः, ज्ञानदण्डो...

पर. हं. ५

अद्वैते बोधितेतत्त्वेवासनाविनिवर्तते

वराहो. २।७०

अद्वैते योजयेत्स्मृतिं

वैतथ्य. ३७

अद्वैतेत्यैर्यमायाते...तुर्वभूमिसुयोगतः

वराहो. ४।१२

अद्वैते स्वर्यमायातेद्वैते च प्रथमं गते

अस्युप. ३४

अद्यास्तमेतु वपुराशसितारमास्तां

वराहो. २।६

अथ इव हि मनुष्यलोकः

बृह. ३।१।८

अथमन्त्राण्डालोऽपि शिव-

भक्तोऽपि...अष्टतरः

रुद्रोच. १

अथमं चणमात्रं स्यात् (रुद्राक्षं)

रु. आ. ७

अथमामन्त्रचिन्ताचतीयर्थात्यथमाधमा

मैत्रे. २।२१

अथमे द्वादश मात्राः (प्राणाधामे)

यो. चू. १०४

अथमे (प्राणाधामे) व्याधिपापानां

नाशः स्यात्...

त्रि.भा. २।१०६

अथमे (प्राणाधामे)स्वेदजननं

यो. चू. १०५

अथरयैनं वर्तिन्या पृथिव्यायत्ता

बृह. २।२।२

अथरा हनुः पूर्वरूपं

तैत्ति. १।३।७

अथमं धर्ममिति या

भ.गी. १८।२२

अथर्माभिभवात् कृष्ण

भ.गी. १।४१

अथरिशरश्चोर्ध्वपादः क्षणं स्यात्...

यो. स. १२४

अथश्च नारायणः

नारा. २

अथश्च मूलान्यनुसन्ततानि

भ.गी. १५।२

अथश्चोर्ध्वश्च तिर्यक्चाहम्

देव्यु. १

अथश्चोर्ध्वं चाहं दिशश्चप्रतिदिशश्चाहं

अ. शिरः. १

अथश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मवेदम्

मुण्ड. २।२।११

अथश्चोर्ध्वं चाहं

अ. शिरः. १

अथश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखाः

भ.गी. १५।२

अथस्तात्कुम्भनेनाशु कण्ठसङ्कोचने

कृते...स्यात्प्राणो ब्रह्मनाडिगः

शां. १।७।१८

अथस्ताद्भूमिमुपरिष्ठादाकाशं मध्ये

पुरुषो दिव्यः

सुबालो. १।२

अथः षष्ठी कुक्षिर्भवति

गायत्रीर. ३

अधिकारविशेषेण कैवल्यप्राप्त्युपाय-

मन्विष्येद्यतिः

ना. प. ७।१२

अधिज्योतिषं-अग्निः पूर्वरूपम्

तैत्ति. १।३।३

अधिदैवत्वंदेवेभ्यश्चेत्यक्षम्यमपरिमितं

मैत्रा. ४।४

अधिदैवं किमुच्यते

भ.गी. ८।१

(अथ) अधिप्रजं-माता पूर्वरूपं

तैत्ति. १।३।२

अधिनो ब्रूहि सुमनस्य मानो...

[वा.सं. १५।२+तै.सं. ४।३।१२।१+

तै. आ. २।५।२

अधिप्रजं दश प्रज्ञामात्राः

सहस्रै. ७

कौ. उ. ३।८

अधिभूतं क्षरो भावः	म. गी. ८।४	अधेनुं धेनुमित्येव...परमंमङ्गलंवेत्	शिवो. ७।८१
अधिभूतं च किं प्रोक्तं	म. गी. ८।१	अधो गच्छन्ति तामसाः	म.गी.१४।१८
अधिमनसो रेतः प्रथमं यदासीत्	मृ. पू. १।१	अधोगतिमपानं वै...मूढबन्धो-	
अधियज्ञः कथं कोऽत्र	म. गी. ८।२	ऽयमुच्यते	योगकुं. १।४२
अधियज्ञोऽहमेवात्र	म. गी. ८।४	अधोनिष्ठयावितस्यान्ते नाभ्यामुपरि	
अधिदोहकमधिय्योतिषमधिविगमधि-		तिष्ठति...विश्वस्यायतनं महत्	महाना. ९।७
प्रजमप्यात्मं	तैत्ति. १।३।१	अधोभागे स्थितः स्कन्दः	शिवो. २।५
अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु वर्तमाने		अधो शक्तिमयोऽनलः, ताभ्यां	
व्यवस्थाम्	श्वेता. १।१	तम्पुटितः...	बृ. आ. २।६
अधिष्ठानमनौपम्यमवाङ्मनसगोचरं		अध्यसृतास्सम्बभूव	तैत्ति. १।४।१
यत्तद्वेदस्य...[महो. ४।८६+	पा. म. ३३	अध्यर्घ इति (देवः)ओमिति होवाच	बृह. ३।९।१
अधिष्ठानं तथा कर्ता	म.गी.१८।३४	अध्यवसायसङ्कल्पाभिमाना...	
अधिष्ठानं परंतत्त्वमेकं सच्छिद्यते...	बह्वचो. ३	स्वादूनि भवन्ति	मैत्रा. ६।१०
अधिष्ठानं समस्तस्य जगतः सत्यचिद्भनं		अध्यवसायस्य दोषक्षयादिमोक्षः	मैत्रा. ६।३०
अहमस्मीति निश्चित्य...[रुद्रह. ४८+	अ. पू. ४।३५	अध्यवसायात्मबन्धमुपगतः	मैत्रा. ६।३०
अधिष्ठाने तथा ज्ञाते प्रपञ्चे शून्यतांगते...	ना. वि. २८	अध्यस्तस्य कुतस्तत्त्वं	अध्यात्मो. ५८
अधिष्ठाने परे तत्त्वे कलिता		अध्यस्तस्य कुतो जन्म	ना. वि. २५
रज्जुसर्पवत्	अ. पू. ४।१०	अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं	म.गी.१३।१२
अधिष्ठाय मनश्चायं विषया-		अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः	म.गी. १५।५
नुपसेवते	म.गी. १५।१	अध्यात्मनिष्ठोऽशुभकर्मनिमूलनपरः	
अधिष्ठायैना अजरापुराणी महत्तरा		(परमहंसः)	जाबा. ६
महिमा देवतानाम्	त्रिपुरो. १	अध्यात्ममधिदैवं च देवानां...	सरस्व. ११
अधीतवेद उक्तोपनिषत्कः	बृ. उ. ४।२।१	अध्यात्ममधिदैवं च...सा मां पातु	
अधीत्य चतुरो वेदान्सर्वशास्त्राण्य-		सरस्वती	सरस्व. ११
नेकशः । ब्रह्मतत्त्वं न जानाति		(इति)अध्यात्ममन्त्रा अपेत् ;	
दवीं पाकरसं यथा	मुक्ति. २।६५	दीक्षामुपेयात् [कुंडिको. ९+	कठश्रु. २२
अधीमहि भगव इति होपससाद		अध्यात्ममस्य ध्यायतः	कठश्रु. २३
सनत्कुमारं नारदः	छान्दो. ७।१।१	अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं	कठो. २।१२
अधीहि भगवन्नात्मविद्यां	हेरम्बो. १	अध्यात्मरतिराशान्तः	अ. पू. २।२६
अधीहि भगवन्मूर्ध्वपुण्ड्रविधि...ब्रूहि		अध्यात्मरतिरासीनः पूर्णः...योजीवति	
[ऊ. पुं. १+	वासुदे. १	गतस्नेहः स जीवन्मुक्त उच्यते	महो. २।४७
अधीहि भगवन् ब्रह्मविद्यां वरिष्ठां	कैव. १	अध्यात्मरतिरासीनो निरपेक्षः...	ना. प. ३।४४
अधीहि भगवन् सर्वविद्यां सरहस्यं (१)		अध्यात्मविद्याधिगमः साधुसङ्गतिरेव	
वरिष्ठं (१)	१ बिल्वो. १	च...एतास्ता युक्तयः पुष्टाः सन्ति	
अधीहि भगवंन्निपुण्ड्रविधिं सतत्त्वं	का. रु. २	चित्तजये किल	मुक्ति. २।४४
अधीहि भगवो ब्रह्मेति, तस्मा		अध्यात्मविद्या विद्यानां	म.गी. १०।३२
एतत्प्रोवाच	तै. ३।१, २, ३, ४	अध्यात्मशास्त्रमन्त्रेण तृष्णा विष-	
अधीव ह समानानां जायते	१ ऐत. ३।१।३	विषूचिका । क्षीयते...	अ. पू. ५।१४
अधीव ह्यन्ते अन्नादो भवति	१ ऐत. ३।१।३	अध्यात्मं कर्म चाखिलं	म. गी. ७।२९

अध्यात्मवैवाधिवत्तं(वाधिवै..मा.पा.) छां.उ.३।१८।२	अनन्तपरिपूर्णानन्ददिव्यसौदामिनी	
अध्यात्मं चैव प्राणस्य विज्ञाया-	निचयाकारम् (ब्रह्म)	त्रि.म.ना. ४।१
मृतमश्नुते	अनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रं	भ.गी.११।१९
अध्यापिता ये गुह्यनाद्रियन्तेविप्राः...	अनन्तयोधाचलैरनन्तयोधानन्दाचलै-	
अध्यारोपापवादतः स्वरूपं निश्चयी-	रधिष्ठितम्	त्रि.म. ना.७।८
कर्तुं शक्यते	अनन्तमजमव्यक्तमजरंशातमच्युतं	भ. पू. ५।६४
अध्वेयते च य इमं	अनन्तमजरं शिवं...यदनादि...	महो.२।६८
अध्वर्युणत्विजा चक्षुषाऽऽदित्वेन	अनन्तमपरिच्छेद्यम् [१]	यो.शि. १।१८
अध्वगा अध्वसु पारायण्यवः	[१]अनंतमपारं विज्ञानघन एव	बृ.उ. २।४।१२
अध्वासुर्येणनिर्दिष्टःकीटवद्विचरन्मही	अनन्तमप्रमेयाखण्डपरिपूर्णं ब्रह्म	त्रि.म.ना. १।३
अनमिदोऽन्यनमिचिदज्ञानभिध्यायिनां	अनन्तमव्ययं कविम्	महाना.९।६
ब्रह्मणः पश्योमानुस्मरणं विरुद्धं	अनन्तमव्ययं शान्तं	ते.वि.६।७२
अनमिकस्यवेदोऽग्निः...स एषो-	अनन्तमेवसः,तेनलोकंजयति[१२।१२	बृ.उ.३।१।९+
ऽनमिकः स्मृतः	अनन्तमोक्षसाम्राज्यलक्ष्मी	त्रि.म.ना. ६।७
अनमो ह भवति	अनन्तयोजनं प्राहृषाक्षुल्लवचस्तथा	मुद्रलो. १।१
अनङ्गनमनाभासं निष्पन्नं ब्रह्म...	अनन्तरमबाह्यं,नतदभातिकिञ्चन...	बृ.उ. ३।८।८
अनङ्गानोहिताच्छिष्टाः पश्यन्तो	अनन्तरस्त्वेवैनमुपमंत्रयतेददामस्तइति	कौ.उ. २।१,२
अङ्गुलिस्तरं	अनन्तरंइस्तिजिह्वा ततो विश्वोदरी..	बराहो.५।२७
अनतिप्रभं बंदेवतामति...(मा.पा.)	अनन्तरारयुरमेतुवारुणाचयशस्विनी	बराहो.५।२४
अनतिप्रभ्यां वै देवतामतिपृच्छसि	अनन्तरोऽबाह्यः	बृ.उ. ४।५।१३
अनयमानो यदनममति	अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां विद्धि	कठो.१।१४
अननुमत्ताहन्मत्तवदाचरन्तः[जाबा.६	अनन्तवतो ह लोकाश्चयति	छांदो. ४।६।४
अननुशिष्य वाव किल मा भगवान्	अनन्तवानस्मिंलोके भवति	छांदो. ४।६।४
अननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवति	अनन्तवासुकिर्लक्षककोटक...महा-	
अनन्त इति चापरे	नागानां..भूतवैतालकूष्माण्ड...	
अनन्त इत्येनदुपासीत	विषतुण्डदंष्ट्राणां विषाङ्गानां...	गारुडो.२७
अनन्तकर्मशौचं जपोयज्ञस्तथैवच	अनन्तविजयं राजा	भ.गी.१।१६
अनन्तकोटिब्रह्माण्डानामुपरि...	अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं	भ.गी. ११।४०
अनन्तचिद्विलासविभूतिसमष्ट्याकारं	अनन्तशक्तिर्धाता भास्करः	मैत्रा. ७।२
अनन्तचिन्मयप्रासादजालसंकुलं	अनन्तश्चास्मि नागानां	भ.गी. १०।२९
अनन्तता चादिमतो मोक्षस्य	अनन्तश्चात्माविश्वरूपः [श्वेता.१।९+	ना. प. ९।८
न भविष्यति	अनन्तश्रवणः सर्वमावृत्त्य तिष्ठति	त्रि.म.ना.२।६
अनन्ता हि दिशः, दिशो वै सम्राट्	अनन्तस्यात्मतत्त्वस्य	महो. ५।१७८
अनन्ततेजोराश्यन्तर्गतमर्धमात्रारमकं	अनन्तं नाम मृद्विकारेषु मृदिवस्वर्ण-	
अनन्त देवेश जगन्निवास	विकारेषु स्वर्णमिव तन्तुविकारेषु	
अनन्तनित्यमुक्तैरभिव्याप्तं(वैकुण्ठपुरं)	तन्तुरिवाव्यक्तादिसृष्टिप्रपञ्चेषुपूर्णं	
अनन्तपरममूर्तिसमष्टिमण्डलं	व्यापकं चैतन्यमनन्तमित्युच्यते	सर्वसारो. ६
अनन्तपरमानन्दामृतरसाब्धि...	अनन्तं ब्रह्म सुप्रत	जा.द.९।५
होशनादिभिरलंकृतम्	अनन्तं विश्वतोमुखम्	भ.गी. ११।११

अनन्तं वै मनोऽनन्ता विश्वेदेवाः	बृह. ३।१।९	अनभिमानमयेन वैवेपुणा तं ब्रह्म-	
अनन्तं वै नामानन्ता विश्वेदेवाः	बृह. ३।२।१२	द्वारपारं निहत्यायम्	मैत्रा. ६।२८
अनन्तं सर्वतोमुखं	अध्यात्मो. ६१	अनभ्यासवतश्चैव वृथागोष्ठया	
अनन्तं स लोकं जयति	बृह. १।५।३	न सिद्धयति	यो. त. ८०
अनन्तः परमो गुह्यः	मैत्रा. ६।२८	अनया तीक्ष्णया ताव छिन्वि बुद्धि-	
अनन्तादिदुष्टनागानां...विषं हन हन	लांगूळो. ७	सलाकया(तृष्णावासनाजालं)	महो. ६।३२
अनन्तानन्दप्रवाहैरलंकृतं	त्रि.म.ना. ७।८	अनयादुरहंकृत्याभावात्संत्यक्त्याचिरं	महो. ५।९४
अनन्तानन्दविभूतिविशेष..रूपं	त्रि.म.ना. ७।७	(?)अनया ब्रह्मविद्या...ब्रह्मणः	
अनन्तानन्दसमुद्रसमस्याकारं	त्रि.म.ना. ७।८	पन्थानमारूढाः	मैत्रा. ६।२९
अनन्तानन्दसम्भोगा...शुद्धेयं चि-		अनया विद्या योगी खेचरीसिद्धि-	
न्मयी दृष्टिर्जयत्यखिलदृष्टिषु	१सं.सो.२.२४	भाग्भवेत्	योगकुं. २।१६
अनन्तानन्दाश्चर्यसागरं	त्रि.म.ना. ७।९	अनर्थः प्राप्यते यत्र शास्त्रितादपि	
अनन्ता रश्मयस्त्वस्य दीपवद्यः		पौरुषान्...अनर्थकर्तृबलवत्तत्रज्ञेयं	
स्थितो हृदि	मैत्रा. ६।३०	स्वपौरुषम्	भवसं. १।४८
अनन्ताविश्वेदेवा..सतेन लोकं जयति	वृ. उ. ३।१।९	अनया (अजपागायत्र्या) सदृशी	
अनन्तेन्दुरविप्रभं व्याघ्रचर्माम्बरधरं	भस्मजा. १।१	विद्या...अनयासदृशं पुण्यं न भूतं	
अनन्तैस्वर्गलोकेज्येये प्रतितिष्ठति	केनो. ४।९	न भविष्यति	ध्या. वि. ६४
अनन्तोऽश्चर्यः स्थिरः [मैत्रा. २।४	१६।२८	अनर्चिषमेवाभिसम्भवन्ति	छां. ४।१५।५
अनन्तोपनिषदर्थस्वरूपं [त्रि.म. ७।७	+सि.सा. ६।१	अनल्पमपारमनिर्देश्यमनपावृतं	सुबालो. ३।२
अनन्तोपनिषदर्थारामजालसंकुलं	त्रि.म.ना. ७।९	अनवद्यो घनो गहने निर्गुणः	मैत्रा. ७।१
अनन्तोवामकटको..हारः कर्कोट उच्यते	गारुडो. २	(?)अनवस्थेष्ववस्थितम्	कठो. २।२२
अनन्दानामतेल्लोकाभ्यन्तेन...वृत्ताः	बृह. ४।४।११	अनशनायत्वाऽपिपासायत्वाद्दैत...	नृसिंहो. ७।१
अनन्दानामतेल्लोकास्तान्मगच्छति	कठो. १।३	अनभ्रन् त्रिः स्वाध्यायं वेदमधीयीत	सहस्रै. २०
अनन्धःसम्भवतियदिसाममस्रामोनैव	छान्दो. ८।१०।१	अनभ्रन्ब्रह्मजतिथिर्नमस्यः	कठो. १।९
अनन्धचेताः सततम्	भ.गी. ८।१४	अनभ्रन्न्यो अभिचाकशीति	मुंड. ३।१।१+
अनन्धतायदायातितदामुक्तःसदृच्यते	यो.शि. १।१६४	[न.सं. २।३।१७=मं. १।१६४।२०	श्वेता. ४।६
अनन्धप्रोक्तेमतिरत्र नास्त्यणीयान्	कठो. २।८	अनहङ्कर्तयितव्यमचेतयितव्यं	नृसिंहो. ९।९
अनन्धभजनसिद्धात्मात्मभावाभवन्ति	सामर. ७५	अनहङ्कर्तव्यमचेतयितव्यं [मा.पा.]	नृसिंहो. ९।९
अनन्धभक्ताय... दद्यात्	मैत्रा. ६।२९	अनहङ्कार एव च	भ.गी. १३।९
अनन्धभक्तिपरा काष्ठा	सामर. ४४	अनाकारमविच्छिन्नमप्राहं (परंतत्त्वं)	अमन. १।११
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां	भ.गी. ९।२२	अनाकाशमसङ्गमरसमगन्धं	बृह. ३।८।८
अनन्येनैव योगेन	भ.गी. १२।६	अनाख्यत्वादगम्यत्वान्मनः-	
अनन्योद्वेगकारीणिमृदुकर्माणिसेवते	अक्षयुप. ९	षष्ठेन्द्रियस्थितेः	महो. २।३
अनन्वागतस्तेन भवति	वृ.उ. ४।३।१५	अनाख्यमनभिव्यक्तं सत्किञ्चि-	
अनन्वागतं पुण्येनामन्वागतं पापेन	वृ.उ. ४।३।२२	द्वयशिष्यते [महो. २।६५	+योगकुं. ३।२५
अनपश्रुवः सर्वमायुरेति [नारा. ३+	भस्मजा. १।७	अनागतानांभोगानामवाञ्छनमकृत्रिमं	महो. ५।१७१
अनपरः प्रणवोऽव्ययः	आगम. २६	अनाजानन् मनसा याचमानो...	सहस्रै. ९
अनपेक्षः शुचिर्दक्षः	भ.गी. १२।१६	अनात्मकमसत्तुच्छकिंनुतस्यावभासकं	२ आत्मो. ९
अनपेक्ष्य च पौरुषम्	भ.गी. १८।२५	अनात्मतां परित्यज्यनिर्विकारो जग-	महो. ४।८३+
		स्थितौ...संविन्मात्रपरो भव	वराहो. २।४९

अनात्मनस्तु शत्रुत्वे	भ. गी. ६।६	अनाधारमनामयं (ब्रह्म)	यो.शि. ३।१८
अनात्मदृष्टेरविवेकनिद्रां...स्वप्नगतिं		अनाधृष्यश्च भूयासम्	चित्त्यु. ७।३
गतोऽहम्	शु. २. ३।९	अनाधृष्यश्चाप्रतिधृष्यश्च यज्ञस्या...	चित्त्यु. ५।१
अनात्मनोदेहादीनामात्मत्वेनाभिमन्यते		अनाधेयमना श्रमं, निर्गुणं निष्क्रियं (ब्रह्म)	अध्यात्मो. ६२
सोऽभिमान आत्मनो बन्धः	सर्वसा. २	अनानन्दमहानन्द..मुक्त इत्युच्यते योगी	अ. पू. २।१५
अनात्मन्यात्मबुद्धिर्यात्वस्थेस्वमिति...	भवसं. ३।९	अनानन्दयितव्यममन्तव्यमबोद्धव्यं	नृसिंहो. ९।९
अनात्मरूपचोरश्रेयात्मरत्नस्य रक्षणं,		अनानन्दसमानन्दमुग्धमुग्धमुख-	
नित्यानन्दमयं ब्रह्म...	ते.वि. ६।१०२	श्रुतिः (दृष्टिः)	अ. पू. १।२६
अनात्मरूपोविषयसङ्करूप एव दुःखं	निरा. उ. १८	अनानानन्दनातीतं दुष्प्रेक्ष्यं...	ते. वि. १।८
अनात्मविदमुक्तोऽपि न भोविहरणादिकं	अ. पू. ४।२	(?) अनापन्नादिमध्यान्तं किमतः परमीहते	अ. शां. ८५
अनात्मविदमुक्तोऽपि सिद्धिजालानि		(?) अनाभासमजं यथा (तथा)	अ. शां. ४८
वाञ्छति	बराहो. ३।२६	अनामकमकारणं	महो. ५।४५
अनादाविहसंसारसंचिताः कर्मकोटयः	अध्यात्मो. ३७	अनामकमरूपकं [अद्वैतो. ३६+	ते. वि. ६।७०
अनादित्वाभिर्गुणत्वात्	भ. गी. १३।३२	अनामगोत्रं मम रूपमीदृशं भजस्व...	मुक्ति. २।७२
अनादिनिधनमेकं तुरीयं (ब्रह्म)	यो. चू. ७२	अनामयमनाभासमनामक...	महो. ५।४५
अनादिमत्त्वं विमुत्त्वेन वर्तते	श्वेता. ४।४	(?) अनामयेऽमौ जुहोति	मैत्रा. ६।२६
अनादिमत्परं ब्रह्म	भ. गी. १३।१३	अनामिकयाऽपाने (जुहोति)...	प्रा. हो. १।११
अनादिमध्यपर्यन्तं यदनादिनिरामयं	महो. २।६८	(तद्रेतः) अनामिकाङ्कुष्ठाभ्यामा-	
अनादिमध्यान्तमनन्तमव्ययं	ना. प. ९।१७	दायान्तरेण स्तनौ वा भ्रुवौ	
अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यं	भ. गी. ११।१९	वा निसृज्यात्	बृह. ६।४।५
अनादिमायया सुप्तो यदा जीवः...	आगम. १६	अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यम्	भ. गी. २।२
अनादिरयं पुरुष एक एवास्ति	सामर. ५	अनावित्येष बाह्यात्मा ध्यायेता-	
अनादिविष्णुदेवस्य प्रकृतिः...जग-		मिहोत्रं जुहोमि	प्रा. हो. २।३
त्कारणभूतां तां...	भवसं. ४।५	अनावृतेविशेद्धारि गेहेनैवावृतेव्रजेत्	ना. प. ५।१२
अनादिसंसिद्धोऽयं जीवश्चिदंशोभवति	सामर. ९८	अनाशिनोऽप्रमेयस्य	भ. गी. २।१८
अनादृत्य वसति कुमारः प्रदुद्राव	बृह. ६।२।३	अनाश्रितः कर्मफलं	भ. गी. ६।१
अनादेरन्तवत्त्वं च संसारस्य न सेत्स्यति	अ. शां. ३०	अनास्थामात्रमभितः सुखाना-	
अनाद्यन्तमनण्यस्थूलरूपमरूपं	अव्यक्तो. १	मालयं विदुः	महो. ५।८५
अनाद्यनन्तं कलिलस्य मध्ये	श्वेता. ५।१३	अनास्थायां कृतास्थायां पूर्वं संसार...	शां. १।७।१७
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं तदेव	पैङ्गलो. ३।८+	अनास्थैवहिनिर्वाणं (सुखं) दुःखमास्था..	महो. ४।१११
	योगकुं. ३।३५	अनाहतध्वनियुतं हंसं यो वेद...	ब्र. वि. २०
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य	कठो. ३।१५	अनाहतमतिक्रम्यविशुद्धौ प्राणाग्निरुध्य	हंसो. ४
अनाद्यनन्तं शुद्धं शिवं शान्तं निर्गुण-		अनाहतमन्त्रः	निर्वाणो. ७
मित्यादिवाच्यं (ब्रह्म)	निरालं. ५	अनाहतस्य शब्दस्य...ध्वनेरन्तर्गतं	
अनाद्यन्तः श्रीमानजो धीमान्	मैत्रा. ७।१	ज्योतिः...तद्विष्णोः परमं पदं	
अनाद्यन्तावभासात्मा परमात्मैव...	अ. पू. २।३४	[यो. शि. ६।२१ + मं. ब्रा. ५।१	
अनाद्यन्तोऽपरिमितोऽपरिच्छिन्नः	मैत्रा. ७।२	अनाहतं तु यच्छब्दं...तत्परं विन्दते	
अनाद्यविद्यावासनयाजातोऽह-		यस्तु स योगी छिन्नसंशयः	ध्या. वि. ३
मित्यादिसङ्कल्पो बन्धः	निरालं. २१		

अनाहतः स्वरूपेण ज्ञानिनामूर्ध्वगो भवेत् (प्रणवः)	यो. चू. ७९
अनिकेतवास्यप्रयत्नो निर्ममः...	
देहस्यागं करोति स परमहंसः	जाया. ६
अनिकेतश्चरेत्, यत्किञ्चिज्जायात्	कठह. ४
अनिकेतश्चरेद्विज्ञाशी	कुंडिको. ९
अनिकेतः स्थिरमतिः [भ.गी. १२ १९	+प. हं. ९
अनिकेतः स्थिरमतिर्नानृतवादी	ना. प. ७।२
अनिज्ञानमनाभासं निष्पन्नं ब्रह्मतत्तदा	अद्वैत. ४६
अनिच्छन्नपि बाष्पेयं	भ. गी. ३।३६
अनित्यद्रव्यैः प्राप्तवानस्मि.. (मा.पा.)	कठो. २।१०
अनित्यमसुखं लोकं	भ. गी. ९।३३
अनित्यं जगद्यज्जनितं	निर्वाणो. ३
अनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम्	कठो. २।१०
अनित्यं वै ब्रजेद्रेहं, नित्यं..वर्जयेत्	ना. प. ५।२४
अनिन्द्रियमविषयमकरणं (ब्रह्म)	नृसिंहो. ९।९
अनिन्द्रियोऽपि सर्वतः पश्यति	नृ. पू. २।४
अनिन्धनो ज्योतिरिवोपशान्तो...	शाट्याय. २१
अनिमित्तस्य चित्तस्य याऽनुत्पत्तिः	
समाऽद्वया	अ. शां. ७७
अनिमित्तं हि जीवितम्	भवसं. १।४०
(?) अनिमित्तो विपर्यासः कथं	
तस्य भविष्यति	अ. शां. २७
अनियामकत्वनिर्मलशक्तिः	निर्वाणो. ५
अनिराकरणं धारयिता भूयासं	महाना. ७।७
अनिराकारमात्मानं धृत्वा यान्ति	
परां गतिं	सदानं. ३
अनिरुक्तस्तयोदशस्तोभः...हुङ्कारः	छां. उ. १।१३।३
अनिरुक्तः प्रजापतेः	छां. उ. २।२२।१
अनिरूप्यस्वरूपं यत्	अध्यात्मो. ६३
अनिर्देश्यमनपावृतं	सुबालो. ३।२
अनिर्देश्यमनिरुक्तमप्रच्यवमाशास्यं	भस्मजा. २।९
अनिर्देश्यमरूपं च पाणिपादाद्यसंयुतं	भवसं. ३।३
अनिर्देश्यं परमं सुखं	कठो. ५।१४
अनिर्देश्यः सर्वसूक्	सैत्रा. ७।१
अनिर्भिण्णं यस्येदमासीदुदकात्मकं	पारमा. १०।७
अनिर्वचनीयज्योतिः सर्वव्यापकं	
निरति...परमाकाशं	मं. ब्रा. ४।१
अनिर्वचनीया सैव माया जगद्वीजं	ग. शो. ४।२

अनिर्वचनोऽयं जीवः	सामर. १००
अनिर्वाच्यममितशोधसागरं [सि.सा. १।	१+त्रि.प. ७।७
अनिर्वाच्यं चैतन्यं ब्रह्म	निरालं. ५
अनिर्वाच्यं पदंबक्तुं न शक्यं तैः सुरैरपि	१यो. त. ७
अनिर्वाच्या मूलप्रकृतिरासीत्	पैङ्गलो. १।२
अनिर्वाच्योऽप्रमेयः पुरातनोगणेशः...	ग. शो. २।४
अनिर्वाणोऽपि निर्वाणश्चित्रदीप	
इव स्थितः	अध्याप. ४२
अनिर्बिण्णः सन्नय लोकान् विचष्टे	चिन्त्यु. ११।४
(?) अनिर्बुत्तिर्योगीश्वरः	सैत्रा. ७।१
अनिवेश (गुरवे) न भुञ्जीत	शिवो. ७।२४
अनिशंवाचामगोचरं (आदिनारायणं)	त्रि. म. ७।१२
अनिश्चिता यथा रज्जुरन्धकारे	
विकल्पता	वैतथ्य. १७
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च	भ.गी. १८।१२
अनिष्टविषये बुद्धिर्दुःखबुद्धिः	स. सा. ५
अनिष्टेऽपि निद्रियार्थेषु द्विष्टिः	सैत्रा. ३।५
अनीशया शोचति मुह्यमानः	मुण्ड. ३।१।२
अनीशश्चात्मा बध्यते भोक्तृभावात्	श्वेता. १।२+
[ना. प. ९।७+	भवसं. २।५
अनुक्षणं जपश्चैव निश्चयः परिकीर्तितः	गुह्यका. ८३
अनुग्रहरूपा उमा भवति	ना. पू. ता. २।१
अनुज्ञाता ह्ययमात्मा	नृसिंहो. ८।३
(?) अनुज्ञाता ह्ययमोङ्कारः	नृसिंहो. ८।३
(उत) अनुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं	
चिन्तयन् प्रसेत्	नृसिंहो. ३।३
(उत) अनुज्ञात्रनुज्ञाविकल्पैरोतो	
ह्ययमात्मा	नृसिंहो. २।७
(?) अनुज्ञानत्वादविकल्परूपत्वात्	नृसिंहो. २।६
अनुज्ञाप्य गुरुंश्चैव चरेद्धि...	ना. प. ६।३५
अनुज्ञामद्वयं लब्ध्वा उपद्रष्टारमात्रजेत्	नृसिंहो. ९।११
अनुज्ञैकरसो ह्ययमात्मा चिद्रूप एव	नृसिंहो. २।७
अनुज्ञैकरसो ह्ययमात्मा प्रज्ञानघन एव	नृसिंहो. ८।५
अनुतिष्ठन्ति मानवाः	भ. गी. ३।३१
अनुतिष्ठन्तु कर्माणि	१ अवधू. १२
अनुत्तमेषूत्तमेषु लोकेषु (ज्योतिर्दीप्यते)	छां. उ. ३।१३।७
अनुदानयितव्यमसमानयितव्यम्	नृसिंहो. ९।९
अनुद्वेगकरं वाक्यम्	भ.गी. १७।१५
अनुनोऽस्मिन्नज्ञ आभजस्वेति	बृह. १।३।१६

अनुन्मत्ता उन्मत्तश्चाचरन्त-		अनुष्टुभाऽर्चनं कुर्यात्	नृ. पू. ५।८
स्त्रिण्डं कमण्डलुं...	जाया. ६	अनुष्टुभावाहमानि भूतानि जायन्ते	ग. पू. १।६
अनुन्मत्तोऽप्युन्मत्तश्चाचरन्	प. हं. प. ८	अनुष्टुभा सर्वमिदं भवति	नृ. पू. ५।६
अनुपनीत उपनीतो भवति	अ. शिर. ३।१६	अनुष्टुभा सर्वमिदं सृष्टम् [नृ. पू. २।२+	ग. पू. ३।८
[+महो. ६।८३	+चतुर्वे. ७	अनुष्टुभा सर्वमुपसंहृतं	नृ. पू. २.२, ३
अनुपनीतशतमेकमेकनोपनीतेन तत्समं	नृ. पू. ५।१६	अनुष्टुभा होमं कुर्यात्	नृ. पू. ५।८
अनुपनीताः क्रियाहीनाः...सर्व-		अनुष्टुभो वा इमानि भूतानि जायन्ते	नृ. पू. १।१
योनिषु...जायन्ते	सन्ध्यो. ३	अनुष्टायनशोचति विमुक्तश्च विमुच्यते	कठो. ५।१
अनुपश्रुतः सर्वमायुरेति (अप्येति)	नारा. ३	अनुष्टयमावह मादयस्व स्वाहा...	
अनुपलभ्यात्मानमननुविद्य ब्रजतो		[आप्तं. २।५।२३=मं. २।३।११	महाना. ८।७
यतर एतदुपनिषदो भविष्यति	छान्दो. ८।८।४	अनुसन्धानो नित्यः	ना. पू. १।३
अनुपश्य यथा पूर्वं प्रतिपश्य तथाऽपरे	कठो. १।६	अनुस्यूतो वसत्यात्मा भूतेष्वहमवस्थितः	वासु. ९
अनुबन्धपरे जन्तावसंसर्गमनाः सदा	अ. पू. २।२९	अनुस्वारश्चान्यरूपम्	गणप. ७
अनुबन्धं क्षयं हिंसाम्	भ. गी. १८।२५	अनुस्वारः परतरः	गणप. ७
(१) अनु भगव इति	छान्दो. ५।३।१	अनूयममनामयं	यो. शि. २।१७
अनुभवेकवेद्यमपरोक्षतया भासमानं		अनूचानमानी स्वयं एवाय	छां. उ. ६।१।२
(आत्मानं)	व. सू. ९	अनूणा अस्मिन्ननूणाः परस्मिन्सृतीये	
अनुभूतं चाननुभूतं च सदासद्य	प्रश्नो. ४।५	लोके अनूणाः स्याम	सहस्रै. १९
अनुभूतिविना मूढोवृथाब्रह्मणि मोदते	भैत्रे. २।२२	[तै. आ. २।१५।१+	अथर्व. ६।११७
अनुभूतोऽप्ययं लोको व्यवहारक्षमो-		अनृतमात्मानं कुरुते	छांदो. ६।१६।१
ऽपि सन्न । असद्रूपो यथा स्वप्नः	यो. शि. ४।१०	अनृताः कर्मवशानुगाः	भैत्रा. ६।३४
(१) अनुमपतां भगवो देवतां शाधि...	छान्दो. ४।२।२	अनृतेन प्रमूढाः	छां. उ. ८।३।२
अनुरक्तिः परे तत्त्वे सततं नियमः		अनृतेनात्मानमन्तर्धाय परशुतप्तं...	छां. उ. ६।१६।१
स्मृतः [त्रि. ब्रा. २।२९	+२ अवधू. २	अनेकचित्तविभ्रान्ताः	भ. गी. १६।१६
(१) अनुब्रजन्नाश्रुमापातयेत्	कठश्रु. २	अनेकजन्मसंसिद्धः	भ. गी. ६।४९
अनुशिष्टोऽन्वति पित्रा	बृह. ६।२।१	अनेकजन्माभ्यासेन वामदेवेन त्रैयथा ।	
अनुशुष्य हैवान्ततो भ्रियते-		सोऽपि मुक्तिं समाप्नोति तद्विष्णोः	
इत्यध्यात्मम्	बृह. १।५।२१	परमं पदम्	वराहो. ४।४१
अनुष्टुप् छन्दो भवति	ग. पू. २।८	अनेकजन्मार्जितपुण्यपुण्यपक्वैकैवल्य-	
अनुष्टुप्प्रथमा भवति [नृ. पू. १।१	+ग. पू. १।६	फलोऽ...ब्रह्माहमस्मि...	मं. ब्रा. ३।३
अनुष्टुप् वै पुरुषः	ग. पू. ३।१	अनेकदिव्याभरणं	भ. गी. ११।६
अनुष्टुप्प्रतमा भवति [नृ. पू. १।१	+ग. पू. १।६	अनेकदोषदुष्टस्य देहस्यैको महान् गुणः	शिवो. ७।१२३
अनुष्टुबेकविंश...उत्तरत उद्यन्ति	भैत्रा. ७।४	अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं	भ. गी. ११।१६
अनुष्टुभमनुचंचूर्यमाणमिन्द्रं निचिक्षुः	१ ऐत. ३।५।२	अनेकवक्त्रनयनं	भ. गी. ११।१७
अनुष्टुभं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति		अनेकशोविद्या...सृष्टिस्थितिलयान्	
[नृ. पू. १।१+	ग. पू. १।६	लभन्ते	सामर. ५५
अनुष्टुभा जातानि जीवन्ति		अनेकाकारखचितमनेकवदनान्वितं...	
[नृ. पू. १।१+	ग. पू. १।६	देवं...ध्यायतो..मनोवृत्तिर्विनश्यति	त्रि. ब्रा. २।१५४
(१) अनुष्टुभा नत्वा प्रसाद्य	नृसिंहो. ४।१	अनेकाहुतदर्शनम्	भ. गी. ११।१७

अनेजदेकं मनसोजवीयो नैनरेवा

आधुवनं पूर्वमर्षत् [इंशा. ४+

अनेनसखीरितःपरिभ्रमतीदंक्षरीरं...

अनेन चैतदुपरस्मरत्यभीक्ष्णं सङ्कल्पः

अनेन जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य

अनेन ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनं

अनेन प्रसविष्यच्च

अनेन मंत्रेणामिमांशिघ्रेन

अनेन यथातमः, ततश्चोमितिष्वनिरभूत्

अनेन यदा पश्यन्पश्यति रुक्मवर्णः..

अनेनविधिनासम्यक्नित्यमभ्यस्यते..

अनेन वै न उद्गात्रात्येष्यन्तीति

अनेन ह रूपेणामुलोकमभिसम्भवति

अनेन द्विप्रजापतिर्विधात्मा...भवति

अनेन ह्येतत्सर्वं वेद

अनेनाधीतेनाहोरात्रान् सन्वधाभि

अनेनाभ्यासयोगेन..चित्तंविहीनता-

मेति विन्दुर्नो यात्यधः

अनेनास्य तमसः पारं गमिष्यति

अनेनेष्टेनानिष्टेनैतद्विधमिदं...

अनेनेदं क्षरीरं चेतनवत्प्रतिष्ठापितं

अनेनैमानमभिविष्याम इति

अनेनैव चतुर्दशविधस्य मार्गस्य

व्याख्या कृता

अनेनैव चेदं ध्यायते

अनेनैवतदुपरस्मरत्यभीक्ष्णं [मा.पा.]

अनेनैव तद्रूप्यस्युदयस्युच्छ्वसित्यजस्रं

अनेनैव तु मन्त्रेण मोक्षश्च समुदीरितः

अनेनैव प्रमीयते हि कालः

अनेनैव सुखेनालापयिष्यथा इति

अनेनैव स्वचक्षुषा

अनेनोर्ध्वभागभवत्यन्यथाऽधःपतति

अनेनोर्ध्वमुत्क्रान्तोऽशब्देनिधनमेति

अनेशमस्येषव आभुरस्यनिषङ्गयिः

[वा.सं.१६।१०+

अनौद्धत्यमदीनत्वं (यतिधर्माः)

अन्तकाले च मामेवं

अन्तकाले सर्वेप्राणा अभिसमायान्ति

गो.पू. ६।१७

मैत्रा. २।६

केनो. ४।५

छां.उ. ६।३।२

कैव. २४

भ. गी. ३।१०

जावालो. ४

ग. शो. १

मैत्रा. ६।१८

अ. ना. २९

बृ. उ. १।३।२

१ ऐत. ३।७।३

मैत्रा. ६।६

बृह. १।४।७

२ ऐत. ६।१

यो.शि. १।१२६

मैत्रा. ६।३०

मैत्रा. २।४

मैत्रा. २।४

छान्दो. १।२।१

मैत्रा. ६।१०

मैत्रा. ६।१७

केनो. ४।५

मैत्रा. ७।११

मुद्रलो. १।७

मैत्रा. ६।१४

छां.उ. ४।२।५

भ. गी. १।१।८

मैत्रा. ४।३

मैत्रा. ६।२२

नीलरु. २।७

तै.सं. ६।५।१।४

ना. प. ४।११

भ. गी. ८।५

बृ. उ. ४।३।३३

अन्तत आचम्य पाणी प्रक्षाल्य...

अग्निं प्राक्षिराः संविशति

(१) अन्ततोऽन्नं राद्धम्

अन्ततोऽस्मा अन्नं राध्यते

अन्तरङ्गसमुद्रस्य रोधेवेलायतेऽपिवा

अन्तरतरं यद्यमात्मा

अन्तरतोऽलोमका हि योनिरन्तरतः

अन्तरं ज्ञानचक्षुषा

(१) अन्तरात्मक्यागस्यावहिरात्मनो-

ऽनुमीयते गतिः

(अथ) अन्तरात्मानाम पृथिव्यप्तेजो...

ओताघ्राता...विज्ञानात्मापुरुषः...

कर्मविशेषणं करोत्येषो-

ऽन्तरात्मा नाम

अन्तरात्मा प्राणः

अन्तरात्मा भवेद्ब्रह्मापरमात्मानमहेश्वरः

अन्तरात्मा मे शुद्धयतां

अन्तरादन्तरोऽस्म्यहं

अन्तरादित्ये उयोतिस्वरूपो हंसः

अन्तरादित्येन ज्ञातं मनुष्याणाम्

अन्तरादित्ये मनसा चरन्तं

अन्तरादित्ये हिरण्यमयः पुरुषः

अन्तरान्तररूपोऽहमवाङ्मनसगोचरः

अन्तरायदाकाशःससमानोवायुर्व्यानः

अन्तरास्थां परित्यज्य...योऽसिसो-

ऽसिजगत्यस्मिंल्लीलयाविहरानघ

अन्तरिक्षगतोवह्निर्वैद्युतःश्चान्तरात्मकः

नभःस्थःसूर्यरूपोऽग्निःनाभि...

अन्तरिक्षमथो सुवः

अन्तरिक्षमपूपः

अन्तरिक्षमात्मा

अन्तरिक्षमुदरं [बृ.उ.१।१।१+

अन्तरिक्षमुद्रीथः

अन्तरिक्षमेवर्क

अन्तरिक्षमेव सा

अन्तरिक्षमेवोक्थम्

अन्तरिक्षलोकं याज्यया (जयति)

अन्तरिक्षलोकेषु गार्गीति

अन्तरिक्षंकला, यौ. कला, समुद्रः कला

बृह. ६।३।६

तैत्ति. ३।१०।१

तैत्ति. ३।१०।१

ना. वि. ४६

बृह. १।४।८

बृ. उ. १।४।६

भ. गी. १।३।१५

मैत्रा. ६।१

१ आत्मी. २

मैत्रा. ६।१

रुद्रह. १३

महाना. १४।१७

मैत्रे. ३।१८

पा. ब्र. ३

पा. ब्र. ५

चित्यु. ११।६

नृ. पू. १।४

तै. वि. ३।८

प्रभो. ३।८

महो. ६।१

यो.शि. ५।३२

महाना. १।९

छान्दो. ३।१।१

चित्यु. ४।१

१।२।३

छां.उ. २।२।१, २

छां. उ. १।६।२

छां. उ. १।६।२

१ ऐत. १।२।२

बृ. उ. ३।१।१०

बृह. ३।६।१

छां. उ. ४।६।३

अन्तरिक्षं गीः	छां. उ. १।३।७	अन्तर्बहिश्चाकाशशब्दनुस्यूतं (आत्मान- मपरोक्षीकृत्य)	वज्रसू. ९
अन्तरिक्षं चतुर्दोना	चित्रगु. ७।२	अन्तर्बालक्ष्ये दृष्टौ निमिषोन्मेष-	
अन्तरिक्षं दक्षिणाग्निः	मैत्रा. ६।३३	वर्जितायां सत्यां शाम्भवी मुद्रा..	अद्वयता. ७
अन्तरिक्षं देवतामारोऽन्तरिक्षंत्वा...		अन्तर्मुखतयातिष्ठन्बहिर्वृत्तिपरोपिसन्	अद्वयगु. ३९
रिष्यतीत्येनं ब्रूयात्	३ ऐत. १।३।३	अन्तर्मुखतयानित्यं.. निद्रालुरिवलक्ष्यते	वराहो. ४।१५
अन्तरिक्षं पवित्रेण	चित्यु. ८।२	अन्तर्मुखतयानित्यंसुप्तोबुद्धोब्रजन्पठन्	अ. पू. १।३४
अन्तरिक्षं प्रजापतेर्द्वितीया चितिः	मैत्रा. ६।३३	अन्तर्मुखतया सर्व.. जुह्वतोऽन्तर्निवर्तते	अ. पू. ५।१२
अन्तरिक्षं प्रपद्ये दिवं प्रपद्ये	छां. उ. ३।१५।५	अन्तर्यद्विषद्भिः सत्यमंताभावेवर्हिर्नच	ते. वि. ५।२८
अन्तरिक्षं प्रस्तावः	छां. उ. २।१७।१	अन्तर्याण्डोपयोगादिमौ स्थितौ...	मैत्रा. ६।३६
अन्तरिक्षं मरीचयः	२ ऐत. १।२	अन्तर्याममुपांशुमेतयोरंतराले चोष्णं	
अन्तरिक्षं यजुर्भिर्नीयते सोमलोकं	प्रश्नो. ५।४	मासवद्यदौष्ण्यं स पुरुषः	मैत्रा. २।८
अन्तरिक्षं वा अनुपतन्ति	१ ऐत. १।२।२	अन्तर्याममेवाप्येति योऽन्तर्याम-	
अन्तरिक्षं वा एतद्यदिदमिदमेत्योपधारय	आर्षे. २।२	मेवास्तमेति विज्ञानमेवाप्येति	सुवालो. ९।७
अन्तरिक्षोदरः कोशोभूमिर्बुध्नोर्जीर्यति	छां. उ. ३।१५।१	अन्तर्याम्यहमप्राप्तोऽनिर्देश्योहमलक्षणः	ब्र. वि. ८४
अन्तरेणतालुकेयपस्तनश्वावलम्ब्यते	तैत्ति. १।६।१	अन्तर्याम्यात्मना विश्वं... सा मां पातु	
अन्तरेणयेन सन्धिर्विवर्तयतिसासंहिता	३ ऐत. १।५।२	सरस्वती	सरस्व. १३
अन्तरेण स्तनौवाधुवौवा निमृज्यात्	बृह. ६।४।५	अन्तर्योऽं बहिर्योऽं... मया त्वया-	
अन्तरेणोभयं व्याप्तं भवति	३ ऐत. ३।२	ऽप्यसौ वन्द्यः	अमन. २।६
अन्तर्गतोऽनवकाशान्तर्गतसुपर्ण-		अन्तर्लक्ष्यं (क्षय) जलज्योतिस्स्वरूपं	
स्वरूपो हंसः	पा. ब्र. ३	भवति [मं. ब्रा. १।४+	अद्वयता. ७
अन्तर्गृहे रेतो मूत्रं पुरीषं वा... तेन		अन्तर्लक्ष्यदर्शनेन जीवन्मुक्तदशायां	
सिञ्चते पितृन्	भस्मजा. २।१६	स्वयमन्तर्लक्ष्योभूत्वा... भवति	मं. ब्रा. १।५
(यस्मात्) अन्तर्जलौषधिवीरुधाना-		अन्तर्लक्ष्यविलीनचित्तपवनो योगी	
विश्येमं विश्वं भुवनानि वा अवते		सदा वर्तते	शां. १।७।१५
तस्मादुच्यते भगवान् बटुकेश्वरः	बटुको. २०	अन्तर्लक्ष्यं बहिर्दृष्टिर्निमेषोन्मेषवर्जिता,	
अन्तर्जुषाणं भुवनानि विश्वा	आर्षे. १०।१	एषा सा वैष्णवी मुद्रा... गोपिता	शां. १।७।१४
अन्तर्ज्योतिर्विश्वभुक् (आत्मा)	आर्षे. ९।२	अन्तर्लीनसमारम्भः... शरीरं विद्धि	
अन्तर्धारणशक्तेन... शैवल्लिङ्गमुरस्स्थले	सदानं. ७	भौतिकम्	अ. पू. ४।३९
अन्तर्बहिर्धारितं परम्ब्रह्माभिधेयं		अन्तर्विवरेणेक्षन्ति, अनाद्यंतो.. भास्करः	मैत्रा. ७।२
शाम्भवं लिङ्गम्	सदानं. १	अन्तर्विवरेणेक्षन्ति प्रणवाख्यं प्रणेतारं	
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य		भारूपं विगतनिद्रं... विरजं विमृत्युं	मैत्रा. ७।५
नारायणः स्थितः	महाना. ९।५	अन्तर्वीथीनागवीथीभ्रुवावस्याः	गुह्यका. १०
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य परिपूर्ण..	त्रि. म. ना. ७।७	अन्तर्वैराग्यमादाय बहिराशोन्मुखेहितः	महो. ६।७०
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं स्थितो नारायणः परः	ना. पू. १।५	अन्तर्हितेन जातरूपेण प्राशयति	बृ. उ. ६।४।२५
अन्तर्बहिश्च तल्लिङ्गं विधत्ते यस्तु		अन्तर्हृदयाकाशशब्दमाकर्णयन्ति	मैत्रा. ६।२२
शाश्वतम्	सदानं. १५	अन्तर्हृदयाकाशस्य पारं तीर्त्वा	मैत्रा. ६।२८
अन्तर्बहिश्च नारायणः	नारा. २	अन्तर्हृदयाकाशं विनुदन्ति	मैत्रा. ६।२७
अन्तर्बहिश्चरति हंसः	पा. ब्र. ३	अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः [त्रिसु.]	महाना. १२।३
		[तै. आ. १०।५०।१]	

अन्तर्हृदये यथा ग्रीहिर्वा यवो वा	वृ. उ. ५।६।१	(१) अन्तःकरणचतुष्टयात्मा	रामो. ५
अन्तर्वत्तु कलं तेषां	भ.गी. ७।२३	अन्तःकरणचतुष्टयैरेव स्वप्नः	शारीरको. १०
अन्तर्बदेवास्य तद्वदति	बृह. ३।८।१०	अन्तःकरणनाशेनसंविन्मात्रस्थितो हरिः	स्कन्दो. २
अन्तर्बद्धे किल ते शाखावत्य साम	छां. उ. १।८।८	अन्तःकरणप्रतिबिम्बितचैतन्ययत्तदेवा..	पैङ्गलो. २।६
अन्तर्वन्त इमे देहाः	भ.गी. २।१८	अन्तःकरणमनोबुद्धिचित्ताहङ्कारा-	
(१) अन्तर्वन्त उपास्ते अन्तर्वन्तं.. जयति	वृ. उ. १।५।१३	स्तदुत्तयः	पैङ्गलो. २।४
अन्तर्वन्तं स लोकं जयति	बृह. १।५।१३	अन्तःकरणसम्भिन्नबोधः सत्स्वप्नदाभिधः	अध्यात्मो. ३१
अन्तर्ध्वन्मसि मनसा चरन्तं	चित्त्यु. ११।५	अन्तःकरणोपाधिकाः सर्वे जीवा	
अन्तर्ध्वरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः	प्रा. हो. १।७	इति वदन्ति	त्रि.म.ना. ४।९
अन्तर्ध्वरसि भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु		अन्तःपूर्णो बहिःपूर्णः पूर्णकुम्भ	
[तै. आ. १०।३।१।१+	महाना. १६।१	इवार्णवे [मैत्रे. २।२७+	वराहो. ४।१८
अन्तर्ध्वेतसा कक्षिपतं त्वसत्	वैतथ्य. ९	अन्तःप्रवृत्तस्तु तैजसः	आगम. १
अन्तर्ध्वरशरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो		अन्तः प्रणवनादाकृतो हंसः...	पा. म. ८
यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः	मुण्ड. ३।१।५	अन्तः प्रणवो व्यावहारिकप्रणवः	ना. प. ८।२
अन्तर्ध्वरशरीरे निहितो गुहायामज		अन्तः प्रत्यावृत्तिवशात्... मुक्त एव	अ. पू. ५।९०
एको नित्यः [सुबालो. ७।१	+ अध्यात्मो. १	अन्तः प्रविष्टं कर्तारमेतम्	चि. ११।२, ३
अन्तर्ध्वरशरीरे निहितो गुहायां शुद्धः		अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनानाम्	
सोऽयमात्मा सर्वस्य... मेहो...	सुबालो. ८।१	[तै. आ. ३।११+	चित्त्यु. ११।१
अन्तर्ध्वरशांतः समस्नेहो भवचिन्मात्रवासनः	मुक्ति. २।७०	अन्तःशून्यो बहिःशून्यः शून्यकुम्भ	
अन्तर्ध्वरशीलतया बुद्ध्या कुर्वतो		इवाम्बरे [वराहो. ४।१८	मैत्रे. २।२७
लीलया क्रियाम्	महो. ६।४३	अन्तःशुद्धः पूतः शून्यः	मैत्रा. ७।४
अन्तर्ध्वरशीतलतायां तु लब्धायां		अन्तःशांतः समस्नेहो भव	मुक्ति. २।७०
शीतलं जगत्	अ. पू. १।३५	अन्तादाचामेति, कथमिति, लवणमिति	छां. ६।१३।२
अन्तर्ध्वरशून्यो बहिःशून्यः शून्यकुम्भ		अन्ते च शुभाशुभं कर्मैतच्छरीरस्य प्रामाण्यं	निरुक्तो. १।८
इवाम्बरे [मैत्रे. २।२७+	वराहो. ४।१८	अन्ते तु किङ्किणीवंशवीणाभ्रमरनिरस्व-	
अन्तस्त्वृणोपतप्तानां दावदाहमयं जगत्	अ. पू. १।३५	नः, इति नानाविधानादाः श्रूयन्ते...	ना. बि. ३५
अन्तस्स्थं मां परित्यज्य बहिष्ठं यस्तु		अन्ते ब्रह्माखण्डाकारम्	निर्वाणो. ८
सेवते । हस्तस्थं पिण्डमुत्सृज्य		अन्ते वास्युत्तररूपम्	तैत्ति. १।३।५
लिङ्गेत्कूर्परमात्मनः	जा. व. ४।५८	(१) अन्ते विश्वमायाप्रवृत्तिः	श्वेता. १।१०
अन्तस्थानां तु मेदानां तस्माज्जागरिते	वैतथ्य. ४	अन्ते सहस्रस्य मुनेरंतिकमा-	
अन्तस्थानीन्द्रियाण्यन्तर्बहिष्ठान्		जगाम [मैत्रा. १।२+	मैत्रे. १।१
विषयान्बहिः...	ना. प. ३।२६	अन्ते स्विष्टकृत्पूर्णाहुतिः.. बलिप्रदानं	भस्मजा. १।२
अन्तस्सङ्गपरित्यागीलोके बिहर्...	ना. प. ६।४३	अन्त्याश्रमस्थः सकलेन्द्रियाणि निरुध्य..	कैव. ५
अन्तस्सङ्गपरित्यागी बहिःसंभारवानिव	महो. ६।७०	अन्धकारनिरोधित्वाद्गुरु रित्यभिधीयते	अद्वयता. ५
अन्तस्संत्यक्तसर्वाशोवीतरागो विवासनः	महो. ६।६७	अन्धवत्कुञ्जवच्चैव बधिरोन्मत्तमूकवत्	
अन्तस्समुद्रे मनसा चरन्तं	चित्त्यु. ११।१	(यतिः)	ना. प. ४।२२
अन्तस्सर्वपरित्यागी बहिःकुरुयथागतं	अ. पू. ५।११६	अन्धवज्रजडवच्चापि मूकवच्च महींचरेत्	ना. प. ४।३६
अन्तस्सङ्गं बहिःसङ्गं मात्मसङ्गं च यः	वराहो. २।३६	अन्धवत्पश्य रूपाणि... प्रशान्तस्येति	
अन्तं चैव अन्नादश्च सोम एव	वृ. उ. १।५।६	लक्षणम्	अ. ना. १५

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्या-
 मुपासते [ईशा. ९+ वृह. ४।४।१०
 अन्धं भुवनमस्यप्रकाशंनुसुचक्षुषाम् बराहो. २।२२
 अन्धः सन्नन्धो भवति छां. उ. ८।४।२
 अन्धा बधिरा मुग्धाः कृषिा मूका
 उन्मत्ता इव परिवर्तमानाः नृसिंहो. ६।३
 अन्धाः सन्धाः कुम्भावापनका भवन्ति गर्भो. ३
 अन्धेन तमसावृताः वृ. उ. ४।४।११
 अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः कठो. २।५+
 [मुं. उ. १।२।८+ मैत्रा. ७।९
 अन्धोदपानस्थोमेकइवस्मिन्संसारे
 त्वं नो गतिः मैत्रा. १।८
 अन्धोऽभविष्यन्मानागमिष्यइति छां. ५।१३।२
 अन्न इत्यु द्वैक आहुः वृ. उ. १।३।७
 अन्नकामेनेदं प्रकल्पितं ब्रह्मणा मैत्रा. ६।१२
 अन्नकार्याणां(पण्णां)कोशानां समूहो-
 ऽन्नमयः कोश इत्युच्यते सर्वसारो. ४
 (१) अन्नत्वं न पुनरुपैति मैत्रा. ६।९
 (१) अन्नदास्त्वैवैनमुपमन्त्रयते कौ. उ. २।१
 अन्नपतेऽन्नस्यनोषेहानमीवस्यशुचिमणः प्रा. हो. १।५
 [वा. सं. ११।८३+ तै. सं. ४।२।३।१
 अन्नपानपरो भिक्षुः...आविकं वा
 नाविकं वा...प्रतिगृह्यतिश्चैतान्
 पतत्येव न संशयः १ सं. सो. २।९५
 (१) अन्नपानलोकेन सम्पन्नो महीयते छां. उ. ८।२।७
 अन्नपानविशेषैश्च नैवेद्यमुपकल्पयेत् शिवो. ७।५७
 अन्नपाने च सर्वदा तैत्ति. १।४।१
 अन्नपूर्णोपनिषदंयोऽधीते..ब्रह्मैवभवति अ. पू. ६।१२०
 अन्नमभिजिघृक्षमाणानिमृयोरश्मिभिः मैत्रा. ६।१२
 (१) अन्नममृतम्, सम्राट् स्वराट्... नृ. पू. १।४
 अन्नमय-प्राणमय-मनोमय-विज्ञान-
 मयानंदमय-कोशाः कथं सर्वसारो. १+
 [मुद्रलो. ४।२+ पैङ्गलो. २।५
 अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमया-
 नंदमयमात्मा मे शुध्यतां महा. १४।१९
 अन्नमयो ह्ययं प्राणः... मैत्रा. ६।११
 अन्नमशितं त्रेधा विधीयते छान्दो. ६।५।१
 अन्नमसि ज्योतिरसि निधनमसि वृ. उ. ६।३.४
 अन्नमयंहिसोन्यमनः[छान्दो. ६।५।४+ ६।६।५

(१) अन्नमयः कोश इत्युच्यते सर्वसा. ४
 अन्नमात्मन आगायानि छां. उ. २।२२।२
 (अतः) अन्नमात्मेत्युपासीत मैत्रा. ६।१२
 (अथ) अन्नमापन्नमा इत्याद्या-
 यनक्त्येषा मैत्रा. ६।५
 अन्नमायुर्वा एव यद्वायुः २ ऐत. ३।१०
 अन्नमितरे पक्षवः १ ऐत. ३।१।३
 अन्नमितिहोवाच-सर्वाणिहवा..भूतानि छां. १।११।९
 अन्नमिहारऽऽहरदन्नपतेऽन्नमिहा-
 २ऽऽहरा२ऽऽहरोऽन्नमिहा-
 २ऽऽहरा२ऽऽहरोऽन्नमिहा-
 अन्नमेव विप्ररन्नमन्नं संवननं स्मृतं छां. उ. १।११।५
 अन्नरसविज्ञातारं विद्यात् मैत्रा. ६।१३
 अन्नरसान्मे त्वयि दधानीति पिता कौ. उ. ३।८
 अन्नरसांस्ते मयि दध इति पुत्रः कौ. उ. २।१५
 अन्नरसेनैव भूत्वाऽन्नरसेनाभिवृद्धिः कौ. उ. २।१५
 प्राप्यान्नरसमयपृथिव्यां यद्धि-
 लीयते सोऽन्नमयकोशः पैङ्गलो. २।५
 अन्नवतो वै स लोफान् पानवतो-
 ऽभिसिद्धयति यावदन्नस्य... छान्दो. ७।९.२
 अन्नवानन्नावो भवति छां. उ. १।३।७
 [+१।११।४+२।८।३+तैत्ति. ३।६+ ३।७
 अन्नवान्प्राणवान्मनस्वान्विज्ञानवाना-
 नन्दवांश्च भवति मैत्रा. ६।१३
 अन्नशुद्धयैव सत्त्वस्य विवृद्धिः... भवसं. ४।९
 अन्नस्य का गतिरित्याप इति होवाच छां. उ. १।८।४
 अन्नस्य परिपाकेन रसवृद्धिः प्रजायते बराहो. ५।४८
 अन्नस्य रेतो रेतः १ ऐत. १।३।१
 अन्नस्य संक्लृष्ट्यै प्राणाः सङ्कल्पन्ते छां. उ. ७।४।२
 अन्नस्यात्मेति वा अहमेतमुपासे कौ. त. ४।३
 अन्नस्याये द्रष्टा भवति...कर्ता भवति छां. उ. ७।९।१
 अन्नस्याश्चयमानस्य योऽणिमा स
 ऊर्ध्वः...तन्मनो भवति छान्दो. ६।६।२
 अन्नं कनीयो भविष्यति छां. उ. ७।१०।१
 (१) अन्नं चरसंचविजानाति(विज्ञानेन) छां. उ. ७।७।१
 अन्नं चैव प्राणश्च (द्वौ देवौ) बृह. ३।९।८
 अन्नं चैवान्नादश्च सोम एव वृ. उ. १।४।६
 अन्नं थम्, अन्ने हीदं सर्वं स्थितम् छान्दो. १।३।६
 अन्नं न निन्द्यात्, तद्वतम् तैत्ति. ३।७
 अन्नं न परिचक्षीत्, तद्वतम् तैत्ति. ३।८

अन्नं नो भगवानागायतु	छां. १।१२।२	अन्नाद्रेतः (जायते)	ग. शो. २।५
अन्नं पशूनां प्राणोऽन्नं ज्येष्ठमन्नं		अन्नाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे..प्रवीतु	छान्दो. ७।९।२
मिषकस्सृतम्	मैत्रा. ६।१३	अन्नाद्वीर्यं तपो मन्त्राः कर्म.	
अन्नं पुनः पुनर्जनयते	बृ. उ. १।५।२	लोकालोकेषुनाम च	प्रश्नो. ६।४
अन्नं प्रयन्त्यमिसंविशन्ति(भूतानि)	तैत्ति. ३।२	अन्नाद्वैप्रजाः प्रजायन्ते..पृथिवीम्रिताः	मैत्रा. ६।११
अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचमिति	तैत्ति. ३।१	[तैत्ति. २।२+	तैत्ति. ३।२
अन्नं प्राणेन सम्मितम्	इतिहा. ४	अन्नेन जातानि जीवन्ति, अन्नं प्रयन्ति..	
अन्नं प्राणो वृषादर्विः...	इतिहा. ५	अन्नेन पशूनां तृणेन तत्तज्जीवानां	
अन्नं बहु कुर्वीत, तद्वत्तम्	तैत्ति. ३।९	[तृप्तिदा]	सीतो. ७
अन्नं बहु भविष्यति (सुवृष्ट्या)	छां. ७।१०।१	अन्नेन प्राणाः, प्राणैर्बलं, बलेन तपः	महा. १७।१३
अन्नं ब्रह्म यवाभं ब्रह्म	राधोप. ४।२	अन्नेन मूलेनापो मूलमन्विच्छ	छां. उ. ६।८।४
अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्	तैत्ति. ३।२	अन्नेन वाऽथवायेन साकमूलफलेन वा	इतिहा. ९१
अन्नं ब्रह्मेत्येक आहुः, तन्न, तथा		अन्नेन वाव सर्वे प्राणा महीयन्ते	तैत्ति. १।५।३
पूयति वाऽन्नं, ऋते प्राणात्	बृह. ५।१२।१	अन्नेन शुङ्गेनापो मूलमन्विच्छ	छां. उ. ६।८।४
अन्नं या वाग्विराट्	छां. १।१३।२	अन्नेन हीदं सर्वमश्नुते [१ ऐत. १।२।१,]	२, ३, ४, ५, ६
अन्नं वावबलाद्भूयः, तस्मा..नाश्रीयात्	छां. ७।९।१	अन्नेन हीमानि सर्वाणि भूतानि	
अन्नं वा अस्य सर्वस्य योनिः	मैत्रा. ६।१४	समनन्ति	१ ऐत. १।२।३
अन्नं वै प्रजापतिः, ततोऽवैऽद्रेतः,		अन्नेनाभिषिक्ताः पचन्तीमे प्राणाः	मैत्रा. ६।१२
तस्मादिमाः प्रजाः प्रजायन्ते	प्रश्नो. १।१४	अन्नेनेमं लोकं जयत्यन्नेनार्तु...	१ ऐत. १।२।७
अन्नं वै त्रि, अन्नेहीमानि भूतानि विष्टानि	बृह. ५।१२।१	अन्ने हीदं सर्वं स्थितम्	छां. उ. १।३।६
अन्नं सप्तहोता	चित्यु. ७।३	अन्ने हीमानि सर्वाणि भूतानि	
अन्नं हि भूतानां ज्येष्ठम्	तैत्ति. २।२	विष्टानि । रमिति प्राणो वै रं	बृ. उ. ५।१२।१
अन्नात्पुरुषः [तैत्ति. २।१।१+	ना. उ. ता. १।५	अन्नैः पानैरावसथैः प्रतिकल्पन्ते	बृ. उ. ४।३।३७
अन्नात्प्राणा भवन्ति भूतानां	महाना. १७।१	अन्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि	महाना. १४।१
अन्नात्प्राणो मनः सत्यंलोकाः कर्मसु..	मुण्ड. १।१।८	[+आप. श्रौ. सू. १३।१७।९	
अन्नादश्च सोम एवान्नं...	बृह. १।४।६	अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयः	कठो. २।१
अन्नादो भवति, य एतामेवं साम्नामुप..	छां. उ. १।१३।४	अन्यजन्मकृताभ्यासात्स्वयंतत्त्वं प्रकाशते	अमन. २।११०
अन्नादो भवति, य एवेदं वेद	छां. उ. ४।३।८	अन्यतरामेव वर्तनीं संस्करोति	
अन्नादोऽधिपतिर्य एवं वेद	बृ. उ. १।३।१८	[संस्कुर्वन्ति—मा. पा.] हीयतेऽन्यतरा	छां. ४।१६।३.
अन्नादोवसुदानो विन्दते वसु, य एवं..	बृह. ४।४।२४	अन्यत्र कथं तदुपलभ्यते	कठो. ६।१२
अन्नादो वाऽधिपतिः [पा.]	बृ. उ. १।३।१८	अन्यत्र चैव सर्पेत्तु	शिवो. ७।३६
अन्नाद्भवन्ति भूतानि	भ. गी. ३।१४	अन्यत्र धर्मादन्यत्राधर्मात्	कठो. २।१४
अन्नाद्यायज्यूह्वं सोमो राजाय...	राधोप. ४।२	अन्यत्र भूताश्च भव्याश्च यत्पश्यसि...	कठो. २।१४
[पा. गृ. सू. २।६।१७+		अन्यत्रमना अभूवं नादर्श	बृ. उ. १।५।३
हि. गृ. सू. १।१०।१		अन्यत्रमना अभूवं नाश्रीषम्	बृ. उ. १।५।३
अन्नाद्वेवखल्विमानि भूतानि जायन्ते	तैत्ति. ३।२	अन्यत्र मे मनोऽभूदित्याह	कौ. उ. ३।७, ७.
अन्नाद्भूतानामुत्पत्तिः	मैत्रा. ६।३७	(?) अन्यत्रायतनमलब्ध्वा	छां. उ. ६।८।२
अन्नाद्भूतानि जायन्ते [तैत्ति. २।२+	मैत्रा. ६।१२	अन्यत्रास्मात्कृताकृतात्	कठो. २।१४
अन्नाद्यकामो निर्भुजं भूयात्	३ ऐत. १।३।२	अन्यथा गृह्यतः स्वप्नो निद्रां स्वप्नं	आगम. १५

अन्यथाऽत्रः पतति (भूतात्मा)	मैत्रा. ४।३
अन्यथा परे शब्दवादिनः...	
शब्दमाकर्णयन्ति	मैत्रा. ६।२२
अन्यथा (उक्तलक्षणाभाववांश्चेत्)	
प्राक्षणत्वसिद्धिर्नास्त्येव	ब. सू. ९
अन्यथाऽऽलिङ्गयते कांता अन्यथा-	
ऽऽलिङ्गयते सुता	जा. द. ४।५१
अन्यथा सद्यपि मे असद्विदुः	पा. मं. १९
अन्यथा सर्वपरिपूर्णस्य परब्रह्मणः...	
केवलनिराकारत्वं	त्रि.म.ना.२।४
अन्यथेन्द्रोयतीन्साक्षाद्वृकेभ्यःपातयति	भरमजा. १।६
अन्यदपि सर्वं सर्वगतं सर्वं	नृसिंहो. ९।६
अन्यदादुरविद्यया	ईशा. १०
अन्यदादुरसम्भवात्	ईशा. १३
अन्यद्दीये तृणे रत्ने...मनसा	
विनिवृत्तिर्या तदस्तेयं विदुर्युधाः	जा.द. १।११
अन्यदेव तद्विदितात्	केनो. १।४
अन्यदेवाहुर्विद्यया	ईशा. १०
अन्यदेवाहुः सम्भवात्	ईशा. १३
अन्यद्वृत्तमुपाकरिष्यन्	बृह. ४।५।१
अन्यन्न वीक्षत आत्मानो नान्यथा...	नृसिंहो. ५।३
(अथ) अन्यन्नाम प्रब्रूते यदस्य भवति	बृह. १।४।१
अन्यमाक्रममाक्रम्यात्मानमुपसंहरति	बृह. ४।४।३
अन्यथाऽऽवर्तते पुनः	भ.गी. ८।२६
अन्यराजानस्ते क्षय्यलोका भवन्ति	छां. ७।२५।२
अन्यविद्यापरिज्ञानमवश्यंनश्वरंभवेत्	शु.र.उ. ३।१४
अन्यस्मात्सर्वस्मादन्तरतरयदयमात्मा	बृह. १।४।८
अन्यस्यानुज्ञाता ह्यमोक्कारः ओमिति	
ह्यनुजानाति	नृसिंहो. ८।३
अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व	कठो. १।२१
अन्यः प्रियतरो भुवि (न भविता)	भ.गी. १८।६९
अन्यानि संयान्ति नवानि देही	भ.गी. २।२२
अन्यान्कामान् वृणीष्व	मैत्रा. १।१२
अन्यायेनार्थसम्भयान्	भ.गी. १६।१२
अन्या वाचो विमुञ्चथ	मुण्ड. २।२।५
अन्यासक्तो न भुञ्जानो न तिष्ठन्	
...सम्भाष्येदुरुणा सह	शिवो. ७।१६
अन्ये आत्मानं न विदुरात्मना	सामर. ७५
अन्ये च जगतो भावाः...परं	
तत्त्वं न गीयते	अमन. १।८

अन्ये च बहवः शूराः	भ.गी. १।९
अन्ये त्वेवमजानन्तः	भ.गी. १३।२६
अन्येनाग्नेन प्राक्षणां भोजयित्वा	
(दुस्स्वप्ने)	इति. २।४।७
अन्ये मनुष्येभ्य इति ह प्रतिजज्ञे	छान्दो. ४।९।२
अन्ये श्वान उपसमेत्योचुः-अन्नं नो...	छां. १।१२।२
अन्येषामधिपतिः सर्वैर्मानुष्यकैर्भोगैः	
सम्पन्नतमः	बृह. ४।३।३३
अन्येषां चैव सर्वेषां धार्यं चैवान-	
लोद्भवं [भस्म]	बृ. जा. ५।६
अन्ये साङ्गयेन योगेन	भ.गी. १३।२५
अन्यैश्च मलैः (आमयैः) बहुभिः	
परिपूर्णं (शरीरं)	मैत्रा. ३।४
अन्योऽन्तरआत्माऽऽनन्दमयः, तेनैव...	तैत्ति. २।५
अन्योऽन्तरआत्माप्राणमयः, तेनैव पूर्णः	तैत्ति. २।२।३
अन्योऽन्तरआत्मा मनोमयः, तेनैव पूर्णः	तैत्ति. २।३।१
अन्योऽन्तरआत्माबिज्ञानमयः, तेनैव पूर्णः	तैत्ति. २।४
अन्योऽन्यच्छृणुयात्	बृह. ४।३।३१
अन्योऽन्यजिघ्रेत्(यत्रवान्यदिवस्यात्तत्र)	बृह. ४।३।३१
अन्योऽन्यत् स्पृशेत्	बृह. ४।३।३१
अन्योऽन्यद्वसयेत्	बृह. ४।३।३१
अन्योऽन्यद्वदेत्	बृह. ४।३।३१
अन्योऽन्यद्विजानीयात्	बृह. ४।३।३१
अन्योऽन्यन्मन्वीत्	बृह. ४।३।३१
अन्योन्यवायुपरिपीडितशुक्रद्वैविध्या-	
द्विधा तनूःस्यात्ततोयुग्माःप्रजायन्ते	गर्भो. ३
अन्योन्यस्याविरोधेनएकताघटतेयदा,	
हठावस्थेति सा प्रोक्ता	श्रयो.त. ६६
अन्योऽप्येवं यो विदध्यात्ममेव	कठो. ६।१८
अन्यो वैतेषु स्थानेषु प्रत्यायते (सः)	कौ. उ. १।२
अन्योऽसावन्योऽहमस्मीति ये विदुः...	ना.प. ९।१
अन्योऽसावन्योऽहमिति न स	
वेद, यथा पशुः	बृ.उ. १।४।१०
अन्यो हि साक्षी भवति	गो.लो. १।११
अन्यो ह्यस्मिन्प्रतिष्ठित इति	छां. ७।२४।२
अन्वयं पुरुषविधः, तस्य प्राणएवशिरः	तैत्ति. २।२, ३
(?)अन्वेव मा भगवः शाधि	छां.उ. ४।२।४
अन्वेष्टव्यं प्रयत्नेन माहते	
उयोतिरान्तरम्	मुक्ति. २।६३

अप उपस्पृश्य गृहानेति ततो यत्किञ्च ददाति सा दक्षिणा	सहवे. १७
अप एव भगवो राज्ञिति होवाच अपकारिणि कोपश्चेत्कोपेकोपः कथं नते अपका योगहीनास्तु, पका योगेन...	छां. ५।१६।१ याज्ञव. २३ यो.शि. १।२६ यो.शि. १।२५ यो.शि. १।२७
अपकाः परिपक्वाश्च देहिनो द्विविधाः...	
अपको दुःखदो भवेत् (देहः)	
अपक्षीयमाणपक्षाद्यान्वणमासान्	
दक्षिणादित्य एति	बृह. ६।२।१३
अपजहि परिधमित्युक्त्वोत्तिष्ठति	छां. उ. २।२४।६
अपञ्चीकृतआकाशसम्भूतोऽजुसर्पवत्	कठरु. १६
(अथ) अपञ्चीकृतमहाभूतरजोऽश...	
प्राणमसृजत्	पैङ्गलो. २।३
(?) अपदसि नहि पश्यसे, नमस्तेतुरीयाय	बृ. उ. ५।१४।७
अपञ्चान्तमूर्णुहि पूर्धिचक्षुर्मुमुग्ध्यस्मा-	
न्निधयेव बह्वान् [महाना. १६।७+ [ऋक्सं. ८।३।४ = मं. १०।७३।११+ तै. आ. ४।४२।३ + सामवे. १।३१९	चाक्षु. ५+
अपञ्चान्तं वरुणस्य तान् .. उपसेवेत	छां. २।२२।१
अप पुनर्मृत्युं जयति	बृह. ३।२।१०
अपयेसंविद्रेते तदेतदन्तर्विचक्षत इति	आर्षे. ८।१
अपरपक्षाद्यान्वद्वक्षिणैति मासान्...	छां. ५।१०।३
अपरप्रयोज्यः स्वतंत्रोऽलिङ्गो.. भास्करः	मैत्रा. ७।२
अपरस्परसम्भूतम्	भ. गी. १६।८
(?) अपरस्मै धारयस्व	बृ. उ. ३।८।५
अपरं भवतो जन्म	भ. गी. ४।४
अपरं सन्त्यजेत्सर्वयदिच्छेदात्मनोहितं	यो. कुं. ३।४
(तत्र) अपरा (विद्या) ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो.. शिक्षा कल्पो व्याकरणं... ज्योतिषमिति	मुण्ड. १।१।५
अपराजितमायतनमिन्द्रप्रजापती	कौ. उ. १।३
अपराहुः प्रतिहारः	छां. उ. २।९।७
अपरिच्छिन्नमण्डलानि यथा	
दृश्यन्ते तद्वत्...	त्रि. म. ना. १।४
अपरिमिततेजस्त्रेधाभिहितममौ.. प्राणे	मैत्रा. ६।३७
अपरिमितधा चात्मानं विभज्य	मैत्रा. ६।२६
अपरिमितधा चोद्भूत उद्भूतत्वाद्भूतेषु	
चरति, प्रतिष्ठा सर्वभूतानां...	मैत्रा. ५।२
अपरिमितानन्दविशेषशुद्धबोधानन्द..	त्रि. म. ना. ७।७

अपरिमितोऽजोऽनक्योऽचिन्त्य	
एष आकाशात्मा [आत्मा]	मैत्रा. ६।१७
अपरिमितोऽपरिच्छिन्नः... स्वतंत्रो-	
ऽलिङ्गोऽमूर्तः.. [आत्मा]	मैत्रा. ७।२
अपरे नियताहाराः	भ. गी. ४।३०
अपरेयमितस्त्वन्या	भ. गी. ७।५
अपरोक्षतया भासमानं (आत्मानं)	ब. सू. ९
अपर्याप्तं तदस्माकं	भ. गी. १।१०
अपवित्रमपश्यं च.. भुक्तं जरयति ज्ञानी	अ. पू. ५।३
अपश्यतो हि किं स्यात्	बृह. ४।१।४
अपश्यदेवदेवस्य	भ. गी. १।१।३
(अथ) अपश्यद्वचमानुष्टुभी... यस्या-	
ङ्गान्यन्ये मन्त्राः	अव्यक्तो. ३
अपश्यं त्वावरोहन्तं नीलमीवं...	नीलरु. २।१
अपश्यं रुद्रमस्यन्तं नीलमीवं...	नीलरु. १
अपहतपाप्मादिव्योदेव एको नारायणः	अध्यात्मो. १
अपहतपाप्मानस्तिरमतेजस ऊर्ध्व...	
वालखिल्याः	मैत्रा. २।३
अपहतपाप्मा ह्येष तेन यदभाति	
यत् पिबति...	छान्दो. १।२।९
अपहतपाप्मा ह्येष ब्रह्मलोकः	छां. उ. ८।४।१
अपहते पापकृत्यां लोकीभवति,	छां. उ. ४।११।२
सर्वमायुरेति, ज्योर्जीवति	+ ४।१२।२
अपहत्य पाप्मानमनन्ते स्वर्गे	
लोके ज्येये प्रतितिष्ठति	केनो. ४।९
अपहन्ता ह वै भयस्य तमसो भवति	छां. उ. १।३।१
(?) अपहार्षी तस्तेयमकार्षीत्परशुमस्मै..	छां. उ. ६।१६।१
अपागाच्चन्द्राच्चन्द्रत्वं	छां. उ. ६।४।३
अपागादमेरमित्वं	छां. उ. ६।४।१
अपागादादित्यादादित्यत्वं	छां. उ. ६।४।२
अपागाद्विद्युतो विद्युत्वं	छां. उ. ६।४।४
अपाङ् प्राङ्तेति स्वधया गृभीतो...	१ ऐत. १।८।४
मर्त्येनासयोनिः [ऋक्सं. २।३।२१ =	मं. १।१६४।३८
अपाणिपादमचक्षुः श्रोत्रमजिह्वम-	
शरीरमग्राह्यमतिदेह्यम् (ब्रह्म)	शां. २।१।२
अपाणिपादमस्निग्धमलोहितं...	सुबालो. ३।२
(तत्) अपाणिपादं नित्यं विभुं सर्वगतं	मुण्ड. १।१।६
अपाणिपादा जननी महीत्री	गुह्यका. ५१

अपाणिपादो जवनो महीना पश्यत्य-
 चक्षुः स शृणोत्यकर्णः । स वेत्ति
 वेद्यं... न माहुरम्यं पुरुषं महान्तं
 [+ना. प. ९।१४+ श्वेताश्व. ३।१९
 भवसं. २।४५

अपाणिपादोऽहमचित्यशक्तिः पश्याम्य-
 चक्षुः स शृणोत्यकर्णः । ... न
 चास्ति वेत्ता मम, चित्सदाऽहं.. देव. २१
 अपाण्डर उद्दानश्च (प्राणवायुः) अ. ना. ३८
 अपात्रेभ्यश्च दीयते भ. गी. १७।२२
 अपान उत्तरः पञ्चः, आकाश आत्मा तैत्ति. २।२
 अपान (नं) इत्सर्गं (विषये-कार्ये) गर्भो. १
 अपानप्राणयोरैक्यं... युवा भवति यो. चू. ४७
 वृद्धोऽपि.. मूलबंधनान् महाना. १६।४
 अपानमग्नेनाप्यायस्व घ्या. वि. ७५
 अपानमूर्ध्वमुत्कृष्यमूलबंधोऽयमुच्यते
 अपानमूर्ध्वमुत्थाप्य... योगी जरा-
 विनिर्मुक्तः षोडशो वयसा भवेत् शां. १।७।१३
 अपानमेवाप्येति योऽपानमेवास्तमेति सुबालो. ९।२
 अपानवायुर्मूत्रादेः करोति च विसर्जनम् त्रि. प्रा. २।८४
 अपानश्चन्द्रमा देहमाप्याययति अ. पू. ५।२९
 अपानश्चरति ब्रह्मन् गुदमेद्रोरुजानुषु त्रि. प्रा. २।८०
 अपानश्चोर्ध्वगोभूत्वा.. प्रसार्यस्वशरीरं
 तु... सुषुम्ना.. विद्युद्देहेव संस्फुरेत् योगकुं. १।६४
 अपानस्तस्य (प्राणवायोः) मध्ये तु
 इन्द्रगोपसमप्रभः । समानस्तु
 द्वयोर्मध्ये... अ. ना. ३७
 अपानस्तु पुनर्गुदे, समानो नाभिदेशे तु अ. ना. ३५
 अपानं प्रत्यगस्यति कठो. ५।३
 अपानं मुकुलीकृत्य पायुमाकृष्य... वराहो. ५।३३
 अपानं व्यानमुदानं समानं वैरम्भं
 मुख्यमन्तर्यामं प्रभञ्जनं कुमारं
 श्येनं श्वेतं कृष्णं... दहति सुबालो. १५।२
 अपानः कर्षति प्राणं प्राणोऽपानं च
 कर्षति [यो. चू. ३०+ यो. शि. ६।५३
 अपानः प्रतिप्रस्थाता । व्यानः प्रस्तोता प्रा. हो. ४।१
 अपानाख्यस्य वायोस्तु विण्मूत्रादि-
 विसर्जनम् [कर्म] जा. द. ४।३१
 अपानात्कर्षति प्राणोऽपानः
 प्राणाच्च कर्षति घ्या. वि. ६०

(ॐ) अपानात्मने ॐ तत्सत् ..

अपानात्मने...

गोपालो. १।४

अपानाद्व्यङ्गुलावूर्ध्वमधोमेदस्यतावता,

देहमध्यं मनुष्याणां...

त्रि. प्रा. २।६६

अपानाभिपदा यक्षराक्षसगन्धर्वाश्च

[अजायन्त]

सुबालो. २।१

अपानान्मृत्युः [निरभिष्यत्]

२२६. १।४

अपाने चोर्ध्वगोयाते... तेन कुण्डलिनी

सुमासन्तप्रासम्प्रवृध्यते । दण्डाहत-

भुजङ्गीव निश्चरय ऋजुतां ब्रजेत्

योगकुं. १।४२

अपाने जुहति प्राणं

अपाने तृप्यति वाक्तृप्यति

भ. गी. ४।२९

अपानेन हि गन्धास्त्रिप्रति [प्राणः]

अपानेन ह्ययं यतः प्राणो न पराभवति

छां. उ. ५।२।२

[?] अपाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि

अपाने मूलकन्दारुचं कामरूपं

वृह. ३।२।१२

च तज्जगुः

१५६. १।८।४

[?] अपाने निर्विश्वामृतं हुतं...

अपानेऽस्तङ्गते प्राणो यावज्जाभ्युदितो

महाना. १६।४

हृदि; तावत्सा कुम्भकावस्था

योगिभिर्याऽनुभूयते

योगरा. ६

अपानोऽप्यनिशं ब्रह्मन्स्पन्दशक्तिः सदा-

गतिः... देहे, अपानोऽयमवाकिस्थितः अ. पू. ५।२६

अपानो वर्तते नित्यं गुदमध्योरुजानुषु;

उदरे सकले कट्यां नाभौ जङ्घे...

जा. द. ४।२७

अपानोऽस्तङ्गतो यत्र.. तच्चित्तत्वं समाश्रय

अपान्तरतमो ब्रह्मणे ददौ

अ. पू. ५।३१

अपान्याभिप्राण्यादिद्रियेण तेरेतसारेत..

अपाममशठं वृत्तमजिह्वं नित्यमाचरेत्

सुबालो. ७।३

अपामपोऽग्निरग्नौ वा व्योम्नि व्योम...

अपामसोमममृता अभूम

वृह. ६।४।११

ना. प. ३।७४

मैत्रा. ४।१६

अ. शिरः. ३।२

[ऋक्सं. ६।४।११]

मं. ८।४।८।३

अपामूर्मिसचमानः समुद्रंतुरीयंधाम

अपामोषधय ओषधीनां पुष्पाणि

सुदर्श. ७

अपामोषधयो रसः, ओषधीनां पुरुषः

अपारपारमच्छेद्यमचित्यमतिनिर्मलं

बृ. उ. ६।४।१

छां. उ. १।१।२

यो. शि. ३।१७

अपारब्रह्मविद्यासाम्राज्याधिदेवतां...

अपांकागतिः, इत्यसौ लोका इति होवाच

त्रि. म. ना. ६।७

छां. उ. १।८।५

अपां नेतारं भुवनस्य गोपां

त्रि. च्यु. १।१९

अपां प्रवेशे वा अभिप्रवेशे वा
 अपां यः शिवतमो रस इत्येके
 अपां रसो मधुनः सर्पिषश्च क्षीरस्य
 चाग्रस्य..सरसेनश्चाद्वं प्राप्नुवन्ति..
 अपां वा एष ओषधीनां रसः
 अपां सोम्य पीयमानानां योऽणिमा
 अपि च येषां नुभूयति य एवं वेद
 अपि चेत्सुदुराचारः
 अपि चेदसि पापेभ्यः
 अपि त्रैलोक्यराज्यस्य
 (अथ)अपिधानमस्यमृतत्वायोपस्पृश्य..
 अपिघाय कर्णा उपशृणुयात्
 (अथापि) अपिघायाक्षिणी उपेक्षेत
 अपिपासएवसवभूव,सोऽतवेलायां..
 अपि य एनं शुष्के स्थाणौ निषिञ्चे-
 ज्जायेरञ्जिताः प्ररोहेयुः
 पलाशानीति [बृह.६।३।७,८,
 अपिबर्षसहस्रायुःशास्त्रांतनाधिगच्छति
 अपि वाताद्वा सम्भाषमाणस्तिष्ठेत्
 अपिवाऽस्याभिमुखत एवासीत
 अपिशीतहृत्वावर्केसुतीक्ष्णेऽपीदुमण्डले
 अप्यघःप्रसरत्यग्नौ जीवन्मुक्तो...
 अपि सर्वं जीवितमल्पमेव, तवैव...
 अपिहृशं विज्ञानवतामेको बलवान्..
 अपि हास्य परिमोषिणोऽस्थीन्यपजहु-
 रन्यन्मन्यमानाः
 (१)अपिहितःसहस्राक्षेणहिरण्यमेन..
 अपि हि न ऋषेर्वचनं श्रुतम्
 अपीतिश्च भवति, य एवं वेद
 अपीदं सर्वमाददीय यदिदं पृथिव्यां
 अपीदं सर्वं ददेयं यदिदं पृथिव्यां
 अपुत्राश्चैवापशवो लोके सन्ति च
 निन्दिताः रौरवे नरके...
 अपुनर्भवया क्रोशं भिनत्ति
 (१) अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः
 अपूर्वमनपरमनन्तरमब्राह्मं (ब्रह्म)
 अपूर्वमपरं ब्रह्म स्वात्मानंसत्यमद्वयम्;
 यः पश्यति स पश्यति
 अपर्वं स्थानिधर्मो हि यथा स्वर्गः..

जायालो. ५
 मैत्रा. ६।३१
 इतिहा. ८४
 सहैव. १५
 छां.उ. ६।६।३
 बृ. उ. ६।१।१
 भ.गी.९।३०
 भ.गी. ४।३६
 भ.गी. १।३
 प्रा.हो. १।१२
 ३ऐत.२।४।६
 ३ऐत. २।४।६
 छां. ३।१७।६
 १०,११,१२
 पैङ्गलो. ४।१६
 कौ.उ.२।१५
 कौ.उ. २।१५
 अ. पू. ४।९
 कठो. १।२६
 छान्दो. ७।८।१
 बृह. ३।९।२६
 मैत्रा. ६।८
 बृह. ६।२।२
 माण्डू. ११
 केनो. ३।९
 केनो. ३।५
 इतिहा. ९४
 सुबालो.११।२
 प्राणा. १।३
 बृह. २।५।१९
 जा.द. ४।६०
 वैतथ्य. ८

अपूर्वोऽनन्तरोऽद्याहोऽनपरः प्रणवः
 अपृच्छं मातरं, सा मा प्रत्यववीत्
 अपैतु मृत्युरमृतं न आगन्
 अप्यजेन सा जिता पुरा (माया)
 अप्यघः प्रसरत्यग्नौ जीवन्मुक्तः...
 अप्यन्धिपानान्महतः सुमेरुन्मूल-
 नादपि...विषमश्चित्तनिग्रहः
 अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च
 अप्रतर्क्यमनूपमं, अपारपारं (ब्रह्म)
 अप्रतर्क्यमप्रकाश्यमसंयुतं (ब्रह्म)
 अप्रतर्क्योऽहम् (जीवन्मुक्तः)
 अप्रतिगृह्यस्य प्रतिगृह्यात्यपि तत्र
 वधाशङ्कं भवसि
 अप्रतिष्ठो महाबाहो
 अप्रतिष्ठितं वै किल ते दाल्भ्य साम
 अप्रमत्तस्तदा भवति, योगो हि...
 अप्रमत्तः कर्मभक्तिज्ञानसम्पन्नः..
 अप्रमत्तेन वेद्व्यं शरवत्तन्मयो भवेत्
 अप्रमाणमनिर्देश्यं (परंब्रह्म)
 अप्रमेयमतीन्द्रियं ”
 अप्रमेयमनाद्यन्तं निष्कलं..शान्तं(शिवं)
 अप्रमेयमनाद्यन्तं यज्ज्ञात्वा मुच्यते बुधः
 अप्रमेयमनाद्यं च ज्ञात्वा च परमं शिवं
 अप्रमेयमनिर्देश्यमवाङ्मनसगोचरम्;
 शुद्धं सूक्ष्मं निराकारं (ब्रह्म)
 अप्रमेयमनूपमम् (ब्रह्म) [जा.द.९।४+
 अप्रमेयमङ्गस्त्वमदीर्घमस्थूलमनणु...
 अप्रमेयोऽनाद्यन्तः (आत्मा)
 अप्रसिद्धः कथं हेतुः फलमुत्पादयिष्यति
 (१)अप्राणतो हि किं स्यात्
 अपस्वङ्गुल्या मथिते मथितं
 अप्राणजनपानं स्तां निराकरोति
 अप्राणजनपानञ्जुद्रायति
 अप्राणजनपानन्वाचमभिव्याहरति
 अप्राणजनपानञ्चमभिव्याहरति
 अप्राणममुखममात्रमनन्तरमवाहम्
 अप्राणममुखमश्रोत्रमवागमनः..(ब्रह्म)
 अप्राणयितव्यमनपानयितव्यं
 अप्राणारूयः प्राणसंस्पर्शो नोज्ज्वलति

आगम. २६
 छां.उ.४।४।४
 महाना.१३।७
 कृष्णो. ५
 अ. पू. ४।९
 महो. ३।२०
 भ.गी.१४।१३
 यो.शि. ३।१७
 सुबालो. ३।२
 आ. प्र. ६
 बृह. ४।१।३
 भ. गी. ६।२८
 छां.१।८।६,८
 कठो. ६।११
 ना. प. ३।७७
 मुण्ड. २।२।४
 यो.शि. ३।१८
 यो.शि. ३।१८
 भस्म. १।१
 त्रि.ना.५।९
 ब्र. वि. ९
 यो.शि. २।१६
 अ. पू. ५।७३
 सुबालो. ३।२
 मैत्रा. ७।१
 अ. शां. १७
 बृ.उ. ४।१।३
 अ. शि. २।४
 छां.१।३।५
 छां.उ. १।३।४
 छां.उ. १।३।४
 छां.उ. १।३।४
 बृह. ३।८।८
 सुबालो. ३।२
 नृसिंहो. ९।९
 मैत्रा. ६।२६

अप्राणादिह्यस्मात्सम्भूतः प्राणसंज्ञको

जीवस्तरमात्प्राणोवैतुर्याक्येधारयेत् मैत्रा. ६।१९

अप्राणोनिरात्माऽनन्तोऽश्चर्यः [मैत्रा. ६।२८+७।४

अप्राणोऽमनाः सचिदानन्दमात्रः... नृसिंहो. ७।६

अप्राणोऽश्मकायोऽश्मनज्ञोऽश्मि ब्र. वि. ८१

अप्राणोऽश्मनाः शुभ्रोद्युद्धयादीनांहि

सर्वदा । साक्ष्यहं सर्वदा नित्यः सर्वसारो. ८

अप्राणोऽश्मनाः शुभ्रोद्युद्धयादीनांहि मुण्ड. २।१।२

अप्राणशरीरसंयोगमिव कुर्वाणो सर्वसा. ९

अप्राणं हि परित्यज्य... सन्तुष्ट

इति कथ्यते महो. ४।२६

अप्राप्य मनसा सह [तै. उ. २।४, ९

अप्राप्य मां निवर्तते शं. २।१।३

अप्राप्य योगसंसिद्धिं भ. गी. ९।३

अप्रियवेत्तेव भवत्यपि रोदितोव भ. गी. ६।३७

अप्रिया ज्ञातयः दुष्कृतं (उपयन्ति) छां. ८।१०।२, ४

अप्सरसो भानवीयाश्चमरीचयोनाम कौ. उ. १।४

अप्सरसुचयामेधा गन्धर्वेषुचयन्मनः मैत्रा. ६।३१

अप्सु पुरुष एतं... ब्रह्मोपासे महाना. १३।४

अप्सु पुरुषस्तमेवाहमुपासे बृह. २।१।८

अप्सुचारिणः शाकुनिकाः सूत्रयन्त्रेणो- कौ. उ. ४।१०

दृत्योदरेऽमौ जुहोति मैत्रा. ६।२६

अप्सु ज्योतिः प्रतिष्ठितं ज्योतिष्नापः... तैत्ति. ३।८

अप्सु प्रक्षेपो लवणस्येव घृतस्य

चौण्यमिव मैत्रा. ७।११

अप्सु लोहितं च रेतश्च निधीयते बृह. ३।२।१३

अफलप्रेप्सुना कर्म भ. गी. १८।२३

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञः भ. गी. १७।११

अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः भ. गी. १७।१७

अब्रह्मन्पुरुषं पशुम् [ऋक्सं. ८।४।१९= मं. १०।९०।१५

[वा. सं. ३।१।५] श्वित्यु. १२।३

अबन्ध्वेकेददतः प्रयच्छादातुं चेच्छक्र-

वाश्च स्वर्ग एषां सहवै. १०

(?) अबलिमानं नीतो भवति छां. उ. ८।६।४

अबलीयान् बलीयांसमाशंसते धर्मेण बृ. उ. १।४।१४

अवंशे पूरयेद्योगी नारायणमुदग्रधीः त्रि. ब्रा. २।१४

अबाधकरहस्थलनिकेतनो .. सञ्जयासेन

देहत्यागं करोति स परमहंसः याज्ञव. ३

अबाधकोऽस्त्येव, यस्माद्विभुर्हिरण्यं... प. हं. ९

दृष्टं... चेत्स ब्रह्महा भवेत्

अबाधं नतदभाति किञ्चन [ब्रह्म]

अविभ्रममागहिभ्रियामापरिपातव

अबुद्धिपूर्वकमिहैवावर्ततेऽनेन

अबुद्धन्तमजमात्मानं मत्वा धीरो

न शोचति

(१) अबोद्धाऽकर्ताऽविज्ञाता भवति

अजकाण्डं जगद्गीर्णधृतं पाणौ रलीलया

अजपत्रमवःपुष्पमूर्ध्वनालमधोमुखं

अज्जा गोजा ऋतजा अग्निजा ऋतं

[ऋ. मं. ४।४०।५ + महाना. ८।१५ +

अजोऽजुषन्तः प्रपतत्पतन्तः... प्रवालः

अज्जतेष्वेव कार्येषु सृत्युर्वै सप्रकर्षति

अजिह्वद्वृतमर्यादाः [ना. प. ५।२९ +

अज्वीतु ते तदशायतनं प्रतिष्ठाम्

अज्वीन्म उदङ्कः शौत्वायनः

प्राणो वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेगर्दभी विपीतो भारद्वाजः

ओत्रं वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

[शैलिनो वाग्वै-मा. पा.]

अज्वीन्मे बर्कुर्वाण्यश्नुर्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मे सत्यकामो जाबालो

मनो वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

हृदयं भवेत्

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

ज्वम् । सर्वं विलीयते... कीर्तनात्

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

शकेमहि [शकेमसि-मा. पा.]

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

अज्वीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति

बृह. ३।८।८

महाना. १।१०

मैत्रा. २।९

सुबालो. ३।१

छां. उ. ७।९।१

कृष्णोप. २४

प्या. वि. ३३

कठो. ९।२

वृ. पृ. ३।३

पारमा. ९।२

भवसं. १।४०

महो. ४।२२

बृह. ४।१।२

बृह. ४।१।३

बृह. ४।१।५

बृह. ४।१।२

बृह. ४।१।४

बृह. ४।१।६

गायत्रीर. ११

दत्तात्रे. १।६

भवसं. ३।२२

पा. ब्र. ४१

शमो. ५।३

मैत्रे. २।१०

पा. ब्र. ४२

सुबालो. ७।२४

६।२३।७।३

महाना. ९।११

योगो. १२

कठो. २।२

बृह. ४।२।४

अभयं पदमश्नुते	अ. शां. ७८	अभिप्रतारिन् बहुधा वसन्तं	छां. उ. ३।४।६.
अभयं वै जनकं प्राप्तोऽसीति होवाच	बृह. ४।२।४	अभिप्राण्य हैवान्नमत्रप्स्यत्	२ ऐत. ३।४
अभयं वै ब्रह्म [वृ. उ. ४।४।२५+	नृसिंहो. ८।२	अभिप्राण्यापान्यादिन्द्रियेण ते रेतसा	
अभयं सत्त्वसंशुद्धिः	भ. गी. १६।१	रेत आदद इत्यरेता एव भवति	बृह. ६।४।१०
अभयं सर्वभूतेभ्योदस्वाचरतियोमुनिः	ना. प. ५।२८	(अथ) अभिप्रातरेव स्थालीपाकावृताज्यं	
अभयं सर्वभूतेभ्योनभेभीतिः कदाचन	प्रा. हो. १।१२	चेष्टित्वा स्थालीपाकस्योपघातं	बृह. ६।४।१९
अभयं सर्वभूतेभ्यो मत्तः सर्वं प्रवर्तते	ना. प. ४।४६	अभिप्राश्येनदथ मोपसीदथाः	छां. उ. ६।१३।२
[+आरु. ३+ प. हं. प. ६		अभि प्रेहि दक्षिणतो भवा मेऽघा	
अभयं सर्वभूतेभ्यो मत्तः स्वाहेत्युर्ध्व-		वृत्राणि जङ्घनाव भूरि [ऋक्सं.	८।३।१८।७
बाहुर्भूत्वा ब्रह्माहमस्मीति चिन्तयन्..	प. हं. प. ५	=मं. १०।८३।७ +अथर्व. ४।३२।७	+वनदु. १०६
अभयं हि वै ब्रह्म भवति, य एवं वेद	बृह. ४।४।२५	(अतः) अभिभूतत्वात्सम्भूदत्वं प्रयाति	
[+नृसिंहो. ८।७+	गोपा. २।१४	(आत्मा)	मैत्रा. ३।२
अभयाद्भयमापतेत्	ते. बि. ५।२३	अभिभूतः प्राकृतैर्गुणैरित्यत...	मैत्रा. २।२
अभागः सन्नप परेतोऽग्रस्मि	वनदु. १०४	अभिभूयत्ययं भूतात्मोपसंश्लिष्टत्वात्	मैत्रा. ३।३
[ऋक्. ८।३।१७=मं. १०।८३।५+अथर्व.	४।३२।५	अभिमन्ता जीवो नियन्तेभ्यः	नृसिंहो. ९।४
अभावश्च रथादीनां श्रूयते..वैतथ्यतेन..	वैतथ्य. ३	अभिमन्थतिसहिष्कारः, धूमोजायते स..	छान्दो. २।११
अभावं यातुभावना...अमनस्त्वंमनो..	अ. पू. ५।३८	अभिमानाध्यक्षः क्रोधजं...धनुर्गृहीत्वा	मैत्रा. ६।२८
अभास्करममर्यादं निरालोकमतः परं	सुबा. १५।२	अभिमानित्वं प्रयातः	मैत्रा. ३।२
अभिघ्नन्त्ययोधनैः (यदिदं)	आर्वे. १।२	अभिवन्दनाद्भोगनाशिनी (तुलसी)	तुलस्यु. २
अभिजातस्य भारत	भ. गी. १६।३	अभिव्याप्यायतो भूत्वा	गोपी. ५
अभिजातोऽसि पाण्डव	भ. गी. १६।५	अभिव्याहाराय वाक्	छां. उ. ८।१२।४
अभितृन्दन्ति पट्टीशिकाभिः (यदिदं)	आर्वे. १।२	अभिव्याहार्षमेव विद्यात्...	३ ऐत. १।६।४
अभितो ब्रह्म निर्वाणं	भ. गी. ५।२८	अभिव्याहृत्य हैवान्नमत्रप्स्यत्	२ ऐत. ३।३
अभि त्वा शूरनोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः	अ. शि. ३।५	अभिषस्तं च पतितं...वर्जयित्वा	
[ऋक्सं. ५।३।२=मं. ७।३२।२२	+वनदुको. १	चरेद्वैक्षं सर्ववर्णेषु चापदि	सं. सो. २।७४
अभिधावत मम यशसा विराजं वा अयं..	कौ. उ. १।३	अभिषीवयन्ति वध्रीभिरभिप्रथन्ति	आर्वे. १।७
अभिध्यातुर्विस्तृतिरिवैतदित्यत्रोदाहरन्ति	मैत्रा. ७।११	अभिसंधाय तु फलं	भ. गी. १७।१२
अभिध्यायन् वर्णरतिप्रमोदानतिदीर्घे		अभि हि प्राणेन मनसेत्यमानो वाचा	१ ऐत. ३।५।३
जीविते को रमेत	कठो. १।२८	नानुभवति	केनो. ४।६
अभिनद्धाक्ष आनीतोऽभिनद्धाक्षो		अभि हैनंसर्वाणिभूतानिसंवाञ्छन्ति	
विनष्टः, तस्य यथाऽभि...	छां. ६।१४।१	अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान्...विश्वा	
(?) अभिनद्धाक्षो विनष्टः (आनीतः)	छां. उ. ६।१४	वसून्त्याभर, त्वं नः [ऋक्सं. ८।३।१८	+वनदु. १०२
(?) अभिनन्दा विस्फुलिङ्गाः	छां. ५।८।१+	=मं. १०।८३।३+अथर्व. ४।३२।३	
तस्मिन्नेतस्मिन्नाग्नौ देवा रेतो	बृह. ६।२।१३	अभूतस्यापरे धीरा विवदन्तः परस्परं	अ. शां. ३
अभिनवजलदसङ्काशा..कालिकाध्येया	कालिको. १	अभूतं नैव जायते, विवदन्तोऽद्वयाः...	अ. शां. ३
अभिन्नार्थोलयेनापि..लघिनाभवेत्सिद्धिः	अमन. १।६७	अभूताभिनिवेशाद्धि...तत्प्रवर्तते	अ. शां. ७९
अभिपूजितलाभांश्च जुगुप्सैतैव सर्वशः	ना. प. ५।१९	अभूताभिनिवेशोऽस्ति द्वयंतत्रनविद्यते,	
अभिपूजितलाभैस्तुयतिर्मुक्तोऽपिबध्यते	ना. प. ५।२२	द्वयाभावं स बुद्धयैव...	अ. शां. ७५
अभिप्रतारिणं च काक्षसेनिं विभिक्षे	छां. उ. ४।३।५	अभूतिमसमृद्धिचसर्वाग्निर्गुदमेपाप्मानं	
		(मे गृह्यात्) [महाना. १४।२०+	ऋ. खि. ५।८७

अमृतो हि यत्तद्व्याप्यो नार्थाभासस्ततः...	अ. शां. २६	अम्रं धूमः (पर्जन्यामेः)	छान्दो. ५।५१
अमृमिपतितं गृहीयात्पात्रे पूर्वोदिते गृही,		अम्रं भूत्वा मेघो भवति	छां. ५।१०।६
गोमयं शोषयेद्विद्वान्	वृ. जा. ३।८	अम्रं विशुस्तनयितनुरक्षरीराण्येतानि	छां. ८।१२।२
अमेददर्शनं ज्ञानं, ध्यानं निर्विषयं		अभ्राणि धूमः (पर्जन्यामेः)	बृह. ६।२।१०
मनः, स्नानं मनोमलत्यागः शौच-		अभ्राणि सम्प्लवन्ते स हिक्कारः	छां. २।१५।१
मिन्द्रियनिग्रहः [मेत्रे. २।२	+स्कन्दो. ११	अभ्राणिसंप्लवन्ते सहिक्कागे मेघोजायते	छां. २।१४।१
(१) अमेदेन प्रशस्यते, नानात्वं...	अद्वैत. १३	अमृतं च मृतं ज्ञातमविज्ञातं च	पञ्चम. २८
अभ्यङ्गं क्षीसङ्गमिव (त्यजेद्यतिः)	ना. प. ७।१	अमृतं मृतं (येन भवति)	छान्दो. ६।१।३
अभ्यसेद्ब्रह्मविज्ञानं...श्रवणादिना	ना.प. ६।७	अमृतं मन्तृ (अक्षरब्रह्म)	बृह. ३।८।११
अभ्यस्तैः किमुदीर्घकालमनिलैर्व्याधिप्रदैः	अमन. २।४१	अमृतो मन्ता, अविज्ञातो विज्ञाता	
अभ्यस्यमानो नादोऽयं बाह्यमा-		(आत्मा) नान्योऽतोऽस्ति द्रष्टा	बृह. ३।७।२३
वृणुते ध्वनिः	ना. वि. ३२	अमर्त्यं नहि प्रेयो मर्त्यं नस्वतः प्रियम्	बराहो. २।७
अभ्याशो ह यदस्मै स कामः समृद्धयेत	छां. ३।१।३।१२	अमनसो हि स्यात्, अववीक्षु ते...	बृह. ४।१।६
अभ्याशो ह यत्तेकपूयांयोनिमापद्येरन्	छां. व. ५।१०।७	अमनस्कमधोत्रमपाणिपादं ज्योतिः...	ब्रह्मो. ३
अभ्याशो ह यत्तेरमणीयांयोनिमापद्येरन्	छां. व. ५।१०।७	अमनस्कस्वरूपं यत्तन्मयो भव	महो. ५।५१
अभ्याशो ह यदेनं साधवो घोषा आच..	छां. ३।१९।४	अमनस्कं सुशिष्येषु संक्रम्येन्द्रियजं	
अभ्याशो ह यदेनं साधवो धर्मा		सुखम् । निवारयन्ति ते वन्द्या	
आ च गच्छेयुः [छान्दो. २।१।४	+३।१९।४	गुरवोऽन्ये प्रतारकाः	अमन. २।४४
अभ्यासकाले प्रथमं शस्तं क्षीराज्य-		अमनस्कः सदा शुचिः, स तु तत्पद-	
भोजनम् [यो. व. ४८+	शाङ्गि. १।७।५	माप्नोति यस्माद्भूयो न जायते	कठो. ३।७
अभ्यासतो मनः पूर्वविस्मृष्टं चलमुच्यते	अमन. २।९६	अमनस्केक्षणं लाभकामक्रोधादिबन्धनं	अमन. २।८०
अभ्यासमेदतो मेदः फलं तु सममेव हि	यो. व. १११	अमनस्केन मित्रेण.. सुखी स जायते मुनिः	अमन. २।८२
अभ्यासमात्रनिरता न विन्दन्नेह मेलनं	यो. कुं. २।६	अमनस्ता तदोदेति परमोपशमप्रदा	अ. पू. ४।४८
अभ्यासयोगयुक्तेन	भ. गी. ८।८		+मुक्ति. २।२९
अभ्यासयोगेन ततः ...	भ. गी. १२।९	अमनस्तां तदा याति प्राज्ञाभावे तदग्रहं	अद्वैतो. ३२
अभ्यासवासनाशक्त्या तरन्ति		अमनीभावे द्वैतं नैवोपलभ्यते	अद्वैत. ३१
भवसागरम्	यो. कुं. ३।१८	अमन्तव्यमबोद्धव्यं	नृसिंहो. ९।९
अभ्यासं बहुजन्मान्ते कृत्वा..	यो. कुं. २।७	अमन्यतात्मनोऽसुरा अतो न्यतममेतेषां	मैत्रा. ७।१०
अभ्यासं मेलनंचैव युगपन्नैव सिद्धयति	यो. कुं. २।५	अमन्ताऽश्रोताऽस्पृष्टा	मैत्री. ६।११
अभ्यासं लभते ब्रह्मन्	यो. कुं. २।६	अमरत्वादजरत्वात्	नृसिंहो. ७।१
अभ्यासात्साधुशास्त्राणां करणात्पुण्य-		अमरपदं तत्स्वरूपं	निर्वाणो. ३
कर्मणां... वस्तुदृष्टिः प्रसीदति	अक्षयुप. २१	अमरीं यः पिबेन्नित्यं नस्यं कुर्वन्...	१यो. व. १२८
अभ्यासानुज्ञानं क्रमेण परिपक्वं भवति	त्रि. म. ना. ५।४	अमर्त्यो मर्त्येनास योनिः	१ऐत. १।८।४
अभ्यासाद्रमते यत्र	भ. गी. १८।३६	[+क्रकसं. १।१६४।३८	
अभ्यासान्निर्विकारं गुणरहिताकाशं		अमलान् प्रतिपद्यते	भ. गी. १४।१४
भवति विस्फुरत्तारका...	मं. ब्रा. १।३	अमहान्तमवृहन्तमजमात्मानं मत्वा	
अभ्यासेन तु कौन्तेय	भ. गी. ६।३५	धीरो न शोचति	सुबालो. ३।१
अभ्यासेन परिस्पन्दे.. मनः प्रशममायाति	अ. पू. २।३२	अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्यः.. शिवोऽद्वैतः	माण्डू. १२
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि	भ. गी. १२।१	अमात्रश्चतुर्थो व्यवहार्यः प्रपञ्चोपशमः	
अभ्युत्थानमधर्मस्य	भ. गी. ४।७	शिवोऽद्वैत ॐ ह्यार आत्मैव	नृसिंहो. २।७

अमात्रोऽनन्तमात्रश्च द्वैतस्योपशमः		अमुष्य लोकस्य का गतिरिति	
शिवः ...विदितो येन स मुनिः	भागव. २९	न स्वर्ग लोकमतिनयेत्	छान्दो. १।८।५
अमानित्वमदंभिमतं	भ. गो. १३।८	अमुष्यासुनामा सङ्गसायां	चित्त्यु. १४।३
अमानित्वादिसम्पन्नो मुमुक्षुरेकविंशति-		अमुष्याहं वृक्षस्यरसोऽस्म्यमुष्याहं	
कुलं तारयति	पैङ्गलो. ४।१	वृक्षस्यरसोऽस्मीति	छान्दो. ६।९।२
अमानित्वादिलक्षणोपलक्षितो यः		अमुं पञ्चपदं मनुमावर्तयेद्यः स	
पुरुषः...निरालम्बाधिकारी	त्रि.म.ना. ८।४	यात्यनायासतः...तत्पदं तत्	गो. पू. ४।१७
अमायमभयमौपनिषदमेव	नृसिंहो. ९।९	अमुं यजामुं यजेत्येकैकं देवं...	बृ. उ. १।४।६
अमायमायौपनिषदमेव (पाठः)	नृसिंहो. ९।९	अमूढो मूढश्च व्यवहरन्नास्ते माययैव	नृसिंहो. ९।५
अमावास्यायां दीक्षित्वा पौर्णमास्यां...	छां. उ. ५।२।४	अमूर्त इति च तद्विदः	वैतथ्य. २३
अमावास्यायां प्रातरेवाग्नीनुपसमाधाय	२ सङ्ग्यासो. १	(अथ) अमूर्तं वायुश्चान्तरिक्षं च	बृह. २।३।३
अमावास्यां सहस्रकं (भाद्रे कृष्णे)	इतिहा. ९०	अमूर्तो वर्तते नाशो वीणानृण्डसमुद्भवः	ध्या. बि. १०२
(?) अमावास्यां रात्रिमेतया		अमूलमनाधारमिमाः प्रजाः प्रजायन्ते	सुबालो. ६।१
षोडश्या कलया	बृ. उ. १।५।१४	अमृतकरतलाद्रौ सर्वसञ्जीवनाढ्यौ...	सावित्र्यु. ११
अमा हि ते सर्वमिदं स हि ज्येष्ठः...	छान्दो. ५।२।६	अमृतकलोलनदी	निर्वाणो. १
अमितते जोराद्यन्तर्गततेजोविशेषं	त्रि.म.ना. ७।८	अमृतकलोलानन्दक्रिया	निर्वाणो. ४
अमितबलपराक्रमाय शङ्खचक्रगदाध-		अमृतत्वमक्षिति स्वर्गलोके (आप्रोति)	कौ. उ. ३।२
राय लक्ष्मीसमेताय..परब्रह्मरूपाय	ना. उ. ता. २।३	अमृतत्वस्य तु नाशाऽस्ति वित्तेन	बृह. २।४।२
अमितवेदान्तवेद्यं ब्रह्म	त्रि.म.ना. १।३	अमृतत्वस्य नाशास्ति वित्तेन (मा. पा.)	बृ. उ. २।४।२
अमितानन्दचिद्रूपावलम्ब [त्रि.म.ना. ८।८	सि. सा. ६।१	अमृतत्वस्येशाने मा त्वंपुत्र्यमघनिगाः	कौ. उ. २।८
अमितानन्दसमुद्रं [सि. सा. १।१+	त्रि.म.ना. ७।७	अमृतत्वं च गच्छति	कठो. ६।८+
अमितौजाः पर्यङ्कः	कौ. उ. १।३	[नृ. पू. ३।३+	रामो. ४।४
अमी च त्वां धार्तराष्ट्रस्य पुत्राः	भ. गो. ११।२६	अमृतत्वं देवेभ्य आगायानीत्यागायेत	छां. २।२२।२
अमीमांस्या हि गुरवः	शिवो. ७।३०	अमृतत्वं समाप्नोति यदा कामात्स	
अमीयेसुभगे दिविविचृतौ नामतारके	सहवै. ९	मुच्यते...छित्त्वा तं तु न बध्यते	क्षुरिको. २५
अमी हि त्वा सुरसङ्घा विशन्ति	भ. गो. ११।२१	अमृतत्वं (हि) विन्दते	केनो. २।४
अमुखममात्रमन्तरमबाह्यं, नतद्भाति	बृह. ३।८।८	अमृतत्वादशोकत्वादमोहत्वादनशना-	
अमुत्र भूयादथ यद्यमस्य बृहस्पते...	महाना. १३।१०	यत्वात्...आत्मानं परमं ब्रह्म...	नृसिंहो. ७।१
अमुना रूपेणैवं लोकमा भवति	१ ऐत. ३।७।३	अमृतविन्दूपनिषद्वेद्यं यत्परमक्षरं	प्र. बि. १
अमुनावासनाजाले	अध्यात्मो. ३९	अमृतमभयमशोकमनन्तं (आत्मानं)	सुबालो. ५।१
(अथ खलु) अमुमादित्यं सप्तविधं		अमृतमयश्चतुरात्मा	नृसिंहो. ३।३
सामोपासीत	छां. २।९।१, ८	अमृतमस्यमृतोपस्तरणमस्यमृतं प्राणे	प्रा. हो. १।१०
अमुष्मादादित्यात्प्रतायन्ते ता आसु	छां. ८।६।२	जुहोम्यमाशिष्यान्तोऽसि	नारदो. १
अमुष्मिन् स्वर्गे लोके सर्वान् कामा-		अमृतमेव श्वेतमृद्भवति	कात्याय. १
नास्वाऽमृतः समभवत्	२ ऐत. ४।६	अमृतमेव श्वेतमृत्स्ना भवति	सहवै. २२
अमुष्मिन्स्वर्गे लोके सर्वान् कामा-		अमृतमेवात्मन्धत्ते हुत्वा	सीतो. ७
नास्वाऽमृतः समभवत्	आ. प्र. १	अमृतरूपादेवानां महस्तोमफलप्रदा	बृह. ४।५।३
अमुष्य ब्रह्मभूतत्वाद्ब्रह्मणःकुत उद्भवः	२ आत्मो. २७	अमृतस्य तु नाशाऽस्ति वित्तेन	
अमुष्य लोकस्य का गतिरित्ययं..	छान्दो. १।८।७	अमृतस्य देवधारणो भूयासं । शरीरं	तैत्ति. १।४।१
		मे विज्रर्षणम् [ना. प. ४।४५+	

अमृतस्य धारा बहुधा दोहमानम् ।

चरणं नो लोके..इधातु [सुदर्श.५+ त्रि.म.ना.७।३

अमृतस्य परं सेतुं

श्वेता. ६।१९

अमृतस्य पूर्णं तामु कलां विचक्षते

चित्त्यु. ११।५

अमृतस्य प्राणं यज्ञमेतं

चित्त्यु. ११।३

अमृतस्यान्ययस्य च

भ.गी.१४।२७

अमृतस्याशरीरस्यात्मनाऽधिष्ठानं

छां.उ.८।१२।१

अमृतस्यैव चाकाङ्क्षेदवमानस्य...

ना. प. ३।४०

अमृतस्यैव सेतुः (आत्मा)

मुण्ड.२।२।५

अमृतं चिन्तयेन्मूर्ध्नि

यो.शि.५।४९

अमृतं चैव मृत्युश्च

भ.गी. ९।१९

अमृतं जायते पुरुषोत्तमात्

सि. वि. ५

अमृतं सत्परं च ब्रह्म

शाण्डि.२।१।३

अमृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति

छां.उ. ३।६।१

अमृतं देवानामायुः प्रजानां

चित्त्यु.११।१३

अमृतं प्रपद्येऽमृतकोशं प्रपद्ये

सहस्र. २३

अमृतं प्राणे जुहोम्यमाशिष्यान्तोऽसि

प्रा. हो.१।१०

अमृतं मतं (भवति)

छां.उ.६।१।३

अमृतं यत्प्रतिष्ठा सा तेजोविद्याकला

वृ. जा.२।२

स्वयम् । द्विविधा तेजोवृत्तिः..

१ ऐत. १।८।४

अमृतः सर्वेभ्योभूतेभ्योदृष्टो, य एवं वेद

अमृतात्प्राणाश्चाहो मम जायन्ते

पुरुषोत्तमात्

सि. वि. ३

अमृतं मा कुर्वित्येवैतदाह

वृ.उ.१।१।२८

अमृतं वा आज्यं

सहस्र. २२

अमृतापिधानमसि

महाना.१६।३

अमृतामेवाप्येति योऽमृतामेवास्तमेति..

सुबालो. ९।६

अमृतासः श्रुतासश्चयज्वानो..स्वर्यन्तो..

अरुणो. ६

अमृता ह्येषा नाडी त्रयं चरति

परब्र. १

अमृतादात्मानं जुगुप्सेत्

महाना.२।११

अमृतेन तृप्तस्य पयसा किं प्रयोजनम्

पैङ्गलो.४।९

अमृतेन तृप्तिं जनयन्ती देवानां

सीतो. ७

अमृतेन कृतं यज्ञमेतम्

चित्त्यु. ११।३

अमृतेनाग्निरेधते...अतएव हविःक्लृप्त-

मग्नीषोमात्मकं जगत्

वृ. जा.२।५

अमृतेऽमृतरूपासि अमृतत्वप्रदायिनि

तुलस्यु. ४

अमृतैवैषा देवता शाश्वता...

१ ऐत. १।८।४

अमृतो जायते पुरुषोत्तमात्

सि.वि. २

अमृतोदधिसङ्काशं...ध्यात्वाचान्द्रमसं

यो. घू. ९६

विम्बं प्राणायामे सुखी भवेत्

अमृतोद्दीपिनी विद्या निरपाया...

अमनस्कैव सा काऽपि जयत्या-

नन्ददायिनी

अमन. २।२०

अमृतोऽपस्तरणमसि

महाना.१६।२

अमृतो भवति । तदेष श्लोकः

प्रभो. ३।११

अमृतोऽसि विभुश्चासि चञ्चलो..असि

ते. वि.५।६८

(अथ) अमृतोऽस्यात्मा बिन्दुरिव पुष्करे

मैत्रा. ३।२

अमृतो ह वा अमुष्मिँल्लोके सम्भवति

१ ऐत. १।८।४

अमृतो हिरण्यमयः (पुरुषः)

तैत्ति. १।६।१

अमोघनिजमन्दकटाक्षेणादिमूलविद्या-

प्रलयकरी... (लक्ष्मी)

त्रि.म.ना.६।७

(?) अमो नामाऽसि, अमा हि ते सर्व...

छां. ५।२।६

अमोऽहमस्मि सा त्वं सा त्वमस्यमोहं

सामाहमस्मि...पुत्राय वित्तये इति

बृह. ६।४।२०

[अथर्व. १४।२।७१+

अमोघा हास्याशिषो भवन्ति यावत्..

छां. ७।१४।२

अम्बया नयस्वमित्यंविदागच्छति, तं...

कौ. उ. १।३

अम्बाश्चाम्बायवीयाश्चाप्सरसः

कौ. उ. १।३

(ऐं) अम्बितमे नदीतमे देवितमे

सरस्वति [ऋक्सं.२।८।१०=

मं. २।४१।१६

ऐ.ब्रा.५।४।१०

सरस्व. २४

अम्बुः पृथगुद्गीथदोषान् भवन्तो

ब्रुवन्तिवति । तद्वाच्युपलक्षयेत्

२ प्रणवो.१७

अम्भस्यपारे भुवनस्य मध्ये नाकस्य

पृष्ठेमहतो महीयान् [तै.आ.१०।१।१

+महाना.१।१

अम्भो जायते पुरुषोत्तमात्

सि. वि. ५

अम्भो धिवत्पारविर्वर्जितोऽहं

कुण्डिको. १६

अम्भो मरीचीर्मरमापः

२ ऐत. १।२

अयजमानमाहुरासुरा बतेति

छां.उ.८।८।५

अयज्ञोपवीती कथं ब्राह्मणः

जाबा. ५

अयतिः श्रद्धयोपेतः

भ.गी. ६।३७

अयत्नेन प्राप्तमाहरन् ब्रह्मप्रणवध्यानानु-

सन्धानपरो भूत्वा...दिकं दग्ध्वा

ना. प. ७।२

अयत्नोपनतेष्वक्षिष्टदृश्येषु यथा मनः

(पुनः) नीरागमेव पतति..धीरधीः ।

[महो. ५।७०+

मुक्ति. २।२३

अयथावत् प्रजानाति

भ.गी.१।८।३१

अयनद्वयं वत्सरो भवति

त्रि.म.ना.३।४

अयनं पुनराख्यातमेतद्योगस्य योगिभिः

आयुर्वे. २३

अयनं माविवधीर्विक्रमस्व

चित्त्यु. १५।१

अयनं ह वै समानानां भवति

१ ऐत.३।१।१

अयनादादित्य इत्येवं ह्याह	मैत्रा. ६।७	अयमात्मा सर्वेषां भूतानां मधु	बृह. २।५।१४
अयनेदक्षिणेप्राप्तेप्रपञ्चाभिमुखंगतः	त्रि.प्रा. २।१५	अयमात्मा ह्यथैवेदं सर्वमन्तकाले	
अयने द्वे च विषुवे सदा पश्यति...	ग्र.वि.५५	कालाग्निः सूर्याग्निः...	नृसिंहो. २।७
अयनेषु च सर्वेषु	भ. गी. १।११	अयमात्मा ह्यस्य सर्वस्य स्वात्मानं	
अयमग्निरर्कस्तस्येमे लोका आत्मनः	बृ. उ. १।२।७	वदाति, इदं सर्वं स्वात्मानमेव..	नृसिंहो. २।७
अयमग्निर्वैश्वानरः, योऽयं.. [बृ. उ. ५।९।१	+मैत्रा. २।८	(एवमेव) अयमात्मेदं शरीरं निहत्या-	
अयमग्निः सर्वेषां भूतानां मधु	बृह. २।५।३	ऽविद्यां गमयित्वाऽन्यन्नवतरं	
अयमनल्पोभिन्नरूपः स्वप्रकाशो ब्रह्मैव	नृसिंहो. ५।६	कल्याणतरं रूपं कुरुते पित्र्यं वा..	बृह. ४।४।४
अयमन्नमयः प्राणमयः	सर्वसा. १	(एवमेव) अयमात्मेदं शरीरं निहत्या-	
अयमर्वाग्निः परत एतौ प्राणादित्यौ	मैत्रा. ६।२	ऽविद्यां गमयित्वाऽन्यमाक्रममा-	
(अथ) अयमशरीरोऽमृतः प्राणो ब्रह्मैव	बृह. ४।४।७	कम्यात्मानमुपसंहरति [बृह. ४।४।३	+४।४।५
(एवमेव) अयमस्मिच्छरीरे प्राणो युक्तः	छांदो. ८।१२।३	अयमात्मैकल एवाविकल्पः	नृसिंहो. ८।१
(एवमेव) अयमस्मिन्नन्धेऽन्धो भवति	छां. ८।९।१, २	अयमादित्यः सर्वेषां भूतानां मधु	बृह. २।५।५
अयमहमस्मि नो एवेमानि भूतानि	छां. ८।११।१, २	अयमायात्ययमागच्छतीत्येवंविदं...	बृह. ४।३।३७
अयमाकाशः प्राणेन बृहत्या विष्टब्धः	१ ऐत. १।६।३	अयमारुणिः सम्प्रतीममात्मानं	
अयमाकाशः सर्वेषां भूतानां मधु	बृह. २।५।१०	वैश्वानरमभ्येति	छांदो. ५।११।२
अयमात्मा, इदं पुच्छं प्रतिष्ठा	तैत्ति. २।१।१	अयमावसथोऽयमावसथोऽयमा...	२ ऐत. ३।१२
अयमात्मा [तैत्ति. २।१।१ + नृसिंहो.	८।३, ८।५, ८।७	अयमास्येऽन्तरिति सोऽयास्यः	बृ. उ. १।३।८
(१) अयमात्मा चिद्रूपरस एव	नृसिंहो. २।७	अयमुत्तरः पक्षः, अयमात्मा...	तैत्ति. २।१।१
(१) अयमात्माऽधिष्ठयन्ति भुवनानि..	सुबालो. २।१	अयमेव गौतमोऽयं भरद्वाजः	बृह. २।२।४
अयमात्मा नित्यसिद्धः प्रमाणे		अयमेव धर्मः सनातनः सर्वपाप-	
सति भासते	२ आत्मो. ६	नाशको (धर्महेतुः) मोक्षहेतुः	भ. जा. १।६
अयमात्मा पुण्येभ्यः कर्मभ्यः प्रतिधीयते	२ ऐत. ४।४	अयमेव प्रणवः, स परमहंसतुरी-	
अयमात्मा प्रज्ञानघन एव	नृसिंहो. ८।५	यातीतिरुपास्यः	प. हं. प. १०
अयमात्मा ब्रह्म [माण्डू. २ + नृ. पू. ४।२ +	नृसिंहो. १।२	अयमेवं महान् प्रजापतिः	१ ऐत. १।२।४
+ शु. रह. २।४ + रामो. २।१ +	गणेशो. ५।६;	अयमेव महाबन्धः... एवमभ्यसेत्	१ यो. त. ११५
अयमात्मा ब्रह्म, सर्वानुभूः..	बृह. २।५।१९	अयमेव महावेधः सिद्धैरभ्यस्यते...	१ यो. त. ११७
अयमात्मा ब्रह्मेति वा, ब्रह्मैवाहं...	बह्वचो. ४	अयमेव वसिष्ठोऽयं कश्यपः	बृह. २।२।४
अयमात्मा ब्रह्मेत्यादि वाक्यविचारः	मठाम्ना. ५	अयमेव विश्वामित्रोऽयं जमदग्निः	बृह. २।२।४
अयमात्मात्मा एकः सन्नेतव्यं.. अमृतं	बृह. १।६।३	अयमेव स योऽयमात्मा [बृह. २।५।१,	२, ३, ४-१२
अयमात्मानित्यसिद्धः प्रमाणे सति..		अयमेवान्तरात्मा ब्रह्मज्योतिर्यस्मान्न..	भ. जा. २।५
न देशं... न शुद्धिं वाऽप्यपेक्षते	२ आत्मो. ६	(१) अयमोङ्कार ओतानुज्ञाविकल्पै-	
अयमात्मा नृसिंहः	नृसिंहो. ८।१	रोङ्काररूपैरात्मैव	नृसिंहो. २।७
अयमात्मा वाङ्मनोऽगोचरत्वाच्चिद्रूप-		(१ हि) अयमोङ्कारोऽद्वितीयत्वादेव	
अतूरूप ओङ्कार एव	नृसिंहो. २।७	चिन्मयः	नृसिंहो. ८।७
अयमात्मा वाङ्मनोमनोमयो प्राणमयः	बृह. १।५।३	(१) अयस्त्रिपण्डं यथाग्न्ययस्कारादयो	
अयमात्मा सर्वतः शरीरैः परिवृतः	१ ऐत. ३।५।४	नाभिभवन्ति	मैत्रा. ६।२७
अयमात्मा सर्वेषां भूतानामधिपतिः	बृह. २।६।१५	अयं कैकयः सम्प्रतीममात्मानं	
		वैश्वानरमभ्येति	छां. उ. ५।११।४

अयं खल्व्वात्मा ते कतमो भगवान्वर्ण्यः मैत्रे. १।५
 अयं चन्द्रः सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।७
 अयं च परश्च स सर्वत्र हिरण्यमे परब्रह्म. १
 परे कोशे, अमृता ह्येषा...
 अयं च लोकः परश्च लोकः सर्वाणि बृह. ४।१।२
 चभूतानिवाष्पचैवसम्राट्प्रज्ञायन्ते
 अयं च लोकः परश्च लोकः सर्वाणि बृह. ३।७।२
 भूतानि सन्ध्यानि भवन्ति
 अयं च सम्पुटो योगो मूलबन्धो-
 ऽप्ययं..बन्धत्रयमनेनैवसिद्धयति वराहो. ५।४५
 अयं चिह्ननमानन्दधनएव(आत्मा) नृसिंहो. ८।१
 अयं तस्य राजा मूर्धानं विपातयतात् बृह. १।३।२४
 अयं ते अस्युपमेहर्वाक् प्रतीचीनः.. वनदु. १०५
 अयं ते योनिर्ऋत्वियो(जो)यतोजातो
 अरोचथाः[ना.प.३।७७+प.हं.प.३ +याज्ञव. १
 अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातः
 प्राणादरोचथाः,तं प्राणं जानन्.. जाबा.४
 अयं दक्षिणः पक्षः तैत्ति. २।१।१
 अयं धर्मः सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।११
 अयं पन्था विहित उत्तरेण अ.शिरः.३।११
 (एवमेव) अयं पुरुष एतस्मा अन्ताय बृह.४।३।१९
 धावति, यत्र सुप्तो..
 (एवमेव) अयं पुरुषएताबुभावन्ताव-
 नुसञ्चरति स्वप्नं च बुद्धान्तं च बृह.४।३।१८
 (एवमेव) अयं पुरुष एभ्योऽङ्गेभ्यः
 समुच्य पुनः प्रतिन्यायं.. बृह. ४।३।३६
 (एवमेव) अयं पुरुषः प्राज्ञेनात्मना
 सम्परिष्वक्तो न बाह्यं किञ्चन बृह.४।३।२१
 वेद, नान्तरं... तैत्ति.१।६।१
 (तस्मिन्) अयं पुरुषो मनोमयः... प्रा.हो. २।२
 अयं पुरुषो योऽङ्गुष्ठे प्रतिष्ठितः
 अयं बन्धुरयनेति गणनालघुचेतसाम्। महो. ६।७१
 उदार...वसुधैव कुटुम्बकम्
 अयं बन्धुः परश्चायं ममायमय-
 मन्यकः। इति ब्रह्मन् जानामि... अ.पू. ५।६१
 अयं ब्रह्माण्डं च सर्वं कौपीनं दण्ड-
 माच्छादनं च त्यक्त्वाद्ब्रह्मसहिष्णुः ना.प. ३।८७
 अयं ब्रह्माण्डं च हित्वा प. हंसी. २
 अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः लिङ्गोप. १
 [ऋक्सं. ८।१।२५=मं. १०।६०।१२+
 अथर्व. ४।१३।६

(१) अयं य आत्मा स सेतुः छान्दो. ८।४।१
 अयं यस्मात्सर्वस्मात्पुरतः सुविभातः नृसिंहो. ८।५
 अयं यः प्राणो यश्चासावादित्यः मैत्रा. ६।१
 अयं यः श्वेतोरश्मिः, परिसर्वमिदं जगत् चित्यु. ११।१०
 अयं लोक इति होवाच छान्दो. १।८।७
 अयं लोको नास्ति पर इति मानी
 पुनः पुनर्वशमापद्यते मे कठो. २।६
 (अथो) अयं वा आत्मा सर्वेषां
 भूतानां लोकः, स यल्लुहोति... बृह. १।४।१६
 अयं वायुः सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।४
 अयं वाव खल्व्वात्मा ते कतमो
 यद्येवविद्याधिगमस्य धर्मस्य... मैत्रा. ४।३
 अयं वाव खल्व्वात्मा ते कतमो
 भगवान्वर्ण्यः मैत्रे. २।१
 अयं वाव लोको हावकारः छां.व. १।१३।१
 अयं वाव लोको हावुकारः [मा.पा.] छां.व. १।१३।१
 अयं वाव शिष्योऽयं मध्यमः प्राणः बृह. २।२।१
 अयं वाव स योऽयमन्तःपुरुषआकाशः छां.व. ३।१२।८
 अयं वाव स योऽयमन्तर्हृदय आकाशः छां.व. ३।१२।९
 अयं वै नः श्रेष्ठः, यः सञ्चरंश्चासञ्चरं-
 श्र न व्यथतेऽथो न रिष्यति बृह. १।५।२१
 अयं वै लोकोऽग्निर्गौतम बृह. ६।२।११
 अयं वै हरयोऽयं वै दश च सहस्राणि
 बहूनि चानन्तानि च बृह. २।५।१९
 (एवमेव) अयं शारीर आत्मा प्राज्ञे-
 नात्मनाऽन्वारुढमुत्सर्जन्याति बृह. ४।३।३५
 अयं सोऽहमिदं तन्म एतावन्मात्रकं
 मनः, तदभावनमात्रेण... महो. ४।९५
 अयं सोऽहमिदं तन्मे..महाजाग्रदिति.. महो. ५।१३
 अयं स्तनयित्तुः सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।९
 अयं हि कृष्णो यो हि प्रेष्ठः शरीर-
 द्वयकारणं भवति गोपालो. १।११
 अयं हृदि स्थितः साक्षी सर्वेषां... पञ्चब्र. ३६
 अयं ह्योत इव सद्गनः (आत्मा) नृसिंहो. ८।१
 अयाचितं यथालाभं भोजनाच्छादनं
 भवेत्, परेच्छया...(यतेः) ना. प. ५।१६
 अयाचितं याचितं वोत भैक्षं... शाठ्याय. १९
 अयाचिताद्वरं भैक्षं...भैक्षेण वर्तयेत् सं. सो. २।६२
 (१) अयान्यजाजकाः शूद्रशिष्याः मैत्रा. अ८

अयास्य उद्रावा, वाचस्पते...

चित्त्यु. ५।१

(१) अयास्य आङ्गिरसः [वृ.उ.

१।३।१९,२४

अयुक्तः कामकारेण

भ.गी.५।१२

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः

भ.गी. १८।२८

अयोध्यानगरे रत्नचित्रे...सिंहासने

...संस्तूयमानं..(रामं)ध्यायन्..

रा.र.२।४४-४७

अयोध्यानगरे रम्ये...शुकादिभिः...

स्तूयमानं...रामं स्तुवन्

पप्रच्छ मारुतिः

मुक्ति. १।१४

अयोनिं स्वात्मस्थमानन्दचिद्धनं

नृसिंहो. ९।६

अरजस्कमतमस्कममायमभयं..

नृसिंहो. ९।९

अरणिदेशाद्भस्ममुष्टिं पिवेदित्येके

कठभु. १९

अरणिर्वा आरन्द आवारन्द आरन्दो-

ऽयमानन्दतेमारन्दमीशिवेस्वाहा

पारमा. ५।४

अरण्ये चरितो गुप्तः शुक्रब्राह्मण-

कर्मसु। प्रायेण लभते लोकान्..

सन्ध्यो. ४

अरण्ये शुष्कगोमयचूर्णीकृत्यानुसंगृह्य

गोसूत्रैः...संस्कृतमुपोपकल्पम्

वृ.जा.३।३४

(१) अरण्ये श्रद्धातप इत्युपासते ते...

छां.उ.५।१०।१

अरण्योनिहितो जातवेदा गर्भ इव

सुधृतो गर्भिणीभिः। दिवे दिवे..

कठो. ४।८

[अवसं.३।१।३२=मं.३।२९।२+

सा. वे. १।६९

अरतिर्जनसंसदि

भ.गी. १३।११

अर्मापापेन पापमिच्छयायत्स्मरति

तद्भिस्सम्पद्यते, अपुनर्भवया कोशं

भिनत्ति, क्षीर्षकपालं भिनत्ति...

सुबालो. ११।१

अरसमगन्धमन्ययममहान्तं...

सुबालो. ३।१

(१) अरश्च ह वै ण्यश्चार्णवौ

छां.उ.८।५।३

अरसं नित्यमगन्धवच्च यत्

कठो. ३।१५

(१) अरं च ण्यं चार्णवौ ब्रह्मलोके

ब्रह्मचर्येणानुविदन्ति

छां.उ.८।५।४

अरा इव रथनाभौ कला यस्मिन्प्रति-

ष्ठिताः, तं वेद्यं पुरुषं वेद...

प्रभो. ६।६

अरा इव रथनाभौ प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितं

प्रभो. २।६

अरा इव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः

मुण्ड. २।२।६

अरागद्वेषतः कृतम्

भ.गी. १८।२३

अराजकः समर्थः स्याद्ब्राह्मो..कर्मणि

महो. ४।१०५

अराध्यस्मा अन्नमित्याचक्षते

तैत्ति. ३।१०।१

अरिशङ्खकृपाणखेटबाणान्दधानां,

भज तां महिषोत्तमाङ्गसंस्थां

वनदु. १

अरिषड्वर्गमुक्तोऽस्मि

मैत्रे. ३।१८

अरिष्टं कोशं प्रपद्येऽमुनाऽमुनाऽमुना..

छांदो. ३।१५।३

अरिष्टं यत्किञ्च कियते अग्निः...

अरुणो. ५

अरिष्टा विश्वान्यङ्गानि तनूः।

तनुवा मे सह नमस्ते...

महाना. १६।६

अरिष्टे गोगणे कुञ्जवटे...सृष्टिः

सर्वात्मना भवेत्

सामर. ५७

अरुणकमलसंस्था तद्वज्रः पुञ्जवर्णा...

सौभाग्य. १

अरुणसूर्यवेदाङ्गभान्विन्द्रविगमस्ति-

यमसुवर्णरेतो...मासाधिपतयः

सूर्यता. ५।१

अरुणीवारुणी रक्षेत्सर्वप्रहनिवारणी

वनदु. ९३

अरुणस्येव कथितापुराविद्भिः सरस्वती

योगकुं. १।९

अरुणमुखान् (अवाङ्मुखान्) यतीन्

सालावृकेभ्यः प्रायच्छं

कौ.उ. ३।१

अरुढमथवा रुढं...यज्जाप्रतो मनो-

राज्यं यज्जाप्रत्स्वप्न उच्यते

महो. ५।१४

(अथ) अरुपज्ञो भवति

वृह. ४।४।१

अरुपमव्ययं तथाऽरसं नित्यं...

निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते

कठो. ३।१५

अरुपवान् भवति, गुणवान् भवति

ग.शो. २।२

अरुपस्तु मनोनाशो वै देही मुक्तिगः..

मुक्तिको. २।३५

(१) अरूपो देहमुक्तिगः

मुक्तिको. २।३२

अरेकजातमुभयोष्मवर्जितं यदक्षरं न

क्षरते कथञ्चित्

अ.ना. २५

अरेषु भ्रमते जीवः...तन्तुपञ्जर-

मध्यस्था यथा भ्रमति लूतिका

त्रि.भा. २।६१

(एवं वा) अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्व-

सितमेतद्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो-

ऽथर्वङ्गिरस इतिहासः पुराणं विद्या

उपनिषदः.. [वृ.उ. २।४।१०

+४।५।११

(एवं वा) अरेऽहमात्माऽनन्तरोऽबाह्यः

कृत्स्नः प्रज्ञानघन एव

वृ.उ. ४।५।१३

अरेर्वा एतत्सुबद्धं भवति

नृ.पू. ५।६

अर्कज्योतिरहं शिवः

महावा. ५

अर्कं श्रोतं (च्योतं) तं शरीरस्य मध्ये

चित्त्यु. ११।६

अर्चते वै मेकमभूदिति, तदेवार्कस्यार्कत्वं

वृ.उ. १।२।१

अर्चयन्ति तपः सत्यं मधुक्षरन्ति यज्ञवम्

अ.शिरः. ३।१५

अर्चिर्मागं विसृतं वेदार्थमभिधाय..

ब्रह्मलोके स्थापयामास

गोपीचं. २५

अर्चिषमेवाभिष्मभवति [+१।१०।१ (?) अर्चिषो वे यज्ञसमाश्रयवशान् अर्चिषोऽहरह आपूर्यमाणपञ्चमापूर्य- माणपञ्चाद्यान् [वृ.उ. ६।२।१५+ अर्थस्वरूपमज्ञानात्पश्यन्त्यन्येकुट्टयः अर्थं प्रवीतवृत्तं वा प्रहिणुयाद्भतेहैव अर्थादर्थान्तरं चित्ते, याति... अर्थान्सानि तत्त्वानीमानि भित्तो- दितः पञ्चमी रश्मिभिः... अर्थान्वयद्वयाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः अर्थेभ्यश्च परं मनः अर्थवत्सो रोमाणि कोट्यः अर्थचन्द्राकृतिर्दक्षिणाग्निर्भूत्वाद्द्वये तिष्ठति तत्र कोष्ठाग्निरिति.. अर्थचन्द्राकृतिजलं विष्णुस्तस्याधि- देवता । त्रिकोणमण्डलं... अर्थमातृका चतुर्थकूटाक्षरो भवति अर्थमात्रप्रणवोऽनन्तावयवान्वितः अर्थमात्रश्चतुर्थाक्षरो भवति अर्थमात्रं (तु) च विचिन्तयेत् अर्थमात्रा तथा ज्ञेया प्रणवस्योपरि स्थिता, पञ्चसूत्रनिभा.. [ब्र.वि. ९ अर्थमात्रातुरीयांशाषष्ठी (भूमिका) अर्थमात्रात्मकः कृष्णो यस्मिन्निश्वं प्रतिष्ठितम् अर्थमात्रात्मकं कृत्वा कोशीभूतं तु पङ्कजम्, कर्षयेन्नालमात्रेणभ्रुवो- र्मध्ये लयं नयेत् अर्थमात्रात्मको रामो ब्रह्मानन्दै- कविग्रहः अर्थमात्रा परा ज्ञेया तत ऊर्ध्वपरात्परं अर्थमात्राप्रणवोऽनन्तावयवाकारः अर्थमात्रायां जाग्रदतुरीयः अर्थमात्राषोडशीचब्रह्मानन्दैकविग्रहा अर्थमात्रासमायुक्तः प्रणवो मोक्षदायकः अर्थमात्रास्थूलांशे तुरीयविश्वः अर्थमात्रा मासा ऋतवः संवत्सरश्च कल्पतां (...संवत्सरा इति विधृता- स्तिष्ठन्ति) [वृ.उ. ३।८।९ अर्थमात्राभ्यन्तरे पिण्डो भवति	छां.उ. ४।१५।५ मैत्रा. ६।३५ छां.उ. ४।१५।५ जा.द. ६।४९ कौ.उ. २।३ महो. ५।५ मैत्रा. २।९ ईशा. ८ कठो. ३।१० निरुक्तो. २।१ प्रा. हो. २।४ यो.शि. ५।१३ श्रीवि.ता. १।२ तुरीयो. १ रामो. १।२ अ. ना. ३२ +१ प्रणवो. ९ वराहो. ४।१ गोपालो. २।१७ ध्या.विं. ३९ रामो. १।४ ब्र.वि. ४० ना.प. ८।३ प.हं.प. १० श्रीवि.ता. १।४ ध्या.विं. १७ वराहो. ४।१ म.ना. १।९ गर्भो. ३	अर्घास्तमित आदित्ये अर्घोदित- विवाकरे । गायत्र्यास्तत्र सामिष्यं संगकाळः स उच्यते अर्धेन्दुलसितम् अर्धोन्मिलितं प्रतिपत्, सर्वोन्मीलनं पूर्णमा भवति अर्धोन्मीलितलोचनः स्थिरमनानासा- प्रक्षेपणः...तत्त्वतत्परमास्ति (?) अर्थमा चन्द्रमाः कलाकलिः (सर्वं नारायणः) अर्वागस्तमेता आदित्यः अर्वाग्विलक्ष्मस ऊर्ध्वबुध्न इतीदं.. अर्वाग्विलक्ष्मस ऊर्ध्वबुध्नस्तस्मिन्.. अर्वाग्विचरत एतौ प्राणादित्यावेता- तुपासीतोमित्यक्षरेण अर्वाकायातु वसुभी रश्मिपरिन्द्रः अर्वाऽसुरानश्वो मनुष्यान् (अवहत्) अलक्षणमचिन्त्यमन्यपदेश्यं... अलक्षणमलक्ष्यं [यो.शि. ३।१७ अलक्ष्मीर्मे इति मंत्रेण गोमयं... अलक्ष्मकार स्थिरा प्रसन्नलोचना सर्वदेवतैः पूज्यमाना वीरलक्ष्मीः अलब्धापि फलं सम्यक् पुनर्भूत्वा महाकुले । पुनर्वासनयैवायं... अलब्धावरणाः सर्वधर्माः प्रकृतिनिर्मलाः अलब्धिर्योगतत्त्वस्य दशमं (योगविघ्नं) अलभ्यमानस्तनयः पितरौ क्लेशयेच्चिरम् अलम्बुसा अबोगता शुभा नाडी अलम्बुसाकुहूर्विश्वोदरीवरुणा- हस्तिजिह्वा.. चतुर्दश नाड्यः अलम्बुसाया अवात्मा वरुणः परि- कीर्तितः । कुहोः क्षुदेवता... अलम्बुसा सुषुम्णायाः कुहूर्नाडी वसत्यसौ अलम्बुसा स्थिता पायुपर्यन्तं कन्द- मध्यगा । पूर्वभागे.. अलं वा अर इदं विज्ञाय अलातचक्रमिव स्फुरन्तमादित्य- वर्णमूर्जस्वन्तं ब्रह्म अलातस्पन्दितं यथा	गर्भो. ३ गणप. ७ मं.प्रा. २।२ शां.हि. १।७।१६ सुवालो. ६।१ छां.उ. ३।१०।४ बृह. २।२।३ बृह. २।२।३ मैत्रा. ६।२ चित्यु. ११।७ बृ.उ. १।१।२ माण्डू. ७ +नृसिंहो. १।६ बृ.जा. ३।९ सीतो. २९ वराहो. ४।४० अ. शां. ९८ योगकुं. १।६१ याज्ञव. १८ त्रि.प्रा. ८० भावनो. ४ जा.द. ४।३७ वराहो. ५।२३ जा.द. ४।१७ बृ.उ. २।४।१३ मैत्रा. ६।२४ अ.शां. ४५
--	--	--	--

अलाते स्पन्दमाने वै नामासा

अन्यतो भुवः

अलाते न विषादीस्यालाते..नर्हयेत्

अलिङ्गस्याभेयदौर्गम्यमाविष्टं च

अलिङ्गोऽमूर्तोऽनन्तशक्तिः

अलङ्घ्या धर्मकामाः स्युः

अलेपकं सर्वगतं यद्व्ययंतदेवाहं...

विमुक्त ईं

अलेपकोऽहमजरोनीरागः...इति

मत्वा न शोचति

अलोमकाहियोनिरन्तः, अतस्तद्यदि..

अलोहितमप्रमेयमहस्वमदीर्घं(ब्रह्म)

अलोहितमस्नेहमेच्छायमतमो...

अल्पकालमयाद्रक्षन्प्राणायामपरो

भवेत्...प्राणाभिरोधयेत्

अल्पकालं मयादृष्टं..सस्वप्नः..कथ्यते

अल्पमूत्रपुरीषश्चस्वल्पनिद्रश्च..(योगी)

अल्पमृष्टाशनाभ्यां च चतुर्थांशावशे

वितम् । ..भोजनं मितभोजनम्

अल्पाहारो यदि भवेदग्निर्देहं हरेत्

क्षणात्.. ऊर्ध्वपादः क्षणं स्यात्

(?)अल्पाःकलहिनःपिशुनाउपवादिनः

अवकाशविधूतदर्शनपिण्डीकरण-

धारणाः...जैषतन्मात्रविषयाः

अवक्तव्यमनादातव्यमगन्तव्यमविसर्ज-

यितव्यमनानन्दयिव्यममन्तव्यं..

अव चोर्ध्वात्तात्, अवाधरात्तात्

अवजानन्ति मां मूढाः

अवटैवावटकृद्वातुकामः संविशति

अवतत्यधनुस्त्व५ सहस्राक्षशतेषुधे

[तै.सं.४।५।१।४+वा.सं.१६।१३

अवतु मामवतु वक्तारम्

[गणप.शांतिः तै.उ.१।१३+

अवतु वक्तारम्. [कौलो. गणप. शां.

अव ते हेळ उदुत्तमं

अव त्वं माम्, अव वक्तारम्

अव दक्षिणात्तात्

अवतो हि किं स्यादित्यब्रवीत् ते

अव दातारम् । अव धातारम्

अव धातारम् । अवानूवानमव..

अ.शां. ४९

ना.प. ५।१८

मैत्रा. ६।३१

मैत्रा. ७।२

तैति. १।११।४

मुक्तिको.२।७३

अ.पू. ५।९२

बृह. १।४।६

सुबालो. ३।२

बृह. ३।८।८

यो.चू. ९२

महो.५।१६

१यो.त. ५७

जा.द. १।१९

१ यो.त. १२४

छां.उ. ७।६।१

त्रि. ब्रा. १।४

नृसिंहो.९।९

गणप. ३

भ.गी. ९।११

मैत्रा. ६।२८

नीलक. २।५+

कौलोप.

२ऐत.६।१

२ऐत. ६।१

सहवै. ५

गणप. १,३

गणप.३

बृह. ४।१।२

गणप. ३

गणप.३

गणप.३

गणप.३

गणप.३

गणप.३

गणप.३

गणप.३

गणप.३

गणप.३

अवधूतस्त्वनियमः..सर्ववर्णेष्वजगर-

वृत्त्याहारपरः

[ना.प.५।५

अत्र पञ्चात्तात्

अत्र पुरस्तात्

अवबोधंविदुर्ज्ञानितदिदंसाप्तभूमिकं

अवबोधैकरसोऽहंमोक्षानन्दैकसिन्धुः

अवभृथं मरणात्

अवयः प्रस्तावो गाव उद्रीथः

अवरो वै तर्हि किल म इतिहोवाच

प्रनर्दनः

(?)अवरोहन्तं दिवितः पृथिवीमवः

अवर्णलेशः कण्ठयो यथोक्तशेषः

पूर्वो विवृत्तकरणस्थितश्च

अव वक्तारम् । अव श्रोतारम् ।

अवशं प्रकृतेर्वशात्

अवशिष्टमविद्याश्रयं (पादं)

अवशिष्टं यत्तवागभ्राति

अवशिष्टानां पञ्चापञ्चाशानां...

अहमित्यभिमानः

अव श्रोतारम्

अवष्टभ्य धरां सम्यक्तलाभ्यां तु..

मयूरासनम् [त्रि.ब्रा. २।४७

अवस्तु सोपलम्भं च शुद्धलौकिक-

मिष्यते

अवस्त्वनुपलम्भं च लोकोत्तरमिति

स्मृतम्, ज्ञानं ज्ञेयं च विज्ञेयं...

अवस्थात्रयभावाभावसाक्षीस्वयम्भा-

वरहितं नैरन्तर्यं चैतन्यं यदातदा

तुरीयं चैतन्यमित्युच्यते

अवस्थात्रयमन्वेति न चित्तंयोगिनः

सदा । जाग्रन्निद्राविनिर्मुक्तः...

अवस्थात्रयहीनात्मा अक्षरात्मा..

अवस्थात्रयाणामेकीकरणं ताम्बूलम्

अवस्थात्रितयं चैव जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तयः

अवस्थात्रितयातीतं तुरीयंसत्यचि-

त्सुखम्.. सर्वेषां जनकं परं

अवस्थात्रितयेष्वेवबुद्धिपूर्वमध्वचयत् ।

तन्मन्त्रस्मरणेनैव निःशेषं..

अवस्थानामधिपत्यश्चत्वारःपुरुषाः

विश्वतैजसप्राज्ञात्मानश्चेति

सं. सो. २।१३

गणप.३

गणप. ३

महो. ५।२३

आ.प्र. ५

प्रा. हो. ४।३

छान्दो.२।१८।१

कौ. उ. ३।१

नील. १

२ प्रणवो. १६

गणप.३

भ.गी. ९।८

त्रि.म. ना. ४।४

मैत्रा. ६+९

ग. शो. ४।५

गणप. ३

+शां.१।३।१०

अ.शां. ८७

अ.शां. ८८

सर्वसारो. ३

ना.बि. ५४

ते.बि. ४।७८

भावनो. १०

वराहो. १।६

पञ्चब्र. १३

रामो. ५।२३

यो.चू. ७२

अवस्थात्रितयेष्वेवं मूलबन्धं...	रामो. ५।२४
अवस्थामेदादवस्थेश्वरमेदः	ना. प. ५।१२
अवस्फूर्जयमाना इव तद्गद्योति	आपें. १।१
अवस्थतं सुखतयमोमस्तिननुपुत्रं	लिङ्गोप. १+
[क्रकसं. मं. १०।६०।१२	
अवाक्यनादरः	छां. उ. ३।१४।२
अवागमनोऽतो जस्कमचक्षुष्क-	
मनामगोत्रं [यू. उ. ३।८।८+	सुवालो. ३।२
अवाक्यः पीडयमानो.. जंतुश्चैव..	निरुक्तो. १।७
अवाक्यनो गोचरत्वाच्चिद्रूपः (आत्मा)	नृसिंहो. २।७
(?) अवाचीदिगुरुच्चः प्राणाः	बृह. ४।२।४
अवाच्यवादांश्च बहून्	भ. गी. २।२६
अवाच्यं प्रणवस्याग्रं यस्तं	
वेद स वेदवित् [य्या. वि. १८+	वराहो. ५।७०
अवाच्योर्ध्वं वा गतिं द्वन्द्वैः...	
परिभ्रमाभि	मैत्रा. ३।१
अवाधरात्तात्	गणप. ३
अवानूबानमवशिष्यम्	गणप. ३
अवान्तरदिशो विस्फुलिङ्गाः, तस्मिन्ने-	
तस्मिन्मौ.. [छां. उ. ५।६।१+	बृह. ६।२।९
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं	भ. गी. २।८
अवाय्वनाकाशम्	बृ. उ. ३।८।८
अवारितं क्षयं याति वार्यमाणं तु	
वर्धते (मनः)	अमन. २।७०
अवासनत्वात्सततं यदानमनुतेमनः,	
अमनस्ता तदोदेति.. [अ. पू. ४।४८+	मुक्तिको. २।२९
अवासनं स्थिरं प्रोक्तं मनोऽध्यानं	
तदेव च । तदेव केवलीभानं..	अ. पू. १।२९
अविकल्परूपं हीदं सर्वं, नैव तत्र.. भिदा	नृसिंहो. २।७
(?) अविकल्पो नाविकल्पोऽपि	नृसिंहो. २।१
अविकल्पोऽपि नात्र काचन	
भिदाऽस्ति	नृसिंहो. ८।७
अविकल्पो ह्ययमात्मा बाहुनो-	
गोचरत्वाच्चिद्रूपश्चतुरूप	
ओङ्कारो एव	नृसिंहो. २।७
अविकल्पो ह्ययमोङ्कारोऽद्वितीयः	नृसिंहो. २।७
अविकल्पो ह्ययमात्माऽद्वितीयत्वात्	नृसिंहो. ८।७
अविकल्पो ह्ययमोङ्कारोऽद्वितीयत्वादेव	नृसिंहो. ८।७
अविकारोऽहमन्ययः, शुद्धो बोध...	अध्यात्मो. ६९

अविकारो सुपञ्चयः सर्वस्य सर्वत्र	नृसिंहो. ९।१
अविकार्योऽयमुच्यते	भ. गी. २।२५
अविक्रियमन्यपदेऽयमसन्त्रं..	नृसिंहो. ९।९
अविक्रियेऽद्वये पश्यतेहापि सन्मात्रं	नृसिंहो. ९।६
अविक्रियो महाचैतन्योऽस्मात्सर्वस्मान्	नृसिंहो. २।३
अविचारकृतो बन्धो विचारान्मोक्षः..	पैङ्गलो. २।९
अविचिकित्सजकारेणेम-	
मात्मानमन्विष्य मकारेण...	नृसिंहो. ७।४
अविचिकित्सोऽविपाशः सत्यसङ्कल्पः	मैत्रा. ७।७
(?) अविचिकित्सो ब्राह्मणो भवति	बृ. उ. ४।४।२३
अविच्छिन्नज्ञानाद्वैराग्यसंपत्तिमनुभूय	ना. प. ७।३
अविज्ञातं विज्ञानतां विज्ञातमविज्ञानतां	केनो. २।३
अविज्ञातं विज्ञातं [भवति]	छां. उ. ६।१।३
अविज्ञातं विज्ञातं [अक्षरं ब्रह्म]	बृ. उ. ३।८।११
अविज्ञातो विज्ञाता, नान्यो-	
ऽतोऽस्ति द्रष्टा..	बृह. ३।७।२३
(?) अविज्ञाता इव लक्षितः	वैतथ्य. ६
(?) अविज्ञातादधि-इति शुभ्रम्	केनो. १।४
अविद्यमानाया विद्यातया विभ्रंखिलीकृतं	महो. ४।१३३
अविद्ययामृत्युमेति विद्ययाऽमृतमश्नुते	भवसं. ३।१
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा.. [ईशा. ११+	मैत्रा. ७।९
अविद्यातत्कार्यहीनः स्वात्मबन्धहरः..	
आनन्दरूपः.. [नृसिंहो. २।८+	रामो. २।४
अविद्ययैवोत्तमया.. विद्या सम्प्राप्यते	महो. ५।१०९
अविद्यातत्सम्भूतबीजमेकं द्विधा स्थितं	भवसं. ३।९
अविद्यातिमिरातीतं... आनन्दममलं	अक्षयुप. ५१
अविद्यापञ्चपर्वेषा निबध्नाति नृणां सदा	भवसं. ३।१०
अविद्यापादमतिशुद्धं भवति (ब्रह्म)	त्रि. म. ना. ४।१
अविद्यापादः सुविद्यापादश्चानन्दपाद-	
स्तुरीयपादः (ब्रह्मणः पादचतुष्टयं)	त्रि. म. ना. १।४
अविद्याप्रपञ्चस्य नित्यत्वमनित्यत्वं वाक्यं	त्रि. म. ना. ३।२
अविद्याभूतवेष्टितो जीवो देहान्तरं	
प्राप्य लोकान्तरं गच्छति	पैङ्गलो. २।९
अविद्यायां बहुधा वर्तमाना वयं	
कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः	मुण्ड. १।२।९
अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयंधीराः	
पण्डितं मन्यमानाः [कठो. २।५+	मुं. उ. १।२।८
अविद्यायामन्तरे वेष्टयमानाः स्वयंधीराः	
[मा. पा.] मुं. उ. १।२।८+	मैत्रा. ७+९

अविद्या यावदस्यास्तु नोत्पन्ना		अविस्मृत्यगुरोर्वाक्यमभ्यसेत्तदहर्निशं १ यो. त. ७९
क्षयकारिणी	महो. ४।११४	(१) अविशेषविज्ञानं विशेषमुपगच्छति मैत्रा. ६।२४
अविद्यायाः स्थितिरुन्मेषकाले	त्रि.म.ना. ४।६	अवृक्षवृक्षरूपाऽसि वृक्षत्वं मे
अविद्या विद्यमानैव नष्टप्रज्ञेषु दृश्यते	महो. ४।११२	विनाशाय तुलस्यु. ६
अविद्यांशे सुतादौ वा कः क्रमः		अवृतेः सदसत्त्वाभ्यां वक्तव्ये
सुखदुःखयोः	महो. ५।१६७	बन्धमोक्षणे । नावृतिर्ब्रह्मणः... २ आत्मो. २७
अविनाभाविनी नित्यं जन्तूनां		अवृद्धं वृद्धं चावृद्धं प्रकृष्टं चाकृष्ट-
प्राणचेतसी । आधाराधेयवच्चैते		मित्येवं स्तोत्र्यतमं भवति संहितो. ३।२
एकभावे विनश्यतः	अ.पू. ५।५२	अवेक्षमाणमात्मानं [रामं]...
अविनाशि चिदाकाशं सर्वात्मक-		भानुऽक्षं जपेन्मनुं रामर. २।५
भस्मण्डितम्... तदस्मीति...	अ.पू. १।२२	अवेक्षेत गतीर्नृणां कर्मदोषसमुद्भवाः अवसं. १।३
अविनाशि तु तद्विद्धि	भ.गी. २।१७	अवेदि मां भार्गव वक्रतुण्डं ग.पू. १।९
अविनाशिनामदेशकालवस्तुनिमित्तेषु		अवेदनं विदुर्योगं.. योगस्थः कुरु कर्माणि अक्षुप. ६
विनश्यत्सु यन्नविनश्यतितदविनाशि	सर्वसारो. ६	अवोत्तरात्तात् गणप. ३
अविनाशी वा अरेऽयमात्मा-		अव्यक्तस्वात्सुक्ष्मत्वाददृश्यत्वादभा-
ऽनुच्छित्तिधर्मा	बृह. ४।५।१४	ह्यत्वाभिर्ममत्वाच्चानवस्थोऽकर्ता
अविभक्तं च भूतेषु	भ.गी. १३।१७	कर्तेवावस्थितः स्वस्थः (आत्मा) मैत्रा. २।१०
अविभक्तं विभक्तेषु	भ.गी. १८।२०	अव्यक्तनिधनान्येव भ.गी. २।२८
अविभक्तांस्त्रीनेव लिङ्गरूपानेव		अव्यक्तभावैरहङ्कारैर्ज्योतिरहं... महाना. १४।१५
च सम्पृज्य [ब्रह्मविष्णुरूपां]	नृसिंहो. ३।४	अव्यक्तमक्षरे विलीयते सुबालो. २।२
अविमुक्तं न विमुचेत्	जाबा. १+	अव्यक्तमहत्तत्त्वमहदहङ्कार इति
[रामो. १।१+	तारसा. १।१	कामेश्वरी वज्रेश्वरी... देवताः भावनो. ६
अविमुक्तं वैकुण्ठक्षेत्रं देवानां देवयजनं	जाबा. १+	अव्यक्तलिङ्गा व्यक्ताचारा
[रामो. १।१+	तारसा. १।१	अनुन्मत्ताः [याज्ञव. २+
अविमुक्ते तत्र क्षेत्रे सर्वेषां मुक्तिसिद्धये,		अव्यक्तलिङ्गोऽव्यक्ताचारो दिवानक्त.. आश्रमो. ४
अहं [रामः] सन्निहितस्तत्र...	रामो. ३।५	अव्यक्तलिङ्गोऽव्यक्तार्थो मुनिरुन्मत्त.. प.हं.प. ८
अविमुक्तस्थिते दैवे रुद्रवासे तु		तद्वृष्ट्या दर्शयेन्नृणाम् ना. प. ५।३४
चेश्वरः । प्राणास्तुरुद्रा विज्ञेयाः	दुर्वासो. २।१०	अव्यक्तलिङ्गोऽव्यभिचारो बालो-
अविरितरा मेष इतरः; ताः समेवा..	बृह. १।४।४	तमत्तपिशाचवत् (सञ्जयासी) ना. प. ३।८७
अविरोधेन धर्मस्य सञ्चरेत्पृथिवी...	ना. प. ६।३३	अव्यक्तलेशाज्ञानाच्छादितपारमा-
अविवादो विरुद्धश्च देशितस्तं...	अ. शां. २	र्थिकजीवस्य तत्त्वमस्यादि-
अविशिष्टतयोपलभ्यमानः सर्वप्राणि-		वाक्यानि ब्रह्मैकतां जगुः पैङ्गलो. २।६
बुद्धिस्थः... कूटस्थ उच्यते	सर्वसा. ५	अव्यक्तं चैवास्य योनिं वदन्ति विष्णुह. १।४
(१) अविशिष्टसुखस्वरूपश्चानन्द-		अव्यक्तं तु (रूपं) महेश्वरं रुद्रह. १०
क्षय्युच्यते	सर्वसा. ६	अव्यक्तं दहति, अक्षरं दहति, मृत्युर्वै.. सुबालो. १५।२
अविशेषेण सर्वं तु यः पश्यति		अव्यक्तं पर्युपासते भ. गी. १२।३
चिदन्वयात् ; सपञ्चसाक्षाद्विज्ञानी		अव्यक्तं भित्वाऽक्षरं भिनत्ति सुबालो. ११।२
सशिवः सहरिविधिः [महो. ४।७६ वराहो. २।६३	नृसिंहो. ५।९	अव्यक्तं वाऽन्नमक्षरमन्नादं सुबालो. १४।१
अविसर्जयितव्यमनानन्दयितव्यं		अव्यक्तं विशेषब्रह्मणि भिरन्धनोवैश्वा- त्रि.म.ना. ३।७
		नरो यथावस्मात्. स्वरूपं भजति

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं	भ. गी. ७।२४
अव्यक्ता एव येऽन्तस्तु स्फुट...	वैतथ्य. १५
अव्यक्ताचारा अनुन्मत्ता उन्मत्तवदा-	
चरन्तः...आत्मानं मोक्षयन्तः	आश्रमो. ४
अव्यक्तास्तु परःपुरुषोऽन्यापकोऽलिङ्ग	
एवच। यज्ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुः	कठो. ६+८
अव्यक्तास्तुरुषःपरः। अव्यक्तात्रपरं...	कठो. ३।११
अव्यक्तादीनि भूतानि	भ. गी. २।२८
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः	भ. गी. ८।१८
अव्यक्तासक्तचेतसाम्	भ. गी. १२।५
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं	भ. गी. १२।५
अव्यक्तान्महत्, महतोऽहङ्कारः	त्रि. ब्रा. १।१
अव्यक्तान्मूलाविर्भावो मूलाविद्या-	
विर्भावश्च	त्रि. म. ना. २।५
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तः	भ. गी. ८।२१
अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयं	भ. गी. २।२५
अव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः	भ. गी. ८।२०
अव्यपदेश्यम् (ब्रह्म-आत्मा)	रामो. २।४+
[ग. शो. १।४+ ५।७	
(?) अव्यभिचारिणं नित्यानन्दं	मैत्रा. २।१
अव्ययममहान्तमबृहन्तमज-	
मात्मानं मत्वा	सुबालो. ३।१
अव्यवहार्यमग्राह्यमलक्षणं (ब्रह्म-आत्मा)	
[नृ. पृ. ४।२+	नृसिंहो. १।६
अव्यवहार्यं केचन तत्तदेतदात्मान-	
मोमिति पश्यन्तः पश्यत	नृसिंहो. ९।९
अव्यवहार्यमेवाद्वयम् (ब्रह्म-आत्मा)	नृसिंहो. ९।८
अव्यवहार्यः केचनाद्वितीयः (ओङ्कारः)	नृसिंहो. ८।१
अव्यवहार्योऽप्यल्पः नाल्पः	मैत्रा. ९।७
अव्याकुलस्य चित्तस्य बन्धनं विषये..	त्रि. ब्रा. २।२४
अव्यानयितव्यमनुदानयितव्यं (ब्रह्म)	नृसिंहो. ९।९
(?) अव्याहृतं वा इदमासीत्सत्यं	
(अथ व्यातं वा इदमासीत्सत्यम्)	मैत्रा. ६।६
अव्युत्पन्नमना यावत् ..गुरुशास्त्र-	
प्रमाणैस्तु निर्णीतं तावदाचर	मुक्तिको. २।३०
अत्रणमस्नाविरःशुद्धमपापविद्धम्	ईशा. ८
(अथ पुनः) अत्रती व्रती वा	
स्नातको वा ..यदहरेव विरजे-	
त्तदहरेव.. [ना. प. ३।७७+	प. हं. प. २

अशक्तिरपरिज्ञानं क्रमकोपो-	
ऽथवा पुनः [अ. शां. १९+ मैत्रा. ४।१९	
अशक्यः सोऽन्यथा द्रष्टुं ध्यायमानः	
कुमारिकैः...विकारजननीमज्ञा... मंत्रिको. ३	
अशङ्कितापिसम्प्राप्तामयात्रायथाऽध्वगैः महो. ५.७२	
अशना च पिपासा च शोकमोहोजरा	
मृतिः। एते षड्दुर्मयः प्रोक्ताः वराहो. १।९	
अशनापिपासे मे सोम्य विजानीहि छान्दो. ६।८।३	
अशनायया हि मृत्युः.. बृ. ह. १।२।१	
अशनाया पिपासा-शोक-मोह-जरा-	
मरणानीति षड्दुर्मयः रुद्रलो. ४।२	
अशनायापिपासे मे सोम्य विजा-	
नीहि (मा. पा.) छां. उ. ६।८।३	
अशनाया मृत्युस्तद्यदेत आसीत्स	
संवत्सरोऽभवत् बृह. १।२।४	
अशनिरङ्गाराः, हादुनयो	
विस्फुलिङ्गाः बृह. ६।२।१०	
अशब्दमस्पर्शमरूपमचक्षुः.. [ब्रह्म]	यो. शि. ३।१९
अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं कठो. ३।१५	
[योगकुं. ३।३५+ पैङ्गलो. ३।८+	मुक्तिको. २।७२
अशब्दोऽहमरूपोऽहं	प्र. वि. ८२
अशरीरमलोहितं शुभ्रमक्षरं वेदयते	प्रश्नो. ४।१०
(?) अशरीरस्यात्मनोऽधिष्ठानं.. छां. उ. ८।१२।१	
अशरीरस्यौष्ण्यमस्यैतद्धृतम्	मैत्रा. ६।७
अशरीरं वाव सन्तं न प्रियाप्रियेस्पृशतः	छान्दो. ८।१२।१
अशरीरं शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितं।	
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा	
धीरो न शोचति [कठो. २।२२+	ना. प. ९।१५
अशरीरं शरीरेषु महान्तं विभुमीश्वरं,	
आनन्दमक्षरं साक्षान्मत्वा धीरो	
न मुह्यति जा. द. ४।६२	
अशरीरं सदा सन्तमिदं ब्रह्मविदं	
कचित्। प्रियाप्रिये न स्पृशत-	
स्तथैवं च शुभाशुभे २ आत्मो. १५	
अशरीरोऽनिन्द्रियोऽप्राणोऽतमाः नृसिंहो. ७।४	
अशरीरो निरिन्द्रियोऽप्राणोऽतमाः	
सच्चिदानन्दमात्रः स स्वराड्भवति	
अशरीरो वायुः, अन्नं विद्युत्.. नृसिंहो. ७।१	
अशरीरो हि प्राणः छांदो. ८।१२।२	
	१पेत्. ३।६।७

अश्वं शस्त्रपाणयः	भ. गी. १।४६	अशेषभूतान्तर्यामित्वेन वर्तमानं	
अश्वानाय मे विद्यास्यसि	छा. उ. ६।७।३	अन्तर्बहिष्वाकाशात् [आत्मानं]	ब.सू.उ.९
अश्वान्तस्य कुतः सुखम्	भ. गी. २।६६	अशेषवेदवेदान्तवेद्यं...उपासितव्यम्	भस्मजा. २।९
अश्वान्तस्य मनो भारो भारो-		अशेषेण परित्यागो वासनाया..मोक्ष	
ऽनात्मविदो विदुः	महो. ३।१५	इत्युच्यते.. स एव विमलकमः	महो. २।३९
अश्वविहितं घोरं	भ. गी. १।७।५	अशोकमनन्तं (आत्मानमुपासीत)	सुबालो. ५।१४
अश्विना अयज्ञोपवीता उन्मत्ता इव..	नृसिंहो. ६।३	अशोकस्वादमोक्षत्वाभृत्सिंहमन्विष्य	नृसिंहो. ७।१
अश्वारीतीक्ष्णच्छरीरमभवत्तच्छरीरस्य	१ ऐत. १।४।४	अशोच्यानन्वशोचस्त्वं	भ.गी. २।११
अश्वान्तं मन्यमानः शरीरं	मैत्रा. १।२	अभन् गच्छन् स्वपच्छुषन्	भ.गी. ५।८
अश्वित्वाऽऽवागन्ति (श्रोत्रिणाः)	बृह. ६।१।१४	अभन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्	भ.गी. ९।२०
अश्विरस्कमपाणिपादं [ब्रह्मात्मा]	सुबालो. ३।२	अभ्राति प्रयतात्मनः	भ.गी. ९।२६
अश्विनाः पाशसंयुक्ताः पशवः..		अभीयातामीश्वरौजनयितवाओक्षेण	
तस्मादीशः शिवः स्मृतः	शिवो. १।१०	वर्षमेण वा	बृ.उ. ६।४।१८
अशीतिश्च शतं चैव सहस्राणि		अश्नुते साम्नः सायुज्यम्	बृ.उ. १।३।२२
त्रयोदश । लक्षश्चैको विनिःश्रास		अश्नुते हाविर्भूय ओषधिवनस्पतयः	१ ऐत. ३।२।१
अहोरात्रप्रमाणतः	अ. ना. ३४	अश्माभवपरशुर्भव हिरण्यमस्तृतं भव	कौ.उ. २।११
अशीतिसहस्रं वा अर्कलिनो बृहती-		अश्रद्धाणाः पुरुषाः	भ.गी. ९।३
रहरभि सम्पश्यन्ति	३ ऐत. २।२।३	अश्रद्धया हुतं दत्तं	भ.गी. १।७।२८
अशीर्यो नहि शीर्यते	बृह. ३।९।२६	अश्रुतं श्रोतृ, अमतं मंतृ (अक्षरं ब्रह्म)	बृह. ३।८।११
[+४।२।४+४।४।२२	+४।५।१५	अश्रुतः श्रोताऽमतो मन्ता (आत्मा)	बृह. ३।७।२३
अशुद्धं कामसङ्कल्पंशुद्धं कामविवर्जि-		अश्रुतो बुध्यते ग्रन्थः प्रायःसारस्वतः	सरस्व. ३४
तम्, मनएव मनुष्याणां [ब्र.वि. १+	त्रि.ता. ५।२	अश्रुतोऽहमदृष्टोऽहमन्वेष्टव्योऽमरो..	ब्र.वि. ८५
अशुद्धं कामसम्पर्कात् (मनः)	मैत्रा. ६।३४	अश्रुपूर्णकुलेक्षणम्	भ.गी. २।१
अशुभकर्मनिर्मूलनपरः संन्यासेन..	जाबालो. ६।३४	अश्रोताऽमन्ताऽबोद्धाऽकर्ताऽविज्ञाता	
अशुभक्षयकर्तारं फलमुक्तिप्रदायकं..		भवति, अथान्नस्याये द्रष्टा..	छां.उ. ७।९।१
ध्याये ब्रह्म सनातनम् ।	गर्भो. ९	अश्रोत्रियं ब्राह्मणं भोजयानस्य...	
अशुभाच्चालितं याति शुभं तस्माद-		(धात्वे) प्रहरन्ति वज्रं	इतिहा. २५
पीतरत्... चालयेचित्तबालकम्	मुक्तिको. २।७	अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति	महो. ६।८३
अशुभाच्छुभमिष्यते..भयं यद्यभयं...	ते.वि. ५।२३	[+ऊ.पुं.६+अ.शिरः.३।१६	
अशुभाशुभसङ्कल्पः संशान्तोऽस्मि...	सं.सो. २।४९	अश्लोणाङ्गैरहुताः स्वर्गे तत्र पश्येम	
अशुभेषु समाविष्टं शुभेष्वेवावतारयेत्;		पितरं पुत्रम्	सहस्रै. १०
अशुभाच्चालितं याति (चित्तं)	मुक्तिको. २।६	अश्व इव रोमाणि विधूय पापं..	छांदो. ८।१३।१
अशून्यं शून्यभावं तु शून्यातीतं		अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते	
हृदिस्थितं । न ध्यानंचनचध्याता..	ते.वि. १।१०	वसुन्धरे [ऊ.पुं. १+वनदु. १५८+	महाना. ४।४
अशूरेण हताः शूरा एकेनापिशतंहतं,		अश्वत्थं प्राहुरभ्ययम्	भ.गी. १५।१
विषं विषयवैषम्यं, न विषं...	महो. ३।५४	अश्वत्थमेनं सुविरुद्धमूलं	भ.गी. १५।३
अशूणवतो हि किं स्यात्	बृह. ४।१।५	अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां	भ.गी. १०।२६
		अश्वत्थामा विकर्णश्च	भ.गी. ५।८

अष्टपूर्वार्थमध्याह्निनाद.. [भी.सू.३ क्र.सि.५।८७।३
 अष्टमेवं वेद य एनमेवं वेद वृ.उ.१।२।७
 अष्टपतिर्वै भगवन्तोऽयंकैक्यः सम्प्र-
 तीममारमानं वैश्वानरमध्येति छां.उ.५।११।४
 अष्टतयः सोमसवनस्तदधराजिता छां.उ.८।५।३
 अष्टमेधसहस्राणि...एकस्य ध्यान-
 योगस्य कलां नार्हन्ति षोडशी ग.सो.१।५
 अष्टस्य क्षीर्णां प्रयदीमुवाच वृ.उ.२।५।१६
 अष्टमेधो महायज्ञकथा पा.म.५
 अष्टः प्रविहारः, पुरुषो निधनम् छान्दो.२।१८।१
 अष्टः सममवयवदशवत्तन्मेध्यमभूत् वृ.उ.१।२।७
 अष्टिनावध्वर्यु, त्वष्टाग्रीत् वित्यु.३।९
 अष्टिनादधीचेऽव्यंशिरःप्रत्यैरयत् वृ.उ.२।५।१७
 अष्टिनोर्वाहुभ्यां...प्रतिगृहामि चित्यु.१०।१
 अष्टिनौ पूर्वपादौ सहवे.२३
 अष्टिनौ मरुतस्तथा भ.गी.१।१।६
 अष्टिनौ व्याचं, इष्टं मनीषाण.. चित्यु.१३।३
 अष्टौ अनुध्यान् (अवहत्) वृ.उ.१।१।२
 अष्टकृत् एकदशकृत् गायत्री जपेत् सन्ध्यो.२
 अष्टकृत् प्रयुक्ता गायत्री गायत्रेण सन्ध्यो.२
 छन्दसासम्मिता अमुंलोकमभिजयति सन्ध्यो.२
 अष्टकैः षड्विंशिरूपैकपाशं त्रिमार्ग-
 मेदं द्विनिमित्तैकमोहम् श्वेता.१।४
 अष्टदलपूजा-अदित्यसमितृसूर्यस्यग-
 पूषगभरितभार्तण्ड.. जातैः सूर्यता.४।१
 अष्टदिक्पालकैर्भूमिपदं विकसितं
 जगत् । संसारार्णवसञ्ज्ञातं.. गोपालो.२।२५
 (?) अष्टैकादशधा द्वादशधा मैत्रा.५।२
 अष्टपत्रं तु हृत्पदं द्वात्रिंशत्...
 तस्य मध्ये स्थितो आनुः ध्या.वि.२६
 अष्टपादं शुभं हंसं त्रिसूत्रमणुमव्ययं,
 द्विधर्मोन्धं, सर्वं पश्यन्.. [मैत्रा.६।३५ +मंत्रिको.१
 अष्टप्रकृति रूपाऽष्टधाकुण्डलीकृता
 कुण्डलिनी शक्तिर्भवति सां.स्यो.१।४।५
 अष्टप्रकृतिरूपासाचाष्टधाकुण्डलीकृता त्रि.वा.२।६३
 अष्टमे अक्षरमन्त्रस्यात्परं निर्वाणसूचकं योगत.१६
 अष्टमे धामनिर्वाणभवमागस्त्यंवागर्थ-
 कलापर्य...प्रभाकरी विद्येयं त्रि.ता.१।१३

अष्टमेन तु पिण्डेन वाचं पुष्यति.. पिण्डो.७
 अष्टमेऽनुद्धयाऽभ्यवस्यते निरुक्तो.१।४
 अष्टमेमासे सर्वलक्षगसम्पूर्णोभवति गर्भो.३
 अष्टमो मृदङ्गनादः (जपसिद्धौ) हंसो.७
 अष्टमो वज्रमानो भवति ना.पू.ता.१।१
 अष्टमो (यदु) य उद्रीयः छां.उ.१।१।३
 अष्टगत्रलयेनापि..क्षुत्पिपासादिभावैः- अमन.१।५८
 अष्टम्यां व्रजते रुद्रं पशूनांचपति.. नादवि.१५
 अष्टवक्त्रं तु रुद्राक्षमष्टमात्राविदेवतं रु.जा.१२
 अष्टवर्षा भवेत्कन्या नववर्षा तु
 रोहिणी...अत ऊर्ध्वं रजस्वला इतिहा.६६
 अष्टवसत्रो नारायणः ना.पू.ता.५।६
 अष्टविधमाख्यातं योगिनां बलम् आयुर्वे.१३
 अष्टश्राद्धान्यष्टदिनेपुत्राएकदिनेवा.. ना.प.४।३९
 अष्टसिद्धयोनवनिधयो..पुरुषोत्तमात् सि.वि.२
 अष्टाक्षरसमायुक्तं.. यत्तत्तत्पुरुषं.. पं.म.९
 अष्टाक्षरमष्टमूर्ति भवति ना.पू.१।१
 अष्टाक्षरमष्टपत्रं चक्रं भवति वृ.पू.५।४
 अष्टाक्षरं इ वा एकं गायत्र्यै पदम्
 एतदु हेवास्याः.. (हास्याः)
 [वृह.५।१४।१,२,३+ गायत्र्यु.१
 अष्टाक्षरःप्रथमःपादोभवति, अष्टा-
 क्षराख्यः पादा भवन्ति नृ.पू.२।२
 अष्टाक्षरा वै गायत्री नृ.पू.५।४
 (?) अष्टाक्षराख्यः पादा भवन्ति नृ.पू.२।२
 अष्टाचक्रानवद्वारा, देवानांपूरयोध्या अरुणो.१
 अष्टाचत्वारिंशदक्षरा जगती जागतं
 तृतीयसबन्तं, तदस्यादित्याः.. छां.उ.३।१६।५
 अष्टादशदिनान्ते च... गरिमाख्यां
 लभेत् सिद्धिं अमन.१।६६
 अष्टादशब्रह्मांडानि जायन्तेपुरुषोत्तमात् सि.वि.२
 अष्टादशसहस्रे द्वे क्षियो जायन्ते
 पुरुषोत्तमात् सि.वि.२
 अष्टादशसु मर्मस्थानेषु क्रमाद्वारणं
 प्रत्याहारः शां.स्यो.१।८।१
 अष्टादशामीकथिताहस्ताःशङ्खादिभिः रा.पू.१।९
 अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्मेषु
 अष्टाविधानां कुलीदन्तैःपरिहृतापविः मुंड.१।२।७
 (अथ) अष्टादशपत्रं चक्रं भवति वृ.पू.५।४

अष्टावष्टसहस्रे द्वे शताधिक्यः क्षियः.. कृष्णो. १३
 अष्टाविंशत्यहंयस्यलयः.. वक्षित्वसिद्धिः अमन. १।७१
 अष्टांगं च चतुष्पादं त्रिस्थानं ध्या. वि. १३
 अष्टोत्तरशतैर्मातामुपवीतं प्रकल्पयेत् रु. जा. १७
 अष्टोत्तरं सन्धिगतमष्टाकपालं क्षिरः
 सम्पद्यते निरुक्तो. २।१
 अष्टौ प्रहा अष्टावतिप्रहाः बृह. ३।२।१
 अष्टौ प्रकृतयः षोडश विकाराः शरीरे
 तस्यैव देहिनः गर्भो. ३
 अष्टौ ब्राह्मणान् प्राहयित्वा
 [अह्यु. ३+विष्णुह. ३।१+ गायत्री. ३।११
 अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्प्राहयित्वा गणप. फ. श्रु.
 अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्प्राहयेन्मेधावी.. इतिहा. २८
 अष्टौ मासानेकाकी यतिश्चरे-
 द्वावेव वा विचरेत् आरुणि. ४
 अष्टौ लोका अष्टौ देवा अष्टौ पुरुषाः बृह. ३।१।२६
 अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशावि-
 त्यास्तएकत्रिंशत्, इन्द्रश्चैव प्रजाप-
 तिश्च त्रयस्त्रिंशदिति (देवाः) बृह. ३।१।२
 असक्तुष्माग्निनादग्धं जगत्तद्भस्मसात्कृतं बृ. जा. २।११
 (?) असक्तुष्मावर्तीनि भूतानि भवन्ति छां. उ. ५।१०।८
 (?) असक्तुद्दिहावर्तनं दृश्यते मैत्रा. १।८
 असक्तुद्दिहातो ह्येवैष ब्रह्मलोकः (मा. पा.) छां. उ. ८।४।२
 असक्तबुद्धिः सर्वत्र म. गी. १८।४९
 असक्तं तेषु कर्मसु भ. गी. ९।९
 असक्तं निर्मलचित्तं युक्तं संसार्य विस्फुटं अ. पू. १।५६
 असक्तं सर्वभूतैव भ. गी. १३।१५
 असक्तः स विशिष्यते भ. गी. ३।७
 असक्तिरनभिषङ्गः भ. गी. १३।१०
 असक्तो ह्याचरन् कर्म भ. गी. ३।१९
 असङ्कल्पनमात्रैकसाध्ये सकलसिद्धिदे
 असंकल्पातिसाम्राज्ये तिष्ठ.. महो. ४।९८
 असङ्कल्पनशब्देण.. ब्रह्मसंपद्यते तदा महो. ४।९९
 असङ्कल्पेन सकलाश्चेष्टाः... श्रेयः
 सम्पादयन्ति.. अ. पू. २।७
 असङ्ख्यशीर्षमसंख्यपादमनन्तकरं ग. शो. ४।७
 असङ्ख्याकानन्दसमुद्रं.. अलंकृतं सि. सा. ५।१
 असङ्ख्यपाताः पुराजाता जायन्तेऽद्यापि
 चाभितः। उत्पत्स्यन्तेऽपि (जीवाः) महो. ५।१३६

असङ्गतासदानास्तिकिमुत्तावरणच्युतिः अ. शां. ९७
 असङ्गत्वादविकारित्वादसत्त्वान् नृसिंहो. ८।३
 असङ्गमगुणमविक्रियमव्यपदेश्यम् नृसिंहो. ९।९
 असङ्गमरसमगन्धमचक्षुष्कम् बृह. ३।८।८
 असङ्गव्यवहारत्वात्.. वासनानप्रवर्तते मुक्तिको. २।२८
 असङ्गशब्देण दृढेन छित्त्वा भ. गी. १५।३
 असङ्गो नहि सज्जते बृह. ३।९।२६+
 [४।२।४+४।४।२२+ ४।५।१५
 असङ्गोऽहमनङ्गोऽहमलिङ्गोऽहमहंहरिः अ. ग्या. त्मो. ६८
 असङ्गोऽयमात्माऽतोयुयमेव स्वप्रकाशाः नृसिंहो. ९।८
 असङ्गोऽयं पुरुष इत्येवमेवैतत् [बृ. उ. ४।३।१५।१६
 असच्च सच्च चिन्मात्रमाद्यन्तं चिन्मयं.. ते. वि. २।३०
 असज्जजान सत आश्रयभूव चिन्त्यु. १४।४
 असज्जागरिते दृष्ट्वा स्वप्ने पश्यति तन्मयः अ. शां. ३९
 असतां च प्रतिग्रहं स्वाहा प्रा. हो. १।९
 असतो मायया जन्मतत्त्वतो नैव युज्यते अद्वैतो. २८
 असतो मा सद्गमय [बृ. उ. १।३।२८+ अह्यु. २
 असत्कल्पो विकल्पो यं विश्वमित्येकवस्तुनि अ. ग्या. त्मो. २२
 असत्कृतमवज्ञातं भ. गी. १७।२२
 असत्कृत्यपरित्यागो ह्युपायान्तरवर्जनम् भवसं. ५।१९
 असत्यस्वयं विभवेत्सत्यत्वं न घटिष्यति ते. वि. ५।२२
 असत्यस्त्वेन भानंतु संसारस्य निवर्तकम् २ आत्मी. ८।५
 असत्यमप्रतिष्ठं ते भ. गी. १६।८
 असत्यस्मिन् परानन्दे स्वात्मभूतेऽस्मि-
 लात्मनि। को जीवति नरो जन्तुः.. कठरु. २७
 असत्यस्य कुतो जनिः, अजातस्य कुतो.. अ. ग्या. त्मो. ५८
 असत्यं बुद्धिरूपकं, अहङ्कारमसद्गीति ते. वि. ३।४८
 असत्यं हि मनोरूपमसत्यं.. ते. वि. ३।४८
 असत्त्वमरजस्कमतमस्कममायम् नृसिंहो. ९।९
 [नरक इति च] असत्संसारविषयजन-
 संसर्ग एव नरकः निराहो. २०
 असत्स्वप्ने पिष्ट्वा च प्रतिबुद्धो न पश्यति अ. शां. ३९
 असदित्युच्यते पार्थ भ. गी. १७।२८
 असदेतदिति ज्ञात्वा मातृभारं निवेशय महो. ५।१६६
 असदेव गुणं सर्वं सन्मात्रमह... ते. वि. ३।५९
 असदेव भवोद्भवम्, असदेव गुणं.. ते. वि. ३।५८
 असदेवमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयं छां. दो. ६. २।१
 असदेव तदा सर्वमसदेव..... ते. वि. ३।५८
 असदेवैवमग्र आसीत् [छान्दो. ३।१९।१ + ३।२।१

असदेवेदमित्यन्तं निश्चित्यास्थां परित्यज महो. ६।३४
 असद्व्रक्षेति वेद चेत्, अस्ति ब्रह्मेति... तैत्ति. २।६
 असद्रूपो यया स्वप्न उत्तरक्षणवाधितः यो. शि. ४।१०
 असद्वा इदमप्र आसीत् [तैत्ति. २।७+ सुबालो. ३।१
 असमेव स भवति, असद्व्रक्षेति.. तैत्ति. २।६
 असमानयितव्यमनिन्द्रियं... नृसिंहो. ९।९
 असमीक्ष्य प्रवर्तितानि स्तूयन्ते २ प्रणवो. १९
 असम्प्रज्ञातनामाऽयं समाधि-
 योगिनां प्रियः मुक्तिको. २।५४
 असम्बन्धात्तथा ह्यस्य प्रामोऽपि
 विपिनोपमः अ. पू. १।३३
 असम्बन्धो विषाणवत् अ. शां. १६
 असम्बाधानुरगायवतोऽभिसिद्धयति छान्दो. ७।१२।२
 असम्भूतः स मर्त्येषु भ. गी. १०।३
 असङ्गः [अशक्यः] सोऽन्यथा द्रष्टुं मन्त्रिको. ३
 असंयतात्मना योगः भ. गी. ६।३६
 असंविस्पन्दमात्रेणयाति
 चित्तमचित्तात् अ. पू. ५।४३
 असंवृतमनन्तरमबाह्यं [ब्रह्म] सुबालो. ३।२
 असंवेदनमशान्तमात्मवेदनमाततं महो. ५।४७
 असंवेदनरूपा च षष्ठीभवति भूमिका अ. पू. ५।८४
 असंवेदनरूपा तु षष्ठी तुर्यपदाभिधा अ. पू. ५।८८
 असंशयवतां मुक्तिः संशया-
 विष्टचेतसां, न मुक्तिर्जन्मजन्मान्ते.. मैत्रे. २।१६
 असंशयं महाबाहो भ. गी. ६।२५
 असंशयं समग्रं मां भ. गी. ७।१
 असंसक्तिः पञ्चमी (भूमिका) वराहो. ४।१
 असंसर्गाभिधामन्यांतृतीयायोगभूमिकां अक्षुप. १८
 असंसिद्धस्तु रक्तशरीरसंयुक्तोभवति सामर. १००
 असंस्कृताध्वगालोके मनस्यन्यत्र
 संस्थिते... तच्चिद्ब्रह्मास्मि सर्वगम् अ. पू. ५।२२
 असंस्पृश्यमचक्षुषाम् जा. द. १।४
 असा आत्माऽन्तर्बहिश्च मैत्रा. ५।२
 असाधुनैतमुपागादित्येव तदाहुः छान्दो. २।१।२
 असांनैतमुपागादित्यसाधुनैत-
 मुपागादिति छां. उ. २।१।२
 असावदो मा प्रापदिति बृह. ५।१४।७
 असावन्तर्गतः सुराणाम् योऽहंवित्त मैत्रा. ६।३५
 असावप्राणाख्यः प्राणसंस्पर्शो नोज्ज्वलति मैत्रा. ६।२६

असावभिध्यातामोमित्यनेनोर्ध्व-
 मुत्क्रान्तः स्वातंत्र्यं लभते मैत्रा. ६।२२
 असावस्मै कामो मा ससृद्धीति वा बृह. ५।१४।७
 असावात्माऽन्तर्बहिश्चान्तर्बहिश्च मैत्रा. ५।५
 असावात्माऽमुमात्मानमस्मा आत्मने
 सम्प्रयच्छति १ ऐत. ३।७।३
 असावादित्य उद्गीथः, एष प्रणवः... मैत्रा. ६।४
 असावादित्यो ब्रह्म सूर्यो. ५
 असावादित्यो ब्रह्मेत्यजपयोपहितं
 हंसः सोऽहम् महावा. २
 असाविति त्रिरस्य मूर्धानमभिजिघ्रेत् कौ. उ. २।११
 असाविति नामास्य गृह्णाति [कौ. उ. २।११, ११, ११
 असावित्यथास्य दक्षिणे कर्णे जपति कौ. उ. २।११
 (?) असावृद्धीतिरन्यथः कौ. उ. १।७
 असिक्न्या (क्रिया) मरुद्वृधे वित्त-
 स्तयाजीकीये... महाना. ५।२१
 असिताङ्गोरुश्चन्द्रक्रोधोन्मत्तकपालि-
 भीषणसंहाराः सूर्यता. ५।१
 असितो देवलो व्यासः भ. गी. १०।१३
 असितो न व्यथते, न रिष्यति बृह. ३।९।२६
 [४।२।४+४।४।२२+ ४।५।१५
 असुखदुःखोऽद्वयः परमात्मा नृसिंहो. ९।७
 असुप्तः सुप्तानभिचाकशीति बृ. उ. ४।३।११
 असुराणां ह्येषोपनिषत्प्रेतस्य शरीरं
 भिक्षयावसनेनालङ्कारेणेतिसंस्कुर्वन्ति छान्दो. ८।८।५
 असुरान्यह उन्नीथेनात्ययामेति बृ. उ. १।३।१
 असुरामेवाप्येति योऽसुरामेवास्तमेति सुबालो. ९।१२
 (?) असुरिति वा अहमेतमुपासे
 [बृ. उ. २।१।१०+ कौ. उ. ४।१२
 असुरोऽहं, सुरोऽहं, उच्चाररहितोऽहं अद्वै. भा. १
 असुर्यानामतैलोकाअन्धेनतमसावृताः ईशा. ३
 असूयकायानृजवे शठाय मा मा भूया
 वीर्यवतीयथास्याम् [शाटयाय. ३३+ मुक्तिको. १।५१
 अस्तृगाज्जनं कर्मप्रतोदः छाग. ६।२
 असौवाआदित्यउद्गीथः [छां. उ. १।२।१ + मैत्रा. ६।४
 असौ किं वृश्चिकैर्दष्टो देहान्ते
 वा कथं सुखी यो. शि. १।३३
 असौ खलु वावैष आदित्यः सहवै. १७
 असौ खल्व्वादित्यो ब्रह्म शौनको. ४।३

असौ गौरसावम्भः	बृ. उ. ३।४।२	अस्तमित आदित्ये याज्ञवल्क्य	
असौ चन्द्रस्तथावानेव प्राणस्तावत्य...	छान्दो. १।५।१३	चन्द्रमस्यस्तमितेशांतेऽमौ..	
असौ च सक्थ्यो दक्षिणा		किञ्जयोतिरेवायं पुरुषः	बृह. ४।३।६
चोषीची च पार्श्वे (अर्कस्य)	बृह. १।२।३	अस्तं यन्निधनमेतद्ब्रह्मादित्ये प्रोतं	छां. उ. २।१४।१
असौ चासौ चेर्मौ	बृ. उ. १।२।३	अस्ति स्वत्वन्योऽपरो भूतात्मा	मैत्रा. ३।२
असौ नामायमिदं रूपः (आत्मा)	बृह. १।४।७	अस्ति चेच्छ्वालङ्कारवत्कर्मा-	
असौ नामायमिदं रूपं.. [मा. पा.]	बृ. उ. १।४।७	चारविद्यादूरः	सं. सो. २।५९
असौ मया इतः सत्रुः	म. गी. १६।१४	अस्ति चेदस्ति धारूपं ब्रह्मैवास्तित्व-	
असौ यस्ताम्रो अहण एत यधुः...	नीलक. १।९	लक्षणम्... पश्यन्नपि सदा नैव	
असौ योऽपक्षीयति	सू. ता. १।२	.. स्वात्मनः पृथक्	बराहो. २।२६
असौ यो वसुषेति नीलमीवो विलोहितः	सू. ता. १।४	अस्ति तालक्षणा सत्ता, सत्ता ब्रह्म..	पा. ब्र. ४९
असौ योऽस्तमेति	सूर्यता. १।२	अस्ति नास्तीति कर्तव्यतानूपचारः	भावनो. ७
असौ वाऽऽदित्य उद्गीथः (मा. पा.)	छां. उ. १।५।१	अस्ति नास्त्यस्ति नास्तीति नास्ति	
असौ वा आदित्य इन्द्रः सैषो-		नास्तीति वा पुनः। चलस्थिरोभया-	
ऽमिस्तस्येमा इष्टकाः...	मैत्रा. ६।३३	भावैरावृणोत्येव बालिशः	अ. शां. ८३
असौ वा आदित्य उद्गीथः		अस्ति ब्रह्मेति चेद्देव परोक्षज्ञानमेव	
एष प्रणव ओमिति...	छान्दो. १।५।१	तत्। अहं ब्रह्मेति चेद्देव साक्षात्कारः...	बराहो. २।४१
असौ वा आदित्यः पिङ्गलः	छान्दो. ८।६।१	अस्ति ब्रह्मेति ब्रह्मविद्याविदब्रवीत्	मैत्रा. ४।४
(?) असौ वा आदित्यः सविता	मैत्रा. ६।७	अस्ति ब्रह्मेति चेद्देव सन्तमेनंततोत्रिदुः	तैत्ति. २।६।१
? असौ वा आदित्यो देवमधु	छान्दो. ३।१।१	अस्ति भगव आकाशाद्भूयः	छांदो. ७।१२।२
असौ वा आदित्यो बहिरात्माऽन्त-		अस्ति भगव आशाया भूयः	छांदो. ७।१४।२
रात्मा प्राणो बहिरात्मा		अस्ति भगवश्चित्ताद्भूय इति, चित्ताद्वाव	
गत्यान्तरात्मनाऽनुमीयते गतिः...	मैत्रा. ६।१	भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीतु	छां. उ. ७।५।२
असौ वाव लोको गौतमाग्निः	छान्दो. ५।४।१	अस्ति भगवस्तेजसो भूयः..	छान्दो. ७।११।२
असौ वैलोकोऽग्निर्गौतम तस्यादित्य		अस्ति भगवः सङ्कल्पाद्भूय इति, सङ्कल्पा-	
एव समित्, रश्मयो धूमः	बृह. ६।२।९	द्वाव भूयोऽस्तीतितन्मे भगवान्..	छान्दो. ७।४।३
असौ स्वपुत्र-मित्र-कलत्र-बन्धवा-		अस्ति भगवः स्मराद्भूय इति, स्मरा-	
दीन्लिखां यज्ञोपवीतं...		द्वाव भूयोऽस्तीतितन्मे भगवान्..	छान्दो. ७।१३।२
सर्वकर्माणि... हित्वा	प. हं. २	अस्ति भगवोऽद्भयो भूयः..	छान्दो. ७।१०।२
असौ हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा		अस्ति भगवो ध्यानाद्भूय इति, ध्याना-	
सन्सर्वमस्ति	नृसिंहो. ४।२	द्वाव भूयोऽस्तीतितन्मे भगवान्..	छान्दो. ७।६।२
अस्तङ्गतायां क्षीणायामस्यां		अस्ति भगवो नाम्नो भूय इति..	छान्दो. ७।१।५
(मायायां) ज्ञास्यसि...	महो. ५।११५	अस्ति भगवोऽन्नाद्भूय इति, अन्नाद्वाव..	छान्दो. ७।९।२
अस्तमित आदित्ये कथं वा-		अस्ति भगवो बलाद्भूय इति बलाद्वाव..	छान्दो. ७।८।२
ऽस्योपस्पर्शनमिति	कठश्रु. ९, १०	अस्ति भगवो मनसो भूय इति, मनसो	
अस्तमित आदित्ये याज्ञवल्क्य		वाव भूयोऽस्तीतितन्मे भगवान्..	छान्दो. ७।३।२
किञ्जयोतिरेवायं पुरुषः	बृह. ४।३।३	अस्ति भगवो वाचो भूय इति..	छान्दो. ७।२।२
अस्तमित आदित्ये याज्ञवल्क्य		अस्ति भगवो विज्ञानाद्भूय इति, विज्ञा-	
चन्द्रमस्यस्तमिते.. किञ्जयोति..	बृह. ४।३।५	नाद्वाव भूयोऽस्तीतितन्मे.. ब्रवीतु	छान्दो. ७।७।२

अस्ति वस्तु तथोच्यते
 अस्ति वस्तुत्ववादिनाम्
 [?] अस्ति हिरण्यस्योपासंगोऽम्भीनां
 अस्तीति प्रत्ययो यश्च यश्च नास्तीति
 वस्तुनि, बुद्धेरेव गुणावेतौ न तु
 नित्यस्य वस्तुनः
 २ आत्मो. २८
 अस्तीति वृत्तोऽन्यत्र कथं तदुपलभ्यते
 कठो. ६।१२
 अस्तीत्युक्तेऽगत्सर्व सद्रसंमत्तमवेत्
 बराहो. २।७१
 अस्तीत्येके नायमस्तीति चैके
 कठो. १।२०
 अस्तीत्येव प्राणानां निश्चयेयसादानं
 कौ. ३.३।२
 अस्तीत्येवोपलब्धस्य तत्त्वभावः
 प्रसीदति
 कठो. ६।१३
 अस्तीत्येवोपलब्धव्यस्तत्त्वभावेन..
 कठो. ६।१३
 अस्तेयं नाम मनोवाक्यायकर्मभिः
 परब्रह्मेषु निःस्पृहता
 शां. त्यो. १।१।३
 अस्त्यनस्तमितो भास्वानजो देवो...
 महो. ४।५६
 अस्ति त्रिशूलमरुस्त्रिंशाल..
 लांगूलो. ७
 अस्थिचर्मनाडीरोममांसाश्चेति
 पृथिव्यंशाः
 शारीरको. ३
 [?] अस्थिचर्मस्नायुमज्जामांससंघाते..
 मैत्रा. १।२
 अस्थि प्रतिहारः
 छान्दो. २।१९।१
 अस्थिमिश्रितं मांसेनानुलिप्तं चर्मणाव-
 बद्धं (शरीरं)
 मैत्रे. १।३
 अस्थिभ्यः पर्वताः, लोमभ्य ओषधि-
 वनस्पतयः.. ललाटादुद्रो जायते
 सुबालो. २।१
 अस्थिभ्यो मज्जा मज्जातः शुक्रम
 निरुक्तो. १।२
 [रेतः] [गर्भो. २+
 पिण्डो. ५
 अस्थिमज्जा प्रजायते
 भवसं. १।२६
 अस्थिराः सर्व एवेमे [महो. ३।४+
 अस्थिस्थूणस्नायुबद्धं.. चर्मावनद्धं दुर्ग-
 न्धिपूर्णं मूत्रपुरीषयोः (शरीरं)
 ना. प. ३।४६
 अस्थिस्नाय्वादिरूपोऽयं शरीरं भाति..
 कठरु. २०
 अस्थीनि चहवै त्रीणिशतानि षष्टिश्च
 गर्भो. ११
 अस्थीन्यन्तरतोदारुणि.. मज्जोपमा..
 बृह. ३।९।३०
 अस्थीन्युपग्रहा असृगाजनम्
 छाग. ६।२
 अस्थूकमनःवनल्पमपारं (ब्रह्म)
 सुबालो. ३।२
 अस्थूकमनःवनल्पमपारं (ब्रह्म)
 मस्नेह-मच्छाय-मतमो-ऽवायवना-
 काश-मसङ्ग-मरस-मगन्ध-मचक्षु-

एक-मश्रोत्रमवागमनो-स्तेजस्क-
 मप्राण-ममुख-ममात्र-मनन्तर-
 मबाह्यं (अक्षरब्रह्म)
 बृह. ३।८।८
 अस्थूकमनःवनल्पमपारं (ब्रह्म)
 यो. शि. ३।१९
 अस्थूकोऽस्थूकोऽस्थूकः (गणेशः)
 ग. शो. २।३
 अस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्
 ईशा. ८
 अस्नेह-मच्छाय-मतमो-ऽवायवनाकाशं
 बृ. उ. ३।८।८
 अस्पन्दमानं विज्ञानमनाभासमजं यथा
 अ. शां. ४८
 अस्पन्दमानं विज्ञानमनाभासमजं तथा
 अ. शां. ४८
 अस्पर्शमरूपमरसम् [नृसिंहो. ९।९+
 सुबालो. ३।१
 अस्पर्शयोगो वै नाम दुर्दर्श... योगिनां
 अद्वै. ३९
 अस्पर्शयोगो वै नाम सर्वसत्त्वसुखो..
 अ. शां. २
 अस्पृष्टाऽदृष्टाऽवक्ताऽघाता (आत्मा)
 मैत्रा. ५।१९
 अस्पृष्टान्धैरसोऽवयजनमसिस्वाहा
 महाना. ७।१४
 अस्मदादीनां जन्म तदधीनं
 राधोप. ३।३
 अस्मभ्यं च सौभगमायजस्व
 महाना.
 अस्मा इमामुपसन्नाय सम्यक्परीक्ष्य
 दद्याद्वैष्णवीमात्मनिष्ठां
 शाङ्खाय. ३४
 अस्माकमेवायं महिमा
 केनो. ३।१
 अस्माकं तु विशिष्टा ये
 भ. गी. १।७
 अस्माकं बोध्यविता तनूनां
 [अकसं. ३।८।१९ = मं. ५।४।९
 महाना. ६।१६
 अस्माकं भूत्वाविता तनूनाम्
 अरुणो. १
 अस्माच्छरीरात्समुत्थाय परंज्योति-
 रूपसम्पद्य
 मैत्रा. २।२
 (?) अस्माच्छरीरादात्मनः
 बृह. ४।२।३
 (?) अस्माच्छरीरादुत्क्रामति
 छां. उ. ८।६।५
 अस्मात्पदार्थनिचयात्.. माकिञ्चित्तत्र
 अ. पू. ५।१०६
 (एवं) अस्मात्सर्वस्मात् पुरतः
 सुविभातमेकरसमेव
 नृसिंहो. २।३
 अस्मात्सर्वस्मात् प्रियतमः
 नृसिंहो. २।३
 अस्मात् स्यन्दते सिन्धवः सर्वरूपाः
 [मुं. उ. २।१।९ + महाना. ८।३
 अस्माद्धयेवात्मनो यद्यत्कामयते
 तत्तत्सृजते
 बृह. १।४।१५
 अस्मान्नातः परं किञ्चित् योवै वेद..
 ग. शो. ३।१
 अस्मान्मायी सृजते विश्वमेतत्त-
 स्मिन्श्चान्यो मायया सन्निरुद्धः
 श्वेता. ४।९
 अस्माभिरनुप्रतिचक्ष्याभूदोतेयन्ति
 ये अपरीषु पश्यान्
 चिन्त्यु. १८।१

अस्माभिर्दत्तं जरसः परस्तात्... सहवै. ९
 अस्माद्धोकात्प्रेत्य एतमन्नमयमात्मानं
 [तैत्ति. २।८।१+ ३।१०।५
 अस्मिन्ञ्चरीरे किं कामोपभोगैः मैत्रा. १।४
 अस्मिन्कामाः समाहिताः छान्दो. ८।१।५
 अस्मिन्क्षेत्रे सञ्चरत्येष देवः श्वेताश्व. ५।३
 अस्मिन्नाकाक्षेत्रेनोवासुपर्णोवा वि-
 परिपत्य भ्रान्तःसंहृत्य पक्षीसंहृत्य वृ.उ. ४।३।१९
 अस्मिन्जीता इमाःप्रजाः एषआत्मा... मैत्रा. ७।७
 अस्मिन्पञ्चात्मके शरीरे तत्र यत्कठिनं
 सा पृथिवी, यद्द्वयं ता आपः गर्भो. १
 (अथ) अस्मिन्प्राणएकैकधाभवति कौ.उ. ४।१९
 (अथ) अस्मिन्प्राण एवैकधा भवति कौ.उ. ३।३
 अस्मिन्प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितं छां.उ. ७।१५।१
 अस्मिन्ब्रह्मपुरेवेहम दहरंयदिदंमुने,
 पुण्डरीकं तु तन्मध्ये पञ्चब्र. ३४
 अस्मिन् रणसमुद्यमे भ.गी.३.४०
 अस्मिन्नुसिहसर्वमयंसर्वात्मानंहिसर्वं नृसिंहो. ८।१
 अस्मिन्सहस्रं पुष्यासमेधमानः स्वेगृहे वृ.उ. ६।४।२४
 अस्मिन्संसारे किं कामोपभोगैः मैत्रा. १।८
 अस्मिन्संसारे भगवंस्त्वं नो गतिः मैत्रा. १।८
 अस्मिन्हीमे प्राणाः प्रतिष्ठिताः छां.उ. ३।१२।३
 अस्मिन्श्चात्मनिजगत् प्रत्यस्तंयाति मैत्रा. ६।१७
 अस्मिन्श्च लोकेऽमुष्मिन्श्च य एतमेवं
 विद्वानुपास्ते [छान्दो. ४।११।२+ १२।२, १३।२
 अस्मिन्श्च सर्वस्मिन्नेषाऽन्तर्हितेति
 तस्मादेषोपासीत मैत्रा. ६।६
 अस्मिन्श्चेदिदं ब्रह्मपुरे सर्वं समाहितं
 किं वा ततोऽतिशिष्यते छान्दो. ८।१।४
 अस्मीति शब्दविद्भोऽयं समाधिः
 सविकल्पकः सरस्व. ५२
 अस्मीत्यैक्यपरामर्शः (शान्ति) तेन
 ब्रह्म भवाम्यहम् शुकर. ४।४
 अस्मेदीद्विहि सुमना अद्देळ्ळर्म ते
 स्वयम् त्रिवलय उद्गौ सहवै. ७
 अस्मै प्रयन्धि मघवन्नृजीविन्निति
 अस्मै सम्प्रयच्छति वाचं मे त्वयि कौ.उ. २।११
 दधामीति यिता कौ.उ. २।१५

(१) अस्य कर्ता प्रधानः मैत्रा. ६।१०
 अस्यकुलेवीरोजायतेप्रतिपद्यतेस्वर्ग... छान्दो. ३।११।६
 अस्य को विधिर्भूतात्मनः...येनेदं. मैत्रा. ४।१
 अस्य चन्द्रस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।७
 अस्यतामसोऽशोऽसौसः...योऽयंरुद्रः मैत्रा. ५।२
 अस्यत्रिपुण्ड्रधारणस्यत्रिधारेस्वाभवति का.उ. ४
 अथ त्रैलोक्यवृक्षस्य भूमौ विटप-
 शाखिनः । अग्रं मध्यं तथा मूलं
 विष्णुब्रह्ममहेश्वराः । रुद्रह. १४
 (अथ) अस्य (पुत्रस्य) दक्षिणं कर्णम-
 भिनिधाय वाग्वागितित्रिः(जपेत्) वृ.उ. ६।४।२९
 अस्य देहत्यागेच्छा यदा भवति तदा
 वैकुण्ठपार्षदाः सर्वे समायान्ति त्रि.म.ना. ९।५
 अस्य द्रष्टा गुणातीतो नित्यो
 ह्येष चिदात्मकः यो.शि. ४।१२
 अस्य धर्मस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।११
 अस्य नाम करोति वेदोऽसीति वृ.उ. ६।४।२६
 अस्य पद्भ्यां पृथिवी एष सर्वः.. मुंड. २।१।४
 अस्य पादाश्चत्वारोदेवाश्चत्वारोवेदाः अ.शिखो. १
 (अथ) अस्यपुरुषस्यचत्वारिस्थानानि
 भवन्ति नाभिर्हृदयं कण्ठं मूर्ध्नाच ब्रह्मो. २
 अस्य पुरुषस्य तस्य बाष्पा सृष्टौ
 पृथिवी चाग्निश्च श्वेत. १।७।१
 अस्य पृथिवी शरीरं, अःपृथिवीमन्तरे
 सञ्चरन्पृथिवी न वेद अध्यात्मो. १
 अस्य (कृष्णस्य) प्रकृतिः पराचीना राधिको. ३
 अस्य प्रतोद्रोऽनेन खल्वीरितं परिभ्रम-
 तीदं शरीरं चक्रमिव मैत्रा. २।९
 (अथ) अस्य प्रतीची दिक्पुच्छं बृह. १।१।३
 अस्य बीजं तमःपिण्डं मोहरूपं जडं
 घनं, वर्तते कण्ठमाश्रित्य त्रि.मा. २।८
 अस्य ब्रह्माण्डस्य समन्ततः स्थिता-
 न्येतादृशान्यनन्तकोटिब्रह्माण्डानि त्रि.म.ना. ६।२
 अस्य (अन्नमयकोशस्य) मध्येऽस्तिहृदयं त्रि.मा. २।७
 अस्य एतस्य महतो भूतस्य विदधसि-
 तमेतद्यद्वेदो यजुर्वेदः वृ.उ. २।४।१०
 [+ ४।५।११+ मैत्रा. ६।३२
 अस्य ब्रह्माण्डस्य कचित्कचिदीश्वर-
 आध्यात्मकारो भवति त्रि.म.ना. २।५

अस्यमातरमभिमन्यते इलाऽसि मैत्रा-
 वरुणी वीरे वीरमजीजनत् बृह. ६।४।२८
 अस्य मात्रा अकारो ब्रह्मरूप उकारो
 विष्णुरूपो मकारः कालकाल
 अकारो लिङ्गम् सदानं. ९
 अस्य मानुष्यस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।१३
 अस्य यज्ञपरिवृता आहुतीर्होमयति प्रा.हो. २।३
 अस्य यदेकां शाखां जीवो जहाति छांदो. ६।११२
 (?) अस्य राजछांशोऽसौ सः... योऽयं ब्रह्मा मैत्रा. ५।२
 अस्य वायोः सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।४
 अस्य विस्रंसमानस्य शरीरस्थस्य
 देहिनः... किमत्र परिशिष्यते कठो. ५।४
 अस्य व्यञ्जिका नित्यनिवृत्ताऽपि
 मूढैरात्मेव दृष्टाऽस्य सत्त्वमसत्त्वं
 च दर्शयति नृसिंहो. ९।२
 अस्य शारीरयज्ञस्य यूपरशनाशोभित-
 स्यात्मा यजमानः प्रा.हो. ४।१
 अस्य सत्यस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।१२
 अस्य संसारवृक्षस्य मनो मूलमिदं
 स्थितम् । सङ्करूप एव तन्मन्ये
 सङ्करूपोपशमेन तत् । शोषयाशु.. मुक्तिको. २।३७
 (?) अस्य सात्त्विकांशोऽसौ सः
 योऽयं विष्णुः मैत्रा. ५।२
 अस्य सौम्य पुरुषस्य प्रयतो वाङ्मनसि
 सम्पद्यते, मनः प्राणे, प्राणस्तेजसि छांदो. ६।८।६
 अस्य सौम्य महतो वृक्षस्य योमूढे-
 ऽभ्याहन्त्याज्जीवन् सवेत्त... छांदो. ६।१११
 अस्य स्तनयित्नोः सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।९
 अस्या मायाया अवयवैः सूक्ष्मैर्व्याप्तं
 सर्वमिदं जगत् गुह्यका. ५५
 (अथ) अस्या ऊरु विहापयति
 विजिहाद्यावापृथिवीति बृह. ६।४।२१
 (अथ) अस्या एतदेव तुरीयं दर्शतं
 पदं परो रजा य एष तपति बृह. ५।१४।३, ६
 अस्या (राधायाः) एव कायव्यूह-
 रूपा गोप्यः राधिको. ५
 अस्याकाशस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।१०
 अस्याग्नेः सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।३
 अस्यात्मनः सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।१४

अस्यादित्यस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।५
 अस्याधिष्ठानमुच्यते भ.गी. ३।४०
 अस्यामोषधयो जायन्ते (पृथिव्यां) १ ऐत. १।७।१
 (अथ) अस्यायमितर आत्मा कृतकृत्यो
 वयोगतः प्रैति २ ऐत. ४।४
 अस्यास्त्वया विशाया वीर्येण यज्ञस्य
 बरिष्ठं सन्दधाति छांदो. ४।१७।८
 अस्यां तुरीयावस्थायां स्थितिं प्राप्य-
 विनाशिनीमानन्दैकान्तशीलत्वात् अ.पू. २।१४
 अस्यांशाद्ब्रह्मो विष्णुरुद्रादयो भवन्ति राधोष. ३।३
 अस्यां (पृथ्व्यां) हीदं सर्वभूतं प्रतिष्ठितं छांदो. ३।१२।२
 अस्याः (अविद्यायाः) परं प्रपद्यन्त्याः
 स्वात्मनाशः प्रजायते महो. ४।११५
 अस्येमाश्चतस्रो दिशश्चतस्र उपदिशो
 दलसंस्थाः मैत्रा. ६।२
 अस्यैकैकरोमकूपान्तरेष्वनन्तकोटि-
 ब्रह्माण्डानि स्थावराणि च जायन्ते त्रि.म.ना. २।७
 अस्यैतदतिच्छन्दा अपहृतपाप्मा... बृ.उ. ४।३।२१
 (तद्वा) अस्यैतद्वाप्तकाममात्मकाम-
 मकामरूपं शोकान्तरं बृ.उ. ४।३।२१
 अस्यैतद्वास्वरूपं यदमुष्मिन्नादित्येतपति मैत्रा. ६।१७
 (एवं) अस्यैता हिता नाम नाड्यो-
 ऽन्तर्हृदये प्रतिष्ठिता भवन्ति बृह. ४।२।३
 अस्यै पृथिव्यै सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।१
 अस्यैवानन्दकोशेन स्तम्भान्ता विष्णु-
 पूर्वका भवन्ति सुखिनो नित्यं कठरु. ३२
 अस्यैवान्नमिदं सर्वमस्मिन्नोताः... प्रजाः मैत्रा. ७।७
 अस्यै विशुतः सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।८
 अस्यैवैतानि सर्वाणि निश्चसितानि
 [बृ.उ. २।४।१०+ ४।५।११
 अस्यैव शरीरस्य नाशमन्वेष नश्यति छांदो. ८।९।१, २
 अस्योपसन्ध्यां माच्छैत्सीत्प्रजया च
 पशुभिश्च स्वाहा बृ.उ. ६।४।२४
 अस्वरं भावयेत् परम् ब्र.विं. ७
 अस्वरेण हि भावेन भावो नाभाव इष्यते ब्र.विं. ७
 अस्वर्यैः सह स्वर्ग्यस्यैषः मैत्रा. ७।८
 अहङ्कर्तव्यमेवाप्येति योऽहङ्कर्तव्य-
 मेवास्तमेति सुबालो. ९।१२
 अहङ्कार इतीयं मे भ.गी. ७।४

अहङ्कारकलायुक्तं बुद्धिधीजसम-		अहतपाप्मानो देवाः स्वर्गलोक-	
नितम् । तत्तुर्यष्टकमित्युक्तं	महो. ५।१५३	मायन्	सहस्रै. १३।९
अहङ्कारकलात्यागे समतायाः समु-		अहतबासा नैनां वृषलो न वृष-	
द्रमे ।..तुर्यावस्थोपतिष्ठते	अ.पू. ५।१११	त्युपहन्याभिरात्राज्ज आप्त्य..	बृह. ६।४।१३
अहङ्कारक्षये तद्वदेहे कठिनता कुतः ।		अहतेन वाससा सम्प्रच्छन्नः स्वयं	
सर्वकर्ता च योगीन्द्रः	यो.शि. १।१५०	पश्येत् एत्य पुत्र उपरिष्ठाद-	
अहङ्कारमहान्मुक्तः स्वरूपमुपपद्यते	अध्यात्मो. ११	भिनिपद्यते	कौ.उ. २।१५
अहङ्कारमयीत्यक्त्वावासनांलीलयैव		अहन्तांशे क्षते शान्ते	महो. ५।७
यः ।...स जीवन्मुक्त उच्यते	महो. २।४५	अहमखिलं जगत्	देव्यु. १
अहङ्कारमसद्भीति नित्योऽहं शाश्वतो..	ते. त्रि. ३।४८	अहमग्निरहं हुतम्	भ. गी. ९।१६
सहङ्कारमेवाप्येतियोऽहङ्कारमेवास्तमेति	सुबालो. ९।१३	अहमज्ञः किञ्चिज्ज्ञोऽहमहं जीवो..	
अहङ्कारवशादापदहङ्कारादुराधयः	महो. ३।१६	संसारितीति भ्रमवासना-	
अहङ्कारवशादीहानाहङ्कारात्परोरिपुः	महो. ३।१६	बलात्संसारः	त्रि.म.ना. ५।२
अहङ्कारवशाद्यथान्मयाभुक्तं चराचरं,		अहमज्ञानजं तमः	भ. गी. १०।११
तत्तत्सर्वमवस्त्वेव	महो. ३।१७	अहमन्नमन्नमदन्तमधि	नृ. पू. २।१४
अहङ्कारविमूढात्मा	भ.गी. ३।२७	अहमन्नमन्नमदन्तमा३धि	तैत्ति. ३।१०।६
अहङ्कारवृता.केचिज्ज्ञात्वा शास्त्रसमु-		अहमन्नमहमन्नमहमन्नम्	तैत्ति. ३।१०।६
द्यम् । उपदेशं न जानन्ति..	अमन. २।३७	अहमन्नं सदाज्ञादइतिहिमन्मवेदनम्	पा. ब्र. ४३
अहङ्कारश्चाहंकर्तव्यं च चित्तं च..	प्रश्नो. ४।८	अहमन्नादो२ऽहमन्नादो३हमन्नादः	तैत्ति. ३।१०।६
अहङ्कारश्चाहंकर्तव्यं च नारायणः	सुबालो. ६।१	अहमन्य इदं चान्यदितिभ्रांतिर्यज..	महो. ६।१२
अहङ्कारसुखं वित्तभ्रातरं मोहमन्दिदम्,		अहमयमित्येवाग्र उक्त्वाऽथान्यन्नाम..	बृह. १।४।१
आशापत्नीं त्यजेद्यावत्तावन्मुक्तो..	मैत्रे. १।१२	अहमस्मि जरिता सर्वतोमुखः	बा.मं. २५
अहङ्कारं बलं दर्प [भ.गी.१६।१८	+१८।५३	अहमस्मि जरितृणामु दावा	बा. मं. ८
अहङ्कारं महति, महदव्यक्तेऽव्यक्तं		अहमस्मि परश्चास्मि ब्रह्मास्मि...	मैत्रे. ३।१
पुरुषे क्रमेण विलीयते	पैङ्गलो. ३।३	अहमस्मि प्रथमजा ऋता ३ स्य	
अहङ्कारः प्राणयोगेन घ्राणद्वारान्धगुणो		[तैत्ति. ३।१०।६+	नृ. पू. २।१४
गुदाधिष्ठितः पृथिव्यां तिष्ठति	त्रि. ब्रा. १।६	अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि [महाना. ६।७	+त्रि.म.ना. ८।३
अहङ्कारात्पञ्चतन्मात्राणि, पञ्चतन्मा-		अहमस्मि सदा सोऽस्मि नित्योऽस्मि	
त्रेभ्यः पञ्चमहाभूतानि [त्रि. ब्रा. १।१+	त्रि.म.ना. २।५	विमलोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।२
अहङ्कारादुराधयः, अहङ्कारवशादीहा	महो. ३।१६	अहमस्मीति निश्चित्य वीतशोको	
अहङ्काराभिमानेन जीवः स्याद्वि		भवेन्मुनिः [अ. पू. ४।३५+	रुद्रह. ४८
सदाशिवः	त्रि. ब्रा. २।१६	अहमस्मीत्यभिध्यायेद्धेययातीतं	
अहङ्कारोऽध्यात्मम्, अहङ्कर्तव्यमधिभूतं		विमुक्तये [अ. पू. ५।७४+	जा. द. ९।५
रुद्रस्तत्राधिदैवतम्	सुबालो. ५।८	अहमात्मा गुडाकेश	भ. गी. १०।२०
अहङ्कारोऽध्वर्युः (शारीरयज्ञस्य)	प्रा. हो. ४।१	अहमात्मा न चान्योऽस्मीत्येव-	
अहङ्कारो विनिर्णेतकलङ्कीबुद्धिः...	महो. ५।१२५	मप्रच्युता मतिः	जा. द. १।१८
अहङ्कृतिर्यदा यस्य नष्टा भवति		अहमात्मा सदाशिवः	ते. त्रि. ३।९
तस्य वै । देहस्तत्रपि भवेन्नष्टो..	यो.शि. १।३४	अहमादिर्हि देवानां	भ. गी. १०।२
		अहमानन्दविग्रहः, इन्द्रियाभावरूपोऽहं	ते. त्रि. ३।३६

अहमादिश्च मध्यं च	भ.गी.१०।२०	अहमेव सर्वस्येश इति यावद्वदति	
अहमानन्दानानन्दाः, विज्ञाना-		तावत्कूरा अजादेरन्	ग.शो. ३।६
विज्ञाने अहम्	देव्यु. १	अहमेवसुखंनान्यदन्यचेन्नैवतत्सुखम्	वराहो. २।७
(यत्)अहमायतनमस्मि त्वं		अहमेव सुखात् सुखं...	
तदायतनमसि	छांदो. ५।१।१४	आत्मनोऽन्यत्सुखं न	ते.वि.६।४५
अहमाशिरमहमिदं द-(ज)ग्यवान्	वा. मं. ८	अहमेव हरिः साक्षादहमेव शिवः..	ते.वि.६।६४
अहमित्यनुसन्दध्यात्	नृसिंहो. ४।१	अहमेव हृदाकाशश्चिदादित्यः	
अहमित्यात्मानमादाय मनसाप्रवृत्तौ-		स्वरूपवान्	ते.वि.३।२८
कीकुर्यात्	नृसिंहो. ४।१	अहमेवंविधोऽर्जुन	भ.गी.११।५४
अहमित्याह यथा यजुरेवैतत्	अन्यक्तो. ३	अहमेवाक्षयः कालः	भ.गी.१०।३३
अहमित्येकादशं स्थानं जानीयात्	नृ. पू. २।३	अहमेवाक्षरं ब्रह्म वासुदेवाख्य-	
अहमिन्नु दिशुतानो दिवे दिवे	वा. मं. १६	मद्वयम्	ना.प.३।२०
अहमिन्नु परमो जातवेदाः	वा. मं. १५	अहमेवाधस्तादहमुपरिष्ठात्	छान्दो. ७।२५।१
अहमिन्द्राग्नी अहमग्निनावुभौ	देव्यु. २	अहमेवास्मि स्मिद्धोऽस्मि	
अहमुक्थमस्मीति विद्यात्	१ ऐत. १।२।४	शुद्धोऽस्मि परमोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।२
अहमु यज्ञपतता रथेन	वा. मं. १६	अहमेवाहमेवास्मि भूमाकाश-	
अहमु ह प्रवर्ति यज्ञियामिमां	वा. मं. १३	स्वरूपवान्	ते.वि.३।१६
अहमेकः प्रथममासं वर्तामि च		अहमेवाहं मां जुहोमि [महाना.६।७ + त्रि.म.ना.८।३	
अविष्यामि च, नान्यः कश्चित्	अ. शिरः. १	अहमेवेदं सर्वमसानीति	छान्दो. ५।२।६
अहमेकादशं स्थानं जानीयाद्यो		अहमेवेदं सर्वोऽस्मीति मन्यते	
जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति	नृ. पू. २।३	सोऽस्य परमो लोकः	वृ.४.४।३।२०
अहमेकोऽस्मि यदिदं नु किञ्च	वा. मं. २५	अहमेवेदं सर्वम्	छान्दो. ७।२५।१
अहमेभिः सर्वैरात्विज्यैः पर्यैशिषं		अहमेवेदं सर्वं भूपातं भूर्भुवः स्वः..	वृ.३.६।३।६
(पर्यैशिषं-मा.पा.)	छां.उ.१।११।२	अहमेवैतत्पञ्चधाऽऽत्मानं प्रविभज्य..	प्रभो. २।३ ...
अहमेव कालः, नाहं कालः, नाहं		अहमेवैतत्पञ्चधा विभज्य..[मा. पा.]	प्रभो. २।३
कालस्य..	महाना...	अहमेषां नैकं च न वेद	छां.उ. ५।३।५
अहमेव जगद्यस्यैकः पतिः	पा. ब्र. २	अहमेषां पदार्थानामेतेचममजीवितं	महो. ६।४१
अहमेव परं धाम न द्वितीयं..	अनु. सा...	अहमो तत्सद्यत्परं ब्रह्म..	
अहमेव परं ब्रह्म, अहमेव गुरोर्गुरुः	ते. वि. ६।४४	[ग. शो. १।४ + रामो. २।४ +	श्रीवि.ता. ४।१
अहमेव परं ब्रह्म..समाधिः सतुविज्ञेयः		अहम्भावं परित्यज्यजगद्भावमनी-	
सर्ववृत्तिविवर्जितः	त्रि.ब्रा. २।१६२	दशम् ।.. भूयो नाप्यनुशोचति	सौ.ल. १७
अहमेव परं सर्वमिति पश्ये परं सुखम्	पैङ्गलो. ४।९	अहम्भावानहंभावौ त्यक्त्वा सदसती	
अहमेव परः शिवः	ते. वि. ३।३३	तथा ।..स्थितं तत्तुर्यमुच्यते	अ.पू. ५।१०
अहमेव परात्परः(शिवः)[ते.वि.३।१७ +	६।५९	अहम्भावोदयाभावो बोधस्य	
अहमेव परानन्द अहमेव परात्परः	ते.वि. ६।५९	परमावधिः ।..मर्यादोपरतेस्तु सा	अध्यात्मो. ४१
अहमेव परो विश्वाधिकः (शिवः)	भस्मजा. २।५	अहम्मेतियोभावोदेहाक्षादावनात्मनि	
अहमेव महानात्मा	ते.वि. ३।१७	अध्यासोऽयं निरस्तव्यः...	अध्यात्मो. १
अहमेव सदाशिवः	ते.वि. ६।६४		

अहम्मेति विष्णुत्रयगन्धादि-	
मोचनम्.. शुद्धशौचमिति प्रोक्तं	
मृज्जलाभ्यां तु लौकिकम्	मैत्रे. २।८
अहरहरभ्यर्च्य विश्वेश्वरं लिङ्गं	भस्मजा. २।१०
अहरहर्षाविष्णुपुरन्दराद्यमरवरसे-	
वितं...मामेवोपासितव्यम्	भस्मजा. २।९
अहरहर्ह सुतः प्रसुतो भवति	
नास्यान्नं क्षीयते	बृह. २।१।३
अहरह आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाण-	
पथाद्यान् षडुदङ्केति मासान्	छान्दो. ४।१५।५
अहरेव प्राणः रात्रिरपानः वागग्निः...	१पेत. १।५।१
अहरेव प्राणो रात्रिरेव रयिः	प्रश्नो. १।१३
अहर्हर्षाणो विदुः	भ.गी. ८।१७
अहर्वा अश्वं पुरस्तान्महिमान्वजायत	बृह. १।१।२
अहल्लिकेति होवाच याज्ञवल्क्यः	बृह. ३।९।२५
अहस्तदवलुम्पतु (पापं)	महाना. १।१।३
अहं कर्ता भोक्ता सुखी दुःखी	
काणः स्वजो बधिरोः..	ध्या. बि. ९४
अहं कर्तास्म्यहंभोक्ताऽस्म्यहंवक्ता-	
ऽभिमानवान् । एतेगुणाराजसस्य	शारीरको. ७
अहं कालत्रयातीत अहंवेदैरुपासितः	ते. बि. ३।१८
अहं कृत्स्नस्य जगतः	भ.गी. ७।६
अहं क्रतुरहं यज्ञः	भ.गी. ९।१६
अहंच (नारायणः) तस्मिन्नेवाव-	
स्थितः [तु.ती. ३+	प.हं.प. ११
अहं चरामि भुवनस्य मध्ये	बा.मं. १८
अहं छन्दसामविदं रयीणाम्	बा.मं. १४
अहं जगद्वा सकलं शून्यं व्योमसमं..	महो. ६।५८
अहं जातं जनि जनिष्यमाणं	बा. मं. २३
अहं ज्योतिरहममृतं विनद्धिः	बा. मं. २३
अहं तत्र स्थितं चक्रं भ्रामयामि	
त्वमायया	त्रि. ब्रा. २।६०
अहं त्यक्त्वाऽहमस्म्यहम्	ते. बि. ३।३
अहं त्वमस्ति नास्ति कर्तव्यम-	
कर्तव्यः...होमः	भावनो....
अहं त्वमहमहं त्वमिन्नु त्वमहं चक्ष्व	बा. मं. २३
अहं त्वष्टाऽहं प्रतिष्ठा	कठश्रु. २
अहं त्वं चैव चिन्मात्रं	ते. बि. २।३३
अहं त्वं जगदित्यादौ	महो. ४।५४

(एवमेव) अहं त्वा द्वाभ्यां	
प्रभ्राभ्यामुपोदस्थां, तौ मे ब्रूहि..	बृह. ३।८।२
अहं सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि...	भ. गी. १८।६६
अहं दक्षिणतोऽहमुत्तरतः	छांदो. ७।२५।१
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते	
सुप्राव्ये ३ यजमानायसुन्वते	ऋक्सं. ८।७।९
[मं. १०।१२५।२	देव्यु. ३
अहं दिव्या आन्तरिक्ष्यास्तुका वहम्	बा. मं. १३
अहं दिशः प्रदिश आदिशश्च	बा. मं. १७
अहं देवानामासन्नबोदः	बा. मं. ८
अहं द्यावापृथिवी आसत्तानः	बा. मं. १२
अहं न्वहिं पर्वते शिश्रियाणं	बा. मं. ९
अहं पचामि सरसः परस्य	बा. मं. १४
अहं पञ्चधा दशभा चैकधा च	बा. मं. १९
अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि	देव्यु. १
अहं पश्चादहं पुरस्तात्	छान्दो. ७।२५।१
(यत्)अहंप्रतिष्ठाऽस्मित्वंतत्प्रतिष्ठासि	छां.उ. ५।१।१३
अहं बीजप्रदः पिता	भ. गी. १४।४
'अहं ब्रह्म' इत्यादिवाक्यविचारः..	मठास्ना. ६
अहं ब्रह्म चिदाकाशं नित्यं ब्रह्म..	ते. बि. ६।७०
अहंब्रह्मचिदात्मकं, सच्चिदानंदमात्रोहं	ते. बि. ६।१०७
अहं ब्रह्म न सन्देहो अहं ब्रह्म	ते. बि. ६।१०७
(खलु) अहं ब्रह्म सूचनात्सूत्रं..	
अहमेव, विद्वान् त्रिवृत्सूत्रं त्यजेत्..	आरुणि. ३
अहं ब्रह्मस्वरूपिणी	देव्यु. १
अहं ब्रह्मास्मि [वृ.उ. १।४।१०, १०+	शु.र. २।२
[त्रि.म.ना. ७।१०+	पैङ्गलो. ३।१
अहं ब्रह्मास्मिसिद्धोऽस्मि नित्यसिद्धो..	ते. बि. ३।२०
अहं ब्रह्मास्मि नास्मीति सच्चिदा-	
नन्दमात्रकः	ते. बि. ४।३९
अहं ब्रह्मास्मि केवलम्	ते. बि. ३।२६
अहं ब्रह्माऽहं यज्ञोऽहं वषट्कारो-	
ऽहमोङ्कारोऽहं...त्वष्टाऽहं	
प्रतिष्ठाऽहम्	कठरु. १
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं जन्मदोषं	
विनाशयेत्	ते. बि. ६।६१
अहंब्रह्मास्मिमन्त्रोऽयंदेहदोषं विना..	ते. बि. ३।६१
अहंब्रह्मास्मिमन्त्रोऽयं दृश्यपापं विना..	ते. बि. ३।६०
अहं ब्रह्मास्मिमन्त्रोऽयमन्यमंत्रं विना..	ते. बि. ३।६०

अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽय-		अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमात्माज्ञानं	
मज्जदत्तं प्रयच्छति	ते. विं. ३।७०	विनाशयेत्	ते. विं. ३।६९
अहंब्रह्मास्मिमन्त्रोऽयमनात्मा-		अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमात्म-	
सुरमर्दनः	ते. विं. ३।७१	लोकजयप्रदः	ते. विं. ३।६९
अहं ब्रह्मास्मि वज्रोऽयमना-		अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमप्रतर्क्य-	
त्माकृयगिरीन् हरेत्	ते. विं. ३।७१	सुखप्रदः	ते. विं. ३।७०
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमना-		अहं ब्रह्मास्मीति वा भाष्यते	वह्नचो. ४
त्माकृयासुरान् हरेत्	ते. विं. ३।७२	अहंब्रह्मेतिचेद्वेदसाक्षात्कारःसञ्चयते	वराहो. २।४१
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं		अहं ब्रह्मेति नियतं मोक्षहेतुर्महा-	
सर्वास्तान् मोक्षयिष्यति	ते. विं. ३।७२	त्मानाम्[वराहो.२।४३+पैङ्गलो.४।१९+ महो.४।७२	
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं		अहं ब्रह्मेतिनिश्चित्यअहम्भावंपरित्यज	ते. विं. ६।१०४
ज्ञानानन्दं प्रयच्छति	ते. विं. ३।७३	अहं ब्रह्मेतिभावनया यथापरमतोजो	
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं		महानदी...प्रविशति	त्रि.म.ना..८।३
मृत्युपाशं विनाशयेत्	ते. विं. ३।६२	अहं ब्रह्मेति विज्ञानात्...सञ्चितं	
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं द्वैतदुःखं		विलयं याति	अध्यात्मो. ५०
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६२	अहं ब्रह्मैव सर्वं स्यात्	ते. विं. ३।१६
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं मेदबुद्धि		अहं भूमा सदाशिवः	ते. विं. ३।५१
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६३	अहं मत्या विरहितः...इति मत्वा	
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं बुद्धिव्याधि		न शोचति	अ. पू. ५।९३
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६४	अहं मनुरभवं सूर्यश्चेति	वृह. १।४।१०
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं चिन्तादुःखं		अहं मनुष्य इत्यादिव्यवहारो...	अवधू. १८
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६३	अहं मित्रावरुणाबुधौ बिभर्मि	देव्यु. २
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं चित्तबन्धं		[क्र.सं.८।७।९मं.१०।१२५।१+	अथर्व.४।३०१
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६४	अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनाम्	देव्यु. ४
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं सर्वव्याधीन्		[क्रकसं.मं.१०।१२५।३+	अथर्व.४।३०।२
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६५	अहंरुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यै..	क्रकसं.८।७।९
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं कामादीन्		[मं.१०।२५।१+अथर्व.४।३०।१	देव्यु. २
नाशयेद्विष्णात्	ते. विं. ३।६६	(यत्) अहं वसिष्ठोऽस्मि,	
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं वंशोकं		त्वं तद्वसिष्ठोऽसि	छान्दो.५।१।१३
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६५	अहं वषट्कारोऽहंमोहकारः	कठश्रु. २
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं क्रोधशक्ति		अहं वाव सृष्टिरस्मि	वृ. उ. १।४।५
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६६	अहं विजानामि विविक्तरूपः	कैव. २१
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं चित्तवृत्ति		अहं विश्वं भुवनमभ्यभवाम्(मा.पा.)	तैत्ति.३।१०।६
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६७	अहं विश्वं भुवनमभ्यभवां ३	
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं सङ्कल्पपादीन्		सुवर्णज्योतिः [तै.उ.३।१०।६+	नृ. पू. २।१४
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६७	अहं विश्वा ओषधीर्गर्भं आधां	बा. मं. १७
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं कोटिदोषं		अहं विश्वा भुवना विचक्षन्	बा. मं. ८
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६८	अहं विष्वङ्मुहमस्मि प्रसत्त्वान्	बा. मं. २५
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं सर्वतन्त्रं		अहं वृक्षस्य रेखिवा[तैत्ति.१।१०।१+	ना. प. ४।४४
विनाशयेत्	ते. विं. ३।६८		

अहं वेद भुवनस्य नाभिम्	वा. मं. १३	अहिनिर्त्वेयनी सर्पविमोकोजीव-	
अहं वेदानामुत यज्ञानाम्	वा. मं. १४	वर्जितः..तं सपोनाभिमन्यते	वराहो. २।६७
अहं वैत्वायाज्ञवल्क्ययथाकाश्योवा..	बृह. ३।८।२	अहिनिर्त्वेयनीवाप्रमुक्तदेहस्तुतिष्ठति	२ आत्मो. १७
अहं वैश्वानरो भूत्वा	भ. गी. १५।१४	अहिरिव जनयोगं सर्वदा वर्जयेद्यः	वराहो. २।३७
अहं शास्त्रेण निर्णीतमहंचित्ते..स्थितः	ते. वि. ३।१९	अहिंसर्वत्रभूतान्यन्यत्र तीर्थेभ्यः	छान्दो. ८।१५।१
अहंशिष्यवदाभामिष्यंलोकत्रयाश्रयः	ते. वि. ३।१८	अहिंसा इष्टयः (शारीर्यज्ञस्य)	प्रा. हो. ४
अहं शुद्ध इतिज्ञानं शौचमाहुर्मनीषिणः	जा. द. १।२०	अहिंसा क्षातिरार्जवम्	भ. गी. १३।८
अहं शुद्धोऽस्मि बुद्धोऽस्मि नित्यो-		अहिंसा गोमयं प्रोक्तं (हृच्छुद्धपर्यं)	शिवो. १।२५
ऽस्मि प्रभुरस्म्यहम्	ते. वि. ३।४२	अहिंसा तु तपोयज्ञो वाक्मनः-	
अहं शेषांशव्योतीरूपः..भक्तश्च	राधोप. ४।१	कायकर्मभिः	शाट्याय. १४
अहं५ श्रद्धया	चित्त्यु. ८।२	अहिंसाया यमाः पञ्च यतीनां	
अहंश्रेयसे विवदमाना ब्रह्म		परिकीर्तिताः	शिवो. ७।१०१
जगमुः (प्राणाः)	छां. उ. ६।१।७	अहिंसा धर्मयागः परमहंसोऽध्वर्युः..	पा. ब्र. ५
अहं श्रेयानस्म्यहं श्रेयानस्मीति	छां. उ. ५।१।६	अहिंसा नियमेष्वेका मुख्या	१ यो. त. २९
अहं श्लोककृदहं श्लोककृदहं श्लोक..	तैत्ति. ३।१०।६	अहिंसा सत्यमक्रोधः	भ. गी. १६।२
अहं स च मम प्रियः	भ. गी. ७।१७	अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यं..एते	
अहं सच्चित्परानन्दब्रह्मैवास्मिन्चेत्तरः	महो. २।११	सर्वे गुणा ज्ञेयाः सात्त्विकस्य...	शारीरको. ५
अहं सत्यचिदात्मकः । मूर्तित्रय-		अहिंसा सत्यमस्तेयं...यमा दश	
मसद्धीति..	ते. वि. ३।५०	[त्रि.प्रा. २।३३+जा.द. १।६+	वराहो. ५।१२
अहं सत्यात्मकः शुचिः	ते. वि. ३।४९	अहिंसाऽसत्यास्तेयब्रह्मचर्यदयाजप-	
अहं सर्वमिदं विश्वं परमात्माऽहं...	महो. ५।८९	क्षमाधृतिमिताहारशौचानि	
अहं सर्वस्य प्रभवः	भ. गी. १०।८	चेति यमा दश	शांडि. १।१।३
अहं सर्वस्येशः, मत्तः सर्वाणि भूतानि	ग.शो. ४।१०	अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्या-	
(?)अहं संपदस्मि, त्वं तत्सम्पदसि	छान्दो. ५।१।१४	परिग्रहः.. एषस्त्वधर्मो विख्यातो..	ना.प. ४।१०।१३
(?)अहं सः सोऽहमिति	नृसिंहो. ९।१०	अहिंसा समता तुष्टिः	भ. गी. १०।५
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धेन्ममयोनि		अहुतमवैश्वदेवमविधिना हुत-	
रप्त्व ? न्तः समुद्रे [देव्यु. ४	ऋक्सं. ८।७।७	मासप्रमांस्तस्यलोकान्हिनस्ति	मुंड. १।२।३
=मं. १०।१२५।७+	अथर्व. ४।३०।७	अहृदयस्य हि किं स्यात्	बृ. ह. ४।१।७
अहं सो ममेदमित्येवं मन्यमानो		अहेयमनुपादेयमनाधेयं (ब्रह्म)	अध्यात्मो. ६२
निबध्नात्यात्मनात्मानंजालेनेव		अहेयमनुपादेयमसामान्यविशेषणं	मैत्रे. १।१५
खचरः [मैत्रा. ३।२+	६।३०	अहो अनन्यभक्तिपरा काष्ठा	सामर. ४४
अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधा..	देव्यु. २	अहो गुरुरहो गुरुः	१ अवधू. ३२
अहं स्त्री पुरुषोऽहम्	अद्वै. भा. १	अहो ज्ञानमहो ज्ञानमहो सुखं...	१ अवधू. ३२
अहं हि सर्वयज्ञानां	भ. गी. ९।२४	अहो दुःखोदधौ मग्नो न पश्यामि	
अहं हीदं सर्वमसृक्षीति	बृ. उ. १।४।५	प्रतिक्रियाम्	गर्भो. ६
अहार्यबन्नित्यविनिश्चलोऽहमम्भो-		अहो नानास्मृत्युक्तान्धर्मान् ये	
धिवत्पारिवर्जितोऽहम्	कुण्डिको. १६	कुर्वति त इह संसारे विचरन्ति	सामर. २७
अहिघ्नं तमर्णवे शयानं वावृहाणं...	आर्षे. १०।३	अहो नु चञ्चलमिदं प्रत्याहृतमपि	
		स्फुटम् । चित्तमर्थेषु चरति..	अ. पू. ३।५

अहोनु चित्रं पद्योत्थैर्वद्वास्तन्तुभि- रद्वयः... अविद्यमाना याऽविद्या तया विश्वं स्थितं कृतम् अहोनु चित्रं यत्सत्यं ब्रह्म तद्विस्मृतं नृणाम् ।... माऽस्तु रागानुरज्जना अहो पुण्यमहो पुण्यं फलितं... अहोप्रपञ्चोऽयमनादिसंसिद्धोभवति अहो वत महत्पापं अहो मद्भक्तानां सङ्गपव पराकाष्ठा अहो रसमार्गप्रपद्यमानोऽयंजीवसंघ आत्मानं तन्मयतां प्राप्नोति अहोरात्रकृतं पापं नाशयति अहोरात्रचतुष्केन लयभावप्रभावतः, स्पर्शं जानाति योगीन्द्रो... अहोरात्राणिप्रतिष्ठा (मेघ्यस्याश्वस्य) अहोरात्राणिविद्वद्भिश्च... [=मं.१०।१९०।२+तै.आ.१०।१।१४	महो. ४।१३३ महो. ४।१३२ १ अवधू. ३१ सामर. ९७ भ. गी. १।४५ सामर. ४४ सामर. १०२ गोपीचं. ४ अमन. १।५३ वृ.उ. १।१।१ ऋक्सं. ८।८।४८ महाना. ६।२	(१)अहोरात्रेणैतौ व्यावर्तते अहोरात्रे वै प्रजापतिः (मा.पा.) अहोरात्रोवै प्रजापतिस्तस्याहरेवप्राणः अहो वयमहो वयम् अहो शास्त्रमहो शास्त्रम् अहो सुखमहो सुखम् अह आपूर्यमाण... षडुदङ्केति मासां- स्तान् ... [छां.उ.४।१९।५ अह आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाण- पक्षाद्यान् षणमासानुदङ्कादित्यपि अहं सायुज्यं सरूपतां सलोकता- मभते... अहस्वमदीर्घमस्थूलमनण्वनल्प- मपार... [बृ. उ. ३।८।८+ अहस्वोऽहस्वोऽहस्वः (गणेशः) अहस्वमदीर्घमलोहितमस्नेह. अंशुधारयद्वाणुवातेरितः संस्फुरति	मैत्रे. ६।१ प्रभो. १।१३ प्रभो. १।१३ १ अवधू. ३१ १ अवधू. ३२ १ अवधू. ३२ + ५।६३।१ बृ. उ. ६।२।१५ ३ ऐत. २।१।३ सुबालो. ३।५ ग. शो. २।३ बृ. उ. ३।८।८ मैत्रा. ६।३५
--	--	---	--

आ

आकारं पादशो विद्यात्पादामात्रा... आकाश एव तदोतं प्रोतं च आकाश एव लीयन्ते (भूतानि) आकाश एव यस्यायतनं श्रोत्रलोकः... आकाशतत्त्वतः सर्वं ज्ञातव्यं योगमिच्छता आकाशनाभिकं सागरोदरं महीकटि- देशं (गणेशं) दृष्ट्वा स्तुवन्ति आकाशभावनामच्छां शब्दबीज... आकाशमण्डलं वृत्तं श्रीमन्नारायणो- ऽत्राधिदेवता । नादरूपं ध्रुवोर्मध्ये.. आकाशमभिजायत आकाशमुपास्व आकाशमयस्तेजोमयः (आत्मा-ब्रह्म) आकाशमवकाशप्रदाने (शरीरस्य) आकाशमात्मा (अप्येति मृतस्य) आकाशमिन्द्रियेषु (विलीयते) आकाशमिव तिष्ठासेत आकाशमेकं सम्पूर्णं कुत्रचिन्नैव गच्छति । तद्वत्स्वात्मपरिज्ञानी (ब्रह्मात्मविच्छेष्टः) कुत्रचिन्नैव गच्छति [रुद्रह. ५१+	आगम. २४ बृह. ३।८।४, ७ त्रि. ता. ५।२२ बृह. ३।९।१३ वराहो. ५।२ ग. शो. ४।७ महो. ५।१४७ यो. शि. ५।१५ छां. उ. ७।१२।२ बृह. ४।४।५ गर्भो. १ बृह. ३।२।१३ पा. ब्र. ४०	आकाशमेव भगवो राजन्निति होवाच छान्दो. ५।१५।१ आकाशवतो वै स लोकान् प्रकाशवतो. ऽसम्बाधान्.. अभिसिध्यति छां. उ. ७।१२।२ आकाशवत्कल्पविदूरगोऽहं कुंडि. १६ आकाशवत्सर्वगतं सुसूक्ष्मं शांडि. २।१।३ आकाशवत्सूक्ष्मशरीर आत्मा पैङ्गलो. ४।१२ आकाशशतभागाच्छास्त्रेषु.. (चित्) महो. ५।१०१ आकाशशरीरं ब्रह्म तैत्ति. १।६।३ (१) आकाशश्च प्रतिष्ठितः बृ. उ. ४।४।१७ आकाशश्चाकाशमात्रा च चक्षुश्च द्रष्टव्यं च श्रोत्रं श्रोतव्यं च.. (आत्मनि संप्रतिष्ठते) प्रभो. ४।८ आकाशसदृशोऽस्म्यहं... सर्वातीतोऽस्म्यहंसदा ते. बिं. ३।१० आकाशस्य च खण्डनम्; प्रथनंच तरङ्गाणामास्था नायुषि युज्यते महो. ३।११ आकाशस्तृप्यत्याकाशे तृप्यति छां. उ. ५।२३।२ आकाशस्य नभोऽस्ति तद्वज्जीवेषु.. अद्वैतो. ६ आकाशं नोपलिप्यते भ. गी. १३।३२ आकाशं पराकाशं महाकाशं सूर्याकाशं परमाकाशमिति (आकाशानि) पञ्च भवन्ति मं. ब्रा. ४।१
--	---	--

आकाशं प्रत्यस्तं यन्ति (भूतानि)	छान्दो. १।१।१	आकाशाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे	
आकाशं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति	नृ. पू. ३।५	भगवान्ब्रवीतु	छान्दो. ७।१२।२
आकाशं वाद्यशून्यत्वादनाकाशं		आकाशांशेमहाप्राज्ञधारयेत्तुसदाशिवं	जा. ६. १०।६
तुतस्त्वतः । नकिञ्चिदनिर्देश्यं..	महो. २।५	(?) आकाशे... अमृतमयः पुरुषः	बृ. उ. २।५।१०
आकाशं ब्रह्मेत्युपास्ते	छान्दो. ७।१२।२	(?) आकाशेचहृदिप्राज्ञः.. देहेप्रतिष्ठितः	आगम. २
आकाशं भित्त्वा मनो भिनन्ति	सुबालो. ११।२	आकाशे जायते.. आकाशमुपास्व	छान्दो. ७।१२।१
(?) आकाशं शून्यं कृत्वा	अ. वि. १२	आकाशे तदोतं च प्रोतं च	बृ. उ. ३।८।४
आकाशः परायणम् (भूतानाम्)	छान्दो. १।१।१	आकाशे तिष्ठति स ह्याकाशस्तनवेद	गोपालो. ४
आकाशः प्रतिष्ठा, प्रज्ञा-प्रियं*		आकाशे तृप्यति यत्किञ्च वायुश्चा-	
सत्य-मनन्त-आनन्द-स्थितिः-		काशश्चाधितिष्ठतस्तत्तृप्यति	छान्दो. ५।२३।२
इत्येनदुपासीत [बृह. ४।१।२,	३, ४, ५, ६, ७	आकाशे धारयेच्चित्तमणिमादिक-	
आकाशः संहितेऽत्यस्य माक्षन्व्यो		माप्नुयात्	यो. शि. ५।५१
वेदयांचक्रे	३ ऐत. १।१।१	आकाशेन प्रतिगृणोति	छान्दो. ७।१२।१
आकाशाच्चन्द्रमसं, एव सोमो राजा..	छान्दो. ५।१०।४	आकाशेन रमते	छान्दो. ७।१२।१
आकाशात्मकमव्यक्तमोहकारस्वरभूषितं	पञ्चम. १४	आकाशेन गृणोति	छान्दो. ७।१२।१
(?) आकाशात्मानःस्वरीयुः (स्वर्ययुः)	कौ. उ. २।१४	आकाशे पुरुषस्तमेवाहमुपासे	कौ. उ. ४।६
आकाशात्मा सर्वकर्मा सर्वकामः		(?) आकाशेनाह्वयति, आकाशेन	
सर्वगन्धः सर्वरसः	छान्दो. ३।१४।२	गृणोति...	छान्दो. ७।१२।१
आकाशादपि सूक्ष्मोऽहं	ते. वि. ३।२९	आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता	तैत्ति. ३।९
आकाशादिमयविग्रहम् (पञ्चब्रह्म)	पं. ब्र. १५	आकाशे वै सूर्याच्चन्द्रमसाबुधौविशु-	
(?) आकाशादेव जायन्ते (भूतानि)	नृ. पू. ३।३	न्नक्षत्राण्यग्निः, आकाशेनाह्वयति..	छान्दो. ७।१२।१
आकाशादेव जातानि जीवन्ति(,,)	नृ. पू. ३।३	आकाशे इयेनोवा सुपर्णोवा.. श्रांतः	बृह. ४।२।१९
आकाशोद्योनेः सम्भूतोभार्यायैरेतः..	कौ. उ. १।६	आकाशे हीदं सर्वं समाप्येत	१ ऐत. ३।१।२
आकाशाद्वायुर्वायोर्ज्योतिर्ज्योतिष आपो		आकाशो धूमः (पृथिव्यग्नेः)	छान्दो. ९।६।१
ऽद्भ्यःपृथिवी, एषांभूतानां ब्रह्मप्रपये	कुंडिको. १४	(अथ) आकाशोऽन्तःकरणमनो-	
आकाशाद्वायुसंज्ञस्तु स्पर्शो-		बुद्धिचित्ताहङ्काराः	त्रि. ब्रा. ३
ऽपञ्चीकृतः पुनः	कठरु. १७	आकाशोऽन्नादः	तैत्ति. ३।९
आकाशाद्वायुं, वायुर्भूत्वाधूमोभवति	छान्दो. ५।१०।५	आकाशो ब्रह्म	छान्दो. ३।१८।१
आकाशाद्वायुं वायोर्वृष्टिः, वृष्टेःपृथिवी..	बृह. ६।२।१६	आकाशोभूर्जलंवायुरग्निर्ब्रह्मा हरिःशिवः	ते. वि. २।२७
आकाशाद्वायुः [तै. २।१।१+	सुबालो. १।१	आकाशो वह्निना युक्तः	सूर्यता. २।२
+यो. चू. ७. २+पैङ्गलो. १।३+	नारा. उ. १।५	आकाशो वाऽन्नमिन्द्रियाण्यन्नादानि	सुबालो. १४।१
आकाशाद्वायुः, वायोरग्निः, अग्नेरापः,		आकाशो वाव तेजसो भूयान्	छान्दो. ७।१२।१
अद्भ्यः पृथिवी, पृथिव्याओषधयः,		आकाशो वै नामनामरूपयोर्निर्वहिता	छान्दो. ८।१४।१
ओषधीभ्योऽन्नं, अन्नात्पुरुषः	तैत्ति. २।१।१	आकाशो वै नामरूपयोः... (मा. पा.)	छान्दो. ८।१४।१
आकाशाद्वायुः, वायोर्ज्योतिः,		आकाशो ह वा एषदेवो वायुरग्नि-	
ज्योतिष आपः	२ सङ्ख्यासो. १६	रापः.. ते प्रकाश्याभिवदन्ति	प्रभो. २।२
आकाशाद्वायुः स्फुरति तद्भीनं वरेण्यं	त्रि. ता. १।१४	आकाशो ह्येवैभ्यो ज्यायान्	छान्दो. १।९।१
		आकीटपतङ्गपिपीलिकं	छान्दो. ७।२।१+
		[७।७।१+७।८।१+	७।१०।१
		(?) आकीटपतङ्गेभ्यस्तत्तेऽन्नं..	बृ. उ. ६।१।१४

* अत्रत्याः प्रियादयः पंच शब्दाख्यायङ्गतपंचवाक्येषु योजनीयाः ।

आकुञ्चनेन कुण्डलिन्याः कवाट-
 मुद्राटय मोक्षद्वारं विभेदयेत् शां. १।७।३७
 आकृत्यैवविश्रान्तमेव्यादिगुणवृत्तिभिः महो. ४।१९
 आकुण्ठेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतं
 मर्त्यं च [कृत्सं..१।३।५= मं. १।३।५।२+
 वा.सं. ३३।४३+तै.सं. ३।४।११।२ वनदु. २७
 आक्रान्तमुद्रःप्रथमेविधर्मजयन्प्रजाः कृ.मं. ९।९।७।४०
 [अ.वे. १।२५९+तै.आ. १०।१।१६+ महाना. ६।९
 आक्षिप्तो मुजदण्डेन यथोचलति
 कन्दुकः यो.शि. ६।५२
 आक्षिप्तो मुजदण्डेन यथा चलति
 कन्दुकः यो. चु. २७
 आख्याहि मे को भवानुप्ररूपः भ.गी. १।१।३१
 आगच्छ गच्छतिष्ठेति स्वागतं...
 सन्माननं च न ब्रूयात् ना.प. ४।७,८
 आगच्छस्यपराजितमायतनं तं
 ब्रह्मतेजः प्रविशति कौ. उ. १।५
 आगतं ब्रह्मात्मजं नारदमवलोक्य ना. प. १।१
 आगत्य भो विभूतेर्माहात्म्यं ब्रूहीति वृ. जा. १।३
 आगमस्याविरोधेन...समाधिः
 प्रकीर्तितः अ. ना. १७
 आगमापायिनो नित्याः भ. गी. २।१४
 आगमो जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि. २
 आगाव इति मंत्रेण...(भस्म)मंत्रयेत् वृ. जा. ३।३
 आगाता ह वै कामानां भवति छांदो. १।१।१४
 आङ्गिरसोऽङ्गानां हि रसः बृह. १।३।८
 आग्नेयस्तु त्रिमात्रोऽसौ अ. ना. ३१
 आग्नेयामेव(इष्टि)कुर्यात् [ना.प. ३।७७+ प. हं. प. २
 आग्नेयी प्रथमा मात्रा ना. बि. ६
 आप्रामादन्निमाहृत्यपूर्ववदन्निमाजिघ्रेत् याज्ञव. १
 आ च परा च पथिभिश्चरति
 स सध्रीची... १ ऐत. १।६।२
 (?) आ च पूर्यतेऽप च क्षीयते
 (चन्द्रो रात्रिर्वा) [वृ.उ. १।५। १४, १५
 आचरत्यात्मनः श्रेयः भ.गी. १६।४०
 आचान्तो भूत्वाऽऽस्मेज्यानः
 प्राणोऽभिर्विश्वोऽसीति च
 द्वाभ्यामभिध्यायेत् मैत्रा. ६।९

आचारः प्रथमो धर्मः..तस्मादस्मिन्
 सदायुक्तः भवसं. ४।१
 आचारादीप्सिताः प्रजाः (लभन्ते) भवसं. ४।२
 आचाराद्धनमक्षय्यं (लभते) भवसं. ४।२
 आचारालभते ह्यायुः भवसं. ४।२
 आचारो ह्यंत्यलक्षणम् भवसं. ४।२
 आचार्यकुलाद्देवमधीत्ययथाविधानं.. छां.उ. ८।१५।१
 आचार्यदेवो भव तैत्ति. १।११।१
 आचार्य महती चमूम् भ. गी. १।१३
 आचार्यमुपसङ्गम्य भ.गी. १।२
 आचार्यवान् पुरुषो वेद, तस्य... छां.उ. ६।१४।२
 आचार्यस्तु ते गतिं वक्ता... छां.उ. ४।१४।१
 आचार्यस्यसम्मुखं प्रपद्येत [सुदर्श. ४+ यज्ञोप. ४
 आचार्यहा वै त्वमसि छां.उ. ७।१५।२
 आचार्यःपूर्वरूपं,अन्तेवास्युत्तररूपम् तैत्ति. १।३।५
 आचार्याद्वेषेवविद्याविदिता साधिष्ठं
 प्रापयति छान्दो. ४।९।३
 आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य
 प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः तैत्ति. १।११।१
 आचार्याः पितरः पुत्राः भ. गी. १।३४
 आचार्यान् मातुलान् भ्रातृन् भ. गी. १।२६
 आचार्योपासनं शौचम् भ.गी. १३।१८
 (?)आचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति तैत्ति. १।११।१
 आचार्योऽभ्युवादोपकोसला इति छां.उ. ४।४।१
 आचार्यो वेदसम्पन्नो विष्णुभक्तो
 विमत्सरः [द्वयोप. २+ अद्वयता. ८
 आचिनोति हि शास्त्रार्थान्... द्वयोप. ४
 तस्मादाचार्य उच्यते छांदो. ४।१४।१
 आजगाम हास्याचार्यः, तमाचार्योऽ. छांदो. ४।२।५
 आजहारेमाः शूद्रानेनैव मुखेन... तैत्ति. २।८।१
 (?) आजानजानां देवानामानन्दाः...
 आजानुकटिपर्यंतमपां स्थानं
 प्रकीर्तितम् त्रि.ब्रा. २।१३६
 आजानुतः सुवर्णाभं.. शतचन्द्र-
 निभाननम् गारुडो. ६
 आजानुपादपर्यंतपृथिवीस्थानमिष्यते त्रि.ब्रा. २।१३५
 आजानोः पायुपर्यंतमपां स्थानं.. १ यो.त. ८७
 आजोः स्वरणं हृदस्य धनुष आयमनं छांदो. १।३।५
 (?) आज्यलेपेनाङ्गान्यनुविमृज्य कौ. उ. २।३

आज्यं रुधिरमिव त्यजेत् (यतिः)

[ना. प. ७।१+ सं.सो. २।७९

आज्यं हुत्वा मन्ये सम्पातमवनयेत् छान्दो. ६।१।४

आज्ञाचक्रमष्टमं, ब्रह्मनिर्वाणचक्रम्...सौभाग्य. ३१

आज्ञाचक्रं च मस्तकम् योगकुं. ३।११

आज्ञानामधुबोर्मध्येद्विदलं. [यो.शि. १।७५; ५।११

आज्ञाभयसंशयात्मगुणसङ्कल्पोबन्धः निगलं. २१

आह्वयोऽभिजनवानस्मि भ.गी. १।३।८

आणवं शाम्भवं शाक्तं ते. वि. १

(१)आण्डजं जीवजमुद्विज्जमिति छां.उ. ६।३।१

आण्डी भव जमा मुहुः अरुणो. १

आतपत्रमिव स्तंभशरीरं शिथिलायते अमन. २।८१

आतपत्रं ब्रह्मलोकं ममोर्ध्वचरणं स्मृतं गोपालो. २।२७

आतिष्ठोत्तिष्ठ भारत भ.गी. ४।४२

आतिथ्यश्राद्धयज्ञेषु..न गच्छे.

द्योगवित्कचित् ना. प. ६।९

आतुरकालः कथमार्यसम्मतः ना.प. ३।५

आतुरकुटीचकयोर्भूलोकमुर्वलोकौ सं.सो. २।५९

आतुरकुटीचकयोर्भूलोकः ना. प. ५।९

आतुरः सर्वकर्मलोपः प्राणस्योत्क्रमण-

कालसंज्ञासः सनिमित्तसंज्ञासः ना. प. ५।४

आतुरेऽपि क्रमे वापि प्रैषमेदो

न कुत्रचित् ना. प. ३।७

आतुरेऽपि च संज्ञासे तत्तन्मंत्र-

पुरस्सरं..संज्ञयसेत् ना. प. ३।६

आतुरे वा क्रमे वापि तुरीयाश्रम..

अष्टश्राद्धं कुर्यात् ना. प. ४।३८

आतुरो जीवति चेत्क्रमसंज्ञासः

कर्तव्यः [ना.प. ५।६+ सं. सो. २।५९

आतुरनद्रक्षुमन्तं [ऋक्सं.मं. ८।८१।१० ग. पू. १।६

आतेन यातं मनसो जजीयसा १ ऐत. ३।८।७

आतो ह्ययमात्मा नृसिंहो. २।७

आतं वै भूयसा कनीयः १ ऐत. ६।१

आत्मकाममकामं रूपं बृ. उ. ४।३।२१

आत्तो वै सशरीरः प्रियाप्रियाभ्यां छांदो. ८।१२।१

आत्मकामोऽहमाकाशात् ब्र. वि. ९२

आत्मकाम आत्मकामो निष्कामो जीर्णकामः ? सुबालो. १।१२

आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि

[वा.सं. ८।११+ तै. प्रा. १०।५७ महावा. १४।१

आत्मक्रीड आत्मरतिः क्रियावान्

मुण्ड. ३।१।४

आत्मक्रीड आत्मरतिरात्मवान्सम-

दर्शनः । बुधोवाल्क्यवल्कीडेत् ना. प. ५।३७

आत्मा गुहायां निहितोऽस्यजन्तोः श्वेताश्व. ३।२०

आत्मज्योतिरहंशुकः सर्वज्योतिरसावर्धो महावा. ५

आत्मज्योतिरहं शुकः सर्वज्योती

रसोऽहमोम् वनदु. १२२

आत्मज्योती रसोऽस्म्यहम् ते. वि. ३।१०

आत्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः मुण्ड. ३।१।१०

आत्मज्ञानं विना योगी ब्रह्मचारी

कथं भवेत्

आत्मज्ञो ह्यात्ममात्रदृक् (जीवन्मुक्तः)

[अ. पू. ४।३+ वराहो. ३।२७

आत्मत आकाशः छां. ७।२६।१

आत्मत आपः, आत्मत आविर्भावः छांदो. ७।२६।१

आत्मत आविर्भावतिरोभावौ छांदो. ७।२६।२

आत्मत एष प्राणो जायते (मा. पा.) प्रश्ना. २।३

आत्मत एवेदं सर्वम् छांदो. ७।२६।१

आत्मतश्चित्तमात्मतः सङ्कल्पः छांदो. ७।२६।१

आत्मतस्तेज आत्मत आपः छांदो. ७।२६।१

आत्मतः कर्माणि छांदो. ७।२६।१

आत्मतः प्राण आत्मत आशा छांदो. ७।२६।१

आत्मतः सङ्कल्पः छांदो. ७।२६।१

आत्मतः स्मर आत्मत आकाशः छांदो. ७।२६।१

आत्मतापरते त्यक्त्वा निर्विभागो

जगत्स्थितौ सं. सो. २।५०

आत्मतीर्थं महातीर्थमन्यतीर्थं

निरर्थकम् जा. द. ४।५३

आत्मतीर्थं समुत्सृज्य बहिस्तीर्थानि

यो व्रजेत् । करस्थं स महारत्नं

त्यक्त्वा काचं विमार्गते जा. द. ४।५०

आत्मतुल्यसुवर्णादिदानैः..

तदप्याशु विनाशयेत् रामो. ५।२२

आत्मतृप्तश्च मानवः भ.गी. ३।१।७

आत्मतो ध्यानमात्मनश्चित्तम् छांदो. ७।२६।१

आत्मतो नामात्मतोमन्त्राः आत्मतः.. छांदो. ७।२६।१

आत्मतो नान्यथाप्राप्तिः नृसिंहो. ९।३

आत्मतोऽन्नात्मतो बलं छांदो. ७।२६।१

आत्मतो मन आत्मतो वाक् छांदो. ७।२६।१

आत्मतो मन्त्रा आत्मतः कर्माणि	छांदो. ७।२६।१
आत्मतो वागात्मतो नाम	छांदो. ७।२६।१
आत्मतो विज्ञानमात्मतो ध्यानम्	छांदो. ७।२६।
आत्मध्यानयुग्मस्त्वेन विधिना	यो. चू. १०७
आत्मन आकाशः सभूमः [नै. २।१।१ + यो. चू. ७२	
(तस्मात्) आत्मन एव त्रैविध्यं	
सर्वत्र योनित्वम्	नृसिंहो. ९।४
आत्मन एवास्य तत्कृतं भवति	३ ऐम. २।४।३
आत्मन एव प्राणो जायते	प्रभो. ३।३
(एवमेव) आत्मनः सर्वे प्राणाः	
सर्वं लोकाः... व्युद्भवन्ति	बृह. २।१।२०
आत्मनः सूक्ष्मशरीरमिदमेवोच्यते	ग. शो. ४।४
आत्मनस्नावेतावर्कश्चमेधौ.. (मा. पा.)	वृ. उ. १।-१७
आत्मनस्तुकामायश्च त्रिपिं भवति +	बृह. २।४।५
आत्मनस्तुकामाय जाय. प्रिया भवति +	बृह. २।४।५
आत्मनस्तुकामाय देवाः प्रिया भवन्ति +	बृह. २।४।५
आत्मनस्तुकामाय पतिः प्रियो भवति +	बृह. २।४।५
आत्मनस्तुकामाय पशवः प्रिया भवन्ति +	बृह. ४।५।६
आत्मनस्तुकामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति +	बृह. २।४।५
आत्मनस्तुकामाय भूतानि	
प्रियाणि भवन्ति +	बृह. २।४।५
आत्मनस्तुकामाय लोकाः प्रिया भवन्ति +	बृह. २।४।५
आत्मनस्तुकामाय वित्तं प्रियं भवति +	बृह. २।४।५ +
आत्मनस्तुकामाय वेदाः प्रिया भवन्ति	बृह. ४।५।६
आत्मनस्तुकामाय सर्वं प्रियं भवति +	बृ. उ. २।४।५
आत्मना चेज्जीवति प्रधानागादित्याहुः	बृह. १।५।१५
आत्मना जायते प्राणो मनः	
सर्वेन्द्रियाणि च	अनु. सा. ३
आत्मनाऽऽत्मनि तृप्तोऽस्मि	
एतत्तुऽस्म्यहमव्ययः	ते. बि. ३।२८
आत्मनाऽऽत्मनि सन्तृप्तो	
नाविद्यामनुभावति [अ. पू. ४।३ +	वराहो. ३।२१
आत्मनाऽऽत्मानमभिसम्बभूव	महाना. २।७
(?) आत्मना परास्य द्विषन् भ्रातृव्यो	
भवति... (मा. पा.)	वृ. उ. १।३।७
आत्मनाऽऽत्मानमुद्धरेत्	ना. प. ५।४०
आत्मना पिहिता गुहा	इतिहा. १७

+ वाक्यान्ते + इति चिह्नांकितानि वाक्यानि तस्यामेवो-
निषदि अध्याये ४ ब्राह्मणे ५ सन्ति ।

आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया..ऽसृतं केनो. २।४	
आत्मना हि कर्म करोति	बृह. १.४।१७
(?) आत्मनि पुरुष एत... ब्रह्मोपासते	बृह. २।१।१३
आत्मनि स्वत्वेरे दृष्टे श्रुते मते	
विज्ञात इदं सर्वं विदितं...	बृह. ४।५।६
आत्मनि ब्रह्मण्येवानुष्टुभं जानीयात्	नृ. पू. १।७
आत्मनिष्ठं कर्तृगुणं वास्तवं वा	
द्वितीयकः (भ्रमः)	अ. पू. १।१४
आत्मनि सर्वेन्द्रियाणि सम्प्रतिष्ठाप्य	छां. उ. ८।१५।१
आत्मनि ह्येवास्य तद्वैश्वानरेहुतं स्यात्	छां. उ. ५।२४।४
(अथ) आत्मनेऽन्नाद्यमागायत्	बृह. १।३।१७
आत्मने वा यजमानाय वा	बृह. १।३।२८
आत्मने सर्वदेवाय.. भूताय.. मन्यते	ग. शो. २।१
आत्मनेऽस्तु नमो मह्यं	सं. सो. २।३१
आत्मनैव सहायेन सुखार्थी विचरेदिह	ना. प. ३।४४
आत्मनैवात्मानं परमं ब्रह्म पश्यति	नृसिंहो. ६।३
आत्मनवात्मनो विप्र धारये-	
दात्मनाऽऽत्मनि	दुर्वासो. २।७
आत्मनोऽन्यज्जगन्नास्ति	ते. बि. ६।४५
आत्मनोऽन्यत्सुखं न च	ते. बि. ६।४५
आत्मनोऽन्यन्न किञ्चन [ते. बि.	४।६१ + ६।४०
आत्मनोऽन्यन्नहि कश्चित्	अ. पू. ५।५९
आत्मनोऽन्यन्नहि कापि [ते. बि.	६।४६, ४७
आत्मनोऽन्या गतिर्नास्ति	ते. बि. ६।४५
आत्मनो महिमा बभूव	ब्रह्मो. १
(?) आत्मनो यद्यत्कामयते तत्तत्सृजते	बृ. उ. १।४।१५
आत्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन	
मत्या विज्ञानेनेदं विदितम्	वृ. उ. २।४।५
आत्मनो वैश्वानरस्य मूर्ध्वं सुतेजाः	छां. उ. ४।१६।३
(?) आत्मन्नेव सायुज्यमेति	मैत्रे. ४।१
आत्मन्नेव सायुज्यमुपैति	मैत्रा. ४।१४
आत्मन्यरनीन्समारोप्य सोऽग्नि-	
होत्री महायतिः	सं. सो. २।१००
आत्मन्यतीते सर्वस्मात्सर्वरूपे...	
को बन्धः	अ. पू. २।२५
आत्मन्यनात्मभावेन व्यवहार...	
यत्तदस्तेयमित्युक्तं	जा. उ. १।१२
आत्मन्यात्मानमीदृया व्याधिस्थो-	
ऽपि विमुच्यते	शांडि. १।७।४८

आत्मन्येव च सन्तुष्टः भ.गी.३।१७
 आत्मन्येव धत्ते मैत्रा. ६।३४
 आत्मन्येव नृसिंहदेवेपरेब्रह्मणिवर्तते नृसिंहो.२।३
 आत्मन्येव पश्यमानो गुहाविह-
 रणमेव निश्चयेन ज्ञात्वा.. सं.ब्रा.३।१
 आत्मन्येव वशी नयेत् भ.गी. ६।२६
 आत्मन्येवात्मना तुष्टः भ.गी. २।५५
 आत्मन्येवात्मना लीनो...
 लभते महिमासिद्धिं अमन.१।६५
 आत्मन्येवात्मना व्योम्नि यथा
 सरसि माकृतः महो.५।११९
 आत्मन्येवात्मानं पश्यति
 (पश्यत्-पाठः) [बृह.४।२।२३+ सुब्रा.९।१४
 आत्मन्येवात्मानं विभर्ति २ एत.४ १
 आत्मन्येवावतिष्ठते भ.गी. ६।१८
 आत्मन्येवास्य शान्तात्मा मूकान्ध-
 बन्धिरोपमः अ.पू.५।११५
 आत्मन्विनी हास्य प्रजा भवति बृह.२।१।१३
 आत्मन्त्यनेन स्यामिति बृह.१।२।७
 आत्मप्रकाशरूपोऽस्मिन्मात्मज्योती.. ते.विं. ३।१०
 (?)आत्मप्रकाशं शून्यं जानन्तः नृसिंहो.६।३
 आत्मप्रबोधोपनिषन्मुहूर्तमुपासित्वा
 न स पुनर्गवर्तते आ.प्र.३२
 आत्मबुद्धिप्रसादजम् भ.गी.१८।३७
 आत्मप्रयत्नसापेक्षाविशिष्टा मनो-
 गतिः, तस्या ब्रह्मणि संयोगो
 योग इत्युच्यते बुधैः भवसं. ३।१२
 आत्मभावंचचिन्मात्रमखण्डैकरसंविदुः ते.विं.२।२६
 आत्मभावा मण्डलमुपासते सामर.७५
 आत्मभूतस्य त्वमात्माऽसि कौ.उ. १।६
 आत्ममन्त्रसदाभ्यासात् परतत्त्वं
 प्रकाशते यो.शि. २।१८
 आत्ममात्रेण यस्तिष्ठेत्सजीवन्मुक्तः.. ते.विं.४।१
 आत्ममायारतं देवमवधूतं दिगम्बरम् शाण्डि.३।२।२
 आत्मक्रीड आत्ममिथुन आत्मानन्दः छांदो.७।२५।२
 आत्मक्रीडात्मरतिःक्रियावान्(आत्मा)छांदो. ७।२५।२
 आत्ममिथुन आत्मानन्दः स स्वराट् छांदो.७।२५।२
 आत्मरतय आत्मक्रीडा आत्ममिथुना
 आत्मानन्दाः प्रणवमेव परं--

प्रज्ञात्मप्रकाशं शून्यं जानन्त-
 स्तत्रैव परिसमाप्ताः नृसिंहो. ६।३
 आत्मरतिरात्मक्रीडा आत्ममिथुनः छांदो.७।२५।२
 आत्मरूपमिदं सर्वमात्मनोऽन्यत्र
 किञ्चन । सर्वमात्मा ते.विं.४।६१
 आत्मरूपं समालोक्य ज्ञानरूपं.. ब्र.वि. ७७
 आत्मरूपः शिवः शुद्धः (पाठः) २ आत्मो. २
 आत्मवत्सर्वभूतानि परद्रव्याणि
 लोष्टवत् । स्वभावादेव, नभया-
 द्यः पश्यति, स पश्यति अ.पू. १।३८
 आत्मवत्सर्वभूतानि पश्यन्
 भिमुश्चरेन्महीम् ना.प.४।२२
 आत्मवन्तं न कर्माणि भ.गी. ४ ४१
 आत्मवद्वैविध्यात्मा भ.गी. २।६४
 (अथ)आत्मविदुःक्षिप्य ब्रह्मणे
 प्रायच्छत्तत्रानन्दी... मैत्रा. ६।३३
 आत्मविदो ज्ञानिन उत्पद्यन्नेलीयन्ते सामर. २२
 आत्मविद्यातपोमूलंनद्रह्योपनिषत्परं श्रुता. १ १६
 [ना.प.९।१२+ ब्रह्मो.२३
 आत्मविद्या मया लब्धा सगस्व ३५
 आत्मविन्मोक्षमन्त्रैस्त्रैधातवीयैः.. ना.प. ३।७७
 आत्मत्वेनतदासर्वं नेतरत्तत्र चाण्वयि यो.शि.४।९
 आत्मश्राद्धं विरजाहोमं कृत्वा प.हं.प.५
 आत्मश्राद्धे आत्मपितृ-पितामहान्
 (अर्चयेत्) ना.प. ४।३९
 आत्मसत्यात्मसाक्षी सनां
 धर्मः प्रतापवान् (मा. पा.) छां.उ. ६।१७
 आत्मसत्यानुबोधेननसङ्कल्पयतेयदा अद्वैतो. ३२
 आत्मसन्निधौ नित्यत्वेन प्रतीयमान
 आत्मोपाधिर्यस्तद्विज्ञशरीरं
 हृद्मन्थिरित्युच्यते सर्वसारो. ५
 आत्मसम्भाविताः स्तब्धाः भ.गी.१६।१७
 (अथ खलु) आत्मसम्मितमतिमृत्यु-
 सप्तविधसामोपासीत छांदो.२।१०।१
 आत्मसम्मितमाहारमाहरेदात्मवान्यतिः सं.सो. २।५९
 आत्मसंयमयोगाग्नौ भ.गी. ४।२७
 आत्मसंज्ञः शिवः शुद्ध एक
 एवावयः सदा २ आत्मो. १

आत्मसंस्थं तदा ज्ञानं	अद्वैतो. ३८	आत्मानमात्मना साक्षाद्ब्रह्म बुद्ध्या...	प्र.वि. २९
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा	भ. गी. ६।२५	आत्मानमादाय... ब्रह्मणैकीकुर्यात्	नृसिंहो. ४।९
आत्मसिद्धमिति होवाच श्रुतेनमिति	नृसिंहो. ९।१०	(?) आत्मानमुपसंहरति	बृ. उ. ४।४।३
आत्मसंस्थं प्रभुं... नापश्यत्	मैत्रा. ३।२	आत्मानमेव, तज्जावयति	२ ऐत. ४।३
आत्मस्वरूपविज्ञानादज्ञानस्य		आत्मानमेव प्रियमुपासीत	बृह. १।४।८
परिहृत्यः । क्षीणे ज्ञाने..	जा. द. ६।५०	आत्मानमेव लोकमुपासीत	बृह. १।४।१९
आत्मा एकः सजेतचयं	छान्दो. १।६।३	आत्मानमेव वीक्षस्व	ते. वि. ४।८०
आत्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः		आत्मानमेवं ध्यात्वाऽनपेक्षमाणं..	कठश्रु....
[पारमा. ९।३+ ना. उ. ता. १।३+ महाना. ८।१		(?) आत्मानमेवावेत	बृ. उ. १।३।१०
आत्मा चैव न वध्यते (इन्द्रियैः)	यो. चू. ८४	आत्मानमेवेमं वैश्वानरं सम्प्रत्यक्ष्येवि	
आत्मात्मकानीत्यात्मा ह्येषामुद्गन्ता		तमेव नो ब्रूहि	छान्दो. ५।११।६
नियन्ता वा	मैत्रा. ६।३१	आत्मानमेवेहमह्यज्जात्मानं परिचर-	
आत्मा दक्षिणत आत्मोत्तरतः	छान्दो. ७।२९।२	जुभौ लाकाववाप्नोति	छान्दो. ८।८।४
आत्मा देवता वेदयेति(?)	ब्रह्मो. १	आत्मानमेवेहमह्यज्जात्मानं (मा. पा.)	छान्दो. ८।८।४
आत्मा देवानां जनिता प्रजानां		(?) आत्मानमोमिति ब्रह्मणैकीकृत्य	नृसिंहो. १।२
हिरण्यदंष्ट्रो...	छान्दो. ४।३।७	आत्मानं केवलं तु यः	भ. गी. १८।१६
आत्मानन्स्वरूपोऽहं सत्यानन्दो...	ते. वि. ३।९	आत्मानं क्रियाभिः सुगुप्तं करोति	कठश्रु. ३
आत्मानन्दे मग्ना अभक्ताश्च स्पृशन्ति	सामर. ७५	आत्मानं गोपालमिति भावयेत्	गोपालो. २।४
आत्मानन्दे मग्ना आत्मभावा भवन्ति	सामर. ७५	आत्मानं चेद्विजानीयादयमस्मीति	
आत्मानमक्षरं ब्रह्म विद्धि ज्ञानात्..	जा. द. १।२५	पुरुषः [शाट्या. २२+	बृह. ४।४।१२
(?) आत्मानमनुविद्य ब्रजतो यत्तरः..	छा. उ. ८।८।४	(?) आत्मानं द्विधा पातयत्	बृह. १।४।३
आत्मानमजसा वेद्यि	आ. प्र. २२	आत्मानं द्विधाऽकरोदधेन	
आत्मानमखण्डमण्डलाकारमा-		स्त्री अभ्येन पुरुषः	सुबालो. २।२
वृत्त्य सकलब्रह्माण्डमण्डलं		आत्मानं नयति परं सन्धय	ब्रह्मो. १
स्वप्रकाशं ध्यायेत्	भावनो. १	(?) आत्मानं परमात्मानं...	रुद्रह. १२
(?) आत्मानमन्तकाले सव प्राणा		आत्मानं परमेश्वर	भ. गी. ११।३
अभिसमायांति	बृ. उ. ४।३।३८	आत्मानं प्रार्थयते	आश्रमो. १
आत्मानमन्तरात्मानं वा..ऽर्चयेत्	रामेपू. ५।५	आत्मानं.. मकारेण ब्रह्मणानुसन्दध्यात्	नृसिंहो. ७४
आत्मानमनन्यं ध्यायन् तदूर्ध्वबाहु-		आत्मानं मत्परायणः	भ. गी. ९।३४
र्विमुक्तप्रागो भवेत्	कठरु. ४	आत्मानं मोक्षयते	आश्रमो. ४
आत्मानमेन्तत उपसृत्य स्तुवीत	छां. १।३।१२	आत्मानं युञ्जतेति	मैत्रा. ६।३
आत्मानमन्विच्छेत् [जाबालो. ६+	ना. प. ३।८७	आत्मानं रथिनं विद्धि	
आत्मानमपि दृष्ट्वाऽहमनात्मानं		[कठो. ३।३+पैङ्गलो. ४।१+	भवसं. २।१०
त्यजाम्यहम्	आ. प्र. १८	आत्मानं रहसि स्थितः	भ. गी. ६।१०
आत्मानमरणिं कृत्वा प्रणवं...		आत्मानं वा प्रविभज्य कथं प्रातिष्ठते	प्रश्नो. ३।१
[ब्रह्मो. १८+ कैवल्यो. ११+	ध्या. वि. २२	आत्मानं सच्चिदानन्दं [अ. पू. ५।७४+	जा. द. ९।५
आत्मानमरणिं कृत्वा... पाशं		आत्मानं सच्चिदानन्दं ब्रह्म भावयेत्	व. सू. ५
वहति मानवः	सदानं. १५	आत्मानं सततं ज्ञात्वा	ना. वि. २१
		आत्मानात्मभावो भवेत्	सामर. ७५

आत्मानात्मविवेकमनुब्रूहीति	ते. बि. ५।१	आत्माश्रमिस्वाङ्गवंशजाता..	सि. शि. १०
आत्मानात्मविवेकादिमेवाभेद-		आत्मा सञ्चरते ध्रुवम्	ध्यानवि. १६
विवर्जितः	ते. बि. ५।४	आत्मा सर्वगतोऽच्छेद्यो...सा	
आत्मानात्मविवेकोऽयंमुच्यैवक्रियते..	यो. शि. ४।२२	चाहिंसा वरा	जा. द. १।८
आत्मा नारायणः परः [महाना.९।४+	त्रि.म.ना.७।११	आत्मा साम .. आत्मामः	छान्दो.१।७।२
आत्माऽन्तरात्मा परमात्मा ज्ञानात्मा		आत्मा स्थूलो न चैवाणुर्नप्रत्यक्षो..	अ. पू. २।२०
तुरीयास्मेत्वादिवाचकवाच्यः...	त्रि.म.ना. १।५	आत्माऽयं जन्तोर्निहिनो गुहायाम्	
आत्मापत्त्या निवर्तते	मैत्रे. १।७	[कठो. २।२०+ ना.प. ९।१३+	शरभो.१९
(?) आत्मा परशिवद्वयगुरुःशिवः	रुद्रोप. ३	आत्मा स्यादात्मचक्षुषाम्	पारमा. ३।६
आत्मा पश्चादात्मा पुरस्तात्	छान्दो.७।२५।२	आत्माहिस्वमहिमस्थोनिरपेक्षोपकपव	नृसिंहो. ९।६
आत्मा पुण्येभ्यःकर्मभ्यः प्रतिधीयते	२ ऐत. ४।४	आत्मा ह्यनीशः सुखदुःखहेतोः	नृसिंहो. ९।१
आत्माऽप्यनीशः सुखदुःखहेतोः	श्वेता. १।२	आत्माऽहं सर्वलोकानां	सर्वसा. १०
आत्मा ब्रह्मैव, ब्रह्मात्मैव	नृसिंहो. ९।९	आत्मा हि वरः	सहस्र.७०,२२
आत्मा भूतेष्वहमेव स्थितः	वासु. ३	आत्मा हि सर्वान्तरो नहीदं सर्व-	
आत्मा माया चेति कथं	सर्वसा. १	महमिति होवाच	नृसिंहो. ७।२
आत्मा मे शुष्यतां ज्योतिरहं विरजा		आत्मा ह्याकाशवज्जीवैर्घटाकाशैरिव..	अद्वैतो. ३
विषात्मा भूयास स्वाहा	महाना.१४।१६	आत्मा ह्येषामुद्रन्ता नियन्ता वा	मैत्रा. ६।३१
(कदाचित्) आत्मारामस्याखिल-		आत्मा ह्येषां स भवति	बृ. उ. १।४।१०
परिपूर्णस्य...उन्मेषो जायते	त्रि.म.ना.२।४	आत्मेतिशब्दहीनो य आत्मशब्दार्थ-	
आत्मारामस्यादिनारायणस्य		वर्जितः..एषैवात्मा सनातनः	ते. बि. ५।८
कीदृशानुन्मेषनिमेषौ	त्रि.म.ना.४।५	आत्मेत्येवोपासीत	बृह. १।४।७
आत्मारामस्वरूपोऽहिम	ते.बि.३।९	आत्मने भूताय आत्मन इति मन्यते	ग. शो. २।१
आत्मारामः कालत्रयाबाधित-		आत्मेदं सर्वं नारायणः	ना. उ. ता.१।५
निजस्वरूपः	त्रि.म.ना.१।५	आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहु-	
आत्मारामा महात्मानस्ते महापदं..	महो.४।३५,३६	र्मनीषिणः [कठो. ३।४+	पैङ्गलो. ४।३
आत्मावलोकनार्थं तु तस्मात्सर्वं		आत्मेन्द्रियमनोर्थानांसन्निकर्षात्प्रवर्तते	आयुर्वे. १०
परित्यजेत्	अ. पू. १।४६	आत्मेश्वरजीवोऽनात्मनां देहा-	
आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो		दीनामात्मत्वेनाभिमन्यते	
मन्तव्यो...[बृहं. २।४।५+	४।५।६	सोऽभिमान आत्मनो बन्धः	सर्वसा. २
आत्मा वा अस्य प्रचोदयिता	छाग. ६।२	(?)आत्मेश्वरोऽनात्मनो देहादीनात्म-	
आत्मा वा इदमेक एवात्र आसीत्	२ ऐत. १।१	त्वेन..(पाठः)	सर्वसा. २
आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव		आत्मेहकारोऽभिरीकारः	छान्दो.१।१३।१
शरदः शतम्	कौ.उ.२।११	आत्मैकत्वं विदित्वा त्वं..	महो. ४।११
आत्मा वै सर्वदेहिनाम्	शरभो.१६	आत्मैव नृसिंहोदेवःपरमेवब्रह्मभवति	नृसिंहो. ५।७
आत्मा शुद्धः सदा नित्यः..अज्ञाना-		आत्मैव नृसिंहोदेवोब्रह्मभवति,यपवः..	नृसिंहो. ५।१
न्मलिनो भाति ज्ञानाच्छुद्धो		आत्मैव रिपुरात्मनः	भ. गी. ६।५
भवत्ययम्	जा.द. ५।१३	आत्मैव संविशत्यात्मनाऽऽत्मानं..	नृसिंहो. २।७
आत्मा शुद्धोऽश्वरो नित्यश्चैतन्यः		आत्मैव सिद्धोऽद्वितीयः	नृसिंहो. ९।१
प्रकृतेः परः	भवसं. २।३०		

आत्मैव आत्मनो बन्धुः	भ.गी. ६।५	आदित्यप्रत्नस्य रेतसः... उद्वयन्त-	
आत्मैवाधस्तादात्मोपरिष्ठात्	छांदो. ७।२५।२	मसस्परि [छांदो. १।१७।७+	वा.सं. २०।२१
आत्मैवास्वदमर्त्मनाहिकर्मकरोति	बृ.उ. १।४।१५	[क्र.मं. १।९०।१८+तै.सं. ४।१।७+	अ.वे. ७।५३।७
आत्मैवास्य ज्योतिर्भवति	बृ.उ. ४।३।६	आदित्यप्रत्नस्य रेतस इत्येका	३ ऐत. २।४।४
आत्मैवास्य षोडशी कला	बृ.उ. १।५।१५	आदित्य इति होवाच	छांदो. १।११।७
आत्मैवाहमसन्नाहं	तै.वि. ६।६२	आदित्य उत्तररूपम्, आपः सन्धिः	तै.उ. १।३।२
आत्मैवाहं परं सत्यं	तै.वि. ६।५८	(अथ) आदित्य उद्वयन्यत्प्राची	
आत्मैवेदमम आसीत् (एक एव)..	बृ.उ. १।४।११, १७	दिशं प्रविशति	प्रभो. १।६
आत्मैवेदं सर्व..स वा एष एवं पश्यन्	छांदो. ३।७।२५।२	आदित्य उद्गीथः, नक्षत्राणि प्रतीहारः	छांदो. २।२०।१
आत्मैवेह मह्य आत्मा परिचर्यः	छांदो. ३।८।८।४	आदित्य ऊकारो निवह एकारः	छांदो. १।१३।२
आत्मोत्तरतः, आत्मैवेदं सर्वम्	छांदो. ७।२५।२	आदित्य एव सविता, द्यौः सावित्री	सावित्र्यु. ६
आत्मोपरिष्ठादात्मा पश्चात्	छांदो. ३।७।२५।२	(?) आदित्य एवोत्, वायुर्गीः	छांदो. ७।१।३।७
आत्मोपम्येन सर्वत्र	भ.गी. ६।३२	आदित्यजयाज्यो भवति	छांदो. २।१०।६
अ.दर्शनस्य शाखाः स्युः..	मुक्ति. १।१३	आदित्यज्योतिः सन्नाडिति होवाच	बृ.उ. ४।३.२
आधर्षणायाश्चिनो दधीचेऽयं		आदित्यदेवत इति स आदित्यः	बृ.उ. ३।९।२०
शिरः प्रतैरयतम्	बृ.उ. २।५।१७	आदित्यमण्डलं दिव्यं रश्मिज्वाला-	
आदरेण यथा स्तौति धनवन्तं		समाकुलम् । तस्य मध्यगतो	
धनेच्छया । तथा चेद्विश्व-		वह्निः प्रज्जालेत्...	यो शि. ५
कर्तारं को न मुच्येत बन्धनात्	वराहो. ३।१३	आदित्यमभिजयते	प्रभो. १०
(अथापि) आदर्शं वेदके वा जिह्वा-		आदित्यमथ दैश्वरेवं लोकेकद्वार..	छांदो. २।२४।१३
शिरसं...ऽऽत्मानं पश्येत्	इऐन. २।४।५	(?) आदित्यमुदीक्षमाण ऊर्ध्व-	
(?) आदर्शं पुरुष एनमेवाहं ब्रह्मोपासे	बृ.उ. २।१।९	बाहुस्तिष्ठन्	मैत्रा. १।२
आदातव्यमेवाप्येति य आदातव्य-		आदित्यमेव भगवो राजन्निति होवाच	छांदो. ५।६३।१
मेवास्तमेति [सुबालो. ९।७+	बृ.उ. २।१९	आदित्यमेवाप्येति य आदित्य-	
आदानादादित्यः	मैत्रा. ६।७	मेवास्तमेति	सुबालो. ९।२
आदायात्मानं परिपतन्ति	छांदो. ३।२।४	आदित्यलोकेषु गार्गीति	
आदावग्निमण्डलं, तदुपरि सूर्यमंडलं	मं.त्रा. २।२	(ओताश्च प्रोताश्च)	बृ.उ. ३।६।१
आदावन्तेचमध्ये च जनो यस्मिन्न		आदित्यवद्भास्यविलक्षणोऽहम्	कुण्डिको. १६
विद्यते । येनेदं सततं व्याप्तं		(?) आदित्यवर्णमूर्जस्वन्तं ब्रह्म	मैत्रा. ६।२४
स देशो विजनः स्मृतः	तै.वि. १।२३	आदित्यवर्णज्योतिस्तमस उपरिविभाति	त्रि.म.ना. ४।३
आदावन्तेचमध्येचभासतेनान्यहेतुना	पं.प्र. १८	आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्	भ.गी. ८।९+
आदावन्ते च यन्नास्ति वर्तमाने-		[श्वे.उ. ३।८+चिन्त्यु. १३।१+	त्रि.म.ना. ४।३
ऽपि तत्तथा [वैतथ्यो. ६+	अ. शां. ३१	आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे	महावा. ३+
आदावन्ते च संशान्तस्वरूपं..यत्	अ. पू. २।३९	[पारमा. ७।५+	चिन्त्यु. १२।७
आदावेव पैप्पलादेन सहोक्तमिति	बृ. जा. १।४	आदित्यवर्णे इमे मणिकुण्डले	इतिहा. ८५
आदिकलापुटितां श्रीकलां		आदित्यवर्णेतपसोऽधिजातोवनस्पति-	
श्रीकलापुटितां...	षोढोप. ३	स्तव बृहोऽथ विल्वः, तस्य	
आदिधान्तमूर्तिः सावधानभावा	अ. मा. २	फलानि... [क्र.खि. ५।८७।१०	श्री.सू. ६

'आदित्यवर्णे तपसः' इति हरिद्रां	
श्रीकण्ठे धारयेत्	नारदो. १
आदित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽक्षिणीं प्राविशत्	२पेत्. २।४
आदित्यसन्निधौ लोकश्चेष्टते स्वयमेव तु	
तथा मत्सन्निधावेव समस्तं चेष्टते..	वराहो. ३।१४
आदित्यस्तत्राधिदेवतम्	सुबालो. ५।१
आदित्यस्य सायुज्यं गच्छति	महाना. १।८।१
आदित्यस्य मध्य इवेत्यक्ष्ण्यग्नौ	
चैतद्ब्रह्मेतत्...	मैत्रा. ६।३५
आदित्यस्य रश्मय उभौ लोकौ	
गच्छन्ति...	छां. ३. ८।६।२
आदित्यस्यावृत्तमन्त्रावर्तयति	कौ. ३. २।८
आदित्यस्यावृत्तमन्त्रावर्तन्ते	कौ. ३. २।९
आदित्यं तृतीयं.. अग्निं तृतीयं.. (मा. पा.)	बृ. ३. १।२।३
आदित्यं तृतीयं वायुं तृतीयं	बृ. ३. १।२।३
(?) आदित्यं ब्रह्मेऽयुपास्ते	छां. ३. ३।१९।४
आदित्यं भास्करं भानुं रविं सूर्यं	
दिवाकरम्	वनदु. १२३
आदित्यं समविधं सामोपास्ते	छां. ३. २।९।८
आदित्यः प्रतिहारः	छां. ३. २।१।१
आदित्यः साम	छान्दो. १।६।३
आदित्यः प्रस्तावः	छां. ३. २।२।२
(?) आदित्यः सर्वेषां भूतानां मधु	बृ. ३. २।५।५
आदित्याच्चन्द्रमसम्	छान्दो. ४।१५।५
आदित्याज्जायते षष्ठिर्बृहद्रेरभंसतः प्रजाः	मैत्रा. ६।३७
आदित्याज्ज्योतिर्जायते	सूर्यो. ४
आदित्या दक्षिणाभिः	चिन्त्यु. ८।२
आदित्यादापो जायन्ते	सूर्यो. ४
आदित्या देवा जायन्ते	सूर्यो. ४
आदित्याऽग्निर्जायते	सूर्यो. ४
आदित्याद्वायुर्जायते	सूर्यो. ४
आदित्याद्देवा जायन्ते	सूर्यो. ४
आदित्याद्देव्युतम् (आदित्य एति)	बृ. ६।२।१५
आदित्याद्वयोम दिशो जायते	सूर्यो. ४
आदित्यानामहं विष्णुः	भ. गी. १०।२१
आदित्यानामेव तावदाधिपत्यं	
स्वाराज्यं पर्येता	छान्दो. ३।८।४
आदित्यानामेवैको भूत्वा	छान्दो. ३।८।३
आदित्यानां च विद्मेषां च देवानां	
तृतीयसवनम्	छां. ३. २।२४।१

आदित्यानां त्रिंशेऽं देवानां च... (मा. पा.)	
आदित्याय त्रिंशद्दे सहस्रकिरणाय	
धीमहि। तन्नः सूर्यः... [म. ना. ३।१०+	सूर्यो. ७
आदित्यानीमानि शुक्लानि यजुंषि	बृ. ६।५।३
आदित्यास्तस्मान्मा मुच्यतस्तस्यते...	सहस्रै. ३
आदित्या रुद्रा मरुतो वसवोऽश्विना-	
श्वो यजुंषे सामानि मन्त्रोऽग्नि-	
राज्याहुतिनां रायणः	सुबालो. ६।१
आदित्ये तृप्यति द्यौस्तृप्यति	छां. ३. ५।१९।२
(?) आदित्ये ते नो मयोऽमृतमयः पुरुषः	बृ. २।५।५
आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते	छां. ३. १।२.२
आदित्येन सह सावित्री स्तौति,	
स्तुवति.. प्रातः प्रसुवति	सन्ध्यो. २१
आदित्ये नैत्राय ज्योतिषाऽऽस्ते पश्ययते	
कर्म कुरुते विपश्येतीत्येवेनैव तत्	बृ. ६. ४।३।२
आदित्ये पुनः पक्कं क्रव्यादि	सुबालो. १२।१
(?) आदित्ये पुरुष एतमेवाहं ब्रह्मोपासे	बृ. ३. २।१।२
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिः	अरुणो. १
[अ. मं. १०।१५७।३+	अथर्व. २०।६३।२
आदित्यैरिन्द्रः सह सीषधातु	अरुणो. १
आदित्यैस्ताम्रं मौक्तिकं देवतैस्तैः	
(लिङ्गं पूजितम्)	सि. शि. २३
आदित्योऽग्निश्च दुर्गिश्च क्रमेण..	महाना. ६।१२
आदित्योऽज्योतिः प्रकाशं करोति	१पेत्. १।७।४
आदित्यो नव होता	चिन्त्यु. ७।४
आदित्योऽन्तःकरणमनोबुद्धि-	
चित्तादङ्गाराः	सूर्यो. ५
आदित्यो ब्रह्मेत्यादेशस्तस्योप-	
व्याख्यानम्	छां. ३. ३।१९।१
आदित्यो ब्रह्मेत्येके	मैत्रा. ६।१४
आदित्यो वा उद्गीथोऽसौ	
खल्वादित्यो ब्रह्म	शौनको. ४।३
आदित्यो वा एष एतन्मण्डलं तपति	
[महाना. १०।१+ राधोप. २।२+	सूर्यो. ५
आदित्यो वै तेज ओजो बलम्	महाना. १०।२
आदित्यो वै भर्गश्चन्द्रमा वै भर्गः	सावित्र्यु. १०
आदित्यो वै वचनादानागमन-	
विसर्गानन्दाः	सूर्यो. ६
आदित्यो वै वाक्पाणिपादपायूषस्थाः	सूर्यो. ५

आदित्यो वै ओषत्वक्चक्षुरसनघ्राणाः	सूर्यो. ५	आदौ बुद्धास्तथा मुक्ताः	अ. शां. ९८
आदित्यो वै शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः	सूर्यो. ६	आदौ रोगाः प्रणश्यन्ति पश्चाज्जाड्यं	
आदित्यो वै ध्यानः समानो-		शरीरजम् । ततः समरसोभूत्वा..	यो. शि. १।४६
दानोऽपानः प्राणः	सूर्यो. ५	आदौ विनायकं सम्पूज्य स्वेष्ट-	
आदित्यो वै सावित्री, आदित्येन सह..	सन्ध्यो. २१	देवतां नत्वा	शाण्डि. १।४।२
आदित्यो ह वै प्राणो रविरेव चन्द्रमाः	प्रश्नो. १।५	आदौ वेदादिमुद्यार्थ (मंत्रोद्धारः)	द. मू. ५
आदित्यो ह वै बाह्यः प्राण उदयति	प्रश्नो. ३।८	आदौ शमदमप्रायेर्गुणैः शिष्यं	
आदिदेवमजं विभुम्	भ. गी. १०।१०	विशोधयेत् । पश्चात्सर्वमिदं	
आदिवुद्धाः प्रकृत्यैव सर्वे धर्माः...	अ. शां. ९२	ब्रह्म शुद्धस्त्वमिति बोधयेत्	महो. ४।४
आदिब्रह्मस्वसंभित्	निर्वाणो. ३	आद्यत्रयं ब्रह्मरूपं (अस्तिभाति-	
आदिमध्यान्तवर्जितः (आत्मा)	ते. बि. ४।७६	प्रियात्मकं)	सरस्व. ४८
आदिमध्यान्तशून्यं कैवल्यं.. शान्तं	त्रि. म. ना. ७।७	आद्यन्तवन्तः कौन्तेय	भ. गी. ५।२२
आदिमध्यान्तशून्यं ब्रह्म	त्रि. म. ना. १।३	आद्यन्तशून्याः कवयः पुराणाः	वनदु. २१
आदिमध्यान्तहीनोऽरिमहाकाशसदृशः	ते. बि. ३।१०	आद्यन्ताभाववानहम्	ते. बि. ३।२९
आदिमध्यान्तहीनोऽहमाकाशसदृशः..	अ. वि. ९१	आद्यं वाग्भवं द्वितीयं कामराजं...	
आदिमध्यावसानेषु दुःखं सर्वमिदं यतः	अभ्युप. ५०	क्रमेण स्मरेत्	कामराज. १
आदिरन्तश्च चिन्मात्रं गुरुशिष्यादि		आद्यं पुरुषमीशानं पुरुदूतं पुरुदुतं	विष्णुह. १।७
चिन्मयं... अदृश्यं	ते. बि. २।३१	आद्यानि चत्वारि पदानि परब्रह्म-	
आदिरिति व्यक्षरं प्रतिहार इति		विकासीनि	त्रि. ता. १।४
चतुरक्षरं, तत इहैतत्समम्	छान्दो. २।१०।२	आद्या माया भवेच्छार्ङ्गं पद्यं	
आदिर्न विद्यते यस्य तस्य ह्यादि-		विश्वं करे स्थितम्	गोपालो. २।३१
र्न विद्यते	अ. शां. २३	आद्याविद्यागदावेद्या सर्वदामेकरे स्थिता	गोपालो. ३।२
आदिशक्तिरुमा चैषा...	अमन. २।११	आद्या व्यक्ताद्वादशमूर्तयः सर्वेषु लोकेषु	
आदिशक्त्या भूर्भुवस्त्रीणि स्वर्गभू-		सर्वेषु देवेषु.. तिष्ठन्तीति	गोपालो. ३।२
पातालानि...	त्रि. ना. १।१	आद्यो रा तत्पदार्थः स्यान्मकार-	
आदिशान्ता ह्यनुत्पन्नाः प्रकृत्यैव...	अ. शां. ९३	स्त्वम्पदार्थवान्	रामर. ५।१३
आदिश्च भवति य एवं वेद	माण्डू. ९+	आर्द्रा पुष्करिणीं पुष्टीं पिङ्गलां पद्म...	श्रीसू. १४
आदिः स संयोगनिमित्तहेतुः	श्वेता. ६।५	आर्द्रा यः करिणीं यष्टीं सुवर्णां हेम...	श्रीसू. १३
आदिसामान्यमुत्कटम्	आगमो. १।१९	आद्यो व्याधयोऽधियाम्	अभ्युप. २६
आदेश आत्मा, अथर्वाङ्गिरसः पुच्छम्	तैत्ति. २।३	आधानकरणी च द्विस्थानं सन्ध्यक्षरं	२ प्रणवो. १६
आदेशमध्यकटयन्तमग्निस्थान-		आधारश्चक्रमहसा विद्युत्पुञ्ज-	
मुदाहृतम्	त्रि. भा. २।१३८	समप्रभा । तदा मुक्तिर्न सन्देहः	यो. शि. ६।२६
आदौ जलधिजीमूतभरीनिर्झरसम्भवः ।		आधारनवकमुद्राः शक्तयः	भावनो. २
मध्ये मर्दलशब्दाभः (सिद्धयोगे		आधारमानन्दमखण्डबोधयस्मिँल्लयं	
श्रूयमाणो नादः)	ना. बि. ३४	याति पुरत्रयं च	कैव. १४
आदौ तारकवद्दृश्यते		आधाररहितोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।९
(ब्रह्मसाक्षात्कारचिह्नं)	मं. ब्रा. २।३	आधारवातरोधेन विश्वं तत्रैव दृश्यते	यो. शि. ६।२९
आदौ पुरुषोत्तमस्य... लीला भवन्ति	सामर. ५	आधारवातरोधेन शरीरं कम्पते यदा,	
		.. योगी नृत्यति सर्वदा	यो. शि. ६।२८

आधारशक्तिरव्यक्ता यया विश्वं प्रवर्तते	यो. शि. २।१२	आनन्द इत्येनदुपासीत	बृह. ४।१।६
आधारशक्त्यावधृतः कालाग्निरयमूर्ध्वगः	वृ. जा. २।९	आनन्दः क्रियामृतत्वफला	कात्याय. १
आधारं गुदमित्युक्तं स्वाधिष्ठानं तुलैकं	योगकुं. ३।१०	आनन्दघन एवाहमहं ब्रह्मास्मिकेवलं	ते. विं. ३।२६
आधारं प्रथमं चक्रं स्वाधिष्ठानं द्वितीयं	ध्या. विं. ४३	आनन्दघनमव्ययम्	अध्यात्मो. ६१
आधारं सर्वभूतानामनाधारं (ब्रह्म)..	यो. शि. ३।१८	आनन्दघनरूपोऽस्मि परानन्दघनो..	ते. विं. ४।३
आधाराख्ये गुदस्थाने पङ्कजं यच्चतुर्दलं,		आनन्दघनं ह्येवमस्मात्सर्वमात्...	नृसिंहो. २।३
तन्मध्ये प्रोच्यते योनिः..	ध्या. विं. ४२	आनन्दत्वं सदा मम	वराहो. ३।१०
आधाराज्जायते विश्वं विश्वं तत्रैव		आनन्दत्वाच्च मे दुःखमज्ञानाद्भाति	
लीयते । ..गुरुपादं समाश्रयेत्	यो. शि. ६।२२	सत्यवत् ।	आ. प्र. ३१
आधारादिषु चक्रेषु.. परं तत्त्वं		आनन्दं न मोहनं ज्योतिरिन्दोरेता	
न तिष्ठति	अमन. १।३	उ वै मण्डला मण्डयन्ति	त्रिपुरो. ४
आधाराद्यायुमुत्थाप्य स्वाधिष्ठानं..	हंसो. ४	आनन्दपादस्तृतीयः (ब्रह्मणः)	त्रि. म. ना. १।४
(१) आधाराद्ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तं ध्यायन्	हंसो. ४	आनन्दप्राधान्येनानन्दसाकारः	त्रि. म. ना. २।२
आधारे कमलालयम् (आत्मतीर्थं)	जा. द. ४।४९	आनन्दभरितस्यान्तोवैदेहीमुक्तपवसः	ते. विं. ४।३८
आधारे दहरेऽव्यक्ते स्वर्णस्फटिक-		आनन्दभुक्चेतोमुखः प्राज्ञः [माण्डू. ५+ रामो. २।३+]	नृसिंहो. १।३
वैदुमम् (शिवलिङ्गं)	सदानं. २	[ग. शो. १।३+५।६+नृ. पू. ४।२]	यो. चू. ७२
आधारे (चक्रे) पश्चिमं लिङ्गं		आनन्दभुक्तथा प्राज्ञः [आगम. ३+]	कठरु. २२
कवाटं तत्र विद्यते	यो. शि. ६।३१	आनन्दमय आत्मा तु ततोऽन्यश्चान्तरः..	सामर. ९७
आधारे ब्रह्मचक्रं त्रिरावृतं		आनन्दमयस्तु पुरुषोत्तमोऽतिरिच्यते	निर्वाणो. ४
भगमण्डलाकारं	सौभाग्य. २४	आनन्दमिक्षाशी	
आधारे (चक्रे) सर्वदेवताः, आधारे		आनन्दमन्तर्निजमाश्रयन्तमाशा-	
सर्ववेदाश्च	यो. शि. ६।२९	पिशाचीमवमानयन्तम्..	मैत्रे. १।१७
आधिन्ये सर्वसाम्ये वा नोपपत्ति-		आनन्दमयो ज्ञानमयो विज्ञानमय	सूर्यो. ६
हिं भिद्यते	अद्वैतो. १०	आदित्यः	
(अथ) आधिदैवतमग्निः पादो वायुः		आनन्दमयो ह्यानन्दभुक् चेतोमुखः	
पाद आदित्यः पादो दिशः पाद		प्राज्ञस्तृतीयः पादः [रामो. २।३+]	माण्डू. ५+
इत्युभयमेवादिष्टं भवति	छान्दो. ३।१८।२	[नृ. पू. ४।२+नृसिंहो. १।३]	
आधिदैवतमाकाशो ब्रह्मेत्युभय-		आनन्दमात्ररूपोऽस्मि...यः	
मादिष्टं भवति	छान्दो. ३।१८।१	स जीवन्मुक्त उच्यते	ते. विं. ४।३
आधिदैविकी या सृष्टिः सा...		आनन्दमात्रोऽयं करपादे तेजोमयो-	
लोकतां प्राप्नोति	सामर. ६+	ऽमृतमयः	सामर. ३९
आधिपत्यं स्वराज्यं पर्येता	छां. उ. ३।६।४	आनन्दमेतज्जीवस्य यज्ज्ञात्वा	
[+३।७।४+३।८।४+३।९।४+]	३।१०।४	मुच्यते बुधः	ब्रह्मो. २२
आधिभौतिकदेहं तु	योगकुं. १।७७	आनन्दमेवाप्येति य आनन्द-	
आधीतं बहिः, केतो अग्निः	चिन्मयु. १।१	मेवास्तमेति, तुरीयमेवाप्येति..	सुबा. ९।१, १३
आध्यात्मिकी कथां मुक्त्वा भिक्षा-		आनन्दयति दुःखाढ्यं जीवात्मानं	
वातीं विना.. ब्रूयाज्जल्पोन्य उच्यते	१ सं. सो. २।८४	सदा जनः	कठरु. २८
आनन्दाग्नेभ्यो यथा क्षुरः क्षुरधाने..	बृ. उ. १।५।७	आनन्दयितव्यमेवाप्येति य	
आनन्द आत्मा, ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठा	तैत्ति. २।५	आनन्दयितव्यमेवास्तमेति	सुबालो. ९।९

आनन्दयिता कर्ता	मैत्रा. ६।७	आनन्दशाम्बररूपोऽहमात्मसंस्थोऽहं..	ब्र. वि. ९२
आनन्दरसस्तु महालीलायाः		(अथ) आनन्दशाम्बतेनैतांश्चतुर्धासम्पूज्य	नृसिंहो. ३।४
कारणं भवतितराम्	सामर. ९९	आनन्दिनः प्रागा भवन्ति, अन्नं बहु..	छां. उ. ७।१०।१
आनन्दरूपममृतं यद्विभाति (तत्पश्यन्ति)	मुण्ड. २।२।७	आनन्देन च सन्तुष्टो सदाभ्यास-	
आनन्दरूपस्तेजोरूपः	ग. शो. २।४	रतो भवेत्	अमन. २।५२
आनन्दरूपास्तिष्ठन्ति		आनन्देन जातानि जीवन्ति (भूतानि)	तैत्ति. ३।६
कामायाज्ञं भविष्यति	प्रश्नो. २।१०	आनन्देन सदा पूर्णः सदा ज्ञानमयः	
आनन्दरूपे आश्रिताः... सन्मयतां		सुखम् । तथाऽऽनन्दमयश्चापि..	कठक. २४
प्रपेदिरे	सामर. १०२	आनन्दैकघनाकारा... सप्तमी	
आनन्दरूपेषु पुरुषोऽयं रमते	सामर. ३	भूमिका भवेत्	अ. पू. ५।८५
आनन्दरूपोऽहमखण्डबोधः	वराहो. ३।३	आनन्दैकघनाकारा सुपुष्ताख्या	
आनन्दवांश्च भवति, यो ह्येवं वेद	मैत्रा. ६।१३	तु पञ्चमी (भूमिका)	अ. पू. ५।८८
आनन्दव्यूहमध्ये सद्मस...		आनन्दो गोष्पशायते	१ अक्षर. ३
चिन्मयप्रासादम्	त्रि. म. ना. ७।९	आनन्दोऽजरोऽमृतः (एष प्राणः)	कौ. उ. ३।९
आनन्दश्च तथा प्राज्ञं विद्यावृत्तिं		आनन्दो नाम सुखचैतन्यरूपोऽपरिमिता-	
निबोधत	आगम. ४	नन्दसमुद्रोऽवशिष्टसुख.. (पाठः)	सर्वसा. ४
आनन्दसंवलितयामाययाऽऽनन्दा-		आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्	तैत्ति. ३।६
त्मक एव भवति	सामर. ९९	आनन्दो भवति, स नित्यो भवति	ग. शो. ५।८
आनन्दं नाम सुखचैतन्यस्वरूपो-		आनन्दोऽसि परोऽसि त्वं	ते. वि. ५।६६
ऽपरिमितानन्दसमुद्रोऽवशिष्ट-		आनीय मुदितात्मानमवलोक्य	
सुखस्वरूपश्चानन्द इत्युच्यते	सर्वसारो. ६	ननाम च	महो. २।२८
आनन्दस्य रतेः प्रजातेर्विज्ञातारं		आनुष्ठुभस्य मन्त्रराजस्य नारसिंहस्य	
विद्यः श्रेत्यां विजिज्ञासीत	कौ. उ. ३।८	फलं नो ब्रूहि भगवः	नृ. पू. ५।९
आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति	तैत्ति. ३।६	आनुष्ठुभस्य मन्त्रराजस्य नारसिंहस्य	
आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् विभेति		महाचक्रं नाम चक्रं नो ब्रूहि भगवः	नृ. पू. ५।१
कदाचन [तैत्ति. २।४ +	शरभो. १८	आनुष्ठुभस्य मन्त्र.. शक्तिं बीजं नो ब्रूहि	नृ. पू. ३।१
आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् सच्चिदानन्द-		आनुष्ठुभस्य मन्त्रराजस्य नारसिंहस्या-	
स्वरूपो भवति	ना. उ. ता. १।१	ङ्गमन्त्राज्ञो ब्रूहि भगवः	नृ. पू. ४।१
आनन्दं रतिं प्रजापतिं ते मयि दध		आनृशंस्यं सतां सङ्गः पारमैकान्त्यहेतवः	भवसं. ५।२१
इति पुत्रः	कौ. उ. २।१५	(ह्रीं) आनोदिवो बृहतः पर्वतादा	ऋ. मं. ५।४३।११
आनन्दं रतिं प्रजातिं मे त्वयि		[+ तै. सं. १।८।२२।१ +	सरस्व. ८
दधानीति पिता	कौ. उ. २।१५	आन्तरमग्निहोत्रमित्याचक्षते	कौ. उ. २।५
आनन्दं विज्ञानस्य (रसः)	मैत्रा. ६।१३	आन्तरं कर्म कुर्वते यत्रारम्भः स उच्यते	वराहो. ५।७३
आनन्दं परमालयं (आनन्दकोशं)	मैत्रा. ६।२७	(?) आप एव तदशितं नयन्ते, तद्यथा...	छांदो. ६।८।३
आनन्दा नाम ते लोकाः—[मा. पा.]	कठो. १।३	आप एव भगवो राजन्निति (मा. पा.)	छां. उ. ५।१६।१
(अथ) आनन्दान्मुदः प्रमुदः सृजते	बृह. ४।३।१०	आप एव यस्यायतनं, हृदयं लोको...	बृह. ३।९।१६
आनन्दाद्वयेन खल्विमानि		आप एवेदमग्र आसुः, ता आपः..	बृह. ५।५।१
भूतानि जायन्ते	तैत्ति. ३।६	आप एवेमा मूर्ताः, अप उपास्व	छांदो. ७।१०।१
आनन्दादिभ्यः परः सोऽहमस्मि	मैत्रे. १।१५		

आप एवेमा मूर्ताः, येयं पृथिवी	छांदो. ७।१०।१	आपः स्वराद्, आपश्छन्दांसि	महाना. ११।१
(१) आप येक्षन्त वक्ष्यः स्याम	छांदो. ६।२४	आपाण्डुरउदानस्तु(च)न्यानोह्यर्चिः	अ. ना. ३८
आप ओषधयो वनस्पतयः,		आपादमस्तकमहंमातापितृविवर्जितः।	
आकाश आत्मा	तैत्ति. १।७।१	इत्येको निश्चयो... बन्धाय...	महो. ६।५५
आपस्कार्पण्यमुत्साहो महो मान्यं		आपान्तमन्युस्तृपलप्रभर्माधुनिः..	महाना. ९।४
महोत्सवः। यन्नयन्ति न वैरूप्यं		आपायोर्हृदयान्नं च बह्विस्थानं..	१यो. त. २१
तस्य नष्टं मनो विदुः	अ. पू. ४।१३	आपाः ३ इत्याप इति	१पेत. १।८।१
आपस्तस्यथाकालं सुखदुःखेष्वनारतौ,		आपिः पिता सूरमहस्य विष्वक्	बा. मं. १३
संख्यासयोगिनौ विद्वि शान्तौ..	महो. ६।४७	आ पिपीलिकाभ्य उपजीवन्ति	वृ. ष. १।४।१६
आपतस्तु यथाकालं.. न दृश्यति		(१) आपूर्यपक्षस्य पुण्याहे द्वादशाहं..	वृ. ष. ६।३।१
ग्लायति यः स जीवन्मुक्त उच्यते	महो. २।४३	आपूर्यमाणपक्षाणाम् षडुद्देशेति	
आपदः क्षणमायान्ति क्षणमायान्ति		मासांस्तान् [छांदो. ४।१५।१	+ ५।१०।१
सम्पदः.. सर्वं नश्वरमेव तत्	महो. ३।१३	आपूर्यमाणपक्षाणाम् षणमासानुब-	
आपदां पतयः पापा भावा		ङ्कादित्य एति	बृह. ६।२५।२
भवविभूतये	भवसं. १।२६	आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं... स	
आपद्यमानोऽस्ति प्रकृतिपुरुषः	सामर. २६	शान्तिमाप्नोति.. [१ अवधू. ७+	अ. गी. २।७०
आपयतो वै तावन्योन्यस्य कामं	छान्दो. १।१।७	आपो ज्योतिरन्नं बहु कुर्वीत	तैत्ति. ३।११
आपयिता ह वै कामानां भवति	छान्दो. १।१।७	आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः	
आपश्छन्दांसि, आपो ज्योतींसि पि	महाना. ११।१	सुवरोम् [महाना. ११।७+१६।१	+ प्रा. हो. १।७
आपश्च तेजश्च तेषां संकृत्यै वर्षं	छां. ३. ७।४।२	[राधो. ४।२+	तै. आ. १०।१५।१
आपश्च तेषां संकृत्यै वर्षं संक..	(मा. पा.),	आपो ज्योती रसोऽमृतं.. ब्रह्म भूर्भुवः	
आपश्चापो मात्रा च, तेजश्च तेजो-		स्वरोम् [अ. शिरः ३।१३+वनदु. १२१	+ बटुको. २७
मात्रा च, वायुश्च वायुमात्रा च	प्रश्नो. ४।८	आपो ज्योतींषि, आपो यजूंषि	महाना. ११।१
आपस्तेजसि प्रलीयन्ते, तेजो वायौ..	सुबालो. २।२	आपो दिशो नक्षत्राणि चन्द्रमाः	छांदो. ४।१२।१
आपः पिण्डीकरणे (शरीरस्य)	गर्भो. १	आपो नैनं हृदयन्ति	सामर. १००
आपः पीताक्षेधा विधीयन्ते, तेषां यः		आपोऽन्नम्, आपोऽमृतम्	महाना. ११।१
स्थविष्ठो धातुस्तन्मूत्रं भवति	छान्दो. ६।५।२	(अथ) आपोऽप्यायनादित्येवं ह्याह	मैत्रा. ६।७
आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता...	महाना. ११।२	आपोभिर्गिरः, मनो हविः	चित्त्यु. ६।१
[+ तै. आ. १०।२३।१	प्रा. हो. १।८	आपो भित्त्वा तेजो भिनत्ति	सुबालो. ११।२
आपः प्राणा वा आपः पशवः	महाना. ११।१	आपो भूर्भुवः सुवरापञ्चम्	महाना. ११।१
आपः प्रोक्षणीभिः, ओषधयो बर्हिषा	चित्त्यु. ८।१	आपोमयः प्राणः, तेजोमयी वाक्	छान्दो. ६।५।४
आपः शब्दस्पर्शरूपरसगंधाः	त्रि. आ. १।३	[६।६।५+	६।७।६
आपः सत्यं, आपः सर्वा देवताः	महाना. ११।१	आपोमयः प्राणोनपिबतो विच्छेत्स्यते	छान्दो. ६।७।१
आपः सन्धिः, वैद्युतः सन्धानम्	तैत्ति. १।३।२	आपोऽमृतम्, आपः सम्राट्	महाना. ११।१
आपः सम्राट्, आपो विराट्, आपः स्वराट्	महाना. ११।१	आपोमयो वायुमय आकाशमयः (आत्मा)	बृह. ४।४।५
आपः सर्वा देवताः, आपो भूर्भुवः स्वः	महाना. ११।१	आपो यजूंषि, आपः सत्यम्	महाना. ११।१
आपः सृजते तेज उपास्वेति	छांदो. ७।११।१	आपो रेतो भूत्वा शिश्रं प्राविशत्	२पेत. २।४
आपः सृजंतु (सजंतु) रिनग्धानि चिच्छीत्		आपोऽर्धचन्द्रं शुक्लं च वंभीजं	१यो. त. ८८
वस मे गृहे [ऋ. खि. ५।८७।१०	श्री. सू. १२	आपो वरेण्यम्, चन्द्रमा वरेण्यम्	सावित्र्यु. १०

आपो वा अन्नम्, ज्योतिरन्नादम्	तैत्ति. ३।८	आप्यायस्व मदितमसोमविश्वामि-	
आपो वा अपोऽन्तरात्मा	पारमा. ५।७	रूतिभिः [क्र.मं. १।९१।१७+	वा.सं. १२।११४
आपो वा अर्कस्तद्यदां शर आसीत्	बृह. १।२।२	[+तै.सं. १।४।३२।१	चित्सु. १७।१
आपो वा इदमसत्सलिलमेव	यृ.जा. १।१	आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्पाणि..	शांतिपाठः
आपो वा इदमासत्सलिलमेव	नृ.पू. १।१	आप्याययंस्तेतथावीतशोकभयावभूवुः	२ प्रणवो. २७
आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतानि..	महाना. १।१।१	आप्यायस्व समेतु ते...सं ते पयांसि	
आपो वाऽन्नं ज्योतिरन्नादम्	सुबालो. १।४।१	...यमादित्या...एनास्तिस्मत्क्रवो..	कौ.उ. २।८
आपो वावाङ्माद्वयस्तस्माद्यदा वृष्टिर्न..	छांदो. ७।१०।१	आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम	
आपो विराट्, आपः स्वराट्	महाना. १।१।१	वृष्णयम् [क्र.मं. १।९१।१६+	वा.सं. ११।११२
आपो वै खलु मे ह्यसावयं तेलोकइति	कौ.उ. १।७	[+तै.सं. ३।२।५।३+	वनदु. २६
आपो वै सर्वा देवताः, सर्वाभ्यो		आप्यायस्वापक्षीयस्वेति	बृ.उ. ६।२।१६
देवताभ्यो जुहोमि स्वाहा	ना.प ३।७७	आ प्रा यावापृथिवी अन्नरिक्षं	सहवै. १७
[+याज्ञव. १+जात्रा. ४+	प.इ.प. ४	[क्र.मं. १।११५।१+ अ.वै.	१३।२।३५
आपो ह वाऽमे आसन्	गोपीचं. २७	आपूवस्व प्रपूवस्व आण्डीभव	अरुणो. १
आपोऽहं, तेजोऽहं, गुह्योऽहम्	अ.शिरः. १।१	आब्रह्मधीजदोषाः..मंत्रेणानेननाशिताः	रामो. ५।२५
आपो हास्मै श्रद्धां सन्नमन्ते		आब्रह्मभुवनाल्लोकाः	भ. गी. ८।१६
पुण्याय कर्मणे	१ ऐत. १।७।६	आब्रह्मस्तम्बपर्यंतं तनुमस्याः प्रचक्षते	गुह्यका. २३
आपो हि घा मयोभुवः [क्र.मं. १०।९।१	महाना. ५।१२	आब्रह्म स्थावरान्तमनन्ताखिला-	
+अ.वै. १।५।१+साम. २।११८७+	वा.सं. ११।५०	जाण्डभूतम्	महावा. ९
आपोहिष्ठेत्यभ्युक्ष्यप्राणायामान्कृत्वा	सन्ध्यो. १	आभासमात्रकं ब्रह्मन्.. सन्त्यज्य	
आप्तकाममात्मकाममकामं रूपं...	बृ.उ. ४।३।२१	निराभासो भवोत्तम	अ. पू. ५।३४
आप्तकाम आत्मकामो न तस्य प्राणा		आभासमात्रमेवेदं..सम्यग्ज्ञानंविदुर्बुधाः	अ. पू. ५।३३
उत्क्रामन्ति [बृ.उ. ४।४।३	नृसिंहो. ५।२	आभि-(कृष्णपरिवाररूपाभिः)	
आप्तकामस्य कामस्य का स्पृहा..	आगम. ९	भिन्नो न वै विभुः	कृष्णो. २५
आप्ततम उःकृष्टतम एतदेव ब्रह्मापि..	नृसिंहो. ५।६	आभूत्या सहजा वज्र सायक सहो..	
आप्तेरादिमत्त्वाद्वा स्थूलत्वात्...		[क्र.मं. १०।८४।६+अ.वै. ४।३।१६+	वनदु. ११२
(चतुरात्मा)	नृसिंहो. २।४	आ भ्रमध्यातु मूर्धान्तमाकाश-	
आप्तेरादिमत्त्वाद्वा आप्रोतिहवै. कामान्	माण्डू. ९	स्थानमुच्यते	१ यो.त. ९७
आप्तेपदेशगम्योऽसौ (ब्रह्मात्मा)	ब्र. वि. ३३	आमपात्रेऽग्निमुपसमाधाय	बृह. ६।४।१२
आप्तेति मनसस्पति, वाक्पति-		आमस्यामंरहि ते महि स हि	
श्रक्षुष्पतिः	तैत्ति. १।६।२	राजेशानोऽधिपतिः स मां	
आप्तेति सर्वान्कामांस्तृप्तिमान्भवति	छांदो. ७।१०।२	राजेशानोऽधिपतिं करोतु	बृह. ६।३।५
आप्तेति स्वाराज्यं, आप्रोति मनस..	तैत्ति. १।६।२	आ माऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा	तैत्ति. १।४।४
आप्तेति ह वा इदं सर्वमादिश्च		आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा	महाना. १३।५
भवति, य एवं वेद	नृसिंहो. २।४	आयतनवतो ह लोकाञ्जयति	छांदो. ४।८।४
आप्तेतिहवैसर्वान्कामानादिश्चभवति	माण्डू. ९	आयतनवानस्मिँल्लोके भवति	छांदो. ४।८।४
आप्तेतीहादित्यस्याजयं परो		आयतनं जनानां (भवति) य एवं वेद	बृह. ५।१।४, ५
हास्यादित्यजयाज्यो भवति	छांदो. २।१०।६	आयतनं नः प्रजानीहि यस्मिन्	
आप्तेत्यमृतत्वमक्षितिं स्वर्गे लोके	कौ.उ. ३।२	प्रतिष्ठिता अन्नमदामेति	२ ऐत. २।१

आयतनं वै जनानां, मनो वा		आरभ्य कुतपे आहं...रौहिणी	
आयतनं (मा.पा.)	बृ. उ. ६।१।५	नैव लङ्घयेत्	इतिहा. ५९
आयतनं स्वानां भवति	बृ.उ. ६।१।५	आरभ्य चासर्न पश्चात्..स्रवंतममृतं	
(१)आयतनाय स्वाहेत्यमा-		पश्येत्	जा. द. ५।५
वाज्यस्य हुत्वा मन्थे सम्पातं..	छां. उ. ५।२।५	आरम्भश्च घटश्चैव तथा परिचयः	
आयतमेकांगुलं पादतगोरस्य		स्मृतः । निष्पत्तिश्चेत्यवस्था च..	१ यो.त. २०
मूलं (पुण्ड्रं)	नारदो. १	आरम्भश्च घटश्चैव पुनः परिचय-	
आयुः प्राणः, प्राणो वा आयुः	कौ.उ. ३।२	स्तथा । निष्पत्तिश्चैव..चतस्र-	
आयस्य सद्भावागतेन चेतसा (भनुः)	मुंड. २।२।३	स्तस्य भूमिकाः (प्रणवस्य)	वराहो. ५।७१
आयस्मिन्सप्त परवः	चित्त्यु. ११।६	आगप्रमात्रोऽप्यपरो(खवरो)ऽपिदृष्टः	श्वेता. ५।८
आयातुवरदादेवीअक्षरं ब्रह्मसंमितम्	महाना. ११।६	आगधयेद्वाघवं चन्दनाद्यैः	रा.पू. ७।५
आयासाय स्वाहा	चित्त्यु. २०।१	आराध्यो भगवानेको...स एव	
आयुधानामहं वज्रम्	भ.गी. १०।२८	सर्वयोपास्यः....	भवसं. २।६०
आयुरनु सन्तनुतेति	छां.शे. ३।१६।६	आराममस्यपश्यन्तिनतं पश्यंतिकश्चन	बृह. ४।३।१४
आयुरन्नं प्रयच्छति	...	आरुणिः प्राजापत्यः प्रजापतेर्लोकं	
आयुरायासकारणम्	महो. ३।१०	जगाम	आरुणि. १
आयुर्दा अग्ने हविषो जुषाणो		आरुरुक्षोर्मुनेर्योगम्	भ.गी. ६।३
घृतप्रतीको...	सहवै. ६	आरूढपतितापत्यं कुनस्वीश्याव-	
आयुर्यज्ञः कीर्तिज्ञानैश्चर्यवान् भवति	नृ. पू. १।३	दन्तकः..नैव संन्यस्तुमर्हति	सं.सो. २।३
आयुर्होपासनेऽमृतम्	बृ. उ. ४।४।१६	आरोग्यं रूपवत्ताच..शुद्धाग्नेन	
आयुष्टे विश्वतो दधद्यमग्निर्वरेण्यः	सहवै. ६	भवन्ति हि	भवसं. ४।१०
आयुः पल्लवकोणाग्रलम्बास्त्रुकणभङ्गुरं	महो. ३।९	आरोपितस्य जगतः परिपालनेन	वराहो. २।६५
आयुः पृथिव्यां द्रविणम्	महाना. ११।९	आरो हृदो मुहूर्ता येष्टिहा	कौ.उ. १।३
आयुस्सत्त्वबलारोग्य-सुख-प्रीति-		आर्जवं नाम मनोवाक्कायकर्मणां	
विवर्धनाः...	भ. गी. १७।८	विहिताविहितेषु...एकरूपत्वम्	शाण्डिल्यो. १।३
आयुः प्रज्ञां च सौभाग्यं.. देहि मे		आर्तमिव वा एष तन्मेने	आर्षे. २।१
चण्डिके शुभे	वनदु. २५	आर्तवोऽस्म्यकाशाद्योनेः सम्भृतो...	कौ.उ. १।६
आयुः प्रज्ञां तथा शक्तिं प्रसमीक्ष्य..	शिवो. १।६	आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी	भ.गी. ७।१६
(१)आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः	श्वेता. २।५	आर्त्विज्यं करिष्यन्वाचि स्वरमिच्छेत्	बृ.उ. १।३।२५
आरण्यान् प्रास्याश्च ये [पु.सू. ८	ऋ.मं. १०।९०।	आर्द्रं ज्वलति, ज्योतिरहमस्मि	महाना. ६।७
[+वा.सं. ३।१६+ तै.आ. ३।१२।४	चित्त्यु. १२।४	आर्द्रं सन्दीप्तमसि विभुरसि	
आरण्याः पशवो विश्वरूपाः	चित्त्यु. ११।१२	प्रभुरसि (मा.पा.)	बृ.उ. ६।३।४
आरब्धकर्मणिक्षीणेव्यवहारोनिवर्तते,		आर्द्रं सन्दीप्तमसि विभूरसिप्रभूरसि	बृ.उ. ६।३।४
कर्मक्षये त्वसौ नैव शाम्ये-		आलम्बनतया भाति योऽस्मत्प्रत्यय-	
द्वयानसहस्रतः	१ अवधू. १९	शब्दयोः । अन्तःकरणसम्भिन्नबोधः	
आरंभेथामनुसरंभेथां समानं पंथा..	सहवै. १०	स त्वंपदाभिधः	अध्यात्मो. ३१
आरभ्य कर्माणि गुणान्वितानि		आललाटादाचक्षुषोरामृष्णोराभ्रुवो-	
भावांश्चसर्वान्विनियोजयेद्यः । तेषां..	श्वेता. ६।४	मध्यतश्च (भस्मत्रिरेखाः)	का.रु. ४
		आलोकयन्तं जगदिन्द्रजालमापत्कथं	
		मां प्रविशेदसङ्गम्	मैत्रे. १।१७

आलोमस्य आनखेभ्यः प्रतिरूपं (आत्मानं)	छान्दो. ८।८।१	आशापत्नी त्यजेद्यावत्तावन्मुक्तो न संशयः	मैत्रे. २।१२
आवपनमाकाशः, आकाशेहीदंसर्व..	१पेत. ३।१।२	(?) आशापराकाशौ तत्तावदेऽसौ	बृह. ६।४।१२
आवपनं ह वै समानानां भवति	१पेत. ३।१।२	आशापाशशतैर्वद्धाः	भ.गी. १६।१२
आवयोरन्तरं न विद्यते	त्रि.म.ना. ७।१०	आशापिशाचीमवमानयन्तम्..	
आवयोः पात्रभूतः सन् सुकृती		आपत्कथं मां प्रविशेदसङ्गम्	मैत्रे. १।१७
त्यक्तकस्मयः	कालिको. २	आशाप्रतीक्षं सङ्गतं सृष्टांचेष्टापूतं	कठो. १।८
आवहन्ती वितन्वाना, कुर्वाणा...	तैत्ति. १।४।१	आशाम्बरो न नमस्कारो... देव-	
आविष्टकमखिलकार्यकारणजा- (ज)		तान्नरध्यानशून्यः	प.हं.प. ११
मविद्यापाद एव	त्रि.म.ता. २।१	आशाम्बरो न नमस्कारो न दार-	
आधिरावीर्म एधि	२पेत. शां.	पुत्राभिलाषी..परिव्राट्परमेश्वरः	याज्ञव. १
(?) आविर्भावतिरोभावज्ञातास्वयमेव	सर्वसा. ५	आशा यातु निराशात्वमभावं	
आविर्भावतिरोभाव... जनस्य		यातु भावना	अ. पू. ५।३८
स्थिरतां यान्ति	भवसं. १।१८	आशा रशना, मनो रथः, कामः पशुः	प्रा.हो. ४।३
आविर्भावतिरोभावहीनः स्वयं ज्योतिः		आशा वाव स्मराभूयसी	छान्दो. ७।१४।१
साक्षीत्युच्यते	सर्वसा. ५	आशावैवश्यमुत्सृज्यनिदाषासङ्गतां ब्रज	अ. पू. ५।७
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः		आशाशरशलाकाढया दुर्जया	
पुरुषात्परम् ।	गणप. ९	हीन्द्रियारयः	महो. ५।७७
आविर्भूतेऽन्तराकाशे शनकैरवदेवाव-		आशां मनुष्येभ्यः (आगायाति)	छान्दो. २।२२।२
त्कृद्धातुकामः संनिशति	मैत्रा. ६।२८	आशाः समस्ताः प्रतरन्ननु	
आविर्हि शरीरम्	१पेत. ३।६।७	तमन्तस्तास्ता वसेत्	पारमा. ८।८
आविष्कृतमेतेनास्य यज्ञं..	मैत्रा. ६।३४	आशिष्ठोऽद्रिष्ठोऽलिष्ठः, तस्येयं पृथिवी	तैत्ति. २।८
(अथ) आविः सन्नभसि निहितं...		आशीर्युक्तानि कर्माणि.. नैव	
अन्तर्हृदयाकाशं वितुदन्ति	मैत्रा. ६।२७	कुर्यान्नि कारयेत्	ना.प. ५।३२
आविस्सन्निहितं गुहाचरं नाम	मुण्ड. २।२।१	आशेद्धो वै स्मरः.. कर्माणि कुरुते	छान्दो. ७।१४।१
आवीन्माम्, आवीद्वक्तारम्	तैत्ति. १।१२।१	आश्रयवच्चैनमन्यः शृणोति	भ.गी. २।२९
आवृणोत्यपरा शक्तिः सा		आश्रयवत्पश्यति कश्चिदेनं	भ.गी. २।२९
संसारस्य कारणम्	सरस्व. ४३	आश्रयवद्दति तथैव चान्यः	भ.गी. २।२९
आवृतं ज्ञानमेतेन	भ. गी. ३।३९	आश्रयो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः	कठो. २।७
आवृताज्यं संस्कृत्य पुंसा नक्षत्रेण		आश्रयो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा..	कठो. २।७
मन्थं सन्नीय जुहोति	बृह. ६।३।१	आश्रयोऽस्य वक्ता कुशलोऽलब्धा (मा. पा.)	कठो. २।७
आवृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्	कौ. उ. ४।१	आश्रमा इति तद्विदः	वैतथ्यो. २७
आवृत्तिं चैव योगिनः	भ.गी. ८।२३	आश्रमास्त्रिविधा हीनमध्यमो-	
आवृत्तौ तु विनष्टायां भेदे भातेऽपयाति..	सरस्व. ४५	त्कृष्टदृष्टयः	अद्वैतो. १६
आवेदितोऽसौ याष्टीर्नैर्जनकाय....	महो. २।२१	आश्रमेऽवेवावस्थितस्तपस्वी चेत्स्युच्यते	मैत्रा. ४।३
आवेशश्चेतसो ज्ञानमर्थानां		आश्रयाश्रयहीनोऽस्मि	मैत्रे. ३।९
छन्दतः क्रिया	आयुर्वे. १२	आश्रित्य मामकपदं हृदि भावयस्व	वराहो. २।४५
आशया रक्ततामेति (मनः)	महो. ६।७५	आश्रयुकुलकलपक्षस्य द्वितीयामयुतं	
		फलम् । अन्तेन वाऽथवा	इतिहा. १०

आसनद्वयो योगी..वार्युचन्नेणापूर्य	
यथा त्यजेत्तया सम्पूर्य	शाण्डि. १.७।५
आश्वाशु गच्छत	ग.पू.४।२५
आश्वाश्यामास च भीतमेनं	भ.गी.११।५
आसनमाहृत्योदकमाहारयाश्चकार	वृ.उ.६।२।४
आसनं तु प्रयत्नेन बुद्ध्या पूजति..	दुर्वासो.२।२
आसनं द्विविधं प्रोक्तं पद्यं	
वज्रासनं तथा	योगकुं.१।४
आसनं पद्मकं बद्धा यच्चान्यथापि	
रोचते । नासाग्नेष्टि..	यो.शि.१।७०
आसनं पात्रलोपश्च, सञ्चयः	सं.सो.२।७।५
आसनं प्राणसंरोधो ध्यानं चैव समा-	
धिकः..एतच्चतुष्टयं विद्विष्ये योगेषु..	योगरा.२
आसनं प्राणसंरोधः प्रत्याहारश्च धारणा,	
ध्यानं समाधिरेतानियोगाङ्गानि	
भवन्ति षट् [यो.चू.२+	ध्या.विं.४१
आसनं मूलबन्धश्च देहसाम्यं च..	ते.विं.१।१५
आसनं विजितं येन जितं तेन	
जगज्जयम् [त्रि.ब्रा.२।५२+	जा.द.३।१३
आसनं स्वस्तिकं कृत्वा पश्चात्पश्चात्..	योगो. १९
आसनानि च सावन्ति यावन्त्यो	
जीवजातयः	ध्या. विं. ४२
आसनानि तदङ्गानि स्वस्तिकादीनि..	त्रि. ब्रा. २।३४
आनान्यष्टौ-त्रयः प्राणायामाः,	
पञ्च प्रत्याहाराः	शाण्डि.१।१।२
आसनेन रुजं हन्ति	
प्राणायामेन पातकम्	यो.चू. १०९
आसप्तमान् (त) पुरुषयुगान् पुनाति	अ.शिरः १६+
	महो. ६।८४
आसप्तमांस्तस्य लोकान् दिनस्ति	मुण्ड. १।२।३
आसन्न्यकर्णान्तमूर्ध्वेगा शङ्खिनी	शाण्डि. १।४।६
आ सहस्रात् पङ्क्तिं पुनन्ति	महाना. १२।१
	गणप. १,२,३
आसामङ्गैकां भिन्धीति (गुरुराह)	छांदो. ६।१२।१
आसां (योगभूमिकानां) अन्तः-	
स्थिता मुक्तिर्यस्यां भूयो न शोचति	महो. ५।२६
आसामपां सर्वाणि भूतानि मधु	बृह. २।५।२
आसां दिशां सर्वाणि भूतानि मधु	बृह. २।५।६

आसां मुख्यतमास्तिस्रस्तिसृ-	
ष्वेकोत्तमोऽत्तमा	जा.द. ४।९
आसां स्त्रीणां सुकृतं वृद्धे	बृह. ६।४।३
आसिञ्चतुप्रजापतिर्धातागर्भवधातुते	बृह. ६।४।२१
[ऋ. मं. १०।१८४।१+	अ.व. ५।२५।५
आसीनोदग्रं व्रजति शयानो याति सर्वतः	कठो. २।२१
आसुरं भावमाश्रिताः	भ. गी. ७।१५
आसु तदा नाडीषु मृगो भवति	छांदो. ८।६।३
आसुरं पार्थ मे शृणु	भ. गी. १६।६
आसुरीष्वेव योनिषु	भ.गी. १६।१९
आसुरीं योनिमापन्नाः	भ.गी. १६।२०
आसुवस्वरस्मै, वाचस्पतिः..पिबति	चित्यु. २।१
आस्तिक्यं नाम वेदोक्तचर्मार्धमेषु	
विश्वासः	शाण्डि. १।२।१
आस्था नायुषि युज्यते	महो. १।११
आस्थामात्रमनन्तानां दुःखानामाकरं	
विदुः । वासनातन्नुबद्धोऽयं..	महो. ५।८५
आस्थिता जनकादयः	भ.गी. ३।२०
आस्थितो योगधारणाम्	भ.गी. ८।१२
आस्यवशिष्टैरन्नपानैश्चा-	
ऽऽस्यमाहवनीयमिति	मैत्रा. ६।३६
आस्मासुनृगं धात्स्वाहा(?)	चित्यु. १।२
आस्यनासिकयोर्मध्ये..प्राणसंज्ञोऽनिलः	जा.द. ४।२६
आस्यनासिकयोर्मध्ये हृदयं नाभि-	
मण्डलं पादाङ्गुलिमिति प्राणस्थानानि	त्रि.ब्रा. २।८०
आस्यनासिकाकण्ठनाभिपादाङ्गुलिद्वय	
...प्राणः सञ्चरति	शाण्डि. १।४।७
आऽस्य स्त्रियः सुकृतं वृजते	बृह. ६।४।३
आस्येन तु यदाहारंगोवन्मृगयते मुनिः,	
तदा समः स्यात्सर्वेषु..सोऽमृतत्वाय	
कल्पते [ना.प. ५।२३+	सं.सो. २।७८
आहरिष्यामि देवानां..पुलकै-	
श्छादयाम्यहम्	बृ.जा. ३।२०
आहवनीयगार्हपत्यवक्षिण-	
सभ्याग्निषु	परब्र. ३
आहवनीयः साम सुवर्गो लोको बृहत्	महाना. १७।१८
आहवनीये गार्हपत्ये..प्राणापान-	
व्यानोदानश्च मानान् समारोपयेत्	कठश्रु. ४

(१) आहवनीयो भूत्वा मुखे तिष्ठति प्राणाग्निः २।४
 आहं मां देवेभ्यो वेदा ओमदेवान् वेद १ ऐत. १।८।२
 आहारशुद्धौ चित्तस्य विशुद्धिर्भवति पा.प्र. ४१
 आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः, सत्त्वशुद्धौ
 ध्रुवा स्मृतिः छांदो. ७।२६।२
 आहारस्त्वपि सर्वस्य भ.गी. १७।७
 आहारस्य च द्वौ भागौ तृतीयमुदकस्य च,
 वायोः सञ्चरणार्थाय चतुर्थमव.. सं.सो. २।५९
 आहाराचारधर्माणायत्कुर्याद्दृक्दीश्वरः शिवो. ७।३९
 आहारा राजसस्येष्टाः भ.गी. १७।९
 आहारा विविधा भुक्ताः [गर्भो. ४+ निरुक्तो. १।६
 आहाराः सात्त्विकप्रियाः भ.गी. १७।८

आहास्मिन्ननादोजायते भवत्यस्यान्नं.. १ ऐत. ३।१।२
 आ हास्य देवा हवं गच्छन्ति,
 यस्तथाऽधीते संहितो. १।२
 आहिताग्निर्विरक्तश्चेद्देशान्तरगतो
 यदि । प्राजापत्येष्टिमप्स्वेव...
 संन्यसेत ना.प. ३।१०
 आहिताग्निः सदा पात्रं... शूद्राञ्च
 यस्य नोदरे इतिहा. ३७
 आहुतीनां यज्ञेन यज्ञस्य दक्षिणाभिः सहवै. १९
 आहुस्त्वामृषयः सर्वे भ.गी. १०।१३
 आहृदयाद्भ्रुवोर्मध्यं वायुस्थानं... १ यो. त. ९४
 आहो विद्वानमुंलोकं प्रेत्य कश्चित्... तैत्ति. २।६

इ

इच्छयाऽऽप्नोति कैवल्यं
 षष्ठेमासि.. (योगी) अ. ना. ३०
 इच्छाज्ञानक्रियाशक्तित्रयं यद्वाव-
 साधनम् । तद्ब्रह्मसत्ता सामान्यं
 सीतातत्त्वमुपास्महे सीतो. १
 इच्छाद्वेषसमुत्थेन [भ.गी. ७।२७+ सं. सो. २।३०
 इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं भ.गी. १३।७
 इच्छाद्वेषात्मिका तृष्णा सुख-
 दुःखात्प्रवर्तते आयुर्वे. ६
 इच्छामयेन चैवेषुणेमानि खलु
 हन्ति भूतानि मैत्रा. ६।२८
 इच्छामात्रमविद्येयं तन्नाशो मोक्ष उच्यते महो. ४।१६
 इच्छामात्रं प्रभोः सृष्टिः... मन्तेकाल.. आगम. ८
 इच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव भ.गी. ११।४६
 इच्छारूपो हि योगीन्द्रः स्वतन्त्र-
 स्त्वजरामरः यो.शि. १।४३
 इच्छाशक्तिर्महात्रिपुरसुन्दरी भावनो. २
 इच्छाशक्तिरूपां स्वप्नावस्थान...
 तृतीयकूटां मन्यन्ते श्रीवि. ता. ३।१
 इच्छाशक्तिस्त्रिविधा (भवति) योग-
 शक्तिर्भोगशक्तिर्वीरशक्तिरिति सीतो. २६, २७
 इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिः
 आश्वाच्छक्तिः (त्रिधा शक्तिः) सीतो. ७
 इज्यते भरतश्रेष्ठ भ.गी. १७।१२

इडया प्राणमाकृष्य... पश्चाद्विरे-
 चयेत्सम्यक् जा. द. ५।७
 इडया बाह्याद्यायुमापूर्य षोडशमात्रा-
 भिरकारं चिन्तयन् शाण्डि. १।६।१
 इडया वायुमाकृष्य.. अकारं तत्र संस्मरेत् जा. द. ६।३, ५, ७
 इडया वायुमाकृष्य भ्रुवोर्मध्ये
 निरोधयेत्.. व्याधिभिर्मुच्यते हिंसः जा. द. ६।२७
 इडया वायुमापूर्य.. ओङ्कारं देहमध्यस्थं
 ध्यायेत्.. [ध्या. वि. २०+ १ यो. त. ४१
 इडया वायुमापूर्य ब्रह्मन् षोडशमात्रया त्रि. ब्रा. ३।९६
 इडया वायुमारोप्य शनैः ,, ,, १ यो. त. ४१
 इडया वेदतत्त्वज्ञस्तथा पिङ्गलयेव च,
 नाभौ निरोधयेत्तेन व्याधिभि-
 र्मुच्यते नरः जा. द. ६।२८
 इडाच पिङ्गलाचैव तस्याः पार्श्वमुपागते यो. शि. ५।१८
 इडा च पिङ्गला चैव तस्याः
 सव्ये तरे स्थिते त्रि. ब्रा. २।७०
 इडा तिष्ठति वामेन पिंगला दक्षिणेन.. क्षुरिको. १६
 इडा तिष्ठति वामेन... तयोर्मध्ये
 परं स्थानं.. यो. शि. ६।६
 इडा तु सव्यनासान्तं संस्थिता
 मुनिपुङ्गव जा. द. ४।१९
 इडादिमार्गद्वयं विहाय सुषुम्ना-
 मार्गेणागच्छेत् शाण्डि. १।७।३७

इडापिङ्गलयोर्मध्येसुषुम्नासूर्यरूपिणी
 सर्वं प्रतिष्ठितं..तस्मिन्. यो.शि.६।९
 इडापिङ्गलयोर्मध्ये...तत्र सत्यं
 प्रतिष्ठितम् शां.डि.१।७।४१
 इडापिङ्गलयोर्मध्ये...वायुमूर्ध्वं
 च कारयेत् वराहो. ५।६७
 इडापिङ्गलयोः सन्धि यदा प्राणः
 समागतः । अमावास्या तदा प्रोक्ता जा.द. ४।४२
 इडाचपिङ्गलाचैव सुषुम्ना च तृतीयका
 (गा) (१० नाड्यः)। ध्या. बि. ५२+ यो.चू.१६
 इडापिङ्गलासुषुम्नाः..नाड्यश्चतुर्विंश.. शाण्डि.१।४।५
 इडापिङ्गलासौषुम्नाः प्राणमार्गे च
 संस्थिताः यो.चू. २१
 इडापृष्ठभागात्सव्यनेत्रान्तगागान्धारी शाण्डि.१।४।५
 इडाया देवताहरिःपिङ्गलायाविरिचिः जा.द. ४।३९
 इडायां चन्द्रमानित्यं चरत्येवमहामुने जा.द.४।३९
 इडायां चन्द्रश्चरति पिङ्गलायां रविः शाण्डि. १।४।६
 इडायांपिङ्गलायांतुप्राणसंक्रमणं मुने ।
 दक्षिणायनमित्युक्तं.. जा. द. ४।४१
 इडायां बहतिप्राणेबद्धापद्यासनंरुढं योगकुं.१।१०
 इडायां हेमरूपेण वायुर्वामेनगच्छति यो. शि.५।१९
 इडायाः कुण्डली स्थानं यदा प्राणः
 समागतः । सोमप्रहणमित्युक्तं.. जा. द. ४।४६
 इडायां स्तुभं घृतवच्चराचरम् चित्त्यु.११।१३
 इडा वामे स्थिता भागे पिङ्गला
 दक्षिणे स्थिता । सुषुम्नामध्यदेशे
 तु प्राणमार्गाख्यः स्मृताः ध्या.बि.५५
 इडा समुत्थिता कन्दाद्वामना-
 सापुटावधि त्रि.ब्रा.२।७०
 इडा तु सव्यनासान्तं संस्थिता
 मुनिपुङ्गव जा.द.४।१९
 इत आत्मा ततोऽप्यात्मा नास्त्य-
 नात्ममयं जगत् महो.६।१०
 इतरत्सर्वं महात्रिपुरसुन्दरी बह्वचो. ३
 इतरत्रनकर्तव्या मनोवृत्तिर्मनीषिणा शाण्डि.१।७।३७
 इतरशास्त्रप्रवृत्तिर्यतेरस्तिचे-
 च्छवालङ्कारवत्... ना.प.५।११
 (अथ)इतरः सव्यमंसमन्ववेक्षते कौ.उ.२।१५
 इतरा गर्दभीतरो गर्दभः, इतरा
 विश्वम्भरीतरो विश्वम्भरः सुबालो. २।२

इतरा गौरितरोऽनङ्गानितरा
 बडवेतरोऽश्वः सुबालो.२।२
 इतरान्प्राणान् समस्विदत् छान्दो.५।१।१२
 इतरेण चतुर्थेनानिरुद्धनारायणेन
 विश्वान्यासन् सुबालो.२।४
 इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेता-
 वुपाश्रितौ (प्राणापानौ) कठो.९।५
 (अथ)इतरे दुःखमेवापियन्ति
 [वृ.उ.४।४।१४+ श्वेता.३।१०
 (तथा)इतरोऽभोक्ता कृष्णो भवति गोपालो.१।११
 इतश्चेतश्च सुव्यमं व्यर्थमेवाभिधावति महो.३।१८
 इतस्ततश्चात्यमानो यत्किञ्चित्प्राण-
 वायुना..स्रोतसा नीयते दारु.. २आत्मो.१८
 इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं भ.गी.१३।१९
 इतिखल्वेतस्याक्षरस्योपन्याख्यानं छां.उ.१।१।१०
 इतिगर्वदधौयावन्तावद्र्याप्तं व्योम... ग.शो.३।१३
 इति गुह्यतमं शास्त्रं भ.गी.१५।२०
 इति तान्प्रजापतिरब्रवीदेतै-
 मैत्रैर्नित्यं देवं स्तुवध्वम् नृ.पू.४।३६
 इति ते ज्ञानमाख्यातं भ.गी. १८।६३
 इति त्रिशङ्कोर्वेदानुवचनम् तैत्ति.१।१०
 इति नु कामयमानः (संसरति) बृह.४।४।६
 इति नु जातपुत्रस्याथाजातपुत्रस्याह कौ.उ.२।८
 इति न्यमीमिषदा३इत्यभिदैवतम् केनो.४।४
 (?) इति प्राचीनयोग्योपास्व तैत्ति.१।६।४
 इति ब्रह्मवरं लब्ध्वा श्रुतयः...
 कृष्णमाराधयामासुः गोपीचं.२८
 इति भगवतो वचो वेदयन्ते छां.उ.८।७।३
 इति मत्वा न सज्जते भ.गी.३।२८
 इति मत्वा भजन्ते मां भ.गी.१०।८
 इति मन्द्र-मध्यम-तालज-ध्वनिभि-
 र्मनसा वाचोच्चार्य.. ना.प.४।४६
 इति मानुषीः समाज्ञाः तैत्ति.३।१०।१
 इति मां योऽभिजानाति भ.गी.४।१४
 इति यः पूजयेन्नित्यं...ईश्वरं..
 प्राप्नोति परमं पदम् । शिवो.७।४२
 इति व्याहृतिं त्रैष्टुभं छन्दः पञ्चदशं
 स्तोमं..गंधघ्राणमितीन्द्रियाण्यभवन् २प्रणवो. ३
 इतिशुश्रुम पूर्वेषांयेनस्तद्व्याचक्षिरे केनो.१।४

इतिशक्तिमयंचेतोचनाहङ्कारतांगतम् ।
 कोशकारकुमिरिव स्वेच्छया
 याति बन्धनम् । महो. ५।१२८
 इति षोडशकलासृतस्य जीवस्या-
 वरणनाशनम् कलिसं. ३
 इतिषोडशकं नाम्नां (हरे रामेति)
 नातः परतरोपायः... कलिसं. ३
 इतिषप्तविधो मोहः, पुनरेवः...
 मिष्टो भवत्यनेकाग्र्यं.. महो. ५।९
 इति ह प्रजापतिर्देवाननुशशास
 नृसिंहो. ९।१०
 (१) इतिह प्रतीकान्युदाजहार
 बृ.उ. ६।२।३
 इतिहभगवतोवाचोवेद्यन्ते (मा.पा.) छां.उ. ८।७।३
 इति ह स्माह कौरव्यायणी पुत्रो वेदः बृह. ५।१।१
 इतिहासपुराणं पञ्चमवेदानां वेदं पित्र्यं
 राशिं देवं निधिं (अथ्येमि) छांदो. ७।१।२
 इतिहासपुराणं पुष्पं ता अमृता आपः छांदो. ३।४।१
 इतिहासपुराणाख्यमुपाङ्गं
 च प्रकीर्तितम् सीतो. २१
 इतिहासपुराणानां रुद्राणां शत-
 सहस्राणि...भवन्ति अ.शिरः-७
 इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः..
 [बृह. ४।१।२+४।५।११ +मैत्रा. ...
 इति होक्त्वा याज्ञवल्क्यो विजहार बृह. ४।५।१५
 इतीति न्यमीमिषदा इत्यधिदैवतं केनो. ४।४
 इतीमा महासंहिताः तैत्ति. १।३।४
 इत्यम्भुतक्षयान्नित्यं जीवितं...
 उडयाणंकुरुते यस्मात्..महाखगः वराहो. ५।६
 इत्यम्भुतमतिः शास्त्रगुरुसज्जन-
 सेवया । सरहस्यमशेषेण यथाव-
 दधिगच्छति अक्षयुप. १७
 इत्थं क्रमाद्विवृद्धेन लयाभ्यासेन
 योगिनः । भुञ्जते परमानंदं.. अमन. १।८२
 इत्थं भस्म सुसंपाद्य शुष्कमादाय.. बृ.जा. ३।३०
 इत्था जहामि शपमानमिन्नु वा.मं. ७
 इत्था ददध्रे भुवनानि विश्वा वा.मं. ११
 इत्था न कश्चोरणमाचक्षे वा.मं. २
 इत्यज्ञानविमोहिताः भ.गी. १६।१५
 इत्यज्वीन्मे विदग्धः शाकल्यः,
 इदं वै ब्रह्मेति बृह. ४।१।७

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा भ.गी. ११।५
 इत्यहं वासुदेवस्य भ.गी. १८।७४
 इत्याह भगवान्प्रह्लाणं नारायणः तुलस्यु. १८
 इत्यां ते मयि दध इति पुत्रः कौ.उ. ३।१५
 इत्यां मे त्वयि दधानीति पिता कौ.उ. ३।१५
 इत्याद्यां विद्यामभिधायैतस्याः
 शक्तिकूटं...लोपामुद्रेवम् त्रि.वा. १।१६
 इत्युक्तानुशासनासि मैत्रेयि एतावद्दूरे
 स्वत्वमृतत्वम् बृह. ४।५।१५
 इत्युभयमादिष्टं भवत्यध्यात्मं
 चाधिदैवतं च छां.उ. ३।१८।१,२
 इत्येकं परब्रह्मरूपं सर्वभूताधिवासं
 तुरीयं जानीते त्रि.वा. ५।२१
 (ॐ) इत्येतदक्षरं ब्रह्म, तदेवो-
 पासितव्यम् तारका. २।१
 इत्येतद्ब्रह्मजानीयाद्यः स
 मुक्तो न संशयः पं.अ. २४
 इत्येतानुविधं संहितां सन्धीयमानां
 मन्य इति ह स्माह बाध्यः इपेत. २।३।३
 इत्येव तदवोचं तदवोचम् (मा.पा.) छां.उ. ३।१५।७
 इत्येतदवोचं तदवोचम् छां.उ. ३।१५।७
 इत्येवं निर्वाणानुशासनम् सुबालो. ७।३
 (१) इदन्द्रो ह वै नाम, तमिदन्द्रं सन्त-
 मिन्द्र इत्याचक्षते परोक्षेण २देत. ३।१४
 इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्व-
 शीर्षजपफलमवाप्नोति देव्यु. ३।४
 इदमथर्वशीर्षज्ञात्वा योऽर्चं स्थापयति देव्यु. २४
 इदमद्य मया लब्धमिदं प्राप्स्यामि
 सुन्दरम्..आत्मनोऽन्यन्नहि.. अ. पू. ५।५८
 इदमद्यमया लब्धमिदं प्राप्तेमनोरथम् भ.गी. १६।१३
 इदमन्तरं ज्ञात्वा स परमहंसः प. हं. ८
 इदममनस्कमतिरहस्यं यज्ज्ञानेन
 कृतार्थो भवति मं. ब्रा. ३।१
 इदममृतमिदं ब्रह्मेदं सर्वं बृह. २।५।१
 [२,३,४,५,६,७,८ ९,१०-१४
 इदमेषोत्तरशतं न देयं..नास्तिकाय.. मुक्तिकौ. १।४७
 इदमस्तीदमपि मे भ.गी. १६।१३
 इदमस्तु ममेत्यन्तमिच्छां..तां
 तीक्ष्णशृङ्खलां विद्धि महो. ६।५१

इदमहं माममृतयोनौ	महाना. ११३	इदं प्राप्स्ये मनोरथम्	भ.गी. १६।१३
इदमादिपुरुषरूपमात्मनः...	ग.शो. ४।४	इदं ब्रह्म जुषस्व मे	महाना. ११।६
इदमाह महीपते	भ.गी. १।२१	इदं ब्रह्म परं ब्रह्म सत्यं ब्रह्म...	ते.विं.६।३५
इदमिति इ प्रतिजज्ञे, लोकान्वाच..	छांदो. ४।१४।३	इदं ब्रह्मेदं क्षत्रमिमे लोका इमे देवा	
इदमिदं नेत्यनुभूतिरितिकैवेतीयम्	नृसिंहो. ७।३	इमे वेदा इमानि भूतानीदं सर्वं	
इदमिष्टमिदं नेति योऽभ्रजपि न		यदयमात्मा [बृ.उ. २।४।६+	४।५।७
सज्जति। हितं सत्यं प्रियं वक्ति		इदं भगव इति (शिष्य आह)	छान्दो. ६।१२।१
तमचिह्नं प्रचक्षते	ना.प. ३।६३	(अथ) इदं भस्मान्तं शरीरं [ईशा. १७+	बृह. ५।१५।१
इदमुक्तं मयाऽनघ	भ.गी. १५।२०	(एवं वा) इदं महद्भूतमनन्तमपारं	बृह. २।४।१२
इदमेव पृथिव्या रूपमिदं दिवः	इषेत. १।२।३	इदं मानुषं सर्वेषां भूतानां मधु	बृह. २।५।१३
इदमेव मूर्तं यदन्यत्प्राणाच्च	बृह. २।३।४	इदं मे तृतीयसवनमायुरनुसन्तनुते	छां.उ. ३।१६।६
इदमेवास्यतद्यज्ञोपवीतं यदात्मध्यानं,		इदं यज्ञोपवीतं तु परमं यत्परायणं	ब्रह्मो. १५
विद्या शिक्षा.. [कठश्रु. ९	सं. सो. १।३	इदं यज्ञोपवीतं तु...सन्धारयेद्यः	
इदमेवास्य तद्यज्ञोपवीतं यमात्माऽऽपः		स मुक्तिभाक्	परब्र. १९
प्राह्याचम्यायं विधिः (यतीनां)	जाबालो. ५	इदं यदि तदेवास्ति तदभावादिदं न च	ते.विं. ५।१५
इदमेवास्यतत्साधारणमभ्रंयदिदमद्यते	बृह. १।५।२	इदं रम्यमिदं नेति बीजं ते दुःखसन्ततेः	अ. पू. ५।७०
इदममयोऽदोमयः (आत्मा, ब्रह्म)	बृ. उ. ४।४।५	इदं वक्ष्याम्यशेषतः	भ.गी. ७।२
इदं चक्षुः सोऽसावादित्यः	बृ.उ. ३।१।४	इदं वस्त्विति विश्वासं नासावात्म-	
इदं च परलोकस्थानं च	बृह. ४।३।९, ९	न्युपाययौ	महो. २।१३
इदं च सर्वं चिन्मात्रं	ते.विं. २।२५	इदं वाव तज्येष्ठाय पुत्राय पिता	
इदं जगत् सर्वं व्याप्यैव परितिष्ठति	ग.शो. ३।७	भूयात्...	छान्दो. ३।१०।५
इदं जगदहं सोऽयं..स जीवन्मुक्तः	वराहो. ४।३०	इदं वाव तत्पुष्करं योऽयमाकाशोऽस्येमाः	
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य	भ.गी. १४।२	दिशः...अयमर्वाग्निः...प्राणादि-	
इदं तद्वज्रतां यातं तृणमात्रं जगत्प्रयम्	महो. ४।१३४	त्यावेतावुपासीत...	मैत्रा. ६।२
इदं तत्पुष्करं योऽयमाकाशः	मैत्रा. ६।२	इदं वाव तद्यदिदमस्मिन्नन्तः-	
इदं तु ते गुह्यतमं	भ.गी. ९।१	पुरुषज्योतिः..	छान्दो. ३।१३।७
इदं तै नातपस्काय	भ.गी. १८।६७	इदं वाव तद्योऽयं बहिधा	
इदं दिवस्तत्रायमन्तरेणाकाशः	इषेत. १।२।३	पुरुषादाकाशः	छान्दो. ३।१२।७
इदं नावहेळनया भवितव्यम्	महो. ४।२६	इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्	वा.सं. ५।१५
इदं निरालंबोपनिषदं योऽधीते		[त्र.मं. १।२२।१७+ना.पू.ता. ३।१+	
गुर्वनुग्रहतः सोऽभिपूतः..	निरालं. ३२	वनदु. ४९, ६२, ७४+	तै.उ. १।२।१३
इदं पुच्छं प्रतिष्ठा	तैत्ति. २।१।१	इदं वै कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं	जावा. १
इदं प्रणवमेवास्य तद्यज्ञोपवीतं		[रामो. १।१+	तारसा. १।१
य आत्मा	याज्ञव. १	इदं वै तन्मधु दध्यङ्कुथर्वणोऽश्वि-	
इदं प्रत्याधानं प्राणस्थूणाग्रं दाम	बृह. २।२।१	भ्यामुवाच [बृह. २।५।१६,	१७, १८, १९
इदं प्रपञ्चं नास्त्येव नोत्पन्नं नोत्थितं..	ते.विं. ५।३१	इदं शरीरं कौन्तेय	भ.गी. १३।२
इदं प्रपञ्चं यत्किञ्चित्...सर्वं		इदं शरीरं जरया ग्रस्तं गन्धर्व-	
शशविषाणवत्	ते.विं. ५।७५	नगरोपमं..भवति	सामर. १०१
इदं प्राप्स्यामि सुन्दरम् (मनोरथं)	अ.पू. ५।५८	इदं शरीरं प्रकृतेर्विकारं प्रोच्यते	भवसं. २।७

(अथ) इदं शरीरं पण्यवत्यङ्गुलात्मकं

भवति. प्राणो द्वादशाङ्गुलाधिकः शाण्ड. १।४।२

इदं शरीरं स यथा प्रयोज्य

आचरणे युक्तः छांदो. ८।१२।३

इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यमेवमदि-

होच्यते । अहं सत्यं परं ब्रह्म. बराहो. २।३८

इदं सत्यं सर्वेषां भूतानां मधु

बृह. २।५।१२

इदं सर्वमन्तकाले कालाग्निः सूर्यो-

ऽन्तगुह्यतो ह्ययमात्मा ददाति नृसिंहो. २।७

इदं सर्वमसीत्येवेनं तदाह

कौ. उ. १।६

इदं सर्वमसृजत्, यदिदं किञ्च [तै. सि. २।६

+ छांदो. १।२।५

(१) इदं सर्वमाददाना यन्ति

बृह. ३।९।५

इदं सर्वमाददीय यदिदं

पृथिव्यां... (मा. पा.) केनो. ३।९

इदं सर्वं तस्योपन्याख्यानं [रामो. २।१

+ ग. शो. १।१

इदं सर्वं तस्योपन्याख्यानं

भूतं भवत्.. ओङ्कार एव माण्डू. १

इदं सर्वं न मे किञ्चित्.. न मे कालो..

न मे ध्याता न मे ध्येयं... चिदहं

.. स जीवन्मुक्त उच्यते तै. बि. १।१।३०

इदं सर्वं यदयमात्मा [बृह. २।४।६+

४।५।७

इदं सर्वं यदयमात्मा मायामात्रः

नृसिंहो. ५।१

इदं सर्वं यदयमात्मेति भावयन्कृत-

कृत्यो भवति मं. ब्रा. २।८

इदं सर्वं स्वात्मानमेव करोति

नृसिंहो. २।७

इदं हि मनसैवेदं मनुते

गोपालो. १।१०

इदं हि सत्संविन्मयत्वागूयमेव

नृसिंहो. ९।८

इदानीमस्मि संवृत्तः

भ. गी. १।५।१

इदानीमस्मीत्यहमेक एव, स्थान-

भेदादवस्थाभेदः मं. ब्रा. २।७

इदो अग्निरिव विश्वरूपः

मैत्रा. ७।१

इदमन्येव प्रक्षायतो मातस्योच्छेपि..

सहवै. ८

इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान

ऋ. मं. ४।५।८।४

[वा. सं. १।७।९२ + तै. आ. १०।१०।३

महाना. ८।११

इन्द्रजालमिव मायामयम्

मैत्रा. ४।२

इन्द्रप्रजापतीद्वारगोपौ (ब्रह्मलोकस्य)

कौ. उ. १।३

इन्द्रमग्निं च ये विदुः सिकता

इव संयन्ति

अरुणो. ७

इन्द्रमेवाप्येति य इन्द्रमेवास्तमेति

सुबालो. ९।७

इन्द्ररूपिणमात्मानं भावयन्...

यो. सि. ५।५३

इन्द्रलोकेषु (देवलोकाः) गार्गि

बृह. ३।६।१

इन्द्रवज्र इति प्रोक्तं मर्मजङ्घानुकीर्तनं

धुरिको. १३

इन्द्रश्च विश्वे च देवाः, यज्ञश्च..

अरुणो. १

इन्द्रश्चैव प्रजापतिश्च, त्रयस्त्रिंशो

वृ. उ. ३।१।२

इन्द्रप्रधानि इविणानि घेहि

[ऋ. मं. २।२।१६

कौ. उ. २।११

इन्द्रस्त्रिष्टुप्पञ्चदशो बृहद्वीर्यः

मैत्रा. ७।२

इन्द्रस्त्वं प्राणतेजसा । रुद्रोऽसि

परिरक्षिता

प्रश्नो. २।९

इन्द्रस्य प्रियं धामोपजगाम (प्रतर्दनः)

कौ. उ. ३।१

इन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्रघ्नः शर्ममेभव

आरु. ३

इन्द्रस्यात्मानं दशधाचरन्तम्

चित्त्यु. ११।१

इन्द्रस्यात्मानं दशधा चरन्तम्

चित्त्यु. ११।५

इन्द्रस्यात्मा निहितः पञ्च होता

चित्त्यु. ११।३

इन्द्रस्याभयायासुरेभ्यः क्षयायेमा-

मविद्यामसृजत् (बृहस्पतिः)

मैत्री. ७।९

इन्द्रस्यायं वज्रः कृतः सार्गलः

सपरिश्रयः

वृ. उ. ६।४।२३

इन्द्रं विचिक्थुः परमे व्योमन्

[तै. आ. ३।११।९+

चित्त्यु. ११।९

इन्द्रं राजानं सवितारमेतम्

[तै. आ. ३।११।४+

चित्त्यु. ११।४

इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः

[ऋ. मं. १।७।१० × वनदु. ३९

साम. २।९७०

इन्द्रं शरणं प्रपन्नोऽभूवम्

५२, ६४, ७५

इन्द्रः स चन्द्रः परमः परात्मा

अ. व. २०।३९।१

इन्द्रः सत्यादेव नेयाय, सत्यं हीन्द्रः

छां. उ. २।२२।३

इन्द्राग्नी मित्रावरुणौ... ते नो

हेरम्बो. ७

मुञ्चन्त्वेनसो..

कौ. उ. ३।१

इन्द्रात् परितन्वं मम इति

सहवै. ३

इन्द्रादयस्तामसराजसात्मिकाः

१ ऐत. ३।६।३

इन्द्रादयो दिक्पतयोऽमृतान्धसो

पा. ब्र. २

वृन्ताग्रगाः सिद्धगणाः ससिद्धाः

१ बिल्वो. ४

इन्द्रादयोऽष्टौ दशमे (आवरणे)

सूर्यता. ५।१

इन्द्रियग्रामपदयोः श्वासनिश्वासा-

पक्षयोः । सञ्चिच्छन्नयोर्मनः पक्षी

स्थिरः सन्नवसीदति

अमन. २।८४

अमन. २।८४

इन्द्रियमाहनिर्मुक्तनिर्धनी निर्मला-
सुते । अमनस्के हृदे स्नातः

परासुतमुपाहनुते

अमन. २।८९

इन्द्रियधिलेऽविवशः प्रणवारूपं प्रणे-

तारं आरूपं (यः पश्यति) सोऽपि

..विशोको भवति

मैत्रा. ६।२५

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे

भ.गी. ३।३४

(?) इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यं रसोऽजायत

छां.उ. ३।१।३

इन्द्रियामिषु जुहति

भ. गी. ४।२६

इन्द्रियाणां गतिरुपरमते

प.हंसो.३,९

इन्द्रियाणां निरोधेन रागद्वेषक्षयेण

च । अहिंसया च भूतानाम-

मृतत्वाय कल्पते [ना.प. ३।४५+

भवसं. ५।९

इन्द्रियाणां पृथग्भावमुदयास्तमयौ

च यत् । पृथगुत्पद्यमानानां

मत्वा धीरो न शोचति

कठो. ६।६

इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमृच्छति..

सन्नियम्य..सिद्धिं निगच्छति

ना.प. ३।३६

इन्द्रियाणां मनश्चास्मि

भ.गी.१०।२२

इन्द्रियाणां मनो नाथो मनोनाथस्तु

मारुतः । मारुतस्य लयोनाथस्तं..

वराहो. २।८०

इन्द्रियाणां मनो भवति (नारायणः)

ना.उ.ता.३।१

(एवं) इन्द्रियाणां यथाक्रमेण शब्द-

स्पर्शरूपरसगन्धाश्चेति विषयाः

शारीरको. १

इन्द्रियाणां विचरतां...बलादाहरणं

तैषां प्रत्याहारः स उच्यते

जा.द. ७।१,२

इन्द्रियाणां हि चरतां

भ.गी. २।६७

इन्द्रियाणि तन्मात्रेषु (विलीयन्ते)

सुबालो. २।२

इन्द्रियाणि दशैकं च

भ.गी. १३।६

इन्द्रियाणि पराण्याहुः

भ. गी. ३।४२

इन्द्रियाणि प्रमाथीनि

भ. गी. २।६०

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः

भ.गी.३।४०

इन्द्रियाणि मनोबुद्धिकामक्रोधा-

दिकं जितम् । तेनैवविजितं सर्वं

यो. शि. १।३९

नासौ केनापि बध्यते

यो. शि. १।३९

इन्द्रियाणि वाऽन्नं मनोन्नादं मनोवाऽन्नं

सुबालो. १४।१

इन्द्रियाणि समाहृत्य कूर्मोऽङ्गानीव..

ना.प.३।७४

इन्द्रियाणि समाहृत्य मनसाऽऽत्मनि

धारयेत् ।

जा.द.८।९

न्द्रियाणिसंयोज्यमहिमानं निरीक्षेत मैत्रा. ६।२१

इन्द्रियाणि ह्यानाहुः

[कठो. ३।४+पैङ्गलो.४।२+

भवसं. २।११

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः

[भ.गी.२।५८+२।६८+

योगो. २३

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु

भ. गी.५।९

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यो यत्प्रत्याहरणं

...प्रत्याहारः

१यो.त. ६८

इन्द्रियार्थान् विमृष्टात्मा

भ. गी. ३।६

इन्द्रियार्थान् पञ्चस्वादूनि भवन्ति

मैत्रा. ६।१०

इन्द्रियार्थस्तद्वद्यो न स्पृशति

मैत्रा. ६।१०

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यं

भ. गी. १३।९

इन्द्रियार्थैर्यदामुक्तोबाह्यज्ञानं जायते

अमन. १।२१

इन्द्रियेण ते यशसा यश आदद

इत्ययशो भवति

बृह.६।४।७,८

इन्द्रियेण ते रेतसा रेत आददे

बृह. ६।४।१०

इन्द्रियेण ते रेतसा रेत आदधामीति

गर्भिण्येव भवति

बृह. ६।४।११

इन्द्रियेभ्यः परं मनः [भ.गी.३।४२+

कठो.६।७

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था ह्यर्थेभ्यश्च

परं मनः [कठो.३।१०+

गुह्यका.४१

इन्द्रियैरस्येन्द्रियाणि संस्पृश्य

कौ.उ.२।१५

इन्द्रियैर्वध्यते जीव आत्मा चैव

न बध्यते

यो.चू.८४

(?) इन्द्रियैर्मनसि सम्पद्यमानैः

प्रश्नो.३।९

इन्द्रियैर्विवशो भवेत्, तानि गाढं

नियम्यापि...

यो.शि.१।२७

इन्द्रेण मुखेन न वै देवा अश्रन्ति न

पिबन्ति, एतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति

छान्दो.३।७।१

इन्द्रेणैव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति

छान्दो. ३।७।३

(?) इन्द्रे बलं ददानीति

छां.उ.२।२२।५

इन्द्रो गणेशो विष्णुर्गणेशः सूर्यो गणेशः

गणेशो.२।४

इन्द्रो जायते पुरुषोत्तमात्

कृ.पु.सि.२

इन्द्रो न यक्षो वृषभस्तुराषाद्

बा.मं.४

इन्द्रोऽप्राप्यैव देवानेतद्भयं

ददर्श यथैव....

छान्दो.८।९।१

इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते

बृह. २।५।१५

[क्रकसं.अ.४।७।३३ मं.६।४७।१८

इन्द्रो मायाभिः पुरुहूत ईडे

ग.पू.२।८

इन्द्रोऽयमस्य जायेयं सव्ये चाक्षिण्य-

वस्थिता । समागमस्तयोरेव.. मैत्रा. ७।११

इन्द्रो राजा जगतो य ईशे

[तै.आ.३।११।६+ चित्यु.११।६

इन्द्रो वरुणः सोमो रुद्रः पर्जन्यो यमो

मृत्युरीक्षानः इति तस्मात्

क्षत्रात्परं नास्ति [बृ.१।४।११+ नृ.पू.२।४

इन्द्रो वै किल देवानामनुजावरमासीत् अन्यक्तो.८

इन्द्रो वैकुण्ठोऽपराजिता सेनेति वा...

अहमेतमुपासे बृह.२।१।६

इन्द्रो ह वै (हैव) देवानामभिप्रवव्राज

विरोचनोऽसुराणां तौहासंविदानौ छान्दो.८।७।२

इन्द्रो ह वै नामैष योऽयं दक्षिणे-

ऽध्वन्युरुषः बृह.४।२।२

इम इति ह प्रतीकान्युदाजहार

बृह.६।२।३

इम एव त्रयो लोकाः, एषु हीमे..

बृह.३।१।८

इममात्मानमोङ्कारं नो व्याचक्ष्व

नृसिंहो.१।१

(एवमेव) इममात्मानमन्तकाले

बृह.४।३।३८

सर्वे प्राणा अभिसमायान्ति

नृसिंहो.५।७

इममात्मानमाप्ततममुत्कृष्टतमं ..

बृह.१।३।७

इममासन्यं प्राणमूचुस्त्वं न उद्गायेति

बृह.१।५।२१

(अथ) इममेव नाप्रोद्योऽयं मध्यमः

सहवै.६

प्राणस्तानि ज्ञातुं दध्निरे

नृसिंहो.९।१

इममग्न आयुषे वर्चसे कृधि

बृह.६।२।१६

इममेव नो भगवन्नोङ्कारमात्मान-

नृसिंहो.६।२

मुपदिशेति तथेति

अ.पू.२।२।८

(अथ) इममेवाकाशमभिनिष्पद्यन्ते

छान्दो.७।७।१

इममेवोङ्कारविद्योतं तुरीयतुरीय-

छान्दो.७।१४।१

मात्मानमनुष्टुभाऽन्विष्य

छान्दो.७।३।१

इमंगुणसमाहार..समाधिरिति कथ्यते

ते.वि.१।३८

इमं च लोकममुं च विज्ञानेनैव

छान्दो.८।६।२

विजानाति

महो.५।११५

इमंचलोकममुंचेच्छतआशामुपास्वेति

इतिहा.८३

इमं च लोकममुंचेच्छेयेत्यथेच्छते

महो.६।८३

इमं चाकृत्रिमानन्दं..साधुसमभ्यसेत्

रहमयउभौ लोकौ गच्छन्ति

छान्दो.८।६।२

इमं चामुं चामुष्मादादित्यात्प्रतायन्ते

अ.गी.९।३३

इमं चामुं चैवमेवैता आदित्यस्य

इमं प्राप्स्ये मनोरथम्

अ.गी.१६।१६

इमं राजर्षयो विदुः

अ.गी.४।५

इमं विवस्वते योगं

अ.गी.४।१

इमं मानवमावर्ते नावर्तेत्

छान्दो.४।१५।६

इमं मे गङ्गे इति जलमाशय

[वासुदे.३+ गोपीचं.३+

ऊर्ज्यपुं.३

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति

अ.मं.१०।७५।५+

[तै.आ.१०।९।१३+

महाना.५।२१

इमं मे वरुण भुधोहवमद्याचमृडय

त्वामवस्युरा... [अ.अ.१।२।१९

=मं.१।२५।१९

वनदु.४३।५६

इमं लोकं हीनतरं चाविशन्ति

मुण्ड.१।२।१०

इमंसंसारमखिलमाशापाशविधायकं

महो.५।१३३

इमाभक्षन् लोहिन्योराजयस्तामिरेन

बृ.उ.२।२।२

इमा आपः सर्वेषां भूतानां मधु

बृ.उ.२।५।२

इमा ऋचः सर्वकामार्थदाश्च ये ते

पठन्त्यमला यान्ति मोक्षम्

रामपू.५।१०

इमा एव दिश आवरीवर्तिभुवनेऽवन्तः

१पेत्.१।६।२

(अथ) इमा दशदश नाड्यो भवन्ति

तासामेकैकस्य द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः

शाखा नाडीसहस्राणि भवन्ति

सुबालो.४।३

इमा दिशः सर्वेषां भूतानां मधु

बृह.२।५।६

इमा देवता अद् उ आविरधिदैवतं

१पेत्.१।५।१

(?) इमानि च क्षुद्रमिश्राणीव

२पेत्.५।३

इमानि पञ्च महाभूतानि पृथिवी

वायुराकाश आपोज्योतीः

२पेत्.५।३

इमा नु कं भुवना सीषधेम

अरुणो.१

इमामधीयानस्तर्कागमपुराणकाव्यादि-

वागीश्वरो भवति

तारोप.३

इमामस्य प्राशंजहि, येनेदंविभजामहे

नीलरु.३।४

इमावेव गौतमभरद्वाजौ

बृह.२।२।४

इमावेव वसिष्ठकश्यपौ

बृह.२।२।४

इमावेव विश्वामित्रजमदग्नी

बृह.२।२।४

(अविद्यां) इमां कथमहं हन्मीत्येषा

तेऽस्तु विचारणा

महो.५।११५

इमां देवीमिह वेद सर्व..न पुत्रदाराः..

इतिहा.८३

इमां महोपनिषदं ब्राह्मणो नित्यमधीते

महो.६।८३

इमां रुद्राक्षजाबालोपनिषदं

नित्यमधीते...

रु.जा.४५

इमाँल्लोकान् कामाजीकामरूप्यनु-
 सञ्चरन्, एतत्साम गायत्रास्ते तैत्ति. ३।१०।५
 इमाँ शान्तिमत्यन्तमेति [कठो. १।१७+ श्वेता. ४।११
 इमाँ विज्ञाय सुधिया मदन्ती
 परिस्नुता तर्पयतः स्वपीठम् त्रिपुरो. ७
 इमाँ सप्तपदां ज्ञानमूमिमाकर्णय... महो. ५।२१
 नानया... मोहपङ्के निमज्जति अ. शिरः. ५
 इमाँल्लोकानीशत ईशनीभिः महाना. ६।४
 इमाँ इतदापो वरुणः पुनात्वघमर्षणः भ. गी. १०।१६
 इमाँस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि
 (अथ) इमाः प्राण ते प्रजाः, आनन्द-
 रूपास्तिष्ठन्ति प्रश्नो. २।१०
 इमाः षोडशकलाः पुरुषायणाः पुरुषं
 प्राप्यास्तं गच्छन्ति प्रश्नो. ६।५
 इमाः सोम्य नयः पुरस्तात्प्राच्यः
 स्यन्दन्ते समुद्रमेवापियन्ति.. छान्दो. ६।१०।१
 (?) इमे अन्य उपरे विचक्षणं...
 आहुरर्पितम् प्रश्नो. १।११
 इमे जीवाः शरीरोपाधि भुजानाः
 सुखं दुःखं प्राप्तुवन्तो भवन्ति सामर. १०।१
 इमे नु लोकाश्च लोकपालाश्चान्नमेभ्यः
 सृजा इति २ऐत. ३।१
 इमे नूनमीदृशा अन्यादृशा इती-
 द्दामीनभ्यूदे छां. च. ४।१४।२
 इमे बाळा कथं त्याज्या जीविष्यन्ति
 मयाविना । मोहाद्विचिन्तयत्येवं
 परमार्थो न पश्यति शिवो. ७।१०।५
 इमौ स्थितावात्मशुची तथा मैत्रा. ६।३६
 इयमस्मिन्स्थितोदारासंसारेपरिपेक्षवा महो. ३।८
 इयमिदं नेत्यवचनेनैवानुभवन्नुवाच नृसिंहो. ७।३
 इयमेवर्गभिः सामतदेतदेतस्यां.. अमिरमः छां. १।६।१
 इयमेव पृथिवीतो हीदं सर्वमुत्तिष्ठति १ऐत. १।२।१
 इयं पृथिवी सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।१
 इयं ब्रह्मविद्येयं ब्रह्मविद्या अरुमजा. २।१६
 इयं महोमनिषमैपुर्या यामक्षयं त्रिपुरो. १६
 इयं राधा यश्च कृष्णा रसाद्वै इ चैकदा
 कृष्णार्थं द्विधाऽभूत् राधिको. ५
 इयं विद्युत्सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।८

इयं हि गुह्योपनिषत्सुगूढा गुह्यका. ७४
 इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरम-
 जीजनत.. सा त्वं वीरवती भव बृह. ६।४।२८
 इषुभिः पञ्चभिर्धनुषा च विष्यत्यादि-
 शक्तिररुणा विश्वजन्या त्रिपुरो. १३
 इषुभिः प्रतियोत्स्यामि भ. गी. २।४
 इषे त्वो जे त्वा वायवस्थोपायवः स्थो
 ... इत्येवमादि कृत्वा यजुर्वेदमधीते २प्रणवो. २१
 इष्टफलमेवोदानः, स एनं यजमान-
 महरहर्षं गमयति प्रश्नो. ४।४
 इष्टमेवानिष्टमिव भाति, अनादि-
 संसार... भ्रमात् त्रि. म. ना. ५।३
 इष्टविषये बुद्धिः सुखबुद्धिः सर्वसारो. ५
 इष्टं मनिषाण, अमुं मनिषाण
 [तै. आ. ३।१३।२ चित्त्यु. १ ३।३
 इष्टः स्यामिति मे मतिः भ. गी. १८।७०
 इष्टानिष्टोपपत्तिपु भ. गी. १३।१०
 इष्टान् भोगान् हि वो देवाः भ. गी. ३।१२
 इष्टापूर्तं बहुधाजातं जायमानं.. विभर्ति महाना. १।६
 इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठं नान्यच्छ्रेयो.. मुण्ड. १।२।१०
 (?) इष्टापूर्तं कृतमित्युपासते प्रश्नो. १।९
 इष्टापूर्तं पुत्रपशूश्च सर्वान्, एतद्वंक्ते.. कठो. १।८
 (एवं) इष्टापूर्तैः शुभाशुभैर्न लिप्यते ब्रह्मो. १
 इष्टासुकृते त आददेऽसाविति बृह. ६।४।१२
 इष्टोऽसि मे दृढमिति भ. गी. १८।६४
 (?) इष्टेष्वभिष्वङ्गः मैत्रा. ३।५
 इष्टा च शक्तितो यज्ञैः (सत्रयासात्पूर्व) कठश्रु. १
 इह कर्मोपभोगाय तैः संसरति,
 सोऽवशः मैत्रा. ६।३०
 इह चामुत्र चान्वेति विद्वान्देवासुरा-
 नुभयान् अरुणो. ४
 इह चामुत्र वा काम्यं... निष्कामं भवसं. ५।७
 ज्ञानपूर्वं तु केनो. २।५
 इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति
 इह चेदशकद्रोहं प्राक् शरीरस्य
 विस्मसः । ततः सर्गेषु लोकेषु कठो. ६।४
 इहानादिसंसारे सञ्चिताः कर्मकोटयो-
 ऽनेनैव विलयं यान्ति पैङ्गलो. ३।३
 इहापि सन्मात्रमू, असदन्यत् नृसिंहो. ९।६

इहैवं सर्वा रक्षा स प्रपञ्चदीनोऽयं.. नृसिंहो. ३।३
 इहैकस्थं जगत् कृत्स्नम् भ.गी. ११।७
 इहैव तद्वायऽया..सोऽस्याएनत्प्रथमं गायऽयु. ४
 पद्मानुयान् भ.गी. ५।१५
 इहैव तैर्जिनः सर्गः मुंड. ३।१।७
 इहैव निहितं गुहायां (ब्रह्मरूपं)

इहैव सन्तोऽय विद्यस्तद्वयं न चेदवे-
 दीर्घहृती विनष्टिः वृह. ४।४।१४
 इहैव मा प्रातरुपसमीयात छां. उ. १।१२।३
 इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः मुंड. ३।२।२
 इहैवान्तःशरीरे सोम्य स पुरुषो
 यस्मिन्नेताः... प्रभो. ६।२

इ

ईकाररूपिणि सोमामृमावयव-
 दिव्यालङ्कार..ऽलंकृता सीतो. २
 ईक्षणादिप्रवेशान्ता सृष्टिरीक्षेन
 कल्पिता..संसारो कल्पितः.. बराहो. २।५४
 ईक्षते योगयुक्तात्मा भ.गी. ५।२५
 ईदृशी भूतमायेयं यास्वनाशेनहर्षदा महो. ५।१११
 ईप्सितानीप्सिते न स्तो यस्यान्तर्वर्ति महो. २।४६
 दृष्टिषु..स जीवन्मुक्त उच्यते चित्त्यु. १८।१
 ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन्त्युच्छन्ति
 ईश-केन-कठ-प्रभ-मुण्ड-माण्डूक्य-
 तित्तिरिः (उपनिषद्भाषानि) मुक्तिको. १।३०
 ईशं तं ज्ञात्वा अमृता भवन्ति श्वेता. ३।७
 ईशः पञ्चीकृतभूतानामपञ्चीकरणं
 कर्तुं सोऽकामयत पैङ्गलो. ३।३
 ईशः पञ्चीकृतमहाभूतलेशानादाय
 व्यष्टिसमष्ट्यात्मकस्थूलशरी-
 राणि यथाक्रममकरोत् पैङ्गलो. २।१
 ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणाति.. महाना. १६।५
 ईशाज्ञया मायोपाधिरव्यक्तसमन्वितो पैङ्गलो. २।६
 ...प्राज्ञत्वमगमत्
 ईशाज्ञया विराजो व्यष्टिदेहं प्रविश्य पैङ्गलो. २।६
 ...तैजसत्वमगमत्
 ईशाज्ञया सूत्रात्मा व्यष्टिसूक्ष्मशरीरं.. पैङ्गलो. २।६
 तैजसत्वमगमत्
 ईशाधिष्ठितावरणशक्तितो... पैङ्गलो. १।३
 महदाख्या विक्षेपशक्तिः...
 ईशानमस्य जगतः स्वर्देशमीशान-
 मिद्रतस्थुषः।..तस्मादुच्यत ईशानः
 [क्र.मं. ७।३२।२२+वा.सं. २७।३५ अ.शिरः ३।५
 ईशानं भूतभव्यस्य नततोविजुगुप्सते कठो. ४।५+
 (ईशानो.. मा.पा.) बृह. ४।४।१५
 ईशानं परमविद्यात्प्रेरकबुद्धिसाक्षिणं पं. ब्र. १४

ईशानं भूतभव्यस्य (मा.पा.) कठो. ४।१२
 ईशानं वरदं देवमीडयम् श्वेता. ४।११
 ईशानः प्रभुरव्ययः जागम. १०
 ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः
 सर्वभूतानां.. [महाना. १०।८+ तै.आ. १०।४७।१
 ईशानादाकाशं, तस्माच्छान्त्यतीता वृ.जा. १।६
 ईशानेतिशिरोदेशं(भस्मलेपनं)[बृ.जा. ३।३१+४।१
 ईशानो ज्योतिरव्ययः श्वेता. ३।१२
 ईशानो भूतभव्यस्य न ततो
 विजुगुप्सते कठो. ४।१२
 ईशानो भूतभव्यस्य स एवाद्य
 स उ श्वः कठो. ४।१३
 ईशानोभूतभव्यस्यसर्वेषां देवयोगिनां पं. ब्र. १
 ईशा वा सर्वमिदं प्रयुक्तम् अ.शि. २
 ईशावास्यबृहदारण्यजाबालहंसपरमहं-
 ससुबालमन्त्रिकानिरालम्बत्रिशिखी-
 ब्राह्मणमण्डलब्राह्मणाद्वयतारकपैङ्गल-
 भिक्षु--तुरीयातीताध्यात्म--तारसार-
 याज्ञवल्क्य-शाट्यायनी-मुक्तिकानां
 शुक्लयजुर्वेदगतानामेकोनविंशति-
 सङ्ख्याकानामुपनिषदां
 पूर्णमद इति शान्तिः मुक्तिको. १।५४
 ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च.. ईशा. १
 ईशो यस्माद्वित्तं वितत्य.. भूयः
 पराय स्वाहा पारमा. १।४
 ईश्वरकृपया परमपरिपक्वचित्ता
 जानन्ति, नान्ये जानन्ति सि.सा. १।१
 ईश्वरमासस्तुरीयः नृसिंहो. १।५
 ईश्वरत्वमवाप्नोति सदाभ्यासरतः.. ब्र. वि. २५
 ईश्वरपूजनं नाम प्रसन्नस्वभावेन..
 विष्णुरुद्रादिपूजनम् शाण्डि. १।२।१
 ईश्वरश्चतुरूपो मकार एव नृसिंहो. २।६

ईश्वरस्य दर्शनयोग्यं भवति	राधोप. २।१	ईश्वरो जीवकलया प्रविष्टो	
ईश्वरस्य महामाया तदाज्ञा-		भगवानिति	याज्ञव. ७
वशवर्तिनी	त्रि.म.ना. ४।८	ईश्वरो ह तथैव स्यात्	बृ.उ. १।४।८
ईश्वरः परमो देवो मकरः	ब्रह्मवि. ६	ईश्वरोऽहमहं भोगी.	भ.गी. १६।१४
ईश्वरः सर्वभूतानाम्	महाना. १०।८	ईश्वरो जनयितव्ये औक्षेण वार्षभेणवा	बृह. ६।४।१८
[+भ.गी. १८।६१+	नृ.पू. १।६	ईश्वरो जनयितव्ये [बृह. ६।४।१४,	१५, १६।१७
ईश्वराधिष्ठितं कर्म फलतीह		ईदृते कामभोगार्थं	भ.गी. १६।१२
शुभाशुभम्	शिवो. ७।११३	ईहानीहामयैरन्तर्याचिदाबलितामलैः	१सं.सो. २।२९
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये...	श्रीसू. ९	ईहितानीहितैर्मुक्तो देयोपादेयवर्जितः	१सं.सो. २।५१
[क्र.लि. ५।८७।१०+	महाना. ५।७	ईहितानीहितैर्मुक्तोनशोचतिनकांक्षति	महो. ६।६४

उ

उकारतुरीयांशा चतुर्थी भूमिका	वराहो. ४।१	उकारो वामदेवः, अचोरो मकारः...	ना.पू.ता. १।३
उकारमूर्तिः श्वेताङ्गी ताक्ष्येवाहिनी..		(?) उक्तमवरं येषु कर्म	मुण्ड. १।२।७
सावित्री भवति	शाण्डि. १।६।१	उक्तविकल्पं सर्वमात्मैव	मं.प्रा. १।५
उकारवाच्यउपेन्द्रस्वरूपोहरिनायकः	तारसा. ३।८	उक्तानुशासनाऽसि मैत्रेयि	बृ.उ. ४।५।१५
उकारश्चन्द्रसङ्काशः [ब्र.वि. ७+	१प्रणवो. ७	उक्त्वा तूष्णीं बभूव ह	भ.गी. २।९
(?) उकारश्चापि तैजसं	आगम. २३	उक्थमिति वै प्रजा वदन्ति	१ ऐत. १।२।१
उकारस्तूत्तरः स्मृतः (ॐकारस्य पञ्चः)	नादवि. १	उक्थस्य सायुज्यं सलोकतां जयति	
उकारस्तैजसः स्मृतः। प्राज्ञो मकारः	अक्षुप. ४७	य एवं वेद	बृह. ५।१३।१
उकारः शतावयवान्वितः	तुरीयो. १	उक्थं प्राणो वा उक्थम्	बृह. ५।१३।१
उकारः सहस्रावयवान्वितः	ना. प. ८।२	उक्थं ब्रह्मेति ह स्माह शुष्कभृङ्गार-	
उकारः सात्त्विकः शुक्लो विष्णुः...		स्तदृगित्युपासीत	कौ.उ. २।६
[ध्या.वि. १३+	यो. चू. ७५	उग्रत्वाद्दीरत्वान्महत्वाद्धिष्णुत्वा-	
उकाराक्षरसम्भूत उपेन्द्रोहरिनायकः	तारसा. २।२	ज्ज्वलनत्वात्.. एतद्ब्रह्म	नृसिंहो. ७।५
उकाराक्षरसम्भूतः शत्रुघ्नस्तैजसात्मकः	रामो. १।३	उग्रमनुग्रं वीरमवीरं.. नृसिंहमनृसिंहं	
उकाराक्षरसम्भूतातेजसः कामराजका	श्रीवि.ता. १।३	भीषणमभीषणं.. बुबुधारे	नृसिंहो. ६।१
उकारे जाग्रतैजसो मकारे जाग्रत्..	प.हं.प. १०	उग्रमित्याह उग्रः खलु वा एष मृगरूपत्वात्	अव्यक्तो. ३
उकारेणाविचिकित्सन्नशरीरोऽनिन्द्रियो		उग्रं च बलिश्च पुरस्ताज्ज्योतिः	अ.शिरः. १
निरिन्द्रियो प्राणो...	नृसिंहो. ७।४।६	उग्रं पश्ये राष्ट्रभृत्किंलिषाणि	सहवै. ५
उकारेतु लयं प्राप्ते द्वितीये परमां-		उग्रं प्रथमस्याद्यं ज्वलद्वितीयस्याद्यं	
शके। यौः सूर्यः...	ध्या. वि. ११	नृसिंहं तृतीयस्याद्यं मृत्युं चतुर्थ-	
उकारे लीयते हरिः, मकारे.. रुद्रः	यो. चू. ७७	स्याद्यं साम जानीयात्	नृ. पू. १।४
उकारे विष्णुरास्थितः। मकारे.. रुद्रः	ब्र. वि. ७१	उग्रं वीरं महाविष्णुं [त्रि.म.ना. ७।१०;	
उकारः कण्ठतः स्वप्ने मकारो हृदि	यो. चू. ७४	[वज्रपं. २+	वनदु. ८८
उकारो द्वितीयकूडाक्षरो भवति	श्रीवि.ता. १।२	उग्रः खलु वा एष मृगरूपत्वात्	अव्यक्तो. ३
उकारो द्वितीयाक्षरो भवति		उग्रोभवश्चरुद्रश्चसुरः सासुरस्तथा	मंत्रिको. १२
[रामो. ता. १।२+	तारसा. २।१	उग्रो न्वहं तवसावस्युरद्धा	वा. मं. ९
(?) उकारो द्वितीया मात्रा	मांङ्. १०	उच्छगीथा चेति स उद्गीथः	बृ.उ. १।३।२३

उच्चारयेद्विभीतैश्च (हुनेत्)

ग. पू. २।१३

उच्चारयेत्परांशक्तिं प्रहसन्धनिवासिनीं

यो. शि. ६।१९

उच्चारितमात्र एव सर्वं शरीरं

द्योतयति (ॐ)

मैत्रा. ७।११

(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव..अन्तो

नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्तः

बटुको. २०

(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव कुन्दते...

तस्मादुच्यते शुक्लम्

बटुको. २०

(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव..त्रायते

च तस्मादुच्यते तारम्

बटुको. २०

(यस्मात्) उच्चार्यमाण एवाव्यक्ते

द्योतयति तस्मादुच्यते वैशुतम्

बटुको. २०

(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव..प्रणाम-

यति.. तस्मादुच्यते प्रणवः

बटुको. २०

(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्व-

मुक्तामयति..ओङ्कारः

बटुको. २०

(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव सर्वा-

लोकान्व्याप्नोति...सर्वव्यापी

बटुको. २०

(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव सूक्ष्मः..

तस्मादुच्यते सूक्ष्मम्

बटुको. २०

उच्चावचमीयमानः

बृ.उ. ४।३।१३

उच्चैश्चारणं यथोक्तफलं (जपकर्म)

शाण्डि. १।२।१

उच्चैर्जपश्च सर्वेषां यथोक्तफलदः..

जा. द. २।१६

उच्चैर्जपादुपांशुश्च सहस्रगुण उच्यते

जा. द. २।१५

उच्चैश्श्रवसमश्रानाम्

भ.गी. १०।२७

उच्चैः पदाय परया प्रज्ञया वासना-

गणात्.. चेतोवृत्तिं पृथक्कुरु

महो. ५।१७५

(तत्र) उच्छास्त्रमनर्थाय परमार्थाय

शास्त्रितम्

भवसं. १।४७

उच्छास्त्रं शास्त्रितं चेति द्विविधं

पौरुषं स्मृतम्

भवसं. १।४७

उच्छ्वासाविष्टम्भनेनोर्ध्वमुत्क्रान्तः

मैत्रा. २।२

उच्छ्वासिते तमो भवति

अ.शिरः. ३।११

उच्छिन्नसर्वसङ्कल्पोनिःशेषाशेषचेष्टितः

[वराहो. २।८+

अमन. २।२२

उच्छिष्टमपि चामेध्यं

भ.गी. १७।१०

उच्छिष्टं वै मे पीतं स्यादिति होवाच

छां.उ. १।१०।३

उच्छिष्टं शिवनिर्माख्यं वमनं मृतकर्मणम्

इतिहा. ५६

उच्छिष्टोपहतमित्यनेन तत्पात्रये

मैत्रा. ६।९

उच्यते यः प्रागोऽपानः समानो व्यानः

मैत्रा. २।६

उज्जीर्यते शरीरस्य मुदानेन नमस्वता

त्रि. घ्रा. २।८५

उज्ज्यं धनुरभिज्यं कृत्वा

बृ.उ. १।८।२

उज्ज्वलशमोदानन्दसनदानमध्यम्

...

उच्छृतिमुपयुज्जानाः..

आश्रमो. २

उड्डियाणोऽप्ययं बन्धो मृत्युमातङ्ग-

केसरी । बध्नाति हि शिरो जातं..

ध्या. विं. ७७

उड्डियानं तदेव स्यात्तत्र बन्धो विधीयते

ध्या. विं. ७६

उड्डियानो ह्यसौ बन्धो मृत्युमातङ्ग-

केसरी । तस्य मुक्तिस्तनोः कायात्

वराहो. ५।७

उड्डियानं तु सहजं गुरुणा कथितं..

यो.शि. १।१०७

उड्डयाणपीठं जगदाकर्षणसिद्धिदं भवति

सौभाग्य. २५

उड्डयाणं (उड्डियाणं) कुरुते यस्मात्

ध्या. विं. ७५

उड्डयानारूढं महापीठमुपरिष्ठात्

प्रतिष्ठितम् [यो.शि. १।१७५+

५।१२

उड्डयानारूढो हि बन्धोऽयं योगिभिः..

१यो.त. १२०

उत तमादेशमप्राक्ष्यः

छां.उ. ६।१।२

उतत्वः पश्यन्नदर्शवाचमुतत्वः

शृण्वन्.. [ऋक्. १०।७।१४

सर. २२

उतत्वा विश्वाभूतानि तस्मै.. ते नमः

नीलरु. २।२

उत वा षड्वा मनसोत क्लृप्ताः

[तै. आ. ३।११।५+

चित्त्यु. ११।५

उत ह्येवं वित्परो भवति

बृह. ६।४।१२

उतामृतत्वस्येशानोयदग्नेनातिरोहति

[ऋक्. अ. ८।४।१७=मं. १०।९०।२

वा. सं. ३।१।२

चित्त्यु. १२।१+सुबालो. ६।२

पु. सु. १।२

उताविद्वानमुं लोकं प्रेत्य

तैत्ति. २।६

उतेव महाब्राह्मण उतेवोच्चावचं निगच्छति

बृह. २।१।१८.

उतेव स्त्रीभिः सह मोदमानः

बृह. ४।३।१३

उतेवोच्चावचं निगच्छति

बृह. २।१।१८

उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः

सूर्यता. १।४

[वा. सं. १६।७+तै. सं. ४।५।१।३

उतैनं विश्वाभूतानि सृष्ट्यो मृडयति नः

सूर्यता. १।४

[तै. सं. ४।५।१।३

उतो जरन्तं न जहात्येकम्

चित्त्यु. १४।१

[तै. आ. ३।१४।१

उतो बहूनेकमहर्जहार [तै. आ. ३।१४।२

चित्त्यु. १४।२

उत्कर्षति ह वै ज्ञानसन्ततिं समानश्च
भवति [माण्डू. १०+ नृसिंहो. २।९
उत्कर्षादुभयत्वात्स्थूलत्वात्सूक्ष्मत्वा-
त्साक्षित्वाच्चोत्कर्षति ज्ञानसन्ततिं नृसिंहो. २।५
उत्कर्षादुभयत्वाद्वा माण्डू. १०
(?) उत्कर्षो दृश्यते स्फुटम् आगम. १।२०
उत्कृष्टतम एतदेव नृसिंहो. ५।६
उत्कृष्टतमं महामायं महाविभूति नृसिंहो. ५।७
उत्कृष्टतमार्थं आत्मन्येव नृसिंहे देवे
ब्रह्मणि वर्तते नृसिंहो. ५।३
उत्कृष्टत्वादुत्पादकत्वादुत्प्रवेष्टत्वा-
दुत्थापयितृत्वात्.. नृसिंहमन्विष्य नृसिंहो. ७।१
उत्क्रामन्तं स्थितं वाऽपि भ.गी. १५।१०
उत्क्रमणेन सापोद्यं श्रविष्ठार्थान्तं
सौम्यम्। तत्रैकमात्मनो.. मैत्रा. ६।१४
उत्क्षिप्य वायुमाकाशं... रेचकस्येति
लक्षणम् अ. ना. १२
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः भ.गी. १५।१७
उत्तमः समानानां भवति सहैव. १८
उत्तमा तत्त्वचितैव मध्यमं
शास्त्रचिन्तनम् मैत्रे. २।२१
उत्तमाधमभावश्चेत्तेषां स्यादस्ति तेन
किम्। स्वप्नस्थराज्यमिच्छाभ्यांप्रबुद्धः.. वराहो. २।५८
उत्तमे (प्राणायामे) त्रिगुणाः
प्रोक्ताः (मात्राः ३६) यो. चू. १०४
उत्तमे शिखरे जाते भूम्यांपर्वतमूर्धनि महाना. ११।८
उत्तमौजाश्च वीर्यवान् भ. गी. १।२
उत्तमे (प्राणायामे) स्थानमाप्नोति यो. चू. १०५
(?) उत्तरत उदेता दक्षिणतोऽस्त-
मेतामरुतामेव.. [छां.उ. ३।९।४+ ३।१०।४
(?) उत्तरत उद्यन्ति मैत्रा. ७।४
(?) उत्तरतोऽस्तमेता [छां.उ. ३।७।४ + ३।८।४
उत्तरं त्वमूर्तिमदमनस्कमित्युच्यते अद्वयता. ७
उत्तरं व्यानस्य रूपं चैतेषां प्रसूतिरेव.. मैत्रा. २।७
उत्तरा चतुर्थी कुक्षिर्भवति गायत्रीर. ३
उत्तरामुखो भूत्वा भुवरिति व्याहृति-
र्जागतं छन्दः सामवेदः.. चतुर्वे. १
उत्तराभिमुखो भूत्वा स्वरिति
व्याहृतिर्जागतं छन्दः.. महो. १।४

उत्तरायां ज्ञानस्थानं (शिवस्थानं) भस्मजा. २।९
उत्तरार्धेन तं सिंहमाकृष्य नृसिंहो. ७।१
उत्तरासङ्गमेव च कठश्रु. ४
उत्तरा हनुरुत्तररूपम् तैत्ति. १।१।७
(अथ) उत्तरेण तपसा ब्रह्मचर्येण...
आदित्यमभिजयन्ते प्रभो. १।१०
उत्तरेण येन देवा यान्ति अ. शिरः. ५
उत्तरे तु सुपुष्पाया इडाख्या
निवसत्यसौ वराहो. ५।२६
उत्तरो विकारोऽस्यात्मयज्ञस्य मैत्रा. ६।१०
उत्तानविल्वपत्रं च यः कुर्यान्मम
मस्तके। मम सायुज्यमाप्नोति... २विल्वो. ११
उत्तानविल्वपत्रेण पूजयेत्सर्वसिद्धये २विल्वो. १४
उत्तानभागपर्णेन.. न्युञ्जमर्पयेत् २विल्वो. २८
उत्तानस्त्वाङ्गिरसः प्रतिगृह्णातु चिन्त्यु. १०।२, ५
उत्तानायाङ्गीरसायानः चिन्त्यु. १०।४
उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान् निबोधत कठो. ३।१४
उत्तिष्ठत मा स्वप्न, अग्निमिच्छध्वं.. अरुणो. १
उत्तिष्ठन् परिचरिता भवति छांदो. ७।८।१
उत्तिष्ठ पुरुषहरितर्पिगल लोहिताक्ष
देहि देहि ददापयिता मे शुध्यतां महाना. १४।११
उत्तिष्ठातो विश्वावसोऽन्यामिच्छां
प्रकर्ष्या सञ्जायां पत्या सह बृह. ६।४।१९
उत्तिष्ठातो... प्रपूर्व्या सञ्जायां (मा.पा.) बृ. उ. ६।४।१९
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वरं वृणीष्वेति राजान-
मब्रवीत् (शाकायन्यः) मैत्रे. १।१
उत्थानं चोत्तमं विदुः (प्राणायामकर्तुः) जा. द. ६।१४
उत्थानं वपुषो यस्य स उत्तमः
(प्राणायामः) त्रि. ज्ञा. १-१२
उत्थाप्य गां प्रयत्नेन मूत्रमाहरेत् बृ. ज्ञा. ३।६
उत्थितानुत्थितानेतानिन्द्रियारीन् पुनः
पुनः। हन्याद्विवेकदण्डेन.. महो. ६।२१
उत्पत्तिप्रणवो दीर्घप्लुतविराट् तुरीयो. १
उत्पत्तिमायतिस्थानं विभुत्वं चैव पंचधा।
अध्यात्मं चैव प्राणस्य प्रभो. ३।१२
विज्ञायामृतमश्नुते
उत्पत्तिस्थितिसंहारस्फूर्तिज्ञानविव-
र्जितम्। एतद्रूपं समायातः स कथं
मोहसागरे। निमज्जति... यो. शि. १।२१

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी

त्रिकूटा मूलप्रकृतिसंज्ञिता

श्रीबि.ता.१।५

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी सर्वदेहि-

नाम् । सा सीता भवति ज्ञेया...

रामो.५

उत्पन्नवैराग्यबलेन योगीष्यायेत्परं ब्रह्म

भवसं. ३।३२

उत्पन्नब्रह्मविबोधस्य.. योगिनः

सहजावस्थास्त्रयमेव प्रकाशते

वराहो. २।७७

(१) उत्पत्त्यन्तेऽपि चैवान्ये (जीवाः)

महो. ५।१३७

उत्पत्त्यवारकत्वादुद्भासकत्वात् ..

ओङ्कारेणैवमात्मानं ब्रह्म..

नृसिंहो. ७।१

उत्पद्यन्ते विलीयन्ते तथा तस्यां जग-

त्यपि । अलतः पावकाद्यद्वत्..

गुह्यका. २७

उत्पन्नसहजानन्दः सदाभ्यासरतः..

अमन. २।९९

उत्पन्ने तत्त्वविज्ञाने प्रारब्धनैव मुञ्चति

ना. बि. २२

उत्पलमिव तिष्ठासेत्

सुबालो. १३।३

उत्पादस्याप्रसिद्धत्वादजं सर्वमुदाहृतम्

अ. शां. ३८

उत्पाद्यमाना रागाद्या विवेकज्ञान-

बहिना । यदा तदैव दहन्ते

कुतस्तेषां प्ररोहणम्

वराहो. १।२४

उत्पन्नेष्टत्वादुत्थापयितृत्वात् ..

ओङ्कारेणैवमात्मानं..

नृसिंहो. ७।१

उत्त्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्व राधो-

अद्विषः । अथ ब्रह्मद्विषो जहि

वनदु. ६३

[क्र.सं.अ. ६।४।४२=मं. ८।६४।१+

अ.व. २०।९३।१

उत्सन्नकुलधर्माणां

अ.गी. १।४४

उत्सन्नस्वात्मबोधस्य ह्युदासीनस्य..

अमन. २।३५

उत्सन्नाभिरनमिको वा (प्रव्रजेत्)

ना.प. ३।७७

उत्साद्यन्ते जातिधर्माः

अ. गी. १।४३

उत्सीदेयुरिमे लोकाः

अ. गी. ३।२४

उत्सेक उदधेर्यद्वत्

अद्वैतो. ४१

उदकमाहारयाञ्चकार

वृ. उ. ३।२।४

उदकुम्भं सपात्रमुपनिधाय

कौ. उ. २।१५

उदगयन आपूर्यमाण पक्षस्यपुण्याहे

वृ. उ. ६।३।१

उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह

क्र.मं. १।५०।१३

[अ.व. १७।१।२४+

सूर्यता. २।१

उदपात्रे जलतीरे केतनं

२सं.सो. १।३

उदयाद्रिसमारुढमुदयन्तं...

काश्यपं भास्करं ध्यात्वा

सू.ता. १।१८

(१) उदरपात्रं पात्राणि वा (यतीनां)

आरु. ५

उदरमन्तरं कुरुतेऽथ तस्य भयं भवति

(१) उदरस्थोऽथवा यः पचत्यन्नं

उदरं ब्रह्मेति शार्कराक्ष्या उपासते

उदरे गार्हपत्यः, इति दक्षिणाग्निः

उदरे सकले कर्त्याः..व्यानः

श्रोत्राक्षिमध्ये च ककुब्ज्यां..

उदशराव आत्मानमवेक्ष्य..

(१) उदरमात्प्राणाः क्रामंत्याहोऽनेनेति

उदात्तानुदात्तयोरुदात्तं सेवेत

उदान ऊर्ध्वगमनं करोति...

उदानमन्नेनाप्यायस्व

उदानमूर्ध्वगं कृत्वा प्राणेन सहवेगतः ।

बन्धोऽयं सर्वनाडीनां..

उदानमेवाप्येति य उदानमेवास्तमेति

उदानसंज्ञो विज्ञेयः पादयोर्हस्तयोरपि

उदानः कण्ठमाश्रितः

उदानः सर्वसन्धिस्थः..हस्तयोरपि

उदाने तृप्यति त्वक् तृप्यति

उदाने तृप्यति वायुस्तृप्यति

उदाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकं

उदारः पेशलाचारः सर्वाचारानुवृत्तिमान्

उदाराः सर्व एवैते

उदासीनो गतव्यथः

उदासीनवदासीनं (नः) [अ.गी. ७।१८ + १४।२३

उदासीनस्ततो भूत्वा

उदासीनं ध्रुवं हंसं स्नातकाध्वर्यवोजगुः

(१) उदिति नाम स एष सर्वेभ्यः

पापेभ्य उदितः

उदितोऽस्तंगत इव ह्यस्तंगत इवोदितः

उदितो हंस ऋषिः, स्वयम्भूस्तिरोदधे

उदितौ दार्यसौन्दर्य...समाधिरभि-

धीयते

उदीची दिक् कला (ब्रह्मणः)

उदीची दिग्दध्वः प्राणाः (आत्मनः)

उदीच्यामग्निकायमुमाऽनुरक्ता

..मामुपासते

उदुम्बराः प्रातरुत्थाय...अग्नि-

परिचरणं कृत्वा

तैत्ति. २।७

मैत्रा. ६।१७

१ ऐत. १।४।१

गर्भो. ११

जा. व. ४।२७

छां. उ. ८।८१

बृ. उ. ३।२।११

संहितो. ३।३

जा. व. ४।३२

महाना. १६।४

वराहो. ५।४४

सुबालो. ९।४

जा. व. ४।२९

अ. ना. ३५

त्रि. ब्रा. २।८१

छां. व. ५।२३।२

छां. व. ५।२३।२

महाना. १६।२

महो. ६।७१

महो. ६।७०

अ. गी. ७।१८

अ. गी. १२।१६

ना. बि. ४०

मंत्रिको. ८

छां. उ. १।६।७

अ. पू. ३।११

पा. अ. ६

महो. ४।६१

छां. उ. ४।५।२

वृ. उ. ४।२।४

अ. गी. २।१३

आश्रमो. ३.२.३

उदेति इ वै सर्वेभ्यः पापेभ्यः	छांदो. १।६।७	उद्दीप्यस्व जातवेदोपघ्नं निर्कृतिमम	महाना. २।९
उदेतां वाहूजतिरमुदुर्चो अथो बलं	सहवे. ८+	[+तै. आ. १०।१।४	
[वा.सं. ११।२०+त्रै.सं. ४।१।१०।३		उद्धतत्वमसमत्वमिति तामसानि	
उदेहि सूर्य वरं वृणीष्वेति	इति. ८५	(एतैरभिभूतः)	मैत्रा. ३।५
उदीर्घं पाचयित्वा सर्पिष्मन्त-		उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानम्	भ.गी. ६।५
मभीयातामीश्वरौ जनयितवै	बृह. ६।४।१६	उद्धास्मा उक्थविद्वीरस्तिष्ठति(मा.पा.)	बृ.उ. ५।१३।१
उद्गन्ता चैतेषामिह कः	मैत्रा...	उद्धास्मादुक्थविद्वीरस्तिष्ठति	बृह. ५।१३।१
(१)उद्गातयो देवतोद्गीथमन्वायत्ता		उद्धृतपरिपूताभिरद्भिः कार्यं कुर्वन्तः	आश्रमो. २
[छां. उ. १।१०।१०+ १।११।६		उद्धृतासि वराहेण कृष्णेनशतबाहुना	
उद्गातया देवतोद्गीथमन्वायत्ता		[यज्ञोप. २+सुदर्श. २+	महाना. ४।५
तांचेदवि... [छांदो. १।१०।१० + १।११।६		उद्धृत्य प्राभाति, प्राश्य इतरस्याः	
उद्गातुनास्तावे स्तोष्यमाणानु-		प्रयच्छति (स्था. पा. आज्यं)	बृह. ६।४।१९
पोषविवेश	छां.उ. १।१०।८	उद्धृत्य प्राभीयात्साज्यं हविरनामयं	जाबा. ४
उद्गात्रत्विजा वायुना प्राणेन	बृह. ३।१।५	उद्धैव तत् एति [छां. उ.	३।११।२, ४, ६
उद्गायति तन्निधनं, एतद्वैरूपं..प्रोतं	छांदो. २।१५।१	उद्धृष्यष्वं समनसः सखायः	वनदु. ३०
उद्गारादिक्रियो नागः (प्राणवायुः)	त्रि. आ. २।८६	[अक्सं. मं. १०।१०१।१	
उद्गारादिगुणः प्रोक्तोव्यानाख्यस्य..	जा. द. ४।३३	उद्धवश्च भविष्यताम्	भ.गी. १०।३४
उद्गारादि नागकर्म	शाण्डि. १।४।९	उद्धवः सम्भवो दिव्यो देव एको	
उद्गारे नाग आख्यातः कूर्म उन्मीलने..	यो. चू. २५	नारायणः	सुबालो. ६।१
उद्गीतमेतत्परमं तु ब्रह्म तस्मिन्नायं...	श्वेता. १।७+	उद्भिज्जास्तरुगुल्मलतादयः	ना.पू.ता. ५।६
	भवसं. २।६	उद्धृतत्वाद्भूतम्	मैत्रा. ५।२
उद्गीथ इति त्र्यक्षरं, उपद्रव इति		उद्धृतत्वाद्भूतेषु चरति प्रविष्टः	
अतुरक्षरं त्रिभिस्त्रिभिः समंभवति	छांदो. २।१०।३	सर्वभूतानां...	मैत्रा. ५।५
उद्गीथ इति प्राण एवोत्प्राणेनद्युत्तिष्ठति	छांदो. १।३।६	उद्धृतत्वादुत्तीणविकृतत्वाच्च	नृसिंहो. ७।१
उद्गीथ उपश्रीः, श्रीरुपवर्हणम्	कौ. उ. १।५	उद्यत्कोटिदिवाकराभं (ब्रह्माण्डस्वरूपं)	त्रि. म. ना. ६।२
उद्गीथ प्रणवोद्गीथ... सर्व बोधय..	हयग्री. ३	उद्यद्वास्वत्समाभां विधृतनवजपा..	वनदु. ३
(१)उद्गीथभाजिनो ह्येतस्य सास्नः..	छां. उ. २।९।५	उद्यन्तमादित्यमभिध्यायन्..भस्मना	
उद्गीथमभ्युद्गीयमानमसि	बृ. उ. ६।३।४	त्रिपुंड्रं श्वेतैर्नैव..	भस्मजा. १।२
उद्गीथमेतत्परमं तु ब्रह्म	ना. प. ९।६	उद्यन्तमस्तं यन्तमादित्यमभिध्यायन्	
उद्गीथं प्रणवाख्यं प्रणेतारं भारूपं...	मैत्रा. ६।४	कुर्वन् ब्रह्मणोविद्वान्त्सकलं भद्र-	
(अथखलु) उद्गीथाक्षराण्युपासीत	छां. १।३।६	मभतेऽसावादित्यो ब्रह्मेति	सहवे. २
उद्गीथे वै कुशला स्मो हन्तोद्गीथे...	१।८।१	उद्यन्तमादित्यमुपतिष्ठेत	कौ. उ. २।७
उद्गृह्णाति तन्निधनम् [छां. उ. २।३।२+ २।१५।१		उद्यन्ति तपन्ति वर्षन्ति स्तुवन्ति	
उद्घाटयेत्कवाटं तु यथा कुंचिकया गृहं यो. चू. ३९		पुनर्विशन्त्यन्तर्विवरेणेषन्ति..	मैत्रा. ७।१-५
उद्दालकायारुणये... ब्रह्म प्रोवाच	छां. उ. ३।११।४	उद्यन्नद्य मित्रमहमारोहन्नुत्तरांदिवम्	
उद्दालको वै भगवंतोऽयमारुणिः	छांदो. ५।१।१२	[क्र. अ. १।४।८=मं. १।५०।११	सूर्यता. २।१
उद्दालको हारुणिः श्वेतकेतुं पुत्रमुवाच	छांदो. ६।८।१	उद्यन्नद्यमिनो भज पितापुत्रेभ्योयथा	सूर्यता. २।१
उद्गृह्णत्वादुत्कर्तृत्वात्... ओङ्कारेणैव-		उद्यन्नद्येत्ययं तृचो रोगघ्नः..	सूर्यता. २।१
मात्मानं परमं ब्रह्म नृसिंहमन्विष्य	नृसिंहो. ७।१	उद्यन् पूर्वार्धो निम्लोचजघनार्धः	बृ. उ. १।१।१

उद्यन्वा एष प्रजाभ्य उद्गायति	छांदो. १।३।१	उपदिष्टं परं ब्रह्म प्रणवान्तर्गतं परं	शुकर. १।१०
उद्यान्निहकार उदितः प्रस्तावो		(?) उपदेश्यसि मन्मंत्रम्	रामो. ४
मध्यन्दिन उद्गीयः...	छां. उ. २।१४।१	(?) उपद्रवभाजिनो ह्येतस्य साज्जः	छां. उ. २।१।७
उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि		उपदेशादयं वादो ज्ञाते द्वैतं न...	आगम. १८
न मनोरथैः	भवसं. १।४२	(?) उपद्रव इति चतुरक्षरम्	छां. उ. २।१०।३
उद्यंस्तमोभयमपहन्त्यपहंता ह वै..	छां. उ. १।३।१	उपद्रष्टाऽनुमन्ता च	भ.गी. १३।२३
उद्यास्यन्वाअरेऽहमस्मात्स्थानादस्मि	बृ. ह. २।४।१	उपद्रष्टाऽनुमन्तैष आत्मा	नृसिंहो. ९।१
उद्ययं तमसस्परीति चोद्वेदभिः..	सन्ध्यो. १	उपनयनादूर्ध्वमेनानि प्राग्वस्यजेत्	आरुणि. ४
उद्ययं तमसस्परीज्योतिःपश्यन्तउत्तरं		(?) उपनयनादूर्ध्वं त्रिरात्रमक्षार-	
[छां. उ. ३।१७।७+क्र. मं. १।९०।१० ३ ऐन. २।४।४		लवणाशी..	आश्रमो. १
उद्गर्गोऽसि पाप्मानं म बहुकृधि	कौ. उ. २।७	उपनिषदमावर्तयेत्...	आरुणि. २
उद्गातःप्रथमःमृतः, मध्यमश्चद्वविंशत	योगो. ५	उपनिषदं भो ब्रूहीत्युक्ताय उपनिद्वाक्षी	
उद्देगानन्दरहितः ... सजीवन्मुक्तः	महो. २।५७	वाव त उपनिषदमब्रूम	केनो. ४।७
उन्नतप्रपदाङ्गुष्ठं गूढगुल्फं...	ग. पू. २।६	उपनीतशतमेकमेकेन	
उन्मत्त इव सन्त्यज्य याम्यकाण्डे		गृहस्थेन तत्समं	नृ. पू. ५।१६
क्षरीरकम्	महो. ३।९	उपनीतैकाधिकशतं गृहस्थ-	
उन्मत्तत्वमभोज्यान्नपानपाखण्डवर्तिता	अमन. २।३४	शतैकाधिकशतं	ग. शो. ५।५
उन्मत्ता इव परिवर्तमानाः शान्ताः..		उप नो नयस्वेम एव ते	छाग. २।३
प्रणवमेव परं ब्रह्म... जानन्तः	नृसिंहो. ६।३	उप ब्रह्मा शृण्वच्छस्यमानं	महाना. ९।१३
उन्मनीभावःपाथं, सदाऽमनस्कमर्घ्यं	मं. ब्रा. २।५	[क्र. मं. ४।५८।२+वा. सं. १७।९०+ तै. ब्रा. १०।१०।२	
उन्मन्या अमनस्कं भवति	मं. ब्रा. २।५	उपमंत्रयते स हिंकारः	छां. उ. २।१३।१
उन्मन्यां सुषुप्तप्राज्ञो मनोन्मन्यां		उपयामगृहीतोऽसि ब्रह्मणेत्वामहसः	महा. १७।१५
सुषुप्ततुरीयः	प. हं. प. १०	उपयाम गृहीतोऽसि सूर्याय	
उन्मिषन्निमिषन्नपि	भ. गी. ९।९	त्वा भ्राजस्वते	चिन्त्यु. १६।१
उन्मीलते पश्यति विकासते चैतन्य-		उपरितनपादत्रयं शुद्धबोधानन्द-	
भावं कामयत इति	त्रि. ता. १।५	लक्षणममृतं...	त्रि. म. ना. १।३
उन्मीलित-निमीलित-मध्यस्थ-जीव-		उपरिष्ठात्तु वैकुण्ठो.. अवान्तरविशो	
परमात्मनोर्मध्ये जीवात्मा क्षेत्रज्ञ		याः स्युस्तासु सर्वासु माधवः	विष्णुह. १।२
इति विज्ञायते	शारीर. १०	उपर्युपरि सञ्चरतो न विन्देयुः	छां. उ. ८।८।२
उन्मीलितमनोमूलोजगद्बृक्षःपतिष्यति	अमन. २।५७	उपलंभस्त्रिषु स्मृतः	अ. शां. ९०
उपकोसलो वै कामलायनः...		उपलंभभात्समाचारादस्तिवस्तुत्व-	
ब्रह्मचर्यमुवास	छांदो. ४।१०।१	वादिनाम्। जातिस्तु देशिताबुद्धेः	अ. शां. ४२
उपकोसलैषा.. तेऽस्मद्विद्याऽऽत्मविद्या	छां. उ. ४।१४।१	उपलंभभात्समाचारान्माया	
उपचारान्समर्प्याभ्याणि		हस्ती यथोच्यते	अ. शां. ४४
दद्यात् [सूर्याय]	सूर्यता. ५।१	उपलंभभात्समाचारादस्तिवस्तु	
(?) उपजीवन्तीन्द्रेण मुखेन	छां. उ. ३।७।१	तथोच्यते	अ. शां. ४४
उपतापी सन्नपतापी भवति	छांदो. ८।४।२	उप वयं तं भुञ्जामः (नः)	छांदो. ४।११।२
उपते यज्ञ नैम उपते नमः...	महाना. १६।११	[+४।१२।२+४।१३।२	
(?) उप त्वा मेभ्ये.. नमुपनीयकृशानां..	छां. ४।४।५	उपविश्यासनं सम्यक्स्वस्तिकादि	त्रि. ब्रा. २।९।१

उपविश्यासने युञ्ज्यात्	भ. गी. ६।१२	उपाधिनाशाद्रक्षैवसद्रक्षाप्येतिनिर्द्वयम् २आत्मो.२१	
उपविश्योपविश्यैकां..न शक्यते		उपाधिरहितं स्थानं (ब्रह्मणः)	
मनोजेतुं विना युक्तिः.	मुक्तिको.२।४३	वाङ्मनोतीतगोचरम्	ते. विं. १।७
उपवीतलक्षणसूत्रप्रज्ञाया यज्ञाः	पा.ब्र.३	उपाधिविनिर्मुक्तघटाकाशवत्प्रारब्ध-	
उपवीतं च तन्मयम् (ज्ञानशिखारूपं)	ब्रह्मो. १३	क्षयाद्विदेहमुक्तिः	मुक्तिको. २।१
उपवीतं भूमावप्नुवा विमृजेत्	आरुणे. २	उपाधिविलयान्निर्गुणनिरवयवादि-	
उपज्ञाम्यति (सः) तन्निधनम्	छांदो.२।१२।१	प्रतीतिः	त्रि.म.ना.३।७
उपशिष्यन्तीव न ह्येवाभिपद्यन्ते	आर्ये. ५।४	उपाधिविनिर्मुक्तघटाकाशवत्परि-	
तप समीपे यो वासो जीवात्मपरमा-	वराहो. २।३९	पूर्वता.. सैव कैवल्यमुक्तिः	मुक्ति. १।५८
त्मनोः । उपवासः स विज्ञेयो ननु		उपानच्छत्रशयनं वस्त्रमासनभूषणम् ।	
कायस्य शोषणम्	वराहो. २।३९	..गुरुसक्तं न धारयेत्	शिवो.७।१२
उपससाद् सनत्कुमारं नारदः	छांदो. ७।१।१	उपानच्छत्रवस्त्राणिपवित्रंकरकं..	
उपसीदन्ब्रष्टा भवति,श्रोताभवति	छांदो. ७।८।१	धृतमन्येनं धारयेत्	शिवो. ७।९०
उपस्कंदमभिगृहीताभिपातयेत्	छांदो. ५।३	उपायएकएवास्ति मनसः स्वस्यनिग्रहे	मुक्तिको.२।३८
(?)उपस्तिर्ह चाकाशेण इभ्यग्रामे		उपायं तमविज्ञाय योगमार्गे प्रवर्तते	यो. शि.१।६२
प्रव्राणक उवास	छां.उ. १।१०।१	उपायः सोऽवताराय नास्ति	
उपस्थ एवास्या एकमङ्गमुदूढं, तस्या-		भेदः कथंचन	अद्वैत. १५
नन्दो रतिः प्रजातिः..प्रतिविहिता..	कौ. त. ३।५	उपायेननिगृहीयाद्विक्षिप्तं (मनः)	अद्वैतो. ४२
उपस्थमस्या अभिमृश्य जपेत्		उपासकस्ततोभ्येत्यैवंविधंनारायणं	
‘अङ्गादङ्गात्संभवसि’ इति	वृह. ६।४।९	ध्यात्वा..नमस्कारान्विधाय..	त्रि.म.ना. ८।३
उपस्थमेवाप्येति य उपस्थमेवास्तमेति	सुबालो. ९।१०	उपासकः स्वयं शुद्धबोधानन्दमया-	
उपस्थश्चानन्दने, अपान उत्सर्गे..	गर्भो. १	मृतनिरतिशयानन्दतेजो.. भूत्वा	त्रि.म.ना. ८।३
उपस्थश्चानन्दयितव्यं च, पायुश्च..	प्रश्नो. ४।८	उपासकानांकार्यार्थब्रह्मणोरूपकल्पना	रामपू. १।७
उपस्थश्चानन्दयितव्यं च नारायणः	सुबालो. ६।१	उपासकानां मोक्षप्राप्तिर्भवति	ना.पू.वा.४।१०
उपस्थस्यानन्दग्रहणम्	ना. प. ६।४	उपासते पुरुषं ये ह्यकामास्ते	
उपस्थानेन यत्प्रोक्तं भिक्षार्थं...		शुकमेतदतिवर्तन्ति धीराः	मुण्ड. ३।२।१
तात्कालिकमिति ख्यातं		उपासनया ये मुक्तिं गतास्तेषां	
भोक्तव्यं यतिभिः सदा	१सं.सो.२।६९	साकारो मुक्तसाकारः	त्रि.म.ना. २।१
उपस्थोऽध्यात्मं, आनन्दयितव्यमधि-		उपासना द्विविधा-शाम्भवंशाक्तंचेति	कामरा. २
भूतं,प्रजापतिस्तत्राधिदैवतं	सुबालो.५।१४	उपासनाश्रितोधर्मो..ब्रह्मणि वर्तते	अद्वैतो. १
उपहन्यामिमाः प्रजाः	भ. गी. ३।२४	(अथ)उपांशुरन्तर्याम्यभिभवति	मैत्रा. ३।८
उपादत्ते हि सा (तृष्णा) भावान्		उपांशु सहस्रगुणं (जपकर्म)	शाण्डि. १।२।१
वेदनाश्रयसंज्ञकान्	आयुर्वे. ७	उपेक्षा धैर्यमाधुर्यं तितिक्षा करुणा..	
उपादानंप्रपञ्चस्यमृद्गाण्डस्येवंपश्यति	ना. विं. २५	हीः..एष स्वधर्मो विख्यातोयतीनां	ना.प.४।१२
उपादानंप्रपञ्चस्यब्रह्मणोऽन्यन्नविद्यते	यो. शि. ४।३	उपैति शान्तरजसम्	भ.गी. ६।२७
उपादेयानुपतनं..यदेतन्मनसो रूपं		उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना	
तद्वाह्यं विद्धि नेतरत्	महो. ४।२४	सह [ऋ.खि.५।८७।१०	श्री. सू. ७
उपादेयं तु सर्वेषां शांतपदमकृत्रिमम् ।		उपेनं तदुपनमति यत्कामो भवति	
...प्राणरोधश्चेत्परिक्षयः । एक-		[बृ.जा. १।३४	नृ.पू. १।१
स्मिन्नेव संसिद्धे संसिध्यन्ति..	अ. पू. ५।५१		

उपम्यद् भवन्तमिति वाचा इ स्म वै
पूर्वे उपयन्ति वृ.उ. ६।२।७
उपोष्य पायसं स्थाञ्जीपाकं श्रपयित्वा..
हुत्वाऽन्येनान्नेन ब्राह्मणान्भोज-
यित्वा चरुं स्वयंप्राप्नोयात् (दुस्स्वप्ने) ३ऐत. २।४।७
उभयप्राधान्येनोभयात्मकसाकारः (भेदः) त्रि.म.ना. २।२
उभयमपि मनोयुक्तमभ्यसेत् (तारकं) मं. ब्रा. १।४
उभयमादिष्टं भवत्यध्यात्मं चाधिदैवतं च छांदो. ३।१८।१
उभयमेव संप्रादिति होवाच बृह. ४।१।१
उभयमेवादिष्टं भवति अध्यात्मं
चाधिदैवतं च छांदो. ३।१८।२
उभयवचनहेतू देशकालौ च हित्वा..
सोऽयं देवदत्तो यथैकः शुकर. ३।११
उभयं (प्रपञ्चस्य नित्यत्वानित्यत्वे)
न भवति त्रि.म.ना. १।२
उभयात्मक उत्पत्तिप्रणवः तुरीयो. १
उभयात्मकत्वाद्विराद् प्रणवः तुरीयो. १
उभयात्मकं मनोजायते (इन्द्रियात्मकं) सामर. १०१
उभयोरन्तरं (वेदवेदिनोः) ज्ञात्वा
कस्य शौवं विधीयते मुक्त्यु. २।६७
उभयोरपि दृष्टोऽन्तः भ.गी. २।१६
उभयोरपि वैतथ्यं भेदानां स्थानयो-
र्यदि । क एतान् बुद्धयते भेदान्
को वै तेषां विभेदकः वैतथ्य. ११
उभयोर्वीजतुल्यत्वान्नपुंसको भवति गर्भो. ३
उभयोर्लोकयोर्ऋद्धाऽतिमृत्युं
सराभ्यहम् महाना. १३।१२
उभयोर्विन्दते फलम् भ.गी. ५।४
(?) उभयोः प्राज्ञतुर्ययोः आगमो. १३
उभयोः सङ्गमादेव प्राप्यते परमं वपुः.. ध्या.वि. ८९
उभादाताराविहसौ भगानाम् (शक्तीशौ) त्रिपुरो. १४
उभाभ्यामपि पक्षाभ्यां यथा खे
पक्षिणां गतिः भवसं. १।३३
उभाभ्यामकरं नमो बाहुभ्यां तव.. नीलरु. २।४
उभाभ्यामंशाभ्यां (स्त्रीपुरुषाभ्यां)
सर्वनादिष्टः अव्यक्तो. ७
उभाभ्यामेव (पुण्यपापाभ्यां) मनुष्य-
लोकम् (उद्दानो नयति) प्रभो. ३।७
उभावग्निश्च वायुश्च सूर्याचंद्रमसौ
(शरीरे समाहितौ) छांदो. ८।१।३

उभे अस्मिन् (शरीरे) धावापृथिवी
अन्तरेव समाहिते छांदो. ८।१।३
उभे द्वैवैष एते तरति बृह. ४।४।२२
उभे एते एषणे भवतः (मा. पा.) बृह. ४।४।२२
उभे एव वर्तनी संस्कुर्वन्ति न हीयते-
ऽन्यतरा छांदो. ४।१६।४
(?) उभे कूटेऽनुसञ्चरति (महामत्स्यः) बृह. ४।३।१८
उभे तीर्त्वाऽशनायापिपासे शोकाति-
गो मोदते स्वर्गलोके कठो. १।१२
(?) उभे भवत ओदनम् (नः) कठो. २।२५
उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः कठो. २।१
उभे सुकृतदुष्कृते भ.गी. २।५०
(?) उभे स्थाने पश्यतीवं च परलोक.. बृ.ह. ४।३।९
उभे ह्यन्योन्यं दृश्येते किं तदस्तीति.. अ.शां. ६७
उभे ह्येते एषणे एव भवतः [बृह. ३।५।१ + ४।४।२२
उभे ह्येष एते आत्मानं स्पृणुते य एवं वेद वैत्ति. २।९।१
उभौ तौ न विजानीतः [कठो. २।१९ + भ.गी. २।१९
(?) उभौ येनानुपश्यति (जामत्स्वप्ने) कठो. ४।४
उभौ लोकावनुसञ्चरति बृ. उ. ४।३।७
उभौ लोकाववाप्नोतीमं चासुं च छांदो. ८।८।४
उभौ साम गायति सोऽमुनेव स एष
ये चामुष्मात्पराभ्यो लोका-
स्तांश्चाप्नोति छांदो. १।७।१
उमापतिः पशुपतिः पिनाकी ह्यमित-
द्युतिः । ईशानः सर्वविद्यानां.. नृ.पू. १।६
उमारुद्रात्मिकाः सर्वाः प्रजाः
स्थावरजङ्गमाः रुद्रह. १०
उमाशङ्करयोगोयः सयोगो विष्णुरुच्यते रुद्रह. ११
उमासहायं परमेश्वरं प्रभुं त्रिलोचनं
नीलकण्ठं प्रशान्तं ध्यात्वा.. कैव. ७
उर एव वेदिः, लोमानिबर्हिः [आत्मनः] छांदो. ५।१८।२
उरु गृणीहीत्यब्रवीत्तदुदरमभवत् १ऐत. १।४।१
उरोमुखकटिग्रीवं किञ्चिद्दृश्यमुन्नतं क्षुरिको. ४
उरो वेदिर्लोमानिबर्हिर्वेदः शिखा
हृदयं यूपः (आत्मयज्ञस्य) [त्रिसुप. ४ + महाना. १८
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय-
मामृतात् [ऋ.मं. महाना. १३।१८
उर्वी पृथ्वी बहुला विश्वा महाना. १०।१४
उर्वेव मे कुर्वित्यब्रवीत्तदुरोऽभवत् १ऐत. १।४।१

बलुक्कस्य यथा मानुरंधकारः प्रतीयते ।
 स्वप्रकाशेपरानन्देतमोमूढस्यजायते आ. प्र. २६
 उल्काहस्तो यथा लोके द्रव्यमालोक्य
 तां त्यजेत् । ज्ञानेन क्षेत्रमालोक्य
 पश्चाज्ज्ञानं परित्यजेत् प्र.वि. ३६
 (?) उल्कावत्तान्यथोत्सृजेत्
 (साक्षादीनि) अ.ना. १
 उष्यरक्षिताः सिन्धवोगुहा (मा.पा.) बृह. १.११.१
 उवाच पार्य पश्यैतान् भ.गी. १.२५
 उवाच मधुसूदनः भ.गी. २.१
 उवाच वै सो गच्छन्वैते, तद्यत्राश्वमेघ-

ऊरु तदस्य यद्वैश्यः

[अ.अ. ८।४।१९=मं. १०।९०।१२+ चिर्यु. १२।६
 [+मा.सं. ३१।११+तै.आ. ३।१२।६ सुबालो. १।४
 ऊरो चित्तसंयमाद्रसातललोकज्ञानं, शांडि. १।७।९
 ऊर्ध्वं सृजता च देवानां पत्नयः चिर्यु. ९।३
 ऊर्गिति देवाः (उपासते) मुद्रलो. ३।२
 ऊर्जस्वती पयसा पित्रमाना सा मां
 मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम् महाना. १३।५
 ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे प्राणाग्नि. १।५
 (?) ऊर्जेण पशवोऽनुनामयन्तं अ. शिरः. ५
 ऊर्णनाभिर्यथातंतून्सृजतेसंहरत्यपि ।
 जाग्रत्स्वप्ने तथा जीवो गच्छत्या-
 गच्छते पुनः ब्रह्मो. २०
 ऊर्णनाभीव तन्तुना (प्राणान्संचारयेत्) क्षुरिको. ९
 ऊर्ध्वं प्राचः साम्नो जुषः छां. उ. १।४।३
 ऊर्ध्वगमनं विसृजेत् आरुणि. २
 ऊर्ध्वपाताढीमुषुस्त्राख्या प्राणसञ्चा-
 रिणी तथा.. ऊर्ध्वमूर्ध्वमुत्क्रमेत् मैत्रा. ६।२१
 ऊर्ध्वगोपायु(वायु)र्विमुक्तमार्गोभवति २सङ्ख्यासो. १०
 (अथ) ऊर्ध्वजानुरासीनः.. इत्युपतिष्ठते सन्ध्यो. २
 ऊर्ध्वबलञ्जलनं ज्योतिरग्ने, तमो वै
 तिरश्चीनमजरं तत्रजोऽभूत् त्रिपुरो. ४
 ऊर्ध्वदण्डो(डण्ड)र्ध्वरेवाश्र.. ऊर्ध्व
 पदमवाप्नोति.. वासुदेवो. १२
 ऊर्ध्वदृष्टिरधोदृष्टिरुर्ध्ववेधस्त्वधविशरः अमन. २।१५
 ऊर्ध्वनालमधोविन्दुस्तस्य मध्ये
 स्थितं मनः । १ यो.त. १३८

याजिनो गच्छन्तीति बृह. ३।३।२
 (ॐ) उशन ह वै वाजभवसः सर्वे-
 वेदसं वदो कठो. १।१
 (ॐ) उवा वा अश्वस्य मेघस्य शिरः बृह. १।१।१
 उवाश्च तस्मै निष्पुक् च सर्व पापं
 समूहताम् [सहवै. ८+ सूर्यता. २।१
 उक्त्वा शाश्वतीः समाः भ. गी. ६।४१
 उक्त्वा ब्रह्मचर्यं देवा ऊचुः बृह. ५।२।१
 उष्णिमानं संस्पर्शेन विजानाति(?) छांदो. ३।१३।७
 उष्णो भगवान्छुचिरूपः, हंसोभगवान् चाक्षुषो. २
 (?) उष्णोऽयमुष्णोऽसौ.. छांदो. १।३।२

ऊ

ऊर्ध्वपवित्रोवाजिनीवस्वमृतमस्मि(सि) ना. प. ४।४४
 [तैत्ति. १।१०।१०
 ऊर्ध्वपुण्ड्रं कुटीचकस्य, त्रिपुण्ड्रं
 बहुदकस्य.. हंसस्य.. ना. प. ७।५
 ऊर्ध्वपूर्णमधःपूर्णं मध्यपूर्णं शिवा-
 रमकम् । साक्षाद्विधिमुखो.. समाधिः.. मुक्तिको. २।५६
 ऊर्ध्वबाहुर्विमुक्तमार्गो भवति कुंडिको. ९
 (तत्) ऊर्ध्वबाहुर्विमुक्तमार्गो भवेत् कठरु. ४
 ऊर्ध्वमूलमधश्शाखं [भ.गी. १५।१+ यो. शि. ६।१४
 ऊर्ध्वमूलं त्रिपाद्ब्रह्म मैत्रा. ६।४
 ऊर्ध्वमूलं वा आब्रह्मशाखा आकाश-
 वाचरग्युदकभूस्यादयः मैत्रा. ६।४
 ऊर्ध्वमूलोऽवाकशाख एषोऽश्वत्थः.. कठो. ६।१
 ऊर्ध्वमेकः (रश्मिः) स्थितस्तेषां.. तेन
 यान्ति परां गतिम् मैत्रा. ६।३०
 ऊर्ध्वरेतं विश्वरूपं विरूपाक्षं महेश्वरम् ।
 सोऽहमित्यादरेणैव ध्यायेत्.. जा.द. ९।२
 ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमः महाना. १०।१०
 ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं शङ्करं नीललोहितम् नृ.पू. १।६
 ऊर्ध्वलिङ्गं तु मासेन विरूपाक्षं तदर्धके मृत्युलां. ४
 ऊर्ध्वलिङ्गं विरूपाक्षं विश्वरूपं नाम्यहम् मृत्युलां. ३
 ऊर्ध्वशक्तिनिपातेन अधश्शक्तेर्निकुञ्च-
 नात्.. जायते परमं सुखम् योगरा. २१
 ऊर्ध्वशक्तिमयः शिवः बृ.जा. २।१०
 ऊर्ध्वशक्तिमयः सोम अधोशक्तिमयो-
 ऽनलः । ताभ्यां सम्पुटितस्तस्माच्छ-
 श्वद्विर्धमिदं जगत् बृ.जा. २।६
 ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्थाः भ.गी. १४।१८

ऊर्ध्व चावाक् च सर्वतोऽनन्तः	मैत्रा. ६।१७
ऊर्ध्व दिशश्च सर्व नारायणः	सुबालो. ६।१
ऊर्ध्व नारायणः, अधश्च नारायणः	नारा. २
ऊर्ध्वजिगातु मेपजम्	सहस्रै. २५
[क्र.खि.१०।१९१।५	
ऊर्ध्व पञ्चमी कुक्षिर्भवति	गायत्रीर. ३
ऊर्ध्व पदमवाप्नोति(यतिः)	वासु. ३
ऊर्ध्व प्राणमुन्नयत्यपानं प्रत्यगस्यति	कठो. ५।३
ऊर्ध्व भेद्वादधो(ऽधो)नामेः कन्दोयोऽस्ति	
स्वगाण्डवत्, तत्रनाड्यः समुत्पन्नाः	ध्या.वि. ५०
ऊर्ध्व भेद्वादधो नामेः कन्दे योनिः	
स्वगाण्डवत् । तत्रनाड्यः समुत्पन्नाः	
सहस्राणां द्विसप्ततिः	यो.चू. १४
ऊर्ध्व रुद्रः क्रमाद्वाऽपि ब्रह्मविष्णु-	
महेश्वराः । एत एव त्रयो लोकाः..	शिवो. २।५
ऊर्ध्व शिरःपिण्डमयमधःपादमयंतथा	महो. ५।१५६
(?)ऊर्ध्वः सुविः स उदानः	छां.उ. ३।१३।५
ऊर्ध्वा दिग्धूर्वाः प्राणाः, अवाचीदिग-	
बाश्चः प्राणाः	वृह. ४।२।४

ऊर्ध्वाधः कुण्डलीभेद उन्नत्य-	
श्रेयनक्रमः । योगोऽयंसिद्धिदायकः	अमन. २।१४
(?)ऊर्ध्वाभिश्चतिरश्नीनाभिश्चविष्टुभिः..	छां.उ. ७।११।१
ऊर्ध्वान्नायः, निरालम्बपीठः	निर्वाणो. १
(ॐ)ऊर्ध्वान्नायगुरुपदेश...भज	
मनस्तच्छ्रीगुरुचैतन्यं	मठाज्ञा. १
ऊर्ध्वे सात्त्विको मध्ये राजसोऽयम-	
स्तामसः (गुणस्थानानि)	शारीरको. ९
ऊर्वोरपरिचेदन्ते उभे पादतले यथा ।	
पद्यामनं भवेदेतत्	योगकुं. १।५
ऊर्वोरपरि वै घन्ते यदा पादतले उभे ।	
पद्यासनं भवेदेतत्	त्रि.ब्रा. २।३९
ऊर्वोर्मध्ये तु संस्थाप्य मर्मप्राण-	
विमोचनम्..छिन्देत्	क्षुरिको. १४-
ऊर्वोर्वैद्यः (अजायत)	ग.शो. ३।११
(?)ऊर्ध्वाणो प्रस्ता निरस्ता विवृत्ता	
वक्तव्याः (मा.पा.)	छां.उ. २।२२।५
ऊर्ध्वसिकताः, सिन्धवो गुदा,	
यकृच्च छोमानश्च पर्वताः	बृ.उ. १।१।१

ऋ

ऋक्साम यजुरेव च	भ.गी. ९।१७
ऋगंह यजुरंह सामाहमथर्वाङ्गिरसोहं	अ.शिरः. १।१
ऋगात्मकोमकारः, यजुरात्मकउकारः	राधो. २।२
ऋगगाथा कुण्ड्या तन्मितम्	१ ऐत. ३।६।४
ऋग्दक्षिणः पक्षः, सामोत्तरः पक्षः	तैत्ति. २।३
ऋग्भिरेतं यजुर्भिरन्तरिक्षं स सामभि-	
र्यत्तत्कवयो वेदयन्ते	प्रश्नो. ५।७
ऋग्भिः पूर्वाह्ने दिवि देव ईयते	सूर्यता. १।५
ऋग्भ्यो जातां सर्वशो मूर्तिमाहुः	सूर्यता. १।५
ऋग्यजुस्सामरूपाय वेदाहरणकर्मणे ।	
प्रणवोद्गीथवपुषे महाश्वशिरसे	
नमः स्वाहा.. [त्रि.म.ना. ७।१० + ह्यग्री. २	
ऋग्यजुस्सामार्थर्वरूपः सूर्योऽन्तरा-	
दित्ये हिरण्यः पुरुषस्तत्साम्नो	
द्वितीयं पादं जानीयात् [नृ.पू. १।४+ ग.पू. १।१२	
ऋग्यजुस्सामार्थर्वाणश्चत्वारो वेदाः	
साङ्गाः सशाखाश्चत्वारः पादाभवन्ति नृ. पू. १।२	
ऋग्यजुस्सामार्थर्वा..तुर्थं पादं जानीयात्	ग.पू. १।१२
ऋग्यजुस्सामार्थर्वाणश्चत्वारो	
वेदाश्चत्वारः पादाः...	ग. पू. १।१३

(अथ)ऋग्यजुस्सामेतिविज्ञानवत्येषा	मैत्रा. ६।५
ऋग्निधानायस्वाहा, कषोत्कायस्वाहा	महाना. १।४।१९
ऋग्वेद एव पुष्पं, ता अमृता आपस्ता	
वा एता ऋचः	छांदो. ३।१।२
ऋग्वेदमस्या आद्यात्पादादकल्पयत्	...
ऋग्वेदस्य तु शाखाः स्युरेक-	
विंशतिसङ्ख्याकाः	मुक्तिको. १।१२
ऋग्वेदस्य रूपं स्पर्शाः, यजुर्वेदस्यो-	
ष्माणः, सामवेदस्य स्वराः	३ ऐत. २।५।१
ऋग्वेदं प्रपद्ये यजुर्वेदं प्रपद्ये सामवेदं	
प्रपद्ये इत्येव तदवोचम्	छांदो. ३।१५।७
ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं साम-	
वेदमार्थर्वणं एतद्भगवांऽध्येमि	छांदो. ७।१।२
ऋग्वेदादिविभागेन वेदाश्चत्वारः..	मुक्त्यु. १।११
ऋग्वेदेनैस्वर्योदात्त एकाक्षर ओङ्कारः	२ प्रणवो. १२
ऋग्वेदो गार्हपत्यं च पृथिवी ब्रह्म एव	
च । अकारस्य शरीरं तु व्याख्यातं ब्र. वि. ४	
ऋग्वेदो गार्हपत्यं च प्रत्यक्षस्य...	१ प्रणवो. ४
ऋग्वेदो गार्हपत्यं च मन्त्राः सप्तस्वराः	पञ्चम. २

ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः...

अस्यैव (महतो भूतस्य).. निश्च-

सितानि [बृह+२।४।१०+४।५।११ मै.६।३२

ऋग्वेदोऽस्याः (गायत्र्याः) प्रथमः पादः गायत्रीर. ३

ऋग्वै गायत्री, यजुरुष्णिक्, अनुष्टुप्

साम, स आदित्यो भवति

ग. पू. १।११

ऋग्वै प्रथमः पादः

ग. पू. १।१३

ऋग्वै भूः सा माया भवति

ग. पू. ३।१

ऋग्वै वसुयजू रुद्राः सामादित्याः

ग. पू. १।११

ऋग्वै यजुर्मयं साममयं ब्रह्ममय-

ममृतमयं (सुदर्शनं) भवति

नृ. पू. ५।७

ऋग्वै साममयमुद्रासा, स एष

सर्वस्यै त्रयीविद्याया आत्मा

कौ. उ. २।६

ऋच एव मधुकृतः, ऋग्वेद एव पुष्पं

छान्दो. ३।१।२

ऋचश्च सामानि च प्राचीनातानं

कौ. उ. १।१

ऋचं ब्राह्मं जनयन्तः, देवा अग्रे..

चिन्त्यु. १३।२

ऋचः सामानि जज्ञिरे

चिन्त्यु. १२।४

[ऋ. अ. ८।४।१८ मं. = १०।९०।९

वा. सं. ३१।७

ऋचः साम रसः, साम उद्गीथो रसः

छान्दो. १।२

ऋचामेव तद्रसेनर्चा वीर्येणर्चा

यज्ञस्य विरिष्टं सन्दधाति

छान्दो. ४।१७.४

ऋचे त्वा ऋचे त्वा समित्स्त्रवन्ति

महाना. १२।३

[+वा. सं. १३।३९+त्रिसुप. ३+

तै. सं. ४।२।९।६

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् [नृ. पू. ४।३

+५।२

[रामो. ५।२+तै. आ. २।११।१

बृहचो. ४+

गुह्यका. ५३+सहवै. १५+

श्वेता. ४।८;

ऋक्सं. अ. २।३।२१=मं. १।१६४।३९ २ प्रणवो. ५

ऋचोपनिषदस्ता वै ब्रह्मरूपा ऋचः

स्त्रियः । द्वेषश्चाणूरमल..

कृष्णो. १३

ऋचोयजुषिप्रसवन्तिवक्तासामानि

साम्राज्यसुरन्तरिक्षम् । त्वं यज्ञनेता.. एकाक्ष. ७

ऋचो यजुषि सामानि [बृह. ५।१४।२+ सीतो. १३

ऋचो यजुषि सामानि दीक्षा यज्ञाः..

भुवनानि चतुर्दश

गुह्यका. २९

ऋचोयजुषिसामानियज्ञःक्षत्रं च ब्रह्म च

प्रभो. २।६

ऋचो यजुषि सामानीत्यष्टाक्षराणि

बृह. ५।१४।२

ऋचो ह यो वेद स वेद देवान्

इतिहा. ९

ऋजुकायः प्राञ्जलिश्च प्रणमेदिष्ट-

देवताम् । ततो दक्षिणहस्तस्य..

१ यो. त. ३६

ऋजुवक्तादिकाभासमलातस्पन्दितं

यथा. विज्ञानस्पन्दितं तथा

अ. शां. ४७

ऋतभुगुणमयेनपटेनात्मानमंत-

र्ध्यावस्थितः

मैत्रा. २।११

ऋतमवादिषं, सत्यमवादिषम्

तैत्ति. १।१२।१

ऋतमात्मा परब्रह्म सत्यमित्यादिका

बुधैः । कल्पिता.. संज्ञा

महो. ४।४५

ऋतमेकाक्षरं ब्रह्मव्यक्ताव्यक्तं सनातनं

विष्णुह. १।७

ऋतवश्च मे भूयात्

चिन्त्यु. ७।३

ऋतवोऽङ्गानि मासाश्चार्धमासाश्च

पर्वाणि, अहोरात्राणि प्रतिष्ठा

बृह. १।१।१०

ऋतस्पृशमिति सत्यं वै वागृचास्पृष्टा

१ ऐत. ३।६।२

ऋतस्यतन्तुविततं विचृत्य (विष्टृत्य)

तदपश्यत्तदभवत्प्रजासु

महाना. २।६

ऋतस्य पदे कवयो निपान्ति

चिन्त्यु. १।१४, ९

ऋतस्य पन्थामसि हि प्रपन्नः

बा. मं. २२

ऋतं च सत्यं चाभीक्षात्तपसोऽप्य-

जायत [ऋक्सं. अ. ८।८।४८=

मं. १०।१९०।१

[तै. आ. १०।१।१३+

महाना. ६।१

ऋतं तपः, सत्यं तपः, श्रुतं तपः

महाना. ७।८

ऋतं नष्टं यदा काले षण्मासेन

मरिष्यति

मृत्युलां. २

ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके गुहां

प्रविष्टौ परमे परार्धे

कठो. ३।१

ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि

तैत्ति. १।१।१

ऋतंसत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्

महाना. १०।१०

[×नृ. पू. १।६×

मृत्युलां. २

ऋतं सत्यं परं ब्रह्म....तन्मे मनः

शिवसङ्कल्पमस्तु

२ शिवसं. ३०

ऋतं सत्यं परं ब्रह्म सर्वसंसारभेषजम्

[अ. पू. ५।७२+

जा. द. ९।१, २

ऋतं सत्यं परं ब्रह्म...विश्वरूपाय

वै नमो नमः

वनदु. १५९

ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च

ऋतं वच्मि, सत्यं वच्मि

तैत्ति. १।९।१

ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि

[तैत्ति. १।१+१।१३+ ऐत. कौलो. शांतिः

गणप. २

ऋतीयमानो अहमस्मि नाम

ऋतुकाले सम्प्रयोगादेकरात्रोषितं

बा. मं. २४

गर्भो. ३

ऋतुत्रयमयनं भवति	त्रि.म.ना. १।४	(यस्मात्) ऋषिभिर्नान्यैर्नैर्ऋतुमस्य	
ऋतुरस्यार्तवोऽस्याकाशाद्योनेः		रुग्मुपलभ्यते तस्मादुच्यते रुग्ः	बहुको. २०
सम्भूतो... त्वमात्माऽसि	कौ. उ. १।६	ऋषिभिर्बहुधा गीतं	मं. गी. ११।५
ऋतुषु पञ्चविधं सामोपासीत	छांदो. २।५	ऋषिर्बिप्राणां महिषो मृगाणां	महावा. ८।४
ऋतुसन्धौ मुण्डयेन्मुण्डमात्रं, नाघो		[ग.पू. १।२+	त्रिसुप. ३
नाशं जातु शिखां न वापयेत्	शाटपा. २०	ऋषिर्भूत्वा ऋषीन्यक्षराक्षस-	
ऋतुं न निन्देत्तद्वत्तम्	छांदो. २।१६।२	गन्धर्वान् प्राच्यानारण्यांश्च	
ऋतेनशावापृथिवी ऋतेनत्वंसरस्वति	सहस्रै. ३	पशूनसृजत्	सुबालो. २।२
ऋतेनापिहितागुहा, ऋतेनापिहिनागुहा	इतिहा. १६	ऋषिभ्रातृदेवर्षि-ऋषिर्षि-मनुष्य-	
ऋतेऽपि त्वा न भविष्यन्ति सर्वे	मं. गी. ११।३२	र्षीन्..युग्मकृत्वा प्राक्ष्यानर्चयेत्	ना. प. ४।३९
ऋतूनां कुसुमाकरः	मं.गी. १०।३५	ऋषिं प्रसृतं कपिलं यस्तममे	शेता. ५।२
ऋषयः क्षीणकल्मषाः	मं.गी. ५।२५	ऋषिर्विश्वेश्वरं देवं.. तस्यमध्ये महान-	
ऋषयः सनकाद्या हिरण्यगर्भ-		मिर्विश्वार्षिर्विश्वतोमुखः	चतुर्वे. ३
मुपगत्योचुः	राधिको. १	ऋषीणामरुन्धती, पर्जन्यस्य विद्युत्	त्रिसु. ९।२
ऋषयो दीर्घसत्रत्वात्...तस्मा-		ऋषीणां चरितं सत्यं-अथर्वाङ्गिर-	
दीर्घामुपासीत (सन्ध्यां)	सन्ध्या. १७	सामसि	प्रसो. १।८
ऋषयोऽनृषयो जायन्तेपुरुषोत्तमात्	श्रीकृ.पु.सि.२	ऋषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्	मं.गी. ११।१५
ऋषयो वै ब्रह्मोद्यमाह्वयितवा ऊचुः	आर्षे. १।१	ऋषे प्रियं वै मे धामोपागा वरं ददामि	१ ऐत. १।१।४
ऋषयो वै सरस्वत्यां सत्रमासत	छाग. १।१	ऋष्यशृङ्गो मृगाः, कौशिकः कुशात्,	
ऋषिभिरदात्पृथग्भिभिः	अरुणो. ८	जाम्बूको जम्बूकात्, जातः	वज्रसू. ५

ए

एक आहुरसदेवेदमग्र आसीत्	छां.उ. ६।२।१	एक एवाह्वयः सदा, ब्रह्मरूपतया	
एक आहुरेकभूयं वै प्राणा गच्छन्ति	कौ.उ. ३।२	ब्रह्म केवलं प्रतिभासते	२ आत्सो. १
एकऋषिर्भूत्वामूर्धनितिष्ठति(सूर्योऽग्निः)	प्राणामि. २।३	एक एवाहमद्वितीयः	मं. भा. २।७
एक एव चरेन्नित्यं वर्षास्वेकत्र		एकजननी लक्ष्मीर्भवति	ना.पू. ता. २।१
संवसेत् (यतिः)	ना.प. ३।३१	एकजन्महरं विषम्	महो. ३।५५
एकएवचरेन्नित्यंसिद्धपर्यमसहायकः ।		एकतत्त्वदृढाभ्यासात् प्राणस्पन्दो	
सिद्धिमेकस्य पश्यन्हि..	ना.प. ३।५३	निरुध्यते	मुक्ति. २।४०
एक एव वसेद्वौ वा चरेत्	ना.प. ७।२	एकताप्राप्तयेऽसीतितदैक्यमनुभूयतां	शु. २. ३।६
एक एव शिवो नित्यः.. शिव एव		(?) एकतां रसं गमयन्ति (मधुकृतः)	छां. उ. ६।१।१
सदा ध्येयः	शरभो. ३१	एकत्वेन पृथक्त्वेन	मं. गी. ९।१५
(?) एक एव साक्षीस्वप्रकाशः(आत्मा)	नृसिंहो. ९।६	एकत्रात्रं पलालमिव (त्यजेद्यतिः)	ना.प. ७।१
एक एव सोऽकामयतजायामेस्यात्	बृह. १।४।१७	एकत्वं नास्ति, द्वैतं कुतः	सुबालो. ५।१५
एक एव हि भूतात्मा भूतेभूते		एकत्वं प्राणमनसोः..योगइत्यभिधीयते	मैत्रा. ६।२५
व्यवस्थितः । एकधा बहुधा	त्रि. ता. ५।१२	एकदण्डत्रिदण्डादिजटाभस्मादिकं	अमन. २।३२
चैव दृश्यते जलचन्द्रवत्	ब्र. विं. ११	एकदण्डी त्रिदण्डी वा	गोपीचं. ५
एक एवात्मा मन्तव्यो जाग्रत्स्वप्न-		एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमं कुशधारिणम्	गणप. ९
सुषुप्तिषु [ब्र. विं. ११+	त्रि.ता. ५।११	एकदन्तायविष्णवेवक्रतुण्डायधीमहि	गणप. ८

एकदा प्रजस्रियः सकामाः सर्वरी..	
सर्वेश्वरं.. ऊचिरे	गोपालो. ११
एकदा सोऽमलप्रहो.. वप्रच्छ पितरं	
एकदा द्विपायनं मुनिम्	महो. २।१४
एकदा बभूवा वै वरुण्यते जल-	
एकदा वत [म. वि. १२+	त्रि. ता. ५।१२
एकमेवानुष्टुभ्यमेतत्	बृह. ४।१।२, ३
एकमक्तिर्विशिष्यते	म. गी. ७।१७
एकभूयं वै प्राणा गच्छन्ति	कौ. उ. ३।२
एकपाद्वा एतत्सम्राट्	बृह. ४।१।२, ३६
एकभूयं वै प्राणा भूत्वा एकैकं सर्वाण्ये-	
वैतानि प्रक्षापयन्ति	कौ. त. ३।२
(१) एकमङ्गारं सद्योतमात्रम्	छां. उ. ६।७।५
एकमद्वैतं निष्कलं निष्क्रियं.. शिवं..	
एकसूक्तैरभिषिच्य	भस्मजा. २।४
एकमप्यास्थितः सम्यक्	म. गी. ५।४
(१) एकमव्यक्तमवन्तरूपम्	महाना. १।५
एकमस्य साधारणं द्वे देवानभाजयत्	बृह. १।५।१
एकमस्य साधारणमितीदमेवास्य	
तत्साधारणमङ्गं सद्भिदमयेत.. न स..	बृह. १।५।२
एकमात्रस्तथाऽऽकाशोऽऽमात्रं तु...	अ. ना. ३२
एकमात्रस्तद्विदं तद्ब्रह्मास्मि	अ. पू. ५।६५
(१) एकमूर्ध्वमुदंवाधारयेत् (गोपीचं)	वासु. २
एकमेव तत्परं ब्रह्म विभाति निर्वाणं	ब्रह्मो. ३
एकमेव तदेकं सन्न न्यभवत्	बृह. १।४।११
एकमेव तद्वैतं, एतदमृतम्	नृसिंहो. ८।२
एकमेव परं ब्रह्म विभाति	ब्रह्मो. २
एकमेवाद्वयं ब्रह्म मायया च	
चतुष्टयम्	गोपालो. २।१५
एकमेवाद्वयं ब्रह्म नेह नानास्ति किञ्चन	अध्यात्मो. ६३
एकमेवाद्वितीयं तदेक आहुः	छांदो. ६।२।१
एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म [त्रि. म. ता. ३।३+	पैङ्गलो. १।१
एकमेवाद्वितीयं यदुरोर्वाक्येन	
निश्चितम् । एतदेकान्तमित्युक्तं..	मैत्रे. २।१५
एकमेवाद्वितीयं सन्ना सरूपविवर्जितम्,	
वाचकत्वं तद्वितीयं	शु. र. ३।५
एकमेवाद्वितीयं सद्ब्रह्मवाहं न संशयः	ते. वि. ३।३९
(१) एकमेवानुपश्यति	प्र. वि. १५
एकयज्ञोपवीती तु नैव सन्न्यस्तुमर्हति	परब्र. २०

एकया यात्यनावृत्तिम्	अ. गी. ८।२६
(अथ) एकयोर्ध्व उदानः पुण्येन	
पुण्यलोकं नयति	प्रभो. ३।७
एकरसं पुरमेव ब्रह्म मकारेण	
जानीयात्	नृसिंहो. ५।७
एकरसोऽन्यवहार्यः केनचनाद्वितीय	
ओतश्च प्रोतश्च	नृसिंहो. ८।१
एकरात्रद्विरात्रकुच्छ्रचान्द्रायणादि	
चरन्तः (हंसाः) आत्मानं प्रार्थयन्ते	आभमो. ४
एकरात्रं वसेद्ब्रामेपत्तने तु दिनद्वयम्	
..नगरे पञ्चरात्रकम् (यतिः)	ना. प. ४।१२, २०
एकरात्रोषितं (शुक्रशोणितं) कललं	
भवति [गर्भो. ३+	निरुक्तो. १।४
एकरूपमनामयम् (ब्रह्म)	ते. वि. ६।७२
एकरूपः प्रशान्तात्मा मौनी	
स्वात्मसुखो भव	अ. पू. ५।९
एकल एव मध्ये स्थाता (सूर्यः)	छां. उ. ३।११।१
एकवक्त्रं तु रुद्राक्षं परतत्त्वस्वरूपकम्	र. जा. २४
एकवारं प्रतिदिनं कुर्यात्केवलकुम्भकं	१यो. त. ६८
एकवासा अवासा वा (यतिः) [ना. प. +३३१+४।१७	
एकविंशतिशाखायामृगवेदः परि-	
कीर्तितः (अथर्ववेदे)	सीतो. १५
एकविंशत्यादित्यमाप्नोति	छांदो. २।१०।५
एकविंशो वा हतोऽसावादित्यो	
द्वाविंशेन परमादित्याज्जयति	
तन्नाकं तद्विशोकम्	छांदो. २।१०।५
एकशतं चान्ये साधन आगमाः...	इतिहा. २
एकशतं ह वै वर्षाणि मघवान्	
प्रजापतौ ब्रह्मचर्यमुवास	छांदो. ४।११।३
एकश्चरेन्महीमेतां निस्सङ्गः.. (यतिः)	ना. प. ५।३७
एकसङ्ख्याविहीनोऽस्मि [मैत्रे. ३।७+	ते. वि. ३।२९
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा [कठो.	५।९, १०, ११
एकस्तम्भेन वद्वारे त्रिस्थूणे पञ्च-	
देवते । ईदृशे तु शरीरे वा	
मतिमानुपलक्षयेत्	यो. शि. १।७२
एकस्तु पिबते देवः स्वच्छन्दोऽत्र	
वशानुगः	मंत्रिको. ६
एकस्थमनुपश्यति	म. गी. १३।३१
एकस्मिन्नविद्यापादेऽनन्तकोटि-	
ब्रह्माण्डानि सावरणानि भ्रूयन्ते	त्रि. म. ना. ८।२

एकस्मिन् वशगेयान्ति चत्वारोऽपि वशं गताः। (मोक्षद्वारपात्ताः)	महो. ४।३
एकस्मिन्नेव पशावादीयमानेऽप्रियं भवति किमु...	बृह. १।४।१०
एकस्मिन्नेव संसिद्धे संसिद्धयति परस्परम् (प्राणश्चेतश्च)	अ. पू. ५।५२
(?) एकस्य हेतुत्वमेति य एवं वेद एकस्यापि कर्मवशादनेकदेहसम्भवात् (नजीवो ब्राह्मणः)	मैत्रा. ६।१७
एकं चरणमन्यस्मिन्नुरौ वीरासनं..	व. सू. ३
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षि- भूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं..	त्रि. ब्रा. २।३७
एकं पादमयैकस्मिन्विन्यस्योरुणि..	शु. र. १।१९
वीरासनमुदीरितम्	शाण्ड. १।३।४
एकं पुण्डरीकं धारयति (स्वप्ने)	३ ऐत. २।४।७
एकं बीजं बहुधा यः करोति [श्वेता. ६।१२]	गुह्यका. ७०
एकं ब्रह्म (राधाकृष्णौ)	राधो. २।१
एकं ब्रह्म चिदाकाशं सर्वात्मक- मखण्डितम्	महो. ५।५६
एकं ब्रह्म द्वयं ब्रह्म मोहो ब्रह्म..	ते. वि. ६।३६
एकं ब्रह्माहमस्मीति [अ. पू. ४।२८]	+कठरु. १५;
एकं भद्रासनादीनां समास्थाय..	भवसं. ३।२४
यमाख्यैर्नियमाख्यैश्च..	अ. पू. ४।२८
एकं भस्म सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपं बहिश्च	बृ- जा. २।१
एकरूपं बहुधा यः करोति [कठो. ५।१२]	+ब्रह्मो. १५
एकं रूपं बहुधा या करोति	गुह्यका. ४४
एकं (मोक्षद्वारं) वा सर्वयत्नेन सर्वमुत्सृज्य संश्रयेत्	महो. ४।३
एकं शिर एकमेतदक्षरम्	बृह. ५।५।३, ४
एकं सन्न व्यभवत्	बृ. उ. १।४।११
एकंसिद्धासनं प्रोक्तं द्वितीयं कमलासनं	यो. चू. ३
एकं साङ्ख्यं च योगं च	भ. गी. ५।५
एकः (देवः) ओमिति होवाच	बृह. ३।१।१
(?) एकः कर्मदेवानामानन्दः	बृह. ४।३।३३
एकः कृतार्थो भवते वीतशोकः	श्वेता. २।१४
एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव, यतो बभूव भुवनस्य गोपाः	नृ. पू. २।८

एकः इयामः पुरतो रक्तः पिनाकी स्त्रीपुंसरूपस्तं विभज्य स्त्रीपुंसस्य स्त्रीरूपं, पुंसि च पुंरूपं व्यधात्	अन्यको. ७
एकः सन् बहुधा विचारः	चित्त्यु. ११।१
एकः (आत्मा) सम्भिद्यते भ्रान्त्या मागया, नस्वरूपतः [अ. पू. ५।७६ +	जा. द. १०।२
एकः सुपर्णः स समुद्रमाविवेश [अ. अ. ८।६।१६ = मं. १०।११४।४ [तै. आ ३।१।६।१५	३ ऐत. १।६।७
एकाऽऽकृतिः (राधाकृष्णयोः) एकं ब्रह्म	राधो. २।१
एका (भक्तिः) कर्मभिभिता देवाना- मृषीणामुपासकानां भवति तराम्	सामर. २
(?) एका कलाऽतिशिष्टा स्यात्	छां. उ. ६।७।३
एकाकिना समुपगम्य विविक्तदेशं..	यो. क्षि. १।९०
(?) एकाकी कामयते जाया मे स्यात्	बृ. उ. १।४।१७
एकाकी चिन्तयेद्ब्रह्म मनोवाक्याय कर्मभिः। मृत्युं च नाभिनन्देत् जीवितं वा..	ना. प. ३।६०
एकाकी तेन दण्डऽहं (कृतकर्मणा) गतास्ते फलभोगिनः	गर्भो. ६
एकाकी निरस्पृहस्तिष्ठेन्न हि केन सहालपेत् । दद्यान्मारायणेत्येव प्रतिवाक्यं सदा यतिः	ना. प. ३।५९
एकाकी यतचित्तात्मा	भ. गी. ६।६
एकाक्षरपदारूढं सर्वात्मकमखण्डितम् .. त्रिपञ्चारायणं भजे	एकाक्ष. ०
एकाक्षरप्रदातारं यो गुरुनाभिनन्दति...	शाट्याय. ३६
एकाक्षरं त्वक्षरेऽत्रास्ति	एकाक्ष. १
एकाक्षरं परमात्मानं हृदि समावेक्ष्य	ग. शो. ५।६
एकाक्षरः पुनश्चायं मोमित्येवं..	शिवो. १।१९
एका गुह्या सर्वभूतान्तरात्मा	गुह्यका. ४४
एकाग्रमनसा यो मां ध्यायते हरिमव्ययं, हृत्पङ्कजे च स्वात्मानं स मुक्तो नात्र संशयः	वासुदे. ७
एकाग्रमानसो भूत्वा	दुर्वासो. २।६
एकाङ्गुलं पादतरोरस्य मूलम्	कात्याय. १
एका च दशशतं च संहस्रं चायुतं.. तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु	शिवसं. १३
एकात्मकमखण्डितदित्यन्तर्भाव्यतां दृढं	महो. ५।११८
एकात्मके परे तत्त्वे भेदकर्ता कथं वसेत्.. भेदः केनावलोकितः	अध्यात्मो. २५

एकात्मप्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं [मां. ७ + रानो. १।५
 एकादशकृत्वः प्रयुक्ता (गायत्री)...
 अन्तरिक्षलोकमभिप्रयति सन्ध्यो. २
 एकादशपदा वाऽनुष्टुभभवति नृ. पू. २।३
 एकादशमुखं त्वं रुद्रैकादशदैवतम् रु. जा. ३६
 एकादशरुद्रं च गच्छति रु. जा. ४५
 एकादशरुद्रा नारायणः ना. पू. ता. ५।३
 एकादशरुद्रावतार द्वादशार्कतेजाः लांगुलो. ८
 (१) एकादशात्मानमात्मानं नृसिंहो. ४।१
 (१) एकादशरुद्रांश्च तत्र वै (व्यायेत) रा. पू. ४।५१
 (१) एकादशात्मानं नारसिंहं नृसिंहो. ४।१
 एकादशासनानि स्युश्चक्रादि.. चक्रं
 पञ्चासनं कूर्मं मयूरं कुक्कुटं वराहो. ५।१५
 एकादशी भवेन्नारी ना. वि. ११
 एकादशे धामनि भूय एवागस्त्यं... त्रि. ता. १।१६
 एकादश्यां तपोलोकं ना. वि. १६
 एका देवी सर्वभूतेषु गूढा व्या-
 मोत्येतत्सर्वभूतान्तरस्था गुह्यका. ६९
 एकाध्वरपक्षेऽष्टाध्वरपक्षेवा स्वशाखा-
 नुगतमंत्रैरष्टश्राद्धान्यष्टदिनेषु ना. प. ४।३९
 एकान्तकेवलचिदेकरसस्वभावे... वराहो. २।७३
 एकान्तगुहायां मुक्तासनमुखगोष्ठी निर्वाणो. १
 एकान्तस्थानम् निर्वाणो. ४
 (१) एकान्ते द्वैतवर्जिते स्कन्दो. १२
 एकान्तेन श्रवणार्थानुसन्धानं
 मननं भवति पैङ्गलो. ३।२
 एकाग्रं न तु भुञ्जीत बृहस्पति-
 समादपि १ सं. सो. २।७६
 एकाभावे द्वितीयं न द्वितीयेऽपि
 न चैकता ते. वि. ५।२१
 एकारामः परिव्रज्य मिक्षार्थं... ना. प. ३।५५
 एका स आसीत्प्रथमा सा नवासी-
 दासोनविंशदासोनत्रिंशत् त्रिपुरो. ३
 एकांशेन स्थितो जगत् भ. गी. १०।४२
 एकां हि रुद्रा यजन्ति गोपालो. १।२०
 एकीकुर्यात् प्रयत्नतः (चित्तं) अद्वैत. ४५
 एकीभवति न जिघ्रतीत्याहुः (आत्मा) बृह. ४।४।२
 एकीभवति न पश्यतीत्याहुः ॥ बृह. ४।४।२
 एकीभवति न मनुत इत्याहुः ॥ बृह. ४।४।२
 एकीभवति न रसयत इत्याहुः ॥ बृह. ४।४।२

एकीभवति न वदतीत्याहुः (आत्मा) बृह. ४।४।२
 एकीभवति न विजानातीत्याहुः ॥ बृह. ४।४।२
 एकीभवति न शृणोतीत्याहुः ॥ बृह. ४।४।२
 एकी भवति न स्पृशतीत्याहुः ॥ बृह. ४।४।२
 एकीभूतः परेणासौ तदाभवतिकेवलः जा. व. १०।११
 एकीभूतः सुषुप्तस्थः प्रज्ञानघनवान्
 सुखी । नित्यानन्दमयोऽप्यात्मा
 सर्वजीवान्तरस्थितः ना. प. ८।१५
 एकेन तंतुना जालं विक्षिपति ब्रह्मो. १
 एकेन द्वाभ्यां त्रिभिरष्टभिर्वा कालेन
 चैवात्मगुणैश्च सूक्ष्मैः । आरभ्य
 कर्माणि.. भावांश्च.. विनियोजयेत् श्वेता. ६।३
 एकेन ध्यानयोगेन तत्प्रापं निर्दहेत्.. दुर्वासो. १।११
 (१) एकेन नखनिकृंतनेन सर्वं कार्णा-
 यसंविज्ञातं.. स्यात् [छां. उ. ६।१।६ + पंचब्र. ३०
 एकेन बिल्वपत्रेण सन्तुष्टोऽस्मिन्महामुने शबिल्वो. २
 एकेन मारुतमाकृष्य अमृ. १९
 एकेन लोहमणिना सर्वं लोहमयं यथा ।
 विज्ञातं स्यादयैकेन.. पञ्चब्र. ३०
 एकेनैवतुपिण्डेन, मृत्तिकायाश्च गौतम ।
 विज्ञातं मृण्मयं सर्वं भृदभिन्नं
 हि कार्यकम् पञ्चब्र. २९
 एकेनैव शरीरेण योगाभ्यासात्... चिरात्
 सम्प्राप्यते मुक्तिर्मर्कटकमः यो. शि. १।१४०
 एकेऽन्यमभिध्यायन्त्येकेऽन्यम् मैत्रा. ४।५
 एके सावित्रीमनुष्टुभमन्वाहुः छां. उ. ५।१४।५
 एके ह कुरुनन्दन भ. गी. २।४१
 एकैकमुपास्ते, न स वेदाकृत्सो
 ह्येषोऽत एकैकेन भवति बृह. १।४।७
 एकैकशो निषेव्यन्ते.. तत्र सिद्धिं
 प्रयच्छन्ति.. मुक्तिको. २।१२
 एकैकस्यास्तु शाखाया एकैकोप-
 निषन्मत्ता मुक्तिको. १।१४
 एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका देव्यु. २०
 एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका देव्यु. २७
 एकैकं जालं बहुधा विकुर्वत् श्वेता. ५।३
 एकैकमेतानि सर्वाणि प्रज्ञापयन्ति कौ. उ. ३।२
 एकैकं देवमेतस्यैव सा विसृष्टिः बृह. १।४।६
 एकैकः पुरुषो देवान् भुनक्ति बृह. १।४।१०

एको अश्वो वहति सप्तनामा
[+अक्सं. अ. २२।३
एको गणेशो बहुधा निविष्टः
(१) एकोद्धारः स्वद्योतमात्रः
एकोत्तरं नाडिशवं तासां मध्ये वराः
स्मृताः (परास्मृता) सुषुम्ना तु
परे लीना [क्षुरिको. १५+
एकोऽथवाऽप्यच्युत तत्समक्षम्
एको दण्डद्वयं मध्ये पश्यति ज्ञान-
चक्षुषा.. ब्रह्मलोकं व्रजन्ति ते
एको देवः प्रापको यो वसूनां...
एको देवः सर्वभूतेषु गूढः
[ब्रह्मो. १६+
एको देवः साक्षी निर्गुणश्च तद्ब्रह्माह-
मिति व्याहरेत्
एको देवो नित्यलीलानुरक्तः
एको देवो बहुधानिविष्टः [मुद्रलो. १+
एकोऽनन्तः प्रागनन्तो दक्षिणतो-
ऽनन्तः ऊर्ध्वचावाक्चसर्वतोऽनन्तः मैत्रा. ६।१७
एकोनविंशतिमुखः साष्टाङ्गः सर्वगः
प्रभुः
एकोनविंशतिसंख्याकानामुपनिषदां
पूर्णमद इति शान्तिः
एकोऽपि ब्रह्मप्रणवः सर्वाधारः
स्वयच्छ्रुत्योतिरेष सर्वेश्वरो विभुः
एकोऽपि सन्बहुधा यो विभाति
एको बटुको न द्वितीयाय तस्मै
एको बहूनामसि मन्यवी ज्झितो
[अक्सं. अ. ८।३।१९=मं. १०।८४।४ वनदु. ११०
एको बहूनां यो विदधाति कामान्
[कठो. ५।१+श्वेता. ६।१३+
एको भिक्षुर्यथोक्तः स्यात्
एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै
एको वशीनिष्क्रियाणां बहूनां
एको वशी सर्वगः कृष्ण ईडयः
एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा
[कठो. ५।१२
एको विश्वानि रूपाणि योनीश्चसर्वाः

चित्यु. ११।९
मं. १।१६४।२
हेरम्बो. १०
छां. उ. ६।७।३
यो. शि. ६।५
भ. गी. १।१४२
योगरा. २०
ग. पू. १।६
श्वेता. ६।११+
गोपालो. ३।१९
ना. प. ६।३
राधोप. ४।३
चित्यु. १४।१
ना. प. ८।१२
मुक्ति. १।५४
ना. प. ८।४
गो. पू. ३।२
बटुको. २२
वनदु. ११०
गो. पू. ३।३
ना. प. ३।१६
अ. शिरः. २।७
श्वेता. ६।१२
गो. पू. ३।२
ब्रह्मो. १६
श्वेताश्व. ५।२

एको विष्णुरनेकेषु.. अनुरयूतो वस-
स्यात्मा भूतेष्वहमवस्थितः वासुदे. ९
एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः।
त्रीं लोकान् व्याप्य भूतात्मा.. शारयो. २५
एकोऽश्वत्थनामैतद्ब्रह्म मैत्रा. ६।४
एकोऽस्य संबोधयतीत्येनं ब्राह्म मैत्रा. ६।४
एको ह देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो ह
जातः स उगर्मे अन्तः स एव
जातः सजनि.. [अ. शिर. ३।६+ बटुको. २१
एकोऽहमविकलोऽहं निर्मलनिर्वाण-
मूर्तिरेवाहं आ. प्र. ७
एको ह वै नारायण आसीत्
[महो. १।१+ चतुर्वे. १
एको हंसो भुवनस्यास्य मध्ये स
एवामिः सलिले.. तमेव
विदित्वाऽति मृत्युमेति श्वेता. ६।१५
एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः
[तस्थौ] य इमौ लोकानीक्षते.. श्वेता. ३।२
एजत्प्राणमिमिष च यदेतज्ज्ञानथ
[मा. पा.] मुण्डको. २।२१
एजत्प्राणमिमिष च यदेतज्ज्ञानथ
मुण्ड. २।२।१
एत एव त्रयो गुणाः शिबो. २।६
एत एव त्रयो लोकाः शिवो. २।६
एत एव त्रयो वेदाः शिवो. २।६
(१) एतत्कीर्तिश्च व्युष्टिश्चेत्युपासीत छां. उ. ३।१३।४
(अथ) एतच्चक्षुः प्रविवेश तद्वाचाऽवदत् कौ. उ. २।१४
एतच्चतुर्द्वारं लक्षसूर्यसमुज्ज्वलं राधोप. २।१
एतच्चान्यत्रिका लावीतंतदप्योद्धार एव ग. शी. १।१
एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य भ. गी. ११।३५
एतच्छ्रुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः प्रगृह्य
धर्म्यमणुमेतमाप्य कठो. २।१३
एतच्छ्रेयो येऽभिनन्दन्ति मूढाः,
जरामृत्युं ते पुनरेवापि यन्ति मुण्ड. १।२।७
(अथ) एतच्छ्रोत्रं प्रविवेश तद्वाचाऽवदत् कौ. उ. २।१४
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तं भ. गी. १३।१२
एतज्ज्ञानं च मोक्षं च शेषास्तु ग्रन्थविस्तराः मैत्रा. ६।३४
एतज्ज्ञानं च मोक्षं च अतोऽन्यो
ग्रन्थविस्तरः प्र. वि. ५

एतच्छ्रेयं नित्यमेवात्मसंस्थं [+भवसं. २।५६+]	[श्रेता. १।१२ ना. प. ९।११]	एतत् (अस्म) प्रातः प्रयुजानो रात्रि- कृतात्पापात्पूतो भवति (?) एतन्नयं सदेकमयमात्मात्मो एकः... एतत्सङ्घातं कर्मणिसञ्चितं त्वगादियुक्तं स्थूलशरीरं भवति एतत्सत्यधर्मो न भसोऽन्तर्गतस्य तेजसो- ऽशमात्रमेतत् एतत्सत्यं ब्रह्मपुरम्, अस्मिन्कामाः.. एतत्सत्यं ब्रवीमि ब्रह्मविद्यां वरिष्ठां देवेभ्यः प्राणेभ्यः एतत्समीरणे प्रकाशप्रक्षेपकौण्य- स्थानीयम् एतत्सर्वं गणेशः एतत्सर्वं प्राण एवैतन्मयो वा (एवं ह वा) एतत्सर्वं पर आत्मनि सम्प्रतिष्ठते एतत्सर्वं यन्मूर्तं चामूर्तं च तस्मान्मूर्तिरेव रयिः एतत्सर्वं भूःस्वाहेत्यप्सु परित्यज्या- त्मानमन्विच्छेत् एतत्सामगायत्रास्ते हा३ रेवुहा३... एतत्सामवेदशिरोऽधीते एतत्सुदर्शनं महाचक्रं तस्य मध्ये... एतत्सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिङ्गस्थापयति एतत्स्थितमेतत्सत्तस्यैतस्य मूर्तस्य.. एतदकरणे प्रत्यैवेति ब्राह्मणः (?) एतदक्षरं गार्ग्यदृष्टं द्रष्टुं एतदज्ञाय कृष्णमाराधयितुमिच्छन् स मूढतमः (?) एतदधिविधाय ऋषिरवोचत् एतदधीयानः सर्वकृतुफलं लभते एतदनृतमुभयतः सत्येन परिगृहीतम् एतदन्यच्चतुर्थमन्तस्थरूपमिति ह स्माह...माण्डूकेयः एतदपरिमितधा चात्मानं विभज्य पूरयतीमाँलोकान् (अथ) एतदपि यन्त्यन्ततः एतदप्रमेयं ध्रुवम् (ब्रह्म-आत्मा)	अस्मजा. १।७ वृ. उ. १।६।३ पैङ्गलो. २।२ मैत्रा. ६।३५ छान्दो. ८।१।५ परब्र. १ मैत्रा. ७।११ ग. शो. २। ४ बृह. १।५।३ प्रभो. ४।७ प्रभो. १।५ जा. बा. ६ तैत्ति. ३।१०।५ नारा. ३ नृ. पू. ५।७ महाना. १०।३ बृह. २।३।२ अस्मजा. १।६ वृ. उ. ३।८।११ राधिको. ५ तैत्ति. १।७।१ सङ्कर्ष. ३ बृह. ५।५।१ ३ ऐत. २।१।२ मैत्रा. ६।२६ मैत्रा. ६।११ बृह. ४।४।२०
---	-------------------------------	--	---

एतदमृतमभयमेतद्वह्म [छांदो. ४।१५।१ + ८।३।४

[+ ८।७।४ + ८।१०।१ + ८।११।१ + मैत्रा. १।२

[नृसिंहो. ८।२ + ८।४ + ८।६ + ८।७

एतदमृतमभयमेतत्परायणम् प्रश्नो. १।१०

एतदमृतमेतद्यदेतस्यम् बृह. २।३।३, ५

(ओं) एतदस्मिन्नक्षरे संसृज्यते छां. उ. १।१।६

एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्म लोकेमहीयते कठो. २।१७

एतदालम्बनं परम्, एतत्... ज्ञात्वा कठो. २।१७

एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् कठो. २।१७

एतदिहामुत्रोपाधिनैराशयेनामुष्मि-

न्मनःकल्पनं, एतदेव च नैष्कर्म्यम् गो. पू. २।२

एतदुक्त्वाऽतर्हदयःशाकायन्यस्तस्मै

नमस्कृत्वा.. मैत्रा. ६।३०

एतदुपनिषदं विन्यसेत् आश्रमो. ५

(खलु) एतदुपनिषदं विद्वान्य एवं वेद आरुणि. ५

एतदु हास्या एतत्स यावदिदंप्राणिति गायत्र्यु. १

एतदु ह्येवास्या एतत्स यावदेषु त्रिषु

लोकेषु तावद्ध जयति [बृह. ६।१४।१, २, ३

एतदु ह्येवेन्द्रो विश्वामित्राय प्रोवाच १ ऐत. २।४।२

एतद्वेदशिरोऽभीते नारा. १

एतद्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो.. शिक्षा

कल्पो व्याकरणं ... सर्वाणि

भूतानि (महतोभूतस्यनिःश्वसितं) सुबालो. २।१

एतदेकशतं नाडीनां तासां शतं शतं

एकैकस्यां... प्रतिशाखा ...

भवन्ति तासु व्यानश्चरति प्रश्नो. ३।६

एतदेव (मनोनैराशयं) च नैष्कर्म्यम् गो. पू. २।२

एतदेव ज्वलदेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेव ततोभूय इत्येतदेव ततोभूयः छान्दो. ३।११।६

एतदेव नमाम्येतद्धि महाविभूति नृसिंहो. १।६।५

एतदेवनातिशयन्ते-नाति-

शीर्यन्ते (मा. पा.) छां. उ. ३।१२।३

एतदेव नातिशीर्यन्ते [छान्दो. ३।१२।३, ४

एतदेव नृसिंहमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेव परमतत्त्वम् (मनोऽलयरूपं) मं. ब्रा. ५।१

एतदेव परं ज्ञानं शिव इत्यक्षरद्वयम् शिवो. १।१७

एतदेव परं ध्यानमेतदेव परं तपः

(गणेशज्ञानम्) ग. शो. १।५

एतदेव ब्रह्मापिसर्वज्ञंमहामायंमहावि० नृसिंहो. ५।६

एतदेव भद्रमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेव भीषणमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेव महदेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेव सृयुःसृत्वेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेव विष्ण्वेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेव वीरमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेव सर्वतोमुखमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेव सूक्ष्माष्टाक्षरं भवति तारसा. २।१

एतदेवाक्षरं ज्ञात्वा यो यद्विच्छतितस्य तत् मैत्रा. ६।४

एतदेवाक्षरं परम्। एतत्.. ज्ञात्वा कठो. २।१६

एतदेवाक्षरं पुण्यम् मैत्रा. ६।४

एतदेवाक्षरस्वरममृतमयं प्रविशति छां. १।४।५

एतदेवामृतं दृष्ट्वा (देवाः) नृप्यन्ति छांदो. ३।६।१

[३।७।१ + ३।८।१ + ३।९।१ + ३।१०।२

एतदेवाहमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेवाहं मनुष्याय हिततमं मन्ये

यन्मां विजानीयात् कौ. उ. ३।१

एतदेवैकाक्षरं व्याख्यातम् वृत्तात्रे. १।१

एतदेवोममेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६

एतदेवामुक्थम् [बृह. १।६।१ + १।२।३

एतदेवां ब्रह्म [छान्दो. १।६।१

एतदेवां साम बृह. १।६।१, २, ३

एतदेवां साम बृह. १।६।१, २, ३

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतदेवां साम

एतद्ध स्म वैतद्विद्वानाह महिदास

ऐतरेयः [१ ऐत. १।८।२+

छां.उ. ३।१६।७

एतद्ध स्म वैतद्विद्वानाह हिरण्यदन्वैदो

न तस्यैक्यं मद्यं न दधुः-

१ ऐत. १।५।१

एतद्ध स्म वैतद्विद्वानुहालक

आरुणिराह

बृह. ६।४।४

एतद्ध स्म वै तद्विद्वान् कुमार-

हारित आह

बृह. ६।४।४

एतद्ध स्म वैतद्विद्वान्नाकोमौद्रल्यआह

बृह. ६।४।४

एतद्ध स्म वै तद्विद्वान्स आहुः

छान्दो. ६।४।५

एतद्ध स्म वैतद्विद्वान्सआहुर्कषयः

कावषेयाः

३ ऐत. २।६।३

एतद्ध स्म वैतत्पूर्वं विद्वान्सः प्रजां

न कामयन्ते

बृह. ४।४।२२

एतद्धि दुर्लभतरम्

भ. गी. ६।४२

एतद्धि परमं तपः, आपोज्योतीरसो-

ऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो नम इति

[अ. शिरः. ३।१५

बटु. ३।२७

एतद्धि महाविभूति (नारसिंहं ब्रह्म)

नृसिंहो. ५।६

एतद्धि सर्वाणि कर्माणि विभर्ति

बृह. १।६।३

एतद्धि सर्वाणि नामाणि विभर्ति

बृह. १।६।१

एतद्धि सर्वाणि रूपाणि विभर्ति

बृह. १।६।२

एतद्धि सर्वैः कर्मभिः समम्

बृह. १।६।३

एतद्धि सर्वैः रूपैः समम्

बृह. १।६।२

एतद्धि सर्वैर्नामभिः समम्

[छान्दो. १।६।१+

बृह. १।६।१

एतद्धूमस्येव समीरणे नभसि

प्रशाख्यैवोत्क्रम्य..

मैत्रा. ७।११

एतद्धथशब्दमस्पर्शमरूपमरसमगन्धं

नृसिंहो. ९।९

एतद्धथेवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति

तस्य तत्

कठो. २।१६

एतद्धथेवाक्षरं (एतद्व्यक्षरं) ब्रह्म ह्येत-

देवाक्षरं परम्

कठो. २।१६

एतद्धथेवैतदभयं भवति

बृह. १।४।१४

एतद्वाणमवष्टभ्य विधारयामः (मि)

प्रश्नो. २।२, ३,

एतद्धृद्वा बुद्धिमान् स्यात्

भ. गी. १५।२०

एतद्वाद्यं राधाकुण्डम्

राधोप. २।१

एतद्धस, अभयं वै ब्रह्म भवति [नृसिंहो.

८।२+८।४

एतद्धस, एतत्सत्यम्

१ ऐत. १।१।१

एतद्धसविषयमेतद्भानुरर्णवः

मैत्रा. ६।३५

एतद्धसैतत्सत्यं तदेतद्व्यक्षरम् (भा. पा.)

बृ.उ. ५।३।१

एतद्धसैतत्सर्वम्, तदेतत्

बृह. ५।३।१

एतद्धसैतदुपासितव्यम्

जाबालो. ४

एतद्धसैतमितः प्रेत्याभिसंभविताऽस्मि

छान्दो. ३।१४।४

एतद्यजुर्वेदशिरोऽधीते

नारा. २

एतद्यज्ञायज्ञीयमङ्गेषु प्रोतम्

छान्दो. २।१९।१

(?) एतद्यदत्रिरिति सर्वस्यात्ताभवति

बृह. २।२।४

एतद्यदादित्यस्यमध्य इवेत्यक्षिण्यमौ

चैतद्ब्रह्मैतदमृतम्

मैत्रा. ६।३५

एतद्यदिदमित्येत्योपधारय इति

आर्षे. २।२

एतद्यदिदमित्येत्योपव्याख्ये

आर्षे. २।२

एतद्यद्यवेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वा-

ङ्गिरसः (महतोभूतस्यनिश्चसितम्)

बृह. ४।५।११

एतद्यदेतदादित्यस्य कृष्णं रूपम्

छां.उ. ३।३।३

एतद्यद्युक्तोरिष्येद्भूः स्वाहेतिगार्हपत्ये

छान्दो. ४।१७।४

एतद्योगेन परमपुरुषो जावो

भवति, नान्यः

मुद्रलो. ४।२

एतद्योनीनि भूतानि

भ. गी. ७।६

एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः

भ. गी. १३।२

एतद्यो वेद निहतं गुहायां, सो-

ऽविद्याग्रन्थि विकिरतीह सोम्य

मुंड. २।१।१०

एतद्रथन्तरममौ प्रोतम्

छान्दो. २।१२।१

एतद्राजनं देवतासु प्रोतम्

छान्दो. २।२०।१

एतद्रुद्रस्य रुद्रत्वं, एतत्तदपरिमितधा..

मैत्रा. ६।२६

एतद्रूपामधीयाना समानफलदा

तारोप. ५

एतद्धस्तुचतुष्टयं यस्य लक्षणं देश-

कालवस्तुनिमित्तेष्वव्यभिचारी

सर्वसारो. ६

तत्पदार्थः परमात्मेत्युच्यते

तैत्ति. ३।१०।१

एतद्वा अन्ततोऽन्नं राद्धम्

एतद्वा आदित्यं अमित्येवं व्यायं-

स्तथाऽऽत्मानं युञ्जीत

मैत्रा. ६।३

(अथ) एतद्वाप्रविवेश, तद्वाचाऽवदत्..

कौ.उ. २।१४

एतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतम्

छान्दो. २।१३।१

(अथ) एतद्वाग्मेऽग्निं पुरुषरूपम्. बृह. ४।२।३
 एतद्वायुदशकसंसर्गोपाधिमेदेनरेचक-
 पूरक-शोषक दाह-प्रावकाः..
 पञ्चविधोऽस्ति भावनो. ५
 एतद्वाव तत्स्वरूपं नभसः खे-
 ऽन्तर्भूतस्य यत्परं तेजस्तत् मैत्रा. ७।११
 त्रेधाऽभिहितम्
 एतद्वाव तत्स्वरूपं नभसः खेऽन्तर्भू- मैत्रा. ७।११
 तस्य यदोमित्येतदक्षरम्
 एतद्विज्ञानं, यत्रैतत्पुरुषःसुप्तःस्वप्नं मैत्रा. ७।११
 न कंचन पश्यति कौ. उ. ३।३
 एतद्विज्ञानं, यत्रैतत्पुरुषआर्तोमरिष्य-
 ज्जाबल्यं न्येत्यसम्प्रोहं नैति कौ. उ. ३।३
 एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाऽहं... कठो. १।२०
 एतद्विधमिदं चेतनवत् प्रतिष्ठापितम् मैत्रा. १।५
 एतद्विधेऽस्मिञ्छरीरे किंकामोपभोगैः मैत्रा. १।४+१।८
 एतद्विष्णोःपरमंपदं(च) [मैत्रा. ६।२६ + गो. पू. ३।४
 एतद्वीरासनं स्थानं ब्रह्मणा... सन्ध्यो. ६
 एतद्वृत्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यान-
 भन् वसति ब्राह्मणो गृहे कठो. १।८
 एतद्वृत्तपुरस्तादुक्शक्यमेतत्प्रभमैक्ष्वा-
 कान्यान् कामान् वृष्णीष्व मैत्रे. १।१
 एतद्वेदितुमिच्छामि भ. गी. १३।२
 एतद्वै जशमयमग्निहोत्रं सत्रम् त्रिसुप. ४
 [महाना. १।८।१०
 एतद्वै खलु लोकद्वारं विदुषां प्रपदनं
 निरोधोऽविदुषां छांदो. ८।३।५
 एतद्वै तदक्षरंगार्गिब्राह्मणाभिवदंति बृह. ३।८।८
 एतद्वै तमसो रूपं तत्तमः खल्वीरितं
 सम्प्रास्रवति मैत्रा. ५।५
 एतद्वै नानात्वस्य रूपम् मैत्रा. ३।३
 एतद्वै नारायणस्याष्टाक्षरं वेद परम-
 पुरुषो भवति सारसा. १।४
 एतद्वैपरमंतपो.. अप्यादधति(मा. पा.) बृ. उ. ५।११।१
 एतद्वै परमं तपो यद्व्याहितस्तप्यते
 परमं हव लोकं जयति बृह. ५।११।१
 एतद्वै परमं तपो यं प्रेतमरण्यं हरन्ति
 परमं हव लोकं जयति बृह. ५।११।१
 एतद्वै परं चापरं च ब्रह्म यदो-
 मित्येतदक्षरम् मैत्रा. ६।५

एतद्वै प्राणानामायतनम् प्रश्नो. १।१०
 एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यच्चक्षुषा पश्यति कौ. उ. २।१३
 एतद्वै ब्रह्मदीप्यते यच्चन्द्रमादृश्यतेतस्य.. कौ. उ. २।१२
 एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यच्छ्रोत्रेण शृणोति कौ. उ. २।१३
 एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यथाऽऽदित्योदृश्यते कौ. उ. २।१२
 एतद्वै ब्रह्मदीप्यते यदग्निर्ज्वलति[कौ. उ. २।१२, ११
 एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यद्विशुद्धिद्योतते कौ. उ. २।१२
 एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यद्वाचा वदति कौ. उ. २।१३
 एतद्वै ब्रह्मदीप्यते यन्मनसा ध्यायति कौ. उ. २।१३
 एतद्वै मध्यतोऽन्नं राद्धम् तैत्ति. ३।१०।१
 एतद्वै महोपनिषद्देवानां गुह्यम् अव्यक्तो. ४
 एतद्वै महोपनिषद् देवानां गुह्यम् महाना. १।७।१५
 एतद्वै मुखतोऽन्नं राद्धम् तैत्ति. ३।१०।१
 एतद्वैयजुस्त्रयीविद्यां प्रत्येषा वागेतत्
 परममक्षरम् सहवै. १५
 एतद्वैरजसोरूपं, तद्रजः खल्वीरितं
 विषमत्वं प्रयाति मैत्रा. ५।५
 एतद्वैराजमृतुषु प्रोतम् छांदो. २।१६।१
 एतद्वैरूपं पर्जन्ये प्रोतम् छांदो. २।१५।१
 एतद्वैसत्यकाम परं चापरं च ब्रह्म
 यदोक्कारस्तस्माद्विद्वान्..
 एकतरमन्वेति [प्रश्नो. ५।२+ मैत्रा. ६।५
 एतद्वै सत्यकाम परं चापरं च
 यदोमित्येतदक्षरमिति मैत्रा. ६।५
 एतद्वैसत्येनदानेन तपसाऽनाशकेन
 ब्रह्मचर्येण निर्वेदेनाशकेन षडङ्गेनैव
 साधयेत् सुबालो. ३।३
 एतद्वै वाचः सत्यं, यदेव वाचः सत्यं
 तत्प्रायुक्तम् सहवै. १५
 एतद्वै सत्त्वस्य रूपं तत्सत्त्वं
 सम्प्रास्रवत् मैत्रा. ५।५
 एतद्वैसन्धिसन्ध्यांब्रह्मविद्ः. उपासते..
 सोऽविमुक्त उपासते [जाबा. २+ रामो. ३।१
 एतद्वैसावित्रस्याष्टाक्षरं पदं श्रिया-
 भिक्षितं [नृ. पू. ४।३+ सूर्यता. ३।१
 एतद्वैस्वर्गस्य लोकस्यद्वारंयश्चन्द्रमाः... कौ. उ. १।२
 एतद्वै धनमार्याणां मन्त्राश्चैव
 व्रतानि च इतिहा. ९९
 एतन्नाराणस्य तारकं भवति ना. पू. ता. २।१

एतन्निर्वाणदर्शनं शिष्यपुत्रं विनानन्देयं निर्वाणो. ८
 एतन्निर्वाणानुशासनं [सुबालो. ५।३+ ५।१५
 एतन्निर्वाणानुशासनमिति वेदानुशासनं सुबालो. २।३
 एतन्मध्याह्नसायाह्नेषु त्रिकालेषु..
 भस्मधारणमप्रमादेन कार्यम् भस्मजा. १।६
 (अथ) एतन्मनः प्रविवेश,
 तद्वाचाऽवदत्.. कौ. उ. २।१४
 एतन्मन्त्रं यो हिष्टं गुह्याद्गुह्यतमं महेतु सूर्यता. २।४
 एतन्मयो वा अयमात्मा बृह. १।५।३
 एतन्मर्त्यमेतत्स्थितमेतत्सत् बृह. २।३।२, ४
 एतन्मे संशयं कृष्ण भ. गी. ६।३९
 एतन्मोक्षलक्षणम् (पूर्वोक्तं) मैत्रा. ६।३०
 (अथ) एतन्म्रियते यन्न ज्वलति.. कौ. उ. २।१२
 (अथ) एतन्म्रियते यन्न दृश्यते कौ. उ. २।१२
 (अथ) एतन्म्रियते यन्न ध्यायति कौ. उ. २।१३
 (अथ) एतन्म्रियते यन्न वलति (वदति) कौ. उ. २।१३
 (अथ) एतन्म्रियते यन्न पश्यति कौ. उ. २।१३
 (अथ) एतन्म्रियते यन्न विद्योतते कौ. उ. २।१२
 (अथ) एतन्म्रियते यन्न जृणोति कौ. उ. २।१३
 एतन्मन्त्रावध्वर्यवः (मीमांसन्ते) ३ ऐत. २।३।४
 एतन्मन्त्रि तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनासः कठो. १।१९
 एतन्मन्त्रमयमात्मानमुपसंक्रम्य..
 एतत्साम गायत्रास्ते तैत्ति. ३।१०।५
 एतन्मन्त्रमयमात्मानमुपसंक्रामति तैत्ति. २।८
 एतमस्यामेतं दिव्येतवायावेतमाकाशः ३ ऐत. २।३।४
 एतमानन्दमयमात्मानमुपसंक्रम्य..
 साम गायत्रास्ते तैत्ति. ३।१०।५
 एतमानन्दमयमात्मानमुपसंक्रामति तैत्ति. २।८
 एतमितः प्रेत्याभिसम्भविताऽस्मि छान्दो. ३।१३।७
 एतमिन्द्रं सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते बृ. उ. ४।२।२
 एतमु एव बृहस्पतिं मन्यते वाग्धि छान्दो. १।२।११
 बृहती, तस्या एष पतिः छान्दो. १।२।११
 एतमु एवायास्यं मन्यन्त आस्याद्यदयते छान्दो. १।२।१२
 एतमु एवान्ततोऽवित्त्वोत्क्रामति छान्दो. १।२।९
 व्याददात्येवान्तत इति छान्दो. १।२।९
 एतमु एवाहमभ्यागमिषम् छान्दो. १।५।२, ३

एतमु द्वैव चूलो भागवित्तिर्जनिकाय
 आयस्थूणायान्तेवासिन उक्त्वो-
 वाचापि य एनं शुष्के स्थाणौ
 निषिञ्चेज्जायेरञ्छास्वाः प्ररोहेयुः
 पलाशानीति बृ. उ. ६।३।१०
 एतमु द्वैव जानकिरायस्थूणः सत्य-
 कामाय जाबालायान्तेवासिन
 उक्त्वोवाचापि.. बृह. ६।३।११
 एतमु द्वैव मधुकः पैङ्गयश्चूलाय भाग-
 वित्तयेऽन्तेवासिन उक्त्वोवाचापि.. बृह. ६।३।९
 एतमु द्वैव वाजसनेयो याज्ञवल्क्यो
 मधुकाय पैङ्गयायान्तेवासिन
 उक्त्वोवाचापि.. बृह. ६।३।७, ८
 एतमु द्वैव सत्यकामो जाबालोऽन्तेवा-
 सिभ्य उक्त्वोवाचापि.. बृह. ६।३।१२
 एतमु द्वैवैते न तरत इत्यतः पापमकरव-
 मित्यतः कल्याणमकरवम् बृह. ४।४।२२
 एतमृगवेदमभ्यस्तपः स्तस्याभितप्तस्य
 यशस्तेज इन्द्रियं.. अजायत छान्दो. ३।१।३
 एतमेव तदनमनमं कुर्वन्तो मन्यन्ते बृह. ६।१।१४
 एतमेव प्रवाजिनो लोकमिच्छन्तः
 प्रव्रजन्ति बृह. ४।४।२२
 (अथ) एतमेवमात्मानं परमं ब्रह्मोङ्कारं
 तुरीयोङ्काराप्रविद्योतं प्रणवेन
 सञ्चिन्त्यानुष्ठुभान्तवा.. नृसिंहो. ४।१
 एतमेव (आत्मानं) विदित्वा
 मुनिर्भवति बृह. ४।४।२२
 (अथ) एतमेवात्मानं परमं ब्रह्मोङ्कारं
 तुरीयोङ्काराप्रविद्योतमेकादशा-
 त्मानं नारसिंहं नत्वोमिति नृसिंहो. ४।१
 संहरन्ननुसन्दध्यात् छान्दो. ५।१०।५
 (अथ) एतमेवाध्वानं पुनर्निर्वर्तन्ते छान्दो. ५।१०।५
 एतमेवाहं ब्रह्मोपासे [बृह. २।१।२, ३, ४-१३
 एतमेवोङ्काराप्रविद्योतं तुरीयतुरीय-
 मात्मानं नृसिंहानुष्ठुभैव नृसिंहो. ६।१
 बुबुधिरे (देवाः) (अथ खलु) एतयर्चा पच्छः आचा-
 मति 'तत्सवितुर्वृणीमहे' इति छान्दो. ५।२।७

एतयैव त्रयो धातवो यदुत सत्त्वं
 रजस्तम इति जावालो.४
 [ना. प. ३।७७+प. हं. प. २+ याज्ञ. १
 एतयोरेतदन्नं य एपोऽन्तर्हृदये
 ओहितपिण्डः बृह. ४।२।३
 (अथ) एतयोः पथोर्न कतरेण च न
 तानीमानि...भूतानि भवन्ति छांदो.५।१०।८
 एतर्हि वेदान्नानुभवति छां. उ. ६।७।३
 एतर्हि वेदान्नानुभवसि छां. उ. ६।७।६
 एतर्ह्येकाकी कामयते बृ. उ. १।४।१७
 एतस्मा एव पञ्च पदादभूव-
 न्नोविन्दस्य मनवः गो. पू. ३।७
 एतस्माज्जायते प्राणो मनः
 सर्वेन्द्रियाणि च । खं वायुरापो.. मुण्ड. २।१।३
 [ग.पू. १।४+ कैव. १५
 एतस्मादन्नरसमयात्, अन्योऽन्तर
 आत्मा प्राणमयः तैत्ति. २।२
 एतस्मादाकाशादेव खल्विदं चेतामात्रं.. मैत्रा. ६।१७
 एतस्माद्दधानादौ प्रयुज्यते अ. शिखो. ३
 एतस्माद्धीदं सर्वमुत्तिष्ठति, एतमेवाप्येति १ ऐत. ३।१।१
 एतस्माद्भूर्भुवस्वरित्युपासीतान्नं हि मैत्रा. ६।६
 प्रजापतिर्विश्वात्मा..उपासितो भवति ३।७।३+३।८।३
 एतस्माद्रूपादुदेति [छांदो. ३।६।३+ ३।९।३+३।१०।३
 [३।९।३+३।१०।३
 एतस्माद्रूपादुद्यन्ति [छांदो. ३।६।२+ ३।७।२+
 [३।८।२+३।९।२+ ३।१०।२
 एतस्माद्वै महत्तत्त्वमजायत ग. शो. ४।३
 एतस्मान्न पुनरावर्तन्त इत्येष निरोधः प्रभो. १।१०
 एतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुहति
 [छां. उ. ५।७।२+ बृ. उ. ६।२।१२
 एतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो जुहति
 [छां. उ. ५।८।२+ बृ. उ. ६।२।१३
 एतस्मिन्नग्नौ देवा वर्षं जुहति
 [छां. उ. ५।६।२+ बृ. उ. ६।२।११
 (?) एतस्मिन्नग्नौ देवाः श्रद्धां जुहति
 [छां. उ. ५।४।२+ बृ. उ. ६।२।९
 एतस्मिन्नग्नौ देवाः सोमं राजानं जुहति
 [छां. उ. ५।५।२+ बृ. उ. ६।२।१०
 एतस्मिन्नु खल्वक्षरे गार्ग्याकाश
 ओतश्च प्रोतश्च बृ. ह. ३।८।११

एतस्मिन् वसते शीघ्रं...महाखगः प्र. वि. १९
 एतस्मिन्हीदं सर्वं प्रतिष्ठितम् शुक्लो. ३।१
 एतस्मिन्नेतदाततं मनोऽधिकृतेनाया-
 त्यस्मिन्छरीरे प्रभो. ३।३
 एतस्मिन्क्षेताः पञ्चविधा अधिगम्यन्ते १ ऐत. ३।४।४
 (अथ) एतस्य प्राणस्यापः शरीरं
 ज्योती रूपमसौ चन्द्रस्तथावानेव
 प्राणस्तावत्य आपः.. बृह. १।५।१३
 (?) एतस्य ब्रह्मलोकस्यारो हृदः कौ. उ. १।३
 (अथ) एतस्य मनसो द्यौः शरीरं,
 ज्योती रूपं, असावादित्यः बृह. १।५।१२
 (एवं वा) एतस्य महतो भूतस्य
 निश्चक्षितमेतत्... मैत्रा. ६।३२
 एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि
 निमेषा मुहूर्ता अहोरात्राण्यर्ध-
 मासा मासा ऋतवः संवत्सरा
 इति विधृतास्तिष्ठन्ति बृह. ३।८।९
 एतस्य वा अक्षरस्य.. प्राच्योऽन्या
 नद्यः स्यन्दन्ते श्वेतेभ्यः पर्वतेभ्यः बृह. ३।८।९
 एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि
 ददतो मनुष्याः प्रशंसन्ति यज-
 मानंदेवा दर्वी पितरोऽन्वायत्ताः बृह. ३।८।९
 एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि
 द्यावापृथिव्यौ विधृते तिष्ठतः बृह. ३।८।९
 एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि
 सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः बृह. ३।८।९
 एतस्य वै सोम्येषोऽणिग्न एवं
 महाज्यप्रोधः छान्दो. ६।१२।२
 एतस्य हेतोर्व्यानमेवोद्गीथमुपासीत छान्दो. १।३।५
 एतस्याग्नेयमर्धमर्धं वारुणम् मैत्रा. ६।१४
 एतस्याज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भवेद्वै तारोप. ४
 एतस्यामिदं सर्वमन्तर्हितम् मैत्रा. ६।६
 एतस्याहं न पश्यामि भ. गी. ६।३३
 एतस्यां वाचि जनको जनक इति वा
 उ जना धावन्तीति कौ. उ. ४।१
 एतस्यां ह स्म मात्रायां संवत्सरं गा
 रक्षयते तार्क्ष्यः ३ ऐत. १।६।१
 एतस्यां ह स्मोपनिषदि संवत्सरं गा
 रक्षयते तार्क्ष्यः ३ ऐत. १।६।१

एतस्यैतत्तेजो यदसा आदित्यः मैत्रा. ६।४
 एतस्यैव यजनेन चन्द्रध्वजो गत-
 मोहमात्मानं वेदयति गो. पू. ३।१९
 एतस्यैवाक्षरस्यापचित्यै महिम्नारसेन छां. उ. १।१।९
 (इति खलु) एतस्यैवाक्षरस्योप-
 व्याख्यानं भवति छां. उ. १।१।१०
 एतस्यैवानन्दस्यान्यानि भूतानि
 मात्रामुपजीवन्ति बृह. ४।३।३२
 एतं त्वेव ते भूयोऽनुव्याख्यास्यामि छान्दो. ८।९।३
 एतं प्राणमयमात्मानमुपसंक्रम्य..
 एतत्साम गायन्नास्ते तैत्ति. ३।१०।५
 एतं प्राणमयमात्मानमुपसंक्रामति तैत्ति. २।८
 एतं ब्रह्मलोकं न विदन्त्यनृतेन हि
 प्रत्यूढाः (प्रजाः) छान्दो. ८।३।२
 एतं मनोमयमात्मानमुपसंक्रम्य..
 एतत्साम गायन्नास्ते तैत्ति. ३।१०।५
 एतं मनोमयमात्मानमुपसंक्रामति तैत्ति. २।८
 एतं मंत्रराजं यः पश्यति स पश्यति ग. पू. १।६
 एतं महाव्रते छन्दोगाः (मीमांसन्ते) ३ ऐत. २।३।४
 एतं यजुर्वेदमभ्यतपत्, तस्याभितप्तस्य
 यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यं
 रसोऽजायत छान्दो. ३।२।२
 एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रम्य..
 एतत्साम गायन्नास्ते तैत्ति. ३।१०।५
 एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामति तैत्ति. २।८
 एतं वै तमात्मानं विदित्वा ब्राह्मणाः
 पुत्रैषणायाश्च.. व्युत्थायाथ
 भिक्षाचर्यं चरन्ति बृह. ३।५।१
 एतं संयद्वाम इत्याचक्षते छान्दो. ४।१।५।२
 एतंसामवेदमभ्यतपत्, तस्याभितप्तस्य.. छान्दो. ३।३।२
 एतं ह वा व न पतति, किमहं साधु
 नाकरवम्, किमहं पापमकरवम् तैत्ति. २।९
 एतं हि सर्वाणि वामान्यभिसंयन्ति छान्दो. ४।१।५।२
 एतं ह्येव बहुधा महत्युक्ते
 मीमांसन्ते ३ ऐत. २।३।४
 एतावपासीतोमित्येतदक्षरेण (इत्य-
 क्षरेण) व्याहृतिभिः सावित्र्यावेति मैत्रा. ६।२
 एता एव महाविद्या विभूतेरभिधारणे वज्रपं. ५
 एता एव देवताः प्रीणाति सहवै. १९

एता ऋचः एतमृगवेदमभ्यतपत् छां. उ. ३।१।३
 एता दश वह्निकलाः सर्वज्ञत्वाद्यन्त-
 र्दशारगा देवताः भावनो. ५
 एनादृशे शरीरे वर्तमानस्य भगवं-
 स्त्वं नो गतिः मैत्रे. १।३
 एता देवताः पाप्मभिरुपास्तृजत् बृह. १।३।६
 एतानि मनसा ध्यायन्नप्रमत्तः
 स्तुवीत छान्दो. २।२।२।२
 एतानि रूपाणि पुरस्तराणि ब्रह्मण्य-
 भिव्यक्तिकराणि योगे श्वेताश्व. २।१
 एतान्न हन्तुमिच्छामि भ. गी. १।३।५
 एतान्यष्टावायतनानि बृह. ३।९।२६
 एतान्यपि तु कर्माणि भ. गी. १।८।६
 (१) एताभिरुपनिषद्भिः समा-
 हितात्माऽसि बृह. ४।२।१
 एताभिर्वा एतदास्रवति... (मा. पा.) बृह. ४।२।३
 एताभिर्वा एतदास्रवदास्रवति बृह. ४।२।३
 एताभिः सर्वमिदमोतं प्रोतं च मैत्रा. ६।३
 एताभ्यां हि रूपाभ्यां ब्रह्माऽभवत् बृह. १।४।१५
 एताभ्यां (ज्योतिर्वायुभ्यां)
 हीदं सर्वमुन्नमति १ ऐत. ३।१।२
 एतामधीत्य द्विजोगर्भवासाद्विमुच्यते अ. शिखो. ३
 एतामहम्भावमयीमपुण्यां (तृष्णां)
 छित्त्वाऽनहंभावशलाकयैव । भव.. महो. ६।४०
 एता रेवत्यः पशुषु प्रोताः छां. उ. २।१।८।१
 एतावताऽऽत्मयत्नेन जिता
 भवति संसृतिः अ. पू. ५।१।१८
 एतावती हि सङ्ख्या दशदशतस्तच्छतं.. १ ऐत. ३।४।३
 एतावदरे खल्वमृतत्वमिति होक्त्वा
 याज्ञवल्क्यो विजहार बृह. ४।९।१५
 एतावदिति निश्चिताः भ. गी. १।६।११
 एतावदिह गौतमो यज्ञोपवीतं
 कृत्वाऽधो निपपात सूर्यता. ३।१
 एतावदेवाविद्यात्वं नेदं ब्रह्मेति निश्चयः ।
 एष एव क्षयस्तस्या ब्रह्मेद-
 मिति निश्चयः अ. पू. ५।१।९
 एतावद्धीति होवाच बालाकिः कौ. उ. ४।१।८
 एतावद्वा इदं सर्वमेतन्मा सर्वं
 सजयमितोऽमुनजत् बृह. १।५।१७

एतावद्वाइदमन्नं चैवान्नादश्च (मा. पा.) बृह. १।४।६

एतावद्वा इदं सर्वमन्नं चैवान्नादश्च

सोम एव

बृह. १।४।६

एतावद्वाइदं सर्वमेतस्मात्सर्वं (मा. पा.) बृह. १।५।१७

एतावद्वाइदं सर्वयदन्नंतदात्मन आगासीः बृह. १।३।१८

एतावन्नं ३ इत्येतावद्धीति नैतावता

विदितं भवतीति

बृह. २।१।१४

एतावानस्य महिमा

चित्यु. १२।१

[ऋक्सं. ८।४।१७ = मं. १०।९०।३ + वा. सं. ३१।३

एतावानिति मन्त्रेण वैभवं कथितं

हरेः, एतेन.. चतुर्व्यूहो निरूपितः मुद्रलो. १।३

एतावान् वै कामो नेच्छंश्च नातो भूयो

विदेत्, तस्मादप्येतदेकाकीकामयेत बृह. १।४।१७

एतावाहुती समं नयतीति स समानः प्रश्नो. ४।४

एतानुपासीतोमोमित्यश्वरेण

व्याहृतिभिः सावित्र्या च

मैत्रा. ६।२

एताश्च चतुर्दशसु नाडीष्वन्या नाड्यः

सम्भवन्ति तास्वन्यास्तास्वन्या

भवन्तीति विज्ञेयाः

शाण्डि. १।४।६

एतासामेव देवातानां सलोकतां

सार्ष्टितां सायुज्यं गच्छति

छान्दो. २।२०।२

एतासामेव देवतानां सायुज्यं सार्ष्टितां

समानलोकतामाप्नोति (ब्रह्मवित्) महाना. १०।२

एतासां देवतानामेको भवति बृह. १।२।७

एतासां देवतानां पाप्मानं मृत्युमपहत्य

यत्रासां दिशामन्तस्तद्रमयाश्चकार बृह. १।३।१०

एतासां प्रतिबोधनायाभ्यन्तरं

प्राविशानि

मैत्रा. २।६

एतासां भूमिकानां तु गम्यं

ब्रह्माभिधं पदम्

महो. ५।४३

एतास्तिष्ठ ऋचो जपित्वा नास्माकं

प्राणेन प्रजया पशुभि-

राण्याययिष्ठाः

कौ. उ. २।८

(अथ) एतास्तिष्ठः संहिता भवन्ति

वायोरिन्द्रस्याग्नेः

संहितो. १।८

(अथ) एतास्तिष्ठः संहिता भवन्ति

शुद्धा दुस्स्पृष्टा निर्भुजेति

संहितो. १।५

एतास्म्यत्र यजमानः परस्तादायुषः

स्वाहाऽपजहि (जे. पा.) [छां. उ. २।२४।६, १०

एतास्वेव वां देवता स्वा भजामि २ ऐत. २।५

एता ह वै देवता अहंभ्रेयसे विवद-

माना अस्माच्छरीरादुच्चक्रमुः कौ. उ. २।१४

एतां दृष्टिमवष्टभ्य [म. गी. १६।९ + अ. पू. ४।६४

एतां महामायां तरन्त्येव ये विष्णुं

भजन्ति, नान्ये तरन्ति

त्रि. म. ना. ४।९

(एवं) एतां लोकानात्मनि प्रतिष्ठितान्

वेदात्मैव स भवति

सुबालो. १०।१

एतां विद्यामपांतरतमाय ददौ

[सुबालो. ७।३ +

अध्यात्मो. ७०

एतां विभूर्ति योगं च

म. गी. १०।४

एतां वृत्तिमुपासीनाः (उपासन्तः)

[२ सन्यासो. १।९ +

कठश्रु. २७

एतांश्च सत्यान्कामास्तेषां सर्वेषु

लोकेषु कामचारो भवति

छांदो. ८।१।६, ६

एताः शक्यो लोकेषु प्रोताः वेद लोकी-

भवति, सर्वमायुरेति, ज्योर्जीवति

छांदो. २।१७।२

एताः सोम्योदज सामश्वाश्इति

(?) एति स्वर्गं लोकं य एवं वेद

बृह. ३।१।२

(?) एते अनन्ते अमृते आहुती

(पाठः-जे.)

कौ. उ. २।५

(अथ) एते आनुदेशिक्यौ संहिते

याज्येन कर्मणा भवताम्

संहितो. ३।१

(तस्मात्) एते ऋषयः प्रजाकामाः

दक्षिणं प्रतिपद्यन्ते

प्रश्नो. १।९

एते खलु यूयं पृथगिवेमं वैश्वानरं...

एते गुह्या आदेशा एतद्ब्रह्माभ्यतपत्

एते त्रयस्त्रिंशत्त्वेव देवाः

एतेऽथर्वाङ्गिरस एतदितिहास-

पुराणमभ्यतपत्

छां. उ. ३।४।२

एतेन खलु प्रतिपद्यमानाः (मा. पा.)

एतेन जीवात्मनोर्योगेन मोक्ष-

प्रकारश्च कथितः

मुद्रलो. २।५

एतेऽनन्तेमृताहुतीजाग्रच्च स्वपंश्च

सन्ततमव्यवच्छिन्नं जुहोति

कौ. उ. २।५

एतेन प्रज्ञेनात्मनाऽस्माल्लोकादुत्क्रम्य

एतेन प्रतिपद्यमाना इमं मानव-

मावर्त नावर्तन्ते

छांदो. ४।१५।६

एतेन (मन्त्रेण) हीदं सर्वं सयोनि

१ ऐत. १।८।४

एतेन ह्यसुं लोकं जेभ्यंतो मन्यन्ते एतेनैव मन्त्रेण ('एतावान्' इत्यनेन) चतुर्व्यूहो विभाषितः एतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति एते पतन्ति चत्वारः पञ्चमश्वा- चरः स्तु तैः (मा. पा.) एते पतन्ति चत्वारः पञ्चम- श्वाचरः स्तैः एते भवन्ति सुकृतस्य लोके येषां कुले सङ्गयसतीह विद्वान् एतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय तान्ये- वानुविनश्यति [बृह. २।४।१२+ एते रसानां सरसेनश्राद्धं प्राप्नुवन्ति वाग्यतानां संयुतानाम् एतेषामुपाधीनामत्यन्तभेदो नविद्यते एतेषामेकमास्याय ह्यासनं लब्ध्वा- ऽऽहारविहारौ च एतेषां नवचक्राणामेकैकं ध्यायतो मुनेः । सिद्धये मुक्तिसहिताः... एतेषां पञ्चभूतानां पतयः पञ्च सदाशिवेश्वररुद्रविष्णुब्रह्माणश्च एतेषां पञ्चवर्गाणां *मनआदीनां) धर्मीभूतात्मा ज्ञानादृते न विनश्यति एतेषां ब्रह्मणो लोका देवतिर्यङ्मूर- स्थावराश्च जायन्ते एतेषु चैव सर्वेषु तत्त्वं च ब्रह्म तारकम् एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु यथाकालं चाहुतयो ह्याददायन् एतेषु हीदं वसु सर्वं हितमिति तस्माद्वसवः एतेषां मे देहीतिहोवाच, तानस्मैप्रददौ एतेऽष्टौ प्रहाश्रवावतिप्रहाः (मा. पा.) एते सर्वे देवाः इमानि च पञ्चभूतानि एते सर्वे प्रणवमयोर्ध्वपुण्ड्रत्रयात्मकाः एते ह त्वेव देवते एकवाभूयं भूत्वा परमतां गच्छतः एते हीदं सर्वमाददाना यन्ति ते एते (रुद्राः) हीदं *सर्वं रोदयन्ति	छांदो. ८।८।५ मुद्रलो. १।४ प्रश्नो. ५।२ छां. ३. ५।१०।९ छां. ३. ५।१०।९ शाश्वत्याय. ३० ४।५।१३ इतिहा. ८४ त्रि. म. ना. ४।९ दुर्वासो. २।४ योगरा. १९ यो. चू. ७२ सर्वसारो. ५ यो. चू. ७२ रामर. १।६ मुण्ड. १।२।५ बृह. ३।९।३ छान्दो. १।१०।३ बृ. उ. ३।२।१, ८ २ ऐ. उ. ५।३ वासु. २ बृ. ५।१२।१ बृह. ३।९।५ छांदो. ३।१६।३	एते(वसवः) हीदं सर्वं वासयन्ति एते (अग्न्यादयः) हीदं *सर्वं षडिति एतेरुपायैर्यतते यस्तु विद्वांस्तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्मधाम एतैरेव रश्मिभिरूर्ध्वमाक्रमते स ओमिति वा होद्धामीयते एतैरेषोऽपृथग्भावैः पृथगेवेति लक्षितः (आत्मा) एतैर्विमुक्तः कौन्तेय एतैर्विमोहयत्येषः एतैर्ह वा अमृतो भवति एतैः समाधिभिः षड्विंशत्येकालं निरन्तरम् एतौ वा अश्वं महिमानावभितः सम्बभूवतुः एतौ वै सूर्याचन्द्रमसोर्महिमानौ ब्राह्मणो विद्वानभिजयति [महाना. एत्य पुत्र उपरिष्ठादभिनिपद्यते एधमानः स्वे गृहे एन्द्रोदस्योरेव पर्यायेणोपवन्वीमहि.. (तस्मात्) एनमकारार्थेन परेण ब्रह्मणैकीकुर्यात् (अथ) एनमग्रये हरन्ति तस्या- ग्निरेवाभिर्भवति समित् .. एनमासुरं पाप्मानं परिग्रसाम इति एनमाहुः (धिक्तरारं) पितृहा वै त्वमसि, मातृहा वै त्वमसि (अथह) एनमुहालकआरुणिः पप्रच्छ (अथह) एनमुषस्तश्चाक्रायणः पप्रच्छ (अथ) एनमेते देवाः प्राणा अमृता आविशन्ति (अथ) एनमेतेप्राणा अभिसमायन्ति सः (आत्मा) .. हृदयमेवान्ववक्रमति (अथ) एनयोरेतत्प्रावरणं यदेतदन्त- र्हृदये चालकमिव.. (अथ) एनयोरेषा स्मृतिः सञ्चरणी येषा हृदयादूर्ध्वा नाड्युचरति एनस एनसोऽवयजनमसि स्वाहा एनं मकारार्थेन... ब्रह्मणैकीकुर्यात्	छांदो. ३।१६।१ बृह. ३।९।७ मुण्ड. ३।२।४ छांदो. ८।६।५ वैतथ्य. ३० भ. गी. १६।२२ भ. गी. ३।४० जाबा. ३ सरस्व. ५५ बृह. १।१।२ १८।१+त्रिसुप. ४ कौ. उ. २।१५ बृ. उ. ६।४।२४ आर्षे. ४।२ नृसिंहो. ७।६ बृह. ६।२।१४ नृसिंहो. ६।१ छान्दो. ७।१५।२ बृह. ३।७।१ बृह. ३।४।१ बृह. १।५।१७ बृह. ४।४।१ बृह. ४।२।३ महाना. १४।२ नृसिंहो. ७।६
---	---	---	--

एनं चतुष्पादं मात्राभिरोद्धारेण

चैकीकुर्यात्

नृसिंहो. २।३

(अथखलु) एनंदृष्टाऽसृत्तत्वं गच्छति

मैत्रा. ६।२४

(अथ ह) एनं मुज्युर्लाघ्यायनिःपप्रच्छ

बृह. ३।३।१

एनं मनोमणिप्रद्वान् बहुपङ्कजलङ्कितम्।

विवेकवारिणा सिद्धये प्रक्षाल्य.. महो. ५।८३

एनं मनुष्याऽचुर्नवीतु नो भवानिति

बृह. ५।२।२

(अथ) एनं (पुत्रं) मात्रे प्रदाय स्तनं

प्रयच्छति यस्ते स्तनः.. इति बृह. ६।४।२७

(अथ) एनं रैकः पप्रच्छ कस्मिन्सर्वे

प्रतिष्ठिता भवन्तीति सुबालो. १०।१

(अथ) एनं रैकः पप्रच्छ भगवन्

कस्मिन्सर्वेऽस्तं गच्छन्तीति सुबालो. ९।१

(अथ) एनं रैकः पप्रच्छ भगवन्

योऽयं विज्ञानघन उक्तामन्स.. सुबालो. ११।१

(अथ) एनं वसत्योपमन्त्रया चक्रे

(?) एनं साधवो धर्मा आ च बृह. ६।२।३

गच्छेयुर्न च नमेयुः

छां. उ. २।१।४

एनां मृत्युमत्यवहत्

बृह. १।३।११

(अथ) एमिरेवं प्राणैः सह

पुत्रमाविशति बृह. १।५।१७

एमिर्दोवै-(कामक्रोधादिभि) विनि-

मुक्तः स जीवः केवलो मतः १ यो. त. १३

एमिर्दोवैः समोऽनेन सर्वेण..

बृह. ११।३।२२

एमिः क्रमैस्तथाऽन्यैश्च.. प्राणस्यन्दो

मिरुच्यते शाण्डि. १।७।३६

एमिः सर्वमिदं जगत्

म.गी. ७।१३

(अथ) एभ्यः सर्वमिदमत्र वा

यदिकश्चिच्छुभाशुभं दृश्यते मैत्रा. ६।१६

परण्डतैलफेनवत्सर्वं परित्यजेत्

(यतिः) ? सं. सो. २।५०

एवमममीलिकया जप्तो मन्त्रः

सिद्धिकरः ...

एवममनादि परम्परा वर्तते, अनादि-

संसारविपरीतभ्रमात् त्रि.म.ना. ४।१०

एवममन्तर्गतं चित्तं पुरुषः प्रतिमुच्यते मैत्रा. ४।१२

एवमन्या देवताः यथादेवतम् (वधुः) बृह. १।५।२२

एवमन्यानि कर्माणि यथाकर्म (वधुः) बृह. १।५।२१

एवमभ्यसतस्तस्य न किञ्चि-

दपि दुर्लभम् जा. द. ७।१४

एवमभ्यसतस्तस्य जितोवायुर्भवेत्

जा. द. ६।४३

एवमभ्यसतस्तस्य मूलरोगो विनश्यति

जा. द. ६।४४

एवमभ्यासचित्तश्चेत्स मुक्तः..

वराहो. ५।५९

एवमभ्यासतो नित्यं षण्मासाद्यत्नवान्

भवेत्।

जा. द. ६।१०

एवमभ्यासयुक्तस्य पुरुषस्य..

क्रमाद्वेदान्तविज्ञानं विजायेत

जा. द. ९।६

एवमभ्यासयुक्तस्य... सर्वपापानि

नश्यन्ति भवरोगश्च..

जा. द. ७।९

एवमभ्यासात्तन्मयो भवति

मं. ब्रा. १।४

एवममनस्काराभ्यासेनैव नित्यतृप्ति-

रल्पमूत्रपुरीषनिद्रादृग्वायुचलना-

भावब्रह्मदर्शनाज्ज्ञातसुखस्वरूप-

विद्धिर्भवति

मं. ब्रा. ५।२

एवममूर्तितारकमपिमनोयुक्तेन चक्षुषैव

बहुरादिकं वेद्यं भवति

अष्टवक्रा. ६

एवमवरो वै तर्हि किल म इति

होवाच प्रतर्दनः

कौ. उ. ३।१

एवमष्टोत्तरशतं भावनात्रयनाशनम्

एवमस्मिन्प्राणे चक्षुः श्रोत्रं...सर्व

मुक्तिको. १।४०

आत्मा समाहितः

३ ऐत. २।१।१

एवमस्मिन्प्रतिष्ठमाने सर्वा एव प्रातिष्ठन्त

एवं वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च ते

प्रीताः प्राणं स्तुन्वन्ति

प्रभो. २।४

एवमस्य यज्ञः प्रतिष्ठति, यज्ञं प्रति-

तिष्ठन्तं यजमानोऽनु प्रतितिष्ठति

छान्दो. ४।१६।५

एवमस्य यज्ञो रिष्यति, यज्ञं रिष्यन्तं

यजमानोऽनुरिष्यति

छान्दो. ४।१६।३

एवमहोरात्रे पर्यवेक्षत एवं सुकृत-

दुष्कृते.. ब्रह्मविद्वान्ब्रह्मैवाभिप्रैति

कौ. उ. १।४

एवमात्मनि जायतेऽसौ सत्येन

तपसा योऽनुपश्यति

महो. १९

एवमात्माऽऽत्मनि गृह्यतेऽसौ सत्येनैव

तपसा योऽनुपश्यति

श्वेता. १।१५

एवमात्मायथायत्र समुल्लासमुपागतः।

तिष्ठत्याशु तथा तत्र..

महो. ४।४३

एवमितरान्प्राणान्समखिदत्तं हाभि-

समेत्योचुः

छान्दो. ५।१।१२

एवमिमानि पुरुषे श्रीणि ज्योतीषि

३ ऐत. १।५।२

एवमिव वे स धातुमेव प्रशंसं	बृ. उ. ३।३।२
एवमिष्टापूर्तेकर्मा शुभाशुभैर्न लिप्यते	परब्र. १
एवमिष्टापूर्तेः शुभाशुभैर्न लिप्यते	ब्रह्मो. १
एवमुक्तलक्षणो यः स एव ब्राह्मण इति	
श्रुतिस्मृतिः.. अग्निप्रायः	ब. सू. ९
एवमुक्तो हृषीकेशः	भ. गी. १।२४
एवमुक्त्वा ततो राजन्	भ. गी. १।१९
एवमुक्त्वाऽर्जुनः सङ्ख्ये	भ. गी. १।४६
एवमुक्त्वा हृषीकेशं	भ. गी. २।९
एवमु खल्वेता देवताः पाप्मभि-	
रुपास्तृजन्	बृह. १।३।६
एवमु चैतदुपास्यम्	तैत्ति. १।११।४
एवमुपासितव्यम्	तैत्ति. १।११।४
(?) एवमुपास्ते सर्वश्चैवास्मिं-	
लोकआयुरेति, नैनंपुराकाला-	
त्याणो जहाति	बृ. उ. २।१।१०, १२
एवमु ह स्म सर्वमात्मानमनु-	
विधायाद्देवमेव..	३ ऐत. १।२।३
एवमु हैवैतदिति (हैतदिति)	
हेन्द्र उवाच	कौ. उ. ३।२
एवमेतद्यथाऽऽत्थ त्वम्	भ. गी. १।१३
एवमेतं चक्षुः पितरं परिचरतो	
यौश्वादित्यश्च	१ ऐत. १।७।४
एवमेतासां देवतानां वायुः	बृह. १।५।२२
एवमेकाक्षरं मन्त्रं.. ध्यायन्ति परमा-	
नन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः	देव्यु. १५
एवमेकैकः पुरुषो देवान् भुनक्ति	बृह. १।४।१०
एवमेते मनः पितरं परिचरन्त्यापश्च	
वरुणश्च...	१ ऐत. १।७।६
एवमेते श्रोत्रं पितरं परिचरन्ति ...	
चन्द्रमाश्च	१ ऐत. १।७।५
एवमेतौ प्राणं पितरं परिचरतोऽन्त-	
रिक्षं च वायुश्च..	१ ऐत. १।७।३
एवमेतौ वाचं पितरं परिचरतः	
पृथिवी चाग्निश्च	१ ऐत. १।७।२
एवमेन सर्वं तदभिसमेति यत्किञ्च	
प्रजाः साधु कुर्वन्ति, यस्तद्वेद..	छांदो. ४।१।४

एवमेव खलु सोम्य तन्मनो दिशंदिशं	
पतिस्वाऽन्यत्रायतनमलम्बा	
प्राणमेवोपश्रयते	छांदो. ६।८।२
एवमेव खलु सोम्यविद्वीतिहोवाच	छांदो. ६।११।२
एवमेव खलु सोम्यान्नमयस्याश्च-	
मानस्य योऽणिमा स ऊर्ध्वः	
समुदीषति तन्मनो भवति	छांदो. ६।६।२
एवमेव खलु सोम्यान्नेन शुक्लेनापो-	
मूलमन्विच्छ	छांदो. ६।८।४
एवमेव खलु सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः	
सत आगत्य न विदुः सत	
गच्छामह इति	छांदो. ६।१०।२
एवमेव खलुसोम्येमाः सर्वाः प्रजाः सति	
सम्पद्य न विदुः सतिसम्पद्यामह इति	छांदो. ६।९।२
एवमेव चिदानन्दावप्यवचनेनैवानुभव-	
न्नुवाच सर्वमन्यदिति	नृसिंहो. ७।३
एवमेव प्रतिहर्तारमुवाच प्रतिहर्तेर्या	
देवता प्रतिहर्तारमन्वायत्ता..	छांदो. १।१०।११
एवमेव यदिदं किञ्च मिथुनमा-	
पिपीलिकाऽभ्यस्तत्सर्वमस्तृजत	बृ. उ. १।४।४
एवमेवंविदि पापं कर्म न श्लिष्यते	छांदो. ४।१०।३
एवमेवामुत्र पुण्यजितो लोकः क्षीयते	छांदो. ८।१।६
एवमेवानृतं वदन्नाविर्मूलमात्मानं	
करोति	१ ऐत. ३।६।५
एवमेवायमस्मिन्नन्धेऽन्धोभवति	छांदो. ८।९।१
एवमेवायमात्मेदं शरीरं तिहत्यविद्यां	
गमयित्वा.. आत्मानमुपसंहरति	बृ. उ. ४।४।३
एवमेवायं शरीर आत्मा प्राज्ञेनात्मना-	
ऽन्वारूढ उत्सर्जन्याति	
(उत्सर्जयति— मा. पा.)	बृ. उ. ४।३।३५
एवमेवास्य परिद्रष्टुरिमाः षोडशकलाः	
पुरुषायणाः पुरुषंप्राप्यास्तंगच्छन्ति	प्रश्नो. ६।५
एवमेवास्मिन्नात्मनि सर्वाणि भूतानि	
सर्वे देवाः सर्वे लोकाः सर्वे प्राणाः	
सर्वं यत् आत्मानः समर्पिताः	बृह. २।५।१५
एवमेवेदं शरीरं शेषेते (सर्पत्ववत्)	बृह. ४।४।७
एवमेवेदं सर्वं तस्मादहमिति सर्वाभि-	
धानं तस्याहमिति मकारः	नृसिंहो. ७।२

एवमेवेमाः सर्वाः प्रजा अहरह-
 गच्छन्त्य एतं ब्रह्मलोकं न विदन्ति छांदो. ८।३।२
 एवमेवेमौ भगवः साध्वलंकृतौ
 सुवसनौ परिष्कृतौ च छांदो. ८।८।३
 एवमेवेहाचार्यवान्पुरुषो वेद छांदो. ६।१४।२
 एवमेवेतदाहवनीयादग्निमाहृत्य ना. प. ३।७७
 एवमेवेतद्याज्ञवल्क्य [बृह. ३।९।२०, २१, २२, २३
 एवमेवेतद्याज्ञवल्क्यान्तर्यामिणं ब्रूहीति बृह. ३।७।२
 एवमेवेतद्व्यपदिष्टं भवति बृह. ३।४।२
 एवमेवेतस्मादात्मनः प्राणा यथायतनं
 विप्रतिष्ठन्ते कौ. उ. ३।३
 एवमेवेता आदित्यस्य रश्मय उभौ
 लोकौ गच्छन्ति छांदो. ८।६।२
 एवमेवेतामिरुपनिषद्भिः
 समाहितात्माऽसि बृह. ४।२।१
 एवमेवेता भूतमात्राः प्रज्ञामात्रा-
 स्वर्पिताः प्राणे अपि ताः कौ. त. ३।९
 एवमेवेव प्राज्ञ आत्मैतैरात्मभिर्भुङ्क्ते कौ. उ. ४।२०
 एवमेवेव प्राण इतरान्प्राणान्
 पृथक्पृथगेव सन्निधत्ते प्रभो. ३।४
 एवमेवेव भगवन्निति वै याज्ञवल्क्यः तारसा. १।१
 एवमेवोद्गातारमुवाचोद्गातयादेवतो-
 द्वीथमन्वायत्तातांचेद्विद्वान्. छांदो. १।१०।१०
 एवमेष महाशब्दो भगवानिति...
 परब्रह्मस्वरूपस्य... भवसं. २।५०
 एवमेषा गायत्र्यध्यात्मं प्रतिष्ठिता
 (मा. पा.) बृ. उ. ५।१४।४
 एवमेषां लोकानामासां देवतानाम-
 स्याच्छ्रेय्याविद्यायावीर्येणयज्ञस्य
 विरिष्टसन्दधाति छांदो. ४।१७।८
 एवमोङ्कारेण सर्वा वाक्सन्तृण्णा
 छांदो. २।२३।३
 एवम्भूतस्यागाधमहिम्नः...मानसपूजया
 ध्यानेन..सर्वेण नित्यस्थलं
 प्राप्नोति राधोप. ३।३
 एवम्भूतस्य कर्माणिपुण्यापुण्यानि
 संक्षयं प्रयान्ति, नैव लिप्यन्ति.. अमन. २।९८
 एवम्भूतं जगदाधारभूतं रामं वन्दे
 सच्चिदानन्दरूपम्..योध्याये-
 न्मोक्षमामोति सर्वः रा. पू. ७।८

एवं कीर्तिं श्लोकं विन्दते य एवं वेद बृह. १।४।७
 एवं खल्वमुमादित्यंसप्तविधंसामोपास्ते छांदो. २।९।८
 (अथ ह) एवं गार्गी वाचकनवी पप्रच्छ बृह. ३।६।१
 एवं प्राज्ञाह मात्यभिर्भातिसूर्योभाति.. संहितो. २.४
 एवं चक्षुष्मतीविशया स्तुतः श्रीसूर्य-
 नारायणः सुप्रीतोऽब्रवीत् अह्यु. ३
 एवं चतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैः सिद्धे
 वपुर्गृहे । जीवात्मा...वसति
 कर्मबन्धनैः भवसं. २।२१
 एवं चतुष्पथं कृत्वा तेयान्तिपरमां
 गतिम् । न कर्मणा न प्रजयात्यागे-
 नैके अमृतत्वमानशुः अवधू. ५
 एवं चतुष्पथोबन्धोमार्गत्रयनिरोधकः।
 येन सिद्धाः सुसङ्गताः बराहो. ५।४३
 एवं च धारणाः पञ्च कुर्याद्योगी...
 ततो दृढशरीरः स्यान्मृत्यु-
 स्तस्य न विद्यते १ यो. त. १०२
 एवं चाप्यातुरोयस्तु...विमुक्तः सर्व-
 पापेभ्यः कैवल्यायोपकल्पते गुह्यका. ८४
 एवं चिरसमाधिजनितब्रह्मामृतपान-
 परायणोऽसौ सङ्ख्यासी.. भवति मं. ब्रा. ५।२
 एवं जीवाश्रिता भावा
 भवभावनयाहिताः महो. ५।१३५
 एवं जीवो हि सङ्कल्पवासनारञ्जु-
 वेष्टितः । दुःखजालपरीतात्मा
 क्रमादायाति नीचताम् महो. ५।१२७
 एवं ज्ञाते(ने)न्द्रियाणां तु तत्तत्सौख्यं
 सुसाधयेत् १ यो. त. ७२
 एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म भ. गी. ४।१५
 एवं ज्ञात्वा विमोक्षयसे भ. गी. ४।३२
 एवं तत्तल्लक्ष्यदर्शनात् तू पो भवति मं. ब्रा. ४।१
 एवं तदप आचक्षतेऽश्नायेति
 तत्रैतच्छुद्धमुत्पतितं विजानीहि छांदो. ६।८।३
 एवं तदप आचक्षतेऽशायेति(मा.पा.) छां. उ. ६।८।३
 एवं ते ध्यायिनो विप्रा दहन्ते पातकं
 क्षणात् । ध्यानेन शुध्यते बुद्धिः.. दुर्वासो. १।९
 एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्नाः भ. गी. ९।२१
 एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न
 कर्म लिप्यते.. ईशा. २

एवं दिनपक्षमाससंवत्सरादिभेदाच्च तदीयमानेन..वत्सरकालस्थितिः.. त्रि.म.ना.६।३।७	एवं बहुभिः पुनः पुनः प्रयद्भिर्न सम्पूर्येता ३ इति बृह. ६।२।२
एवं दृढवैराग्याद्बोधो भवति महो. ४।२६	एवं बहुविधा यज्ञाः भ. गी. ४।३२
एवं द्वात्रिंशदक्षराणि सम्पद्यन्ते नृ. पू. २।२	एवं बुद्धेः परं बुद्ध्या भ. गी. ३।४३
एवं द्वादशाङ्गानिआध्यात्मिकान्याधि- भौतिकान्याधिदैविकानि त्रि. ब्रा. १।४	एवं ब्रह्मपरिज्ञानादेवमर्त्योऽमृतोभवेत् महो. ४।८१
एवं द्वारेषु सर्वेषु वायुपूरितरेचितः । निषिद्धं तु नवद्वारे.. यो. त. १४१	एवं ब्रह्मशालां विशेत् ततश्चतु- जालं ब्रह्म कोशं प्रणुदेत् मैत्रा. ६।२८
एवं धर्मान् पृथक् पश्यंस्तामे- वानुविधावति कठो. ४।१४	एवं भवेद्धठावस्था सतताभ्यासयोगतः १ यो. त. ७९
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी.. गणप. ९	एवं भस्मधारणमकृत्वानाश्रीया- दापोऽन्नमन्यद्वा भस्मजा. १।६
एवं ध्यायेषिसन्ध्यासु... विषं नाशयते शीघ्रं गारुडो. ९	एवंभूतसत्त्वांशभागत्रयसमष्टितो- ऽन्तःकरणमसृजत् पैङ्गलो. २।४
एवंनचित्तजाधर्माश्चित्तंवाऽपिनधर्मजं अ. शां. ५४	एवंभूतं जगदाधारभूतं रामं वन्दे.. योध्यायेन्मोक्षमाप्नोति सर्वः रा. पू. ५।८
एवंनजायतेचित्तमेवंधर्माजःस्मृताः अ. शां. ४६	एवं मन्वान एवं विजानन्नतिवादी भवति, तं चेद्ब्रूयुः.. छान्दो. ७।१५।४
एवं न विधिना खल्वनेनात्ताऽन्नत्वं पुनरुपैति मैत्रा. ६।९	एवं मन्वान एवं विजानन्नात्मरति- रात्मक्रीडः.. स स्वराड् भवति छां.उ. ७।२५।२
एवं नाडीमयंचक्रं..सततंप्राणवाहिन्यः सोमसूर्याग्निदेवताः ध्या. त्रि. ५४	एवं मन्वानस्यैवं विजानत आत्मतः प्राण आत्मतः सर्वमिति छान्दो. ७।२६।१
एवं निर्वाणानुशासनं, वेदानुशासनं एवं नैवमितिपृष्ठ ओमित्त्वेवाह आरुणि. ५	एवं मयि चिदाकाशे जीवेशौ परिकल्पितौ वराहो. २।५१
(प्रजापतिः) एवं पञ्चदशाक्षरं त्रैपुरं योऽधीते स सर्वान्कामानवाप्नोति नृसिंहो. ८।१	एवं मां ब्रह्मचारिणः, धातरायान्तु.. एवं मुनेर्विजानत आत्मा १ यो.त. ४४
एवं परम्पराप्राप्तं भ. गी. ४।२	एवं यथाऽश्मानमाखणमृत्वा विदध्वंसते तैत्ति. १।४।७
एवं परिपूर्णराजयोगिनः सर्वात्मक- पूजोपचारः स्यात् आत्मपू. १	एवं यस्तु विजानाति स्वगुरो- रुपदेशतः.. सदा न तपति प्रभुः कठरु. ३८
एवं पुण्यस्य कर्मणो दूराद्गन्धो वाति महाना. ९।७	एवं यः सततं ध्यायेत्.. निश्श्रेयस- मवाप्नुयात् शाण्डि. ३।२।५
एवं पूर्णधियो धीराः.. न नन्दन्ति न निन्दन्ति जीवितं मरणं तथा अ.पू. ५।२४	एवं यास्यसि पाण्डव एवं योगारूढो ब्रह्मण्येवानुष्टुभं भ. गी. ४।३५
एवं पृथेन मुनिना व्यासेनाखिल- मात्मजे । यथावदखिलं प्रोक्तं.. महो. २।१६	एवं सन्दध्यादोङ्कारः एवं यो वेत्ति तत्त्वतः नृसिंहो. ४।२
एवं प्रधानस्य व्यक्ततांगतस्यो- पलब्धिर्भवति मैत्रा. ६।१०	एवं यो वेद तत्त्वेन कल्पयेत्सः... वैतथ्य. ३०
एवं प्रवर्तितं चक्रं भ. गी. ३।१६	
एवं प्राणमथोङ्कारं.. युनक्ति युञ्जते वाऽपि तस्माद्योग इति स्मृतः मैत्रा. ६।२५	
एवं बद्धस्तथाजीवःकर्मताशेसदाशिवः स्कन्दो. ७	

एवं यो वेद तत्त्वेन ब्रह्मभूयायकल्पते कठरु. ४५
 एवं यो वेद तत्त्वेन सर्वे पुरुषउच्यते ब्र. वि. १११
 एवं यो वै स धर्मः, सत्यं वै तत् बृह. १।४।१४
 एवं रूपपरिज्ञानं यस्यास्तिपरयोगिनः।
 कुत्रचिद्रूपं नास्ति तस्य पूर्ण-
 स्वरूपिणः रुद्रह. ५०
 एवं रूपं कृष्णचन्द्रं चिन्तयेन्नित्यशः
 सुधीः। तस्याया प्रकृती राधिका राधोप. ३।२
 एवंरूपः शक्य अहं नृलोके भ.गी. १२।१
 एवंलक्षणसम्पन्नो गुरुरित्यभिधीयते द्वयोप. ३
 एवं वा अर इदं महसूतम् बृह. २।४।१२
 एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य
 निश्चयसितमेतत् ... बृह. २।४।१०
 एवं वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च ते प्रीताः
 प्राणं स्तुन्वन्ति प्रश्नो. २।४
 एवं वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं चेति ते प्रीताः
 (मा. पा.) प्रश्नो. २।४
 एवं वाचं च नाम च मनोऽनुभवति छान्दो. ७।३।१
 एवं वाच खल्वसावभिध्यातोम् ..
 स्वातन्त्र्यं लभते मैत्रा. ६।२२
 एवं वाच खल्वसौ भूतात्माऽन्तः
 पुरुषेणामिभूतो गुणैर्हन्य-
 मानो नानात्वमुपैति मैत्रा. ३।३
 एवं वाच खल्विमान्प्राणानोमित्यने-
 नोद्धृत्यानामयेऽमौ जुहोति मैत्रा. ६।२६
 एवंविच्छान्तो दान्तोपरतस्तिक्षुः
 समाहितो भूत्वाऽऽत्मन्ये-
 वात्मानं पश्यति बृ. उ. ४।४।२३
 एवंविच्छ्रोत्रियस्य दारेण नोप-
 हासमिच्छेत् बृह. ६।४।१२
 एवं विज्ञाय शरीराभिमानं त्यजेन्न
 शरीराभिमानी भवति, स एव.. ना. प. ६।१
 एवंवित् (आत्मवित्) स्वर्गलोकमेति छां. उ. ८।३।३+५
 एवंवित्स्वप्रकाशं परमेव ब्रह्म भवति नृसिंहो. ६।२
 एवंविदमेव ब्रह्माणं कुर्वीत छां. उ. ४।१७।१०
 एवंविद ह वा एषा ब्रह्माणमनुगाथा छान्दो. ४।१७।९
 (एवं ह) एवंविदं सर्वाणि भूतानि
 प्रतिकल्प्यत इदं ब्रह्मा-
 यातीदमागच्छतीति बृह. ४।३।३७

एवंविदं सर्वाणि भूतान्यवन्ति बृह. १।५।२०
 एवंविदात्मन्नेवामिध्यायति...
 यजतीति मैत्रा. ६।९
 एवं विदित्वा गणनाथतत्त्वं हेरम्बो. १३
 एवं विदित्वा परमात्मरूपं कैव. २३
 एवं विदित्वा यो धारयति स
 सर्वकर्माहो भवति कात्याय. १
 एवं विदित्वा स्वेच्छाचारपरो भूयात् अवधू. ३३
 एवंविदि पापं कर्म न श्लिष्यते छां. उ. ४।१४।३
 एवंविदुद्राता भूयात् छां. उ. १।७।८
 एवंविदेहकैवल्यं यतिर्नावर्तते पुनः २ आत्मो. २४
 एवं विद्वानेतदुपास्ते बृह. ४।१।२, ३, ७
 एवं वृन्दारक आढ्यः सन्नधीतवेदः...
 क गमिष्यसि बृह. ४।२।१
 एवंविद्ध वै ब्रह्मा यज्ञं यजमानं
 सर्वाश्चर्त्विजोऽभिरक्षति छान्दो. ४।१७।१०
 एवंविद्वान् सर्वे हि देवेभ्योऽन्नाद्यं
 प्रयच्छति बृ. उ. १।५।२
 एवंविद्वान्सर्वेषां भूतानां प्राणमेव
 प्रज्ञात्मानमभिसंस्तूय सहैतैः.
 सर्वैरस्माच्छरीरादुत्क्रामति कौ. उ. २।१४
 एवंविधश्चिदादित्यस्योदयास्त-
 मयाभावात् सर्वकर्माभावः मं. ब्रा. २।४
 (?) एवंविद्यद्यपि चांडालायोच्छिष्टं
 प्रयच्छेदात्मनि हैवास्य.. छांदो. ५।२४।४
 एवं विविधा गोप्यः कृष्णसेवांकुर्वन्ति राधोप. १।५
 एवं वैतमात्मानमेते (प्राणादयः)
 आत्मनोऽन्ववस्यन्ति कौ. उ. ४।२०
 एवं वैतमात्मानमेत आत्मानो
 भुञ्जन्ति (मा. पा.) कौ. उ. ४।१
 एवं वैषा गायत्र्यध्यात्मं प्रतिष्ठिता
 [बृ. उ. ५।१४; गायत्र्यु. ३
 एवं व्यक्तमन्नमव्यक्तमन्नमस्य निर्गुणो
 भोक्ता, भाक्तृत्वाच्चैतन्यप्रसिद्धतस्य मैत्रा. ६।१०
 एवं शुभाशुभैर्भावैः सा नाडीति
 विभावयेत् क्षुरिको. २०
 एवंषण्मासाभ्यन्तरात्सर्वरोगनिवृत्तिः शाण्डि. १।७।४६
 एवं संचारचक्रे कूपचक्रेण घटा इव
 (जन्मपरम्परा) १ यो. त. १३३

एवं सततयुक्ता ये	भ. गी. १२।१	एवं ह वा एनं स्वा	
एवं स देवानां यथा ह वै बहवः		अभिसंविशन्ति (मा. पा.)	बृह. १।३।१६
पञ्चवः मनुष्यं भुञ्जुः	बृह. १।४।१०	एवं ह वा एष भिया यशसा तपति	गायत्र्यु. २
एवं स देवो भगवान्वरेण्यो		एवं ह वै तत्सर्वं परे देवे मनस्येकी-	
यौनिस्वभावानधितिष्ठत्येकः	श्वेता. ५।४	भवति ।	प्रश्नो. ४।२
एवं समभ्यसेद्वायुं स ब्रह्माण्डमयो भवेत्	योगकुं. ३।१३	एवं ह वै स पाप्मना विनिर्मुक्तः स	
एवं स भगवान्देवं पश्यन्त्यन्ये पुनः पुनः	मंत्रिको. १९	सामभिरुन्नीयते	प्रश्नो. ५।५
एवं सर्वं हंसवशात्तस्मान्मनो हंसो		एवं हास्य सर्वे पाप्मानः प्रदूयन्ते	छान्दो. ५।२४।२
विचार्यते । स एव जपकोटया		एवं हि प्रणवं ज्ञात्वा व्यभृते परमं पदम्	आगम. २७
नादमनुभवति	हंसो. ६	एवं हि यस्य शक्त्यश्चानेघाऽऽह्लादिनी	राधिको. ४
एवं सर्वे हंसवशाद्भादो दशविधो		एवं हेतुफलां जातिं प्रविशन्ति	
जायते । चिणीति प्रथमः..		मनीषिणः । यावद्धेतुफलावेशः	
दक्षमो मेघनादः	हंसो. ७	संसारस्तावदायतः	अ. शां. ५४
एवं सर्वाणि भूतान्यग्निहोत्रमुपासते	छान्दो. ५।२४।५	एवं हैव विध्वंसमानं विष्वञ्चो विनेशुः	बृह. १।३।७
एवं सर्वाणि भूतानि मणौ सूत्र इवा-		एवं हैव भिया यशसा तपति	
ऽऽत्मनि । स्थिरबुद्धिरसम्भूढो		योऽस्या एतदेवं वेद	बृह. ५।१४।३
ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः	ध्या. बिं. ६	एवं हैव स प्रजया पशुभिः.. सन्धीयते	३ ऐत. १।६।३
एवं सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि	भैत्रा. ६।१०	एवं हैव विदं सर्वाणि भूतान्यवन्ति	बृह. १।५।२०
एवं सर्वेषां गन्धानां नासिके एकायनं		एवं हैव विदं सर्वाणि भूतानि प्रति-	
(नासिकैकायनम्=मा. पा.)	बृ. उ. ४।५।१२	कल्पन्ते, अयमागच्छति	बृह. ४।३।३७
एवं सर्वेषां स्पर्शानां त्वगेकायनम्	बृ. उ. ४।५।१२	एवं हैव विदे सर्वाणि	
एवं संसारचक्रेण कूपचक्रं घटा इव	२ यो. त. ५	भूतान्यरिष्टमिच्छन्ति	बृह. १।४।१६
एवं सुकृतदुष्कृते सर्वाणि च		एवं हैवैमान्प्राणान्तसंवर्ह	बृह. ६।१।१३
द्वन्द्वानि (पर्यवेक्षत)	कौ. उ. १।४	एवं हैवैवंविद्यद्यपि बह्विवपापं कुरुते	
एवं सुप्तो ब्रूते	ब्रह्मो. १	सर्वमेव. तत्संज्ञाय शुद्धः	बृह. ५।१४।८
एवं सूक्ष्माङ्गानि, य एवं वेद स मुक्तिभाक्..	मं. ब्रा. १।१	एवं हैवैवंविद्यद्यपि.. तत्सत्संस्थाय	
एवं सोम्य ते षोडशानां कलाना-		(मा. पा.)	बृ. उ. ५।१४।८
मेका कलाऽतिशिष्टा..	छान्दो. ६।७।६, ७	एवं हैवैष यन्ता(रं) निलयनं प्रापयति	छाग. ३।५
एवं सोम्य स आदेशो भवति	छान्दो. ६।१।६	एवं हैवैषोऽभिसृत्त्वाणामेव धुर्याणां	
एवं स्थूलं च सूक्ष्मं च शरीरं..	वराहो. २।६८	चक्रमतामरीणामुत्प्लवति	छाग. ५।३
एवं स्वरूपविज्ञानं यस्य कस्यास्ति		एवं हैष इतश्चेतश्चामुतश्च सम्प्रव्रत	
योगिनः । कुत्रचिद्भ्रमं नास्ति		इवोपशु(घु)ष्यत इवोपस्कन्द-	
तस्य सम्पूर्णरूपिणः	पा. ब्र. ३९	मभिगृह्णाति	छाग. ३।५
एवं स्वात्मानं ज्ञात्वा वेदैः किं		एवं हैष प्राज्ञेनात्मनापोज्झितो न ब्रूते..	छाग. ६।३
प्रयोजनं भवति	पैङ्गलो. ४।९	एवं हैष संक्रीडति	छाग. ३।५
एवं स्वात्मानो यस्य सोऽहमस्मि		एवं होताः पञ्चविधा अनुशस्यन्ते,	
न संशयः	मैत्रे. ३।२४	यत्प्राक्तृचाशीतिभ्यः सैकविधा	१ ऐत. ३।४।३
एवं ह वा एनमेवा देवता		एवां ते गर्भे एजतु सहवैतुजरायुणा	बृ. उ. ६।४।२३
सूयुमतिवदति, य एवं वेद	बृह. १।३।१६	एवा मे अस्तु धान्यं सहस्रधारमक्षितं महाना..	१४।२१

एवैष कृत्स्नक्षय एको जागर्ति	मैत्रा. ६।१७
एष आकाशात्मैव, एष कृत्स्नक्षय एको जागर्ति	मैत्रा. ६।१७
एष आत्मा न नश्यति, यं ब्रह्म- चर्येणानुविन्दते	छान्दो. ८।५।३
एष आत्मा नृसिंहश्चिद्रूप एवा- विकारोऽप्युपलब्धः	नृसिंहो. ९।१
एष आत्माऽपहृतपाप्माविजरोवि- मृत्युर्विशोको... सत्यकामः सत्यसङ्कल्पः [छां.उ.८।१।५+	मैत्रा. ७।७
एष आत्माऽहमव्ययः	ते. बि. ५।४
एष आत्मेतिहोवाच [छांदो.८।३।४ + ८।८।३+८।११।१+	+ ८।७।४
एष आत्मेत्याह भगवान् मैत्रिः	मैत्रा. २।२
एष आदेशः, एष उपदेशः..	तैत्ति. १।११।४
एष इमं लोकमभ्यार्चत्पुरुषरूपेण य एष तपति	१ ऐत. २।१।१
एष ईश्वरस्तत्सर्वगतः	नृसिंहो. ५।१
(अथ) एष उ एव अकार व्याप्तमार्थं आत्मन्येव नृसिंहेदेवेब्रह्मणि वर्तते	नृसिंहो. ५।१
एष उ एव विभ्रद्वाजः; प्रजा वै बाजस्ता एष विभर्ति	१ ऐत. २।२।१
एष उ एव बृहस्पतिः, वाग्वै बृहती	बृह. १।३।२०
एष उ एव ब्रह्मणस्पतिः, वाग्वै ब्रह्म, तस्या एष पतिः, तस्माद्ब्रह्मणस्पतिः	बृह. १।३।२१
एष उ एव भामनीः एष हि सर्वेषु लोकेषु भाति	छान्दो. ४।१५।४
एष उ एव वामनीः, एष हि सर्वाणि वामानि नयति	छान्दो. ४।१५।३
एष उ एवासाधुकर्म कारयति(पाठः)	कौ.उ. ३।८
एष उ एव साम	बृह. १।३।२२
एष उ एवैतदिन्द्रस्यात्मा भवति	कौ. उ. २।६
एष उ एवैनमसाधु कर्म कारयति तं यमेभ्यो...नुनुत्सत	कौ. उ. ३।९
एष उ एवैषु सर्वेष्वेतेषु परिख्यायते	छांदो. ८।७।४
एष उभयात्मैववित्	मैत्रा. ६।९
एष उत एवास्यात्मै तदात्मा भवति य एव वैव	कौ. उ. २।६

एष उ वा उद्रीथः प्राणावा उद्रीथः	बृ. उ. १।३।२३
एष उ स्वरोयदेतदक्षरमेतदमृतमभयं तत्प्रविश्य देवा अमृताः..अभवन्	छां. उ. १।४।४
एष उ होव सर्वे देवाः	बृह. १।४।६
(एवमेव) एष एतत्प्राणान् गृहीत्वा स्वे शरीरे.. यथाकामं परिवर्तते	बृह. २।१।१८
एष एत्यवीरहा रुद्रो जलासम्भोजीः, वित्तेऽक्षेममनीनशद्वातीकारो- ऽप्येतु ते	नीलक. १।३
एष एव क्षयस्तस्याः (वासनायाः) ब्रह्मेदमिति निश्चयः	अ. पू. ५।१९
एष एव ज्वलन्नेष एव सर्वतोमुख एषएव नृसिंहः, एष एव भीषणः	नृसिंहो. ४।२
एष एवज्वलन्नेषहि व्याप्ततमः, एषएव सर्वतोमुख एषएवहि व्याप्ततमः	नृसिंहो. ५।१
एष एव ज्वलन्नेष होवोत्कृष्टः	नृसिंहो. ५।४
एषएव नमाम्येष एवाहमेव योगारूढो ब्रह्मण्येवानुष्ठुभंसन्दध्यादोङ्कारइति	नृसिंहो. ४।२
एष एव नमाम्येष हि व्याप्ततमः	नृसिंहो. ५।१
एष एव नमाम्येषहोवोत्कृष्टः, एष एवाहम्	नृसिंहो. ५।४
एष एव नृसिंह एष एव भीषणः	नृसिंहो. ४।२
एष एव नृसिंह एष हि व्याप्ततमः	नृसिंहो. ५।१
एष एव नृसिंह एषहोवोत्कृष्टः	नृसिंहो. ५।४
एष एव परम आनन्दः, एषब्रह्मलोकः	बृह. ४।३।३३
एष एव परमो धर्मः, सत्यात्.. कदाचिन्न प्रमदितव्यम्	अस्मजा. २।७
एष एव भद्रः, एष एव न मृत्युमृत्युः	नृसिंहो. ४।२
एष एव भद्रः, एष हि व्याप्ततमः	नृसिंहो. ५।१
एष एव भद्रः, एष होवोत्कृष्टः	नृसिंहो. ५।४
एष एव भीषणः, एष एव भद्रः	नृसिंहो. ४।२
एष एव भीषणः, एष एव होवोत्कृष्टः	नृसिंहो. ५।४
एष एव भीषणः, एष हि व्याप्ततमः	नृसिंहो. ५।१
(अथ) एष एव मकारो महाविभूत्यर्थं आत्मन्येव नृसिंहेदेवेब्रह्मणिवर्तते	नृसिंहो. ५।६
एष एव महानेष एव विष्णुः	नृसिंहो. ४।२
एष एव मनोनाशस्त्वविद्यानाशएवच	महो. ४।११०
एष एव महानेष हि व्याप्ततमः	नृसिंहो. ५।१
एष एव महानेष होवोत्कृष्टः	नृसिंहो. ५।४

एष एव मृत्युमृत्युरेष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५१
 एष एव मृत्युमृत्युरेष होवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५४
 एष एव वामनीः, एष एव सर्वाणि छां. उ. ४।१५।३
 वामानि नयति..य एवं वेद नृसिंहो. ४।२
 एष एव विष्णुः, एष एव ज्वलन् नृसिंहो. ५१
 एष एव विष्णुरेष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५४
 एष एव विष्णुरेष होवोत्कृष्टः नृसिंहो. ४।२
 एष एव वीरः, एष एव महानेष एव विष्णुः नृसिंहो. ५४
 एष एव वीरः, एष एवोत्कृष्टः नृसिंहो. ९।१
 एष एव वीरः, एष व्याप्ततमः नृसिंहो. ४।२
 एष एव सर्वतोमुखः, एष एव नृसिंहः नृसिंहो. ५१
 एष एव सर्वतोमुखः, एष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५४
 एष एव सर्वतोमुखः, एष होवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५४
 एष(उ) एव(वा) अकार आप्ततमार्थं नृसिंहो. ५१
 आत्मन्येव नृसिंहे देवे वर्तते नृसिंहो. ९।१०
 एष एवात्मेति होवाच मस्मजा. २।७
 एष एवादेशः, एष एवोपदेशः
 एष एवाहमेव हि व्याप्ततमं नृसिंहो. ५१
 आत्मैव नृसिंहः
 एष एवाहमेव होवोत्कृष्टस्तस्मादात्मा नृसिंहो. ५४
 होवैनं जानीयात्
 एष एवाहमेव योगारूढो ब्रह्मण्यै- नृसिंहो. ४।२
 वायुं धुमं सन्दध्यात् नृसिंहो. ५४
 एष एवोमः, एष होवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५४
 एष एवोद्धार उत्कृष्टतमार्थः नृसिंहो. ५२
 एष एवोद्धार उत्कृष्टतमार्थं आत्मन्येव नृसिंहो. ५३
 नृसिंहे देवे ब्रह्मणि वर्तते नृसिंहो. ५४
 एष एवोमः, एष एवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५१
 एष एवोमः, एष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ४।२
 एष एवोमः, एष एव वीरः नृसिंहो. ५४
 एष एवोत्कृष्टः, एष एव महान् नृसिंहो. ५४
 एष ओद्धार आख्याती वारणा- ना. वि. ८
 मिनिबोधत मैत्रा. ६।१७
 एष कृत्स्नस्य एको जागति दुर्वासी. २।१२
 एष आत्मन्तरी योगीयथातेकथितः
 एषणात्रयवासनात्रयममत्वाहकारादि- प. हं. पं. १
 वसनमिव ह्यमभिगम्यः ३।७।३+४।२. ६
 एष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः [बृह. १, २+५।१
 एष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः [बृह. ३।४।१, १, २+५।१

एष तेऽग्निर्नचिकेतःस्वर्गोयमवृणीथा कठो. १।१९
 द्वितीयेन वरेण
 एष तत्स्थः सविताख्यो यस्मादेवेमे मैत्रा. ६।१६
 चन्द्रर्क्षगृहसंवत्सरादयः स्रयन्ते नृसिंहो. ४।२
 एष तुरीय एष एवोम एष एव वीरः
 एष तु वा अतिवदति यः सत्येना- छां. उ. ७।१६।१
 तिवदति भ. गी. १०।४०
 एष तूद्देशतः प्रोक्तः महाना. १४।३
 एष ते कामकामाय स्वाहा चित्त्यु. १६।१
 एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजस्वते महाना. १४।४
 एष ते मन्यो मन्यवे स्वाहा
 एष दृष्टोऽदृष्टोऽव्यवहार्योऽप्यल्पो नृसिंहो. ९।७
 नाल्पः साक्ष्यविशेषोऽनन्यः..
 अद्भुतः परमात्मा
 (तथैव) एष देवदत्तः स्वप्न ब्रह्मो. १
 आनन्व्यमुपयाति
 एष देवपथो ब्रह्मपथ एतेन प्रतिपद्य- छान्दो. ४।१५।६
 मानाहमंमानवमावर्त नावर्तन्ते छान्दो. ५।१०।२
 एष देवयानः पन्थाः प्रभो. ४।५
 एष देवः स्वप्ने महिमानमनुभवति
 एष धर्मो यातो भवत्यनन्तरस्त्वैवैन- कौ. उ. २।१, २
 मुपमंत्रयते वदाम त इति +इतिहा. २७
 एष नित्यीमहिमा ब्राह्मणस्य [बृ. ४।४।२३ १ ऐत. १।१।१
 एष पन्थाः, एतत्कर्म, एतद्ब्रह्म
 एष पन्थाः परिव्राजकानां
 वीराध्वनि वाऽनाशके वाऽपां याज्ञव. २
 प्रवेशे वा ..
 एष पन्था ब्रह्मणा हानुवित्तस्तेनैति बृह. ४।४।९
 ब्रह्मवित्पुण्यकृत्तैजसश्च
 एष पन्था ब्रह्मणा हानुवित्तस्तेनैति जावा. ५
 सन्न्यासी ब्रह्मवित्पुण्यमेवैष भगवन्
 एष परमात्माऽपरिमितोऽजोऽतर्क्यो- मैत्रा. ६।१७
 ऽचिन्त्यः, एष आकाशात्मा आत्मो. ६
 एष परमात्मा पुरुषो नाम मैत्रा. ७।७
 एष परमेश्वरः, एष भूताधिपतिः
 एष परोरजा इति, सर्वमु होष रज गायत्र्यु. २
 उपर्युपरि तपति
 एष पर्जन्यो मघवानेष वायुरेष प्रभो. २।५
 पृथिवी रयिर्देवः सदसचामृतं च

एष पुण्यकृतां लोकानेष
 मृत्योर्हिरण्यम् महाना. ६।६
 एष पुरुषो न शृणोति न पश्यति प्रश्नो. ४।२
 एष प्रणव इत्येवं ह्याह मैत्रा. ६।४
 एष प्रणव ओमिति छान्दो. १।५।१
 एष प्रजापतिर्यद्वृक्षयम्, एतद्वृक्षतत्सर्वम् बृह. ५।३।१
 (एवमेव) एष प्राज्ञ आत्मेदं शरीर-
 मनुप्रविष्ट आलोमभ्य आ नस्त्रेभ्यः कौ. उ. ४।१९
 एष प्राण इतरान्प्राणान् पृथक्-
 पृथगेव सन्निधत्ते प्रश्नो. ३।४
 एष प्राण एव प्रज्ञात्माऽऽनन्दो-
 ऽजरोऽमृतो न साधुना कर्मणा
 भूयान्नो एवाऽसाधुना कर्मणा.. कौ. उ. ३।९
 एष प्राणजयोपायः सर्वमृत्युपघातकः शाण्डि. १।७।४३
 (तथैव) एष प्राणो यदा याति
 संसृष्टमाकृष्य ब्रह्मो. १
 एष ब्रह्मलोकः सम्राडिति
 हैनमनुशशास याज्ञवल्क्यः बृह. ४।३।३२
 एष ब्रह्मलोकः सम्राडेनंप्रापितोऽसीति
 होवाच याज्ञवल्क्यः बृह. ४।४।२३
 एष ब्रह्मविदां वरिष्ठः, सत्येनलभ्यः मुण्ड. ३।१।४
 एष ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्र एष
 हि भास्करः सूर्यता. १।६
 एष ब्रह्मैष इन्द्र एष प्रजापति-
 रेतै सर्वे देवा इमानि च पञ्च
 महाभूतानि २ ऐत. ५।३
 एष भर्ग इति रुद्रो ब्रह्मवादिनः मैत्रा. ६।७
 एष भर्गाख्यः, भाभिर्गतिरस्य
 हीति भर्गः मैत्रा. ६।७
 एष भुवनस्य मध्ये भुवनस्य गोप्ता महाना. ६।५
 एष भूतपालः [बृ. उ. ४।४।२२+ मैत्रा. ७।७
 एष भूताधिपतिः [बृ. उ. ४।४।२२ मैत्रा. ७।७
 एष भूतानामधिपतिर्ब्रह्मणः सायुज्यं
 सलोकतामाप्नोति महाना. १०।२
 एष म आत्माऽन्तर्हृदयेऽणीयान् छां. ३।१४।३, ४
 एष मधुकृत ऋग्वेद एव पुष्पम् छान्दो. ३।१।२
 एष यज्ञस्य पुरस्ताद्युज्यते २ प्रणवो. ४
 एष योगो वरो देहे सिद्धिमार्ग-
 प्रदर्शकः वराहो. ५।४०

एष योनिः सर्वस्य [माण्डू. ६
 [ग. शो. १।४+५।६+
 [नृ. पू. ४।२; +रामो. २।४
 सुबालो. ५।१५;
 नृसिंहो. १।४
 एष योऽयं दक्षिणेऽक्षन् पुरुषस्तंवा
 एतमिन्धं सन्तमिन्द्रइत्याचक्षते बृह. ४।२।२
 एष रज उपर्युपरि तपति बृह. ५।१४।३
 एष रसो यच्चक्षुः सतो ह्येष रसः बृह. २।३।४
 एषर्ग्यजुः परमेतच्च सामायम-
 थर्वेयमन्या च विद्या त्रिपुरो. १६
 एषर्ग्यजुः परमेतच्च सामेवायम-
 थर्वेयमन्या च विद्योम् (पाठः) त्रिपुरो. १६
 एष लोकपाल एष लोकाधिपति-
 रेष सर्वेश्वरः स म
 आत्मेति विद्यात् कौ. उ. ३।९
 एष वः पन्थाः सुकृतस्य लोके मुण्ड. १।२।१
 एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः मुण्ड. २।२।६
 एष वा अग्नेर्योनिर्यः प्राणः
 प्राणंगच्छ स्वांयोनिरंगच्छस्वाहा ना. प. ३।७७
 [+याज्ञव. १ प. हं. प. ३
 एष वा अर्धर्चः, एष ह्येभ्यः
 सर्वेभ्योऽर्धेभ्योऽर्चत १ ऐत. २।२।८
 एष वा ऋगेष ह्येभ्यः सर्वेभ्यो
 भूतेभ्योऽर्चत १ ऐत. २।२।७
 एष वा अक्षरम्, एष ह्येभ्यः सर्वेभ्यः
 क्षरति, न चैनमतिक्षरन्ति १ ऐ. २।२।१०
 एष वा उद्गीथः प्राणो वा उत्प्राणेन
 हीदं सर्वमुत्तब्धम् बृह. १।३।२३
 एष वायुरेष पृथिवी रयिर्वेवः
 सदसच्चाभृतं च यत् प्रश्नो. २।५
 एष बाव ते गोप्यायेति
 (गोपाय्यातेति) शौनको. १।३
 एष वाव विजिज्ञासितव्योऽन्वेष्टव्यः मैत्रा. ६।८
 एष विधिर्वीराध्वानेवाऽनाशकेवास-
 म्प्रवेशेवाऽग्निप्रवेशेवामहास्थानेवा प. हं. प. ४
 एष वीरो नृसिंह एव नृसिंहो. २।८
 एष वीरो नारसिंहेन वाऽनुष्टुभा
 मन्त्रराजेन तुरीयं विद्यात् नृसिंहो. २।८
 एष वेदो विश्वकर्मा महात्मा सदा
 ज नानां हृदये सन्निविष्टः श्वेता. ४।१७

एष वै कृत्स्न आत्मा यद्वहती	१ ऐत. ३।५।३	एष सर्वाधिपतिः, एषोऽन्तर्यामी	सुबालो. ५।१५
एष वै गोपा एष हीदं सर्व		एष सर्वान्तर्यामी [ग. शो. ५।७+	रामो. २।४
गोपायति...	१ ऐत. १।६।२	एष सर्वेश्वरः, एष सर्वज्ञः [माण्डू. ६+ नृ. पू. ४।२	
एष वै पद्मेव हीमानि सर्वाणि		[नृसिंहो. १।५ + रामो. २।४+ ग. शो. १।४	
भूतानि पाति तस्मात्पदम्	१ ऐत. २।२।९	एष सर्वेश्वरः, एष सर्वाधिपतिः	सुबालो. ५।१
एष वै पृथग्ब्रह्मात्मा वैश्वानरः	छान्दो. ५।१४।१	एष सर्वेश्वरः, एष भूताधिपतिः, एष	
एष वै प्रतिष्ठात्मा वैश्वानरः	छान्दो. ५।१६।१	भूतपालः, एष सेतुर्विधरणः	बृह. ४।४।२१
एष वै बहुल आत्मा वैश्वानरो		एष सर्वेश्वरश्चैव सर्वज्ञः सूक्ष्मभावनः	ना. प. ८।१७
यं त्वमात्मानमुपास्ते	छान्दो. ५।१५।१	एष सर्वेश्वरः, स म आत्मेति	
एष वै यजमानस्य लोकः [छान्दो.	२।२४।५, ९, १५	विद्यात्	कौ. च. ३।९
एष वै रयिरात्मा वैश्वानरः	छान्दो. ५।१६।१	एष सर्वेश्वरो विभुः । सर्वदेवमयः	
एष वै रयिर्यः पितृयाणः	प्रश्नो. १।९	सर्वप्रपञ्चाधारगर्भितः । सर्वा-	
एष वै विश्वरूप आत्मा		क्षरमयः कालः [ना. प. ८।५ + तुरीयो. ३	
वैश्वानरः यं त्वमुपास्ते	छान्दो. ५।१३।१	एष सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते	कठो. ३।१२
एष वै सम्प्रति प्राणो यन्मज्जैतद्वेतो		एष साचामश्चेति तत्साम्नः सामत्वं	बृह. १।३।२२
न ह वा ऋते प्राणाद्वेतः सिञ्चते	३ ऐत. २।२।२	एष सिद्धिकरः, एतस्माद्वयानादौ	
एष वै सुतेजा आत्मा वैश्वानरो		प्रयुज्यते	अ. शिखो. ३
यं त्वमात्मानमुपास्ते	छान्दो. ५।१२।१	एष सुप्तेषु जागर्ति कामं कामं..	कठो. ५।८
एष वै सोम्य चतुष्कलो पादो		एष सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमानः	कठो. २।८
ब्रह्मणः प्रकृतवान्...	छान्दो. ५।६।२	एष सूर्यः, एष पर्जन्यो मधवान्	प्रश्नो. २।५
एष वै सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मण		एष सेतुर्विधरणः, एष हिखलवात्मे शानः	
आयतनवाज्जाम	छान्दो. ४।८।३	शम्भुर्भवो रुद्रः प्रजापतिः..	मैत्रा. ७।७
एष वोऽस्तिष्ठकामधुक्	भ. गी. ३।१०	एष सेतुर्विधरण एषां लोकाना-	
एष सर्वेश्वर एष सर्वान्तर्यामी	ग. शो. ५।७	मसम्भेदाय..	बृह. ४।४।२२
एष वै सोम्यचतुष्कलः पादो ब्रह्मणो-		एष सोमो राजा तद्देवानामन्नं,	
ऽनन्तवाज्जाम	छान्दो. ४।६।३	तं देवा भक्षयन्ति	छान्दो. ५।१०।४
एष वै सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मणो		एष स्वधर्माभिभूतो यो वेदेषु..	मैत्रा. ४।४।३
ज्योतिष्माज्जाम	छान्दो. ४।७।३	एष स्वधर्मोऽभिहितो यो वेदेषु न	
एष ज्योत्स्न्यात्मा प्रतिष्ठितः	मुण्ड. २।२।७	स्वधर्मातिक्रमेणाश्रमी...	मैत्रा. ४।३
एष वै यज्ञेयज्ञोऽहन्यहर्देवेषु देवोऽध्युहूः १ ऐत. ३।४।१		एष ह यज्ञिदं सर्व पुनाति	छां. च. ४।१६।१
(एवमेव) एष सम्प्रसादोऽस्माच्छरी-		एष ह वा अग्नेर्योनिर्यः प्राणः	जावा. ४
रास्समुत्थाय परं ज्योतिरुपसम्पद्य		एष शुक्र एष नील एष पीत	
स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते	छान्दो. ८।१२।३	एष लोहितः..	छान्दो. ८।५।१
एष सर्वज्ञ एष सर्वान्तर्यामी [ग. शो.	१।४+रामो. २।४	एष ह वा अश्वमेधं वेद	बृह. १।२।७
एष सर्वज्ञ एष सर्वेश्वरः	सुबालो. ५।१५	एष ह वा अश्वमेधः, य एष तपति	बृह. १।२।७
एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनिः		एष ह वा उदक्प्रवणो यज्ञः	छान्दो. ४।१७।९
सर्वस्य, प्रभवान्ययौ हि भूतानाम्		एष ह वै तत्सर्वं वक्ष्यतीति ते ह	
[नृ. पू. ४।२	नृसिंहो. १।५	समित्पाणयो भगवन्तं पिप्पलाद-	
एष सर्वभूतान्तरात्मा	मुण्ड. २।१।४	मुपसजाः	प्रश्नो. १।१

एष ह वै यज्ञस्यमात्रां वेद यपन्वेद छांदो. २।२४।१६
 एष ह वै सत्यधर्मो यदादित्यस्या- मैत्रा. ६।३५
 दित्यत्पम् छांदो. ४।१६।१
 एष ह यन्निदं सर्वं पुनाति प्रभो. १।९
 एष ह वै रयिः पितृषाणः मैत्रा. ६।३५
 एष ह वै सत्यधर्मो यदादित्यस्या- मैत्रा. ७।७
 दित्यत्वं तच्छुद्धं पुरुषलिङ्गम् मैत्रा. ६।८
 एष हि स्वत्वात्माऽन्तर्हृदयेऽणीया- मैत्रा. ७।७
 निद्धोऽग्निरिव विश्वरूपः मैत्रा. ६।८
 एष हि स्वत्वात्मेष्टानः शंभुर्भवो..
 एष हि स्वत्वात्मेष्टानः शम्भुर्भवो..
 शास्ताऽच्युतो विष्णुः.. मैत्रा. ७।७
 एष हि देवः प्रदिशो जु सर्वाः.. महाना. २।१+
 [तै. ब्रा. १०।१।३ +सूर्यता. १।३
 एष हि ब्रह्माष्टाश्रोताप्रातारसयिता
 मन्ताबोद्धा कर्ता विज्ञानात्मापुरुषः प्रभो. ४।९
 एष हि का अङ्गानां रसः, तस्माद्यस्मा-
 द्वाङ्गात्प्राण उत्क्रामति बृह. १।३।१९
 एष हि न्यासतम इदं सर्वं यदय-
 सत्त्वा सायामात्रः नृसिंहो. ५।१
 एष हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा सन्
 सर्वमस्ति (असौहीति पाठः) नृसिंहो. ४।२
 एष हि सर्वाणि वामानि
 नयति..य एतं वेद छांदो. ४।१५।३
 एष हि सर्वेषु लोकेषुभाति.. यमन्वेद छांदो. ४।१५।४
 एष हि साक्षी, एष हीश्वरः नृसिंहो. ५।१
 एष हि स्वप्रकाशोऽसङ्गोऽत्यक्त
 वीक्षत आत्माऽतो नात्यथाप्राप्तिः नृसिंहो. ५।३
 एष ह्यर्वाग्निलक्ष्मस ऊर्ध्वै..
 प्राणा वै यज्ञो विश्वरूपम् बृह. २।२।३
 एष ह्यस्य सर्वस्य स्वात्मानः
 मनुजानाति नहीदं सर्वं
 स्वत आत्मवित् नृसिंहो. ८।३
 एष ह्यात्मानं प्रकाशयति,
 सर्वसंहारसमर्थः परिभवा-
 सहः प्रभुर्व्याप्तः नृसिंहो. २।८
 एष ह्यंतर्भुवनेष्वा वरीवर्ति १ ऐत. १।६।२
 एष ह्युभो गमिष्यावः कौ. उ.
 एष ह्येतद्भुतमन्नं समुज्जयति तस्मादेताः
 सप्तार्चिषो भवन्ति प्रभो. ३।५

एष होतं चाक्षुषं प्राणमनुगृह्णानः
 पृथिव्यां यादेवता सैषापुरुषस्या-
 पानमवष्टभ्य.. न्यानः प्रभो. ३।८
 एष होभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः
 क्षरति, न चैनमतिक्षरन्ति १ ऐत. ३।३।१०
 एष होव आप्ततमः, एष हि साक्षी नृसिंहो. ५।१
 एष होव कामगानस्येष्टे छां. उ. १।७।९
 एष होव साधु कर्म कारयति कौ. उ. २।८
 एष होवानन्दयति तैत्ति. २।७
 एष होवेन साधु कर्म कारयति तं
 यमेभ्यो लोकेभ्य उभिनीयते कौ. उ. ३।९
 एष होव कामगानस्येष्टे (मा. पा.) छां. उ. १।७।९
 (अथाह) एषा गतिरेतदसुतमेत-
 त्सायुज्यत्वं निर्वृतत्वं तथाचेति मैत्रा. ६।२२
 एषाऽमौ हुतमादित्यं गमयति मैत्रा. ६।३७
 एषा ते काम दक्षिणा चित्त्यु. १०।२.५
 एषा तेऽभिहिता साङ्गये म. गी. १।३.९
 एषाते शाम्भवीमुद्रा गुप्ताकुलवधूरिव अमन. २।९
 एषात्मशक्तिः, एषा विश्वमोहिनी.. देव्यु. १२
 एषाऽत्र ब्रह्मपदवी, एषोऽत्रद्वारविबरः,
 अनेज्ञास्य तमसःपारं गमिष्यति मैत्रा. ६।३०
 एषा देवी विश्वशोनिर्मेहात्मा गुणका. ६९
 एषा निदाघ सौषुप्तस्थितिरभ्यास-
 योगतः का. पू. ३।१३
 एषा प्रश्नात् सर्वत्र एतया यज्ञस्तपते ३ प्रभाषो. ४
 (अतः) एषा ब्रह्मसंनिधिर्भानाभाव-
 कलाविनिर्मुक्ता बृहज्जो. ३
 एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ म. गी. २।७.२
 एषा ब्राह्मीस्थितिः स्वच्छान्तिष्कामा
 विगतामया । आदाय विहरन्नेवं
 सङ्कटेषु न मुह्यति महो. ६।७.३
 एषामद्भानजन्तूनांसमस्तारिष्टशान्तये ।
 यद्वोद्धव्यं ... तद्वीक्ष्यहम् तिस्रसं. ३
 (एत्रमेव) एषा माया स्वाव्यतिरिक्तानि
 पूर्णानि क्षेत्राणि दर्शयित्वा
 जीवेशाभासेन करोति नृसिंहो. ३।३
 एषा योनिः सर्वेषाम्, प्रभवाप्ययौ
 हि भूतानाम् श्रीवि. भा. ४।३

एषा विश्वमोहिनी पाशाङ्कुश-
 अनुर्वाणधरा देव्यु. १२
 एषा वेदोपनिषत् तैत्ति. १।११।४
 एषा वै नृसिंहगायत्री देवानां
 देवानां निघनं भवति नृ.पू. ४।३
 एषा वै प्रजापतिर्विश्वभृत्तनूः मैत्रा. ६।६
 एषा वै ब्रह्मकृता, अत्र हि सर्वे
 कामाः समाहितास्त्यग्नौदाहरन्ति मैत्रा. ६।३५
 एषा वै महालक्ष्मीर्यजुर्गायत्री चतु-
 विंशत्यक्षरा भवति नृ. पू. ४।३
 एषा वै सर्वेश्वरी सर्वाद्या सनातनी
 कुष्णप्राणाधिदेवाऽर्चेत् राधिको. ५
 एषा स्वाहृविश्वतुर्णां वेदानामानु-
 पूर्व्येण भूर्भुवः सुविरिति २ प्रणवो. १८
 एषा श्रीमहाविद्या, य एवं वेद
 (अथ) प्रश्ना समावर्तनीयेति वेदि-
 त्वया संहिता भवति संहितो. २।१
 एषा सस्त्वह्नी देवी सर्वभूतमुदाश्रया यो.शि. ३।८
 एषा सर्वेश्वर्येषा सर्वोत्तमैषाऽन्तर्या-
 म्येषा योनिः, सर्वेषां प्रमवाप्ययौ
 हि भूतानाम् श्रीब्रि.ता. ४।१
 एषा सा वैष्णवी मुद्रा सर्वतन्त्रेषु
 गोपिता [शङ्खिण्डियो. १।७।१४
 एषा सोम्य तेऽस्माद्विद्यात्मविद्या छांदो. ४।१४।१
 एषाऽस्य पत्नी विराट् तयोरेष
 स५स्तावोयएषोन्सहृदयआकाशः बृह. ४।२।३
 एषाऽस्य परमा गतिः, एषाऽस्य परमा
 सम्पत्, एषोऽस्य परमो लोकः बृह. ४।३।३२
 एषाऽस्य परमा सम्पत्, एषोऽस्य
 परमो लोकः बृह. ४।३।३२
 एषा हि चञ्चलास्पन्दशक्तिश्चित्तस्व-
 संस्थिता। तांविद्धि मानसीं शक्तिं.. महो. ४।१००
 एषा हि जीवन्मुक्तेषु तुर्यावस्थेति
 विद्यते।.. तुर्यातीतमतः परम् महो. ५।३५
 एषा हि न प्राणोऽपानौ व्यान
 उदानः समानोऽनः.. बृह. ४।५।३
 एषां भूतानां पृथिवी रसः पृथिव्या
 आपो रसः, अपामोषधयो

रसः, ओषधीमां पुरुषो रसः,
 पुरुषस्य वाग्रसः.. छान्दो. १।१।२
 एषां वै भूतानां पृथिवी रसः,
 पृथिव्या आपः, अपामोषधयः,
 ओषधीनांपुष्पाणि, पुष्पाणांफलानि,
 फलानां पुरुषः, पुरुषस्य रेतः बृह. ६।४।१
 एषां भूतानां ब्रह्म प्रपद्ये कुंडिको. १४
 एषां लोकानामसम्भेदाय नैत ५.. छान्दो. ८।४।१
 एषां लोकानां संतत्या एवं संतता
 हीमे लोकास्तदस्य द्वितीयं जन्म ररेत. ४।३
 एषु सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न
 प्रकाशते। दृश्यतेत्वमया बुद्ध्या..
 (मा. पा.) कठो. ३।१२
 एषु सुप्तेषु जागर्ति... (मा. पा.) कठो. ५।७
 एषु हीमे सर्वे देवाः बृह. ३।९।८
 एषैव सर्वम् (आत्मा-नृसिंहः) नृसिंहो. ९।१
 एषैव सा, स यस्मा अन्वाह
 तस्य प्राणांश्चायते बृह. ५।१४।४
 एषैवात्मा सनातनः ते. वि. ९।८
 एषैवालम्बनं ब्रह्मलोकेमहीयते गुह्यका. ४०
 एषैवालम्बनं श्रेष्ठं सैषैवालम्बनं परम् गुह्यका. ४०
 एषैवास्य प्रजापतेः स्थविष्ठा तनूर्या
 लोकवतीति मैत्रा. ६।६
 एषोऽग्निस्तपत्येष सूर्य एष पर्जन्यो
 मघवानेष वायुरेष पृथिवी
 सदसच्चासृतं च यत् प्रमो. ३।५
 एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यः मुण्ड. ३।१।९
 एषोऽत्र द्वारनिवरः, अनेजास्य
 तमसः पारं समिष्यति मैत्रा. ६।३०
 एषोऽत्र ब्रह्मपथः सौरं द्वारं
 भित्त्वोर्ध्वेन विनिर्गताः मैत्रा. ६।३०
 एषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मा
 सोऽविमुक्ते प्रतिष्ठितः रामो. ३।१
 एषोऽन्तर्यामी, एष योनिः सर्वस्य, सुबालो. ९।१५
 प्रमवाप्ययौ हि भूतानाम् रामो. ३।४
 [+ना.प.८।१७+ ग. शो. १।४
 एषोऽन्तरे हृत्पुष्कर एवाश्रितः मैत्रा. ६।१.२

एषोऽसौ परमहंसो भानुकोटि-

प्रतीकाशः, येनेदं व्याप्तं

तस्याष्टधा वृत्तिर्भवति

हंसो. ६

एषोऽस्य दोषेण दुष्यति

छान्दो. ८।१०।१, २

एषोऽस्य परमात्मनः परम आनन्दः

बृह. ४।३।३२

एषोऽस्य परमो लोकः

बृह. ४।३।३२

एषो ह देवः प्रदिशो नु सर्वाः

(एषदेतितै.आरण्यके)पूर्वो ह

जातः स उ गर्भे अन्तर्भूयता. २।१६ + वा. सं. ३२।४

एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोऽपि

गयां ब्रजेत् । यजेत वाऽश्वमेचं.. इतिहा. ९५

एहिभ्येवत्वाङ्गपयिष्यामि[कौ. उ. १।१ + ४।१८

एष्टास्व व्याख्यास्यामि ते, व्याच.

क्षाणस्य तु मे निदिष्यासस्व

बृह. २।४।४

एष्टेहीति तमाहुतयः सुवर्चसः

सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति

मुण्ड. १।२।६

ए वागीश्वर्यैचविद्यहे क्लीकामेश्वर्यैच

धी हि । तन्नः क्ली प्रचोदयात्

वनदु. १४७

ऐ

ऐकात्म्यप्रत्ययसारं प्रपंचोपशमं

शिवमद्वैतं चतुर्थं [ग.शो. १।४+५।७ + रामो. २।४

ऐक्यत्वानन्दभोगाच्च सोऽयमात्मा

चतुर्विधः

ना. प. ८।११

ऐक्यं तत्त्वं लये कुर्वन्

ध्यायेदसिपदं सदा

शु. र. २।७

ऐक्यादानन्दभोगाच्च...

नृसिंहो. १।३

ऐतदात्म्यमिदं सर्वम्, तत्सत्यं स

आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो

छां. उ. ६।८।७+

[६।९।४+६।१०।३+६।११।३+

६।१२।३+

[६।१३।३+६।१४।३+६।१५।३+

६।१६।३

ऐतदात्म्यं हीदं सर्वम्

नृसिंहो. ८।५

ऐतरेयकौषीतकीनाद्विन्द्वात्मप्रबोध-

निर्वाणमुद्रलाक्षमालिकात्रिपुरा-

सौभाग्यबह्वचानामृगवेदगतानां

दशसङ्ख्याकानामुपनिषदां 'वाङ्मे

मनसि' इति शान्तिः

मुक्तिको. १।५३

ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं..

मुक्ति. १।३०

ऐन्द्रनीलं पूजितं विष्णुनासील्लिङ्गं..

सि. शि. २१

ऐन्द्रं धनुर्मणिधनुः....स्वर्यातिं

च सृतं ब्रूयात्

शिषो. ७।८२

ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुदाञ्जन..

चतुरस्रदेवताः

ना. पू. वा. ६।१

ऐरावतं गजेन्द्राणां

भ. गी. १०।२७

ऐहिकामुष्मिकप्रातसिद्धये मुक्तेष्व

सिद्धये । बहु कृत्यं पुरा स्यान्मे..

अवधू. ९

ऐहिके समनुप्राप्तेमांस्मरेद्रामसेवकम्,

यो रामं संस्मरेन्नित्यं..

रामर. ४।११

ऐश्वरं पुरुषोत्तम

भ. गी. ११।३

ऐश्वर्यं यस्य पूजनात्

रा. पू. १।५

ऐं त्रिपुरादेव्यै च विद्यहे क्लीं कामे-

श्वर्यै च धीमहि । सौः तन्नः शक्तिः

प्रचोदयात्

वनदु. १४८

ऐं वद वद वाग्वादिनि ह्रस्वैः छिमे

छेदिनि महाक्षोभं कुरु

वज्रप. १

ऐं वागीश्वरि विद्यहे क्लीं कामेश्वरि

धीमहि । सौः तन्नः शक्तिः

प्रयोदयात्

त्रि. ता. ४।६

ओ

(एवं) ओङ्कार आत्मैव, संविश-

त्यात्मनाऽऽत्मानं य एवं वेद

माण्डू. १२

ओङ्कार एवेदं सर्वम्

छां. उ. २।२३।४

ओङ्कारमात्रमखिलं विश्वप्राज्ञा-

विलक्षणम् । वाच्यवाचकता-

मेदाभेदेनानुपलक्षितः..

अक्षयुष. ४६

ओङ्कारं पादशो ज्ञात्वा न

किञ्चिदपि चिन्तयेत्

आगम. २४

ओङ्कारं पादशो विद्यात्पादा मात्रा न

संशयः । .. न किञ्चिदपि चिन्तयेत्

आगम. २

ओङ्कारं यो न जानाति ब्राह्मणो

न भवेत्तु सः

व्या. वि. १४

ओङ्कारं स्रग्धरं द्वादशान्ते सप्तात्मानं
चतुरात्मानं चतुस्सप्तात्मानं.. नृसिंहो. ३।४
ओङ्कारात्परतोरामवैखानसपर्वतः,
तत्पर्वते.. बहुशाखा भवन्ति.. सीतो. ११
ओङ्कारात् सावित्री, सावित्र्या
गायत्री, गायत्र्या लोका
भवन्ति [अ. शि. ३।१५ +बहुको. २७
ओङ्कारार्थस्वरूपोऽस्मि.. नाहमस्मि
न सोऽस्म्यहम् ते. बि. ३।४३
ओङ्कारेण सर्वा वाक्सन्तृणा
ओङ्कारेणान्सरितयेजपन्ति गोविदस्य
पञ्चपदं मनुम् । तेषामसौ
दर्शयेदात्मरूपं तस्मा-
न्मुमुक्षुरभ्यसेन्नित्यशान्त्यै गो. पू. ३।६
ओङ्कारे परे ब्रह्मणि पर्यवसितो
भवेत्स आत्मन्येवात्मानं
परं ब्रह्म पश्यति नृसिंहो. ६।३
ओङ्कारोच्चारणप्रातश्चन्दस्तत्त्वानु-
भावनात् । मुष्णुमे संविदा ज्ञाते
प्राणस्पन्दो निरुध्यते शाण्डि. १।७।२९
ओङ्कारोऽधिमात्रं पादा मात्रा
मात्राश्च अकार... माण्डू. ८
ओङ्कारोविदितोयेनसमुनिर्नेतरोजनः आगम. २९
(?) ओजश्च महश्चेत्युपासीत छां. उ. ३।१३।५
ओजः सखायोऽसीन्द्रस्य आरुणि. ३
ओजस्तेजो बलं दाक्ष्यं लक्ष्म्यु. ३
ओजस्विमहस्वान्भवति यएवंवेद छान्दो. ३।१३।५
ओजोऽसि सहोऽसि बलमसि
आजोऽसि देवानांधामनामाऽसि महाना. ११।६
ओङ्क्याणमुदरे बन्धस्तत्र बन्धो
विधीयते । बध्नाति हि शिरोजातं.. यो. चू. ४९
ओङ्क्याणं (ओङ्क्याणं) कुरुतेयस्मात् यो. चू. ४८
ओतश्च प्रोतश्च ओङ्कारः नृसिंहो. ८
ओतश्च प्रोतश्च ह्यमात्मा नृसिंहः नृसिंहो. ८।१
ओतमोतेनजानीयादनुज्ञातारमांतरम् नृसिंहो. ९।११
ओतं प्रोतमसन्मयम् ते. बि. ३।५४

ओतानुज्ञाप्रनुज्ञाविकल्परूपं
चिन्तयन् प्रसेत् नृसिंहो. ३।३
(?) ओतानुज्ञाप्रनुज्ञाविकल्पैश्चयमपि नृसिंहो. १।५
ओ ३ मदामो ३ पिबा ३ मों देवो
वरुणः प्रजापतिः सविता २.. छान्दो. १।१२।५
ओमिति प्रतिपद्यन्ते शौनको. १।५
ओमितिप्रयुक्तआत्मज्योतिःसकृदावर्तते १ अ. शिखो. १
ओमिति ब्रह्म [तैत्ति. १।८।१+ ना. प. ८।२
ओमिति ब्रह्म भवति तारसारो. १।४
ओमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह
ब्रह्मोपाप्नवानीति तैत्ति. १।८।१
ओमिति ब्रह्मा प्रसौति तैत्ति. १।८।१
ओमिति शः सति, ओमित्युद्गायति छान्दो. १।१।९
ओमिति सत्यम् १ ऐत. ३।६।४
ओमिति संहर्त्रानुसंदध्यात् नृसिंहो. ४।१
ओमिति सामानि गायन्ति तैत्ति. १।८।१
ओमिति ह्युद्गायति तस्योप-
व्याख्यानम् [छान्दो. १।१।१ +१।४।१
ओमिति ह्येवानुजानाति नृसिंहो. ८।५
ओमिति ह्येष स्वरमेति छांदो. १।५।१, ३
ओमितीदं सर्वम् तैत्ति. १।८।१
ओमित्यग्निहोत्रमनुजानाति तैत्ति. १।८।१
ओमित्यक्षरं, तत्परमित्यक्षरं
गुह्यं, तत्परमं पवित्रम् सन्ध्यो. २०
ओमित्यग्रे व्याहरेत् । [नारा. ३+ भस्मजा. २।३
ओमित्यर्ध्वयुः प्रतिगरं प्रतिगृणाति तैत्ति. १।८।१
ओमित्यनेनोद्धृत्यानामयेऽमौजुहोति मैत्रा. ६।२६
ओमित्यनेनोर्ध्वमुत्क्रान्तः
स्वातन्त्र्यं लभते मैत्रा. ६।२२
ओमित्यभिनिधापयन्ति शौनको. १।५
ओमित्यस्याददते शौनको. १।५
ओमित्यात्मानं युञ्जीत महाना. १।७।१५
ओमित्याभावयति छान्दो. १।१।९
ओमित्युद्गायति [छान्दो. १।१।१+ १।४।१+ १।१।९
ओमित्येकाक्षरमन्तःप्रणवं विद्धि ना. प. ८।२
ओमित्येकाक्षरमात्मस्वरूपम् तारसा. १।३

ओमित्येकाक्षरमिदं सर्वम्

तस्योपन्याख्यानम्

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म

[महाना. ११।५+सूर्यो. ९+

भ.गी. ८।१३

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म ध्येयम्

(१) ओमित्येकेन रेचयेत् (पाठः)

ओमित्येतदक्षरमादौ प्रयुक्तं ध्यानं

ध्यायितव्यम्

ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योप-

न्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति

सर्वमोद्धार एव[मां. १; नृ.पू. ४।२;

ओमित्येतदक्षरमुद्रीथमुपासीत[छां. व.

ओमित्येतदक्षरमुद्रीथः

ओमित्येतदक्षरमुपासीत [छां. व.

ओमित्येतदक्षरस्य चैतत्

ओमित्येतदक्षरं परं ब्रह्म, अस्य पादाः..

ओमित्येतदक्षरं परं ब्रह्म, तदेवो-

पासितव्यम्

ओमित्येतदनुकृतिर्ह स्म. (मा. पा.)

ओमित्येतदनुकृतिर्ह स्म वा अंय्यो-

आवयेत्याश्रावयन्ति

ओमित्येतेन रेचयेत्; दिव्यमन्त्रेण

बहुधा कुर्यादामलमुक्तये

ओमित्येव तदा हैषा एव समृद्धिर्यः..

ओमित्येवं ध्यायथ (मा. पा.)

रामो. २।१

अ. ना. २१

ब्र. वि. २+

१ प्रणवो. २

ध्या. बिं. ९

अमृता. २१

अ. शिखो. १

नृसिंहो. १।२;

१।१।१+४।१;

छां. व. १।१।५

१।१।१+१।४।१

मैत्रा. ६।४

अ. शिखो. १

तारंसा. २।१

तैत्ति. १।८।१

तैत्ति. १।८।१

अ. ना. २१

छान्दो. १।१।८

मुण्डको. २।२।६

ओमित्येव यदुद्भूतं ज्ञानं ज्ञेयात्मकं

शिवम् ।.. प्राणस्पदो निरुध्यते

ओमित्येवं ध्यायथ आत्मानं,

स्वस्ति वः

ओमित्येवं ध्यायंस्तथाऽऽत्मानं

युञ्जीत

ओमीमोनमोभगवते श्रीमहा.. हुंफद्..

ओमी सचरति सचरति... वज्रेण स्वाहा गारुडो. १२

ओमो वाचि प्रतिष्ठा सैव पुरत्रयं

शरीरत्रयं व्याप्य... महात्रिपुर-

सुन्दरी वै प्रत्यक् चितिः

(१) ओषधयः पृथिन्याम्

ओषधयो बर्हिषा, अदितिर्वेद्या

ओषधयश्च वनस्पतयश्च लोमानि

ओषधिभ्योऽन्नम् (जायते) [तै. व. २।१; भा. सो. २।४

ओषधिवनस्पतयो लोमानि भूत्वा

त्वचं प्राविशन्

ओषधिवनस्पतिभिरन्नं भवति

ओषधिवनस्पतिषु हि रसो दृश्यते,

चित्तंप्राणभृत्सु.. त्वेवाविस्तरामात्मा

ओषधिवनस्पतीन् हि प्राणभृताऽदन्ति

ओषधीनां पुरुषो रसः

ओषधीनां पुष्पाणि (रसः)

ओषधीनां रेतोऽन्नम्

ओषधीर्लोमानि (अपियन्ति)

ओष्ठापिधानानकुलीदन्तैः परिवृता

पविः । सेवेत्यैवावईक्षानां चारु

मामिह वादयेत्-इति च वाग्रसः

शांदि. १।७।३४

मुण्ड. २।२।६

मैत्रा. ६।३

गारुडो. १०

गारुडो. १२

बृह. २

मुण्ड. २।१।५

चित्यु. ८।१

बृह. १।१।१

भा. सो. २।४

२ ऐत. २।५

महाना. १।७।३३

१ ऐत. ३।२।२

१ ऐत. ३।१।३

छान्दो. १।१।२

बृह. ६।४।१

१ ऐत. १।३।१

बृह. ३।२।१३

हवर्गो. ८

ओ

औदीसीम्यामृतौघेन वर्धमानेन

योगिनः । उन्मीलितमनोमूलो

जगद्भूतः पतिष्यति

औदुम्बरः सुव औदुम्बरश्चमस

औदुम्बर इधम औदुम्बर्या

उपमन्थन्यौ दशप्राभ्याणि

धान्यानि भवन्ति

औदुम्बरे कसे चमसे वा सर्वौषधं

फलानीति सम्भृत्य

ओषधयश्च कस्वमात्मानमुपास्ते-इति

अमन. २।५७

बृह. ६।३।१३

बृह. ६।३।१

छांदो. ५।१२।१

औषधसमुत्पन्नं (भस्मं) गृहस्थानां

विशेषतः । समिदग्निसमुत्पन्नं धार्य

वै ब्रह्मचारिणा ।

औषधवत्प्राभीयात् (अयाचितानादि)

औषधवदंशनमाचरेत् [आह. २+

औषधवदंशनप्राभीयाद्यथालाभमभीयात्

औषधहन् शिङ्गीनिकोशाभ्याम्

औष्ठापिधानां नकुलीदन्तैः

परिवृता पविः

बृ. जा. ५।४

कठश्रु. ६

१ सं. सी. १।२

आह. ३

चित्यु. २।१।१

३ ऐत. २।५।४

क

क ईदं कस्मा अदात्कामः कामय..	चित्त्यु.१०।१,१
[तै. आ. ३।१०।१,४ +अथर्व.	३।२९।७
क इन्द्रः कः शमनः कः सूर्यः	निरा. ४
क ईश्वरः, को जीवः	निरा. ४
क उपास्यः, कः शिष्यः, कः	
सज्यासी	निरा. ४
क एतान्बुद्धयते मेदान् को वै तेषां	
विकल्पकः । यस्यात्मनात्मानं..	वैतथ्य. ११
ककारादित्वात्कीलिता	कामराज. १
कक्षोपस्थलोमानि (तत्रस्थान्केशान्)	
वर्जयेत्	कुंडिको. ९
कक्षोपस्थवर्जं क्षौरपूर्वकं क्त्वा	ना. प. ४।४०
कश्चिदज्ञानसम्मोहः	भ. गी. १८।७२
कश्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ	भ. गी. १८।७२
कश्चिन्नोभयविभ्रष्टः	भ. गी. ६।३८
कटिस्रश्चकौपीनं दण्डं वस्त्रं कमण्डलुं,	
... सर्वमप्यु विसृज्य	ना. प. ३।८७
कटौ चित्तसंयमात्तलातललोकज्ञानं	शांडि. १।७।५२
कटुमूलवणं तिक्तममृष्टं मृष्टमेव च ।	
सममेव च यो भुंक्ते सजीवन्मुक्तः...	महो. २।५४
कटुमूलवणात्युष्ण-तीक्ष्ण-सूक्ष्म-	
विदाहिनः	भ. गी. १७।९
कठवल्ली-तैत्तिरीयक-ब्रह्म-कैवल्य-	
श्वेताश्वतर-गर्भ-नारायणामृत-	
बिन्दुमृतनाद-कालामिरुद्र-क्षुरि-	
कासर्वसार-शुकरहस्य-तेजोबिन्दु-	
ध्यानबिन्दु-ब्रह्मविद्या-योगतत्त्व-	
दक्षिणामूर्ति-स्कन्द-शारीरक-	
योगशिखेकाक्षराक्षयवधूत-कठरुद्र-	
हृदय-योगकुण्डलिनी-पञ्चब्रह्म-	
प्राणामिहोत्र-वराह-कलिसन्तरण-	
सरस्वतीरहस्यानां कृष्णयजुर्वेद-	
गतानां द्वात्रिंशत्सङ्ख्याकानामुप-	
निषदां सह नाववत्विति शान्तिः	मुक्तिको. १।५५
कण्ठकूपे (चित्तसंयमात्)	
क्षुत्पिपासानिवृत्तिः	शांडि. १।७।५२
कण्ठकूपे विशुद्धाख्यं यक्षकं..	
तिष्ठत्यत्र चतुर्मुखः	यो. शि. ५।१०

कण्ठकूपे विशुद्धाख्यं, यक्षकं..	
तिष्ठत्यत्र सुरेश्वरः	यो. शि. १।१७४
कण्ठकूपोद्भवा नाडी शंखिन्याख्या..	
अन्नसारं समादायमूर्धिसंचिनुते..	यो. शि. ५।२५
कण्ठचक्रं चतुरङ्गलं तत्रवाभे इडाचन्द्र-	
नाडी.. तन्मध्येसुषुम्ना..ध्यायेत्	सौभाग्य. २८
कण्ठं तु निर्गुणं प्रोक्तं	गोपालो. २।३२
कण्ठं सङ्कुच्यनाड्यादौ स्तम्भितेयेन..	भ. वि. ७२
कण्ठं संकोचयेत्किञ्चिद्ब्रह्मोजालन्धरो	
हृदयम् । बन्धयेत्स्वेचरीं मुद्रां..	यो. शि. ५।३९
कण्ठादुपरि मूर्धान्तं शाम्भवं स्थान-	
मुच्यते । नाडीनामाश्रयः पिण्डः..	वराहो. ५।५३
कण्ठे चित्तसंयमाज्जनोलोकज्ञानम्	शांडि. १।७।५२
कण्ठे तुलसी शङ्खचक्रं गदा परंगतिः	
पुरुषोत्तमस्य (जीवोत्तमस्य-पाठः)	कृ. पु. सि. ३
कण्ठे संयमात् सोमलोकज्ञानम्	शांडि. १।७।५२
कण्ठे स्वप्नं समाविशत्	
सुषुप्तं हृदयस्थं तु तुरीयं...	ना. प. ५।१३
कण्ठोपरि कृतं पापं नष्टं स्यात्तत्र	
धारणात् (भस्मनः)	बृ. जा. ४।३४
कतम आदित्या इति, द्वादश वै	
मासाः संवत्सरस्यैत आदित्याः.	बृह. ३।९।५
कतम इन्द्रः कतमः प्रजापतिः ?	
स्तनयित्तुरेवेन्द्रो यज्ञः प्रजापतिः	बृह. ३।९।६
कतम एको देव इति प्राण इति ।	
स ब्रह्म तदित्याचक्षते	बृह. ३।९।९
कतमं वाव स तेन (ॐकारध्यानेन)	
लोकं जयतीति	प्रश्नो. ५।१
कतमः स्तनयित्तुरित्यशनिरिति	बृह. ३।९।६
कतमा कतमर्कतमत्कतमत्साम	
कतमः कतम उद्गीथ इति	
विस्तृष्टं भवति	छान्दो. १।१।४
कतमाकायासासत्येत्यमृतेतिवसिष्ठः	महाना. १।१४
कतमा सैकेति, मन एवेति	बृह. ३।१।९
कतमास्तास्तिस्र इति पुरोऽनुवाक्या	
च याज्या च शस्यैव तृतीया	बृह. ३।१।७

कतमास्तिस् इति या हुता उज्ज्वलन्ति,
 या हुता अतिनेदन्ते या हुता
 अधिशेरते किं ताभिर्जयतीति बृह. ३।१।८
 कतमे ते त्रयश्च त्री च शता त्रयश्च
 त्री च सहस्रेति बृह. ३।१।१
 कतमे ते त्रयस्त्रिंशत् ? अष्टौ वसव एका-
 दशरुद्रा द्वादशादित्यास्त एकत्रिं-
 शत् इन्द्रश्च प्रजापतिश्च ... बृह. ३।१।२
 कतमे ते त्रयो देवाः ? इतीम एव त्रयो
 लोकाः बृह. ३।१।८
 कतमे रुद्रा इति, दशमे पुरुषे प्राणा
 आत्मैकादशः बृह. ३।१।४
 कतमे वसव इत्यग्निश्च पृथिवी च
 वायुश्चान्तरिक्षं चादित्यश्च यौश्च
 चन्द्रमा च नक्षत्राणि चैते वसवः बृह. ३।१।३
 कतमे षडिति-अग्निश्च पृथिवी च
 वायुश्चान्तरिक्षं चादित्यश्च
 यौश्चैते षट् बृह. ३।१।७
 कतमोऽप्यर्थ इति योऽयं पवत इति बृह. ३।१।८
 कतमो यज्ञ इति पशव इति बृह. ३।१।६
 कतमो याज्ञवल्क्य सर्वान्तरः बृह. ३।४।१, २
 कतमौ तौ द्वौ देवौ, अन्नं चैव प्राणश्च बृह. ३।१।८
 कतर एतत्प्रकाशयन्ते कः पुनरेषां
 वरिष्ठ इति प्रश्नो. २।१
 कतरः स आत्मा येन वा पश्यति
 येन वा शृणोति .. येन वा
 स्वादु चास्वादु च विजानाति २ ऐत. ५।१
 कति ग्रहाः कत्यतिग्रहा इत्यष्टौ ग्रहा
 अष्टावतिग्रहा इति बृह. ३।२।१
 कतिधाऽवकीर्णी प्रविशति
 चतुर्धेत्याहुर्ब्रह्मवादिनः सहवै. २२
 कतिधा व्यकल्पयन् [वा.सं. ३।१।१० ऋक्सं. ८।४।१९
 [=मं. १०।९०।११ + चित्त्यु. १२।५
 कतिभिरयमद्य ब्रह्मा यज्ञं दक्षिणतो
 देवताभिर्गोपायतीति, एकयेति बृह. ३।१।९
 कतिभिरयमद्यर्भिर्होताऽस्मिन्यज्ञे
 करिष्यन्तीति, तिसृभिरिति बृह. ३।१।७
 कतिमात्र इत्यादेस्तिस्त्रो मात्रा
 अभ्याधाने हिंप्सवते २ प्रणवो. १६

कत्ययमद्याध्वर्युरस्मिन्यज्ञ आहुती-
 होष्यतीति तिस्र इति बृह. ३।१।८
 कत्ययमद्योद्गाताऽस्मिन्यज्ञे स्तोत्रियाः
 स्तोप्यन्तीति, तिस्र इति बृह. ३।१।१०
 कथमनेनेदशेनानिच्छेनैताद्विधमिदं
 चेतनवत्प्रतिष्ठापितम् मैत्रा. २।४
 कथमशकतमदृतेजीवितुं [बृह. ६।१।८, ९, १०, ११, १२;
 कथमसतः सज्जायेतेति, सत्त्वेवसोम्येद-
 मप्रभासीदेकमेवाद्वितीयम् छां. ७. ६।२।२
 कथमायात्यस्मिञ्छरीरे (प्राणः)
 आत्मानं वा प्रविभज्य कथं प्रातिष्ठेत् प्रश्नो. ३।१
 कथमेतद्विजानीयां भ. गी. ४।४
 कथयन्तश्च मां नित्यं भ. गी. १०।९
 कथयिष्यन्ति तेऽन्ययाम् भ. गी. २।३४
 कथं ध्यानं कथं न्यासः कथं पूजा-
 विधानकम्.. ब्रवीतु भगवानिदम सूर्यता. २।१
 कथं न ज्ञेयमस्माभिः भ. गी. १।९
 कथं नुतद्विजानीयां किमुभातिविभाति कठो. ५।१४
 कथं नु भगवन् गां पर्यटन्कलिं सन्तरेयं हरिनामो. १
 कथं नु भगवः स आदेशो भवतीति छान्दो. ६।१।३
 कथं नु माऽऽत्मान एव ध्वनयित्वा
 सम्भवति हन्त तिरोऽसानीति बृह. १।४।४
 कथं न्विदं मदृते स्यादिति २ ऐत. ३।११
 कथं बन्धः कथं मोक्षः
 का विद्या काऽविद्येति सर्वसारो. १
 कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये भ. गी. २।४
 कथं यास्यामो जलं तीर्त्वा यमुनायाः गोपालो. १।१
 कथं वा धार्यते नरैः (रुद्राक्षाः) रु. जा. ७. १
 कथं वाऽस्यावतारस्य ब्रह्मता भवति गोपालो. १।१५
 कथं विद्यामहं योगिन् भ. गी. १०।१७
 कथं संन्यस्तो भवति(यः) आत्मानं
 क्रियाभिर्गुप्तं करोति कठश्रु. २
 कथं स पुरुषः पार्थ भ. गी. २।२१
 (अथ) कथं हस्तीभूतो बहसीति मुख.
 ह्यस्याः सम्राण्ण विदाञ्चकारेति बृह. ५।१।४।८
 कथं कविं कल्पकं काममीशं
 तुष्टवांसो अमृतत्वं भजन्ते त्रिपुरो. ९
 कदम्बगोलकाकारं .. अनन्त-
 मानन्दमयं .. ध्यायतो योगि-
 नस्तस्य मुक्तिः करतले स्थिता त्रि. प्रा. २।५७

कदलीगर्भे इवासारं नटइव क्षणवेधं
चित्रभित्तिरिव मिथ्यामनोरमम् मैत्रा. ४।२
कदलीव महामाया समनस्केन्द्र-
यच्छिदा । अमनस्कं फलं श्रुत्वा
सर्वथैव विनश्यति अमन. २।८३
(अथ) कदाचित् परिव्राजकाभरणो
नारदः .. शान्तो दान्तः सर्वतो
निर्वेदमासाद्य .. ना. प. १।१
कदाचित्स्वेच्छया देवो भूत्वा स्वर्गे
महीयते । मनुष्यो वाऽपि यक्षो वा..
स्वेच्छया बहुतामियात् १यो. त. १०९
कदा तार्ण करिष्यन्ति कुलायं
वनपुत्रिकाः । सङ्कल्पपादपं..
छित्त्वा.. विहरामि.. यथासुखं १सं. सो. २।५४
कदाऽन्तस्तोषमेध्यामि स्वप्रकाशपदे
स्थितः । कदोपशान्तमननः.. १सं. सो. २।५२
कद्रुद्राय प्रचेतसे [ऋ. अ. १।३।२६=
[+ तै. आ. १०।१७।१+ मं. १।४३।१
कद्रुद्राय प्रचेतसे मीदुष्टमाय... महाना. १०।१२
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. ३१
कनिष्ठिकाङ्गुल्याङ्गुष्ठेन च प्राणे जुहोति प्रा. हो. १।११
कनीयसि भवेत्खेदः कम्पो भवति
मध्यमे । उत्तिष्ठत्युत्तमे प्राणरोधे
पद्मासनं महत् शाण्डि. १।७।३
कन्दमध्ये स्थिता नाडी सुषुम्णेति
प्रकीर्तिता । तिष्ठन्ति परित-
स्तस्या नाडयो.. जा. द. ४।६
कन्दमध्येऽलम्बुसा भवति शाण्डि. १।४।६
कन्दर्पस्य यथारूपं तथास्यादपियोगिनः १यो. त. ६०
कन्दस्थानं मनुष्याणां देहमध्यं
नवाङ्गुलम् त्रि. ब्रा. २।५८
कन्दस्थानं निभेषमूलाधारं (रात्र-)
नवाङ्गुलम् । चतुरङ्गुलमायातं.. जा. द. ४।३०
कन्दुका इव हस्तैः मृत्युनाऽविरतं
हताः (जीवाः) महो. ५।१४३
कन्दोर्ध्वे कुण्डलीशक्तिर्मुक्तिरूपा
हि योगिनाम् यो. शि. ६।५५
कन्दोर्ध्वकुण्डलीशक्तिः स योगी
सिद्धिभाजनम् ध्या. बि. ७३

कन्दोर्ध्वे कुण्डलीशक्तिरष्टधा
कुण्डलाकृतिः यो. चू. ३६, ४४
कन्यागते यदा सूर्ये ति न्तिपितरोगृहे इतिहा. ८८
कपर्दिनं शिवं शान्तं भक्तानामभय-
प्रदम् । सिद्धिबुद्धयुभयाश्रितं .. ग. पू. २।५
कपालकुहरे जिह्वा प्रविष्टा विपरी-
तगा । भ्रुवोरन्तर्गता दृष्टिर्मुद्रा
भवति खेचरी [यो. चू. ५२+ ध्या. बि. ७९
कपालकुहरेमध्ये चतुर्द्वारस्य मध्यमे ।
तदात्मा राजते तत्र .. ध्या. बि. १०३
कपालचर्मन्त्रास्थिमांसनखानि
पृथिव्यंशाः पैङ्गलो. २।२
कपालविहरे जिह्वा प्रविष्टा विपरी-
तगा.. मुद्रा भवति खेचरी यो. शि. ५।४०
कपालशोधने वापि रेचयेत्पवनं शनैः ।
.. कृमिदोषं निहन्ति च योगकुं. १.२५
कपालसम्पुटं पीत्वा ततः पश्यन्ति
तत्पदम् । यो. शि. १।७६
कपालवृक्षमूलानि कुचेला न्यसहायता ।
समता चैव सर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्य लक्षणं ना. प. ३।५४
कपिलाक्षं गरुत्मन्तं सुवर्णसदृश-
प्रभम् ... (गरुडं ध्यायेत्) गारुडो. ५
कपिलागोर्भस्मोक्तम् । लब्धगोभस्म
नोचेदन्यगोक्षारं .. नहि धार्यम् बृ. जा. ३।१
कपिला वा धवला वाऽलाभे तदन्या
गौः स्यादोषवर्जिता बृ. जा. ३।१
कपिशा वा श्वेतजा वा धूम्रवर्णा
वा (विभूतिः) रुद्रोप. १
कफारादिविदितत्वात्कीलिता (पा.) कामरा. १
कमलाष्टपणेषु दण्ड एषः सूर्यता. ६।१
कमलेक्षणाय नमः, विश्वरूपाय
आदित्याय नमः चाक्षुषो. ५
कम्पनं मध्यमं विद्यात् (प्राणायामे) जा. द. ६।१४
कम्पनं वपुषो यस्य प्राणायामेषु
मध्यमः त्रि. ब्रा. २।१०५
कम्पो भवति मध्यमे (प्राणायामे) यो. चू. १०५
कम्बर एनमेतत्सन्तः सयुगवानमिव
रैकमात्थ .. छान्दो. ४।१.३
कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरण-
भूषिता सरस्व. २८

कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृषः

सखा [वनदु. ३४+ऋक्सं. अ.

[मं. ४।३१।१+वा. सं. २७।३९

[तै. आ. ४।४२।३+

[अथर्व.

३।६।२४=

तै.सं. ४।२।११।२

सा. वे. १।१।६९

२०।१२४।१

करणं कर्म कर्तेति

करणं च पृथग्विधम्

करणानि समाहृत्य

करणान्यश्वाः, शिरानद्वयः

करणी विपरीताख्या..

जाठरान्निविधनी

करणोपरमे जाग्रत्संस्कारोत्थ-

प्रबोधवत् .. स्वभावस्था..

करतलामलकवद्वाक्यमप्रति-

बद्धापरोक्षसाक्षात्कारं प्रसूयते

करतलामलकवत्साक्षा-

दपरोक्षीकृत्य (आत्मानम्)..

करपात्रमाधूकरेणाजमभन्..

करपात्रेण वा कमण्डलूदकपो

भैक्षमाचरन्..

करामलकवद्बोधमपरोक्षं प्रसूयते

करिष्यस्यवशोऽपि सन्

करिष्ये वचनं तव

करुणैव केलिः

करे कङ्कणं बाहौ केयूरं पादयोः..

पीताम्बरं धारयन्..

करैर्यजमानस्याऽऽत्मविदेऽव-

दानं करोति

करैर्यजमानं दिवमुत्क्षिप्त्वेन्द्राय

प्रायच्छत्

कर्कशाः कठिना भक्ष्या जीर्यन्ते

यत्र भक्षिताः

कर्णधारं गुरुं प्राप्य कृत्वा

सूक्ष्मं तरन्ति च

कर्णधारं गुरुं प्राप्य

तद्वाक्यं प्रववद्दम्

कर्णयोः श्रुतं माच्योद्धममामुष्यजोम

कर्णसङ्कोचनं कृत्वा..

भ.गी. १८।१८

भ.गी. १८।१४

त्रि. ब्रा. १२२

छाग. ६।२

१यो.त. १२२, २३

पैङ्गलो. २।७

पैङ्गलो. ३।३

व. सू. ९

प. हं. प. ७

याज्ञव. ३

अध्यात्मो. ४०

भ. गी. १८।६

भ. गी. १८।७३

निर्वाणो. १

राधोप. ३।१

मैत्रा. ६।३३

मैत्रा. ६।३३

शिवो. ७।१०७

योगकुं. ३।१७

यो. शि. ६।७९

महाना. ७।७

ध्या.विं. १०१

कर्णं तथाऽन्यानपि योषवीरान्

कर्णाभ्यां भूरि विभवं

कर्णाभ्यांभूरिविश्रुवम् [तै.आ. ७।४।१+

कर्णाभ्यां ओत्रं.. (निरभिद्यत)

कर्णौ निरभिद्येताम्

कर्तव्यमकर्तव्यमिति भावनायुक्त

सपचारः

कर्तव्यानीति मे पार्थ

कर्तव्यं नैव तस्यास्ति कृतेनासौ

न लिप्यते (योगी)

कर्तव्यः कुम्भको नित्यं

कर्ता जीवः पञ्चवर्गः क्षेत्रज्ञः साक्षी

कूटस्थोऽन्तर्यामी कथम्

कर्ता बहिरकर्ताऽन्तः

कर्ता नास्ति क्रिया नास्ति

कर्ता भवति विज्ञाता भवति

कर्ता तामस उच्यते

कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिस्

कर्तारं विद्यात्

कर्ता वक्ता रसयिता घ्राता

स्पर्शयिता च (आत्मा)

कर्ता सन्निधिमात्रतः ,,

कर्ता सर्वस्य विश्वस्य पाता

संहारको भवान्

कर्ता सात्त्विक उच्यते

कर्ताऽहमिति मन्यते

कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्

कर्तुं मद्योगमाश्रितः

कर्तुं व्यवसिता वयम्

(अकर्मैतिच)कर्तृत्वभोक्तृत्वाद्यहङ्कार-

तयाबन्धरूपंजन्मादिकारणं नित्य-

नैमित्तिक-याग-व्रत-तपोदानादिषु

फलाभिसन्धानं यत्तदकर्म

कर्तृत्वभोक्तृत्वाहङ्कारादिभिः स्पृष्टो

जीवः, जीवेतरो न स्पृष्टः

कर्तृत्वादिदुःखनिवृत्तिद्वारा

नित्यानन्दावाप्तिः प्रयोजनं भवति

[मूढ इति च] कर्तृत्वाद्यहङ्कार-

भावोरुढो मूढः

भ.गी. ११।३४

ना.प. ४।४५

तै.व. १।४।१

२पेत्. १।४

२पेत्. १।४

भावना. ७

भ. गी. १८।६

यो. शि. १।४७

योगकुं. १।५५

सर्वसारो. १

महो. ६।६८

ते. वि. ५।३३

छान्दो. ७।९।१

भ. गी. १८।१८

मुण्ड. ३।१।३

कौ. व. ३।८

मैत्रा. ६।७

महो. ४।१४

ग.शो. ३।७

भ.गी. १८।२६

भ.गी. ३।२७

भ. गी. १८।६०

भ. गी. १८।११

भ.गी. १।४५

निरा.व. १४

ना.प. ६।७

मुक्तिको. २।१

निरा.व. २६

कर्तृत्वाद्यहङ्कारसङ्कल्पो बन्धः निरा.उ. २१
 कर्तृमेवं क्रियाभेदं...असदेव ते. वि. ६।५४
 सदा सुखम् कर्ममेनप्रजाभूतामयि[क्र.खि.८७।१० श्री.सू. ११
 कर्पूरमनले यद्वत् सैन्धवं सलिले यथा । शां. १।७।२१
 तथा..मनस्तत्त्वे विलीयते कर्पूरे लीयमाने किं काठिन्यं यो.शि. १।१४९
 तत्र विद्यते । अहंकारलये तद्वत्.. भ.गी. १६।२४
 कर्म कर्तुमिहार्हसि कर्मकाण्डोपासका रसिकानन्द-
 मार्गं न जानन्ति सामर. २७
 कर्म कारणमुच्यते भ.गी. ६।३
 कर्मक्षये याति स तत्त्वतोऽन्यः श्रेता. ६।४
 कर्म चैव तदर्थीयं भ.गी. १७।२७
 कर्मजज्ञानां कर्मसम्भूतवासना-
 जडात्मकं भवति सामर. १०१
 कर्म जन्मान्तरीयं यत्प्रारब्धमिति
 कीर्तितम् ना.वि. २३
 कर्मजं बुद्धियुक्ता हि भ.गी. २।५१
 कर्मज्ञानं विद्धि तान् सर्वान् भ.गी. ४।३२
 कर्म कथायो ह्यकर्मणः भ.गी. ३।८
 कर्मज्ञानेन्द्रियविषयेषु प्राणतन्मात्र-
 विषया अन्तर्भूताः त्रि. ब्रा. १।४
 कर्मणः सुकृतस्याहुः भ.गी. १४।१६
 कर्मणाऽनुरूपफलमनुभूय तस्यसङ्ख्ये
 पुत्तरिमं लोकं प्रतिपद्यते निरुक्तो. २।२
 कर्मणाऽन्योन्यं जायत इति निरुक्तो. २।१
 कर्मणा पितृलोको विद्यया देवलोकः,
 देवलोको वै लोकानां श्रेष्ठस्तस्मा-
 द्विधां प्रशंसति बृह. १।५।१६
 कर्मणा मनसा वाचा संस्मरेत्
 प्रजपेत्सुधीः ना.पू.ता. ४।१५
 (अथ) कर्मणामात्मेत्येतद्देशा मुक्थम् बृह. १।६।३
 कर्मणा बध्यते जन्तुर्विद्यया
 च विमुच्यते १सं. सो. २।२८
 कर्मणा वर्तते कर्मी तस्यागा-
 च्छान्तिमाप्नुयात् त्रि. ब्रा. २।१५
 कर्मणा स्वेन पाल्यते शिवो. ७।१०८
 कर्मणामशमः स्पृहा भ.गी. १४।१२

कर्मणामसमारम्भः कृतानां
 च परिक्षयः आयुर्वे. १७
 कर्मणां संकल्प्यै लोकः सङ्कल्पते छान्दो. ७।४।२
 कर्मणैव हि संसिद्धिः भ.गी. ३।२०
 कर्मणो नोपपद्यते भ.गी. १८।७
 कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं भ.गी. ४।१७
 कर्मण्यकर्म यः पश्येत् भ.गी. ४।१८
 कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि भ.गी. ४।२०
 कर्मण्यधिकृता ये तु..तेभिर्भार्यमिदं
 सूत्रं [परब्र.१५+ ब्रह्मो.१३ +ना. प. ३।८५
 कर्मण्येवाधिकारस्ते भ.गी. २।४७
 कर्म तपो ब्रह्म परामृतं मुंड. २।१।१०
 कर्मतरः कर्मकवत्फलमनुभवति परब्र. १
 कर्मत्यागाच्च सङ्ग्यासो न प्रेषोच्चारणे-
 न तु । सन्धौ जीवात्मनोरैक्यं मैत्रे. २।१७
 सङ्ग्यासः परिकीर्तितः
 कर्मदायादसम्बन्धादुपकारःपर-
 स्परम्, दृश्यते नापकारश्च शिवो. ७।११२
 मोहेनात्मनि मन्यते निर्वाणो. ६
 कर्मनिर्मूलनं कन्धा छाग. ६।२
 कर्म प्रतोदो वाक्यं काणनम् भ.गी. १८।१५
 कर्म प्रारभते नरः भ.गी. १८।३
 कर्म प्राहुर्मनीषिणः भ.गी. २।३९
 कर्मबन्धं प्रहास्यसि भ.गी. ३।१५
 कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि
 (तर्हि) कर्म ब्राह्मण इति चेत्,तन्न,
 सर्वेषां प्राणिनां प्रारब्धसञ्चि-
 तागामिकर्म साधर्म्यदर्शनात् व.सू. ७
 कर्मभिर्न स बद्धयते भ.गी. ४।१४
 कर्मभिर्यद्वैतज्ञ कुर्यात् क्षीयेत् इ
 सोऽज्ञमति प्रतीकेन.. बृह. १।५।२
 कर्ममर्मज्ञाता कर्म करोति परब्र. १
 कर्म मर्म ज्ञात्वा कर्म कुर्यात् परब्र. १
 कर्मयोगिन चापरे भ.गी. १३।२५
 कर्मयोगेन योगिनाम् भ.गी. ३।३
 कर्मयोगो विशिष्यते भ.गी. ५।२
 कर्मयोगोऽहं, धर्मकर्माऽहम् अद्वै. भा. १
 कर्मसङ्गिषु जायते भ.गी. १४।१५
 कर्मसङ्गेन देहिनम् भ.गी. १४।७

कथा नश्चित्र आमुवदती सदावृधः

सखा [वनदु. ३४+ऋक्सं. अ. ३।६।२४=

[मं. ४।३१।१+वा. सं. २७।३९ तै.सं. ४।२।११।२

[तै. आ. ४।४२।३+ सा. वे. १।१।६९

[अथर्व. २०।१२४।१

करणं कर्म कर्तेति

भ.गी. १८।१८

करणं च पृथग्विधम्

भ.गी. १८।१४

करणानि समाहृत्य

त्रि. आ. १२२

करणान्यश्वाः, शिरानद्वयः

छाग. ६।२

करणी विपरीताख्या..

जाठराग्निविवर्धनी

१यो.त. १२२, २३

करणोपरमे जाग्रत्संस्कारोत्थ-

प्रबोधवत् .. स्वप्नावस्था..

पैङ्गलो. २।७

करतलामलकवद्वाक्यमप्रति-

बद्धापरोक्षसाक्षात्कारं प्रसूयते

पैङ्गलो. ३।३

करतलामलकवत्साक्षा-

दपरोक्षीकृत्य (आत्मानम्)..

व. सू. ९

करपात्रमाधूकरेणाजमभन..

प. हं. प. ७

करपात्रेण वा कमण्डलुदकपो

मैक्षमाचरन्..

याज्ञव. ३

करामलकवद्बोधमपरोक्षं प्रसूयते

अध्यात्मो. ४०

करिष्यस्यवशोऽपि सन्

भ.गी. १८।६

करिष्ये वचनं तव

भ.गी. १८।७३

करुणैव केलिः

निर्वाणो. १

करे कङ्कणं बाहौ केयूरं पादयोः..

पीताम्बरं धारयन्..

राधोप. ३।१

करैर्यजमानस्याऽऽत्मविदेऽव-

दानं करोति

मैत्रा. ६।३३

करैर्यजमानं दिवमुत्क्षिप्त्वेन्द्राय

प्रायच्छत्

मैत्रा. ६।३३

कर्कशाः कठिना भक्ष्या जीर्यन्ते

यत्र भक्षिताः

शिवो. ७।१०७

कर्णधारं गुरुं प्राप्य कृत्वा

सूक्ष्मं तरन्ति च

योगकुं. ३।१७

कर्णधारं गुरुं प्राप्य

तद्वाक्यं प्लववद्दम्

यो. शि. ६।७९

कर्णयोः श्रुतं माच्योद्वंममामुष्यओम

कर्णसङ्कोचनं कृत्वा..

महाना. ७।७

ध्या.वि. १०१

कर्णं तथाऽन्यानपि योघवीरान्

भ.गी. ११।३४

कर्णाभ्यां भूरि विभवं

ना.प. ४।४५

कर्णाभ्यांभूरिविश्रुवम् [तै.आ. ७।४।१+ तै.व. १।४।१

२१८. १।४

कर्णाभ्यां ओत्रं.. (निरभिद्यत)

२१८. १।४

कर्णौ निरभिद्येताम्

२१८. १।४

कर्तव्यमकर्तव्यमिति भावनायुक्त

उपचारः

भावना. ७

कर्तव्यानीति मे पार्थ

भ.गी. १८।६

कर्तव्यं नैव तस्यास्ति कृतेनासौ

न लिप्यते (योगी)

यो. शि. १।४७

कर्तव्यः कुम्भको नित्यं

योगकुं. १।५५

कर्ता जीवः पञ्चवर्गः क्षेत्रज्ञः साक्षी

कूटस्थोऽन्तर्यामी कथम्

सर्वसारो. १

कर्ता बहिरकर्ताऽन्तः

महो. ६।६८

कर्ता नास्ति क्रिया नास्ति

ते. वि. ५।३३

कर्ता भवति विज्ञाता भवति

छान्दो. ७।९।१

कर्ता तामस उच्यते

भ.गी. १८।२८

कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिस्

मुण्ड. ३।१।३

कर्तारं विद्यात्

को. व. ३।८

कर्ता वक्ता रसयिता घ्राता

स्पर्शयिता च (आत्मा)

मैत्रा. ६।७

कर्ता सन्निधिमात्रतः ..

महो. ४।१४

कर्ता सर्वस्य विश्वस्य पाता

संहारको भवान्

ग.शो. ३।७

कर्ता सात्त्विक उच्यते

भ.गी. १८।२६

कर्ताऽहमिति मन्यते

भ.गी. ३।२७

कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्

भ.गी. १८।६०

कर्तुं मद्योगमाश्रितः

भ.गी. १२।११

कर्तुं व्यवसिता वयम्

भ.गी. १।४५

(अकर्मैतिच)कर्तृत्वभोक्तृत्वाद्यहङ्कार-

तयावन्धरूपंजन्मादिकारणं नित्य-

नैमित्तिक-याग-व्रत-तपोदानादिषु

फलाभिसन्धानं यत्तदकर्म

निरा. व. १४

कर्तृत्वभोक्तृत्वाहङ्कारादिभिः स्पृष्टो

जीवः, जीवेतरो न स्पृष्टः

ना.प. ६।७

कर्तृत्वादिदुःखनिवृत्तिद्वारा

नित्यानन्दावाप्तिः प्रयोजनं भवति

मुक्तिको. २।१

[मूढ इति च] कर्तृत्वाद्यहङ्कार-

भावारूढो मूढः

निरा. व. २६

कर्तृत्वाद्यहङ्कारसङ्कल्पो बन्धः निरा.उ. २१
 कर्तृमेव क्रियामेव... असदेव
 सदा सुखम् ते. वि. ६।५४
 कर्ममेनप्रजाभूतामयि[क्र.खि.८७।१० भी.सू. ११
 कर्पूरमनले यद्वत् सैन्धवं सलिले यथा ।
 तथा..मनस्तस्वे विलीयते शां.डि. १।७।२१
 कर्पूरे लीयमाने किं काठिन्यं
 तत्र विद्यते । अहङ्कारलये तद्वत्. यो.शि. १।१४९
 कर्म कर्तुमिहार्हसि भ.गी. १६।२४
 कर्मकाण्डोपासका रसिकानन्द-
 मार्गं न जानन्ति सामर. २७
 कर्म कारणमुच्यते भ.गी. ६।३
 कर्मक्षये याति स तत्त्वतोऽन्यः श्रेता. ६।४
 कर्म चैव तदर्थीयं भ.गी. १७।२७
 कर्मजडानां कर्मसम्भूतवासना-
 जडात्मकं भवति सामर. १०१
 कर्म जन्मान्तरीयं यत्प्रारब्धमिति
 कीर्तितम् ना.वि. २३
 कर्मजं बुद्धियुक्ता हि भ.गी. २।५१
 कर्मज्ञानं विद्धि तान् सर्वान् भ.गी. ४।३२
 कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः भ.गी. ३।८
 कर्मज्ञानेभिर्बुधविषयेषु प्राणतन्मात्र-
 विषया अन्तर्भूताः त्रि. ब्रा. १।४
 कर्मणः सुकृतस्याहुः भ.गी. १४।१६
 कर्मणाऽनुरूपफलमनुभूय तस्यसङ्ख्ये
 पुत्तरिमं लोकं प्रतिपद्यते निरुक्तो. २।२
 कर्मणाऽन्योन्यं जायत इति निरुक्तो. २।१
 कर्मणा पितृलोको विद्यया देवलोकः,
 देवलोको वै लोकानां श्रेष्ठस्तस्मा-
 द्विधां प्रशंसति बृह. १।५।१६
 कर्मणा मनसा वाचा संस्मरेत्
 प्रजपेत्सुधीः ना.पू.ता. ४।१५
 (अथ) कर्मणामात्मेत्येतद्देशा मुक्थम् बृह. १।६।३
 कर्मणा बध्यते जन्तुर्विद्यया
 च विमुच्यते १सं. सो. २।२८
 कर्मणा वर्तते कर्मी तस्यागा-
 च्छान्तिमाप्नुयात् त्रि. ब्रा. २।१५
 कर्मणा स्वेन पाल्यते शिवो. ७।१०८
 कर्मणामशमः स्पृहा भ.गी. १४।१२

कर्मणामसमारम्भः कृतानां
 च परिक्षयः आयुर्वे. १७
 कर्मणां संस्तरण्यै लोकः सङ्कल्पते छान्दो. ७।४।२
 कर्मणैव हि संसिद्धिः भ.गी. ३।२०
 कर्मणो नोपपद्यते भ.गी. १८।७
 कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं भ.गी. ४।१७
 कर्मण्यकर्म यः पश्येत् भ.गी. ४।१८
 कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि भ.गी. ४।२०
 कर्मण्यधिकृता ये तु..तेभिर्भार्यमिव
 सूत्रं [परब्र.१५+ ब्रह्मो.१३ +ना. प. ३।८५
 कर्मण्येवाधिकारस्ते भ.गी. २।४७
 कर्म तपो ब्रह्म परामृतं मुंड. २।१।१०
 कर्मतरः कर्षकवत्फलमनुभवति परब्र. १
 कर्मत्यागात् सञ्जयासो न प्रेषोच्चारणे-
 न तु । सन्धौ जीवात्मनोरैक्यं मैत्रे. २।१७
 सञ्जयासः परिकीर्तितः
 कर्मदायादसम्बन्धादुपकारःपर-
 स्परम्, दृश्यते नापकारश्च
 मोहेनात्मनि मन्यते शिवो. ७।११२
 कर्मनिर्मूलनं कन्था निर्वाणो. ६
 कर्म प्रतोदो वाक्यं काणनम् छाग. ६।२
 कर्म प्रारभते नरः भ.गी. १८।१५
 कर्म प्राहुर्मनीषिणः भ.गी. १८।३
 कर्मबन्धं प्रहास्यसि भ.गी. २।३९
 कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि भ.गी. ३।१५
 (तर्हि) कर्म ब्राह्मण इति चेत्,तन्न,
 सर्वेषां प्राणिनां प्रारब्धसञ्चि-
 तागामिकर्म साधर्म्यदर्शनात् व. सू. ७
 कर्मभिर्न स बद्धयते भ.गी. ४।१४
 कर्मभिर्यद्वैतज्ञ कुर्यात् क्षीयेत् इ
 सोऽन्नमन्ति प्रतीकेन.. बृह. १।५।२
 कर्ममर्मज्ञाता कर्म करोति परब्र. १
 कर्म मर्म ज्ञात्वा कर्म कुर्यात् परब्र. १
 कर्मयोगेन चापरे भ.गी. १३।२५
 कर्मयोगेन योगिनाम् भ.गी. ३।३
 कर्मयोगो विशिष्यते भ.गी. ५।२
 कर्मयोगोऽहं, धर्मकर्माऽहम् अद्वै. भा. १
 कर्मसङ्गिषु जायते भ.गी. १४।१५
 कर्मसङ्गेन देहिनम् भ.गी. १४।७

कर्माणि प्रविभक्तानि भ. गी. १८।४१
 कर्मसङ्ख्यासोऽपि द्विविधः-निमित्त-
 संन्यासोऽनिमित्तसंन्यासश्चेति ना. प. ५।३
 कर्माब्जिडं च नारायणः त्रि.म.ना. २।८
 कर्माणि कुरुते, पुत्रांश्च पशूंच्छन,
 इमं च लोकममुंच्छेच्छन, आशां.. छांदो. ७।१४।१
 कर्माणि कुर्वीतेत्यथ कुरुते पुत्रांश्च
 पशूश्च श्रेच्छेयेत्यथेच्छते (मनः) छान्दो. ७।३।१
 कर्माणि तनुतेऽपि च, विज्ञानं देवाः
 सर्वे ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते तैत्ति. २।५
 कर्माणि ते मयि दध इति पुत्रः कौ. उ. २।१५
 कर्माणि मे त्वयि दधानीति पिता कौ. उ. २।१५
 कर्माणि विज्ञानमयश्च आत्मा
 परेऽव्यये सर्व एकीभवन्ति मुण्ड. ३।२।७
 कर्माद्वैतं न कार्यं, भावाद्वैतं तु कार्यम् स्वसंवे. ४
 कर्माप्यक्षः सर्वभूताधिवासः
 साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च श्वेताश्व. ६।१२
 [गोपालो. ४।३।१९+राधो. ४।३
 +ब्रह्मो. १६
 कर्माप्यक्षा सर्वभूताधिवासा
 साक्षिण्येषा केवला निर्गुणा च गुह्यका. ६९
 कर्मानुगान्यनुक्रमेण देही स्थानेषु
 रूपाण्यभिसम्प्रपद्यते श्वेता. ५।११
 कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके भ. गी. १५।२
 कर्मानुसारेण फलं लभन्ते मैत्रे. १।१७
 कर्मिभ्यश्चाधिको योगी भ. गी. ६।४६
 कर्मेन्द्रियाणि ज्ञानेन्द्रियाणि..
 अविद्याभूतवेष्टितो जीवः ...
 कर्मेन्द्रियाणि पञ्चैव वाक्पाण्य-
 द्ब्रयादयः क्रमात् वराहो. १।३
 कर्मेन्द्रियाणि संयम्य भ. गी. ३।३
 कर्मेन्द्रियाणां विषया भाषादान.. भवसं. २।१९
 कर्मेन्द्रियाण्यस्य (आत्मनः) हयाः मैत्रा. २।९
 कर्मेन्द्रियाणि हवींषि (शारीर्यज्ञस्य) प्रा. हो. ४।३
 कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगं भ. गी. ३।७
 कर्मेन्द्रियैः सह प्राणादिपञ्चकं
 प्राणमयकोशः पैङ्गलो. २।५
 कर्शयन्तः शरीरस्थं भ. गी. १७।६
 कलङ्की बुद्धिरुच्यते (क्षेत्रज्ञस्य) महो. ५।१२५

कलयन्ती मनश्शक्तिरादौ भावयति
 क्षणात्। आकाशभावनं.. महो. ५।१४६
 कलाकाष्ठा मुहूर्ताश्च..पक्षा मासाः..
 (विराट्स्वरूपस्य) गुह्यका. ५०
 कलातीता भगवती सीता चित्स्व-
 रूपा भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो.. तारसा. ३।८
 कलातीता भगवती स्वयं सीतेति
 संज्ञिता। तत्परः परमात्मा च.. तारसा. २।५
 कलाद्वयलयेनापि शक्तेः सञ्चलनेन
 च। क्षणाद्विपद्यते तस्य मनसः
 कम्पनं सकृत् अमन. १।४५
 कलापादलयेनापि सुषुम्णा (ज्ञा)
 मार्गवाहिनी अमन. १।४३
 कला मुहूर्ताः काष्ठाश्चाहोरात्रा-
 श्च सर्वशः महाना. १।८२
 कलायाः पुरुषः साक्षात्कर्मणो
 धरणीधरः तारसा. २।४
 कलायां स्वप्नप्राज्ञः, कलातीते
 स्वप्नतुरीयः प.हं.प. १०
 कलासर्गकरं देवं ये विदुस्तेजद्वस्तनुम्
 कलिना ग्रसिता ये वै तेषां श्वेता. ५।१४
 तस्यामवस्थितिः गोपालो. २।११
 कलि-जाबालि-सौभाग्य-रहस्य-
 ऋच-मुक्तिकाः (उपनिषदः) मुक्तिको. १।३९
 कलिः कंसः स भूपतिः, शमो मित्रः
 सुदामा च सत्याकूरोद्धवो दमः कृष्णोप. १५
 कलेवरमहङ्कारगृहस्थस्य महागृहम्
 महो. ३।२८
 कलौ जगत्पतिविष्णुं..नार्चयिष्यन्ति.. भवसं. १।५६
 कल्पक्षये पुनस्तानि भ. गी. ९।७
 कल्पना सर्वभूतानां ब्रह्मादीनां
 विशेषतः ते. वि. १।२४
 कल्पन्ते हास्मा ऋतव ऋतुमान्भवति,
 य एतदेवं विद्वानृतुषु सामोपास्ते
 छान्दो. २।५।
 कल्पन्ते हास्मैलोकाऋर्वाश्चावृत्ताश्च
 य एतदेवंविद्वाँल्लोकेषु..पञ्च-
 विधः सामोपास्ते छान्दो. २।२।३
 कल्पयत्यात्मनाऽऽत्मानमात्मा देवः
 स्वमायया वैतथ्य. १२

कल्पसूत्रे यथा वेदे धर्मशास्त्रे पुराणके ।

.. स जपः प्रोच्यते मया

जा. द. १।१२

कल्पं क्षणीकरोत्यन्तः क्षणं नयति

कल्पताम् (देहादिवासनामुक्तः)

महो. ४।६८

कल्पादौ विस्तृजाम्यहम्

भ. गी. ९।७

कल्यान्तयवना वान्तु यान्तु चैकत्व-

मर्णवाः.. नास्ति निर्मनसः क्षतिः

महो. ४।९७

कल्यान्ते वै सर्वसंहारकर्त्री

गुह्यका. ५९

कल्पितस्य शरीरस्य तस्य

सेनादिकल्पना

रा. पू. १।१०

कल्पिताश्चर्यजालेषु नाभ्युदेति

कुतूहलम्

अ. पू. ४।१०

कल्पितेयमविद्येयमनात्मन्यात्म-

भावनात्

महो. ४।१२८

कल्पो व्याकरणं शिक्षा निरुक्तं

व्योतिषं छन्द एतानि षडङ्गानि

सीतो. १८

कवयोऽप्यत्र मोहिताः

भ. गी. ४।१६

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः

ईशा. ८

कविर्मकवदात्मानं तद्दृष्ट्यादर्शयेन्नृणां

ना. प. ५।३५

कविं कवीनामतिमेधविग्रहम्

ग. पू. १।१०

कविं पुराणमनुशासितारं

भ. गी. ८।९

कविं पुराणं पुरुषं सनातनं सर्वेश्वरं

सर्वदेवैरुपास्यम्

महो. ४।७१

कविं पुराणं पुरुषोत्तमोत्तमं सर्वेश्वरं..

ना. प. ९।१७

कवीनामुशना कविः

भ. गी. १०।३७

कथं कविं कल्पकं काममीशं

.. तुष्टुवांसा अमृतत्वं भजन्ते

त्रिपुरो. ९

कश्चन गच्छती ३

तैत्ति. २।६।१

कश्चन समश्रुता ३ उ (कश्चित्-पा.)

तैत्ति. २।६।१

कश्च विष्णुः ? परं ब्रह्मैव विष्णुः

गोपीचं. ७

कश्चाद्वादः ? एष ब्रह्मानन्दरूपः

गोपीचं. ७

कश्चाद्वादः ? गोपीचन्दनसंसक्त-

मानुषाणां पापसंहरणाच्छुद्धान्तः-

करणानां ब्रह्मज्ञानप्राप्तिः ...

गोपीचं. ७

कश्चिदर्थव्यपाश्रयः

भ. गी. ३।१८

कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षत्

कठो. ४।१

कश्चिन्न तस्याः पतिरस्ति लोके

गुह्यका. ६८

कश्चिद्यतति सिद्धये

भ. गी. ७।३

कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः

भ. गी. ७।३

कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः

भ. गी. १८।६९

कश्यपः पश्यको भवति

सूर्यता. १।२

कश्यपादुदिताः सूर्याः पापान्नि-

र्त्रन्ति सर्वदा

सूर्यता. १।२

कश्यपोलुखलः ख्यातो रज्जुर्माता-

ऽदितिस्तथा । .. यावन्ति देव-

रूपाणि वदन्ति विबुधा जनाः

कृष्णोप. २१

कपोत्काय स्वाहा

महाना. १४।१९

कस्तवायं जडो मूको देहो मांसमयो-

ऽशुचिः । यदर्थ.. अवशः परिभूयसे

महो. ४।१३१

कस्तं मदामदं देवं मदन्यो ज्ञातुमर्हति

कठो. २।२१

कस्त्यमित्यहमिति होवाच

नृसिंहो. ७।२

कस्त्वेनयोरेकधाभूयं भूत्वा परमतां

गच्छति

बृह. ९।१२।१

कस्त्वेनं (एतं) जनयेदिति कारणं

प्रतिषिध्यते

अद्वैत. २५

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्

भ. गी. ११।३७

कस्मात्तानि च क्षीयन्तेऽद्यमानानि

सर्वदेति । पुरुषो वा अक्षितिः..

बृह. १।५।२

कस्मात्तानि न क्षीयन्तेऽद्यमानानि

सर्वदा । यो वैतामक्षितिं वेद..

बृह. १।५।१

कस्माद्ज्ञानप्राबल्यमिति, भक्ति-ज्ञान-

वैराग्य-वासनाभावाच्च

त्रि. म. ना. ९।३

कस्माद्वयभेद्यत्, द्वितीयाद्वै

भयं भवति

बृह. १।४।२

(अथ) कस्मादुच्यते ईशानः, यः

सर्वान्देवानीशते ईशानीभिः

... तस्मादुच्यत ईशानः

अ. शिरः. ३।५

(अथ) कस्मादुच्यते उग्रमिति,

यस्मात्स्वमहिम्ना.. सर्वानात्मनः

सर्वाणिभूतानि.. तस्मादुच्यत उग्रम्

नृ. पू. २।९

(अथ) कस्मादुच्यत एकः ? यः सर्वा-

न्प्राणान्सम्भक्ष्य.. तस्मादुच्यत एकः

अ. शिरः. ३।५

(अथ) कस्मादुच्यते ओङ्कारः ? यस्मा-

दुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्वमुत्क्रा-

मयति तस्मादुच्यते ओङ्कारः

अ. शिरः. ३।५

(अथ) कस्मादुच्यते तारं, यस्मा-

दुच्चार्यमाण एव गर्भ-जन्म-व्याधि-

जरा-मरण-भयात्तारयति..

अ. शिरः. ३।५

- (अथ) कस्मादुच्यते नृसिंहमिति
यस्मात्सर्वेषां भूतानां वा वीर्यतमः
श्रेष्ठतमश्च सिंहो..तस्मादुच्यते.. नृ. पू. २।९
- (अथ) कस्मादुच्यतेऽनन्तः ? यस्मा-
दुच्चार्यमाण एव..अस्यान्तो नोप-
लभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्तः अ.शिरः.३।५
- (अथ) कस्मादुच्यते परं ब्रह्म ? यस्मा-
त्परमपरं परायणं च बृहद्ब्रह्मत्या
बृंहयति तस्मादुच्यते ब्रह्म अ.शिरः.३।५
- (अथ) कस्मादुच्यते प्रणवः ? यस्मा-
दुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुः..ब्रह्म
ब्राह्मणेभ्यः प्रणामयति नामयति
च तस्मादुच्यते प्रणवः अ.शिरः.३।५
- (अथ) कस्मादुच्यते नमामीति,
यस्माद्यं सर्वे देवा नमन्ति
मुमुक्षवो ब्रह्मवादिनश्च.. तस्मात्.. नृ. पू. २।१३
- (अथ) कस्मादुच्यते भगवान्महेश्वरः अ.शिरः.३।५
- (अथ) कस्मादुच्यते भीषणमिति,
यस्माद्भीषणं यस्य रूपं दृष्ट्वा..
भूतानि पलायन्ते, स्वयं.. न
बिभेति तस्मात्.. [नृ. पू. २।४ + २।१०
- (अथ) कस्मादुच्यते भद्रमिति
यस्मात्स्वयं भद्रो भूत्वा..
भद्रं वदति.. तस्मात्.. [नृ. पू. २।४ + २।११
- (अथ) कस्मादुच्यते महाविष्णु-
मिति, यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वा-
लोकान्..सर्वाणिभूतानि व्याप्नोति.. नृ. पू. २।६
- (अथ) कस्मादुच्यते मृत्युमृत्युमिति,
यस्मात्स्वमहिम्ना स्वभक्तानां स्मृत
एव मृत्युमपमृत्युं च मारयति.. नृ. पू. २।१२
- (अथ) कस्मादुच्यते रुद्रः ? यस्माद्दृ-
षिभिः.. द्रुतमस्य रूपमुपलभ्यते
तस्मादुच्यते रुद्रः अ.शिरः.३
- (अथ) कस्मादुच्यते वीरमिति
यस्मात्सर्वा लोकान्..सर्वाणि
भूतानि विरमति विरामयति..तस्मात्.. नृ. पू. २।५
- (अथ) कस्मादुच्यते वैद्युतम् ?
यस्मादुच्चार्यमाण एव व्यक्ते

- महसि तमसि द्योतयति तस्मा-
दुच्यते वैद्युतम् अ.शिरः.३।५
- (अथ) कस्मादुच्यते शुक्लम् ? यस्मा-
दुच्चार्यमाण एव कुन्दते क्षामयति
च तस्मादुच्यते शुक्लम् अ.शिरः.३।५
- (अथ) कस्मादुच्यते सर्वव्यापी ?
यस्मात्.. सर्वलोकान् व्याप्नोति.. अ.शिरः.३।५
- (अथ) कस्मादुच्यते सूक्ष्मं ? यस्मा-
दुच्चार्यमाण एव सूक्ष्मो भूत्वा
शरीराण्यभितिष्ठति तस्मात्.. अ.शिरः.३।५
- (अथ) कस्मादुच्यते सर्वतोमुख-
मिति, यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वा-
लोकान्.. सर्वाणिभूतानि स्वय-
मनिन्द्रियोऽपि सर्वतः पश्यति
तस्मादुच्यते सर्वतोमुखः नृ. पू. २।८
- (अथ) कस्मादुच्यतेऽहमिति नृ. पू. २।१४
- कस्मिन्मनो लोका ओताश्च प्रोताश्चेति
तपोलोकेष्विति सुबालो.१०।१
- कस्मिन्नु खलु गन्धर्वलोका ओताश्च
प्रोताश्चेत्यादित्यलोकेषु बृह. ३।६।१
- कस्मिन्नु चक्षुः प्रतिष्ठितमिति
रूपेष्विति बृह. ३।९।२०
- कस्मिन्नु खलु चन्द्रलोका ओताश्च
प्रोताश्च ? नक्षत्रेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
- कस्मिन्नु खलु देवलोका ओताश्च प्रोताश्च ?
इन्द्रलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
- कस्मिन्नु खलु नक्षत्रलोका ओताश्च
प्रोताश्च ? देवलकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
- कस्मिन्नु खलु प्रजापतिलोका ओताश्च
प्रोताश्च ? ब्रह्मलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
- कस्मिन्नु खलु ब्रह्मलोका
ओताश्च प्रोताश्च ? बृह. ३।६।१
- कस्मिन्नु खलु वायुरोतश्च प्रोतश्च ?
अन्तरिक्षलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
- कस्मिन्नु खल्वन्तरिक्षलोका ओताश्च
प्रोताश्च ? गन्धर्वलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
- कस्मिन्नु खल्विन्द्रलोका ओताश्च
प्रोताश्च ? प्रजापतिलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
- कस्मिन्नु खल्वकाश ओताश्च प्रोतश्च ? बृह. ३।८।७

कस्मिन्नु खत्वादित्यलोका ओताश्च प्रोताश्च ? चन्द्रलोकेषु गार्गीति	बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु खत्वाप ओताश्च प्रोताश्च ? वायौ गार्गीति	बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु त्वं चात्मा च प्रतिष्ठितौ स्थ इति प्राण इति	बृह. ३।९।२६
कस्मिन्नु दक्षिणा प्रतिष्ठितेति श्रद्धायामिति	बृह. ३।९।२१
कस्मिन्नु दीक्षा प्रतिष्ठिता ? सत्य इति	बृह. ३।९।२३
कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति ?	मुण्ड. १।१।३
कस्मिन्नु प्राणः प्रतिष्ठितः ? अपानइति	बृह. ३।१।२६
कस्मिन्नु यज्ञः प्रतिष्ठितः ? दक्षिणायामिति	बृह. ३।९।२१
कस्मिन्नु रूपाणि प्रतिष्ठितानि ? हृदय इति	बृह. ३।९।२०
कस्मिन्नु रेतः प्रतिष्ठितं ? हृदय इति	बृह. ३।९।२२
कस्मिन्नु वाक्प्रतिष्ठितेति, हृदय इति	बृह. ३।९।२४
कस्मिन्नु व्यानः प्रतिष्ठित इति, उदान इति	बृह. ३।९।२६
कस्मिन्नु श्रद्धा प्रतिष्ठितेति हृदय इति	बृह. ३।९।२१
कस्मिन्नु सत्यं प्रतिष्ठितम् ? हृदयइति	बृह. ३।९।२३
कस्मिन्नु सर्वे प्रतिष्ठिता भवन्ति ?	प्रश्नो. ४।१
कस्मिन्नु हृदयं प्रतिष्ठितमिति	बृह. ३।९।२४
कस्मिन्नुदानः प्रतिष्ठित इति, समान इति	बृह. ३।९।२६
कस्मिन्प्रजापतिलोका ओताश्च प्रोताश्चेति, ब्रह्मलोकेष्विति	सुबालो. १०।१
कस्मिन्ब्रह्मलोका ओताश्च प्रोताश्चेति सर्वलोका आत्मनि ब्रह्मणि मणय इवोताश्च प्रोताश्च	सुबालो. १०।१
कस्मिन् भुवर्लोका ओताश्च प्रोताश्चेति सुवर्लोकेष्विति	सुबालो. १०।१
कस्मिन्भूर्लोका ओताश्च प्रोताश्चेति भुवर्लोकेष्विति	सुबालो. १०।१
कस्मिन्महर्लोका ओताश्च प्रोताश्चेति जनोलोकेष्विति	सुबालो. १०।१

कस्मिन् रसातललोका ओताश्च प्रोताश्च ? भूर्लोकेष्विति	सुबालो. १०।१
कस्मिन्ऋषानः प्रतिष्ठित इति, व्यान इति	बृह. ३।९।२६
कस्मिन्ऋषाः प्रतिष्ठिता इति, रेतसीति	बृह. ३।९।२२
कस्मिन्वा प्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामि कस्मिन्सत्यलोका ओताश्चप्रोताश्चेति	प्रश्नो. ६।३
प्रजापतिलोकेष्विति	सुबालो. १०।१
कस्मिन् सुवर्लोका ओताश्च प्रोता- श्चेति, महर्लोकेष्विति	सुबालो. १०।१
कस्मिन् स्थितं तु किं नाम कथं वा धार्यते ?	रु. जा. १
कस्मिन्स्तदोतं प्रोतं चेति	बृह. ३।८।३, ६
कस्मिन्स्तपोलोका ओताश्च प्रोताश्चेति सत्यलोकेष्विति	सुबालो. १०।१
कस्मैदेवायहविषाविधेम [श्वेता. ४।१३ [क्र. अ. ८।६।३=मं. १०।१२१।१-९ अथर्व. ४।२।१।७	+ नृ. पू. २।१२
कस्यापि वन्दनमकृत्वा न नमस्कारो न स्वाहाकारो यादृच्छिको भवेत् ना. प. ३।८७	
कस्यैष खल्वीदृशो महिमाऽती- न्द्रियभूतस्य येनैतद्विधमिदं.	
प्रतिष्ठापितम्	मैत्रा. २।३
कस्यैष महिमा बभूव	ब्रह्मो. १
कस्मिन् देवां ब्राह्मणानामनूचानतमइति	बृह. ३।१।१
कं कं कस्मै पदे पदे पातः ..पादिते स्वाहा	पारमा. ९।१०
कं कं जनित्रे समतेजसं ते स्वाहा	पारमा. ९।५
कं घातयति हन्ति कम्	भ. गी. २।२१
कं ते काममागाथानीत्येष ह्येव..	छान्दो. १।७।९
कंसर्वंशविनाशाय केशिचाणूर- घातिने..पार्थसारथये नमः	गो. पू. ४।८
कंसे पृषदाज्यं सन्नीय..जुहोति	बृ. उ. ६।४।२४
कं ह वा अस्मै भवति य एवमेत- दकस्यार्कत्वं वेद	बृह. १।२।१
कः कोशमङ्गे कुशलं विधाय...	
चराय स्वाहा	पारमा. १।९
कः परमात्मा को ब्रह्मा को विष्णुः ?	निरा. उ. ४
कः परमो देवः का वा तच्छक्तयः ?	राधिको. १

कः परिव्रजनाधिकारी कीदृशं
परिव्राजकलक्षणम् ? प.इ.प. १
कः पुनरेषां (देवानां) वरिष्ठः ? प्रभो. २।१
कः पुष्करः किमयो वा ? मैत्रा. ६।२
कः स जगार भुवनस्य गोपाः, तं
कापेय नाभिपश्यन्ति छान्दो. ४।३।६
कः सविता, का सावित्री ? पुरुष एव
सविता, स्त्री सावित्री .. ते द्वे
योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ९
कः सविता, का सावित्री ? अपिरेव
सविता, पृथिवी सावित्री, स
यत्रामिस्तपृथिवी..तदेकमिथुनम् सावित्र्यु. १
कः सविता, का सावित्री ? वरुण एव
सविताऽऽपः सावित्री, स यत्र
वरुणः..तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. २
कः सोऽभिध्येयोऽयं यः प्राणात्मकः
(पाठान्तरम्) मैत्रा. १।१
कः सोऽभिध्येयोऽयं यः प्राणारूयः,
तस्योपन्याख्यानम् मैत्रा. १।१
कः स्वर्गः को नरकः को बन्धः ? निरालं. ४
काको वा हंसवद्रच्छेज्जगद्रवतुनिश्चलं
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं ते.वि. ६।९२
काठिन्यदृढकौपीनं, चीराजिनवासः भ.गी. ४।१२
काठिन्यं पृथिवीद्वेकापानीयंतद्वाकृति
निर्वाणो. ७
काठिन्यादयं ससागरं सपर्वतं...
मण्डलमेवोक्तं लकारेण वराहो. ५।१
काण्डात्काण्डात् प्ररोहंती परुषः
परुषत्परि [महाना. ४।२+
[वा.सं.१३।२०+तै.सं.४।२।९।+
कातकं फलमासाद्य यथा वारि
प्रसीदति । तथा विज्ञानवशतः
स्वभावः सम्प्रसीदति त्रि.ता. १।८
कार्यायनाय विद्महे कन्याकुमारि
धीमहि । तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात्
[+वनदु. १२४, १४०
कादिविद्येति वा हादिविद्येति वा
सादिविद्येति वा रहस्यम् वनदु. १५६
कादिहादिसोक्तेन भावना
प्रतिपादिता तै.आ. १०।१७
महो. ५।६६
महाना. ३।१२
बह्वचो. २
भावना. १०

कान्तिविशेषावर्तैरभितोऽनिशं
प्रचलंतं..आदिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.जा. ७।११
(तत्र) का पृथिवी का आपः किं
तेजः को वायुः किमाकाशं गर्भो. १
कापिलेन दध्राऽभिषिच्य रुद्रं ,
सुरापानात्पूतो भवति भ.जा. २।११
कापिलेनपयसाऽभिषिच्यरुद्रसूक्तेन
मामेव लिङ्गरूपिणं..पूतो भवति भस्मजा. २।११
कापिलेनाज्येनाभिषिच्य
स्वर्णस्तेयात्पूतो भवति भस्मजा. २।११
का प्रीतिः स्याज्जनार्दन
का प्रकृतिः..का जातिः भ.गी. १।३६
काम आज्यं मन्युः पशुस्तपोऽग्निः
(ब्रह्मयज्ञस्य) [त्रिपुष. ४+ निरा. ४
काम एव यस्यायतनं हृदयं
लोको मनो ज्योतिः.. बृह. ३।९।११
काम एवेदं तत्तदिति ककारो गृह्यते त्रि.ता. १।५
काम एष क्रोध एषः भ.गी. ३।३७
कामकलेति विज्ञायते (देवी) बह्वचो. १
कामक्रोधपरायणः भ.गी. १६।१३
कामक्रोधभयं.. जन्ममृत्युश्च कार्पण्यं..
एभिर्दोषैर्विनिर्मुक्तः स जीवः
शिव उच्यते यो.शि. १।११
कामक्रोधलोभमोहदम्भदर्पास्रया-
मसत्त्वाद्दङ्कारादींस्तितीर्य..
वृक्ष इव तिष्ठासेत् शादपाय. १८
काम-क्रोध-लोभ-मोह-भयान्या-
काशस्य (अंशाः) शारीरको. ३
काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-
पुण्य-पापमया ब्राह्मयाद्यष्टशक्तयः भावना. ३
काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-
मित्यरिषड्वर्गः मुद्रलो. ४।२
काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-
मात्सर्यादिकं दग्ध्वा.. ना.प. ७।२
काम-क्रोध-लोभ...मृत्यु-रोग-शो-
काद्यैरभिहतेऽस्मिञ्छरीरे
किं कामभोगाद्यैः मैत्रा. १।४
कामक्रोधवियुक्तानां भ.गी. ५।३६

कामक्रोधहर्षरोषलोभमोहादयश्च- च्छासुयाममत्वाहङ्कारादीनपि परित्यजेत्	आरुणि. ४	कामं पित्रे वाऽऽचार्याय वा शंसेत् ३पेत. २।४।२	
कामक्रोधादयो व्योमांशाः	पैङ्गलो. २।२	कामः समुद्रमाविश	चित्त्यु. १०।२९
कामक्रोधादिदोषाणां स्वरूपा-		कामः करोति, नाहं करोमि	महाना. १४।३
जास्ति भिन्नता	यो.शि. १।१७	कामः कर्ता नाहं कर्ता	महाना. १४।३
कामक्रोधोद्भवं वेगं	भ. गी. ५।२३	कामः कारयिता, नाहं कारयिता	महाना. १४।३
कामक्रोधौ तथादर्पलोभमोहादयश्च ।		कामः क्रोधस्तथा दर्पो लोभमोहा-	
तांस्तुदोषान्परित्यज्यपरिव्राट् ..	ना.प. ५।४४	दयश्च ये । तांस्तुदोषान्	
कामक्रोधौ लोभमोहावहङ्कारश्च...		परित्यज्य...	ना.प. ३।३३
बन्धाय देहिनः	भवसं. २।२२	कामः क्रोधस्तथा लोभः	भ.गी.१६।२१
कामक्रोधौ लोभमोहौ मदो मात्सर्य-		कामः क्रोधस्तथा लोभः...	
मेध च । एतेऽरिषद्वा विश्वश्च..	बराहो. १।१०	अभक्ष्यान्ननिषेवणात्	भवसं. ४।११
कामदेवाय विद्महे पुष्पवाणाय		कामः पशुः (शारीरयज्ञस्य)	प्रा. हो. ४।२
धीमहि । तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात्	ना.पू. ता. ४।२	कामः प्रजानां निहितोऽसि सोमे	एका.उ. ५
कामनाम्ना किरातेन विकीर्णा		कामः सङ्कल्पो विचिकित्सा श्रद्धा-	
मुग्धचेतसः । नार्यो नरविहङ्गा-		श्रद्धा धृतिरधृतिर्हीर्षीर्भी-	
नामङ्गबन्धनवागुराः[याज्ञव.१४+	महो. ३।४५	रित्येतत्सर्वं मन एव [बृह.१।५।३+ मैत्रा. ६।३०	
काममय एवायं पुरुषः	बृह. ४।४।५	कामाख्यं तु गुदस्थाने पङ्कजं तु	
काममयोऽकाममयः क्रोधमयो-		चतुर्दलतन्मध्ये..योनिःकामाख्या..	यो.चू. ७
ऽक्रोधमयः..सर्वमयः (आत्मा)	बृह. ४।४।५	कामात्क्रोधोऽभिजायते	भ. गी. २।६२
काममाश्रित्य दुष्पूरं	भ. गी. १६।१०	कामात्मानः स्वर्गपराः	भ. गी. २।४३
कामरागबलान्विताः	भ. गी. १७।५	कामादिरहितोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।२१
कामरागविवर्जितम्	भ. गी. ७।११	कामादिवृत्तिदहनं, काठिन्यदृढकौपीनं	निर्वाणो. ७
कामरूपं दुरासदम्	भ. गी. ३।४३	कामाभिष्कामरूपी संचरत्येकचरो	
कामरूपाय रामाय नमो मायामयाय च	रा. पू. ४।१२	मुनिः...स्वात्मनैव...	२आत्मो. ११
कामरूपेण कौन्तय	भ. गी. ३।३९	कामान्यः कामयते मन्यमानः	
कामसङ्कल्पवर्जिताः	भ. गी. ४।१९	स काममिर्जायते तत्र तत्र..	मुण्ड. ३।३।२
कामस्तदग्रेसमवर्तताधि [बृ.जा.१।२	+नृ. पू. १।१	कामाब्धिकलोलरतं समुद्धर	
[ऋ.अ.८।७।१७=	मं. १०।१२९।४	मनो ब्रह्मन्	महो. ५।१३४
[तै.आ. १।२३।१+	अथर्व.१९।५२।१	कामाभिदुग्धोऽस्म्यभिदुग्धोऽस्मि	सहवै. २२
कामस्यासि जगतः प्रतिष्ठां		कामावकीर्णोऽस्म्यवकीर्णोऽस्मि	सहवै. २२
क्रतोरानन्त्यमभयस्य पारम्	कठो. २।११	कामी कलांकामरूपांचिकित्वा नरो	
कामस्वरूपं पीठं सर्वकामदं भवति	सौभाग्य. २४	जायते कामरूपश्च कामः	त्रिपुरो. ११
कामं कामयते यावद्यत्र सुप्तो न		कामी कलां काम्यरूपां विदित्वा नरो	
कश्चन । स्वप्नं पश्यति नैवात्र		जायते कामरूपश्च काम्यः (पाठः)	त्रिपुरो. ११
तत्सुषुप्तमपि स्फुटम्	ना. प. ८।१४	कामीमुमामीशिषमीशिषाणां	
कामं क्रोधं च संश्रिताः	भ. गी. १६।१८	तत्सत्यं...स्वाहा	पारमा. ५।३
कामं क्रोधं परिग्रहम्	भ. गी. १८।५३	कामेन त्वा प्रतिगृह्णामि, कामैतत्ते	
		एषा ते काम दक्षिणा	चित्त्यु.१०।२+
		[तै.आ.३।१०।२,४+	अथर्व.३।५२।४

कामेन मे (मा) काम आगतं [तै.आ. ३।१५।२+	चित्त्यु. १५।२+ अथर्व. ३।५२।४	कारणं कस्य वै कार्यं कारणतस्य जायते [ते. वि. १।५८	+अ. शां. ११
कामेनाजनयन् पुनः[तै.आ. ३।१५।२+	चित्त्यु. १५।२	कारणात्मकं सर्वं कार्यात्मकं सकलं नारायणः	त्रि.म.ना. २।८
कामेन विषयाकाङ्क्षी विषयात्काम- मोहितः । द्वावेव सन्त्यजेन्नित्यं निरञ्जनमुपाश्रयेत्	योगकुं. ३।३	कारणादिविहीनात्मा तुरीयादि- विवर्जितः	ते. वि. ४।७३
कामेश्वरी वज्रेश्वरी भगमालि- न्योऽन्तस्त्रिकोणाग्रगा देवताः	भावनो. ६	कारणाद्यनन्यत्वमतः कार्यमजं यदि, जायमानाद्धि वै कार्यात्कारणं	अ. शां. १२
कामैस्तैस्तैर्द्वैतज्ञानाः	भ.गी. ७।२०	ते कथं घुवम्	अ. शां. १२
कामोऽकार्षीत्कामः करोति, नाहं करोमि	महाना. १४।३	कारणाद्विभजगतः सत्यत्वं पञ्चमो भ्रमः । पञ्चभ्रमनिवृत्तिश्च	अ. पू. १।१५
कामोऽकार्षीन्नमो नमः	महाना. १४।३	तदा स्फुरति चेतसि	अ. गी. १८।१३
कामो दाता, कामः प्रतिगृहीता	चित्त्यु. १०।१, २	कारणानि निबोध मे	
कामोपभोगपरमाः	भ.गी. १६।११	कारणाभिन्नरूपेण कार्यं कारणमेव हि । तद्रूपेण सदा सत्यं भेदेनो- क्तिर्मृषा खलु	पञ्चम. ३१ यो. चू. ७५
कामोभूत्वा प्रजानामन्तरा स्थितः सर्वा लोकांश्चादयन्..स्वाहा	पारमा. ३।२	कारणाव्याकृतप्राज्ञश्च मकारः कारणेन विना कार्यं न कदाचन विद्यते । अहङ्कारं विना तद्वदेहं दुःखं कथं भवेत्	यो. शि. १।३७
कामो योनिः कामकला वज्रपाणिर्गुहा हसा । मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः[देव्यु. ११	+त्रिपुरो. ८	कारणेन विना कार्यं नोदेति (तथैव) भक्त्या विना ब्रह्मज्ञानं कदापि न जायते	त्रि.म.ना. ८।४
कामोऽस्मि भरतर्षभ	भ.गी. ७।११	कारणोपाधिरीश्वरः । कार्यकारणतां हित्वा पूर्णबोधोऽवशिष्यते	शु. र. ३।१२
काम्यानां कर्मणां न्यासं	भ.गी. १८।२	कारागारविनिर्मुक्तचोरवद्वृतो वसेत्	मैत्रे. २।११
कायदण्डे त्वभोजनम्	१सं.सो. २।९७	कारागृहविनिर्मुक्तचोरवत्पुत्राप्तबंधु- भवस्थलं विहाय दूरतो वसेत्	ना. प. ७।१
कायकेशभयात्त्यजेत्	भ.गी. १८।८	कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः कार्यकारण-(करण-) कर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते [भ.गी. १३।२१	+भवसं. २।८
कायस्थो दृश्यते लोको तत्त्वचर्यो समाचरेत्	अमन. १।८१	कार्यकारणकर्मनिर्मुक्तं निर्वचन- मनौपम्यं निरुपाख्यं किं तदङ्गवाच्यम्	मैत्रे. ६।७
कायरूपे चित्तसंयमादन्यादृश्यरूपम्	शांडि. १।७।५२	कार्यकारणताभावाद्यतोऽचिन्त्याः सदैव ते । द्रव्यं द्रव्यस्य हेतुः स्यात्..	अ. शां. ५२
कायशोषणमात्रेण कातत्रह्यविवेकिनाम्	वराहो. २।४०	कार्यकारणतां हित्वा पूर्णबोधोऽवशिष्यते	शु. र. ३।१२
कायाकाशसंयमादाकाशगमनम्	शांडि. १।७।५२	कार्यकारणबद्धौ ताविष्येते विश्वतैजसौ	आगम. ११
कायिकादिबिमुक्तोऽस्मि..केवलोऽस्म्यहं	मैत्रे. ३।२२	कार्यकारणवर्जितः (आत्मा)	ते.वि. ५।१
कायेन मनसा बुद्ध्या	भ.गी. ५।११		
कायेन मनसा वाचा शत्रुभिः परिपीडिते । वृत्तिक्षोभनिवृत्तिर्या क्षमा सा..	जा.द. १।१७		
कायेन मनसा वाचा स्त्रीणां परि- विवर्जनम् । ऋतौ भार्यी तदा तस्य ब्रह्मचर्यं तदुच्यते	जा.द. १।१३		
कायेन मनसा वाचा हिंसाऽहिंसा न चान्यथा	जा. द. १।७		
कारणं गुणसङ्गोऽस्य	भ. गी. १३।२२		
कारणं तु ध्येयः सर्वैश्वर्यसम्पन्नः सर्वेश्वरः शम्भुः	अ. शिखो. ३		

कार्यकारणोपाधिमेवाजीवे-

श्वरमेवोऽपि दृश्यते	त्रि.म.ना. ४।७
कार्यते स्ववशः कर्म	भ.गी. ३।५
कार्यमेवात्कारणमेदः	ना. प. ५।१२
कार्यमित्येव यत्कर्म	भ.गी. १८।९
कार्यं कर्म करोति यः	भ.गी. ६।१
कार्यं कर्म समाचर	भ.गी. ३।१९
कार्यं चाकार्यमेव च	भ.गी. १८।३१
कार्यं चेत् कारणं किञ्चित् कार्याभावे	
न कारणम्	ते.वि. ५।२६
कार्यविष्णुः क्रियाब्रह्माकारणंतुमहेश्वरः	रुद्रह. १५
कार्याकार्यमसद्विद्धिनष्टप्राप्तमसन्मयम्	ते.वि. ३।५५
कार्याकार्यव्यवस्थितौ	भ.गी. १६।२४
कार्याकार्ये भयाभये	भ.गी. १८।३०
कार्याभावे न कारणम्	ते.वि. ५।२६
कार्ये गोष्पदतोयेऽपि विशीर्णो	
मशको यथा	अ.पू. १।४३
कार्ये सक्तमहेतुकम्	भ.गी. १८।२२
कार्योपाधिरयं जीवः कारणोपाधिरीश्वरः	
[त्रि.म.ना. ४।८+	शु. र. ३।१२
काल इति कालविदो देशः तद्विदः	वैतथ्य. २४
कालकर्मात्मकमिदं स्वभावात्मकंचेति	स्वसंवे. २
कालकलानिमेषमारभ्यघटिकाष्टयाम्..	
पञ्चमासत्वेन..भेदेन मनुष्याणां	
शतायुःकल्पनया प्रकाशमाना	सीतो. ७
कालत्रयमसत्सदा । गुणत्रयमसद्विद्धि	
ह्यहं सत्यात्मकः शुचिः	ते. वि. ३।४९
कालत्रयमुपेक्षित्या हीनायाश्चैत्य-	
बन्धनैः । चित्तचैत्यमुपेक्षित्याः	
समतैवावशिष्यते	१सं.सो. २।२७
कालत्रयविमुक्तोऽस्मि कामादि-	
रहितोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।२१
कालत्रयं च सवनत्रयं लिंगत्रयं	
त्रिपात् तेजस्त्रयमकारोकार-	
मकारप्रणवात्मकम्	१विल्वो. २१
कालत्रयाबाधितं ब्रह्म	त्रि.म.ना. १।३
कालत्रयेऽपि यस्येमा मात्रा नूनं	
प्रतिष्ठिताः	ना. वि. ८

कालत्रये यथा सर्पो रज्जौ नास्ति	
तथामयि..जगन्नास्त्यहमद्वयः	आ. प्र. ३०
कालदण्डां करालाभ्यां...विजयां	
बन्धयाम्यहम्	वनदु. १६७
काल-देश-पात्र-मन्त्राष्टशौचेप्साः-	
कृष्णपक्षक्षयोत्सवाः	इतिहा. ५५
कालमेव प्रतीक्षेत यावदायुःसमाप्यते	ना. प. ३।६१
कालमेव प्रतीक्षेत निर्देशं भृतकोयथा	ना. प. ३।६१
कालमेव प्रतीक्षेत निर्देश-भृतक-	
न्यायेन परित्राद्	ना. प. ५।१५
कालभेदं देशभेदं...असदेव	
हि केवलम्	ते. वि. ६।५४
कालरात्रि ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्द-	
मातरम् । ..नमामः पावनां शिवां	देव्यु. ८
कालवञ्चनमेतद्वि(पूर्वोक्तं ५।३२-३४)	वराहो. ५।३५
कालश्च कलनोद्युक्तः सर्वभावान्..	अक्षयुप. २७
कालश्च नारायणः [नारा. २+	त्रि.म.ना. २।८
कालश्चान्नस्य, सूर्यो योनिः कालस्य	मैत्रा. ६।१४
कालसत्ता कलासत्ता वस्तुसत्तेयमि-	
त्यपि । विभागकलनां त्यक्त्वा	
सन्मात्रैकपरा भव	अ.पू. ४।६६
कालसङ्कलनात् काली	गु.षो. २
(अथ) कालसंज्ञमादित्यमुपासीत	मैत्रा. ६।१६
कालस्तस्यातिदूरमपसरति	मैत्रा. ६।१४
कालस्तामपि कृन्तति (वासनाम्)	महो. ३।३७
कालं गच्छति तन्निधनम्	छान्दो. २।१३।१
कालः कलयतामहम्	भ.गी. १०।३०
कालः कालैकवादिनाम्	अ.पू. ३।२१
कालः क्रमस्त्वं परमाक्षरं च	एका.ड. ६
कालः क्रीडत्ययं प्राणः सर्व-	
मापदि पातयन्	भवसं. १।१७
कालः पचति भूतानि.. यस्मिंस्तु	
पच्यते कालो यस्तं वेद सवेदवित्	मैत्रा. ६।१५
कालः प्राणश्च भगवान्मृत्युः शर्वो महेश्वरः	
उग्रो भवश्च रुद्रश्च ससुरः..	मंत्रिको. १२
कालः स्वभावो नियतिर्यदृच्छा..आत्मा-	
प्यनीशः सुखदुःखहेतोः [श्वेता. १।२	+ ना. प. ९।१
कालाग्निरयमूर्ध्वगः, तथैव निम्नगः..	बृ.जा. २।९
कालाग्निरुद्रं भगवन्तंसनत्कुमारः पप्रच्छ	कालाग्नि. २

कालात्मनि मनो लीनं त्रिकालज्ञान- कारणम्..परकायप्रवेशनम्	यो. शि. ५।४८	काषायवासाः कक्षोपस्थलो- मानि वर्जयेत्	ससङ्ग्यासो. १०
कालात्मवन्ति भूतानि....		काषायवासाः सततं ध्यानयोग- परायणः ।.. वसेदेवाक्येऽपि वा	ना. प. ५।४९
कालो मूर्तिरमूर्तिमान्	मैत्रा. ६।१४	काषायवासान्कक्षोपस्थलोमानि वर्जयेत् (?)	कठश्रु. २२
कालादुपापक उच्यते, व्यापको हि.. रुद्रः	अ. शिरः. ३।१५	काष्ठदण्डो धृतो येन सर्वाशी ज्ञान- वर्जितः..स पापी यत्तिष्ठतिहा	प. द्वं. ६
कालानलसमद्योतमानं महाकाशं भवति	अव्ययता. ४	काष्ठदण्डो धृतो येन...	
कालानलसमं द्योतमानं	मं. प्रा. १।३	स याति नरकान्धोरान्..	ना. प. ५।१४
कालान्तरोपभोगार्थं सञ्चयः..(यतेः)	१ सं. सो. २।८२	काष्ठपाषाणजोवह्निः पार्थिवो महणीगसः	यो. शि. ५।१९
कालाभ्योदयरकान्तिकान्तमनिशं		काष्ठपाषाणयोर्वह्निर्ह्यस्थिमज्ज्ये प्रवर्तते	यो. शि. ५।३९
वीरासनाध्यासितम्	रामर. २।२४	काष्ठवज्रायते देहं च न मन्यावस्थया ध्रुवम्, न जानाति स शीतोष्णं..	ना. वि. ५३
कालिकायै विद्याहे इमं शानवासिन्यै		काष्ठवत् पश्य वै देहं प्रशान्तस्येति लक्षणम्	अ. ना. १५
भीमहि । तन्नोऽधोरः(रा)प्रचोदयात्	वनदु. १४५	काष्ठान्यपि हि जीर्यन्ते दरिद्राणां...	अवसं. १।१३
कालिन्दीजलकलोलसङ्गिमावृत- सेवितम् । चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं		काष्ठा भिन्दन् गोभिरितोमुत्तमश्च	वा. सं. १५
मुक्तो भवति संसृतेः	गो. पू. १।७	का सत्यता याज्ञवल्क्य, चक्षुरेव सम्राट्	बृह. ४।१।४
कालीकरालीचमनोजवा(अभिजिह्वाः)	मुण्ड. १।२।४	का साम्नो गतिरिति स्वरइतिहोवाच	छान्दो. १।८।४
कालेनात्मनि विन्दति	म. गी. ४।३८	काऽसि त्वं महादेवि	देव्यु. १
कालेनाल्पेन विलयी देहो नाहं..	१ सं. सो. २।१४	कास्थिततायाज्ञवल्क्यहृदयमेवसम्राट्	बृह. ४।१।७
कालो नास्ति जगन्नास्ति माया- प्रकृतिरेव न, अहमेवहरिः साक्षात्	ते. वि. ६।६३	कास्वित् सा देवता, यस्या मृत्युरजमित्यभिर्वै मृत्युः	बृह. ३।२।१
कालो ब्रह्म कला ब्रह्म सुखं ब्रह्म..	ते. वि. ६।३५	कां गतिं कृष्ण गच्छति	म. गी. ६।३७
कालोऽयं सर्वसंहारी तेनाक्रांतं जगज्जयम्	महो. ३।३८	कांस्यघण्टानिनादस्तु यथा लीयति शान्तये । ओङ्कारस्तु तथा योज्यः	ब्र. वि. १२
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धः	भ. गी. ११।३२	कांस्यघण्टानिनादः स्याद्यदालिप्यति शान्तये । ओङ्कारस्तु तथा	
काशिराजश्च वीर्यवान्	भ. गी. १।५	योज्यः श्रुतये सर्वमिच्छति	१ प्रणवो. १२
काश्यश्च परमेष्वासः	भ. गी. १।१७	कां सोऽस्मितांहिरण्यप्राकारामाद्रीं ज्वलन्तीं.. [ऋ. खि. ८७।१०+	श्री. सू. ४
कावूरु पादाउच्येते [चित्त्यु. १२।५+ [=मं. १०।९०।११	अ. अ. ८।४।१९ +वा. सं. ३१।१०	किञ्चित्कचित्कदाचिच्च आत्मानं न स्पृश- त्यसौ । तूष्णीमेव स्थितस्तूष्णीं..	ते. वि. ४।४०
का वै वरणा काच नाशीति, सर्वा- निन्द्रियदोषान्वारयतीति तेन वरणा..सर्वानिन्द्रियकृतान्पा- पाग्नाशयतीति नाशी भवतीति	जामालो. २	किञ्चित्क्षुभितरूपासा विच्छक्तिश्चि- न्मयार्णवे । तन्मयैव स्फुरत्यच्छा	सहो. १८५।१
काश्यां तु ब्रह्मनालेऽस्मिन् मृतो मत्तारमाप्नुयात् । पुनरावृत्ति- रहितां मुक्तिं प्राप्नोति मानवः	मुक्तिको. १।१९ भस्मजा. २।८		
काश्यां स्थानानि चत्वारि			
काषायग्रहणं कपालधरणं केशावली लुञ्चनं.. सर्वं चोदरपोषणाय..	अमन. १।६		
काषायवत् परिधानाय देहे.. प्रायो काशद्वयितुं प्रवृत्ताः	अवसं. १।५५		

किञ्चिच्छेदोचतेतुभ्यं तद्वद्वोऽसि भव-
स्थितौ । नकिञ्चिद्रोचते चेत्तेतन्मु-
क्तोऽसि भवस्थितौ अ.पू. ५।१०५
(?) किञ्चिदक्षणा कृतं भवति वृ.उ. १।५।१७
किञ्चिदस्ति धनञ्जय भ.गी. ७।७
किञ्चिदुन्नामितमुखोदन्तैर्दन्ताग्रचालयेत् योगो. २१
किञ्चिद्वेदं न तस्यास्ति (आत्मनः)
..अहं त्वं तदिदं सोऽयं कालात्मा
कालहीनकः ते. बि. ४।४२
किमकुर्वत सञ्जय भ.गी. १।१
(अथानु) किमनुशिष्टोऽवोचथा
यो हीमानि न विद्यात्कथं सो-
ऽनुशिष्टो भुवीत छांदो. ५।३।४
किमन्यत्कामहेतुकम् भ. गी. १६।८
किमन्यत्सदन्यद्रूपामेति त्रिष्टुप्... १ऐत. ३।५।१
किमप्यव्यपदेशात्मा पूर्णात् पूर्णतरा-
कृतिः । न सन्नासन्न सदसत्.. महो. २।६७
किमर्थमचारीः पशुनिच्छन्नप्वन्तानिति बृह. ४।१।१
किमर्थो वयमप्येज्यामहे, किमर्थो
वयं यक्ष्यामहे ३ऐत. २।६।३
किमसौ (मुक्तोऽहमिति) मननादेव
मुक्तो भवति तत्क्षणात् यो. शि. १।५४
किमस्य यज्ञोपवीतं काऽस्य (संन्या-
सिनः) शिखा कथं वाऽस्यो-
पस्पर्शनम् [१सं.सो. १।३+ कठश्रु. ८
किमस्यापागादिति-तक्षैवेति-
तथैवेत्तत्... छाग. ६।२
किमहं पापमकरवमिति, स य एव*
विद्वान्नेते आत्मानं स्पृणुते तैत्ति. २।९
किमाचारः कथं चैतान् भ. गी. १४।२१
किमासीत् व्रजेत किम् भ. गी. २।५४
किमिच्छन्कस्य कामाय शरीरमनु-
सञ्ज्वरेत् (आत्मज्ञः) शाट्थाय. २२
किमु तद्वद्वाऽवेद्यस्मात्तत्सर्वमभवत् बृह. १।४।९
(अथ) किमेतैर्वाऽन्यानां शोषणं महार्ण-
वानां शिखरिणां प्रपतनं ध्रुवस्य
प्रचलनं... सोऽहमित्येतद्विभेदस्मिन्
संसारे किं कामभोगैः ? यैरेवा-
श्रितस्यासकृदिदावर्तनं दृश्यते मैत्रा. १।८

(अथ) किमेतैर्मान्यानां शोषणं महार्ण-
वानां... निमज्जनं पृथिव्याः, स्थाना-
दपसरणं सुराणां.. इत्येतस्मिन्..
संसारे किं कामोपभोगैः ? मैत्रे. १।२
(अथ) किमेतैर्वा परेऽन्ये गन्धर्वासुर..
महादीनां निरोधनं पश्यामः मैत्रा. १।७
(अथ) किमेतैर्वा परेऽन्ये महाधनु-
र्धराश्चक्रवर्तिनः केचित्सुद्युम्न-
भरतप्रभृतयो.. महतीभिर्यत्नक्त्वा-
ऽऽमालोकादमुं लोकं प्रयाताः मैत्रा. १।६
किमेष दृष्टोऽदृष्टो वेति दृष्टो
विविधाविदितात्पर इति होचुः नृसिंहो. ९।१०
कियत्स्वतीतेष्वनेहस्सु तपसि स्थिते
ब्रह्मणि पुरो भूत्वा.. गणेशो. ३।८
किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तं
किरीटिनं गदिनं चाक्रिणं च
किल्बिषं हि क्षयं नीत्वा भ.गी. ११।४६
किंकरोमिक्काच्छामि किंगृहामित्य-
जामिकिम् । यन्मया पूरितं विश्वं.. भ. गी. ११।१७
किं कर्म किमकर्म अ.ना. ९
किं कर्म किमकर्मैति वराहो. २।३५
किं कर्म पुरुषोत्तम निरालं. ४
किं कारणं ब्रह्म, कुतः स्म जाता भ.गी. ४।१६
जीवाम केन क च सम्प्रतिष्ठा.. भ.गी. ८।१
किं कुलं वृत्तिहीनस्य करिष्यति... वराहो. २।३५
किं क्षत्रिया लोकमपालयन्तः,
स्वधर्महीनास्तु... वैश्याः भवसं. २।६४
किं ग्राह्यं किमग्राह्यम् निरालं. ४
किं ज्ञातेन तवार्जुन भ.गी. १०।४३
किं तद्वद्वा किमध्यात्मं भ.गी. ८।१
किं तत्परमरहस्यशिवतत्त्वज्ञानं द.मू. १
किं तत्पादचतुष्टयात्मकं ब्रह्म भवति ?
अविद्यापादः सुविद्यापादश्चानन्द-
पादस्तुरीयापादश्चेति त्रि.मा.ना. १।४
किं तदत्र विद्यते यदन्वेष्टव्यम् छांदो. ८।१।१
किं तद्वयानं को वा ध्याता कश्चिद्वेद्यः अग्निसो. १
किं तद्वत्सत्यमिति, यदन्येदेवेभ्यश्च
प्राणेभ्यश्च तत्सत् कौ.उ. १।६
किं ताभिर्यजतीति यत्किञ्चेदं प्राणभृत् बृह. ३।१।७

किं ताभिर्यजतीति, याहुता उज्ज्वलन्ति	
देवलोकमेवं ताभिर्जयति	बृह. ३।१।८
किं तेन, न किञ्चनेति होचुः	नृसिंहो. ९।१०
किं त्वमेतच्छिरः किन्तु उरस्तव...	भवसं. २।२८
किं दुर्लभं शिवभक्तस्य लोके..	सि. शि. २५
किं दुष्करं तपो मर्त्यानां	कात्याय. १
किं देवतोऽस्यां प्रतीच्यां दिश्यसीति	
वरुणदेवत इति	बृह. ३।९।२२
किं देवतोऽस्यां दक्षिणायां दिश्य-	
सीति यमदेवत इति	बृह. ३।९।२१
किं देवतोऽस्यां प्राच्यां दिश्यसीति	
आदित्यदेवत इति	बृह. ३।९।२०
किं देवतोऽस्यामुदीच्यां दिश्यसीति,	
सोमदेवत इति	बृह. ३।९।२३
किं देवतोऽस्यां ध्रुवायां दिश्यसीति	
अग्निदेवत इति	बृह. ३।९।२४
किं देवतमित्यूचामग्निर्देवतं	
तदेव ज्योतिः	२ प्रणवो. २१
किं नामेवं बत सुखं... जायते	
मृतये लोको म्रियते	भवसं. १।२५
किं नो राज्येन गोविन्द	भ.गी. १।३२
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः	भ.गी. ९।३३
किं प्रजया करिष्यामो येषां	
नोऽयमात्माऽयं लोकः	बृह. ४।४।२२
किं ब्राह्मणा ये सुकृतं त्यजन्ति	भवसं. २।६४
किं भगवन्तः परमं वदन्ति	महाना. १७।१
किं भोगैर्जीवितेन वा	भ.गी. १।३२
किं मन्त्रैर्बहुभिर्विनश्वरफलैरायाससाध्यै-	
वृथा.. संसारदुःखावहैः । एकः	
सन्नपि सर्वमन्त्रफलदो.. श्रीरामः	
शरणं ममेतिसततं मन्त्रोऽयमष्टाक्षरः	रामर. २।३८
किं वर्णये त्वाम्, सहस्रकृत्वो नमस्ते	लक्ष्म्यु. ७
किं वा पुनरिमे भगवदिति, तत्पुरुष इति	पञ्चम. १
किं सद्वितीदमिदं नेत्यनुभूतिः	नृसिंहो. ७।३
किं सीमिच्छरणं मन्यमानः	बा.मं. ७
किं विदेवैर्विदुषे साधु कुर्या	
किमेवास्मै..	बृह. ५।१२।१
कीदृशमरण्यायेन मुक्तो भवति	ना.प. ५।५२
कीर्तनात्सर्वदेवस्य सर्वपापैः प्रमुच्यते	रुद्रह. १७

कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव	उप.सांतिः
कीर्तिः श्रीर्वाक् च नारीणां	भ.गी. १०।३४
कीलवो दृषिका लाला स्वेद-दुर्गन्ध-	
ताऽऽनने । एतानि सर्वथा तस्य	
न जायन्ते ततः परम्	१ यो.त. ५७
कुक्कुटाण्डवदाकारं (कन्दस्थानं)..	
तन्मध्ये नाभिरित्युक्तं..	जा. व. ४।४
कुक्कुटाण्डाकारं महदादिसमष्ट्याकार-	
मण्डं (ब्रह्माण्डं) तपनीयमयं..	त्रि.म.ना. ६।२
कुक्कुटासनबन्धस्थो दोर्भ्यांसम्बध्य	
कन्धरं.. एतदुत्तानकूर्मकं (आसनं)	त्रि.ब्रा. २।४२
कुङ्कुमादिसहितं विष्णुचन्दनं	
ममाङ्गे प्रतिदिनमालिप्तं	वासुदे. २
कुङ्कुमारुणसर्वाङ्गं कुन्देन्दुधवलाननं	
(गरुडं ध्यायेत्)	गारुडो. ८
कुक्षिमेहनपार्श्वे च स्फुरणानुप-	
लम्भने । मासावधिर्जीवतस्य	
तदर्धस्य तु दर्शने	त्रि. ब्रा. २।१४२
कुक्षौ तिष्ठति यस्यान्नं वेदाभ्यासेन	
जीर्यते ।.. कुलं तारयते तेषां..	इतिहा. ४८
कुक्षौ (चित्तस्य) संयमाद्बुवर्लोकज्ञानं	शांडि. १।७।५२
कुचैलोऽसहाय एकाकी समाधिस्थ	
आत्मकाम आप्तकामो.. हस्तिनि	
सिंहे.. मृत्यो रूपाणि विदित्वा	
न बिभेति कुतश्चनेति	सुबालो. १३।१
कुटीचक-बहूदकयोर्देवार्चनम्	ना. प. ७।९
कुटीचक-बहूदकयोर्मन्त्रजपाधिकारः	ना. प. ७।९
कुटीचक-बहूदकयोर्मानुषप्रणवः	ना. प. ७।१०
कुटीचक-बहूदकयोः श्रवणम्	ना. प. ७।११
कुटीचक-बहूदक-हंसानां ब्रह्मचर्या-	
श्रमादि तुरीयाश्रमादिवत्	ना. प. ५।५
कुटीचक-बहूदक-हंसानां नान्यस्यो-	
पदेशाधिकारः	ना. प. ७।९
कुटीचकस्यैकत्र भिक्षा	ना. प. ५।७
कुटीचकस्यैकान्नं, माधुकरं बहूदकस्य,	
हंस-परमहंसयोः करपात्रं, तुरीया-	
तीतस्य गोमुखं, अवधूतस्या-	
जगरवृत्तिः	ना. प. ७।७

कुटीचकः शिखायज्ञोपवीती दण्ड-
कमण्डलुधरः कौपीनशाटीकन्या-
धरः... त्रिदण्डः.. [ना. प. ५।६+ १सं.सो. २।१३
कुटीचका नाम गौतम-भरद्वाज..प्रभु-
तयोऽष्टौ ग्रामाश्चरन्तो योगमार्गे
मोक्षमेव प्रार्थयन्ते भिक्षुको. १
कुटीचको बहूदकत्वं प्राप्य बहूदको
हंसत्वमवलम्ब्य हंसः परमहंसो
भूत्वा..देहमात्रावशिष्टो..एकाकी
सञ्चरन्..देहत्यागं करोति यः,
सोऽवधूतः स कृतकृत्यः... तुरीया. ३
कुटीचको बहूदकश्चापि हंसा परम-
हंस इव वृत्त्या च भिन्नाः शाटयाय. ११
कुटीचको वा बहूदको वा... प.हं.प. ८
जातरूपधरश्चरेत्
कुटीचको बहूदको हंसः परमहंसः
तुरीयातीतोऽवधूतश्चेति
(षड्विधः संन्यासः) ना. प. ५।९
(अथ...) कुटीचको बहूदको हंसः
परमहंस इत्येते परिव्राजका-
श्चतुर्विधा भवन्ति शाटयाय. ११
कुटीचरा बहूदका हंसाः परमहंसा-
श्चेति (चतुर्विधाःपरिव्राजकाः) आश्रमो. ४
(तत्र) कुटीचराः स्वपुत्रगृहेषु भिक्षा-
चर्यचरन्तआत्मानं प्रार्थयन्ते आश्रमो. ४
कुटीचरो ब्रह्मचारी कुटुम्बं विसृजेत् आरुणि २.
कुटुम्बं पुत्रदारांश्च वेदाङ्गानि.. यज्ञं
यज्ञोपवीतंचत्यक्त्वागूढश्चरेद्यतिः ना.प. ३।३२
कुटुम्बी शुचौ देशे स्वाध्याय... (मा.) छां.उ. १।१५।१
कुटुम्बे शुचौ देशे स्वाध्यायमधीयानः छां.उ. ८।१५।१
कुणपमिव सुनारी त्यक्तुकामो विरागी ।
विषमिव विषयादीन्मन्यमानो
दुरन्ताऽजगति परमहंसो वासुदेवः... वराहो. २।३७
कुण्डलिनी ज्ञानशक्तिर्गृहम् भावनो. २
कुण्डलिनीबन्धः परापवादमुक्तः.. निर्वाणो. २
कुण्डलिन्या अधश्चोर्ध्वं वारुणी
सर्वगामिनी शां.डि. १।४।६
कुण्डलिन्या तया योगी मोक्षद्वारं
विभेदयेत् ध्या.विं. ६८

कुण्डलिन्या समुहृता गायत्री
प्राणधारिणी यो.चू. ३५
कुण्डल्या पिहितं शम्भद्रक्षरन्ध्रस्य
मध्यमम् । एवमेतासु नाडीषु
धरन्ति दश वायवः वराहो. ५।३०
कुण्डल्येव भवेच्छक्तिस्तांतुसञ्चाल-
येद्बुधः । स्वस्थानादाभ्रुर्भोर्मध्यं
शक्तिचालनमुच्यते योगकुं. १।७
कुण्डिकांचमसंश्लिष्यं..अतोऽतिरिक्तं
यत्किञ्चित् (यज्ञोपवीतं वेदांश्च कठरु. ४)
सर्वतद्वर्जयेद्यतिः [कुंडिको. ९, १० + कठश्रु. ३५
कुत उ एतावत्प्रतिगृहीयात् बृह. ५।१४।६
कुतस्तुखलु सोम्यैवंस्यादितिहोवाच-
कथमसतः सज्जायेतेति छांदो. ६।२।२
कुतस्त्वा कश्मलमिदं भ.गी. २।२
कुतो जातेयमितितेद्विजमास्तुविचारणा महो. ५।११४
कुतोऽन्यः कुरुसत्तम भ.गी. २।२
कुत्सितानन्तजन्माभ्यस्त..कर्मवास-
नाजाल... देहात्मविवेको न... त्रि.म. ना. ५।३
कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः भ.गी. १।१६
कुबेरं ते मुखं रौद्रं...ज्वरं मृत्युभयं
घोरं द्विषं नाशय.. वनदु. ९७
कुमार एको विशिखः सुधन्वा एकाक्ष. ३
कुमारमेवाप्येति यः कुमारमेवास्तमेति सुबालो. ९।९
कुमारः पितरमात्मानुभवमनु-
ब्रूहीति पप्रच्छ ते.विं. ३।१
कुमारानु त्वाशिषत्पितेत्यनु हि
भगव इति छान्दो. ५।३।१
कुमारामेवाप्येति यः कुमारा-
मेवास्तमेति सुबालो. ९।६
कुम्भकं पूर्ववत्कृत्वा रेचये-
दिदयाऽनिलम् योगकुं. १।३७
कुम्भकान्ते रेचकादौ कर्तव्यस्तूडि-
यानकः..प्राणस्तूड्यते यतः । योगकुं. १।४७
तस्मादुड्डीयणाख्योऽयं... [यो. शि. १।१०६+
कुम्भकेन समारोप्यकुम्भकेनैव पूरयेत् वराहो. ५।५९
कुम्भकेन हृदि स्थाने चिन्तयेत्
कमलासनम् । ब्रह्माणं..चतुर्वक्त्रं.. ध्या. विं. ३१

कुम्भेनकुम्भयेत्कुम्भं तदन्तस्स्यःपरं..	वराहो. ५।६०	कुलक्षये प्रणश्यन्ति	म. गी. १।४०
कुम्भे विनश्यति चिरं समवास्थिते		कुलगोत्रकरीं विद्याधनधान्ययज्ञ-	
वा कुम्भाम्बरस्य न हि कोऽपि		स्करीम्. वन्दे तां जगदीश्वरीम्	वनदु. १९
विक्षेपलेखः	वराहो. २।६६	कुलग्नानां कुलस्य च	म. गी. १।४२
कुल कर्मव तस्मात्त्वं	म. गी. ४।१५	कुल-गोत्र-जाति-वर्णाश्रम-रूपाणि	
कुलकुला बलिदेवता माता	भावनो. २	षड्भ्रमाः	मुद्रलो. ४।९
कुलक्षेत्र एवोपसमेत्य ये		कुलधर्माः सनातनाः	म. गी. १।४०
बालिशास्तानुपाध्वे	छागले. ३।१	कुलधर्माश्च शाश्वताः	म. गी. १।४३
कुलक्षेत्रं कुलस्थाने प्रयागंहत्सरोरुदे	जा. द. ४।४९	कुलाचाररताः सन्ति गुरवो बहवो मुने	अमन. २।१६
कुलक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां		कुलाचारविहीनस्तु गुरुरेको हि दुर्लभः	अमन. २।१६
भूतानां ब्रह्मसदनम्	आवा. १	कुलाचक्षुः कन्यायेन परिभ्रमति (जीवः)	पैङ्गलो. १।५
कुल हर संहारं जगद्धरणाद्धरो भव	ग. शो. ३।१३	कुले भवति बीमताम्	म. गी. ६।४२
कुलबृद्धः पितामहः	म. गी. १।१२	कुशलाज प्रमदितव्यम्	तैत्ति. १।११।१
कुर्वाच्छ्राद्धं महालयम्, शून्याप्रेतपुरी		कुशला ब्रह्मवार्तायां वृत्तिहीनाः	
तत्र यावद्वृश्चिकदर्शनात्	इतिहा. ९१	सुरागिणः । तेऽप्यज्ञानतया	
कुर्वन्निन्तरं मक्षी कुण्डलीमाशु		नूनं पुनरायान्ति यान्ति च	ते. विं. १।४६
बोधयेत् । भिद्यन्ते ग्रन्थयो वंशे..	यो. शि. १।११३	कुशले नानुषज्जते	म. गी. १८।१०
कुर्वादायतने शोभांगुरुस्थानेषु सर्वतः	शिवो. ७।७५	कुहाचिवेष स्वपिता पिता नो-	वा. मं. ५
कुर्वादिद्वांस्तथाऽसक्तः	म. गी. ३।२५	कुहेव ते चित्रतम प्रतिष्ठा	वा. मं. ५
कुर्वाप्तासाप्रदष्टि च हस्तो पादौ च		कुहेव मा वशमिधो न यातै (सै)	वा. मं. ५
संयतो । मनः सर्वत्र संयम्य....		कुहोश्च हस्तिजिह्वाया मध्ये	
ध्यायेत्... हृत्कृत्वा परमेश्वरम्	विश्वोदरी स्थिता	जा. द. ४।१५
कुर्वन्नपि न कुर्वणश्चाभोक्ता		कुहोः क्षुदेवता प्रोक्ता गान्धारी	
फलभोग्यपि	आत्मो. १३	चन्द्रदेवता (नाड्याः)	जा. द. ४।३८
कुर्वन्नपि न लिप्यते	म. गी. ५।७	कूटस्थचेतनोऽहं निष्क्रियधामाह-	
कुर्वन्नभ्यासमेतस्यां भूमिकायां		मप्रतर्क्योऽहम्	आ. प्र. ६
विवासनः	अक्षुप. ४०	कूटस्थो बोधवर्जितः, एकः सम्भि-	
कुर्वन्नभ्यासमेतस्यां भूम्यां... सप्तमी		द्यते भ्रान्त्या मायया, न	
गाढसुप्ताख्या.. पुरातनी	वराहो. ४।१६	स्वरूपतः (आत्मा)	जा. द. १०।२
कुर्वन्नाप्रोत्तिकृत्वेषं [म. गी. ४।२१	+१८।४७	कूटस्थोपहितभेदानां स्वरूपलाभहेतु-	
कुर्वन्नेवेह कर्माणि	ईशा. २	भूत्वा सूत्रे मणिगणे सूत्रमिव	
कुर्वन् सिद्धिमवाप्स्यसि	म. गी. १२।१०	सर्वक्षेत्रेष्वनुस्यूतत्वेन यदा फलश्रयते	
कुर्वाणाऽचीरमात्मनः	तैत्ति. १।४।१	आत्मा तदाऽन्तर्यामीत्युच्यते	सर्वसारो. ५
कुर्वाणो मद्ब्रह्मपाश्र्वयः	म. गी. १८।५६	कूटस्थमचलं ध्रुवम्	म. गी. १२।३
कुलकुमारि विद्महे मंत्रकोटिसुधी-		[त्रि. म. ना. ७।७+	यो. शि. ३।२१
महि । तन्नः कौलिः प्रचोदयान्	त्रि. ता. ३।६	कूटस्थं सत्त्वरूपं किरीटं प्रवदन्ति माम्	गोपालो. २।३३
कुलकुमार्यैर्विद्महे कौलदेवायधीमहि ।		कूटस्थोऽक्षर उच्यते	म. गी. १५।१६
तन्नः कौलः प्रचोदयान्	वनदु. १४४	कूटस्थो विजितेन्द्रियः	म. गी. ६।८
कुलक्षयकृतं दीपं	म. गी. १।३८	कूटस्थोऽहं गुरुः परः	ते. विं. ६।६९

कूर्परिणमेव सौम्या इति (पश्यध्वं) छाग. ५।२
 कूर्पराम्रे मुनिभेषु.. दण्डवद्वयोभि
 संस्थितः । मयूरासनमेतत्स्यात्.. जा.द. ३।१०
 कूर्परे स्फुरण्यस्य.. त्रैमासिकीस्थितिः त्रि.ब्रा. १३१
 कूर्मनाड्यां स्थैर्यम् (चित्तसंयमात्) शांडि. १।७।५२
 कूर्मरोम्णा गजेवद्वेजगदस्तु मदोत्फटे ते. बि. ६।८२
 कूर्मवत्पाणिपादाभ्यां शिरश्चा-
 त्मनि धारयेत् २ योगत. १२
 कूर्मः स्वपाणिपादादि शिरश्चात्मनि
 धारयेत् । एवं सर्वेषु द्वारेषु
 वायुपरितरेचितः १यो.त. १४०
 कूर्मोऽश्वादिनिमीलनः (वायुः) त्रि.ब्रा. २।८६
 कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः भ.गी. २।५८
 कूर्मोऽङ्गानीव संहृत्य मनो हृदि
 नियम्य च । ..प्रणवेन शनैः
 शनैः पूरयेत् .. क्षुरिको. ३
 कूकमाण्डानि तांस्तेष्वन्वविद-
 ष्वद्वया तपसा च सहवै. ११
 कूकरः क्षुतयोः कर्ता (वायुः) त्रि.ब्रा. २।८७
 (अपि) कूकलास्यैतस्या एव
 देवताया अपचित्यै.. बृह. १।५।१४
 कूषन्ति फलिभिः (यदिदं) आर्षे. १।२
 कूषकृत्यश्च भारत भ.गी. १।५।२०
 कूषविद्यः सत्यधर्मयुतो जितक्रोधो..
 सुशोभनमठं कृत्वा तत्र वेदान्त-
 श्रवणं कुर्वन्योगं समारमेत् शांडि. १।५।१
 कूषज्ञानो धौतवस्त्रः..गायत्र्या
 मूत्रमाहरेत् बृ.जा. ३।५
 कूषस्फारविचारस्य मनो भोगादयो-
 ऽरयः । मनागपि न भिन्दन्ति.. अ.पू. २।४३
 कूषस्यानुं फलैरभिभूयमानः
 परिभ्रमति (भूतात्मा) मैत्रा. ३।२
 कूषकृत्यतया तृप्तः प्राप्तप्राप्ततया पुनः ।
 तुष्यन्नेवंस्वमनसामन्येत..बन्धोदं.. अवधू. २६
 कूषं दिने यदुरिति...सर्वं दहति
 निशेषं तूलराशिमिवानलः
 (राममंत्रः) रामो. ५।७
 कृताकृतकर्मभवति, शुभाशुभं च विदति गर्भो. ३
 कृताञ्जलिभाषत भ.गी. ११।१४

कृताञ्जलिर्ब्रह्मणः किरीटी भ.गी. ११।३५
 कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः,
 ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीराः..
 सर्वमेवाविशन्ति मुंड. ३।२।५
 कृतार्थतया कामरागादिदोषरहितः
 (वर्तते स ब्राह्मणः) व.सू. ९
 कृतार्थोऽहमिति मत्वा स्वाभ्रमा-
 चारपरो भवेत् ना.प. ४।५०
 कृतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्येति
 कृति भगवो विजिज्ञास इति छान्दो. ७।२१।१
 कृत्वाचनैत्यकंसर्वमधीयीताज्ञयागुरोः शिवो. ७।२५
 कृत्वा दूरतरे नूनमिति शब्दार्थ-
 भावनम्.. तच्छ्रेष्ठासङ्ग उच्यते अक्षुप. २९
 कृत्वाऽपि न निबध्यते भ.गी. ४।१२
 कृत्वा सम्पुटितौ करौ दृढतरं बध्वा-
 ऽथ पद्यासनं.. उपैति बोधमतुलं
 शक्तिप्रभावान्नरः [ध्या.बि.६९+ यो. चू. ४०
 कृत्वैव निश्चिति छान्दो. ७।२१।१
 कृत्स्नजगतां मातृकाविद्याद्वित्रिवर्ण-
 सहिता द्विवर्णमात्रात्रिवर्णसहिता पा. ब्र. २
 कृत्स्नविन्न विचालयेत् भ.गी. ३।२९
 कृत्स्नं लोकमिमं रविः भ.गी. १३।३०
 कृत्स्नो ह्येष आत्मा यद्वृद्धीतस्मा-
 द्बृद्धीमेवाभिसम्पादयेत् १ पेत. ३।५।४
 कृदन्तमर्थवत्प्रातिपदिकमदर्शनं
 प्रत्ययस्य नाम सम्पद्यते २ प्रणवो. १४
 कृशरोगार्तबुद्धानां त्यक्तानां (गवां)
 ..निर्जने बने ।.. नीत्वा यस्तृण-
 तोयानि..प्रयच्छति..अन्तेमुक्ति-
 मवाप्नुयात् शिवो. ७।९६।९८
 कृपणंतुमनोब्रह्मन्गोष्पदेऽपि निमज्जति अ.पू. १।४३
 कृपणाः फलहेतवः भ.गी. २।४९
 कृपया परयाऽऽविष्टः भ.गी. १।२५
 कृपया भगवान्विष्णुं विददार नलैः
 खरैः ।..स एको रुद्रो ध्येयः शरभो. ७
 कृपश्च समितिजयः भ.गी. १।८
 क्रमयः किंजायन्तेकुसुमेषु पुगन्धिषु.. भवसं. २।६५

कृशो भूत्वा ग्राम एकरात्रं, नगरे पञ्चरात्रं, चतुरोमासान्वार्षिकान् ग्रामेवा..वसेत् [१सं.सो.१।२+	कठश्रु. ७	केचित्कर्कवितर्ककर्कशधियोऽहङ्कारदुर्पो- द्धता...दृश्यन्तेनहि निर्विकारसहजा- नन्वैकभाजो भुवि	अमन. २।३२
कृशो भूत्वा मेदोवृद्धिमकुर्वन्नाज्यं रुधिरमिव त्यजेत्	ना. प. ७।१	केचित्तु मूर्खा वयं परमभक्ता इति वदन्तो रुदन्ति पतन्ति च	स्वसंवे. ३ .
कृशोऽहं दुःखबद्धोऽहं हस्तपादादिमानहं कृशितोरुषवाणिज्यं	महो. ४।१२५ भ.गी. १८।४४	केचित्प्रथमजन्मानः (जीवाः) केचिज्जन्मशताधिकाः	महो. ५।१३७
कृष्ण कृष्ण हरे हरे कृष्णगोपीरतोऽर्त पापघ्नं गोपि- चन्दनम् । ..चतुर्वर्गफलप्रदम्	कलिसं. २ गोपीचं. २३	केचित्पट्त्रिंशत्तत्त्वानि केचित् षण्णवतीति च	वराहो. १।१ महो. ५।१३९
कृष्णद्वैपायनायैस्तु साधितो लभ्यसंज्ञितः (मंत्रयोगः)	योगरा. ४	केचिदात्मानमात्मना केचिद्गीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति	भ. गी. ११।२५ भ. गी. ११।२१
कृष्णन्ति फलीभिः (पाठः) कृष्णप्राणाधिदेवाऽर्चेत्,	आर्षे. १।२	केचिद्वदन्ति चाधारं सुषुम्ना च सरस्वती	यो. शि. ६।२२ भ. गी. ११।२७
विविकेति वेदाः स्तुवन्ति कृष्णमेवाप्येति यः कृष्णमेवास्तमेति	राधिको. ५ सुबालो. ९।११	केचिद्विलम्बा दशनान्तरेषु केचिन्मूत्रं पिबन्ति स्वमलमपि तथा	
कृष्णवर्णे दक्षिणदले यदा विश्राम्यते मनः । निद्रालभ्यभयं देवि मत्सरे च मतिर्भवेत्	विश्रामो. ३	केचिदुज्जान्तिलालां, नैतेषां देहसिद्धिः केचिद्राक्षणभूपालवैश्यशूद्रगणाः	अमन. २।३१ महो. ९।१३९
कृष्णस्तथैकोऽपि जगद्धितार्थं शब्देनासौ पञ्चपदो विभाति	गो. पू. २।३	केचिद्वयं देवा इति (वदन्ति)	स्वसंवे. ३
कृष्णं सन्तं विप्रा बहुधा यजन्ति कृष्णात्मिका जगत्कर्त्री मूल-	गो. पू. २।२	केचिद्वयं देवानुग्रहवन्तः (इति वदन्ति)	स्वसंवे. ३
प्रकृती रुक्मिणी कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय	गोपालो. २।१७	केचिद्वयं वैदिका इति वदन्ति	स्वसंवे. ३
नमोनमः कृष्णां धेनुं कृष्णवत्सां नलदमाली	गो. पू. ४।४	केचिद्वयं श्रीमद्रमारमण- (चरण)- नलिनभृङ्गा इति (वदन्ति)	स्वसंवे. ३ स्वसंवे. ३
दक्षिणामुखो ब्राजयति कृष्णो ब्रह्मैव शाश्वतम्	३पेत. २।४।७ कृष्णो. १२	केचिद्वयं सर्वशास्त्रज्ञा इति (वदन्ति)	स्वसंवे. ३
कृष्णोऽहं वैपरोदेवः षड्विधैश्वर्यपरि- पूर्णो भगवान् गोपीगोपसेव्यो	राधिको. ३	केचिद्वयं स्वप्ने उपास्यदेवताभाषिणः (इति वदन्ति)	स्वसंवे. ३
वृंदाराधितो वृंदावनाधिनाथः केचन तत्तदेतदात्मानमोमित्य-		केचित् सुद्युम्नभूरिद्युम्नेन्द्रद्युम्न... राजानो मिषतो बंधुवर्गस्य	
पश्यन्तः पश्यत केचिन्नासङ्गजन्मानः (जीवाः)	नृसिंहो. ९।८	महतीं भियं त्यक्त्वाऽस्माल्लोकादमुं लोकं प्रयाताः	मैत्रा. १।६ वनदु. ३५ वा.सं. २९।३७
केचिद्विभिन्नान्तराः केचित्त्वादन्ति धातूनखिलतनुशिरा-	महो. ५।१३८	केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो... [क्र.अ. १।१।११=मं. १।६।३+ [अथर्व. २०।२६।६	चित्त्यु. १।१
त्रायुसञ्चारदक्षानैतेषां देहसिद्धिः..	अमन. २।३१	केतो अग्निः, विज्ञातमग्निः केदारं तु ललाटके । वाराणसी महा- प्राज्ञ भुवोर्ग्राणस्य मध्यमे	जा. द. ४।४८
		केन कर्माणि (आप्नोति) इति, हस्ताभ्यामिति (ब्रूयात्)	को. त. १।७

केन गन्धान् (आप्नोति) इति, प्राणेनेति (ब्रूयात्) केन-छांदोग्यारुणि-मैत्रायणि-मैत्रेयी- वज्र-सूचिका-योगचूडामणि- वासुदेव-महत्सूत्र्यासाध्यक्त- कण्डिका-सावित्री-रुद्राक्ष- जाबालदर्शन-जाबालीनां सामवेद-गत्तानां षोडश- सङ्ख्याकानामुपनिषदां ' आप्न्यायन्तु ' इति शान्तिः केन जायमानोऽस्योराप्तिमतिमुच्यते होत्रत्विजाभिना वाचा.. केन त्वं चिरं जीवसि, केन वाऽऽनन्दमनुभवसि केन धियो विज्ञातव्यं कामान् (आप्नोति) इति, प्रह्वयेति प्रब्रूयात् केन नपुंसकनामानि (आप्नोति) इति, मनसेति (ब्रूयात्) केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः केन भगवन् कर्माण्यशेषतो विस्तृजामि (तमाह) केन मे पाँक्तानि नामान्या- प्नोतीति, प्राणेनेति ब्रूयात् केन यजमानः पूर्वपक्षापरपक्षयो- राप्तिमतिमुच्यते केन यजमानोऽहोरात्रयो- राप्तिमतिमुच्यते केन रूपाणि (आप्नोति) इति, चक्षुषेति (ब्रूयात्) (अथ) केन रूपेणेमं लोकमाभवती ३ केन शब्दान् (आप्नोति) इति, भोत्रेणेति (ब्रूयात्) केन सुकरेणामृतत्वमेति केन सुखदुःखे (आप्नोति) इति, शरीरेणेति (ब्रूयात्) केन स्त्रीनामानि (आप्नोति) इति, वाचेति (ब्रूयात्) केनाक्रमणेन यजमानः स्वर्गं लोकमा- क्रमते, ब्रह्मणस्त्विजा मनसाचंद्रेण..	कौ. त. १।७ मुक्ति. १।५६ बृह. ३।१।३ द. मू. १ कौ. उ. १।७ कौ. उ. १।७ केनो. १।१ आरुणि. १ कौ. उ. १।७ बृह. ३।१।५ बृह. ३।१।४ कौ. उ. १।७ १ ऐत. ३।७।२ कौ. उ. १।७ कात्याय. १ कौ. उ. १।७ कौ. उ. १।७ कौ. उ. १।७ कौ. उ. १।७ बृह. ३।१।६	केनानन्दं रतिं प्रजातिं (आप्नोति) इति, उपस्थेनेति केनान्नरसान् (आप्नोति) इति, जिह्वयेति (ब्रूयात्) केनाप्यबाधितत्वेन त्रिकालेऽप्येक- रूपतः । विद्यमानत्वमस्त्येतत् सद्रूपत्वं सदा मम केनाहमेकेनाक्षरेण सर्वोऽक्ष कामान् सर्वोऽक्ष... केनेत्या (आप्नोति) इति, पादाभ्यामिति (ब्रूयात्) केनेषितं पतति प्रेषितं मनः केनेषितां वाचमिमां वदन्ति केनोत्क्रमते कथं बाह्यमभिसन्धत्ते (प्राणः) कथमध्यात्मम् के मनुष्याः केपश्चादयः केब्राह्मणादयः केयूराङ्गदकङ्कणैर्मणिगतैर्विद्योत्तमानं सदा.. देवेशं भरतादिभिः परि- वृतं रामं भजे श्यामलम् केवलकुम्भके सिद्धे त्रिषु लोकेषु न तस्य दुर्लभं... केवलकुम्भकात् कुण्डलिनी- बोधो... भवति केवलजीवयुक्तमेव तुरीय- मिति (तुरीयावस्था) केवलनिराकारस्य गगनस्येव परब्रह्मणोऽपि जडत्वमापद्येत केवलमकारोकारमकारार्धमात्रासहितं प्रणवमूहं यो राममंत्रं जपति तस्य शुभकरोऽहं (हनूमान्) स्याम् केवलमंत्रमयदिव्यतेजोमय... महाविष्णुसायुज्यविग्रहं... केवलमोक्षापेक्षासङ्कल्पो बन्धः केवलसिद्धिपर्यंतं सहितमभ्यसेत् केवलं केवलाभासं.. चैत्यानुपातरहितं चिन्मात्रमिह विद्यते केवलं क्षीणमननमास्तेऽद्वैतेऽतिनिर्भयः केवलं चित्प्रकाशांशकल्पितास्थिरतां गतां । तुर्या सा प्राप्यते दृष्टिः..	कौ. उ. १।७ कौ. उ. १।७ बराहो. ३।९ कौ. उ. १।७ केनो. १।१ केनो. १।१ प्रभो. ३।१ निरा. उ. ४ रामर. २।३७ शांडि. १।७।१४ शांडि. १।७।१४ शारीरको. १० त्रि. म. ना. २।४ रामर. १।६ त्रि. म. ना. ५।५ निरा. उ. २१ शांडि. १।७।१४ महो. ४।१२१ अक्षुप. ४१ अ. पू. १।५१
--	--	--	---

केवलं चित्तिविश्रम्य..सर्वत्रनीरसमिह

तिष्ठत्यारमरसं मनः

अ. पू. २।९

केवलं चित्सदानन्दप्रद्योवाहं जनार्दनः

बराहो. ३।१९

केवलं ज्योतीरूपमनाद्यन्तमनष्वस्थूल-

रूपमरूपं रूपविद्विज्ञेयं ज्ञानरूप-

मानन्दमयमासीत् (३६-ब्रह्माण्डं)

अव्यक्तो. १

केवलं ज्ञानरूपोऽस्मि केवलं प्रिय-

मस्म्यहम् ।.. निरीहोऽस्मि..

ते. वि. ३।५

केवलं ज्ञानरूपोऽहं केवलं परमो-

ऽस्म्यहम् । केवलं शान्तरूपोऽहं..

ते. वि. ३।१

केवलं तन्मनोमात्रमयेनासाद्यते पदं ।

यानि दुःखानि या तृष्णा..शान्त-

चेतस्सुखत्सर्वतमोऽकेंद्विवनश्यति

महो. ४।२८

केवलं तुर्यरूपोऽस्मि तुर्यातीतोऽस्मि

केवलः ।..चिदानन्दमयोऽस्म्यहम्

ते. वि. ३।४

केवलं नित्यरूपोऽहं केवलं शाश्वतो-

ऽस्म्यहम् ।..अहंत्यक्त्वाऽहमस्म्यहं

ते. वि. ३।२

केवलं ब्रह्ममात्रत्वात्मास्त्य-

नात्मेति निश्चिनु

ते. वि. ५।१७

केवलं ब्रह्ममात्रत्वादहमात्मासनातनः ।

अहमेवादिशेषोऽहमहं शेषः..

ते. वि. ३।३५

केवलं ब्रह्ममात्रोऽस्मि ह्यजरोऽस्म्य-

मरोऽस्म्यहम् । स्वयमेव स्वयं..

ते. वि. ३।२१

केवलं शान्तरूपोऽहंकेवलंचिन्मयोऽ..

ते. वि. ३।२

केवलं सत्त्वरूपोऽहमहंत्यक्त्वा-

ऽहमस्म्यहम्

ते. वि. ३।३

केवलं साक्षिरूपेण विना भोगं

महेश्वरः । प्रकाशते स्वयं भेदः

कल्पितो मायया तयोः [रु.ह.४२

+अ.पू.४।३३

केवलं सुसमः स्वच्छो मौनी मुदित-

मानसः । सम्पूर्ण इव शीतांशु-

रतिष्ठदमलः शुक्रः

महो. २।२७

केवलः परमात्माऽहं...जीवेश्वरेति

वाक् केति..इति निश्चयशून्यो

यो वैदेही मुक्त एव सः

ते.वि.४।४५-४७

केवलाकाररूपोऽस्मिशुद्धरूपोऽस्म्यहं

ते. वि. ३।५

केवलाखण्डबोधोऽहं स्वानन्दोऽहं

निरास्वः । स्वमेव सर्वतः पश्यन्..

कुण्डिको. ३६

केवळे दर्पणे नास्ति प्रतिबिम्बं

तदा जगत् (सत्यं)

ते. वि. ६।९८

केवळे द्रष्टरि क्षीणं रूपं नाह-

मचेतनम्

१खं.सो. २।१८

केवलैरिन्द्रियैरपि

अ. गी. ११।९

केवलोऽहं कविः कर्माध्यक्षोऽहम्..

अ. वि. ९४

केवलोऽहं सदाशिवः

अज्यात्मा. ६९

केशकज्जलधारिण्यो दुस्स्पर्शा लोचन-

प्रियाः । दुष्कृतामिश्रित्वा नार्यो

दहन्ति तृणवज्रम् [महो.३।४३

+ याज्ञव. १२

केशकीटादिभिर्दुष्टं सूतकाजं...

अनर्पितं च यद्विष्णोः..

अवसं. ४।१२

केशवार्जुनयोः पुण्यं

अ.गी.१८।७६

केशदमश्रुलोमनखानि बापयेत्

सोऽस्याग्निष्टोमः (सङ्ग्यासिनः)

कठश्रु. २१

केशव केशहरण नारायण जनार्दन ।

गोविन्द परमानन्द मां समुद्धर..

गो.पू. ४।१५

केशा दर्भाः (शारीर्यज्ञस्य)

प्रा. हो. ४।३

केशास्थीनि कपालानि कार्पासास्थि-

तुषाणिच..नाधितिष्ठेद्रजांसि च

शिवो. ७।५१

केशोल्लुब्धननम्रत्वमारक्ताम्बर-

धारणम् । इत्यादिलिङ्गग्रहणम्..

अमन. २।३३

केषु केषु च भावेषु

अ.गी. १०।१७

कैकसेय पुरश्चरणविधावशक्तो यो मम

महोपनिषदं मम गीतां...रामषड-

क्षरीत्यादिभिर्मन्त्रैर्यो मां नित्यं

स्तौति तत्सदृशो भवेन्न किम् ?

रामर. १।९

(अथ) कैर्मन्त्रैः स्तुतो देवः प्रीतो

भवति स्वात्मानं दर्शयति तन्नो

ब्रूहि भगवन्निति

नृ.पू. ४।४

कैर्मया सह योद्धव्यं

अ.गी. १।२२

कैर्लिङ्गैस्त्रीन् गुणानेतान्

अ.गी. १४।२१

कैलासशिखरावासमोङ्कारस्वरूपिणं

महादेवं.. शिवं प्रणम्य..(भुसुण्डः)

अस्मजा. १।१

कैलासशिखरेश्वरेशङ्करस्याशिवालये ।

देवतास्तत्र मोदन्ते तन्मे मनः

शिवसङ्कल्पमस्तु

२शिवसं. २५

कैव कायस्य रम्यता । तडित्सुशरदभेषु

स्थैर्येनविनिर्णीतंसविश्वसतुविमदे

महो. २।३३

कैवल्यनाडीकान्तस्थपराभूमि-		को घातुरित्यामेर्वातुरवतिमप्येके	२ प्रणवो. १४
निवासिनं.. राममाश्रये	क्षुरिकाशीर्षकं	को नाम स्वयम्भूः पुरुष इति । तेनां-	
कैवल्यमुक्तिरेकैव पारमार्थिकरूपिणी	मुक्तिको. १।१८	गुलीमध्यमानात् सलिलमभवत्	गायत्रीर. १
कैवल्यश्रीस्वरूपेण राजमानं महो-		को नु मानुशिष्याद्वाइतीहापेननिहुते	छांदो. ४।१४।२
ऽव्ययम् । श्रीरामपदमाश्रये	रामर.शीर्षकं	कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया	भ. गी. १६।१५
कैवल्यंकेवलंविद्यात्, व्यवहारपरः स्यात्	लिङ्गोप. २	को न्वेवं जनयेत्पुनः	बृह. ३।९।३४
कैवल्यं परमं शान्तं सूक्ष्मतरं महतो		कोपदेष्टा मे पुरुषः पुरस्तादाविर्बभूव	गो. पू. ३।८
महत्तरमपरिमितानन्दविशेषम् ..	त्रि.म.ना. ७।७	कोपाजगरचर्वितम् । कामाब्धि-	
कैवल्यानन्दरूपं परमानन्दलक्षणा-		कल्लोलरते विस्मृतात्मपितामहम् ।	
परिच्छिन्नानन्तज्योतिः		समुद्धर मनः..	महो. ५।१३४
शाश्वतं.. विभाति	सि.सा. ६।१	को म अवो दाशुषो विष्वगूती ..	बा. मं. ११
कैवल्योपनिषद्वेद्यंकेवल्यानन्द-		कोऽयमात्माख्यो योऽयं सितासितैः	
तुर्विलम् । कैवल्यगिरिजारामं		कर्मफलैरभिभूयमानः सद-	
स्वमात्रं कलयेन्वहम्	कैवल्यशीर्षकं	सद्योनिमापद्यतेअवीचीचोर्ध्वांग..	मैत्रा. ३।१
को अद्धामूमभि चंकमीति	वा. म. ३	कोऽयमात्मेति वयमुपास्महे	२प्रेत. ५।१
को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्	बा. मं. १०	कोऽयं मुख्य इति च यदयं मुख्यः	प. हं. २
[ऋ.अ. ३।३।२४	=मं. ३।५४।५	को वा मोक्षः कथंतेन संसारं प्रति-	
को जालं विक्षिपेदेको नैनमपकर्ष-		पन्नवान् । इत्यालोकनमर्थज्ञास्तपः	
त्यपकर्षति । प्राणदेवताश्चत्वारः	परब्र. १	शंसन्ति पण्डिताः	जा. द. २।४
कोटिकोटिगणाध्यक्षं ब्रह्मांडा-		को विकारीच्यवते प्रकरणमाप्नोति-	
खण्डविग्रहम्	पं.ब्र. ११	राकारपकारौ विकार्यौ आदित	
कोटिकोटिसहस्राणि उपपातक-		ओकारो विक्रियते	२प्रणवो. १६
जान्यपिसर्वाण्यपिप्रणश्यन्ति		को वा वेत्ता महिमानं शिवस्य	सि. शि. ८
राममंत्रप्रभावतः	रामो. ५।९	कोशकारकमिरिव (मनः) स्वेच्छया	
कोटिश्च अण्डकटाहा उत्पद्यन्तेलीयन्ते	सामर. ५	याति बन्धनम् । .. शृंखलाबद्ध-	
कोटिसूर्यप्रकाशवैभवसङ्काशं		सिंहवत्	महो. ५।१२८
सूर्याकाशं भवति	अद्वयता. ४	कोशमाशाभुजङ्गानां संसाराडम्बरं	
कोटिसूर्यप्रकाशं सूर्याकाशं भवति	मं. ब्रा. १।३	त्यज । असदेतदिति ज्ञात्वा	
कोटयश्चतस्र एताश्च ग्रहैर्यासां		मादृशां निवेशय	महो. ५।१६६
सदावृतः । भगवानाभिर-		कोशं भित्वा शीर्षकपालं भिनत्ति	सुबालो. ११।२
स्पृष्टो येन दृष्टः स सर्वदृक्	अ. शां. ८४	कोऽभवदभिमातीर्विजघ्नुषः	बा.मं. १०
कोटयो ब्रह्मणो याता भूपा नष्टाः		कोष्ठाभिर्नामाशितपीतलीढखादितानि	
परागवत् ।	वराहो. ३।२२	सम्यगव्यष्ट्यांअपयित्वा गार्हपत्यो	
कोणेषु तेषां (बिल्वपत्राणां)		भूत्वा नाभ्यां तिष्ठति	प्रा.हो. २।४
निवसन्तिशुद्धगङ्गादितीर्था-		(तत्र) कोष्ठाभिर्नामाशित-	
न्युषयश्च सर्वे	१बिल्वो. ४	पीतलेख्यचोष्यं पचति	गर्भो. ११
कोदण्डद्वयमध्ये तु ब्रह्मरन्ध्रेषु..		कोऽसि त्वमसीति तमतिस्मृजते	कौ.उ. १।२
स्वात्मानं पुरुषं पश्येन्मन-		को ह स्मैष भवसि व्यवायो नवायो	
स्तत्र लयं गतम्	ध्या.विं. १०४	म इह शश्वदस्ति	बा.मं. २

कोऽहं कथमयं दोषः संसारस्य
उपागतः । जाग्रत्स्वप्नेव्यवहरन्
सुषुप्तौ क गतिर्मम योगकुं. ३।२८
कोऽहं कथमिदं किं वाक्यं मरणजन्मनी ।
विचारयान्तरेवेत्यं.. अ. पू. १।४०
को हि जानाति कस्याय
मृत्युकाळो भविष्यति भवसं. १।३९
कोऽहं कथमिदं चेति संसारमल-
माततम् । प्रविचार्य प्रयत्नेन.. महो. ४।२१
को हि त्वैवं ब्रुवन्तमहंति प्रत्याख्यातुम् बृह. ६।२।८
को ह्येवान्यात् कः प्राप्यात्, यदेव
आकाश आनन्दो न स्यात् तैत्ति. २।७
कोन्तेय प्रतिजानीहि भ.गी. ९।३१
कोपीनयुगलं कन्यादण्ड एकः परिग्रहः ।
यतेः परमहंसस्य नाधिकं तु.. ना.प. ३।२८
कोपीनाधारं कटिसूत्रमिति ना.प. ४।५०
कोपीनं दण्डमाच्छादनं च स्वशरीरो-
पभोगार्थाय लोकस्योपभोगा-
र्थाय च परिग्रहेत् प.हं.२
कौमारं यौवनं जरा भ. गी. २।१३
कौमारं यौवनं जरा परिणामत्वात्
तद्वत्त्वं; एवं प्रधानस्य व्यक्ततां
गतस्योपलब्धिर्भवति मैत्र्यु. ६।१०
(अथ खलु) क्रतुमयः पुरुषः यथा
क्रतुरस्मिँल्लोके पुरुषो भवति तथेतः
प्रेत्य भवति स क्रतुं कुर्वीत छान्दो. ३।१४।१
क्रतुरसुः कामो वश इति सर्वाण्येवै-
तानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि
भवन्ति २येत. ५।२
क्रतुशतस्यापि चतुस्सप्तत्या यत्फलं
तदवाप्नोति कृत्स्नमोक्षारगतिं
च (शंभोः क्षणध्यानेन) अ. शिखो. ३
(ॐ) क्रतो स्मर कृतं स्मर ईशा. १७
क्रतोरानन्त्यमभयस्य पारं कठो. २।११
क्रमते नहि बुद्धस्य ज्ञानं धर्मेषु
तापिनः । सर्वे धर्मास्तथा ज्ञानं
नैतद्बुद्धेन भाषितम् । अ.शां. ९९
क्रमेण सर्वमभ्यस्य सर्वमनुभूय ज्ञान-
वैराग्याभ्यां स्वरूपानुसन्धानेन

देहमात्रावशिष्टः ..स ज्ञान-
वैराग्यसंन्यासी [ना.प.५।३+ १ सं.सो.२।१३
कन्यायाः पितरः सर्वे तिल-
ज्योतिष्वतप्रियाः इतिहा. ९४
क्रियते तदिह प्रोक्तं भ.गी. १७।१८
क्रियते बहुलायासं भ.गी. १८।२४
क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः भ.गी. १७.५५
क्रियमाणानि सर्वशः भ.गी. १३।३०
[कमेति च-] क्रियमाणेन्द्रियैः कर्मा-
ण्यहं करोमीत्यध्यात्म-
निष्ठया कृतं कर्मैव कर्म निरा.उ. १३
क्रिया इच्छा तथा ज्ञानं..त्रिधा मात्रा
स्थितिर्यत्र तत्परं ज्योतिरोमिति यो.चू. ८६
क्रियाकर्मैक्यकर्तृणामर्थे मंत्रो वदत्यथ ।
मननात् प्राणनान्मंत्रः.. रा.पू. १।१२
क्रियानाशाद्भवेच्चिन्तानाशोऽस्मा-
द्वासनाक्षयः । वासनाप्रक्षयो
मोक्षः सा जीवन्मुक्तिरिष्यते अध्यात्मो. १५
क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः
स्वयं जुह्वत एकर्वि श्रद्धयन्तः
(एकर्विन् -मा. पा.) मुण्डको. ३।२।१०
क्रियाविशेषबहुलां भ.गी. २।४३
क्रियाशक्तिस्वरूपं-इरेर्मुखाज्जादः,
तज्जादाद्विदुः, विन्दोरोद्धारः सीतो. ११
क्रियासु बाह्याभ्यन्तरमध्यमासु
सम्यक्प्रयुक्तासु न कम्पते ज्ञः प्रश्नो. ५।६
क्रियाशक्तिः पीठम् (विराड्रूपस्य) भावनो. २
कृष्यन्तं न प्रतिक्रुध्येदाकृष्टः
कुशलं वदेत् । सप्तद्वारावकी-
र्णां च न वाचमनृतां वदेत् ना. प. ३।४३
कूरेण जडतां याता तृष्णाभार्यानु-
गामिना । वशः कौलेयकेनैव ब्रह्म-
मुक्तोऽस्मि चेतसा महो. ३।१९
क्रोधमयोऽक्रोधमयो धर्ममयोऽधर्म-
मयः सर्वमयः (आत्मा) बृह. ४।४।५
क्रोधः पारुष्यमेव च भ. गी. १६।४
क्रोधाद्भवति सम्मोहः भ. गी. २।३३

कौशं बृहस्पतेः, अपष्वान्तं वर-
णस्य, तान्सर्वानेवोपसेवेत,
वारुणं त्वेव वर्जयेत्

छांदो. २।२२।१

ह्रींकारादसृजम्, कृष्णादाकाशं
खाद्यायुरुत्तरात् सुरभिर्विद्याः
प्रादुरकार्षम्

गो. पू. ३।९

ह्रीमित्येतदादावादाय कृष्णाय
गोविन्दाय गोपीजनवल्लभा-
येति बृहन्मानन्या सकृ-
दुच्चारयेद्योऽसौ गतिस्तस्यास्ति
..नान्या गतिः..

गो. पू. २।१

ह्रीमोङ्कारस्यैकतत्त्वं वदन्ति

गोपालो. २।१९

ब्रह्मवादिनः

कूसान्वै स लोकान् ध्रुवान् ध्रुवः

प्रतिष्ठितान्प्रतिष्ठितोऽव्ययमाना-

नव्ययमानोऽभिसिद्धयति

छांदो. ७।४।३

क्लेशोऽधिकतरस्तेषां

भ. गी. १२।५

क्लेशं मा स्म गमः पार्थ

भ. गी. २।३

क गतं केनवानीतं कुत्रलीनमिदं जगत्

अध्यात्मो. ६५

क्व गताः पृथिवीपालाः...वियोग-

साक्षिणीयेषां भूमिरद्यापितिष्ठति

भवसं. १।२३

क च सम्प्रतिष्ठाः, अधिष्ठिताः केन

सुखेतरेषु । वर्तामहे ब्रह्मविदो..

श्वेताश्व. १।१

कचिचित्तमिति स्मृतं, क्वचिन्मायेति

कल्पितम् । क्वचिद्ब्रह्म

इति ख्यातं (मनः)

महो. ५।१३०

कचिज्ज्ञानं कचित् क्रिया (मनः)

महो. ५।१३०

कचित्कर्मेति संस्मृतम्

"

महो. ५।१३१

कचित्प्रकृतिरित्युक्तं

"

महो. ५।१३१

कचिद्विच्छेति संस्मृतम्

"

महो. ५।१३२

कचिदेतदहङ्कारः

"

महो. ५।१३०

कचिद्योगी कचिद्भोगी

....

कचिद्ब्रह्म इति ख्यातं

"

महो. ५।१३२

कचिन्मनः कचिद्बुद्धिः

"

महो. ५।१३०

कचिन्मलमिति प्रोक्तं

"

महो. ५।१३१

कचिन्मायेति कल्पितम्

"

महो. ५।१३१

कचिद्वा विद्यते येषां संसारं सुख-

भावना । आयुस्तन्ममिवासाद्य

कालस्तामपि कृन्तति

महो. ३।३७

कतर्हियजमानस्यलोकइति, स यस्तं न

विद्यात्कथं कुर्यादथ विद्वान्कुर्यात् छांदो. २।२४।२

क्व घनानि महीपानां ब्राह्मणः

क्व जगन्ति वा । प्राक्तनानि

प्रयातानि...

बराहो. ३।२२

क्व न्वश्वमेधयाजिनो गच्छन्तीति

बृह. ३।३।२

क्व बन्धमोक्षकलने ब्रह्मैवेदं विजृम्भते ।

सर्वमेकं परं व्योम को मोक्षः

कस्य बन्धता

अ.पू. २।३६

क्व शरारुः क्व सूमरः क्व नूरणः

बा.मं. २१

क्व शरीरमशेषाणां श्लेष्मादीनां

महाचयः । क्व चाङ्गशोभा

सौभाग्यकमनीयादयो गुणाः

ना.प. ४।२७

क्वायं तदापुरुषो भवतीत्याहर

सौम्यहस्तमार्तभागावामे

वैतस्य वेदिष्यामः

बृह. ३।२।१३

क्वैतदभूत्, कुत एतदागा३त्

कौ. उ. ४।१८

क्वैष एतद्वा लोके पुरुषोऽशयिष्ठ

कौ. उ. ४।१८

क्वैष तदाभूत्कुत एतदागादिति

तदु ह न मेने गार्ग्यः

बृह. २।१।१६

क्वैषा कथमिति होचुः किं तेन,

न किञ्चनेति

नृसिंहो. ९।१०

क्वैषाऽनुज्ञेत्येष एवात्मेति

नृसिंहो. ९।१०

क्ष

क्षणमायाति पातालं क्षणं याति

नभस्तलम् । क्षणं भ्रमति

दिक्कुञ्जे तृष्णा हृत्पद्मवत्पदी

महो. ३।२४

क्षणमायान्ति स्रग्पदः

महो. ३।५३

क्षणं जन्माथमरणं सर्वैर्नश्वरमेवतत्

महो. ३।५३

क्षणं नयति कल्पताम् । मनो-

विलाससंसारः..

महो. ४।६८

क्षणं भ्रमति दिक्कुञ्जे (तृष्णा)

महो. ३।२४

क्षणं याति नभस्तलम्

"

महो. ३।२४

क्षणं स्फुरति सा देवी (अविद्या)

सर्वशक्तितया तथा

महो. ५।१२०

क्षणाच्चैतस्यपां शैल्यं जलसंवित्ततो

भवेत् । ततस्तादृगुणगतं मनः..

महो. ५।१५०

क्षत्रकर्म स्वभावजम्

भ.गी. २।३

क्षत्रस्य सायुज्यं सलोकतां

जयति, य एवं वेद

बृह. ५।१३।४

क्षत्रं तं परादायोऽन्यत्रात्मनः क्षत्रं
 वेद लोकास्तं परादुः [बृह. २।४।६ + ४।५।७
 क्षत्रं, प्राणो वै क्षत्रं बृह. ५।१३।४
 क्षत्रं यान्येतानि देवत्रा क्षत्राणीन्द्रो
 बरुणः सोमो रुद्रः पर्जन्यो यमो
 सृस्युरीशान इति बृह. १।४।११
 क्षत्राय स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्ये
 स० स० ब० वनयति बृह. ६।३।३
 क्षत्रियस्य न विद्यते भ.गी. २।३१
 क्षत्रियादयोऽपि परमार्थदर्शिनो-
 ऽभिज्ञा बहवः सन्ति व.सू. ६
 क्षत्रियादयो हिरण्यदातारो
 बहवः सन्ति व.सू. ८
 क्षत्रियेण क्षत्रियो वैश्येन वैश्यः
 शूद्रेण शूद्रस्तस्मादप्रावेव
 देवेषु लोकमिच्छन्ते बृह. १।४।१५
 क्षमा नाम प्रियाप्रियेषु सर्वेषु
 ताडनपूजनेषु सहनम् शांडि. १।१।३
 क्षमा सत्यं दमः शमः भ.गी. १०।४
 क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या
 सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे अ.शिरः. ३।९
 क्षयकुष्ठगुदावर्ते...तस्य रोगाः क्षयं
 यान्ति महामुद्रां तु योऽभ्यसेत् यो.चू. ६९
 क्षयगुल्मगुदावर्तेर्जीर्णत्वगादिदोषा
 नश्यन्ति (खेचर्या मुद्रया) शांडि. १।७।४३
 क्षयाय जगतोऽहिताः भ.गी. १६।९
 क्षरं त्वविद्या ह्यमृतं तु विद्या
 विद्याविद्ये ईशते यस्तु सोऽन्यः श्वेता. ५।१
 क्षरं प्रधानममृताक्षरं हरः क्षरात्मा-
 नावीशते देव एकः । तस्याभि-
 ध्यानाद्योजनात्तत्त्वभावाद्भूयश्चा-
 न्ते विश्वमायानिवृत्तिः [ना.प. ९।९ + श्वेता. १।१०
 क्षरतीः पिङ्गला एकरूपाः चित्त्यु. ११।१०
 क्षरश्चाक्षर एव च भ.गी. १५।१६
 क्षरः सर्वाणिभूतानि [यो.शि. ३।१६ + भ.गी. १५।१६
 क्षराक्षरविहीनो यो नादान्त-
 ज्योतिरेव सः ते. वि. ५।६
 क्षराक्षराभ्यामधिकः पुरुषोत्तम-
 संज्ञितः. संविराजते सामर. २

क्षान्तिरार्जवमेव च भ.गी. १८।४२
 क्षारक उद्गारकः क्षोभको मोहको
 जृम्भक इत्यपाठनमुख्यत्वेन
 पञ्चविधोऽस्ति (वायुः) भावनो. ५
 क्षारणादापदां क्षारम् (भस्म) बृ.जा. १।६
 क्षारमन्स्यजमिव (त्यजेद्यतिः) ना.प. ७।१
 क्षामदेवो अतिदुरितात्यग्निः महाना. ६।१७
 क्षिणोमि ब्रह्मणा मित्रानुजयामि
 त्वा३ अहं सहवे. ८
 क्षिपाम्यजस्रमशुभान् भ.गी. १६।१९
 क्षिप्तं यथा शात्मक्षितूलमग्नौ.. भवसं. १।२४
 क्षिप्तोऽवमानितोऽसद्भिः प्रकण्ठोऽसृयि-
 तोऽपिवा..आत्मनात्मानमुद्धरेत् ना.प. ५।३९
 क्षिप्रं कृत्येनिवर्तस्वकर्तुरेवगृहान्प्रति..
 वीरांश्चास्य निवर्हय वनदु. १३०
 क्षिप्रं भवति धर्मात्मा भ.गी. ९।३१
 क्षिप्रमरिच्यतीतिविद्यायस्तथाऽधीते संहितो. १।२
 क्षिप्रं हि मानुषे लोके भ.गी. ४।१२
 क्षीणं क्षौमं तृणं कन्याजिने च.. शाब्दा. १९
 क्षीणाविद्यो विमुच्यते । कल्पितेय-
 मविद्येयमनात्मन्यात्मभावनात् महो. ४।१२७
 क्षीणेऽज्ञानेमहाप्राज्ञरागादीनां परिश्रयः जा.दु. ६।५
 क्षीणेन्द्रियमनोवृत्तिर्निराशी (यतिः) ना.प. ३।७५
 क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति भ.गी. ९।२१
 क्षीणे प्राणे नासिकयोच्छ्वसीत श्वेता. २।९
 क्षीणे हेतुफलावेशे नास्ति हेतुफलो-
 ऽश्रवः । यावद्धेतुफलावेशः संसार-
 स्तावदायतः अ.शां. ५५
 क्षीणे हेतुफलावेशे संसारं न प्रपद्यते अ.शां. ५६
 क्षीणैः क्लेशैर्जन्ममृत्युप्रहाणिः श्वेता. १।११
 क्षीयते दग्धसंसारो निस्सार इति
 निश्चितः । (मनोविकल्पनाशात्) महो. २।३४
 क्षीयन्ते चास्य कर्माणि
 तस्मिन्ष्ट्रे परावरे मुण्ड. २।२।८
 क्षीयेत ह सोऽन्नमत्ति प्रतीकेनेति ।
 मुखं प्रतीकं, मुखेनेत्येतत्स
 देवानपि गच्छति बृह. १।५।२
 क्षीराब्धितः श्वेतद्वीपे क्षीरखण्डान्..
 आनीय.. मुक्तिसाधिका भवन्ति ऊर्ध्वपु. १

क्षीरवत्पश्यति ज्ञानी लिङ्गिनस्तु

गवां यथा

त्रि.ता. ५।१९

क्षीरवत्पश्यते ज्ञानं लिङ्गिनस्तु

गवां यथा

प्र. वि. १९

क्षीरं क्षीरे यथा क्षिप्तं तैलं तैले

जलंजले। संयुक्तमेकतांयाति

तथाऽऽत्मन्यात्मविन्मुनिः

आत्मो. २३

क्षीरं पिबन्ति मधु ते पिबन्ति

इतिहा. ७

क्षीरं वा दधि वा तैलं...एतेषां

विक्रयी विप्रो..नरकं व्रजेत्

इतिहा. ८०

क्षीरादिभिरैतैरभिषिच्य

सर्वानवाप्नोति कामान्

भस्मजा. २।१

क्षीरेणक्षापितेदेवि.. दुर्गेऽहं शरणंगतः

त्रि. ता. २।६

क्षीरेसर्पिरिवापितम्। आत्मविद्या-

तपो मूलं तद्ब्रह्मोपनिषत्पदम्

ब्रह्मो. २३

क्षीरोत्तरं प्रस्फुरन्तं कुण्डलं

युगलं स्मृतम्। ध्यायेन्मम

प्रियं नित्यं स मोक्षमधिगच्छति

गोपालो. २।३४

क्षीरोदार्यवशायिनं कल्पद्रुमाधःस्थितं

वरदं..वक्रतुण्डस्वरूपिणं (गणेशं)

ग. पू. २।४

क्षीरोदार्यवशायिनं नृकेसरि-

विप्रदं योगिष्येयं परं पदं

साम जानीयात्

नृ. पू. १।५

क्षीरोदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्त-

मभीयातामीश्वरौ जनयितवौ

बृह. ६।४।१४

क्षुत्तृष्णालस्यमोहमैथुनान्यग्नेः(अंशाः)

शारीरको. ३

क्षुत्तृष्णोष्णमोहमैथुनाद्या अग्न्यंशाः

पैङ्गलो. २।२

क्षुत्करणं कृकरकर्म (कृकरवायोः)

शाण्डि. १।४।९

क्षुत्पिपासान्ध्यबाधिर्यकामक्रोधाद-

योऽखिलाः। लिङ्गदेहगता

येते खलिङ्गस्य न सन्ति हि

आ. प्र. २४

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं

नाशयाम्यहम्

श्रीसू. ८

[क्र.खि.८७।५।८+

महाना. १४।२०

क्षुत्पिपासायै स्वाहा-विविधै स्वाहा

महाना. १४।१८

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यम्

भ. गी. २।३

क्षुधार्तः क्षण्डवेत्तुषम्। नाहं ब्रह्मेति

जानाति तस्य मुक्तिर्न जायते

पैङ्गलो. ४।२२

क्षुधां देहव्यथात्यक्त्वाबालःक्रीडति

वस्तुनि। तथैव विद्वान्रमते

निर्ममो निरहं सुखी

२ आत्मो. १०

क्षुधितस्याग्निर्भोज्यश्चेन्निमिषं

कल्पितं भवेत्

ते.वि.६।८९

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया

दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति

कठो. ३।१४

क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः

भ.गी. १३।२

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवं

भ. गी. १३।३५

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं

भ. गी. १३।३

क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्

भ.गी. १३।२७

क्षेत्रमित्यभिधीयते

भ. गी. १३।२

क्षेत्रज्ञमेवाप्येति यः क्षेत्रज्ञमेवास्तमेति

सुबालो. ९।१३

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि

भ. गी. १३।३

क्षेत्रज्ञः परमात्मा च तयोरैक्यं यदा

भवेत्..चित्तं याति विलीनतां

यो.शि.१।१३४

क्षेत्रज्ञाधिष्ठितं चैव कारणैर्विद्यते

पुनः। एवं स भगवान्देवं

पश्यन्त्यन्ये पुनःपुनः

मंत्रिको. १९

क्षेत्रपालाय विद्यहे तीक्ष्णदंष्ट्राय

धीमहि। तन्नो भैरवः प्रचोदयात्

वनदु. १४२

क्षेत्रं क्षत्रं वै मायैषा सम्पद्यते

नृ.पू. ५।३

क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च

भ.गी. १३।२

क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं

भ.गी. १३।३४

क्षेत्रेऽस्मिस्तव देवेश यत्रकुत्रापि

वा मृताः। कृमिक्रीडादयो-

ऽप्याशु मुक्ताः संतु नचान्यथा

रामो. ३।४

क्षेम इति वाचि योगक्षेमइतिप्राणाः

तैत्ति. ३।१०।२

क्षौराभ्यङ्गस्नानोर्ध्वपुंङ्गादिकं विहाय,

लौकिकवैदिकमप्युपसंहृत्य...

प्रणवात्मकेन देहत्यागं करोति

यः सोऽवधूतः..

तुरीया. ३

क्षमामेकांखलिलावसन्नांश्रुत्वा..स्वयं

भूत्वा वराहो जहार तस्मैदेवाय

सुकृताय पित्रे स्वाहा

पारमा. ६।४

स्व

स्वजामियोगादृदि सम्प्रयुक्तमणो-

र्हणुर्द्विरणुः कण्ठदेशे । जिह्वाप्र-

देशे त्र्यणुकं च विद्धि..

मैत्रा. ७।११

स्वप्नस्वेनैव लोहता । तद्वदात्मनि

देहत्वं पश्यत्यज्ञानयोगतः

यो.शि. ४।२४

खण्डज्ञानेन सहसाजायतेऽश्वत्तरः

यो.शि. १।६२

स्वमध्ये कुरु चात्मानमात्ममध्ये च

स्वं कुरु । सर्वं च स्वयं कृत्वा

न किञ्चिदपि चिन्तय

शां. १।७।१९

स्वरैर्वराहैर्युक्तैर्याति कृष्णां धेनुं..

नन्दमाली प्राजयति (स्वप्ने)

३ ऐत. २।४।७

स्वस्वेतदुपनिषदं विद्वान्य एवं वेद

आरुणि. ५

स्वत्वात्मानाऽऽत्माऽमृताख्यः..

मैत्रा. ६।७

(अथो) स्वस्विन्द्रः सत्यादेव

नेयाय सत्यं हीन्द्रः स होवाच

मामेव विजानीहि

कौ. त. ३।१

(अथ) स्वस्त्रियं ब्रह्मविद्या सर्वोपनिष-

द्विद्या वा राजन्नस्माकं...मैत्रेयेण

व्याख्याताऽहं ते कथयिष्यामि

मैत्रा. २।३

(६०३) स्वब्रह्म स्वपुराणं वायुरस्वमिति

ह स्माह कौरव्यायणीयो पुत्रः

बृह. ५।१।१

स्वं मनो बुद्धिरेव च

भ. गी. ७।४

स्वं वायुरापो ज्योतिः पृथिवी विश्वस्य

धारिणी । पुरुष एवेदं विश्वं

तपो ब्रह्म परामृतमिति

ग. पू. १।४

स्वं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियं

मनोऽन्नमन्नाद्वीर्यं तपो मन्त्राः

कर्म लोका लोके नाम च

प्रश्नो. ६।४

स्वं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य

धारिणी

नारा. १

स्वं वायुर्ज्योतिरापश्च पृथ्वी विश्वस्य..

कैव. १५

स्वादप्यतितरां सूक्ष्मं तद्रक्षास्मि..

अ. पू. ५।६५

स्वादयश्चेतनापक्षा धातवः

आयुर्वे. १

स्वेचराधिपतिर्भूत्वा स्वेचरेषु

सदा वसेत्

योगकुं. २।१७

स्वेचरा भूचराः सर्वे... सद्य

एव विमुच्यन्ते

वराहो. ४।४४

स्वेचरावसथं बह्निमम्बुमंडल-

स्वेचरीबीजं

योगकुं. २।१७

स्वेचरीं तु समभ्यसेत्

योगकुं. २।८२

स्वेचर्या मुद्रितं येन विवरं लम्बिको-

र्ध्वतः । न तस्य क्षीयते बिन्दुः

कामिन्यालिङ्गितस्यतु।यावद्बिन्दुः

स्थितो देहे तावन्मृत्युभयंकृतः

यो. चू. ५७

स्वेचर्या मुद्रितं येन विवरं लम्बि-

कोर्ध्वतः । न पीयूषं पतत्यग्नौ

न च वायुः प्रधावति

यो. शि. ५।४१

स्वेदाह्लादौ न जानाति प्रतिबिम्ब-

गतैरिव

अ. पू. ५।९९

स्वे वै पश्यन्ति ते पदम्

अ. शां. २८

ख्याप्यमानामजातिं तैरनुमोदामहे

वयम् । विवदामो न तैः सार्धम्..

अ. शां. ९

ग

गकारः पूर्वरूपं, अकारो मध्यमरूपं

गणप. ७

गगनसिद्धान्तः, अमृतकलोलनदी

निर्वाणो. १

गगनं पवने प्राप्ते ध्वनिरुत्पद्यते

महान् । घण्टादीनां प्रवाद्यानां

नादसिद्धिरुदीरिता

यो. चू. ११५

गगनाकारो नादः, एतत्सर्वो नादः,

महान्नादः, स गणेशो महान्भवति

ग. शो. २।२

गगने नीलिमासत्ये जगत्सत्यं..

ते. विं. ६।७६

गगनो मम त्रिशक्तिमायास्वरूपो

नान्यो मवस्ति

पा. प्र. २

गङ्गायां सागरे स्नात्वा..ब्रह्मनाडी-

विचारस्य कलां नाहन्ति

षोडशीम्

यो. शि. ६।४१

गच्छतस्तिष्ठतः कार्यमुज्जायाख्यं

तु कुम्भकम् । मुखेन वायुं संगृह्य

घ्राणरन्ध्रेण रेचयत्

यो. शि. १।९५

गच्छतस्तिष्ठतो वाऽपि...न विचारपरं

चेतो यस्यासौ मृत उच्यते

अ. पू. ५।१

गच्छतस्तिष्ठतो वाऽपि... नारसिंह-

कृता गुप्तिर्वासुदेवमयोऽस्यहम्

विष्णुह. १।३

गच्छत्यस्मिन्नागच्छत्यस्मादिमाः

प्रजास्तरमाद्गरकत्वाद्गर्गः

गच्छत्यपुनरावृत्ति

गच्छत्यमूढाः पदमव्ययं तत्

गच्छंस्तिष्ठन्निमिषन्नुन्मिषन्वास्वपन्चा-

प्राञ्चिद्धधारी शुचिः स्यात्

गच्छंस्तिष्ठन्नुपविशन्नुच्छयानो वा-

ऽन्यथापिवा । यथेच्छया वसे-

द्विद्वानात्मारामः सदा मुनिः

गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन् भुञ्जन्ध्यायेन्नि-

श्चलमीश्वरम् । स एव लययोगः..

गच्छेत्सूर्यसंसदम् (सूर्योपासनेन)

गणादि पूर्वमुच्यते वर्णादि तदनन्तरम्

गणानां त्वं गणपतिः स प्रियाणां

त्वं प्रियपतिः, स निधीनां

त्वं निधिपतिः

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे..

[वनदु.८+ऋ.अ.२।६।२९+

[वा.सं.२३।१९+

गणानां त्वा गणनाथं सुरेन्द्रं कविं

कवीनामतिमेषविग्रहम् । ज्येष्ठ-

राजं वृषभं केतुमेकं सा नः

शृण्वन्नुतिभिः सीद शश्वत्

गणेश उवाच- मदेहे ब्रह्माण्डान्तर्गतं

विलोक्य तथाविधामेव सृष्टिं

कुरु (हे ब्रह्मन्)

गणेशतापिनीयोपनिषद्वाक्यपकसमं

मंत्रराजजापकस्य

गणेशो वै ब्रह्म

गणेशो वै सदाजायत

गणेशो स्यातां तपोलोकसत्य-

लोकौ यथाक्रमम्

गतसङ्गस्य मुक्तस्य

गतागतं कामकामा लभन्ते

गतासुतगतासुंश्च

गताः कलाः पञ्चदश प्रतिष्ठा देवाश्च

सर्वे प्रतिदेवतासु । कर्माणि

विज्ञानमयश्च आत्मा परे-

ऽन्यथे सर्व एकीभवन्ति

मैत्रा. ६।७

भ. गी. ५।१७

भ. गी. १५।५

सि. शि. ११

कुण्डिको. २८

यो. त. २३

सूर्यता. ६।५

गणप. ७

ग. शो. २।१

त्रि. ता. ३।४

=मं. २।२३।१

तै. सं. २।३।१।४

ग. पृ. १।१०

गणेशो. ३।५

गणेशो. ५।५

गणेशो. ३।१

गणेशो. ४।१

गुह्यका. १२

भ. गी. ४।२३

भ. गी. ९।२१

भ. गी. २।११

मुण्ड. ३।२।७

गतिरितिपादयोः, विमुक्तिरितिहस्तयोः तैत्ति. ३।१०।१

गतिर्ब्रह्मविदां चात्रनाहस्तस्मात्तुसर्हति आयुर्वे. २८

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी भ. गी. ९।१८

गत्वाऽपि मातरं मोहादगम्याश्चैव

योषितः । उपास्यानेन मंत्रेण

रामस्तदपि नाक्षयेत् (पापं) रामो. ५।१६

गदाचकालिकासाक्षात्सर्वशत्रुनिबर्हणी कृष्णो. २३

गन्तव्यदेशहीनोऽस्मि मैत्रे. ३।२३

गन्तव्यमेवाप्येति योगंतव्यमेवास्तमेति सुबालो. ९।८

गन्तुमिच्छन्ति ये केचित् परे ब्रह्मपदे

लयम् । भवन्ति सिद्धयः सर्वा-

स्तेषां विध्वंसकारकाः जमन. १।७२.

गन्धतन्मात्रमेतस्माद्भूमिसंविच्चतोभवेत् महो. ५।१५१

गन्धद्वारांदुराधर्षानित्यपुष्टां करी-

षिणीम् ।...

महाना. ५।७

[+वनदु. १२७+ २शिवसं. ३६

+श्री.सू. ९

गन्धद्वारेति गोमयम्

बृ. जा. ३।७

गन्धर्व इत्यप्सरसः (उपासते)

मुद्रलो. ३।२

गन्धर्वनगरं यथा । तथा विश्वमिदं

दृष्टं वेदान्तेषु विचक्षणैः

वैतथ्य. ३१

गन्धर्वनगरे सत्ये जगद्भवति सर्वदा

ते. विं. ६।७५

गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घाः

भ. गी. ११।२२

गन्धर्वाणां चित्ररथः

भ. गी. १०।२६

गन्धर्वाणां पुरं यथा । यथाऽऽकाशे

द्विचन्द्रत्वं तद्वत्सत्ये जगत्स्थितिः

यो. शि. ४।१६

गन्धर्वाप्सरसः किन्नरा वादित्रवादिनः

समन्तादजीजनन्

बह्वचो. १

गन्धलेपनमशुद्धलेपनमिव क्षारमंत्यज-

मिव.. क्षियमहिमिव (त्यजेद्यतिः)

[ना. प. ७।१+

१सं. सो. २।७९

गन्धवतीयं भूमिर्गन्धभूमिभ्यां भिन्ना

गोपालो. १।९

गन्धं सर्वमसद्विद्धि सर्वाज्ञानमस-

न्मयम् । असदेव सदा सर्वम्..

ते. विं. ३।५८

गन्धः पुष्पेषु भूतेषु तथाऽऽत्मा-

ऽवस्थितो ह्यहम्

वासुदे. १०

गमनविरोधं न करोति (परिब्राद्)

ना. प. ९।२१

गमनादिविवर्जितः । सर्वदा समरूपो-

ऽस्मि शान्तोऽस्मि पुदषोत्तमः

मैत्रे. ३।२३

गमागमस्य गमनादिशून्यमोङ्कारमेकं
रविकोटिदीप्तिम् । पश्यन्ति ये...
इंसात्मकं ते विरजा भवन्ति ॥ २४ ॥
गमागमस्य गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं
..पश्यामि तं सर्वजनान्तरस्थं
नमामि इक्षं परमात्मरूपम् ॥ २४ ॥
गम्भीरनाभिकमलः सुवचना-
स्त्रायुगलो.. महाविष्णुरास्ते ॥ ३११ ॥
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे
गङ्गो ब्रह्म विष्णुश्च नारसिंहस्तयैव
च । आवित्योऽभिश्च दुर्गिश्च.. ॥ ६१२ ॥
गङ्गो बटभाण्डीरः सुदामा नारदो
मुनिः । वृन्दा भक्तिः क्रिया बुद्धिः.. ॥ २४ ॥
गर्जसि गायति वाति वर्षति वरुणो-
ऽर्यमा...कला कलिर्घाता ब्रह्मा
मजापतिर्मववा..ऊर्ध्वं च दिक्षश्च
सर्वं नारायणः ॥ ६११ ॥
गर्तमिव पतति यदेव जाग्रद्वयं
पश्यति तदत्राविधया मन्यते ॥ ४१३२० ॥
गर्वभीतरा गर्वम इतरस्तां समे-
वामवत्तत एकशफमजायत ॥ १४१४ ॥
गर्भे इव सुभृतो गर्भिणीभिः । दिवे
दिवईड्योजागृवज्जिर्मनुष्येभिरभिः.. ॥ ४१८ ॥
गर्भे एवैतच्छयानो वामदेव एवमुवाच ॥ ४१५ ॥
गर्भजन्मजरामरणसंसारमहद्भयात्स-
न्तारयति तस्मादुच्यते षडक्षरं
तत्सारकम् [अद्वयता.१+ ॥ ११२ ॥
गर्भजन्ममरणसंसारमहद्भयात्तं
सारयति । सारकमित्येतत्सारकं
ब्राह्मणो नित्यं महीयते ॥ ११२ ॥
गर्भवासभयाद्भीतः...गुहां प्रवेष्टु-
मिच्छामि परं पदमनामयम् ॥ २२५५३०.९ ॥
गर्भे वेदि सिनीवालि..[बृ.६।४।२१+ ॥ ८।८।४२ ॥
[=मं.१०।१८४।२+ ॥ ५।२५।३ ॥
गर्भा इव मातरमभिजिघांसुः
परस्तादोङ्कारप्रयुक्तयैतयैव
तद्वत् प्रत्याप्यायेत् ॥ २ प्रणवो. ४ ॥

गर्भे नु सज्जन्वेवाम वेदमहं देवानां
अनिमानि विद्या । शतं
मा पुर आयसीररक्षन्.. ॥ २ देव. ४१५ ॥
गर्वो रक्षः स्वगो वक्रः, दया सा रोहिणी
माता सत्यमामा धरेति वै ॥ ४१ ॥
गल-वदन-नाभि-हृदय-भूमध्यं
स्थानम् (अन्तःकरणस्य) ॥ २४ ॥
गलितद्वैतनिर्भासो मुदितोऽन्तः-
प्रबोधवान् । सुषुप्तमन एवास्ते
पञ्चमी भूमिकां गतः ॥ ३८ ॥
गलितोऽपि यदा बिन्दुः सम्प्राप्तो
योनिमण्डले । ब्रजत्यूर्ध्वहठा-
च्छक्त्या निबद्धो योनिमुद्रया ॥ ८५ ॥
गवामनेकवर्णानां क्षीरस्याप्येकवर्णता ।
क्षीरवत्पश्यते ज्ञानं (पश्यतिज्ञानी)
..गवां यथा.. [ब्र.वि. १९+ ॥ ५।१९ ॥
गवा त्वा हिङ्गारेणाभिहिङ्करो-
मीति त्रिरस्य मूर्धान-
मभिहिङ्कुर्यात् ॥ २।११ ॥
गहना कर्मणो गतिः ॥ ४।१७ ॥
गाणपत्यादिमन्त्रेषु..सफलोऽयं षडक्षरः ॥ ५।५ ॥
गाणपत्येषु शैवेषु...राममन्त्रः
फलाधिकः ॥ ५।४ ॥
गाण्डीवं संसृते हस्तात् ॥ १।२९ ॥
गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये देवी..
[ऋ. खि. १०।१९१।९ ॥
गात्रसंवाहनं रात्रौ पादाभ्यङ्गं च
यत्नतः । प्रातः प्रसाधनं दत्त्वा
कार्यं सम्मार्जनाञ्जनम्(गुरोः) ॥ ७।३३ ॥
गानानन्दे लीयते विश्वमेतत् ॥ ९ ॥
गान्धर्वी राधिका धन्या रुक्मिणी
परमेश्वरी । इत्येतानि तु नामानि
यः पठेत्स मुक्तो भवति ॥ ७ ॥
गान्धारप्रामनादं हि गानमित्यभि-
धीयते । तेन ब्रह्मादिकीटान्ता
विदन्त्यानन्दमाधुरीम् ॥ ८ ॥

गान्धारायाः सरस्वत्यामध्येप्रोक्ता च शङ्खिनी । अलम्बुसा स्थिता पायु- पर्यन्तं कन्दमध्यगा	जा.द. ४।१७	गायत्री प्रातः, सावित्री मध्य- दिने सरस्वती सायमिति निरन्तरमजपा..	त्रि. ता. ४।७
गान्धारा सव्यनेत्रान्ता प्रोक्ता वेदान्तवेदिभिः	जा. द. ४।२२	गायत्रीमावाहयामि सावित्रीमावा- हयामि सरस्वतीमावाहयामि	महाना. ११।७ बृह. ५।१४।५
गान्धारा हस्तिजिह्वा च इडायाः पृष्ठपार्श्वयोः । पूषा यशस्विनी चैव पिङ्गला पृष्ठपूर्वयोः	जा. द. ४।१४	गायत्रीमेव सावित्रीमनुब्रूयात् गायत्रीमेवानुब्रूयात्	गायत्र्यु. ४ छांदो. ३।१२।१
गान्धारी चन्द्रदेवता । शंखिन्या- श्चन्द्रमास्तद्वत्पयस्विन्याः प्रजापतिः	जा. द. ४।३८	गायत्री वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किञ्च गायत्री वा इदं सर्वं यदिदं किञ्च	नृ. पू. ४।३
गान्धारी सरस्वतीमध्ये यशस्विनी.. गान्धारी हस्तिजिह्वा च..नेत्रद्वयं गते	शांखि. १।४।६ यो.शि. ५।२१	गायत्री वै देवानामेकाक्षरा श्वेतवर्णा च व्याख्याता	२प्रणवो. १८
गान्धारी हस्तिजिह्वा च द्वे चान्ये नाडिके स्थिते । पुरतः पृष्ठतस्तस्य ..पूषा यशस्विनी नाड्यौ..	त्रि.ब्रा. २।७१	गायत्री च स्ववाचाऽमौ समारोपयेत् गायत्रीं च उपासते ते सूर्यमण्डलं	आरुणि. २ सामर. २७
गाभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र- विष्णोरनु संचरेम । नाकस्य पृष्ठमभि संवसामो वैष्णवी- लोक इह मादयन्ताम्	वनदु. १२० भ.गी. १५।१३	गायत्रो ब्राह्मणः प्राजापत्यो बृहन्निति (ब्रह्मचारिणश्चतुर्विधाः)	आश्रमो. १
गामाविद्य च भूतानि गायत्रमन्वेव गायत्रीमन्वेव त्वा सर्व- रूपमिमं कृत्वा हिं कुर्वन्ति ।	शौनको. २।२	गायत्र्यहंसावित्र्यहं, त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप् चाहं, छन्दोऽहं, गार्हपत्यो दक्षि- णामिराहवनीयोऽहं सत्योऽहम्	अ.शिरः. १
गायत्रं छन्दं परमात्मं स्वरूपं गायत्रं प्रातःसवनं	महाना. ११।५ छान्दो. ३।१६।१	गायत्र्या अक्षमालायां सायं प्रातः शतं जपेत् । चतुर्णां खलु वेदानां समग्रं लभते फलम्	सन्ध्यो. १४
गायत्रं हि छन्दः, गायत्री वै देवा- नामेकाक्षरा श्वेतवर्णा व्याख्याता	२प्रणवो. १८	गायत्र्या गायत्रीछन्दः, विश्वामित्रऋषिः सविता देवताऽभिर्मुखं, ब्रह्मा शिरः, विष्णुर्हृदयं, रुद्रः शिखा, पृथिवी योनिः	महाना. ११।७ बदुको. २७
गायत्री कत्यक्षरा कतिपदा किंवा- ऽस्या गोत्रं किं वाऽस्या रूपं कीदृशं तस्याः शरीरं भवति	सन्ध्यो. १९	गायत्र्या लोकाः (भवन्ति) [अ. शिरः. ३।१५+	
गायत्री चतुर्विंशत्यक्षरा त्रिपदा षट्कुक्षिः पञ्चशीर्षाः.	महाना. ११।७ भ.गी. १०।२५	गायत्र्या शतसहस्रं जप्तं भवति गायत्र्याः षष्टिसहस्राणि जप्तानि भवन्ति (तत्तदुपनिषत्पठनेन) [अ.शिरः. ३।१६ + चतुर्वे. ७	दत्तात्रे. ३।१
गायत्री छन्दसामहम् गायत्री छन्दसां मातेदं ब्रह्म जुषस्व मे	महाना. ११।६	गायत्र्याः सावित्र्यभवत् । सावित्र्याः सरस्वत्यभवत् । सरस्वत्याः सर्वे वेदा अभवन्	गायत्रीर. १
गायत्री त्रिष्टुप् जगत्यनुष्टुप्पञ्क्ति- र्बृहत्युष्णिगदितिरिति त्रिरा- वृत्तेन छंदांसि प्रतिपाद्यन्ते	गायत्रीर. ८	गायत्र्यस्यैकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि, न हि पद्यसे गायत्र्यैकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदा सा न हि पद्यते	बृह. ५।१४।७ गायत्र्यु. ५

गार्गि मातिप्राक्षीर्मा ते मूर्धा व्यपप्त-
 दनतिप्रभ्यावैदेवतामतिपृच्छसि बृह. ३।६।१
 गाग्यो ह वै बालाकिरनूचानः
 संस्पृष्ट आस कौ.उ. ४।१
 गार्हपत्यदक्षिणाग्न्याहवनीयेष्वरणि-
 वेसाहस्ममुष्टिं पिबेदित्येके कठक. ३
 (अथ)गार्हपत्यो दक्षिणाग्निराहव-
 नीयइतिमुखवत्येषां अङ्गारस्यमूर्तिः मैत्रा. ६।५
 गार्हपत्यो दक्षिणाग्निराहवनीयोऽहं
 सत्योऽहं गौरहं गौर्यहसृगहं
 यजुरहं सामाहमथर्वाङ्गिरसोऽहं..
 यो मां वेद स सर्वान् देवान्वेद
 सर्वाश्च वेदान् अ.शिरः. १।१
 गार्हपत्योहवाएषोऽपानोऽन्यानोऽन्वा-
 हार्यपचनो यद्गार्हपत्यात्प्रणीयते,
 प्रणयनादाहवनीयः प्राणः प्रभो. ४।३
 गावउद्रीयोश्चाःप्रतिहारःपुरुषोनिधनं छान्दो.२।१८।१
 गावो भगो गाव इति प्राशयेत्तर्पणं
 जलम् । उपोष्य च चतुर्दश्यां
 कृष्णे शुक्लेऽथवा श्वती बृ. जा. ३।४
 गावो ह जज्ञिरे तस्मात् [वा.सं.३१।८+ चित्यु. १२।५
 [+क्र. अ. ४।८।१८= मं. १०।९०।९
 गावो हिरण्यं धनमन्नपानम्
 सर्वेषां अथै स्वाहा महाना. १४।५
 गां च योऽव्यभिचारेण अ.गी. १४।२६
 गिरति ह वै द्विषन्तं पाप्मानं
 भ्रातृव्यं पराऽस्य द्विषन् पाप्मा
 भ्रातृव्यो भवति १ऐत. १।८।२
 गिरामस्येकमक्षरम् अ.गी. १०।२५
 गिरांमौनंतुबालानामयुक्तं ब्रह्मवादिनाम् ते.विं. १।२२
 गिरिकन्दरेषु वसेदेक एव द्वौ वाचरेत् ।
 ग्रामं त्रिभिर्नगरं चतुर्भिर्ग्राम-
 मित्येकश्चरेत् (यतिः) ना.प. ७।२
 गुञ्जापुञ्जादि दक्षेत् नान्यारोपित-
 वह्निना । नान्यारोपितसंसारधर्मा.. १अवधू. १५
 गुडाकेशः परंतपः अ.गी. २।९
 गुडाकेशेन भारत अ.गी. १।२४
 गुणकर्मविभागयोः अ.गी. ३।२८

गुणकर्मविभागशः अ.गी. ४।१३
 गुणतत्त्वविधं शृणु अ.गी. १८।२९
 गुणत्रयमर्यो रज्जुं सुट्टामात्मबन्धि-
 नीम् । अमनस्कक्षुरेणैव छित्त्वा
 मोक्षमवाप्नुयात् अमन. २।८७
 गुणत्रयमसद्विद्धि ब्रह्मं सत्यात्मकः
 शुचिः । श्रुतं सर्वमसद्विद्धि वेदं
 सर्वमसत्सदा ।.. ब्रह्मं सत्य-
 चिदात्मकः ते.विं. ३।४९
 गुणत्रयमिदं धेनुर्विद्याऽभूद्रोमयं
 शुभम् । मूत्रं चोपनिषत्प्रोक्तं
 कुर्याद्भस्म ततः परम् बृ. जा. ३।२
 गुणत्रययुक्तं कारणं (क्षरीरं) यो. चू. ७२
 गुणत्रयाभया विद्या सा विद्या च
 तदाभया । गुणत्रयमिदं धेनु-
 र्विद्याऽभूद्रोमयं शुभम् । ...
 कुर्याद्भस्म ततः परम् बृ. जा. ३।१
 गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः अ.गी. १५।२
 गुणबद्धस्तथा जीवः प्राणापानेन
 कर्षति । प्राणापानवशो जीवो
 ह्यधश्चोर्ध्वं च गच्छति यो. चू. २९
 गुणवान्भवति, अगुणवान् भवति,
 द्वैतो भवति, अद्वैतो भवति ग. शो. २।२
 गुणःप्रकृतिमेदवशादध्यवसायात्म-
 बन्धमुपगतोऽध्यवसायस्य
 दोषक्षयाद्विमोक्षः मैत्रा. ६।३०
 गुणा इति गुणविदस्तत्त्वानीति
 च तद्विदः वैतथ्य. २०
 गुणा गुणेषु वर्तन्ते अ.गी. ३।२८
 गुणातीतः स उच्यते अ.गी. १४।२५
 गुणानेतानतीत्य त्रीन् अ.गी. १४।२०
 गुणान्वयो यः फलकर्मकर्ता कृतस्य
 तस्यैव नचोपभोक्ता । स विश्व-
 रूपस्त्रिगुणस्त्रिवर्त्मा प्राणाधिपः
 सञ्चरति स्वकर्मभिः [श्वेता. ५।७+ भवसं. २।२३
 गुणा मे वै न संशयः (गुणेशस्य) ग. शो. ४।९
 गुणा वर्तन्त इत्येव अ.गी. १४।३३

गुणांश्च सर्वान् विनियोजयेद्यः	श्वेता. ५।५	गुदात्तुद्वयंगुलादूर्ध्वं मेढ्रात्तु द्वयंगुला-	
गुणाः प्रकृतिसम्भवाः	भ. गी. १४।५	दधः । देहमध्यः... अनुजानीहि..	जा.द. ४।२।३
गुणेष्वप्यपरं वेत्ति	भ.गी. १४।१९	गुदाद्वयङ्गुलादूर्ध्वं मेढ्राद्वयंगुलादधो	
गुणैर्मां सञ्चिन्त्य राजस(ब्रह्मन्)		देहमध्यं मनुष्याणां भवति	शाण्डि. १।४।४
त्वं जगत्कुरु	ग. शो. ४।९	गुरुणा चोपदिष्टोऽपि तत्र सम्बंध-	
गुणैरेक्यं सम्पाद्य महास्थूलं महा-		वर्जितः । वेदोक्तेनैव मार्गेण	
सूक्ष्मे महासूक्ष्मं महाकारणे च		मंत्राभ्यासो जपः स्मृतः	जा.द. २।११
संस्तुत्य मात्राभिरोतानुज्ञात्रनु-		गुरुणा दत्तमेतदन्नं परब्रह्म	रुद्रोप. ३
ज्ञाविकल्परूपं चिन्तयन् प्रसेत्	नृसिंहो. ३।४	गुरुणा दर्शिते तत्त्वे दर्शनात्तन्मयो	
गुणैर्यो न विचाल्यते	भ. गी. १४।२३	भवेत् । विमुक्तं मन्येतात्मानं..	अमन. २।४५
गुणैः कर्माणि सर्वशः	भ. गी. ३।२७	गुरुणाऽपि विचाल्यते	भ.गी. ६।२२
गुणो बुद्धिरहङ्कारस्तन्मात्राणीन्द्रि-		गुरुतत्पगमन्नात्पूतो भवति	ना. छ. ३।१
याणि च । भूतानि च चतुर्विंश-		गुरुदेवात्परं नास्ति तस्मात्तं पूजयेत्सदा	अमन. २।४२
दिति प्राज्ञाः प्रकीर्तिताः	शिवो. १।११	गुरुभक्तिः सत्यमार्गानुरक्तिः सुखागत-	
गुणैर्वैस्तृप्यमानः कलुषीकृतश्चास्थिर-		वस्त्वनुभवश्च तद्वस्त्वनुभवेन तुष्टि-	
श्च अलो.. सस्पृहो.. निबध्नात्या-	मैत्रा. ३।२	र्निसङ्गता... वैराग्यभावश्च	
त्मनाऽऽत्मानं, जातेनेव खचरः...		नियमाः	मं. प्रा. १।१
गुदमाकुञ्च्य यत्नेन मूलशक्तिं		गुरुभक्तिं सदा कुर्याच्छ्रेयसे भूयसे	
प्रपूजयेत् । नाभौलिङ्गस्यमध्ये		नरः । गुरुरेव हरिः साक्षाज्जान्य	
तु वड्यानाख्यं च बन्धयेत्	यो. शि. ५।३७	इत्यब्रवीच्छ्रुतिः	ब्र.वि. ३०
गुदमेढ्रात्तरालस्थं मूलाधारं		गुरुभक्त्या लभेज्ज्ञानं ज्ञानान्मुक्ति-	
त्रिकोणगम् । शिवस्य जीव-		मवाप्नुयात्	शिवो. ७।७४
रूपस्य स्थानं तद्धि प्रचक्षते	वराहो. ५।५०	गुरुभैषज्यसिद्धयर्थमपि गच्छेद्रसा-	
[+यो. शि. १।१६८+५।५		तलम् । यदादिशेद्गुरुः किञ्चि-	
गुदमेढ्रोर्जानुदरवृषणकटिजंघा-		त्तत्कुर्यादविचारतः	शिवो. ७।२९
न्नाभिगुदाग्न्यगारेष्वपानः		गुरुमुखात्तत्त्वमसीति महावाक्यं	
सञ्चरति	शाण्डि. १।४।७	प्रणवपूर्वकमुपलभ्य.. निर्ममो-	
सुदुग्धोनिःसमायुक्त आकुञ्चत्येक-		ऽव्यात्मनिष्ठः... शरीरसन्धार-	
कालतः । अपानमूर्ध्वगं कृत्वा		णार्थ.. भैक्षमाणो.. ब्रह्मभूयाय	
अज्ञानोऽन्ते नियोजयेत्	वराहो. ५।३८	भवति	प. दं. प. ६
गुदस्य पृष्ठभागेऽस्मिन् वीणादण्डः		गुरुरप्येवंविच्छुचौ देशे पुण्यनक्षत्रे	
स देहभृत् । दीर्घास्थिदेहपर्यन्तं		प्राणानायम्य पुरुषं ध्यायन्..	
महानाडीति कथ्यते	यो. शि. ६।८	शिष्याय.. पुरुषसूक्तार्थमुपदि-	
गुदस्य पृष्ठभागे वीणादण्डाभिता		शेद्विद्वान्	सुद्रलो. ५।१
मूर्धपर्यन्तं ब्रह्मरन्त्रे विज्ञेयान्यक्ता		गुरुरहं, आचार्योऽहं, आगमोऽहम्	अद्वै. भा. २
सूक्ष्मा वैष्णवी भवति	शाण्डि. १।४।६	गुरुरेव परं धनम् [अद्वयता. १२	+द्वयो. ६
गुदं नियम्य गुल्फाभ्यां व्युत्क्रमेण		गुरुरेव परंब्रह्म गुरुरेव परा गतिः	अद्वयता. ११
समाहितः । योगासनं भवेदेतत्..	त्रि. प्रा. २।३८	गुरुरेव परा विद्या [द्वयोप. ६+	अद्वयता. ११

गुरुरेव परः कामो गुरुरेव परायणः ।

यस्मात्तदुपदेष्टाऽसौ तस्माद्गुरु-

त्तरो गुरुः

द्वयोप. ७

गुरुरेव परा काष्ठा

अद्वयता. १२

गुरुरेव परा गतिः [शाटपाय. ३६+

अद्वयता. ११

गुरुरेव परायणम्

अद्वयता. ११

गुरुरेव परा विद्या गुरुरेव परं धनम्

द्वयोप. ६

गुरुरेव परो धर्मो गुरुरेव परा गतिः

शाटपाय. ३६

गुरुरेव पिता माता गुरुरेव परः शिवः

शिवो. ७।३८

गुरुरेव हरिः साक्षात्प्राप्त्यन्तर्ब्रवीच्छ्रुतिः

प्र. वि. ३१

गुरुरेव विद्यः श्रीमान्नित्यं तिष्ठेत्

समाहितः

शिवो. ७।४५

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवः सदाशिवः ।

न गुरोरधिकः कश्चित् त्रिपुलोकेषु..

यो. शि. ५।५६

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुदेवात्परं नास्ति तस्मात्तं पूजयेत्..

अमन. २।४२

गुरुवक्त्रात्तुल्यं प्रत्यक्षं सर्वतो मुखम्

प्र. वि. ३४

गुरुवद्गुरुभार्यायां तत्पुत्रेषु च वर्तनम्

पैङ्गलो. ४।८

गुरुवाक्यसमाभिजे ब्रह्मज्ञानं प्रकाशते ।

कर्णधारं गुरुं प्राप्य तद्वाक्यं

प्लवङ्गदम् । अभ्यासवासनाशक्त्या

तरन्ति भवसागरम्

यो. शि. ६।७८

गुरुवाक्यसमाभिजे ब्रह्मज्ञानं स्फुटी भवेत्

योगकुं. ३।१७

गुरुवाक्यसमुद्भूतस्वानुभूत्यादि-

शुद्धया । यस्याभ्यासेन

तेनात्मा सततं चावलोक्यते

महो. ४।२६

गुरुवाक्यात्सुपुत्रायां विपरीतो भवे-

ज्जपः । सोऽहं सोऽहमिति प्रोक्तो

मंत्रयोगः स उच्यते

यो. शि. १।१३

गुरुशास्त्रोक्तभावेन भिक्षोर्भक्षं

विधीयते

मैत्रे. २।१०

गुरुशास्त्रोक्तमार्गेण स्वानुभूत्या च

चिद्धने । ब्रह्मैवाहमिति ज्ञात्वा

वीतशोको भवेन्मुनिः

महो. २।२५

गुरुशिष्यमसद्विद्धि गुरोर्मत्रमस-

त्ततः । यद्वैश्यं तदसद्विद्धि न

मां विद्धि तथाविधम्

ते. वि. ३।५२

गुरुशिष्यशास्त्रादिविनिर्मुक्तः

सर्वसंसारं विसृज्य चामो-

हितः परित्राट...

ना. प. ९।२२

गुरुशिष्यादिभेदेन ब्रह्मैव प्रति-

भासते । ब्रह्मैव केवलं शुद्धं

विद्यते तत्त्वदर्शने

२ आत्मो. ३

गुरुशुश्रूषानिरतः पितृमातृविषेयः

वेदान्तश्रवणकुर्वन्योगं समारभेत्

ज्ञानि. १।५।१

गुरुसम्भवात्मकं लिङ्गं प्रगुरोः

लिङ्गोप. २

गुरुस्त्वं जनकस्त्वं सर्वविद्यारहस्यज्ञः

सर्वज्ञस्त्वमतो मत्तो मदिष्टं रहस्यं

...स्वद्विना वक्तुं कः समर्थः

ना. प. २।१

गुरुः शिव एव लिङ्गं, उभयोर्मिश्र-

प्रकाशत्वात्

रुद्रोप. ३

गुरुणां च हिते युक्तस्तत्र संबत्सरं

वसेत् । नियमेष्वप्रमत्तस्तु...

ना. प. ६।३२

गुरुणां सर्वज्ञानिनां गुरुणादत्तमेत-

दन्नं परब्रह्म

रुद्रोप. ३

गुरुनहत्वा हि महानुभावान्

भ. गी. २।५

गुरुपदिष्टमार्गेण ध्यायन्.. मत्सायुष्यं

द्विजः सम्यग्भजेद्भ्रमरकीटवत्

मुक्तिको. १।२४

गुरुपदिष्टमार्गेण ध्यायन्नाममन-

न्यधीः ।.. गोब्राह्मणसमीपतः

रामर. ४।४

गुरुपदेशश्रवणाच्छिष्यस्तत्त्वमयो

भवेत् । तस्मादुपासितात्सम्यक्

सहजं प्राप्यते गुरोः

अमन. २।४६

(तथा) गुरुपदेशेन विना कल्प-

कोटिभिस्तत्त्वज्ञानं न विद्यते ।

त्रि. म. ना. ५।४

गुरोर्गुरुस्तयोः पूज्यः स्वगुरुश्च

तदाज्ञया

शिवो. ७।२३

गुरोर्न खण्डयेदाज्ञामपि प्राणान्

परित्यजेत् । कृत्वाऽज्ञां प्राप्नु-

यान्मुक्तिं लङ्घयन्नरकं व्रजेत्

शिवो. ७।२८

गुरोर्निन्दापवादं च श्रुत्वा कर्णौ

पिधापयेत् । अन्यत्र नैव सर्पेण

निगृहीयादुपायतः

शिवो. ७।३६

गुरौ द्वैतमवश्यं कार्यम्, यतो न

तस्मादन्यत्

स्वसंवे. ४

गुर्वर्थं ग्राममुपेत्य ध्रुवशीलोऽष्टौ
मास्येकाकी चरेद्वावेवाचरेत् प. हं. प. ७
गुर्वाज्ञया कर्म कृत्वा तत्समाप्तौ
निवेदयेत् । कृत्वा च नैत्यकं
सर्वमवीयीताज्ञया गुरोः शिवो. ७।२५।
गुरुं च शिववद्वक्त्या नमस्कारेण
पूजयेत् । कृताञ्जलिस्त्रिसन्ध्यं च
भूमिविन्यस्तमस्तकः शिवो. ७।५
गुरुः शिवो देवः, गुरुः शिवएवलिङ्गम् रुद्रोप. ३
गुरुः साक्षादादिनारायणः पुरुषः त्रि. म. ना. ८।६
गुरुकौ च वृषणस्याधः सीवन्युभय-
पार्श्वयोः ।... भद्रासनं भवेत् त्रि. भा. २।४५
गुरुकौ तु वृषणस्याधः सीवन्याः
पार्श्वयोः क्षिपेत् [जा. द. ३।७+ शांडि. १।३।८
गुह्यद्वस्त्वन्धकारः स्यादुशब्दस्तन्नि-
रोधकः । अन्धकारनिरोधित्वा-
दुहरित्यभिधीयते [द्वयो. ५+ अद्वयता. १०
गुह्याग्रन्थिन्यो विमुक्तोऽमृतो भवति मुण्ड. ३।२।९
गुह्यानां निहितं साक्षादक्षरं वेद
चैन्नरः । छित्त्वाऽविद्यामहा-
ग्रन्थि शिवं गच्छेत्सनातनम् ।
तदेतदमृतं सत्यं.. रुद्रह. ३६
गुह्याज्ञया निहिताः सप्त सप्त मुण्ड. २।१।८
गुह्याहितं गह्वरेष्ठं पुराणम् । अध्यात्म-
योगाभिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्ष-
शोकौ जहाति कठो. २।१२
गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तं यो भूतेभि-
र्व्यपश्यत । एतद्वै तत् कठो. ४।६
गुहां प्रविश्य तिष्ठन्ती या
भूतेभिर्व्यजायत । कठो. ४।७
गुहां प्रविष्टौ परमे परार्थे । छायातपो
ब्रह्मविदो वदन्ति पञ्चास्रयो
ये च त्रिणाचिकेताः कठो. ३।१
गुह्यामध्यात्मसंज्ञितम् भ. गी. ११।१
गुह्यं ब्रह्म सनातनम् । यथा च
मरणं प्राप्य आत्मा भवति
गीतम । यौनिमध्ये प्रपद्यन्ते
शरीरत्वाय देहिनः कठो. ५।६, ७

गुह्या एवादेशा मधुकृतो ब्रह्मैव
पुच्छं ता अमृता आपः छां. ६. ३।५।१
गुह्याच्छादकं कौपीनमोमिति
(गृहीत्वा).. कृतार्थोऽहमिति
मत्वा स्वाभमाचारपरो भवेत् ना. प. ४।५०
गुह्याद्गुह्यतरं मया भ. गी. १८।६३
गुह्याद्गुह्यतरा विद्या न देया यस्य
कस्यचित् । एतज्ज्ञानी
वसेद्यत्र स देशः पुण्यभाजनम् अमन. २।१२
गुह्याद्गुह्यपरमेधानप्राकृतायोपदेष्टव्या महावा. १
गुह्योपनिषदित्येषा गोप्याद्गोप्यतरा
सदा । चतुर्भ्यश्चापि वेदेभ्य
एकीकृत्यात्र योजिता गुह्यका. ७७
गुह्योऽहमरण्योऽहमक्षरमहंक्षरमहं.. अ. शिरः. १।१
गुह्यधर्माश्रितो विद्वानज्ञातचरितं चरेत् ।
तं दृष्ट्वा शान्तमनसं स्पृहयन्ति
दिवौकसः ना. प. ४।३५
गृहत्वेन हि काष्ठानि खड्गत्वेनैव
लोहता । तद्वदात्मनि देहत्वं
पश्यत्यज्ञानयोगतः यो. शि. ४।२४
गृहस्थशतमेकमेकेन वानप्रस्थेन
तत्समं, वानप्रस्थशतमेकमेकेन
यतिना तत्समम् नृ. पू. ५।१६
गृहस्था अपि चतुर्विधा भवन्ति
वार्ताकवृत्तयः शालीनवृत्तयो
यायावरा घोरसङ्गयासिकाश्चेति आश्रमो. २
गृहस्थानां निर्मला विभूतिः, तप-
स्विभिः सर्वभस्म धार्यम् रुद्रोप. १
गृहस्थो ब्रह्मचारी च वानप्रस्थश्च
भिष्णुकः । यत्र यत्र स्थितो ज्ञानी.. ब्र. वि. ४९
गृहस्थो ब्रह्मचारी वा वानप्रस्थो वा
उपवीतं भूमावप्सु वा विसृजेत् । आरुणि. २
गृहस्थो ललाटादिस्थलेष्वनामिका-
ङ्गुल्या विष्णुगायत्र्या... धारयेत् गोपीचं. ४
गृहं गृहपतिरिव देही देहान्ते परमा-
त्मानं प्रविशति हयग्री. ६

गृहाहनी भूत्वा प्रव्रजेत् । यदि वेत-
 रथा ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेद्गृहाह्वा
 वनाद्वा [ना.प.३।७७+याज्ञ.१+ प. हं. प.१
 गृहाभिमानेन गृहस्थ इव शरीरे
 जीवः संचरति ना.प. ६।४
 गृहीततृष्णाक्षवरीवासनाजातमा-
 ततम् । संसारवारिप्रसृतं चिन्ता-
 तन्तुभिराततम् । अनया तीक्ष्णया
 तात छिन्धि बुद्धिशलाकया महो.६।३१
 गृहीतं चापि यत्किञ्चित्प्रतिबुद्धो
 न पश्यति (स्वप्ने) अ.शां. ३५
 गृहीता बाग्गृहीतं चक्षुर्गृहीतं श्रोत्रं
 गृहीतं मनः । स यत्रैतेस्वप्राया-
 चरति ते हास्य लोकास्तदुतेव.. बृह.२।१।१७
 गृहीत्वाऽष्टोत्तरशतं ये पठन्ति...
 प्रारब्धक्षयपर्यंतं जीवन्मुक्ता
 भवन्ति ते मुक्तिको.१।४२
 गृहीत्वैतानि संयाति भ.गी.१५।८
 गृही पुत्रपौत्रमहेश्वर्यवान्भवति ना.उ.ता.३।१
 गृही भूत्वा वनी भवेत्, वनी भूत्वा
 प्रव्रजेत्, यदि वेतरथा ब्रह्म-
 चर्यादेव प्रव्रजेद्गृहाह्वा वनाद्वा जावा. ४
 गृह्यमाणे घटे यद्वन्मृत्तिका भाति वै
 बलात् । वीक्ष्यमाणे प्रपञ्चे
 तु ब्रह्मैवाभाति... यो.शि.४।१९
 गोअश्वमिह महिमेत्याचक्षते
 हस्तिहिरण्यं दासभार्यं
 क्षेत्राण्यायतनानीति छान्दो.७।२४।२
 गोअश्वानां दासीनां प्रवाराणां
 परिधानस्य मा नोभवान्
 बहोरनन्तस्या..भ्यवदान्योऽभूत् बृह.६।२।७
 गोकुलं वनवैकुण्ठतापसास्तत्र ते द्रुमाः कृष्णो.९
 गोकुलाढ्ये माथुरमण्डलेगोविन्दोऽपि
 निर्गुणः सगुणो निराकारः
 साकारो निरीहः ..विराजते राधोप.१।४
 गोकुलोऽयमग्नेः संयोगादेवाभाति
 सामर.३२
 गोबोहदोहनं यावत्सकाले ह्यचरं
 स्थितम् । धारणां धारयेद्योगी
 निश्चिन्तः सचिन्तकः योगो. २७

गोबोहमात्रमाकाङ्क्षेभिष्कान्तो न
 पुनर्व्रजेत् । (भिक्षार्थं यतिः) १ सं. सौ.२।६१
 गोपगोपीगवावीतं सुरद्रुमतलाभितं ।
 ..चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं मुक्तो
 भवति संसृतेः गो. पू. १।६
 गोपरूपो हरिः साक्षान्मायाविमह-
 धारणः । दुर्बोधं कुहकं तस्य
 मायया मोहितं जगत् कृष्णो. १७
 गोपालसदृशं क्षीरं नापि मध्ये न
 चाप्यधः । ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठेति.. १ अथ. ४
 गोपालं सानुजं कृष्णं हविषया
 सह तत्परम् गोपालो. २।८
 गोपालोऽहमजो नित्यः प्रद्युम्नो-
 ऽहं सनातनः । समोऽहं.. गोपालो. २।८
 आत्मानं चार्चयेद्बुधः
 गोपीचन्दनखण्डं तु चक्राकारं
 सुलक्षणम् । विष्णुरूपमिदं पुण्यं गोपीचं. २३
 गोपीचन्दनद्रानस्य चाश्वमेधसमं
 फलम् ।..नशुद्धिर्गोपिचन्दनात् गोपीचं. २०
 गोपीचन्दनपङ्केन ललाटं यस्तु
 लेपयेत् । एकदडी त्रिवण्डी
 वा स वै मोक्षं समश्नुते गोपीचं. ९
 गोपीचन्दन पापघ्नं विष्णुदेहसमु-
 द्भव । चक्राङ्कितं नमस्तुभ्यं
 धारणान्मुक्तिदौ भर्त्वा वासुदे.३+ गोपीचं. ३
 गोपीचन्दनमायुष्यं..कामदं मोक्षदं
 चैव इत्येवं मुनयोऽब्रुवन् गोपीचं. १८
 गोपीचन्दनमित्युक्तं..कृष्णगोपी-
 जलक्रीडाकुङ्कुमं चन्दनैर्युतम् ।
 ..पुनरात्मादशमं कुलम् गोपीचं. २५
 गोपीचन्दनलिप्ताङ्गं पुरुषं..देवाः
 सन्मुखास्तमुपासते गोपीचं. १३
 गोपीचन्दनलिप्ताङ्गो व्रतं यस्तु समा-
 चरेत् । ततः कोटिगुणं पुण्यं.. गोपीचं. १६
 गोपीचन्दनलिप्ताङ्गो म्रियते यत्र
 कुत्रचित् ..देवेन्द्रपदमश्नुते गोपीचं. १५
 गोपीचन्दनलिप्ताङ्गो यं यं पश्यति
 चक्षुषा । तं तं पूतं विजानीया-
 द्राजभिः सत्कृतो भवेत् गोपीचं. २०

गोपीचन्दनलिप्ताङ्गः पुरुषो येन पूज्यते.. विष्णुलोके गृहीयते	गोपीचं. १४	गोलकस्तु यदा देहे क्षीरवण्डेन वा हृतः । एतस्मिन्वसते शीघ्रम-	प्र. वि. ३८
गोपीचन्दनलिप्ताङ्गः साक्षाद्विष्णु- मयो भवेत्	गोपीचं. १५	विश्रान्तं महास्वगः ।	मो. पू. ११२
गोपीचन्दनलिप्ताङ्गैर्जपदानादिकं कृतम् । न्यूनं सम्पूर्णतां याति विधानेन विधानतः	गोपीचं. १७	गोविन्दं सन्तं बहुधा आराधयन्ति गोविन्दान्मृत्युर्विमेति	मो. पू. १११
गोपीचन्दनं धारयेदक्षयपद- माप्नोति (यो विद्वान्)	गोपीचं. ८	गोविन्दायविद्याहे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो नारायणः प्रचोदयात्	ना. पू. ४११
गोपीजनवल्लभज्ञानेनैतद्विज्ञानं भवति	गो. पू. १११	गोविन्दोदक्षिणेपार्श्वे वामे च मधुसूदनः गोवृत्त्या प्राणसन्धारणं कुर्वन्	विष्णुह. १११
गोपीजनवल्लभो भुवनानि दधे स्वाहा- भितो जगदेतत्सुरेताः	मो. पू. २१२	(परमहंसः) यत्प्राप्तं तैर्नैव निर्लो- लुपः.. सोऽवधूतः स कृतकृत्यो..	तुरीया. ३
गोपीत्यक्षरद्वयम्, चन्दनं त्र्यक्षरम्, तस्मादक्षरपञ्चकं य एवंविद्वान्	गोपीचं. ८	गोवृत्त्यामैक्षमाचरन्..शुक्लध्यानपरा- यणः..सक्यासेन देहत्यागं करोति	प.इ.प.८.
गोपीचन्दनं धारयेदक्षयं पदमाप्नोति	गोपीचं. ८	स परमहंसपरिव्राजको भवति गोस्तनाबुद्धं क्षीरं पुनरारोपणे	ते. वि. ६८१
गोपीत्यम चक्षुतां, चन्दनं तु ततः पश्चात्	गोपीचं. ८	(कृते सति सत्यं) जगत् गोस्तेयं सुरापानं भ्रूणहत्यां तिलाः	महाना. १४१६
गोपीभिः प्रक्षालनाद्गोपीचन्दन- माख्यातं, मदङ्गलेपेन पुण्यं	गोपीचं. १	शान्तिं शमयन्तु स्वाहा गौरनाथन्तवतीसाजनित्रीभूतभावनी ।	मंत्रिको. ४
मुक्तिसाधनं भवति [वासुदे०२+]	गोपीचं. १	सा सितासिता च रक्ता च..	विश्वार्थो. ४
गोप्यो गाव ऋचस्तस्य यष्टिका- कमलासनः । वंशस्तु	कृष्णो. ८	गौरवर्णेशानद लेयदाविश्राम्यतेमनः । तदा.. धर्मकीर्तिमप्तिर्भवेत्	भीमको. १
ममवाक् सङ्गः शुक्लमिन्द्रः..	गोपीचं. ७	गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपद्मी । द्विपद्मी सा चतुष्पदी [हयग्री.७+]	इतिहा. ९७
गोप्यो नोम विष्णुपत्न्यस्तत्ससां चन्दनमाह्लादनम्	गोपीचं. ७	गौरीं वा वरयेत्कन्यां चरेद्वाश्रवणे.. गौः रमा जमा क्षमा क्षा क्षमा क्षोणिः	प्रि.वि. ६
गोप्राक्षेणपरिव्राणं सकृत्कृत्वा.. मुच्यते पञ्चभिर्घोरैः पातकैः	शिवो. ७१९९	प्रथनं च तरङ्गाणां (भवेत्) आस्था नायुषि युज्यते	महो. ११११
गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णोरनुसञ्चरेम । नाकस्य	महाना. ६१९९	ग्रन्थमभ्यस्य मेधावी ज्ञानविज्ञान- तत्त्वतः । पलालमिव धान्यार्थी	प्रि. वि. १८
पृष्ठमभिसंवसामो वैष्णवी लोक इह मादयन्ताम्	महाना. ६१९९	त्यजेद्ग्रन्थमशेषतः [प्र.वि. १८]	प्रि. वि. १८
गोभिर्जुष्टं भजेन ह्यायुषा च बलेन च । प्रजया पशुभिः पुष्कराक्षं	महाना. ६१९९	ग्रन्थात्रैवाभ्यसेद्बुद्ध्वा..नारम्भाना- श्मेत्कचित्	ना.प.५।३७
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु	२शिवसं. २३	प्रसिष्णु प्रभविष्णु च	भ.गी.१३।१७
गोमयं स्वस्थं ग्राह्यम् (मरुमर्थं) शुभे स्थाने वा पतितमपरित्यज्य..	बृ. जा. ३।१	प्रस्त इत्युच्यते भ्रान्त्या ह्यज्ञात्वा वस्तुलक्षणम् । तद्देहादिवन्धेभ्यो	२जातमो. १६
गोमयंशोधयेद्दिवाऋत्रीमभजतु सन्नतः	बृ.जा. ३।८	विमुक्तं ब्रह्मावित्तमम् । पश्यन्ति देहिवन्मूढाः	

ग्रहणामाहकामासं विज्ञानस्प-

न्दितं तथा

अ.शां.४७

ग्रहणाज्जागरितवत्तद्वेतुः स्वप्न

इष्यते । तद्वेतुत्वाच्च तस्यैव

सज्जागरितमिष्यते

अ.शां. ३७

ग्रहणे विषुवे वैवमयने.. रुद्राक्षधारणा-

त्स्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते

रु. जा. ४१

ग्रहमण्डल-भूतमण्डल-प्रेतपिशाच-

मण्डलसर्वोच्चाटनाय अतिभयङ्कर-

अर.. अमिकापस्माराश्च मेदय..

स्वादय.. ॐ ह्रीं ह्रीं हूं फट्...स्वाहा लांगुलो. ४

ग्रही न तत्र नोत्सर्गश्चिन्ता यत्र

न विद्यते । आत्मसंस्थं तदा ज्ञान-

मजातिसमतां गतम्

अद्वैतो. ८

ग्राम एकरात्रं तीर्थे त्रिरात्रं.. नियमा-

नियममुत्सृज्य.. गोवृत्त्या भैक्ष-

माचरन्..शुक्लध्यानपरायणः.. स

परमहंसपरिब्राजको भवति प.हं.प.८

ग्राम एकरात्रं पत्तने पञ्चरात्रं..

अनिकेतः..गिरिकन्दरेषु वसेत् ना. प. ७।२

ग्रामं मिक्षित्वाऽलब्धोपविशेन्ना-

हमतो वृत्तमश्रीयाम्

कौ.व. २।१।२

ग्रामाच्छ्रोत्रियागारादग्निमाहृत्य

स्वविध्युक्तक्रमेण पूर्ववदग्नि-

माजिघ्रेत्

प.हं.प.४

ग्रामादग्निमाहृत्य पूर्ववदग्निमाघ्रापयेत् आ. वा. ४

ग्रामान्तरमभिप्रेप्सुर्गुरोः कुर्यात्

प्रदक्षिणम्

शिवो. ७।८

ग्रामान्ते निर्जने देशे नियतात्मा-

ऽनिकेतनः । पर्यटेस्कीटवद्भूमौ(वतिः) ना. प. ४।१६

ग्रामान्ते वृक्षमूले वा वसेद्देवालयेऽपि

वा । भैक्षेण वर्तयेन्नित्यं..

ना. म. ५।४६

ग्रामारण्यपशुप्लव्णं..मद्यपानेन यत्पापं

तदप्याशु विनाशयेत्

रामो. ५।१२

ग्रामे मनसा स्वाध्यायमधीयीत....

सहवे. १६

ग्राम्यासु जडचेष्टासु सततं विचि-

किंस्सते । नोदाहरति मर्माणि

पुण्यकर्माणि सेवते

अव्युप. ८

ग्राहं ग्राहेण भावं भावेन सौम्यं

सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण प्रसति

तस्मै महाप्रासाद्य नमः

चतुर्वे. ८

ग्राह्यग्राहकसम्बन्धेक्षीणे शान्तिरुदे-

त्यलम् । ..शान्तिर्मोक्षनामा-

भिधीयते

१ सं.सो. २।४६

ग्राह्याभावे मनः (प्रशाम्यति)

प्राणो निश्चलज्ञानसंयुतः । शुद्धे

सत्त्वे परे लीनः..

२ अवधू. ६

ग्रीवा धारापोता (शारीरयज्ञस्य)

ग्रीष्म इष्मः शरद्धविः [चित्यु.१२।३

[=मं.१०।९०।६+

ग्रीष्मः प्रस्तावः, वर्षा उद्गीथः

ग्लानिर्भवति भारत

प्रा. हो. ४।२

अ.अ. ८।४।१६

वा.सं.३१।१४

छांदो. २।१६।२

म. गी. ४।७

घ

घटत्वेन यथापृथ्वीजलत्वेनमरीचिका ।

..तद्वदात्मनि देहत्वं पश्यत्य-

ज्ञानयोगतः

यो.शि.४।२३

घटनाज्ञा यथा पृथ्वी पटनाज्ञा हि

तन्तवः । जगन्नाम्ना चिदाभाति

सर्वं ब्रह्मैव केवलम्

यो.शि.४।१७

घटमध्यगतो दीपो (घटमध्ये यथा

दीपो) बाह्ये नैव प्रकाशते ।

भिन्ने तस्मिन्घटे चैव दीप-

ज्वाला च भासते । स्वकायं

घटमित्युक्तं... [यो.शि.६।७७+

योगकुं.३।१५

घटमध्ये यथा दीपो निवातं

कुम्भकं विदुः

१ यो.त.१४२

घटवद्विविधाकारं भिद्यमानं पुनः पुनः ।

तद्भ्रमं (तद्भेदे) न च जानाति स

जानाति च नित्यशः [प्र.वि.१४+ त्रि.ता. ५।१४

घटसंभृतमाकाशं लीयमाने घटे
यथा । घटो लीयेत नाकाशं
तद्वज्जीवो घटोपमः ब्र.वि. १३

घटसंभृतमाकाशं लीयमाने घटे
यथा । घटो लीयेत नाकाशं... त्रि.ता. १३

घटस्थदीपवच्छ्रद्धन्तरेव
प्रकाशते (आत्मा) यो.कुं. ३।३२

घटाकाशमठाकाशौ महाकाशेप्रतिष्ठितौ ।
एवं मयि चिदाकाशे जीवेशौ.. बराहो. २।५०

घटाकाशमठाकाशौ यथाऽऽकाश-
प्रमेदतः । कल्पितौ, परमौ जीव-
शिवरूपेण कल्पितौ । तत्त्वतश्च
शिवः साक्षाच्चिज्जीवश्च स्वतः.. रुद्रह. ४३

घटाकाशमिवात्मानं विलयं वेत्ति
तत्त्वतः । स गच्छति निराकम्बं.. पैङ्गलो. ४।१४

घटाकाशं महाकाश इवात्मानं परा-
स्मिनि । विलाप्याखण्डभावेन.. अज्यात्मी. ७

घटादिवच्च सङ्घातैर्जातावेतन्निर्दर्शनम्
अद्वैत. ३

घटादिषु प्रलीनेषु घटाकाशादयोयथा ।
आकाशे सम्प्रलीयन्ते तद्वज्जीवा
इहात्मानि अद्वैत. ४

घटावभासको भानुर्घटनाशे
न नश्यति । देहावभासकः
साक्षी देहनाशे न नश्यति आत्मप्र. १९

घटिकाधैलयेनापि शक्तिः सञ्चलते.. अमन. १।४४

घटिकाविंशतिस्तस्माद्ग्राणाद्ब्रह्मविला-
सिधि । व्योमस्थानं नभस्तत्र.. त्रि.भा. १४१

घटे नष्टे यथा व्योम व्योमैव भवति
स्वयम् । तथैवोपाधिविलये
ब्रह्मैव ब्रह्मवित्स्वयम् २आत्मी. २२

घटोऽयमिति विज्ञातुं नियमः कोन्वपेक्षते २आत्मी. ५

घटोलीयेत नाकाशं तद्वज्जीवो घटोपमः ब्र.वि. १३

घनतरभवकारणं तमो यद्वरिदिन-
कुम्भभया.. (प्रणश्यति) बराहो. ३।११

घनमुत्सृज्य वा सूक्ष्मे सूक्ष्ममुत्सृज्य
वा घने । रममाणमपि क्षिप्तं मनो
नान्यत्र चालयेत् ना.वि. ३७

घर्मशान्तिः प्रजायेतमुहुर्निद्राचमूर्च्छना अमन. १।३५

घनवासनमेतत्तु चेतः कर्तृत्व-
भावनम् । सर्वदुःखप्रदं तस्मा-
द्वासनां तनुतां व्रजेत् अ.पू. १।३१

घृणिः सूर्य आदित्यो न प्रभावात्यक्षरम्,
मधु क्षरन्ति तद्रसम् वनदु. १२१

घृणिः सूर्य आदित्य ॐ नमो नारा-
यणाय सहस्रार हुं फट् स्वाहा ना.उ.ता. २।३

घृतमिव पयसि निगूढं भूतेभूते च
वसति विज्ञानम् । सततं मन्थ-
यितव्यं मनसा मन्थानभूतेन ब्र.वि. २०

घृतसुपादिसंयुक्तमन्नं नाद्यात्
कदाचन । पात्रमस्य भवेत्पाणिः (यतेः) १सं.सो. २।७६

घृतस्य धारा अभिचाकशीमि महाना. १२।३

[+क्र.अ. ३।८।१० = मं. ४।५८।५

[वा.सं. १३।३८ +तै.सं. ४।२।९।६

घृतं तजोमधुमदिन्द्रियं [तै.भा. ३।११।८ + चित्त्यु. ११।८

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते.. महाना. ८।७

[+क्र.अ. २।५।२३ = मं. २।३।११ + वा. सं. १।७।८८

घृतं श्वमूत्रसहितं मधुस्यात्सुरया
समम् । ..घृतादीन्वर्जयेद्यतिः १सं.सो. २।७५

घृतात्परं मण्डमिवातिसूक्ष्मं ज्ञात्वा
शिवं.. विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं
ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपापैः श्वेता. ४।१६

घृतात्परं मण्डमिवाति सूक्ष्मां ज्ञात्वा
काली.. मुच्यते सर्वपापैः गुह्यका. ५९

घृतान्मन्थाविरहितं घृते लीनं घृतं
यथा । ब्रह्मनिष्ठस्तथा योगी.. अमन. १।३१

घोरेण त्वा मृगूणां चक्षुषा प्रेक्षे
व नदु. १६०

घोषिणि प्रथमा मात्रा विद्यामात्रा
तथाऽपरा । पतङ्गिनी तृतीया
स्यात् (पतासु १२ मात्रासु मरणे
क्रमेण ब्रह्मप्राप्तिः) ना.वि. ९

घृतोऽपि मधुसूदन भ.गी. १।३५

घ्राणस्य गन्धग्रहणं वचसोवागव्यापारः ना.प. ६।४

घ्राणं च घ्रातव्यं च, रसश्च रसयि-
तव्यं च (सर्वं पर आत्मनि सम्प्रतिष्ठते) प्रभो. ४।८

घ्राणं च घ्रातव्यं च नारायणः.. सुबालो. ६।१

सर्वं नारायणः सुबालो. ६।१

घ्रातव्यमेवाप्येति यो घ्रातव्यमेवा-
स्तमेति... विज्ञानमेवाप्येति

तद्वसृतमन्नयमशोकमनंतवीज-
मेवाप्येति सुबालो. ९।३

च

चक्रतुण्डाय धीमहि तीक्ष्णदंष्ट्राय
धीमहि महाना. ६।११
चक्रं यथासनं कूर्मं मयूरं कुक्षुटं
तथा । वीरासनं स्वस्तिकं च
भद्रं सिंहासनं तथा । मुक्तासनं
गोक्षुलं च.. (आसनानि ११) वराहो. ५।१५
चक्रं विभक्तिं वपुषाऽभितप्तं वलं देवा-
नाममृतस्य विष्णोः । ..विहन्ति
अथतयो वीतरागाः सुवर्ष. ६
(अथ) चक्राभ्यां यत्रोपाकृते प्राप्त-
स्तुवाकेन पुरा परिधानीयाया
क्षमा व्यववृत्तिः.. (१) छान्दो. ४।१६।४
चक्षी विह्वी च पाषण्डी...द्वित्रिवारेण
सुख्यस्तः...पते नार्हन्ति सज्यासं.. ना.प. ३।४
चक्रेण रक्षिता मथुरा, तस्मा-
त्क्षेत्रपालपुरी गोपालो. १।१६
चक्षुरङ्गिराः (पुरुषाग्नेः) श्रोत्रं
विस्फुलिङ्गाः, तस्मिन्नेतस्मि-
न्मनो देवा अजं जुह्वति बृह. ६।२।१२
चक्षुरध्वर्युः, मनो ब्रह्मा
(विवृण्वन्तः) महाना. १८।१
चक्षुरसावादित्यश्चन्द्रमा मनो
विशः श्रोत्रम् श्वेत. १।५।१
चक्षुरावात्तुर्वाणिरुपाण्यभिचिसृजते
चक्षुषा सर्वाणि रूपाण्यप्योति कौ.उ. ३।४
चक्षुरादित्यं (अप्येति मृतस्य) बृह. ३।२।१३
चक्षुरादीन्द्रियैर्दृष्टं ज्ञातं...तस्यैवो-
क्तिर्भवेत्सर्वं...नान्यथा भवेत् जा.व. १-९
चक्षुरावात्ता हि पुरुषस्य महती मात्रा मैत्रा. ६।३
चक्षुरहृक्कामदप्रयज्ञान्निवन्नास्तैव श्वेत. १।४।४
चक्षुरद्वीथमुपासाञ्चकिरे छान्दो. १।२।४
(अथ) चक्षुरुचुस्त्वं न दृष्टायेति
(देवाः) तथेति तेभ्यश्चक्षु-
रुवासाय बृह. १।३।४
चक्षुरेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः, स
आदित्येन ज्योतिषा भाति छान्दो. ३।१८।५
चक्षुरेव सप्तादिति होवाच बृह. ४।१।४
चक्षुरेवाप्येति यच्चक्षुरेवास्तमेति सुबालो. ९।२

चक्षुरेवायतनमाकाशः प्रतिष्ठा
सत्यमित्येनदुपासीत बृह. ४।१।४
चक्षुरेव सात्माऽमस्तत्साम छान्दो. १।७।९
चक्षुरेवास्या एकमङ्गमुदूढं तस्य रूपं
परस्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ. उ. ३।५
चक्षुर्गात्रम् (प्राणस्य प्रहणः) कौ. उ. ३।१
चक्षुर्वाता दधातु नः [सूर्यो. ६+
[=मं. १०।१५।८।३
चक्षुर्नामदेवतावरोधिनीसामेऽमुष्मा-
दिमवरुन्दां तस्यै स्वाहा कौ.उ. १।३
चक्षुर्नो देवः सविता [ऋ.अ. ८।८।१६
[=मं. १।१५।८।३ सूर्यो. ६
चक्षुर्मयः श्रोत्रमयः पृथ्वीमयः (आत्मा) बृह. ४।१।५
चक्षुर्मानुषं चित्तं चक्षुषादितद्विन्वते बृह. १।४।१०
चक्षुर्मित्रस्य प्रहणस्तमोः [सहवै. १७ ऋ.अ. १।८।५
[मं. १।११५।१+अथर्व. १३।२।३५
[वा.सं. ७।४२ तै.सं. १।४।४।१२
चक्षुर्मे स्वयि दधानीति पिता कौ.उ. १।१५
चक्षुर्लोको मनो ज्योतिः, योवैतं पुरुषं
विधात्सर्वस्यात्मनः पराचरणं
स वै वेदिता स्यात् बृह. ३।१।१२
चक्षुर्वाव प्रतिष्ठा छान्दो. ५।१।३
चक्षुर्वै महः, स रूपेणातिप्राहेण
गृहीतश्चक्षुषा हि रूपाणि, बृह. ३।२।५
चक्षुर्वै प्रतिष्ठा, चक्षुषा हि सप्ते च
दुर्गे च प्रतिष्ठति बृह. ६।१।३
चक्षुर्वै ज्योतस्प्रहृतो हि किं स्यात् बृह. ४।१।४
चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युस्तथाविदं चक्षुः
सोऽसावादित्यः बृह. ३।१।४
चक्षुर्वै सत्यं, चक्षुर्वै सत्यं बृह. ५।१५।४
चक्षुर्वै सप्ताद् परमं ब्रह्म बृह. ४।१।४
चक्षुर्हि वै सत्यं, तस्माद्यदिवानी
द्वौ विवदमानावेयाताम् गायत्र्यु. ३
चक्षुर्होचक्राम तत्संवत्सरं प्रोक्ष्या-
गत्योवाच कथमशकतं महते
जीवितुमिति बृह. ५।१।९

चक्षुर्होषक्राम तत्.. पर्येत्योवाच कथमशकतते मज्जीवितुमिति	छान्दो. ५।१।९
चक्षुश्च द्रष्टव्यं च नारायणः	सुबालो. ६।१
चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः	म. गी. ५।२७
चक्षुष आदित्यः (निरभिद्येत)	२ऐत. १।४
चक्षुषश्चक्षुः भोत्रस्य भोत्रं मनसो ये मनो विदुः (आत्मानं)	बृह. ४।४।१८
चक्षुषश्चक्षुः (आत्मा)	केनो. १।२
चक्षुषश्चक्षुरस्म्यहं, चिदानन्दमयो...	ब्र. वि. ९४
चक्षुषः साक्षी भोत्रस्य साक्षी वाचः साक्षी मनसः साक्षी बुद्धेः साक्षी..	
सर्वस्य साक्षी (आत्मा)	नृसिंहो. २।२
चक्षुषा मीयते जगत्	इतिहा. ४
चक्षुषा रूपं भोत्रेण शब्दं मनसा ध्यानं एकैकं.. प्रज्ञापयति	कौ. उ. ३।२
चक्षुषा वै सम्राट् पश्यन्तमाहु- रद्राक्षीरिति	बृ. उ. ४।१।४
चक्षुषा सर्वाणि रूपाण्याप्नोति	कौ. उ. ३।४
चक्षुषा सृष्टौ द्यौश्चादित्यश्च	१ऐत. १।७।४
चक्षुषा हि तद्विन्दते (मानुषं वित्तं)	बृह. १।४।१७
चक्षुषा हि रूपाणि पश्यति	बृह. ३।२।५
चक्षुषा हि समेच दुर्गेच प्रतितिष्ठति	बृह. ६।१।३
चक्षुषा ह्ययं मात्राश्चरति	मैत्रा. ६।६
चक्षुषि चित्तसंयमात्सर्वलोकज्ञानं	शांडि. १।७।६२
चक्षुषी बाल्यभागौ (शारीरयज्ञस्य)	प्रा. द्वो. ४।२
चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ (अक्षरब्रह्मणः)	मुंड. २।१।४
चक्षुषी सूर्याचन्द्रमसौ	सन्ध्यो. २३
चक्षुषे स्वाहा सम्पदे स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्ये स० सवमवनयति	बृह. ६।३।२
चक्षुषो द्रष्टा भोत्रस्य द्रष्टा वाचो द्रष्टा (आत्मा)	नृसिंहो. २।१
चक्षुषो रूपग्रहणं, भोत्रयोः शब्दग्रहणं	ना. प. ६।४
चक्षुषो रूपं स्पर्शाः, भोत्रस्योष्माणः, मनसः स्वराः	३ऐत. २।५।१
चक्षुषोर्व सूर्यः (अजायत)	गणेशो. ३।११
चक्षुष्टो वा मूढर्नो वाऽन्येभ्यो वा शरीरदेशेभ्यस्तमुत्क्रामन्तं प्राणोऽनूत्क्रामति	बृह. ४।४।२

चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि..	महाना. १३।८
[+ चित्त्यु. १५।२+ = मं. १०।१८।१+ [+अथर्व. १२।२।२१	क्र. अ. ७. ६।२६ वा. सं. ३५।७ तै. आ. ३।१५।२ छांदो. ३।१३।७ कौ. उ. २।४ कौ. उ. २।१५ कौ. उ. २।२
चक्षुष्यः श्रुतो भवति चक्षुस्ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा चक्षुस्ते मयि दध इति पुत्रः चक्षुः परस्ताच्छ्रोत्रमारुन्धे चक्षुः पश्यति रूपाणि भोत्रं सर्वं शृणोत्यपि । अन्यानि खानि सर्वाणि तेनैव प्रेरितानि तु । ...प्रवर्तन्ते	पा. ब्र. १४ कौ. उ. ३।२ केनो. १।१ तैत्ति. १।७।१ १ऐत. १।४।३
चक्षुः पश्यत्सर्वे प्राणा अनुपश्यन्ति चक्षुः भोत्रं क उ देवो युनक्ति चक्षुः भोत्रं मनो वाक् त्वक् चर्म मा० स० २० स्नावास्थि..	भवसं. २।१६ गर्भो. १ ४।१९ चाक्षुषो. १ चित्त्यु. १२।६ वा. सं. ३१।१२ महो. ४।९९ म. गी. ६।३३ म. गी. ६।३४
चक्षुः भोत्रं मनो वाक्प्राणः अयन्ते चक्षुः भोत्रं स्पर्शनं च रसनं घ्राण- मेव च । बुद्धीन्द्रियाणि जानी- यात्पञ्च	तैत्ति. १।५।८
चक्षुः भोत्रे शब्दोपलब्धौ, त्वक्स्पर्शौ.. चक्षुः सर्वे रूपैः सहाप्येति (पुरुषं) [कौ. उ. ३।३+ चक्षुरोगाः सर्वतो नश्यन्ति चक्षोः सूर्योऽजायत [सुबालो. १।५+ [क्र. अ. ८।४।१९ = मं. १०।९०।१३ चक्षुलत्वं मनो धर्मो विहेर्धर्मो यथोष्णता चक्षुलत्वात् स्थितिं स्थिराम् चक्षुलं हि मनः कृष्ण चतस्रश्चतस्रो व्याहृतयः, ता यो वेद स वेद ब्रह्म	वराहो. ५।२१ परब्र. ४ ना. प. ८।१६ शाटपाय. २०
चतुरङ्गुलमुत्सेधं चतुरङ्गुलमायतम् ।.. तत्रैव नाडीचक्रं तु... चतुरङ्गुलवेष्टनमिव षण्णवतितत्त्वानि तन्तुवद्विभज्य चतुरात्मेश्वरः प्राज्ञस्तृतीयः पादसंज्ञितः चतुरो मासान् ध्रुवशीलतः स्यात्स यावत्सुप्तोऽन्तरात्मा पुरुषो विश्व- रूपः (यतिः)	

चतुरोवेदानधीयीत सर्वशास्त्रमयं
विदुः। इतिहासपुराणानांतन्मे
मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २शिवसं. २७
चतुरौदुम्बरो भवत्यौदुम्बरः स्तुवः
वृह. ६।३।१३
चतुर्जालं पद्मकोशं यं सृत्युर्नाव-
पश्यति। तं प्रपद्ये.. सहवै. २३
चतुर्णामपि वेदानां यथोपनिषदः
शिरः।.. इयं रहस्योपनिषत्तथा
शुकर. १।१५
चतुर्थेऽनुरात्माऽपि सविदेकरसो
ब्रह्म। तुरीयावसितत्वाच्च... ना.प. ८।१९
चतुर्थे हृदये चक्रं विज्ञेयं तदधो-
मुखम्। ज्योतीरूपं च तन्मध्ये
योगरा. १०, ११
हंसं ध्यायेत्प्रयत्नतः
चतुर्थीश्रमः सञ्ज्ञासः पञ्चमो
लिङ्गधारणम् लिङ्गोप. १
चतुर्थी स्वप्न इत्युक्ता (भूमिका)
स्वप्नाभं तत्र वै जगत् अ.पू. ५।८७
(ॐ)चतुर्थे दक्षिणाञ्जायः शृङ्गेरीमठः... मठाञ्जा. ६
चतुर्थेऽधामनि शिवशक्त्याख्यं वाग्भवम् त्रि. ता. १।१६
चतुर्थेन तु पिण्डेन अस्थिमज्जा
प्रजायते पिंडो. ५
चतुर्थे मासे गुल्फ-जठर-कटि-
प्रदेशा भवन्ति (गर्भस्य) गर्भो. ३
चतुर्थोदात्ततमान् स्वरान्
अन्तरानुदूहन्ति संहितो. ३।१
चतुर्थ्योऽनुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपाः
(प्रणवमात्राः) नृसिंहो. ३।१
चतुर्दशकरणोपरमाद्विशेषविज्ञाना-
भावाद्यदाशब्दादीन्नोपलभते
तदात्मनः सुषुप्तम् सर्वसारो. ३
चतुर्दशदिनान्ते च लयस्थो यदि
तिष्ठति। अणिमाद्यष्टसिद्धिः
स्यादणुत्वं प्राप्यते यथा अमन. १।६४
चतुर्दशमुखं चाक्षं रुद्रनेत्रसमुद्भवम्।
सर्वव्याधिहरं चैव... रु. जा. ३९
चतुर्दलं स्याद्विधारं स्वाधिष्ठानं
च षड्दलम्। यो.चू. ४
चतुर्दृष्टिनिरोधेऽधैः सूर्यो नास्तीति
मन्यते। तथा.. ब्रह्मनास्तीति मन्यते आ. प्र. २७

चतुर्था चास्याधिकारिभेदत्वेन
यजन्ति माम् गोपाढो. २।७
चतुर्भावस्थित इति सर्वदेववेद्योनिः
सर्ववाच्यवस्तु प्रणवात्मकम् अ.शिलो. १
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभि-
रेवच।.. स मे विष्णुः प्रसीदति शरभो. २६
चतुर्भिः पश्यते देवान् पञ्चभिः
(मासैः).. इच्छयाऽऽप्नोति कैवल्यं अ. ना. ३०
चतुर्भुजं महाविष्णुं पूरकेण विचिन्तयेत् ध्या. वि. ३०
चतुर्भुजं शङ्ख-चक्र-शार्ङ्ग-पद्मगदा-
न्वितम्।.. वेणु-शृङ्गधरं तु वा
(ध्यायेत्) गोपाढो. २।२९
चतुर्मात्रात्मकोद्धारो मम प्राणा-
त्मिका देवता पा. अ. १
चतुर्मुखमुखाभो जवनहंसवधूर्मम।
मानसे रमतां नित्यं.. सरस्वती सरस्व. २५
चतुर्मुखं च रुद्राक्षं चतुर्वक्त्ररू-
पकम्। तद्धारणाच्चतुर्वक्त्रः प्रीयते.. रु. जा. २७
चतुर्मुखादीनां.. विना विष्णु-
भक्त्या... मोक्षो न विद्यते त्रि. म. ना. ८।४
चतुर्मुखेन्द्रदेवेषु मनुष्यादिगवादिषु।
चैतन्यमेकब्रह्मातः प्रज्ञानं ब्रह्ममप्यपि शु. र. ३।२
चतुर्मुखे मनोयुज्जगत्सृष्टिकरो भवेत् यो. शि. ५।५२
चतुर्युगसहस्राणि ब्रह्मणो
दिवा भवति... त्रि. म. ना. ३।४
चतुर्विधब्रह्मचर्यं षड्विधं गार्हस्थ्यं
चतुर्विधं वानप्रस्थधर्म.. अभ्यस्य.. ना. प. १।१
चतुर्विधा मनोवस्था विज्ञातव्या
मनीषिभिः। विक्षिप्तचगतायातं अमन. २।९२
चतुर्विधा भजन्ते माम् भ. गी. ७।१६
चतुर्विंशतितत्त्वं च यद्यदस्ति.. सर्वं
शशविषाणवत् [ते. वि. ५।८१-८९
चतुर्विंशतितत्त्वात्मको नारायणः
चतुर्विंशतितत्त्वानि केचि- ना. पू. ता. ५।४
दिच्छन्ति वादिनः वराहो. १।१
चतुर्विंशतिरर्धमासाः संवत्सरः,
संवत्सरादेवात्मानं... सहवै. १२
चतुर्विंशतिभिर्वर्षैः... शक्ति-
तत्त्वमयो भवेत् अमन. १।७९

चतुर्विंशतिरव्यक्तं प्रधानं पुरुषः परः
(तत्त्वं)

शारीरको. १५

चतुर्विंशतिसङ्ख्यातं व्यक्त-

मव्यक्तमेव च

मंत्रिको. १५

चतुर्विंशतिरात्रीर्दीक्षितो भवति

सहस्रै. १२

चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री गायत्रं

प्रासस्सवनं

छान्दो. ३।१६।१

चतुर्विंशत्यक्षरा महालक्ष्मी-

यैजुस्तत्साम्नोऽङ्गं वेद

नृ. पू. १।३

चतुर्वेदज्ञोऽपि शिवभक्त्याऽन्त-

र्भवतीति स एव ब्राह्मणः

रुद्रोप. १

चतुर्वेदेषु शास्त्रेषु ...

चतुर्षु वर्णेषु भैक्षचर्येण चरेत्

कठश्रु. ६

चतुर्होतारंप्रदिशोनुक्लृप्तं [चित्त्यु. ११।२ तै.आ. ३।११।२

चतुर्होतारो यत्र सम्पदं गच्छन्ति

दैवैः [चित्त्यु. ११।२+

तै.आ. ३।११।२

चतुर्होतृणामात्मानंकवयोनिचित्युः

चित्त्यु. ११।३

[+तै.आ. ३।११।३

चतुश्चत्वारिंशत्संस्कारसम्पन्नः..

सर्वविधाभ्यासकृत्वा..ब्रह्मचर्य..

गार्हस्थ्यं..वानप्रस्थधर्म..अभ्यस्य

..शान्तो दान्तः सन्न्यासी..

मुक्तो भवति

ना. प. १।१

चतुश्चत्वारिंशदक्षरा त्रिष्टुप्

छान्दो. ३।१६।३

चतुश्शब्दो भवेदेको ह्योङ्कारश्च..

सोऽहमित्यवधार्यात्मानंगोपा-

लोऽहमिति भावयेत्

गोपालो. २।३

चतुश्शब्दसंख्येनापि सप्तधातुगता

रसाः। स मे पुष्टिं प्रकुर्वन्ति

अमन. १।३८

चतुष्कलासमायुक्तो भ्राम्यति..

गोळकस्तु यद्वा देहे..

अ.वि. १८

चतुष्कृतात्मिकैव सर्वकृता-

त्मिका ब्रह्ममयी

श्रीवि. ता. १।७

चतुष्कृता परच्योतिः साऽहमोम्

श्रीवि. ता. ४।१

चतुष्पदां गौरुत्तमां, लोहानां कांचनं..

इतिहा. ४९

चतुष्पदां चतुरस्रम् (अभिस्थानं)

शांडि. १।४।३

चतुष्पदां हृन्मध्यं (देहमध्यं)

शांडि. १।४।४

चतुष्पथसमायुक्तमहाद्वारगवायुना ।

सहस्थितत्रिकोणार्धगमनै-

र्दृश्यतेऽच्युतः

न्या.वि. ९४

चतुष्पलप्रमाणेन लयेनानुभवोभवेत् ।

अकस्मान्निपतत्यत्र शब्दः

कर्णे शुभाशुभः

अमन. १।४१

चतुष्पाज्जागरितः स्थूलः स्थूलप्रज्ञो

हि विश्वभुक् । एकोनविंशति-

मुखः..स्थूलभुक्चतुरात्मा..

ना.प. ८।१०

चतुष्पादन्तर्वर्तिनोऽन्तर्जीवब्रह्मण-

श्चत्वारि स्थानानि

परब्र. ३

(तत्र) चतुष्पादं ब्रह्म विभाति जाग-

रितं स्वप्नं सुषुप्तिं तुरीयमिति

ब्रह्मो. २

चतुष्पादिदमक्षरं परं ब्रह्म

अ.शिखो. १

चतुःकलालयेनापि निद्राभावो निव-

र्तते । हृदि स्फुर्लिगवद्योगी..

अमन. १।४६

चतूरूपो ह्ययमकारः स्थूलसूक्ष्म-

बीजसाक्षिभिरकाररूपैराप्तेरादि-

मत्त्वाद्वा..आप्नोति इवा इदं सर्व..

नृसिंहो. २।४

चतूरूपो ह्ययं मकारः स्थूलसूक्ष्म-

बीजसाक्षिभिर्मकाररूपैरपीतेर्वा

स्थूलत्वात्.. साक्षित्वाच्च..

नृसिंहो. २।६

चतूरूपो ह्ययमुकारः स्थूलसूक्ष्मबीज-

साक्षिभिरुकाररूपैरुत्कर्षात्..

साक्षित्वाच्चोत्कर्षति ह वै ज्ञान-

सन्तति..

नृसिंहो. २।५

चतूरूपो ह्ययमोङ्कार ओतानुज्ञात्रनु-

ज्ञाविकल्पैरोङ्काररूपैरात्मैव

नृसिंहो. २।७

चत्वारः पादाश्चत्वार्यङ्गानि भवन्ति

नृ.पू. २।२

चत्वारः पुरुषा इति बाध्वः, शरीर-

पुरुषश्छंदःपुरुषो वेदपुरुषो महा-

पुरुष इति

इयेत. २।३।१

चत्वारि वाक्परिमिता पदानि

सरस्व. १६

[ना.पू.ता.५।८+

क्र.अ. २।३।२२

[=मं. १।१६४।४५ +अथर्व.

९।१०।२७

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादाः..

महाना. ८।१०

[शौनको. ४।६+तै.आ. १०।१०।२

क्र.अ. ३।८।१०

[=मं. ४।५।८।३+वा.सं. १७।९१

(२७) चत्वारिंशत्संस्कारसम्पन्नः

सर्वतोविरक्तः.. साधनचतुष्टय-

सम्पन्न एव सञ्जयस्तुमर्हति १ सं. सो. २।१

चत्वारिंशदथतिस्रः समिधा उशती-

रिव मातरो माविशन्तु त्रिपुरो. ३

चत्वारो दोषः प्रहरन्ति यस्य सर्वस्य

गोप्त्रे..रयिमत्प्रवृद्धये स्वाहा पारमा. ९।१

चत्वारो मनवस्तथा

म. गी. १०।६

चत्वारो वेदा उपवेदाः पुराणानि...

तस्याव्ययमानानि भवन्ति सामर. ९२

चन्दनं वापि गोपीनां..

भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् गोपीचं. २२

चन्द्र इव राहोर्मुखात्प्रमुच्य शरीर-

मकुतं कृतात्मा ब्रह्मलोकमभि-

संभवामि छान्दो. ८।१३।१

चन्द्र एव, सविता नक्षत्राणि सावित्री

सावित्र्यु. ७

चन्द्रमण्डलसङ्काश... विषं हर

हर हुं फट् स्वाहा गारुडो. ११

चन्द्रमसा वाक् सर्वाणि

ज्योतीषि महीयन्ते तैत्ति. ५।२

चन्द्रमसि तृप्यति दिशस्तृप्यन्ति

छान्दो. ५।२०।२

चन्द्रमसैवायं ज्योतिषाऽऽस्ते पत्यते

कर्म कुरुते विपल्येति.. बृह. ४।३।३

चन्द्रमसो रोहिणी, ऋषीणामरुन्धती

चित्त्यु. ९।१

चन्द्रमसो विद्युतं तत्पुरुषोऽमानवः

[छान्दो. ४।१५।५ + ५।१०।२

चन्द्रमा अथकारः, आत्मेहकारः

छान्दो. १।१३।१

चन्द्रमा अस्मै पूर्वपक्षापरपक्षान्

विचिनोति... १ ऐत. १।७।५

चन्द्रमा एवास्य ज्योतिर्भवति

बृह. ४।३।३

चन्द्रमानिधनं, एतद्राजनं देवतासुप्रोतं

छान्दो. २।२०।१

चन्द्रमा मनसो जातः

[पु. सू. + चित्त्यु. १२।६

[+ सुबालो. १।५ + क्र. अ. ८।४।१९

[= मं. १०।९०।१३ +

वा. सं. ३१।१२

चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्

२ ऐत. १।४

चन्द्रमा रयिर्वा एतत्सर्वं यन्मूर्तं

चामूर्तं च तस्मान्मूर्तिरेव रयिः

प्रश्नो. १।५

चन्द्रमाः पद्मोता, सकतून्..

चित्त्यु. ७।३

चन्द्रमेवाप्येति यश्चन्द्रमेवास्तमेति सुबालो. १।१०

चन्द्रवद्विमलः पूर्णः सदानन्दः स्वयंप्रभः जज्ज्वात्सो. ११

चन्द्रवचरते देही स मुक्तश्चानिकेतनः पैङ्गलो. ४।४

चन्द्रसूर्यो समौ कृत्वा तयोर्योगः

प्रवर्तते १ यो. सि. १।११६

चन्द्रसूर्यादिकौ त्यक्त्वा राहुश्चे-

दृश्यते जगत् (तदा जगत्सत्यम्) ते. वि. ६।९४

चन्द्रात्रेयस्तथाऽत्रिश्च ऋष्यात्रेयो

मुनित्रयम् । एतैर्महात्मभिः

प्रोक्ताः शिवधर्माः समासतः शिवो. ७।१३६

चन्द्रार्कमध्यमा क्षत्तिर्यत्रस्था

तत्र बन्धनम् योगकुं. ३।७

चन्द्रां प्रभासां यशसा

ज्वलन्तीं भियं.... श्री. सू. ५ = क्र. सि. ५।८७।५

चन्द्रांशेन समभ्यस्य सूर्या-

शेनाभ्यसेत्पुनः यो. चू. ६७

चन्द्रां हिरण्ययीं लक्ष्मीं जात-

वेदो मे आवह [श्री. सू. १, १४ = क्र. सि. ५।८७

चन्द्रे चित्तसंयमात्ताराव्यूह-

ज्ञानम् (भवति) शांदि. १।७।५२

चमूषच्छयेनः शकुनो विभृत्वा

सुदर्श. ७

चम्पकातसीकुंकुमपिङ्गलेन्द्रनील...

घनसारसन्निभंगायत्र्याः प्रत्यक्षर-

मनुस्मृत्य..

गायत्रीर. ९

चरणं नो लोके सुवितां दधातु

[त्रि. म. ना. ७।३

+ सुदर्श. ५

चरणं पवित्रं विततं पुराणं

[त्रि. म. ना. ७।३ + महाना. ५।१०

सुदर्श. ५

चरणां चक्षुरादीनां विषयेषु यथा-

क्रमम् । यत्प्रत्याहरणं तेषां प्रत्या-

हारः स उच्यते

यो. चू. १२०

चरेन्माधुकरं भैक्षं यतिर्ल्लेच्छ-

कुलादपि । एकान्नं नतु भुञ्जीत

बृहस्पतिसमादपि

१ सं. सो. २।७।१

चर्मखण्डं द्विधा भिन्नमपानोद्धार-

धूपितम् । ये रमन्ति नमस्तेभ्यः

साहसं किमतः परम्

ता. प. ४।३०

चलदृष्ट्याभ्योमभागवीक्षितुः पुरुषस्य
दृष्ट्यभ्येज्योतिर्मयूखा वर्तन्ते; तद्-
ज्ञेन योगी भवति

अद्वयता. ३

चलनदृष्ट्या व्योमभागवीक्षितुः

..तद्दृष्टिः स्थिरा भवति

मं. ब्रा. १।३

चलस्थिरोमयाभावैरावृणोत्येव

बालिशः

अ. शां. ८३

चलाचलनिकेतश्च यतिर्यादृच्छिको

भवेत् [ना.प. ६।४४+

वैतथ्य. ३८

चले वाते चलो बिन्दुर्निश्चले निश्चलो

भवेत्। योगी स्थाणुत्वमाप्नोति ततो

वायुं निरोधयेत्

यो.चू. ८९

चाकश्यमानमिव जाञ्जल्यमानमिव

देहीप्यमानमिव लेलिहानं तदेव

मे ब्रह्म

आर्षे. ५।२

चाक्षुषपंक्तिपुनाति(उपनिषत्पाठकः)

राधिको. ९

चाक्षुषस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषो-

ऽयमेव स योऽयमात्मा

बृह. २।५।५

चाक्षुषः स्वप्रचारी च सुप्तः सुप्तात्पर-

श्च यः। मेदाश्चैतेऽस्य चत्वारस्ते-

भ्यस्तुर्यं महत्तरम्

मेत्रा. ७।११

चाक्षुषी दीप्तिर्भविष्यति(चा.विद्यया)

चाक्षुषो. १

चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो यो नित्य-

मधीते न तस्याक्षिरोगो भवति

अक्षयु. ३

चाण्डालदेहे पश्चादिस्थावरे ब्रह्म-

विप्रहे। अन्येषु तारतम्येन..

वराहो. ३।१६

चाण्डालोऽचाण्डालः (भवति)

पौलकसोऽपौलकसः..

बृह. ४।३।२२

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं

भ.गी. ४।१३

चापबाणधरं श्यामं ससुग्रीवं..

रामभद्रं हृदि ध्यात्वा

रामर. २।८४, ८५

चापलानि न कुर्वीत स सर्वार्थमवा-

प्नुयात्। न कुर्यात्केनचिद्वैर-

मघ्रवे जीविते सति

शिवो. ७।५८

चिचन्द्रमयीति सर्वाङ्गस्रवणं स्नानम्

भावनो. ८

चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम्

भ.गी. ३।२५

चिचिदाकारतो भिन्ना न भिन्ना

चित्त्वहानितः [अ.पू. ४।३३+

रुद्रह. ४४

चिचैतन्यस्वरूपोऽहमहमेवपरःशिवः

तै.वि. ३।३३

चिचैत्यकलितो बन्धस्तन्मुक्तौ मुक्ति-

रुच्यते। चिदचैत्या किलात्मेति

सर्वसिद्धान्तविग्रहः

महो. ६।७७

चिचैत्ये स्वयमम्लातं मननान्मन

उच्यते। अतःसङ्कल्पसिद्धेयं

सङ्कल्पेनैव नश्यति

महो. ४।१२३

चिज्जडानां तु यो द्रष्टा सोऽच्युतो

ज्ञानविग्रहः। स एव हि महादेवः.. स्कंदो. ४

चितश्चिन्नचिदाकाराद्विद्यतेजडरूपतः।

भिद्यतेचेज्जडोभेदश्चिदेकासर्वदा.. रुद्रह. ४५

चित्तिच्छायासमावेशाज्जीवः स्याद्भाव-

हारिकः। अस्यजीवत्वमारोपात्

साक्षिण्यप्यवभासते

सरस्व. ४४

चिति सत्यं जगत्तथा। प्रतिभासत

एवेदं न जगत्परमार्थतः

महो. ५।१०७

चितोरूपमिदं ब्रह्मन्क्षेत्रज्ञ इतिकथ्यते

महो. ५।१२४

चित्तइतिचित्तविदो धर्माधर्मौ चतद्विदः

वैतथ्य. २५

चित्तकाला हि येऽन्तस्तु द्वयकालाश्च

ये बहिः। कल्पिता एव ते सर्वे..

वैतथ्य. १४

चित्तत्यागः परं सुखम्। अतश्चित्तं

चिदाकाशे नय क्षयं..

अ. पू. ५।११७

चित्तनाशः सुखाय च। चित्तसत्तां

क्षयं नीत्वा..चित्तं नाशमुपानयेत्

अ. पू. ४।१५

चित्तनाशाभिधानं हियदातेविद्यतेपुनः

मुक्तिको. २।३४

चित्तनाशे विरूपारूपे न किञ्चिदिह

विद्यते। न गुणा नागुणास्तत्र..

अ.पू. ४।२१

चित्तमध्यात्मं, चेतयितव्यमधिभूतं

क्षेत्रज्ञस्तत्राभिदैवतं, नाडी तेषां

निबन्धनम्

सुबालो. ५।९

चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानैर्न शुद्ध्यति

जा. द. ४।५४

चित्तमपानयोगेन जिह्वाद्वारा

रसगुणउपस्थाधिष्ठितोऽप्सु

तिष्ठत्यापास्तिष्ठन्ति

त्रि. ब्रा. १।६

चित्तमर्थेषु चरति पादपेष्विव मर्कटः

अ. पू. ३।६

चित्तमाज्यं, वाग्वेदिः, आधीतं बहिः

चित्त्यु. १।१

चित्तमात्मा, चित्तं प्रतिष्ठा,

चित्तमुपास्वेति

छान्दो. ७।५।२

चित्तमूलं हि संसारस्तत्

प्रयत्नेन शोधयेत्

वराहो. ३।२३

चित्तमूलो विकल्पोऽयं चित्ताभावे
न कश्चन । अतश्चित्तं समाधेहि
प्रत्यग्रूपे परात्मनि अध्यात्मो. २६
चित्तमेव हि संसारस्तदप्रयत्नेन
क्षोभयेत् । यच्चित्तस्तन्मयो
भवति (भावि).. मैत्रा. ६।३४
[मैत्रे. १।९+ शाटपाय. ३
चित्तमेव हि संसारो रोगादिद्वेष-
दूषितम् । तदेव तैर्विनिर्मुक्तं
भवान्स इति कथ्यते महो. ४।६६
चित्तमेवाप्येति यश्चित्तमेवास्तमेति सुबालो. ९।१३
चित्तवृत्तिनिरोधेन नादो गान्धर्वो. ६
ह्यानन्वसम्भवः
चित्तवृत्तेरतीतो यश्चित्तवृत्त्यव-
भासकः । सर्ववृत्तिविही-
नात्मा वैदेही मुक्त एव सः ते. विं. ४।५३
चित्तशुद्धिकरं शौचं वासना-
प्रयनाशनम् मैत्रे. २।९
चित्तशुद्धिर्भवेद्यावत्तावन्नित्यं
चरैस्सुधीः ता.प. ५।४७
चित्तशुद्धौ क्रमाज्ज्ञानं नुद्यन्ति
ग्रंथयः स्फुटम् पा. प्र. ४२
चित्तसत्ता परं दुःखं चित्तत्यागः
परं सुखम् अ.पू. ९।११७
चित्तसत्तां क्षयं नीत्वा चित्तं
नाशमुपानये अ.पू. ४।१५
चित्तसत्तेहदुःखायचित्तनाशःसुखाय.. अ. पू. ४। १५
चित्तस्पन्दितमेवेदं प्राह्यमाहकवह्वयं ।
चित्तं निर्विषयं नित्यं.. अ.शां. ७२
चित्तस्य निश्चलीभावधारणं धारणां
विदुः । सोऽहं चिन्मात्रमेवेति
चिन्तनं ध्यानमुच्यते २अवधू. ४
चित्तस्य निश्चलीभावोधारणाधारणं.. त्रि.प्रा. २।३१
चित्तस्य हि प्रसादेन हन्ति कर्म
शुभाशुभम् । प्रसन्नात्माऽऽत्मनि
स्थित्वासुखमन्ययमभुते [मैत्रा. ६।२० + मैत्रे. १।११
चित्तस्यान्तर्मुखीभावो प्रत्याहारः
[त्रि. प्रा. ३०+ २अवधू. ३
चित्तं धारणमर्थात् तस्मिन्सति जग-

जयम् । तस्मिन्क्षीणे जगत्क्षीणं..
[महो. ३।२१+ यो. शि. ३।२१
चित्तं चरति स्वे यस्माज्जिह्वा भवति
स्वेगता । तेनेषा स्वेचरी नाम..
[ध्या.वि. ८२+ यो.चू. ५५
चित्तं च चेतयितव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
चित्तं च चेतयितव्यं च तेजश्च
विद्योतयितव्यं च प्राणश्च
विधारयितव्यं च प्रभो. ४।८
चित्तंतुशरदभ्रांशविलयं प्रविलीयते अस्त्युप. ३६
चित्तं दूरे परित्यज्य योऽसि
सोऽसि स्थिरो भव महो. ५।५१
चित्तं ध्यानेन यच्चिन्त्यं शास्त्रदृष्टेन
कर्मणा । योगस्थेनैव मार्गेण
होकाग्रमानसो भवेत् दुर्वासो. २।५
चित्तं न संस्पृश्यत्यर्थं नार्थाभासं
तथैव च । अभूतो हि यतश्चाथार्थं
नार्थाभासस्ततः पृथक् अ. शा. २३
चित्तं निर्विषयं नित्यमसङ्गं तेन कीर्तितं अ.शां. ७२
चित्तं प्रपञ्चमित्याहुः.. ते. विं. ५।३२
चित्तं प्राणभृत्सु... त्वैवाविस्तरामात्मा श्रेत. ३।२।२
चित्तं प्राणेन सम्बद्धं सर्वजीवेषु
संस्थितम् । रज्ज्वा यद्वत्सु-
सम्बद्धः पक्षी तद्वदिदं मनः यो. शि. १।५९
चित्तं बुद्धिरहङ्कार आत्विजः
सोमपं मनः अमन. २।७
चित्तं वाव सङ्कल्पाद्भूयो यदा वै
चेतयतेऽथ सङ्कल्पयते.. छान्दो. ७।५।१
चित्तं विनष्टं यदि भासितं स्यात्तत्र
प्रतीतो मरुतोऽपि नाशः यो.शि. १।१२४
चित्तसंज्ञायतेजन्मजरामरणकारणं मुक्तिको. २।२५
चित्तसन्तानेन भवं यन्कारुद्र
(?) तनिष्ठा चित्त्यु. २३।१
चित्तं स्थिरं यस्य विनाऽवलम्बात्
स एव योगी स गुरुः स सेव्यः अमन. २।४३
चित्तं होता (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।१
चित्तं ह्येवैषामेकायनम्, जित्तमात्मा छान्दो. ७।५।१
चित्ताकाशं चित्ताकाशमाकाशं च.. महो. ४।५८

चित्तादिविलये जाते पवनस्य लयो
भवेत् । मनःपवनयोर्नाशादिन्द्रि-
यार्थान्विमुञ्चति अमन. १।२०
चित्तादिसर्वभावेषु ब्रह्मत्वेनैव भाव-
नान् । निरोधः सर्ववृत्तीनां
प्राणायामः स उच्यते ते.वि. १।३१
चित्तादिसर्वहीनोऽस्मि मैत्रे. ३।१०
चित्ताद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे
भगवानब्रवीतु छान्दो. ७।५।३
चित्तान्वै सलोकान् ध्रुवान् ध्रुवः
प्रतिष्ठितान् प्रतिष्ठितोऽव्यथमा-
नानव्यथमानोऽभिसिद्धयति छान्दो. ७।५।३
चित्ताद्द्वारयन्तारं जीवाख्यं
त्वंपदं भजे शु. र. २।६
चित्तिः सुक् । चित्तमाज्यम् चित्त्यु. १।१
चित्ते चलति संसारे चलो मोक्षः प्रजा-
यते । तस्माच्चित्तं स्थिरीकुर्यात्. अमन. २।९१
चित्ते चलति संसारो निश्चलं
मोक्ष उच्यते यो.शि. ६।५८
चित्ते चैत्यदशाहीने या स्थितिः
क्षीणचेतसाम् । सोच्यते शान्त-
कलना जाग्रत्येव सुषुप्तता अ.पू. २।१२
चित्ते तदेकतानता परिकरः द.मू. १६
चित्ते त्यक्ते लयं याति द्वैतमेतच्च
सर्वतः । शिष्यते परमं शान्त-
मेकमच्छमनामयम् अ.पू. ५।६३
चित्तेन स्मृतिः (भवति) स्मृत्या स्मारं. महाना. १७।१३
चित्ते शुद्धे शुचिः साक्षात्प्रत्य-
गव्योतिर्व्यवस्थितः जा.द. ६।१६
चित्तैककरणा सुषुप्तिः शारीरको. १०
चित्तैककरणा सुषुप्त्यवस्था भवति पैङ्गलो. २।८
चित्तैकप्रायतो ज्ञानमुक्तं समुपजायते मुक्तिको. २।३९
चित्तोन्मेषानिमेषाभ्यां संसार-
प्रलयोदयो अ.पू. ५।४०
चित्तोपशान्तिफलदं परमं विद्धि
कारणम् (प्राणायामः) अ.पू. ४।४५
चित्तरानन्दमस्यहम् (?) ते.वि. ३।८
चित्त्वं चिदहमेते च लोकाश्चिदिति
भावय [याज्ञव. २६+

चित्प्रसादोपलब्धात्मा स्पर्शो
नाहमचेतनः १ सं.सो. २।१६
चित्रदीप इव स्थितः अक्ष्यु. ४२
चित्रभित्तिरिव मिथ्यामनोरमं
(भूतात्मानं) मैत्रा. ४।२
चित्रस्थदीपैस्तमसो नाश-
श्चेदस्त्विदं जगत् ते.वि. ६।७९
चित्रं देवानामुदगादनीकं [सह. १७ अ.अ. ८।१।७
[=मं. १।११५।१+ वा.सं. ७।४२
[अथर्व. १३२।३५+तै.सं. १।४।४३।१३ ऐत. २।३।३
चित्राख्या सीविनी नाडी शुक्र-
(शुक्र-) मोचनकारिणी यो.शि. ५।२७
चित्रो ह वै गार्गायिर्णिर्यक्ष्यमाण
आरुणि वज्रे.. कौ.उ. १।१
चित्सामान्यमथासाद्य सत्तामात्रा-
त्मकं ततः । सुषुप्तपदमालम्ब्य
तस्थौ गिरिरिवाचलः अ.पू. ३।१७
चित्सारमनन्ताश्चर्यसागरममिततेजो-
राश्यन्तर्गततेजोविशेषं.. आनन्द-
(परमकैवल्यं) प्रवाहैरलंकृतं त्रि.म.जा. ७।८
चित्सूत्रघ्राणयोः स्वनिर्गता प्रणवधारा
षडंगुलदशाशीतिः पा. अ. ४
चित्स्वरूपोऽहमिति सदा भावयन्
सम्यङ्किमीलिताक्षः.. परब्रह्माद-
लोकयन्तद्रूपो भवति अद्वयता. १
चिदक्षरोऽहं सत्योऽहं वासुदेवोऽजरो-
ऽमरः । अहंब्रह्म चिदाकाशं नित्यं.. ते.वि. ६।६९
चिदभिस्वरूपपरमानन्दशक्तिस्फुरणं
वक्षाम् (ब्रह्मात्मस्वरूपस्य पूजार्थां) भावनो. ८
चिदभिस्वरूपं धूपः (परमात्मपूजार्थां) मं.प्रा. २।५
चिदम्बरं तु हन्मध्ये आभारे
कमलालयम् आ.द. ४।४९
चिद्वणोः परमस्यान्तः कोटिब्रह्माण्ड-
रेणवः । उत्पत्तिस्थितिमभ्येत्य
लीयन्ते शक्तिपर्ययात् महो. ३।४
चिदहं चिदहं चेति (ब्रह्मास्मीति
निश्चयात्) स जीवन्मुक्त उच्यते ते.वि. ४।३०
चिदहं चिदिमे लोकाश्चिदाशा-
श्चिदिमाः प्रजाः महो. ६।७९

चिदाकारस्वरूपोऽसिचिन्मात्रोऽसि.. ते.वि. ५।६५
 चिदाकारस्वरूपोऽस्मि नाहमस्मि.. ते.वि. ३।४३
 चिदाकारं चिदाकाशं चिदेव
 परमं सुखम् ते.वि. ६।६२
 चिदाकाशमयोऽस्म्यहम् ते.वि. ३।३
 चिदात्मनि सदानन्दे देहरूढामह-
 नि यम् । निवेश्य..केवलो भव.. अज्यात्मा. ९
 चिदात्मानं नित्यशुद्धबुद्धमुक्तसद-
 दयः ।.. वासुदेवोऽहमिति अक्षुप. ४१
 चिदात्मा भगवान् सर्वसाक्षित्वेन
 दितोऽस्म्यहम् । तेनात्मना बहुज्ञेन.. अ.पू. ३।८
 चिदात्मास्मि निरंशोऽस्मि परापर-
 विवर्जितः । रूपं स्मरन्निजं.. अ. पू. ५।१३
 चिदात्माऽहं परात्माऽहं निर्गुणोऽहं
 परात्परः । आत्ममात्रेणयस्तिष्ठेत्
 स जीवन्मुक्त उच्यते ते.वि. ४।१
 चिदात्मैकरसोऽस्म्यहम् ते.वि. ३।१४
 चिदादित्यस्वरूपं दीपः(आत्मपूजायां) मं.ब्रा. २।५
 चिदादीप्तिः पुष्पम् .. आत्मपू. १
 चिदाद्याद्वितीयब्रह्मसंविद्धिः सच्चिदा-
 नन्दलहरी महात्रिपुरसुन्दरीबहि-
 रन्तरनुप्रविष्टा स्वयमेकैवविभाति बह्वचो. २
 चिदानन्दशरङ्गिण्याः प्रवाहैरति-
 मङ्गलम् सि.सा.५।१
 चिदानन्दमयानन्तपुष्पमाल्यै-
 विराजमानं.. त्रि.म.ना. ७।१२
 चिदानन्दमयोऽस्म्यहम् ते.वि. ३।४
 चिदानन्दरसनिर्झरैरभिव्याप्तम् त्रि.म.ना. ७।९
 चिदानन्दैकरसं शिवं प्रशान्तममृतं
 तत्परं च ब्रह्म तत्त्वमसि शां.डि. २।३
 चिदानन्दोऽस्म्यहं चेता चिद्धनश्चि-
 न्मयोऽस्म्यहम् अ.वि. ९५
 चिदाप्तिः पुष्पं, चिदग्निस्वरूपं धूपः मं.ब्रा. २।५
 चिदिहास्तीति चिन्मात्रमिदं चिन्मय-
 मेवच । चित्त्वं चिदहमेतेच लोका-
 श्चिदिति भावय [याज्ञव. २+ वराहो. २।४७
 चिदेकत्वपरिज्ञाने नशोचतिनमुह्यति अ. पू. ४।३४
 चिदेकरसो ह्ययमात्मा नृसिंहो. १।५
 चिदेव परमं सुखम् ते.वि. ६।६२

चिदेव अनुज्ञाता तस्मात्परमेश्वर
 एवैकमेव तद्भवति (ब्रह्म) नृसिंहो. ८।६
 चिद्धनश्चिन्मयोऽस्म्यहम् अ. वि. ९५
 चिद्धप्रस्थात्रद्वैतमन्थिकृत्वानाभ्यादि-
 ब्रह्मविलम्बमाणं.. मूलमेकं सत्यं
 सृणमयं विज्ञातं स्यात् परम. ४
 चिद्धनानन्दरूपोऽसि परिपूर्ण-
 स्वरूपकः ते.वि. ५।६६
 चिद्धनैकरसोऽस्म्यहम् ते.वि. ६।६५
 चिद्धीदं सर्वं काशते प्रकाशते च नृसिंहो. ७।३
 चिद्धीदं सर्वं निरात्मकमात्मसात्
 करोति , तस्मात् परमेश्वर
 एवैकमेव तद्भवति (ब्रह्म) नृसिंहो. ८।४
 चिद्रूपत्वात्त मे जाड्यं सत्यत्वा-
 ज्ञानृतं मम । आनन्दत्वात्तमेदुःखं आ. प्र. ३।१
 चिद्रूपमात्रं ब्रह्मैव सच्चिदानन्द-
 मद्यम् । आनन्दघन एवाहम्.. ते. वि. ३।२६
 चिद्रूपमेव प्रतिभानयुक्तं तस्मादखण्डं
 मम रूपमेतत् वराहो. ३।४
 चिद्रूपया मायया संवलितो जीव-
 सङ्गः सङ्ग्यासी भवति सामर. ९९
 चिद्रूपादित्यमण्डलं द्वात्रिंशद्बुद्ध्युह-
 भेदैरधिष्ठितम् त्रि.म. ना. ७।८
 चिद्रूपे आश्रिता जीवास्ते तान्गुणान्
 प्रपद्य जडतां प्रपेदिरे सामर. १०२
 चिद्रूपो जीवो ज्ञानी भवति सामर. ९८
 चिद्विर्वर्तजगतोऽस्य कारणं तत्सदा-
 हमिति मौनमाश्रय वराहो. ३।७
 चिद्रूपमेव किलास्तीह परापर-
 विवर्जितम् । सर्वत्रासम्भव-
 चैत्यं यत्कल्पान्तेऽवशिष्यते अ. पू. ५।३६
 चिन्तनंवासुदेवस्यपरस्यपरमात्मनः ।
 स्वरूपव्याप्तदेहस्य ध्यानं कैवल्य-
 सिद्धिदम् त्रि.ब्रा. २।१४७
 चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं मुक्तो
 भवति संसृतेः गो. पू. १।७
 चिन्तयित्वा शरीरस्य नित्यानित्यं
 हि योगवित् । योगमेव प्रवक्ष्यामि.. दुर्वासो. २।९
 चिन्तयेदात्मनाऽऽत्मनि अ. ना. ३।५

चिन्तानलशिखादग्धं कोपाजगर- चर्चितम् ।...समुद्धरमनोब्रह्म- न्मातङ्गमिव कर्दमात्	महो. ५।१३४
चिन्तानिचयचक्राणि नानन्दाय घनानि मे । सम्प्रसूतकल- त्राणि गृहाण्युप्रापशमिव	महो. ३।७
चिन्तामपरिमेयां च	म.गी. १६।११
चिन्तितकार्याण्ययत्नेन सिद्धयन्ति	भावनो. १०
चिन्त्यमेवं विनिर्मुक्तं शाश्वतं ध्रुव- मच्युतम् । तद्ब्रह्मणस्तदध्यात्मं..	ते. बि. १।८
चिन्तयैऽसि भगवन्मया	म.गी. १०।१७
चिन्मयताविभूतं चित्सारमनंताश्चर्य...	त्रि.म.ना.७।८
चिन्मयमिदं सर्वं, तस्मात्परमेश्वर एवैकमेवं तद्भवति (ब्रह्म)	नृसिंहो. ८।२
चिन्मयस्याद्वितीयस्य निष्कलस्या- क्षरीणिः । उपासकानां कार्यार्थं ब्रह्मणो रूपकल्पना	रा. पू. १।७
चिन्मयं चोत्सृष्टिदण्डम्	निर्वाणो. ६
चिन्मयं परमानन्दं ब्रह्मैवाहमिति स्मरन् (सर्वत्र विचरेत्)	ना. प- ५।९१
चिन्मयं हि सकलं विराजते स्फुटतरं परमस्य योगिनः	वराहो. ३।५
चिन्मयानन्ददिव्यविमानच्छत्र- ध्वजराजिभिर्विराजमानम्	त्रि.म.ना.७।१२
(७७) चिन्मयेऽस्मिन्महाविष्णो जाते दशरथे हरौ..राजते योमहीस्थितः	रा. पू. १।१
चिन्मयो ह्ययमोङ्कारः [+८।४+८।६+८।७]	नृसिंहो. ८।२
चिन्मात्रज्योतिरस्म्यहम्	मैत्रे. ३।२१
चिन्मात्रमक्षयं शान्तमेकं ब्रह्मास्मि नैतरत्	अ. पू. ५।८
चिन्मात्रमेकमजमाद्यमनन्तमन्तः	महो. ५।९३
चिन्मात्रमेव चिन्मात्रमखण्डैकरसं परम् । सर्वं चिन्मात्रमेव हि	ते. बि. २।२४
चिन्मात्रमेवमात्माऽणुराकाशादपि सूक्ष्मकः । चिदणोः परमस्यान्त- कोटिब्रह्माण्डरेणवः	महो. २।३
चिन्मात्रं केवलं चाहं नास्त्यनात्मेति निश्चिनु । इदं प्रपञ्चं नास्त्येव..	ते. बि. ५।३४

चिन्मात्रं चैत्यरहितमनन्तमजरं शिवम् ..यदनादि निरामयम्	महो. २।६८
चिन्मात्रं सर्वगं नित्यं सम्पूर्णं सुखम- द्वयम् । साक्षाद्ब्रह्मैव नान्योऽस्ति..	वराहो. २।२१
चिन्मात्राव्यावहारिकम्	ते. बि. २।३५
चिन्मात्रास्ति किञ्चन । पश्य..	महो. ५।५९
चिन्मात्रास्ति कोऽपि हि	ते. बि. २।३५
चिन्मात्रास्ति कोशादि	ते. बि. २।३७
चिन्मात्रास्ति दिक्पालाः	ते. बि. २।३५
चिन्मात्रास्ति देवता	ते. बि. २।३४
चिन्मात्रास्ति पूजनम्	ते. बि. २।३६
चिन्मात्रास्ति मन्तव्यं	ते. बि. २।३६
चिन्मात्रास्ति मन्त्रादि	ते. बि. २।३४
चिन्मात्रास्ति माया च	ते. बि. २।३६
चिन्मात्रास्ति मौनं च	ते. बि. २।३७
चिन्मात्रास्ति लक्ष्यं च	ते. बि. २।४१
चिन्मात्रास्ति वेदनम्	ते. बि. २।३४
चिन्मात्रास्ति वैराग्यं	ते. बि. २।३८
चिन्मात्रास्ति वै बसु	ते. बि. २।३७
चिन्मात्रास्ति सङ्कल्पः	ते. बि. २।३४
चिन्मात्रास्ति सत्यकम्	ते. बि. २।३६
चिन्मात्रात्परमं ब्रह्म...	ते. बि. २।३५
चिन्मात्रोऽहं न संशयः	सर्वसा. ८
चिन्मात्रोऽहं सदाशिवः	कैव. १८
चिरकालपरिक्षीणमननादिपरि- भ्रमः । पदमासाद्यते पुण्यं प्रज्ञयैवैकया तथा	अ. पू. १।२७
चिरकालं हृदेकान्तव्योमसंवेदनात्.. प्राणस्पन्दो निरुध्यते	शांडि. १।७।३५
चिरक्षिप्रव्यपदेशेन निमेषमारभ्य परार्धपर्यन्तं कालचक्रं..चक्रवत्परि- वर्तमानाः..कालस्य विभाग- विशेषाः..कालरूपा भवन्ति	सीतो. ७
चिरजीवित्वं ब्रह्मचारी रूपवान् न हिंसां प्रपद्यते	संहितो. ४।१
चिरं सन्दर्शनाभावादप्रफुल्लं बृह- द्वचः । ..स्वप्नो जाग्रदिवोदितः	महो. ५।१७
चीराजिनवासः, अनादितमन्त्रः	निर्वाणो. ७

चुबुकं हृदि विन्यस्य पूयेद्वायुना
 पुनः । कुम्भकेन यथाशक्ति
 धारयिष्यात्तु रेचयेत् १यो. त. ११३
 चेतनं चित्तरिक्तं हि प्रत्यक्षचेतन-
 मुच्यते । निर्मनस्कस्वभावत्वाच्च
 तत्र कलनामलम् १सं. सो. २।४५
 चेतनाधातुरप्येकः स्मृतः पुरुषसंज्ञकः आयुर्वे. १
 चेतनोऽसौ प्रकाशत्वाद्देया-
 भावाच्छिलोपमः महो. २।६
 चेतयितव्यमेवाप्येति यश्चेतयि-
 तव्यमेवास्तमेति सुबालो. १।१३
 चेतसा नान्यगामिना भ. गी. ८।८
 चेतसा सम्पत्त्यज्य सर्वभावात्म-
 भावनाम् [महो. ४।८+
 चेतसा सर्वकर्माणि अ. पू. १।३२
 चेतसो यदकर्तृत्वं तत्समाधान-
 मीरितम् । तदेव केवलीभावं भ. गी. १८।५७
 सा शुभा निर्वृतिः परा महो. ४।७
 चेतामन्तागन्तोत्सृष्टानन्दयिता
 कर्ता वक्ता (आत्मा) मैत्रा. ६।७
 चैतन्यमात्रसंसिद्धः स्वात्मारामः
 सुखासनः ते. बि. ४।४७
 चैतन्यशक्त्याऽलंकृतस्वात्मचैतन्य-
 कैलासेश्वरलिङ्गाकारं सुपूजितम् सि. सा. ६
 चैतन्यस्यैकरूपत्वाद्देवो युक्तो न
 कर्हिचित् । जीवत्वं च तथा यो. शि. ४।१
 ज्ञेयं रज्ज्वां सर्पग्रहो यथा मैत्रा. ३।४
 चैतन्योऽस्मि समोऽस्म्यहम्

चैत्यनिर्मुक्तचिरूपं पूर्णव्योतिस्वरूप-
 कम् । संविन्मात्रमहं महत् महो. ६।८१
 चैत्यवर्जितचिन्मात्रे पदे परम-
 पावने । अक्षुब्धचित्तो विश्रान्तः
 स जीवन्मुक्त उच्यते बराहो. ४।२९
 चैत्यानुपातरहितं सामान्येन च
 सर्वगम् । यच्चित्तत्वमनाख्येयं स
 आत्मा परमेश्वरः महो. ४।२९
 चैत्यानुपातरहितं चिन्मात्रमिह
 विद्यते । तस्मिन्नित्ये तते शुद्धे.. महो. ४।२९
 चैतन्यचित्तेजसोऽन्तरात्मा अद्वैतो. १
 चैतन्यमात्मानमणुं महान्तम् ।
 सम्पूजकः पञ्च महोपपातकै-
 र्युक्तो विमुक्तः शिवरूपमेति १विल्वो. १३
 चैलाजिनकुशोत्तरम् भ. गी. ६।११
 चोदको दर्शयेन्मार्गं बोधकः
 स्थानमाचरेत् ब्र. वि. ५२
 चोदको बोधकश्चैव मोक्षदश्च परः
 स्मृतः । इत्येषां त्रिविधो ज्ञेय
 आचार्यस्तु महीतले ब्र. वि. ५१
 (बलं) चोदयित्री सृष्टतानां
 चेतन्ती सुमतीनाम् क्र. अ. १।३।११
 सरस्व. १२+ तै. सं. ४।१।११।२ + वा. सं. २०।८५
 चोरस्यान्नं नवश्राद्धं ब्रह्महा गुरु-
 तल्पगः । गोस्तेयं सुरापानं
 भ्रूणहत्यां तिलाः शान्तिं
 शमयन्तु स्वाहा महाना. १४।६

छ

छन्दस्तःशिरोदक्षिणः पक्षः, उत्तरः
 पक्षः पुच्छमात्मेत्याख्यानम् १ऐत. ३।४।२
 छन्दः पुरुष इति यमवोचामाक्षर-
 समाप्ताय एव ३ऐत. २।३।१
 छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् चित्त्यु. १२।४
 [क्र. अ. ८।४।१८=मं. १०।९०।१० + वा. सं. ३१।७
 छन्दांसि यज्ञाः क्रतवो व्रतानि भूतं
 मन्त्रं.. अस्मान्मायी (देवी)
 सृजते विश्वमेतत्.. [श्वेता. ४।९+ गुह्यका. ५४

छन्दांसि यस्य पर्णानि भ. गी. १५।१
 छन्दो जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि. २
 छन्दोभिर्विविधैः पृथक् भ. गी. १३।५
 छन्दोभ्योऽध्यमृतात्सम्बभूवसमेन्द्रो
 मेधया स्पृणोतु [ना. प. ४।४५+ तैत्ति. १।४।१
 छन्दोऽहं, सत्योऽहं, गार्हपत्यो
 दक्षिणाग्निराहवनीयोऽहम् अ. शिरः. १।१
 छादयन्ति ह वा एनं छन्दांसि १ऐत. १।१।१

छायातपौत्रहविदो वदन्ति पञ्चा-

प्रयो ये च त्रिणात्रिकेताः

कठो. ३।१

छित्त्वाऽविद्यामहाप्रस्थि शिवं गच्छे-

त्सनातनम् । तदेतदमृतं सत्यं..

रुद्रह. ३७

छित्त्रेन संशयं योगं

भ. गी. ४।४२

छित्तेष्व्यानयोगेन, सुषुम्नैका न छित्यते

क्षुरिको. १८

छित्यमानो न ब्रूयात् । तदेवं विद्वांस

इद्वामृता भवन्ति

शाश्वत्याय. १८

छित्यमानोऽपि न कुप्येत न कम्पेतो-

त्पञ्चमिव तिष्ठासेत्.. आकाश-

मिव तिष्ठासेत्.. सत्येन तिष्ठासेत् ।

सत्योऽयमात्मा

सुबालो. १३।३

छिद्रं भद्रं तथा सिद्धं पञ्चचेति चतुष्टयम्

ध्या. विं. ४३

छिद्रां वा छायां पश्येत् । तदप्येवमेव..

३ऐत. २।४।५

छिन्दन्ति दातृहस्तं च जिह्वाप्रमितरस्य च

इतिहा. २७

छिन्देन्नाडीशतं धीरः प्रभावादिह

जन्मनि

क्षुरिको १९

छिन्नद्वैधा यतात्मानः

भ. गी. ५।२५

छिन्नपाशस्तथाजीवः संसारंतरते सदा

क्षुरिको. २२

छिन्नं भिन्नं मृतं नष्टं वर्धते नास्ति

केवलम् । इत्याद्यान् वदेच्छ-

ब्दान्, साक्षाद्गुणान् मङ्गलम्

शिवो. ७।८०

छिन्नाभ्रमण्डलं व्योम्नि यथा शरदि

धूयते । वातेन कल्पकेनैव तथा-

ऽन्तर्धूयते मनः

महो. ४।९६

छिन्नाभ्रमिव नश्यति

भ. गी. ६।३८

छेत्ता न ह्युपपद्यते

भ. गी. ६।३९

छेतुर्महस्यशेषतः

भ. गी. ६।३९

छेदनचालनदाहैः.. जिह्वां कृत्वा...

दृष्टिं भ्रूमध्ये स्थाप्य कपालकुहरे

जिह्वा विपरीतगा यदा भवति

तदा खेचरी मुद्रा जायते..

शांडि. १।७।४३

ज

जक्षन्क्रीडन्नममाणः स्त्रीभिर्वायानैर्वा

ज्ञातिभिर्वा नोपजन ५ स्मरन्

छांदो. ८।१२।३

जगज्जालपदार्थात्मा सर्व एवाह-

मक्षयः । तृतीयो निश्चयो

प्रोक्तो मोक्षायैव द्विजोत्तम

महो. ६।५७

जगज्जीवनं जीवनाधारभूतं...

इति कमण्डलुं परिगृह्य..

यथासुखं विहरेत्

१ सं. सो. २।१२

जगज्जीवनं जीवनाधारभूतं मा ते

मामंत्रयस्व सर्वदा सर्वसौम्येति..

ना. प. ४।५०

जगज्जीवपरमात्मनो जीवभाव-

जगद्भावबाधे प्रत्यगभिन्नं

ब्रह्मैवावशिष्यते

पैङ्गलो. २।१०

जगज्जीवादिरूपेण पश्यन्नपि

परात्मवित् । न तत्पश्यति

चिद्रूपं ब्रह्मवस्त्वेव पश्यति

पा. ब्र. २९

जगतः शाश्वते मते

भ. गी. ८।२६

जगति परमहंसो वासुदेवोऽहमेव

वराहो. २।३७

जगत्कारणरूपस्य विकारित्वं

चतुर्थकः (भ्रमः)

अ. पू. १।१५

जगत्तस्यामवस्थायामन्तस्तमसि

लीयते । सप्तावस्था इमाः प्रोक्ताः.. महो. ५।१९

जगत्तावदिदं नाहं सवृक्षतृणपर्वतम् ।

यद्वाह्यं जडमत्यन्तं तत्स्यां

कथमहं विभुः

१ सं. सो. २।१३

जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च

भ. गी. ११।३६

जगत्प्राणायामात्मनेऽस्मै नमः स्यान्नम-

स्त्वैभ्यं प्रवदेत्प्रागुणेति

रा. पू. ३।२

जगन्नयमिदं सर्वं चिन्मात्रं

स्वविचारतः [महो. ४।८४+

वराहो. २।७२

जगत्त्यक्त्वा सुखी भवेत्

याज्ञव. १७

जगत्सर्वमात्मा परमात्मैव

नृसिंहो. ९।१

जगत्त्वमहमित्यादिसर्गात्मा दृश्य-

मुच्यते । मनसैवेन्द्रजालश्री-

र्जगति प्रवितन्यते

महो. ४।४८

जगत्सर्वमिदं मिथ्याप्रतीतिः

प्राणसंयमः [त्रि. ब्रा. २।३०+

२ अवधू. ३

जगदव्यक्तमूर्तिना

भ. गी. ९।४

जगदात्मतया भाति यदा भोज्यं भवे-

त्तदा । ब्रह्मस्वात्मतया नित्यं

भक्षितं सकलं तदा

पा. ब्र. ४६

जगदादित्यो रोचत इति ज्ञात्वा
 ते मर्त्या विबुधास्तपनप्रार्थना-
 युक्ता आचरन्ति पा. प्र. ५
 जगदाहुरनीधाम भ. गी. १६।८
 जगदुत्पत्त्यपायोन्मेपनिमेपं सोमा-
 र्कामिनेत्रं (गणेशं) ग. शो. ४।८
 जगदेतद्गमात्मकम् महो. ४।६५
 जगद्धरणाद्धरो भव (हे शिव) ग. शो. ३।१३
 जगद्धितं वा एतद्रूपं यदक्षरं भवति बृ. पू. २।९
 जगद्देशोऽपि तद्भानमिति भेदोऽपि
 तन्मयः महो. २।७
 जगद्भासयतेऽखिलम् भ. गी. १५।१२
 जगद्रूपतयाऽप्येतद्द्रष्टव्यं प्रतिभासते
 जगद्विकल्पो नोदेति चित्तस्यात्र
 विलापनात् (पञ्चमभूमिकायां) अक्षुप. ३७
 जगद्विपरिवर्तते भ. गी. ९।१०
 जगन्नाम्ना चिदाभाति सर्वं ब्रह्मैव
 केवलम् । यो. शि. ४।१८
 जगाम शिखरं मेरोः समाध्यर्थ-
 मखण्डितम् । (शुक्रः) महो. ५।७५
 जघनेनाग्निं प्राक्शिराः संविशति बृह. ६।३।६
 जघन्यगुणवृत्तिस्थाः भ. गी. १४।१८
 जङ्गमरूपवान् भवति (गणेशः) ग. शो. २।२
 जङ्गमरूपः शिवः । शिवएवजङ्गमरूपः
 जङ्गन्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धे-
 नैव नीयमाना यथाऽन्धाः मुण्ड. १।२।८
 जङ्घेसंयमात्सुतल्लोकज्ञानं (चित्तस्य) शांडि. १।७।५२
 जजनदिन्द्रमिन्द्रियाय स्वाहा चित्त्यु. २।१
 जटाभस्मधारोऽपि प्राणलिङ्गीहि श्रेष्ठः रुद्रोप. २
 जठरान्तस्थित-यक्ष-गन्धर्व-रक्षः-
 किन्नरमानुषं (गणेशमस्तुवन्) ग. शो. ४।७
 जडतां वर्जयित्वैकां शिलाया हृदयं
 हि तत् । अमनस्कस्वरूपं महो. ५।५१
 यत्तन्मयो भव सर्वदा
 जडत्व-प्रियमोदत्व-धर्माः कारण-
 धर्मगाः । न सन्ति ममनित्यस्य.. आ. प्र. २५
 जडस्तु पार्थिवो ज्ञेयो ह्यपकोटुः खदो
 भवेत् । ध्यानस्थोऽपि तथाप्येव-
 मिन्द्रियैर्विन्नो भवेत् यो. शि. १।२७

जडाजडहृशोर्मध्ये यच्चस्वं पारमा-
 र्थिकम् । अनुभूतिमयं तस्मात्
 सारं ब्रह्मेति कथ्यते अक्षु. ३।१०
 जनइतिजनलोकः, तपइतितपोलोकः गायत्री. २
 जनकस्त्वैवेदस्य होताऽऽधलो बभूव बृह. ३।१।१
 जनकं ह वैवेदं याज्ञवल्क्यो जनाम बृह. ३।३।१
 जनकोनाम भूपालो विद्यते मिथिला-
 पुरे । यथावद्वेत्स्यसौ वेद्यं.. महो. २।१९
 जनको लालयामास शुक्रं
 शशिनिभाननम् महो. २।२५
 जनको (ह) वैवेदोऽभयं त्वा
 गच्छतात्... बृह. ४।३।४
 जनको ह वैवेद आसाध्वके बृह. ४।१।१
 जनको ह वैवेदः कूर्चादुपावसर्गमुवाच बृह. ४।२।१
 जनको ह वैवेदो बहुदक्षिणेन यज्ञेनैजे बृह. ३।१।१
 जनश्च नारायणः, तपश्च नारायणः ना. उ. वा. १।५
 जना न विदुरासुराः भ. गी. १६।७
 जनानां पुण्यकर्मणाम् भ. गी. ७।२८
 जनाः सुकृतिनोऽर्जुन भ. गी. ७।१६
 जनेनावमतो योगी योगसिद्धिं च
 विन्दति । तथाऽऽचरेत्त वै योगी
 सतां धर्ममदूषयन् ना. प. ५।४४
 जनोलोकस्तु हृद्देशे कण्ठे लोक-
 स्तपस्ततः ना. वि. ४
 जन्तोर्दक्षिणकर्णे तु मत्तारंसमुपादिशेत् ।
 निर्धूताशेषपापैर्धो मत्सारूप्यं
 भजत्ययम् मुक्तिको. १।३।३
 जन्तोः कृतविचारस्य विज्ञान-
 वशतः स्वभावः सम्प्रसीदति महो. ५।६१-६२
 जन्मकर्मगुणाश्चैते वर्णसंज्ञाकरा
 नृणाम् । अन्तिमाभ्यां विहीनस्तु
 जन्ममात्रेण वर्णभाक् भवर्त्. २।६३
 जन्मकर्म च मे दिव्यं भ. गी. ४।१
 जन्मकर्मफलप्रदाम् भ. गी. २।४३
 जन्मजराभ्यां भिन्नः स्थाणुरयमच्छे-
 ऽद्योऽयं योऽसौ सूर्ये तिष्ठति,
 योऽसौ गोषु तिष्ठति, स वो हि
 स्वामी भवति गोपालो. १।३।३

जन्मनिरोधप्रवदन्तियस्यप्रवृत्त्यादिबो
हि प्रवदन्ति नित्यम् श्वेताश्व. ३। २१
जन्मपत्न्यलभस्यानां चित्तकर्षण-
चारिणाम् । पुंसां पुर्वासना
रज्जुनारी बहिसापिण्डका
[+ महो. १।४६
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः भ.गी. २। ९१
जन्म मायोपमं तेषां सा च माया
न विद्यते अ. शां. ५८
जन्ममृत्युजरादुःखैः भ.गी. १४। २०
जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि-दुःखदोषा-
नुदर्शनम् अ. गी. १३। ९
जन्ममृत्युसुखदुःखवर्जितं..चिद्विवर्त-
जगतोऽस्य कारणं, तत्सदाऽह-
मिति मौनमाश्रय वराहो. ३। ७
जन्मस्थितिविनाशेषु खोदयास्त-
मयेषुच । सममेव मन्त्रो यदय-
स्य जीवन्मुक्त उच्यते महो. २। ५९
जन्मानि तव चार्जुन अ. गी. ४। ५
जन्मान्तरकृतान्सर्वान्दोषान्वारयती-
ति तेन वारणा भवतीति रामो. ३। १
जन्मान्तरघ्ना विषया एकजन्महरं
विष्णुः । इति मे..चेतसि
स्फुरन्ति हि न भोगाशाः महो. ३। ५४
जयतीमल्लोकान् जिह्म इन्वसावसत् बृह. ५। ४। १
जन्मान्तरसहस्रेषु यदा क्षीणं तु
किल्बिषम् यो.शि. १। ७८
जन्मान्तरशताभ्यस्तामिथ्या संसार-
वासना । सा विचाराभ्यासयोगेन
विना न क्षीयते कचित् मुक्तिको. २। १४
जन्मान्तरैश्च बहुभिर्योगो ज्ञानेन
लभ्यते । ज्ञानं तु जन्मनैकेन योगा-
देवप्रजायते । तस्माद्योगात्परतरो
नास्ति मार्गस्तु मोक्षदः यो.शि. १। २२
जन्मान्यनन्तानि विस्तीर्य भूयः
शिवप्रसादात्कृतपुण्यवेशः...न
संसृतौ...प्रमज्जेत् सि. शि. ७
जन्माभावे कुतः स्थितिः ना. वि. २५
जन्मभावे मुक्तिर्न च से. वि. ५। ३४

जपस्तु द्विविधः प्रोक्तो वाचिको
मानसस्तथा जा. द. २। १३
जपात्सिद्धीश्वरो भवेत् कामराज. १
जपान्वितस्त्रिप्रमिताश्च शास्त्रादिष्ठत्वा
नदाप्रानुगमार्दवानि । दलानि
भक्त्या चिनुयात् शबिल्वो. १३
जपो नाम विधिवद्रूपदिष्टवेदाविहृद्-
मन्त्राभ्यासः शाण्डि. १। २। १
जप्येनामृतत्वं च गच्छति महो. ६। ८५
जवाला तु नामाहमस्मि, सत्यकामो
नाम त्वमसि, सत्यकाम एव
जाबालो ब्रवीथाः छान्दो. ४। ४। २
जयन्तीसम्भवो वायुश्चमरो धर्म-
संज्ञितः । यस्यासौ ज्वलनाभासः
खङ्गरूपो महेश्वरः कृष्णोप. २०
जयाजयमसन्मयम् । शब्दं सर्वमसत् ते. वि. ३। ५६
जयेदादौ स्वकं मनः [महो. ५। ७५+ मुक्तिको. २। ४९
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि अ. गी. १०। ३६
जरयावोपतपतावाऽणिमानंनियच्छति बृह. ४। ३। ५
जरा पालिनिका शान्तिरीश्वरी
रतिकामिका । वरदा ह्यहिनी
प्रीतिर्दीर्घा दश कला हरेः ना. पू. ता. ५। १
जरामरणधर्माधर्मादिसाम्यदर्शनात्
(न देहो ब्राह्मणः) व. सू. ४
जरामरणनिर्मुक्ताः सर्वे धर्माः स्वभावतः अ. शां. १०
जरामरणमापञ्च राज्यं दारिद्र्यमेव
च । रम्यमित्येव यो भुङ्क्ते स
जीवन्मुक्त उच्यते महो. २। ५५
जरामरणमिच्छन्तश्च्यवन्तेतन्मनीषया अ. शां. १०
जरामरणमोक्षाय भ. गी. ७। २९
जरा मृत्युगदघ्नो यः खेचरीं वेत्ति
भूतले । ग्रन्थतश्चार्थतश्चैव.. योगकुं. २। ३
जरा मृत्युं ते पुनरेवापिषन्ति मुंड. १। २। ७
जरायुजाण्डजादीनां बाङ्गनःकाय-
कर्मभिः । युक्तः कुर्वीत न द्रोहं.. ना. प. ५। ४३
जरायुजा नरपशुमृगादयो जायन्ते
(नारायणात्) ना. पू. ता. ५। ४
जरावस्थाकाल...कारणं तत्त्वज्ञानं
भगवति जयदेवो. २

जलगत्सैन्यस्वण्डवन्महात्मा	अ. पू. २। १६	जागरितस्थानो बहिःप्रक्षः	
जलतीरे केतनं हि ब्रह्मवादिनोवदन्ति	कठश्रु. ९	समाङ्ग एकोनविंशतिमुखः	
जलत्वेन मरीचिका । गृत्वेन हि		स्थूलभुग्वैश्वानरः प्रथमः	
काष्ठानि...तद्वदात्मनि देहत्वे..	यो. शि. ४। २३	पादः (आत्मनः) [माण्डू. ३+	नृ. पू. ४। २
जलमिति भस्म, स्थलमिति भस्म	रुद्रोप. २	जागरितस्थानो वैश्वानरोऽकारः	
जलस्य चलनादेव चञ्चलत्वं		प्रथमा मात्राप्तेरादिमत्त्वाद्वा	माण्डू. ९
यथा रवेः । तथाऽहङ्कार-		जागरितंस्वप्नं सुषुप्तं तुरीयं च महतां	
सम्बन्धादेव संसार आत्मनः	बराहो. ३। २०	च लोकं परं च लोकं दहति	सुबालो. १५। २
जलं बहौ बहि वायौ वायुमाकाशे..		जागरिते ब्रह्मा, स्वप्ने विष्णुः, सुषुप्तौ	
अव्यक्तं पुरुषे क्रमेण विलीयते..		रुद्रस्तुरीयं परमाक्षरं स आदित्यो	
ततो..चात्माऽऽविर्भवति	पैङ्गलो. ३। ३	विष्णुश्चेश्वरश्च..	ब्रह्मो. २
जलकाभाववद्यथाकाममाजायते-		जागरिते ब्रह्मा स्वप्ने विष्णुः सुषुप्तौ	
श्वरात्, तावताऽऽत्मानमानन्दयति	परब्र. २	रुद्रस्तुरीयमक्षरं चिन्मयं,	
जलका रुधिरं यद्वदलादाकर्षति		तस्माच्चतुरवस्था	परब्र. ३
स्वयम् । ब्रह्मनाडी तथा धातून्..	यो. शि. १। १२५	जागरिते सुषुप्त्यवस्थापन्नद्वयश्चक्षुतं	
जलेऽग्निज्वलनाच्छास्त्रापलवानि		यद्यदृष्टं तत्तत्सर्वमविज्ञातमिव यो	
भवन्ति हि	बराहो. ५। ३६	वसेत्तस्य स्वप्नावस्थायामपि साह-	
जलेन श्रमजातेन गात्रमर्दन-		गवस्था भवति	ना. प. ५। १४
माचरेत् । दृढता लघुता चापि		जागरे स्वप्नता नहि । द्वयमेव लये	
तस्य गात्रस्य जायते	शांडि. १। ७। ४	नास्तिलयोऽपि ह्यनयोर्न च	यो. शि. ४। ११
जले वाऽपि स्थले वाऽपि लुठत्वेव		जाग्रच्चित्तेक्षणीयास्ते न विद्येते ततः	
जडात्मकः । नाहं विलिप्ये		पृथक् । तथा तद्दृश्यमेवेदं जाग्रत-	
तद्वर्मेघटधर्मेर्नभो यथा	कुण्डिको. २४	श्चित्तमिष्यते	अ. शां. ४६
जले सैन्यवपिण्डवत् (लीनो भवति)	२ अवधू. ७	जाग्रतः प्रत्ययाभावं यस्याहुः प्रत्ययं	
जलोपरि समर्पितव्यजनसंयुक्त-		बुधाः । यत्सङ्कोचविकासाभ्यां	
मज्जं वह्निसंयुक्तवारिणा		जाग्रत्प्रलयदृष्टयः	महो. २। १०
पक्वमकरोत्	शांडि. १। ४। ८९	जाग्रतः स्वपतश्चैव प्राणायामोऽयमुत्तमः ।	
जहात्यहस्सु पूर्वेषु, त्वामापो..	चित्त्यु. १४। २	प्रवर्तते ह्यभिज्ञस्य..	अ. पू. ५। २७
जहांत्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः	श्वेताश्व. ४। ५	जाग्रतीं त्वासादयामि	चित्त्यु. १९। १
[+महाना. ८। ५+	ना. पू. ता. ५। २	जाग्रति प्रवृत्तोजीवः प्रवृत्तिमार्गासक्तः	मं. ब्रा. २। ७
जहि शत्रुं महाबाहो	भ. गी. ३। ४३	जाग्रतो नैव चार्जुन	भ. गी. ६। १६
जहि शत्रूँ अपमृधो नुदस्व (परमृधो)	महाना. ५। ११	जाग्रत्काले विश्वः, स्वप्नकाले तैजसः,	
[ऋ. अ. ३। ३। ११ = मं. ३। ४७। २+	वा. सं. ७। ३७	सुषुप्तिकाले प्राज्ञः	ना. प. ५। १२
[+तै. सं. १। ४। ४। २+	तै. आ. १०। १। ११	जाग्रत्येव सुषुप्तस्थः कुरु कर्माणि..	
जागतं छन्दः, द्यौः स्थानम्	२ प्रणवो. २१	अतः सर्वपरित्यागी बहिः कुरु..	अ. पू. ५। ११६
(अथो खलवाहुः) जागरितदेश		(ॐ) जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिपुरीयपुरीया-	
एत्रास्यैष इति	बृह. ४। ३। १४	तीतोऽन्तर्यामी.. गोपाल उँ भूर्भुवः	
जागरितस्थानश्चतुरात्मा विश्वो		सुवस्तस्मै नमोनमः	गोपालो. ३। १०
वैश्वानरश्चतुरूपोऽह एव	नृसिंहो. २। ४		

जाग्रत्स्वप्रसुप्तिपुरीयमिति
चतुर्विधा अवस्थाः शारीरको. १०
जाग्रत्स्वप्रसुप्तिपुरीयावस्थाभेदै-
रेकैकमात्रा चातुर्विध्यमेत्य.. तुगीयो. २
जाग्रत्स्वप्रसुप्तिपुरीयाश्चेत्य-
वस्थाश्चतस्रः यो. चू. ७२
जाग्रत्स्वप्रसुप्तिमूर्च्छामरणधर्मयुक्तो
घटीयंत्रवदुद्विग्नो जातो मृत इव
कुलालचक्रन्यायेन परिभ्रमति पैङ्गलो. १५
(अथ) जाग्रत्स्वप्रसुप्तिमूर्च्छामरणाद्य-
वस्थाः पञ्च भवन्ति पैङ्गलो. २७
जाग्रत्स्वप्रसुप्तिषु सर्वकालव्यवस्थितं ना. उ. ता. ११९
जाग्रत्स्वप्रसुप्तिमूर्च्छावस्थानां...
सर्वजीवभयप्रदा स्थूलदेहविस-
र्जनी मरणावस्था भवति पैङ्गलो. २१९
जाग्रत्स्वप्रसुप्तिष्वेकशरीरस्य जाग्र-
त्काले विश्वः, स्वप्नकाले तैजसः,
सुषुप्तिकाले प्राज्ञः ना. प. ५१११
जाग्रत्स्वप्रसुप्त्यादि मनोमय-
मितीरितम् ते. बि. ५१०३
जाग्रत्स्वप्रसुप्त्यादिप्रपञ्चं यत्प्रकाशते,
तद्ब्रह्मादमिति ज्ञात्वा सर्वबन्धैः
प्रमुच्यते कैव. १७
जाग्रत्स्वप्रसुप्त्यादिष्ववस्थास्वेक-
रूपिणी । ब्रह्मानन्दमयी विद्या.. गन्धर्वो. ५
जाग्रत्स्वमे व्यवहरन् सुषुप्तौ क गति-
र्मेम । इति चिन्तापरो भूत्वा.. योगकुं. ३१२९
जाग्रदवस्थायां जाग्रदादिचतस्रो-
ऽवस्थाः (भवन्ति) [प. हं. प. ९+ ना. प. ६१६
जाग्रदवस्थायां विश्वस्य चातुर्विध्यं-
निष्विन्ध्यो विश्वतैजसो विश्व-
प्राज्ञो विश्वपुरीय इति प. हं. प. ९
जाग्रदुत्तापि त्वन्तश्चेतसा कल्पितं
त्वत्तत् । बहिःश्रेतो गृहीतं सद्युक्तं
वैतथ्यमेतयोः वैतथ्य. १०
जाग्रदादिविमोक्षान्तः संसारो
जीवकल्पितः । त्रिणाचिकादि-
योगान्ता ईश्वरभ्रान्तिमाश्रिताः
[वराहो. २५४+ महो. ४७३

जाग्रन्निन्दा- (द्रा?) तः परिज्ञानेन
ब्रह्मविद्भवति मं. ब्रा. २१६
जाग्रन्निद्राविनिर्मुक्ता सा स्वरूप-
स्थितिः परा मैत्रा. २१३०
जाग्रन्नेत्रद्वयोर्मध्ये हंसएवप्रकाशते ।
सकारः खेचरी प्रोक्तस्त्वंपदं
चेति निश्चितम् यो. चू. ८२
जाग्रन्मात्राचतुष्टयमकारांशं स्वप्न-
मात्राचतुष्टयमुकारांशं.. अय-
मेव ब्रह्मप्रणवः प. हं. प. १०
जाड्यभावविनिर्मुक्तममलं चिन्मया-
त्मकम् । तस्यातिवाहिकं मुख्यं.. योगकुं. १५७
जात इत्यनेन परमात्मनो जृम्भणम् त्रि. ता. २१३
जात इत्यादिना परमात्मा त्रि. ता. २१३
शिव उच्यते बृह. ३.१५.३४
जातएव न जायते, कोन्वेवं जनयेत्पुनः । त्रि. ता. २१३
जातमात्रेण कामी कामयते त्रि. ता. २१३
काममित्यादिना महो. २११
जातमात्रेण मुनिराट् यत्सत्यं तद-
वाप्तवान् । तेनासौ स्वविवेकेन.. ना. प. ३१८७
जातरूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत् ना. प. ५१६
जातरूपधरश्चेन्नकन्थावेशोनाध्ये-
तव्यो न श्रोतव्यमन्यत्किञ्चित्.. याज्ञव. ३
जातरूपधरा निर्द्वन्द्वा निष्परिमहा-
स्तत्त्वब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नाः.. भिक्षुको. ६
(अथ) जातरूपधरा निर्द्वन्द्वा
निष्परिमहाः शुक्लान्तरायणा
आत्मनिष्ठाः...ते परमहंसा नाम ना. प. ५१३
जातरूपधरो भवति सः.. सञ्ज्यासी
जातवेद एतद्विजानीहि केनो. ३१३
किमेतद्यक्षमिति त्रि. ता. ११६
जातवेदसमण्डलं योऽधीते सर्वव्याप्यते सदाने. ५
जातवेदसमव्यक्तव्यक्ताव्यक्तं परं सदा महाना. ६११३
जातवेदसे सुनवाम सोममराती
[+ क्र. अ. १७.७ =मं. ११९११
[वतदु. ११, ११४ + त्रि. ता. ११२
जातवेदसे सुनवामसोमं तदन्त्यम-
वाणी.. महासौभाग्यमाचक्षते त्रि. ता. ३१२

जातश्च वायुना स्पृष्टो न स्मरति
जन्ममरणम् । अन्ते च शुभा-
शुभं कर्म... प्रामाण्यम् निरुक्तो. १।८

जातश्चैव मृतश्चैव जन्म चैव पुनः
पुनः । यन्मया परिजनस्यार्थे
कृतं कर्म शुभाशुभम् । एकाकीतेन
दृष्टोऽहं गतास्ते फलभोगिनः गर्भो. ५

जातस्य ग्रहरोगादि कुमारस्य... उप-
नीतेऽप्यविद्यत्वमनुद्वाहश्च पंडिते याज्ञव. १९

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः भ.गी. २।२७

जातं मृतमिदं देहं मातापितृमला-
त्मकम् । स्पृष्ट्वा स्नानं विधीयते मैत्रे. २।५

जाताश्च जायमानस्य न व्यवस्था
प्रसज्यते अ.शां. १३

जातानि जीवन्ति (भूतानि)
आकाशं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति ग. पू. २।९

जातान्यजेन वर्धन्ते, अद्यतेऽस्ति च
भूतानि । तैत्ति. २।२+

जाता रुद्राक्षा जलबिन्दवोऽस्य
स्यो जातादीन् पञ्चवक्त्राणि मैत्रा. ६।१२

विद्यात् (शिवस्य) सि.शि. १६

जातास्त एव जगति जन्तवः साधु-
जीविताः । ये पुत्रनेह आयन्ते महो. ३।१४

शेषा जरठगर्भाः अ.शां. ४३

जातिदोषा न सेत्स्यन्ति दोषो-
ऽप्यल्पो भविष्यति अ.शां. ४३

जातिर्नास्ति गतिर्नास्ति वर्णो नास्ति
जलौकिकम् । सर्वत्रदेति नास्त्येव तै.वि. ५।३८

(पृथि)जातिर्वाद्यपि इति चेत्, न, तत्र
जात्यन्तरजन्तुष्वनेकजाति-
सम्भवा महर्षयो बहवः सन्ति व.सू. ५

जातिसङ्करकारकैः भ.गी. १।४३

जातिस्तु देशिता बुद्धेरजाते-
कसता सदा अ.शां. ४२

जातीषु सप्तमायोगैर्यथा वास्यति
तेतिहम् । एवं शुभाशुभैर्भावेः
जा जातीति विधाचयेत् सुरिको. १९

जातु कर्मण्यतन्द्रितः भ.गी. २।२३

जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् भ.गी. ३। ५

जातेऽग्निमुपसमाधायाङ्क आघ्राय
(पुत्रं) क० सं पृषदाङ्ग०
संनीय.. जुहोति बुद्ध. ६।४।२४

जातो देव एक ईश्वरः परमोज्योति-
र्मत्रतो वेति तुरीयं वरं कृत्वा.. मि.वा. २।३

जातौ विश्वस्य भुवनस्य योषौ लिङ्गोप. ३

[+क्र.अ.२।६।८=मं.२।४०।१+ तै.स. १।६।२।५

जात्यन्ये रत्नविषयः सुज्ञातश्चे-
ज्जगत्सदा (सत्यं) तै.वि. ६।८९

जात्याभासं चलाभासं दस्त्राभासं
तथैव च । अजात्रलभस्त्वत्वं
विज्ञानं शान्तमद्वयम् अ.शां. ४५

(पृथेषां) जात्याविनाऽप्यग्ने ज्ञान-
प्रतिपादिता कस्यचिद् बहुत्रः
सन्ति, तस्मान्न जातिर्वाद्यपि न.सू. ५

जानकीदेहभूषाय रक्षोघ्नाय शुभा-
ज्जिने । भद्राय रघुवीराय (नमः) ग.पू. ४।१४

जानन् कस्मान्मृणोम्यहम् १.अ.व. १६

जानन्नपि हि मेधावी जह्वल्लोक
आचरेत् १.अ.व. २।१०२

जानन्नेव ह्यन्यत्रान्यत्र विजाना-
त्यनुभूतेः नृसिंहो. ५।१

(ॐ) जानन्नितिर्हं पौत्राखणः
श्रद्धादेयो बहुदासीबहुसन्नयसास अ.शां. ४।११

जानाति पुरुषोत्तमम् भ.गी. १।५।१९

जानाम्यहं २ शेषमिदं स्थितित्वां न
सञ्चुनैः प्राप्यते हि ध्रुवं तत् कठो. ५।१०

जानु प्रदक्षिणीकृत्य च कुक्षं न
विलम्बितम् । कश्चिज्ज्ञं स्फोटयं
कुर्यात्सा मात्रा परिगीयते १ यो. त. ४०

जानूबोरन्तरे कृत्वा सम्यक् पादतले
उमे । समप्रीवशिरःकाथः
स्वस्तिकं नित्यमभ्यसेत् जा.व. ३।३

जानूबोरन्तरे सम्यक् कृत्वा पादतले
उमे । ऋजुकायाः समासीनः
स्वस्तिकं तत्पश्चमते शां.दि. १।१।१

जानौ संयमान्महातललोकज्ञानं शांदि. १।७।५२
 जान्वन्तं पृथिवी हांशो ह्यापं
 पादंश्चन्तमुच्यते । हृदयांश-
 स्तथाग्न्यंशो..धारयेत् सदाशिवं जा. द. ८।४-६
 जाप्येनामृतत्वं च गच्छति चतुर्वे. ७
 जायते निश्चयः साधो पुरुषस्य
 चतुर्विधः । आपादमस्तक-
 महं मातापितृविनिर्मितः ।
 इत्येको निश्चयो ब्रह्मन्त्रवायास.. महो. ६।५४
 जायते मृतयेलोकोऽन्यतेजननायच भवसं. १।२५
 जायत्येको अयत्येको अभात्येकः
 शुभाशुभम् । (पा.) ...
 जायते अयते लोको अयते जनना-
 य च । अस्थिराः सर्व एवेमे... महो. ३।४
 जायते वर्णसङ्करः भ.गी. १।४१
 जायमानं कथमजं भिन्नं नित्यं कथं
 च तत् । कारणाद्यद्यनन्यत्वमतः
 कार्यमजं यदि अ.शां. ११
 जायमानाद्धि वै कार्याकारणं
 ते कथं शुक्लं अ.शां. १२
 जायमानाद्धिवैधर्मात्कथं पूर्वैर्नगृह्यते अ.शां. २१
 जायमानेऽमनस्कत्वे चदासौनस्य
 तिष्ठतः । मृदुत्वं स्वचरत्वं च
 शरीरस्थोपजायते अमन. २।७९
 [जायमानो वै ब्राह्मणस्त्रिभि-
 र्गणवा जायते] तै.सं. ६।३।१०
 जाग्रस्व अयस्वेत्येतत्तृतीयस्थानं
 तेनासौ लोको न सम्पूर्यते
 जायापूर्वरूपं, पतिकृत्तरूपं... छान्दो. ५।१०।८
 सेवाऽदितिसंहिता ३ऐत. १।६।८
 जाया मे स्यादथ प्रजायेय बृह. १।४।१७
 जायेरमेवास्मिन्कात्याः प्ररोहेयुः छान्दो. ५।२।३
 जाकृजानिचस्वेदजानिचौद्विजानि..
 यत्किंचिद् प्राणि..यच्चरथावरतत् ३ऐत. ५।३
 प्रज्ञानेन प्रज्ञाने प्रतिष्ठितं
 जालकिलडिने पथेभित् पृतमज-
 मयाचितमसंकृतमभीयाम
 कृत्स्न जायते शुभलो. १२।१

जालजननमन्दिरा महाविष्णोः
 क्रीडाशरीररूपिणी ब्रह्मादीना-
 मगोचरा । एतांमहामायांतरंत्येव
 ये विष्णुमेव भजन्ति, नान्येतरन्ति.. त्रि.म.ना. ४।९
 जालन्धरस्तृतीयस्तु (कुम्भकः)
 [योगकुं. १।४१+ यो.शि. १।१०३
 जालन्धरेकृतेबन्धेकंठसङ्कोचलक्षणे ।
 नपीयूषं पतत्यग्नौ न च वायुः
 प्रधावति यो.चू. ५१
 जालन्धरोद्धियाणश्चमूलबन्धस्तथैवच १यो.त. २६
 जालेनेवस्वचरःकृतस्यानुफले-
 रभिभूयमानः परिभ्रमति मैत्रा. ३।२
 जिघ्रन्तै तन्नाजिघ्रति, न हि घ्रातुर्घ्राति-
 र्विपरिलोपो विद्यतेऽनाशित्वात् बृह. ४।३।२४
 जिज्ञासार्थं शुक्स्यासावास्तामेवे-
 त्यवज्ञया । उक्त्वा बभूव
 जनकस्तूष्णीं.. महो. २।२२
 जिज्ञासुरपि योगस्य भ.गी. ६।४४
 जितात्मनः प्रशान्तस्य भ.गी. ६।७
 जितात्मा विगतस्पृहः भ.गी. १८।४९
 जितामेवाप्येति योजितामेवास्तमेति सुबालो. ९।३
 जितेन्द्रियाणां शान्तानां जितश्वास-
 विचेतसाम् । .. दूरदर्शनमाप्नुयात् यो.शि. ५।४६
 जितेन्द्रियाय शान्ताय मन्त्रं
 देवमिदं महत् (सूर्यस्य) सूर्यता. १।११
 जितेन्द्रियो बहिरन्तःस्नेहवर्जितः
 शरीरसंभारार्थं...भैक्षमाणो
 ब्रह्मभूयाय भवति प.हं.प. ६
 (एवं)जितेन्द्रियो भूत्वा सर्वत्र
 ममतामतिम् । विहाय.. वराहो. २।४
 जित्वा जित्वा ततो भूतिं सारमेव
 ततो मुनिम् । अजिता च
 सदाभूतिः योगो. २९
 जित्वा वा भोक्तृसे महीम् भ.गी. २।३७
 जित्वा मृष्ट्यादिकं जाड्यं स्वेचरः
 स भवेन्नरः यो.शि. १।१४८
 जित्वा ह्यनुभूय राज्ञ्यं समुद्रम् भ.गी. ११।३३
 जिष्णुर्हापराजिष्णुर्भवत्यन्यत-
 स्त्यजायौ बृह. २।१।६

जिह्वायद्रसं ह्यतित्तदात्मेति भावयेत् यो. त. ७१
 जिह्वा वायुमाकृष्य पूर्ववत्कुम्भ-
 कादनु । शनैस्तु घ्राणरन्ध्राभ्यां
 रेचयेदनिर्लं सुधीः योगकुं. १।३०
 जिह्वावायुमाकृष्य यः पिबेत्सततं
 नरः । श्रमदाहविनिर्मुक्तोयोगी
 नीरोगतामियात् जा.द. ६।२५
 जिह्वा वायुमाकृष्य जिह्वामूले
 निरोधयेत् । पिबेदमृतमव्यग्रं
 सकलं सुखमाप्नुयात् जा.द. ६।२६
 जिह्वा वायुमानीय जिह्वामूले
 निरोधयेत् । यः पिबेदमृतं विद्वान्-
 न्सकलं भद्रमश्नुते शां. १।७।४७
 जिह्वा वायुं गृहीत्वा यथाशक्ति
 कुंभयित्वा नासाभ्यां रेचयेत् ।
 तेन गुल्मघ्नीहृज्वरपित्तक्षुधादीनि
 नश्यन्ति शां. १।७।१४
 जिह्वा हि रसान् विजानाति
 जिह्वामदेशे त्र्यणुकं च विद्धि
 जिह्वामादर्शने त्रीणि दिनानि
 स्थितिरात्मनः । ज्वालाया दर्शने
 मृत्युर्द्विदिने भवति ध्रुवम् शां. १।७।१४
 जिह्वा च रसयितव्यं च नारायणः
 जिह्वा चित्तं च खे चरति तेनोर्ध्व-
 जिह्वः पुमानमृतो भवति त्रि.प्रा. २।१२७
 जिह्वाऽध्यात्मं, रसयितव्यमभिभूतं,
 वरुणस्तत्राधिदैवतम् सुबालो. ६।१
 जिह्वामर्कटिकाक्रान्तवदनद्वार-
 भीषणम् । दृष्टदन्तास्थिशकलं
 नैष्ठं देहगृहं मम शां. १।७।४३
 जिह्वामूलस्थितो देवि...अनलः ।
 तदग्रे भास्करश्चन्द्रः...प्रतिष्ठितः प्रा. हो. २।४
 जिह्वा मे मधुमत्तमा [तैत्ति. १।४।१+ ना. प. ४।४५
 जिह्वामेवाप्येति यो जिह्वामेवास्तमेति सुबालो. ९।४
 जिह्वाया ऊर्ध्वान्तं सरस्वती भवति शां. १।४।६
 जिह्वाया रसास्वादनं घ्राणस्य
 गन्धमण्डम् ना. प. ६।३
 जिह्वारसने नासिका घ्राणे उपस्थ आन-
 न्येनैव ध्यानं उत्तमं गर्जो. १

जिह्वा रसं विजानाति हृदयं वेदये-
 त्रियम् । मनसा साधु पश्यति इतिहा. ३
 जिह्वैवैग्रहः, स रसेनातिग्रहेण गृहीतः बृह. ३।२।४
 जिह्वां न चालयेच्चापि पाषाण
 इव निश्चलः । तमः प्रस्थाप्य
 रजसः सत्त्वेन... योगो. २२
 जिह्वेडा, दन्तोष्ठौ सूक्तवाकः प्रा. हो. ४।३
 जिह्वावास्या एकमङ्गमुद्वृतं, तस्यान्नरसः
 परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ. उ. ३।५
 जीर्णकौपीनवासाः स्यान्मुण्डी नम्रो-
 ऽथवा भवेत् । प्राज्ञो वेदान्त-
 विद्योगी निर्ममो निरहंकृतिः ना. प. ६।३०
 जीर्णवल्कलाजिनं धृत्वाऽथ त्रिकाल-
 स्नानमाचरन्..ब्रह्ममार्गे सम्यक्स-
 म्पन्नः, भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय भवति प. हं. प. ६
 जीर्यन्ते दानवादयः । परमेष्ठ्यपि
 निष्ठावान् हीयते हरिरप्यजः महो. ३।५०
 जीर्यन्ते वै दिगीश्वराः, ब्रह्मा..सर्वावा
 भूतजातयः, नाशमेवानुधावन्ति महो. ३।५१
 जीर्यन्मर्त्यः क्ववस्थः प्रजानन्
 जीव एव दुरात्माऽसौ कन्दः संसार-
 दुस्तरोः । अनेनाभिहतो जन्तु-
 रधोऽधः परिधावति महो. ५।९३
 जीव एव सदा ब्रह्म सच्चिदानन्द-
 मस्थहम् ते. त्रि. ६।३८
 जीवतस्तत्प्रजायते (रेतः) बृह. ३।९।३२
 जीवति चक्षुरपेतोऽन्धान्निपश्यामः कौ. उ. ३।३
 जीवति बाहुच्छिन्नो जीवत्यूरुच्छिन्न
 इत्येवं हि पश्यामः कौ. उ. ३।३
 जीवति वागपेतो मूकान्विपश्यामः कौ. उ. ३।३
 जीवति श्रोत्रापेतो बधिरान्
 विपश्यामः कौ. उ. ३।३
 जीवतो यस्य कैवल्यं विदेहोऽपि
 स केवलः । समाधिनिष्ठतामेत्य
 निर्विकल्पो भवानघ अध्यात्मो. १६
 जीवत्यूरुच्छिन्न इत्येवं हि पश्यामः कौ. उ. ३।३
 जीवति पितृकश्चेत् पितरं त्यक्त्वाऽऽत्म-
 पितामहप्रपितामहानिति सर्वत्र
 युरमकलस्या आश्रयानर्चयेत् ना. प. ४।३९

जीवत्वं सर्वभूतानां सर्वत्राखण्डविग्रहः ।

चित्ताहङ्कारयन्तारं जीवाख्यं
त्वं पदं भजे

शु.र. २।६

जीवत्वं घटाकाशमहाकाशवज्रव-

धानेऽस्ति । व्यवधानवशादेव हंसः

सोऽहमिति मंत्रेणोच्छ्वासनिश्वास-

वशेनानुसन्धानं करोति

ना. प. ६।७

जीवत्वं च तथा ज्ञेयं रज्ज्वां

सर्पग्रहो यथा

यो. शि. ४।१

जीवनं सर्वभूतेषु

भ. गी. ७।९

जीवन्ति मृगपक्षिणः । स जीवति

मनो यस्य मननेनोपजीवति

महो. ३।१३

जीवन्नेव प्रति तत्ते दधामि

सहैव. ४

जीवन्नेव सदा मुक्तः कृतार्थो

ब्रह्मवित्तमः । उपाधिनाशाद्ब्रह्मैव

सद्ब्रह्माप्येति निर्द्वयम्

२ आत्मो. २०

जीवन्मर्त्यः कावस्थः

प्रजानन् (मा. पा.)

कठो. १।२८

जीवन्मुक्तपदं त्यक्त्वा स्वदेहे

कालघातकृते । विशत्येदेह-

मुक्तत्वे पवनोऽस्पन्दतामिव

पैङ्गलो. ३।७

[+महो. २।६३+

मुक्तिको. २।७६

जीवन्मुक्तः स उच्यते

महो. ६।४९-४८

जीवन्मुक्तः सदा स्वच्छः सर्वदोष-

विवर्जितः । विरक्ता ज्ञानिन-

श्चान्ये देहेन विजिताः सदा ।

तैक्यर्थयोगिनस्तुल्यामांसपिण्डाः..

यो. शि. १।४२

जीवन्मुक्तः संरूपः स्यादरूपो

देहमुक्तिगः

मुक्तिको. २।३२

जीवन्मुक्तः स विज्ञेयः

पैङ्गलो. ३।७

जीवन्मुक्ता न मज्जन्ति सुखदुःख-

रसस्थिते । प्रकृतेनाथ कार्येण

किञ्चित्कुर्वन्ति वा न वा

महो. ५।३७

जीवन्मुक्तिविदेहमुक्त्योरष्टोत्तर-

शतोपनिषदः प्रमाणम्

मुक्तिको. २।१

जीवन्मुक्तो महायोगी जायते..

यो. शि. १।१५

जीवन्मुक्तो वसेत्, कृतकृत्यो भवति

ना. प. ६।३

जीवभूतः सनातनः

भ. गी. १५।७

जीवभूतां महाबाहो

भ. गी. ७।५

जीवला न धारिषां मा ते

बन्धान्योषधिम्

प्रा. हो. १।४

जीवला नघर्षा मा ते बन्धान्योषधि

(पाठः)

प्रा. हो. १।४

जीववाचि नमो नाम चात्मा-

रामेति गीयते

रा. पू. ४।१

जीवस्तिष्ठति संशान्तो ज्वलन्मणि-

रिवात्मनि

अ. पू. २।११

जीवस्य तण्डुलस्येव मलं सहज-

मप्यलम् । नश्यत्येव न सन्देह-

स्तस्मादुद्योगवान्भवेत्

महो. ५।१८६

जीवस्य निलयः प्राणोजीवोहंसस्य

चाश्रयः । हंसः शक्तेरधिष्ठानं..

वराहो. ५।५४

जीवं कल्पयते पूर्वं ततो भावान्

पृथग्विधान् । बाह्यानाध्यात्मि-

कांश्चैव यथाविद्यस्तथा स्मृतिः

वैतथ्य. १६

जीवः पञ्चविंशकः स्वकल्पितचतु-

विंशतितत्त्वं परित्यज्यषड्विंशः

परमात्माहमिति निश्चयाज्जीव-

न्मुक्तो भवति

मं. ब्रा. १।५

जीवः शिवः शिवो जीवः स जीवः

केवलः शिवः । तुषेणबद्धोप्रीहिः

स्यात्तुषाभावेन तण्डुलः

स्कन्दो. ६

जीवाक्षरेणैव जीवाहराप्नोति

जीवाख्यं त्वम्पदं भजे

१ ऐत. १।८।६

जीवात्मनः परस्यापि यथेवमुभयो-

रपि । अहमेव परं ब्रह्म ब्रह्माह-

मिति संस्थितिः

त्रि. ब्रा. २।१६१

जीवात्मनोरनन्यत्वमभेदेन प्रशस्यते ।

नानात्वं निन्द्यते यच्च तदेवं हि

समञ्जसम्

अद्वैत. १३

जीवात्मनोः पृथक्त्वं यत्प्रागुत्पत्तेः

प्रकीर्तितम् । भविष्यद्दृष्ट्यागौणं

तन्मुख्यत्वं हि न युज्यते

अद्वैत. १४

जीवापेतं वाव किलेदं म्रियते

न जीवो म्रियते

छान्दो. ६।११।३

जीवामिमानेन क्षेत्राभिमानः, शरीरा-

भिमानेन जीवत्वम्

ना. प. ६।७

जीवाय केन कच सम्प्रतिष्ठाः

श्वेताश्व. १।१

जीवाहाजीवाक्षरमित्यनकाममारः १ऐत. ३।८।६
 जीवाःपशवउक्ताः, तत्पतित्वात्पशुपतिः जाबाल्यु. ३
 जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं
 वरस्तु मे वरणीयः स एव कठो. १।२७
 जीवितं तस्य शोभते । योऽन्त-
 इशीतलयाबुद्धयारागद्वेषविमुक्तया ।
 साक्षिवत्पश्यतीदृहि. [१सं.सो. २।३९-४१
 जीवितंवापिचञ्चलम् । विहायशास्त्र-
 जालानि यत्सत्यंतदुपास्यताम् पैङ्गलो. ४।१७
 जीवेश्वरप्रकृतयोन्तियाश्चानादय-
 क्षयः । विश्वकारणभूताश्च.. भवसं. २।१
 जीवेश्वरादिरूपेण चेतनाचेतना-
 त्सकम् । ईक्षणादिप्रवेशान्ता
 सृष्टीरीशेनकल्पिता [महो. ४।७३+ वराहो. २।५३
 जीवेश्वरेति वाक्चेति वेदशास्त्राद्यहं
 त्विति । इदंचैतन्यमेवेति.. इति
 निश्चयशून्योयोवैदेहीमुक्तपवसः ते.वि. ४।४६
 जीवोऽपि ज्ञातृत्वप्रपञ्चे व्यवहृत्य
 ..अज्ञानं प्रविश्य स्वानंदं मुक्ते पैङ्गलो. २।८
 जीवोऽपि न स्पृष्ट इति चेत्, न;
 जीवाभिमानेन क्षेत्राभिमानः,
 शरीराभिमानेन जीवत्वम् ना. प. ६।६
 जीवो ब्रह्मेति वाक्यार्थं यावदस्ति
 मनःस्थितिः । ऐक्यं तत्त्वं लये
 कुर्वन् ध्यायेदसिपदं ततः शु. र. २।७
 जीवोब्राह्मणइतिचेत्, तन्न; अतीताना-
 गतानेकदेहानांजीवस्यैकरूपत्वाद् व. सू. ३
 जीवेश्वरौ भिन्नरूपाविति प्राथ-
 मिको भ्रमः अ. पू. १।१३
 जीवेश्वरौ मायिकौ विज्ञाय सर्वविशेषं
 नेति नेतीति विहाय यदवशिष्यते
 तद्द्वयं ब्रह्म अद्वयता. २
 जुष्टं यदा पश्यत्यन्यमीशं यस्य
 महिमानमिति वीतशोकः श्वेता. ४।७
 [मुण्ड. ३।१।२+
 जुहति ज्ञानदीपिते अ. गी. ४।२७
 जेनाविजेनातिषां जेनातिरोजो
 बलमाहुरत्सत्वात्मकं... तस्मै
 सद्धमसुद्धमाय तेजसे स्वाहा पारमा. १०।५

जोषयेत्सर्वकर्माणि अ. गी. ३।२६
 ज्यायसी चेत् कर्मणस्ते अ. गी. ३।१
 ज्यायान्पृथिव्या ज्यायानन्तरिक्षात्
 ..ज्यायान्दिवो ज्यायानेभ्यो
 लोकेभ्यः (आत्मा) छान्दो. ३।१७।३
 ज्येष्ठश्च अष्टश्च स्वानां भवति बृह. ६।१।१
 ज्येष्ठश्च ह वै अष्टश्च भवति, प्राणो
 वाव ज्येष्ठश्च छान्दो. ५।१।१
 ज्येष्ठाय अष्टाय स्वाहेत्यप्रावाज्यस्य
 हुत्वा मन्थे सम्पातमवनयेत् छान्दो. ५।२।४
 ज्येष्ठाय स्वाहा अष्टाय स्वाहेत्यग्नौ
 हुत्वा मन्थे स२ सवमवनयति बृह. ६।३।२
 ज्येष्ठोऽहं अष्टोऽहं वरिष्ठोऽहमापोऽहम्.. अ. शित. १।१
 ज्योर्जीवति महान्प्रजया पशुभिर्भवति छां. २।११।२
 [+छान्दो. २।१२।२+—१७।२।१८
 ज्योतिरन्नादम्, अप्सु ज्योतिः
 प्रतिष्ठितम् तैत्ति. ३।८
 ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासम् लिङ्गोप. १
 [म. ना. १४।७—१४।१९
 ज्योतिरिति नक्षत्रेषु, प्रजातिरमृतं.. तैत्ति. ३।१०।३
 ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि, योहमस्मि
 ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्मा.. महाना. ६।७
 ज्योतिर्मयं तदन्तं स्यादवाच्यं बुद्धि-
 सूक्ष्मतः । दृश्ये महात्मानो
 यस्तं वेद स वेदवित् । यो. च. ८१
 ज्योतिर्लिङ्गं भ्रुवोर्मध्ये नित्यं
 ज्यायेत्सदा यतिः अ. वि. ८०
 ज्योतिर्वा पारमात्मिकं सार्व...
 पराय ईशिषे स्वाहा पारमा. १।३
 ज्योतिर्वाऽन्नं, वायुरन्नादः, वायुर्वाऽन्नं.. सुबालो. १४।१
 ज्योतिर्विदं त्वासादयामि चित्त्यु. १५।१
 ज्योतिश्च वायुश्चान्नादमेताभ्यां
 हीदं सर्वमन्नमिति १ऐत. ३।१।२
 ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः
 [यो. शि. ३।२२+ अ. गी. १३।१८
 ज्योतिषामा ज्योतिरानन्दयत्येव-
 सेव तत्परं यच्चित्तं परमात्मान-
 मानन्दयति पारमा. २

ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः मुण्ड. २।२।९
 ज्योतिषां ज्योतिरस्यहं, तमसः
 साक्ष्यहं.. अ.वि. ९५
 ज्योतिषां रविरंशुमान् अ. गी. १०।२१
 ज्योतिष्कामो ज्योतिरानन्दयते ब्रह्मो. १
 भूयस्वेनैव स्वप्नाय गच्छति चित्त्यु. १६।१
 ज्योतिष्कदक्षि सूर्य। विश्वमाभासि.. चित्त्यु. १६।१
 [क्र. अ. १।४।७=मं. १।५०।४+
 अथर्व. १३।२।१९+२०।४७।१६+ वा.सं. ३३।३६
 तै. सं. १।४।३१।१
 ज्योतिष्कृतं त्वासादयामि चित्त्यु. १९।१
 ज्योतिष्पश्यन्ति उत्तरम् छांदो. ३।१७।७
 [क्र. अ. १।४।८ =मं. १।५०।१०
 ज्योतिष्मती त्वासादयामि चित्त्यु. १९।१
 ज्योतिष्मतो ह लोकाजयति छांदो. ४।७।४
 ज्योतिष्मंतस्त्रयः कालास्तिस्रो-
 ऽवस्थास्त्रय आत्मनः वासुदे. ४
 ज्योतिष्मद्वाजमानं महस्वतु[+मुदश.५ त्रि.म.ना.७।३
 [तै. ब्रा. ३।१२।३।४
 ज्योतिष्मानस्मिंल्लोके भवति छांदो. ४।७।४
 ज्योतिष्यापः प्रतिष्ठिताः तैत्ति. ३।८
 ज्योतिस्वरूपं लिङ्गं मामेवोपासितव्यं
 तदेवोपासितव्यम् अस्मजा. २।९
 ज्योतीरुपमेषाबाह्यरहितं देशीयमानं
 परं तत्त्वं तत्परमस्ति.. शाण्डि. १।७।१६
 ज्वलतामति (ज्वलना अपि) दूरेऽपि
 खरसा अपि नीरसाः। स्त्रियो
 हि नरकामीनामिन्धनं चारु
 पाकणम् [महो. ३।४४+ याज्ञव. १३
 ज्वलति स दूरीयः, अङ्गारा भवन्ति
 स प्रतिहारः छान्दो. २।१२।१
 ज्वलन्तारसर्वतोमुखत्वानृसिद्धत्वात्
 भीषणत्वान्नदत्वात्.. (नृसिंहः) नृसिंहो. ७।५
 ज्वलनो ज्वालाभिः प्राणेन कोष्ठ-
 मज्ज्यमानं जलमत्युष्णमकरोत्
 ज्वलन्त्वमग्निमुत्सृज्य नहि
 अस्मनि हूयते शाण्डि. १।४८
 इतिहा. ४५.

ज्वलन्तमज्वलन्तं सर्वतोमुखमसर्वतो-
 मुखं नृसिंहमनृसिंहं...आत्मानं
जानीयात् नृसिंहो. ६।१
 ज्वलन्तमित्याह-ज्वलन्निव
 खल्वसाववस्थितः अन्यत्तो. ३
 ज्वलन्तं न प्रदीपं च स्वयं
 निर्वापयेद्बुधः शिवो. ७।७१
 ज्वलतः पावकाद्यद्वत्.. स्फुलिङ्गाः
 कोटिकोटिशः।..विश्वं तस्यास्तथा गुह्यका. २८
 ज्वलन्ती त्वासादयामि चित्त्यु. १९।१
 ज्वलतोऽपि यथा बिन्दुः सम्प्राप्तश्च
 हुताशनम्। ब्रजत्यूर्ध्वं गतः
 शक्त्या निरुद्धो योगमुद्रया यो. चू. ५९
 ज्वलिष्याम्येवाहमित्यभिर्दधे बृह. १।५।३२..
 ज्वालाजालपरिस्पन्दो दग्धेन्धन
 इवानलः। उदितोऽस्तंगतश्च
 ह्यस्तंगत इवोदितः अ. पू. ३।११
 ज्वालाजालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं
 महत्।... तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं
 तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् महाना. ९।३७
 ज्वालाया दर्शने सत्युर्द्विदिने भवति
 ध्रुवम् (आयुश्चिह्नम्) त्रि. मा. १२७
 ज्वालावहिः शीतलश्चेदस्तिरूप-
 मिदं जगत् ते. वि. ६।८४
 ज्वालाभिर्मण्डले पञ्चबुद्धिश्चेज्जग-
 दस्तिवदम् ते. वि. ६।८४
 ज्ञ
 ज्ञापयते स प्रस्तावः
 ज्ञातिर्हि ग्रन्थिबिच्छेदस्तस्मिन्
 सति विमुक्तता
 ज्ञमनो नाशमभ्येति मनो ज्ञस्य
 हि शृङ्खला
 ज्ञविज्ञसम्यग्ज्ञातृत्वंनिरालम्बंहरिमजे
 ज्ञः कालकालो गुणी सर्वविद्यः।
 तेनेशितं कर्म विवर्ततेह
 ज्ञः सर्वगो भुवनस्यास्य गोप्ता।
 यद्देशेऽस्य जगतो निरयमेव
 नान्यो हेतुर्विद्यते ईशानाय श्वेता. ३।१७

ज्ञाज्ञौद्धावजावीशानीशावजाज्ञेका
भोक्तृभोगार्थयुक्ता । अनन्त-
श्चात्माविश्वरूपोद्यककर्तात्रयं यदा
विन्दते ब्रह्मेतत् [तेनेदं सृष्टं ब्रह्म-
चक्रं हि सर्वम् ।] [श्वेता. १।९।ना. ५९।८ भवसं. २।३
ज्ञातचरदेशं चण्डालवाटिकाभिव-
क्षियमहिमिव (त्यजेत्) ना. प. ७।१
ज्ञातज्ञेयास्त उच्यन्ते जीवन्मुक्ता
महाविषयः । पदार्थभावना-
दाढर्यं बन्ध इत्यभिधीयते महो. २।४०
ज्ञातन्यमवशिष्यते भ. गी. ७।२
ज्ञातं येन निजं रूपं कैवल्यं परमं
पदम् । असौ दोषैर्विनिर्मुक्तः... यो. शि. १। १५
ज्ञातं येन निजं रूपं कैवल्यं परमं पदं
निष्कलं निर्मलं शान्तं.. एतज्ज्ञान-
मिति प्रोक्तम् १यो. त. १७, १८
ज्ञाता चिन्मात्ररूपश्च सर्वचिन्मय-
मेव हि । संभाषणं च चिन्मात्रं.. ते. वि. २।२९
ज्ञातानुज्ञात्रननुज्ञातृविकल्पज्ञान-
साधनम् । विकल्पत्रयमत्रापि..
मायामात्रं विदित्वैव.. ना. प. ८।२०
ज्ञाता होता ज्ञानमभिः, ज्ञेयं हविः भावनो. ३
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन भ. गी. ११।५४
ज्ञातृज्ञानज्ञेयानामभेदभावनं
श्रीचक्रपूजनम् भावनो. २
ज्ञातृज्ञानज्ञेयानामाविर्भावतिरोभाव-
ज्ञाता स्वयमाविर्भावतिरो-
भावरहितः स्वयच्छ्रयोतिः सर्वसारो. ५
ज्ञातृत्वं समानयोगेन श्रोत्रद्वारा
शब्दगुणो वागधिष्ठित
आकाशे तिष्ठति.... त्रि. ब्रा. १।६
ज्ञाते द्वैतं न विद्यते आगम. १८
ज्ञातोऽज्ञातश्चेति होचुर्न चैनमिति होचुः नृसिंहो. ९।१०
ज्ञातो नैव विज्ञातो विदिता विदितात्परः नृसिंहो. ९।८
ज्ञात्वा (नारायणं) जीवन्मुक्तो भवति ना. पू. ता. १।१
ज्ञात्वा तमेव मनसा हृदा च भूयो
न सत्यसुख्यादि विद्वान् महाना. १७।१४

ज्ञात्वा (शिवमात्मानं) तं मृत्यु-
मत्येति, नान्यः पन्था विमुक्तये कैव. ९
ज्ञात्वा तां (देवीं) मृत्युपाशाच्छिनत्ति गुह्यका. ५८
ज्ञात्वा त्रिविधमात्मानं परमात्मान-
माभयेत् । रुद्रह. १२
ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः [श्वेता. १।८+२।१५+
[४।१६+५।१३+६।१३ ना. प. ९।७।१०
ज्ञात्वा देवं सर्वपाशापहानिः श्वेता. १।११
ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् भ. गी. ९।१३
ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति भ. गी. ५।२९
ज्ञात्वा (मृत्युं) यतेत कैवल्यप्राप्तये त्रि. ब्रा. २।१२२
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं भ. गी. १६।२४
ज्ञात्वा शिवं शान्तिमत्यन्तमेति श्वेताश्व. ४।१४
ज्ञात्वा शिवं सर्वभूतेषु गूढं
विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा देवं
मुच्यते सर्वपाशैः श्वेता. ४। १६
ज्ञात्वा स्वं प्रत्यगात्मानं बुद्धित-
द्वृत्तिसाक्षिणम् । सोऽहमित्येव
तद्वृत्त्या स्वान्यत्रात्मगतिं त्यजेत् अध्यात्मो. २
ज्ञात्वैवं (ब्रह्मैवाहं) मनोदण्डं धृत्वा
आशानिबृत्तो भूत्वा भ्रमरकीट-
न्यायेन मुक्तो भवति ना. प. ५२
ज्ञानकर्मेन्द्रियैर्ज्ञानविषयैः प्राणादिपञ्च-
वायुमनो, द्विभिश्च स्थूलकल्पितैः
सोऽपि स्थूलप्रकृतिरित्युच्यते यो. चू. ७२
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि पठतां बन्ध-
मोचकम् ।.. इदमष्टोत्तरशतं न
देयं यस्य कस्यचित् मुक्तिको. १।४६
ज्ञानदण्डा ज्ञानशिखा ज्ञानयज्ञो-
पवीतिनः । शिखा ज्ञानमयीयस्य.. शाट्याय. १६
ज्ञानदण्डो धृतो येन एकदण्डी
स उच्यते [ना. प. ५।१३+ प. हं. ५
ज्ञानदीपेन भास्वता भ. गी. १०।११
ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः भ. गी. ५।१७
ज्ञाननिष्ठो विरक्तोऽपि धर्मज्ञो विजि-
तेन्द्रियः । विना देहेन योगेन न
मोक्षं लभते.. यो. शि. १।२४
ज्ञाननेत्रं समाधाय समहत्परमं पदम् ।
.. शान्तं ब्रह्म इति संस्मरेत् त्रि. ब्रा. ५।१०

ज्ञाननेत्रं समादाय चरेद्वह्निमतः
परम् । निष्कलं निर्मलं शान्तं
तद्ब्रह्माहमिति स्मृतम्
ज्ञानपूतं त्रिगुणस्वरूपं त्रिमूर्तित्वं
पृथग्विज्ञाय मूलमेकं सत्यं
मृण्मयं विज्ञातं स्यात् ..
ज्ञानप्रबोधो यस्मिन् समये माया-
मोहं सशब्दातीतोऽपि जायते
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्तत्तु
तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः
(तत्तस्तु तां पश्यते निष्कलां
च) [मुण्ड. ३।१।८+
ज्ञानबलैश्वर्यशक्तितेजस्वरूपो
भवति (नारायणः)
ज्ञानमावृत्य देहिनम्
ज्ञानभूमिः शुभेच्छाख्या प्रथमा...
ज्ञानभूमिः शुभेच्छा स्यात् ...
सप्तमी तुर्यगा स्मृताः
ज्ञानमेव परं तेषां पवित्रं ज्ञान-
मुच्यते (ईरितं) [ब्रह्मो. ११+
ज्ञानयज्ञः परन्तप
ज्ञानयज्ञः स विज्ञेयः सर्वयज्ञोत्तमो-
त्तमः (पूर्वोक्तः)
ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये
ज्ञानयज्ञेन तेनाहं
ज्ञानयुक्त्यमाद्यष्टाङ्ग..योग उच्यते
ज्ञानयोगनिधिं विश्वगुरुं योगिजन-
प्रियम् । भक्तानुकंपिनं सर्व-
साक्षिणं.. एवं यः सततं ध्यायेद्देव-
देवं.. स मुक्तः
ज्ञानयोगपराणां तु पादप्रक्षालितं
जलम् । भावशुद्ध्यर्थमज्ञानां
वत्तीर्णं मुनिपुङ्गव
ज्ञानयोगनिर्मुक्तः कर्मयोगसमा-
वृतः । सुतः शिवपुरं गच्छेत्सः..
ज्ञानयोगध्यावस्थितिः
ज्ञानयोगी न विन्दति ये नरा
मन्दबुद्धयः । ते मुच्यन्ते कथं..

त्र. बि. २१

परब्र. ४

अद्वैतो. २

गुह्यका. ३७

त्रि.म.ना. २।६

भ. गी. ३।४

महो. ५।२४

वराहो. ४।१,२

परब्र. ६।१३

भ. गी. ४।३३

शाटपाय. १६

भ. गी. ९।१५

भ. गी. १८।७०

मं. ब्रा. १।१

शांडि. ३।४

जा. द. ४।५६

शिवो. १।२९

भ. गी. १६।१

शिवो. १।३

ज्ञानयोगः कर्मयोग इति योगो

द्विधा मतः

ज्ञानयोगः स विज्ञेयः सर्व-

सिद्धिकरः शिवः

ज्ञानयोगेन मुच्यन्ते देहपातादनन्तरम्

भोगान् भुक्त्वा च मुच्यन्ते..

ज्ञानयोगेन साङ्गथानां

ज्ञानरूपमानन्दभयमासीत्

(पुरेवं ब्रह्मांडं)

ज्ञानवान् मां प्रपद्यते

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा

ज्ञानविज्ञाननाशनम्

ज्ञानवैराग्यमृतोयैः क्षालनाच्छौच-

मुच्यते

ज्ञानवैराग्ययुक्तो वित्तस्त्रीपराङ्मुखः..

शरीररक्षणार्थं.. भैक्षमाणो

ब्रह्मभूयाय भवति

ज्ञानशक्तिबलैश्वर्यवीर्यतेजांस्य-

शेषतः । भगवच्छब्दवाच्यानि

विना हेयैर्गुणादिभिः

ज्ञानशक्तिश्चेतनाशक्तिः क्षेत्रशक्ति-

रिच्छान्तर्भूत्वा माया सत्त्व-

रजस्तमोमयी

ज्ञानशिखिनो ज्ञाननिष्ठा ज्ञानयज्ञोप-

वीतिनः । ज्ञानमेव परं तेषां पवित्रं

ज्ञानमीरितम् (उच्यते) [ब्रह्मोप. ११ + परब्र. १३

[+ ना. प. ३।८३

ज्ञानशौचं परित्यज्य बाह्ये यो रमत

नरः । लोष्ठं गृह्णाति सुव्रत

ज्ञानसङ्कल्पनिश्चयानुसन्धानाभिमाना

आकाशकार्यान्तःकरणविषयाः

ज्ञानसङ्केतं चानय

ज्ञानसङ्छिन्नसंशयम्

ज्ञानसंहारसंयुक्तशक्तिद्वयसमन्वितम्

ज्ञानस्वरूपमेवादौ ज्ञानं ज्ञेयैक-

साधनम् । ज्ञातयेन निजं रूपं कैवल्यं.. १यो. व. १६

ज्ञानस्वरूपमेवादौ ज्ञेयं ज्ञानैक-

साधनम् । अज्ञानं कीदृशं

चेति प्रविचार्य..

त्रि. ब्रा. २।२३

त्रि. ब्रा. २।२६

शिवो. १।३१

भ. गी. ३।३

अव्यक्तो. १

भ. गी. ७।१९

भ. गी. ६।८

भ. गी. ३।४१

मैत्रे. २।९

प. हं. प. ६

भवसं. २।५३

राधिको. १

जा. द. १।२२

त्रि. ब्रा. १।४

भ. गी. ११।६

भ. गी. ४।४१

पञ्चब्र. ७

यो. शि. १।१४

ज्ञानस्वरूपमेवाहुर्जगदेतद्विलक्षणम् ।

अर्थस्वरूपमज्ञानात्पश्यन्त्यन्ये

कुदृष्टयः

ज्ञानं कर्म च कर्ता च

ज्ञानं केचिद्वदन्त्यत्र केवलं, तन्न सिद्धये । योगहीनं कथं

ज्ञानं मोक्षदं भवतीह भोः

ज्ञानं चेदीदृशं ज्ञातमज्ञानं

कीदृशं पुनः

ज्ञानं ज्ञानवतामहम्

ज्ञानं ज्ञेयं च केशव

ज्ञानं ज्ञेयं च विज्ञेयं सदा बुद्धेः

प्रकीर्तितम्

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यादतीतं शुद्धं

बुद्धं मुक्तमप्यन्ययं च । सत्यं

ज्ञानं.. ध्यायेदेवं तन्महो..

ज्ञानज्ञेयचिदात्मकम् । तदेव केवली-

भावं ततोऽन्यत्सकलं मृषा

ज्ञानज्ञेयचिदेव हि । ज्ञाताचिन्मात्र-

रूपञ्च सर्वं चिन्मयमेव हि

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता

ज्ञानं ज्ञेयं सभं नष्टं नान्यः पन्था

द्वितीयकः

ज्ञानं ज्ञेयैकसाधनम्

ज्ञानतपोऽभिराहारो भन्मनोवायु-

पाञ्चनम् । वायुः कर्माकर्कशो

च शुद्धेः कर्तृणि देहिनाम्

ज्ञानं तु जन्मैकेन योगादेव प्रजायते ।

तस्माद्योगात्परतरो नास्ति

मार्गस्तु मोक्षदः

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानं

ज्ञानं ज्ञानोत्पत्तिविनाशरहितं नैरन्तर्यं

चेतस्य ज्ञानमित्युच्यते

ज्ञानं नारायणः परः

ज्ञानं बुद्धिश्च । ज्ञानं मोक्षकारणम्

(तदि) ज्ञानं ज्ञानादिति चेत्, तन्न;

अत्रिषादयोऽपि परमार्थबुद्धिर्ज्ञानो-

ऽभिज्ञा ननुः सन्ति

जा. द. ६।४९

भ. गी. १८।१९

यो. शि. १।१२

यो. शि. १।२४

भ. गी. १०।३८

भ. गी. १३।२

अ. शां. ८८

भ. गी. १३।१८

शु. र. २।५

महो. ४।६३

ते. वि. २।२९

भ. गी. १८।१८

शां. डि. १।७।२२

१ यो. त. १६

भवसं. ३।२१

यो. शि. १।५३

भ. गी. ७।२

सर्वसा. ६

ना. पू. ता. १।४

कौलो. १

म. सु. ६

ज्ञानं माता विज्ञानं पिता, सगुणब्रह्म-

निर्गुणब्रह्मार्पितं..

ज्ञानं मोक्षकारणम्

ज्ञानं यदा तदा विद्यात्

ज्ञानं योगात्मकं विद्धि योगश्चाष्टाङ्ग-

संयुतः । संयोगो योग इत्युक्तो

जीवात्मपरमात्मनोः

ज्ञानं लब्ध्वाऽचिरादेव मामकं

धाम यास्यसि

ज्ञानं लब्ध्वा परं शान्तिं

ज्ञानं विज्ञानमास्ति कथं

ज्ञानं विज्ञानसहितं

ज्ञानं शरीरं वैराग्यं जीवनं विद्धि

ज्ञानं सम्यगवेक्षणम् । तस्मिन् (चित्ते

ज्ञानेन) निरोधितेनूनमुपशान्तं

मनो भवेत्

ज्ञानाभिदग्धकर्माणं

ज्ञानाभिदग्धदेहस्य न च आद्यं

न च क्रिया

ज्ञानाग्निः शुभाशुभं च कर्म विन्दति

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि

ज्ञात्सायुज्यमेवोक्तं तोये

तोयं यथा तथा

ज्ञानात्सिद्धिर्मुक्तिरिति गुरो-

ज्ञानं च लभ्यते

ज्ञानात्स्वरूपपरमहंसमंत्रसमुचरेत् ।

प्राणिनां देहमध्ये तु स्थितौ हंसः

सदाऽच्युतः

ज्ञानादेव विमुच्यते (संसारः)

ज्ञानादेवास्य शास्त्रस्य सर्वावस्थोऽपि

मानवः । ब्रह्महत्याश्रमेधाद्यैः पुण्य-

पापैर्न लिप्यते

ज्ञानोद्योगपरिष्ठेयं कुप्रावरण-

भोजनम् । कुचर्या कुनिकासं च

मोक्षार्थी न विचिन्तयेत्

ज्ञानाद्विज्ञानं विशिष्यते

ज्ञानानन्दधनोऽस्यहम्

ज्ञानानन्दोऽस्यहम्

अद्वैतो. ५

कौलो. १

भ. गी. १४।११

भवसं. ३।१३

मुक्तिको. १।२७

भ. गी. ४।३९

भ. गी. १८।४२

भ. गी. ९।१

जा. प. ६।१

शां. डि. १।७।२४

भ. गी. ४।१९

पैङ्गलो. ४।७

गर्भो. ११

भ. गी. ४।३७

प्र. वि. ५७

अमन. २।५

प्र. वि. ५९

१ यो. त. १६

प्र. वि. ५०

शिवो. ७।१२७

भ. गी. २।३।२२

ते. वि. ३।३१

ते. वि. ६।६०

ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां
 शून्यसाक्षिणी । यस्याः परतरं
 नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता
 देव्यु. २१
 ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्
 भ. गी. १४।१
 ज्ञानान्मुक्तिमवाप्नुयात्
 शिवो. ७।७४
 ज्ञानामृततृप्तयोगिनो न किञ्चित्
 कर्तव्यमस्ति, तदस्ति चेन्न स
 तत्त्वविद्वद्वति
 पैङ्गलो. ४।९
 ज्ञानामृतरसो येन सकृदास्वादितो
 भवेत् । स सर्वकार्यमुत्सृज्य तत्रैव
 परिधावति
 जा. द. ६।४८
 ज्ञानामृतेन तृप्तस्य कृतकृत्यस्य योगिनः॥
 न चास्ति किञ्चित्कर्तव्यं..
 जा. द. १।२३
 ज्ञानावस्थितचेतसः
 भ. गी. ४।२३
 ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः
 भ. गी. ४।३४
 ज्ञानिनामूर्ध्वगो भूयादज्ञाने
 स्यादधोमुखः । एवं वै
 प्रणवस्तिष्ठेत्
 यो. चू. ७८
 ज्ञानिनां ज्ञानदा सत्यं दानदानां
 विनाशिनी (महालक्ष्मीः)
 ना. पू.ता. २।३
 ज्ञानिनो नित्यवैरिणा
 भ. गी. ३।३९
 ज्ञानिनो हृदयं मूढैर्ज्ञातं चेत्
 कल्पनं तदा । श्वानेन सागरे
 पीते निःशेषेण जगद्भवेत्
 ते. वि. ६।९६
 ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः
 भ. गी. ६।४६
 ज्ञानी च भरतर्षभ
 भ. गी. ७।१६
 ज्ञानी त्वास्मैव मे मतम्
 भ. गी. ७।१०
 ज्ञाने च त्रिविधे ज्ञेये क्रमेण विदिते
 त्वयम् । सर्वज्ञता हि सर्वत्र
 भवतीह महाश्वितः
 अ. शां. ८९
 ज्ञानेन ज्ञेयमालोच्य पञ्चाङ्गज्ञानं
 परित्यजेत्
 ब्र. वि. ३६
 ज्ञानेन तु सदज्ञानं
 भ. गी. ५।१६
 ज्ञानेन विज्ञाने ज्ञेये परमात्मनि
 हृदि संस्थिते देहे लब्धाशान्ति-
 पदं गते तदा प्रभामनोबुद्धि-
 शून्यं भवति
 पैङ्गलो. ४।९

ज्ञानेनाकाशकल्पेन धर्मान्योगगनो-
 पमान् । ज्ञेयाभिज्ञेन सम्बुद्धस्तं
 वन्दे द्विपदां वरम्
 अ. शां. १
 ज्ञानेनाज्ञानकार्यस्य स मूलस्यलघो
 यदि । तिष्ठत्ययं कथं देह इति
 शङ्कावतो जडान् । समाधातुं बाह्य-
 दृष्ट्या प्रारब्धं वदति श्रुतिः
 अ. शां. ५९
 ज्ञानेनैव विना योगो न सिद्ध्यति
 कदाचन । जन्मान्तैश्च बहुभि-
 योऽङ्गो ज्ञानेन लभ्यते
 यो. शि. १।५२
 ज्ञानेनैव हि संसारविनाशो
 नैव कर्मणा
 रुद्रह. ३५
 ज्ञानेन्द्रियकर्मेन्द्रियान्तःकरणचतुष्टयं
 चतुर्दशकरणयुक्तं जाग्रत्
 शारीरको. १०
 (अथ) ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं कर्मेन्द्रिय-
 पञ्चकं प्राणादिपञ्चकं वियदा-
 दिपञ्चकमन्तःकरणचतुष्टयं काम-
 कर्मतमांस्यष्टपुरम्
 पैङ्गलो. २।६
 ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्चैव श्रोत्र-
 त्वालोचनादयः
 वराहो. १।२
 ज्ञानेन्द्रियैः सहबुद्धिर्विज्ञानमयकोशः
 पैङ्गलो. २।५
 ज्ञानेन्द्रियैः सह मनो मनोमयकोशः
 पैङ्गलो. २।५
 ज्ञाने परिसमाप्यते
 भ. गी. ४।३३
 ज्ञानैर्विभर्ति ज्ञायमानं च पश्येत्
 श्वेता. ५।२
 ज्ञानोदयात्पुरारब्धं कर्मज्ञानाच्च
 नश्यति । अदत्त्वास्वफलं लक्ष्य-
 मुद्दिश्योत्सृष्टबाणवत्
 अ. शां. ५३
 ज्ञेयं वस्तुपरित्यागाद्विषयं याति
 मानसम् । मानसे विषयं याते
 कैवल्यमवशिष्यते
 शां. १।७।२३
 ज्ञेयं चाज्ञेयं च विकल्पासहिष्णु
 तत्सशक्तिकं गजवद्वज्रं गजाकारं
 ग. शो. ३।३
 जगदेवावरुन्धे
 भ. गी. १३।१९
 ज्ञेयं चोक्तं समासतः
 भ. गी. १३।१३
 ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि
 ज्ञेयं सर्वप्रतीतं च तज्ज्ञानं मन
 उच्यते । ज्ञानं ज्ञेयं समं नष्टं
 नान्यः पन्था द्वितीयकः
 शां. १।७।२२

श्रेयः स नित्यसञ्ज्ञासी

भ.गी. ५।३

श्रेयोऽसि नित्यतात्मभिः

भ.गी. ८।२

झ

झषाणां मकरश्चास्मि

भ.गी. १०।३१

त इमेऽवस्थिता युदे

भ.गी. १।१३

त इमे सत्याः कामा अनृतापिधानाः

छान्दो. ८।३।१

त इह व्याघ्रो वा सिंहो वा वृको वा

वराहो वा कीटो वा..यद्यद्भवन्ति

तदा भवन्ति [छान्दो. ६।१।३

+६।१०।२

त इह ब्रीहियवा ओषधिवनस्पतय-

स्तिलमाषा इति जायन्ते

छान्दो. ५।१०।६

त ऋषयोऽभवन्तदृषीणामृषित्वम्

सहवै. १३

त ऋषीन्ब्रुन्-नमोवोऽस्तु भगवतो-

ऽस्मिन्धामनिर्केनवःसमर्पयामीति

सहवै. ११

त एतस्यैव सर्वे रूपमभवन्

बृह. १।५।२१

त एतदेवरूपमभिसंविशन्त्येतस्माद्रूपा-

दुष्यन्ति [छान्दो. ३।६।२+७।२+८।२

+९।२+१०।२

त एतं ब्रह्मयज्ञमपश्यन्तमाहरन्

सहवै. १३

त एतानि सूक्तान्यपश्यन् यद्वा

देवहेळनं यददीव्यं..

सहवै. ११

त एतावन्तो भवन्ति (पशवः)

यथाप्रज्ञं हि संभवाः

१ऐत. ३।२।४

त एते सर्व एव समाः सर्वेऽनन्ताः

स यो हैतानन्तवत उपास्ते-

ऽनन्तं लोकं जयति

बृह. १।५।१३

त एनं तृप्ता आयुषा तेजसा वचसा

मिया..ब्रह्मवर्चसेनाद्येनचतर्पयन्ति

सहवै. १४

त एव पुनरावर्तन्ते तस्मादेते ऋषयः

प्रजाकामा दक्षिणं प्रतिपद्यन्ते

प्रभो. १।९

त एव भूमतां प्राप्ताः संशान्ताशेष-

कित्तिषाः..येयाता विमनस्कृतास्

महो. ५।६०

त एवमेवानुपरिवर्तन्ते

बृह. ६।२।१६

त एवैतदुपमन्त्रयते वदाम त इति

कौ. व. २।१, २

त एव लोकेऽवस्पन्दन्ते

बृ. व. १।३।१

त एवैतन् इत्येवमाहुर पाप्मानं

मसाम इति

बृह. ६।१

श्रोऽमृतोद्भूतसंवित्कः शुद्धः संविष्टो

निर्विघ्न इममसुनियमेऽनुभूय

इहेदं सर्वं दृष्ट्वा.. स प्रपञ्चहीनः..

नृसिंहो. ३।३

ण

णकारो भगवान् भवति (नारायणः) तारसा. १।४

त

त ऐश्वर्यन्तास्माकमेवायं विजयो-

ऽस्माकमेवायं महिमिति

केनो. ३।१

तकारस्तारलक्ष्म्या च वैराजः प्रस्तरः

स्मृतः । इकाररूपिणी...महा-

माया... अव्यक्तस्वरूपा भवतीति

सीतेत्युदाहरन्ति

सीतो. २, ३

तक्रं क्षीरस्वरूपं चेत्कचिन्नित्यं

जगद्भवेत्

ते. वि. ६।८०

तक्ष्युवन्ति वासीभिः कृण्वति फली-

भिर्न हैव शकुवत इति

आर्षे. १।२

तच्च कारणमेकं हि न भिन्नं नोभया-

त्मकम् । भेदः सर्वत्र मिथ्यैव

धर्मादिरनिरूपणात् ।

पञ्चम. ३२

तच्चक्रमध्ये पापपुण्यप्रचोदितो

जीवो भ्रमति

शांडि. १।४।४

तच्चक्षुषाऽजिघृक्षत्, तन्नाशको-

चक्षुषा ग्रहीतुम्

२ ऐत. ३।५

तच्च न मुख्योऽस्ति, कोऽयं मुख्य

इति च हृदयं मुख्यः..

प. हं. प. २

तच्च निरतिशयानन्दाखण्डब्रह्मा-

नन्दनिजमूर्त्याकारेण ज्वलति

त्रि. म. ना. १।४

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य

भ.गी. १।८।७

तच्चानन्दसमुद्रमग्नो योगिनो भवन्ति,

तदपेक्षया इन्द्रादयःस्वल्पानन्दाः

मं. ना. २।९

तच्चानिर्वाच्यमनिर्देश्यमखण्डान-

न्दैकरसात्मकं भवति

त्रि. म. ना. १।४

तच्चालौकिकपरमानन्दलक्षणा-

खण्डामिततेजोराशिर्ज्वलति

त्रि. म. ना. १।४

तच्चित्स्वरूपं निर्विकारमद्वैतं च

तच्चैज्जिज्ञास्यसि मावग-

रा. शो. ४।२

च्छेति (ब्रह्मतेजः)

अन्यको. २

तच्चैतत्तं याज्ञवल्क्य सूत्रमविद्वान्

इति चान्तर्वाभिर्णं..

बृह. ३।४।१

तच्छब्दवर्ज्यस्त्वंशब्दहीनो वाक्यार्थ-

वर्जितः । क्षराक्षरविहीनो यो

नादान्तज्योतिरेव सः

ते. वि. ५।६

तच्छंयोरावृणीमहे गातुं यज्ञाय

गातुं यज्ञपतये देवी स्वस्ति-

स्तु नः [सहैव. २५+

चिन्त्यु. शां.

[क्र. खि. १०।१९१।५

तच्छान्तमशब्दमभयमशोकमानन्दं

विष्णुसंज्ञितं सर्वापरं धामेति

मैत्रा. ७।३

*तच्छाब्दं शास्त्रितं चेति पौरुषं

द्विविधं मतम् । तत्रोच्छास्त्र-

मनर्थाय परमार्थाय शास्त्रितम्

मुक्तिको. २।१

तच्छिभेनाजिघृक्षत्, तन्नाशकोत्..

२ ऐत. ३।९

तच्छुद्धमप्राप्यं प्राप्यं च ज्ञेयं चाज्ञेयं च

ग.शो. ३।३

तच्छुद्धं तच्छब्दलम्, ततः प्रकृति-

महत्तत्त्वानि जायन्ते

ग.शो. २।५

तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदा-

त्मविदो विदुः

मुण्ड. २।२।९

तच्छिरो(तच्छिरो)ऽभ्रयत्, यच्छिरो-

ऽभवत्

१ ऐत. १।४।२

तच्छ्रीत्युपासीत, तद्यश इत्युपासीत

कौ. उ. २।६

तच्छ्रेयो रूपमत्यसृजत्

बृह. १।४।११

तच्छ्रोत्रेणाजिघृक्षत् । तन्नाशको-

च्छ्रोत्रेण महीतुम्

२ ऐत. ३।६

तज्जपात्मते पुण्यं नरोरुद्राक्षधारणात्

रु. जा. ६

तज्जापकानां वाक्सिद्धिः श्रीसिद्धिः...

हयग्री. ६

तज्ज्ञः कर्मफलेनान्तस्तथा नायाति

रत्नम्

अ. पू. ५।९८

तज्ज्ञानप्रवाहाधिरूढेन ज्ञेयम्

मं. ब्रा. २।१

तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्

अ. गी. १८।२०

तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् ।

अ. गी. १८।२१

तज्ज्ञानेन संसारनिवृत्तिः

मं. ब्रा. १।४

तज्ज्ञानेन हि विजानीहि, य एको

देव आत्मशक्तिप्रधानः सर्वज्ञः

सर्वेश्वरो भूतान्तरात्मा..

शाण्डि. २।४

(उत्त.) तदस्यो ब्रह्मा तदस्यो न ब्रह्मा

प्रवृत्ताश्च ब्रह्मैव

ना. प. ६।६

*'उच्छाब्द' इति पाञ्चान्तरं, तदेव साप्तिवति भाति, तृतीय-
चरणे तस्यैवोक्तत्वात्, उकारवाक्येषु तयोर्लेशाच्च । [१.९८५.३०]

तद्विरसु शरदभ्रेषु गन्धर्वनगरेषु

च । स्थैर्यं येन विनिर्णीतं स

विश्वसतु विग्रहे

महो. ३।३२

तण्डुलस्य यथा चर्म यथा ताम्रस्य

कालिमा । नश्यति क्रियया विप्र

पुरुषस्य तथा मलम् ।

महो. ५।१८५

तत् उपनिषदः श्रुतय आविर्बभूवुः

गोपीचं. २७

तत् उपरि पूर्णचन्द्रमण्डलम्

मं. ब्रा. २।३

तत् उपस्थगुदयोन्येतन्मूत्रपुरीषं

कस्मादाहारापानसिक्तत्वाद्-

नुपचति

निरुक्तो. २।१

तत् उ ह बालाकिः समित्पाणिः

प्रतिचक्रमे उपायानीति

कौ. उ. ४।१८

तत् उ हैनं यष्टया त्रिचिक्षेप

स तत् एव समुत्तस्थौ

कौ. उ. ४।१८

(अथ) तत् ऊर्ध्वं उदेत्य नैवोदेता

नास्तमेतैकल एव मध्ये स्थाता

छांदो. ३।११।१

तत् एकशफमजायत

बृह. १।४।४

(उद्वैव) तत् एत्यगदो हैव भवति

छांदो. ३।१६।६

तत् एव उदेत्य नैवोदेता (मा. पा.)

छां. उ. ३।११।१

तत् एव च विस्तारं

अ. गी. १३।३१

तत् एव पबमानपावकशुचय

आविष्कृतमेतेनास्य यज्ञम्

मैत्रा. ६।३४

तत् एव सत्यमात्मानं कुरुते

स सत्याभिसन्धः.

छांदो. ६।१६।२

तत् एवानृतमात्मानं कुरुते सोऽनृता-

भिसन्धोऽनृतेनात्मानमन्तर्धाय

परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति

छांदो. ६।१६।१

तत् एवास्य अयं वीयाय,

कस्मादमेष्यत्

बृह. १।४।२

तत् ओङ्कारमपश्यत्ततो व्याहृती-

स्ततो गायत्री, गायत्र्या वेदा-

स्तैरिदमसृजत्

गोपीचं. २७

तत् ओषधयोऽमं च ततः

पिण्डाश्चतुर्विधाः

मि. ब्रा. २।५

तत् एतन्नामधेयं लेमे (वसिष्ठ इति)

१ ऐत. ३।४।१

तत्तत्तुर्जालं ब्रह्मकोशं प्रणुनेत्..

मैत्रा. ६।२८

तत्तत्तुर्जालं ब्रह्मकोशं भिन्ददतः

परमाकाशम्

मैत्रा. ६।३८

ततश्च दशमे मासि प्रजायते ।
जातश्च वायुना स्पृष्टो न
स्मरति जन्ममरणम् (गर्भः) निरुक्तो. १।८
ततश्च महदाद्या ब्रह्मणो महामाया-
सम्मीलनात् पञ्चभूतेषु गन्ध-
वती पृथिव्यासीत् गोपीचं. ८
ततश्चन्द्रः प्रजापतिशक्रौ, ततो
माया (भवति) कामराज. १
ततश्च हृद्देशे महान्तं पुरुषं गजवक्त्रं
..श्रीहृत्कं.. दृष्ट्वा स्तुवन्तिस्म
ततश्चाग्ने कोटिसूर्यप्रकाशमानन्द-
रूपं गजवक्त्रं विलोकयति ग. शो. ४।७
ततश्चात्मानमिति मन्यते स्म । न
चैवमतः परं किञ्चित् ग. शो. ३।६
ततश्चाधः प्रदेशे दश दिक्षु भ्रमन्तो
न कञ्चित् पश्यन्ति स्म ग. शो. ४।६
ततश्चाप्रमादेन निवसेत् ... काश्यां
लिङ्गरूपिण्याम् भस्मजा. २।१६
ततश्चाहङ्कारादिपञ्चतन्मात्रा जायन्ते
ततश्चाहृतं वासः परिधत्ते ग. शो. २।५
पापमनोपहृत्यै भस्मजा. २।२
ततश्चैकादशाहेन लयस्थस्य लयो-
दयात् । मनसा सहितः सोऽपि
गंतुमिच्छति दूरतः अमन. १।६१
ततश्चोमिति ध्वनिरभूत्स गजाकारः ग. शो. ४।६
ततस्ततो नियम्यैतत् भ. गी. ६।२६
ततस्तद्वृत्तिनैश्चल्यं कुम्भकः प्राणसं-
यमः... प्रत्याहारः स विज्ञेयः.. ते. वि. १।३३
ततस्तस्मान्निर्विशेषमतिनिर्मलं भवति त्रि. म. ना. ४।१
ततस्तादृग्गुणगतं मनो भावयति
क्षणात् । गन्धतन्मात्रमेतस्मात्.. महो. ५।१५१
ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्याय-
मानः (आत्मानं) मुण्ड. ३।१।८
ततस्तु तां पश्यति निष्कलां च (ज्ञानेन) गुह्यका. ३७
ततस्तु सम्भवूवासौ यद्विरामप्य-
मौचरः । यच्छून्यवादिनां शून्यं.. अ. पू. ३।१९
ततस्ते जीह्विरणमयमण्डलम् । तत्र ब्रह्मा
चतुर्मुखोऽजायत महो. १।४

ततस्तेमुक्तामामनुविशन्ति विज्ञान-
मयेनाङ्गेन, न पुनरावर्तन्ते भस्मजा. २।१५
ततस्त्रयोदशाहेन लयेनापि.. सिद्धि
लभते चिन्तनादपि अमन. १।६३
ततः कनीयसा एव देवाज्यायसा असुराः बृह. १।३।१
ततः कराम्रेणाहङ्कारं सृष्टवान् (गणेशः) ग. शो. ४।३
ततः कण्ठान्तरे योगी समूहत्राडि-
सञ्चयम् क्षुरिको. १५
ततः कालवशादेव ह्यात्मज्ञानविवेकतः ।
योगाभ्यासं स्थितश्चरन्... त्रि. ब्रा. २।१८
ततः कालवशादेव प्रारब्धे तु क्षयंगते ।
ब्रह्मप्रणवसन्धानं नादोऽप्योतिर्मयः
शिवः । स्वयमाविर्भवेदात्मा.. ना. वि. २९
ततः कालवशादेव प्रारब्धे तु क्षयंगते ।
वैदेही मामकीं मुक्तिं यान्ति... मुक्तिको. १।४
ततः कुरु यतात्मवान् भ. गी. १२।११
ततः कूर्चं व्योम षष्ठस्वरविन्दु-
मेलनरूपम् तारोप. ३
ततः कृशवपुः प्रसन्नवदनो.. निर्मुक्त-
रोगजालो जितविन्दुः पट्वमि-
र्भवति शांदि. १।७।१४
ततः क्षत्रं बलमोजश्च जातम् चित्त्यु. ११।९
ततः पक्कषायेण नूनं विज्ञातवस्तुना ।
शुभोऽप्यसौ त्वया त्याज्यो
वासनो धो निराभिना मुक्तिको. २।३१
ततः पतिश्च पत्नी चाभवता
तस्मादिदमर्धवृगलमिव.. बृह. १।४।३
ततः पदं तत्परिमार्गितव्यम् भ. गी. १५।४
ततः पद्मासनं बद्धा समग्रीवोदरः
सुधीः । ... प्राणं घ्राणेन रेचयेत् यो. कुं. १।३२
ततः परतरं शुद्धं व्यापकं निर्मलं
शिवम् । सदोदितं परं ब्रह्म.. ना. वि. १७
ततः परमेष्ठी व्यजायत, सोऽभि-
जिज्ञासत किमेकुलं किमेकृत्यमिति अव्यक्तो. १
ततः परं ब्रह्म परं बृहन्तं यथा
निकायं सर्वभूतेषु गूढम् ।
.. ईशं तं ज्ञात्वाऽमृता भवन्ति येता. ३।७

ततः परिचयावस्था जायते-

ऽन्यासयोगतः

१यो. त. ८१

ततः पवित्रं परमेश्वराख्यमद्वैत-

रूपं... (आत्मरूपं दृश्यते)

पैङ्गलो. ४।११

ततः पीयूषमिव विषं जीर्यते

शांदि. १।७।४३

ततः पुण्यवशात्सिद्धो गुरुणा

सहसङ्गतः ।...सत्वरं फलमभ्युते

यो.शि. १।१४२

ततः पूर्वापरे व्योम्नि...नारायण-

मनुष्यायेत्सत्त्वन्तममृतं सदा

यो.शि. ५।४३

ततः पृथ्व्यप्तेजोवायुकाशानि

पञ्चमहद्भूतानि जायन्ते

ग. शो. २।५

ततः प्रकाशते परं ब्रह्म मेधापाये-

ऽशुमानिव

कलिसं.

ततः प्रकृतिमहत्त्वानि जायन्ते

ग.शो. २।५

ततः प्रक्षाल्य (हस्तौ) तद्भस्मापः

पुनर्विविधं पिबेत्

भस्मजा. १।५

ततः प्रजाः प्रजायन्ते य एवं वेद..

प्रत्यग्व्योतिष्यात्मन्येव रन्ताऽरम्

अव्यक्तो. ७

ततः प्रणतोमायानुकूलेन हृदामह्यमष्टा-

दृशार्णस्वरूपं सृष्टये दत्त्वाऽन्तर्हितः

गो. पू. ३।८

ततः प्रद्युम्नसंज्ञं मन आसीत् । तस्मा-

दहङ्कारनामाऽनिरुद्धः

सङ्कर्षणो. १

ततः प्रवर्तते वाणी स्वच्छया ललिता-

क्षरा । गद्यपद्यात्मकैः शब्दैः...

सारस्व. ३३

ततः प्रवेशयामास जनकः शुक्रमङ्गणे ।

तत्राहानि सप्तैव तथैवावसदुन्मनाः

महो. २।२३

ततः प्रवेशयामास जनकोऽन्तःपुराजिरे ।

राजा न दृश्यते तावत्..

महो. २।२४

ततः प्रव्रज्य शुद्धात्मा सञ्चरेद्यत्रकुत्र-

चित् ।...सन्पश्यन्दि जनार्दनम्

ना.प. ५।४८

ततः प्रव्रज्याव्यं धृतिदण्डं धनु-

गृहीत्वाऽनभिमानमयेन चैवेषुणा..

मैत्रा. ६।२८

ततः प्राणमयो ह्यात्मा विभिन्न-

श्चान्तरः स्थितः । ततो विज्ञान

आत्मा तु आनन्दमय आत्मा

तु प्रतोऽन्यः

कठरु. २१

ततः प्राणोऽजायत स इन्द्रः

बृह. १।५।१२

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च

भ. गी. १।१३

ततः शरीरे लघुदीप्तिवह्निवृद्धिनावाभि-

व्यक्तिर्भवति

शांदि. १।५।२

ततः शुद्धश्चिदेवाहं व्योमवान्निरु-

पाधिकः । जीवेश्वरादिरूपेण..

वराहो. २।५३

ततः शुद्धः सत्त्वान्तरस्थमचलममृत-

मच्युतं ध्रुवं विष्णुसंज्ञितं

स्वमहिम्नि तिष्ठमानं पश्यति

मैत्रा. ६।३८

ततः शुभाशुभकर्माणि सर्वाणि

सवासनानि नश्यन्ति

त्रि.म.ना. ५।९

ततः शष्कवृक्षवन्मूर्च्छा निद्रामय-

निश्श्वासोच्छ्वासाभावान्नष्टद्वन्द्वः

..मनः प्रचारशून्यं परमात्मनि

लीनं भवति

मं.ब्रा. ३।२

ततः शून्यं च द्वौ दिवाकरहरौ तदनु

गोत्रभ्रन्माया...

कामरा. १

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते

भ.गी. १।१४

ततः सदाचारप्रवृत्तिर्जायते, सदा-

चारादखिलदुरितक्षयो भवति

त्रि.म.ना. ५।४

ततः सद्गुरुकटाक्षमंतःकरणमाकाङ्क्षति

ततः संध्यां सकुशोऽद्विरुपासीत

त्रि.म.ना. ५।४

ततः सगेषु लोकेषु शरीरत्वाय कल्पते

ततः सर्वं ततः सर्वं ततः सर्वं जगत्..

कठो. ६।४

ततः सविलासमूलविद्यासर्वकार्यो-

पाधिसमन्विता..अव्यक्तविशति

त्रि.म.ना. ३।७

ततः स विस्मयाविष्टः

ततः संवत्सरस्यान्ते ज्ञानयोगमनु-

त्तमम् । आश्रमत्रयमुत्सृज्य प्राप्तश्च

परमाश्रमम्

ना.प. ६।३४

ततः साधननिर्मुक्तः सिद्धो भवात्

योगिराट् । तत्त्वं रूपं भवेत्तस्य

विषयो मनसो गिराम्

ते.वि. १।३९

ततः सावरणं ब्रह्माण्डं विनाशमेति

ततः सुदुर्निरीक्षोऽभवत् (इन्द्रः)

तस्मै विद्यामानुष्टुभीं प्रादात्

प्रजापतिः

त्रि.म.ना. ३।५

ततः स्तिमितगम्भीरं न तेजो न तम-

स्ततम् । अनाख्यमनभिर्व्यक्तं

सत्किञ्चिदवशिष्यते

महो. १।६५

ततः स्वावरजज्जमात्मकजगद्भविष्यति

ततः स्वकार्यान्सर्वप्राणिजीवान्सृष्ट्वा

पञ्चाथाः प्रादुर्भवन्ति

मुद्गलो. १।५

मुद्गलो. १।५

ततः स्वधर्म कीर्ति च भ. गी. २।३३
 ततः स्वभवनं यान्ति शापं दत्त्वा
 सुदारुणम् (पितरः श्राद्धकर्तारं) इतिहा. ९३
 ततः स्वमनसः स्थैर्यं मनसा विगतैनसा।
 अहो नु चञ्चलमिदं प्रत्याहृत-
 मपि स्फुटम् अ. पू. ३।५
 ततो ब्रह्मघने नित्ये सम्भवन्ति न
 कल्पिताः । न शोकोऽस्ति न
 मोहोऽस्ति..न जरास्ति न जन्म वा महो. ६।१३
 ततो गावोऽजायन्त, वडवेतराऽभवत् बृह. १।४।४
 ततोऽङ्गसंविदं स्वच्छां प्रतिभासमु-
 पागताम् । सद्योजातशिशुज्ञानं
 प्राप्तवान्मुनिपुङ्गवः अ. पू. ३।१५
 ततो जलाद्भयं नास्ति जले मृत्युर्न
 विद्यते १ यो. त. ९०
 ततो जालन्धरो बन्धः कर्मदुःखौ-
 घनाशनः ध्या. वि. ७८
 ततोऽजावयोऽजायन्त, एवमेव यदिदं
 किञ्च मिथुनमापिपीलिकाभ्य-
 स्तत्सर्वमसृजत बृह. १।४।४
 ततो दक्षिणहस्तस्य अङ्गुष्ठेनैव पिङ्ग-
 लाम् । निरुध्य पूरयेद्वायुमिडयातु
 शनैः शनैः १ यो. त. ३६
 ततो दुःखतरं नु किम् भ. गी. २।३६
 ततो दृढतरशुद्धसान्त्विकवासनया
 भक्त्यतिशयो भवति त्रि. म. ना. ५।५
 ततो दृढतरा वैष्णवी भक्तिर्जायते त्रि. म. ना. ५।४
 ततो दृढशरीरः स्यान्मृत्युस्तस्य
 न विद्यते । ब्रह्मणः प्रलयेनापि
 न सीदति महामतिः १ यो. त. १०३
 ततो देवः प्रीतो भवति स्वात्मानं
 दर्शयति [नृ. पू. ४।३६+ रामो. ४।४८
 ततो देवा अभवन् परासुरा.. बृह. १।३।७
 ततो देवास्तमाधिपत्यायानुमेनिरे अव्यक्तो. ८
 ततो देवी स्वात्मानं दर्शयति आथ. द्वि. २
 ततोऽधिकतराभ्यासाद्भूमित्यागश्च
 जायते । पचासनस्थ पचासौ
 भूमिमुत्सृज्य वर्तते १ यो. त. ५४

ततोऽधिकतराभ्यासाद्बलमुत्पद्यते
 बहु । येन भूचरसिद्धिः स्याद्भूच-
 राणां जये क्षमः १ यो. त. ५८
 ततोऽधिकतराभ्यासाद्दार्दुरी स्वेन
 जायते । यथा च दार्दुरो भाव
 उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गच्छति १ यो. त. ५३
 ततो न जपो न माला नासनं न
 ध्यानावाहनादि ग. शो. ता. ५।६
 ततो नवरत्नप्रभामण्डलम् मं. आ. २।३
 ततो निधनपतयेत्रयोविंशज्जुहोति च बृ. जा. ३।१४
 ततो निधनसामान्यादन्तःसामि-
 कानि निधनानि... संहितो. ३।१
 ततो निरात्मकत्वमेति, निरात्मक-
 त्वान्न सुखदुःखभागभवति मैत्रा. ६।२१
 ततो नैकश्चन वेदेति । कतमे त
 इति ह प्रतीकान्युदाजहार बृह. ६।२।३
 ततोऽन्नमभिजायते । अन्नात्प्राणो मनः
 सत्यं लोकाः कर्मसु चामृतम् मुण्ड. १।१।८
 ततोऽन्यद्विभक्तं यच्छृणुयाम् बृह. ४।३।२७
 ततोऽन्यद्विभक्तं यज्जिघ्रेत् बृह. ४।३।२४
 ततोऽन्यद्विभक्तं यद्रसयेत् बृह. ४।३।२५
 ततोऽन्यद्विभक्तं यत्पश्येत् बृह. ४।३।२३
 ततोऽन्यद्विभक्तं यद्वदेत् बृह. ४।३।२६
 ततोऽन्यद्विभक्तं यद्विजानीयात् बृह. ४।३।३०
 ततोऽन्यद्विभक्तं यत्स्पृशेत् बृह. ४।३।२९
 ततोऽन्यद्विभक्तं यन्मन्वीत बृह. ४।३।२८
 ततोऽन्यश्चान्तरःस्वतः (विज्ञानात्मा) कठक. २१
 ततोऽपश्यज्ज्योतिर्मयं श्रिया-
 ऽऽलिङ्गितं सुपर्णस्थं..
 मृगमुखं नरवपुषं... अव्यक्तो. ३
 ततोऽपिधारणाद्वायोः क्रमेणैव शनैः
 शनैः । कम्पो भवति देहस्य.. १ यो. त. ५३
 ततो ब्रह्मोपदिष्टं वै सच्चिदानन्द-
 लक्षणम् । जीवन्मुक्तः सदा
 ध्यायन्नित्यारत्वं विहरिष्यसि शु. र. ३।१७
 ततो ब्राह्मणः संयोगं संयुज्जे, तमा-
 दित्यात्पुरुषो भास्करवर्णो निष्काश्य
 स पतं ब्राह्म्याभ्यकार इतिहा. ९

ततो भवति भारत भ. गी. १४।३
 ततो भवेद्धठावस्था पवनभ्यास-
 तत्परा । प्राणोऽपानो मनो बुद्धि-
 जीवात्मपरमात्मनोः १ यो. त. ६५
 ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां
 रताः । [ईशा. ९ + बृह. ४।४।१०
 ततोभूय इवते तमोय उ संभ्रूत्या रताः ईशा. १२
 ततोऽभ्यासपाटवात् सहस्रशः सदा-
 ऽमृतधारा वर्षति पैङ्गलो. ३।३
 ततो मदपितकर्मणां मदाविष्टचेतसां
 मदपृता भवति भस्मजा. २।१५
 ततो मध्याह्नार्कमण्डलम् (दृश्यते) मं. ब्रा. २।३
 ततो मनुष्या अजायन्त बृह. १।४।३
 ततो मया नचिकेतश्चित्तोऽग्निर-
 नित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम् कठो. २।१०
 ततो (अविद्याशबलब्रह्मतः) महत्,
 महतोऽङ्कारः, अहङ्कारात्पञ्च-
 तन्मात्राणि त्रि.म.ना. २।५
 ततो मात्रा-श्रुतिर्ज्ञेया
 निमित्तेनैव एव च योगो. ३५
 ततोऽमृतत्वमभूत् गोपीचं. ८
 ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा मं. गी. १८।२५
 ततो मे श्रियमावह लोमशां तैत्ति. १।४।१
 पशुभिः सह स्वाहा श्वेता. ३।१०
 ततो यदुत्तरतरं तदरूपमनामयम् ।
 य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे
 दुःखमेवापियन्ति अ. गी. ६।४५
 ततो याति परां गतिम्
 [+ १३।२९ + १६।२२
 ततो यान्त्यवमां गतिम् अ. गी. १६।२०
 ततो युष्मिन् मेवावी..मनः पूर्वं योगो. २।१६
 मनः पूर्वं मनस्वत्समाज लङ्घयेत् अ. गी. २।१८
 ततो युष्माकं युज्यस्व
 ततो योगविद्धमाः समाधि
 धर्मेण प्राहुः पैङ्गलो. ३।३
 ततो योषां जीवायन्ते, लोकान्प्रत्यु-
 त्थायिनस्त एवमेवानु परिवर्तन्ते बृह. ६।२।१६
 ततो योऽस्य भर्ताऽस्य रतं
 सन्निवृत्त्यादि... कौ. उ. ६।७

ततो रक्तोत्पलाभासं पुरुषायतनं
 महत् । तत्र सञ्चारयेत्प्राणा-
 नूर्णनाभीव तन्नुना क्षुरिको. १०
 ततो रहस्युपाविष्टः प्रणवं कुत-
 मात्रया ।... जपेत्पूर्वाजिता-
 नां तु पापानां नाशहेतवे १ यो. त. ६३
 ततो रात्रिरजायत (रात्र्यजायत) महाना. ६।१
 [क्र.अ. ८।८।४८ = मं. १०।१९०।१
 [+ तै. आ. १०।१।१३
 ततो वक्ष्यामि ते हितम् अ. गी. १८।६४
 ततो बह्विशिखामण्डलं क्रमादृश्यते मं. ब्रा. २।३
 ततो वायुस्थैर्यम् । तच्चिह्नानि-
 आदौ तारवदृश्यते, ततो वज्र-
 दर्पणम्.. मं. ब्रा. २।३
 ततो विज्ञान आत्मा तु ततोऽन्यश्चा-
 न्तरः स्वतः । आनन्दमय आत्मा तु
 ततोऽन्यश्चान्तरः स्थितः कठो. २।१
 ततो विलीनपाशोऽसौ विमलः कमला-
 प्रभुः । तेनैव ब्रह्मभावेन ना. वि. २०
 परमानन्दमभुते गो. पू. ४।३
 ततो विशुद्धं विमलं विशोकमशेष-
 लोभादिनिरस्तसङ्गम् । यत्त-
 त्पदं.. तदेव स वासुदेवो.. त्रि.म.ना. ४।४
 ततो विष्वक् (श्व) व्यक्रामत् मं. १०।९०।४
 [पु.सु. क्र.अ. ८।४।१७ = चिन्त्यु. १२।२
 [बा.सं. ३।१।४ +
 ततो वै खलु दुर्निष्पतनं यो यो
 ह्यज्ञमस्ति यो रेतः सिञ्चति
 तदूय एव भवति (मा.पा.) छां. उ. ५।१०।६
 ततो वै गृहीतायां शक्त्यां ब्रह्मणः
 सृष्टिरजायत ग. शो. ३।११
 ततो वै ध्यानस्थिता अभू-
 वन् (देवाः) ग. शो. ३।६
 ततो वै परस्परमसहमानाश्चोर्ध्व
 जग्मुः (देवत्रयम्) ग. शो. ४।६
 ततो वै भूतेभ्यश्चतुर्दश लोका
 जायेरन् ग. शो. ४।५
 ततो वैराग्यमुदेति (भक्त्या) त्रि.म.ना. ५।४
 ततो वै सत्त्वं (विष्णुः) तामा-
 दाव जगत्पाति स्व ग. शो. ३।१५

ततो वै सदजायत तैत्ति. २।७
 ततो वै सृष्टिमचीकरत् (ब्रह्मा) ग.शो. ३।६
 ततो वै सोऽहमभूत् । नैकाकिता-
 त्युक्तेति गुणान् निर्मेमे ग.शो. ३।४
 ततो व्यैच्छत् व्येवास्मा उच्छति अव्यक्तो. ६
 ततोऽश्वः समभवत्, यदश्वत्तन्मेध्यम-
 भूत्, तदेवाश्वमेधस्याश्वमेधत्वम् बृह. १।२।७
 ततोऽसंसृक्तिनामिका (ज्ञानभूमिः) महो. ५।२५
 ततोऽसौ सन्नियोगेन निरालम्बो
 भवेद्यदि । तदा समरसीभूतः
 परमानन्द एव सः अमन. २।९५
 ततो ह बालिशो ऊचुरवात्त वा
 संवत्सरमिमे ब्राह्मणाः छाग. ५।१
 ततो ह वै तद्रेतस्तदिमाः प्रजाः प्रजायन्ते प्रश्नो. १।१४
 ततो ह वै ते देवा रुद्रमपृच्छन्,
 ते देवा रुद्रमपश्यन् अ.शिरः. ११
 ततो ह वै विदाश्चकार ब्रह्मेति (मा.पा.) केनो. ४।१
 ततोऽहं नामाऽभवत् तस्मादप्येतर्ह्या-
 मन्त्रितोऽहमयमित्युक्त्वाऽथा-
 न्यज्ञाम प्रब्रते बृह. १।४।१
 ततो हासुराः पुनरेवोदयन्ति, ते ह
 माध्यन्दिनस्यव सवनस्य
 पवमानेषु यज्ञवास्त्वभवन् शौनको. ३।१
 ततो हासुराः पराभवन् [शौनको. २।४+ ३।४
 ततो हिरण्यगर्भोऽजायत, तस्माद्दश
 प्रजापतयो मरीच्यादयः...अजायन्त सङ्कर्षणो. १
 ततो हृदयस्थिताः कामाः सर्वे विन-
 हयन्ति तस्माद्हृदयपुण्डरीक-
 कर्णिकायां परमात्मा विर्भावो भवति त्रि. म.ना. ५।४
 ततो हेंद्रोऽपश्यत्, स ह गायत्रीमेव
 प्रतिसन्दिदेश शौनको. १।२
 ततो ह वै विदाश्चकार ब्रह्मेति (इन्द्रः) केनो. ४।१
 तत्कथमिति अज्ञानप्राबल्यात् त्रि.म.ना. ५।३
 तत्कर्म कृत्वा विनिवर्त्य भूय-
 स्तत्त्वस्य तत्त्वेन समेत्य योगम् ।
 एकेन ब्रह्म्या त्रिमिरष्टभिर्वा..
 आत्मगुणैश्च ब्रह्मै । आरभ्य कर्माणि श्वेता. ६।३

तत्कर्मणा करोति [बृहज्जा. १।१+ नृ.पू. १।१
 तत्कारणशरीरम् (आनन्दमयकोशः) पैङ्गलो. २।५
 तत्कारणं साङ्ख्ययोगाधिगम्यं ज्ञात्वा
 देवं (देवी) मुच्यते सर्वपाशैः श्वेता. ६।१३
 [गुह्यका. ७१+ भवसं. २।४८
 तर्त्तिक कर्मणि घोरे मां भ.गी. ३।१
 तत्कुरुष्व मदर्पणम् भ.गी. ९।२७
 तत्केन कमभिवदेत्, तत्केन कं
 मन्वीत, तत्केन कं विजानीयात्
 येनेदं सर्वं विजानाति, तं
 केन विजानीयाद्विज्ञातारम्.. बृह. २।४।१४
 तत्केन कं जिघ्रेत्.. तत्कं विजानी-
 यात्, येनेदं सर्वं विजानाति, तं
 केन विजानीयाद्विज्ञातारम्.. बृह. २।४।१४
 तत्केन कं पश्येत्तत्केन कं
 जिघ्रेत्तत्केन कं रसयेत्... बृह. ४।५।१५
 तत्केन कं मन्वीत बृह. २।४।१४
 तत्केन कं विजानीयात्, येनेदं
 सर्वं विजानाति तं केन
 विजानीयाद्विज्ञातारम्.. बृह. ४।५।१५
 तत्केन कं स्पृशेत्तत्केन कं विजानी-
 यात्... बृह. ४।५।१५
 तत्केवल्यपदं विदुः अ. पू. ५।१५
 तत्तत्कार्यकारणभेदरूपेणांशतस्त्व-
 वाचक-वाच्य-स्थानभेद-विषय-
 देवताकोशभेद-विभागा भवन्ति त्रि. प्रा. १।२
 तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् भ. गी. १।१४२
 तत्क्षेत्रं यच्च यादृक् च भ. गी. १।३।४
 तत्तज्जन्तुष्वनौ चित्तसंयमात्सर्व-
 जन्तुरुतज्ञानं भवति शाण्डि. १।७।५२
 तत्तदेवावगच्छ त्वम् भ. गी. १०।४१
 तत्तदेवेतरो जनः भ. गी. ३।२१
 तत्तत्पदविरक्तस्य....आनन्दः
 स्वयं भाति कठ. क. ३३
 तत्तत्प्राधान्येन तत्तत्पददेशः,
 वस्तुतस्त्वभेद एव त्रि.म.ना. १।४
 तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् भ. गी. २।५७

तत्त्वस्थाने (चित्तस्थ) संयमा-

तत्त्वसिद्धयो भवन्ति

शांडि. १।७।५२

तत्त्वदरश्च (तदरश्च) वै ण्यश्चार्णवो

ब्रह्मलोके तृतीयस्यामितो दिवि

तदैरं मदीयं सरस्तदश्चस्थः

छां. उ. ८।५।३

तत्त्वदेवताग्रहान्वितैः श्रोत्रादि-

ज्ञानेन्द्रियैः.. जाग्रदवस्था भवति

पैङ्गलो. २।७

तत्त्वब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नः शुद्ध-

मानसः प्राणसन्धारणार्थ.. भैक्ष्य-

माचरन्.. स परमहंसो नाम

जाबा. ६

तत्त्वद्रूपमनुप्राप्य

....

तत्त्वचित्तव्यापारभेदेन पृथगाचारभेदः

ना.प. ५।१२

तत्त्वमः खल्वीरितं तमसः संप्रास्रवति

मैत्रा. ५।५

तत्त्वस्माद्यज्ञोपवीत्येवाधीयीत,

याजयेद्यजेत वा

सहवै. १

तत्त्वस्यैतत्ते यदसावादित्य ओमित्ये-

तदक्षरस्य चैतत्तस्मादोमित्यने-

नैतदुपासीत

मैत्रा. ५।४

तत्त्वामसमुदाहृतम्

भ.गी. १।७।१९,

[२२+

१।८।२२, ३९

तत्त्वारकं द्विविधं-पूर्वार्धतारकमुत्तरा-

र्धममनस्कं चेति

अद्वयता. ४

तत्त्वारकं द्विविधं मूर्तिवारकममूर्ति-

वारकं चेति

अद्वयता. ५

तत्त्वोपवीतचित्तमात्रं स्वमात्रं

चिन्तयेत्सहम्

तुरीया. शीर्षकं

तत्त्वप्यति तस्यानुवृत्तिं तृप्यति प्रजया

पशुभिरन्नाद्येन तेजसा ब्रह्म-

वर्चसेनेति (मा.पा.)

छां.उ. ५।२०।२

तत्त्वे कर्म प्रवक्ष्यामि

भ.गी. ४।१६

तत्त्वेज आत्मचैतन्यरूपं बलमवष्टभ्य

गुणैरिह्यं सम्पाद्य.. चिन्तयन्

मसेत्

नृसिंहो. ३।४

तत्त्वेज आचक्ष्व अन्त्येति तत्रैत-

देव शुद्धमुत्पतितं सोम्य

विजानीहि

छान्दो. ६।८।५

तत्त्वेज ऐश्वर्य बहु स्यां प्रजायेयेति

छान्दो. ६।२।३

तत्त्वो विद्धि मामकम्

भ.गी. १५।१२

तत्त्वोऽप्युजत, तत्त्वेज ऐश्वर्य बहुस्यां..

छान्दो. ६।२।३

तत्त्वे पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये

भ. गी. ८।११

तत्त्वे पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्

कठो. २।१५

तत्त्वयोदशं प्राणं मनो विज्ञानमिति

विज्ञाय तं तपसा द्वादश द्वाद-

शानन्द इति सैषा दशान्नं न ज्ञियात्

तैत्ति. ३।११

तत्त्वैपदं ब्रह्मतत्त्वं स्वमात्रमवशिष्यते

यो. शि. शीर्ष.

तत्त्वग्रामोपायसिद्धं परतत्त्वस्वरूपकम् ।

शारीरोपनिषद्वेद्यं श्रीरामब्रह्ममेव गतिः शारी. शीर्ष.

तत्त्वचाऽजिघृक्षत्, तन्नाशकोत्त्वचा

ग्रहीतुम्, स यद्वैनं तत्त्वचाऽग्रहीष्यत् २ ऐत. ३।७

तत्त्वज्ञानं गुहायां निविष्टमज्ञानिकृतं

मार्गं सुष्ठु वदन्ति

स्वसंवे. ३

तत्त्वज्ञानं मनोनाशो वासनाक्षय

एव च । मिथः कारणतां गत्वा

अ.पू. ४।८१

तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्

भ.गी. १३।१२

तत्त्वज्ञानोदयादूर्ध्वं प्रारब्धं नैव विद्यते

ना. बि. २२

तत्त्वतश्च शिवः साक्षाच्चिज्जीवश्च

स्वतः सदा । चिच्छिदाकारतो

भिन्ना न भिन्ना चित्त्वहानितः

रुद्रह. ४४

तत्त्वतस्त्वेक एव सत्त्यासः, अज्ञानेना-

शक्तिवशात् कर्मलोपश्च..

चातुर्विध्यमुपागतः

ना.प. ५।२

तत्त्वतो जायते यस्य जातं तस्य

हि जायते

अद्वैत. २७

तत्त्वतो भिद्यमाने हि मर्त्यतामनृतं

ब्रजेत्

अद्वैत. १९

तत्त्वदृष्ट्या तु नास्त्येव तत्त्वमेवास्ति

केवलम् । व्यावहारिकदृष्टिस्तु

पा. ब्र. २४

तत्त्वप्रदीपप्रकाशं स्वात्मानं पश्यन्

योगी मत्सायुज्यमवाप्नोति

वासुदे. ५

तत्त्वब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नः शुद्ध-

मानसः प्राणसन्धारणार्थ.. विमुक्तो

भैक्षमाचरन्.. सत्त्यासेन देहत्यागं

करोति स परमहंसो नाम

याज्ञव. ३

तत्त्वब्रह्ममार्गे सम्यक् सम्पन्नः....

याचिताहारमाहरन्.. समो भूत्वा

निर्ममः.. सत्त्यासेनैव देहत्यागं

करोति स कुतकृत्यो भवति

ना.प. ३।८७

तत्त्वत्रयस्य विज्ञानं... स्वधर्माचरणं
..मन्त्रार्थचिन्तनं श्रवणं कीर्तनम् ।

एते ते कथिता राजन्पारमैकान्त्य-

सिद्धिदाः

भवसं. ५।१८

तत्त्वमसि श्वेतकेतो [छान्दो. ६।८।७+ ६।९।४

—६।१४।३+शु.र. २।२।३+

पैङ्गलो. ३।१

तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि, सर्वं खल्विदं
ब्रह्म, नेह नानास्ति किञ्चनेत्यादि
महावाक्यार्थानुभवज्ञानाद्ब्रह्मै-

वाहमस्मीति...

निरा. ३।१

तत्त्वमसि... अहं ब्रह्मास्मीत्यनु-

सन्धानं कुर्यात्

पैङ्गलो. ३।१

‘तत्त्वमसि’ इत्यादिवाक्यविचारः

मठाम्ना. ३

तत्त्वमसीत्यभेदवाचकं ये जपन्ति

ते शिवसायुज्यमुक्तिभाजो

भवन्ति

शु.र. ३।५

तत्त्वमसीत्यहं ब्रह्मास्मीति वाक्यार्थ-

विचारः श्रयणं...

पैङ्गलो. ३।२

तत्त्वमसीत्यपदेशेन त्वमेवाहमहमेवं

त्वमिति तारक... कृतार्थो

भवति

मं. ब्रा. ३।२

तत्त्वमसीत्येवं सम्भाष्यते । अयमात्मा

ब्रह्मेति वा..

बह्वचो. ४

तत्त्वमस्यादिवाक्यं तु केवलं

मुक्तिदं यतः

रामर. ५।१५

तत्त्वमस्यादिवाक्यानि ब्रह्मणैकतं जगुः

तत्त्वमात्मस्थमज्ञात्वा मूढः

पैङ्गलो. २।६

शाब्देषु मुह्यति

अमन. २।१८

तत्त्वमाध्यात्मिकं दृष्ट्वा तत्त्वं दृष्ट्वा तु

बाह्यतः । तत्त्वमीभूतस्तदा रामस्त-

त्त्वादप्रच्युतो भवेत्

वैतथ्य. ३९

तत्त्वमार्गे यथा दीपो दृश्यते

पुरुषोत्तमः

२ यो. त. २

तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्

भ. गी. १८।१

तत्त्वमितु महाबाहो

भ. गी. ३।१८

तत्त्वस्य तत्त्वेन समेत्य योगम् ।

श्वेता. ६।३

तत्त्वं पृथगुपायूषु, सत्यधर्माद्यदृष्टये ।

पूतैकैकं यम... [विज्ञा. १।५+

बृह. ५।१५।१

तत्त्वं तत्सहजस्वभावममलं तेजो-

ऽमनस्के ध्रुवम्

अमन. २।७६

तत्त्वं नारायणः परः ।.. यच्च किञ्चि-

जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि

वा । अंतर्बहिश्च तत्सर्वव्याप्य

नारायणः स्थितः

महात्मा. ९।४

तत्त्वानीति च तद्विदः

वैतथ्य. २०

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा

शास्ते... [वनदु. ४३, ५६, ६८, ७९

[=मं. १।२४।१५+वा. सं. १८।४९+ क. अ. १।२।१५

[तै. सं. २।१।११।६+ तै. आ. २।३।१

तत्त्वावबोध एवासौ वासनातुण-

पावकः । प्रोक्तः समाधियोगेन

न तु तूष्णीमवस्थितिः

महो. ४।१२

तत्त्वाविचारपाशेन बद्धं ह्रैतभया-

तुरम् । उज्जीवयन्निजानन्दे

स्वस्वरूपेण संस्थितः

द. मू. २०

तत्त्वमीभूतस्तदा रामस्तत्त्वा-

दप्रच्युतो भवेत्

वैतथ्य. ३९

तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते

तत्त्वेव भयं विदुषो भवति

भ. गी. ९।२४

तत्पतित्वात्पशुपतिः

तैत्ति. २।७

तत्परमरहस्यशिवतत्त्वज्ञानं (शिव-

साक्षात्करणं)

द. मू. २

तत्परमित्यक्षरं गुह्यम् (ओमित्यक्षरं)

सन्ध्यो. २०

तत्परमित्याह, यमेतेनाप्रवन्ति

ग. शो. ३।२

तत्परं ज्योतिरोमिति [यो. शि. ६।५६

तत्परं नापरं त्यजति । तदैव कपा-

+यो. चू. ८५

लाष्टकं सन्धाय य एष स्तनइवा-

वलम्बते सेन्द्रयोनिः

परब्र. २

तत्परं यच्चित्तं परमात्मानमानन्दयति

परब्र. २

तत्परः परमात्मा च श्रीरामः

पुरुषोत्तमः

तारसा. २।५

तत्परः संयतेन्द्रियः

भ. गी. ४।३९

तत्पारेणममानमभूत् (ब्रह्माण्डं)

ततः परमेष्ठी व्यजायत

अव्यक्तो. १

तत्परिभाषया कामः ककारं व्याप्नोति ।

काम एवेदं तत्तदितिककारौगृह्यते

त्रि. वा. १।५

तत्परेणप्रेरितं त्रिषमत्त्वं प्रयाति (तमः)

मैत्रा. ५।५

तत्पर्ये कर्मज्ञानमयीभिर्बहु-

शाखा भवन्ति

सीतो. ११

तत्पश्चात्तत्परेणेरितं विषमत्वं प्रयाति

मैत्रा. ५।५

तत्पार्थ्यं (मनसः) संयमान्नि-

ऋतिलोकज्ञानम्

शांडि. १।७।५२

तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे

चित्त्यु. १।३१

तत्पुरुषं पुरुषो निवेश्य नास्य

प्रजा संवत्सरा जायन्ते

महो. १।२

तत्पुरुषाद्वायुः, तस्माच्छान्तिः, तस्याः

श्वेतवर्णा सुशीला (गौः), तस्याः

गोमयेन क्षारं जातम्

बृ.जा. १।६

तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय

धीमहि । तन्नो नन्दिः प्रचोदयात्

महाना. ३।४

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।

तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् [महाना.

३।२+१०।७

तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय.. तन्नः

षण्मुखः प्रचोदयात् [महाना. ३।५+

वनदु. १३३

तत्पुरुषस्य विद्महे सहस्राक्षस्य महा-

देवस्य धीमहि । तन्नो रुद्रः

प्रचोदयात्

महाना. ३।१

तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय.. तन्नो

गरुडः.. [महाना. ३।६+

वनदु. १३४

तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि ।

तन्नो दन्ति (दन्तिः) प्रचोदयात्

महाना. ३।३+

[वनदु. १३२+

ग.शो. २।१

तत्पुरुषो नादः, बिन्दुरीशानः,

(ओङ्कारस्य)

ना.पू.ता. १।३

तत्पुरुषोऽमानवः स एनान्ब्रह्म

गमयति

छान्दो. ५।१०।२

तत्पूजनं (मानसं) मोक्षफलप्रदम्

मं.ब्रा. १।४

तत्पृथ्वीमण्डले क्षीणे बलिरायाति

देहिनाम् । तद्ददापो गणापाये

देशाः स्युः पाण्डुराः क्रमात्

वराहो. ५।४

तत्पृथ्वी विदले समन्तान्यस्ता सुधा

मानवहृदयपृष्ठया..

१ बिल्वो. ५

तत्प्रज्ञानेन प्रज्ञाने प्रतिष्ठितं, प्रज्ञा-

नेत्री लोकः, प्रज्ञा प्रतिष्ठा,

प्रज्ञानं ब्रह्म

२ ऐत. ५।३

तत्प्रतिबिम्बितं यत्तत्साक्षि चैतन्य-

मासीत्

पैङ्गलो. १।२

तत्प्रतिबिम्बितं यत्तदीश्वरचैतन्यमासीत्

पैङ्गलो. १।२

तत्प्रतिबिम्बितं यत्तद्विराट्चैतन्यमासीत्

पैङ्गलो. १।२

तत्प्रतिबिम्बितं यत्तद्विरण्यगर्भचैतन्य-

मासीत्

पैङ्गलो. १।३

तत्प्रतिष्ठेत्युपासीत्

तैत्ति. ३।१०।३

तत्प्रथमावरणे पश्चिमे सम्मुखे स्वर्ग-

मण्डपे देवकन्या

राधोप. २।१

तत्प्रमार्जनमात्रं तु मोक्षइत्यभिधीयते

अ.पू. ४।५६

तत्प्रसादात्परां शान्तिं

भ.गी. १।८।६२

तत्प्राणेनाजिघृक्षत् तन्नाशकनोत्

प्राणेन प्रहीतुम्

२ ऐत. ३।४

तत्प्राणेषूत्क्रान्तेषु शरीरं श्रयितुमधियत्

बृह. १।२।६

तत्प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्नमथोमनः

अ.शिरः. ३।१४

तत्प्राप्तिहेतुज्ञानं च कर्म चोक्तं...

भवसं. १।३२

तत्र का परिदेवना

भ. गी. २।२८

तत्फलश्रुतिरितितत्स्योर्ध्वकिं वदामेति

बृ. जा. १।४

तत्र को मोहः कः शोकः, एकत्व-

मनुपश्यतः

[ईशा. ७+

ना. प. ९।१३

तत्र चक्रं द्वादशारं तेषु विष्णवादि-

मूर्तेयः । अहं तत्र स्थितिश्चक्रं

भ्रामयामि स्वमायया

त्रि.ब्रा. ६०

तत्र चत्वारः—अकारश्चायुतावयवा-

न्वितः, उकारः सहस्रावयवा-

न्वितः, मकारः शतावयवोपेतो-

ऽर्धमात्राप्रणवोऽनन्तावयवाकारः

ना.प. ८।३

तत्र चान्द्रमसं ज्योतिः

भ.गी. ८।२५

तत्र तत्र परं ब्रह्म सर्वत्र समवस्थितम्

पैङ्गलो. ४।५२

तत्र तमोनिवृत्तिः (कुण्डलिन्यां

नाड्यां) तद्दर्शनात् सर्वपाप-

निवृत्तिः

मं.ब्रा. १।२

तत्र (अविद्याण्डे) तत्त्वतो

गुणातीतशुद्धसत्त्वमयो लीला-

गृहीतः.. मायोपाधिको

नारायण आसीत्

त्रि.म.ना. २।५

तत्र तं बुद्धिसंयोगं

भ.गी. ६।४३

तत्र तां कचस्तदृक्षां मण्डलं स

कर्चा लोकः

महाना. १०।१

तत्र तिष्ठेत्प्रतीक्षस्तदुरोगमनं क्रमात् ।	शिवो. ७।३५
तत्र तेऽपृथग्धर्मिणोऽपृथग्विवेक्याः	मैत्रा. ६।२२
तत्र त्रयीमयं शास्त्रमाद्यं सर्वार्थ- दर्शनम् । ऋग्यजुस्सामरूपत्वात् त्रयीति परिकीर्तिता	सीतो. १२
तत्र दश यमाः तथा (१०) नियमाः, आसनान्यष्टौ	शांडि. १।१।२
तत्र दीपप्रकाशं स्वमात्मानं परं ब्रह्मैवाहमस्मीति भावयन् योगी मत्सायुज्यमवाप्नोति	गोपीचं. ४
तत्र देवता मार्ताण्डादिभान्वा- दित्य-हंस-सूर्य-दिवाकर- तपन-भास्कराः... छिन्ताः	सूर्यता. ५।१
तत्र देवास्त्रयः प्रोक्ता लोका वेदास्त्रयोऽग्रयः । तिस्रो सात्रार्धमात्रा च त्र्यक्षरस्य शिवस्य च [ब्र.वि. ३+	१ प्रणवो. ३
तत्र (सथुरायां) द्वादशादित्या एकादश रुद्रा अष्टौ वसवः.. चतुर्विंशतिर्भवन्ति	गोपालो. १।१७
तत्र (नाभौ) द्वादशारयुतं चक्रं, तच्चक्रमध्ये पापपुण्यप्रचोदितो जीवो भ्रमति	शांडि. १।४।४
तत्र (ऊर्ध्व) न किञ्चिद्दृष्टुः (त्रयो देवाः) ततश्चाधः प्रदेशे..	ग.शो. ४।६
तत्र नाडी सुषुम्ना तु नाडीभि- र्बहुभिर्वृता ।. शुक्लां नाडीं समाश्रयेत्	क्षुरिको. ८
तत्र नाड्यः समुत्पन्नाः सहस्राणि द्विसप्ततिः । तत्र नाडीसहस्रेषु..	ध्या.त्रि. ५१
तत्र परमहंसा नाम संवर्तकारुणि- श्चतकेतुदुर्वास.. प्रभृतयो- ऽव्यक्तलिङ्गाः.. सर्व.. परित्यज्यात्मानमन्विच्छेत्	जावा. ६
तत्र (हृत्पञ्जे) पश्येत्परात्मानं वायुदेवमकल्पमथ	त्रि.भा.२।१००

तत्र पारोक्ष्यशबलः सर्वज्ञत्वादि- लक्षणोमायोपाधिःसच्चिदानन्द- लक्षणो जगद्योनिः	पैङ्गलो. ३।१
तत्र पूज्यपदार्थोक्तिपरिभाषा- समन्वितः (भगवच्छब्दः)	भवसं. २।५१
तत्र (अप्सु) पूर्णानन्दमयः श्रीकेशोर- कृष्णः...गौरोचनातिलको महाविष्णुः (आस्ते)	राधोप. ३।१
तत्र प्रजापतिर्वायुर्भूत्वाश्राम्यतेदं सृजेयमिति	२गोपीचं. २७
तत्र प्रथमो मत्स्यावतारः, द्वितीयः कूर्मः, तृतीयो वराहः..नारसिंहः, ..वामनः..परशुरामः..रामः, कृष्णः..बौद्धः..कल्किः	ना.पू. ता. ५।२ भ. गी. ८।२४ भस्मजा. २।९
तत्र प्रयाता गच्छन्ति तत्र प्राच्यामैश्वर्यस्थानं (शिवस्य) तत्र बुद्ध्यादीनि स्वादूनि भवन्ति । अध्यवसायसङ्कल्पाभिमानाः.. पञ्च स्वादूनि..	मैत्रा. ६।१०
तत्र ब्रह्मचारिणश्चतुर्विधा भवन्ति- गायत्रो ब्राह्मणः प्राजापत्यो बृहन्निति	आश्रमो. १ +चतुर्वे. १
तत्र ब्रह्माचतुर्मुखोऽजायत [महो. १।४ तत्र भवत्यः (भ्रुतयः) सर्वलोकैः कृष्णसौन्दर्यं क्रीडाभोगा गोपिका स्वरूपैः.. कृष्णं भजिष्यथ	गोपीचं. २७
तत्र मध्यमपाद्प्रदेशेऽमिततेजः- प्रवाहाकारतयानित्यवैकुण्ठविभाति	त्रि.म.ना. १।४
तत्र महर्षयः परिदेवयाश्चक्रिरे महच्छोकभयं प्राप्ताः स्मो न चैतत्सर्वं समभिहितं ते वयं भगवन्तमेवोपधावाम	२ प्रणवो. १९
तत्र मृत्क्षां (मृदं) श्वेतां 'उद्धृतासि' इत्युद्धरेत् [कात्याय. १+	नारदो. १
तत्र यद्रक्तं तत्पुंसो रूपमभूत् । यद्हरितं तन्मायायाः	अव्यक्तो. १
तत्र (हृत्पञ्चौ) यत्प्रकाशते चैतन्यं स क्षेत्रज्ञ इत्युच्यते	सर्वसा. ७५

तत्र योगरताः केचिन्नैव जानन्ति
तारकम् । केचिद्विद्वानविमोहिताः ।

जपेन केचिद्विद्वयन्ति नैव
जानन्ति तारकम्

अमन. ११४

तत्र योनिं कृण्वते न हि ते
पूर्वमक्षिपत्

श्वेताश्व. २।७

तत्र रक्षांसिपैशाचानचविद्वेष्टियोनरः

इतिहा. ६२

तत्र लोका वेदाः शास्त्राणि पुराणानि
..व्योतीषि शिवशक्तियोगादित्येवं

घटना व्यापठयते

त्रि. ता. ११४

तत्र वधाशङ्क भवति यां दिशमेति
प्राणस्यैव सम्राट् कामाय

बृह. ४।१।३

तत्र विश्व एव जाग्रद्व्यवहारलोपा-
न्नाडिमध्यं चरंस्तैजसत्त्व-

मवाप्य...स्वभासा भासयन्
यथेष्टितं स्वयं भुङ्क्ते

पङ्कलो. २।७

तत्र (मते) वेदान्तश्रवणं कुर्वन्
योगं समारभेत्

शांडि. १।५।१

तत्र वैखानसा अकृष्टपक्षौषधि-
वनस्पतिभिः..अग्निपरिचरणं

कृत्वा..आत्मानं प्रार्थयन्ते

आश्रमो. ३

तत्र श्रीविजयो भूतिः

भ. गी. १८।७८

तत्र (नाड्यां) सञ्चारयेत्प्राणा-
नूर्णनाभीव तन्नुना

छुरिको. ९

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्

भ. गी. १४।७

तत्र संलीयते संविन्निर्विकल्पं च

तिष्ठति । भूयो न वर्तते दुःखे

तत्र लब्धपदः पुमान्

अ. पू. ४।६९

तत्र सुषुम्णा विधधारिणी

मोक्षमार्गेति चाचक्षते

शांडि. १।४।६

तत्र सूर्योऽग्निर्नाम सूर्यमण्डलाकृतिः

अद्वैतविमर्शवृत्त एकत्रवि-

भूत्वा ब्रूयन्ति तिष्ठति

प्रा. हो. २।४

तत्र स्थिते मनसि चक्षुर्मध्यगतनील-

ज्योतिरप्यव्यति । एवं हृदयेऽपि

मं. ब्रा. १।३

तत्र स्थिते मनसि चक्षुर्मध्यगत-

ज्योतिःस्थलं विलोक्यान्तर्दृष्ट्या

निरतिशयं सुखं प्राप्नोति

अद्वयता. २

तत्र (रावाकुण्डे) स्नात्वा राधाङ्गं भवति

राधोप. २।१

तत्र ह कुरुपाञ्चालानां ब्राह्मणा

अभिसमेता बभूवुः

बृह. ३।१।१

तत्र हि रामस्य राममूर्तिः प्रद्युम्नस्य

प्रद्युम्नमूर्तिः..वनेष्वेवं.. द्वादशमू-

र्तयो भवन्ति

गोपालो. १।१९

तत्राज्यस्य पर्णमयी जुहूर्भवति

भस्मजा. १।२

तत्रादौ हरिसंस्काराः कर्तव्या

मोक्षकाक्षिणाम् । अयमेव

परोधर्मः प्रधानं सर्वकर्मणाम्

भवसं. २।६७

तत्राद्यस्तनमेकं पादमविद्याशबलं भवति

त्रि. म. ना. १।४

तत्रान्योऽन्यत्पश्येदन्योऽन्यज्जिघ्रेत्

बृह. ४।१।३१

तत्रापरा तु विद्यैषा ऋग्वेदो यजु-

रेव च ।..निरुक्तं छन्द एव च

रुद्रह. २८

तत्रापश्यत् स्थितान् पार्थः

भ. गी. १।२६

तत्रापश्यन्महामायां.. पर्यङ्कस्थां

परिचरन्तीमादिदेवं...

लक्ष्म्यु. २

तत्रापि दहं गगनं विशोकस्तस्मिन्य-

दन्तस्तदुपासितव्यम्

महाना. ८।१६

तत्रापि साध्यः पवनस्य नाशः षडङ्ग-

योगादिनिषेवणेन

अमन. २।२८

तत्राप्यविमुक्तमभ्यर्हितम्

भस्मजा. २।८

तत्राश्रुबिन्दवो जाता महारुद्राक्ष-

वृक्षकाः । स्थावरत्वमनुप्राप्य

भक्तानुमङ्कारणात्

क. जा. व. ३

तत्राष्टदलेसरमध्ये मणिपीठे

सप्तावरणकम्

राधोप. १।४

तत्रास्य यथाकामचारो भवति

छां. उ. ७।१।५

[+७२।२+—७।७।१।२

तत्राहमासीनः (शिवः रत्नवेदिकायां)

...तारकं शैवं मनुमुपदिशामि

भस्मजा. २।१५

तत्रैकनाशादपरप्रवृत्तिर्विध्वस्तयोर्मोक्ष-

पदस्य सिद्धिः

अमन. २।२८

तत्रैकमात्मनो नवांशकं सचारकविधम् मैत्रा. ६।१४

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं

भ. गी. ११।१३

तत्रैकामं मनः कृत्वा

भ. गी. ६।१२

तत्रैतच्छुद्धमुत्पतितं सोम्य विजानीहि छान्दो. ६।८।३

तत्रैतदेव शुद्धमुत्पतितं सोम्य

विजानीहि

छान्दो. ६।८।५

तत्रैता देवता आवाह्य द्वादशावर-
 गानि कुर्यात् सूर्यता. ५।१
 तत्रैव मुक्त्यर्थमुपदिश्यते शैवोऽयं
 मन्त्रः पञ्चाक्षरः भस्मजा. २।१५
 तत्रैव श्वानो गर्दभा मार्जाराः क्रुमयश्च
 मत्त एव, न श्वानगर्दभौ.. स्वसंवे. ३
 तत्रैव सति कर्तारं भ.गी. १८।१६
 तत्रैवाव्यक्तसंज्ञकम् भ.गी. १।१८
 तत्रोद्भूतनास्तारे वोष्यमाणानु-
 मोपविवेश छान्दो. १।१०।८
 तत्रोन्मदाभिः कान्ताभिर्भोजनै-
 र्भोगसञ्चयैः । जनको लाल-
 यामास शुक्रं.. महो. २।२५
 अथ) तत्रोमिति शब्दोऽनेनो-
 र्व्यमुक्तान्तोऽशब्दे निधनमेति
 तत्सगुणनिर्गुणस्वरूपम् ,
 तद्वैत्ता विमुक्तः मं. ब्रा. २।१
 तत्सङ्कल्पानुसारिणी विविधानन्त-
 महाभाया शक्तिसंसेवितानन्त-
 महाभाया... महाविष्णोः.. एतां
 महाभायां तरन्त्येव ये विष्णुमेव
 अजन्ति, नान्ये तरन्ति त्रि.म.ना. ४।९
 तत्सत्कुलप्रसूतः पितृमातृविधेयः
 पितृसमीपादन्यत्र.. सद्गुरुमा-
 साद्य.. विवाह्य...ततः.. वनस्थो
 मूत्वा.. सङ्ग्यस्तुमर्हति ना. प. २।१
 तत्सत्यमित्याचक्षते तैत्ति. २।६
 (यत्र) तत्सत्यस्य परमं निधानम् मुण्ड. ३।१।६
 तत्सत्यं तत्परं पदम् १यो.त. १३६
 तत्सत्यं स आत्मा छान्दो. ६।८।७
 [+ ६।९।४ - ६।९।३
 तत्सत्यावृते मिथुनीकरोति ।
 तथौमिथुनात्प्रजायते, भूयान्भवति १येत. ३।६।६
 तत्सत्त्वमेवेरितं तत्सत्त्वात्सम्प्राप्तवत् भैत्रा. ५।५
 (ईं) तत्सत्त्वमुवः सुवस्तत्त्वै
 प्रणात्मनो जनीनमः गोपालो. ३।९

तत् (शैवं व्रतं) समाचरेन्मुमु-
 क्षुर्नपुनर्भवाय जाबाल्यु. ७
 तत्समासेन मे शृणु भ.गी. १३।४
 तत्सर्वगतो नहीदं सर्वम् (आत्मा) नृसिंहो. ५।१
 तत्सदाऽऽसीत्तत्समभवत् तदाण्डं
 निरवर्तत छान्दो. ३।१९।१
 तत्सर्वमित्याचक्षते (गाणेशं ब्रह्म) ग.शो. ३।१, १
 तत्सर्वं भूतं भव्यं यत्किञ्चिद्दृश्य-
 मानं स्थावरजङ्गमं तत्सर्वं कालि-
 कातंत्रे ओतं प्रोतं वेद कालिको. ३
 तत्सवितुरिति पूर्वेणाध्वना सूर्या-
 ध्वन्द्रिकां व्यालिख्य.. त्रि.ता. १।११
 तत्सवितुर्वरेण्यमित्यसौ वा
 आदित्यः सविता मैत्रा. ६।७
 तत्सवितुर्वरेण्यमित्यादिद्वात्रि-
 शदक्षरीं पठित्वा तदिति
 परमात्मा सदाशिवः.. त्रि.ता. १।१०
 (ॐ) तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
 धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् महाना. ११।७
 [त्रि.म.ना. ७।११ + त्रि.ता. १।१
 [क्र.अ. ३।४।१० = मं. ३।६२।१० + वा.सं. ३।३५
 [+ तै.सं. १।५।६।४ + साम. २।८९२
 तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवः क्षीरं
 सेचनीयम् त्रि. ता. १।१३
 तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोऽस्याभिध्येयं मैत्रा. ६।३४
 तत्सवितुर्वृणीमह इत्याचामति छान्दो. ५।२।७
 मन्त्रः- क्र.अ. = मं.
 [+ प्त. ब्रा. ४।३०।३ + ऐत.आ. १५।३।१
 [तै.आ. १।११।३
 तत्सशक्तिकं गजवक्त्रं गजाकारं
 जगदेवावरुन्धे ग.शो. ३।३
 तत्संवत्सरमात्रमुषित्वा द्विधाऽकरोत् सुबालो. १।२
 तत्संवत्सरस्य मात्रामशयत, तन्निर-
 भिद्यत, ते आण्डकपाळे रजतं
 सुवर्णं चाभवताम् छां. ३।१९।१
 तत् (मनः) संवत्सरं प्रोष्य पर्येत्यो-
 वाच कथमशक्ततर्ते मज्जीवितु-
 मिति छान्दो. ५।१।११

तत् (चक्षुः) संवत्सरं प्रोष्य
 पथेत्योवाच कथमशकतं
 मञ्जीवितुमिति छान्दो. ५।१।९
 तत् (चक्षुः, श्रोत्रं, मनः, रेतः)
 संवत्सरं प्रोष्यागत्योवाच कथ-
 मशकतमदृते जीवितुमिति [बृह. ६।१।९, १०, ११, १२
 तत् (भस्म) हैमे राजते तात्रे
 मृण्मये वा पात्रे निधाय..
 अभ्युक्ष्य..संस्थापयेत् भस्मजा. १।३
 तत्सारं प्रातः प्रयुज्जानो पापोऽपापो
 भवति [नारा. ५+देव्यु. २६ महावा. ६
 तत्साधने द्वयं मुख्यं सरस्वत्यास्तु
 चालनम् । प्राणरोधमथाभ्यासा-
 दृज्जी कुण्डलिनी भवेत् योगकुं. १।८
 तत्सुखं राजसं स्मृतम् भ. गी. १।८।३८
 तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तम् भ. गी. १।८।३८
 तत्सूत्रं विदितं येन स मुमुक्षुः स
 भिक्षुकः ।..स विप्रः पंक्तिपावनः परब्र. ९
 तत्सूयौ रश्मिभिर्वर्षति, तेनान्नं
 भवति, अन्नाद्भूतानामुत्पत्तिः मैत्रा. ६।३७
 तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत् तदनु-
 प्रविश्य सच्च त्यच्चाभवत् तैत्ति. २।६
 तत्सिद्ध्या आत्मभूयं गच्छति यथा
 स्वयमङ्गं तथा तस्मादेनां न
 द्विनस्ति २ऐत. ४।२
 तत्स्वयं योगसंसिद्धः भ. गी. ४।३८
 तत्स्वरूपज्ञानां वैदेही मुक्तिश्च भवति हयग्री. ६
 तत्स्वरूपध्यानपरा मुनयश्चाकल्पान्ते
 तस्मिन्नेवात्मनि लीयन्ते अव्यक्तो. ९
 तत्स्वरूपाल्लुष्टिर्या समुत्पन्ना सा
 रश्मिकान्धेन सुसेव्यतां सामर. ३
 प्राप्ताऽऽसीत् बृह. १।४।१०
 तत्प्रणीता तथा मनुष्याणां तच्चै-
 तत्प्रणयज्ञानमिदं प्रतिषेदे मुण्ड. १।१।७
 तथाऽश्वात्सवतीह विश्वम् संहितो. ३।२
 तथा चयज्ञे कियतेऽरण्ये गेयं चाधीमहे
 तथा चरेत् वै योगी सतां धर्म-
 मदपयन् । जना यथाऽवमन्त्येरन्
 गच्छेयुर्न सज्जतिम् ना. ५. ५।४२

तथा जन्म भवेत्तेषां पुत्राज्जन्म
 पितुर्यथा । अ. शां. १५
 तथा जाग्रद्व्याभासं स्पन्दते
 मायया मनः अद्वैत. २९
 तथा जीवा अमी सर्वे भवन्ति न
 भवन्ति च (स्वप्नवत्) अ. शां. ६८
 तथा ज्ञातं च चैतन्यं फलमित्य-
 मिधीयते कठरु. ४।४४
 तथा तज्जाबालोऽब्रवीन्मनो वै
 ब्रह्मेत्यमनसो हि किं स्यात् बृह. ४।१।६
 तथा तत्प्रयोगकल्पः-प्राणायामः
 प्रत्याहारो ध्यानं धारणा तर्कः मैत्रा. ६।१८
 समाधिः षडङ्ग इत्युच्यते योगः
 तथा तत्त्वामिन इव सर्वज्ञ ईशः
 पशुपतिः जाबाल्यु. ४
 तथा तद्वाष्णोऽब्रवीच्चक्षुर्वै ब्रह्मेत्य-
 पश्यतो हि किं स्यात् बृह. ४।१।४
 तथा तद्वृत्तिसम्बन्धात्प्रमाणमिति
 कथ्यते कठरु. ४।३
 तथा तद्भारद्वाजोऽब्रवीच्छ्रोत्रं वै
 ब्रह्मेत्यशृण्वतो हि किं स्यात् बृह. ४।१।५
 तथा तवामी नरलोकवीराः
 तथा तेनेदमावृतम् अ. गी. १।१२८
 तथाऽऽत्ममनसोरैक्यं समाधिरिति
 कथ्यते अ. गी. १।३८
 तथाऽऽत्मा नोपलिप्यते वराहो. २।७५
 तथाऽऽत्मोपाधियोगेन तद्वर्मा
 नैव लिप्यते अ. गी. १।३।३
 तथा त्रैलोक्यवलितं ब्रह्मेकमिह
 दृश्यताम् महो. ५।५७
 तथा देहादिसङ्घातं मोहगुणजाल-
 कलितं तद्रज्जुसर्पवत्कल्पितम् निर्वाणो. ३
 तथा देहान्तरप्राप्तिः अ. गी. २।१३
 तथा द्वादशभिर्वर्षैर्लैस्तस्य निर-
 न्तरम् । व्योमवत्तस्य सिद्धिः
 स्याद्व्योमतत्त्वमयो भवेत् अमन. १।७८
 तथा द्वादशमात्रस्तु प्राणायामो
 विधीयते योगो. २५

तथाऽऽनन्दमयश्चापि ब्रह्मणोऽन्येन
साक्षिणा । सर्वान्तरेण पूर्णश्च
ब्रह्म नान्येन केनचित् कठरु. २४
तथा नस्त्वं तात जानीथा यथा
यदहं किञ्च वेद बृह. ६।२।४
तथा निरंशश्चिद्भावः सर्वगोऽपि
न लक्ष्यते । ..सैषा चिद्वि-
नाशात्मा स्वात्मेत्यादिकृताभिधा महो. ५।९९
तथाऽन्तर्ज्योतिरेव यः भ.गी. ५।२४
तथापि त्वं महाबाहो भ.गी. २।२६
तथापि दृढता नो चेद्विज्ञानस्य...
द्वात्रिंशत्कृतोपनिषदं समभ्यस्य
निर्वर्तय मुक्तिको. १।२८
तथा पुरुषप्रयत्नसाध्यवेदान्तश्रवणा-
दिजनितसमाधिना जीवन्मुक्त्या-
दिलाभो भवति मुक्तिको. १।२
तथा पूयति वा अन्नमृते प्राणात् बृह. ५।१२।१
तथाऽऽप्नोति निबोध मे भ.गी. १८।५०
तथाप्यथर्वणं तेजसा प्रत्याप्यायये-
न्मन्त्राश्च मामभिमुखीभवेयु-
र्गर्मा इव २प्रणवो. ४
तथाप्यसिद्धं चेज्ज्ञानं दशोपनिषदंपठ मुक्तिको. १।२७
तथाप्यानन्दमुक् चेतोमुखः सर्व-
गतोऽव्ययः । चतुरात्मेश्वरः
प्राज्ञस्तृतीयः पादसंज्ञितः (आत्मनः) ना. प. ५।७
तथा प्रत्यर्थिकृत्याभिर्मन्त्रयन्त्रादि-
किल्बिषैः (मुच्यते) सूर्यता. १।१४
तथा प्रलीनस्तमसि भ.गी. १४।१५
तथाप्राणविपत्तौ तु क्षोभमायाति
मारुतः । ततो दुःखशतैर्व्याप्तं
चित्तं क्षुब्धं भवेन्नृणाम् यो. शि. ३०
तथा ब्रह्माणमेव विष्णुमेव रुद्रमेव
विभक्तांस्त्रीनेवाविभक्तांस्त्रीनेव
लिङ्गरूपानेव च सम्पूज्योप-
चारैः.. चिन्तयन्प्रसेत् नृसिंहो. ३।४
तथा भवत्यबुद्धानामात्माऽपि
मलिनो मलैः अद्वैत. ८
तथा भ्रान्तेर्हिवा प्रोक्तो ह्यात्मा
जीवेश्वरात्मना जा. द. १०।४

तथा मनोमयो ह्यात्मा पूर्णो ज्ञानमयेन तु कठरु. २३
तथा मानापमानयोः [भ.गी. ६।७ + १२।१८
तथा यूयं (मुनयः) पञ्चपदं जपन्तः
श्रीकृष्णं ध्यायन्तः संसृतिं तरिष्यथ गो.पू. ४।१६
तथाऽऽसं नित्यमगन्धवच्च यत् । अना-
द्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य
तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते कठो. ३।१५
तथा लोकानकल्पयत् (गणेशः) ग.शौ.ता. ३।११
तथा लोकाँऽमकल्पयन् चिन्त्यु. १२।६+
[क्र.म. ८।४।१९=मं. १०।९०।१४ वा.सं. ३१।१३
तथा वायुं समारोप्य धारयेच्छिरसि
स्थितम् । शिरोरोगा विनश्यन्ति.. जा. द. ६।३१
तथा विज्ञानवशतः स्वभावः
सम्प्रसीदति महो. ५।६६
तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः
परात्परां जगदम्नामुपैति गुह्यका. ३८
तथा वृत्तिक्षयाच्चित्तं, स्वयोनोवु-
पशाम्यति [मैत्रा. ६।३४+ मैत्रे. १।८
तथा शुष्यति वै प्राण ऋतेऽन्नात् बृह. ५।१२।१
तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि भ.गी. २।२२
तथा सर्वाणि कर्माणि योगी दग्ध्वा
लयं व्रजेत् क्षुरिको. २३
तथा सर्वाणि भूतानि भ.गी. ९।६
तथा सूक्ष्ममनाकाशमसंस्पृश्यम-
चाक्षुषम् ।.. आत्मानं सच्चिदान्द-
मनन्तं ब्रह्म.. (ध्यायेत्) जा. द. ९।४
तथाऽसौ त्यक्त्वा कुणपं न तत्तादृशं
पुरा प्राप्नुवन्ति (वह्निगतहवि-
र्यजमानमिव) भक्षज. ३।७
तथाऽहङ्कारसम्बन्धादेव संसार
आत्मनः वराहो. ३।२०
तथा इ निष्काम्याः सकाम्या
भूगोपालचक्रसप्तपुर्यो भवन्ति गोपालो. १।१५
तथेतः प्रेत्य भवति स क्रतुं कुर्वीत छान्दो. ३।१४।१
तथेति तं समन्तं परिण्य विशन्तं बृह. १।३।१८
तथेति तेभ्य एव प्राण उदगायत् बृह. १।३।७
तथेति तेभ्यश्चक्षुरुदगायत्, यश्चक्षुषि
मोगस्तं देवेभ्य आगायत्,
यत्कल्याणं पश्यति बृह. १।३।४

तथेति तेभ्यः प्राण उदगायत्	बृह. १।३।३
तथेति परमेष्ठी वक्तुमुपचक्रमे	
ॐ मिति ब्रह्मेति	ना.प. ८।१
तथेति प्रत्यवोचद्बुमुण्डं वक्ष्यमाणं,	
किमिति	बृ.जा. १।४
तथेति तेभ्यो मेन उदगायत्, यो	
मनसि भोगस्तं देवेभ्य आगायत्	
द्यत्कल्याणं सङ्कल्पयति	बृह. १।३।६
तथेति तेभ्यो वागुदगायत्, यो	
वाचि भोगस्तं देवेभ्य आगाय-	
द्यत्कल्याणं वदति	बृह. १।३।२
तथेति तेभ्यः श्रोत्रमुदगायत्,	
यः श्रोत्रे भोगस्तं देवेभ्य	
आगायद्यत्कल्याणं शृणोति	बृह. १।३।५
तथेति समुपविशुः स ह प्रवाहणो	
जैवलिरुवाच (मा. पा.)	छां. उ. १।८।२
तथेन्द्रियकृता दोषा दहन्ते प्राण-	
धारणात् । प्राणायामैर्देहदोषान्	अ. पू. ७
तथैव च पितामहाः	भ. गी. १।३४
तथैव ज्ञानकर्मभ्यां प्राप्यते ब्रह्म	
शाश्वतम् ।	भवर्स. १।३३
तथैव नाशाय विशन्ति लोकाः	भ.गी. १।१।२९
तथैव निम्नगः सोमः शिवशक्तिपदा-	
स्पदः । शिवश्चोर्ध्वमयः शक्ति-	
रुर्ध्वशक्तिमयःशिवः । तदित्थं शिव	
शक्तिभ्यां नाव्याप्तमिह किञ्चन	बृ.जा. २।९
तथैव ब्रह्मविच्छ्रेष्ठः सदा ब्रह्मैव नापरः २ आत्मो. २१	
तथैव रसशक्तिश्च सौमात्मा चानला-	
रिमिका । वैद्युदादिमयं तेजो..	
मधुरादिमयो रसः	बृ.जा. २।३
तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चरा-	
चरम् । बीजोक्तमुभयार्थत्वं	
रामनामनि दृश्यते [रामर. ५।११+	रा.पू.ता. २।३
तथैव विद्वान् रमते निर्ममो निरहं	
सुखी । कामाभिष्कामरूपी	
सञ्चरत्येकचरो मुनिः	२ आत्मो. ११
तथैव (शनैः शनैः) सेवितो (वक्ष्यः)	
वाधुरन्यथा हन्ति साधकम्	कांडि. १।७।६

तथैवात्मात्मशक्त्यैव स्वात्मन्येवेति	
लोलताम् । क्षणं स्फुरति	
सा देवी..	महो. ५।१२०
तथैवाद्वैतपरमानन्दलक्षणपर-	
ब्रह्मणो मम सर्वाद्वैतमुपपन्नं	त्रि.म.ना. ८।१
तथैवान्नमये कोशे कोशास्तिष्ठन्ति	
चापरे । यथा कोशस्तथा जीवो	
यथा जीवस्तथा शिवः	त्रि.ब्रा. २।१२
तथैवावशो भूस्थः स्पन्दते	छाग. ६।१
तथैवोपाधिविलये ब्रह्मैव ब्रह्मवित्स्वयम् २ आत्मो. २	
तथैष देवः स्वप्न आनन्दमभियाति	
वेद एव ज्योतिः	परब्र. २
तथो एवैवं विद्वान् सर्वेषां भूतानां	
प्राणमेव प्रत्यात्मानमभिसं-	
स्तूय सदैतैः सर्वैरस्माच्छरीरा-	
दुत्कामति	कौ. उ. २।१४
तथो एवासमै सर्वाणि भूतान्य-	
याचमानायैव बलि हरन्ति	कौ.उ. २।१२
तथो एवैवं विद्वान्सर्वान्पाप्म-	
नोऽपहत्य सर्वेषां भूतानां	
श्रेष्ठ्यं स्वाराज्यमाधिपत्यं पर्येति	कौ.उ. ४।२०
तथो एवैवं विद्वान् सर्वेषां भूतानां	
श्रीमत्तमो यशस्वितमस्तेजस्वि-	
तमो भवति	कौ.उ. २।६
तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा च तस्मा-	
त्प्रसूता पुराणी [श्वेता. ४।१८+	शुद्धका. ६१
तदक्षरे परमे व्योमन्	महाना. १।२
तदग्निनैव देवेषु ब्रह्माऽभवद्ब्रह्मणो	
मनुष्येषु क्षत्रियेण क्षत्रियों	
वैश्येन वैश्यः शूद्रेण शूद्रः	बृह. १।४।१५
तदग्रं ब्रह्म चोच्यते	यो.चू. ८०
तदण्डमभूद्धेमं, तत्परिणममानमभूत्,	
ततः परमेष्ठी व्यजायत	अव्यक्तो. १
तदण्डं समभवत्, तत्संबत्सरमात्र-	
मुषित्वा तद्विधाऽकरोत्	सुबालो. १।२
तदवितरां सुशोभायमानं ब्रह्मेति	
पुराविदो वदन्ति	सामर. ५५
तदतीता सप्तमी (योगभूमिका)	वराहो. ४।१

तदत्राविद्यया (भयं) मन्यतेऽथ
 यत्र देव इव राजेवाहमेवेद*
 सर्वोऽस्मीति मन्यते बृह. ४।३।२०
 तद्वितेरदितित्व* सर्वस्यैत-
 स्यात्ता भवति बृह. १।२।५
 तद्वितीयमखण्डार्थं परं ब्रह्म बृहचो. ३
 तद्विचित्रसंयमादग्निलोकज्ञानम् शांडि. १।७।५२
 तद्विकारीनभवेद्यदि गृहस्थप्रार्थना-
 पूर्वकं 'अभयं सर्वभूतेभ्यो' इत्य- प.हं.प. ६
 नेन मंत्रेण ब्रह्मेकं परिगृह्य...
 तद्विष्टानमात्मानं संव्याल्य तत्तेज
 आत्मचैतन्यरूपं बलमवष्टभ्य
 मात्राभिरोतानुज्ञात्रनुज्ञाविक- नृसिंहो. ३।४
 ल्परूपं चिन्तयन् मसेत्
 तदधीना विषयग्रहणबुद्धिः, बुद्ध्या
 बुद्धयति, चित्तेन चेतयत्यहङ्कारे-
 णाहङ्कारीति ना.प. ६। ४
 तदधीनाः कर्मज्ञानवैराग्यप्रवर्तकाः
 पुरुषास्तदनुकूलाचाराः सन्ति ना.प. ५।१
 तदध्यात्मविद्यया लब्धं (मनःशौचं) शांडि. १।१।३
 तद्वन्यत्तद्वेधाऽभूद्धरितमेकं, रक्त-
 मपरम्। तत्र रक्तं तत्पुंसो रूप-
 मभूत्, चरितं तन्मायायाः अव्यक्तो. १
 तद्वन्येयत्वं नाश्रीयात्फलमन्नमन्यद्वा भस्मजा. २।१०
 तदनुकृतिरसौ मानुषी वीणा भवति श्वेत. २।५।२
 तदनु च समतावशात्स्वरूपे परिणमनं
 महतामचिन्त्यरूपम् अ.पू. १।५४
 तदनु प्रविश्य सच्च त्यक्त्वाभवत्. तैत्ति. २।६
 तदनु विषयवासनाविनाशस्तदनु
 शुभः परमः स्फुटप्रकाशः अ.पू. १।५४
 तदनु सर्वेशमप्रमेयमजं शिवं. परं
 ब्रह्म आत्मन्येव पश्यमानो..
 परं ब्रह्म प्राप्नोति सं.ब्रा. ३।१
 तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्य बाह्यतः ईशा. ५
 तदन्तरारयोः पूषा वर्तते च पयस्विनी,
 सुपुन्ना पयिमे चारि वराहो. ५।२५
 तदन्तर्गतजीवराक्षयः स्थूलशरीरः
 सद्यः विराडुच्यते म.श्री.वा.४।५

तदपराजिता पूर्वज्ञानः प्रभुविमित*
 हिरण्यमम् छान्दो. ८।५।३
 तदपश्यत्तदभवत् प्रजासु महाना. २६
 तदपाणिपादमचक्षुश्श्रोत्रमजिह्व-
 मशरीरमग्राह्यमनिर्देश्यम् (ब्रह्म) शांडि. २।१।२
 तदपानेनाजिघृक्षत् तदावयत् श्वेत. ३।१०
 तदपोऽस्तृजत तस्मात्तत्र कच शोचति
 स्वेदते वा पुरुषस्तेजस एव
 तद्ध्यापो जायन्ते छान्दो. ६।२।३
 तदभावे सत्यनन्तविरोधो विभाति त्रि.म.ना. २।३
 तदभिद्रुत्य पाप्मनाविध्यन्स यथा-
 श्मानमृत्वा लोष्ठो विध्व* सेत बृह. १।३।७
 तदभिमृशेदनु वा मंतयेत् 'यन्मेऽद्य
 रेतः पृथिवीमस्कान्त्सीद्य-
 दोषधी...' (इति मंत्रेण) बृह. ६।४।५
 तदभिव्यक्तिचिह्नानि सिद्धिद्वाराणि
 मे शृणु..। दृश्यन्ते सूक्ष्मरूपेण
 सदा युक्तस्य योगिनः यो.शि. २।१९
 तदभेदेन मन्त्राग्नेडनं ज्ञानसाधनं द. मू. १६
 तदभ्यद्रवत्तस्मात्तिरोदधे (यक्षं) केनो. ३।११
 तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत् कोऽसीति केनो. ३।४, ८
 तदभ्यन्तरसंस्थाने शुद्धबोधा-
 नन्दलक्षणं विभाति त्रि.म.ना. ५।९
 तदभ्यन्तरे अमिततेजोराशिस्त-
 दुपरि ज्वलति, परममङ्गलासनं
 विराजते त्रि.म.ना. ५।५
 तदभ्यासादखण्डमण्डलाकारज्योतिः सं. ब्रा. २।२
 तदभ्यासान्मनःस्थैर्यं, ततोवायुस्थैर्यम् सं. ब्रा. २।३
 तदमलमरजं तदात्मतत्त्वं अ.पू. ४।७२
 तदमृतमभयमशोकमनन्तं निर्बीज-
 मेवाप्येति सुबा. १।१-१३
 तदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति छान्दो. ८।८।१
 तद्वरश्च ह वै ण्यश्चार्णवौ ब्रह्मलोके.. छान्दो. ८।५।३
 तदर्थं कर्म कौन्तेय भ.गी. ३।९
 तदलक्षणमग्राह्यं यद्व्यवहार्यमचिन्त्यं..
 प्रपञ्चोपशमं शिवं शांतमद्वैतं
 चतुर्थे मन्यन्ते स ब्रह्मप्रणवः ना.प. ८।२३
 तदवस्था जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिगुरीयाः वराहो. ४।१
 तद्विज्ञेयं तदव्यक्तम् (प्रकृतैः) अव्यक्तो. २

तद्व्ययं तद्भूतयोनिं परि-

पश्यन्ति धीराः

मुण्ड. १।१।६

तद्व्ययीभूतमन्वर्थवाची शब्दो न

व्येति कदाचन

२प्रणवो. १४

तद्व्यर्थः सोमसवनः

छान्दो. ८।५।३

तदस्ति (कर्तव्यं) चेन्न स

तत्त्वविद्भवति

पैङ्गलो. ४।९

तदस्मै देवा अभिसन्नवन्तु

चित्यु. ११।९

[अथर्व. १.९।४१।१+तै.सं.५।४।७।३

तै.आ.३।११।९

तदस्य गर्भा अन्वायत्तास्तस्मात्ते

प्रतिष्ठता नावपथन्ते प्रतिहार-

भाजिनो ह्येतस्य साम्नः

छान्दो. २।९।६

तदस्य देवा अन्वायत्तास्तस्मात्ते

सत्तमाः प्राजापत्यानामुद्रीथ-

भाजिनो ह्येतस्य साम्नः

छान्दो. २।९।५

तदस्य पशवोऽन्वायत्तास्तस्मात्ते

हिंकुर्वन्ति हिंकारभाजिनो..

छान्दो. २।९।२

तदस्य पितरो अन्वायत्तास्तस्मात्ता-

न्निदधाति निबनभाजिनो

ह्येतस्य साम्नः

छान्दो. २।९।८

तदस्य प्रज्ञा स्रवति दृतेः पादा-

दिवोदकम्...

....

तदस्य प्रथमं जन्म (गर्भावानम्)

२ ऐत. ४।१

तदस्य मनुष्या अन्वायत्तास्तस्मात्ते

प्रस्तुतिकामाः प्रस्तावभाजिनो..

छान्दो. २।९।३

तदस्य रुद्रा अन्वायत्ताः, प्राणा वाव

रुद्राः, एते ह्रीदः सर्वः रोदयन्ति

छान्दो. ३।१६।३

तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय

बृह. २।९।१९

तदस्य न्यायस्यान्वायत्तानि तस्मात्ता-

न्यन्तरिक्षे ... आदिभाजीनि

ह्येतस्य साम्नः

छान्दो. २।९।४

तदस्य वसवोऽन्वायत्ताः, प्राणा वाव

वसवः, एते ह्रीदः सर्वः

वा सयन्ति

छान्दो. ३।१६।१

तदस्य हरति प्रज्ञां

म.गी. २।६७

तदस्यादित्या अन्वायत्ताः प्राणावाव

आदित्याः, एते ह्रीदः सर्वमाददते

छान्दो. ३।१६।५

तदस्यामृतस्याश्नीरस्यात्मनो-

ऽधिष्ठानम्

छान्दो. ८।१२।१

तदस्यारण्या अन्वायत्तास्तस्मात्ते

पुरुषं दृष्ट्वा कक्षः श्वभ्रमित्यु-

पद्रवन्ति

छान्दो. २।९।७

तदस्येदं वाचा तन्त्या नामभि-

र्दामभिः सर्वं सितम्

१ऐत. १।६।१

तदहं भक्त्युपहृतं

म.गी. ९।२६

तदा गन्ताऽसि निर्वेदं

म.गी. २।५२

तदाचारवशात्तत्तल्लोकप्राप्तिः

ना.प. ५।११

तदा जडान्यपि तानि चेतनवस्त्व-

कर्माणि चक्रिरे (हिरण्यगर्भः)

पैङ्गलो. १।५

तदा (प्रलये) जीवाः सर्वे प्रकृतौ

प्रलीयन्ते

त्रि. म.ना. ३।४

तदाऽयभागावन्तरेणाहुतीः प्रति-

पादयेच्छ्रद्धया हुतम्

मुण्ड. १।२।२

तदाज्ञया समष्टयण्डं व्याप्य

तान्यतिष्ठन्

पैङ्गलो. १।५

तदाज्ञयाऽहङ्कारसमन्वितो विराट्

स्थूलान्तरिक्षत्

पैङ्गलो. १।५

तदाण्डं निरवर्तत, तत्संवत्सरस्य

मात्रामशयीत

छान्दो. ३।१९।१

तदा(अमनस्केजाते) तत्परमं पदम्

तदाऽऽत्मनाऽऽत्मानं दृष्ट्वा

मैत्रा. ६।३४।७

निरात्मा भवति

मैत्रा. ६।९०

तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु

धर्मास्ते मयि सन्तु

केनो.प्राप्तिः

तदात्मानमेवावेदहं ब्रह्मास्मीति

बृ. उ. १।४।१०

तदात्मानं सृजाम्यहम्

म.गी. ४।७

तदात्मानं स्वयमसृजत

तैत्ति. २।७

तदात्मानः स्वयमकुरुत तस्मात्ते-

त्सुकृतमुच्यते

तैत्ति. ३।७

तदा दृष्टिविशेषाश्च त्रिविधान्या-

सनानि च । अन्तःकरणभावश्च

योगिनो नोपयोगिनः

अमन. २।३६

तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो

भविष्यति (यदा चर्मवदाकाशं

वेष्टयिष्यन्ति मानवाः)

श्वेता. ६।२०

तदा न स्मरति जन्ममरणानि, न च

कर्म शुभाशुभं विन्दति

गर्भो. १०

तदानीमात्मगोचरा वृत्तयः		तदितर इतर ५ रसयते	बृह. ४।५।१५
समुत्थिता अज्ञाता भवन्ति	पैङ्गलो. ३३	तदितर इतर ५ विजानाति	बृह. ४।५।१५
तदा पश्चिमाभिमुखप्रकाशः स्फटिक-		तदितर इतर ५ शृणोति [बृ. उ. २।४।१४ + ४।५।१५]	
धूम्रः प्रभा दृश्यन्ते	मं. ब्रा. २।४	तदितर इतर ५ स्पृशति	बृह. ४।५।१५
तदामिनैव जायेत कामिन्यालिङ्गि-		तदिति तदसौ तेजोमयं तेजोऽग्निर्देवता	गायत्रीर. २
तस्य च	अमन. १।४२	तदिति परमात्मा सदाशिवोऽक्षरं	
तदा प्रभामनोबुद्धिशून्यं भवति	पैङ्गलो. ४।९	विमलं.. हकाराक्षरं शिवरूपं	
तदा योगमवाप्यसि	भ. गी. २।५३	निरक्षरमक्षरं व्यालिख्यतइति	त्रि. ता. १।१०
तदा विद्वान्पुण्यपापे विहाय परे-		+ तदिति वा एतस्य महतो	
ऽव्यये सर्वमेकीकरोति	भैत्रा. ६।१८	भूतस्य नाम भवति
तदा सद्गुरुमाश्रित्य चिरकालसेवया		तदिति सोऽथर्ववेदः	सन्ध्यो. २०
बन्धं मोक्षं कश्चित्प्रयाति	पैङ्गलो. २।९	तदित्थं शिवशक्तिभ्यां नाव्याप्तमिह	
तदासां पाप्मनो विन्यदधात्	बृह. १।३।१०	किञ्चन	बृ. जा. २।१०
तदाऽसौ परमाकाशरूपो देहव-		तदित्यनभिसन्वाय	भ. गी. १।७।२५
तिष्ठति ।.. मरणं नास्ति तस्य वै	यो. शि. १।५७	तदिदमत्र मनः श्लेष्मरेतसः सम्भवति	निरुक्तो. १।१
तदाऽस्य सन्मुखे तत्त्वममनस्कं		तदिदमन्तरिक्षं प्रजापतेर्द्वितीयाचितिः	भैत्रा. ६।३३
प्रकाशते । अमनस्के च सञ्जाते		तदिदमन्तिके दवीयो नेदीय इव	
चित्तादिविलयो भवेत्	अमन. १।१९	दूरतो न वा अस्य महिमानं कश्चित्..	आर्षे. ५।४
तदादुरुदक्रमीच्चित्तं, न शृणोति,		तदिदमन्नमन्नादमियमेव	१ ऐत. १।२।७
न पश्यति, न दाचा वदति	कौ. उ. ३।३	तदिदमप्येतर्हि नामरूपाभ्यामेव	
तदादुर्यदनेन रूपेणानुं लोकमभि-		व्याक्रियते	बृह. १।४।७
सम्भवती ३	१ ऐत. ३।७।२	तदिदमप्येतर्हि तन्नामरूपाभ्यामेव	
तदादुर्यदयमेक इवैव पवतेऽथ		व्याक्रियते (पा.)	बृ. उ. १।४।७
कथमध्यर्धे इति	बृह. ३।९।	तदिदमप्येतर्हि य एवं वेदाहं ब्रह्मा-	
तदाहुर्निशोचति निपतति		स्मीति, स इदं सर्वं भवति	बृह. १।४।१०
वर्धिष्यति वा	छान्दो. ७।११।१	तदिदमस्य सकलनिष्कलं रूपम्	शांडि. ३।१।२
तदादुर्यद्वद्विद्यया सर्वं भविष्यन्तो		तदिदमाप एवेदं वै मूलम्	१ ऐत. १।८।१
मनुष्या मन्यन्ते	बृह. १।४।९	तदिदं ॐ सत्यम्	सदानं. १६
(७०) तदाहुः किं तदासीत्तस्मै सहोवाच	सुबालो. १।१	तदिदं कर्मकृतमयं पुरुषो ब्रह्मलोकः	१ ऐत. १।३।१
तदिच्छाभि यो असि सर्ववित्तमो न		तदिदं पुरं पुण्डरीकं विज्ञानघनं	
त्वाभवद्ब्रह्मरिषा (रुषा) मयस्त्रि	बा. मं. ३	तस्मात्तडिदाभमात्रम्	नारा. ४
तदितर इतरमभिवदति	बृह. ४।५।१५	तदिदं लिङ्गं ब्रह्म, तदिदं ॐ सत्यम्	सदानं. १६
तदितर इतरं जानाति	बृह. २।४।१४	तदिदं योनौ रेतः सिक्तं पुरुषः	
तदितर इतरं जिघ्रति	बृह. २।४।१४	संभवति	निरुक्तो. २
तदितर इतरं पश्यति	बृह. २।४।१४	तदिदं सर्वमाप्नोति, य एवं वेद	बृह. १।४।१७
तदितर इतरं मनुते [बृह. २।४।१४ +	४।५।१५	तदिमे मूढा उपजीवन्त्यभिष्कङ्गिणः	भैत्रा. ७।१०

+ इमे धृतिः श्रीमद्भगवद्गीताया नैलकण्ठीयटीकायां ब्रह्मानन्दगिर्याख्याने व्याख्यानं बाह्यमीयतत्त्वदीपिकायां च दृश्यते, न त्वत्त्वमस्यहीतोपनिषदप्रदे ।

तदीक्षणाय स्वाध्यायश्चक्षुर्योग-
स्तथाऽपरः । न मांसचक्षुषा
(द्रष्टुं) दृष्टे.. ब्रह्मभूतः स
शक्येत (?) भवसं. ३।७

तदुक्तमृषिणा—गर्भे नु सन्नन्वेषाम
वेदमहं देवानां जानिमानि विश्वा..
ज्ञतं मा पुरमायतीः... [२ ऐत. ४।५ ऋ. अ. ३।६।१६
[मं. ४।२७।१+ ऐ. आ. २।५।१।१४

तदुः तथा न कुर्यादाभेयीमेव कुर्यात् जाबा. ४
तदुतापि यत्रैतद्वलवदनुगृह्णन् सन्द-
ग्धद अहोरात्रे वर्षति ३ ऐत. १।२।१

तदुताप्याहुः सांनैतमुपागादित्यसा-
धुनैतमुपागादित्येव तदाहुः छान्दो. २।१।२
तदुनात्येतिकश्चन, एतद्वैतत् [कठो. ४।९ + ८५+६।१

तदुपप्रेयाय सर्वजवेन (अग्निः)
तन्न शशाक दग्धुम् (तृणम्) केनो. ३।६
तदुपप्रेयाय सर्वजवेन, तन्न शशाका-
दातुं (वायुः, तृणम्) केनो. ३।१०

तदुपरि कृष्णस्य स्थानं गोकुलाढ्यं
माथुरमंडलं महत्पदम् राधोप. १।३
तदुपरि ज्वलति निरतिशयानन्दतेजो-
राशिः त्रि. म. ना. ५।६

तदुपरि सुदर्शनचक्रं त्रिकोटियोजन-
विस्तीर्णम् राधोप. १।३
तदुपायं (ब्रह्मदर्शने) लक्ष्यत्रयाव-
लोकनम् मं. ब्रा. १।२

तदुभयविलक्षणो नारायणः
(कार्यकारणभिन्नः) त्रि. म. ना. २।८

तदु सर्वस्य बाह्यतः—(मा. पा.) ईशा. ५
तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ईशा. ५
तदु ह जमदग्निर्नानुमेने आर्तमिव
वा एष तन्मेने आर्षे. २।१

तदु ह जानश्रुतिः पौत्रायणः षट्
शतानि गवां निष्कमश्वतरीरथं
तदादाय प्रतिचक्रमे छान्दो. ४।२।१

तदु ह न मेने गौतमो यदिदमार्तमिव आर्षे. ६।१
तदु ह पुनरेव जानश्रुतिः पौत्रायणः
सहस्रं गवां, दुहितरं तदादाय
प्रतिचक्रमे छान्दो. ४।२।३

तदु ह बालकिर्न विजज्ञौ कौ. त. ४।१८
तदु ह भारद्वाजो नानुमेने यदि ह
सर्वेत्येत्येति आर्षे. ४।१

तदु ह वा एते ब्रह्मवादिनः पूर्वाभि-
मुखाः सन्ध्यायां गायत्रियाभि-
मंत्रिता आप ऊर्ध्वं क्षिपन्ति सहवे. २

तदु ह त्रसिष्ठो नानुमेने, यदिमा
विस्फूर्जयत एवाभिपद्यन्ते
वीवयन्ति मिथुनं चेति.. आर्षे. ७।१

तदूर्ध्वममन्त्रवदाचरन् क्षौराभ्यङ्ग-
स्नानोर्ध्वपुण्ड्रादिकं विहाय..
देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः तुरीया. ३

तदूर्ध्वमुदसर्पत् ता ऊरु अभवताम् १ ऐत. १।४।१

तदेकमजरममृतमभयमोमित्यनुभूय
तस्मिन्निदं सर्वं त्रिशरीरमारोप्य
तन्मयं हि.. तदेवेति संहरेदोमिति नृसिंहो. १।२

तदेकममृतमजरमनुभूय तथोमिति
तदेकं वद निश्चित्य ना. प. ८।७

तदेके प्राजापत्यामेवेष्टिं कुर्वन्ति
तदेजति तन्नेजति (मा. पा.) भ. गी. ३।२

तदेजति तन्नेजति तद्वरे तद्वदन्तिके
तदेतच्चतुष्पाद्ब्रह्म वाक्पादः, प्राणः
पादश्चक्षुः पादः, श्रोत्रं पाद इत्य-
भ्यात्मम् याज्ञव. १

तदेतच्छ्रीश्वरशश्चेत्युपासीत, श्रीमान्
यश्चस्वी भवति, य एवं वेद ईशा. ५

तदेतच्छ्लोकेऽप्युक्तम् ईशा. ५

तदेतज्जडं मोहात्मकमनन्तमिदं
रूपमस्यास्य व्यञ्जिका नित्य-
निवृत्ताऽपि मूढैरात्मेव दृष्टास्य
सत्त्वमसत्त्वं च दर्शयति नृसिंहो. १।२

तदेतत्कथितं बीजमविद्याया मया
तत्र । क्लेशानां च क्षयकरं
योगादन्यत्र विद्यते भवसं. ३।११

तदेतत्कामरूपाख्यं पीठं... यो. शि. ५।८

तदेतत्कीर्तिश्च व्युष्टिश्चेत्युपासीत ।
कीर्तिमान्व्युष्टिमान् भवति छांदो. ३।३।४

तदेतत्कौरुण्डेर्वचनं वेदयन्ते...

स गाथादर्शी भवति	संहितो. ३।९
तदेतत्तेजोऽप्राथमित्युपासीत, तेज-	
स्यन्नादो भवति, य एवं वेद	छांदो. ३।१३।१
तदेतन्नय ५ शिक्षेदमं दानं दयामिति	बृह. ५।२।३
तदेतन्नय ५ सदेकमयमात्मात्मैकः (मा.)	बृह. १।६।३
तदेतन्नय ५ सदेकमयमात्मा एकः	बृह. १।६।३
तदेतदक्षरं जैत्रमभित्वरम्	शौनको. १।५
तदेतन्निवृत्तिवृद्धिब वै चक्षुः शुक्लं कृष्णं	
कनीनिकेति	१ ऐत. १।५।३
तदेतन्नयक्षरं सत्यमिति, सइत्येकमक्षरं	
तीत्येकमक्षरं, यमित्येकमक्षरम्	बृह. ५।५।१
तदेतत् त्रयक्षरं हृदयमिति, हृश्चेत्येकमे-	
क्षरमभिहरन्त्यस्मै स्वाश्चान्ये च	बृह. ५।३।१
तदेतत्पञ्चविधं मितममितं स्वरः	
सत्यानृते इति	१ ऐत. ३।६।४
तदेतत्पण्डिता एव पश्यन्ति (ब्रह्म)	नृसिंहो. ९।९
तदेतत्पदनीयमस्य सर्वस्य यदय-	
मात्मा, अनेन ह्येतत्सर्वं वेद	बृह. १।४।७
तदेतत्पुष्पं फलं वाचो यत्सत्यम्	१ ऐत. ३।६।४
तदेतत्पूर्णमप्रवर्ति पूर्णमप्रवर्तिनी ५	
श्रिय ५ लभते, य एवं वेद	छान्दो. ३।१२।९
तदेतत्प्रेयः पुत्रात्प्रेयो वित्तात्प्रेयो-	
ऽन्यस्मात् सर्वस्मादन्तरतरं	
यदयमात्मा	बृह. १।४।८
तदेतत्सत्यमात्मा ब्रह्मैव, ब्रह्मात्मैव..	नृसिंहो. ९।९
तदेतत्सत्यमृषिरङ्गिराः पुरोवाच	मुण्ड. ३।२।११
तदेतत्सत्यं तदमृतं तद्वेदव्यम्..	मुण्ड. २।२।२
तदेतत्सत्यं मन्त्रेषु कर्माणि कवयो	
यान्यपश्यन्, तानि त्रेतायां	
बहुधा सन्ततानि	मुण्ड. १।२।१
तदेतत्सत्यं यथा सुदीप्तात्पावका-	
द्विस्फुलिङ्गाः..प्रभवन्ते ..। तथा-	
ऽक्षराद्विधाः.. भावाः प्रजायन्ते	
तत्र चैवापियन्ति	मुण्ड. २।१।१
तदेतत्सहस्रं तत्सर्वं तानि..	१ ऐत. ३।४।३
तदेतत्सुदर्शनं महाचक्रं बालो वा	
युवा वा वेद स महान् भवति	नृ.पू. ५।८
तदेतत्सुष्ठं पराङ्मुख्यजिवांसु	१ ऐत. ३।३

तदेतदक्षरं परं ब्रह्म (गणेशः)	ग.पू. १।३
तदेतदक्षरं ब्रह्मणो यं काममिच्छेत्	२ प्रणवो. ६
तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु वाङ्मनः	मुण्ड. २।२।२
तदेतदक्षरं वेदयते यस्तु सोम्य...	प्रश्नो. ४।१।१
तदेतदक्षरं सत्यं तद्विज्ञाय विमुच्यते	रुद्रह. ३४
तदेतद्वयं स्वप्रकाशं महानन्दमात्मैव	नृसिंहो. ८।७
तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्, स य एत-	
दन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतिष्ठितं	तैत्ति. ३।७।३।८
तदेतदभयममृतमानन्दमाध्यात्मिकम्	गान्धर्वो. ५।९
तदेतदमृतमुभयतः सत्येन परि-	
गृहीत ५ सत्यभूयमेव भवति	बृह. ५।५।३
तदेतदमृत ५ सत्यं तद्वोद्धव्यं	
मुमुक्षुभिः	रुद्रह. ३७
तदेतदमृत ५ सत्येन छन्नम्, प्राणो वा	
अमृतम्, नामरूपे सत्यम्,	
ताभ्यामयं प्राणश्छन्नः	बृह. १।६।३
तदेतद्विद्वानेवास्मिन्नन्वायत्त-	
मुपास्ते...	आर्षे. २।३
तदेतदिति मन्यन्तेऽनिर्देश्यं परमं	
सुखम्। कथं नु तद्विजानीयां..	कठो. ५।१४
तदेतदुक्तं प्राण एव	१ ऐत. ३।४।६
तदेतदुपनिषदां रहस्यम्	सङ्कर्षणो. ३
तदेतदूर्वाभिश्च तिरश्चीभिश्च विष्णु-	
द्विराह्वादाश्चरन्ति	छान्दो. ७।११।१
तदेतद्विष्णोर्क्तं निदर्शनं स ई पाहि	
य ऋजीवीत रुद्रः.. [नृ.पू. ३।३	+ ग.पू. २।३
तदेतद्विषिः पश्यन्नवोचत् [बृह. २।५।१६,	१७, १८, १९
तदेतदेवाक्षरं ज्ञात्वाऽष्टौ प्रकृतयः	
षोडश विकाराः शरीरे तस्यैव	
देहिनः	गर्भो. ३
तदेतदेतस्यामृच्यभ्यूढं साम	छान्दो. १।६।१
तदेतदेवैषा दैवी वागनुवदति	
स्तनयितुर्द द द इति	बृ. उ. ५।२।३
तदेतदोजश्च महश्चत्युपासीत	छान्दो. ३।१३।५
तदेतद्विवाधीयानो रात्रिकृतं पापं	
नाशयति	सङ्कर्षणो. ३
तदेतद्वृष्टं श्रुतं चेत्युपासीत	छान्दो. ३।१३।८
तदेतद्वक्षोभं सूर्युत्तरकं गुरुणा छन्नं	
कण्ठे बाहौ शिखायां वज्रीव	नृ.पू. ५।८

तदेतद्ब्रह्म पशुपाशविमोक्षणाय बटुको. २४
 तदेतद्विज्ञाय ब्राह्मणः परिव्रज्य..
 तद्ब्रह्माहमस्मीति ब्रह्मप्रणवमनु-
 स्मरन्...सञ्ज्यासेनैव देहत्यागं
 करोति ना.प. ३।८६
 तदेतद्देवानां रहस्यम् सङ्कर्षणो. ३
 तदेतद्ब्रह्मघ्नस्य विष्टपं; यदेतन्नासि-
 कायै विनतमिव १ऐत. १।२।५
 तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरमनन्तरमबाह्यम् बृह. २।५।१९
 तदेतद्ब्रह्म क्षत्रं विदुःशूद्रः बृह. १।४।१५
 तदेतद्ब्रह्मवर्चसमन्नाद्यमित्युपासीत छांदो. ३।१३।३
 तदेतन्नभयं यदयमात्मा प्रधिर्वितं बृह. १।५।१५
 तदेतन्नाभ्रधानाय प्रब्रूयात् नृ. षट्. ८
 तदेतन्निर्देशनम्-हंसः शुचिष-
 द्वसुरन्तरिक्षसत् [क्र.मं. ४।४०।५ ग.पू.ता. २।८, ९
 तदेतन्निर्देशनं भवति-एको देवः
 प्रापको यो वसूनां.. ग.पू.ता. १।६
 तदेतन्माया हंसमयी देवानाम् ग.पू.ता. २।९
 तदेतन्मिथुनमोमित्येतस्मि-
 न्नक्षरे स*सृज्यते छांदो. १।१।६
 तदेतन्मूर्तं यदन्यद्वायोऽन्तरिक्षाच्च
 तन्मर्त्यम् बृह. २।३।२
 तदेतथा वाचाऽभिव्याह्रियते
 सत्यमिति कौ.उ. १।६
 तदेतेनात्मन्नेतेनार्थचतुर्थेन मात्रेण
 शान्ति स*सृजन्ति अ.शिरः. ३।१०
 तदेव कृतकृत्यत्वं प्रति योगिपु-
 स्स्वरम् । अनुसंदधदेवायमेवं
 तृप्यति चित्यशः १अवधू. १०
 तदेव च मन्त्राकारोऽङ्गुलादन्यूनः
 तदेव चित्तं निराश्रयं मनोन्म-
 न्यवस्थापरिपक्वं लययोग्यं भवति मं.ब्रा. ५।१
 तदेव चिद्धनं, तदेवानन्दघनम् त्रि.म.ना. ७।८
 तदेव सत्सर्वं निरुद्धं प्रत्युद्धं सम्पीड्यं
 सुकञ्जाल्यं सभक्ष्यं स्वात्मान-
 मेवैषा वृद्धाति बृ. उ. ७।६
 तदेव सारकं ब्रह्म त्वं विद्धि सारसा. २।१
 [रामो.ता. १।२।३

तदेव त्रिपाद्विभूतिवैकुण्ठस्थानं
 तदेव परमकैवल्यम् त्रि.म.ना. ७।८
 तदेव निर्भयं ब्रह्म ज्ञानलोकं समन्ततः अद्वैत. ३५
 तदेव निष्कलं ब्रह्म निर्विकल्पनि-
 रञ्जनम् । तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा
 ब्रह्म संपद्यते ध्रुवम् [त्रि. ता. ५।८ ब्र. विं. ८
 तदेव परमकैवल्यं.. तदेव सद्भनं त्रि. म.ना. ७।८
 तदेव परमयोगिभिर्मुमुक्षुभिः सर्वै-
 राशास्यमानम् (ब्रह्म) त्रि.म.ना. ७।८
 तदेव प्रणवस्वरूपम् मं. ब्रा. २।४
 तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केनो. १।५-९
 तदेव ब्रह्म परमं कवीनां महाना. १।६
 तदेव ब्रह्म परमं विशुद्धं कथ्यते त्रि. म.ना. ४।३
 तदेव भूतं तदु भव्यमा इदं तदक्षरे
 परमे व्योमन महाना. १।२
 तदेव मन्त्रतारकब्रह्म त्वं विद्धि श्री. वि.ता. १।२
 तदेव मम परमं धाम, तदेव शिखा
 तदेवोपवीतं च प. हं. प. ३
 तदेव मे दर्शय देवं रूपम् म. गी. १।१४५
 तदेव मे ब्रह्म आर्षे. ५।२
 तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य म. गी. १।१४५
 तदेव रूपं द्विधा विधाय समाराधन-
 तत्परोऽभूत् सामर. ५
 तदेवर्तं तदुसत्यमाहुः... [महाना. १।६ + त्रि. म.ना. ४।३
 तदेव बह्निःकुण्डाख्यं तत्त्वकुण्ड-
 लिनी तथा योगरा. ६
 तदेव शाम्भवीलक्षणम् मं. ब्रा. २।२
 तदेव शिष्यत्यमलं निरामयं योगकुं. ३।३५
 तदेव शुक्रममूर्तं तद्ब्रह्म तदापः
 स प्रजापतिः महाना. १।७
 तदेव शुकं तद्ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते कठो. ५।८ + ६।१
 तदेव शुकं तद्ब्रह्म तदापस्तत्प्रजापतिः श्वेताश्व. ४।२
 तदेव शुद्धबोधधनविशेषम् (ब्रह्म) त्रि. म.ना. ७।८
 तदेव सक्तः सह कर्मणैति लिङ्गं
 मनो यत्र निष्कमस्थ । प्राप्यान्तं
 कर्मणस्तस्य यतिकञ्चेह करोत्ययम् बृह. ४।४।६
 तदेव सच्चिदानन्दं ब्रह्म भवति मं. ब्रा. २।२
 तदेव सत्यं तदेव ब्रह्म परमं विशुद्धं त्रि.म.ना. ४।३

तदेव सदाशिव एव निष्कलमष

आद्यो देवोऽन्त्यमक्षरं व्याक्रियते त्रि.ता. १।१३

तदेव सद्भनम्, तदेव चिद्भनम् त्रि.म.ना. ७।८

तदेव स्थूलशरीरम् (अन्नमयकोशः) पैङ्गलो. २।५

तदेव (रुद्रसूक्ताभिषिक्तस्य) स्नपनपयः
पीत्वा महापातकेभ्यो मुच्यते अस्मजा. २।१०

तदेवं ज्ञात्वा स्वरूपानुसन्धानं
विनाऽन्यथाचारपरो न भवेत् ना. प. ५।११

तदेवं विद्वांस इहैशमृता भवन्ति शाट्वाय. १८

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु
चन्द्रमाः । तदेवं शुक्रं तद्ब्रह्म श्वेता. ४।२

तदेवाकाशपीठं स्पर्शनं पीठं तेजः-
पीठममृतपीठं रत्नपीठं जानीयात् त्रि. ता. ५।२१

तदेवाग्निस्तद्वायुस्तत्सूर्यस्तदुचन्द्रमाः ।
तदेव शुक्रममृतं तद्ब्रह्म.. महाना. १।७

तदेवाग्निस्तमसो ज्योतिरेकं तन्मे
मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. १०

तदेवानन्तोपनिषद्विमृग्यम् त्रि.म.ना. ७।८

तदेवाधः शिवशक्त्याख्यमन्यत्तृतीयं
चेयं चान्द्री विद्या त्रि. ता. १।१६

तदेवानन्दधनम् त्रि.म.ना. ७।८

तदेवानुप्राविशत्, तदनु प्रविश्य
सच्च त्यच्चाभवत् तैत्ति. २।६

तदेवाबाधितपरमतत्त्वम् त्रि.म.ना. ७।८

तदेवाभयमत्यन्तकल्याणं परमामृतं
सद्रूपं परमं ब्रह्म.. कठरु. ३०

तदेवामृतमुच्यते [कठो. ५।८ + ६।१

तदेवार्कस्यार्कत्वं, कँ ह वा
अस्मै भवति बृह. १।२।१

तदेवाश्वमेधस्याश्वमेधत्वम् बृह. १।२।७

तदेवाहं तदेवाहं ब्रह्मैवाहं सना-
तनम् । ब्रह्मैवाहं न संसारी.. ते. बि. ६।३१

तदेवाहं सदानन्दं ब्रह्मैवाहं सनातनम् ते. बि. ३।३२

तदेवोपासितव्यम् (परं ब्रह्म) तारसा. २।१

तदेवोपासितव्यं विज्ञेयं गर्भादि-
तारणम् दत्तात्रे. १।१

तदेव कोको न पश्यो मृत्युं
पश्यति, न रोषं नोत दुःखताम् छान्दो. ७।२६।२

तदेवाऽभ्यनूता-कामस्तदग्रे सम-

वर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं

यदासीत् [बृ.जा. १।२+ नृ.पू. १,१

[ऋ.अ. ८।७।१७+ =मं. १०।१२९।४

[अथर्व. १९।५२।१+ तै.आ. १।२३।१

तदेवाभ्युक्ता सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म तैत्ति. २।१।१

तदेवां प्राणानां विज्ञानेन विज्ञान-

मादाय य एषोन्तर्हृदय आकाश-

स्तस्मिच्छेते बृह. २।१।१७

तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेय छान्दो. ६।२।३

(अथ) तदैतस्मिच्छरीरे एत-

त्सुखं भवति प्रश्नो. ४।६

तदैतूपमामभि । परं मृत्यो अनु-

परेहि पन्थाम् [ऋ.अ. ७।६।२६+ =मं. १०।१८।१

[चित्यु. १५।२+ वा. सं. ३५।७

[तै. आ. ३।१५।२+ अथर्व. १२।२।२१

तदैनं वाक्सर्वैर्नामभिः सहाप्येति कौ.उ. ३।३, ४।१९

तदैरं मदीयं सरस्तदश्वत्थः सोम-

सवनस्तदपराजिता पूर्णह्वणः छान्दो. ८।५।३

तदैव कापालकं सन्धाय य एष

स्तन इवावलम्बते सेन्द्रयोनिः

स वेदयोनिः परब्र. २

तदोत्तमविदां लोकान् भ.गी. १४।१४

तद्गणेशः, सद्गणेशः, परं गणेशः ग.शो.ता. ३।२

तद्गृहीत एव प्राणो भवति,

गृहीता वाक् बृह. २।१।१७

तद्गोमयेन भसितं जातम् बृ.जा. १।५

तद्गोमयेन रक्षा जाता बृ.जा. १।६

तद्गोमयेन विभूतिर्जाता बृ.जा. १।५

तद्दर्शनं सदाचारमूलम् अद्वयता. ७

तद्दर्शनात्सर्वपापनिवृत्तिः मं.ब्रा. १।३

तद्दर्शने (ब्रह्मतेजसः) तिस्रो मूर्तयः,

अमा प्रतिपत्पूर्णिमा च मं.ब्रा. २।२

तद्दर्शनेन (परमहंसस्य) सकलं

जगत्पवित्रं भवति मं.ब्रा. ५।२

तद्दर्शी (तारकदर्शी) विमुक्तफल-

स्तां हव्योमसमानो भवति अद्वयता. ४

तद्दानं राजसं स्मृतम् भ.गी. १७।२१

तद्धानं सात्त्विकं स्मृतम्	भ.गी. १७।२०
तद्धारभूतं शिष्येऽथ तद्वाक्प्रविवेश	
तद्वाचाऽवदत्	कौ.उ. २।१४
तद्दूरे तद्वदन्तिके । तदन्तस्य सर्वस्य..	ईशा. ५
तद्वष्टिः स्थिरा भवति (खज्योति- दर्शनात्)	मं.ब्रा. १।३
तद्वष्टा सर्वे लोकाः पवित्रा भवन्ति	अद्वयता. ७
तदेवा ज्योतिषां ज्योतिरायुर्हो- पासतेऽमृतम्	बृह. ४।४।१६
(तस्मात्) तदेवानां व्रतमाचर- न्नोङ्कारे परे ब्रह्मणि पर्यवसितो भवेत्	नृसिंहो. ६।३
तदेवाः प्राणे निश्श्रेयसं विचिन्त्य	
प्राणमेव प्रज्ञात्मानमभिसंस्तूय	
सहैतैः सर्वैरस्मालोकादुच्चक्रमुः	कौ.उ. २।१४
तदैवं तन्मन्त्रात्तनुते, तन्नो देवं गुरुः	रुद्रोप. ३
तद्ध तथा चकार तच्छश्वत्संवर्तते	छान्दो. ६।१३।२
तद्ध तद्वनं नाम तद्वनमित्युपासितव्यम्	केनो. ४।६
तद्ध देवा चद्रीथमजहुरनेनैनानाभि- भविष्याम इति	छान्दो. १।२।१
तद्ध वकी दालभ्यो ग्ळावो वा मैत्रेयः	
स्वाध्यायमुद्रव्राज	छां.उ. १।१२।३
तद्ध सम वै तद्विद्वान् वसिष्ठो	
वसिष्ठो बभूव	१ऐत. २।४।१
तद्ध स्माह-प्रातृदः पितरं किंस्विदे- नैवं विदुषे साधु कुर्यां किमे-	
वास्मा बसाधु कुर्यामिति	बृ.उ. ५।१२।१
तद्वापि ब्रह्मदत्तश्चैकितानेयो राजानं	
भक्षयन्नुवाचार्थं तस्य राजा	
मूर्धानं विपातयतात् ...	बृह. १।३।२४
तद्धाम परमं मम [भ.गी.	८।२१+१५।६
तद्धाम सर्वेषां देवादीनामपि	
दुर्लभतरम्	सामर. ५४
तद्धावतोऽन्यानस्यतिष्ठतस्मि-	
न्नयो मातरिश्वा दधाति	ईशा. ४
तद्धा नृपस्य न विवेह	छान्दो. ६।१२।१
तद्धासुराः पाप्मना विविदुः	छां. १।२।४, ५, ६
तद्धास्यान्ततः क्षीयत एव (कमे)	बृह. १।४।१५

तद्धि तपः, तद्धि तपः	तैत्ति. १।१।१
तद्धि तपः स्वस्ति तपः (व्रतेऽप्रमादः)	
काश्यामेव मुक्तिकामानाम् ,	
न त्याज्यं न त्याज्यम्	भस्मजा. २।८
तद्धैदं तर्ह्यव्याकृतमासीत्तन्नाम-	बृह. १।४।७
रूपाभ्यामेव व्याक्रियते	
तद्धैके प्राजापत्यामिष्टिं कुर्वन्त्यथवा	
न कुर्यादाभेय्यामेव कुर्यात्	ना.प. ३।७७
तद्धैके प्राजापत्यामेवष्टिं कुर्वन्ति	
तदु तथा न कुर्यात् [जा.बा. ४+ प.हं.प. २	
तद्धैतद्वोर आङ्गिरसः कृष्णाय	
देवकीपुत्रायोक्त्वोवाचा-	
पिपास एव स बभूव	छान्दो. ३।१७।६
तद्धैतत्सत्यकामो जाबालो गोश्रुतये	
वैयाघ्रपद्यायोक्त्वोवाच यद्यप्ये-	
नच्छुष्काय स्थाणवे ब्रूयाज्जायेरन्ने-	
वास्मिच्छास्वाः प्ररोहेयुः पलाशानि	छान्दो. ५।२।३
तद्धैतत्सत्ये प्रतिष्ठितम् (मा. पा.)	बृ.उ. ५।४।१
तद्धैतदुद्दालकायारुणये ज्येष्ठायपुत्राय	
पिता ब्रह्म प्रोवाच	छान्दो. ३।११।४
तद्धैतदेके नानाछन्दसां सहस्रं	
प्रतिजानते	१ऐत. ३।५।१
तद्धैतदेतदेव तदास सत्यमेव (मा.पा.)	बृ.उ. ५।४।१
तद्धैतद्ब्रह्मा प्रजापतय उवाच,	
प्रजापतिर्भनवे (एतामुपनिषदं)	छान्दो. ३।११।४
तद्धैतल्लोकजिदेव न हैवालोक्त्यताया	
आशास्ति	बृह. १।३।२८
तद्धैव हंसो हंसमभ्युवाद-हो हो हि	
भल्लाक्ष भल्लाक्ष जानश्रुतेः पौत्रा-	
यणस्य समं दिवाज्योतिरावतं	
तन्मा प्रसाक्ष्णीः	छान्दो. ४।१।२
तद्धैषां विजङ्गौ, तेभ्यो ह प्रादुर्बभूव	
तत्र व्यजानन्त किमिदं	
यक्षमिति	केनो. ३।२
तद्ध्यानबलयोगेन धारणाभि-	
निकृन्तयेत्	सुरिको. १३
तद्ध्यानं पूजनं कार्यं (सूर्यस्य)	
भेयस्काभैर्जितेन्द्रियैः	सूर्यता. १।११

तद्व्याख्यानं प्रथमैरङ्गैः षड्भिर्निष्पाद्यते.. भवसं. ३।२९
 तद्वोचुः को नो वसिष्ठ इति बृह. ६।१।७
 तद्वोभये देवासुग अनुबुबुधिरैः
 ते होचुर्हन्त तमात्मान-
 मन्विच्छामः छान्दो. ८।७।२
 तद्वद्व्यस्तदात्मानः भ.गी. ९।१७
 तद्वद्व्यस्तदालापास्तद्विचेष्टास्तदा-
 त्मकाः (उपास्यदेवतायाः) सामर. २५
 तद्वद्वा, स आत्मा, अज्ञान्यन्या देवताः तैत्ति. १।५।१
 तद्वद्वा चानृतं शुक्रं सा गतिः मैत्रा. ६।२४
 तद्वद्वाणस्तदध्यात्मं तद्विष्णो-
 स्तत्परायणम् ते.विं. १।९
 तद्वद्वागः परिमर इत्युपासीत तैत्ति. ३।१०।४
 तद्वद्वा तदमृतं, स आत्मा छान्दो. ८।१४।१
 तद्वद्वा तदुपासितव्यमेवैतत् [याज्ञव. १ + ना.प. ३।७७
 तद्वद्वा तत्परं धाम तद्व्येयं मोक्ष-
 काङ्क्षिणाम् । श्रुतिवाक्योदितं भवसं. ३।५
 सूक्ष्मं तद्विष्णोः परमं पदम्
 तद्वद्वा तापत्रयातीतं षट्शिविनि-
 रुक्तं षड्भिर्वर्जितं पञ्चकोशा-
 तीतं... एवमादिसर्वविलक्षणं
 भवति मुद्रलो. ४।१
 तद्वद्वा परमं शान्तं तद्वद्वास्मि परं
 पदम् । पञ्चब्रह्म परं विद्यात्.. पंचब्र. २०
 तद्वद्वा ब्रह्म तत्परम् । तदध्यासेन
 लभ्येत पूर्वजन्मार्जितात्मनाम् कुंडिको. २०
 तद्वद्वा मनस्सहकारिचक्षुषान्त-
 दृष्ट्या वेद्यं... अद्वयता. ६
 तद्वद्वा नन्दमद्वन्द्वं निर्गुणं सत्यचिद्वनम्,
 विदित्वा स्वात्मनो रूपं (स्वात्म-
 रूपेण) न विमेति कुतश्चन वराहो. २।२०
 [महो. ४।७०+ कठरु. ३७
 तद्वद्वाभिष्टूयमानं महो देवो भुवना-
 न्यानिवेश मैत्रा. ६।३८
 तद्वद्वायतनं महत् (भुवोर्मध्ये) ध्या.विं. ४०
 तद्वद्वास्मि न संशयः अ.पू. ५।६५
 तद्वद्वास्मि परं पदम् । पञ्चब्रह्म
 परं विद्यात्.. पंच. २०

तद्वद्वाहमस्मीति ब्रह्मप्रणवमनुस्मरन्
 सन्न्यासेन देहत्यागं करोति
 स कृतकृत्यो भवति ना. प. ३।८७
 तद्वद्वाहमिति ज्ञात्वा कृतकृत्यो भवानप
 तद्वद्वाहमिति ज्ञात्वा ब्रह्मसम्पद्यते
 क्रमात् । [त्रि.ता. ५।८+ ब्र. विं. ८
 तद्वद्वाहमिति ज्ञात्वा सर्वबंधैः प्रमुच्यते
 तद्वद्वात्यभिधीयते कैव. १७
 तद्वद्वात्युपासीत, ब्रह्मवान् भवति ना.उ.ता. १।९
 तद्वद्वाहमस्मीति कृतकृत्यो भवति तैत्ति. ३।१०।४
 तद्वद्वा ये लब्धकामाश्च भुक्त्वा प.हं.प. ९
 तथापदं परमं यान्ति ते च रा. पू. ५।१०
 तद्वद्वति यत्रैते देवास्तदप्राप्य
 तदमृतो भवति, यदमृता देवाः... कौ. त. २।१४
 तद्वद्वत्यल्पमेधसाम् भ. गी. ७।२३
 तद्वत्स गायत्र्या सम्प्रोक्ष्य... रुद्र-
 मन्त्रैः पुनरभ्युक्ष्य शुद्धदेशे सं-
 स्थापयेत् भस्मजा. १।३
 तद्वामात्रमिदं विधमिति न स्यात्ततः
 पृथक् । जगद्वेदोऽपि तद्वानं.. महो. २।७
 तद्व्वाविताः प्रपद्यन्ते पुनर्जन्म-
 विवर्जिताः क्षुरिको. २०
 तद्व्वासकं किमिति चेदुच्यते सच्छब्द-
 वाच्यमविद्याशबलं ब्रह्म त्रि.ता. १।९
 तद्विच्वा कण्ठमायाति तां नाडीं
 पूरयन्.. क्षुरिको. ११
 तद्व्यो दर्शनेन गुणरहिताकाशं भवति अद्वयता. ४
 तद्व्युवः स्वर्लक्षणमोक्षार एव राघोप. २।२
 तद्व्युस्थं भूस्थो वा विश्वरूपस्तद्व्युः
 प्राणः भूरसि भुवोऽसि सुवरसि
 भूर्भूतये स्वाहा पारमा. ५।६
 तद्य इत्थं विदुषं चेमेऽरण्ये श्रद्धातप
 इत्युपासते छान्दो. ९।१०।१
 तद्य इमे वीणायां गायन्त्येतं ते
 गायन्ति तस्मात्ते धनसनयः छान्दो. १।७।६
 तद्य इह रमणीयचरणा अभ्यासो ह
 यत्ते रमणीयां योनिमापयेत् छान्दो. ५।१०।७

तद्य इहात्मानमननुविद्य ब्रजन्त्येताः-

असत्यात्कामाः स्तेषां सर्वेषु लोके-

ष्वकामचारी भवति

छान्दो. ८।१।६

तद्य एवैतं ब्रह्मलोकं ब्रह्मचर्येणानु-

विन्दन्ति तेषामेवैष ब्रह्मलोकः...

छान्दो. ८।४।३

तद्य एवैतावरं च वै ण्यं चार्णवौ...

छां.उ. ८।५।४

तद्य एवैता वरं च ण्यं चार्णवौ

ब्रह्मलोके ब्रह्मचर्येणानुविन्दति

तेषामेवैष ब्रह्मलोकः..

छान्दो. ८।५।४

तद्यत्किञ्चोमित्याहात्रैवास्मै तद्विच्यते

१ ऐत. ३।६।६

तद्यत्तत्सत्यमसौ स आदित्यः

बृह. ५।५।२

तद्यत्रैतत्सुप्तः समस्तः सम्प्रसन्नः स्वप्नं

न विजानात्यासु तदा नाडीषु

सुप्तो भवति

छान्दो. ८।६।३

तद्यत्रैतत्सुप्तः समस्तः सम्प्रसन्नः

स्वप्नं न विजानाति एष आत्मेति

छान्दो. ८।११।१

तद्यत्पराभावयन्त तस्मादोङ्कारः

पूर्वमुच्चार्यते

२ प्रणवो. ८

तद्यत्प्रथमममृतं तद्वसव उपजीव-

न्त्यमिता मुखेन

छान्दो. ३।६।१

तद्यत्सर्वं दधुतम्, अथ यत्ति तन्मर्त्यम्

छान्दो. ८।३।५

तद्यत् स्वेनैव रूपेणाविस्तरामगच्छत्

शौनको. ४।४

तद्यथा क्षुरः क्षुरधानेऽवहितः स्या-

द्विधम्मरो वा विश्वं भरकुलायः

कौ.उ. ४।१९

तद्यथा गोनायोऽध्वनः नाय

इत्येवं तदप आचक्षते

छांदो. ६।८।३, ५

तद्यथा तृणजलायुका तृणस्यान्तं

गत्वाऽन्यमाक्रममाक्रम्यात्मा-

नमुपसः इत्येवमेवायमात्मा..

बृह. ४।४।३

तद्यथाऽनः सुसमाहितमुत्स-

सर्जयायात्

बृह. ४।३।३५

तद्यथा महापथ आतत उभौ प्रामौ

गच्छतीम चायुं चैवमेवैता

आदित्यस्य इमय उभौ

लोकौ गच्छन्ति

छान्दो. ८।६।२

तद्यथा-रथेन भावयन्त्यथचक्रे पर्यवेक्षत

एवमहोरात्रे पर्यवेक्षत

कौ.उ. १।४

तद्यथापि हिरण्यनिधिं निहित-

मक्षेत्रज्ञा उपर्युपरि सञ्चरन्तो

न विन्देयुः

छान्दो. ८।३।२

तद्यथा पेशस्कारी पेशसो मात्रामु-

पादायान्यन्नवतरं कल्याणतरं

रूपं तनुते, एवमेवायमात्मा..

बृह. ४।४।४

तद्यथा प्रियया स्त्रिया सम्परिष्वक्तो

न बाह्यं किञ्चन वेद, नान्तरं,

एवमेवाऽयं पुरुषः...

बृह. ४।३।२१

तद्यथा-बटरकाणि सम्पतन्तीव

दृश्यन्ते तानि यदा न पश्येत्

तदप्येवमेव विद्यात्

३ ऐत. २।४।६

तद्यथा-बाह्यात्माऽन्तरात्मा परमात्मा

चेति (आत्मत्रयम्)

१ आत्मी. १

तद्यथा-मक्षिका मधुकरराजान-

मुत्कामन्तं सर्वा एषोत्कामन्ते

प्रश्नो. २।४

तद्यथा-मधुमक्षिका मधुकरराजानं

...(मा. पा.)

प्रश्नो. २।४

तद्यथा महामत्स्य उभे कूलेऽनुसञ्च-

रति पूर्वचापरं च एवमेवायं पुरुषः..

बृह. ४।३।१८

तद्यथाऽऽघ्नं बौदुंबरं वा पिप्पलं

वा बन्धनात्प्रमुच्यते एवमेवायं

पुरुष एभ्योऽङ्गेभ्यः सम्प्रमुच्य..

बृह. ४।३।१६

तद्यथा रथनाभौ च रथनेमौ चाराः

सर्वेऽसमर्पिता एवमेवास्मिन्नात्मनि..

बृह. २।५।१५

सर्वाणि भूतानि सर्वा देवाः..

तद्यथा रथस्यारेषु नेमिरर्पितो

नाभावरा अर्पिताः

कौ.उ. ३।९

तद्यथा राजानमायान्तमुग्धाः प्रत्ये-

नसः सूतग्रामण्योऽनैः पानैराव-

स्रथैः प्रतिकल्पन्तेऽयमायात्य-

यमागच्छतीत्येवमेवममात्मानं..

बृह. ४।३।३०

तद्यथा राजानं प्रिययाऽन्तमुग्धाः

प्रत्येनसः सूतग्रामण्योऽभिस-

मायान्त्येवमेवममात्मानमन्त-

काले सर्वे प्राणा अभिस-

मायन्ति

बृह. ४।३।३८

तद्यथा छवणेन सुवर्णं सन्वध्या-

त्सुवर्णेन रजतं रजतेन तपु..

छान्दो. ४।१।५५

तद्यथा-वातो वाति, प्रजा निर्मु-
च्यते, एवमेतथा..

संहितो. १।३

तद्यथा शङ्कुना सर्वाणि पर्णानि

संतुण्णान्येवमोङ्कारेण

सर्वा वाक् सन्तुण्णा

छान्दो. २।२३।३

तद्यथा श्रेष्ठैः स्वैर्भुङ्क्ते यथा वा
श्रेष्ठिनं स्वा भुञ्जन्त एवमेवैष

प्राज्ञ आत्मैतैरात्मभिर्भुङ्क्ते

कौ.उ. ४।२०

तद्यथाऽसौ मात्रा पूर्वरूपोत्तररूपे...

साम तद्भवति सामैवाहं संहितां
मन्य इति

३ ऐत. १।५।३

तद्यथा स्थूलया गयाश्राद्धं कृतं

भवेत् स्वधासह पितृणाम्

इतिहा. १

तद्यथाऽहिर्निर्वयनी वल्मीके मृता

प्रत्यस्ता शयीत एवमेवेदं

शरीरं शेते

बृह. ४।४।७

तद्यथेषीकातूलमग्नौ प्रोतं प्रदूयेत,

एवमेव* हास्य सर्वे पाप्मानः

प्रदूयन्ते यः.. अग्निहोत्रं जुहोति

छान्दो. ५।२४।३

तद्यथेह कर्मजितो लोकः क्षीयते,

एवमेवामुत्र पुण्यजितो लोकः..

छान्दो. ८।१।६

तद्यथैतच्छास्त्राणां श्रीमत्तमं यश-

स्वितमं... भवति तथो एवैवं

विद्वान् सर्वेषां.. श्रीमत्तमः..

कौ.त. २।६

तद्यथैतान्यमुष्मादाकाशात्समुत्थाय

परंज्योतिरुपसम्पद्य स्वेन स्वेन

रूपेणाभिनिष्पद्यन्ते

छान्दो. ८।१२।२

तद्यदपा* शर आसीत्समहन्यत

सा पृथिव्यभवत्

बृह. १।२।२

तद्यदपीदं शरीरमन्धं भवति (मा.पा.)

छान्.उ. ८।१०।३

तद्यदस्येदं विश्वं मित्रमासीद्यदिदं

किञ्च तस्माद्विश्वा मित्र

इत्याचक्षते

१ ऐत. २।१।४

तद्यथा मृत्युमत्यमुच्यत स

आदित्योऽभवत्

बृह. १।३।१४

तद्यथा मृत्युमत्यमुच्यत स चन्द्रमा

अभवत्

बृह. १।३।१६

तद्यथा मृत्युमत्यमुच्यत तदिदोऽभवत्

बृह. १।३।१५

तद्यदा स्त्रियां सिञ्चति, अथैनं

जनयति, तदस्य प्रथमं जन्म

२ ऐत. ४।१

तद्यदि तमादुरमुं यजामुं यजेति

बृह. १।४।६

तद्यदिदमस्मिन्नन्तः पुरुषे ज्योति-

स्तस्यैषा दृष्टिः

छान्दो. ३।१३।७

तद्यदिदमाहुः संवत्सरं पयसा जुह्व-

दपुर्न मृत्युं जयतीति

बृह. १।५।२

तद्यदिदं चक्षुः सोऽसावादित्यः

सोऽर्ध्वयुः स मुक्तिः सा मुक्तिः

बृह. ३।१।४

तद्यदिदं मनः सोऽसौ चन्द्रः

स ब्रह्मा स मुक्तिः

बृह. ३।१।६

तद्यदिह वा एवं विद्वांस उभौ

पर्वतावभिप्रवर्तेयाताम्

कौ.त. २।१।३

तद्यदेतस्त्रियां लोहितं भवति,

अग्नेस्तद्रूपम्

१ ऐत. ३।७।२

तद्यदेतदिदम्मयोऽदोमयः (आत्मा)

तद्यदेवैतद्बृहती सहस्रमनुष्टुप्सम्पन्नं

भवति

१ ऐत. ३।६।३

तद्यद्रयास्तत्रे तस्माद्वायत्री नाम

तद्यद्रक्तं प्रथममागच्छेत्तद्वोमीयम्

बृह. ५।१४।४

तद्यद्यपीदं* शरीरमन्धं

अवत्यनन्धः स भवति

छान्दो. ५।१९।१

तद्यद्यप्यस्मिन् सर्पिर्वोदकं वा

सिञ्चन्ति वर्त्तनी एव

गच्छति

छान्दो. ४।१५।१

तद्यद्रजतं सेयं पृथिवी

तद्यद्रेत आसीत्स संवत्सरोऽभवत्

छान्दो. ३।१९।२

तद्यद्रोदयन्ति तस्माद्बुद्धाः

तद्यद्यपीदं भगवः शरीरमन्धं भवति

बृह. १।२।४

तद्यद्यपीदं भगवः शरीरमन्धं भवति

तद्यद्यपीदं भगवः शरीरमन्धं भवति

छान्दो. ८।१०।३

तद्यद्य इत्युपासीत, तत्तेज इत्युपासीत

तद्यद्यः स इन्द्रः, स भूताना-

कौ.उ. २।६

मधिपतिः

१ ऐत. ३।७।१

तद्यस्मिन्नः प्रपन्नइदं शरीरमुत्थास्यति

तद्या इमा अक्ष* लोहिन्यो राजय-

१ ऐत. १।४।५

स्ताभिरेन* रुद्रोऽन्वायतः

तद्यावती क्षुरस्य धारा यावदा

बृह. २।२।२

मशिकायाः पत्रं तावानन्तराणां काशः बृह. ३।१।२

तथावदेव मनस्तावती द्यौस्तावा-
नखावादित्यः, तौ मिथुनः
समैताम्, ततः प्राणोऽजायत बृह. १।५।१२
तथावत्येव वाक्तावती पृथिवी,
तावानयमग्निः बृह. १।५।११
तथावानेव प्राणस्तावत्य आपस्तावानसौ
चन्द्रः, त एते सर्वे एव समाः बृह. १।५।१३
तद्युक्तस्तन्मयो जन्तुः ना. वि. १९
तद्येयं वाक् सोऽयमग्निः स होता
स मुक्तिः साऽतिमुक्तिः बृह. ३।१।३
तद्ये ह वै तत्प्रजापतिव्रतं चरन्ति,
ये मिथुनमुत्पादयन्ते तेषा-
मेवैष ब्रह्मलोको येषां तपो ब्रह्म-
चर्यं येषु सत्यं प्रतिष्ठितम् प्रश्नो. १।१९
तद्येह वै तदिष्टापूर्ते कृतमित्युपासते
ते चान्द्रमसमेव लोकमभिजयन्ते प्रश्नो. १।९
तद्यैतत् (तद्वयेतत्) अधीते वा
भाषते वा वाचि तदा
प्राणो भवति (?) ३ एते. १।६।६
तद्योगं च द्विधा विद्धि पूर्वोत्तर-
विधानतः । पूर्वं तु तारकं विद्या-
दसनस्कम् .. [मं. ब्रा. १।४+ अद्वयता. ५
तद्योगैरिति गम्यते भ. गी. ५।५
तद्यो न स्पृशति प्रविष्टान्सङ्ग्यासी मैत्रा. ६।१०
तद्यो यो देवानां प्रत्यबुद्ध्यत स एव
तदभवत् बृह. १।४।१०
तद्योऽयं प्राणः स वायुः, स उद्गाता बृह. ३।१।५
तद्यो ह स्मेममधीते स ह स्मै
राजा भवति इतिहा. १
तद्योऽई सोऽसौ योऽसौ सोऽहम् १ एत. २।४।३
तद्वज्रः खल्वीरितं विषमत्वं प्रयाति मैत्रा. ५।९
तद्वहितं कर्म निष्कले रक्षांसि गृहीयुः कात्याय. १
तद्व्राजसमुदाहृतम् भ. गी. १।८।२४
तद्व्राजा ब्रह्मचर्यमाचरन्ति पा. ब्र. ५
तद्व्राजमद्रपरं व्योतीरसोऽहमोश् रामो. २।४
तद्व्राक्षं करेण स्पृष्ट्वा धारणमात्रेण
द्विसहस्रगोदानफलं भवति रु. जा. ४५
तद्व्राक्षे कर्णयोर्धार्यमाणे एकादश-
सहस्रगोप्रदानफलं भवति रु. जा. ४५

तद्व्राक्षे वाग्विषये कृते दशगोप्र-
दानेन यत्फलमवाप्नोतितत्फलमश्नुते रु. जा. ४४
तद्व्राक्षे शिरसि धार्यमाणे कोटिगो-
प्रदानफलं भवति रु. जा. ४५
तद्रूपप्रत्यये चैका सन्ततिश्चान्य-
निःस्पृहा । तद्व्रथानं प्रथमैरङ्गैः.. भवसं. ३।२९
तद्रूपवशगा (योगिवशाः) नार्यः
काक्षन्ते तस्य सङ्गमम् १ यो.त. ६१
तद्रूपं रससंवलितमानन्दरसोऽयं
पुराविदो वदन्ति सामर. ३
तद्रूपं वै रजसोरूपं तद्रजः खल्वी-
रितं विषमत्वं प्रयाति (पा.) मैत्रा. ५।५
तद्रूपो भवति (परब्रह्मैव) मुद्रलो. ३।३
तद्रक्तारमवतु, अवतु माम् [२ एत. शां. तैत्ति. १।१३
तद्रक्तारमावीत्, आवीन्माम् तैत्ति. १।१३।१
तद्रज्जीवा इहात्मनि (नष्टघटाका-
शवत्) अद्वैत. ४
तद्रज्जीवाः सुखादिभिः अद्वैत. ५
तद्रदविद्यमानफलगुविषयसुखाशयाः
सर्वे जीवाः प्रधावन्त्यसार-
संसारचक्रे त्रि.म.ना.४।१०
तद्रक्तामा ये प्रविशन्ति सर्वे भ. गी. २।७०
तद्रदात्मनि देहत्वं पश्यत्यज्ञानयोगतः यो.शि. ४।२४
तद्रदापोगणापाये केशाः स्युः पाण्डुराः
क्रमात् । तेजःक्षये क्षुधा कान्ति-
नश्यते मारुतक्षये वराहो. ५।४
तद्रदुद्रातृयजमानौ भवतः संहिलो. २।३
तद्रदेव ज्ञैर्भोगं श्रीरवलोक्यते महो. ५।७२
तद्रदेहादिबन्धेभ्यो विमुक्तं ब्रह्मवि-
दुचम् । पश्यन्ति देहिबन्मूढाः २ आत्मो. १६
तद्रनमित्युपासितव्यं स य एतदेवं वेद केनो. ४।६
तद्रपुरपध्वस्तसंशयविपरीतमिध्या-
ज्ञानानां यो हेतुस्तेन नित्य-
निवृत्तः प.हंसो. ३
तद्रद्रह्मणि जीवत्वं वीक्ष्यमाणे
विनश्यति यो.शि. ४।१३
तद्रद्रह्मविदोऽप्यस्य ब्रह्माहमिति
वेदनम् २ आत्मो. ८

तद्वद्भूतसमागमः । क गताः पृथिवी-
पालाः.. वियोगसाक्षिणी येषां
भूमिरद्यापि तिष्ठति भवसं. १।२२
तद्वद् अथर्वणः शिरो देवकोशः
समुज्जितः । तत्प्राणोऽभिरक्षति.. अ.शिरः. ३।१४
तद्वद् अस्यैतदतिच्छन्दा अपहत-
पाप्माऽभयं रूपम् बृह. ४।३।२१
तद्वद् अस्यैतदाप्तकाममात्मकाममकामं
रूपं शोकान्तरम् बृह. ४।३।२१
तद्वद् इदं बृहतीसहस्रं सम्पन्नं
[१।१५।१ १।१५।१
तद्वद् एतत्परमं धाम मंत्रराजाध्याप-
कस्य यत्र सूर्यस्तपति... यत्र
गत्वा न निवर्तन्ते योगिनः नृ.पू. ५।१६
तद्वद् एतत्सुदर्शनं नाम चक्रं
सर्वकामिकं... नृ. पू. ५।७
तद्वद् एतदक्षरं गार्ग्यदृष्टं द्रष्टुं श्रुतं
श्रोत्रमतं मन्त्रविज्ञातं विज्ञातुं
नान्यदतोऽस्ति दृष्टुं; बृह. ३।८।११
तद्वद् एतदनस्यान्नमनो ह वै नाम
प्रत्यक्षम् छान्दो. ५।२।१
तद्वद् एतदनुज्ञाक्षरं यद्वि किञ्चानु-
जानात्योमित्येव छान्दो. १।१।८
तद्वद् एतद्ब्रह्माद्वयं ब्रह्मत्वात् नृसिंहो. ९।८
तद्वद् एतद्यदेतदादित्यस्य
परं कृष्णं रूपम् [छान्दो. ३।३।३ +३।४।३
तद्वद् एतद्यदेतदादित्यस्य मध्ये
क्षोभत इव छान्दो. ३।५।३
तद्वद् एतद्यदेतदादित्यस्य शुक्लं रूपं छान्दो. ३।२।३
तद्वद् एतद्यदेतदादित्यस्य रोहितं रूपं छान्दो. ३।१।४
तद्वद् एतद्वायुमागृह्णाकाशमभितपति छान्दो. ७।१।११
तद्वद् एतद्विदितं मीमांसितम् बृह. १।४।१६
तद्वद् एतन्मिथुनं यद्वार्कं च
प्राणश्चर्कं साम च छां. उ. १।१।५
तद्वद् वाऽजिघृक्षत्, तन्नाशकनो-
दाचा प्रदीतम् २।१२. ३।३
तद्वद् वाचवदिति सत्कर्मणा करोति [बृ. जा. १।१ + नृ. पू. १।१
तद्वद् वाचवदक्षुषा पश्यच्छिष्य एव कौ. उ. २।१४१

तद्वद् वाचवदक्षुषा पश्यच्छिष्येण
शृण्वन्मनसाध्यायच्छिष्य एव कौ. उ. २।१४
तद्वद् ऽऽत्मतत्त्वं प्रसमीक्ष्य देही एकः
कृतार्थो भवते वीतशोकः श्वेता. २।१४
तद्वद् सनासहितैश्चतुर्दशकरणैः शब्दाद्य-
भावेऽपिवासनामयाच्छब्दादीन्
यदोपलभते तदात्मनः स्वप्नम् सर्वसारो. ३
तद्वद् नरा सनयेदं स उग्रमावि-
ष्णुणोमि तन्यतुर्न दृष्टिम् बृह. ३।५।१६
तद्वद् अश्वरादिबाह्यप्रपञ्चोपरतो..
सर्वं जगदात्मत्वेन पश्यन्.. ब्रह्मा-
हमस्मीति... सर्वं यदयमात्मेति
भायवन्कृतकृत्यो भवति मं. ब्रा. २।८
तद्विजिज्ञासस्व, तद्वद्वेति तैत्ति. ३।१
तद्विजृम्भते यद्विद्योतते यद्विधूनुते बृह. १।१।११
तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्
समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् मुण्ड. १।२।१२
तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीरा
आनन्दरूपममृतं यद्विभाति मुण्ड. २।२।७
तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितर-
मुपमसार [तैत्ति. ३।२+ ३।४+१।५
तद्विदाप्रोति परम् ग. शो. ता. ४।१
तद्विद्धि प्रणिपातेन भ. गी. ४।३४
तद्विद्धि भरतर्षभ म. गी. १३।३७
तद्विनायकं परं ज्योती रसोऽह-
मित्यात्मानमादाय मनसा
ब्रह्मणैकीकुर्यात् ग. शो. १।४
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः
समिधते । विष्णोर्यत्परमं पदम् सुबालो. ६।२
[नृ. पू. ५।१६+रामो. ५।३१+ वराहो. ५।७।८
[पैङ्गलो. ४।२४+मुक्तिको. २।७८+ स्कन्दो. १५
[आरु. ५; तारसा. ९; ऋ. अ. १।२।७ मं. १.२२।२१
तद्विद्याद्यदिदं किञ्च ग. शो. ता. ३।१
तद्विद्याविषयं ब्रह्म... सत्यज्ञान-
सुखाद्वयम् [अ. पू. ४। २७+ कठह. १३
तद्विद्युल्लेखावच्छुक्नुमास्वरम् मं. ब्रा. २।२
तद्विद्वानक्षरं ध्यायेद्यश्नीच्छे-
च्छान्तिमात्मनः [अ. वि. १६+ त्रि. ता. ५।१६

तद्विद्वांसः श्रोत्रिया अशिष्यन्त

आत्रमन्त्यशित्वाऽऽचामन्त्येतमेव.. बृह. ६।१।१

तद्विद्वां विष्णवे विश्वरूपाय स्वाहा पारमा. ५।५

तद्विष्णुरीशानो ब्रह्म नृसिंहो. १।६

तद्विष्णोस्तत्परायणम् ते.वि. १।९

तद्विष्णोः परमं पदं यत्र गत्वा न निवर्तन्ते-योगिनः ना.प. १।२२

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यति

सुरयः [सुबालो.६।१+ कठो. ३।९

[ना.वि.४७+ वासु.२९+ ध्या.वि. २५

[त्रि.ता.४।४+मं.ब्रा.५।१+ यो.शि.६।२१

[वराहो.५।७७+पैङ्ग.४।२४+ रामो. ५।३०

[शाण्डिल्यो. १।७।३७+ तारसा.३।९

[नृ.पू. ५।१६+ गो.पू. ३।११+ स्कन्दो. १४

[आरुणि. ५ +सुदर्श.१०+ वा. सं. ६।५

[ऋ.अ.१।२।७+ =मं.१।२२।२०

तद्विद्वां वाचिकं मानसं चेति (जपकर्म) शां. १।२।१

तद्वेत्ता (सगुणनिर्गुणज्ञः) विमुक्तः मं. ब्रा. २।१

तद्वेदगुह्योपनिषत्सु गूढं तद्ब्रह्मा

वेदयते ब्रह्मयोनिम् । ये..

विदुस्ते.. अमृता वै बभूवुः श्वेताश्व. ५।६

तद्वै खलुलोकद्वारं विदुषां (मा.पा.) छां. उ. ८।६।५

तद्वै खलु समृद्धिमेव व्यायभुपासीत संहितो. १।३

तद्वै तत्सत्यं बले प्रतिष्ठितम् बृह. ५।१४।४

तद्वै तत्सत्ये प्रतिष्ठितम् बृह. ५।१४।४

तद्वै तदेव तदास सत्यमेव बृह. ४।४।१

तद्वै देवं मनो येनानन्येव भवत्यथो

शोचति बृह. १।५।१९

तद्वै परं ब्रह्मणेश इत्यात्मानं मन्यते ग.शो.ता. ३।३

तद्वै सर्वतः पश्यति स्म न किञ्चिद्दर्श ग.शो.ता. ३।४

तद्वै संहर्ताऽभूद्ब्रह्म, य एवं वेद ग.शो.ता. ३।१३

तद्वै एवं प्राणो अभवः चित्त्यु. १४।४

तद्वै भयं वै प्रपद्येन देह श्वेता. १।१३

तद्वै श्वरत्तद्वित्यममितोऽभ्रयत छान्दो. ३।१।४

[३।२।३+३।४।३— ३।५।८

तन्तुना मणिवत्प्रोतो योऽत्र कंदः

सुषुप्त्या । तन्नाभिमण्डले चक्रं

प्रोच्यते मणिपूरकम् यो. च. १२

तन्तुपञ्जरमध्यस्थलूतिका यथा

भ्रमति तथा चासौ तत्र

प्राणश्चरति (नाभिचक्रे)

तन्त्रराजाय विद्महे महातन्त्राय

धीमहि । तन्नास्तन्त्रः प्रचोदयात्

तन्द्रा देवदत्तकर्म वनदु. १५१

तन्न इन्द्रो वरुणो बृहस्पतिः शाण्डि. १।४।४

सविता च पुनन्तु पुनः पुनः

तन्न कश्चन पाप्मा स्पृशति महाना. ५।१६

तन्न तथा कुर्याद्वायत्रीमेव छान्दो. ८।६।३

सावित्री (मा.पा.) बृ.उ. ५।१४।५

तन्नम इत्युपासीत, नम्यन्तेऽस्मै

कामाः, तद्रक्षेत्युपासीत तैत्ति. ३।१०।४

तन्नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो यत्र

देवानां पतिरेकोऽधिवासः मुण्ड. २।५

तन्न व्यजानन्त (देवाः) किमिदं

यक्षमिति केनो. ३।२

तन्न शशाक दग्धुं (अग्निः-तृणं) केनो. ३।६

तन्न शशाकादातुं (वायुः-तृणं) केनो. ३।१०

तन्नः सिंहः प्रचोदयात् नृ.पू. ४।३

तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् सूर्यो. ७

तन्नाकं तद्विशोकम् छान्दो. २।१०।५

तन्नातीयात् । नहत्यायन् पूर्वं १ ऐत. १।१।१

तन्नादविन्दुकलातीतमखण्डमण्डलं मं. ब्रा. २।१

तन्नादाद्विन्दुः, बिन्दोरोद्धारः सीतो. ११

तन्नाभिचक्रमित्युक्तं कुकुटारुयमिव

स्थितम् । गान्धारी हस्तिजिह्वाच

तस्मान्नेत्रद्वयं गते यो.शि. ५।२१

तन्नाभिमण्डलं चक्रं प्रोच्यते

मणिपूरकम् व्या.वि. ४९

तन्नामरूपाभ्यामेव व्याक्रियते-

ऽसौनामाऽयमिदं रूप इति बृह. १।४।७

तन्नाम सङ्कीर्तयन् विष्णुसायुज्यं

गच्छति सङ्कर्षणो. ३

तन्नाशक्तोऽक्षुषा महीतुम् १ ऐत. ३।५

तन्नाशक्तोऽच्छिभेन महीतुम् २ ऐत. ३।५

तन्नाशक्तोऽच्छोत्रेण महीतुम् ३ ऐत. ३।६

तन्नाशक्तोऽप्योनेन महीतुम् ४ ऐत. ३।४

तन्नाशकोत्त्वचा ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।७
 तन्नाशकोद्वाचा ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।३
 तन्नाशकोन्मनसा ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।८
 तन्नित्यमुक्तमविक्रियम् पैङ्गलो. १।१
 तन्नित्यं शाम्भवीमुद्रासमन्वितम् मं. ब्रा. ३।१
 तन्निधनं ५ स ५शाम्यति तन्निधन- छान्दो. २।१२।१
 मेतद्रथन्तरमग्नौ प्रोतम्
 तन्निरासस्तु निस्सङ्कल्पक्षमालध्वा- मं. ब्रा. १।१
 हाराप्रमादतातत्त्वसेवनम् सर्वसारो. २
 तन्निवृत्तिर्मोक्षः (बन्धनिवृत्तिः) बराहो. ४।१
 तनुमानसी तृतीया (योगभूमिका)
 तनुवा मे सह नमस्ते अस्तु मा महि ५ सीः महाना. १६।६
 तनुवासनमित्युच्चैःपदाद्योद्यतमुच्यते
 अवासनं मनो कर्तुं.. अ. पू. १।३०
 तनुं त्यजतु वा तीर्थे श्वपचस्य
 गृहेऽथवा । ज्ञानसम्पत्ति- अ. पू. ५।१०१
 समये मुक्तोऽसौ.. महाना. ३१०
 तन्न आदित्यः प्रचोदयात् बा. मं. २२
 तन्न भुवेहमुरणो बोभुवे कम महाना. ३।११
 तन्नो अग्निः प्रचोदयात् महाना. ३।६
 तन्नो गरुडः प्रचोदयात् महाना. ३।५
 तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् ग. शो. ता. २।१
 तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् [गणप. ८ वन. दु. १४०
 तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् महाना. ३।४
 तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् महाना. ३।९
 तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात् महाना. ३।७
 तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् नृ. पू. ४।३
 तन्नो महालक्ष्मीः प्रचोदयात् रामर. २।८७
 तन्नो रामः प्रचोदयात् त्रि. म. ना. ७।११
 तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् पारायणो. १
 [महाना. ३।१२, २+३।७+ महाना. ३।८
 तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् सामर. १०२
 तन्मण्डलमुपासमानस्तन्मयतांप्रपद्यते मं. ब्रा. २।२
 तन्मध्येऽखण्डब्रह्मतेजोमण्डलम् मं. ब्रा. २।१
 तन्मध्ये जगद्धीनम् मं. ब्रा. २।१
 तन्मध्ये तदित्कोटिसमानकान्त्या
 मृणालसूत्रवत्सूत्रमाङ्गीकुण्डलिनी अद्वयवा. २

तन्मध्ये तत्त्वप्रकाशो भवति मं. ब्रा. २।१
 तन्मध्ये शिवागारमभ्यर्हितम्
 (काश्याम्) भस्मजा. २।९
 तन्मध्ये (देहांतर्गताभिस्थाने) शुभा
 तन्वी पावकी शिखा भवति शांदि. १।४।३
 तन्मध्ये सुधाचन्द्रमण्डलम्, तन्मध्ये-
 ऽखण्डब्रह्मतेजोमण्डलम् मं. ब्रा. २।२
 तन्मन इत्युपासीत, मानवान्भवति तैत्ति. ३।१०-३
 तन्मनसाऽजिघृक्षत्, तन्नाशको-
 न्मनसा ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।८
 तन्मनः स पर्यन्यः, तदेतत्कीर्तिश्च
 व्युष्टिश्चेत्युपासीत छान्दो. ३।१३।४
 तन्मनोऽकुरुतात्मन्वी स्यामिति बृह. १।२।१
 तन्मनो दिशं दिशं पतित्वाऽन्यत्रा-
 यतनमलब्ध्वा प्राणमेवोपश्रयते छान्दो. ६।८।२
 तन्मनो विलयं याति तद्विष्णोः
 परमं पदम् मं. ब्रा. ५।१
 तन्मययज्ञो नादानुसन्धानम् पा. ब्र. ३
 तन्मयविकारो जीवः । परमात्म-
 स्वरूपो हंसः पा. ब्र. ३
 तन्मयस्तत्परश्चैव मूर्ध्नि निर्वाण-
 मृच्छति दुर्वासो. १।१४
 तन्मयं (ब्रह्ममयं) तदेवेति
 संहरेदोमिति वृसिहो. १।२
 तन्मयाशिखा । चिन्मयंचोत्सृष्टिदण्डम् निर्वाणो. ६
 तन्मयैव स्फुरत्यच्छा तन्नैवोर्मिरि-
 वार्णवे । आत्मन्येवात्मना
 व्योम्नि.... महो. ५।११९
 तन्मरणमेवावभृथः (मा. पा.) छां. उ. ३।१७।५
 तन्मरणमेवास्यावभृथः छां. उ. ३।१७।५
 तन्मह इत्युपासीत, महान् भवति तैत्ति. ३।१०।३
 तन्मातृपितृजायापत्यवर्गं च
 मुक्तं भवति मं. ब्रा. ५।२
 तन्मात्राणि भूतादौ विलीयन्ते सुबालो. २।२
 तन्मात्राणि सदस्याः (शारीर-
 यज्ञस्य) प्राहो. ४।३
 तन्माप्रधाङ्गीस्तत्त्वा मा प्रधाङ्गीः
 (मा. पा.) छां. उ. ४।१।२
 तन्मा प्रसाङ्गीस्तत्त्वा मा प्रसाङ्गीः छान्दो. ४।१।२

तन्माभगवान्छोकस्य पारं
 तारयतु (मा.पा.) छां.उ.७।१३
 तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु, अवतुमां,
 अवतुवक्तारम्, ॐ शान्तिः ३
 [२ ऐत.शान्तिः+कौलो.शां.+ तैत्ति.शां.
 तन्मासावीत्, तद्वक्तारमावीत्,
 आवीन्माम्, आवीद्वक्तारम् तैत्ति. १।२२।१
 तन्माया चेति सकलं परंब्रह्मवत् गो.पू.१।३
 तन्मायाशबलमजनीत्याह ग.शो.४।२
 तन्मुखं रुद्र इत्याहुस्तद्विदुः
 सर्वदेवताः रु.जा. ४२
 तन्मुद्रारुढज्ञानिनिवासाद्भूमिः
 पवित्रा भवति अद्वयता. ७
 तन्मूलादिन्दुपर्यन्तं विभाति...
 योगिभिः सततं ध्येयं अमन. २।८
 तन्मूर्त्युमुखात् प्रमुच्यते कठो. ३।१५
 तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु [२शिवसं. २—२७
 तन्मे क्षेमतरं भवेत् भ.गी. १।४६
 तन्मे ब्रूहि मुनिश्चितम् भ.गी. ५।१
 तन्मं पुपुष्यन्मृतं वदामि बा.मं. १६
 तप इति तपो नानशनात्परं यद्धि
 परं तपस्तर्हर्षं तदुराधर्षं
 तस्मात्तपसि रमन्ते महाना. १६।१२
 तप इति तपोनित्यः पौरुशिष्टिः तैत्ति. १।९।१
 तप इति तपोलोकः । सत्य इति.... गायत्रीर. २
 सत्य इति सत्यः.. गायत्रीर. २
 तपनीयमयं तप्तजाम्बूनदप्रभ-
 मुद्यत्कौटिदिवाकरप्रभम् महाना. १६।१२
 (ब्रह्माण्डस्वरूपं) त्रि.म.ना. ६।२
 तपन्ते न निन्देत्, तद्वत्तम् छान्दो. २।१।४२
 तपमेवाग्नेवाग्नीसि होवाच १ऐत. २।३।४
 तपन्वित्तपन्तस्तपन् रोचनो रोच-
 मानः शोभनः शोभमानः.. वृ.पू. २।७
 तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति. १।९
 तपश्चास्मि तपस्विषु भ.गी. ७।९
 तपश्चरद्दे ये क्षुपवसन्त्यरण्ये शान्ता
 विद्वांसो भैक्षचर्यां चरन्तः । सूर्य-
 हारेण ते विरजाः प्रयान्ति.. मुण्ड. १।२।११

तपस ऋषयः सुवरन्वविन्दन् महाना. १७।२
 तपसा चीयते ब्रह्म ततोऽन्नमभि-
 जायते । अन्नात्प्राणा मनः सत्यं... मुण्ड. १।१।८
 तपसा देवो देवतामग्र आयन् महाना. १७।२
 तपसा प्राप्यते सत्त्वं सत्त्वात्स-
 म्प्राप्यते मनः । मनसा प्राप्यते मैत्रे. १।७।१+४।३
 ह्यात्मा ह्यात्मापत्त्या निवर्तते
 तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व,
 तपो ब्रह्मेति [तैत्ति. ३।२+ ३।४+३।५
 तपसा अद्धा, अद्धया मेधा...
 मनसा शान्तिः, शान्त्या चित्तं..
 स्मारेण विज्ञानं विज्ञानेनात्मानं
 वेदयति महाना. १७।१
 तपसा सपत्नान् प्रणुदामारातीस्तपसि
 सर्वं प्रतिष्ठितं, तस्मात्तपः परमं
 वदन्ति महाना. १७।२
 तपसि जुहोमि । भूर्भुवः सुवः
 चित्त्यु. ६।१
 तपसि सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मात्तपः
 परमं वदन्ति महाना. १७।२
 तपस्तपिबिधं नरैः भ.गी. १७।१७
 तपस्तपं कृतं च यत् भ.गी. १७।२८
 तपस्विभ्योऽधिको योगी भ.गी. ६।४६
 तपस्विभिः सर्वमस्म धार्यम् रुद्रोप. १
 तपस्विषु बहुज्ञेषु याजकेषु नृपेषु च ।
 बलवत्सु गुणाढ्येषु महो. ४।३४
 तपस्वी पुण्यो भवति य एवं विद्वान्
 स्वाध्यायमधीते सहवै. १६
 तपस्सन्तोषास्तिक्यदानेश्वरपूजन-
 सिद्धान्तश्रवणहीमतिनय-
 जपो व्रतानि दश नियमाः शांति. १।२
 तपः प्रभृतिना यस्मै हेतुनैव विना
 पुनः । भोगा इह न रोचन्ते स
 जीवनमुक्त उच्यते महो. २।४२
 तपः सन्तुष्टिरास्तिक्यं दानमाराधनं
 हरेः । वेदान्तश्रवणं.. त्रि.भा. २।३३
 तपः सन्तोषमास्तिक्यं दानमीश्वर-
 पूजनम् । सिद्धान्तश्रवणं चैव
 हीमैतिश्च जपो व्रतम् । एते च
 नियमाः [चराहो. ५।१३+ जा.व. २।१

तपः प्रभावादेवप्रसादाच्च ब्रह्म
 ह श्रेयसाश्वतरोऽथ विद्वान् श्वेता. ६।२१
 तपांश्च सर्वानि च यद्वदन्ति । यदि- भ.गी. ९।१९
 च्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते
 पदं संग्रेहेण ब्रवीम्योम् कठो. २।१५
 तपोर्द्वयसहस्राणि एकपादस्थितोनरः ।
 एतस्य ध्यानयोगस्य कलां
 नार्हन् विषोडशीम् पैङ्गलो. ४।१५
 तपो दम्भेन चैत्र यत् भ.गी. १७।१८
 तपो दानं यशोऽयशः भ.गी. १०।५
 तपोदीक्षासृषयः सुवर्विदः चित्त्यु. ११।९
 (तत्र) तपो नाम विध्युक्तकृच्छ्र-
 चान्द्रायणादिभिः शरीरशोषणं शांडि. १।२
 तपो नानशनात्परमु यद्वि परं तप-
 स्तदुर्द्ध्वं.. तस्मात्तपसि रमन्ते महाना. १६।१२
 तपो नित्यः पौरुशिष्टिः तैत्ति. १।९।१
 तपोनिधिं तपसां रयिन्दं...
 सुरवृन्दकत्रे स्वाहा पारमा. ७।१
 तपो ब्रह्मेति तैत्ति. ३।२+३,४,५
 तपो मानसमुच्यते भ.गी. १७।१६
 तपोऽवधिः परमा ब्राह्मणस्य इतिहा. ११
 तपोविजितचित्तस्तु निश्शब्दं देशमा-
 स्थितः । निःसङ्गतत्त्वयोगज्ञो
 निरपेक्षः शनैः शनैः क्षुरिको. २१
 तपो हि स्वाध्याय इत्युत्तमं नाकं
 रोहति सहवै. १८
 तप्तकाश्चनसङ्काशज्योतिर्मथूखा
 अपाङ्गान्ते भूमौ वा पश्यति
 तद्दृष्टिः स्थिराभवति अद्वयता. ३
 तप्तचामीकराकारंतडिलेखेव विस्फुरत् ध्या. बि. ४६
 तप्तोयःपिण्डवदेकं भिन्नवदवभासते
 (शिवः-ब्रह्म) त्रि.ब्रा. १।१
 तप्तो ब्रह्मचारी कुशलमग्नीन्परि-
 चचारीन्मात्वाग्रयः परिप्रबोचं
 मयूहस्मा इति छान्दो. ४।१०।२
 तप्तो ब्रह्मचारी कुशलं नः पर्यचारी-
 दन्तास्ते प्रमवामेवि, तस्मै होतुः छान्दो. ४।१०।४

ताप्यतापकरूपेण विभातमखिलं
 जगत् । प्रत्यगात्मतया भाति.. कठो. ३९
 तप्यन्ते ये तपो जनाः भ.गी. १७।५
 तप्स्याम्यहमित्यादित्यो भास्या-
 म्यहमिति चन्द्रमा एवमन्या
 देवताः.. बृह. १।५।२९
 तम एव यस्यायतनं हृदयं
 लोको मनो ज्योतिः.. बृह. ३।९।१४
 तम एके ज्योतिरेकेऽवकाशमेके
 परमं व्योमैक आत्मानमेक
 इति (आहुः) आर्षे. ३।३
 तमक्रतुः (तुं) पश्यति वीतशोको
 धातुः प्रसादान्महिमान-
 (मीशं) मात्मनः महाना. ८।१
 [ना.प. ९।१३+शरभो. १९+
 [पारमा. ९।३+श्वेता. ३।२०+
 तमग्निमभ्युवाद सत्यकाम इति
 तमन्य इत्तमनं परित्राद् पद एनं
 नियुजे परस्मिन् वा.सं. १
 तमन्ये श्वान उपसमेत्योचुरन्नं नो
 भगवानागायत्वशनायाम वा इति छान्दो. १।१२।२
 तमन्नुवन्-भवता मुख्येनेमान्
 सुराज्येमेति २प्रणवो. ७
 तमब्रवीत्प्रीयमाणो महात्मा वरं
 तवेहाद्य ददामि भूयः । तवैव
 नाम्ना भविताऽयमग्निः कठो. १।१६
 तमभिद्रुत्य पाप्मनाऽविध्यत् [बृह. १।३।२।-६
 तमभ्यतपत्तस्याभितप्तस्य
 मुखं निरभिद्यत् २प्रेत. १।४
 तमभ्यवदत्कोऽसीति कैतो. ३।४।८
 तमशनापिपासाभ्यामन्ववार्जत् २प्रेत. २।१
 तमशनायापिपासे अब्रूतामावाभ्याम-
 भिप्रजानीहि २प्रेत. २।५
 तमसआपः(भवन्ति)[अ.शिर. १।१५
 तमसस्तु परञ्ज्योतिः परमानन्द-
 लक्षणम् । पादत्रयात्मकं ब्रह्म. त्रि.म.ना. ६
 तमसः परमुच्यते भ.गी. १३।१
 साक्षी सर्वस्य साक्षी सुविही. २।२

तमसः साक्ष्यहं तुर्यतुर्योऽहं तमसः

परः । दिव्यो देवोऽस्मि दुर्देशः..

ब्र.वि. ९६

तमसा प्रस्तवज्ञानादप्रस्तोऽपि रवि-

र्जितैः । प्रस्त इत्युच्यते भ्रान्त्या

ब्रह्मात्वा वस्तुलक्षणम्

२ आत्मो. १५

तमसो द्रष्टा सर्वस्य द्रष्टा

नृसिंहो. १११

तमसो भूतादिः (जायते)

सुबालो. १११

तमसो मा ज्योतिर्गमय

बृ.उ. १।३।२८

[अक्षु. २+

चाक्षुषो. २

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि

भ.गी. १४।८

तमस्येतानि जायन्ते

भ.गी. १४।१३

तमहं कुमारमश्रुवं नाहमिमं वेद ।

यद्यहमिममवेदिषं कथं ते नावक्ष्यम्

प्रश्नो. ६।१

तमः परे देव एकीभवति

सुबालो. २।२

तमः श्वभ्रनिभं दृष्टं वर्षबुद्बुदस-

न्निभम् । नाशप्रायं सुखाद्धीनं

नाशोत्तरमभावगम्

वैतथ्य. ३२

तमः सत्त्वं रजस्तथा

भ.गी. १४।१०

तमः सर्वभूतमधुनाध्वरेण तं सत्त्वं-

मनुमविश्य संकेशयन्. परब्रह्मणे

परं ज्योतिषे स्वाहा

पारमा. १०।४

तमाकमसाकन्योभयान् पाप्मन

आनन्दाश्च पश्यति

बृह. ४।३।९

तमागतं पृच्छति कोऽसीति

कौ.त. १।२

तमाचार्यजायोवाच ब्रह्मचारिज्ञानं,

किं नु नाभासि

छान्दो. ४।१०।३

तमाचार्योऽभ्युवादोपकोसल ३ इति

छान्दो. ४।१४।१

तमात्मानमन्विच्छामो यमात्मान-

मन्विष्यथ सर्वाश्च लोका-

नाप्नोति

छान्दो. ८।७।२

तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा-

स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्

कठो. ५।१२

तमात्मानमुपासीत [श्वेता. ६।१२+

[अ. शिरः. ३।११+बृ. १+

ब्रह्मो. १७

[भवसं. ३।१७+ सुबालो.

सदानं. ६+

तमादित्यं नत्वा भो भगवन्नादित्या-

श्मत्तस्त्वमनुब्रूहि

मं.ब्रा. १।१

तमादित्यात् पुरुषो भास्करवर्णो

निष्कस्य स एनं ग्राह्यान्धकार

इतिहा. १

तमादिमध्यान्तविहीनमेकं विभुं...

ध्यात्वा मुनिर्नाच्छति भूतयोनिं

समस्तसाक्षि तमसः परस्तात्

कैव. ७

तमभित आसीना आहुर्जानासि मां

जानासि मामिति स यावदस्मा-

च्छरीरादुत्क्रान्तोभवतितावज्जानाति छान्दो. ८।६।४

तमाराध्य जगन्नाथं प्रणिपत्य

पितामहः-पप्रच्छ..

१यो.त. ३

तमाचार्योऽभ्युवाद सत्यकाम ३ इति छान्दो. ४।१।१

तमाह कोऽहमस्मीति सत्यमिति

ब्रूयात्

कौ.त. १।६

तमाहुरभ्यं पुरुषं महान्तम् [श्वेता. ३।१९ + ना.प. ९।१४

तमाहुः पण्डितं बुधाः

भ.गी. ४।१९

तमाहुः परमां गतिम्

भ.गी. ८।२१

तमिच्छन्ताववास्तामिति (मा.पा.)

‘किमिच्छन्ताववास्तां’ [इति तु

मुख्यः पाठः]

छां.उ. ८।७।३

तमितरः पप्रच्छ-कतमत्त्वमनार्तं

मन्यस इति [आर्षे. ५।१

+ ७।१।११

तमित्यं वित्पादेनैवाप आरोहति, तं

ब्रह्माह कोसीति तं प्रतिब्रूयात्

कौ.त. १।५

तमिदं सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते

परोक्षेण..

२ऐत. ३।१४

तमिन्द्र उवाच-ऋषे प्रियं वै मे

धामोपागाः..

१ऐत. ३।३.२

तमिन्द्र निर्जहि गर्भेण सावरं

सहेति (मा.पा.)

बृ.उ. ६।४।२३

तमिन्द्र निर्जहि गर्भेण सावरां

सहेति

बृ.उ. ६।४।२३

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं

धियं.. [वनदु. ४।९९, ७१, ८२+

[ऋ.अ. १।६।९९ = मं. १।८९।५+ वा. सं. २५।१८

तमीशानं पुरुषं देवमीड्यं ...

अ. शिरः. ३।८

तमीशानं वरदं देवमीड्यं निचाय्येमं

शान्तिमत्यन्तमेति

श्वेता. ४।११

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं... विदाम

देवं भुवनेशमीड्यम्

श्वेता. ६।७

तमुपदीक्ष्याभ्युवाद कुमार ३ इति बृह. ६।२।१
 तमुपनीय कृशानामवलानां चतु- छान्दो. ४।४।५
 शशता गा निराकृत्योवाच
 तमुवाच हृषीकेशः [१यो.त. ४+ भ.गी.२।१०
 तमु ह परः प्रत्युवाच कम्बर एव-
 मेतत्संत* सयुगवानमिव
 रैकमात्येति छान्दो. ४।१।३
 तमुचो मनुष्यलोकमुपनयन्ते, स तत्र..
 ब्रह्मचर्येण सम्पन्नो महिमान-
 मनुभवति प्रश्नो. ५।३
 तमुत्वा सम्प्रतिविदो मज्जन्ति कौ.त. १।४
 तमेकदन्तं गजवक्त्रमीशं विज्ञाय
 दुःखान्तमुपैति सद्यः हेरम्बो. ११
 तमेकमेव पश्यन्ति परिशुभ्रं
 विभुं द्विजाः मंत्रिको. १६
 तमेकनेमि (तमेकस्मिन्) त्रिवृतं
 षोडशान्तं शताधिरं त्रिंशति-
 म्रत्यराभिः । अष्टकैः षड्विंश-
 रूपैकपाशं त्रिमार्गभेदं.. [श्वेता. १।४+ ना.प. ९।३
 तमेकं नौविदं सच्चिदानन्दविग्रहं
 ... मरुद्गणोऽहं परमया
 स्तुत्या स्तोष्यामि गो.पू. ४।४
 तमेतन्नापुत्राय नान्तेवासिनं
 वा ब्रूयात् बृह. ६।३।१२
 तमेतमभिरित्यध्वर्यव उपासते मुद्गलो. ३।१
 तमेतमात्मानमेत आत्मनोऽन्ववस्यंति कौ.त. ४।२०
 तमेतमात्मानमोमितिब्रह्मणैकीकृत्य.. नृसिंहो. १।२
 तमेतमेष्टकं कर्ममयमात्मानमध्वर्युः
 संस्करोति कौ.उ. २।६
 तमेतं ब्राह्मणा शुश्रुवांसोऽनूचाना
 उपलभन्ते सुबालो. ९।१५
 तमेतं वेदानुबचनेन ब्राह्मणा विवि-
 दिषन्ति, यज्ञेन हानेन तपसाना-
 शक्येन बृह. ४।४।२२
 तमेतावन्तं कालमविभः बृह. १।२।४
 तमेताः सप्ताश्विनय उपतिष्ठन्ते बृह. २।२।२
 तमेतैर्नामभिरामन्त्रया चक्रे बृहन्
 पाण्डुरवासः बृह. २।१।१५

तमेतैर्नामभिरामन्त्रयांचक्रे बृहन्
 पाण्डुरवासः (मा. पा.) बृ.उ. २।१।१५
 तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये भ.गी. १।५।४
 तमेव तत्तेजः पृष्टविद्भुवं हैममुमां
 संश्लिष्य संश्लिष्य वसन्तं...
 शिवं मामेवाभिध्यायन्तो...
 मध्येव लीना भवन्ति भस्मजा. ३।१६
 तमेव धीरो विज्ञाय प्रज्ञां कुर्वीत
 ब्राह्मणः । नानुध्यायन्बहूच्छब्दा-
 न्वाचो विग्लापनं हि तत् बृह. ४।४।२१
 [अ.पू.४।३७+शाट्या. २३+ वराहो. ४।३३
 तमेव पापकारिणं मृतं पश्यन्नील-
 लोहितो भैरवस्तं पातयत्यस्त्र-
 मण्डलेज्जलज्ज्वलनकुण्डेष्वन्येष्वपि भस्मजा. ३।१६
 तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भाषा
 सर्वमिदं विभाति कठो. ५।१५
 [मुण्ड. २।२।१०+ श्वेता. ६।१४
 तमेव भुक्तिविरसं व्यापारौघं पुनः
 पुनः । दिवसे दिवसे कुर्वन्प्राज्ञः
 कस्मान्न लज्जते महो. ६।७६
 तमेव मृत्युममृतं तमाहुः चित्त्यु. १।४।१
 तमेव विदित्वाऽतिसृत्युमेति नान्यः
 पन्था विद्यतेऽयनाय वा.सं. ३।१।१८
 [+धेताधे. ३।८+६।१५
 तमेव शरणं गच्छ भ.गी. १८।६३
 तमेव सकला वेदाः कथयन्ति
 परां गतिम् भवसं. २।४९
 तमेवं ज्ञात्वा मृत्युपाशांश्छिनत्ति
 तमेव स्तन इवावलम्बते वेददेवयोनिः श्वेता. ४।१५
 तमेवं ज्ञात्वा विद्वान्मृत्यु- ब्रह्मो. १
 सुखात्प्रमुच्यते ना.प. ९।१
 तमेवं विद्वानमृत इह भवति महावा. ३
 [नृ.पू. १।६+त्रि.म.ना. ४।३+
 [+चित्त्यु. १२।७+१३।१ तै.आ. ३।१।३
 तमेवात्मानमित्येतद्ब्रह्मशब्देनवर्णितम् ना.प. ८।८
 तमेवैकं ज्ञानय आत्मानमन्यावाचो
 विमुच्यथासृत्यैव सेतुः मुण्ड. २।२।५

तमोद्धारैणैवायतनेतान्वेति

विद्वान्यत्तच्छांतमजरमसुत-

मभयं परं चेति

तमोद्धारैश्चिन्मरः

तमोमायात्मको रुद्रः

तमो मोहो महामोहस्तामिस्रो ह्यन्व-

संज्ञितः । अविद्या पञ्चपर्वेषा

निबध्नाति नृणां सदा

तमोरूपश्चन्द्रः, रजोरूपो रविः

तमो वा इदमेकमास

तमो वै तिरश्चीनमजरं तद्रजोऽभूत्

तमो हि क्षारीरप्रपञ्चमाब्रह्मस्थावरा-

न्तमनन्ताखिलाज्जाण्डभूतम्

तथा तुरीयं चतुरात्मानमन्विष्य

चतुर्थपादेन च तथा तुरीयेणानु-

चिन्तयन्मसेत्

तथा त्वं विश्वतो अस्मानयक्ष्मया

परिभ्युज

तथाऽपहृतचेतसाम्

तथा मुक्तपुरतद्धि मृतमित्यभिधीयते

तथा त्राचा स्वरसम्पन्नया-

ऽऽत्तिष्यं कुर्यात्

तथा सहायवान् देवः कृष्णपिङ्गलो

ममेश्वर ईष्टे

तयेव सर्वदृष्टः सर्वमस्येदं दृष्टं भवति

तथैतर्हि वेदाज्ज्ञानुभवत्यशानाथ

मे विद्वांस्यसीति

तथैतर्हि वेदानुभवस्यन्नमय

हि सोम्य मनः

तयोऽन्यतरा मनसा सः श्करोति

ब्रह्मावाचा ह्येतांश्चरुं रुद्राता..

तयोरेन्यः (जीवः) पिप्पलं स्वाद्-

स्यनमन्नान्यो अभिचाकशीति

[क्र. अ. २।३।१७+

[अथर्वः

तयोरित्या परस्तात् प्रतिविहिता

भूतमात्रा

तयोरेष सः स्तानो य एषोऽन्त-

र्हव्य आकाशोऽथैनयोरेतदन्नं..

प्रश्नो. ९।७

भ.गी. १६।२२

पा. ब्र. २

भवसं. ३।१०

शाण्डि. १।४।६

मैत्रा. ५।५

त्रिपुरो. ४

महा.वा. २

नृसिंहो. ३।१

नीलरु. २।९

भ.गी. २।४४

गुह्यका. ३४

बृह. १।३।२५

शाण्डि. ३।१।२

छान्दो. ४।३।८

छान्दो. ६।७।३

छान्दो. ६।७।६

छान्दो. ४।१६।२

मुंढ. ३।१।१

=मं. १।१६४।२०

१।१।२०

कौ. त. ३।५

बृह. ४।२।३

तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेति विश्व-

कुर्या अमृतत्वमेति

तयोर्न वशमागच्छेत्

तयोर्मध्ये वरं स्थानं यस्तं वेद

स वेदवित्

तयोर्मिथुनात्प्रजायते भूयान् भवति

तयोर्वीर्यमेवमनन्दत्, तदवर्द्धत ।

तदण्डमभवद्वैमम् । तत्परिणम-

मानमभूत्

तयोर्ह मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव

स्त्रीप्रज्ञैव तर्हि कात्यायनी..

तयोस्तु कर्मसञ्ज्ञासात्

तयोः कर्म परस्तात् प्रतिविहिता

भूतमात्रा

तयोः कामेश्वरी सदानन्दधना परि-

पूर्णस्वात्मैक्यरूपा देवता

तयोः श्रेय आददानस्य भवति,

हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो नृणीते

तयोः संयोजनमसीत्यर्थे तत्त्वविदो

विदुः । नमस्त्वमर्थो विज्ञेयो

रामस्त्वदमुच्यते

तरङ्गमालयासिन्धुर्वदस्त्वदंजगत्

तरङ्गस्थं द्रवं सिन्धुर्नवान्छति यथा

तथा । विषयानन्दवान्छा मे

माभूदानन्दरूपतः

तरणिर्विश्वदर्शतः [क्र.अ. १।४।८=

[मं. १।५०।१०

तरति शोकमात्मविदिति सौञ्जं

भगवः शौचामि तं मा भगवा-

न्छोकस्य पारं तारयत्विति

तरति शोकं तरति पाप्मानं गुहा-

प्रन्थिभ्यो विमुक्तोऽमृतो भवति

तरवोऽपि हि जीवन्ति जीवन्ति

मृगपक्षिणः । स जीवति मनो

यस्य मननेनोपजीवति

तर्कतश्च प्रमाणाच्च चिदेकत्वव्यव-

स्थितः । चिदेकत्वपरिहारे न

शौचति न मुहति [अ.पू. ४।३४

कठो. ६।१६

भ.गी. ३।३४

सुरिको. १७

१ ऐत. ३।६।६

अन्यको. १

बृह. ४।५।१

भ.गी. ५।२

कौ. त. ३।५

भावनो. ७

कठो. २।१

रामर. ५।१४

ते. वि. ६।८३

आ. प्र. १६

चित्त्यु. १६।१

छां. ७।१।३

मुण्ड. ३।२।९

महो. ३।१३

रुद्रह. ४६

तर्कजैर्यैः शास्त्रजालैः... न वशो

जायते प्राणः सिद्धोपायं विना.. यो.शि. १।६१

तर्जनीमध्यमानामिकाभिरग्रेभस्मा-

सीति भस्म संगृह्य.. भस्मजा. १।५

तर्जन्यग्रोन्मीलितकर्णरन्ध्रद्वये

फूत्कारशब्दो जायते, तत्रस्थिते

मनसि.. ज्योतिः पश्यति मं.ब्रा. १।३

तर्जन्यग्रोन्मीलितकर्णरन्ध्रद्वये..

ज्योतिःस्थलं विलोकयान्तर्हृद्या

निरतिशयसुखं प्राप्नोति अद्वयता. २

तर्पणं मार्जनं चान्यन्नं कुर्यात्तुलसी

विना तुलस्यु. १६

तर्थाभिधातिनोऽनुताभिर्शंसिनः

सत्यमिवानृतं पश्यन्ति मैत्रा. ७।१०

तलं तलातलं चैव... पादाङ्गुल्यः

प्रकीर्तिताः गुह्यका. १९

तल्लक्ष्यं (आत्मलक्ष्यं) शुद्धात्म-

लक्षणा वा यः पश्यति स एव

ब्रह्मनिष्ठो भवति मं.ब्रा. १।५

तल्लयं परिपूर्णं मयि समभ्यसेत् ,

मनोऽल्यकारणमहमेव मं.ब्रा. ५।१

तल्लयाच्छुद्धाद्वैतसिद्धिर्भेदाभावात्

तल्लीलाकथा परा काष्ठा मं.ब्रा. ५।१

तत्र देवा हवमायन्ति सर्वे

तत्र देवान् भ्रातृन् वन्ध्यादीन् शिखां

यज्ञोपवीतं... भूलोकं भुवर्लोकं...

अतलललातल... ब्रह्माण्डं च

विस्तृजेत् आरुणि. १

तत्र वायु वृत्तस्पते त्वष्टृर्जामातरद्भुत

[क्र. अ. ६।२।३०= मं. ८।२६।२१+

[वा.सं.२७।३४+वनदु. ४४,५७,६९।८०

तत्र शिष्येण धीमता भ.गी. १।३

तत्र सौम्यं जनार्दन भ.गी. ११।५१

तत्रापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः भ.गी. ११।२९

तस्युस्तस्थुषां जङ्गमो जङ्गमानां

तत्रैव नाम्ना भविताऽयमभिः पारमा. १।२

तत्रैव ब्राह्मणवद्वन्तमीतं (मा.पा.) कठो. १।१६

तस्मा अरं गमाम वः [क्र.अ.७।६।५ =मं. १०।१।३

[वा. सं. ११।५२+तै.आ.४।४६।४ महाना. ५।१४

तस्मा आदित्याश्च विश्वे च देवा-

स्तृतीयं सवनं संप्रयच्छन्ति छां. २।२४।१६

तस्मा आसनमाहृत्योदक-

माहारयाश्चकार बृह. ६।२।४

तस्मा आहुते रेतः सम्भवति छान्दो. ५।७।२

तस्मा उ हैतदुवाच वीत्यन्नं वैति बृह. ५।१२।१

तस्मा एवोत शुश्रूयन्ते । चित्तं हे-

वैषामेकायनं, चित्तमात्मा छान्दो. ७।५।२

तस्मा उ ह ददुस्ते वा एते पञ्चान्ये

दश सन्तस्तत्कृतां.. (मा.पा.) छां. उ. ४।३।८

तस्मा उ ह ददुस्ते वा एते पञ्चान्ये

पञ्चान्ये दशसन्तस्तत्कृतां.. छान्दो. ४।३।८

तस्माच्च (परब्रह्मणः) देवा बहुधा

सम्प्रसृताः मुण्ड. २।१।७

तस्माच्चित्तंस्थिरं कुर्यात् प्रज्ञयापरया-

विधे । चित्तं कारणमर्थानां.. यो.शि. ६।५।८

तस्माच्चेन्न प्रमाद्यति (ब्रह्मज्ञानात्)

शरीरे पाप्मनो हित्वा सर्वान्

कामान्समभ्रुते तैत्ति. २।५

तस्माच्छतर्चिन इत्याचक्षत

एतमेव सन्तम् १ ऐत. २।१।१

तस्माच्छतं वर्षाणि पुरुषायुषो भवन्ति १ ऐत. २।१।१

तस्माच्छनैः शनैः कार्यमभ्यासं..

(प्राणान्तसम्भवात्) योगकुं. २।४०

तस्माच्छमः परमं वदन्ति महाना. १७।४

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते भ.गी. १६।२

तस्माच्छेषादेव सर्वाणि समुत्पद्यन्ते सङ्कर्षणो. १

तस्माच्छ्रद्धया यां काश्चिद्वां

दद्यात् सा दक्षिणा.. नृ. पू. ५।८

तस्माच्छाम्यत्येववाक् । शाम्यतिचक्षुः बृह. १।५।३१

तस्माच्छान्तिः, तस्याः श्वेतवर्णा

सुशीला (गौः) बृ. जा. १।६

तस्माच्छान्त्यतीता, तस्याश्चित्र-

वर्णा (गौः) बृ. जा. १।६

तस्माच्छुक्लतेजोमयं ब्रह्मति सिद्धम् अद्वयता. ५

तस्माज्जागतं तृतीयसवनमादित्यानाम् शीनको. ५।३

तस्माज्जाता अजावयः [चित्त्यु. १२।५ वा. सं. ३१।८
 [क. अ. ८।४।१८= मं. १०।९०।१०
 तस्माज्जाता परा शक्तिः स्वय-
 ज्ञ्योतिरात्मिका यो. चू. ७२
 तस्माज्ज्ञानं च योगं च मुमुक्षुर्दृढ-
 मभ्यसेत् १ यो. त. १५
 तस्माज्ज्ञानं च वैराग्यं जीवस्य
 केवलं श्रमः यो. शि. १।३२
 तस्माज्ज्ञानं भवेद्योगाज्जन्मनैकेन,
 तस्माद्योगं.. नित्यमभ्यसेत् यो. शि. १।६६
 तस्मात्कारणं ब्रह्मो वर्णानामयमिदं
 अविष्यतीति षडङ्गविदस्तथा
 धीमहि २ प्रणवो- १७
 तस्मात् काल एव दद्यात् काले
 न दद्यात् १ ऐत. ३।६।६
 तस्मात्कुमारं जातं घृतं वैवाग्ने प्रति-
 हेलयन्ति, स्तनं वानु घापयन्ति बृह. १।५।२
 तस्मात्क्षमात्परं नास्ति, तस्माद्ब्राह्मणः
 क्षत्रियमथस्तादुपास्ते बृह. १।४।११
 तस्मात्क्षुद्रोक्तं इत्याचक्षत
 यत्मेव सन्तम् १ ऐत. २।२।५
 तस्मात्क्षेत्रीमुद्रामभ्यसेत्, तत
 उन्मनी... योगनिद्रा... शाण्डि. १।७।१८
 तस्मात्त इतरांशुत्तनीय चरन्ति १ ऐत. ३।१।३
 तस्मात्तत्प्राप्तये (भगवद्दर्शनाय)
 यत्नः कर्तव्यः पण्डितैर्नरैः भवसं. १।३२
 तस्मात्तत्समाचरेन्मुमुक्षुर्नपुनर्भवाय
 क. रुद्रो. ३
 तस्मात्तत्सर्वमभवत् (ब्रह्मणः)
 वृ. उ. १।४।१०
 तस्मात्तत्सुकृतमुच्यते
 तैत्ति. २।७
 तस्मात्तदा तृणाल्पैति रसो
 वृक्षादिवाहतात् बृह. ३।९।२८
 तस्मात्तदेवोपन्वीतेति
 उपेवोपासीत शौनको. ४।५
 तस्माच्चैन्द्रात् प्राणाद्ब्रह्म
 वाचमनुष्टुभं तन्वं सन्निमिषीते १ ऐत. ३।६।३
 तस्मात्तपः परमं वदन्ति
 महानां. २।४
 तस्मात्तपः सञ्जायते, तमसोभूतादिः
 सुबालो. १।१
 तस्मात्तयोभयं वदति सत्यं चानृतं च,
 पाप्मना ह्येष विद्मः छान्दो. १।२।३

तस्मात्तव बहु विश्वरूपं कुले दृश्यते छान्दो. ५।१३।१
 तस्मात्तव सुतं प्रसुतमासुतं कुले..
 दृश्यते छान्दो. ५।१३।१
 तस्मात्तस्मात्त बीभत्सेत १ ऐत. ३।७।२, २
 तस्मात्तस्य (मनसा) जयोपायः
 प्राण एव हि नान्यथा यो. शि. १।६०
 तस्मात्तस्योदयं प्रति प्रत्यायनं
 प्रतिघोषा उल्लवोऽनूदतिष्ठन्त
 छान्दो. ३।१९।३
 तस्मात्तान्निदधति निधनभाजिनो
 ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।८
 तस्मात्तान्यन्तरिक्षेऽनारम्भणान्यादा-
 यात्मानं परियन्त्यादिभाजीनि
 ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।४
 तस्मात्तारक एव लक्ष्यममनस्क-
 फलप्रदं भवति अद्वयता. ४
 तस्मात्तां राधां रसिकानन्दां
 वेदविदो विदन्ति सामर. ५
 तस्मात्तुल्योऽधिको नहि (ईशात्)
 शरभो. ३०
 तस्मात्तेनोभयं जिघ्रति सुरभि च
 दुर्गन्धि च पाप्मना ह्येष विद्मः छान्दो. १।२।२
 तस्मात्तेनोभयं पश्यति दर्शनीयं
 चादर्शनीयं च पाप्मना ह्येतद्विद्मः छान्दो. १।२।४
 तस्मात्तेनोभयं * शृणोति श्रवणीयं
 चाश्रवणीयं च.. छान्दो. १।२।५
 तस्मात्तेनोभयं सङ्कल्पयते
 सङ्कल्पनीयं चासङ्कल्पनीयं च.. छान्दो. १।२।६
 तस्मात्ते पुरुषं दृष्ट्वा कक्ष * श्वभ्रमित्यु.
 पद्रवन्त्युपद्रवभाजिनो ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।७
 तस्मात्ते प्रतिहृता नावपचन्ते परि-
 हारभाजिनो ह्येतस्य साम्नः छान्दो. १।९।६
 तस्मात्ते प्रस्तुतिकामाः प्रशंसाकामाः
 प्रस्तावभाजिनो ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।३
 तस्मात्तेषां सर्वे च लोका आत्ताः,
 सर्वे च कामाः, स सर्वाश्च
 लोकानाप्नोति छान्दो. ८।१२।६
 तस्मात्ते सत्तमाः प्राजापत्याना-
 मुद्रीभभाजिनो ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।५
 तस्मात्ते हिङ्गुर्वन्ति हिङ्गारभाजिनो
 ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।२

तस्मात् त्रिगुणं भोज्यं भोक्ता

पुरुषोऽन्तस्थः

मैत्रा. ६।१०

तस्मात्त्रयमपि सर्वोपायान्परित्यज्य

भक्तिमाश्रय भक्तिनिष्ठो भव

त्रि.म.ना. ८।४

तस्मात्त्वमस्मात्ज्ञातवेदो मुमुग्धि

...

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यद्यादौ

भ.गी. ३।४१

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व

भ.गी. ११।३३

तस्मात्त्वमेववक्ता त्वमेवगुरुस्त्वमेव

पिता त्वमेव सर्वनियन्ता...

त्रि.म.ना. १।१

तस्मात्त्वं प्रतिष्ठितोऽसि प्रजया च

पशुभिश्च

छान्दो. ५।१७।१

तस्मात्त्वं बहुलोऽसि प्रजया च

घनेन च

छान्दो. ५।१५।१

तस्मात्त्वं रथिमान्पुष्टिमानसि

छान्दो. ५।१६।१

तस्मात्त्वां पृथग्बलय आयन्ति पृथ-

ग्रथभ्रेणयोऽनुयन्ति

छान्दो. ५।१४।१

तस्मात्पदमित्याचक्षत

एतमेव सन्तम्

१ ऐत. २।२।९

तस्मात् परमेश्वर एवैकमेव

तद्वदति [नृसिंहो. ८।४+

८।८

तस्मात्परिक्पश्यति नान्तरात्मन्

कठो. ४।१

तस्मात्पाद्वन्नयं परममोक्षः

त्रि.म.ना. ८।२

तस्मात्पावमान्य इत्याचक्षत एतमेव

सन्तम्

१ ऐत. २।२।४

तस्मात्पुत्रमनुशिष्टं लोक्यमाहु-

स्तस्मादेनमनुष्ठासति

बृह. १।५।१७

तस्मात्पुरुष औषति इ वै स तं

योऽस्मादपि

बृह. १।४।१

तस्मात्पुरुषं पुरुषं सत्यादित्यो भवति

१ ऐत. २।३।२

तस्मात्पुरुषमाश्रित्य सच्छासैः

सत्समागमैः

भवसं. १।५०

तस्मात्प्रकाशात्मा (नारायणः)

ना.उ.वा. १।५

तस्मात्प्रमाया इत्याचक्षत एतमेव

सन्तम्

१ ऐत. २।२।३

तस्मात्प्रजनने परमं वदन्ति

महाना. १७।७

तस्मात्प्रणय प्रणिधाय कार्यं

भ.गी. ११।४४

तस्मात्प्रणय एव प्राणायामः

आश्वि. १

तस्मात्प्राणो वै तुर्याल्ये धारये-

त्प्राणमित्येवं

मैत्रा. ६।१९

तस्मात्प्रत्यक्षरमुभयत ओङ्कारो भवति

नृ. पू. २।२

तस्मात्सञ्चालयेन्नित्यं शब्दगर्भी

सरस्वतीम् । तस्याः सञ्चालनेनैव

योगकुं. १।१७

योगी रोगैः प्रमुच्यते

१ ऐत. २।४।३

तस्मात्स तेन बन्धुना यज्ञेषु हूयते

तस्मात्समेस्ताविद्योपाधिः साकारः

सावयव एव

त्रि.म.ना. २।१

तस्मात्सत्यं परमं वदन्ति

महाना. १७।१

तस्मात्सत्यं वदन्तमाहुर्वर्म वदतीति

बृह. १।४।३४

तस्मात् सद्गुरुकटाक्षविशेषेण सर्व-

सिद्धयः सिद्ध्यन्ति

त्रि.म.ना. ५।४

तस्मात्सद्गुरुकटाक्षलेशविशेषणा-

चिरादेव तत्त्वज्ञानं भवति

त्रि.म.ना. ५।४

तस्मात्सर्वस्वर्गापवर्गाहेतुर्भगवान्-

सावादित्यः

मैत्रा. ६।३०

तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म

भ.गी. ३।९५

तस्मात्सर्वदेवत्यं प्रोक्षितं प्राजापत्य-

मालभन्त

बृह. १।३।७

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन घृतादीन्वर्जये-

द्यतिः । घृतसूपादिसंयुक्त-

मन्नं नाद्यात्कदाचन

सं.सो. २।७६

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन प्राणायामान्स-

मभ्यसेत्

जा. ६।२०

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन मोक्षापेक्षी

भवेद्यतिः

परम. ३१

तस्मात् सर्वप्रपञ्चोऽयं ब्रह्मैवास्ति

न चेतरेत्

यो. वि. ४।३

तस्मात् सर्वमानुषुभमित्याचक्षते

यदिदं किञ्च [नृ. पू. १।९+

न. पू. १।९

तस्मात्सर्वमापोमयं भूतं सर्वं भृगवङ्गि-

रोमयं...

२ प्रणवो. २१

तस्मात्सर्वाणि भूतानि

भ.गी. २।३०

तस्मात्सर्वात्मना चित्ते भासमानो

ह्यसौ नरः । आनन्दयति

कठ. २८

दुःखादयं जीवात्मानं...

तस्मात् सर्वायुषमुच्यते सर्वमेव त

आयुर्विति

तेति. २।३

तस्मात्सर्वासु दिक्ष्वनमेव दशकृतं..
 तस्मात्सर्वानुष्टुभं जानीयाद्यो जानीते
 सोऽमुतत्त्वं च गच्छति
 तस्मात्सर्वेषु कालेषु [भ.गी.
 तस्मात्सर्वोषधमुच्यते (अञ्ज)
 तस्मात्सर्वत्सरोवैप्रजापतिः कालोऽञ्जं
 ब्रह्मानीडमात्मा त्रेत्येवं ह्याह
 तस्मात्सूक्तमित्याचक्षतएतमेवसन्तम्
 तस्मात्सौम्य प्रयत्नेन... भोगेच्छां
 दूरतस्त्यक्त्वात्रयमेव समाश्रय
 तस्मात् स्त्रियमघ उपासीत
 तस्मात् स्थूलविराट्स्वरूपो जायते
 तस्मात्स्वयमेव समाराधनमकरोत्
 तस्मादकारेण परमं ब्रह्मान्विष्य,
 मकारेण.. मनआदिसाक्षिण-
 मन्विच्छेत्
 तस्मादक्षरमित्याचक्षतएतमेवसन्तम्
 तस्मादक्षरानमहत्, महतोऽहङ्कारः,
 तस्मादहङ्कारात्पञ्चतन्मात्राणि
 तस्मादखण्ड एवास्मि यन्मदन्यन्न
 किञ्चन । दृश्यते श्रूयते तद्यद्ब्रह्मणो-
 ऽन्यन्न तद्भवेत्
 तस्मादखण्डं मम रूपमेतत्
 तस्मादभावेव देवेषु लोकमिच्छंते,
 ब्राह्मणे मनुष्येष्वेताभ्यां
 हि रूपाभ्यां ब्रह्माभवत्
 तस्मादमिष्येष्टव्यश्चेतव्यः स्तोतव्यो-
 ऽभिध्यातव्यः
 तस्मादमिहोत्रं परमं वदन्ति
 तस्मादग्निः समिद्धो यश्च सूर्यः (मा.)
 तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः सोमा-
 त्पतेन्य ओषधयः पृथिव्याम्
 तस्मादग्निं परमे वदन्ति
 तस्मादज्ञानसम्भूतं
 तस्मादणिमादिसिद्धिर्भवति
 तस्मादतिसृष्टिः, अतिसृष्ट्या
 हास्यैतस्यां भवति
 तस्मादद्वैत एवास्मि न प्रपञ्चो न
 संसृतिः
 ३१

छान्दो. ४।३
 नृ.पू.७. २।३
 ८।७+८।२७
 तैत्ति. २।२।२
 मैत्रा. ६।१५
 १ ऐत. २।२।६
 मुक्तिको. २।१५
 बृह. ६।४।२
 त्रि.म.ना. २।६
 सामर. ३
 नृसिंहो. ७।५
 १ ऐत. २।२।१०
 गोपालो. २।१३
 वराहो. ३।१
 वराहो. ३।४
 बृह. १।४।१५
 मैत्रा. ६।३४
 महाना. १७।९
 मुण्डको. २।१।५
 मुण्ड. २।१।५
 महाना. १७।८
 भ.गी. ४।४२
 अद्वयता. ७
 बृह. १।४।६
 अ.पू. ५।७६

तस्मादद्वैतमेवास्ति न प्रपञ्चो न
 संसृतिः
 तस्मादनिष्टमेवेष्टमिव भाति
 तस्मादन्तर्दृष्ट्या तारक एवानुसन्धेयः
 तस्मादन्तःकरणमतिविमलं भवति
 तस्मादञ्जं ददत्सर्वोण्येतानि ददाति
 तस्मादन्यन्न परं किञ्चनास्ति
 [अ.शिरः ३।१४+
 तस्मादन्यगता वर्णा आश्रमा अपि
 नारद । आत्मन्यारोपिताः सर्वे
 भ्रान्त्या तेनात्मवादिना
 तस्मादन्योन्यमाश्रित्य ह्येतं प्रोत-
 मनुक्रमात्
 तस्मादन्वक्षरं प्रयुज्जानः स्वरवन्ति
 व्यञ्जनानि यथाक्षरं दर्शयेत्
 तस्मादपक्कषाय इममेवोङ्काराप्र-
 विद्योतं तुरीयतुरीयमात्मानं
 नृसिंहानुष्टुभैव जानीयात्
 तस्मादपरिहार्येऽयं
 तस्मादपि दीक्षितमाहुः सत्यं वदेति ।
 सत्ये ह्येव दीक्षा भवति
 तस्मादपि पृष्ठत वपस्पृष्टो मनसा
 विजानाति
 तस्मादपि प्रतिकल्पं जातमाहुः,
 हृदयादिव सृष्टो हृदयादिव
 निर्मित इति
 तस्मादप्येहावदानमश्रद्धान-
 मयजमानमाहुः
 तस्मादप्येतर्हामन्त्रितोऽहमयमित्ये-
 वाम उक्त्वाऽथाऽन्यन्नाम प्रवृत्ते
 तस्मादप्येतर्हकाकी कामयते जाया
 मे स्यादथ प्रजायेय
 तस्मादप्राणजनपानमुदायति
 तस्मादप्राणजनपाननृच-
 ममिष्याहरति
 तस्मादत्रय इत्याचक्षतएतमेव सन्तं
 तस्मादप्राणजनपानन्साम गायति
 तस्मादप्राणजनपानन्याचर्ममि-
 ष्याहरति
 जा.द. १०।३
 त्रि.म.ना. ५।३
 अद्वयता. ५
 त्रि.म. ना. ५।४
 म.ना. १७।१२
 बटुको. २५
 ना.प. ६।२०
 त्रि.ब्रा. २।४
 संहितो. २।४
 नृसिंहो. ६।१
 भ.गी. २।२७
 बृह. ३।१।२३
 बृह. १।५।३
 बृह. ३।१।२२
 छान्दो. ८।८।५
 वृ.उ. १।४।१
 बृह. १।४।१७
 छान्दो. १।३।४
 छान्दो. १।३।४
 १ ऐत. २।१।६
 छान्दो. १।३।४
 छान्दो. १।३।३

तस्मादृच्यध्युद*साम गीयत इयमेव
साऽग्निरमस्तत्साम छान्दो. १।६।१
तस्माद्भ्यासयोगेन मनः प्राणान्
निरोधयेत् त्रि.ब्रा. २।२।१
तस्मादयमाकाशः स्त्रिया पूर्यत एव
ता*समभवत्ततो मनुष्या
अजायन्त बृह. १।४।३
तस्मादयं बिल्ववनस्पतिर्महान् समस्त-
देवर्षिसुतीर्यरूपः १ बिल्वो. ६
तस्मादध्वं इत्याचक्षत एतमेव सन्तम् १ ऐत. ३।२।८
तस्मादलिङ्गो धर्मज्ञो ब्रह्मलिङ्गमनु-
व्रतम् । ...अज्ञातचरितं चरेत् ना.प. ४।३।५
तस्मादविमुक्तमेव निषेवेत [रामो. १।१ तारसा. १।१
तस्मादन्यकमेकाक्षरम् गोपालो. २।१३
तस्मादध्या अजायन्त [पु.सु. ८+ चित्यु. १२।५
[त्र.अ. ८।४।१८=मं. १०।९०।१०+ वा.सं. ३१।८
तस्मादसक्तः सततं भ.गी. ३।१९
तस्मादसतः संजायत छान्दो. ६।२।१
तस्मादसतः संजायत इति (मा.पा.) छान्दो. ६।२।१
तस्मादहङ्कारनामाऽनिरुद्धः सङ्कर्षणो. १
तस्मादहङ्कारात्पञ्च तन्मात्राणि गोपालो. २।१३
तस्मादहमिति सर्वाभिधानं तस्यादि-
रयमकारः नृसिंहो. ७।२
तस्मादहं च तस्मिन्नेवावस्थीयते प.हं. २
तस्मादहं पशुपाशविमोचकः भस्मजा. २।७
तस्मादहं रुद्रो यः सर्वेषां परमागतिः भस्मजा. २।५
तस्मादाकाशजं बीजं विन्द्यात् त्रि.ता. ५।२२
तस्मादाकाशं बीजं विद्यात्,
तदेव ज्यायः नृ.पू. ३।५
तस्मादाकाशं बीजं शिवो विद्यात् ग.पू. २।९
तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेत्तुतिकामः मुण्ड. ३।१।१०
तस्मादात्मन आकाशः, आकाशाद्वायुः त्रि.ता. १।१४
तस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः पैङ्गलो. १।३
तस्मादात्मन्यहङ्कारमुत्सृज्य...
मौक्षोपायं विचिन्तयेत् शिवो. ७।११६
तस्मादात्मानमेवैनं जानीयात् नृसिंहो. ५।४
तस्मादादिगणेशो भवानुच्यते ग.शो. ४।५
तस्मादादित्यात्मा ब्रह्म मैत्रा. ६।१६
तस्मादानन्दमयोऽयं लोकः सामर. ५

तस्मादापेरोद्धारः सर्वमाप्नोतीत्यर्थः २प्रणवो. १४
तस्मादात्विज्यं करिष्यन्वाचि स्वर-
मिच्छेत तथा वाचा स्वरसम्प-
न्नायाऽऽत्विज्यं कुर्यात् बृह. १।३।२५
तस्मादाहुर्वलं सत्यादोजीयः बृह. ५।१४।४
तस्मादाहुर्विद्योतयतेस्तनयति..(मा.पा.) छां.उ. ७।११।१
तस्मादाहुर्विद्योतते स्तनयति वर्षि-
च्यति वा छां. ७।११।१
तस्मादाहुःसोष्यत्यसोष्टेतिपुनरुत्पादन-
मेवास्य तन्मरणमेवास्यावभृथः छांदो. ३।१७।५
तस्मादिति च मंत्रेण जगत्सृष्टिः
समीरिता । वेदाहमिति सुद्रो. १।८
मन्त्राभ्यां वैभवं कथितं हरेः शौनको. ३।४
तस्मादित्यैव न्यूङ्गयन्ति
तस्मादिदन्द्रो नामेदन्द्रो ह वै नाम शौनको. ३।४
तमिदन्द्रं सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते २येत. ३।१४
तस्मादिदमर्धवृगलमिव स्व इति ह
स्माह याज्ञवल्क्यः बृह. १।४।३
तस्मादिदमानुष्टुमं साम यत्र
कचिन्नाचष्टे ग.पू. २।१
तस्मादिदमेव मुख्यद्वारं कलौ नान्येषां
भवति तस्मादिदं साङ्गं साम
जानीयात् । यो जानीते सो-
ऽमृतत्वं च गच्छति नृ.पू. १।५
तस्मादिदं जगत्सर्वं वैष्णवं..तयैव
धर्मविज्ञानं वैदिकं वैष्णवं.. भवसं. ५।१६
तस्मादिदं साङ्गं साम जानीयात्,
यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ.पू. १।३
तस्मादिदं साम मध्यमं जपति नृ.पू. १।७
तस्मादिदं साम यत्र कुत्रचिन्नाचष्टे ।
यदि दातुमपेक्षते ...पुत्राय..
दास्यत्यन्यस्मै शिष्याय वा नृ.पू. १।४
तस्मादिदं साम येन केनचिदाचार्य-
मुखेन यो जानीते स तेनैव शरी-
रेण संसारान्मुच्यते नृ.पू. १।५
तस्मादिदं साम सविदानन्दमयं परं
ब्रह्म, तमेवं विद्वाननुष्टुत इह भवति नृ.पू. १।६
तस्मादिदं सामाङ्गं प्रजापतिः नृ.पू. १।७

तस्मादिन्द्रो देवानां (मध्ये)

अधिकोऽभवत्

अव्यक्तो. ६

तस्मादिमाः प्रजाः प्रजायन्त

प्रभो. ११४

तस्मादीशानो महादेवो महादेवः

महो. १३

तस्मादीश्वरः कामोऽभिधीयते । तत्परि-

भाषया कामः ककारं व्याप्नोति

त्रि.ता. १५

तस्मादुच्यते उग्रमिति

नृ.पू. २४

तस्मादुच्यते ज्वलन्तमिति

नृ. पू. २७

तस्मादुच्यते दत्तात्रेय इति

शांडि. ३१२१

तस्मादुच्यते नमामीति

नृ.पू. २१३

तस्मादुच्यते नृसिंहमिति

नृ.पू. २४१२९

तस्मादुच्यते भगवान्महेश्वरः

अ.शिर. ३५

तस्मादुच्यते भद्रमिति

नृ.पू. २११

तस्मादुच्यते भीषणमिति

नृ.पू. २१०

तस्मादुच्यते महाविष्णुमिति

नृ.पू. २६

तस्मादुच्यते मृत्युमृत्युमिति

नृ.पू. २१२

तस्मादुच्यते वीरमिति

नृ.पू. २५

तस्मादुच्यते सर्वतोमुखमिति

नृ.पू. २८

तस्मादुज्जम्भते कामः कामात्कामः

परः शिवः । काणोऽयं (काणोऽयं)

कामदेवोऽयं वरेण्यं भगं उच्यते

त्रि.ता. ११२

तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय

भ.गी. २१७

तस्मादुत्तिष्ठं ह वा तानि रक्षां-

स्यादित्यं योधयन्ति याव...

सहवै. २

तस्मादुत्तेषु च वरः वृणीतयं कामं काम-

येतव * स एष एव विदुद्रातात्मने

वा...यं कामं कामयते तमागायति

बृह. १३१२८

तस्मादुपसंहर्त्रे महाप्रासाय वै

नमोनमः

अ.शिरः. ३३

तस्मादुपाधितात् (गुरोः) सम्यक्

सहजं प्राप्यते गुरोः । सतत-

मात्माभ्यासरतो भवेत्

अमन. २४७

तस्माद् प्रवृणोत्यपि

बृ.व. १३१२१

तस्माद् देवविदुद्राता भूयात्

छा.व. १७८

तस्माद् सर्वेषु लोकेषु अत्रत्येव

प्रशासनमभूत्

छान्दो. ५३७

तस्माद् देवविद्ययापि चाण्डालाद्यो-

च्छिष्टं प्रयच्छेदात्मनि देवास्त

तद्वैधानरे इव * स्यात्

छान्दो. ५१२४४

तस्माद्गित्याचक्षत एतमेव सन्तम्

१ ऐत. २१२७

तस्माद्गयजुस्सामान्यपक्रान्त-

तेजास्यासन्

२ प्रणवो. १९

तस्माद्दचः साम यजूषि दीक्षा

यज्ञाश्च सर्वे क्रतवो दक्षिणाश्च

मुण्ड. २११६

तस्मादेकमेव व्रतं चरेत् प्राण्याच्चै-

वापान्याच्च

बृह. १५१२३

तस्मादेकाकी न रमते स द्वितीय-

मैच्छत् स द्वैतावानास

बृह. १४१३

तस्मादेत ऋषयः प्रजाकामा दक्षिणं

प्रतिपद्यते

प्रभो. १९

तस्मादेत एतेनाख्यायन्ते प्राणा इति

तेन ह वा तत्कुलमाचक्षते यस्मि-

न्कुले भवति

बृह. १५१२१

तस्मादेतत्पावित्रं तस्य न्यसनम्

नृ.षट्च. ७

तस्मादेतत्पुरुषसूक्तार्थमतिरहस्यं

राजगुह्यं देवगुह्यं गुह्यादपि

गुह्यतरं नादीभितायोपदिशेत्

मुद्रलो. ५१

तस्मादेतदुभयमलोकमन्तरतो-

ऽलोकका हि योनिरन्तरतः

बृह. १४१६

तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत्

भ.गी. १६१२१

तस्मादेतद्ब्रह्म नाम रूपमन्नं च जायते

मुण्ड. १११९

तस्मादेतमेवोक्थमुपासीत

कौ.त. ३३

तस्मादेतानि ब्रह्मैव भवन्तीति...

यो.शि. ४५

तस्मादेतानिषण्णां नारसिंहचक्राण्ये-

तेष्वङ्गेषु न्यस्यानि भवन्ति

नृ.षट्च. ७

तस्मादेतां तुरीयां श्रीकामराजीया-

मेकादशधा भिन्नामेकाक्षरं ब्रह्मेति

यो जानीते स तुरीयं पदं प्राप्नोति

त्रि.ता. ५१२३

तस्मादेतां रात्रि प्राणमृतः प्राणं न

विच्छिन्द्यात्

बृह. १५११४

तस्मादेते ऋषयः शुद्ध इष्टि कुर्वन्ति,

इतर इतरस्मिन्

प्रभो. ११२

तस्मादेनमनुशासति

बृह. १५११७

तस्मादेनं नित्यमावर्तयेत्

गो.पू. ३११

तस्मादेनं विजित्यैनं

भ.गी. २१२५

तस्मादेनं सर्वस्मात् पुत्रो मुञ्चति,

तस्मात्पुत्रो नाम

बृ.व. १५११७

तस्माच्चपि दशरात्रीर्नाश्रीयाद्यु ह
जीवेद्यथाऽद्रष्टा.. भवत्यथान्न-
स्याये द्रष्टा भवति छान्दो. ७।९।१
तस्माच्चपि बहव आसीरन्न-
स्मरन्तो नैव ते कंचन शृणुयुः छांदो. ७।१३।१
तस्माच्चपि बहुविदचित्तो भवति
नायमस्तीत्येनमाहुः छान्दो. ७।५।२
तस्माच्चपि राजा परमतां गच्छति
ब्रह्मैवान्तत उपनिश्रयति बृह. १।४।११
तस्माच्चपि सर्वज्यानि जीयत
आत्मना चजीवति बृह. १।५।१५
तस्माद्यमहरहर्वा एवंविस्वर्ग
लोकमेति छान्दो. ८।३।५
तस्माच्चया कया च विधया बहन्न
प्राप्नुयात् । अराध्यस्मा अन्न-
मित्याचक्षते तैत्ति. ३।१०।१
तस्माच्चस्य महाबाहो भ.गी. २।६८
तस्माच्चस्यै कस्यै च देवतायै हवि-
र्गृह्यते आगिन्यावेवास्यामशना-
पिपासे भवतः २ऐत. २।५
तस्माच्चुक्तं सदा योगात् योगो. १६
तस्माच्चुद्धयस्व भारत भ.गी. २।१८
तस्माच्च के च सावित्रं विदुः सूर्यता. ३।१
तस्माच्चोगं तमेवादौ साधको नित्य-
मभ्यसेत् यो.शि. १।६६
तस्माच्चोगात्परतरो नास्ति मार्गस्तु यो.शि. १।५३
मोक्षदः भ.गी. २।५०
तस्माच्चोगाय युज्यस्व भ.गी. ६।४६
तस्माच्चोगी भवाजुन
तस्माच्चोमृत्योः पाप्मभ्यः संसाराच्च
विभीयात्स एतं मन्त्रराजं नृ.पू. २।१
नारसिंहमानुशुभं गृह्णीयात्
तस्माद्बुद्धानेव माध्यन्दिनं सवनं शौनको. ३।४
त्रैष्टुभंचेति त्रि.ता. १।६
तस्माद्दुरेण्यमेकाराक्षरं गृह्यते
तस्माद्गुणश्रमादीनां नित्यनैमि-
त्तिकाः क्रियाः । भुक्तिस्त्वयुक्त-
मार्गेण कर्तव्या एव निश्चयः अवसं. २।६६
तस्माद्बलिष्ठ इत्याचक्षत एतमेव सन्तं १ऐत. २।२।२

तस्माद्वा इन्द्रोऽतितरामिवान्यान्देवान्
स ह्यनन्नेदिष्टं पस्पर्श केनो. ४।३
तस्माद्वा एतदशिष्यन्तः पुरस्ताच्चोप-
रिष्टाच्चान्निः परिदधति लम्मुको
ह वासो भवत्यनमो ह भवति छान्दो. ५।२।२
तस्माद्वा एतमिमममुं चोद्गीथमुपासीत छान्दो. १।३।२
तस्माद्वा एतस्मात्प्राणमयात् । अन्यो-
ऽन्तर आत्मा मनोमयः तैत्ति. २।३
तस्माद्वा एतस्मादन्नरसमयात् ,
अन्योऽन्तर आत्मा प्राणमयः तैत्ति. २।२
तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः
सम्भूतः [ना.उ.ता. १।५+ तैत्ति. २।१।१
तस्माद्वा एतस्मादात्मनि सर्वे
प्राणाः...भूतान्युच्चरन्ति मैत्रा. ६।३२
तस्माद्वा एतस्माद्विज्ञानमयात् ,
अन्योन्तर आत्मानन्दमयः तैत्ति. २।५
तस्माद्वा एतस्मान्मनोमयात् , अन्यो-
ऽन्तर आत्मा विज्ञानमयः तैत्ति. २।४
तस्माद्वा एतं सेतुं तीर्त्वाऽपि नक्त-
महरेवाभिनिष्पद्यते छान्दो. ८।४।२
तस्माद्वा एतं सेतुं तीर्त्वाऽपि सन्न-
मन्वो भवति छान्दो. ८।४।२
तस्माद्वा एते देवा अतितरामिवान्यान्
देवान् यदभिर्वायुः... ते ह्येन-
त्प्रथमो विदाश्चकार ब्रह्मेति केनो. ४।२
तस्माद्वा एष उभयात्मा, एवंविदात्म-
ब्रह्माभिध्यायत्यात्मज्ञेयं यजतीति मैत्रा. ६।९
तस्माद्वा मेदेव इत्याचक्षत एतमेव
सन्तम् १ऐत. २।१५
तस्माद्वायुरेव व्यष्टिर्वायुः समष्टिः... बृह. ३।३।२
तस्माद्वा सनया युक्तं मनो बद्धं
विदुर्बुधाः । सम्यग्वासनया युक्तिको. २।१६
त्यक्तं युक्तमित्यभिधीयते
तस्माद्विद्यया तपसा चिन्तया मैत्रा. ४।४
चोपलभ्यते ब्रह्म
तस्माद्विद्वानेतैनेवायनेनैकतरमन्वेति
(मा.पा.) प्रश्नो. ५।२
तस्माद्विद्वानेतैनेवायनेनैकतर-
मन्वेति प्रश्नो. ५।२

तस्मात् (सत्सङ्गात्) विधिनिषेध- विवेको भवति	त्रि.म.ना. ५।४
तस्माद्विराळजायत [ततो विराडिति [ऋ.अ. ८।४।१७=मं.१०।९०।५	वा.सं. ३१।५ +चित्त्यु. १२।२
तस्माद्विराडित्यनया पादनारायणा- द्वरेः । प्रकृतेः पुरुषस्यापि समुत्पत्तिः प्रदर्शिता	मुद्रलो. १।५
तस्माद्विराडभूतं भव्यं भविष्य- द्रवत्यनन्धरम्	ना.प. ९।१३
तस्माद्विशृङ्गमेवैतदिहानुद्रवन्ति	शौनको. २।३
तस्माद्विधामित्र इत्याचक्षत एतमेव सन्तम्	१ऐत. २।१।४
तस्माद्विष्णुरादित्यानामधिकोऽभवत्	अव्यक्तो. ६
तस्माद्विरेखं भवति तं देवकीपुत्रं समाश्रये	यज्ञोप. ४
तस्माद्विदोदितं कर्म नित्यं कुर्या- दतन्द्रितः ।...प्राप्नोति परमां गतिम्	भवसं. १।३७
तस्मादेव सामाश्रुते, सान्तः सायुज्यं सलोकतां जयति	बृह. १।३।२२
तस्मादेककुण्ठं, न पुनरागमनं...गच्छति	यज्ञोप. ४
तस्मादे गौतम पुरुषं प्रेतमाहुर्व्यसं- सिषतास्याङ्गानीति	बृह. ३।७।२
तस्मादे सम्राडपि यत्र स्वः पाणिर्न विनिर्झायतेऽथ यत्र वागुचारय- त्युपैव तत्र न्येतीत्येवमेवैतत्..	बृह. ४।३।५
तस्मादे सम्राडपि यां कां च दिशं गच्छति तैवास्या अन्नं गच्छति	बृह. ४।१।४
तस्माद्व्यतिषिक्तान्यङ्गानि भवन्ति	नृ.पू. २।२
तस्मान्न इह मुञ्चत निषेदेवाः	
सजीवसः	सहवै. ३
तस्मान्न कोऽपि व्यायान्	मुद्रलो. २।३
तस्मान्न जनमियाङ्गान्तमियाङ्गत्पा- पानं सृत्युमन्त्रवायानि	बृह. १।३।१०
तस्मान्न जायते चित्तं चित्तदृश्यं न जायते । तस्य पश्यन्ति ये जातिं ते ये पश्यन्ति ते पश्यन्	अ.शां. २८
तस्मान्न प्रमायेत् (सत्यात्)	१ऐत. १।१।१
तस्मान्न मित्रं नाभिन्नमाभिनिन्नो न वै प्रभुः	कृष्णो. २९

तस्मान्न सङ्ख्यासिन एष लोकः	सं.सो. २।५९
तस्मान्नानारूपाण्याप्रोति (भूतात्मा)	मैत्रा. ३।५
तस्मान्नारायणादण्डजस्वेदजोद्वि- ज्जजरायुजमनसिजादयः	ना.पू.ता. ५।४
तस्मान्नार्हान्यनृतं वक्तुं स तूष्णीं रथमारुह्य प्रवव्राज	प्रभो. ६।१
तस्मान्नार्हं वयं हन्तुं	भ.गी. १।३७
तस्मान्नित्यमकर्ताऽहमिति भावनयेद्वया । परमाश्रितान्मनी	महो. ४।१६
सा समतैवावशिष्यते	मैत्रा. ६।३०
तस्मान्निरध्यवसायो निस्सङ्कल्पो निरभिमानस्तिष्ठेत्	अ.वि. ३
तस्मान्निर्विषयं नित्यं मनः कार्यं सुमुक्षुणा	
तस्मान्नूनसकलविषयात्रिष्कला- ध्यात्मयोगाद्वायोर्नाशस्तदनु	अमन. २।४०
मनसस्तद्विनाशाच्च मोक्षः	नृ.पू. २।९
तस्मान्नृसिंह आसीत् परमेश्वरो जग- द्वितं वा एतद्रूपं यदक्षरं भवति	बृह. १।९।२
तस्मान्नेष्ट्रियाजुकः स्यात् पशुभ्य एकं प्रायच्छत्	महाना. १।७।१२
तस्माज्यासमेषां तपसामतिरिक्त- माहुः	नृसिंहो. ७।३
तस्मान्मकारेण परमं ब्रह्मान्विच्छेत्	
तस्मान्मन एव पूर्वरूपं, वागुत्तर- रूपं,.. समानमेतयोरत्र पितुश्च पुत्रस्य च	३ऐत. १।१।२
तस्मान्मनः पृथङ्नास्ति जगन्माया च नास्ति हि	जा.द. १०।७
तस्मान्मनोयुक्तान्तर्दृष्टिस्तारक- प्रकाशा भवति	अद्वयता. ६
तस्मान्मन्त्रौषधाज्यामिषपुरोडाश- स्थालीपाकादिभिर्विष्टव्य- मन्तवैद्याम्	मैत्रा. ६।३६
तस्मान्ममत्वमेकोऽसीति ह कौषी- तकिः पुत्रमुवाच	छां. १।५।२, ४
तस्मान्मद्रप्तातः सवनमभवत्	शौनको. २।१
तस्मान्मलौढाससं यशस्विनीमभि- क्रम्योपमन्त्रयेत्	बृह. ६।४।६

तस्मान्माध्यमा इत्याचक्षत एत-

मेव सन्तम्

१ऐत. ३।१।२

तस्मान्मानसं परमं वदन्ति

म.ना. १७।११

तस्मान्मायया बहिर्वेष्टितं (ब्रह्माण्डं)

भवति

नृ.पू. ५।३

तस्मान्मायामेतां (परमात्मनः)

शक्तिं विद्यात्

नृ.पू. ३।२

तस्मान्मायामेतां शक्तिं वेद स

सृष्टुं जयति

ग.पू. २।३

तस्मान्मायोपाधिक आदिनारायण-

स्तथा स्वस्वरूपं भजति

त्रि.म.ना. ३।७

तस्मान्मुमुक्षुभिर्नैव मतिर्जीवेश-

वादयोः । कार्या किन्तु ब्रह्मतत्त्वं

निश्चलेन विचार्यताम् [महो. ४।७५+ ब्राह्मो. २।५६

तस्मान्मूढा न जानन्ति मिथ्या-

तर्केण वेष्टिताः

यो.शि. १।३४

तस्मान्मूर्तिरेव रयिः

प्रश्नो. १।५

तस्मान्मूलाविद्याण्डस्य सावरणस्य

विलयो भवति

त्रि.म.ना. ३।६

तस्मान्मूलीनारायणं सर्वबीजम्

ना.पू.वा. ४।१०

तस्मान्मूलाशरीरात्मकोऽयं जीवस्य

स्वभावः

सामर. १००

तस्मान्लोकात्पुनरैतस्यै लोकाय

कर्मण इति न काम्यमानो.. न

तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति

बृह. ४।४।६

तस्मान्लोके वेदे ब्रजलीला गीयते

सामर. ५

तस्मिन्काले (चित्तवृत्तिहीने)

विदेहीति देहस्मरणवर्जितः

ते.वि. ४।५४, ५५

तस्मिन् (चित्ते) क्षीणे जगत्क्षीणं

तच्चिकित्स्यं प्रयत्नतः

महो. ३।२१

तस्मिन्कुलमुत नीलमाहुः पिङ्गलं

हरितं लोहितं च

बृह. ४।४।९

तस्मिन् गर्भं दधान्यहम्

भ.गी. १।४।३

तस्मिन् दृष्टे क्रिया कर्म यातायातो

न विद्यते

यो.चू. १।१३

तस्मिन्मौ विद्यति अमिस्त्वं न वेद,

स यात्मा

गोपालो. १।७

तस्मिन्ममयः पिण्डो नाभिमण्डल-

संस्थितः । अस्य मध्येऽस्ति हृदयं..

त्रि.वा. २।६

तस्मिन्नयं (हृदाकाशे) पुरुषो

मनोमयः

हेत्ति. १।६।१

तस्मिन्नित्ये तते शुद्धे, चिन्मात्रे नि-

रुपद्रवे । शान्ते... निर्विकारे... महो. ४।१२२

तस्मिन्निदं सर्वं त्रिशरीरमारोप्य

तन्मयं हितदेवेति संहरेदोमिति नृसिंहो. १।२

तस्मिन्निमानि सर्वाणि भूतान्यन्वा-

यत्तानीति विद्यात् छान्दो. २।९।२

तस्मिन्निरस्तनिश्शेषसङ्कल्पस्थिति-

मेषिचेत् । सर्वात्मकं पदं शान्तं

तदा प्राप्नोत्यसंशयः

महो. ४।६०

तस्मिन्निरोधिते नूनमुपशान्तं

मनो भवेत्

शाङ्गि. १।७।२५

तस्मिन्नुत्क्रामत्यथेतरे सर्वं

एवोत्क्रामन्ते

प्रश्नो. २।४

तस्मिन्नेकदिने (ब्रह्मणः) आसत्य-

लोकान्तमुदयस्थितिलया जायन्ते त्रि.म.ना. ३।४

तस्मिन्नेतस्मिन्नमौ देवा अन्नं जुहति

[छां.उ. ५।७।२+ बृह. ६।२।१२

तस्मिन्नेतस्मिन्नमौ देवाः पुरुषं जुहति बृह. ६।२।१४

तस्मिन्नेतस्मिन्नमौ रेतो जुहति

[छान्दो. ५।८।२+ बृह. ६।२।१३

तस्मिन्नेतस्मिन्नमौ देवा वर्षं (वृष्टिं)

जुहति [छान्दो. ५।६।२+ बृह. ६।२।११

तस्मिन्नेतस्मिन्नमौ देवाः अस्त्रां

जुहति [छान्दो. ५।४।२+ बृह. ६।२।९

तस्मिन्नेतस्मिन्नमौ देवाः सौमं

राजानं जुहति [छान्दो. ५।५।२+ बृह. ६।२।१०

तस्मिन्नेताः शरभृष्टीः प्रतिलोमाः

सर्पिषाक्ता जुहुयात् बृह. ६।४।१२

तस्मिन्नेवाखिलं विश्वं सङ्कोचित-

पटवद्वर्तते पैङ्गलो. १।३

तस्मिन् पुरुषाश्चतुर्दश जायन्ते,

एका कन्या दशेन्द्रियाणि.. महो. १।२

तस्मिन्मरुशुक्तिकास्थाणुस्फटिकादौ

जलरूप्यपुरुषरेखादिवत्.. गुण-

साम्यानिर्वाच्या मूलप्रकृतिरासीत् पैङ्गलो. १।२

तस्मिन्मां देहि स्वमानाभृते लोके
 अक्षते अच्युते लोके अक्षते
 अमृतत्वं च गच्छत्यो नमः
 तस्मिन्मजुर्मयं प्रवयति
 तस्मिन्मदन्तस्तदुपासितव्यम्
 तस्मिन्मशो निहितं विश्वरूपम्
 तस्मिन्मावत्सम्पातमुषित्वाऽथैतमेवा-
 ध्वानं पुनर्निवर्तन्ते
 तस्मिन्मदन्तस्तदन्वेष्टव्यं, तद्वाव
 विजिज्ञासितव्यम्
 तस्मिन्मोऽन्नं चान्नादं च वेद
 तस्मिन् रसिकान् रस्वरूपपथाद्दि
 एव मूर्तीं प्रकटिते
 तस्मिन्लोकाः श्रिताः सर्वे तदु
 नात्येतिकश्चन । एतद्वैतत् [कठो. ५।८+ ६।१
 तस्मिन्वसति शाश्वतीः समाः
 तस्मिन्वायौ तिष्ठति वायुस्त्वं न वेद
 स ह्यात्मा
 तस्मिन् विश्वमिदं श्रितम्
 तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितं, यच्च प्राणिति
 यच्च न
 तस्मिन्सन्ध्ये स्थाने तिष्ठमेते उभे
 स्थाने पश्यति इदं च परलोके च
 तस्मिन् सदस्यशाखे, निखगाहं
 त्वयि मृजे स्वाहा
 तस्मिन्मुपणीं मधुकृत् कुलायी भज-
 मास्ते मधु देवताभ्यः [त्रिसु. ३+
 तस्मिन्प्रतिष्ठमाने सर्वे एव प्रतिष्ठन्ते
 तस्मिन्मरुतसंज्ञासे समूलाः
 सर्वदेवताः
 तस्मिन्निर्दपणे स्फारे.. वस्तुदृष्टयः ।
 ...प्रतिविम्बन्ति
 तस्मिन्स्वयि किं वीर्यमिति
 (यक्षमवदत्)
 तस्मिन् हास्मिन्नाकांशे प्राण आयतः
 तस्मै ककुबे वरदस्य पुष्टये स्वाहा
 तस्मै तृणं निदधावेतदादस्वेति
 (यक्ष) [केनो. ४
 तस्मै तृणं निदधावेतददेति (यक्ष)
 ३२

आ.प्र. १

कौ.व. २।६

महाना. ८।१६

बृह. २।२।३

छांदो. ५।१०।५

छान्दो. ८।१।१

१ ऐत. ३।१।२३

सामर. २

कठो. ५।८+ ६।१

बृह. ५।१०।१

गोपालो. १।६

छांदो. ३।१५।१

बृह. १।५।३

बृह. ४।३।९

तैत्ति. १।४।३

महाना. १२।३

प्रश्नो. २।४

आयुर्वे. २६

अ.पु. ४।७।१

केनो. ३।५

३ ऐत. १।१।२

पारमा. ८।२

३।५, ९, १०

केनो. ५।६

तस्मै ते विश्वरूपाय सत्ये नभासि

हिताय नमः

तस्मै नमो महादेवाय महारुद्राय..

तस्मै ब्रह्म प्रभूयाच्छक्यमाकुर्वतेति

तस्मै महाप्रासाय महादेवाय शूलिने ।

महेश्वराय मृडाय तस्मै रुद्राय

नमो अस्तु

तस्मै मृदितकषायाय तमसस्पारं

दर्शयति भगवान् सनत्कुमारः

तस्मै मृदितकषायाय... दर्शयति

देवर्षये... (मा.पा.)

तस्मै रुद्रा माध्यन्दिनं सवनं

सम्प्रयच्छन्ति

तस्मै रुद्राय नमो अस्तु

तस्मै वरिष्ठाय वरप्रबुद्धये स्वाहा

तस्मै वसवः प्रातस्सवनं सम्प्रयच्छति

तस्मै वा एतस्मै प्राणाय ब्रह्मण एताः

सर्वा देवता अयाचनाय बलिं हरन्ति कौ. उ. २।२

तस्मै (इन्द्राय) विद्यामानुष्टुभीं प्रादात् अन्यको. ८

तस्मै श्वा श्वेतः प्रादुर्बभूव । तमन्ये

श्वान उपसमेत्योचुरन्नं नो भग-

वानागायत्वशनत्साम वा इति

तस्मै स तत्र विजिहीते

तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक्-

प्रक्षान्तचित्ताय... प्रोवाच

तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्

तस्मै स होवाच एतद्वै सत्यकाम

परं व्यापारं च ब्रह्म यदोद्धार-

स्तस्माद्विद्वान्... एकतरमन्येति

तस्मै स होवाच पितामहश्च अद्वा-

भक्तिज्वानयोगप्रवैदि

तस्मै स होवाच ब्रह्मविद्यां वरिष्ठाय ।

प्राणो ह्येष आत्मा.. (इत्यादि)

तस्मै सहोवाच यथा गार्ग्य मरी-

चयोऽर्कस्यान्तं गच्छतः सर्वाः..

तेजोमण्डले एकीभवन्ति

तस्मै स होवाच इद्वान्तःशरीरे

सोन्य स पुरुषो अस्मिमेताः

बोद्धव्यं कलाः प्रभवन्ति

मैत्रा. ७।७

पं.ब्र. १

संहितो. ३।७

शरभो. २४

छान्दो. ७।२६।३

छान्दो. ७।२६।३

छांदो. २।२४।१०

शरभो. ८।१४, २४

पारमा. ९।३

छांदो. २।२४।६

कौ. उ. २।२

अन्यको. ८

छांदो. १।१२।२

बृह. ५।१०।१, १

मुण्ड. १।२।१३

प्रश्नो. २।२

कैव. २

प्रश्नो. १

प्रश्नो. ४।२

प्रश्नो. ६।२

तस्मै स होवाचातिप्रभान्पृच्छसि

ब्रह्मिष्ठोऽसीति तस्मात्तेऽहं

ब्रवीमि

प्रश्नो. ३।२

तस्मै सुयन्त्रे सुशेवधये स्वाहा

पारमा. ७।२

तस्मै सूक्ष्मसूक्ष्माय तेजसे स्वाहा

पारमा. १०।५

तस्मै ह प्राप्तायार्हाञ्चकार । स ह

प्रातः सभाग उदेयाय

छान्दो. ५।३।६

तस्मै हाप्रोच्यैव प्रवासाञ्चक्रे

छान्दो. ४।१०।२

तस्मै हेतदेवोवाचात्र ह न किञ्चन

वीयायेति

छान्दो. ४।९।३

तस्मै होवाच पृथिवी कलाऽन्तरिक्षं

कला द्यौः कला समुद्रः कलैष

वै सोम्य चतुष्कलः पादो

ब्रह्मणोऽनन्तवानाम

छान्दो. ४।६।३

तस्मै होवाच प्राणः कला चक्षुः कला

भोत्रं कला मनः कला एष वै

सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मणः..

छान्दो. ४।८।३

तस्मै होवाच प्राची दिक्कला,

प्रतीची दिक्कला..एष वै सोम्य

चतुष्कलः पादो ब्रह्मणः..

छान्दो. ४।५।२

तस्मै होवाचामिः कला, सूर्यः कला,

चन्द्रः कला, विद्युत्कलैष

वै सोम्य चतुष्कलः पादो

ब्रह्मणो ज्योतिष्मानाम

छान्दो. ४।७।३

तस्य कर्तारमपि मां

अ.गी. ४।१।३

तस्य का देवतेति दिश इति होवाच

बृह. ३।९।१३

तस्य का देवतेति प्रजापतिरिति

होवाच

बृह. ३।९।१७

तस्य का देवतेति मृत्युरिति होवाच

बृह. ३।९।१४

तस्य का देवतेत्यमृतमिति होवाच

बृ.उ. ३।९।१०

तस्य का देवतेति क्षिय इति होवाच

बृह. ३।९।११

तस्य का देवतेत्यसुरिति होवाच

बृह. ३।९।१५

तस्य का देवतेति सत्यमिति होवाच

बृह. ३।९।१२

तस्य कार्यं न विद्यते

अ.गी. ३।१७

तस्य (मासस्य) कृष्णपक्ष एव रयिः,

शुक्लः प्राणः

प्रश्नो. १।१२

तस्य कैवल्यं सिद्धयति

बृ.षट्च.७

तस्य (रुद्राक्षस्य) कोटिशतं पुण्यं

उभते धारणाक्षरः

रु.जा. ५

तस्य क मूलं स्यादन्यत्रानात्

छान्दो. ६।८।४

तस्य क मूलं स्यादन्यत्राद्ब्रह्मः

छान्दो. ६।८।६

तस्य (घ्राणस्य) गन्धः परस्तात्

प्रतिविहिता भूतमात्रा

कौ.त. ३।५

तस्य चक्षुरकोऽन्नमशीतयोऽन्नेन

हीदं सर्वमभुते

१ऐत. १।२।६

तस्य चक्षुरेव तेजो गच्छति, प्राणं

प्राण एतद्वै ब्रह्म दीप्यते,

यच्चक्षुषा पश्यति

कौ.त. २।१३

तस्य (मनसः) चञ्चलता येषा

त्वविद्यावासनात्मिका ।.. तां

विचारेण विनाशय

महो. ४।१०२

तस्य चन्द्रमसमेव तेजो गच्छति

वायुं प्राण एतद्वै ब्रह्म दीप्यते

यच्चन्द्रमा दृश्यते

कौ.त. ३।१२

तस्य तस्याचलां श्रद्धां

अ.गी. ७।२१

तस्य तावत्प्रलयो भवति, प्रलये शून्यं त्रि.म.वा. ३।५

तस्य तावदेव चिरं यावन्न विमोक्ष्ये.

५थ सम्पत्स्य इति

छां.उ. ६।१४।२

तस्य तृतीयया स्वरमात्रया दिव-

मादित्यं...सामवेदं स्वरिति..

चक्षुषी दर्शनमितीन्द्रियाण्यभवन् २प्रणवो. ३

तस्य त्रय आवसथाक्षयः स्वप्ना

अयमावसथोऽयमावसथोऽयं..

२ऐत. ३।१२

तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति

[वा.सं. ३।१।१७+

चित्यु. १३।१

तस्य देवतात्मैक्यसिद्धिः

भाववो. १०

तस्य देवाभसन्वशे [वा.सं. ३।१।२१+

चित्यु. १३।२

तस्य द्यौरेव तिरश्चीनव१ शोऽन्तरिक्ष-

मपूपो मरीचयः पुत्राः

छान्दो. ३।१।१

तस्य द्वितीयया स्वरमात्रयाऽन्तरिक्षं

वायुं यजुर्वेदं भुव इति..

नासिके घ्राणमितीन्द्रियाण्यभवन् २प्रणवो. ३

तस्य द्वितीयेन वर्णेन तेजो ज्योती-

ष्यन्वभवत्

२प्रणवो. ३

तस्य द्वौ स्तनौ देवा उपजीवन्ति

स्वाहाकारं च वषट्कारं च हन्तकारं

मनुष्याः स्वाहाकारं पितरः

बृह. ५।८।१

तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्
 [तै.आ.३।१३।२+ चिन्त्यु. १३।२
 तस्य ध्याननिष्ठैव शिखा प.हं.प. ११
 तस्य ध्यानान्तस्थस्य यज्ञस्तोम-
 मुख्यते महो. १।२
 तस्य ध्यानान्तस्थस्य ललाटात्
 क्रयश्चः शूलपाणिः पुरुषोऽजायत महो. १।३
 तस्य ध्यानान्तस्थस्य ललाटात्
 स्वेदोऽपनत् [महो. १।४+ चतुर्वे. १
 तस्य (अमनस्कस्य) न कर्मलेपः मं.ब्रा. २।४
 तस्य नचिकेता नाम पुत्र आस कठो. १।१
 तस्य (लीनमनसः) निश्चिन्ता ध्यानम् मं.ब्रा. २।९
 (ॐ) तस्य (आत्मनः) निश्चिन्तनं
 ध्यानम् आत्मपू. १
 तस्य निश्चिन्तितमेव ऋग्वेदो यजुर्वेदः
 सामवेदो ह्यथर्वाङ्गिरश्चेति ना.पू.ता. ५।११
 तस्य पश्यन्ति ये ज्ञातिं स्वे वै
 पश्यन्ति ते पदम् अ.शां. २८
 † तस्य (ज्ञानिनः) पुत्रा दाय-
 सुपयान्ति, सुहृदः साधुकृत्यां,
 द्विषन्तः पापकृत्याम्
 तस्य पुरस्तादसव आसते, रुद्रा
 दक्षिणतः, आदित्याः पश्चाद्विष्टे-
 देवा उत्तरतो ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा
 माभ्यां सूर्याचन्द्रमसौ पार्श्वयोः नृ.पू. ५।८
 तस्य पुरुषविघतां, अन्वयं
 पुरुषविधः [तै.उ.२।२, +३,४,५
 तस्य पुरुषोत्तमस्य उत्तरकटाक्षात्स-
 सुत्पन्ना जीवाः सामर. २
 तस्य पूर्वं समुद्रे योनी रात्रिरेनं
 पञ्चान्महिमान्वजायत बृ.उ. १।१।२
 तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स
 महेश्वरः [महाना. ८।१७+ शु.र.उ. ३।१८
 तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता [म.गी. २।५७, +५८, ६१, ६८
 तस्य प्रथमया (सहस्रशीर्षेत्यनया
 कृत्वा) विष्णोर्देशतो व्याप्तिरीरिता मुद्रलो. १।२

तस्यप्रथमयास्वरमात्रया पृथिवीमग्नि-
 मोषधित्रनस्पतीनृग्वेदं भूरिति..
 जिह्वांसमितीन्द्रियाण्यन्वभवन् २प्रणवो. २
 तस्य प्रथमेन वर्णेनापस्नेहश्चान्वभवत् २प्रणवो. ३
 तस्य प्राक् सायमवभृथो नसो
 ब्रह्मण इति सहवै. १७
 तस्य प्राची दिक् (प्राश्चः) प्राणाः बृह. ४।२।४
 तस्य प्राची दिक्शिरोऽसौचासौ चेमौ बृ. १।२।३
 तस्य प्राची दिग्जुहूर्नाम छांदो. ३।१९।२
 तस्य प्राण एव शिरः तैत्ति. २।२
 तस्य प्राणमेव तेजो गच्छति
 प्राणं प्राणः, ऐतद्वै ब्रह्म.. कौ.त. २।१३
 तस्य प्राणेन प्रजया पशुभिरवक्षीयस्व कौ.त. २।९
 तस्य प्राणोऽर्कोऽन्नमशीतयोऽग्नेनहीदं
 सर्वमश्रुते १ऐत. १।२।५
 तस्य प्रियमेव शिरः तैत्ति. २।५
 तस्य प्रियं शिरः कृत्वा मोदो
 दक्षिणपक्षकः । प्रमोद उत्तरः
 पक्ष आनन्दो गोष्पदायते अवधू. ३
 तस्या प्रिया ज्ञातयः सुकृतमुपय-
 न्त्यप्रिया दुष्कृतम् कौ.त. १।४
 तस्य प्रोक्ता अप्र्यास्तनवो ब्रह्मा रुद्रो
 विष्णुरिति मैत्रा. ५।५
 तस्य फलानि तपसानुदन्तु [श्री.सू.+ क्र.खि. ५।८७।९
 तस्य बाह्याभ्यन्तःकरणानामेक-
 रूपविषयग्रहणमासनम् भावतो. ८
 तस्य बाह्येषु शतदलपद्मपत्रेषु योग-
 पीठेषु रासक्रीडाङ्गुराका
 गोप्यस्तिष्ठन्ति राधोप. २।१
 तस्य ब्रह्मणः स्थितिप्रलयवादि-
 नारायणस्यांशेनावतीर्णस्याण्ड-
 परिपालकस्य महाविष्णोरहो-
 रात्रिसंज्ञकौ त्रि.म.ना. ३।५
 (अथ) तस्य अयं भवति, तत्त्वेव
 अयं विदुषोऽमन्वानस्य तैत्ति. २।७
 तस्य भासा सर्वमिदं विभाति मुण्ड. २।२।१०
 तस्य मूर्तं च अविविधं पूर्वं पादौ
 (पद्मस्य) श्रीश्वराचारौ कौ.च. १।५

† इयं धृतिः श्रीमद्भगवद्गीताया ब्रह्मानन्दगिर्याख्याने
 (अ. प. १८ को. १०) दृग्गोचरा भवति ।

तस्य भूरिति शिर एकं शिर

एकमेतदक्षरम्

बृह. ५।५।३,४

तस्य मध्ये नाभ्यां तारकं यदक्षरं

नारसिंहमेकाक्षरं तद्वति

नृ.पृ. ५।७

तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चि-

विश्वतोमुखः... वह्निशिखा

चतुर्वे. ५

तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतो-

मुखः । सोममुनिवमजंस्तिष्ठ-

आहारमज्ञरः कविः

महाना. ९।९

तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्वि-

श्वतोमुखम् । तस्य मध्ये वह्नि-

शिखा अणीयोध्वां त्र्यवस्थिता

महो. १।८

तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोध्वां

त्र्यवस्थिता । नीलतोयदमध्य-

स्याद्विद्युल्लेखेव भास्वरा

[वासुदे. ५+

महाना. ९।९१

गो.चं. ५

तस्य मध्ये वह्निशिखा.... तस्याः

शिखायामध्येपरमात्माव्यवस्थितः

चतुर्वे. ५

तस्य मध्ये समुद्रः समुद्रस्य मध्ये

कोशस्तस्मिन्नाड्यश्चतस्रो भवन्ति

स्वामिच्छाऽपुनर्भवेति

बुवालो. ११

तस्य मन एव तेजो गच्छति प्राणं

प्राण एतद्वै ब्रह्मदीप्यते यच्चक्षुषा

पश्यति

कौ.त. ३।१३

तस्य मुखमेवोक्थम्, यथा पृथिवी तथा

तस्य वै तत्र न लोम च नामीयते

१।२।४

तस्य मेऽङ्गं मित्रं दक्षिणं तद्वैश्व-

मित्रम्, एष तपमेवास्मि

कौ.त. ३।१

तस्य य आत्मानमाविस्तरां वेद अभुते

हाविर्भूय ओषधिवनस्पतयो..

स आत्मानं.. वेद

१।३।१

तस्य यजुरेव शिरः, ऋग्वक्षिणः पश्चः

तस्य यद्विद्युदयात्स हिंकारस्तदस्य

पशवोऽन्वायत्तास्तस्मात्ते

विह्वलन्ति

छान्दो. २।९।२

तस्य यथा कप्यासं पुण्डरीक-

मेवमक्षिणी तस्योदिति नाभ

तस्य यथाऽभिमानं प्रमुख्य प्रभुया-

देवांविशं गन्धारा एतां दिशो ब्रज

छान्दो. १।६।७

छान्दो. ६।१४।२

तस्य यदुष्णं तज्ज्योतिः

१।३।३

तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तत्पुरीषं

भवति, यो मध्यमस्तन्मांसं

यौऽणिष्ठस्तन्मनः

छां.उ. ६।५।१

तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तदस्थि भवति,

यो मध्यमः स मज्जा, यौऽणिष्ठः

सा वाक्

छां.उ. ६।५।३

तस्य यानि व्यञ्जनानि तच्छरीरम्

१।४।१

तस्य यावन्न वाक्चक्षुः सम्पद्यते मनः

प्राणे प्राणस्तेजसि तेजः परस्यां

देवतायां तावज्जानाति

छां.उ. ६।१५।१

तस्य ये प्राञ्चो रश्मयस्ता एवास्य

प्राञ्च्यो मधुनाड्य ऋच एव

मधुकृते ऋचिदे एव पुष्पं ता

अमृता आपस्ता वा एता ऋचः

छान्दो. ३।१।२

तस्य यौऽवमशरीरः प्रज्ञात्मा स रमः

१।२।३।१

तस्य रात्रय एव पंचदश कला ध्रुवे-

वात्य बौद्धशी कला

बृह. १।५।१४

तस्य रूपं परस्तात् प्रतिविहता

भूतमात्रा

कौ.त. ३।५

तस्य लोमानि वर्णानि त्वगस्योत्पादिका

बहिः । त्वच एवास्य रुधिरं

प्रत्यन्दित्वच उत्पद्यते

बृह. ३।९।२८

तस्य वा एतस्य पुरुषस्य द्वे एव स्थाने

भवत इह च परलोकस्थानं च

बृह. ४।३।९

तस्य वा एतस्य बृहतीसहस्रस्य

षट्त्रिंशत्तमक्षराणां सहस्राणि

भवन्ति

१।२।६

तस्य वा एतस्य बृहतीसहस्रस्य..

एकादशानुष्टुभां शतानि भवन्ति

१।६।१

तस्य वा एतस्य बृहतीसहस्रस्य..

षट्त्रिंशत्तमक्षराणां सहस्राणि

भवन्ति

१।२।६

तस्य वा एतस्य बृहतीसहस्रस्य

षट्त्रिंशत्तमक्षराणां सहस्राणि

सहस्रै. १८

तस्य वा एतस्य बृहतीसहस्रस्य

षट्त्रिंशत्तमक्षराणां सहस्राणि

१।२।६

तस्य वा एतस्य बृहतीसहस्रस्य

षट्त्रिंशत्तमक्षराणां सहस्राणि

१।२।६

तस्य वागेव समित्प्राणो धूमो
जिह्वाऽर्चिश्चक्षुरङ्गाराः श्रोत्रं
विस्फुलिङ्गाः
छान्दो. ५।७।१
तस्य वायुमेव तेजो गच्छति
कौ.उ. २।१२
तस्य (पर्जन्याग्नेः) वायुरेव समि-
द्वं धूमो विशुद्धिर्गन्धश्चक्षुरङ्गारा
ह्लादुनयो विस्फुलिङ्गाः
कौ.त. ५।५।१
तस्य विद्युतमेव तेजो गच्छति
कौ.त. २।१२
तस्य विराट्पुरुषस्य यावत् स्थिति-
कालस्तावत्प्रलयो भवति
त्रि.म.ना. ३।६
तस्य वै वागेव प्रतिष्ठा, वाचि हि
सर्वेष्वेतत्प्राणः प्रतिष्ठितो
यौयतेऽस्य इत्यु हैक आहुः
बृह. १।३।२७
तस्य वै स्वर एव सुवर्ण, भवति
बृह. १।३।२६
तस्य वै स्वर एव स्वं तत्प्रमादात्स्विज्यं
बृह. १।३।२५
तस्य ध्यानमेव समित्प्राणो धूमो
जिह्वाऽर्चिश्चक्षुरङ्गाराः श्रोत्रं
विस्फुलिङ्गाः
बृह. १।१।१३
तस्य शब्दः परस्तात् प्रतिविहिता
भूतमात्रा
कौ.त. १।५
तस्य शरीर एव मन आसीत्
बृह. १।२।६
तस्य अद्भ्येव शिरः, ऋतं दक्षिणः
पश्चिमः, सत्यमुत्तरः पक्षः, योग
आत्मा, महः पुच्छं प्रतिष्ठा
तैत्ति. २।४
तस्य आन्तस्य तप्तस्य तेजो रसो
निरवतताभिः
बृह. १।२।२
तस्य आन्तस्य तप्तस्य यशो वीर्यमुद-
कायत्प्राणा वै यशो वीर्यम्
बृह. १।२।६
तस्य श्रोत्रमेव तेजोगच्छति प्राणं प्राण
एवैव ब्रह्म दीप्यते यच्छ्रोत्रेण
कौ.त. २।१३
(अथ) तस्य षडङ्गानि प्रादुर्बभूवुः
ग.पू. १।१०
तस्य सञ्जानयन् हर्षं
अ.गी. १।१२
तस्य सञ्जानयो शुद्धिर्गन्धश्चक्षुरङ्गारा
कठ. २
तस्य सर्वे जनाः सिद्धयन्ति
नृ.षट्च. ७

तस्य सप्तकोटिपरिसहस्रपरिमिताः
फणाः, तदुपरि वैकुण्ठो
राघोप. १।३
विष्णुलोकः
नृ.षट्च. ७
तस्य सर्वे लोकाः सिद्धयन्ति
छान्दो. ७।२५।२
तस्य सर्वेषु लोकेषु सर्वेषु भूतेषु
सर्वेष्व्वात्मसु हुतं भवति
छान्दो. ५।२४।२
तस्य संवत्सर एव समित्प्राणि धूमो
विद्युदर्चिश्चक्षुरङ्गारा ह्लादुनयो
विस्फुलिङ्गाः
बृह. ६।२।१०
तस्य सुखदुःखे परस्तात्प्रतिविहिता
भूतमात्रा
कौ.उ. ३।५
तस्य ह जनकस्य वेदेहस्य जिज्ञासा
बभूव कः स्विदेष्टां ब्राह्मणानामनु-
चानतम इति
बृह. ३।१।१
तस्य ह द्वादशवर्षाण्यग्नीन्परिचचार
छान्दो. ४।१०।१
तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस
कठो. १।१
तस्य ह न देवाश्च नाभूत्या ईशते
आत्मा ह्येषाः स भवति
बृह. १।४।१०
तस्य ह ब्रह्मणो विन्ये देवा
अमहीयन्त
केनो. ३।१
तस्य ह मूर्ध्ना विपणत
बृह. ३।५।२६
तस्य ह वाचमं प्रथमं स्थानं जानीया-
च्चै जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति
नृ.पू. २।३
तस्य ह वा एतस्य प्रणवस्य या पूर्वा
मात्रा सा पृथिव्यकारः...
नृ.सिंहो. ३।२
तस्य ह वा एतस्य ब्रह्मणो नाम सत्यम्
छान्दो. ८।३।१४
तस्य ह वा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो
वाक्परस्ताच्चक्षुराङ्गान्धे
कौ.त. १।२
तस्य ह वा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो
मनो दूतं वाक्परिवेष्टी चक्षुर्गान्धं
श्रोत्रं संभ्रावयितुः...
कौ.त. २।१
तस्य ह वा एतस्य ब्रह्मणो कस्यारो
हृदो मुहूर्ता येष्टिह...
कौ.त. १।३
तस्य ह वा एतस्य हृदयस्य पञ्च
देवमुषयः स योऽस्य ब्राह्मसुविः
स प्राणस्त्वब्रह्मः स आदित्वस्त-
तेजोऽजायमित्युपासीततेजस्य-
जादौ भवति
छान्दो. ३।१३।१

तस्य ह वा एतस्यात्मनो वैश्वानरस्य
 मूर्ध्वे सुतेजाश्चक्षुर्विंश्रूपः प्राणः छान्दो. ५।१८।२
 तस्य ह वा एतस्यैवं पश्यत एवं
 सन्वानस्यैवं विजानत आत्मतः
 प्राण आत्मत आशाऽऽत्मतः
 स्मर आत्मत आकाश....आत्मतः
 कर्माण्यात्मत एवेदः सर्वमिति छान्दो. ७।२६।१
 तस्य ह वा एषा प्रतिष्ठा यत्रासावा-
 त्मानमुपसंहृत्याजुगुपत् शौनको. ४।५
 तस्य ह वै प्रणवस्य या पूर्वा मात्रा
 सा प्रथमः पादो भवति नृसिंहो. ३।१
 तस्य ह वै प्रणवस्य वा (या) पूर्वा
 मात्रा पृथिव्यकारः स ऋग्भिर्ऋ-
 ग्वेदो ब्रह्मा वसवो गायत्री.. सा
 सान्नः प्रथमः पादो भवति नृ.पू. २।१
 तस्य हैतस्य पञ्चाङ्गानि भवन्ति,
 चत्वारः पादाश्चत्वार्यङ्गानि
 भवन्ति, सप्रणवं सर्वं पञ्चमं
 भवति नृ.पू. २।२
 तस्य हैतस्य पुरुषस्य रूपं यथा
 महारजनं वासो यथापाण्ड्वा-
 दिक्...ह वा अस्य श्रीर्भवति बृह. २।३।६
 तस्य हैतस्य साम्नो यः स्वं वेद
 भवति हास्यस्वम् बृह. १।३।२५
 तस्य हैतस्य सान्नो यः सुवर्णं वेद
 भवति हास्य सुवर्णम् बृह. १।३।२६
 तस्य हैतस्य सान्नो यः प्रतिष्ठां वेद
 प्रति ह तिष्ठति तस्य वै वागेव
 प्रतिष्ठा वाचि.. बृह. १।३।२७
 तस्य हैतस्य हृदयस्याग्रं प्रद्योतते तेन
 प्रद्योतेनैव आत्मा निष्कामति बृह. ४।४।२
 तस्य श्लेष रस इत्यभिदैवतम् बृह. २।३।३
 तस्या (गायत्र्याः) अग्निरेव मुखम्
 यदिह वा अपि बह्विनाम्ना-
 वभ्यावधति (तस्याः अग्निरेव...
 वापि बहिमान्नावभ्यावधति)
 [बृह. ९।१४।८+ गायत्र्यु. ५
 तस्या अभितसाया एतान्यक्षराणि
 प्राखन्वन् भूर्भुवः स्वरिति छां.व. २।२३।३

तस्या अंशो लक्ष्मीदुर्गा-
 विजयादिशक्तिरिति राधोप. १।५
 तस्या आहुतेरन्नं संभवति छान्दो. ५।६।२
 तस्या आहुतेर्गर्भः सम्भवति छान्दो. ५।८।२
 तस्या आहुतेः सोमो राजा सम्भवति छान्दो. ५।४।२
 तस्या आहुत्या अन्नः सम्भवति बृह. २।६।११
 तस्या आहुत्यै पुरुषः सम्भवति बृह. ६।२।१३
 तस्या आहुत्यै पुरुषो भास्वरवर्णः
 सम्भवति बृह. ६।२।१४
 तस्या आहुत्यै रेतः सम्भवति बृह. ६।२।१२
 तस्या आहुत्यै वृष्टिः सम्भवति बृह. ६।२।१०
 तस्या आहुत्यै सोमो राजा सम्भवति बृह. ६।२।९
 तस्या इन्द्रः प्रणवमेव पुरोगामकरोत् शौनको. ४।२
 तस्या उपस्थ एव सन्ति [छान्दो. ५।८।१+ बृह. ६।२।१३
 तस्या उपस्थानं गायत्र्यस्येकपदी
 द्विपदी त्रिपदी चतुष्पदपदसि.. बृह. ५।१४।७
 तस्या एकादशभिः पादैरेकादश-
 रुद्राभिर्ममे अव्यक्तो. ६
 तस्या एकादशभिरेकादशादित्या-
 भिर्ममे अव्यक्तो. ६
 तस्या एवर्चो द्वात्रिंशद्भिरक्षरैस्तान्
 देवान् निर्ममे अव्यक्तो. ६
 तस्या एव द्वितीयः पादो भर्गमयो-
 ऽपो भुवो भर्गो देवस्य धीमही-
 त्यग्निर्वै भर्ग आदित्यो वै भर्ग-
 अन्द्रमा वै भर्गः सावित्र्यु. १०
 तस्या एव प्रथमः पादो भूतस्तसवितु-
 र्वरेण्यमित्यग्निर्वै वरेण्यमापो
 वरेण्यं चन्द्रमा वरेण्यम् सावित्र्यु. १०
 तस्या एव ब्रह्मा अजीजनत्, विष्णु-
 रजीजनत्, रुद्रोऽजीजनत् बृहचो. १
 तस्या एष तृतीयः पादः स्वर्भियो
 यो नः प्रचोदयादिति सावित्र्यु. १०
 तस्या एष पतिस्तस्मादु ब्रह्मणस्पतिः बृह. १।३।२१
 तस्या एष पतिस्तस्माद्बृहस्पतिः बृह. १।३।२०
 तस्या कृत्स्नतो मन एवास्यात्मा (मा.पा.) बृह. १।४।१७
 तस्या खण्डज्ञानेनाविर्भावो भवति,
 सोऽपि शाश्वतः त्रि.म.ना. २।१
 तस्या गोमयेन क्षारं जातम् बृ.जा. १।६

तस्याग्निरर्कोऽन्नमशीतयः १ ऐत. १।२।१
 तस्याग्निरेवाग्निर्भवति बृह. ६।२।१४
 तस्यादित्य एव समिद्रश्मयो धूमो-
 ऽदरर्चिः [छां. उ. ५।४।१।+ बृह. ६।२।९
 तस्यादिरथमकारः स एव भवति नृसिंहो. ७।२
 सर्वं ह्ययमात्मा हि सर्वान्तरो राधोप. ३।३
 न हीदं सर्वमहमिति गुह्यका. ६७
 तस्याद्या प्रकृती राधिका नित्या राधोप. १।३
 निर्गुणा तस्या न कार्य कारणं च विद्यते
 तस्यानन्तरोमकूपेष्वनन्तकोटि-
 ब्रह्माण्डानि राधोप. १।३
 तस्यानन्दो रतिः प्रजातिः पर-
 स्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ. त. ३।५
 तस्यानशनं दीक्षास्थानमुपसद आसनं सहवै. २१
 सूत्या वाग्जुर्मेन उपभृत्.
 तस्यानुवृत्तिं तृप्यति प्रजया पशुभि-
 रन्नाद्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसेन
 [छान्दो. ५।१९।२+ ५।२३।२
 तस्यान्नरसः परस्तात् प्रतिविहिता कौ. त. ३।५
 भूतमात्रा तस्यान्तर्मेनसि कामः समवर्तत
 इदं सृजेयमिति [बृ. जा. १।१+ नृ. पू. १।१
 तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं तस्मिन्सर्वं महाना. ९।८
 प्रतिष्ठितम्
 तस्यान्त्योऽयं मकारः स एव नृ. उ. ७।३
 भवति तस्मान्मकारेण परमं बृह. १।१।२
 ब्रह्मान्विच्छेत्
 तस्यापरे समुद्रे योनी रात्रिरेनं
 पञ्चान्महिमान्वजायत बृह. १।१।२
 तस्यापि हेरन्मगुरोः प्रसादात्
 यथा चिरिच्छिर्गण्डो मुकुन्धः हेरन्बो. ४
 तस्याप्येवं तिसृष्ववस्थास्वप्नत्वं मेत्रा. ६।१०
 भवति गुह्यका. ४५
 तस्या भासा सर्वमिदं विभाति
 तस्यामितस्य मुखं निरभिद्यत
 यथाऽण्डं मुखाद्वाग्वाचोऽग्निः.. २ ऐत. १।४
 तस्यामितस्य यशस्तेज इन्द्रियं
 वीर्यमन्नाद्यं रसोऽजायत
 [छान्दो. ३।१।३+ ३।५।२

तस्यामर्थं निष्ठाय [बृह. ६।४।९ १०, ११, २१
 तस्यामश्राम्यत्तस्य श्रान्तस्य तप्तस्य
 तेजो रसो निरवर्तताग्निः बृह. १।२।२
 तस्यायनं दक्षिणं चोत्तरं च प्रश्नो. १।९
 तस्यायं भूतात्मा ह्यन्नमस्य कर्ता
 प्रधानः मैत्रा. ६।१०
 तस्या रक्तवर्णा सुरभिः, तद्रोमयेन
 भस्म जातम् बृ. जा. १।५
 तस्याराधनमीहते भ. गी. ७।२२
 तस्यार्चत आपोऽजायन्तार्चते वै
 मेकमभूदिति तदेवार्कस्यार्कत्वम् बृ. उ. १।२।१
 तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं
 जगत् श्वेताश्व. ४।१०
 तस्या वाचः परो देवः कूटस्थो वाक्प्र-
 बोधकः । सोऽहमस्मीति निश्चित्य
 यः सदा वर्तते पुमान् योगकुं. ३।२०
 तस्या वेदिरुपस्थो लोमानि बर्हि-
 श्रमाधिषवणे समिद्धो मध्यत-
 स्तौ मुष्को बृह. ६।४।३
 तस्याश्चस्वारः स्तनाः स्वाहाकारो
 वषट्कारो हन्तकारः स्वधाकारः बृह. ५।८।१
 तस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य
 ऋषिः... चक्षुरोगनिवृत्तये
 जपे विनियोगः चाक्षुषो. ३
 तस्याश्चित्रवर्णा सुमनाः (गौः) तद्रो-
 मयेन रक्षा जाता बृ. जा. १।६
 तस्यासत ऋषयः सप्त तीरे वागष्टमी
 ब्रह्मणा संविदाना बृह. २।२।३
 तस्यासते हरयः सप्त तीरेस्वधां दुहाना
 असृतस्य धाराम् [त्रिपु. ३ + महाना. १२।३
 तस्यासावादित्योऽर्कोऽन्नमशीतयो-
 ऽग्नेन हीदं सर्वमभुते १ ऐत. १।२।३
 तस्यासीद्दुहिता गन्धर्वगृहीता तम-
 पृच्छाम कोऽसीति बृ. उ. ३।३।१
 तस्यासीद्गार्गा गन्धर्वगृहीता तम-
 पृच्छाम कोऽसीति बृह. ३।७।१
 तस्यासुरः पाप्मा सविदानन्दघन-
 व्योतिर्भवति नृसिंहो. ६।२

तस्यास्तप्यमानाया रसान्प्राबृहद्-
रित्युग्म्यो भुवरिति यजुर्म्यः

स्वरिति सामम्यः

छान्दो. ४।१७।३

तस्याहरेव प्राणो रात्रिरेव रयिः प्राणं
वा एते प्रस्कन्दन्ति ये दिवारत्या
संयुज्यन्ते

प्रश्नो. १।१३

तस्याहं न प्रणयामि

भ.गी. ६।३०

तस्याहं निमहं मन्ये

भ.गी. ६।३४

तस्याहं सुलभः पार्थ

भ.गी. ८।१४

तस्यां जागर्ति संयमी

भ.गी. २।६९

तस्यां प्रतिरूपः पुत्रो जायते स

आनन्दः

बृह. ४।१।६

तस्यां लीलायां प्रत्ययः परा काष्ठा

सामर. ४४

तस्यां (पुत्रीं) हिरण्मयः कोशः

अरुणो. १

तस्याः कपिलवर्णा नन्दा (गौः)

बृ.जा. १।५

तद्गोमयेन विभूतिर्जाता

तस्याः कृष्णवर्णा भद्रा (गौः)

बृ.जा. १।६

तद्गोमयेन भसितं जातम्

बृह. ५।८।१

तस्याः प्राण ऋषभो मनो वत्सः

महो. १।९+

तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा

व्यवस्थितः [महाना. ९।१२+]

[वासुदे. ७+चतुर्वे. ६+]

तस्याः श्वेतवर्णा सुशीला (गौः)

तस्या गोमयेन क्षारं जातम्

बृ.जा. १।६

तस्याः संवत्सर एव समिदाकाशो

धूमो रात्रिरर्चिर्दिशोऽङ्गारा अवा-

न्तरदिशो विस्फुलिङ्गाः

छान्दो. ५।६।१

तस्यैवमेव पृथिव्या रूपम्

३ ऐत. १।२।२

तस्यैवमेवाधानमिदं प्रत्याधानं

प्राणः स्थूणान्नं दाम

बृह. २।३।१

तस्यैव विश्वं मित्रमासीद्यदिदं किञ्च

१ ऐत. २।१।४

तस्यैन्निग्राण्यवश्यानि (अहस्य)

दुष्टाश्वा इव सारथेः

कठो. ३।५

तस्यैवा हृष्टका यो वसन्तो ग्रीष्मो

वर्षाः क्षरद्विमन्तः

मैत्रा. ६।३३

तस्यैवै लोका आत्मानस्तावेता-

वर्काश्चयेवौ

बृह. १।२।७

तस्यैवै पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णास्याव

तेजि. २।८

तस्येह (कर्मणः) त्रिविधस्यापि

अधिष्ठानस्य देहिनः । मनो

...विद्यात्प्रवर्तकम्

भषसं. ५।२

तस्यैतदेव निरुक्तं हृदयमिति

तस्माद्द्वयमहरहर्वा एवंवित्

स्वर्ग लोकमिति

छान्दो. ८।१।३

तस्यैतद्रूपं यन्ति मेषादिकालात्

सम्भृतं... संवत्सरम्

मैत्रा. ६।१४

तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा, वेदाः

सर्वाङ्गानि, सत्यमायतनम्

केनो. ४।८

तस्यैतल्लिङ्गं, अलिङ्गस्याभैर्यदौर्ग्यं

...चापां यः शिवतमो रसः

मैत्रा. ६।३१

तस्यैतस्य तदेव रूपं, यद्गुण्य

रूपं, यावद्गुण्य गेष्णौ तौ

गेष्णौ, तन्नाम तन्नाम

छान्दो. १।७।५

तस्यैतस्य त्रयस्यास्त्रां मज्झां पर्वणा-

मिति त्रीणीतः षष्टिशतानि

त्रीणीतस्तानि सप्तविंशति-

शतानि भवन्ति

३ ऐत. २।१।२

तस्यैतस्य त्रयस्यास्त्रां मज्झां पर्वणा-

मिति पंचेतश्चत्वारिंशच्छतानि

अथेतस्तदशीतिसहस्रं भवति

३ ऐत. २।१।३

तस्यैतस्य ब्रह्मा रसः. तस्माद्ब्रह्माणं

प्रदिष्टं कुर्वीत

३ ऐत. २।३।१

तस्यैतस्य महतो भूतस्य निश्चसित-

मेवैतद्यद्यवेदो यजुर्वेदः सामवेदो-

ऽथर्ववेदः शिक्षाकल्पो व्याकरणं

निरुक्तं छन्दो ज्योतिषामयनं..

सर्वाणि च भूतानि

सुबालो. २।१

तस्यैतस्य मूर्तस्यैतस्य मर्त्यस्यैतस्य

स्थितस्यैतस्य सत एष रसः

बृह. २।३।५

तस्यैतस्य मूर्तस्यैतस्य मर्त्यस्यैतस्य

स्थितस्यैतस्य सत एष रसो

यच्चक्षुः सतो ह्येष रसः

बृह. २।३।४

तस्यैतस्याकारो रसः

३ ऐत. २।३।१

तस्यैतस्यात्मनः प्राण ऊष्म रूपम-

स्थीनि स्वर्गरूपं.. लोहितमिति

३ ऐत. २।१।१

तस्यैतस्यामूर्तस्यैतस्यामृतस्यैतस्य यत्
 एतस्य तस्यैष रसो य एष एतस्मि-
 न्मण्डले पुरुषः बृह. २।३।३,५
 तस्यैतस्यासावादित्यो रसः ३ऐत. २।३।१
 तस्यैतां प्रायश्चित्तिविदाश्चकारमुदेवः सहवै. २२
 तस्यैतां शान्तिं कुर्वन्ति हर
 वैवस्वतोदकम् कठो. १।७
 तस्यै धियो विज्ञातव्यं कामाः परस्ता-
 त्प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ.त. ३।५
 तस्यै नाम परस्तात्प्रतिविहिता
 भूतमात्रा कौ.त. ३।५
 तस्यै यदुपांशु स प्राणः १ऐत. ३।६।७
 तस्यैव कल्पनाहीनस्वरूपग्रहणं
 हि यत् । मनसा ध्याननिष्पाद्यं
 समाधिः सोऽभिधीयते भवसं. ३।३०
 तस्यैव स्यात् पदवित्तं विदित्वा न
 लिप्यते कर्मणा पापकेन बृह. ४।४।२३
 तस्यैव विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः
 ब्रह्मा पत्नी शरीरमिधमुरो वेदिः महाना. १८।१
 तस्यैव स्तुवतो नित्यं समभ्यर्च्य
 सरस्वतीम् । भक्तिभ्रद्धाभियुक्तस्य
 षण्मासात्प्रत्ययो भवेत् सरस्व. ३२
 तस्यै वाचः पृथिवी शरीरं, ज्योती
 रूपमयमग्निः बृह. १।५।११
 तस्यैवात्मा पदवित्तं विदित्वा, न
 कर्मणा लिप्यते पापकेन इतिहा. २०
 तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूँ स्वां
 [मुण्ड. ३।२।३+ कठो. २।२३
 तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्म धाम मुण्ड. ३।२।४
 तस्यैष आदेशो यदेतद्विद्युतो व्यद्यु-
 तदा ३ इतीति न्यमीमिषदा ३
 इत्यभिदैवतम् केनो. ४।४
 तस्यैष एव शारीर आत्मा तेत्ति. २।३,४,५
 तस्यैषा भवति अनुष्टुप्प्रथमा भवति,
 अनुष्टुप्प्रथमा भवति नृ.पू. १।१
 तस्यैषा अतिर्यत्रैतत्कर्णावपिगृह्य
 निनदमिव नक्षुरिवाग्नेरिव
 ज्वलत उपसृणोति छान्दो. ३।१३।८
 ३३

तस्यैषैव दृष्टिरेतद्विज्ञानं यत्रैतत्पुरुषः
 सुप्तः स्वप्नं न कंचन पश्यति कौ.त. ३।३
 तस्यैषैव सिद्धिरेतद्विज्ञानं यत्रैतत्पुरुष
 आर्तो मरिष्यन्नाबल्यं न्येत्य
 मोहं नैति कौ.त. ३।३
 तस्यो कृत्स्नता मन एवास्यात्मा,
 वाग्जाया, प्राणः प्रजा, चक्षु-
 र्मानुषं वित्तम् बृह. १।४।१७
 तस्योत्तरतः शिरो दक्षिणतः पादौ
 [अ. शिरः. ३।४+ बटुको. १९
 तस्योदिति नाम स एष सर्वेभ्यः
 पाप्मभ्य उदित उदेति छान्दो. १।६।७
 तस्योर्ध्वं कुण्डलीस्थानं नामेस्तिर्य-
 गधोर्ध्वतः । अष्टप्रकृतिरूपा सा.. त्रि. प्रा. २।६२
 तस्योपनिषत्सत्यस्य सत्यमिति,
 प्राणा वै सत्यं, तेषां वै सत्यम्
 [बृ.उ. २।१।२०+ मैत्रा. ६।३२
 तस्योपनिषद्हरिति हन्ति पाप्मानं
 जहाति च, य एवं वेद बृह. ५।५।३
 तस्योपनिषद्हमिति हन्ति पाप्मानं
 जहाति च.. बृह. ५।५।४
 तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्भविष्य-
 दिति सर्वमोङ्कार एव माण्डू. १ +
 [नृ.पू. ४।२ + नृसिंहो. १।२
 तस्योपव्याख्यानं भूतं भव्यं भविष्य-
 यच्चान्यत्तत्त्वमंत्रवर्णदेवताछन्दोः-
 कलाशक्तिसृष्ट्यात्मकमिति तारसा. २।५
 तस्यो मे किमन्नं किंवांस इति यदिदं
 किञ्चाश्वभ्य आ कृमिभ्य आ
 कीटपतङ्गेभ्यस्तत्तेऽन्नम् बृह. ६।१।१४
 तस्यो मे बलिं कुरुतेति, तथेति बृह. ६।१।१३
 तस्योष्णिग्लोमानि, त्वग्गायत्री,
 त्रिष्टुप्मांसं, अनुष्टुप्.. १ऐत. १।६।१
 तं केन विजानीयाद्विज्ञातारमरे केन
 कं विजानीयात् बृह. २।४।१४
 तं केन विजानीयात् स एष नैति
 नेतीत्यात्माऽग्राह्यो नहि गृह्यते.. बृह. ४।५।१५

तं गणेशं तं गणेशं तं गणेश-
 मिदं श्रेष्ठम् गणेशो. २।१
 तं चावति स भूत्वाऽसौ तद्बहः
 समुपैति तम् वैतथ्य. २९
 तं चेदेतस्मिन्वयसि किञ्चिदुपतपे-
 त्स ब्रूयात्.. [छान्दो. ३।१६।२,४,६
 तं चेन्मे न विवक्ष्यसि मूर्धा ते
 विमतिष्यतीति बृह. ३।९।२६
 तं चेद्भूरतिवाद्यसीत्यतिवाद्यस्मीति
 ब्रूयान्नापहुवीत छान्दो. ७।१५।४
 तं चेद्भूरस्मिन् श्रेदिदं ब्रह्मपुरे सर्वं
 समाहितं सर्वाणि च भूतानि..
 प्रध्वं सते वा किं ततोऽति-
 शिष्यत इति छान्दो. ८।१।४
 तं चेद्भूर्यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे दहरं
 पुण्डरीकं वेदम् छान्दो. ८।१।२
 तं ज्ञातमभिव्याददात्प्रभाणकरोत्
 सैव वागमत् बृह. १।२।४
 तं ज्ञानज्ञप्रऽआरोहाथा(धा)न्नो वर्धया
 इयिम् (वा.सं ३।१४ अथर्व. ३।२०।१)
 इत्यनेन मन्त्रेणाग्निमाजिघ्रेत्
 याज्ञव. १
 जायमानं घोषा उल्लवो अनू-
 दतिष्ठन्त छान्दो. ३।१९।३
 तं जायोवाच, तप्तो ब्रह्मचारी कुशल-
 मग्नीन्परिचचारीन्मा त्वाऽमयः
 परिप्रवोचन्प्रब्रूहस्मा इति छान्दो. ४।१०।२
 तं जायोवाच हन्त पत इम एव
 कुत्समाषा इति छान्दो. १।१०।७
 तं ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुः (मा.पा.) कठो. ६।८
 तं तथा कृपयाऽऽविष्टं भ.गी. २।१
 तं तपसा द्वादश द्वादशानन्द इति तैत्ति. ३।११
 तं तमेवेति कौन्तेय भ.गी. ८।६
 तं तं लोकं जयते तांश्च कामांस्तस्मा-
 द्वात्मज्ञं हर्षयेद्भूतिकामः मुण्ड. ३।१।१०
 तं तं तन्तुमन्वेके अनुसञ्चरन्ति सहवै. १०
 तं तं नियममास्थाय भ.गी. ७।२०
 तं ते गर्भे इवाग्रदे दशमे मासि सूतवे बृह. ६।४।२२
 [च.सं. ८।८।४२= मं. १०।१८४।४२
 तं त्वा वृच्छामि कासौ पुरुष इति प्रभो. ६।१

तं त्वा भग प्रविशानि स्वाहा तै.च. १।४।६
 तं त्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि तंचेन्मे
 न विवक्ष्यसिमूर्धातेविपतिष्यति बृह. ३।९।२।६
 तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं.. अध्या-
 त्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा कठो. २।१२
 तं हृष्टा शान्तमनसं स्पृहयन्ति
 दिवौकसः। लिङ्गाभावात्तु कैव-
 ल्यमिति ब्रह्मानुशासनम् ना.प. ४।३७
 तं देवतानां परमं च दैवतं... श्वेता. ५।७
 विदाम देवं परमेशमीड्यम्
 तं देवदेवं शरणं प्रजानां यज्ञात्मकं
 सर्वलोकप्रतिष्ठम्.. नमस्ते विष्णुह. १।६
 तं देवा अभ्रुवन् त्वमुक्थमसि त्वमिदं
 सर्वमसि, तव वयं स्मः... श्वेत. १।४।७
 तं देवा अभ्रुवन्नयं वै नः सर्वेषां
 वसिष्ठ इति श्वेत. ३।२।३
 तं देवा अभ्रुवन्नयं वै नः सर्वेषां
 वाम इति श्वेत. २।१।५
 तं देवा ऊचुरनुजावरोऽसि
 त्वमस्माकं कुतस्तवाधिपत्यम् अव्यक्तो. ८
 तं देवा प्राणयन्त, स प्रणीतः प्राता-
 यत प्रातायती ३ तत्प्रातरभवत् श्वेत. १।५।१
 तं देवाश्चक्रिरे धर्मं स एवाद्य स
 उ श्व इति बृह. १।५।२३
 तं देवाः सर्वेऽर्पितास्तदु नात्येति
 कश्चन, एतद्वै तत् कठो. ४।९
 तं दैवमुख्यं सुरतं भवाद्य पारसा. ९।७
 तं नायतनं बोधयेदित्याहुः बृह. ४।३।१४
 तं नित्यबोधस्तत्त्वयमेवास्थितिस्तं
 शान्तमचलं.. प.हं. ३
 तं पञ्चशतान्यप्सरसां प्रतिभावन्ति
 शतं मालाहस्ताः ... तं ब्रह्मा-
 लङ्कारेणालङ्कुर्वन्ति कौ.त. १।४
 तं पश्चाद्दिग्बलिं कुर्यादथवा खननं
 चरेत्। पुंसः प्रव्रजनं प्रोक्तं.. पैङ्गलो. ४।५
 तं पाकेन मनसा पश्यमन्तितः श्वेत. १।६।७
 [च.सं. ७.८।६।१६= मं. १०।१८४।४२
 [पे.वा. ३।१।६।५९

तं पाणावादायोत्तस्थौ, तौ ह पुरुष५

सुप्रमाजगमनुः

बृह. २।१।१५

तं पीठं येऽनुभजन्ति धीरास्तेषां

सुखं शीघ्रतं नेतरेषाम्

गो.पू. ३।३

तं प्रजापतिरब्रवीद्ब्रह्म देवाना-

मधिपतिर्भवेति

अध्यक्तो. ८

तं प्रजापतिरिन्द्रं त्रिकलशैरमृतपूर्णै-

रानुष्टुभाभिमन्त्रितैरभिषिच्य

अव्यक्तो. ८

तं सुदर्शनेन दक्षिणतो ररक्ष

तं प्रतिब्रूयाद्विचक्षणादृतवो रेत

आमृतं पञ्चदशाक्षप्रसूतात्..

कतयैरयध्वम्

कौ.त. १।२

तं प्रपदाभ्यां प्रापद्यत ब्रह्मेमं पुरुषम्

१ऐत. १।३।१

तं प्राणं जानन्नग्न आरोहाथा नो

वर्धय रयिम्

जावा. ४

तं प्रेतं दिष्टमितोऽग्रय एव हरन्ति

छान्दो. ५।९।२

तं बिम्बवन्तं समदं समग्रं स्वाहा

पारमा. ८।५

तं ब्रह्माह-अभिधावत मम यशसा

विरजां (विजरां) वायं नदीं

कौ.त. १।३

तं ब्रह्माह कोऽसीति तं प्रतिब्रूयात्..

कौ.त. १।५

तं ब्रह्मालङ्कारेणालं कुर्वन्ति

कौ.त. १।४

तं (योगिनं) ब्रह्मेति स्तुवंति

मं.ब्रा. २।९

तं भगवान् नृसिंहः प्रसीदति

नृ.षट्च. ७

तं अर्तारं तमु गोप्तरमाहुः

चित्त्यु. १।४।१

तं भूतिरिति वेदा उपासांचक्रिरे

१ऐत. १।८।३

तं महुरुषनिपत्याभ्युवाद सत्य-

काम ३ इति

छान्दो. ४।८।२

तं हंस उपनिपत्याभ्युवाद सत्यकाम..

छान्दो. ४।७।२

तं मन्येत पितरं मातरं च, तस्मै

न मुद्येत

संहितो. ३।६

तं माता रेड्धि स च रेड्धि मातरं

३ऐत. १।६।७

[क्र.अ. ८।६।१६=मं.

१०।११४।४+

[ऐ.आ. ३।१।६।९९

तं मा भगवान्छोकस्य पारं तारयतु

छान्दो. ७।१।३

तं मामागुरमुवमित्युपास्त्वायुः प्राणः

कौ.त. ३।२

तं मामेव विदित्वोपासीत

अस्मजो. २।६

तं मे देवा ब्रह्मणा संविदानौ

[ते.आ. ३।१।४।४+

चित्त्यु. १।४।४

तं यज्ञं विदि राजसम्

भ.गी. १।७।२१

तं विद्याहुःस्वसंयोगवियोगं

योगसंज्ञितम्

भ.गी. ६।२३

त५ यच्छत वर्षाण्यभ्याचन्तस्माच्छ-

तर्चितः

१ऐत. २।१।१

त५ यज्ञमिति मन्त्रेण सृष्टियज्ञः

समीरितः । अनेनैव च मन्त्रेण

मोक्षश्च समुदीरितः

मुद्रलो. १।७

त५ यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्

चित्त्यु. १।२।३

[क्र.अ. ८।४।१८=मं. १०।९०।६+

वा.सं. ३।१।९

त५ यदा लोकानामन्तानपृच्छाम

बृह. ३।३।१

त५ यदावसायाश्चांस्तक्षापोह्यापा-

गादथ व्यलिष्ट

छाग. ६।१

त५ यदि स्वरेषूपालभेतेन्द्र५ शरणं

प्रपन्नो अभूव...

छान्दो. २।१२।३

त५ यदेवा अभ्रुवन्नयं वै नः सर्वेषां

वसिष्ठ इति तस्माद्वासिष्ठः

१ ऐत. २।२।२

त५ यदेवा अभ्रुवन्नयं वै नः सर्वेषां

वाम इति तस्माद्दामदेवः

१ऐत. ३।१।५

त५ यथा यथोपासते तथैव भवति ।

तस्माद्वाहणः पुरुषरूपं परं

ब्रह्मैवाहमिति भावयेत्

मुद्रलो. ३।३

त५ वयं समिधं कृत्वा तुभ्यमग्ने

पिदध्मसि

सहवै. ७

त५ वा एतमात्मानं परमं ब्रह्मोद्धारं

तुरीयोद्धारान्विद्योतमनुष्टुभा

नत्वा प्रसाद्योमिति संहृत्या-

हमित्यनुसन्दध्यात्

नृसिंहो. ४।१

त५ वा एतमात्मानं जाग्रत्यस्वप्न-

मसुषुप्तं स्वप्ने जाग्रतमस्वप्नं,

सुषुप्ते जाग्रतमस्वप्नं तुरीये...

नृसिंहो. ३।१

त५ वा एतमाहुरतिपिता बताभूरति-

पितामहो बताभूः परमां बत

काष्ठां प्रापत्..

बृह. ६।४।२८

त५ वा एतमिन्ध५ सन्तमिन्द्र

इत्याचक्षते प्ररोक्षेणैव

बृह. ४।२।२

त५ वा एतं त्रिशिरमात्मानं

त्रिशरीरं परं ब्रह्मानुसन्दध्यात्

नृसिंहो. १।२

त५ वा एते देवा आत्मानमुपासते

त५ विदित्वा मृत्युमत्येति

छान्दो. ८।१२।६

हंसो. ४

त० विद्याकर्मणी समन्वारभेते	
पूर्वप्रज्ञा च [बृह. ४।४।२+	निरुक्तो २।२
त० विद्याच्छुक्रममृतम्	कठो. ६।१७
त० विन्दमानां सकलं व्रजन्तीं	
तं देवमुख्यं सुरतं भवाय स्वाहा	पारमा. ९।७
त० विरजं नित्यमनुसम्पराय स्वाहा	पारमा. १०।३
त० विश्वरूपं भवभूतमीड्यं देवं	
स्वचित्स्थमुपास्य पूर्वम्	श्वेता. ६।५
त० वेद्यं पुरुषं वेद यथा मा वो मृत्युः	
परिव्यथा इति	प्रभो. ६।६
त० शतं वर्षण्यभ्याचर्त्	१पेत. २।१।१
त० शान्तमचलमद्वयानन्दविज्ञान-	
घन एवास्मि	प.हंसो. ३
त० षड्विंशक इत्येते सप्तविंशं तथा-	
ऽपरे । पुरुषं निर्गुणं सांख्यमथर्व-	
शिरसो विदुः	मंत्रिको. १४
त० षड्विंशतारमृतुभिः कल्पमानम्	चित्त्यु. ११।५
त० स एष एवंविदुद्रातात्मने वा	
यजमानाय वा यं कामं कामयेत	
तमायायति	बृह. १।३।२८
त० स्रक्छिद्युतेव ह वा अस्य	
भीर्भवति	बृह. २।३।६
त० स द्वितीयस्याद्याधान्त्यं...	
क्षाम तु जानीयात्	च.पू. १।५
त० समंतं पृथ्वी द्विस्तावत्पर्येति	बृह. ३।३।२
त० सर्वस्वरस्य परस्तादात्मन	
आलभत	बृह. १।२।७
तं सूर्यं भगवन्तं सर्वस्वरूपिणं निगमा	
बहुधा वर्णयन्ति	सूर्यता. १।२
त० स्त्री गर्भं विभर्ति सोऽग्र एव	
कुमारं जन्मनोऽप्रेऽधिभावयति	२ ऐत. ४।३
त० स्वाच्छरीरात्प्रवृहेन्मुञ्जा-	
दिवेयीकां धैर्येण	कठो. ६।१७
त० ह कुमारं सन्तं दक्षिणासु नीय-	
मानासु ब्रह्मविवेश सोऽमन्यत	कठो. १।२
त० ह चिरं वसेत्याज्ञापयांचकार	छान्दो. ५।३।७
त० ह वतएवप्रधुंवे होताऽऽश्रयः	बृह. ३।१।३

त० ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै	
शरणमहं प्रपद्ये	श्वेता. ६।१८
त० ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुः	
शरणं व्रजेत्	गो.पू. ३।५
त० ह न मेने शाकल्यस्तस्य ह मूर्धा	
विपपातापि	बृह. ३।१।२६
त० हन्ताभ्यागच्छामेति तं	
हाभ्याजग्मुः	छान्दो. ५।११।४
त० ह पाणावमिपद्य प्रवव्राज, तौ ह	
सुप्तं पुरुषमीयतुः	कौ.त. ४।१८
त० ह पितोवाच श्वेतकेतो वस	
ब्रह्मचर्यं, न वै सौम्यास्मत्कुलीनो-	
ऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति	छां.उ. ६।१।१
त० ह प्रजापतिरुवाचमधवन्यच्छान्त-	
हृदयः प्रात्राजीः किमिच्छन्	
पुनरागम इति	छां.उ. ८।१०।३
त० ह य एवं वेदाप पुनर्मृत्युं जयति	सहस्रै. २३
त० ह वागदृश्यमानाऽभ्युवाच भो	
भो प्रजापते त्वमन्यक्तादु-	
त्पन्नोऽसि	अन्यक्तो. २
त० ह वागदृश्यमानाऽभ्युवाच सर्व	
वत् गौतमो वद	सु. ता. ३।१
त० ह शिल्पकः शाखावत्यश्चैकि-	
तायनं दाल्भ्यमुवाच	छान्दो. १।८।६
त० हाङ्गिरा वृद्धीमुपासाञ्चक्रएव	छान्दो. १।३।१०
त० हाजातशत्रुरामन्त्रयांचक्रे	
बृहत्पाण्डरवासः...	कौ.त. ४।१८
त० हाभिसमेत्योचुर्भगवन्नेषित्वंनः	
अष्टोऽसि मोत्कमीरिति	छान्दो. ५।११।३
त० हाभ्युवाद त्वं नु भगवः सयुगवा	
रैक्व इत्यहं हारा ३ इति	छान्दो. ४।१।८
त० हाभ्युवाद रैकेऽं सहस्रं गवामयं	
निष्कोऽयमश्वतरिरथः	छान्दो. ४।२।४
त० हासीनं पप्रच्छ गौतमस्य	
पुत्रास्ते संवृतं लोके	कौ.त. १।१
त० हासुराः नृत्वा विदुष्वं सूर्यया-	
दमानमाखणमुत्वा विष्वं रसेत्	छान्दो. १।३।७

त५ हासुराः पाप्मना विविधुस्तस्मा-	
त्तेनाभयं जिघ्रति	छान्दो. १।२।२
त५ हास्मै ददौ तं सम्राडेव पूर्वं	
पप्रच्छ	बृह. ४।३।१
त५ हेन्द्र उवाच न वै वरं परस्मै	
वृणीते त्वमेव वृणीष्व	कौ.त. ३।१
त५ हैतमतिधन्वा शौनक उदरशा-	
ण्डिल्यायोक्तवोवाच यावत्त एनं	
प्रजायामुद्रीथं वेदयिष्यन्ते..	छान्दो. १।९।३
त५ हैतमधिधन्वा शौनकः.. (मा.पा.)	छां.उ. १।९।३
त५ हैतमुद्दालक आरुणिर्वाजसने-	
याय याज्ञवल्क्यायान्तेवासिन	
उक्तवोवाचापि य एनं शुष्के	
स्थाणौ निषिञ्चेज्जायेरञ्छाखाः	
प्ररोहेयुः पलाशानीति	बृह. ६।३।७
त५ होवाच (गुरुः) यं वै सोम्यैत-	
मणिमानं न निभालयस एतस्य	
वै... महाह्वयमोधस्तिष्ठति	छान्दो. ६।१२।२
त५ होवाच (पिता) मृत्यवे त्वां	
ददामीति	कठो. १।४
त५ होवाच-यदिदमिति द्यावा-	
पृथिव्योरनारभमिव नोप-	
यन्ति नाभिचक्षते नाभुवन्ति	आर्षे. ३।१
त५ होवाच-विस्फुरन्तीरेवेमा	
लेलायन्तीव साञ्जिहाना इव..	आर्षे. ७।१
त५ होवाचाजातशत्रुरेतावन्नु	
वाला ३ इति	कौ.त. ४।१८
त५ होवाचाऽननुशिष्य वाव किल	
मा भगवानब्रवीदनुत्वाशिषमिति	छान्दो. ५।३।४
ता अनेकधा समभवत्तदेतदोमिति	नारा. ४
ता अन्नमसृजन्त तस्माद्यत्र क च	
वर्षति तदेव भूयिष्ठमन्नं भवति	छान्दो. ६।२।४
ता अन्नवीद्यथायतनं प्रविशतेति	२ ऐत. २।३
ता अन्नवन्न वै नोऽयमन्नमिति	२ ऐत. २।२।२
ता अन्नवन् सुकृतं वर्तेति, पुरुषो	
वाच सुकृतम्	२ ऐत. २।३
ता अन्नवन् हन्तास्माच्छरीरा-	
नुत्कामाम...	१ ऐत. १।४।३
ता अन्नवहन्तेदं पुनः शरीरं प्रविशाम	१ ऐत. १।४।५

ता अभि प्रस्थापयन्नुवाच नासहस्रे-	
णावर्तेति	छान्दो. ४।४।५
ता अमृता आपस्ता वा एता	
ऋचः [छान्दो.	३।१।२-३।५।१
ता अश्मैवाप्रबुद्धा अप्राणा स्थाणु-	
रिव तिष्ठमानाः...	मैत्रा. २।६
ता अहिंसन्ताहमुक्थमस्यह-	
मुक्थमस्मि	१ ऐत. १।४।३
ता अहिंसन्ते वाऽहमुक्थमस्यह-	
मुक्थमस्मि	१ ऐत. १।४।४
ता आप ऐक्षंत बह्वयः स्याम	
प्रजायेयेति	छान्दो. ६।२।४
ता आपः सत्यमसृजन्त	बृह. ५।५।१
ता अन्नवीद्यथायतनं प्रविशतेति	२ ऐत. २।३
ता आसु नाडीषु सृप्ता आभ्यो	
नाडीभ्यः प्रतायन्ते	छान्दो. ८।६।२
ता इमा आपः, ता एतेनो हिरण्म-	
यमन्नम्, तत्र चतुर्मुखो ब्रह्मा-	
ऽजायत	चतुर्वे. १
ता इमादिशः परेण मृत्युमतिक्रान्ताः	बृह. १।३।१५
ता इमाः प्रजाअर्कमभितो निविष्टाः...	१ ऐत. १।१।३
ता इमाः प्रतता आपः । ततस्तेजो	
हिरण्मयमण्डम्	महो. १।४
ता एता आपो वज्रीभूत्वा तानि	
रक्षांसि मंदेहारुणे द्वीपे प्रक्षिपन्ति सहस्रैः २	
ता एता देवताः प्राणापानयोरेव	
विनष्टाः	१ ऐत. ३।३।३
ता एता देवताः सृष्टा अस्मिन्महत्त-	
र्णवे प्रापतन्	२ ऐत. २।१
ता एताः संहिता नानन्तेवासिने	
प्रज्ज्यात्	३ ऐत. २।६।४
ता एताः शीर्षेऽन्विताः	१ ऐत. १।४।३
ता एते नो हिरण्मयमन्नम्	चतुर्वे. १
ता एनमन्नवन्नायतनं नः प्रजानीहि	
यस्मिन् प्रतिष्ठिता अन्नमदामेति	२ ऐत. २।१
तादृमूपो हि पुरुषो... सम्पदयति	
यदेवैतत्सद्विस्वति विमुह्यति	मुक्तिको. २।५९
तादृशपरमयोगिपूजा यस्य लभ्यते	
सोऽपि मुक्तो भवति	अद्वयता. ७

तानकृत्स्नविदो मन्वान्	भ.गी. ३।२९
तानपरपक्षे न प्रजनयत्येतद्वै	
स्वर्गस्य लोकस्य द्वारम्	कौ.त. १।२
तानस्मै प्रददौ हन्तानुपानमित्यु-	
च्छिष्टं वै मे पीतं स्यादिति	छांदो. १।१०।३
तानहं द्विषतः क्रूरान्	भ.गी. १६।१९
तानि चेतनीकर्तुं सोऽकामयत् ब्रह्मा-	
ण्डब्रह्मरन्ध्राणि समस्तव्यष्टिमस्त-	
कान्विदार्य तदेवानुप्राविशत्	पैङ्गलो. १।५
तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् [महावा. ४+]	चित्र्यु. १२।७
[क्र.अ. ८।४।१९=मं. १०।९०।१६]	ना.सं. ३१।१६
तानिन्द्रः सुपर्णो भूत्वा वायवे प्राय-	
च्छत्तान्वायुरात्मनि धित्वा	
तत्रागमयद्यत्रान्धमेधयाजिनो-	
ऽभवन्	बृह. ३।३।२
तानि पञ्च तन्मात्राणि त्रिगुणानि	
भवन्ति	पैङ्गलो. १।३
तानि भूतानि सूक्ष्माणि पञ्चीकृत्ये-	
श्वरस्तदा	कठरु. १८
तानि म उपसीदत एव विदाश्चक्रुः	छाग. ३।२
नानि मृत्युः अमो भूत्वोपयेमे,	
तान्याप्रोत, तान्याश्वा मृत्यु-	
रबाहुन्धत्	बृह. १।५।२१
तानि यदा गृह्णात्यथ हैतत्पुरुषो	
स्वपित्तिनाम तद्गृहीत एव प्राणो	
भवति गृहीता वाग्गृहीतं चक्षु-	
र्गृहीतं श्रोत्रं गृहीतं मनः	बृह. २।१।१७
तानि वरमवृणीतादित्यो नो योद्धा	सहवै. २
तानि वा एतानि यजुष्येतं यजुर्वेद-	
मभ्यतपत्तस्याभितप्तस्य यश-	
स्तेज इन्द्रियं धीर्यमन्नाद्यं रसो-	
ऽजायत	छान्दो. ३।२।२
तानि वा एतानि सामान्येत च	
सामवेदमभ्यतपन् अजायत	छान्दो. ३।३।२
तानि वा एतान्यमृतानाममृतानि	
वेदा अमृतास्तेषामेतान्यमृतानि	छान्दो. ३।५।४
तानि वा एतान्यवराणि परा च सि-	
न्यास एवात्यरेचयेद्य एवं वेद-	महाना. १६।१९
तानि सर्वाणि संयम्य	भ. गी. २।६।१

तानि सृष्टान्यन्योन्येनारूपवन्त	बृह. १।५।२१
तानि सृष्टान्यण्डे प्राचिक्षिपत्	पैङ्गलो. १।५
तानि ह वा इमानि गुणानि पुरुषेण-	
रितानि चक्रमिव चक्रिणा	मैत्रा. ३।३
तानि ह वा एतानि चित्तेकायनानि	
चित्तात्मानि चित्ते प्रतिष्ठितानि	छान्दो. ७।५।२
तानि ह वा एतानि त्रीण्यक्षराणि	छां.व. ८।३।५
तानि ह वा एतानि द्वाविंशति-	
रक्षराणि	छां.व. २।१०।४
तानि ह वेतानिद्वाविंशति... (मा.पा.)	छां.व. २।१०।४
तानि ह वा एतानि रक्षांसि गाय-	
त्रियाभिमन्त्रितेनाम्भसा शाम्यन्ति	सहवै. २
तानि ह वा एतानि सङ्कल्पैकाय-	
नानि सङ्कल्पात्मकानि सङ्कल्पे	
प्रतिष्ठितानि	छां.व. ७।४।२
तानीमानि क्षुद्रमिश्राणि [मा.पा.]	छां.व. ५।१०।८
तानीमानिक्षुद्राण्यसकृदावर्तानि	
भूतानि भवन्ति	छां.व. ५।१०।८
तानेकथा समभवत्...	वासुदे. ४
तानोङ्कारेणामीघ्रीया देवा असु-	
रान्पराभावयन्त	२ प्रणवो. ८
तान्वैद्युतान्पुरुषो मानस एत्य	
ब्रह्मलोकान्गमयति तेषु.. पराः..	
वसन्ति तेषां न पुनरावृत्तिः	बृह. ६।२।१५
तान्येकमतं सम्पेदुः	छान्दो. ८।१।१३
तानृषयोऽब्रुवन्-पवित्रं नो ब्रूत,	
येनारेपसः स्यामेति	सहवै. ११
तान्खादित्वाऽमुं यज्ञं विततमेयाय	छान्दो. १।१०।७
तान्प्रजापतिर्वरेणोपामंत्रयत्	सहवै. २
तामिबोध द्विजोत्तम	भ. गी. १।७
तान्दृष्ट्वा (ब्रह्मा) ऽबिभ्यत्	
(गणेशं) तं सस्मार	गणेशो. ३।६
तान् पिष्टान्दधनि मधुनि घृत उप-	
विञ्चत्याज्यस्य जुहोति	बृह. ६।३।१३
तान्यभ्यपतत्तेभ्योऽभितप्तेभ्य	
ओङ्कारः प्रास्वत्	छान्दो. २।२।३।३
तान्यस्यैतानि कर्मनामान्येव	बृह. १।४।७
तान्यहं वेद सर्वाणि	भ. गी. ४।५

तान्याचरथ नियतं सत्यकामा एष
 वः पन्थाः सुकृतस्य लोके मुण्ड. १।२।१
 तान्यात्मनेऽकुरुतान्यत्रमना अभूवं
 नादर्शमन्यत्रमना अभूवं
 नाश्रीषमिति बृह. १।५।३
 तान्यास्वा मृत्युरवारुन्धच्छ्राम्यत्येव
 वाक् आस्यति चक्षुः आस्यति
 श्रोत्रम् बृह. १।५।२१
 तान्येतान्यनुव्रजन् नाश्रुमापातयेत् कठरु. १
 तान्वरिष्ठः प्राण उवाच मा
 मोहमापद्यथाऽहमेवैत-
 त्पञ्चधात्मानं प्रविभज्यैतद्वा-
 णमवष्टभ्य विधारयामि प्रश्नो. २।३
 तान्वायुरात्मनि धित्वा तत्रागमयद्य-
 त्राश्वमेधयाजिनोऽभवन् बृह. ३।३।२
 तान्विद्धथासुरनिश्चयान् भ. गी. १७।६
 तान्वै वैद्युतान् पुरुषो मानव
 एत्य ह (मा.पा.) वृ. उ. ६।२।१५
 तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः भ. गी. १।२५
 तान्सर्वानेवोपसेवेत, वारुणं त्वेव
 वर्जयेत् छान्दो. २।२२।१
 तान्ह स ऋषिरुवाच भूय एव तपसा
 ब्रह्मचर्येण श्रद्धया संवत्सरं संवत्स्यथ प्रश्नो. १।२
 तान्हासुरः पाप्मा परिजग्राह नृसिंहो. ६।१
 तान्होवाच प्रातर्वः प्रतिवक्ताऽस्मीति छान्दो. ५।११।७
 तान्होवाच ब्राह्मणा भगवन्तो यो
 वो ब्रह्मिष्ठः स एता गा उदजता-
 मिति ते ह ब्राह्मणा न दधृषुः बृह. ३।१।२
 तान्होवाच यस्मिन्व उत्क्रान्ते शरीरं
 पापिष्ठतरमिव दृश्येत स वः श्रेष्ठः छान्दो. ५।१।७
 तान्होवाचाश्वपत्तिर्वै भगवन्तोऽयं
 कैकयः सम्प्रतीममात्मानं वैश्वानर-
 मज्येति छान्दो. ५।११।४
 तान्होवाचैतावदेवाहमेतत्परं
 ब्रह्म वैव नातः परमस्तीति प्रश्नो. ६।७
 तान्होवाचेद्देव मा प्रातरुपसमीयातेति छान्दो. १।१२।३
 तापत्रयं त्वाभ्यादिमकाभिर्भौति-
 काधिदैविकं कर्तृकर्मकार्य-

ज्ञातृज्ञानज्ञेय-भोक्तृभोगभोग्यमिति
 त्रिविधम् मुद्रलो. ४।१
 तापनीयोपनिषदध्यापकशतमेकमेकेन
 मन्त्रराजाध्यापकेन तत्समं, तद्वा
 एतत्परमं धाम... नृ.पृ. ५।१६
 तापसास्तत्र ते दुमाः । लोभक्रोधा-
 दयो दैत्याः कलिकालस्तिरस्कृतः ।
 गोपुरुषो हरिः साक्षात्.. कृष्णो. ९
 तापसोऽतापसः (भवति) बृह. ४।३।२२
 तापापहारिणीं देवीं मुक्तिमुक्तिप्रदा-
 यिनीम् । अनन्तां विजयां.. देव्यु. १३
 ताप्यतापकरूपेण विभातमखिलं
 जगत् । प्रत्यगात्मतया भाति
 ज्ञानाद्वैदान्तवाक्यजात् कठरु. ३९
 ताभिरेतं रुद्रोऽन्वायत्तः बृह. २।२।२
 ताभिः क्षुधं पाप्मानमपात्रन् सहवै. १३
 ताभिः प्रत्यवसृप्य पुरीतति शेते बृह. २।१।१९
 ताभ्यः पुरुषमानयत्ता अभ्रुवन्सुकृतं
 बतेति, पुरुषो वाव सुकृतम् रपेत. २।३
 ताभ्यामयं प्राणश्छन्नः बृह. १।६।३
 ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति बृह. ६।२।४
 ताभ्यो गामानयत्ता अभ्रुवन्न वै
 नोऽयमलमिति रपेत. २।२
 ताभ्योऽभितप्ताभ्यो मूर्तिरजायत रपेत. ३।२
 ताभ्योऽश्वमानयत्ता अभ्रुवन्न वै
 नोऽयमलमिति रपेत. २।२
 तामग्निवर्णीं तपसा ज्वलन्तीं वैरो-
 चनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् देव्यु. ६+
 [वनदु. ११५, १६५+ महाना. ६।१४
 [ऋ.खि. १०।१२७।१२+ तै.वा. १०।२।१
 तामप्यथ (चिन्मात्रवासनां) परि-
 त्यज्य मनोबुद्धिसमन्विताम् ।
 शेषस्थिरसमाधानो भव... मुक्तिको. २।७१
 तामसत्त्वं हर गणेशो. ४।९
 तामसं परिचक्षते भ.गी. १७।१३
 तामसः परिकीर्तितः भ.गी. १८।७
 तामसी चेति तां शृणु भ.गी. १७।२

तामसी दैत्यपक्षेषु माया त्रेधा-

ह्युदाहृता । अजेया वैष्णवी माया.. कृष्णो. ५

तामसी द्रव्यशक्तिः

ग.शो. ४।३

तामसी राजसी सात्त्विकी मानुषी..

(मूर्तिः) भक्तियोगे तिष्ठति गोपालो. ३।२

तामस्याः पञ्च तन्मात्रा अजायन्त

पञ्च भूतान्यजायन्त ग.शो. ४।४

ता महासंहिता इत्याचक्षते

तैत्ति. १।३।१

तामात्मस्थां येऽनुपश्यन्ति धीराः

गुह्यका. ४४

तामाहुरभ्यां महतीं महीयसीम्

गुह्यका. ५१

तामिहायुषे शरणं प्रपद्ये

ग. पू. २।३

तामीश्वराणां परमां महेश्वरीम्

गुह्यका. ६६

तासु नाम्नीरयति नाम्नि मन्त्रा

एकं भवन्ति मन्त्रेषु कर्माणि [छान्दो. ७।४।१+७।५।१

तामित्य सर्वविद्याज्ञानवान्भवति

तारोप. ४

तामेव प्रत्यक्षं तां वदिष्यामि

कौलो. शां.

तामेव भान्तीमनुभाति सर्वं

गुह्यका. ४५

तामेवमनूचानां गायत्रासिष्ट

अव्यक्तो. ३

तामेव विदधाम्यहम्

भ.गी. ७।२१

ता यन्नाभिसायं बभूवुस्तन्नामिमुप-

समाधाय गा उपरुध्य समिधमाधाय

यन्नादग्नेः प्राङ्गुपोपविवेश [छान्दो. ४।६१-४।८।१

ता यथा तत्र न विदुरियमहमस्मीति

छान्दो. ६।१०।१

ता यो वेद स वेद ब्रह्म

तैत्ति. १।५।३

तारकत्वात्तारको भवति

तारसा. २।१

[रामो. ता. १।२+

श्रीवि.ता. १।२

तारकमित्येतत्तारकं ब्राह्मणो नित्यं

महीयते

श्रीवि.ता. १।२

तारकं दीर्घानलं बिन्दुपूर्वकं दीर्घा-

नलं.. इत्येतद्ब्रह्मात्मिकाः..

उपासितव्याः

रामो. १।२

तारकं द्विविधं-मूर्तितारकममूर्ति-

तारकमिति

मं. ब्रा. १।४

तारकं ब्रह्मेति गदितं वन्दे श्री-

रामवैभवम्

अद्वयता. शीर्ष.

तारकाभ्यां तद्दर्शनमात्राण्युभयैक-

दृष्ट्या मनोयुक्तं ध्यायेत्

अद्वयता. ६

तारकाभ्यां सूर्यचन्द्रमण्डलदर्शनं

ब्रह्माण्डमिव...

अद्वयता. ६

तारकाभ्यां सद्दूर्ध्वस्थसत्त्वदर्शना-

न्मनोयुक्तनान्तरीक्षणेन

सच्चिदानन्दस्वरूपं ब्रह्मैव

अद्वयता. ६

तारयतीति तारा

तारोप. १

ताररहिता पुनरेकजटा भवति

तारोप. ५

तारसार-महावाक्य-पञ्चब्रह्मा-

भिहोत्रकम्

मुक्तिको. १।३८

तारसंयमात्सकलविषयज्ञानं भवति

शांदि. १।७।५२

तारं ज्योतिषि संयोज्य...पूर्वा-

भ्यासस्य मार्गोऽयं...

शांदि. १।७।१७

तारं परं रमाबीजम्

द. मू. १०

तारादिकास्मान्ता चेतारा भवति

तारोप. ४

तारा स्यादर्धपञ्चाक्षररूपा ब्रह्म-

विष्णुमहेश्वरसदाशिवबिन्दु-

मेलनरूपा विद्या

तारोप. १

तारेण रुद्धं, एतत्तव मनुस्वरूपम्

गणप. ७

तारेति परमा तारा

तारोप. १३

तारे (चित्तसंयमात्) सिद्धदर्शनम्

शांदि. १।७।५२

तामिर्वा एतदास्त्रवदास्त्रवति

बृह. ४।२।३

तालवनं बृहद्वनं कुमुदवनं...

दधिवनं वृन्दावनमिति

सामर. ५

तालुचक्रं, तत्रासृताधाराप्रवाहः

सौभाग्य. २९

तालुमूलगतां यत्नाज्जिह्वयाऽऽक्रम्य

घंटिकाम्.. प्राणस्पन्दो निरुध्यते

शांदि. १।७।३०

तालुमूलं समुत्कृष्य सप्तवासर-

मात्मवित् । स्वगुरुक्तप्रकारेण

मलं सर्वं विशोधयेत्

योगकुं. २।२८

तालुमूले स्थितश्चन्द्रः सुधावर्षत्यधोमुखः

यो.शि. ५।३३

तालुमूलोर्ध्वभागे महाज्योतिर्मयूखो

वर्तते, तद्योगिभिर्ध्येयम्

अद्वयता. ७

तालुमूलोर्ध्वभागे महाज्योतिर्विद्यते

तद्दर्शनादणिमादिसिद्धिः

मं. ब्रा. १।४

तालुरसनाग्रनिपीडनाद्वाङ्मनःप्राण-

निरोधनाद्ब्रह्म तर्केण पश्यति

मैत्रा. ६।२०

तालुः शोभोर्वाकः (शारीर्यवृत्तस्य)

भा.दो. ४।३

तात्विक्यं परिवर्त्य..महिमानं निरीक्षेत मैत्रा. ६।२१
 तावताऽऽत्मानमानन्दयति परब्र. २
 तावत्कालस्य स्थितिरुच्यते त्रि.म.ना. ३।४
 (ब्रह्मायुःपरिमिता)
 तावत्संसारभृगुषु स्वात्मना सह महो. ४।११३
 देहिनम् । आन्दोलयति नीरंध्रं..
 तावदाकाशसङ्कल्पो यावच्छब्दः ना.विं. ४७
 प्रवर्तते
 तावज्जीवो भ्रमत्येवं यावत्तत्त्वं ध्या.विं. ५०
 ध्यानं न विन्दति
 तावदेव निरोद्धव्यं (मनः) यावद्बुद्धिं त्रि.ता. ५।५
 गतं क्षयम् । एतज्ज्ञानं च च
 शेषोऽन्यो ग्रन्थविस्तरः [ब्र.विं.५+
 तावदेव निरोद्धव्यं हृदि मैत्रा. ६।३४
 यावत्क्षयं गतम्..
 तावद्रथेनगन्तव्यंयावद्रथपथि स्थितः अ. ना. ३
 तावद्विचारयेत्प्राज्ञो यावद्विश्रान्ति-
 मात्मनि महो. ४।३९
 तावानस्य महिमा ततो ज्यायाः*श्च छांदो. ३।१२।६
 पुरुषः
 तावानस्य लोको भवति य बृह. ६।४।३
 एवं विद्वानधोपहासं चरति
 तावन्ति पुरुषायुषोऽह्नां सहस्राणि १ऐत. ३।८।६
 भवन्ति १ऐत. २।४।२
 तावन्ति शतसंवत्सरस्याह्नां सहस्राणि
 तावन्निशीव वेताला वलगन्ति हृदि
 वासनाः । एकतस्वदृढाभ्यासाद्या-
 वन्न विजितं मनः [मुक्तिको.२।४०+ महो. ५।७८
 तावन्त्योन्यमसि सम्भवतः १ऐत. ३।७।३
 तां वा अस्यैता हिता नाम नाड्यः
 यथाकेशः सहस्रबाभिन्नस्तावता-
 ऽग्निना विघ्नन्ति.. बृह. ४।३।२०
 तां वा एतां दशैव भूतमात्रा अवि-
 प्रज्ञं दशप्रज्ञामात्रा अविभूतं यदि
 भूतमात्रा न स्युर्न प्रज्ञामात्राः स्युः कौ. व. ३।८
 तां वा एतांश्चतस्रश्चतुर्धा चतस्रः
 अतलो व्याहृतयः । ता यो वेद,
 स वेद ब्रह्म तैत्ति. १।५।३
 ३४

ता वा एताः सर्वा ऋचः सर्वे वेदा
 सर्वे घोषा एकैवव्याहृतिः प्राण एव १ ऐत.२।२।११
 ता वा एताः सर्वा देवता वायुमेव
 प्रविश्य वायौ सृप्ता न मूर्च्छन्ते कौ. त. २।१२
 ता वा एताः सर्वा देवताः प्राणमेव
 प्रविश्य प्राणे सृप्ता न मूर्च्छन्ते कौ.त. २।१३
 तावान् सर्वेषु वेदेषु भ. गी. २।४६
 तावेतावन्योन्यस्मिन्प्रतिष्ठितौ रश्मि-
 भिरेषोऽस्मिन् प्रतिष्ठितः बृह. ५।५।२
 तावेतावर्काश्चमेधौ बृह. १।२।७
 तासामु ह स्मैतां चतुर्थी महाचमस्यः
 प्रवेदयते मह इति तद्ब्रह्म तैत्ति. १।५।१
 तासां तप्यमानानां* रसान्प्रावृह-
 दग्ने ऋचो वायोर्यजुषि
 सामान्यादित्यात् छान्दो. ४।१७।२
 तासां त्रिवृतं त्रिवृतमेकैकां करवाणीति छान्दो. ६।३।३
 तासां त्रिवृतं त्रिवृतमेकैकामकरोत् छान्दो. ६।३।४
 तासां ब्रह्म महद्योनिः भ. गी. १४।४
 तासां मूर्धानमभिनिस्सृतैका ।
 तयोर्ध्वमायन्नतत्त्वमेति विष्व-
 कुन्या उत्क्रमणे भवन्ति कठो. ६।१६
 तासां (अपां) यः स्थविष्ठो धातु-
 स्तन्मूत्रं भवति यो मध्यमस्त-
 लोद्भितं, योऽणिष्ठः स प्राणः छान्दो. ६।५।२
 तासां वायुर्वत्सः स य एतमेवं
 वायुं दिशां वत्सं वेद न पुत्ररोद*
 रोदिति छान्दो. ३।१५।२
 तासां (नाडीनां) शतं शतं
 द्वासप्ततिं प्रतिशाखा..(मा.पा.) प्रश्नो. ३।६
 तासु चतुर्दशकारणानां बाह्यवृत्तयो-
 ऽन्तर्वृत्तयस्तेषामुपादानकारणम् ना. प. ५।१२
 तासु तदा भवति, यदा सुप्तः स्वप्नं
 न कञ्चन पश्यति कौ. त. ४।१९
 तासु पूर्णिमाभ्यासः कर्तव्यः,
 तच्छयं नासाग्रम् सं. ब्रा. २।२
 तास्तु गोण्या महायोगात्परमात्म-
 प्रवेऽन्यथे । विना कार्यं सदा
 गुप्तं योगसिद्धस्य लक्षणम् यो.शि. १।१५६
 तां गन्धर्वोऽ (अ)वदद्भर्मे अन्तः चिन्तु. ११।११

तां चेद्विद्वानुदगास्यो मूर्धा ते व्यप-
तिष्यत्तथोक्तस्य मया.. छांदो. १।११।७
तां चेद्विद्वान्प्रति हरिष्यो मूर्धा... छांदो. १।११।९
तां चेद्विद्वान्प्रस्तोष्यसि मूर्धा ते
विपतिष्यतीति छांदो. १।११।४
तां चेद्विद्वान्प्रस्तोष्यो मूर्धा ते व्यप-
तिष्यत् तथोक्तस्य मयेति छांदो. १।११।५
तां जीवरूपिणीं ध्यायेज्ज्योतिष्ठं
मुक्तिहेतवे योगरा. ७
तां त्वहं तुभ्यं वक्ष्यामि को हि त्वैवं
भुवन्तमर्हति प्रत्याख्यातुमिति बृह. ६।२।८
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं.. नमामि
भवभीतोऽहं देव्यु. १०
तां (कुण्डलिनीं) दृष्ट्वा मनसैव नरः
सर्वपापविनाशद्वारा मुक्तो भवति अद्वयता. २
तां देवतामुपातिष्ठत यज्ञकामाः सहवै. १३
तां द्योतमानां स्वयं मनीषां चित्त्यु. १।१।११
तां (मालां) पञ्चभिर्गन्धैरमृतैः
पञ्चभिर्गन्धैस्तनुभिः शोधयित्वा
...प्रत्यक्षमादिक्षान्तैर्वर्णैर्भाविष्येत् अ.मा. ३
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनप-
गामिनीम् [क्र.खि.५।८७।१ श्रीसु. २,१५
तां पद्मानेमिं शरणमहं प्रपद्ये अल-
क्ष्मीर्मेनश्यतां.. [क्र.खि.५।८७।५ श्रीसु. ५
तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रय-
धारणाम् । अप्रमत्तस्तदा भवति
योगो हि प्रभवोऽप्ययौ कठो. ६।११
तां (ब्रह्मविद्यां) विदित्वा स च
रक्तं जिज्ञासयामास अव्यक्तो. ३
तां वै देवीमात्मबुद्धिप्रकाशां मुमुक्षुर्वै
शरणमहं प्रपद्ये.. गुह्यका. ७२
तां (मृदं) शुद्धजलेन प्रणवेन वर्षयेत् कात्याय. १
तां समन्तं पृथिवीं द्विस्तावत्समुद्रः
पर्येति बृह. ३।३।२
तां समभवत्ततो मनुष्या अजायन्त बृह. १।४।४
तां समेवाभवत्तत एकशफमजायत बृ.उ. १।४।४
तां समेवाभवत्ततो गावोऽजायन्त बृ.उ. १।४।४
तां समेवाभवत्ततोऽजावयोऽजायन्त बृ.उ. १।४।४

तां सानुमन्तो विदधत्स्वतेजसा..
वरप्रदाय पित्रे स्वाहा पारमा. ६।५
तां सृष्ट्वाऽथ उपास्ते, तस्मात्स्त्रियमथ
उपासीत बृह. ६।४।२
तां स्तत्र देवा यथा सोमः राजान-
माप्यायस्वापक्षीयस्वेत्येवमेनां-
स्तत्र भक्षयन्ति बृह. ६।२।१६
तांस्तथैव भजाम्यहम् भ.गी. ४।११
तांस्तितिक्षस्व भारत भ.गी. २।१४
तां स्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति,
ये के चात्महनो जनाः ईशा. ३
तां स्तेष्वन्वविन्दन्नुद्धयाच तपसाच सहवै. ११
तां स्त्वं वृत्रहजहि वास्मभ्यमाभर सहवै. ७
तां हासुराः पाप्मना विविधुस्तस्मा-
त्तयोभयं वदति सत्यं चानृतं च छांदो. १।२।३
तां हैतामेके सावित्रीमनुष्टुभमन्वाहुः बृह. ५।१४।५
तां होवाच किमेतद्यक्षमिति केनो. ३।१२
ताः पय आहुतयो देवानामभवन् सहवै. १३
ताः पुनः पुनरुदयनः प्रचरन्त्येवं
ह वै तत्सर्वं परे देवे मन-
स्येकीभवति प्रश्नो. ४।२
ताः पुनरुदयन्तः प्रचरन्ति.. (मा.पा.) प्रश्नो. ४।२
ताः सर्वानाड्यः सुषुप्तयेनाकाशवत् परब्र. १
ताः सृष्टा अभुवन् कथमन्नाद्या
अभवन्निति ग.पू. १।३
ताः स्मरणादनुमीयन्ते पैङ्गलो. ३।३
तितिक्षाज्ञानवैराग्यशमादिगुण-
वर्जितः । भिक्षामात्रेण जीवी
स्यात्स यतिर्यतिवृत्तिहा ना.प. ५।१२
तिमिरान्धं तामसम् शारीरको. ९
तिरश्चीनमजरं तद्रजोऽभूत् त्रिपुरो. ४
तिरश्ची सा प्रज्ञा, प्रज्ञया हि
विपश्यति कौ.त. १।५
तिरोधानकरी पार्वती भवति ना.पू.ता. २।१
तिर्यगूर्ध्वमधश्चाथी रश्मयस्तस्य
सन्तताः । सन्तापयति स्वं
देहमापादतलमस्तकः महाना. १।१०
तिर्यगूर्ध्वमधोऽर्द्धं विहाय च महामतिः ।
स्थिरस्थायी विनिष्कम्पः सदा
योगी समभ्यसेत् अ.ना. ३२

(अथ) तिर्यग्वाऽवाक्कुर्व्वं वाऽनूह्य एष
परमात्माऽपरिमितोऽजोऽतक्यो-
ऽचित्त्य एष आकाश आत्मा मैत्रा. ६।१७
तिलमध्ये यथा तैलं पाषाणेष्विव
काञ्चनम् । हृदि स्थाने स्थितं
पद्मं तस्य वक्त्रमधोमुखम् [योगत. ८ यो. त. १३७
तिलाच्छलिं पितृणां ये ददति ते
तन्मण्डलं प्राप्नुवन्ति सामर. ७५
तिलाञ्जुहोमि । सरसा ५ सपिष्टान्
गन्धार मम चित्ते रमन्तु स्वाहा महाना. १४।५
तिलानां तु (तिलेषुच) यथा तैलं
पुष्पे गन्ध इवाश्रितः । पुरुषस्य
शरीरेऽस्मिन् (तु) सबाह्याभ्यन्तरे
(तथा) स्थितः [ध्या. बिं. ७+ ब्र. वि. ३५
तिलाः कृष्णास्तिलाः श्वेतास्तिलाः
सौम्या वशानुगाः । तिलाः
पुनन्तु मे पापं यत्किञ्चि-
दुचितं मयि महाना. १४।६
तिलेषु तिलवद्देवे वेदान्तः सुप्रतिष्ठितः मुक्तिको. १।९
तिलेषु तैलं दधनीव सर्पिरापः
स्रोतस्स्वरणीषु चाग्निः । एव-
मात्मनि जायते (गृह्यते) ऽसौ
सत्येन (पनं) तपसा यो-
ऽनुपश्यति [ब्रह्मो. १९+ श्वेता. १।१५
तिलेषु तैलं दधनीव सर्पिर्यद्वापः
स्रोतस्स्वरण्योरिवाग्निः । एव-
मात्माऽऽत्मनि जायते इतिहा. ४९
तिलैरेवावन्निरभिषिच्य वायुलोक-
कामो वायुलोकमवाप्नोति भस्मजा. २।१२
तिलैर्वनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्त-
मशीयातामीश्वरौ जनयितवौ बृह. ६।४।१७
विष्टो ब्रजतो वाऽपि यस्य चक्षुर्न
दुरगम् । चतुर्युगां भुवं भुक्त्वा
परिप्राट् सौऽन्ध उच्यते ना. प. ३।६६
तिष्ठत्यात्मरसं मनः अ. पू. २।९
तिष्ठन्नाच्छन् स्पृशन्निप्रन्नपि तलेप-
वर्जितः । अजडो गलितानन्द-
स्त्यक्तसंवेदनः सुखी अ. पू. ४।६३

तिष्ठन्नाच्छन्स्वपञ्जाप्रन्नवसन्नु-
त्पतन्पतन् । असदेवेदमित्यन्तं
निश्चित्यास्थां पारित्यज महो. ६।३४
तिष्ठन्ति परितस्तस्या नाड्यो मुनि-
पुङ्गव । द्विसमति सहस्राणि तासां
मुख्याश्चतुर्दश जा. द. ४।६
तिष्ठन्तं परमेश्वरम् भ. गी. १३।२८
तिष्ठन्त्यहश्च शेषो भवति व्रतमिति.. संहितो. ५।९
तिष्ठन्नपि हि नासीनो गच्छन्नपि न
गच्छति । शान्तोऽपि व्यवहारस्थः
कुर्वन्नपि न लिप्यते सं. सो. २।३३
तिष्ठन्प्रातः प्राङ्मुख आयातु वरदे-
स्यावाह... महाव्याहृतिभिः..
गायत्रीं जपेत् सन्ध्यो. २
तिसृभिरुयायुषैस्त्रियम्बकेस्तिस्रो
रेखाः कुर्वीत (भस्मना) जाबाल्यु. ६
तिस्रश्च रेखाः सदनानि भूमे-
स्त्रिविष्टपास्त्रिगुणास्त्रिप्रकाशाः ।
एतत्पुरं पूरकं पूरणानाम्.. त्रि. महो. ९
तिस्रस्तृचाशीतयो यदूर्ध्वं सा पञ्चमी १ ऐत. ३।४।३
(ॐ) तिस्रः पुरस्त्रिपथा त्रिष्वचर्षणा त्रिपुरो. १
तिस्रः पुरस्त्रिपथा त्रिष्वचर्षणी त्रि. महो. १
तिस्रो मात्रा मृत्युमत्यः प्रयुक्ता
अन्योन्यसक्ता अनुविप्रयुक्ताः ।
क्रियासु बाह्याभ्यन्तरमध्यमासु
सम्यक्प्रयुक्तासु न कम्पते ज्ञः प्रश्नो. ५।६
तिस्रो मात्रार्धमात्रा च प्रत्यक्षस्य
शिवस्य च १ प्रणवो. ३
तिस्रो मात्रास्तथा ज्ञेयाः सोमसूर्याग्नि-
रूपिणः ब्र. वि. ८
तिस्रो रात्रीर्दीक्षितो भवति सहवै. १२
तिस्रो रात्रीर्यद्वात्सीर्गृहे मेऽनभन्नब्रह्म-
न्नतिथिर्नमस्यः । नमस्तेऽस्तु
तस्मात्प्रति त्रीन्वरान्वृणीष्व कठो. १।९
तिस्रो रेखाः सदनानि भूमीस्त्रि-
विष्टपास्त्रिगुणास्त्रिप्रकाराः ।
एतन्नयं पूरकं पूरणानाम् त्रिपुरो. ५

तिस्रो व्याहृतयस्त्रिपदा गायत्री

त्रयो वेदास्त्रयो देवास्त्रयो वर्णा-

स्त्रयोऽग्रयश्च जायन्ते

शाङ्खि. ३।१।३

तीर्णो हि तदा सर्वाञ्छोकान्हृदयस्य
भवति

बृह. ४।३।२२

तीर्थदानतपोयोगस्वाध्याया

त्वेव तत्समाः (विल्वसमाः)

२ विल्वो. २९

तीर्थभ्रान्त्यधमाधमा

मैत्रे. २।२.१

तीर्थानि तोयपूर्णानि देवान्काष्ठादि-
निर्मितान् । योगिनो न प्रपद्यन्ते

(प्रपूज्यन्ते) त्वात्मप्रत्ययकारणात्

जा.द. ४।५.२

तीर्थानि यानि पञ्चेते... प्राणा-

यामस्य तत्फलम्

योगो. १४

तीर्थे दाने जपे यज्ञे काष्ठे पाषाणके
सदा । शिवे पश्यति मूढात्मा

शिवे देहे प्रतिष्ठिते

जा.द. ४।५७

तीर्थे श्वपचगृहे वा तनुं विहाय याति
केवल्यम् (ज्ञानी)

पैङ्गलो. ४।५

तुन्दस्थजलमग्नं च रसादीनि समी-

कृतम् । तुन्दमध्यगतः प्राणस्तानि

कुर्यात्पृथक्पृथक्

त्रि. ब्रा. २।८३

तुन्दस्थं जलमग्नं च रसादिषु समीरितं-

तुन्दमध्यगतः प्राणस्तानि पृथक्कुर्यात्

शाङ्खि. १।४।८

तुन्दे तु ताणं कुर्याच्च कण्ठसङ्कोचने

कृते । सरस्वत्यां चालनेन वक्ष-

सञ्चोर्ध्वगो मरुत्

यो.कुं. १।१५

तुभ्यं प्राणः प्रजास्त्विमा बलिं

हरन्ति... यः प्राणैः प्रतितिष्ठसि प्रभो. २।७

तुभ्यं मह्यमनन्ताय मह्यं तुभ्यं

चिदात्मने (नमः) [वराहो. २।३४ + सं.सौ. २।३२

तुमुलो व्यनुनादयन्

भ.गी. १।१९

'तुरंगमस्यधीमहि' [ऋ.अ. ४।४।२।५

[सं=५।८२।१ तै.आ. १।११।३ इति

सर्वे पिबति

छान्दो. ५।२।७

(अथ) तुरीय ईश्वरप्रासः स स्वराद्

स्वयमौश्वरः

नृसिंहो. २।७

तुरीयणा सप्तमी (भूमिका)

वराहो. ४।१

तुरीयपादस्तुरीयतुरीयंतुरीयातीतं च

त्रि.म.ना. १।४

तुरीयपादस्तुरीयः (ब्राह्मणः पादः)

त्रि.म.ना. १।४

तुरीयभूम्यां विहरन्ब्रह्मविद्भवति

वराहो. ४।१

तुरीयमक्षरमिति श्रुतेः, तुरीयस्य

नित्यत्वं..

त्रि.म.ना. २।१

तुरीयमक्षरे साक्षात्तुरीयं सर्वं

सर्वान्तभूतम्

त्रि.ता. १।७

तुरीयमात्राचतुष्टयमर्धमात्रांशम्,

अयमेव ब्रह्मप्रणवः

प.हं.प. १०

तुरीयमेवाप्येति यस्तुरीयमेवा-

स्तमेति

सुबालो. ५।१, १३

तुरीयरूपां तुरीयातीतां... हिरण्य-

वर्णमिति पञ्चदशविंशध्यायेत्

सौ.उ. १

(अथ) तुरीयश्चतुरात्मा तुरीया-

वसितत्वादेकैकस्योत्तानुज्ञात्रनु-

ज्ञाविकल्पैस्त्रयमप्यत्रापि सुषुप्तं

स्वप्नमायामात्रम्

नृसिंहो. १।४

तुरीयं तु निराकारम्

त्रि.म.ना. २।१

तुरीयं निराकारमेकं ब्रह्म

त्रि.म.ना. १।३

तुरीयं पदमक्षरम्

ब्रह्मो. १

तुरीयं (सत्याचित्सुखम्) ब्रह्मसंज्ञितम्

प्रं.ब्र. १३

तुरीयः परमो हंसः साक्षात्पारावर्णयतिः

ना.प. ४।१४

तुरीयाक्षरमीकारं पदानां मध्यवर्ती-

त्येवं व्याख्यातम्

त्रि. ता. १।७

तुरीयातीतमवाच्यं.. निराकारं

निराश्रयं निरतिशयाद्वैतपरमान-

न्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत्

त्रि.म.ता. ७।१२

तुरीयातीतरूपात्मा शुभाशुभ-

विवर्जितः

तै.वि. ४।४९

तुरीयातीतरूपोऽहं निर्विकल्प-

स्वरूपवान्

तै.वि. ३।४१

तुरीयातीतसंख्यासपरिव्राजा-

क्षमालिका

मुक्तिकौ. १।३६

तुरीयातीतस्यावधूतस्याजगरवृत्तिः

ना.प. ५।७

तुरीयातीतावधूतयोर्नस्तुक्षोरं, कुटी-

चकरय ऋतुद्वयक्षोरं बहुदकस्य न

क्षोरं हंसस्य परमहंसस्य च न क्षौरम्

ना.प. ७।६

तुरीयातीतावधूतयोर्न ज्येष्ठः, यो न

स्वरूपज्ञः, स ज्येष्ठोऽपि कनिष्ठः

ना.प. ५।८

तुरीयातीतावधूतयोर्नैतन्न्यायिकारः

ना.प. ७.९

तुरीयातीतावधूतयोर्निर्विज्यासः

ना.प. ७।११

तुरीयातीतावधूतयोर्ब्रह्मप्रणवः	ना.प. ७।१०
तुरीयातीतावधूतयोर्महावाक्यो-	
पदेशाधिकारः, परमहंसस्यापि	ना.प. ७।९
तुरीयातीतावधूतयोः सोहम्भावना	ना.प. ७।९
तुरीयातीतावधूतयोः स्वात्मन्येव	
केवलस्य स्वरूपातुसन्धानेन भ्रमर-	
कीटन्यायवत् [सं. सो. २।५९+	ना. प. ५।९
तुरीयातीतावधूतवेषेणाद्वैतनिष्ठापरः	
प्रणवात्मकेन देहत्यागं करोति	
यः सोऽवधूतः	तुरीया. ३
तुरीयातीतो गोमुखवृत्त्या फला-	
हारी अन्नाहारी चेद्द्रव्यये देह-	
मात्रावशिष्टो दिगम्बरः कुणप-	
वच्छरीरवृत्तिकः	सं. सो. २।१३
तुरीयातीतो गोमुखः फलाहारी	ना. प. ५।५
तुरीयातीतापनिषद्वचं यत्परमाक्षरम्...	
...स्वमात्रं चिन्तयेऽन्वहम्	तुरी..शीर्षकं
तुरीयावस्थायां तुरीयस्य चातुर्विध्यं	
तुरीयविश्वस्तुरीयतैजसस्तुरीय-	
प्राज्ञस्तुरीयतुरीय इति	प. हं. प. ९
तुरीयावस्थां प्राप्य तुरीयातीतत्वं	
प्राप्नोति	ना. प. ६।२
तुरीयेजाग्रतमस्वप्नसुषुप्तमन्यभि-	
चारिणं नित्यानन्दं सदेकरसं	नृसिंहो. २।१
(अथ) तुरीयेणोतश्च प्रोतश्च	
इयमात्मा नृसिंहः	नृसिंहो. ८।१
तुरीयेतुरीयादिवचसोऽवस्थाः [प.हं.प.९ ना. प. ६।७	
तुर्यतुर्यः परानन्दो वैदेही मुक्त	
एव सः	ते. वि. ४।४८
तुर्यमालम्ब्य कायान्तस्तिष्ठामि	
स्तम्भितस्थितिः	अ. प. ३।१३
तुर्यविश्रान्तियुक्तस्य...नाकृतेन	
कृतेनार्यो ... निर्मन्दर	
इवात्मोविः स तिष्ठति	महो. ४।४०, ४१
तुर्यं च्चन्यात्मकं तुरीयातीतमवाच्यं	
...न्यायेत् (आदिनारायणम्)	त्रि.म.ना. ७।३२
तुर्यातीतपदावस्था सप्तमी भूमिको-	
त्तमा । मनोवचोभिरब्राह्मा	
स्वप्रकाशसदात्मिका	अ.पू. ५।८९

तुर्यातीता तु याऽवस्था परा	
निर्वाणरूपिणी	अ.पू. ५।८६
तुर्यातीतं न मे किञ्चित् सर्व	
सच्चिन्मयं तत्तम्	ते. वि. ६।९
तुर्यातीतं परं ब्रह्म ब्रह्मरन्त्रे तु लक्ष-	
येत् । जाग्रद्वृत्तिं समारभ्य याव-	
द्ब्रह्मविलान्तरम्	त्रि.ब्रा. २।१५९
तुर्यातीतोऽस्मि केवलः । सदाचेतन्य-	
रूपोऽस्मिचिदानन्दमयोऽस्म्यहम्	ते.वि. ३।४
तुर्यान्ते विष्णुरुच्यते । ध्यानेनैव समा-	
यक्तो व्योम्नि चात्यन्तनिर्मले	त्रि.ब्रा. २।१५२
तुर्यावस्था नमस्कारः	भावर्तो. १०
तुर्यावस्थोपशान्ता सा मुक्तिरेव	
हि केवला	अ.पू. ५।८५
तुर्या सा प्राप्यते दृष्टिर्मेहद्विवेदवित्तमः	अ.पू. १।५१
तुर्या तुरीयविश्वो मध्यमायां तुरीय-	
तैजसः पश्यन्त्यां तुरीयप्राज्ञः	
परायां तुरीयतुरीयः	प.हं.प. १०
तुलसि श्रीसखि शुभे...नागायण-	
मनःप्रिये	तुलस्यु. १०
तुलसीदाहमणिभिजपः सर्वाधिसाधकः	तुलस्यु. १७
तुलसीपत्रमुत्सृज्य यदि पूजां करोति	
वै ।..विष्णुप्रीतिकरी न च	तुलस्यु. १५
तुलसीपारिजातश्रीवृक्षमूलादिकस्थल ।	
पद्माक्ष..मालया..जपेदक्षरलक्षकं	रामर. ४।६
तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः	अ.गी. १४।२४
तुल्यनिन्दास्तुतिर्माँनी	अ.गी. १२।१९
तुल्यप्रियाप्रियो धीरः	अ.गी. १४।२४
तुल्यातुल्यविहीनोऽस्मि नित्यः	
शुद्धः सदाशिवः	मैत्रे. ३।६
तुल्ये सत्यपि कर्तव्ये वरं कर्म	
कृतं परम्	शिवो. ७।१२६
तुल्यो मित्रारिपक्षयोः	अ.गी. १४।२५
तुषारकरविम्बाच्छं मनो यस्य	
निराकुलम् । मरणोत्सवयुद्धेषु	
स शान्ति इति कथ्यते	महो. ४।३३
तुषेज बद्धो ब्रीहिः स्यात्तुषाभावेन	
तण्डुलः । एवं बद्धस्तथाजीवः	
कर्मनाशो सदाशिवः	स्कन्दो. ६

तुष्टिस्त्वतुष्टिपर्यन्ता तस्माद्वाञ्छां

परित्यज

अ.पू. ५।३७

तुष्टौ यच्छेद्वाञ्छितार्थं मद्देशः

सि. शि. २५

तुष्यन्ति च रमन्ति च

भ. गी. १०।९

तृष्णीं शुद्रमजनयत्तस्माच्छूद्रो

निर्विद्योऽभवत्

अव्यक्तो. ६

तुस्तुर्बमाणोदक्षिणश्चोत्तरश्च न द्वैवैर्न

स्तृष्णीयाताम्

कौ. त. २।१३

तृणकाष्ठाविमहने.. स्थाने न

दीपयेदग्निं दीप्तं चापि ततः क्षिपेत्

शिबो. ७।७०

तृणं पांसुं महेन्द्रं च सुवर्णं मेरु-

सर्षपम् । आत्मम्भरितया सर्व-

मात्मसात्कर्तुमुद्यतः । कालोऽयं

सर्वसंहारी तेनाक्रान्तं जगत्..

महो. ३।३८

तृणाग्नेष्वम्बरे भानौ नरनागामरेषु

च । यत्तिष्ठति तदेवाहमिति

मत्वा न शोचति

अ. पू. ५।९४

तृणानलश्च नित्यश्चेत् क्षणिकं

तज्जगद्भवेत्

ते. बि. ६।८७

तृणानि हीच्छन्ति कुशत्वमेव वृक्षा

यूपत्वं पशोश्च गोत्वम् । सर्वाः

प्रजा ब्राह्मणत्वं.. न ब्राह्मणत्वात्

परमस्ति किञ्चित्

इतिहा. १४

तृणेन सत्तज्जीवानां सूर्यादि-

सकलभुवनप्रकाशिनी

दिवा च रात्रिः (तृप्तिकर्त्री)

सीतो. ७

तृणोदकं पशुभ्यः स्वर्गं लोकं यज-

मानायाज्ञमात्मन आगायानि..

छान्दो. २।२२।२

तृतीयसवनमनुसन्तनुत

छान्दो. ३।१६।४

तृतीयस्तैजसो भवति (नारायणः)

ना. पू. ता. १।१

तृतीयं तृतीयेन (संयुज्यते)

नृ. पू. २।२

तृतीयं नाभिचक्रं स्यात्तन्मध्ये

तु जगतिस्थितम्

योगरा. ९

तृतीयं नाभिचक्रं पञ्चावर्तं

सर्वकुटिलाकारम्

सौभाग्य. २६

तृतीयं यः पिबेत् सामवेदः प्रीणातु

आचम. ४

तृतीयं सर्वमनु सन्तनुते -(मा.पा.)

छां. उ. ३।१६।४

तृतीया ईकाररूपिणी अव्यक्त-

स्वरूपा भवतीति सीतेत्युदाहरति सीतो. ३

तृतीया तनुमानसी (ज्ञानभूमिः) महो. ५।२४

तृतीया द्यौः स मकारः स सामभिः

सामवेदो रुद्र आदित्या जगत्या-

हवनीयः सा साम्नस्तृतीयः

पादो भवति

नृ. पू. २।१

तृतीया द्यौः स मकारः, स सामभिः

सामवेदो रुद्र आदित्या

जगत्याहवनीयः

अ. शिखो. १

तृतीया शुभाशुभा शुक्ला रुद्रदेवत्या

अ. शिखो. १

तृतीया (मोक्षभूमिका) साङ्गभावना

अ. पू. ५।८२

तृतीयां (वृक्षशाखां) जहात्यथ

सा शुष्यति, सर्वं जहाति

सर्वं शुष्यति

छांदो. ६।११।२

तृतीयां भूमिकां प्राप्य बुद्धो-

ऽनुभवति स्वयम्

अव्युप. २२

तृतीये उत्तरास्त्रायो ज्योतिर्मठः...

मठाम्ना. ५

तृतीयेनतुपिण्डेनमातस्तस्याभिजायते

पिण्डो. ५

तृतीये धामनि पूर्वस्या एव विद्याया

यद्वाग्भवकूटं तेनैव मानवी चान्द्री

कौबेरी विद्यामाचक्षते

त्रि. ता. १।१६

तृतीयाऽत्यन्तमात्मानमाचार्यकुले-

ऽवसादयन् (धर्मस्कन्धः)

छांदो. २।२३।१

तृप्तिरिति वृष्टौ, बलमिति विद्युति

तैत्ति. ३।१०।२

तृष्णया बध्यते जन्तुः सिंहः

शृङ्खलया यथा

महो. ५।८७

तृष्णा क्रोधोऽनृतं माया... प्रतिवि-

द्धानि (२०) चैतानि सेव-

मानो ब्रजेदधः

ना. प. ४।५-७

तृष्णाग्राहगृहीतानां संसारार्णव-

पातिनाम् । आवर्तैरुद्धमानानां

दूरं स्वमन एव नौः

महो. ४।१०६

तृष्णा चपलमर्कटी, क्षणमायाति

पातालम्

महो. ३।२३

तृष्णा च सुखदुःखानां कारणम्

आयुर्वे. ६

तृष्णारज्जुगणं छित्त्वा मच्छरीर-

कपञ्जरात् । न जाने कं गतौ-

ड्वीय निरहङ्कारपक्षिणी

सं. सो. २।३८

तृष्णाविषूचिकामन्त्रश्चिन्तात्यागो
 हिसद्विज । स्तोकेनानन्दमायाति
 स्तोकेनायाति खेदताम् महो. ३।२६
 तृष्णासङ्गसमुद्भवम् भ. गी. १४।७
 तृष्णा हृत्पद्मपदी महो. ३।२४
 तृष्णैका दीर्घदुःखदा । अन्तः-
 पुरस्थमपि या योजयत्यतिसङ्कटे महो. ३।२५
 तृष्णा स्नेहो रागो लोभो हिंसा रतिः
 ...चञ्चलत्वं जिहीर्षार्थोपार्जनं
 ...परिग्रहावलम्बोऽनिष्टेष्विन्द्रि-
 यार्थेषु द्विष्टिरिष्टेष्वभिष्वङ्गपरिपूर्णं
 एत...इत्ययंभूतात्मा तस्मान्नाना-
 रूपाण्याप्नोति मैत्रा. ३।५
 ते अन्नवीदेतास्वेव वां देवतास्वा-
 भजाम्येतासु भागिन्यौ करोमीति २ऐत. २।५
 ते अस्यात्मेति वा अहमेतमुपास इति
 स यो हैतमेवमुपास्ते तेजस
 आत्मा भवति कौ.त. ४।४
 ते वसे नानार्थे पुरुषं सिनीतः कठो. २।१
 ते कामक्रोधादयः ..साधनरूपा
 भवन्ति सामर. १०१
 ते क्षुद्रसूक्ताश्चाभवन्महासूक्ताश्च... १ऐत. २।२।५
 ते खल्विम एव पूर्वैराचार्यैः प्रोक्ता
 वर्माः संहितो. ३।९
 तेऽभिभ्रुवन्, जातवेद एतद्विजानीहि
 किमेवयक्षमिति केनो. ३।३
 ते क्रमेण षोडशमात्रारूढाः, अकारे
 जाग्रद्विश्चः, उकारे जाग्रत्तेजसः . प. हं. प. १९
 ते चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति बृह. ६।२।१६
 ते चान्द्रमसमेव लोकमभिजयन्ते प्रश्नो. १।९
 ते चावर्त्य विमुच्यन्ते यावत्कर्म
 न तद्वदेव शिवो. १-३४
 ते छन्दोभिरच्छादयन्त्यदेभिरच्छा-
 दयं स्तच्छन्दसां छन्दस्त्वम् छां. व. १।४।२
 ते छन्दोभिराच्छादयन्त्यदेभिराच्छा-
 दयन् (मा. पा.) छां. व. १।४।२
 तेज एव तत्पूर्वं दर्शयित्वाऽथापः
 सृजते [छांदो. ७।१११, १
 तेजश्च तेजोमात्रा च प्रश्नो. ४।८

तेजश्च विद्योतयितव्यं च प्रश्नो. ४।८
 तेजश्चास्मि विभावसौ भ. गी. ७।९
 तेजस एव तद्वथापो जायन्ते छान्दो. ६।२।३
 तेजसःसमृद्धयै पुण्यलोकविजित्यर्था-
 यामृतत्वाय च (यष्ट्यम्) मैत्रा. ६।३६
 तेजसःसोम्यादयमानस्य योऽणिमा स
 ऊर्ध्वः समुदीषति सा वाग्भवति छान्दो. ६।६।४
 तेजसात्याप्ताखिललोकं ब्रह्ममूर्धानं
 ब्रह्मादयो हीदं दृष्ट्वाऽस्तुवन् गणेशो. ४।८
 तेजसा शरीरत्रयं संन्याप्य.. मात्रा-
 भिरौतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं
 चिन्तयन्मसेत् नृसिंहो. ३।४
 तेजसा सोम्य शुक्लेन सन्मूलमन्विच्छ,
 सन्मूलाः सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः छान्दो. ६।७।४
 तेजसा हि तदा सम्पन्नो भवति छान्दो. ८।६।३
 तेजसां तेजस्तेज आदधानः...
 तेजस्तेजसे स्वाहा पारमा. ४।४
 तेजसीव तमो यत्र विलीनं भ्रान्ति-
 कारणम् । अद्वितीये परे तत्त्वे
 निर्विशेषे भिदा कुतः अध्यात्मो. २४
 तेजसो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे
 भगवान्ब्रवीतु छांदो. ७।११।२
 तेजस्कायममृतं सलिल एवेदं सलिलं
 वनं भूयस्तेनैव मार्गेण जाग्राय
 धावति सम्राट् सुबालो. ४।४
 तेजस्तलोहितस्यात्र पिण्ड एवो-
 भयोस्तयोः मैत्रा. ७।११
 तेजस्तेजस्विनामहम् [भ.गी. ७।१० + ७।३६
 तेजस्त्रयमकारोकारमकारप्रणत्रात्मकम् २ बिल्वो. ११
 तेजस्यन्नादो भवति (मा. पा.) छां. व. ३।१२।१
 तेजस्विनी हास्य प्रजा भवति बृह. २।१।४
 तेजस्वी भूयासम् चित्त्यु. ७।४
 तेजस्वी वै स तेजस्वतो लोकान्
 भास्वतोऽपहततमस्कानभिसिद्धयति छांदो. ७।११।२
 तेजस्व्यन्नादोभवति [छान्दो. २।१४।२+ ३।१३।१
 तेजः कल्पोद्यानम् भावनी. २
 तेजः क्षमा धृतिः शौचं भ.गी. १६।३
 तेजःक्षये क्षुधाकान्तिर्नश्यते
 मारुतक्षये वराहो. ५।५

तेजः प्रकाशने (शरीरस्य) गर्भो. १
 तेजः परस्यां देवतायाम् छान्दो. ६।८।६
 ते जीवा भक्तिमार्गीया एवैते सामर. २
 तेजोदास्त्वमस्यग्निरसि महाना. १७।१५
 तेजो-नाद-ध्यान-विद्या-योग- मुक्ति. १।३३
 तत्त्वात्मबोधकम्
 तेजोविन्दुः परं ध्यानं विश्वात्महृदि ते.वि. १।१
 संस्थितम् । आणवं शांभवं सुबालो. ११।२
 शांतं स्थूलं सूक्ष्मं परं च यत् भ.गी. ११।३०
 तेजो भित्त्वा वायुं भिनत्ति
 तेजोभिरापूर्य जगत् समग्रं
 तेजोमध्ये स्थितं सत्त्वं सत्त्वं- मैत्रा. ६।३८
 मध्ये स्थितोऽच्युतः सामर. ९७
 तेजोमयं (यी) चिदस्ति भ.गी. ११।४७
 तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं छांदो. ६।७।६
 तेजोमयी वागिति तद्भास्य विजिज्ञौ
 तेजोमयी वागिति भूय एवमा
 भगवान्विज्ञापयत् [छांदो. ६।९।४+९।६
 तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते ईशा. १६
 पश्यामि योऽसावसौ..सोऽहमस्मि बृ.जा. २।४
 तेजोरसविभेदेस्तु वृत्तमेतच्चराचरम् भ.गी. ११।१७
 तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तं सुबालो. २।२
 तेजो वायौ विळीयते, वायुराकाशे..
 तेजो वावाहूयो भूयस्तद्वा छांदो. ७।११।१
 एतद्वायुमागृह्याकाशमभितपति
 तेजो वै पुत्रनामासि स जीव कौ.त. २।११
 शरदः शतम्
 तेजोऽशितं त्रेधा विधीयते तस्य
 यःस्थविष्ठो धातुस्तदस्थि भवति,
 यो मध्यमः स मज्जा, योऽणिष्ठः
 सा वाक् छां.उ.६।५।३
 तेजोहवावज्ज्वानस्तस्मादुपशांततेजाः प्रभो. ३।९
 ते तत् एव द्रागिव व्यज्ञासिषुः छाग. ६।४
 ते (अज्ञाः)तत्र साभिमाना वर्तन्ते स्वसंवे. ३
 ते तथैत्युक्त्वा तूष्णीमतिष्ठन्
 ...नीचैर्बभूवुः २प्रणवो. १९
 तेजमचैयन्तस्त्वंदिनःपिता,योऽस्माक-
 मविद्यायाः परं पारं तारयसि प्रभो. ६।८
 ते तं पुनस्त्वा स्वर्गलोके विशालं भ.गी. ५।२१

ते तेषु ब्रह्मलोकेषु पराः परावते बृह. ६।२।१५
 वसन्ति न तेषां पुनरावृत्तिः
 तेऽथ (ऋषयः) कवचमैलूषं दास्याः छाग. ३।१
 पुत्र इति... बृह. १।३।१८
 ते देवा अनुवन्नेतावद्वा इदं सर्वं
 यदन्नं तदात्मन आगासीः
 ते देवा इममात्मानं ज्ञातुमैच्छन्, तां नृसिंहो. ६।१
 हासुरः पाप्मा परिजग्राह चतुर्वे. ८
 ते देवा ऊर्ध्वबाहवो रुद्रं स्तुवन्ति
 ते देवा ज्योतिरुत्तितीर्षवो द्वितीया-
 ऋयमेव पश्यन्त इममेवोकारा-
 ग्रविद्योतं तुरीयतुरीयमात्मान-
 मनुष्टुभान्विष्य प्रणवेनैव नृसिंहो. ६।३
 तस्मिन्नवस्थिताः
 ते देवा देवयजनस्योत्तरार्धेऽसुरैः २ प्रणवो. ८
 संयत्ता आसन् भ.गी. ३।११
 ते देवा भावयन्तु वः
 ते देवा भीता आसन्, क इमान-
 सुरान्हनिष्यतीति २ प्रणवो. ७
 ते देवाः पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च
 लोकैषणायाश्च ससाधने व्युत्थाय
 ...प्रणवमेवैभ्यो परं ब्रह्मात्म-
 प्रकाशं शून्यं जानन्तस्तत्रैव
 परिसमाप्ताः नृ. उ. ६।३
 ते देवाः सत्यमेवोपासते बृह. ५।५।३
 ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ताः भ.गी. ७।२८
 ते द्वे ब्रह्मणि विन्देत् कर्तृताकर्तृते
 मुने । यत्रैवैष चमत्कारस्तमा-
 श्रित्य स्थिरो भव महो. ४।१५
 ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. १।९
 ते द्वे शाखे हंसवर्णे गायत्री
 त्रिष्टुब्धैवत्ये नारदो. १
 ते द्वे शाखे हंसवर्णे गायत्री
 त्रिष्टुब्धैवत्ये कात्याय. १
 ते धर्माःस्कन्दनन्दिभ्यामन्यैश्च
 मुनिसत्तमैः । सारमादाय
 निर्दिष्टाः सम्यक्.. शिवो. १।७
 तेधूममभिसम्भवन्ति धूमाद्रात्रि-
 रात्रेरपरपक्षमपरपक्षाद्यान्षड्
 दक्षिणैति छां.उ.५।१०।३

ते धूममभिसम्भवन्ति धूमा-
 द्वात्रिंशत् रात्रेरपक्षीयमाणपक्ष-
 मपक्षीयमाणपक्षाद्यान्वष्मा-
 सान्दक्षिणादित्य एति बृ. उ. ६।२।१६
 ते व्यातयोगानुपता अपश्यन्देवा-
 त्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढाश्च ना. प. ९।२
 [श्वेताश्व. १।३+ चित्त्यु. ११।४
 तेन हृष्टोऽमृतेनाहमस्मि छान्दो. ८।२।६
 तेन गन्धमात्यलोकेन सम्पन्नो महीयते छान्दो. ८।२।८
 तेन गीतवादित्रलोकेन सम्पन्नो
 महीयते छान्दो. ८।२।८
 तेन चित्प्रतिबिम्बेन त्रिविधा भाति
 सा पुनः प्रकृत्यवच्छिन्नतया सरस्व. ३७
 तेन चेतनेनेदं शरीरं चेतनवत्प्रति-
 ष्ठापितम् मैत्रा. २।५
 तेन ततोऽपि न बहु दहेदेव सोम्य
 ते षोडशानां कलानामेका कला.. छान्दो. ६।७।३
 तेन तर्होष पुरुषो न शृणोति ह न
 पश्यति स्वपितृतीत्याचक्षते प्रश्नो. ४।२
 तेन व० ह वको दाहभ्यो
 विद्याश्चकार छान्दो. १।२।१३
 तेन व० ह वृद्धपतिरुद्गीथमुपासाश्चक्रे छान्दो. १।२।११
 तेन व० ह वायास्य उद्गीथमुपासाश्चक्रे छान्दो. १।२।१२
 तेन त्रिराचामेत । प्रथमं यः पिबे-
 ह्यवेदः प्रीणातु आचम. ३
 तेन देवाऽअयजन्तसाध्याकृषयश्चये
 [क्र. अ. ८।४।१८ =मं. १०।९०।७
 [वा. सं. ३।१।९+ चित्त्यु. १२।४
 तेन देवाधिपत्यं ब्रह्माधिपत्यं
 च गच्छति ग. पू. १।१२
 तेन देवाधिपत्यं स्वःपतित्वं
 च गच्छति ग. पू. १।१२
 तेन धनदादिकाष्ठापतिर्भवति ग. पू. १।१२
 तेन धीरावपि यन्ति ब्रह्मविदः बृह. ४।४।८
 तेन नवरत्नरूपो देवः भावनो. २
 तेन नित्यनिवृत्तः (परमहंस) प. ह. ३
 तेन नो णकारषकारावुपासाविति
 ह स्माह इत्यो माण्डूकेयः ३ ऐत. २।६।२

तेन नो णकारषकारावुपासाविति
 ह स्माह स्थविरः शाकल्यः ३ ऐत. २।६।३
 तेऽनन्योपासका भवन्ति सामर. ७५
 तेन पाप्मानमपहत्य ब्रह्मणा
 स्वर्गं लोकमप्येति १ ऐत. ३।८।४
 तेन पितृलोकेन सम्पन्नो महीयते छान्दो. ८।२।१
 तेन प्रद्योतेनैष आत्मा निष्क्रामति बृह. ४।४।२
 तेन प्राच्यान्प्राणान्निमेषु सन्निधत्ते प्रश्नो. १।६
 तेन आतृलोकेन सम्पन्नो महीयते छान्दो. ८।२।३
 तेन मनुष्याणां मोहको दाहको (वायुः)
 भक्ष्य-भोज्य-लेह्य-चोष्य-पेयात्मकं
 चतुर्विधमन्नं पाचयति भावनो. ९
 तेन मातृलोकेन सम्पन्नो महीयते छान्दो. ८।२।२
 तेन मुखेन पक्षिणोऽस्ति
 (चन्द्रोपस्थानम्) कौ. त. २।९
 तेन मुखेन मामन्नादं कुरु । राजा
 त एकं मुखम्
 तेन मुखेन विशोऽस्ति कौ. त. २।९
 तेन मुखेनेमं लोकमस्ति कौ. त. २।९
 तेन मुखेन सर्वाणि भूतान्यस्ति कौ. त. २।९
 तेन मुह्यन्ति जन्तवः भ. गी. ५।१।५
 तेन वक्रतुण्डाय हुमिति यो जानी-
 यात् सोऽमृतत्वं... च गच्छति ग. पू. १।१२
 तेन वासनात्मकेन लिङ्गेनोत्पत्ति-
 स्थितिलयानापद्यते सामर. १००
 तेन वेषेण भूम्यादिलोकं व्याप्या-
 नन्वयोजनमत्यतिष्ठत्
 (विराट् पुरुषः) मुद्रलो. २।२
 तेन वै ते मृत्युमजयन्... संसारं
 चातरन् वृ. पू. २।१
 तेन (आनुष्टुभमन्त्रेण) वै ते मृत्यु-
 मजयन्... संसारं चातरन् वृ. पू. २।१
 तेन वै सर्वमिदमस्तुजत यदिदं किञ्च
 तेन सत्येन तपसस्तुर्हस्यातर्बोऽस्मि वृ. पू. १।१
 तेन सखिलोकेन सम्पन्नो महीयते कौ. त. १।२
 छान्दो. ८।२।५
 तेन सप्तद्वीपाधिपो भवति, धुः-
 पतित्वं च गच्छति ग. पू. १।१२
 तेन (मन्त्रज्ञानेन) सर्वज्ञानं भवति ग. पू. १।६

तेन सर्वमिदं प्रोतं तत्सत्यं तत्परं पदं १ यो.त. १३६
 तेन सर्वदेवाधिपत्यं विष्णुलोका-
 धिपत्यं च गच्छति ग. पू. ११२
 तेन सर्वान्प्राणान्निर्मिषु सन्निधत्ते प्रश्नो. १६
 तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति अ.शिरः. ३१६
 तेन सह मनोयुक्तं तारकं सुसंयोज्य
 ...भूयुग्मं सावधानतया
 किञ्चिदूर्ध्वमुखेपयेत् अद्वयता. ६
 तेन खीलोकेन सम्पन्नो महीयते छान्दो. ८१२९
 तेन स्वयं त्वया ज्ञातं ज्ञेयं यस्य
 महात्मनः । भोगेभ्यो ह्यरति-
 जाता दृश्याद्वा सकलादिह महो. २७१
 तेन स्वसृष्टलोको महीयते छान्दो. ८१२४
 तेन स्वेदमूत्रजलरक्तवीर्यरूपरस-
 पुरुषादिकं प्राणः पृथक्कुर्यात् शाण्डि. १४८
 तेन ह वाव तत्कुलमाचक्षते,
 यस्मिन्कुले भवति... बृह. १५१२१
 तेनाङ्गुलीमथ्यमानात् सलिलमभवत् गायत्रीर. १
 तेनातुराः क्षीणलोकाश्चयवन्ते मुण्ड. १२१९
 तेनात्मना बहुज्ञेन निर्ज्ञाताश्चक्षु-
 रादयः ।.. दिष्ट्याऽस्मि विगतत्वरः अ. पू. ३९
 तेनाधीतं श्रुतं तेन तेन सर्वमनु-
 स्थितम् । मूलमंत्रं विजानाति यो
 विद्वान्गुरुवक्षितम् यो. शि. २४
 तेनाधीतं श्रुतं तेन... येन विप्रेण
 शिरसि त्रिपुण्ड्रं भस्मना धृतम् बृ. जा. ५८
 तेनाज्ञानलोकेन सम्पन्नो महीयते छान्दो. ८१२७
 तेनान्योऽस्मत्समृच्छा तैत्तमस्मै
 प्रसुवामसि सहवै. ५
 तेनामृतत्वमश्नाम् चिन्त्यु. १०१९, ४
 तेनामृतत्वस्येशानं माऽहं पौत्रमथ
 रुद्रमिति न हास्मात्पूर्वाः कौ. त. २८
 प्रजाः प्रयन्तीति
 (पुत्र) ते नाम्ना मूर्धानमभि-
 जिघ्रामि, असाविति... कौ. त. २११
 तेनायजंत यदृचोऽप्यगीषत, ताः पथ
 आहुतयो देवानामभवन् सहवै. १३

तेनासौ स्वविवेकेन स्वयमेव महा-
 मनाः । प्रविचार्य चिरं साधु महो. २१२
 स्वात्मनिश्चयमाप्तवान्
 तेनासौ लोको न सम्पूर्यते
 तस्माज्जगुप्सेत छांदो. ५१०८
 तेनाहं ज्योतिषा ज्योतिरानशान
 आक्षि, यत्कुसीदमप्रतीतं.... सहवै. ४
 ते निचिक्युर्ब्रह्म पुराणमभ्यस्य बृह. ४१४१८
 ते निबध्नन्ति नागेन्द्रमुन्मत्तं विस-
 तन्तुभिः ॥ (विमूढाः कर्तुमुद्युक्ता
 ये हठाच्चेतसो जयम्) मुक्तिको. २४७
 ते नु वित्त्वोर्ध्वा ऋचः साम्नो यजुषः
 स्वरमेव प्राविशन् छां. उ. १४१२
 तेनेतिहासपुराणानां रुद्राणां शत-
 सहस्राणि जप्तानिफलानिभवन्ति पैङ्गलो. ४१२४
 तेनेदं निष्कलं विद्यात् क्षीरात्सर्पि-
 र्यथा तथा अ. वि. १७
 तेनेदं पूर्णपुरुषेण सर्वम् [श्वेता. ३१९+
 तेनेन्द्रस्य प्रियं धामोपेयाय [१ ऐत. महाना. ८११४
 तेनेमे प्राणाः, प्राणेभ्यः प्रजाः २१३१, २, ३
 तेनेयमिन्द्रजालश्रीर्जगतिप्रवितन्यते । मैत्रा. ६३७
 द्रष्टुर्दृश्यस्य सत्तान्तर्बन्ध
 इत्यभिधीयते महो. ४४७
 तेनेयं त्रयी विद्या वर्तते ओमित्या-
 श्रावयत्योमिति शस्त्रस्योमित्यु-
 द्गायत्येतस्यैवाक्षरस्यापचित्यै
 तेनेशितं (देवेन) कर्म निवर्तते ह छांदो. १११९
 तेनैति (मार्गेण) ब्रह्मवित्पुण्य-
 कृतैजसश्च श्वेताश्व. ६३
 तेनैव (ब्रह्मप्रणवेन) ब्रह्म प्रकाशते बृह. ४४१९
 तेन विदेहमुक्तिः प. हं. प. १०
 तेनैव मुखेन मामन्नाहं कुरु । इयेनस्त
 एकं मुखं, तेन मुखेन पक्षिणोऽस्मि कौ. त. २१९
 तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन भ. गी. ११४६
 तेनैव शरीरेण देवतादर्शनं करोति नृ. पू. १५
 तेनैष पूर्णः सत्राएष पुरुषविधएव [तैत्ति. २१२४
 तेनैष खेचरी नाम मुद्रा .. बिन्दुः
 क्षरति नोयस्य .. यावद्बिन्दुः स्थितो
 रेरे तावन्मृत्युभयं कुतः व्या. वि. ८३

तेनो एतस्यै देवतायै सायुज्यं	
सलोकतां जयति	बृ. उ. १।५।२३
तेनोभौ कुरुतो यश्चैतदेवं	
वेद यश्च न वेद	छांदो. १।१।१०
ते पद्मवाद्यस्तत्स्थावरं ते ब्राह्मणा-	
दयः परमात्मैव	निरालं. १०
तेऽपि चातितरन्त्येव	भ.गी. १३।२६
तेऽपि मामेव कौन्तेय	भ. गी. ९।२३
तेऽपि यान्ति परां गतिम्	भ. गी. ९।३२
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकं	भ. गी. ९।२०
ते पिशाचास्ते मनुष्यास्ताः	
स्त्रियः (परमात्मैव)	निरा. १०
ते पुनः पुरुषाभौ ह्यन्ते	बृ. उ. ६।२।१६
ते पृथिवीं प्राप्यान्नं भवन्ति	बृ. उ. ६।२।१६
तेऽप्यहानतयानूनं पुनरायान्तियान्ति..	म. वा. र. ३
ते प्रकाश्यामिवदन्ति (आकाशादयः)	प्रश्नो. २।२
ते (देवाः) प्रजापतिमुपधावन् ,	
तेभ्य एतं मंत्रराजं नारसिंहं	
प्रायच्छत	नृ. पू. २।१
ते प्राकाश्यामिवदन्ति (मा. पा.)	प्रश्नो. २।२
ते प्राप्नुवन्ति मामेव	भ. गी. १२।४
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नं	भ. गी. ७।२९
ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परा-	
मृतात्परिमुच्यन्तिसर्वे [महाना. ८।१५ + मुण्ड. ३।२।६	
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले...	
परिमुच्यन्ति काले [कैव. ४+	भवसं. २।३३
तेभिर्धार्यमिदं सूत्रं क्रियाङ्गं	
तन्मनुनिमित्तम्	परब्र. १७
ते भोगास्तानि भोज्यानि व्यास-	
पुत्रस्य तन्मनः । नाजहुः...	महो. २।२६
ते (शिवभक्ताः) भोगान्प्राप्य	
मुच्यन्ते प्रलये शिवविद्यया	शिवो. १।३३
तेभ्यस्तज्ज्योतिरस्य सर्वस्य पुरतः	
सुविम्बा मविभार्त... परमेव	
ब्रह्म भवति	नृसिंहो. ६।२
तेभ्यस्तुर्यं महत्तरं (चाक्षुषादिभेदेभ्यः)	मैत्रा. ७।११
तेभ्यः (विद्वानधीतेभ्यः) ब्राह्मं तु वृत्तं	
चेत्तच्छ्राद्धं निष्कलं भवेत्	इतिहा. ७८

तेभ्यः (मरीच्यादिभ्यः) सर्वाणि	
भूतानि च	सङ्कर्षणो. १
तेभ्यो जलबिन्दवो भूमौ पतितास्ते	
रुद्राक्षा जाताः	रु. जा. १
तेभ्यो (देवेभ्यो) एतं मंत्रराजं नार-	
सिंहमानुष्टुभं प्रायच्छत्	नृ. पू. २।१
तेभ्यो न सर्वमिव प्रतिपत्स्ये हन्ता-	
हमन्यमभ्यनुशासानीति	छांदो. ५।११।३
तेभ्योऽब्रवीत्तमहं वेद तच्चेत्त्वं	
याज्ञवल्क्य सूत्रमविद्वाँ स्तं	
चान्तर्यामिणं... मूर्धा ते	
बिपतिष्यतीति	बृह. ३।७।१
तेभ्योऽमितमेभ्यस्त्रयीविद्यासंप्राप्तवत्	छांदो. २।२३।२
तेभ्यो भूतानि, तैरावृतमक्षरम्	गोपालो. २।१३
तेभ्यो ह प्रादुर्बभूव तन्न व्यजानन्त	केनो. ३।३
तेभ्यो ह प्राप्तेभ्यः पृथग्दर्शानि	
कारयाश्चकार	छांदो. ५।११।५
तेभ्योऽहं भागधेयं जुहोमि, ते मा	
तृप्ताः सर्वैः कामैस्तर्पयन्तु स्वाहा	बृ. उ. ६।३।१
तेभ्यो हासावासुरः पाप्मा सच्चिदा-	
नन्दधनज्योतिरभवत्	नृसिंहो. ६।१
तेभ्यो हैतदक्षरमुवाच द इति	बृह. ५।३।१, २
तेभ्यो हैतामुपनिषदं प्रोवाच	छांदो. ८।८।४
तेऽमुष्मिन्नादित्ये सृप्ताः	छांदो. ८।६।२
ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्	कठो. ४।२
ते मे अक्षन्नहमु ताननुक्षम्	वा. मं. २।१
ते मे युक्ततमा मताः	भ. गी. १५।२
ते य एवमेतद्विदुर्ये चामी अरण्ये	
अद्वाँ सत्यमुपासते तेऽर्चि-	
रमिसम्भवन्ति	बृ. उ. ६।२।१५
ते यथा तत्र न विवेकं लभन्ते	छांदो. ६।५।२
ते यदन्तरा तद्ब्रह्म तदमृतं स आत्मा	
प्रजापतेः सर्वां वेदम प्रपद्ये	छांदो. ८।१४।१
ते यद्वयमनुसंहितमृचो धीमहे...	इयेत. २।६।२
ते ये शतमाजानजानादेवानामानन्दाः	तैत्ति. २।८
ते ये शतमिन्द्रस्यानन्दाः	तैत्ति. २।८
ते ये शतं कर्मदेवानां	
देवानामानन्दाः	तैत्ति. २।८

ते ये शतं देवगन्धर्वाणामानन्दाः तैत्ति. २।८
 ते येऽस्मद्यक्षममनागसो दूरा- सहैव. ५
 इरमचीचतम्
 ते ये शतं देवानामानन्दाः स एक तैत्ति. २।८
 इन्द्रस्यानन्दः
 ते ये शतं षण्णामां चिरलोकलोकाना- तैत्ति. २।८
 मानन्दाः..
 ते ये शतं प्रजापतेरानन्दाः... तैत्ति. २।८
 स एको ब्रह्मण आनन्दः
 ते ये शतं बृहस्पतेरानन्दाः स तैत्ति. २।८
 एकः प्रजापतेरानन्दः
 ते ये शतं मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः तैत्ति. २।८
 तैत्ति. २।८
 ते ये शतं मानुषा आनन्दाः स तैत्ति. २।८
 एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः
 ते रागादयो दोषाः शरीरसंवलताः सामर. १०१
 त एषोऽभवन् कर्मादिष्वेतैर्जुहुयात्
 पूता देवलोकान्समश्नते सहैव. ११
 तेऽचिरमिदमभवन्त्यचिषोऽहरह
 जीर्ण्यमाणपक्ष्मापूर्यमाणपक्षा-
 द्यान्वण्मासानुदन्नादित्य एति
 मोक्षेभ्यो देवलोकम् बृह. ६।१।१५
 तेऽचिरमिदमभवन्ति छांदो. ५।१०।१
 तेऽचिषो व यंशस आश्रयवशा-
 ज्ज्वाभिरूपा इव कृष्णवर्त्मनः मैत्रा. ६।३५
 तेऽवस्थिताः प्रमुखे धातुराष्ट्राः भ. गी. २।६
 (अथ) ते वा एतस्यैवं यथैवेह मैत्रा. ६।३१
 बीजस्यांकुरा वा.. छांदो. ३।५।२
 तेषा एते गुह्या आदेशा एतद्ब्रह्माभ्यतपन् छांदो. ३।५।२
 ते वा एतेऽथर्वाङ्गिरस एतदिति- छांदो. ३।४।२
 हासपुराणमभ्यतपन्
 ते वा एते पञ्च महापुरुषाः स्वर्ग- छांदो. ३।११।६
 स्य लोकस्य द्वारपाः
 ते वा एते पञ्चान्ये पञ्चान्ये दश छांदो. ४।३।८
 संस्तस्मोत्सर्वासु दिक्ष्वन्नमैव
 ते वा एते रक्षानाः रसाः, वेदा छांदो. ३।५।४
 हि रसास्तेषामेते रसाः
 ते वाऽभिवाद्यैवोप समीयुः भाषे. १०।४
 ते (देवाः) वायुप्रतिष्ठाकाशात्मानः
 स्वर्गयुः की. व. २।१४

ते विदुरनेन वै न उद्गात्रात्ये-
 ष्यन्तीति [बृह. १।३।२, ३, ४, ५, ६, ७
 ते विदुर्युक्तचेतसः भ. गी. ७।३७
 ते वै माभिसंविशतेति तथेति तः
 समन्तं परिणयविशन्त बृह. १।३।१८
 ते वै सूत्रविदो लोके तं च
 यज्ञोपवीतिनः ब्रह्मो. ११
 ते शुक्रमेसदतिवतन्ति धीराः मुंड. ३।२।१
 तेऽश्रद्धाना बभूवुः प्रभो. २।४
 तेषामभ्यर्हितमन्तर्गृहम् भस्मजा. २।८
 तेषामसौ विरजो ब्रह्मलोको न
 येषु जिह्वमनृतं न माया प्रभो. १।१६
 तेषामहं समुद्धर्ता भ. गी. १२।७
 तेषामात्रेयोऽच्छावदः सर्वाण्येवा-
 वर्तयत् छांग. २।२
 तेषामादित्यं वज्रज्ञानं भ. गी. १।१६
 तेषामिन्द्रो जगतीमेव प्रतिखन्दिदेश शौनको. ४।१
 तेषामिन्द्रो न प्रत्यपद्यत शौनको. १।१
 तेषामिन्द्रो रुद्रानेव सेनान्योकः शौनको. ३।१
 तेषामिमेविभ्येत एवाः शूनुपाकल्पयत् शौनको. ४।१
 तेषामेसान्यमृतानि छांदो. ३।५।४
 तेषामेते रसाः (वेदाः) छांदो. ३।५।४
 तेषामेव पुनर्भवनं नो इहास्ति स्वसवे. १
 तेषामेव सर्वदा स्वीकरणं धूपः भावतो. ८
 तेषामेवानुकम्पार्थं भ. गी. १०।११
 तेषामेवैष ब्रह्मलोकस्तेषां सर्वेषु
 लोकेषु कामचारो भवति छांदो. ८।४।३
 तेषामेवैष ब्रह्मलोकः, येषां तपो
 ब्रह्मचर्यं येषु ब्रह्म प्रतिष्ठितम् प्रभो. १।१५
 तेषां के योगवित्तमाः भ. गी. १२।१
 तेषां (कर्मेन्द्रियाणां) क्रमेण वचना-
 दानगमनविसर्गानन्दाश्चेते
 विषयाः... शारीरको. १
 तेषां क्रमेण सङ्कल्पविकल्पाध्यवसाया-
 भिमामावधारणास्वरूपाश्चेते
 विषयाः शारीरको. २
 तेषां खल्वेषां भूतानां त्रीण्येव
 बीजानि भवन्त्यण्डजं
 बीजजमुद्भिजमिति छांदो. ६।३।१

तेषां जरितारो विभ्यत एव वसती-

शरीरपकल्पयन्

शौनको. ३।१

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्तः

भ. गी. ७।१७

तेषां तप्यमानानां रसान्ध्रावृहदग्नि

पृथिव्या वायुमंतरिक्षाद्वादित्यविवः छान्दो. ४।१७।१

तेषां भान्नां वागित्येतदेवामुक्त्यमस्तौ

हि सर्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्ति

श्रु. उ. १।६।१

तेषां नित्याभियुक्तानां

भ. गी. ९।२२

तेषां निष्ठा तु का कृष्ण

भ. गी. १७।१

तेषां तर्कचानाशकं विवक्तुमिति

छान्दो. ५।३।५

तेषां नो भक्त्यागमपुराणेतिहास-

धर्मशास्त्रेषु धृताभिमानास्ते..

स्वसंवे. १

तेषां प्राणैः पूर्वपक्ष आप्यायते-

ऽथापरपक्षेन प्रजनयत्येतद्वै

स्वर्गस्य लोकस्य द्वारम्

कौ. त. १।२

तेषां ब्रह्मविष्णुरुद्राश्चोत्पत्तिस्थिति-

लक्षकतारिः

यो. चू. ७२

तेषां मनुष्यादीनां पञ्चभूतसमन्वायः

शरीरम्

यो. चू. ७२

तेषां मैदमिमे गृणु

भ. गी. १७।७

तेषां (जीवानां) मुक्तिकरं मार्गं..

१ यो. त. ५

तेषां य उभयतोदन्ताः पुरुषस्यानु-

विषां विहितास्ते तेऽन्नादाः

१ ऐत. ३।१।३

तेषां यदा तत्पर्यवेत्यर्थममे-

वाकाशमभिनिष्पद्यन्ते

बृह. ६।२।१६

(अथ) तेषां (भूतानां) यः

समुदायः शरीरमित्युक्तं

मैत्रा. ३।२

तेषां विश्वामित्रो विजितीयमिव

मन्यमान उवाच

आर्षे. १।१

तेषां सवतयुक्तानां

भ. गी. १०।१०

तेषां सत्यानां सतामनृत-

मपिधानं यो यो ह्यत्येतः प्रैति

न समिहं वर्धनाय लभते

छान्दो. ८।३।१

तेषां सप्तानामिह रन्तिरस्तु चित्त्यु.

११।१२, १३

तेषां सर्वेषु लोकेष्वकामचारो भवति

छान्दो. ७।२५।२

तेषां सर्वेषु लोकेषु कामचारो

भवति [छान्दो. ८।१।६+

८।४।३+८।५।४

तेषां सर्वेषु लोकेष्वस्य काम-

चारो भवति

छान्दो. ८।१।६

तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्

कठो. ५।१२

[+ श्रेता. ६।१२+

गुह्यका. ४४

तेषां स्नेहमार्गोऽयमापद्यते

सामर. २

तेषु प्राणादयः पञ्च मुख्याः पञ्चसु

सुव्रते । प्राणसंज्ञस्तथाऽपानः

पूज्यः प्राणस्तयोर्मुने

जा. द. ४।२५

तेष्वक्षरेषु विभज्य भावज्यज्जगदूपं

प्राकाशयम् । तदिह कृष्णादाकाशं.. गो. पू. ३।६

तेष्वण्डेषु सर्वेष्वेकैकनारायणा-

वतारो जायते

त्रि. म. ना. २।७

तेष्व्वात्मनेऽन्नाद्यमागायेत्

बृह. १।३।२८

ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा युक्ता-

त्मानः सर्वमेवाविशन्ति

मुंड. ३।२।५

ते सर्वे गुणाः... आत्मानं तन्मयतां

नयन्ति

सामर. १०१

तेऽसुराः सन्नद्य सहस्रैवाचरन्

सहस्रैः १

तेऽसोमंप्राप्नुवन्ति [त्रिसु. १, २, ३+

महाना. १२।१, २, ३

ते ह खल्वथोर्ध्वरेतसोऽति-

विस्मिता आतसमेत्योचुः

मैत्रा. ४।१

ते ह गृहीत्वैवेनान् पथोऽभिसमीयुः

छाग. ५।६

ते ह तत एवार्तिमाच्छस्तान्-

न्वितरान्पराभावयन्

शौनको. १।२

ते ह तत एवोपसमेत्य कुरुक्षेत्र-

मुपजग्मुः

छाग. ३।१

ते ह तस्यैव पन्थामनुप्रातिष्ठन्तं

ह सायाहन्यबोपसंपादयामासुः

छाग. ५।४

ते हताभिरव जिघांसन्

शौनको. ३।१

ते ह (असुराः) तृतीयस्येह सवनस्य

पवमानेषु यज्ञवास्त्वभ्यायन्

शौनको. ४।१

ते ह तैरेव देवानपाजिघांसन्

शौनको. ४।१

ते ह देवा ऊर्चुर्हन्तासुरान्यज्ञ उद्गीथे-

नात्ययानेति

बृह. १।३।१

ते ह नाकं महिमानः सचन्त(न्ते)

[चित्त्यु. १२।७ + महाबा. ४ + क्र. अ. ८।४।१९

[=मं. १०।५०।१६+

वा. सं. ३।१।१६

ते ह नासिक्यं प्राणमुद्गीथमुपासां-

चक्रिरे

छान्दो. १।२।२

ते ह तुजेषु नाराशंसेषु ऋषीणां

यज्ञवास्त्वभ्यायन्

शौनको. १।१

ते होचुर्हन्त तमात्मानमन्विच्छामो यमात्मानमन्विष्य सर्वाँश्च लोकानाप्नोति	छान्दो. ८।७।२
ते होचुः कथमानुष्टुभं मन्त्रराज- मभिजानीमः	ग.पू. १।११
ते होचुः कथं वयमज्ञाद्याभवामइति	ग.पू. १।६
ते होचुः कथं शिवोमायुत इति	ग.पू. २।८
ते होचुः किंवा अस्मत् प्रतीच्छथेति	छाग. ४।१
ते होचुः क नु सोऽभूद्यो न इत्यमसक्तेत्ययमास्येऽन्तरति	बृह. १।३।८
ते होचुः सम्पश्यन्वमिति किं हीति	छाग. ५।२
तेऽहोरात्रविदो जनाः	भ.गी. ८।१७
तेऽहोरात्रे एकं दिनं भवति (महाविष्णोः)	त्रि.म.ना.३।५,६
ते ह्येनत्प्रथमो विदाश्चकार ब्रह्मेति	केनो. ४।२
ते ह्येनमेदिष्ठं पस्पृशुः	केनो. ४।२
तैजसस्तु विविक्तमुक्	आगम. ३
तैजसः प्रतिभासिकः स्वप्नकल्पित इति तैजसस्य नाम भवति	पैङ्गलो. २।६
तैजसस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषोऽयमेव	बृह. २।५।८
तैजसः प्रविविक्तमुक् । आनन्दभु- क्त्या प्राज्ञः सर्वसाक्षीत्यतः परः	यो. चू. ७२
तैजसात्मकः प्रद्युम्न उकाराक्षर- सम्भवः । प्राज्ञात्मकोऽनिरुद्धो- ऽहो मकाराक्षरसम्भवः	गोपालो. २।१६
तैजसात्मिकां जालन्धरपीठालयां... वप्रेष्यती. द्वितीयकूटां मन्यन्ते	श्रीवि. ता. २।१
तैजसानि (पात्राणि) गुरवे वधात्	कठर. २
तैजस्योत्पत्तिविज्ञानं चत्कर्णो दृश्यते स्फुटम् । यात्रासम्प्रतिपत्तौ स्या- दुभयत्यं तथाविधम्	आगम. २७
तैरहं पूजनीयो हि भद्रकृष्णनिवा- सिभिः । तद्धर्मगतिदीना ये तस्यां मयि परायणाः	गोपालो. २।१०
तैर्वचानप्रदायैभ्यः	भ.गी. ३।१२

तैलधारामिवाच्छिन्नदीर्घघंटानिनाद- वत् । बिन्दुनादकलातीतं यस्तं वेद स वेदवित्	ध्या.वि. ३७
तैलधारामिवाच्छिन्नं दीर्घघण्टा- निनादवत् । अवाच्यं प्रणवस्याग्रं यस्तं वेद स वेदवित् [ध्या.वि. १८+ वराहो. ५।६९	
तैलधारामिवाच्छिन्नं दीर्घघण्टानिनाद- वत् । प्रणवस्य ध्वनिस्तद्वत्तदग्रं ब्रह्म चोच्यते	यो.चू. ८०
तैलमध्ये यथा यथा मक्षिका एक- देहिमध्ये ब्रह्म दशधारूपं..	अद्वैतो.
तैलं तिलेषु काष्ठेषु वह्निः क्षीरे घृतं यथा । गन्धः पुष्पेषु भूतेषु तथा- ऽऽत्मावऽस्थितो ह्ययम्	वासुदे. १०
तैश्च न गौर्न ब्राह्मणो न सुरा न पश्यतो हरः	स्वसंवे. २
(अथ)तैः सम्भूतैर्वायुः संस्थाप्य हृदयं तपः । ऊर्ध्वं प्रपद्यते देहाद्वित्वा मूर्धानमव्ययम्	२ सञ्ज्ञासो. २०
तोयेन जीवान् व्यससर्ज भूम्नाम् तौ चेन्मे वक्ष्यति न वै जातु युष्माक- मिमं कश्चिद्ब्रह्मोद्यं जेत्येति	महाना. १।४
तौ मिथुनं समेतां ततः प्राणोऽजायत तौ यत्र विहीयेते चन्द्रमा	बृह. ३।८।१
इवादित्यो दृश्यते	बृह. १।५।१२
तौ वा एतौ द्वौ संवर्गौ, वायुरेव देवेषु, प्राणः प्राणेषु	इषेत. ३।४।३
तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः	छान्दो. ४।३।४
तौ ह द्वात्रिंशत्तन्वर्षाणि ब्रह्मचर्यमूषतुः	कठो. २।२
तौ ह पुरुषं सुप्रमाजगमतुः	छान्दो. ८।७।३
तौ ह प्रजापतिरुवाच किमिच्छन्ताव- वास्तमिति	बृह. २।१।१५
तौ ह प्रजापतिरुवाच किं पश्यथेति	छान्दो. ८।७।३
तौ ह प्रजापतिरुवाच साध्वलंकृतौ ...भूत्वोदशरावेऽवेक्षायां	छान्दो. ८।८।२
तौ ह यदूचतुः कर्म हैव तदूचतुः	बृह. ३।२।१३
तौ ह शान्तहृदयो प्रवव्रजतुः	छान्दो. ८।८।३
तौ ह साध्वलंकृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ भूत्वोदशरावेऽवेक्षायाश्चक्रौ	छान्दो. ८।८।२

तौ ह सुप्तं पुरुषमीयतुस्तं हाजातशत्रु-
 रामन्त्रयाञ्चके कौ.त. ४।१८
 तौ हान्वीक्ष्य प्रजापतिरुवाच छान्दो. ८।८।४
 तौ हासंविदानावेव समित्पाणी प्रजा-
 पतिसकाशमाजगमतुः छान्दो. ८।७।२
 तौ होचतुर्यथैवेदमावां भगवः साध्व-
 लंकृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ च छान्दो. ८।८।३
 एवमेवैमौ भगवः साध्वलंकृतौ
 तौ होचतुः सर्वमेवेदमावां भगव-
 आत्मानं पश्याव आ लोभस्य
 आ नखेभ्यः प्रतिरूपमिति छान्दो. ८।८।१
 तौ होत्क्रम्य मन्त्रयाञ्चकाते बृह. ३।२।१३
 तौ होत्शरावेऽवेक्षांचकाते तौ ह
 प्रजापतिरुवाच किं पश्यथेति छान्दो. ८।८।१
 तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ भ.गी. ३।३४
 त्यक्तवर्णाश्रमाचारः सर्वदादिवानक्त-
 समत्वेनास्वप्रः (भवधृतः) तुरीया. ३
 त्यक्तवर्णाश्रमाचारो लुप्तसर्वक्रियो-
 ऽपि यः । सकृत्तिर्यक्त्रिपुंड्राङ्क-
 धारणात्सोऽपि पूज्यते बृ. जा. ५।९
 त्यक्तसक्तौ जितक्रोधो लब्धाहारो
 जितेन्द्रियः । पिपाय बुद्ध्या
 द्वाराणि मनो ध्याने निवेशयेत् ना.प्र. ६।७
 त्यक्तसर्वपरिग्रहः भ.गी. ४।२१
 त्यक्ताविद्यो महायोगी कथं तेषु
 निमज्जति अ.पू. ४।४
 त्यक्ताहङ्कारो ब्रह्माहमस्मीति
 चिन्तयेन्निदं सर्वं यदग्रमात्मेति मं.ब्रा. २।८
 त्यक्ताहङ्कृतिराश्वस्तमतिराकाश-
 शोभनः । अगृहीतकलङ्काङ्को
 लोके विहर शुद्धधीः महो. ६।६९
 त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः भ.गी. १८।११
 त्यक्तेषणो ह्यनृणस्तं विदित्वा मौनी
 वसेदाश्रये यत्रकुत्र शाठ्या. ६
 त्यक्त्वा कर्मफलाखर्जं भ.गी. ४।२०
 त्यक्त्वा कामान्छन्त्यस्यति...भौगां-
 स्यजति सुखिताय २सत्यासो. ८
 त्यक्त्वा वेदं पुनर्जन्म भ.गी. ४।९

त्यक्त्वा लोकांश्च वेदांश्च विषया-
 निन्द्रियाणि च । आत्मन्येव
 स्थितो यस्तु स याति परमां गतिम् ना.प. ४।१
 त्यक्त्वा विष्णोर्लिङ्गमन्तर्बहिर्वा
 यः स्वाश्रयं सेवतेऽनाश्रमं वा ।
 प्रत्यापत्तिं भजते.. शाठ्या. १७
 त्यक्त्वा वृक्षं वृक्षमूलं श्रितासः
 सकृद्यस्तपुष्पारसमेवाभुवानाः शाठ्या. ११
 त्यक्त्वासङ्गाञ्छनैः शनैः । सर्वद्वन्द्वै-
 विनिर्मुक्तो ब्रह्मण्येवावतिष्ठते ना.प. ३।५२
 त्यक्त्वा सद्गुदास्थां त्वं तिष्ठाक्षुब्ध-
 महाब्धिवत् महो. ६।५३
 त्यक्त्वा सर्वमिदं कलेवरगतं सत्त्वा
 मनोविभ्रमं देहातीतमवाच्य-
 सेकमपरं तत्त्वं परं सेव्यताम् अमन. २।१०७
 त्यक्त्वा सर्वानशेषतः भ.गी. ६।२४
 त्यक्त्वा सर्वाश्रमान्धीरो वसेन्मोक्षान-
 श्रमे चिरम् । मोक्षाश्रमात्परिभ्रष्टो
 न गतिस्तस्य विद्यते शाठ्या. २८
 त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप भ.गी. २।३
 त्यजत्यन्ते कलेवरं भ.गी. ८।६
 त्यज धर्ममधर्मं च धमे सत्यानृते
 त्यज । धमे सत्यानृते त्यक्त्वा
 येन त्यजति(सि) तत्त्यज १सं.सो. २।१२
 त्यजेदज्ञाननिर्मात्यं सोऽहम्भावेन
 पूजयेत् मैत्रे. २।१
 त्यजेदमेदनिर्मात्यं स्कन्दो. १०
 त्यस्य राजा मूर्धानं विपात-
 यतात्... (मा. पा.)
 त्यागस्य च हृषीकेश
 त्यागः शान्तिरपैशुनम्
 त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्
 त्यागादानपरित्यागी विज्वरो
 भव सर्वदा महो. ६।१५
 त्यागी सत्त्वसमाविष्टः
 त्यागेनैके असृतत्वमानशुः [कैव. ३+
 त्यागे भरतसुत्तम
 त्यागी दक्षिणा (शारीर्यज्ञस्य)
 त्यागो हि पुरुषन्यायः भ.गी. १८।४

त्यागो हि महता पूज्यः सद्यो
 मोक्षप्रदायकः ते.वि. १।१९
 त्याज्यं दोषवदित्येके भ.गी. १८।३
 त्रय इमे लोकाः स प्रस्तावोऽग्नि-
 र्वायुरादित्यः छान्दो.२।२१।१
 त्रयमप्यत्रापि सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रं
 त्रयमप्येतत्सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रम्
 त्रयश्च त्री च शता त्रयश्च त्री च
 सहस्रेत्योमिति बृह. ३।९।१
 त्रयस्त्रिंशत्स्वेव देवाः बृह. ३।९।२
 त्रयं त्वेव न एतत्प्रोक्तम् ३ ऐत. २।१।२
 त्रयं मिलित्वा परस्परमुवाच ब्रह्मेव
 सर्वस्येश इति ग. शो. ४।६
 त्रयं यदा विदते ब्रह्मेतत् श्वेता. १।९
 त्रयं वा इदं नामरूपं कर्म, तेषां
 नान्तां वागित्येतद्देशमुक्तम् बृह. १।६।१
 त्रयः कालास्त्रयो देवास्त्रयो लोकास्त्रयः
 स्वराः। त्रयो वेदाः स्थिता यत्र
 तत्परं ज्योतिरोमिति यो.शि. ६।५७
 त्रयः प्राजापत्याः प्रजापतौ पितरि
 ब्रह्मचर्यमूषुः बृह. ५।२।१
 त्रयाणामक्षराणां च योऽधीतेऽप्य-
 धर्मक्षरम् १यो.त. १३५
 त्रयाणामक्षरे चान्ते योऽधीतेऽप्यर्ध-
 मक्षरम्। तेन सर्वमिदं प्राप्तं लब्धं
 तत्परमं पदम्। २ योगत. ७
 त्रयी वा कामं त्रयीमयं त्रिगुणं
 त्रेतात्मकम् पारमा. ५।८
 त्रयी विद्या द्विद्वारस्त्रय इमे लोकाः
 छान्दो. २।२१।१
 त्रयोऽग्रयश्च त्रिगुणाः स्थिताः सर्वे
 त्रयाक्षरे १ यो.त. १३५
 त्रयो (यतयः) ग्रामः समाख्यातः
 ऊर्ध्वं तु जगरायते ना.प. ३।५६
 त्रयो दशगुलं त्वर्क्षं कामदंसिद्धिर्द्वपरम् रु. जा. ३८
 त्रयो धर्मकन्या यज्ञोऽभ्ययनं
 दानमिति छान्दो. २।२३।१
 त्रयो लोका एत एव वागेवायं
 लोको मनोऽन्तरिक्षलोकः
 प्राणोऽसौ लोकः बृह. १।५।४
 ३३

त्रयोलोकास्त्रयोवेदास्त्रयः संध्यास्त्रयः
 सुराः। त्रयोऽग्रयश्च त्रिगुणाः
 स्थिताः सर्वे त्रयाक्षरे १ योगत. ६
 (अथ) त्रयो वाव लोकाः, मनुष्य-
 लोकः पितृलोको देवलोक इति बृह. १।५।१६
 त्रयोविंशतिरेतानि तत्त्वानि
 प्रकृतानि तु शारीरको. १४
 त्रयो वेदा एत एव वागेवर्गेदो मनो
 यजुर्वेदः प्राणः सामवेदः बृह. १।५।५
 त्रयो हीमे लोकास्त्रयो हीमे वेदाः
 त्रायते महतो भयात् ग. पू. ३।१
 त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यु
 कठो. १।१७
 त्रिकालमेतज्जत्वा क्रतुशतफल-
 मवाप्नोति सूर्यो. ९
 त्रिकालमेतत्प्रयुञ्जानः सर्ववेदपारा-
 यणफलमवाप्नोति भस्मजा. १।७
 त्रिकूटा भवति ज्ञेया मूलप्रकृति-
 सङ्गता। प्रकृतिः प्रणवत्वाच्च.. श्रीवि.ता. १।६
 त्रिकोणमण्डलं वह्नीरुद्रस्तस्याधिदेवता यो.शि. ५।१४
 त्रिकोणशक्तिरकारेण महाभागेन
 प्रसृते.. त्रि. ता. १।६
 त्रिकोणं प्रथमं भवति, द्वितीयं
 षट्कोणं... ना.पू.ता. ६।१
 त्रिगुणं जुषाणः सकलं विधत्ते पारमा. १।७
 त्रिगुणीकृतप्रेषोच्चारणं कृत्वा...तत्त्व-
 मस्यादिवाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं
 कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् प. इं.प. ५
 त्रिचतुस्त्रिचतुस्सप्तत्रिचतुर्मासपर्यन्तं ...
 आचरेन्नाडीशुद्धिर्भवति शांदि. १।५।२
 त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा य एवं
 विद्वाश्चिनुते नाचिकेतम्।... कठो. १।१८
 शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके कठो. १।१८
 त्रिणाचिकादियोगान्ता ईश्वरान्ति-
 माश्रिताः [महो.४।७४+ वराहो. २।५५
 त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्निव त्रिकर्म-
 कृत्तरति जन्ममृत्यु कठो. १।१७
 त्रिते वेदादिविज्ञाता यदाप इमं वे
 वरुण.. सहवे. ४

त्रिदण्ड-कमण्डलु-शिक्य... यज्ञोप-

वीतानां त्यागिनः (परमहंसाः) आश्रमो. ४

त्रिदण्डमवलम्बन्ते यतयोः, तेषामपि

च कर्तव्यं सत्कृत्यमितरेषु किम् भवसं. १३६

त्रिदण्डमुपवीतं च वासः कौपीन-

वेष्टनम् । शिक्यं पवित्रमित्ये-

वद्विभूयाद्यावदायुषम् शाठ्याय. ७

त्रिदण्डं कमण्डलुं मुक्तपात्रं...

परित्यज्यात्मानमन्विच्छेत् याज्ञव. २

त्रिदण्डं वैष्णवं लिङ्गं विप्राणां मुक्ति-

साधनम् । निर्वाणसर्वधर्माणामिति

वेदानुशासनम् शाठ्याय. १०

त्रिदण्डं शिक्यं पात्रं कमण्डलुं..

तत्सर्वं भूः स्वाहेत्यप्सु परित्यज्य..

जातरूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत् ना. प. ३।८७

त्रिदिनं बलनस्थिर्यैछादनं पुलकैः स्मृतम् वृ. जा. ३।२१

त्रिधा त्रिधा वा विदधे समस्तम् पारमा. १।७

त्रिधा त्रिरूपं सकलं धराय स्वाहा पारमा. १।७

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति शौनको. ४।६

[+क्र. अ. ३।८।१०=मं. ४।५।८३+ वा. सं. १७।९१

त्रिधामसाक्षिणं सत्यज्ञानानन्दादि-

लक्षणम् । त्वमहंशब्दलक्ष्यार्थ-

मसक्तं सर्वदोषतः वराहो. २।१७

त्रिधाहितं पाणिभिर्गृह्यमानं गवि

देवासा घृतमन्वविन्दन् महाना. ८।११

[+क्र. अ. ३।८।१०=मं. ४।५।८४ वा. सं. १७।९२

[+तै. आ. ३।१०।३

त्रिधैव गुणमेदतः भ. गी. १८।१९

त्रिनाभिचक्रमजरमनर्वम् चित्यु. ११।९

[+क्र. अ. २।३।१४=मं. १।१६४।२ अथर्व. ९।९।२+

[तै. आ. ३।११।९

त्रिनेत्रं त्रिगुणाधारं... स्मरभ्रमः

शिवायेति ललाटे त्रिपुण्ड्रकम् वृ. जा. ४।३०

त्रिपदा गायत्री, गायत्रिया एवात्मानं

पुनरीते सङ्खे. १२

त्रिपावरति चोत्तरे (ब्रह्म) मैत्रा. ७।११

त्रिपादस्यावृतं दिवि [आं. व. ३।१२।६+ त्रि. म. ना. ४।५२

[+ चित्यु. ११।२+ ना. सं. ३१।३

[+क्र. अ. ८।४।१५= मं. १०।९०।३

त्रिपादित्यनया प्रोक्तमनिरुद्धस्य

वैभवम् मुद्रलो. १।४

त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः [क्र. अ. ८।४।१७ =मं. १०।९०।४

[+वा. सं. ३१।४+त्रि. म. ना. ४।४+ चित्यु. १२।२

त्रिपाद्भस्मप्रहरणस्त्रिशिरा रक्त-

लोचनः । स मे प्रीतः सुखं दद्यात्. वनदु. २४

त्रिपाङ्गारायणाकारं तद्रक्षैवास्मिकेवलं तारसा. शीर्षकं

(एवं) त्रिपुण्यां निरस्तायां निस्तरङ्ग-

समुद्रवत्... अचलसम्पूर्णभावा-

भावविहीनकैवल्यज्योतिर्भवति मं. ब्रा. २।६

त्रिपुण्ड्रधारणस्य त्रिधा रेखा आ-

ललाटादाचक्षुषोराश्रुवोर्मध्यतश्च जावाल्यु. ८

(एवं) त्रिपुण्ड्रविधिं भस्मना करोति

यो विद्वान् ब्रह्मचारी यतिर्वा स

महापातकोपपातकेभ्यः पूतो

भवति का. ब्रह्मो. ५

त्रिपुण्ड्रं कारयेत्पञ्चाद्रहविष्णु-

शिवात्मकम् । मध्याङ्गुलिभि-

रादाय तिसृभिर्मूलमन्त्रतः वृ. जा. ४।११

त्रिपुण्ड्रं धार्य भर्त्सनात्पातकौघगिरेर्भस्म सि. शि. १३

त्रिपुण्ड्रं ये विनन्दन्ति निन्दन्ति शिव-

मेव ते । धारयन्ति च ये भक्त्या

धारयन्ति शिवं च ते वृ. जा. ५।१६

त्रिपुरवधार्थमहं निमीलिताक्षोऽभवम् क. जा. १

त्रिपुरातपनं देवीत्रिपुरा कण्ठभावना मुक्तिको. १।३७

त्रिपुराभिधा भगवतीत्येवमादिशक्त्या

...त्रिकूटावसाने निलये विलये

धाम्नि सहसा घोरेण प्राप्नोति त्रि. ता. १।१

त्रिभिरेतैश्चिराद्भ्यस्तैः (त्रिभिरेभिः

समभ्यस्तैः) हृदयग्रन्थयो दृढाः ।

निःशङ्कमेव (निःशेषमेव) त्रुट्यन्ति

त्रिसच्छेदाद्गुणाद्व [अ. पृ. ४।८४+ मुक्तिको. २।१३

त्रिभिर्गुणमयैर्भविः भ. गी. ७।१३

त्रिभिर्नगरं चतुर्भिर्ग्राममित्येकश्चरेत् ना. प. ७।२

त्रिभिः सोमः पातव्यः, समाप्तमिव

भवति २ प्रणवो. १९

त्रिमुखं चैव रुद्राक्षमभिप्रयस्वरूप-

कम् । तद्धारणाच्च हुतमुक्तस्य

तुल्यति सर्वदा क. जा. ३।६

त्रिमूर्तिरूपं शिवरूपमस्मि १ बिल्वो. १३
 त्रिमूर्त्यात्मा त्रिवेदात्मा सर्व-
 देवमयो रविः सूर्यताः १।६
 त्रियक्षं (त्र्यक्षं) वरदं रुद्रं... सुप्रसन्न-
 मनुस्मरन् । धारयेत्पञ्च घटिका
 वह्निनाऽसौ न दाह्यते १ यो. त. ९२
 त्रियम्बकं (त्र्यम्बकं) यजामहे [वनदु. १०+ लिङ्गोप. १
 त्रियायुषमिति शिरोललाटवक्षःस्थलेषु का. रु. ३
 त्रियायुषाणि कुरुते ललाटे च भुज-
 द्वये । नामौ शिरसि हृत्पार्श्वे
 ब्राह्मणाः क्षत्रियास्तथा बृ. जा. ५।२
 त्रियायुषैर्यम्बकैस्त्रिंशक्तिभिस्त्रि-
 क्तिसो रेखाः प्रकुर्वीत, व्रत-
 मेतच्छाम्भवम् का. रु. ३
 त्रिरस्य मूर्धानमभि दिङ्कुर्यात् कौ. त. २।११
 त्रिरात्रं वा सावित्रीमन्वातिरेचयति सहवै .२०
 त्रिरात्रान्त आपुत्य ग्रीहीनवधातयेत् बृह. ६।४।१३
 त्रिरात्रोपोषितः प्राङ्मुखो वाग्यतो
 बहिष्युपविश्य सहस्रं च आवर्तयेत् २ प्रणवो. ६
 त्रिरुपात्रं प्रसिक्त्योद्यन्तमादित्य-
 सुपतिष्ठेत् कौ. त. २।७
 त्रिरुतं स्थाप्य समं शरीरं हृदी-
 न्द्रियाणि मनसा सन्निवेश्य
 (सन्निरुद्धय) । ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत्
 विद्वान्सौतांसि सर्वाणि भया-
 बहानि [श्वेता. २।८+ म. सं. ३।२५
 त्रिरनामनुलोममनुमाष्टिं विष्णुर्योनिं
 ... (इति मंत्रेण) बृह. ६।४।२१
 त्रिदेवः पृथिवीमिव एताम् ना. प. ता. ४।५
 [+रु. ऋ. ५।६।२५= सं. ७।१००।३
 [+तै. ब्रा. २।४।३।५
 त्रिलोचनं निष्कलमद्वितीयम् १ बिल्वो. ११
 त्रिवक्त्रं त्रिगुणं स्थानं त्रिधातुं रूप-
 जितम् ।... शाश्वतं ध्रुवमच्युतम् । तै. बि. १।६
 त्रिविधसाकारोऽपि पुनर्द्विविधो भवति त्रि म. ना. २।१
 त्रिविधं कर्मणः फलम् म. गी. १८।१२
 त्रिविधं नरकस्येदं म. गी. १६।२१
 त्रिविधः कर्मसमूहः म. गी. १८।१८

त्रिविधः पुरुषः... बाह्यात्माऽन्तरात्मा
 परमात्मा चेति २ आत्मो. ४
 त्रिविधः पुरुषोऽजायतात्माऽन्त-
 रात्मा परमात्मा चेति १ आत्मो. १
 त्रिविधः सम्प्रकीर्तितः म. गी. १८।४
 त्रिविधा कर्मचोदना म. गी. १८।१८
 त्रिविधा भवति ब्रह्मा म. गी. १७।२
 त्रिविधो ब्रह्मप्रणवः ...
 त्रिविधो भवति प्रियः म. गी. १७।७
 त्रिविष्टपं त्रिमुखं विश्वमातुर्नवरेखाः
 स्वरमध्यं तदीले त्रि. महो. १०
 त्रिविष्टपास्त्रिगुणास्त्रिप्रकाशाः त्रि. महो. ५
 त्रिवृषिवृदेकैका भवति तन्मे
 विजानीहीति छान्दो. ६।४।७
 त्रिवृत्सूत्रं च तद्विदुः ब्रह्मो. ४
 त्रिवृदात्मनि ब्रह्मण्यभिध्यायमाने
 सच्चिदानन्दः परमात्माऽऽविर्भवति महावा. २
 त्रिवेदमयं त्रिमूर्तिं त्रिगुणं चतुष्पदं...
 सप्ताश्वं (ध्यायेत्) सूर्यता. १।८
 त्रिशङ्खवज्रमोक्षारमूर्ध्वनालं
 भुवोर्युखम् ब्र. बि. ७४
 त्रिशतं त्वधमं पञ्चशतं मध्यममुच्यते ।
 सहस्रमुत्तमं प्रोक्तं (रुद्राक्षाणां) रु. जा. २०
 त्रिशरीरं तमात्मानं परं ब्रह्म
 विनिश्चिनु ना. प. ८।८
 त्रिशालैर्विल्वदलैर्दार्पैर्वा योऽभि-
 सम्पूजयेन्मन्मनाः... सम्पूजयेत् ।
 तद्वहमस्मामि । तं मोक्षयामि
 संस्तुतिपाशात् मस्मजा. २।१०
 त्रिशिखी ब्राह्मण आदित्यलोकं जगाम त्रि. ब्रा. १।१
 त्रिशिर्षाणं त्वाष्ट्रमहनमवाङ्मुखा-
 न्यतीनसालावृकेभ्यः प्रायच्छम् कौ. त. ३।१
 त्रिशूलगां काशीमभिहित्य त्यक्ता-
 सबोऽपि मध्येव संविशन्ति मस्मजा. २।७
 त्रिषवणस्नानं कुटीचक्रस्य बहुदकस्य
 द्विवारं हंसस्यैकवारं परमहंसस्य
 मानसस्नानं गी. गी. १८।१८
 त्रिषवणस्नानम् ना. प. ७।४

त्रिषु धामसुयत्तुल्यं सामान्यं वेत्ति निश्चितः । स पूज्यः सर्वभूतानां वन्द्यश्चैव महामुनिः	आगम. २२	त्रीणि ज्योतीषि सचते सषोडशीं तस्मादुच्यते महाविष्णुमिति	च. पू. २१६
त्रिषु धामसुयत्तुल्यं स भुञ्जानो न लिप्यते	आगम. ५	त्रीणि धामानि कालः	द. मू. १६
त्रिषु धामसु यद्भोज्यं भोक्ता यश्च प्रकीर्तितः । वेदैस्तदुभयं यस्तु स भुञ्जानो न लिप्यते	आगम. ५	त्रीणि पदा निहिता गुहासु यस्तद्वेद स पितुः पितासत् [महाना. २।४; तै.आ.१०।१।४]	तै.आ.१०।१।४
त्रिषु धामसु यद्भोग्यं भोक्ता भोगश्च यद्भवेत् । तेभ्यो विलक्षणः साक्षी चिन्मात्रोऽहं सदाशिवः	कैव. १८	त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः	इतिहा. ५७
त्रिषु लोकेषु किञ्चन	म. गी. ३।२२	त्रीणि षष्टिशतान्यक्षराणां, त्रीणिषष्टि- शतान्यूपमणां, त्रीणि षष्टिशतानि सन्धीनाम्	३ ऐत. २।२।१
त्रिषुवर्णेषु भिक्षाचर्यं चरेत् (सन्न्यासी)	१ सं.सो. १।२	त्रीणि स्थानानि भवन्ति (अग्नेः) मुखे आहवनीयः, उदरे गार्हपत्यः, हृदि दक्षिणाम्निः	गर्भो. ११
त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप् चाहं छन्दोऽहम् त्रिष्वेकपाचरेद्ब्रह्म	अ.शिरः. १।१ मैत्रा. ७।११	त्रीण्यक्षराणि सतीयमिति तद्यत्स- त्तदभृतमथ यन्ति तन्मर्त्यमथ यद्यं तेनोमे यच्छति	छांदो. ८।३।५
त्रिसन्ध्यं शक्तिः स्नानं तर्पणं मार्जनं तथा । उपस्थानं पञ्चयज्ञा- न्कुर्यादामरणान्तिकम्	शाठ्या. १२	त्रीण्यात्मने कुरुत पशुभ्य एकं प्रायच्छत्तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम्	बृह. १।५।१
त्रिष्वध्यादौ स्नानमाचरेत्	आरुणि. २	त्रीण्यात्मनेऽकुरुतेति मनो वाचं प्राणं तान्यात्मनेऽकुरुता-	वृह. १।५।३
त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात् [महाना. १२।१, २, ३+]	त्रिषु. १, २, ३	त्रीण्याहुरतिदानानि गावः पृथ्वी सरस्वती	संहितो. ४।३
त्रिसुपर्णश्रुतिर्द्वेषा निष्कृतौ त्रिदले रता	२ बिल्बो. २५	त्रीन्गुणानतिवर्तते	म.गी. १।४।२१
त्रिसुपर्णं त्रिऋचां रूपं त्रिसुपर्णं त्रयीमयम्	२ बिल्बो. २०	त्रीन्वेदाननुब्रवीत् सर्वमायुरिरयादिति	बृह. ६।४।१६
त्रिसुपर्णोपनिषदः पठनात्पंक्तिपावनः	२ बिल्बो. २४	त्रेताग्न्यनुसन्धानो यागः त्रेताग्न्यात्माकृतिवर्णोऽङ्गारहंसा- नुसन्धानोऽन्तर्यागश्चित्स्वरूप- त्तन्मयं तुरीयस्वरूपम्	पा.प्र. ३
त्रिस्थानं च त्रिमात्रं च त्रिब्रह्म च त्रयाक्षरम् । त्रिमात्रमर्धमात्रं वा यस्तं वेद स वेदवित्	ध्या. वि. ३६	त्रेधा विहितं वा इदमन्नमशनं पानं खादस्त्वदेतैराप्नोति	१ ऐत. ३।४।३
त्रिसप्त समिधः कृताः [अ.अ. ८।४।१९=मं. १०।९०।१५+]	चिर्यु. १२।३ वा.सं. ३१।१५	त्रैगुण्यविषया वेदाः त्रैधातवीयामेव (इष्टि) कुर्यात् [+ना.प. ३।७७+ प.हं.प. २]	म.गी. २।४५ याज्ञव. १
त्रिशल्पर्णीगुलः प्राणो यत्र प्राणैः प्रतिष्ठितः । एष प्राण इति ख्यातो बाह्यप्राणस्य गोचरः	अ. ना. ३३	त्रैवर्णिकानां सर्वेषामग्निदोत्र- समुद्भवम् (अस्म)	बृ.जा. ५।३
त्रिशल्पर्णास्त्रिशदपरास्त्रिशच्च परतः परान् । उत्तारयति धर्मिष्ठः परिब्राडिति वै श्रुतिः	शाठ्याय. ३१	त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापाः त्रैष्टुभं छन्दोऽन्तरिक्षं स्थानम् (यजुषां)	म.गी. १।२० २ प्रणवो. ३१
त्रीणि चात्र प्रशंसन्ति शौच- मक्रोधमत्सरी	इतिहा. ५७		

त्रैलोक्यं माव्यन्दिनं सवनम् छांदो. ३।१६।३
 त्र्यक्षरं त्रिशिरस्कं त्रिपादं खण्डपरशुं सुबालो. १।३
 (मृत्युमसृजत्) शिवो. ७।११५
 त्र्यक्षरं ब्रह्म शाश्वतम् अद्वै.भा. २
 त्र्यक्षरोऽहं पञ्चाशन्मातृका अहं भस्मजा. १।५
 त्र्यम्बकमिति ललाटे, नीलग्रीवायेति
 कण्ठे...यथाक्रमं भस्म धृत्वा...
 तद्ब्रह्मापः पुनन्त्विति पिबेत् भस्मजा. १।४
 त्र्यम्बकमिति सम्प्रोक्ष्य शुद्धं शुद्धेनेति
 सम्मृज्य संशोष्य तेनैवापादशीर्ष-
 सुद्धूलनमाचरेत् भस्मजा. १।४
 त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् ।
 सर्वारकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय-
 मास्तृतात् [महाना. १३।१८+ त्रि.ता. १।३+
 [क्र. अ. ५।४।३० =मं. ७।५९।१२
 [+वा. सं. ३६०+ तै.सं. १।८।६।२
 त्र्यायुषमिति शिरोललाटवक्षस्कधे-
 ष्विति तिसृमिर्यायुषैस्त्रियम्ब-
 कैस्त्रिस्रो रेखाः प्रकुर्वीत जाबाल्यो. ६
 त्र्यहं वसति तीर्थेषु त्र्यहं वसति
 चाग्निषु । त्र्यहमाकाशगो भूत्वा
 दिनमेकं तु वायुगः पिण्डो. ३
 त्वक्च रक्तं मांसमेदोमज्जास्थीनि
 (षट्कोशाः) वराहो. १।१०
 त्वक्चर्ममांसरुधिरमेदोमज्जास्नायवो-
 ऽस्थीनि मे शुष्यंतां, ज्योतिरहं
 विरजा विपाप्मा मूयासम् महाना. १४।९
 त्वक्चर्ममांसरोमाङ्गुल्यङ्गुष्ठ-
 पृष्ठवंशनखगुल्फोदरनाभिकटयुद्ध-
 कपोलभ्रौत्रभूललाट... अक्षीणि
 भवन्ति, जायते म्रियते इत्येष
 वाशास्मा नाम १ आत्मो. १
 त्वक्चस्पर्शयितव्यं च वाक्चवक्तव्यं च.. प्रभो. ४।८
 त्वक् च स्पर्शयितव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
 त्वक् चैव परिदह्यते म. गी. १।२९
 त्वक्च्योत्रनेत्रजिह्वाघ्राणपञ्चस्वरूप-
 मिति लिङ्गम् लिङ्गोप. १

त्वगाध्यात्मं, स्पर्शयितव्यमधिभूतं
 वायुस्तत्राधिदैवतं नाडी तेषां
 निबन्धनम् सुबालो. ५।५
 त्वगादिसप्तधातुभिरनेकैः संयुक्ताः
 सकल्पाः कल्पतरवः भावनो. २
 त्वग्वैग्रहः, स स्पर्शेनातिग्राहेण गृहीतः बृह. ३।२।९
 त्वङ्गिरभिद्यत, त्वचो लोमानि.. २ ऐत. १।४
 त्वङ्गांसरक्तवाष्पान्बु पृथक्कृत्वा
 विलोचने । समालोक्य...
 परिमुह्यसि [महो. ३।४०+ याज्ञव. ९
 त्वङ्गांसरुधिरस्नायुमज्जामेदोस्थि-
 संहती । विष्णुमूत्रपूये रमतां
 किमीणां कियदन्तरम् ना. प. ४।२६
 त्वङ्गांसशोणितास्थिस्नायुमज्जाः षट्कोशाः मुद्रलो. ४।२
 त्वच एवास्य रुधिरं प्रस्यन्दि त्वच
 उत्पटः । तस्मात्तदा तृष्णास्त्रौति
 रसो वृक्षादिवाहतात् बृह. ३।१।२९
 त्वचमेवाप्येति यस्त्वचमेवास्त्वमेति.. सुबालो. ९।५
 त्वचः स्पर्शग्रहणम् ना. प. ६।२
 त्वचा यद्यत्स्पृशेद्योगी तत्तदास्त्वमेति.. १ यो. व. ७।१
 त्वचा हि स्पर्शान् वेदयते बृह. ३।२।९
 त्वचि तृप्यन्त्यां वायुस्तृप्यति छांदो. ५।२३।२
 त्वच्छायायां वसेलक्ष्मीस्त्वन्मूले
 विष्णुरव्ययः तुलस्यु. ८
 त्वत्तः कमलपत्राक्ष म. गी. ११।२
 त्वत्ता मत्ता च चिन्मयम् तै. वि. २।३६
 त्वत्ताऽऽन्ताऽऽत्मता यत्र परता
 नास्ति काचन । न कचिन्ना-
 वकलना न भावाभावगोचरा महो. ५।४४
 त्वत्तः परतरं किञ्चिज्ज्ञेवास्ति
 जगतः प्रभो ग.शो. ३।७
 त्वत्तो वा ब्रह्मणी वाऽपि ये लभन्ते
 षडक्षरम् । जीवन्तो मन्त्रसिद्धाः
 स्युर्मुक्ता मां प्राप्नुवन्ति ते रामो. ३।७
 त्वत्तो विश्रममाप्नोमि चेतसा
 भ्रमता जगत् महो. २।३५
 त्वत्प्रसादाद्भवति प्रज्ञानं मे पुनं
 भवेत् लक्ष्म्यु. ३

त्वत्प्रसादान्महान्तो गच्छन्ति

वैष्णवं लोकमपुनर्भवाय

लक्ष्यु. ६

त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत

भ.गी. १८।७३

त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीतः

कठो. १।१०

त्वदन्यः संशयस्यास्य

भ.गी. ६।३९

त्वदभिन्नं मां परिपालय कृपालय

त्रि.म.ना. ८।७

त्वदपतिरिक्तं यत्किञ्चित्प्रतीयते

त्रि.म.ना. १।१

तत्सर्वं बाधितमिति निश्चितम्

त्रि.म.ना. १।१

त्वमभिर्वरुणो वायुस्त्वमिन्द्रस्त्वं

मैत्रा. ५।१

निशाकरः

चित्र्यु. १४।२

त्वमग्निः हव्यवाहः समित्से

भ.गी. २।१६

त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः

भ.गी. ११।१८

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं

भ.गी. ११।३७

त्वमक्षरं सदसत्परं यत्

भ.गी. ११।३७

त्वमग्ने शुभित्स्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमद्रव्य-

स्त्वममनस्परि। त्वं वनेभ्यस्त्वमोष-

धीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः महाना. १६।१०

[क्र. अ. २।५।१७ = भ. २।१।१

त्वमग्ने त्रिगुणोवरिष्ठः ब्रह्मपरं... स्वाहा पारमा. २।३

त्वमन्तरिक्षे चरसि सूर्यस्त्वं

ज्योतिषां पतिः

प्रश्नो. २।९

त्वमवस्थात्रयातीतः

गणप. ६

त्वमन्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता

भ.गी. ११।१८

त्वमस्माकं गतिरन्या न विद्यते

मैत्रा. ४।१

त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्

भ.गी. ११।४३

त्वमस्य विश्वस्य परं निधानं [भ.गी. ११।१८ + ११।३८

त्वमाहं शब्दलक्ष्यार्थमसक्तं सर्वदोषतः वराहो. २।१७

त्वमात्माऽसि, यस्त्वमसि सोऽहमस्मि कौ. त. १।६

त्वमाविदेवः पुरुषः पुराणः

भ.गी. ११।३८

त्वमादौ प्रोक्तवानिति

भ.गी. ४।४

त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः

गणप. ४

त्वमिति तदिति कार्ये कारणे सत्यु-

पादौ द्वितयमितरथेकं सच्चिदा-

नन्दस्वरूपम्

शुकर. ३।११

त्वमित्यपि भवेच्चाहं त्वं नो चेदहमेव

न। इदं यदि तदेवास्ति तदभावा-

दिदं न च

ते. वि. ५।२५

त्वमित्येतत्तादित्येतन्मत्तोऽन्यन्नास्ति

किञ्चन। चिच्चैतन्यस्वरूपोऽह-

महमेव परः शिवः

ते. वि. ३।३३

त्वमिन्द्रस्त्वं निशाकरः

मैत्रा. ५।१

त्वमेकोऽसि बहून्नुप्रविष्टः

चित्र्यु. १४।३

त्वमेव केवलं कर्ताऽसि

गणप. १

त्वमेव केवलं धर्ताऽसि

गणप. १

त्वमेव केवलं हर्ताऽसि

गणप. १

त्वमेव जगतां धात्री त्वमेव विष्णुवल्लभा

तुलस्यु. ७

त्वमेव तुरीयतुरीयस्त्वमेव तुरीयातीतः

त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव धाता वरुणश्च राजा त्वं

वत्सरोऽग्ययम एव सर्वम्

एकाक्षरो. ११

त्वमेव निरतिशयानन्दः

त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव परमं पदम्

अ. पू. ५।५४

त्वमेव परमात्मासि, त्वमेव परमो गुरुः

ते. वि. ५।५८

त्वमेव परिपूर्णानन्दः

त्रि.म. ना. १।१

त्वमेव प्रत्यक्षमथर्वाऽसि

सूर्यो. ३

त्वमेव प्रत्यक्षमृगासि

सूर्यो. ३

त्वमेव प्रत्यक्षं कर्म कर्ताऽसि

सूर्यो. ३

त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि

गणप. १

त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि

सूर्यो. ३

[तैत्ति. १।१।१ + १२।१ + १३।१

त्वमेव प्रत्यक्षं यजुरसि

सूर्यो. ३

त्वमेव प्रत्यक्षं रुद्रोऽसि

सूर्यो. ३

त्वमेव प्रत्यक्षं विष्णुरसि

सूर्यो. ३

त्वमेव प्रत्यक्षं सामासि

सूर्यो. ३

त्वमेव प्रत्यक्षं सैवासि

कौलो. शां. पा.

त्वमेव ब्रह्मेशानपुरन्दरपुरोगमैरखिला-

मरैरखिलागमैर्विमृग्यः

त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव मोक्षस्त्वमेव मोक्षदस्त्व-

मेवाखिलमोक्षसाधनम्

त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव वक्ता

त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव वरं वृणीष्व (हे इन्द्र)

कौ. त. ३।१

त्वमेव विद्यातीतः (महाविष्णुः)

त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव विद्यावेद्यः... विद्यास्वरूपः

त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव विद्यास्वरूपः... विद्यातीतः

त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव सदा सदात्मकः (महाविष्णुः)

त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव सदा सदात्मकः

त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव सर्वकारणव्यष्टिः (महाविष्णुः)	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वकारणसमष्टिः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वकारणहेतुः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वज्ञः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वनियन्ता	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वनिवर्तकः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वपालकः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वप्रवर्तकः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वसुसुप्तभिर्विमृग्यः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वमूलाविद्यानिवर्तकः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वशक्तिः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वस्वरूपः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि	गणप. १
त्वमेव सर्वं छन्दोऽसि	सूर्यो. ३
त्वमेव सर्वं त्वमेव सदा ध्येयः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वं त्वमेव सर्वं त्वमेव सर्वम्	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वाधारः (महाविष्णुः)	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सर्वेश्वरः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेव सुरसंसेव्या त्वमेव मोक्षदायिनी	तुलस्यु. ८
त्वमेवाखण्डानन्दः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवाखिलमोक्षसाधनम्	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवाखिलशास्त्रैर्विमृग्यः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवातिमहती महीयान्	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवातिसूक्ष्मतरः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवानन्तोपनिषद्विमृग्यः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवान्तर्वह्निर्व्यापकः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवाधृतमयस्त्वमेवामृतमयस्त्वमेवामृतमयः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवामृतमयैर्विमृग्यः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवाविद्याधारकः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवाविद्याविहारः	त्रि.म.ना. १११
त्वमेवाहमहमेव त्वमिति तारकयोग-	
मागेणाखण्डानन्दपूर्णः कृत्वाः	मं. ब्रा. ३१२
त्वमेवाहम्, अहमेव त्वम्	त्रि.म.ना. ६१०
त्वमेवाहं न भेदोऽस्ति पूर्णत्वात्	
परमात्मनः । इत्युपरान्तसमालिङ्ग्य	
दिष्यं ज्ञप्तिमनीलयत्	मं. ब्रा. ३१३

त्वमैश्वर्यं दापयाथ सम्प्रत्याश्वरि-	
मारणम् । कुर्विति स्तुत्य देवाद्या-	
स्तेन सार्धं सुखं स्थिताः	रा. पू. ४११६
त्वम्पदार्थादौपाधिकात्तत्पदार्थादौ-	
पाधिक-भेदाविलक्षणमाकाश-	
वत्सूक्ष्मं केवलसत्तामात्रस्वभावं	
परं ब्रह्मेत्युच्यते	सर्वसारो. ६
त्वया जुष्ट ऋषिर्भवति देवि त्वया	
ब्रह्मगतश्रीरुत त्वया	महाना. १३१२
त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसु	महाना. १३१२
त्वया जुष्टा नुदमाना (जुषमाणा)	
दुरुक्तान् बृहद्भेदेन विदधे	
सुवीराः [महाना. १३११+	तै. ब्रा. १०।४११२
त्वया तत् विश्वमनन्तरूप	भ. गी. ११।३८
त्वया मन्यो सरथमारुजन्तो..	वनदु. १०७
[ऋ. ब्र. ८।३११९=	मं. १०।८४।१
त्वयाऽऽवृत्तं जगदुद्भवगर्भः	एकाक्षरो. १२
त्वया व्याप्तं जगत्सर्वं	गणेशो. ३।९
त्वयैकाग्रेण चेतसा	भ. गी. १८।७२
त्वरितं चक्षुरोगाच्छमय शमय	चाक्षुषो. २
त्वष्टाऽमीत्, मित्र उपवक्ता	चिन्त्यु. ३।१
त्वष्टानो अत्र विदधातु रायोनुमाष्टुं	
तन्वो २ यद्विलिष्टम् [सहवै. ५+	तै. ब्रा. २।४।१
त्वहमस्मीति तमतिसृजते	कौ. च. १।२
त्वं कालत्रयासीतः (गणेशः)	गणप. ६
त्वं गुणत्रयासीतः	गणप. २६
त्वं चत्वारि वाक्पदानि	गणप. ५
त्वं च मृत्यो यज्ञ सुज्ञेयमात्थ	कठो. १।२२
त्वं चाहं च न वै भिन्नो कुरु	
सृष्टिं प्रजापते	ग. शो. ३।१०
त्वं निर्माता क्षमाभृतां सरितां	
सागराणां... च	गणेशो. ३।७
त्वं चाहं च सर्वं विश्वं सर्वदेवता	बह्वचो. ३
त्वं जातवेदो युवनस्य नाथः	एकाक्षरो. २
त्वं जीर्णो दण्डेन बभ्रसि त्वं जातो	
भवसि विश्वतोमुखः	श्वेताश्व. ४।३
त्वं जीवस्त्वमापः सर्वेषां जनिता	
...त्वाहा	पारमा. २।४

त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि गणप. ४
 त्वं तदसि त्वं ब्रह्मास्यहं ब्रह्मास्मी-
 त्यनुसन्धानं कुर्यात् पैङ्गलो. ३।१
 त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं महाना. १६।१
 ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम् गणप. ६
 त्वं देहत्रयातीतः म. वा. र. १६
 त्वं नाहं न चान्यं वा सर्वं ब्रह्मैव गणप. ४
 त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि पारमा. २।७
 त्वं बुद्धिर्भूतानामन्तरात्मा
 त्वं बुद्ध्या विचिन्वमानः पारमा. २।७
 पुण्यरूपाय स्वाहा पारमा. २।७
 त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् गणप. ६
 त्वं ब्रह्मा त्वं कर्ता त्वं प्रधानम् गणेशो. ३।१३
 (पुत्रं दृष्ट्वा) त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं
 लोकस्त्वं वषट्कारस्त्वमोङ्कारस्त्वं
 स्वाहा त्वं स्वधा... कठश्रु. १४
 त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रः... गणप. ६
 त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं हरस्त्वं
 प्रजापतिस्त्वमिन्द्रः... गणेश्वरः गणेशो. ३।९
 त्वं ब्रह्मासि अहं ब्रह्मास्मि (आवयो-
 रन्तरं न विद्यते त्वमेवाहमह-
 मेव त्वम्) [त्रि.म.ना. ६।१०+ पैङ्गलो. ३।१
 त्वं अर्ता मातरिश्वा प्रजानाम् चित्त्यु. १४।२
 त्वं भूतानामधिपतिरसि सहवै. २३
 त्वं भूतानां श्रेष्ठोऽसि सहवै. २३
 त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः गणप. ५
 त्वं भूर्भुवः स्वस्त्वं हि स्वयम्भूरथ
 विद्यतोमुखः एकाक्षरो. १३
 त्वं मनुस्त्वं यमश्च [मैत्रा. ४।१५+ ५।२
 त्वं मासुद्धर कल्याणि महापापाब्धि-
 हुत्तरात् तुलस्यु. १२
 त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् गणप. ६
 त्वं यज्ञनेत्रा हुतमुनिमुश्चरद्रास्तथा.. एकाक्षरो. ७
 त्वं यज्ञस्त्वं ब्रह्मा त्वं रुद्रस्त्वं
 विष्णुस्त्वं वषट्कारः प्रा. हो. १।७

त्वं यज्ञस्त्वं ५ वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व ५
 रुद्रस्त्व ५ विष्णुस्त्वं ब्रह्मस्त्वं
 प्रजापतिः महाना. १६।१
 त्वं लोकान् सृजसि रक्षसि हरसि ग.शो. ३।१३
 त्वं वज्रभूतपतिस्त्वमेव एकाक्षरो. ५
 त्वं वत्सरोऽन्ययम् एव सर्वम् एकाक्षरो. ११
 त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं... जायते महाना. १६।१०
 [ऋ. अ. २।५।१७=मं. २।१।१।+ वा. सं. ११।२७
 त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः गणप. ४
 त्वं वाऽहमस्मि भगवो देव तेऽहं वै
 त्वमसि वराहो. २।३४
 त्वं विश्वभूर्भूतपतिः पुराणः एकाक्षरो. १
 त्वं विश्वभूर्योनिपारः स्वर्गमे एकाक्षरो. ३
 त्वं विष्णुर्मूर्तानि तु त्रासि दैत्यान् एकाक्षरो. २
 त्वं वै कुमारी ह्यथ भूस्त्वमेव एकाक्षरो. ११
 त्वं वै विष्णो पाहि पाहि जगत्सर्वम् ग.शो. ३।१२
 त्वं शक्तित्रयात्मकः गणप. ६
 त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि गणप. ४
 त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम् गणप. १
 त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार
 उत वा कुमारी श्वेताम्ब. ४।३
 त्वं स्त्री पुमांस्त्वं च कुमार एकः एकाक्षरो. ११
 त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः वनदु. १०३
 [ऋ. अ. ८।३।१८= मं. १०।८३।४+
 [अथर्व. ४।३२।४
 त्वामपो अनु सर्वाश्चरन्ति जानतीः चित्त्यु. १४।२
 त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि तैत्ति. १।१।१
 त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम् तैत्ति. १।१३।१
 त्वां भूतान्युपपर्यावर्तन्ते सहवै. २३
 त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् गणप. ६
 त्वां सदा परिचिन्तयन् भ.गी. १०।१७
 त्वांस्विदिमे ब्राह्मणा अङ्गारावक्ष-
 गणमक्रता ३ इति बृह. ३।५।१८
 त्विषिर्मेऽजस्रं पिनष्टि, रथो मे.. इतिहा. ८५
 समुद्रान्याति ना.पू.ता. ४।५
 त्वेष ५ ह्यस्य स्थविरस्य नाम तै.वा. २।४।३।५
 [ऋ. अ. ५।६।१५=मं. ७।१००।३+

द

द इत्येकमक्षरं ददत्यस्मै स्वाध्यान्ये

च य एवं वेद

बृह. ५।३।१

दक्षनाड्या समाकृष्य बहिष्ठं पवनं

शनैः... कृमिदोषं निहन्ति च

योगकुं. १।२५

दक्षभ्यांकराभ्यामुद्वरपाशौ..दधानां

पीताम्बरो. १

दक्षिणकटाक्षादुत्पन्नाः कर्मजडा

आसुराः...भवन्ति

सामर. २

दक्षिणतो द्वारभियै गणेशाय...मायायै

सूर्यता. ४।१

दक्षिणस्यां दिशि मुक्तिस्थानं

तन्मुक्तिमण्डपसंज्ञितं (काश्याम्)

भस्मजा. २।१५

दक्षिणस्यां दिशि विष्णुः..मामुपास्ते

भस्मजा. २।१३

दक्षिणहस्तस्था आपः अपो जाला

इत्यप उत्सृजे

सन्ध्यो. १

दक्षिणहस्तः सुवः (शारीरयज्ञस्य)

प्रा. हो. ४।२

दक्षिणं बाहुमन्वावर्तते

कौ. त. २।८, ९

दक्षिणं बाहुमुद्वरतेऽवबत्ते सव्य-

मिति यज्ञोपवीतम्

सहवै. १

दक्षिणं सव्यगुल्फेन...सिंहासनं...

शाण्डि. १।३।५

दक्षिणा दिग्दक्षिणे प्राणाः

बृह. ४।२।४

दक्षिणाद्वितीया कुक्षिर्भवति

गायत्रीर. ३

दक्षिणाभिमुखे विश्वो मनस्य-

न्तस्तु तैजसः

आगम. ३

दक्षिणाभिमुखो भूत्वा महरिति

व्याहृतिरानुष्टुभं छन्दः

महो. १।४

दक्षिणामुखो भूत्वा जनदिति...

अथर्ववेदः

चतुर्वे. १

दक्षिणायां विचालनस्थानं (काश्यां)

भस्मजा. २।९

दक्षिणारे सुषुम्णायाः पिङ्गला

वर्तते क्रमात्

ब्राह्मो. ५।२४

दक्षिणा वाग्धोता प्राणं उद्राता(यज्ञस्य) महाना. १८।१

दक्षिणावृत्तपुनिक्रामति तं पिता-

तुमंत्रयते

कौ. त. २।१५

दक्षिणां च उद्भ्योऽहं, अवभ्योर्जवाहं

अ.शिर. १।१

दक्षिणेतस्पादं तु...अनुकायः

समाधीनो वीरासनमुदाहृतम्

जा. द. ३।६

दक्षिणेतुमुजेनिषोविष्ट्याहं सुदर्शनम्

सुदर्श. १।१

दक्षिणे लक्ष्मणेनाऽथ सधनु-

ष्पाणिना...कोणत्रयं भवेत्

रा. पू. ४।१०

दक्षिणे विवस्वते नैर्ऋतौ खगाय (नमः)

सूर्यता. ४।१

दक्षिणोत्तरगुल्फेन सीवनीं पीडये-

द्भृशम् ।...जितो वायुर्भवेद्भृशं

जा. द. ६।३८

दक्षिणोत्तरौ पाणी कृत्वा सपवित्रा-

वोमिति प्रतिपद्यते

सहवै. १५

दग्धकामाङ्गविभूतित्रैपुण्ड्रितानि..

ललाटपट्टे लोपयन्ति देव-

लिखितानि..

वज्रपं. ७

दग्धस्य दहनं नास्ति पक्वस्यपचनंयथा

पैङ्गलो. ४।७

दण्डकमण्डलुकटिसूत्रकौपीनाच्छादनं..

अप्सु सन्न्यस्य ..अप्सुप्रणवात्मकेन

देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः

तुरीया. ३

दण्डभिक्षां च यः कुर्यात्..याति

नीचयतिर्हि सः

ना. प. ६।१३

दण्डमाच्छादनंचैवकौपीनंचपरिग्रहेत्

आरु. १

दण्डं तु वैणवं सोम्य सत्वचं सम-

पर्वकम् ।.. नासादग्रं शिरस्तुल्यं

१ सं. सो. २।१

..विभृयाद्यतिः

दण्डात्मनोस्तु संयोगः.. न

दण्डेन विना गच्छेत्

१ सं. सो. २।११

दण्डो दमयितामस्मि

आरुधि. २

दत्तात्रेय हरे कृष्ण उन्मत्तानन्द-

दायक । दिगम्बर मुने बाल

पिशाच ज्ञानसागर

दत्तात्रे. १।४५

दत्तात्रेयं शिवं शान्तं.. आत्ममाया-

रतं देवमवधूतं.. एवं यः सततं

ध्यायेत्...स मुक्तः सर्वपापेभ्यो

निःश्रेयसमवाप्नुयात्

शाण्डि. ३।३।२

दत्तो (वायुः) निद्रादिर्मकृत

त्रि. प्रा. २।८७

दत्त्वाऽन्येभ्यस्तमानन्दं नरो वाति

परां गतिम्

गान्धर्वो. ६

ददामि बुद्धियोगं तं

अ.गी. १०।१०

ददश इव ह्येव परो रजा इति

बृह. ९।१४।३

दद्यान्नारायणेत्येवप्रतिवाक्यंसदायतिः

ना. प. ३।५९

(अथ) दधि मधु घृतं सन्नीयान्त-
 हितेन जातरूपेण प्राशयति भूस्ते
 दधामि... सर्वं त्वयि दधामीति बृ.उ. ६।४।२५
 दध्नाः सोम्य मध्यमानस्य योऽणिमा
 सः कर्ध्वः समुदीषति तत्सर्पिर्भवति छांदो. ६।६।१
 दध्यद् ह यन्मध्वाथर्वणो वामश्वस्य
 शीर्ष्णां प्रयदीमुवाच बृह. २।५।१६
 दध्योदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्त-
 मन्नीयातामीश्वरौ जनयितवै बृह. ६।४।१५
 दन्तधावनतां वूलं क्षौराभ्यङ्गन-
 भोजनम् । रत्यौषधं पराजं
 च श्राद्धकर्ता विवर्जयेत् इतिहा. ४०
 दन्तधावनतां स्मृलं नखकेशनिकृन्तनम् ।
 कर्ता चैव तु पूर्वेषु... इतिहा. ३९
 दन्तैर्दन्ताज्ज संस्पृष्टेत् योगो. २१
 दन्तौष्ठौ सूक्तवाकः (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।३
 दन्द्रम्यमाणा परियन्ति मूढाः कठो. २।५
 दंभमेवापि नूतनं वेत्थ ब्रह्मणो रूपम् केनो. २।१
 दम इति नियतं ब्रह्मचारिणस्तस्मा-
 दमे रमन्ते महाना. १६।१२
 दमिति हंसः, दामिति दीर्घं तद्वीजं दत्तात्रे. १।१
 दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति. १।९।१
 दमः प्रकृतिदान्तत्वादेवं विद्वान्छमं
 ब्रजेत् अ. शां. ८६
 दमः शमयिता (यज्ञस्य) महाना. १८।१
 दमा यान्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा तैत्ति. १।४।४
 दमेन दान्ताः किल्बिषमवधुन्वन्ति महाना. १७।३
 दमेन ब्रह्मचारिणः सुवरगच्छन् महाना. १७।३
 दमेनापिहिता गुहा इतिहा. १७
 दमे सर्वप्रतिष्ठितं तस्मादमः परमं वदन्ति महाना. १७।३
 दमो भूतानां दुरावर्ष, दमे सर्वं
 प्रतिष्ठितम् महाना. १७।३
 दम्भमानमदान्विताः अ. गी. १६।१०
 दम्भार्थमपि चैव यत् अ. गी. १७।१२
 दम्भाहङ्कारनिमुक्तः ना. प. ३।५९
 दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः अ. गी. १७।५
 दम्भाहङ्कारादिभिरसंस्पृष्टचेता
 वर्तते... (स ब्राह्मणः) अ. सू. ९
 दम्भेनाविधिपूर्वकम् अ. गी. १६।१७

दम्भो दर्पोऽति(भि)मानश्च अ. गी. १६।४
 दम्भोलिस्तम्भसारप्रहरणविवशी-
 भूतरक्षाधिनाथम्.. कपीन्द्र.. लांगूलो. २
 दयध्वमिति न आत्थ बृह. ५।२।३
 दयादमस्तपः शौचमार्जवं क्षान्तिरेव च भवसं. ५।२।१
 दया नाम सर्वभूतेषु सर्वत्रानुग्रहः शाण्डि. १।१।३
 दया भूतेष्वलोलुप्त्वं अ. गी. १६।१
 दया सा रोहिणी माता सत्यभामा
 धरेति वै कृष्णो. १।५
 दरिद्रो धनिकानां च सुखं मुक्ते
 तदा जगत् (सत्यं) ते. बि. ६।९५
 दर्भाः कोशा ओषधिवनस्पतयो
 लोमानि (गावज्याः) सन्ध्यो. २३
 दर्पः कुवलयपीडो गर्वो रक्षः.. कृष्णो. १४
 दर्श उदीच्यां प्रागुदीच्यां बोदित
 आदित्ये.. उपवीय.. यजिराचामसि
 तेन ऋचः प्रीणाति सहवे. १५
 दर्शनप्रथमाभासमात्मानं केवलं
 भज [वराहो. ४।२०+ मैत्रे. २।२९
 दर्शनस्पर्शनाभ्यां (रुद्राक्षाणां)
 द्विगुणं फलम् रु. जा. १
 दर्शनं स्पर्शनं केलिः कीर्तनं गुह्य-
 भाषणम् । सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च
 क्रियानिर्वृतिरेव च । एतन्मैथुन-
 मष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः कठक. ८९
 दर्शनाख्यं स्वमात्मानं सर्वदा भावयन्मव महो. ६।३७
 दर्शनामी रूपाणां दर्शनं करोति
 दर्शनात्पापनाशिनीं स्पर्शनात्पावनीं
 (तुलसी)... य एवं वेद स
 वैष्णवो भवति तुलस्यु. ३
 दर्शनादर्शने हित्वा स्वयं केवल-
 रूपतः । य आस्ते कपिशार्दूल
 ब्रह्म स ब्रह्मवित् स्वयम् सुक्तिको. २।६४
 दर्शयात्मानमव्ययम् अ. गी. ११।४
 दर्शयामास पार्थाय अ. गी. ११।९
 दलानि भक्त्या चिनुयादक्षको
 यथार्चकोऽन्यद्विजतो यत्नेन १ विल्वो. १३
 दवीयसितमा इव नेदीयसितमा एव आर्चो. ५।१

दश कृतसैषा विराड्ब्राह्मी
सर्वेदः सर्वमस्येदं दृष्टं भवति
दशकोटियोजनविस्तीर्णो रुद्रलोकः;
सदुपरि विष्णुलोकः
दश आन्याणि धान्यानि भवन्ति-
ग्रीहियवास्तिलमाषा अणुप्रियङ्गवौ
गोधूमाश्च मसूराश्च खलकुलाश्च
दशतुल्यं व्यतीपाते पक्ष्मपत्रे तु
विंशतिः । अन्नेन वाऽथवा येन
आहं कुर्यान्महालयम्
दश दश पादा एकैकस्याः
शृङ्गयोराबद्धा बभूवुः
दशदिशः कुक्षी (गायत्र्याः)
दशद्वारपुरं देहं विष्णुवाल्यं
प्रोक्तं सिद्धिदं सर्वदेहिनाम्
दशद्वारपुरं ... देहं शिवाल्यं
प्रोक्तं सिद्धिदं सर्वदेहिनाम् [यो. शि. १।१६६+५।१
दशपञ्च त्रिशतयत्परं सन्मेमनः...
दशभिः प्रणवैः सप्तव्याहृतिभिः
अनुष्पदा । गायत्रीजपयज्ञश्च
त्रिचन्ध्यं शिरसा सह
दशमेने तु पिण्डेन
दशमे परमं ब्रह्म भवेद्ब्रह्मात्मसन्निधौ
दशमी भेषजादः । नवमं परित्यज्य
दशममेवाभ्यसेत्
दशरात्रलयेनापि योगीन्द्रः स्वात्म-
विष्ठितः... स्थानकानि पश्यति
दशलक्षणकं धर्ममनुतिष्ठन्...
सत्यसैवदृष्टो यतिः
दशलक्षणकौ धर्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः
दशलक्षणिको धर्मः शिवाचारः
प्रकीर्तितः
दशवक्त्रं तु रुद्राक्षं यमदैवत्यमीरितम्
दशवक्त्रं भवैर्द्वौ हस्त ऊर्ध्वं रजस्वला
दशाचतुष्टयाभ्यासात्प्रोक्ता संसक्तिः
तामिका [वराहो. ४।७+
दशैन्द्रियाणि मन एकादश
तेजः द्वादशोऽहङ्कारः
दशमे पुरुषे प्राणा आत्मैकादशः

छान्दो. ४।३।८

राघोष. १।३

बृ. उ. ६।३।१३

इतिहा. ८९

बृह. ३।१।१

सन्ध्यो. २३

यो. शि. ५।२

१।१६६+५।१

२ शिवसं. ७

शठथाय. १३

पिण्डो. ८

हंसो. १०

हंसो. ७

अमन. १।६०

ना. ५.३।२३

भवसं. ५।११

शिवो. ७।१०२

रु. जा. ३५

इतिहा. ६६

महो. ५।३१

महो. १।२

बृह. ३।१।४

दहरमेवापि नूनं त्वं वेत्थ... (मा. पा.) केनो. २।१

दहरस्थः प्रत्यगात्मा नष्टे ज्ञाने ततः

परम् । विततो व्याप्य विज्ञानं

दहत्येव क्षणेन तु

दहरं पुण्डरीकं तद्वेदान्तेषु निगद्यते

दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशः

दहेत्पापान्याशु विज्ञानदात्री न संसारे

मज्जते कदाचित्

दहं विपापं परवेशमभूतं यत्पुण्डरीकं...

तदुपासितव्यम्

दंष्ट्राकरालवदनं... रुद्रं मन्युं नमाम्यहम्

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि

दंष्ट्राकरालानि भयानकानि

दाक्षायण्यां प्रसृतं समस्तं... तस्मै

प्रजेशाय धुरन्धराय स्वाहा

दातव्यमिति यद्दानं

दानक्रियाश्च विविधाः

दानमिति सर्वाणि भूतानि प्रशंसन्ति.

दानान्नातिदुश्चरम्

दानमीश्वरभावश्च

दानं दमश्च यज्ञश्च

दानं नामन्यायाजितस्य धनधान्यादेः

अद्वयाऽर्थिभ्यः प्रदानम्

दानं यज्ञानां वरुणं दक्षिणा, लोक-

दातारः सर्वभूतान्युपजीवन्ति

दानान्नास्ति दुश्चरम्, तस्माद्दाने रमन्ते

दानेन द्विषन्तो मित्रा भवन्ति

दानेन सर्वान् कामानवाप्नोति

दानेनारातिरपानुदन्त

दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टं

दाने सर्वं प्रतिष्ठितं, तस्माद्दानं

परमं वदन्ति

दान्तानां कुशलानां च... शास्त्र-

मेतत्प्रकाशते

दामोदराय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।

तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्

दाम्यते दत्तं दयध्वमिति तदेतन्नं

शिक्षेदमं दानं दयामिति

दाम्यतेति न दाम्येत्यमिति

योगकुं. ३।३१

क्षुरिको. १०

छान्दो. ८।१।१, २

सि. शि. ४

महाना. ८।१६

वनदु. ९९

भ. गी. १।१।२५

भ. गी. १।१।२५

पारमा. ८।७

भ. गी. १।७।२०

भ. गी. १।७।२५

महाना. १६।१३

भ. गी. १।८।४३

भ. गी. १६।११

शाण्डि. १।२।१

महाना. १७।५

महाना. १६।१२

महाना. १७।५

संहिवो. ४।१

महाना. १७।५

भ. गी. ८।२८

महाना. १७।५

अमन. २।१०

त्रि. म. ना. ७।११

बृह. ५।२।३

बृह. ५।२।१

दारानाहृत्य पुत्रानुत्पाद्य ताननु-
 रूपाभिर्वृत्तिभिर्वितत्येषु च
 शक्तितो यज्ञैः कठश्रु. १७

दारमाहृत्य सदृशमग्निमाधाय
 शक्तितः । ब्राह्मीमिष्टिं यजेत्
 [२सञ्ख्यासो३.+ कुण्डिको. २

दारिद्र्याशा यथा नास्ति सम्पन्नस्य
 तथा मम । ब्रह्मानन्दे निमग्नस्य
 विषयाशा न तद्भवेत् आ. प्र. १७

दारिद्र्यं निश्चेतिनायमेन(लिङ्गपूजितं)
 दारिषणायाश्च वितेषणायाश्च लोके-
 षणायाश्च व्युत्थितोऽहम् सि. शि. २४

दारिरेथाय विषादे सीतावल्लभाय
 वीमहि । तन्नो रामः प्रचोदयात् त्रि. म. ना. ७।११

दासाः पुत्राः स्त्रियश्चैव बान्धवाः
 सुहृदस्तथा । हसन्त्युन्मत्तक-
 मिव नरं वार्षककम्पितम् महो. ३।३५

दास्यन्ते यज्ञभाविताः
 दिक्कालाद्यनवच्छिन्नमात्मतत्त्वम् भ. गी. ३।१२

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नमदृष्टोभयकोटि-
 कम् । चिन्मात्रमक्षयं शांतमेकं महो. ५।१४४

ब्रह्मास्मि शाश्वतम् अ. पू. ५।८

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नं स्वच्छं नित्यो-
 दितं ततम् । सर्वार्थमयमेकार्थं अ. पू. ५।६६

चिन्मात्रममलं भव

दिक्पतीनां प्रहाणां च लोकाश्चाथ
 रदावली गुह्यका. १४

दिक्पालानां राज्ञां नागानां किञ्च-
 राणामधिपतिर्भवति हयग्री. ६

दिगम्बरमुखोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१९

(अथ) दिगम्बरः सकलसञ्चारकः
 सर्वज्ञानन्दत्वानुभवेकपूर्णहृदयः...
 गिरिकन्दरेषु विसृजेद्देहम् ना. प. ४।४९

दिगम्बरो भूत्वा विवर्णवल्कलाजिन-
 परिमहमपि संत्यज्य... प्रणवात्म-
 कत्वेन देहत्यागं करोति यः तुरीया. ३

सोऽनघूतः

दिक्षु तृप्यन्तीषु यत्किञ्च दिशश्चन्द्र-
 माश्च... (ना. पा.) छां. च. ५।२०।२

दिक्षु तृप्यन्तीषु यत्किञ्च दिशश्च
 चन्द्रमाश्चाधितिष्ठन्ति, तत्तृप्यति छांदो. ५।२०।२

दिग्दोषो यस्य विदिशश्च कर्णौ...
 तस्मै वरत्रे.. कस्मै स्वाहा पारमा. ७।६

दिग्दोहैनमायन्तीः दिग्भ्योविशृणोति श्वेत. १।७।५

दिग्वातार्क-प्रचेतोऽश्वि-वह्नीन्द्रोपेन्द्र-
 मृत्युकाः (तथाचन्द्रश्चतुर्वक्त्रोरुद्रः
 क्षेत्रज्ञ ईश्वरः) चन्द्रो विष्णुश्चतु-
 र्वक्त्रः शम्भुश्च करणाधिपाः
 [वराहो. १।१४+ पैङ्गलो. २।४.

दिनकरकिरणैर्हि शार्वरं तमो
 निंबिडतरं श्रुतिं प्रणाशमेति वराहो. ३।१०

दिनत्रयेऽथ यदि वा एकस्मिन्दिवसे-
 ऽथवा । तृतीये वा चतुर्थे वा प्रातः
 क्षात्वा सिताम्बरः ।...ॐ तद्वेति
 चोच्चार्य पौलकं भस्म सन्यजेत् वृ. जा. ३।२२

दिनद्वादशकेनैव समार्धिसमवापुयात्
 बायुं निरुध्य मेधावी जीवन्मुक्तो
 भवत्ययम् १ यो. त. १०६

दिनपादलयेनापि स्वल्पाहारो
 भवेन्नरः... अमन. १।४७

दिनमात्रलयेनापि स्वात्मतन्त्रं प्रकाशते अमन. १।४९

दिनेदिने गयातुल्यं भरण्यां गयपञ्चके
 इतिहा. ८९

दिव आत्मानं सवितारं बृहस्पतिं
 चित्त्यु. १।१२

दिव उग्रोऽवारुक्षत् नीलक. १।२

दिवमनन्तशीर्षैर्दिशमनन्तकरैः...
 व्याप्य तिष्ठति गणेशो. ३।३

दिवमेव भगवो राजन्निति होवाचैष
 वै...यं त्वमात्मानमुपास्ते तस्मा-
 त्तव सुतं प्रसुतमासुतं कुले दृश्यते छांदो. ५।१२।१

दिवसस्याष्टमेभागे...स कालः
 कुतपो नाम इतिहा. ५८

दिवश्चैनमादित्याश्च दैवं मन आवि-
 शति तद्वै दैवं मनो येनानन्देव
 भवत्यथो न शोचति बृह. १।५।१९

दिवसाश्चार्धदिवसाश्च कलाः कल्पा-
 श्चोर्ध्वं च दिशश्च सर्वं नारायणः सुबालो. ६।१

दिवं च पृथिवीं च बायुं चाकाशं
 चापञ्च.. वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति
 वाचमुपास्तेति छांदो. ७।२।१

दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो सुवः महाना. ६।३
 दिवं देवतामारोद्योस्त्वा देवता
 रिष्यतीत्येनं ब्रूयात् ३ ऐत. १।३।३
 दिवं पृष्ठं भन्दमानः सुमन्मभिः चित्त्यु. १०।४
 दिवा जाग्रन्नक्तं स्वप्नं सुषुप्तमर्धरात्रंगतं ना. प. ६।२
 दिवानक्तसमत्वेनास्वप्नः... सङ्ख्यासेन
 देहत्यागं करोति प. हं. प. ८
 दिवा न पूजयेद्विष्णुं रात्रौ नैव
 प्रपूजयेत् । सततं पूजयेद्विष्णुं
 दिवारात्रं न पूजयेत् शांढि. १।७।३८
 दिवारात्रमविच्छिन्नं यामे यामे
 यदा यदा । अनेनाभ्यासयोगेन
 वायुरभ्यसितो भवेत् बराहो. ५।४६
 दिवा वा यदि वा सायं याममात्रं
 समभ्यसेत् १ यो. त. ६७
 दिवा सुप्तिनिशायां तु जागरात्...
 शीघ्रमुत्पद्यते रोगः योगकुं. १।५७
 दिवास्वापो घृतालापो यतेर्बन्ध-
 कराणि षट् १ सं. सो. २।७९
 दिवि क्षयो नभसा य एति चित्त्यु. ११।८
 दिवि तृप्यन्त्यां यत्किञ्च यौश्चादित्य-
 आधितिष्ठतस्तत्तृप्यति छान्दो. ५।१९।२
 दिवि देवावृषः होत्रा मे रयस्व स्वाहा चित्त्यु. ४।१
 दिवि देवेषु वा पुनः भ. गी. १८।४
 दिवि सूर्यसहस्रस्य भ. गी. ११।१२
 दिवीव चक्षुराततम् [सुबा. ६।१+
 [चि. ता. ४।४+वरा. ५।७७+पैङ्ग.
 दिवेदिव ईड्यो जागृवन्निर्हविष्मद्भि-
 र्मेनुष्येभिरभिरेतद्वै तत् फटो. ४।८
 दिवैनाम्बिश्रुता जाहि सूर्यता. ३।१
 दिव्यगन्धानुलेपनम् भ. गी. ११।११
 दिव्यज्ञानोपदेष्टारं वैशिकं परमे-
 श्वरम् । पूजयेत्परया भक्त्या
 तस्य ज्ञानफलं भवेत् यो. शि. ५।५७
 दिव्यदेहस्य तैजस्वी दिव्यगन्धो-
 ऽप्यरोगवान् सौभाग्य. ९
 दिव्यध्वजातपत्रैस्तु चिह्नितं चरण-
 द्वयम्. ध्यायेन्नित्यम् गोपालो. २।२१
 दिव्यमाज्याम्बरधरं भ. गी. ११।११

दिव्यवर्षसहस्राणि चक्षुरुन्मीलितं
 मया । भूमावक्षिपुटाभ्यां तु
 पतित्ता जलविन्दवः ह. जा. २
 दिव्यश्राद्धे वसु-रुद्रादित्यरूपेण ।...
 ब्राह्मणानचयेत् ना. प. ४।३९
 दिव्यं ददामि ते चक्षुः भ. गी. ११।८
 दिव्यानेकोद्यतायुधम् भ. गी. ११।१७
 दिव्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनं,
 सर्वाभरणभूषितं सूर्यता. १।८
 दिव्यालङ्कारणोपेतं रत्नपङ्कजमध्यगम् ।..
 चिन्तयन्श्चेतसा कृष्णं मुक्तो
 भवति संसृतेः गो. पू. १।६।५७
 दिव्याह्यात्मविभूतयः [भ. गी. १०।१६ + १०।१९
 दिव्ये ब्रह्मपुरे सम्प्रतिष्ठिता भवन्ति
 कथं सृजन्ति ब्रह्मो. १
 दिव्ये ब्रह्मपुरे ह्येष व्योम्न्यात्मा
 प्रतिष्ठितः मुण्ड. २।२।७
 दिव्यो देव एको नारायणः सुबालो. ६।१
 दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः सबाह्याभ्यन्तरो
 ह्यजः । अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो
 ह्यक्षरात्परतः परः मुण्ड. २।१।२
 दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः भ. गी. १।१४
 दिश एव सम्राडिति होवाच, तस्माद्वै
 सम्राडपि यां कां च दिशं गच्छति
 नैवास्या अन्तं गच्छति बृह. ४।१।५
 दिशमेवाप्येति यो दिशमेवास्तमेति
 दिशश्च नारायणः । विदिशश्च
 नारायणः [नारा. २+
 दिशश्च प्रतिदिशश्चाहं पुमानपुमान्
 स्त्रियश्चाहम् अ. शिर. १।१
 दिशश्चानवलोकयन् भ. गी. ६।१३
 दिशस्तत्राधिदैवतं, नाडी तेषां
 निबन्धनं, यः श्रोत्रे यः श्रोतव्ये
 यो दिक्षु...सञ्चरति सोऽयमात्मा सुबालो. ५।१
 दिशं दिशं भित्वा सर्वलोकान्
 व्याप्नोति, व्यापयतीति व्याप-
 नाभ्यापी महादेवः अ. शिखो. २
 दिशः पार्श्वे अवान्तरदिशः पार्श्वः
 बृह. १।१।१

दिशः पार्थे..परिशवऋतवो..(मा.पा.) बृ. च. १।१।१
 दिशः ओत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन् २ ऐत. २।४
 दिशः ओत्रं (अप्येति) बृह. ३।२।१३
 दिशः ओत्रात् (जज्ञिरे) ग.शो. ३।११
 दिशः ओत्रे... वायुः प्राणो हृदयं
 विश्वमन्थे..क्षेप सर्वभूतान्तरात्वा मुंढ. २।१।४
 विश्वामेकपुण्डरीकमस्यहं मनुष्याणा-
 मेकपुण्डरीकं भूयासम् बृह. ६।३।६
 विशि पद्मान्तकयमान्तकविष्ना-
 न्तकनरकान्तकान्.. तारोप. ११
 (तस्य) दिशोऽङ्गारा अवान्तर-
 दिशो विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्नेत-
 स्मिन्नामौ देवाः अद्वां जुहति बृह. ६।२।९
 दिशोऽङ्गाराः...तस्मिन्नेतस्मिन्नामौ
 देवाः वर्षं जुहति छान्दो. ५।६।१
 दिशो न जाने न लभे च क्षमं भ. गी. १।१।५
 दिशोऽपि न हि दृश्यन्ते देशोऽप्य-
 न्योपदेशकृत् । ...अतो मां
 बोधयाशु त्वं तत्त्वज्ञानेन वै शुरो महो. ३।४९
 दिशो वेद सदेवाः सप्रतिष्ठाः बृह. ३।९।१९
 दिशो वै सप्राद् ओत्रं ५ ओत्रं
 वै सप्राद् परमं ब्रह्म बृह. ४।१।५
 दिशो ह्यस्य सक्तयो चौरस्योर्चर्च
 विल ५ स एष कोशो वसुधान-
 स्तस्मिन्विश्वमिदं ५ अत्रितम् छांदो. ३।१५।१
 दीक्षा पत्नी, वातोऽन्वर्थुः चिन्त्यु. ६।१
 दीक्षामुपेयात्काषायवासाः कुंडिको. ९
 दीक्षा सन्तोषपानं च निर्वाणो. १
 दीपज्वालेन्दु-स्वयोत्-विद्युज्ज्वल-
 मास्वराः । दृश्यन्ते सूक्ष्मरूपेण यो. शि. २।१९
 दीपनं च भवेत्तेजः प्रचारो वायु-
 लक्षणम् । आकाशतत्त्वतः
 सर्वं ज्ञातव्यं योगमिच्छता वराहो. ५।२
 दीपमुत्सृज्य विचिन्वन्ति तमोऽर्चनैः मुक्तिको. २।४६
 दीपशिखा तु या मात्रा सा मात्रा
 परमेष्ठरे यो.शि. १।७४

दीपशिखायां या मात्रा सा मात्रा
 परमेष्ठिनः । भिदन्ति योगिनः
 सूर्य योगाभ्यासेन... २ यो. शि. ६
 दीपाकारं महादेवं ज्वलन्तं नाभि-
 मध्यमे ।...हंस हंसेति यो जपेत् ।
 जरामरणरोगादि न तस्य.. ब्र. वि. २३
 दीप्तानलार्कगुतिमप्रमेयम् भ.गी. १।१।७
 दीप्यत इव देवलोकः बृह. ३।१।८
 दीप्यमानां त्वासादयामि चिन्त्यु. १।१।१
 दीयते च परिक्लिष्टं भ.गी. १।७।२१
 दीयतेऽनुपकारिणे भ.गी. १।७।२०
 दीर्घप्रणवसम्भानं सिद्धांतश्रवणं परम् १ यो. त. २७
 दीर्घस्वप्रमिदं यत्तदीर्घवाचित्तविभ्रमम् वराहो. २।६४
 दीर्घवापिमनोराज्यं संसारंदुःखसागरम् वराहो. २।६४
 दीर्घायुत्वस्य देशिषे सूर्यता. २।१
 दुःखं विप्रियते सदा अ. शां. ८२
 दुग्धदोहा अस्य वेदा भवन्ति ३ ऐत. २।४।१
 दुग्धाब्धिवत्सम्मिलितौ सदेव तुल्य-
 क्रियोमानसमारुतौ च । यावन्मन-
 स्तत्र मरुत्प्रवृत्तिः.. अमन. २।२७
 दुग्धेऽस्मै वाग्दोहं यो वाचो दोहोऽन्न-
 वानन्नादो भवति..[छांदो. १।१३।४ + २।८।२
 दुग्धोदधिर्मध्यस्थितामृतामृत-
 कलशवद्वैष्णवं धाम त्रि.म.ना. १।४
 दुन्दुमेस्तु ग्रहणेन दुन्दुभ्याघातस्य..
 शब्दो गृहीतः [बृह. २।४।७ + ४।५।८०
 दुन्दुमेर्हन्यमानस्य न बाह्याच्छब्दा-
 न्छ्रुत्याद्ब्रह्मणाय [बृ.उ. २।४।७ + ४।५।८
 दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति
 निन्दितः भवसं. ४।३
 दुर्गतिं तात गच्छति भ. गी. ६।४०
 दुर्गन्धं दुर्मलोपेतं स्पृष्ट्वा ज्ञानं विधीयते मैत्रे. २।६
 दुर्गात्संजायते यस्माद्देवी दुर्गेति
 कथ्यते देव्यु. २२
 दुर्जया हीद्वियारयः । प्रक्षीण-
 चित्तवर्षस्य निगृहीतेन्द्रियद्विषः महो. ५।७७

दुर्दर्शमतिगम्भीरमजं साम्थं
विशारदम् । बुद्ध्या पदमनानात्वं
नमस्कुर्मो यथाबलम् अ. शां. १००
दुर्निवार्यं मनस्तावद्यावत्तत्त्वं
न विन्दति अमन. २।७३
दुर्निष्प्रपतरं यो यो ह्यन्नमत्ति यो
रेतः सिञ्चति तद्वृत्त्य एव भवति छांदो. ५।१०।६
बुर्बोधं कुहकं तस्य मायया मोहितं
जगत् । दुर्जया या सुरैः सर्वैः.. कृष्णो. १०
दुर्बिषज्यः ह्यस्मै भवति यमेष
न प्रतिपद्यते बृह. ४।३।१४
दुर्भिजास्तस्मै भूयासुर्योऽस्मान्द्वेष्टि
दुर्लभं तत्त्वदर्शनम् महाना. ५।११
दुर्लभं तत्त्वव्यं ध्यानं मुनीनां च
मनीषिणाम् ते. बि. १।२
दुर्लभा खेचरी विद्या तदभ्यासो-
ऽपि दुर्लभः योगकुं. २।४
दुर्लभा सहजावस्था सदुरोः करुणां
मिता [महो. ४।७७+ वराहो. २।७६
दुर्लभो विषयत्यागो दुर्लभं तत्त्व-
दर्शनम् [महो. ४।७७+ वराहो. २।७६
दुष्प्रेरणानिलेन च अ. गी. ३।३९
दुष्प्रप इति मे मतिः अ. गी. ६।३६
दुष्प्रवृत्तिं दुरुष्णह [त्रिसुप. १+ महाना. १२।१
दुष्कृताभिश्चिन्ता नार्यो बहन्ति
तृणवन्नरम् याज्ञव. १२
दुष्टमदनाभावाच्चेति विषयवैतृष्य-
मेत्य प्राक्पुण्यकर्मवशात्सक्यस्तः
स वैराग्यसक्यासी ना. प. ५।३
दुष्टस्य दण्डः सुजनस्य पूजा..
अपक्षपातोऽर्थिषु.. पञ्चैव
यज्ञाः कथिता नृपाणाम् भवसं. ५।१३
दुष्टाच्युक्तमिव बाहमेनं विद्वान्मनो
धारयेताप्रमत्तः [श्वेता. २।९+ भवसं. ३।२६
दुष्टाया इव सारथेः कठो. ३।५
दुष्टे वा एष छांदोसि यो याजयति अहवै. २१
दुःखस्य प्रबोधमाप्यक्षयाशान्तिरेव च अद्वैत. ४०
दुःखमायुमयोगतः अ. गी. ५।६
दुःखमायापरिमहः महो. ४।१११

दुःखमित्येव यत्कर्म अ. गी. १।८।८
दुःखयोनय एव ते अ. गी. ५।२३
दुःखशोकामयप्रदाः अ. गी. १।७।९
दुःखशृङ्खलाया नित्यमलमस्तु
मम क्षिया महो. ३।४७
दुःखंजन्मजरादुःखं दुःखंमृत्युः पुनः पुनः इतिहा. १२
दुःखं विप्रियते सदा अ. शां. ६२
दुःखं सर्वमनुस्मृत्य कामभोगाभि-
वर्तयेत् अद्वैत. ४३
दुःखादयं च दुराराध्यं दुष्प्रेक्ष्यं
मुक्तमव्ययम् । दुर्लभं तत्.. ते. बि. १।२
दुःखादुःखमसद्विद्विषर्वा सर्वमसन्मयम् ते. बि. ३।५५
दुःखान्तं च निगच्छति अ. गी. १।८।३६
दुःखालयमशाश्वतम् अ. गी. ८।१९
दुःखितेषु दुःखदुःखीः अ. पू. २।३
दुःखिनोऽज्ञाः संसरन्तु कामं पुत्रा-
द्यपेक्षया । परमानन्दपूर्णोऽहं
संसरामि किमिच्छया १ अवधू. ११
दुःखेन नोद्विग्नः सुखेन नानुमोदको
रागे निःस्पृहः निरालम्बमवलम्ब्य..
प्रणवात्मकेन देहत्यागं करोति
यः सोऽवधूतः... तुरीया. ३
दुःखे च नोद्विग्नः सुखे निःस्पृह-
स्त्यागो रागे.. प. इ. ९
दुःशंसाशंसाभ्यां वर्णेनानुवर्णेन च सहवै. ५
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः अ. गी. २।५६
दूरङ्गमं योतिषां ज्योतिरेकं [२ शिवसं. ८ वा. सं. ३४।१
दूरतो न वा अस्य महिमानं
कश्चिदेति आर्ष. ५।४
दूरमेते विपरीते विषूची अवधिा
या च विद्येति ज्ञाता [कठो. २।४+ मैत्रा. ७।९
दूरयात्रां प्रयत्नेन वर्जयेदात्मचि-
न्तकः । सदोपनिषदं विद्यामभ्य-
सेन्मुक्तिर्दुर्लभा ना. प. ३।७२
दूरस्थं चान्तिके च तत् अ. गी. १३।१६
दूरस्थोऽपि न दूरस्थः, पिण्डवर्जितः
पिण्डस्थोऽपि प्रत्यमात्मा
सर्वव्यापी भवति पैङ्गलो. ४।९

दूर ह वा अस्मान्मृत्युर्भवति बृह. १।३।९
 दूरात्सुदूरे तदिहन्तिके च पश्य-
 त्स्त्वैव निहितं गुहायाम् मुण्ड. ३।१।७
 दूरात्सुदूरे तदिहास्ति किञ्चित् गुह्यका. ३६
 दूरादस्तमितद्वित्वं भवात्मैव
 त्वमात्मना अ. पू. २।३८
 दूरेण ह्यवरं कर्म भ. गी. २।४९
 दृक्स्वरूपावस्थानमक्षताः (आत्मार्चने) मं. ब्रा. २।५
 दृग्विशिष्टात्मानमक्षताः आत्मपू. १
 दृग्दृश्यं यदि चिन्मात्रमस्ति चेच्चिन्मयं
 जगत् (सदा) ते. वि. २।३१
 दृढभावनया त्यक्तपूर्वापरविचारणम् ।
 यदादानं पदार्थस्य वासना मुक्तिको. २।५७
 सा प्रकीर्तिता छां. उ. १।३।५
 दृढस्य धनुष आयमनं
 दृढाभ्यस्तपदार्थैकभावनादति-
 चञ्चलम् । चित्तं सञ्जायते मुक्तिको. २।२५
 जन्मजरामरणकारणम्
 दृढाङ्गो भूत्वा सर्वं कृतकं नश्वर-
 मिति देहादिकं सर्वं हेयं.. ना. प. ५।३
 दृढासनो भवेद्योगी पश्चाद्यासन-
 संस्थितः सौभाग्य. ११
 दृप्तबालाकिर्हानूचानो गार्ग्य.. आंस बृह. २।१।१
 दृशिस्तुशुद्धोऽहमविक्रियात्मकः मुक्तिको. २।७४
 दृशिस्वरूपं गगनोपमं परं.. अलेपकं
 सर्वगतं.. तदेव चाहं.. मुक्तिको. २।७३
 दृश्यते जगति यद्यद्यज्जगति
 बीक्ष्यते । वर्तते जगति यद्यत्सर्वं
 मिथ्येति निश्चिनु ते. वि. ५।५५
 दृश्यते त्वग्रया बुद्ध्या सूक्ष्मया
 सूक्ष्मदर्शिभिः कठो. ३।१२
 दृश्यते न हि निर्विकारसहजानन्दैक-
 भाजो भुवि अमन. २।३२
 दृश्यते श्रूयते यच्च पञ्चब्रह्मात्मकं
 स्वयम् । पञ्चधावर्तमानं तं ब्रह्म-
 कार्यमिति स्मृतम् पञ्चब्र. २१
 दृश्यते श्रूयते यद्यद्ब्रह्मणोऽन्यजतद्भवेत् ब्राह्मो. ३।२
 दृश्यदर्शननिर्मुक्तः केवलात्मस्वरूप-
 वान् ।.. स यव विदित्वादन्यः.. म. वा. २. १२

दृश्यदर्शनसम्बन्धे यत्सुखं पारमा-
 र्थिकम् । तदतीतं पदं यस्मात्तन्न
 किञ्चिदिवेव तत् (तदन्तैकान्त-
 संवित्त्या ब्रह्मदृष्ट्याऽवलोक्य)
 [अ. पू. २।२२+ अ. पू. ५।४४
 दृश्यन्तं दिव्यरूपेण... हंसहंसं
 वदेद्वाक्यं प्राणिनां देहमाश्रितः ब्र. वि. ७८
 दृश्यमानस्य सर्वस्य जगतस्तत्त्वमीर्यते ।
 ब्रह्मशब्देन तद्ब्रह्म स्वप्रकाशात्म-
 रूपकम् शु. र. ३।८
 दृश्यमाश्रयसीदं चेत्तत्सञ्चितोऽसि
 बन्धवान् महो. ६।३५
 दृश्यरूपं च दृष्टुं सर्वं शशविषाणवत् म. वा. २. ४
 दृश्यशब्दानुमेदेन सविकल्पः
 पुनर्द्विधा (समाधिः) सरस्व. ५०
 दृश्यसंबलितो बन्धस्तन्मुक्तौ
 मुक्तिरुच्यते अ. पू. २।१८
 दृश्यं जडं द्वन्द्वजातमज्ञानं मानसं
 स्मृतम् ... सङ्कल्पं.. नास्तीति.. ते. वि. ५।१०४
 दृश्यं नास्तीति बोधेन मनसो दृश्य-
 मार्जनम् । सम्पन्नं चेत्तदुत्पन्ना
 परा निर्वाणनिर्वृतिः महो. २।३८
 दृश्यं पश्यति यन्न पश्यति शनैरा-
 प्रेयमाजिघ्रसि.. मनस्तत्कमा-
 हैताख्यस्य पदस्य तत्त्वपदवीं
 प्राप्तस्य सद्योगिनः अमन. २।६८
 दृश्यं यदि दृगप्यस्ति दृश्याभावे
 दृगेव न ते. वि. ५।२७
 दृश्यं सन्त्यजसीदं चेत्तदाऽचित्तो-
 ऽसि मोक्षवान् महो. ६।३५
 दृश्यं ह्यदृश्यतां नीत्वा ब्रह्माकारेण
 चिन्तयेत् ते. वि. १।५०
 दृश्याभावे दृगेव न ते. वि. ५।२७
 दृश्यासम्भवबोधेन रागद्वेषादि-
 तानवे । रतिर्बलोदिता यासौ
 समाधिरभिधीयते महो. ४।६२
 दृश्यासम्भवबोधो हि ज्ञानं ज्ञेयं
 चिदात्मकम् । तदेव केवलीभावं
 ततोऽन्यत्सकलं शृणु महो. ४।६३

दृष्टवानसि मां यथा	भ.गी. ११।५३	दृष्ट्वा रम्यमरम्यं वा स्थेयं पाषाण-	
दृष्टवानसि यन्मम	भ.गी. ११।५२	वत्सदा । एतावताऽऽत्मयत्नेन	
दृष्टश्रवणविषयवैतृष्ण्यमेत्य...साधन-		जिता भवति संस्तुतिः	अ. पू. ५।११८
चतुष्टयसम्पन्नः सन्न्यस्तुमर्हति	ना. प. २।१	दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृक्कुमेदं	भ.गी. ११।४९
दृष्टश्रुतानुभूतानां स्मरणात्		दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाऽहम्	भ.गी. ११।२३
स्मृतिरुच्यते	आर्षे. २१	दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा	भ.गी. ११।२४
दृष्टं चादृष्टं च श्रुतं चाश्रुतं च...		दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं	भ.गी. ११।५१
सर्वं पश्यति सर्वः पश्यति	प्रश्नो. ४।५	दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण	भ.गी. १।२८
दृष्टं द्रष्टव्यमखिलं भ्रान्तं भ्रान्त्या		दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि	भ.गी. ११।२५
दिशो दश । युक्त्या वै चरतो		दृष्ट्वैव गुरुमायान्तमुत्तिष्ठेदूरत-	
ज्ञस्य संसारो गोष्पदाकृतिः	महो. ६।९	स्त्वरम् । अनुज्ञातश्च गुरुणा..	शिवो. १७७
दृष्टं श्रुतमसद्विद्धि ओतं प्रोत-		देव एकः कः स जगार भुवनस्य	
मसन्मयम्	ते. बि. ३।५४	गोपास्तंकापेयनाभिपश्यन्तिमर्त्याः	छान्दो. ४।३।६
दृष्टानुश्रविकविषयवैतृष्ण्यं...स		देव एकः स्वमावृणोति स नो दधातु	
वैराग्यसङ्ग्यासी	१सं.सो. २।१३	ब्रह्माव्ययम्	श्वेता. ६।१०
दृष्टिपूतंन्यसेत्पादं वस्त्रपूतं		देवकी ब्रह्मपुत्रा सा या वेदैरुपगीयते	कृष्णोप. ६
पिवेज्जलम् । सत्यपूता वदे-		देवकीमुत गोविन्द बासुदेव जगत्पते ।	
द्वाचं मनःपूतं समाचरेत्	भवसं. ५।१०	...त्वामहं शरणं गतः	त्रि.म.ना. ७।१०
दृष्टिरेषा हि परमा स देहादेहयोः		देवकृतस्यैनसोऽवयजनमासि स्वाहा	महाना. १४।१
समा । मुक्तयोः सम्भवत्येषा		देवजन इति देवजनविदः (वपासते)	मुद्रलो. ३।२
तुर्यातीतपदाभिधा	अ. पू. १।२५	देवता ऋषयः सर्वे ब्रह्माणमिदमब्रुवन् ।	
(तस्मात्) दृष्टिविषां नारीं दूरतः		मृतस्य वीर्यते पिण्डं कथं	
परिवर्जयेत्	ना. प. ६।३७	गृह्णन्त्यचेतसः	पिण्डो. १
दृष्टिस्तत्रैव कर्तव्या न नासाप्रवर्तिनी	म. वा. २. १	देवतासन्निधये वृत्तभानुमतीर्ध्वर्ण-	
दृष्टिं ज्ञानमयीं कृत्वा पश्येद्ब्रह्म-		मुखरेत्	सूर्यता. ६।१
मयं जगत्	ते. बि. १।२९	देवदत्तदिगम्बराष्टमहाशक्त्यष्टाङ्गधर	लांगूलो. ८
दृष्टिः स्थिरा यस्य विनासदृश्यं वायुः		देवदत्तस्य (वायोः) विप्रेन्द्र तन्त्रीकर्म	
स्थिरो यस्य विनाप्रयत्नम् । चित्तं		प्रकीर्तितम्	जा.व. ४।३४
स्थिरं यस्य विनावलम्बं स ब्रह्म-		देवदत्तं धनञ्जयः	भ.गी. १।१५
धारान्तरजादरूपः	ना. बि. ५६	देवदत्तोऽहमित्येतद्विज्ञानं निरपेक्षकम्	२ आत्मो. ७
दृष्टिः स्थिरा यस्य विनैव दृश्यात्	अमन. २।४३	देवदेव जगत्पते	भ.गी. १०।१५
दृष्टे सर्वगते बोधे स्वयं ह्येषा		देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्	भ.गी. १७।१४
(अविद्या) विलीयते	महो. ४।११५	देवदेव महाप्राज्ञ...शुकस्य मम	
दृष्टो निर्विकानिदितात्परः	नृसिंहो. ९।१	पुत्रस्य.. ब्रह्मोपदेशकालोऽयं	शु. २. १।३,४
दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं	भ.गी. १।२	देवपितृकर्माण्यारभमाणस्त्वयानित्य-	
दृष्ट्वाऽऽश्रुतं रूपमिदं तनोमं	भ.गी. १।२०	मूर्ध्वपुण्ड्रं च कुर्यान्मन्त्रैः	नारदो. १
दृष्ट्वा प्रदक्षिणां कुर्यात् (तुलसीम्)	तुलस्यु. २	देवपितृकर्माण्यारभमाणस्तयानित्य-	
३८		मूर्ध्वपुण्ड्रं विधुयान्मन्त्रैः केशवादीनां	कात्याय. १
		देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्	तेजि. १।११२

देवमनुष्याद्युपासनाकामसङ्कल्पो बन्धः निशालं. २१
 देवयज्ञः पितृयज्ञो भूतयज्ञो
 मनुष्ययज्ञ इति सहवे. १५
 (अथ) देवरथस्तस्य वागुद्धिः १ ऐत. ३।८।६
 देवर्षयो ब्रह्माणं सम्पूज्य प्रणिपत्य
 पप्रच्छुः भगवन्नस्माकं.. शुकर. १।१
 देवर्षि-दिव्य-मनुष्य-भूतपितृमात्रा-
 स्तेत्यष्टश्राद्धानि कुर्यात् ना. प. ४।३८
 देवर्षिनरिदस्तथा भ.गी. १०।१३
 देवर्षीणां च नारदः भ.गी. १०।२६
 देवलोकमेव ताभिर्जयति, दीप्यत इव
 हि देवलोकः बृह. ३।१।८
 देवलोकदादित्यमादित्याहं युतं (पति) बृह. ६।२।१५
 देवलोकेषु (नक्षत्रलोका भोताश्च
 प्रोताश्च) गार्गीति बृह. ३।६।१
 देवलोको ललाटे च षट्त्रिंशलक्ष-
 योजनम् (विराटरूपस्य) गुह्यका. ९
 देवलोको वै लोकानां श्रेष्ठस्तरुमा-
 द्विषां प्रशंसन्ति बृह. १।५।१६
 देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां..
 एतद्भगवोऽध्येमि [छां. ७।१।२५ ७।७।१
 देवश्राद्धे ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्
 ब्राह्मणानर्चयेत् ना. प. ४।३९
 देवस्य इतीन्द्रो देवो द्योतक इति मायवीर. २
 देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे चित्तु. १०।१
 [दे. ब्रा. ८।७।५ वा. सं. १।२४+११।२८
 [वि. सं. १।१।६।१५ अथर्व. ४ १९।५१।२
 देवस्य यस्यैव बलेन भूयः स्वं स्वं
 द्वितं प्राप्य.. मोदन्ते स्वे स्वे पदे.. हेरक. ४
 देवस्यैव महिमा तु लोके येमेवं
 भ्रान्त्यते ब्रह्मचक्रम् श्वेताश्व. ६।१
 देवदूरेका वाक्, शहूरेका, मित्रदूरेका संहितो. १।२
 देवं स्वचित्स्थमुपास्य पूर्वम् श्वेता. ६।५
 देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् छांदो. ३।१७।८
 देवा अग्रे तदंशुवन् चित्तु. १३।२
 देवा अन्वविन्दन् गुहाहितम् चित्तु. ११।१३
 देवा अप्यस्य रूपस्य भ.गी. ११।५२
 देवा अवेदाः, देवा अवेदाः (भवन्ति) बृह. ४।३।२२
 देवा इति च तद्विदः.. (जानन्ति) वेतप्य. २१

देवाभिमुखोष्ठीषु... दक्षिणं
 बाहुमुद्धरेत् शिवो. ७।६६
 देवाभिगुरुमित्राणां न ब्रजेदन्त-
 रेण तु शिवो. ७।६८
 देवाग्र्यगारे तरुमूले गुहायां वसेद-
 सङ्कोऽलक्षितशीलवृत्तः शाठ्याय. २१
 देवा जायन्ते पुरुषोत्तमात् सि. वि. २
 देवानामसि बह्वितमः पितृणां प्रश्नो. २।८
 देवानामस्मि वासवः भ.गी. १०।२२
 देवानामेव महिमानं गत्वाऽऽदित्यस्य
 सायुज्यं गच्छति [त्रिसुप. ४+ महाना. १८।१
 देवानां च ऋषीणां च पितृणां त्वं
 सदा प्रिये (या) तुलस्यु. १३
 देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां
 ब्रह्मसदनम् जावा. १।१
 देवानां देवलक्ष्मीर्भवति ना. पू. ता. २।१
 देवानां पूरयोष्या, तस्यां हिरण्यमयः
 कौशः स्वर्गो लोको ज्योतिषावृतः अरुणो. १
 देवानां बन्धुं निहितं गुहासु चित्तु. ११।३
 देवानां वसुधानीं विराजम् चित्तु. ११।४
 देवानां वासवो भवति ना. व. सं. ३।१
 देवानां हृदयं ब्रह्मान्वविन्दत् चित्तु. ११।६
 देवानां जायन्ते, देवानां जीवन्ति ग. शो. २।५
 देवानां देवयजो यान्ति भ. जी. ७।२३
 देवानां प्रपद्ये देवपुरं प्रपद्ये सहवे. २३
 देवानां भावयताऽनेन भ. गी. ३।११
 देवान्यक्षान्नोगान् प्रधानमनुष्यान्
 सर्वानाकर्षयति ग. शो. ५।२
 देवान्ये यज्ञकर्मणा यजन्ति ते
 देवलोकं... यान्ति सामर. २७
 देवाः पितरो मनुष्या एत एव वागेव
 देवा मनः पितरः प्राणो मनुष्याः बृह. १।५।६
 देवा अस्म ऋषयो अस्म भस्मजा. १।४
 देवा यज्ञमतञ्चत [चित्तु. १२।३+
 [=मं. १०।९०।६+ क्र. भ. ८।१।१८
 देवा ययज्ञं तज्जानाः [चित्तु. १२।३ क्र. भ. ८।१।१९
 [=मं. १०।९०।१५+ वा. सं. ३।१।१५

देवार्चनज्ञानशौचमिश्रादौ वर्ततां

वपुः । तारं जपतु वाक्तद्व्यथत्वा-

स्नायमस्तकम्

अवधू. २४

देवा वा असुरा वा ते परा भविष्यन्ति

छान्दो. ८।८।४

देवाश्च मानुषाश्च ओत्रं वाव सम्पत्

छान्दो. ५।१।४

देवाश्चेति सन्धत्तां सर्वेभ्यो दुःख-

भयेभ्यः सन्तारयतीति

तारणात्तारः...संवि..न्तीति विष्णुः

अ. शिखो. २

देवासुरा संयत्ता आसन्

शौनको. १।१

देवासुरा ह वै य आत्मकामा ब्रह्मणो-

न्तिक प्रयातास्तस्मै नमस्कृत्योचुः

मैत्रा. ७।१०

देवासुरा ह वै यत्र संयेतिर उभये

छान्दो. १।२।१

प्राजापत्यास्तद्ध देवा उद्रीथमाजहुः

देवास्तं परादुर्योऽन्यत्रात्मनो

देवान्वेदभूतानितं परादुः [बृह. २।४।६ + ४।५।७

देवास्तेनाहं सत्येन माविरोधिषि

ब्रह्मणेति

छान्दो. ३।१।१२

देवा ह वै समेत्य प्रजापतिमब्रुवन्...

कठश्रु. १२

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्...

प्रजापतियस्मात्त्वमहिम्ना...

सर्वाणि भूतान्युद्गृह्णात्यजसं

सृजति...तस्मादुच्यते उप्रमिति

[नृ. पृ. २।४+

नृसिंहो. १।७+

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन् का

सीता किं रूपमिति

सीतो. १

देवा ह वै भगवन्तमब्रुवन्नधीहि

भगवन्महाविद्यां

कठश्रु. १

देवा ह वै सृत्योः पाप्मभ्यः

संसाराच्च विभीयुः

नृ. पृ. २।१

देवा ह वै रुद्रमब्रुवन् कथमेतस्योपासनं

गणेशो. ५।१

(७) देवा ह वै सत्यं लोकमायन्

नृ. पृ. २. १

देवा ह वै स्वर्गलोकमायन्

चतुर्वे. ८

देवा ह वै स्वर्गलोकमायंस्ते रुद्रम-

पृच्छन्को भवानिति

अ. शिखो. १

देवाः सद्भिद्योपासका वैष्णवा

पूजति गुणातीताः...

सामर. ७६

देवी लोकाम आसीत्सैव जगदहं-

मसृजन्

चतुर्वे. १

(सौः) देवी वाचमजनयन्त

देवास्तां विद्यरूपाः पशवो वदन्ति

देव्यु. ७

[ऋ. अ. ६।७।५मं. ८।१००।११

सरस्व. २०

देवी दुर्गा दिव्यरूपां नमामि

वनदु. २

देवी ध्यायेत्तथा वृक्षे विष्णुरूपं च..

२ विल्वो. १९

देवेभ्यो लोकाः (विप्रतिष्ठन्ते)

कौ. स. ३।३

देवेषु ब्राह्मणोऽहं हि

२ विल्वो. २२

देवैर्त्रापि त्रिचिकित्सितं किल [कठो.

१।२१+१।२२

देवैरपि न लक्ष्येत योगिदेहो महाबलः

यो. शि. १।४१

देवो भूत्वा देवानप्येति [बृह. ४।१।२,

३.४.५.६.७

देवो भूत्वा देवानसृजन्

सुबालो. २।२

देवो मातरिश्वा स योऽस्माकं

भूत्यै...स्वाहा

पारमा. ३।३

देश इति च तद्विदः

वैतथ्य. २४

देशकालक्रियाशक्तिं यस्याः

सम्प्रकर्षणे । स्वस्वभावं विदित्वो-

द्भेग्यनन्तपदे स्थिता

महो. ५।१२१

देशकालविमुक्तोऽस्मि दिगम्बर-

सुखोऽस्म्यहम्

तैत्ति. ३।१९

[प्राहमिति च-] देशकालवस्तुपरि-

च्छेदगदित्यचिन्मात्रस्वरूपं प्राहम्

निरालं. ३०

देशतः कालतो वस्तुतः परिच्छेद-

रहितं ब्रह्म

त्रि. म. ना. १।३

देशदिगन्तरे च प्रत्यनुभूतं.. (मा.पा.)

प्रभो. ४।५

देशदिगन्तरे च प्रत्यनुभूतं पुनः पुनः

प्रत्यनुभवति इष्टं चादृष्टं च..

प्रभो. ४।५

सर्वं प्रपद्यति सर्वः पश्यति

देशादेशं गते चित्ते सत्ये यथेतदो

वपुः । अजाड्यसंविन्मन्त्रं

महो. ५।४९

तन्मयो भव सर्वदा

देशादेशान्तरप्राप्तौ संविदो मम्यमेव

यत् । निमिषेण चित्काकां तद्विद्वि

महो. ४।५९

देशे काले च पात्रे च

म. गी. १।७।२०

देशिकौचविधानेन.. अर्घ्यदानं

सतः कुर्याद्धानुरर्घ्यप्रियः सदा

सुखेन. ६।२

देशकण्डूधनं कार्यं वंशकाष्ठीकवीरणैः

शिखो. ७।५६

देशजात्यादिसन्ध्यान्ध्यावर्णाभ्रमस-

मन्त्रिस्तान् ।...पशुपतुमिव त्यजेत् म. वा. २. १

देहत्रयमसद्विद्धि कालत्रयमसत्सदा ।

गुणत्रयमसद्विद्धिहं सत्यात्मकः॥ ते. बिं. ३।४९

देहत्रयविहीनत्वात्कालत्रयवि-

वर्जनात् (नास्त्यनात्मा) ते. बिं. ५।१७

देहत्रयं स्थूलसूक्ष्मकारणानि विदुर्बुधाः

बराहो. १।६

देहत्रयातिरिक्तोऽहं.. ब्रह्माहमिति

यस्यान्तः स जीवन्मुक्त उच्यते ते. बिं. ४।२

देहदेहिबिभागैकपरित्यागेन भावना ।

देहमात्रे हि विद्यासः सङ्गो

बन्धाय कथ्यते

अ. पू. २।२

देहपतनपर्यंतं स्वरूपानुसन्धानेन वसेत्

ना. प. ७।३

देहभावविहीनोऽस्मिन्नाहीनो-

ऽस्मि सर्वदा

ते. बिं. ३।१४

देहमध्यगते व्योम्नि बाह्याकाशं

तु धारयेत्...धारणैषा परा

प्रोक्ता सर्वपापविशोधिनी

जा. द. ८।१३

देहमध्यगतोवह्निर्वह्निमध्यगता द्युतिः ।

जीवः परः परोजीवः सर्वं ब्रह्मेति.. बनदु. १७१-७३

देहमर्थं नवाङ्गुलं चतुरङ्गुलमुत्से-

वायतमण्डलाकृतिः । तन्मध्ये

नाभिः । तत्र.. चक्रं तत्तत्क्रमेण..

जीवो भ्रमति

शांङि. १।४।४

देहमध्ये ब्रह्मनाडी सुषुम्ना सूर्यरूपिणी

..पूर्णचन्द्राभा वर्तते

अद्वयता. २

देहमध्ये शिखिस्थानं तप्तजाम्बूनद-

प्रमम् । त्रिकोणं (मनुजानां तु सत्य-

मुक्तं हि सांक्रुते) द्विपदामन्यश्चतुरस्रं

चतुष्पदम् [त्रि. ब्रा. २।५६+

जा. द. ४।१, २

देहमध्ये शिखिस्थानं त्रिकोणं तप्त-

जाम्बूनदप्रभं मनुष्याणाम्

शांङि. १।४।३

देहमात्रावशिष्टः.. बालोन्मत्तपिशाचव-

देकाकी सञ्चरन्.. प्रणवात्मकत्वेन

देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः

तुरीया. ३

देहान्नं स्वांगुलिभिः षण्णवत्यङ्गुला-

वतम् । प्राणः शरीरादधिको

द्वादशाङ्गुलमानतः

त्रि. ब्रा. २।५४

देहादिरवाप्यते

अ. गी. १२।५

देहवासनया मुक्तो देहधर्मेन लिप्यते

महो. ४।६७

देहमन्यप्रवातानिमज्जनं वदित्तरणम्

आवनो. १०

देहस्थमनिलं देहसमुद्भूतेन वह्निना ।

न्यूनं समं वा योगेन कुर्वन्

ब्रह्मविदिष्यते

त्रि. ब्रा. २।५५

देहस्थः सकलो ज्ञेयो निष्कलो

देहवर्जितः

अ. वि. ३३

देहस्य पञ्च दोषा भवन्ति कामक्रो-

निःश्वासभयनिद्राः

मं. ब्रा. १।२

देहस्यापि प्रपञ्चत्वात्प्रारब्धा-

वस्थितिः कुतः

ना. बिं. २८

देहस्योज्ञयनादिकमुदानकर्म

शांङि. १।४।९

देहं विष्णुवालयं प्रोक्तं सिद्धिदं

सर्वदेहिनाम्

यो. शि. ५।४

देहं शिवालयं प्रोक्तं

यो. शि. १।१६८

देहातीतमवाप्यमेकमपरं तत्त्वं बुधैः

सेव्यताम्

अमन. २।१०७

देहातीतं तु तं विद्यान्नासाग्रे

द्वादशाङ्गुलम् । तदन्तं तं विजा-

नीयात्तत्रस्थो व्यापयेद्विभुः

अ. बि. ४३

देहात्पकाशते तद्वत्तत्त्वं देहविनाशकम्

अमन. २।१७

देहात्मज्ञानवज्ज्ञानं देहात्मज्ञान-

बाधकम् । आत्मन्येव भवेद्यस्य

स नेच्छन्नपि मुच्यते

बराहो. १।१५

देहात्मभावो नैवेष्टः प्रारब्धं त्यजताम्

अध्यात्मो. ५६

देहात्मत्वविपर्यासं न कदाचिद्ब्रजाम्यहं

१ अवधू. १७

देहादन्यः परोऽस्म्यहम्

महो. ४।१२७

देहादिरहितोऽस्म्यहम्

मेत्रे. ३।८

देहादीनात्मत्वेनाभिमन्यते सोऽभि-

मान आत्मनो बन्धुः

म. वा. २. २

देहादीनामसत्त्वात्तु यथा स्वप्ने

विबोधतः । कर्म जन्मान्तरीयं

यत्प्रारब्धमिति कीर्तितम्

ना. बिं. २३

देहादुत्क्रमणं चास्मात्पुनर्गमैवसम्भवम्

भवसं. १।५

[परमात्मेति च] देहादेः परतत्त्वा-

द्ब्रह्मैव परमात्मा

निरालं. ९

देहाद्विमुच्यमानस्य किमत्र परि-

शिष्यत एतद्वैतत्

कठो. ५।४

देहान्ते किं भवेज्जन्म तन्न जानन्ति

मानवाः । तस्माज्ज्ञानं च वैराग्यं

जीवस्य केवलं अमः

यो. शि. १।३२

देहान्ते ज्ञानिभिः पुण्यात्पापाच्च
फलमाप्यते । ईदृशं तु भवेत्तत्त-
त्तुक्त्वा ज्ञानी पुनर्भवेत् यो. शि. १।४९

देहान्ते वैकुण्ठमवाप्नोति तुलस्यु. १८

देहाभावाज्जरा न च ते. बि. ५।१९

देहाभिमाने गलिते विज्ञाते परमात्मनि । सरस्व. ५५

यत्रयत्रमनोयातितत्रतत्र परासृतं अ. प्र. १९

देहावभासकः साक्षी देहनाशे न नश्यति यो. शि. १।३१

देहावसानसमये चित्ते यद्यद्विभावयेत् । जन्मकारणम्

तत्तदेवं भवेज्जीव इत्येवं अ. प्र. २।२

देहिदेहविभागेकपरित्यागेन भावना । भ. गी. १।७।२

देहमात्रे हि विश्वासः सङ्गो-
बन्धाय कथ्यते सि. शि. १९

देहिनां सा स्वभावजा भ. गी. १।७।२

देहिनो देहमायान्ति न यावन्मंत्र-
नायकः । तावत्पापानि गर्जति.. सि. शि. १९

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे भ. गी. २।१३

देही (अन्तरात्मा) चात्यन्तनिर्मलः जा. द. १।२१

देही देहसमुद्भवान् भ. गी. १।४।२०

देही नित्यमवध्योऽयं अ. गी. २।३०

देहीव दृश्यते लोके (योगी) दग्ध-
कर्पूरवत्स्वयम् यो. शि. १।५८

देहे ज्ञानेन दीपिते बुद्धिरखण्डाकार-
रूपा यदा भवति तदा विद्वान्ब्रह्म-
ज्ञानाभिना कर्मबन्धं निर्दहेत् पैङ्गलो. ४।११

देहे देहयुतां वर भ. गी. ८।४

देहे देहिनमव्ययम् भ. गी. १।४।५

[ज्ञानमिति च-] देहेन्द्रियनिग्रह-
सद्वृत्तपासन-श्रवण-मनन-निदि-
ध्यासनैर्यद्यहं दृश्यस्वरूपं.. विकारेषु
चैतन्यं विना किञ्चिन्नास्तीति
साक्षात्कारानुभवो ज्ञानम् निरालं. १५

देहेन्द्रियेषु वैराग्यं यम इत्युच्यते बुधैः त्रि. प्रा. २।२८

देहेन्द्रियेष्वहंभाव इदंभावस्त-
दन्तिके । यस्य नो भवतः कापि
स जीवन्मुक्त इत्युच्यते अ. प्र. ४५

देहे यावदहम्भावो दृश्येऽस्मिन्याव-
दात्मता । यावन्ममेदमित्यास्था
तावच्चित्तादिविभ्रमः अ. प्र. ५।११

देहे लब्धाशान्तिपदं गते तदा पैङ्गलो. ४।९

प्रभामनो बुद्धिशून्यं भवति भ. गी. २।३०

देहे सर्वस्य भारत शाण्डि. १।४।४

देहेऽस्मिन्जीवः प्राणारूढो भवेत् अ. गी. १।१२३

देहेऽस्मिन् पुरुषः परः भ. गी. ८।२

देहेऽस्मिन्मधुसूदन

देहो देवालयः प्रोक्तः स जीवः
केवलः शिवः । त्यजेदज्ञान-
निर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत्
[मैत्रे. उ. २।१+ स्कन्दो. १०

देहो नवरत्नद्वीपः भावनों. २

(तर्हि) देहो ब्राह्मण इति चेत्तन्न, आचा-
ण्डालादिपर्यन्तानां मनुष्याणां
पाश्चात्तैविकत्वेन देहस्यैकरूपत्वात् व. सू. ४

देहोऽयमिति या बुद्धिस्तृष्णा
दोषामयः किल ते. बि. ५।९६

देहोऽहमिति दुःखं चेद्ब्रह्माहमिति
निश्चयः ते. बि. ६।१००

देहोऽहमिति यज्ज्ञानं तदसद्भावमेव ते. बि. ५।९३

देहोऽहमिति यज्ज्ञानं तदेव द्वैतम् ते. बि. ५।९४

देहोऽहमिति यज्ज्ञानं तदेवाज्ञानम्... ते. बि. ५।९३

देहोऽहमिति यज्ज्ञानं तदेव नरकं... ते. बि. ५।९१

देहोऽहमिति या बुद्धिः सा चाविद्या ते. बि. ५।९५

देहोऽहमिति सङ्कल्पस्तदुःखम् ते. बि. ५।९१

देहोऽहमिति सङ्कल्पः सत्यजीवः सः ते. बि. ५।९४

देहोऽहमिति सङ्कल्पस्तद्वन्धम् ते. बि. ५।९०

देहोऽहमिति सङ्कल्पो जगत्सर्वम् ते. बि. ५।९३

देहोऽहमिति सङ्कल्पो महत्संसारः ते. बि. ५।९०

देहोऽहमिति सङ्कल्पो महापापम् ते. बि. ५।९६

देहोऽहमिति सङ्कल्पो हृदयमन्थिरीरितः ते. बि. ५।९२

देत्यैर्जातं राक्षसैश्च त्रिलोहं
(छिद्रं पूजितं) सि. शि. २३

दैन्यदोषमयी दीर्घा वर्षते वार्धके
स्पृष्टा । सर्वापदामेकसखी हृदि
बाह्यदायिनी महो. ३।३६

दैन्यभावात् भूतानां सौभगाय
यतिश्चरेत् । पक्वं वा यदि वाऽपक्वं
याचमानो ब्रजेदधः

सं. सो. २।९४

देव असुरा एव च

भ. गी. १६।६

देवमेवापरे यज्ञं

भ. गी. ४।२५

देव चेवात्र पंचमम्

भ. गी. १८।१४

देवावीनं जगदिदम्, तद्देवं..

कन्नोप. ३

देवी भेषा सरस्वती

महाना. १३।४

देवीमाधृतमावर्त आदित्यस्यावृत्त-

मन्वावर्तयति.. बाहुमन्वावर्तते

कौ. व. २।८, ९

देवी सम्पद्भिर्मोक्षाय

भ. गी. १६।५

देवी शेषा गुणमयी

भ. गी. ७।१४

देवी प्रकृतिमाश्रिताः

भ. गी. ९।१३

देवी स्वस्तिरस्तु नः [चिन्त्यु. शां. [अ. खि. १०।१९१।५

देवेन नीयते देहो तथा कालोपमुक्तिषु २ आत्मो. १९

(स होवाच) देवेषु वै गौतम

तद्वरेषु मानुषाणां ब्रूहीति

बृह. ६।२।६

देवी विस्तरशः प्रोक्तः

भ. गी. १६।६

देवीरेतैः कुलप्राणां

भ. गी. १।४३

या (म्) मेष भूयोपगतो द्विवानः

वा. मं. १

आवापृथिव्योरनारम्भमिव नोपयान्ति...

आर्षे. ३।१

आवापृथिव्योरिदमन्तरं हि

भ. गी. ११।२०

आवापृथिव्योर्हिरण्यस्य सः कृतः सुवः

महाना. ६।६

आवापृथिव्यौ समधातामित्युताप्याहुः..

इषेत्. १।२।१

असत्किरीटमभयं... हिरण्यमयं सौम्य-

तनुं स्वभक्तायाभयप्रदम्

गोपालो. २।२३

अमृतोदास्त्वमसि चन्द्रमसः

महाना. १७।१५

अलोकः शस्यया (जयति)

बृह. ३।१।१०

अतः छलयतामस्मि

भ. गी. १०।३६

सौरध्वर्युः

चिन्त्यु. २।१

सौरष्ट्र होता सोऽन्नाधृष्यः

चिन्त्यु. ७।४

सौरासि वृष्टिमन्नायं सम्प्रयच्छति

१ ऐत. १।७।४

सौरष्ट्रहोता । सोऽन्नाधृष्यः

चिन्त्यु. ७।३

सौरिवौदन्तरिक्षं गीः पृथिवी भूम्

छान्दो. १।३।७

धौनेः पिता पितृयाच्छंभवासि

सहस्रै. १०

धौर्हिन्दारमादित्यः प्रस्तावोऽन्तरिक्ष-

शरीयोऽग्निः प्रतिहारः पृथिवी

निधनम्

छान्दो. २।२।२

धौः पृष्ठमन्तरिक्षमुदरं पृथिवी

पाजस्यम् (मेध्याश्वस्य)

बृह. १।१।१

धौः पृष्ठमन्तरिक्षमुदरमियमुरः

बृह. १।२।३

धौः कमला समस्ताः सा मे गृहे..

पुष्टिं स्वाहा

पारमा. ६।८

द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि

भ. गी. ३।१५

द्रक्ष्याम्यहमिति चक्षुः श्रोत्र्यास्यह-

मिति श्रोत्रमेवमन्यानि कर्माणि

बृह. १।५।१३

द्रविणं (मे) सर्वचंसं सुमेधा

अमृतोक्षितः [तैत्ति. १।१०।१+

जा. व. ४।४४

द्रवीभावं गण्डशैलालभन्ते (गानेन)

गान्धर्वो. ९

द्रव्यदर्शनसम्बन्धे याऽनुभूति-

रनामया । तामवष्टभ्य त्विष त्वं..

म. पू. २।१८

द्रव्यनाशे तथोत्पत्तौ पालने च तथा

नृणाम् । भवन्त्यनेकदुःखानि

तथैवेष्टविपत्तिषु

भवसं. १।२८

द्रव्यत्वमन्यभावो वा धर्माणां नोपपद्यते

म. शां. ५।३

द्रव्यमन्त्रक्रियाकालयुक्तयः साधु-

सिद्धिदाः । परमात्मपदप्राप्तौ

नोपकुर्वन्ति काश्चन [अ. पू. ४।६+

बराहो. ४।२९

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञाः

भ. गी. ४।२८

द्रव्यं कालं च चिन्मात्रं ज्ञानं क्षेत्रं

चिदेव हि । ज्ञाता चिन्मयरूपश्च

सर्वं चिन्मयमेव हि

तै. वि. २।२९

द्रव्यं द्रव्यस्य हेतुः स्यादन्यदन्यस्य..

म. शां. ५।३

द्रव्यार्थमन्नवस्त्वार्थं यः प्रतिष्ठार्थमेव

वा । सन्न्यसेदुभयभ्रष्टः स

मुक्तिं नाप्नुमर्हति

मैत्रे. २।२०

द्रष्टव्यमधिभूतमादित्यस्तत्राधिदेवतम्

सुबालो. ५।१

द्रष्टव्यमेवाप्येति, यो द्रष्टव्यमेवास्तमेति

सुबालो. ९।२

द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्या-

सितव्यः [बृ. उ. २।४।५+

४।५।६

द्रष्टव्यः सर्वसंहर्ता न मृत्युरवहेलया

महो. ४।२२

द्रष्टा दृश्यवशाद्बुद्धो दृश्याभावे विमु-

च्यते । जगत्त्वमहमित्यादि-

सर्गात्मा दृश्यमुच्यते

महो. ४।४८

द्रष्टाद्रष्टुःसाक्षयविक्रियःसिद्धो निरवयः

सुसिद्धो. ९।७

द्रष्टा भवति श्रोता भवति.. विज्ञाता

भवत्यन्नमुपास्तेति

छान्दो. ७।९।१

द्रष्टा श्रीता स्पृशति च मैत्रा. ६।७
 द्रष्टा स्पर्शयित्वा च विमुविप्रहे मैत्रा. ६।७
 क्षत्रिविष्टः महो. ६।८०
 द्रष्टा साक्षी चिदात्मकः महो. ६।१७
 द्रष्टुर्दृश्यसमायोगात्प्रत्यया- महो. ४।४७
 वन्दनिश्चयः म. गी. ११।३
 द्रष्टुर्दृश्यस्य सत्ताऽन्तर्बन्धइत्यभिधीयते म. गी. ११।४८
 द्रष्टुमिच्छामि ते रूपं ते. वि. ५।१५
 द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ते. वि. ५।१५
 द्रष्टुर्दर्शनदृश्यं वा ईषन्मात्रं कलात्मकम्
 द्रष्टुर्दर्शनदृश्यादिभावशून्ये...
 निर्विशेषे मिदा कुतः अध्या. २३, २४
 द्रष्टुर्दर्शनदृश्यादिवर्जितं तदिदं पदम् महो. ५।४८
 द्रष्टुर्दर्शनदृश्या(दि)नि त्यक्त्वा
 प्राप्तयः सह । दर्शन- (प्रत्यया-)
 प्रथमाभासमात्मानं (समुपास्महे)
 केवलं भज [मैत्रे. २।२९+महो. ६।१८ वराहो. ४।२०
 द्रष्टुर्दर्शनदृश्यानां विरामो यत्र वा
 भवेत् । दृष्टिस्तत्रैव कर्तव्या न
 नासाप्रावलोकिनी ते. वि. १।३०
 द्रष्टुर्दर्शनदृश्यानां मध्ये यदर्शनं
 स्मृतम् । नातः परतरं किञ्चि-
 निश्चयोऽस्त्यपरो मुने महो. २।६९
 द्रागभ्यासवशाद्यासि यदा ते वासनो-
 वयम् । तदाभ्यासस्य साफल्यं
 विद्धि त्वमरिमर्दनं मुक्तिको. २।८
 'द्रो वृत्तात्रेयाय नमः' इत्यष्टाक्षरः दक्षात्रे. १।२
 द्रुपदश्च महारथः म. गी. १।४
 द्रुपदो द्रौपदेयाश्च म. गी. १।१८
 द्रुहिणादिम देवेभ्य षट्पदालि-
 विराजितम् (अपश्यत्) ग. पू. १।८
 द्रौणं च भीष्मं च जयद्रथं च म. गी. ११।३४
 द्रौणं च मधुसूदनं म. गी. २।४
 द्रुणमोहेन भारत म. गी. ७।२७
 द्रुणदृष्टिर्गुणं शीतं न चोष्णं न
 शुष्कं न दुःखं (सत्यस्य)...
 द्रुणसेनैव देवत्यानां कर्तव्यं
 न कृतकृत्यो भवति ना. प. ३।८७

द्रुणदृष्टीनोऽस्मि सोऽस्मिहम् मैत्रे. ३।४
 द्रुणः सामासिकस्य च म. गी. १०।३३
 द्रुणासीतो विमत्सरः म. गी. ४।२२
 द्रुणैरभिभूयमानः परिभ्रमति... मैत्रा. ३।१२
 द्रुणैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैः म. गी. १५।५
 द्रुयं देवत्वमोक्षाय ममेति न ममेति च शिवो. ७।११४
 द्रुयाह प्राजापत्या देवाश्चासुराश्च ततः
 कनीयसा एव देवा ज्यायसा असुराः बृह. १।३।१
 द्रुयोर्द्वयोर्मधुज्ञाने परं ब्रह्म प्रकाशितम् अद्वैतो. १२
 द्रुयोर्मध्यगतं नित्यमस्तिनास्तीति
 पक्षयोः । प्रकाशनं प्रकाशाना-
 मात्मानं समुपास्महे महो. ६।१७
 द्वात्रिंशत् शतं वै देवथाहथान्ययं लोकः.. बृह. ३।१२
 द्वात्रिंशत्तत्त्वनिष्कर्षमापाद्य... वामां-
 सादिकटपन्तं विभाव्याद्यन्त-
 ग्रहसंमेलनमेकं ज्ञात्वा मूलमेकं
 सत्यं सृणमयं विज्ञातम् परब्र. ४
 द्वात्रिंशत्सु पत्रेषु द्वात्रिंशदक्षरं मन-
 राजं नारसिंहमानुष्टुभं भवति नृ. पू. ५।७
 द्वात्रिंशदक्षरं साम जानीयाद्यो
 जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. १।३
 द्वात्रिंशदक्षराऽनुष्टुप् भवत्य-
 नुष्टुभा सर्वमिदं भवति [ग. पू. २।८ नृ. पू. ५।६
 द्वात्रिंशदक्षरा वा अनुष्टुभ-
 त्यनुष्टुभा सर्वमिदं सृष्टम् नृ. पू. २।२
 द्वात्रिंशदक्षर्या गायत्र्या तत्सवितु-
 र्वरेण्यम्, तस्मादात्मन आकाशः.. त्रि. वा. १।३४
 द्वात्रिंशदुक्ता मणिबन्धयोश्च (वद्राक्षाः) सि. वि. १८
 द्वात्रिंशद्राक्षाः कण्ठमालाप्रयुक्ताः सि. शि. १७
 द्वात्रिंशन्मात्रया सन्मयेचयेत् त्रि. वा. २।५७
 पिङ्गलानिलम्
 (अथ) द्वात्रिंशद्वं द्वात्रिंशत्पत्रं
 चक्रं भवति नृ. पू. ५।६
 द्वादशकपालानि जिह्वा निरुक्तो. २।१
 द्वादशकृत्वः प्रयुक्ता (गायत्री)
 जागतेन छन्दसा सम्मिता
 दिवं लोकमभि... सन्ध्यो. २

द्वादशत्रयोदशेन तद्विदेहं पित्राऽऽसं
प्रतितद्विदेहं तन्म ऋतवोऽमर्त्य
आरम्भवम् कौ. त. १।२

द्वादशमात्रया इडया वायुमापूर्योदरे
स्थितं....रेफबिन्दुयुक्तमग्निमण्डल-
युतं ध्यायेद्रेचयेत्पिङ्गलया शां. १।५।२

द्वादशमात्रोयोगस्तु कालतो नियमः स्मृतः अ. ना. २४

द्वादशमासाः संवत्सरः सहवै. १२

द्वादशरात्रस्यान्ते अग्रये वैश्वानराय
...प्राजापत्यं चरं जुहुयात् कठरु. २

द्वादशरात्रं पयोभक्षा स्यात् (सञ्ज्यासी) कठरु. २

द्वादशरात्रीर्वीक्षितो भवति सहवै. १२

द्वादशवर्षे शुभ्रपूषापूर्वकं ब्रह्मचर्यम् ना. प. १।१

द्वादशवर्षसत्रयागोपस्थिताः....
शौनकादिमहर्षयः प्रत्युत्थानं कृत्वा.. ना. प. १।१

द्वादशवर्षसेवापुरस्सरं सर्वविद्याभ्यासं
कृत्वा...साधनचतुष्टयसम्पन्नः
सञ्ज्यस्तुमर्हति ना. प. २।१

द्वादशवैमासाः संवत्सरस्यैत आदित्याः बृह. १।१।५

द्वादशसुपत्रेषु द्वादशाक्षरं वासुदेवं भवति नृ. पू. ५।७

द्वादशाक्षरा वै जगती, जगत्या
सम्पन्नं भवति नृ. पू. ५।४

द्वादशाक्षुलदैर्घ्ये च अम्बरं चतुरक्षुलम् योगकुं. १।११

द्वादशाक्षुलपर्यन्ते नासाग्रे विमले-
ऽम्बरे । संविदृशि प्रशाम्यन्त्यां
प्राणस्पन्दो निरुप्यते शां. १।७।३२

द्वादशादित्या रुद्राः सर्वा देवता
जायन्ते पुरुषोत्तमात् सि. वि. ४

द्वादशादित्यावलोकनम् निर्वाणो. १

द्वादशान्तपदं स्थानम् (दक्षिणामूर्तेः)
(अथ) द्वादशारं द्वादशपत्रं चक्रं द. मू. १६

भवति (नारसिंहं) नृ. पू. ५।४

द्वादशारं महाचक्रं हृदये चाप्य-
नाहृतम् । तदेतत्पूर्णगिर्याख्यं पीठं.. यो. शि. १।१७३

द्वादशारे महाचक्रे...तावज्जीवो
अमर्त्येव यावत्तत्त्वं न विन्दति यो. चू. १३

द्वादशार्कैर्जलयादशसौममुख
वीर इनुमन् लांगुलो. ८

द्वादशारख्येनापि भूचरत्वं हि
विद्वदपि अमन. १।६२

द्वादशीति भूम्यां तिष्ठति (कृष्णमूर्तिः)
तां हि ये यजन्ति ते मृत्युं तरन्ति गोपालो. १।२०

द्वादश्यां (मात्रायां) ब्रह्म शाश्वतम् ना. वि. १६

द्वादश्यां शतमित्याहुः (भाद्रकृष्णे
श्राद्धे कृते शतगुणं पुण्यं) इतिहा. ९०

द्वापरस्य पश्चाद्वर्तते कलिः राधोप. २।२

द्वापरादावृषीणामेकदेशो दोषयती-
ह चिन्तामापेदे २ प्रणवो. १९

द्वापरान्ते नारदो ब्रह्माणं प्रति
जगाम, कथं भगवन्नां पर्यटन् कलिसं. १

कलिं सन्तरेयमिति

द्वाभ्यां (चिच्छिदाकाशाभ्यां) शून्यतरं
विद्धि चिदाकाशं महामुने म. वा. २. ५

द्वाभ्यां (शुक्रशोणिताभ्याम्) समेन
नपुंसको भवति निरुक्तो. १।३

द्वा मण्डला द्वास्तना बिम्बमेकं
मुखं चाधस्त्रीणि गुहा सदनानि
कामी कलां..विदित्वा.. त्रि. म. ११

द्वारं नाशनमात्मनः भ. गी. १६।२१

द्वाराणां नव सन्निरुद्धय मरुतं..
आत्मध्यानयुतः.. यो. चू. १०७

द्वाविमावपि पन्थानौ ब्रह्मप्राप्तिकरौ
शिवौ । सद्योमुक्तिप्रदश्चैकः
क्रममुक्तिप्रदः परः वराहो. ४।४२

द्वाविमौ न विरज्येते विपरीतेन
कर्मणा । निरारम्भो गृहस्थश्च
कार्यवाञ्छैव भिक्षुकः ना. प. ६।३६

द्वाविमौ पुरुषौ लोके भ. गी. १५।१६

द्वाविंशति दिनानि स्यात्...प्राप्ता-
सिद्धिर्भवेत्तस्य प्रापयेद्या
जगत्स्थितिम् अमन. १।६८

द्वासप्ततिसहस्राणि प्रतिनाडीषु
तैतिलम् । छिद्यते ध्यानयोगेन.. क्षुरिको. १७

द्वासप्ततिसहस्राणि स्थूलाः सूक्ष्मा-
श्च नाडयः त्रि. प्रा. २।७५

द्वाविंशेन परमादित्याज्जयति तन्नाकं
ताद्विशोकम् छान्दो. २।१०।५

द्वावेतौ पक्षी अचरंचरन्तौ नाभुरं
वायुनीतेयश्चैकमुनक्तिभोक्तेस्वाहा पारमा. ४।२

द्वावेतौ ब्रह्मतां यातौ द्वावेतौ विगत-

ज्वरो । आपतत्सु यथाकालं

सुखदुःखेणनारतो

महो. ६।४७

द्वावेव (भिक्षू) मिथुनं स्मृतम्

ना. प. ३।५६

द्वा सुपर्णा भवतो ब्रह्मणोऽहं सम्भूत-

स्तथेतरो भोक्ता भवति

गोपालो. १।११

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया [ऋ. अ.

[=मं. १।१६४।२०+

२।३।१७

[श्वेता. ४।६+ना. उ. ता. १।१+

मुण्ड. ३।१।१

द्विचन्द्रशुक्तिकारूप्यमृगतृष्णादि-

मेदतः । अभ्यासं प्राप्य जाग्रत्त-

त्स्वप्नो नानाविधो भवेत्

महो. ५।१५

द्विजौ गर्भवासाद्विमुक्तोऽपि मुच्यते

अ. शिखो. ३

द्वितीयकारणाभावादनृत्पन्नमिदं जगत्

महो. ५।५८

द्वितीयमापो भवति (नारायणः)

ना. पू. ता. १।१

द्वितीयया चास्य विष्णोः कालतो

व्याप्तिरुच्यते

मुद्रलो. १।२

द्वितीयं तु नाभौ.. (पुं०) द्वादशं

कण्ठपृष्ठे मौक्षं देहि शिरसि

ऊर्ध्वपुं. ६

द्वितीयं तृतीयं (पृच्छन्तं पुत्रं)

तत् होवाच मृत्यवे त्वा ददामीति

कठो. १।४

द्वितीयं यः पित्रेयजुर्वेदः प्रीणातु

द्वितीयं (गायत्रमक्षरं) वायव्यम्

आचम. ४

द्वितीयं संख्याख्यं च (योगविघ्नं)

द्वितीयं स्वाधिष्ठानचक्रं षड्दलं

सन्ध्यो. २१

तन्मथ्ये.. लिङ्गं.. ध्यायेत्

योगकुं. १।५९

द्वितीयाद्वितीयवान् भवति

द्वितीया (मात्रा) द्वितीयस्य

सौभाग्य. २५

द्वितीयाद्वि मयं भवति

द्वितीयाऽन्तरिक्षं स उकारः स यजु-

कौषी. ४।११

मिर्यजुर्वेदो विष्णुरुद्राक्षिष्टुप्

दक्षिणाग्निः

नृसिंहो. ३।१

द्वितीया मृतके ह्यहमे समुत्पन्ना

(महाभाष्या)

बुध. १।४।२

द्वितीयायां समुत्क्रान्तौ भवेद्यज्ञो

महात्मवान् । विधाधरस्तृतीयायां

अ. शिखो. १

गान्धर्वस्तु चतुर्थिका

द्वितीया विधुमती कुण्या विष्णुदेवत्या

जीतो. ३

३९

द्वितीया स्वप्नं, तृतीया सुषुप्तिश्चतुर्थी

तुरीयं मात्रा

अ. शिखो. ३

द्वितीयां च तृतीयां च भूमिकां

प्राप्नुयात्ततः

अक्षुप. ३१

द्वितीयां (महद्दृक्षस्य शाखां)

जहात्यथ सा शुष्यति

छान्दो. ६।११।२

द्वितीये (हृदन्तर्भूते) नादे

गात्रभजनम्

हंसो. ८

द्वितीये धामनि पूर्वेणैव मनुना

बिन्दुहीना शक्तिभूतहृल्लेखा

क्रोधमुनिनाधिष्ठिता

त्रि. ता. १।१६

द्वितीयेन तु पिण्डेन मांसत्व-

कञ्छोणितोद्भवः

पिंडो. ४

द्वितीये पूर्वाग्रायो गोवर्धनमठः ..

द्वितीये गोपीक्रीडास्थानम्

मठान्ना. ४

द्वितीयोऽन्तरिक्षं स उकारः स

यजुर्मिर्यजुर्वेदो विष्णुरुद्राक्षिष्टुप्

दक्षिणाग्निः सा साम्नो द्वितीयः

पादो भवति

नृ. पू. २।१

द्वितीयो (धर्मस्कन्धो) ब्रह्मचार्या-

चार्यकुलवासी

छान्दो. २।२३।१

द्वितीयो मकार एवं द्विवर्ण एकाक्षर

ओमित्योङ्कारो निर्वृत्तः

२ प्रणवो. १६

द्विधर्मोन्धं तेजसेन्धं सर्वं पश्यन्पश्यति

द्विधा त्रिधा वृद्धिस्त्वं शान्तिस्त्वं

मैत्रा. ६।३५

पुष्टिस्त्वं....सर्वमसर्वम्

अ. शिरः ३।१

द्विधामृतं बदेच्छिन्नं मित्रं च

बहुधा स्थितम्

शिवो. ७।८३

द्विधा वा एष आत्मानं विभर्ति

द्विप्रकारं ध्यानम् । समाधिस्त्वेकरूपः

मैत्रा. ६।१

द्विप्रकारमसंसर्गं तस्य भेदमिमं शृणु

द्विभुजं ज्ञानमुद्राढ्यं वनमालिन-

शांदि. १।१।२

मीश्वरम् ।...चिन्तयन्नेतसा

कुण्डं मुक्तो भवति संसृतेः

अक्षुप. २३

द्विभुजं स्वर्णकचिरतनुं पद्यानिमैक्षणम्

(मकारं समुच्चृत्य भरताय नमः)

गो. पू. १।५-७

द्विभुजं स्वर्णवर्णाभिरामसेवापरायणम् ।

मौखीकौपीनसहितं सुमित्रा-

राश्वर. २।१००

तनयं भजे

राश्वर. २।१०४

द्विमुजं स्वर्णवर्णमि...मां (मारुतिं)

ध्यायेद्ब्रामसेवकम्

रामर. २।१०६

द्विमासाभ्यन्तरे शिरः सम्पद्यते

निरुक्तो. १।४

द्विवक्त्रं तु मुनिश्रेष्ठ चार्धनारीश्वरात्म-
कम् । धारणादर्धनारीशः प्रीतये

तस्य नित्यशः

रु. जा. २५

द्विविधश्चित्तनाशोऽस्ति सरूपोऽरूप

एव च । जीवन्मु- (क्तौ) क्तः

सरूपः स्यादरूपो देहमुक्तिः

[अ. पू. ४।१४+

मुक्तिको. २।३२

द्विविधा तेजसो वृत्तिः सूर्यात्मा

चानलात्मिका । तथैव रसशक्तिश्च

सोमात्मा चानलात्मिका

बृ. जा. २।३

द्विविधाः सिद्धयो लोके कल्पिता-

कल्पितास्तथा

यो. शि. १।१५१

द्विविधोऽयमसंसर्गः सामान्यः श्रेष्ठ

एव च

अक्षुप. २३

द्विविधो वासनान्यूहः शुभश्चैवाशुभश्च

मुक्तिको. २।३

द्विपदारेण प्रधिनैकचक्रः

बा. मं. १६

द्विषन्तं मम (मह्यं) रन्ध्रयन्मोऽअहं

द्विषतो रथम्

सूर्यता. २।१

द्विसप्तसिंहस्राणि (नाड्यः)

वासां मुख्याश्चतुर्दश

जा. द. ४।६

द्विसप्तसिंहस्राणि नाडीद्वाराणि पञ्चरे

यो. शि. ६।१७

द्विसप्तसिंहस्राणि नाडीभिस्त्वा

तु मूर्धनि

१ प्रणवो. ११

द्विसप्तसिंहस्राणि नाडीमार्गेषु वर्तते

ध्या. वि. ९८

द्विसप्तसिंहस्राणि नाडीं भित्वा

च मूर्धनि । वरदः (वायुः)

सर्वभूतानां सर्व व्याप्यावतिष्ठति

प्र. वि. ११

द्विसप्तसिंहस्राणि नाड्यः स्युर्बायु-

गोचराः

यो. शि. ६।१४

द्विसप्तसप्तत्रिदशर्षुः, पञ्चविंशति-

राशस्थितौ (शुक्रशोणितबिन्दुः)

अनौ भवति

निरुक्तो. १।४

द्विसंख्यावानहं न च । सदसत्सर्वहीनो-

ऽस्मि सङ्कल्परहितोऽस्त्यहम्

मैत्रा. ३।७

द्विचरं त्रिचरं चापि...सराणां

सर्वकं चापि विध्यात्कण्ठदेशतः

रु. जा. ७. १७

द्विस्तावत्पश्चादुदेता पुरस्तादस्तमेता-

ऽऽदित्यानामेव तावदाधिपत्यं

स्वाराज्यं पर्येता

छान्दो. ३।८।४

द्विस्तावदक्षिणत उदेतोत्तरतोऽस्तमेता

रुद्राणामेतावदाधिपत्यं स्वाराज्यं

पर्येता

छान्दो. ३।७।४

द्विस्तावदुत्तरत उदेता दक्षिणतोऽस्त-

मेता मरुतामेव...पर्येता

छान्दो. ३।९।४

द्विस्तावदूर्ध्वमुदेतावागस्तमेता

साध्यानामेव..पर्येता

छान्दो. ३।१०।४

द्वे अक्षरे ब्रह्मपरे त्वनन्ते विद्याविद्ये

निहिते यत्र गूढे

श्वेताश्व. ५।१

द्वे अहोरात्रे (ब्रह्मणः) एकं दिनं भवति

त्रि. म. ना. ३।४

द्वे गुल्फे तु प्रकुर्वीत जङ्घे चैव त्रय-

स्त्रयः । द्वे जानुनीतथोरुभ्यां गुदे

शिमे त्रयस्त्रयः । वायोरायतनं

चात्र नाभिदेशे समाश्रयेत्

सुरिको. ६, ७

द्वे देवानभाजयत्

बृह. १।५।१

(अथ) द्वे द्वे अक्षरे ताभ्यामुभयतो

दधार (प्रजापतिः)

अन्यक्तो. ६

द्वे पदे बन्धमोक्षाय निर्ममेति ममेति

च । ममेति बध्यते जन्तुर्निर्ममेति

विमुच्यते [महो. ४।७२+

वराहो. २।४३

द्वे पदे बन्धमोक्षाय न ममेति

ममेति च

पैङ्गलो. ३।१९

द्वे प्रतिष्ठे द्वे एते अक्षरे तस्योपनि-

षदहरिति हन्ति पाप्मानं जहाति

च य एवं वेद

बृ. च. ९।५।३, ४

द्वे बीजे चित्तवृक्षस्य प्राणस्पन्दन-

वासने । एकस्मिन् तयोः क्षीणे

क्षिप्रं द्वे अपि नश्यतः

मुक्तिको. २।२७

द्वे बीजे चित्तवृक्षस्य वृत्तिव्रतति-

धारिणः । एकं प्राणपरिस्पन्दो

द्वितीयं दृढभावना [अ. पू. ४।४१+

मुक्तिको. २।४८

द्वे (ब्रह्मणी हि मन्तव्ये) ब्रह्मणी

वेदितव्ये शब्दब्रह्म परं च यत् ।

अन्वयब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्म-

विगच्छति [मैत्रा. ३।२२+

त्रि. वा. ३।२७

द्वे चने स्तः कृष्णवनं भद्रवनम् गोपालो. १।१८
 द्वे वाव खल्वेते ब्रह्मण्योतिषी रूपके मैत्रा. ६।३६
 शान्तमेकं समृद्धं चैकम्
 द्वे वाव ब्रह्मणी अभिष्येये.. शब्द- मैत्रा. ६।२२
 आशब्दश्च
 द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे कालश्चाकालश्च मैत्रा. ६।१५
 द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे मूर्ते चामूर्ते च
 [बृह. २।३।१+ मैत्रा. ५।३
 द्वे विद्ये वेदितव्ये इति स्म ह यद्ब्रह्म-
 विदो वदन्ति परा चैवापरा च मुण्ड. १।१।४
 द्वे विद्ये वेदितव्ये तु शब्दब्रह्म परं
 च यत् अ. वि. १७
 द्वे विद्ये वेदितव्ये हि परा चैवापरा च ते रुद्रह. २८
 द्वे वै विद्ये वेदितव्ये इति चार्थवर्णी श्रुतिः भवसं. ३।२
 द्वेषाणूस्मल्लोऽयं मत्सरो मुष्टिको जयः कृष्णो. १४
 द्वेषोवाहनमारणादिकुहकैर्मन्त्रप्रपञ्चो-
 द्वैः।.. तस्मात्तत्सकलं मनोविरचितं
 त्वक्त्वाऽमनस्कं भज अमन. १।७
 द्वे सूती अद्भुतं पितृणामहं देवाना-
 मुत मर्त्यानाम् अ. उ. ६।२।२
 द्वे तभाविमुक्तोऽस्मि सच्चिदानन्द-
 लक्षणः। एवं भावय यत्नेन
 जीवन्मुक्तो भविष्यसि अ. पू. ५।६८
 द्वे तस्याग्रहणं तुल्यमुभयोः प्राज्ञ-
 तुर्ययोः। बीजनिद्रायुतः प्राज्ञः
 सा च तुर्यं न विद्यते आगम. १३
 द्वे तं यदि तदाऽद्वैतं द्वेताभावेद्वयं न च
 ते. वि. ५।२७
 द्वे तद्वैतमुभयं भवति आ. प्र. १
 द्वे तद्वैतविहीनोऽस्मि द्वन्द्वहीनोऽस्मि
 सोऽस्त्यहम् मैत्रे. ३।४

द्वे तद्वैतसमुद्भवैर्जगन्निर्माणलीलया ।
 परमात्ममयी शक्तिरद्वैतैव विजम्भते महो. ६।६२
 द्वे तद्वैतसमुद्भेदेर्जामरणविभ्रमेः ।
 स्फुरत्यात्मभिरात्मैव चित्तै-
 रब्धीव वीचिभिः अ. पू. २।४०, ४१
 द्वे तद्वैतस्वरूपात्माद्वेताद्वैतादिवर्जितः म. वा. र. १५
 द्वे तसम्भवविज्ञानसंसिद्धाद्वयतारकम् ।
 तारकं ब्रह्मेति गीतं.. [अद्वयता. शीर्षकं
 द्वे तो भवति, अद्वै तो भवति ग. शो. २।२
 द्वौ (देवौ) इत्योमिति होवाच बृह. ३।९।१
 द्वौ क्रमौ चित्तनाशस्य योगो ज्ञानं
 मुनीश्वर । योगस्तद्वृत्तिरोधो हि
 ज्ञानं सम्यगवेक्षणम् शांदि. १।७।२४
 द्वौ द्वादशकौ वगवितद्वै व्याकरणं
 भात्वर्थवचनं.. छन्दोवचनं च २ प्रणवौ. १८
 द्वौ बाणवन्तौ सपत्नातिव्याधिनी
 हस्ते कृत्वीपोत्तिष्ठेत् बृह. ३।८।२
 द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्
 (अथ) द्वौ वा एता अस्य म. गी. १५।६
 पन्थानौ... व्यावर्तते मैत्रा. ६।१
 द्वौ वा मुख्यौ मुख्यधारौ समुखौ
 सानन्दौ सस्मेरौ... स्वाहा आरमा. ५।१
 द्वौ वेदाननुब्रवीत सर्वमायुरियादिति
 दध्योदनं पाचयित्वा सर्षिष्मन्त-
 मग्नीक्षातामीश्वरौ जनयितवै बृह. ६।४।१५
 द्वौ सुपर्णौ शरीरेऽस्मिन् जीवेशाख्यौ
 सहस्रिष्यतौ । तयोर्जीवः फलं मुक्ते
 कर्मणो न महेश्वरः [रुद्रह. ४१+ अ. पू. ४।३२
 अक्षरं च भवेन्मृत्युर्यक्षरं ब्रह्म
 शाश्वतम् । ममेति अक्षरं मृत्यु-
 र्यक्षरं न ममेति च शिवो. ७।११५
 अक्षरः शिवमंत्रोऽयं शिवोऽपनिषदि.. शिवो. १।१९

ध

धकारी धारणा, धियैव धार्यते
 भगवान्परमेश्वरः
 धनजयस्य शोभादि कर्म प्रोक्तं
 हि सांक्रुते

त्रि. ता. १।७

जा. द. ४।३३

धनदारेषु वृद्धेषु हः खयुक्तं न तुष्टता ।
 वृद्धाणां मोहमायायां कः
 धनमात्राख्यानह
 धनधान्यबहुवत्नवन्तो.. बलवन्तो
 बहुधनवन्त इति

महो. ५।१६८

सुरेया. १।७

धनमानमदान्विताः	भ. गी. १६।१७
धनवाञ्छानान्नानो भयातीतः	ना. प. ९।२२
...सर्वेश्वरः सोऽहमिति	मैत्रे. २।२४
धनवृद्धा वयोवृद्धा विद्यावृद्धा-	ग. पू. २।१३
स्तथैव च । ते सर्वे ज्ञानवृद्धस्य	भ. गी. १।२०
किंकराः शिष्यकिङ्कराः	मुण्ड. २।२।३
धनार्थी मादकैर्हुनेत्	रुद्रह. ३८
धनुर्यस्य पाण्डवः	मैत्रा. ६।२४
धनुर्यहीत्वौपनिषद् महास्त्रं शरं	कृष्णो. २३
सुपासानिशितं सन्धयीत ।	१ अवधूतो. २९
आयस्य तद्वावगतेन चेतसा	१ अवधूतो. ३०
लक्ष्यं तदेवाक्षरं साम्यं विद्धि	१ अवधूतो. २८
धनुस्तारं शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्य-	१ अवधूतो. ३०
मुच्यते । अप्रमत्तेन वेद्व्यं शर-	१ अवधू. २७
वत्तन्मयो भवेत्	१ अवधूतो. २८
धनुः शरीरमोमित्येतच्छरः शिखा-	१ अवधू. २७
ऽस्य मनः	१ अवधूतो. २८
धनुः शार्ङ्गं स्वमाया च शरत्कालः	१ अवधूतो. ३०
सुभोजनः	१ अवधू. २७
धन्योऽहं धन्योऽहं कर्तव्यं मे न	१ अवधूतो. २८
विद्यते किञ्चित्	१ अवधू. २७
धन्योऽहं धन्योऽहं तृप्तेर्मे कोपमा	१ अवधूतो. २८
भवेत्लौके	१ अवधू. २७
धन्योऽहं धन्योऽहं दुःखं सांसा-	१ अवधूतो. २८
रिक्तं ने वीक्षेऽद्य	१ अवधू. २७
धन्योऽहं धन्योऽहं धन्यो धन्यः पुनः	१ अवधूतो. २८
पुनर्धन्यः	१ अवधू. २७
धन्योऽहं धन्योऽहं नित्यं स्वात्मान-	१ अवधूतो. २८
मखसा वेद्यि	१ अवधू. २७
धन्योऽहं धन्योऽहं प्राप्तव्यं सर्वमत्र	१ अवधूतो. २८
सम्पन्नम्	१ अवधू. २७
धन्योऽहं धन्योऽहं ब्रह्मानन्दो	१ अवधूतो. २८
विभाति मे स्पष्टम्	१ अवधू. २७
धन्योऽहं धन्योऽहं स्वस्याज्ञानं	१ अवधूतो. २८
पलायितं कापि	१ अवधू. २७
धराविवरमसानां कीटानां समतां गताः	१ अवधूतो. २८
धरो ध्रुवश्च सौमश्च कृषश्चैवानिलो-	१ अवधू. २७
ऽनलः । प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवो-	१ अवधूतो. २८
ऽष्टावितीरिताः	१ अवधू. २७

धर्ता हर्ता विश्वरूपत्वमेति	त्रिपुरो. १५
धर्म इति, धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतं	महाना. १६।१२
धर्माज्ञातिदुष्करं तस्माद्धर्मे रमन्ते	भ. गी. १।१
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे	शारीरको. ९
धर्मज्ञानं राजसम्	पा. ब्र. ३०
धर्मधर्मित्ववार्ताचमेदेसतिहि विद्यते	रा. पू. १।४
धर्ममार्गं चरित्रेण ज्ञानमार्गं च नामतः	अध्यात्मो. ३८
धर्ममेवमिमं प्राहुः समाधिं योगवित्तमाः	सीतो. २०
धर्मशास्त्रं महर्षीणामन्तःकरणसम्भृतम्	भ. गी. ४।८
धर्मसंस्थापनार्थाय	बृह. २।५।१
धर्मस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषोऽयमेव	भ. गी. ९।३
सं योऽयमात्मेदममृतमिदं सर्वम्	तैत्ति. १।११।१
धर्मस्यास्य परंतप	इतिहा. ८
धर्मं चर स्वाध्यायान्मा प्रमदः	छान्दो. ७।७।१
धर्मं चरति नाधर्मे...परं पश्यति माऽपरं	बृह. १।४।१४
धर्मं चाधर्मं च सत्यं चानृतं च	बृह. १।४।१४
धर्मं तदेतत् क्षत्रस्य क्षत्रम्	इतिहा. ४४
धर्मं वा वदन्तं सत्यं वदतीति	
धर्मः स्वधायां चरते ददाति	
धर्माधर्ममसन्मयम् । लाभालाभावस-	
द्विद्धि जयाजयमसन्मयम्	ते. विं. ३।९६
धर्माधर्मसंयमादतीतानागतज्ञानं	शांडि. १।७।५२
धर्माधर्मं दहत्यभास्करममर्यादं	सुबालो. १५।२
निरालोकमतः परं दहति	वैतथ्य. २५
धर्माधर्मौ च तद्विदः	
धर्माधर्मौ सुखं दुःखं तथा मरण-	
जन्मनी । धिया येन सुसंत्यक्तं	
स जीवन्मुक्त उच्यते	महो. २।५६
धर्माज्ञं प्रमदितव्यम्	तैत्ति. १।११।१
धर्माज्ञातिदुष्करम्	महाना. १६।१२
धर्मान्ये कुर्वन्ति तद्दहसंसारविचरन्ति	सामर. २७
धर्मा य इति जायन्ते जायन्ते	
ते न तत्त्वतः	अ. शां. ९८
धर्मार्थकामकेयूरैर्दिव्यैर्दिव्यमयेरितैः ।	
कण्ठं तु निर्गुणं प्रोक्तं माह्वते	
आद्ययाजया । माळा निगद्यते	गोपालो. १।३२
धर्मावहं पापनुदं भोगं ज्ञात्वा-	
स्वस्यममृतं विश्वधाम	शेता. ६।६
धर्मावहां पापनुदां भोगेही	गुणका. ६६

धर्माविरुद्धो भूतेषु	म. गी. ७।११
धर्मेण पापमपनुदति धर्मं सर्वं	
प्रतिष्ठितं तस्माद्धर्मं परमं वदन्ति	महाना. १७।६
धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतं	
धर्माज्ञातिदुष्करम्	महाना. १६।१२
धर्मं नष्टे कुलं कृत्स्नम्	म. गी. १।४०
धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा	महाना. १७।६
धर्मो नास्ति शुचिर्नास्ति सत्यं नास्ति	
भयं न च	त. वि. ५।२०
वर्ण्यं संवादमावयोः	म. गी. १८।७०
वर्ण्यादि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्	म. गी. २।३१
वातशयन्तु सर्वतः स्वाहा	तै. उ. १।४
वाता विधाता कर्ता विकर्ता दिव्यो	
देव एको नारायणः	सुबालो. ६।१
वाता च सृष्टौ विष्णुश्च स्थितौ	
रुद्रश्च नाशे भोगाय चन्द्र	
इति प्रथमजा बभूवुः	यो. चू. ७२
वाता भुवसोमानिलानलप्रत्यूष-	
प्रभासश्चतुर्थे	सूर्यता. ५।१
वाता पुरस्ताद्यमुदाजहार	
[महावा. २।+ चित्र्यु. १२।७	तै. आ. ३।१२।७
वाता ब्रह्मा प्रजापतिर्मधवा..	
सर्वं नारायणः	सुबालो. ६।१
वाता यथा पूर्वमकल्पयत्	महाना. ६।३
[क्र. अ. ८।८।४८=मं. १०।१९०।३	तै. आ. १०।१।१४
वाता वसूनां सुरभिः सृजानां	ग. पू. १।१
वाता विधाता पवनः सुपर्णः	एकाक्षरो. ६
वाताऽहं विद्यतोमुखः	म. गी. १०।३३
वातुवहं महारोगं पापमन्दिरमधुवम्	
(विहं) विकाराकारविस्तीर्णं (सूतदेहं)	
सृष्ट्वा ज्ञानं विधीयते	मैत्रे. २।५
वातुः प्रसादान्महिमानमीशम्	
[महाना. १०।१+	ना. व. ता. १।३
वातूनां वर्धनेनैव प्रबोधो वर्धते तनौ ।	
वदन्ते सर्वपापानि..	बराहो. ५।४९
वात्रीकउपमाणं यच्छ्रेष्ठमेतत् (रुद्राक्षस्य) क. जा. ६	
धानाकह इव वृक्षोऽजसा प्रेत्यसम्भवः बृह. ३।५।३२	
धामनयं नियन्तारं धामत्रयसमन्वितम् पं. ब्र. ८	

धामानि वेद भुवनानि विश्वा	महाना. २।५
[क्र. अ. ८।३।१७=	मं. १०।८२।३+
[अथर्व. २।१।३+वा. सं. १७।२७	तै. आ. १०।१।४
धारणं (लिङ्गस्य) देहे कैवल्यस्वरूपम्	लिङ्गोप. २
धारणं देहे प्रणवस्वरूपम्	लिङ्गोप. २
धारणं देहे ब्रह्मस्वरूपम्	लिङ्गोप. २
धारणं देहे वेदस्वरूपम्	लिङ्गोप. २
धारणं धर्मशास्त्राणां विज्ञानं विजने रतिः	आयुर्वे. १६
धारणात्तस्य सूत्रस्य नोच्छिष्टो	
नाशुचिर्भवेत्	ब्रह्मो. १०
धारणाद्वादश प्रोक्तं ध्यानं योग-	
विशारदैः । ध्यानद्वादशकेनैव	
समाधिरभिधीयते	यो. चू. ११२
धारणादेव मरुतस्तत्तदारोग्यमश्रुते	त्रि. ब्रा. ११२
धारणाभिर्मनोवैर्यं याति चैतन्य-	
मद्भुतम् । समाधौ मोक्षमाप्नोति	
त्यक्त्वा कर्म शुभाशुभम्	यो. चू. ११०
धारणाभिश्च किल्बिषम् (दहेत्)	योगो. २७
(अथ) धारणा-सा त्रिविधा, आत्मनि	
मनोधारणं, दह्राकाशे बाह्याकाश-	
धारणं पृथिव्यप्तेजोवाय्वा-	
काशेषु पञ्चमूर्तिधारणं च	शांडि. १।८।२
धारणां धारयेद्योगी	योगो. २७
धारयन्नचलं स्थिरः	म. गी. ६।१३
धारयन्नासिकामध्यं तर्जनीभ्यां	
विना दृढम्	योगकुं. १।३६
धारयाम्यहमोजसा	म. गी. १५।१३
धारयित्वा प्रयत्नेन सुवकर्म ययोदितं	आत्मो. २
धारयेत्पादुके नित्यं... पर्यटे-	
दाश्रमाद्वहिः	शिवो. ७।४६
धारयेत्पूरितं विद्वान् प्रणवं सञ्जपन्	
वशी । उकारमूर्तिं सन्ध्यायन्	जा. व. ५।८
धारयेन्मनसा प्राणं संख्याकालेषु	
वा सदा । सर्वरोगविनिर्मुक्तः..	शांडि. १।७।४४
धाराभ्य इव ज्ञातकः (मनोविरमति)	महो. २।१३
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुधेः	म. गी. १।२३
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युः	म. गी. १।४६
धार्तराष्ट्रान् कपिज्वजः	म. गी. १।२०
धार्तराष्ट्रान् स्वयान्ववान्	म. गी. १।३१

धार्मिको ब्राह्मण इति चेत्, न;
 क्षत्रियादयो हिरण्यदातारो
 बहवः संति व. सू. ८
 विगतीशार्चनं जन्म बृ. जा. ५।१७
 धिग्नाममशिवालयम् बृ. जा. ५।१७
 धिग्मस्मरहितं भावं बृ. जा. ५।१७
 धिग्निधामशिवाश्रयाम् बृ. जा. ५।१७
 धिग् इत्यन्तरात्मा परः गायत्रीर. २
 धियायेनपरित्यक्ताः(शंकाः)सजीवन्मुक्तः म.वा.र. ८
 धियैव धार्यते भगवान्परमेश्वरः त्रि. ता. १।७
 धियो यो नः प्रचोदयात्
 [क. अ. ३।४।१०= मं.३।६२।१०
 [वा. सं. ३।३५+ साम. २।८।१२
 धियो यो नः प्रचोदयात्
 परो रजसे सावदोम् त्रि. ता. १।१
 (अथ) धियो यो नः प्रचोदया-
 दिति, बुद्धयो वै धियस्ता यो-
 ऽस्माकं प्रचोदयादित्याहुर्ब्रह्म-
 वादिनोऽथ अर्ग इति मैत्रा. ६।७
 धियो यो नः प्रचोदयान्मधुमात्रो
 वनस्पतिर्मधुमोऽश्नुसूर्यःस्वस्वाहा बृह. ६।३।६
 धियो यो नो जाते प्रचुर्यः या
 प्रचोदयादिके.हुं फट् स्वाहा सावित्र्यु. १२
 धियो विज्ञातव्यं कामाम्मे त्वयि
 वृषानीति पिता कौ. त. २।१५
 धियो विज्ञातव्यं कामांस्ते मयि दध
 इति पुत्रः कौ. त. २।१५
 धीमहीत्यन्तरात्मा गायत्रीर. २
 धीरधीदितान्द्रुः पेशलः पुण्यकीर्तनः।
 प्राज्ञः प्रसन्नमधुरो दैन्यादपगताशयः अ. पू. २।३१
 धीरस्तत्र न मुह्यति म. गी. २।१३
 धीराभ्युतस्त्वेविदित्वा ध्रुवमधुवेविवह
 न प्रार्थयन्ते कठो. ४।२
 धीराः प्रेत्यात्माहोकादमृता भवन्ति केनो. १।२+२।५
 धीरो न शोचन्ति कठो. ६।६
 धीरोऽप्यतिबहुजोऽपि कुलजोऽपि
 महानपि। तृष्णया बध्यते जन्तुः
 सिद्धः शुद्धयया यथा महो. ५।८७
 धीरो हर्षवोको जहाति कठो. २।१२

धीविक्रियासहस्राणां साक्षिणं (रामं) मुक्तिको. १।३
 धूपश्च गुग्गुलुद्वयः प्राणायामसमुद्भवः शिवो. १।२७
 (अथ) धूमगन्धं प्रजिघ्रायाज्य-
 लेपेनाङ्गान्यनुविमृज्य.. कौ. त. २।३.४
 धूममार्गविसृतं...लोकानसृजत् गोपीचं. २७
 धूमाद्रात्रि, रात्रेरपरपक्षमपरपक्षा-
 द्यान्षट्दक्षिणैति छांदो. ५।१०।३
 धूमाद्रात्रि, रात्रेरपक्षीयमाणपक्षमप-
 क्षीयमाणपक्षाद्यान् षण्मासान्
 दक्षिणदित्य पति बृह. ६।२।१६
 (अथ) धूमार्चिर्विस्फुलिङ्गा इवाग्नेश्च मैत्रा. ६।३१
 धूमेनाग्निरिवावृताः भ.गी. १।८।४८
 धूमेनात्रियते बह्विः भ.गी. ३।३८
 धूमो जायते स प्रस्तावो ज्वलति स
 उद्गीथोऽङ्गारा भवन्ति छांदो. २।१२।१
 धूमो भूत्वाऽभ्रं भवति छांदो. ५।१०।५
 धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः भ.गी. ८।२५
 धूर्धुराणां धूरसि धूर्वङ्ग मे स्वाहा पारमा. ६।९
 धूर्नो बहन्तां रतये रमन्तां...गुप्त्यै स्वाहा पारमा. ८।३
 धृतिर्दीक्षा, सन्तोषश्च बुद्धीन्द्रियाणि
 यज्ञपात्राणि...आहारपरिमाणात् गर्भो. ११
 धृतिर्नार्थहानौ...सर्वत्र चेतस्स्थापनम् शाण्डि. १।१।३
 धृतिर्मेत्री मनस्तुष्टिर्मृदुता मृदुभाषिता।
 देयोपादेयनिर्मुक्तेतिष्ठन्त्यपवासनम् महो. ६।३०
 धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो भ.गी. १।१।४२
 धृतिः क्षमा इमोऽस्तेयं...दक्षकं भवसं. ५।१२
 धमेलक्षणं [ना. प. ३।२४+ भ.गी. १।८।१५
 धृतिः सा तामसी मता भ.गी. १।८।१४
 धृतिः सा पार्थ राजसी भ.गी. १।८।१४
 धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी भ.गी. १।८।१३
 धृत्याऽऽत्मानं नियम्य च भ.गी. १।८।५१
 धृत्या धारयतेऽर्जुन भ.गी. १।८।३४
 धृत्या यथा धारयते भ.गी. १।८।३३
 धृत्युत्साहसमन्वितः भ.गी. १।८।२६
 धृष्टकेतुश्चेकितानः भ. गी. १।५
 धृष्टद्युम्नो विराटश्च भ. गी. १।१७
 धैर्यापसि कामधुक भ.गी. १।१।२८
 धैर्यकण्या, वरासीनकोपीनम् निर्वीणो. २

ध्याता रुद्रः प्राणं मनसि सह करणै-
 नादान्ते परमात्मनि... ध्यायीतेशानं अ. शिखो. ३
 ध्यातृध्यानविहीनोऽस्मि ध्येयहीनो-
 ऽस्मि सोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।११
 ध्यातृध्याने परित्यक्त्य क्रमाद्धयेयैक-
 गोचरम् । निवातदीपवच्चित्तं अध्यात्मो. ३५
 समाधिरभिधीयते
 ध्यातृध्याने विहाय निवातस्थित-
 दीपवद्धयेयैकगोचरं चित्तं समाधिः पैङ्गलो. ३।२
 ध्यात्वा मध्यस्थमात्मानं पैङ्गलो. ३।५
 कलशान्तरदीपवत्
 ध्यात्वा मुनिर्गच्छति भूतयोनिं समस्त-
 साक्षिं तमसः परस्तात् कैव. ७
 ध्यात्वा यद्रक्षमात्रं ते स्वावशेषतया
 वपुः ।.. तत्त्वमात्रं विचिन्तये ध्यान. बि. शीर्ष.
 ध्यानक्रियाभ्यां भगवान् भुङ्क्तेऽसौ मंत्रिको. ७
 प्रहसद्भिर्भुः
 ध्यानतो हृदयाकाशे चिति चिच्छ-
 धारया । मनो मारय निश्शङ्कं
 त्वां प्रब्रूयन्ति नारयः महो. ४।९३
 ध्यानद्रावशकैर्नैव समाधिरभिधीयते यो. चू. ११२
 ध्याननिर्धनाभ्यासा- (देव) देवं
 पश्येन्निगूढवत् [श्रिताश्र. १।१४+ ध्या. बि. २२
 ध्यानमन्तः परे तत्त्वे.. विशेषमु-
 पगच्छति मैत्रा. ६।२४
 ध्यानयुक्तो महीं चरेत् । शुचौ देशे
 सदा भिक्षुः स्वधर्ममनुपालयन् ना. प. ४।१८
 ध्यानयोगपरो नित्यं अ. गी. १८।५९
 ध्यानविस्मृतिः समाधिः मं. ब्रा. १।१
 ध्यानस्य विस्मृतिः सम्यक्समाधि-
 रभिधीयते [त्रि. ब्रा. २।३२+ अथर्व. ५
 ध्यानस्वरूपं ब्रह्म तत्त्व. १।३
 ध्यानहीनो यस्तु भित्तं दुर्वासो. १।१२
 ध्यात्रं चिन्तयमानस्य लोकचित्तं
 ध्यायिनः दुर्वासो. १।१०
 (अथ) ध्यानं तद्विविधं सगुणं
 निर्गुणं चेति । सगुणं मूर्तिध्यानम् ।
 निर्गुणमात्मसाक्षात्कृत्यम् शाण्डि. १।८।२
 ध्यानं नारायणः परः । नारायणपरं ब्रह्म सदाना. ९।४

ध्यानं निर्विषयं मनः । ज्ञानं मनोमल-
 त्यागः शौचमिन्द्रियनिग्रहः [मैत्रे. २।२ + स्कन्दो. ११
 ध्यानं प्रयोगस्थं मनो विद्वद्भिः प्लुतं
 मनः पूतिमुच्छिद्योपहतं मैत्रा. ६।९
 ध्यानं वाव चित्ताद्भूयो ध्यायतीव
 पृथिवी ध्यायतीवान्तरिक्षं छान्दो. ७।६।१
 ध्यानं विष्णुः प्राणं मनसि सह
 करणैः सम्प्रतिष्ठाप्य.. ध्यायीतेशानं अ. शिखो. ३
 ध्यानात्कर्मफलत्यागः भ. गी. १२।१२
 ध्यानाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे
 भगवान्ब्रवीतु छान्दो. ७।६।२
 ध्यानापादांशा इवैव ते भवन्ति छान्दो. ७।६।१
 ध्यानेन शुष्यते बुद्धिः दुर्वासो. १।९
 ध्यानेनानीश्वरान्गुणान् (दहेत्) योगो. १६
 ध्यानेनैव समायुक्तो... नित्योदित-
 मघोक्षजम्... ध्यायेद्वाविश्वरूपिणं त्रि. ब्रा. २।१५२
 ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति भ. गी. १३।२५
 ध्यायतीवद्यौर्ध्वायंतीवापोर्ध्यायंतीव
 पर्वता ध्यायंतीव देवमनुष्याः छान्दो. ७।६।१
 ध्यायतीव पृथिवी ध्यायतीवान्तरिक्षं छान्दो. ७।६।१
 ध्यायतीव लेलायतीव स हि स्वप्नो.
 भूत्वेमं लोकमतिक्रामति बृह. ४।३।७
 ध्यायतीवान्तरिक्षं ध्यायतीव द्यौः
 ध्यायतेऽध्यासिता तेन तन्यते छान्दो. ७।६।१
 प्रेर्यते पुनः । सूर्यते पुरुषार्थं
 च तेनैवाधिष्ठितं जगत् मंत्रिको. ४
 ध्यायतो योगिनस्तस्य मुक्तिः
 करतले स्थिता त्रि. ब्रा. २।१५८
 ध्यायतो योगिनः सर्वमनोवृत्ति-
 र्विनश्यति त्रि. ब्रा. २।१५६
 ध्यायतो विषयान् पुंसः भ. गी. २।६२
 ध्यायन्तीव देवमनुष्याः छान्दो. ७।६।१
 ध्यायन्तीव पर्वताः छान्दो. ७।६।१
 ध्यायन्तीवापो ध्यायन्तीव पर्वताः
 ध्यायन्तो मनसैवमिति प्रविशेद्वा ह
 वाच-चक्षुः श्रोत्रं [छान्दो. ७।६।८, १।१०

ध्यायन्नास्ते मुनिश्चैवमासुमेरासृतेस्तु

यः । जीवन्मुक्तः स विज्ञेयः

स धन्यः कृतकृत्यवान्

योगकुं. ३।३३

ध्यायंश्चतुर्मुजाकारं चतुर्वक्त्रं

हिरण्यमम् । धारयेत्पञ्च

घटिकाः पृथिवीजयमाप्नुयात्

१यो.त.८६

ध्यायेदसिपदं सदा

शु. र. २।७

ध्यायेदेव तन्महो भ्राजमानं

शु. र. २।५

ध्यायेद्दृश्यानुविद्भोऽयं समाधिः

सविकल्पकः

सरस्व. ५१

ध्यायेन्मनसि मां नित्यं वेणुशृङ्गधरं

तु वा । मथ्यते तु जगत्सर्वं ब्रह्म-

ज्ञानेन येन वा

गोपालो. २।२४

ध्यायेद्दीनोऽस्मि सोऽस्म्यहम्

मैत्रा. ३।११

ध्यायेत् सर्वस्य लोकस्य

गुह्यका. ५०

ध्यायेत्कणोच्चरं चित्तं समाधिर्भवति

पैङ्गलो. ३।२

ध्रुवस्त्वमसि ध्रुवस्य क्षिप्तमसि

सहस्रै. २३

ध्रुवस्य प्रचलनं ब्रश्चनं वातरज्जुनां

मैत्रा. १।८

ध्रुवं जन्म मृतस्य च

म. गी. २।२७

ध्रुवं स्तिमितगम्भीरं न तजो न

तमस्ततम्

मैत्रा. १।१५

ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम

म. गी. १।८।७८

ध्रुवे (चित्तसंयमात्) तद्गतिदर्शनम्

शांडि. १।७।५०

ध्रुवैवास्य षोडशी कला

बृह. १।५।१४

ध्रुवोऽप्यध्रुवजीवनः

महो. ३।५०

ध्वनेरन्तर्गतं ज्योतिर्ज्योतिरन्तर्गतं

मनः । यन्मनस्त्रिजगत्सृष्टिस्थिति-

व्यसनकर्मकृत्

मं. ब्रा. ५।१

ध्वनेरन्तर्गतं ज्योतिर्ज्योतिषो-

न्तर्गतं मनः । तन्मनो विलयं

याति तद्विष्णोः परमं पदम्

यो.शि. ६।२१

न

न कश्चन वसतौ प्रत्याचक्षीत । तद्वतम्

तैत्ति. ३।१०।१

न कश्चन स्वप्नं पश्यति

बृ.च. ४।३।१९

[ग. शो. १।३+५।६+

सुबालो. ४।४

न कश्चन स्वप्नं पश्यति तत्सुषुप्तम्

माण्डू. ५

[रामो. २।३+

गणेशो. १।३

न कश्चनैकषष्टिरेकान्विशति-

रेकान्विशतिः

तैत्ति. ३।११

न कण्ठं प्रावृत्तं कुर्यात्.. न पादधावन-

स्नानं यत्र पश्येदुरुः स्थितः

शिवो. ७।१८

न कण्डूयेनस्वेस्तनुम्

शिवो. ७।५४

न करोति न लिप्यते

म. गी. १।३।३२

न कर्ता नैव भोक्ता च न च भोजयिता

तथा । केवलं चित्सदानन्द-

ब्रह्मैवाहं जनार्दनः

वराहो. ३।१९

न कर्तृत्वं न कर्माणि

म. गी. ५।१४

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैकै-

कृतत्वमानुशः

महाना. ८।१४

[केव. १।३+ अवधू. ५ +

सदानं. ५

न कर्मणा न प्रजया न चान्येनापि

केनचित्... ब्रह्मैवेवमात्रिण

ब्रह्माभ्युत्थेव मौनवः

कठक. १२

न कर्मणामनारम्भाभैष्कर्म्यं

पुरुषोऽभुते । न च सकृदसनादेव

सिद्धिं समधिगच्छति [म. गी. ३।४+

भवसं. १।५१

न कर्मणा लिप्यते पापकेन

इतिहा. २०

न कर्मणा वर्धते नो कनीयान्

इतिहा. २०

न कर्मफलसंयोगं

म. गी. ५।१४

(तस्मात्) न कर्म ब्राह्मण इति

व. सू. ७

न कर्म विजिज्ञासीत कर्तारं विद्यात्

कौ. त. ३।८

न कर्मस्वनुसज्जते

म. गी. ६।४

न कर्माणि त्यजेद्योगी कर्मभि-

स्त्यज्यते ह्यसौ

अमन. ३।१०३

न कश्चित् कर्तुमर्हति

म. गी. २।१७

न कश्चिज्जायते जीवः सम्भवोऽस्य

न विद्यते । एतत्तदुत्तमं सर्वं यत्र

किञ्चिन्न जायते [अद्वैत. ४८+

म. शो. ७।१

न कश्चित्कस्यचिच्छक्तः कर्तुं दुःख-

सुखानि च

शिवो. ७।१११

न कश्चित्कस्यचित्पुत्रः पिता माता

न कस्यचित्

शिवो. ७।१०९

न कोऽपि विज्ञानं कुर्यात्

म. गी. १।३१

न काश्चन परिहरेत्तद्वत्तम्
 नकार ईयरो भवति
 नकाररहिषोऽस्त्यहम्
 न कारणं प्रयच्छन्त्यथापर-
 पक्षीयाणां कविः...बभूव २५
 नकारादियकारान्तं (नमःशिवाय)
 ज्ञात्वा पञ्चाक्षरं जपेत् । सर्व
 पञ्चात्मकं विद्यात्पञ्चब्रह्मात्म-
 तत्त्वतः पञ्चम. २५
 नकारो विष्णुर्भवति तारस्य. १४
 न किञ्चन द्वेष्टि तथा न किञ्चिदपि
 कांक्षति । भुङ्क्ते यः प्रकृतान्भोगमन्
 स जीवन्मुक्त उच्यते महो. २६०
 न किञ्चिदपि चिन्तयेत् भ. मी. ६।१५
 न किञ्चिच्चिन्तयेद्योगी सदा
 शून्यपरो भवेत् अमन. २।५३
 न किञ्चिच्चिन्तनादेव स्वयं सत्त्वं
 प्रकाशते अमन. २।५३
 न किञ्चिद्वितीयेदुरोः शिवो. ७।१४
 न किञ्चिदत्र पश्यामि न जृणोमि
 न वैश्यहम् । स्वात्मनैव सदानन्द-
 रूपेणास्मि स्वलक्षणः अध्यात्मो. ६७
 न किञ्चिद्विज्ञात त्वद्वपतिरिक्तम् त्रि. म. जा. १।१
 न किञ्चिद्वाचनाकारंयत्तद्वद्वपतिरिक्तम् म. का. २. १७
 न किञ्चिद्विनिर्देशं यस्तु सत्तेति
 किञ्चन महो. २।५
 न किञ्चिद्विज्ञाते चेत्ते
 तन्मूर्खोऽपि भवत्यितौ अ. पू. ५।१०५
 न किञ्चिन्मनसा ध्यायेत्सर्वचिन्ता-
 विवर्जितः । जायतेतत्त्वसम्मुखः अमन. १।१८
 न कुहारेण वेदमानि जगत्
 प्राप्तमाविशेत् । शिवो. ७।६०
 न कुर्यात्केनचिद्वैरमन्त्रे जीवितेति शिवो. ७।५९
 न कुर्यात् पार्वणादीनि
 प्रसूतस्य भिक्षवे पैङ्गलो. ४।६
 न कुर्यात् नृदेतिकिञ्चन ध्यायेत्साध-
 साधु वा । आत्माशामोऽनया
 हत्या विचरेज्जडवस्तुनिः ना. प. ५।२४

न कुर्वी कर्षे चेदहम् अ. मी. ३।२४
 नकुलः सहदेवश्च अ. मी. १।१६
 न कृष्णं न कृष्णं न कृष्णम् (गणेशः) ग. शो. २।३
 न केवलं...नरके दुःखपद्धतिः ।
 स्वर्गेऽपि पातभीतस्य क्षयिष्णो-
 नास्ति निर्वृतिः भवसं. १।७
 नक्तमधीयानो दिवसकृतं
 पापं नाक्षयति सङ्कर्षणो. ३
 नक्ताद्वरश्चोपवास उपवासादथा-
 चितः । अयाचिताद्वरं मेक्षं
 तस्माद्भैक्षेण वर्तयेत् १सं. खो. १।६२
 न क्वचिद्वाक्कलना न भावाभाव-
 गोचरा । सर्वं शान्तं निरालम्बं महो. ५।४४
 नक्षत्रलोकैषु मार्गीति (चन्द्रलोका
 ओताश्च प्रोताश्च) बृह. ३।६।१
 नक्षत्राणामहं शशी भ. मी. १।०।२१
 नक्षत्राणि प्रतिहारश्चन्द्रमा निधनमे-
 तद्राजनं देवतासु प्रीतम् छांदो. २।२०।१
 नक्षत्राणि रूपम् चित्तु. १।३।३
 नक्षत्राणि वयाश्च मरीचयः स
 प्रतिहारः सर्पा गन्धर्वाः
 पित्रस्तन्निधनमेतत्साम छांदो. २।२१।१
 (तस्य) नक्षत्राणि विस्फुलिङ्गाः
 [छां. उ. ५।४।१+ बृह. ६।२।११
 नक्षत्राण्येव सा चन्द्रमाभमस्तत्साम छां. उ. १।६।४
 नक्षत्राण्येवैव चन्द्रमाः साम छां. उ. १।६।४
 न क्षिपेदशुचिं बहौ न च
 बाही प्रक्षययेत् शिवो. ७।६९
 न क्षीणा वासना यावचित्तं
 तावज्ज ज्ञाम्यति । यावज्ज
 तत्त्वविज्ञानं तावचित्तज्ञः कुतः अ. पू. ४।७९
 न क्षुधा न कृषा निद्रा नैवालस्य
 प्रजायते । नच मृत्युर्भवेत्तस्य
 यो मुद्रां वेत्ति लेचरीम् यो. शि. ५।४२
 नक्षानां कृतनेन च, सर्वं
 काष्णायसं ज्ञातं पञ्चम. ३०
 नगरं नहिकर्तव्यं आसौ वा मिथुनं
 तथा । एतन्नयं प्रकृतिः
 स्वधर्माज्ययते यतिः ना. प. ३।५४

नगङ्गायासमन्तीर्थनशुद्धिर्गोपिचन्दनात् गोपीचं. २०
 न गन्धं विजिज्ञासीत्, घातारं विद्यात् कौ. त. ३।८
 नगरेषु तीर्थेषु पञ्चरात्रं वसन्तः आश्रमो. ४
 न गुणा नागुणास्तत्र न श्रीर्नाश्रीर्न
 लोकता अ. पू. ४।२१
 नगुरोरधिकः कश्चिन्निषुलोकेषुविद्यते यो. शि. ५।५६
 न गुरोरप्रियं कुर्यात्पीडितस्ताडितो-
 ऽपि वा । नोच्चारयेच्च तद्वाक्यं.. शिवो. ७।३७
 न गुरोः कीर्तयेन्नाम...नाह्वयीत्
 तदाख्यया शिवो. ७।२२
 न चक्षुषो मुखानीलं वेत्ति कौ. त. ३।१
 न च क्रियाभिर्न तपोभिरभैः भ. गी. १।१४८
 न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा
 [मुं. उ. १।३।८+ गृह्यका. ३७
 न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्
 [कठो. ६।९+धेता. ४।२०+
 [महाना. १।११+ त्रि. म. ना. ६।४
 न चक्षुषा पश्यति कश्चिदेनाम् गृह्यका. ६३
 न चक्षुषा पश्यति कश्चिदेनं (मा. पा.) कठो. ६।९
 न च जीवन्मृतो वापि न पश्यति
 न भीळति अमन. १।२५
 न च तत्प्रेत्य नो इह भ. गी. १।७।२८
 न च तस्मान्मनुष्येषु भ. गी. १।८।६१
 न च निस्पन्दता लोके दृष्टेह
 शवतां विना भवसं. १।४४
 न च पुनरावर्तते [छां. उ. ८।१५।१+ वासुदे. १७
 न च प्रमादात् तपतो वाऽप्यलङ्घात्
 (आत्मलब्धिः) मुण्ड. ३।२।४
 न च भावविकाराणां सत्ता क च
 न विद्यते महो. ४।१२
 न च भूतपदार्थोऽसद्वनन्ततया स्थितम् महो. २।६६
 न च भूताद्भूतस्य सम्भवोऽस्ति अ. शां. ३।८
 न च मत्स्यानि भूतानि भ. गी. ९।५
 न च मर्त्यं हि तत्पदम् अ. पू. ४।२२
 न च मां क्षानि कर्माणि निवर्तन्ति भ. गी. ९।९
 न च मां योऽभ्यस्यति भ. गी. १।८।६७
 न च याति न चायाति न च नेह
 न चेह चित् । सैषा चिदमला-
 कारा निर्विकल्पा निरास्पदा महो. ५।१०३

न च मलं विमलं न च वेदनम् ।
 चिन्मयं हि सकलं विराजते
 स्फुटतरं परमस्य तु योगिनः वराहो. ३।५
 न च राज्यं सुखानि च भ. गी. १।३१
 [जातिरिति च-] न चर्मणो न रक्तस्य
 न मांसस्य नचास्थिनः । न जाति-
 रात्मनो जातिर्व्यवहारप्रकल्पिता निरालं. ३२
 न च लोष्टं विमृदीयात् शिवो. ७।५२
 न च वयं पश्यामो नैव वयं वक्तुं
 शक्तमो नमस्तेऽस्तु भगवन्प्रसीद नृसिंहो. ९।१०
 न च विद्या न चाविद्या न जगच्च न
 चापरम् । सत्यत्वेन जगद्भानं
 संसारस्य प्रवर्तकम् २ आत्मो. ४
 न च शक्तोऽन्यवस्थातुं भ. गी. १।३०
 न च श्रेयो नु पश्यामि भ. गी. १।३१
 न च सत्संविन्मया एतौ हि पुरस्ता-
 त्सुविभातमन्यवहार्यमेवाद्वयं नृसिंहो. ९।८
 न च सञ्जयसनादेव सिद्धिं समधि-
 गच्छति [भ. गी. ३।४ भवसं. १।५१
 न चाचार्यन्यतिरिक्तं श्रेयांसं दृष्ट्वा
 नमस्कुर्यात् अन्यको. ९
 न चाज्ञानमधीयीत् शिवज्ञानं सम-
 श्र्यसेत् । शिवज्ञानं परं ब्रह्म.. शिवो. ७।६१
 न चातिस्वप्रशीलस्य भ. गी. ६।१६
 न चानिलो मेऽस्ति न चाम्बरं च ।
 एवं विदित्वा परमात्मरूपं...
 प्रयाति शुद्धं परमात्मरूपम् कैव. २३
 न चाभावयतः शान्तिः भ. गी. २।६६
 न चायुक्तस्य भावना भ. गी. २।६६
 न चाशुश्रूषवे वाच्यं भ. गी. १।८।६७
 न चास्ति वेत्ता मम चित्सदाऽहम् कैव. २१
 न चास्मादुपावरोहेत् । जीवन्मुक्तश्च
 भवति अन्यको. ९
 न चास्य कश्चिज्जनिता न चाधिपः चेता. ६।९
 न ज्ञास्य सर्वभूतेषु भ. गी. ३।१८
 न चाहं तेष्ववस्थितः भ. गी. ९।४
 न चाहं न च नैतरा.. अनाख्यमन-
 मिश्रकं सत्किञ्चिदवशिष्यते महो. २।६४

न चिरेणाधिगच्छति भ.गी. ५।६
 न चेतनो न च जडो (आत्मा)
 न चैवासन्न सन्मयः अ. पू. २।२०
 न चेत्समानपुरुषवचने तृतीयप्रभृती-
 नामुदात्ततमः कश्चिद्भवति संहितो. ३।१
 न चेद्वेदीर्महती विनष्टिः । ये तद्विदु-
 र्मुतास्ते भवन्ति बृ. उ. ४।४।१४
 न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः केनो. २।५
 न चेर्मदेहमाश्रित्य वैरं कुर्वीत केनचित् ना. प. ३।४२
 न चेमां विद्यामश्रद्धानाय ब्रूयात् अव्यक्तो. ९
 न चेक्षिता नैव च तस्य लिङ्गम् ।
 स कारणं करणाधिपाधिपः श्रेता. ६।९
 न चैकान्तमनश्नतः भ. गी. ६।१६
 न चैतद्विद्यः कतरन्नो गरीयः भ. गी. २।६
 न चैनमिति होचुरिति तूतैवैवमात्मसिद्धम् नृसिंहो. ९।१०
 न चैनं हेव्यन्त्यापः भ.गी. २।२३
 न चैव न भविष्यामः भ.गी. २।१२
 न चैवमतः परं किञ्चित् गणेशो. ३।६
 न चैव सुकृतं विमुः भ.गी. ५।१५
 न चैवासन्न सन्मयः (आत्मा) अ. पू. २।२०
 न चोदयो नास्तमयो न हर्षामर्षसंविदः अ. पू. ४।२२
 न जगत्सर्वद्रष्टाऽस्मि नेत्रादिरहितो-
 ऽस्त्यहम् मैत्रे. ३।१४
 न जन्मं देहेन्द्रियबुद्धिरस्ति कैव. २२
 न जपो न पूजा न साधनं गुह्यो. १
 न जरा न मृत्युर्न शोको न सुकृतं
 न दुःकृतं सर्वं पाप्मानोऽतो
 निवर्तन्तेऽपहतपाप्मा ह्येष ब्रह्मलोकः छान्दो. ८।४।१
 न जहाति सृत्तं वापि सर्वव्यापी
 धनञ्जयः (वायुः) यो. चू. २६
 न जायते प्रलम्बोऽहं न सुषुप्तिस्वरूपवान् तै. वि. ३।४५
 न जायते स्वप्नो न सुषुप्तिर्न वै तुरीया गणेशो. ३।२
 न जातिरात्मनो जातिर्व्यवहार-
 प्रकल्पिता निरालं. १२
 (सत्मात्) न जातिर्ब्राह्मणः व. सू. ५
 न जातु कामः कामानामुपभोगेन
 शान्त्यति । इविषा कृष्णवर्त्मनः
 भूय एवामिवर्तते ना. प. ३।३७

न जानाति स शीतोष्णं न दुःखं न
 सुखं तथा ना. वि. ५२
 न जायते न म्रियते किञ्चिद्न
 जगत्रये । न च भावविकाराणां
 सत्ता कचन विद्यते महो. ४।१२०
 न जायते न म्रियते कचित्किञ्चित्
 कदाचन । परमार्थेन विप्रेन्द्र
 मिथ्या सर्वं तु दृश्यते महो. ५।१६५
 न जायते न म्रियते न मुह्यते न
 भिद्यते...सर्वदहनोयमात्मेत्याचक्षते सुबालो. ९।१४
 न जायते न म्रियते न शुष्यते
 न दह्यते... (आत्मा) आत्मो. ६
 न जायते न म्रियते न शुष्यति न
 छिद्यति...सोऽचिन्त्यो निर्वर्ण्यश्च
 पुनात्यशुद्धान्यपूतानि (आत्मा) आत्मो. ३
 न जायते म्रियते वा कदाचित् म. गी. २।२०
 न जायते म्रियते वा विपश्चित् कठो. २।१८
 न जायते न म्रियते विपश्चित्नायं
 भूत्वा भविता वा न भूयः भवसं. २।३६
 न जीवो ब्राह्मणः व. सू. ३
 न जीवो म्रियत इति स य एषो-
 ऽणिमैतदात्म्यं सर्वं छांदो. ६।११।३
 न जुहुयादमौ (भस्मधारणमकृत्वा)
 तर्पयेद्देवानृषीन्पित्रादीन् भस्मजा. १।६
 न ज्ञानं नाज्ञानं नोभयतः प्रज्ञ-
 मग्राह्यमव्यवहार्य ना. प. ९।२०
 (सत्मात्) न ज्ञानं ब्राह्मणः व. सू. ६
 नट इव क्षणवेषं चित्रभित्तिरिव
 मिथ्यामनोरमं (पुराकृतं) मैत्रे. ४।२
 नटादिप्रेक्षणं ध्रुवं प्रमदासुहृदं तथा ।
 मध्यं औज्यमुदक्कां च वण्ण
 पश्येत्कदाचन ना. प. ३।६९
 न तच्छब्दः, न किञ्चिदः, न सर्वेशब्दः स्वसंवे. ४
 न ततोऽन्यत्र निस्पन्दान्न विज्ञानं
 विशन्ति ते अ. शां. ५१
 न ततोऽन्यत्र निस्पन्दान्नालार्चं
 प्रविशन्ति ते अ. शां. ४९

न तस्याज्यं न तस्याज्यं मोचकोऽह-
मविमुक्ते निवसताम् । नाविमुक्ता-

त्परमं स्थानम्

भस्मजा. २।८

न तत्पश्यति चिद्रूपं ब्रह्मवस्त्वेव
पश्यति । धर्मधर्मित्ववार्ता

च मेदे सति हि भिद्यते

पा. ब्र. ३०

न तत्र चक्षुरेच्छति न वाग्मच्छति

केनो. १।३

न तत्र चन्द्रार्कवपुःप्रकाशते [रुद्रह. ४०+ अ.पू. ४।३०

न तत्र त्वं न जरया विमेति

कठो. १।१२

न तत्र देवा अदेवाः

त्रि. ता. ५।१

न तत्र देवाः ऋषयः पितर ईशते [ब्रह्मो. ३+ त्रि. ता. ५।१

न तत्र देवा न देवलोका यज्ञा न

यज्ञा वा न माता न पिता न बन्धुर्न

बान्धवो न स्तेनो न ब्रह्महा...तेनैव

मार्गेण जाम्नाय धावति सम्राट्

सुबालो. ४।४

न तत्र वेदान्ताः पुष्करिण्यः

स्रवन्त्यो भवन्ति

बृह. ४।३।१०

न तत्र लोका अलोकाः

त्रि. ता. ९।१

न तत्र रथा न रथयोगा न पन्थानो

भवन्ति

बृह. ४।३।१०

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं

नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः

कठो. ५।१५

[मु.ज. २।२।१०+श्वेता. ६।१४+

गुह्यका. ४५

न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते

[श्वेता. ६।८+

भवसं. २।४४

न तत्समश्चाधिकश्च दृश्यः

ग. शो. ४।१

न तत्समा चाप्यधिका च दृश्यते

गुह्यका. ६७

न तथा कुर्याद्वायत्रीमेव सावित्री-

मनुब्रूयात्

बृह. ५।१४।५

न तथा भवतो योगाज्जन्ममृत्यु पुनः पुनः

यो. शि. १।५५

न तथा विद्याद्यदहरेव जुहोति तदहः

पुनर्मृत्युमपजयति

बृह. १।५।२

न तदभाति किञ्चन न तदभाति

कश्चन [बृह. ३।८।८+

सुबालो. ३।२

न तर्कं पठेन शब्दमपि (प्रणवैविना)

ना. व. ५।६

न तदस्ति न यत्राहं न तदस्ति न

तन्मयम् । किमन्यदभिवाञ्छामि

सर्वं सच्चिन्मयं ततम्

महो. ६।११

न तदस्ति पृथिव्या वा

भ.गी. १।८।४०

न तदस्ति विना यत्स्यात्

भ.गी. १।८।१९

न तद्भासयते सूर्यः

भ.गी. १।५।६

न तमभोति कश्चन

आर्षे. २।२

न तस्मात्पूर्वं न परं तदस्ति न भूतं

नोत भव्यं यदासीत् [अ.शिरः. ३।१४+ बृहको. २५

न तस्य कश्चित्पतिरस्ति लोके न चेक्षिता

नैव च तस्य लिङ्गम् [श्वेता. ६।९+ भवसं. २।४३

न तस्य कार्यं करेण च विच्छेदे न

तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते [श्वेता. ६।८ + भवसं. २।४४

न तस्य कुले अन्धो भवति

चाक्षुरो. ३

न तस्य कुलेऽन्धो भवति

अश्व्यु. ३

न तस्य धर्मोऽधर्मश्च न निषेधो

विधिर्न च

पा. ब्र. २८

न तस्य क्षीयते विन्दुः कामिन्या-

लिङ्गितस्य च । (खेचर्या मुद्रितं

येन विवरं लम्बिकौर्ध्वतः)

यो. च. ५७

न तस्य प्रतिमा अस्ति यत्यनाम महद्यशः

[श्वेताश्व. ४।१९+

वा. सं. ३।३

न तस्य प्राणा उत्कामन्त्यत्रैव सम-

बलीयन्ते ब्रह्मैव सन्ब्रह्माप्येति

[सुबालो. ३।३+

बृह. ४।४।६

न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः

प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्

श्वेताश्व. २।१२

न तत्स्थलिङ्गते प्रज्ञापक्षपत्रमिवान्बुभिः

महो. ५।१०३

न तस्य विद्यते कार्यं न लिङ्गं वा

विपश्चितः । निर्ममो निर्भयः

शान्तो निर्द्वन्द्वोऽवर्णभोजनः

ना. व. ४।११

न तस्यानूक्ते भागो अस्ति

श्वेताश्व. २।४।१, २

न तस्मैहो कश्चन तस्य नाम महद्यशः

महाना. १।१०

न तं पश्यति कश्चन तं नायत्नबोधयेत्

बृह. ४।४।१४

न तानीमानि क्षुद्राण्यसकृदावर्तीनि

...भवन्ति

लांघो. ५।१०।८

न तापत्रयस्योऽहं नेषणाश्रयवानहम्

ते. वि. ३।४६

न तिष्ठन्महसज्जबुद्धैः...मापन्नमलं पिबेत्

आचम. ३

न तीर्थसेवी नित्यं स्यात्प्रोपास-

परो वक्ति । न चाप्ययनशीलः

स्यात् स व्याख्यानपरो भवेत्

ना. व. ३।०३

न तु तृतीयमस्ति, ततोऽन्य-

द्विमलं यत्पश्येत् [बृह. ४।३।२३

+ ४।३।२०

न तु तद्वितीयमस्ति ततोऽन्य-

द्विचकं यजिघ्रेत्

बृ. उ. ४।३।२४

न तु तद्वितीयमस्ति...यद्वस्येत्

बृ. उ. ४।३।२५

न तु तद्वितीयमस्ति...यद्वदेत्

बृ. उ. ४।३।२६

न तु तद्वितीयमस्ति...यच्छृणुयात्

बृ. उ. ४।३।२७

न तु तद्वितीयमस्ति...यन्मन्वीत्

बृ. उ. ४।३।२८

न तु तद्वितीयमस्ति...यत्स्मृयेत्

बृ. उ. ४।३।२९

न तु तद्वितीयमस्ति...यद्विजानीयात्

बृ. उ. ४।३।३०

न तत्रावन्मदः प्रमुदो भवन्ति

बृ. उ. ४।३।३०

न तु देहादिसत्त्वबोधनाय

विषयिण्याम् । परिपूर्णमनाद्य-

न्तमप्रमेयमविक्रियम्

अध्यात्मो. ६०

न तु मामभिजानन्ति

भ.गी. ९।२४

न तु मां शक्यसे द्रष्टुं

भ.गी. ११।८

न तुप्यामिशुभप्राप्तौ न स्विद्याम्यशुभागमे

अ. पू. ५।५९

न तु सन्ध्यासिनां कश्चित्

भ.गी. १८।१२

न तैजो न तमः किञ्चिन्न सन्ध्या

दिनरात्रयः । न सत्तापि न

चासत्ता न च मध्यं हि तत्पदम्

अ. पू. ४।२२

न तैजो न तमेस्ततम्

मैत्रे. १।१५

न तैऽत्र देहिनः सन्ति ये तिष्ठन्ति

कुनिष्कलाः

शिवो. ७।१२५

न तेषां धर्मो नाधर्मो न चानृतं

(परमहंसानां)

आध्यात्मो. ४

न तेषु रमते बुधः

भ.गी. ५।२२

न त्यजन्ति न वाच्छन्ति व्यवहारं

जगद्गतम् । सर्वमेवानुवर्तन्ते पारा-

वारविदो जनाः

महो. ५।१७७

न त्यजेद्यतिर्मुक्तो यो माधुकर-

माक्षसः । वैराग्यजनकं श्रद्धाकलत्रं

ज्ञाननन्दनम्

मैत्रे. २।२३

न त्याज्यमिति चापरे

भ.गी. १८।३

न त्याज्यं कार्यमेव तत्

भ.गी. १८।५

न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकाः कुतोऽन्यः

भ.गी. ११।४३

न त्वहं तेषु ते मयि

भ.गी. ७।१२

न त्वं तैमे जनाधिपाः

भ.गी. २।१२

न त्वं लोचितुमर्हसि [भ.गी. १।२७-१

२।३०

न त्वं वेत्य परन्तप

भ.गी. ४।५

न त्वा कामा बहुषो लोडुपन्ते

मैत्रे. ७।९

नत्वा च बहुधा दृष्ट्वा नृसिंहः

स्वयमुद्रमो

नृसिंहो. ४।३

न त्वाभवद्भक्ष रि(रु)भा मयस्वि

वा. मं. ३

न त्वेनामसते दद्यात्, सतश्च न

विमानयेत्

संहितो. ३।८

न त्वेवान्यत्कुशलाद्वाहणं ब्रूयात्

३पेक्ष. १।३।४

न त्वेवान्यत्कुशलाद्वाहणं ब्रूयादति-

युन्न एव ब्राह्मणं ब्रूयात्

३पेक्ष. १।४।३

न त्वेवाहं जातु नासं

भ.गी. २।१२

न दण्डधारणेन न मुण्डनेन न

वेषेण न दम्भाचारेण मुक्तिः

ना. प. ५।१७

न दण्डं न कमण्डलुं न शिखां

न यज्ञोपवीतं न चाच्छादनं

चरति परमहंसः

प. हं. ३

न दन्तच्छादनं कुर्यात्

शिवो. ७।५३

न दन्तधावनाभ्यङ्गं...गुरोः

कुर्वीत पश्यतः

शिवो. ७।१९

न दर्शयेच्च सामर्थ्यं दर्शनं वीर्यवत्तरम् ।

स्वल्पं वा बहुधा दुःखं योगी

१ यो. त. ५६

न दर्शयेत्स्वसामर्थ्यं (यस्यकस्यापि)

योगिराट्

१ यो. त. ७६

न दहते न छिद्यते न कम्पते न

कुप्यते सर्वबह्नोऽयमात्मेत्याचक्षते

सुबालो. ९।१४

न दहते क्षीरिंच प्रविष्टस्याग्निमण्डले

१ यो. त. ९४

न दानेन न चेज्यया

भ.गी. ११।५३

न दासपुत्राभिलषी लक्ष्यालक्ष्य-

निर्वर्तकः । अत्रिाद् परमेश्वरो भवति याज्ञव. ३

न दिवा जागरितव्यं सुप्तव्यं नैव

रात्रिभागेषु । रात्रावहनि च

सततं शयितव्यं योगिना नित्यम्

अमन. २।१०८

न दिवा प्रावृत्तशिरा रात्रौ प्रावृत्त्य

पर्यटेत्

शिवो. ७।६०

न दिवारात्रिविभागो न संवत्सरादि-

कालविभागः...देव एको

त्रि. व. ना. १।५

नारायणो न द्वितीयोऽस्ति

नदीपुलिनशायी स्यादेवागारेषु

(वा स्वपेत्) चाक्षतः । नात्यर्थे

सुखदुःखाभ्यां क्षीरमुष(वात)-

तापयेत् [२सङ्ख्यासो.१३+
 [कठक. ६+कुंडि.११+ कठश्रु. २६
 नदीवेगो निश्चलश्चेत्केनापीदं भवेज्जगत् ते. बि. ६।८८
 न दुःखं न सुखं भावं न मायाप्रकृतिस्तथा ते. बि. ६।५
 न दुःखेन विना सौख्यं शिवो. ७।११८
 न दृश्यं न दृश्यं न दृश्यम् ग. शो. २।३
 न दूरं नान्तिकं नाङ्गं नोदरं न
 किरीटकम् ते. बि. ६।७
 न दृष्टेर्दृष्टारं पश्येः बृह. ३।४।२
 न देयं च च्छलाक्षाय नाभक्ताय कदाचन सूर्यता. १।१२
 न देवताप्रसादग्रहणम् (यतेः) १सं.सो.२।५९
 न देवः स्वात्मनः परः यो.शि.२।२०
 न देवोत्सवदर्शनं कुर्यात् (यतिः) ना.प. ७।१
 न देशं नापि कालं वा न शुद्धिं
 वाऽप्यपेक्षते (आत्मा) आत्मो. ७
 न देहं न मुखं घ्राणं न जिह्वा न च
 तालुनी (ब्रह्मैव सर्वम्) ते. बि. ६।६
 न देहादित्रयोऽस्म्यहम् ते. बि. ३।४५
 न देहान्तरदर्शनं, प्रपञ्चवृत्तिः
 परित्यज्य...दूरतो वसेत् ना.प. ७।१
 न देशो न च कर्माणि सर्वं ब्रह्मैव
 केवलम् । न भूतं न च कार्यं च... ते. बि. ६।१०५
 न द्यौर्नान्तरिक्षं न पृथिवी....ज्ञान-
 रूपमानन्दमयमासीत् अव्यक्तो. १
 न द्वितीयोऽस्ति कश्चित् नारा. २
 [+त्रि. म. ना.१।५+२।८
 न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि भ.गी.१४।२२
 न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म भ.गी. १८।१०
 न धनान्युपकुर्वन्ति न मित्राणि न
 बान्धवाः । न कायछेदवैद्युर्ये न
 तीर्थायतनाश्रयः महो. ४।२८
 (तस्मात्) न धार्मिको ब्राह्मणः
 न ध्यानं च न च ध्याता न ध्येयो
 ध्येय एव च व. सू. ८
 न ध्यानं नोपासनं न लक्ष्यं
 नालक्ष्यं (परिग्रहेत्)..जात-
 रूपधरश्चरेदात्मानमजिबच्छेत् ना. प. ३।८७
 न ध्यायेत्साध्वसाधु वा । आत्मा-
 रामोऽनयावृत्त्याविचरेज्जडवन्मुनिः ना. प. ५।३६

न नखांश्च नखैर्विध्यात् शिवो. ७।५४
 न नभो घटयोगेन सुरागन्धेन
 लिप्यते । तथात्मोपाधियोगेन
 तद्धर्मो नैव लिप्यते अव्याप्तो. ५२
 न नमस्कारो न स्वाहाकारो न
 निन्दानस्तुतिर्यादृच्छिको भवेत् प. हं. ८
 न नमस्कारो न स्वाहाकारो न
 स्वधाकारो न निन्दास्तुति-
 र्यादृच्छिको भवेत् ना.प. ३।८७
 न नरेणावरेण प्रोक्त एष सुविज्ञेयो
 बहुधा चिन्त्यमानः कठो. २।८
 न नाशयेद्बुधो जीवनपरमार्थमति-
 र्यतिः । नित्यमन्तर्मुखः स्वच्छः
 प्रशान्तात्मा स्वपूर्णधीः ना.प. ३।४२
 न नाहं ब्रह्मेति व्यवहरेत् किन्तु
 ब्रह्माहमस्मीत्यजस्रं जाग्रत्स्वप्न-
 सुषुप्तिषु ना. प. ३।१
 न निजं निजबद्धात्यन्तःकरण-
 जृम्भणात् । अन्तःकरणनाशेन
 संविन्मात्रस्थितो हरिः स्कन्दो. २
 न निद्रां नैव च स्वप्नं तुर्यं पश्यन्ति
 निश्चिताः आगम. १४
 न निरग्निर्न चाक्रियः भ. गी. ६।१
 न निरोधो न चोत्पत्तिः वेतस्य. ३३
 न निरोधो न चोत्पत्तिर्न बन्धो न च
 शासनम् । न मुमुक्षा न मुक्तिश्च
 इत्येषा परमार्थता ब्र. बि. १०
 न निरोधो न चोत्पत्तिर्न बन्धो न च
 साधकः...इत्येषा परमार्थता अव्याप्तो. ३१
 [त्रि.ता.५।१०+ १ अव्यू. ८
 न निर्गता अलातात्ते द्रव्यत्वाभावयोगतः अ. शां. ५०
 न निर्गतास्ते विज्ञानाद्रव्यस्याभावयोगतः अ. शां. ५२
 न निवृत्तानि काङ्क्षति भ.गी. १४।४०
 न नोऽद्य कश्चनाश्रुतममतमविज्ञात-
 मुदाहरिष्यति स्कन्दो. ६।४.५
 नन्वागतं पुण्येनानन्वागतं पापेन
 तीर्णो हि तदा सर्वान्छोकाच्च
 हृदयस्य भवति बृह. ४।३।२२
 न पतन्ति विपर्यये अ. शां. ४६

न पञ्चपासुलिखेद्भूमि	शिवो. ७।५४	न प्रज्ञो नाप्रज्ञोऽपि नो विदितं वेद्यं	सुबालो. ५।१५
न पञ्चानो भवन्त्यथ रथानथयोगान्	बृ.उ. ४।३।१०	नास्तीत्येतन्निर्वाणानुशासनम्	
पथः सृजते	३ऐत. २।४।२	न प्रत्यग्रहणोभेदं कदापि ब्रह्मसर्गयोः ।	
न परस्मा एतदहः शंसेत्	३ऐत. २।४।२	प्रज्ञया यो विजानाति स जीव-	
न परस्मै महाव्रतेन स्तुवीत	आर्षे. ८।३	न्मुक्त इष्यते	अध्यात्मो. ४६
न परा सम्पद्यमाना नो एव परेति		न प्रत्यङ्मुमिमाचामेन निष्ठीवेत्	छांदो. २।१२।२
न परिव्राणामसङ्कीर्तनपरो यद्यत्कर्म	१सं.सो. २।५९	न प्रतिगृह्णन्तः शतसंवत्सराभिः	
करोति तत्तत्फलमनुभवति		क्रियाभिर्यजन्त आत्मानं प्रार्थयन्ते	आश्रमो. २
न पश्यन्मृत्युं पश्यति, न रोगं नोत	मैत्रा. ७।११	न प्रतिष्ठां लोकमतिनयेत्	छान्दो. १।८।७
दुःखताम्		न प्रत्यसंज्ञाऽस्तीत्यरे ब्रवीमीति होवाच	बृह. २।४।१२
न पाणिपादचपलो न नेत्रचपलो	याज्ञव. २१	न प्रसिद्धयेदकर्मणः	भ. गी. ३।८
यतिः । न च वाक्चपलश्चैव		न प्रस्तुतेनासुरान् पराभावयन्	सहस्रै. १
ब्रह्मभूतो जितेन्द्रियः		न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य	भ.गी. ५।३०
न पाणिपादवाक्चक्षुःश्रोत्रशिभ्रगुदो-	शिवो. ७।५८	न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति	
दुरैः । चापलानि न कुर्वीत..	शिवो. ७।४९	कश्चन । इतरेण तु जीवन्ति	
न पादौ धावयेत्कांस्ये	ग.शो. २।३	यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ	कठो. ५।५
न पीतं नपीतं नपीतं(गणेशंमन्यन्ते)		न प्रेत्य संज्ञाऽस्ति	बृह. ४।५।१३
न पीयूषं पतत्यग्नौ न च वायुः	ध्या. बि. ७९	न बद्धोऽस्मि न मुक्तोऽस्मि ब्रह्मैवास्मि..	अ. पू. ५।६८
प्रधावति । (जालंबरेबन्धे)		न बन्धुवर्गो न च रूपभावो न	अनु. सा. ५
न पुण्यपापे मम नास्ति नाशो न	कैव. २२	मातृपत्न्यौ द्वुवं निश्चयोऽस्ति	वैतथ्य. ३३
जन्म देहेन्द्रियबुद्धिरस्ति		न बद्धो न च साधकः	
न पुनरावर्तन्ते हुताशनप्रतिष्ठं	भस्मजा. २।१५	न बहिःप्रज्ञं नोभयतःप्रज्ञं समाङ्ग	
हविरिव (मुक्ताः)		एकोनविंशतिमुखः	श्रीवि.वा. १।७
नपुंसककुमारस्य स्त्रीमुखं चेद्भवेज्जगत् ।		न बहिः प्राण आयाति पिण्डस्य	
निर्मितः शशगृहेण रथश्चे-	ते. बि. ६।९०	पतनं कुतः । पिण्डपातेन या	यो.शि. १।१६२
ज्जगदस्ति तत्		मुक्तिः सा मुक्तिर्न तु हन्यते	
न पृथङ्पृथगाहं न सत्त्वं स	प. इ. ९	न बहुभ्रुतेन न बुद्धिज्ञानाश्रितेन	सुबालो. १।१५
सर्वं ...नैव परिग्रहेत	वैतथ्य. ३५	न मेघया...आत्मानमुपलभन्ते	१सं.सो. २।९९
न पृथङ्पृथक्किञ्चित्		न बाह्यदेवताभ्यर्चनं कुर्यात् (यतिः)	ना. प. ७।१
न प्रकाशोऽहमित्युक्तिर्यत्प्रकाशैक-		न बाह्यदेवार्चनं कुर्यात्	
बन्धना । स्वप्रकाशं तमात्मान-	वराहो. २।९	न बाह्ये नापि हृदये खद्रूपं विद्यते	महो. ४।५१
मप्रकाशः कथं स्पृशेत्	रामो. २।४	मनः । बद्धै प्रतिमानं तन्मन	तैत्ति. २।४
न प्रज्ञं नाप्रज्ञं [ग.शो. १।४+		इत्यभिधीयते	तैत्ति. २।९
न प्रज्ञं नाप्रज्ञं न प्रज्ञानचनमदृष्टम-		न विमेति कदाचन	भ.गी. ३।२६
न्यबह्वार्यममाहमलक्षणमचित्य-		न विमेति कुतश्चन	
मन्यपुनरेदयमैकाल्यप्रत्ययसारं		न बुद्धिमेवं जनयेत्	
प्रयत्नोपशमं शान्तं शिवमद्वैतं	नृ. पू. ४।२	न बुद्धिर्न विकल्पोऽहं न देशदि-	ते. बि. १।४५
चतुर्यै मन्यन्ते स आत्मा स विज्ञेयः	माण्डू. ७	त्रयोऽस्त्यहम्	
न प्रज्ञानचनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञम्			

न ब्रह्मा नेशानो नापो नाग्निर्न
 वायुर्नेमे यावापृथिवी न
 नक्षत्राणि न सूर्यः चतुर्वे. १
 न ब्रह्मा नेशानो नापो नाग्नीषोमौ
 ..न सूर्यो न चन्द्रमाः (नासीरन्) महो. १।६
 न ब्रह्मा नो विष्णुर्नाथ रुद्रो नेश्वरो
 न विन्दुर्नो कलेति स्वसंवे. १
 न भगव इति वेत्य यथा पुनरा-
 वर्त्तन्ती इति छांदो. ५।३।२
 न अयं न सुखं दुःखं तथा मानाव-
 मान्योः । एतद्भावविनिर्मुक्तं
 तद्ग्राह्यं ब्रह्म तत्परम् ते. बि. १।१४
 न भवत्यमृतं मर्त्यं न मर्त्यममृतं तथा ।
 प्रकृतेरन्यथाभावो न कथञ्चि-
 द्भविष्यति [अ.शां. ७+ अद्वैत. २१
 नमश्च पृथिवी चैव अ. गी. १।१९
 नमसोऽन्तर्गतस्य तेजसोऽशमात्रमेतत् मैत्रा. ३।३५
 नमस्थं निष्कलं व्यात्वा मुच्यते
 भवबन्धनात् । अनाहतध्वनि-
 युतं हंसं यो वेद हृत्तम्रं ज. बि. २०
 नमस्तथा सूर्यरूपोऽग्निर्नाभिमण्डल-
 माश्रितः श्री. शि. ५।३७
 नमस्तस्मां दीप्तमनेकवर्णं म. गी. १।१२४
 न भूतं न भविष्यच्च चिन्तयामि.. अ. पू. ५।५७
 न भूतं नोत भव्यं यदाक्षीत्
 [अ. शिरः. ३।१४+ बटुको. २५
 न भूमिरापो न च वह्निरस्ति.. कैव. २३
 अथोपनिषत्पादमन्तर्धानविभागुरुः शिवो. ७।४७
 न भूतव्यं पृच्छतेति होवाच
 कैवाऽनुश्लेष एवात्मेति नृसिंहो. ९।१०
 नम आदित्येभ्यश्च विंशेभ्यश्च देवेभ्यो
 ...लोके मे यजमानाय विन्दत छां. २।२४।१४
 नम आदित्याय दिविक्षिते... यज-
 मानाय वैदि मैत्रा. ६।३५
 नम आत्मन्स्वरूपिणे नमस्तद्ग्रे
 नमः कवीर्ष्ये दिवो, याश्च देवता
 एतस्यां... आभर. ८२
 नमस्ते २४

नम ऋषिभ्यो नमःकुल्येभ्यः प्रकुल्येभ्यः ग. पू. १।५
 न मतेर्मन्तारं मन्वीथाः...एष त
 आत्मा सर्वान्तरः बृह. ३।४।२
 न मत्तोऽन्यत्, अहमेव सर्वम् भस्वजा. २।१३
 न मध्यं नादि नान्तं वा न सत्यं
 न निबन्धनम् ते. बि. ६।५
 न मनो नेन्द्रियोऽस्म्यहम् ते. बि. ३।४४
 न मनो विजिज्ञासीत् मन्तारं विधात् कौ. त. ३।८
 न मन्त्रं न ध्यानं नोपासितं च न
 लक्ष्यं नालक्ष्यं न पृथक्पृथगहं प. हं. ९
 न मन्वीरञ्ज विजानीरन्यदा वाच ते
 स्मरेयुरथ शृणुयुरथ मन्वीरन्वि-
 जानीरन् छं. ७।१३।३
 न ममेति विमुच्यते शिवो. ७।११४
 नमश्चण्डिकायै महासिद्धलक्ष्म्यै वनदु. २६
 नमस्कारेण योगेन मुद्रयाऽऽरभ्य
 चार्चयेत् ज. बि. ५६
 नमस्कुर्यात्सदा गुरुम् शिवो. ७।७
 नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं भ. गी. १।१३५
 नमस्तुभ्यं परेशाय नमो मह्यं
 शिवाय च १ सं. सो. २।३२
 नमस्तुभ्यं वयं त इति इ प्रजापति-
 र्देवाननुशशास नृसिंहो. ५।१०
 नमस्ते अस्तु भगवति देव्यु. ३९
 नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः वनदु. १६०
 नमस्ते अस्तु बाहुभ्यामुतोत इषवे नीलक. १।४
 नमस्ते अस्तु सुहवो म एधि चित्तु. १।४।३
 नमस्तेगणपतये । त्वमेव...तत्त्वमसि गणप. १
 नमस्ते तुरीयाय दर्शनाय पद्माय
 परोरजसे सावदोम् बृह. ५।१४।७
 नमस्ते नमः सर्वे ते नमो नमः शिशु-
 कुमाराय नमः सद्दे. २३
 नमस्ते परारूपे नमस्ते पश्यन्तीरूपे
 ...नमस्ते नमस्ते अ. भा. ५
 नमस्ते भवभामाय नीलक. १।४
 नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं प्रकाशि तेति. १।१३

नमस्ते शारदे देवि काश्मीरपुर-

वासिनि ।... विद्यादानं च देहि मे सरस्व. २६

नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्स्वस्ति मेऽस्तु... कठो. १।९

नमस्तेऽस्तु भगवन् प्रसीदेति ह्योचुः नृसिंहो. ९।१०

नमस्तेऽस्तु याज्ञवल्क्य यो म
पुतं व्यबोचः बृह. ३।८।५

नमस्तेऽस्तु याज्ञवल्क्यानुमाशाधीति बृह. ४।२।१

नमस्त्वमर्थो(र्थी) विज्ञेयो रामस्त-
त्पदमुच्यते । असीत्यर्थे चतुर्थी

स्यादेवं मंत्रेषु योजयेत् रामर. ५।१४

नमस्तेऽस्त्विमे विदेहा अयमहमस्मि बृह. ४।२।४

नमस्त्यन्तश्च मां भक्त्या भ.गी. ९।१४

नमस्याम धूर्तेरमृतं मृतं चतुर्वे. ८

न महद्वाचो, विग्लापनं गिरा..

नोऽसवदर्शनं तीर्थयात्रावृत्तिः ना. प. ५।६

नमः कमलनेत्राय... कमलापतये नमः गो. पू. ४।६

नमः कल्याणनिधये नमस्तुभ्यं नमोनमः सामर. ४१

नमः परं सुविज्ञेयं पूर्णानन्दैककारणम् ।

सदा नमन्ति हृदये सर्वे देवा

सुमुखवः रामो. ५।३

नमः परमशक्तिभ्यः [प्रभो. ६।८+ मुंड. ३।२।११

नमः पापप्रणाशाय... नृणावर्तासुहारिणे गो. प. ४।११

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते भ.गी. ११।४०

नमः पृथिव्यै स्वाहा चिन्त्यु. ५।२

नमः प्रजापतये नमो ब्रह्मणे आर्षे. १०।४

नमः प्रतीच्यै दिशे याश्च देवताएतस्यां सहवै. २४

प्रतिसंवसन्त्येताभ्यश्च नमः सहवै. २४

नमः प्राच्यै दिशे याश्च देवताएतस्यां सहवै. २४

प्रतिसंवसन्त्येताभ्यश्च नमः सहवै. २४

नमः शान्तात्मने तुभ्यं मैत्रा. ५।४

नमः शिवाय गुरवे सच्चिदानन्दमूर्तये निरा. १

नमः शिशुकुमाराय सहवै. २३

नमः सवित्रे प्रसवित्रे नमो भोऽव्याय ग. पू. १।५

न मातृवधेन न पितृवधेन न स्तेयेन

न धूणहत्याया नास्य पापं च

न चक्री मुखामीलं वेत्तीति कौ. त. ३।१

न कामनीरयित्वा ब्राह्मणा ब्रह्म..

न वेयुरास्य तत्सयात् २प्रणवो. ८

न मामभ्योति हरिश्वा न कश्चन बा. मं. २०

नमामि त्वामहं देवी.. महाकारुण्य-

रूपिणीम् देव्यु. १९

नमामि दशमं स्थानमहमेकादशं

स्थानं (जानीयात्) नृ. पू. २।३

न मामिमे नूनमित्या पथो विदुः बा. मं. ६

नमामि यामिनीनाथलेखालंकृत-

कुन्तलाम् । भवानीं भवसन्ताप- सरस्व. ३०

निर्वापणसुधानदीम् अव्यक्तो. ३

नमामीत्याह यथा यजुरेवैतत्

नमाम्यनमान्यहमनहं नृसिंहानुष्टु-

भैव बुबुधरे नृसिंहो. ६।१

न माया प्रकृतिस्तथा ते. बि. ६।५

न मामभ्योति परि गोभिराभिः बा. मं. २०

न मांसं समभ्रीयात् सहवै. १२

न मां कर्माणि लिम्पन्ति भ.गी. ४।१४

न मां दुष्कृतिनो मूढाः भ.गी. ७।१५

न मांसचक्षुषा द्रष्टुं ब्रह्मभूतः

स शक्यते भवसं. ३।७

न मीमांसा-तर्क-ग्रह-गणित-सिद्धांत-

पठनैः.. तत्त्वावाप्तिर्निजगुरुमुखा-

देव हि भवेत् भयन. १।५

न मुखेन धमेदग्निं.. न लब्धयेत् शिवो. ७।६९

न सुमुखानमुक्तिश्च इत्येषा परमार्थता प्र. बि. १०

न सुमुखैर्न वै मुक्त इत्येषा परमार्थता

(वैतथ्यभाष्ये. ३३) २आत्मो. ३

न मे कर्मफले स्पृहा भ.गी. ४।१४

न मे चित्तं न मे बुद्धिः... न मे देहः..

न मे किञ्चिद्विदं... न मे श्रोत्रं..

न मे तुरीयमिति यः स

जीवन्मुक्त उच्यते ते. बि. ४।७-११

न मे ज्ञाता न मे ज्ञानं न मे ज्ञेयं

न मे स्वयम् । न मे तुभ्यं न मे मह्यं

न मे त्वं च न मे त्वहम् ते. बि. ४।२८

न मे देहेन सम्बन्धो मेघेनेव विहा-

यसः । अतः कुतो मे तद्धर्मा

जामत्स्वजसुषुप्तिषु कुंडि. १५

न मे द्वेष्ट्योऽस्ति न मित्रः भ.गी. १।२९

न मेधया न बहुधा श्रुतेन । यमेवैव

श्रुते तेन लभ्यस्तस्यैव आत्मा मुण्ड. ३।५१

न मे ध्याता न मे ध्येयं न मे ध्यानं
 न मे मनुः । न मे शीतं न मे चोष्णं
 न मे तृष्णा न मे क्षुधा ते. बिं. ४।१८
 न मेऽन्नाश्वानुत् दाश्वानजप्रभीत वा. सं. २०
 न मेऽन्तरायो न च कर्मलोपः हेरम्बो. १३
 न मे पार्थास्ति कर्तव्यं भ.गी. ३।२२
 न मे पुण्यं न मे पापं न मे कार्यं न
 मे शुभम् । न मे जीव इति स्वात्मा
 न मे किञ्चिज्जगज्जयम् ते. बिं. ४।१४
 न मे बन्धो न मे जन्म न मे
 वाक्यं न मे रविः ते. बिं. ४।१३
 न मे बन्धो न मे मुक्तिर्न मे शास्त्रं
 न मे गुह्यः आत्मप्र. २०
 न मे भक्तः प्रणश्यति भ. गी. १।१३
 न मे भोगस्थितौ वाञ्छा १ सं. सो. २।३५
 न मे मित्रं न मे शत्रुर्न मे मोहो
 न मे जयः । न मे पूर्वं न मे वञ्चा-
 न मे चोर्ध्वं न मे दिशः ते. बिं. ४।१९
 न मे वक्तव्यमल्पं वा न मे श्रौतव्य-
 मण्वपि । न मे गन्तव्यमीषद्धाः ते. बिं. ४।२०
 न मे विदुः सुराणाः भ. गी. १०।२
 न मे स्तेनो जनपदे न कश्चिन्नमद्यपः छांदो. ९।११।५
 नमो अस्तु ब्राह्मणेभ्य इति ह स्माह
 ...माण्डूकेयः [३२८.१।३।४+ १।४।३
 नमो अस्तु संप्रेभ्यो ये के च
 पृथिवीमनु [वनदु. ४८, ६१, ७३+
 [अ. लि. ७।५५।१०+ वा. सं. १३।६
 नमो नमसः पृष्ठे न पाताले न
 भूतले । सर्वाशासङ्ख्ये चैतःक्षयो
 मोक्ष इतीष्यते भ. पू. २।२३
 नमो गङ्गायमुनयोर्मध्ये ये वसन्ति
 ते मे प्रसन्नात्मानश्चिरं जीविषं
 वर्ययन्ति सहवै. २४
 नमो गुह्यतमाय च वैत्रा. ५।४
 नमोऽग्नये, नम इन्द्राय, नमः प्रजापतये आर्षे. १०।४
 नमोऽग्नये पृथिवीक्षिते.. यजमानाय वेदि मैत्रा. ३।३५
 नमोऽग्नये पृथिवीक्षिते लोकक्षिते
 लोकं मे यजमानाय विन्देच
 मे यजमानाय लोकं यतास्मि छांदो. २।२४।५

नमोऽग्नयेऽप्सुमते नम इन्द्राय महाना. ५।७
 नमो ज्ञाननिर्वाणदात्रे नम आनन्द-
 स्वरूपिणे सामर. ८२
 नमो दक्षिणायै दिशे याश्च
 देवता एतस्यां.. ताभ्यश्च नमः सहवै. २४
 नमो क्षानधर्मदात्रे नमः सुखरूपिणे
 नमो दिवे । नमः पृथिव्यै स्वाहा सामर. ८२
 नमो देवेभ्यः स्वधा मितृभ्यो
 भूर्भुवः सुवरजमोम् महाना. ७।१
 नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः देव्यु. ५
 नमोऽधरायै दिशे याश्च देवता एतस्यां.. सहवै. २४
 नमोऽनन्तविहाराय नमस्ते रसरूपिणे सामर. ४२
 नमोऽनन्ताय महते वैकुण्ठाय श्रीमते.. सामर. ७९
 नमो नमश्च मन्त्राश्च इतिहा. १००
 नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः भ. गी. १।१३९
 नमो नारायणायैतितारकं चिदात्मकं.. तारसा. १।३
 नमो नारायणायैति सप्ताक्षरं भवति नां. पू. वा. ३।१
 नमो अस्तु नीलशिखण्डाय.. नीलक. २।२
 नमो ब्रह्मण इति परिधानीयां त्रिरन्वाह सहवै. १७
 नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो वै. उ. ३।१+१।२
 नमो ब्रह्मणेऽथर्वपुत्राय मीढुषे ग. पू. १।१
 नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्त्वनिराकरणं महाना. ७।७
 नमो ब्रह्मणे नमः पृथिव्यै नमोऽग्नये
 नमोऽग्नये नमो वायवे नमो गुह्यभ्यः कौली. शां. पा.
 नमो ब्रह्मणे नमोऽअस्त्वमग्ने नमः
 पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः वनदु. १६०
 [+ सहवै. १६+ वै. भा. २।१२।१
 नमो ब्रह्मणे नमो ब्राह्मणेभ्यः... ग. पू. १।५
 नमो ब्रह्मणे ब्रह्मपुत्राय तुभ्यं ग. पू. १।२
 नमो ब्रह्मणे सर्वक्षिते...
 यजमानाय वेदि मैत्रा. ३।३५
 नमो भगवति महासख्ये कालि.. वनदु. २६
 नमो भवाय नमः शर्वाय नीलक. ३।४
 नमो महा परेशाय नमस्तुभ्यं शिवाय
 च । किं करोमि कं गच्छामि किं
 गृह्णामि त्यजामि किम् वताहो. ३।३५
 नमो मित्राय आनवे सूर्योर्मां पाहि
 नमो रसात्मने नमो रसरूपरूपिणे सहवै. ८२

नमो रुचाय ब्राह्मणे [चिन्त्यु. १११२

[वा. सं. ३११२०५

नमो रुद्राय विष्णवे सृष्ट्युर्मे पाहि

नमो वयं ब्रह्मिष्ठाय कुर्मः

नमो वाचे नमो ब्राह्मणपतये नमो

विष्णवे बृहते (महते) करोमि

नमो वामस्तु शृणुत ५ हवं मे

नमो वाऽन्तराय दिशे, याश्च देवता

एतस्यां प्रतिवसन्ति ताभ्यश्च नमः सहवै. २४

नमो विज्ञानरूपाय परमानन्दरूपिणे ।

कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय

नमो नमः

नमो वायवेऽन्तरिक्षक्षिते लोकक्षिते

लोकं... लोक एतास्मि

(ॐ) नमो विश्वरूपाय विश्व-

स्थित्यन्तर्हेतवे । विश्वेश्वराय

विश्वाय गोविन्दाय नमोनमः

नमो वेदादिरूपाय ॐकाराय नमो

नमः । स्नाधराय रामाय

श्रीरामायाममूर्तये

नमो नौऽस्तु भगवतेऽस्मिन्धात्रि

केन वः सपर्यामिति

नमो ब्राह्मणपतये नमो गणपतये...

वरदमूर्तये नमोनमः

नमोऽस्तु गुरवे तुभ्यं सहजानन्द-

रूपिणे । यस्य वाक्यामृतैर्हन्ति..

नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद

नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व

नमोऽस्तु मम कोपाय स्वाश्रयज्वालिते..

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय

नम्यन्तेऽस्मैकामाः, तद्गच्छेत्पुपाक्षीत ।

ब्रह्मवान्ममति

न म्रिये न च जीवामि.. अहं न किञ्चि-

विदिति मत्वा धीरो न शोचति

न म्लेच्छमूर्खपतितैः.. कुट्टः

सह न संवेदन्

न यतेर्देवपूजानोत्सवदर्शनम्

न यतेर्देवपूजा नोत्सवदर्शनं

तीर्थयात्रावृत्तिः

तै.आ. ३।१३।२

महाना. १६।९

बृह. ३।१।२

सहवै. १६

चिन्त्यु. १४।३

सहवै. २४

गो. पू. ४।९

छांदो. २।२४।९

गो.पू. ४।४

रा. पू. ४।१३

सहवै. ११

गणप. १०

अमन. २।९

अ.गी. ११।३१

अ.गी. ११।४०

याज्ञव. २४

महाना. १०।१९

तैत्ति. ३।१०।४

अ. पू. ५।९१

शिवो. ७।८५

१ सं.सो. २।५९

ना. प. ५।६

न यतेः किञ्चित्कर्तव्यमस्ति,

अस्ति चेत्सांकर्यम् । तस्मा-

न्मननादौसंख्यासिनामधिकारः ना. प. ९।८

(अथ) न यद्यश्नात्यमन्ता-

ऽभ्रोताऽस्त्रष्टा...भवति

मैत्रा. ६।११

नयनात्तमः स वै हरः

ग. शो. ३।४

नयुक्तदर्शनेन गत्वाकालस्यानियमाद्रौ

अ.शां. ३४

न येषु जिह्वामनृतं न माया च

प्रभो. १।१६

न योगशास्त्रप्रवृत्तिः ...नेतरशास्त्र-

प्रवृत्तिर्यतेरस्ति

१ सं.सो. २।५९

न योत्स्य इति गोविदं

अ. गी. २।९

न योत्स्य इति मन्यसे

अ. गी. १८।५९

नरके नियतं वासः

अ. गी. १।४४

नरके यानि दुःखानि...प्राप्यन्ते

नारके राजस्तेषां सङ्ख्या न विद्यते

अवसं. १।६

न रक्तं न रक्तं न रक्तम्

ग. शो. २।३

न रक्तमुत्पन्नं वस्त्रं धारयेत्

शिवो. ७।५०

नरशृङ्गेण नष्टश्चेत्कश्चिद्वस्त्रिद-

मेव हि । गन्धर्वनगरे सत्यै

जगद्भवति सर्वदा

तै. वि. ६।७५

न रश्मयः प्रादुर्भवन्ति

इषेव. ३।१।३

न रसं न च गन्धाख्यमप्रमेय-

मनूपमम् [अ. पू. ५।७३+

जा.द. ९।४

न रसायनपानेन न लक्ष्म्यालङ्कि-

तेन च । न तथा सुखमाप्नोति

क्षमेनान्तर्यथा जनः

महो. ४।३१

नराणां च नराधिपम्

अ.गी. १०।३७

नरान्पशून्मृगाणां गान्ध्यान्प्रजा-

न्सर्वांश्च विलोकयतिस्व.. (महा)

ग. शो. ३।६

न रात्रौ न च मध्याह्ने सम्भ्ययेर्नैव

पर्यटन् (पर्यटेत अदा योगी

वीक्षयन्मुखातलम्)

ना. प. ४।१९

न रूपं न नाम न गुणं न प्राप्यं

गणेशं मन्यन्ते

ग. शो. २।३

न रूपं विजिज्ञासीत रूपविदं विद्यात्

को. व. ३।८

न रोगं नोत दुःखता ५ सर्व ५

इ पदयोः पश्यति

छांदो. ७।२६।२

न रोगो मरणं तस्य न निद्रा न
क्षुधा तृषा । न च मूर्च्छा भवे-
त्तस्य यो मुद्रां वेत्ति खेचरीम् यो. चू. ५३
नतं भृग्वज्जिरोविद्वन्धः सोमः पातव्य
ऋत्विजः पराभवन्ति २प्रणवो. २०
न लक्ष्यते स्वभावोऽस्याः (भूत-
मायायाः) वीक्ष्यमाणैव नश्यति महो. ५।११२
न लिप्ताकर्षणं कुर्यात् शिवो. ७।५५
न लिप्यते कर्मणा पापकेन बृह. ४।४।२३
न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः कठो. ५।११
न लोकनं नावलोकनं च बाधको
न चाबाधकः प. हं. ९
न लक्ष्यं नालक्ष्यं न पृथङ्नापृथक् प. हं. ८
नवद्वारे पुरे देही भ. गी. ५।१३
न वयं विद्या इति होतुस्ततो यूयमेव नृसिंहो. ९।८
स्वप्नकाशा इति होवाच
न योनीर्न चक्राणि दधिरे नवैव त्रिपुरो. २
योगा नत्र योगिन्यश्च
नवरात्रलयेनापि...वाचां
सिद्धिर्मेवेत्तस्य अमन. १।५९
न वर्धते कर्मणा नो कनीयान् बृह. ४।४।२३
नववर्कं तु रुद्राक्षं नवशक्त्यधि-
दैवतम् । तस्य धारणमात्रेण
प्रीयन्ते नव शक्तयः क. जा. ३४
नवशक्ति(मयं)रूपं श्रीचक्रम् भावनो. २
न वशो हर्षशोकाभ्यां स
समाहित उच्यते
नवसूत्रान् परिचर्चितान्, तेऽपि
यद्वा चरन्ति पा. प्र. ४
नवशक्तिमितिबृहती सम्पद्यमाना.. १पेठ. ३।६।२
नवस्वैव हि चक्रेषु लयं कृत्वा... योगरा. ५
न वक्तव्याः श्राद्धकर्मबहिष्कृताः इतिहा. ७२-७६
नववर्कं षड्द्वारं त्रिलक्ष्यं व्योम-
पञ्चकम् । सम्यगेतन्न जानाति
स योगी नामतो भवेत् मं. प्रा. ४।१
नवद्वारं दृशी प्रियेऽस्तु दुर्गा वनदु. १
न भवेत्तस्य कस्यापि किन्तु
शिष्याय सा नरेत् ना. पू. ता. ३।२

नवद्वारमलस्रावं (देहं)...दुर्गेधं
दुर्मलोपेतं स्पृष्ट्वा स्नानं विधीयते मैत्रा. २।६
नवद्वारं पुरं कृत्वा गवाक्षाणीन्द्रिया
प्यपि । सा पश्यत्यत्ति वहति.. गुह्यका. ३३
नवद्वारे पुरे देही हंसोलेलायते बहिः श्वेताश्व. ३।१८
नवद्वारे पुरे देहे ममत्वं च.. दुर्वासो. २।८
न वधेतास्य हन्यते [छांदो. ८।१।५ १०।२,४
नवप्रसूतस्य परादयं चाहमिदं मम ।
इति यः प्रत्ययः स्वस्थस्तज्जा-
प्रत्यागभावनात् महो. ५।१२
नव ब्रह्माख्यनवगुणोपेतं ज्ञात्वा
नवमानमितस्त्रिगुणीकृत्य...मूल-
मेकं सत्यं मृण्मयं विज्ञातं स्यात् परब्र. ४
नवभिर्व्योमरन्ध्रैः शरीरस्य वायवः
कुर्वन्ति विण्मूत्रादिविसर्जनम् शाण्डि. १।४।८
नवममाकाशचक्रं, तत्र षोडशदल-
पञ्चमूर्ध्वमुखं तन्मध्यकर्णिका-
त्रिकूटाकारम् सोमाश्व. ३२
नवमं व्योमचक्रं स्यादक्षैः षोडशभिः.. योगरा. १७
नवमासलयेनापि पृथ्वीतत्त्वं स गच्छति अमन. १।७४
नवमेन तु पिण्डेन सर्वेन्द्रियसमाहृतिः पिण्डो. ८
नवमे धामनि पुनरागस्त्यं वाग्भवं
...षण्मुखीयं विद्या त्रि. ता. १।१६
नवमे सर्वाङ्गसम्पूर्णो भवति निरुक्तो. १।४
नवम्यां (मात्रायां) तु महर्लोकं
दशम्यां तु जनं ब्रजेत् ना. वि. १६
नववक्त्रं तु रुद्राक्षं नवशक्त्यधि-
दैवतम् । तस्य धारणमात्रेण
प्रीयन्ते नव शक्तयः क. जा. ३४
नवशक्तिरूपं श्रीचक्रम् भावनो. २
न वा अजीविष्यमिमानं स्वादन्निति
होवाच काम उदपानमिति छांदो. १।१०।४
न वा अरे क्षत्रस्य कामाय क्षत्रं
प्रियं भवति । आत्मनस्तु कामाय
क्षत्रं प्रियं भवति [बृह. २।४।५+ ४।५।५
न वा अरे जाययि कामाय जाया
प्रिया भवति [बृह. २।४।५+ ४।५।६
न वा अरे देवानां कामाय देवाः
प्रिया भवन्ति [बृह. २।४।५+ ४।५।५

न वा अरे पत्युः कामाय पतिः
 प्रियो भवति [बृह. २।४।५+ ४।५।६
 न वा अरे पशूनां कामाय पशवः
 प्रिया भवन्ति, आत्मनस्तु कामाय.. बृह. ४।५।६
 न वा अरे पुत्राणां कामाय पुत्राः
 प्रिया भवन्ति [बृह. २।४।५+ ४।५।६
 न वा अरे बाह्यो नान्तरः सर्व-
 विद्वारूपः (आत्मा) आर्षे. १।२
 न वा अरे ब्रह्मणः कामाय ब्रह्म
 प्रियं भवति [बृह. २।४।५+ ४।५।५
 न वा अरे भूतानां कामाय भूतानि
 प्रियाणि भवन्ति [बृह. २।४।५+ ४।५।५
 न वा अरे लोकानां कामाय लोकाः
 प्रिया भवन्ति [बृह. २।४।५+ ४।५।६
 न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं
 प्रियं भवति, आत्मनस्तु कामाय.. बृह. २।४।५
 न वा अरे वेदानां कामाय वेदाः
 प्रिया भवन्ति, आत्मनस्तु.. बृह. ४।५।६
 न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं
 प्रियं भवति [बृह. २।४।५+ ४।५।५
 न वा अरे इन्द्रमोहं ब्रवीमि [बृ. उ. २।४।१३ + ४।५।१४
 न वा अहमिमं विजानामि बृह. ४।५।१४
 न वाक्यं न पदं वेदं नाक्षरं न
 जडं कश्चित् ते. वि. ६।४
 न वागाच्छति नो मनः (ब्रह्मणि) केनो. १।३
 न वाचं विजिज्ञासीत्, वक्तरं विधात् कौ. त. ३।८
 न वा अधिकशतं शाखा यजुषो
 माहतात्मज मुक्तिको. १।१२
 न वानां चक्रा अधिनाथा त्योना नव
 भद्रा नव मुद्रा मंहीनाम् त्रिपुरो. २
 न वानि गृहाणि नरोऽपराणि म. गी. २।२२
 न वायुनां मिनीकाशो नापः पृथ्वी न च.. न. शो. २।३
 न वायुः स्पर्शदोषेण नाग्निर्देहजन्मणा १ सं. सो. २।७२
 न विकल्पितमहंति म. गी. ३।३१
 न विनिर्जितं प्रकुर्वीत दिशश्चैवावलोकयन् शिवो. ७।५७
 न विज्ञातं वदन्ति, न विज्ञातं
 पश्यन्ति (पशवः).. १ ऐत. ३।२।४
 न विज्ञातेर्विज्ञातारे विजानीयाः बृह. ३।४।२

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे
 वित्तमद्राह्म चेत्त्वा कठो. १।२७
 न विन्दति नरो योगं पुत्रदारादिसङ्गतः शिवो. ७।१०६
 न विद्यो न विजानीमो यथैत-
 दनुशिष्यात् केनो. १।३
 न विश्वामूषरे वपेत् संहितो. ३।४
 न विधिर्न निषेधश्च न वन्यावर्ज्य-
 कल्पना । ब्रह्मविज्ञानिनामस्ति.. ना. प. ६।२१
 न विना प्रमाणेन प्रमेयस्योपलब्धिः मैत्रा. ६।१४
 न विमुञ्चति दुर्मेधाः म. गी. १८।३५
 न विशेष गृहाद्ब्रह्म शिवो. ७।६१
 न विश्वस्तैजसः प्राज्ञो विराट्
 सूत्रात्मकेश्वराः ते. वि. ६।१०७
 न विषं विषमुच्यते महो. ३।५४
 न विस्मयन्त इव न स्खलन्तीव
 न पर्यावर्तन्त इव आर्षे. ३।२
 न वृक्षमारोहणमपि (कुर्यात्) ना. प. ७।१
 न वृक्षमारोहेन यानादिरूढो.. ना. प. ९।८
 नानृततन्वादी ना. प. ९।८
 न वेत्ता वेदं न वेदां न जामित्स्वप्रसुप्तयः ते. वि. ६।८
 न वेद यज्ञाध्ययनैर्न दानैः य. गी. १३।४८
 न वेद सत्यो न च तर्कवाप्रा न
 धारणाभ्यान्समाधयोऽपि अनु. सा. ६
 न वेद सुकृतस्य पन्थानमिति ऐत. ३।४।१, २
 न वेद दिवा न नक्तमासीदव्यावृत्तम् अन्यको. ६।१
 न वेदेनैयज्ञैर्न तपोभिरुपैर्न साङ्ग्यैर्न
 योगैर्नाश्रमैर्नान्यैरात्मानमुपलभन्ते सुबालो. १।१४
 न वै कार्यं करणम् ग. शो. ४।१
 न वै जातु शुष्माकस्मिन् कश्चिद्ब्रह्मोद्यं जेता बृह. ३।८।१२
 न वै तत्र न निम्लोच नोदियाय
 कदाचन छांदो. ३।११।२
 न वै तत्र निम्लोचो नोदियाय (भा. पा.) छांदो. ३।११।२
 न वै देवा अमन्ति न पिबन्त्ये-
 तदेवाद्यतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति छांदो. ३।६।१
 [+३।७।१+३।८।१
 न वै नूनं भगवन्तस्त एतदेवेविषु छांदो. ६।१।७
 न वै मत्परं किञ्चिद्विश्वस्या-
 दिरहं इह... ग. शो. ३।१३

[illegible]

न स पुनरावर्तते तत्कैवल्यम्	भा. प. ११२२
न स पुनरावर्तते इत्याह भगवान्	
कांक्षान्निवृत्तः	का. कटो. ५
न स भूयोऽभिजायते	अ. गी. १४३४
न समाधावजाप्याभ्यां बन्ध	
निर्वासनं मम...	म. वा. १. ८
न स मूढवल्लिप्यते	१ निबन्ध. ६
न सम्भावेत्स्वयं काञ्चित् पूर्वदृष्टं न	
न अङ्गोत् । कथां च वर्जयेच्चाक्षां	
न पश्येल्लिखितसंज्ञि	भा. प. ४१३
न सर्वं सर्वमेव च । मनोवचोभि-	
रमार्णं पूर्णापूर्णं सुखात्सुखम्	महो. ५१४५
न स वेदं यथा मनुः, एवं स देवामां..	बृह. ११४१०
न स वेदाकृतो ह्येषोऽस एकैकेन	
भवति	बृह. ११४१०
न स समानाधिक इत्येकस्य परमार्थः	वि. म. भा. ११८
न स ह वैरज्ज्वाचरन्पाप्मनाल्लिप्यते	कां. प्रो. ५१६०१०
न स सिद्धिमवाप्नोति	अ. गी. ११६१३
न संस्मरत्यतीतं च कर्मजोऽपरोक्षि च	अ. प. ५१२६
न संसारे मज्जते वा कदाचित्	वि. सि. ४
न साक्षिणं साक्ष्यमवधीः साक्ष्यज्ञानि	
विलक्षणम्	कुण्डिको. २३
न साधुना कर्मणा भूयान्नो प्रवा-	
साधुना कृतीयान्	को. प. ३१९
न साम्प्रतं प्रतिभाति बालं	कटो. २१६
न सुकृतं नो दुष्कृतम्	त्वत्सि. २
न सुखदुःखे विजिज्ञासीव सुख-	
दुःखयोर्विज्ञातारं विद्यात्	को. प. ३१८
न सुखं कारणं तस्माद्योगद्वयवृत्तिः	साधुर्न. १
न सुखं न शरां गतिं	अ. गी. १६१३
न सुखं संसृज्यात्मनः	अ. गी. ५१४०
न सूक्ष्मप्रज्ञमत्यंतं न प्रज्ञं	
न कश्चिन्मुने...	भा. प. ८१२२
न सूक्ष्मप्रज्ञं च सूक्ष्मप्रज्ञं नोभयतः	
प्रज्ञं न प्रज्ञं नाप्रज्ञं च ज्ञानात्मनः	
मत्तमन्वयवैयर्थ्यमाहमलक्षणम-	
चिन्त्यमप्यपरोक्षीकृतमवस्थव-	
सारे ज्ञानधीमशमं शिवं शांति-	
मयैव मयैव मयैव च आत्मा	कुण्डिको. ११६

न स्त्रियमुपेयात् सहवै. १२
 न स्थूलं नास्थूलं न ज्ञानं नाज्ञानं
 नोभयतःप्रज्ञम् ना. प. ९।२०
 न स्नानं न जपः पूजा न होमो
 नैव साधनम् (सञ्ज्यासिनः).. ना. प. ६।३९
 न स्वधर्मातिक्रमेणाश्रमी भवति मैत्रा. ४।३
 न स्वप्रकाशे सर्वसाक्षिण्यविक्रिये-
 ऽद्वये पश्यत नृसिंहो. ९।६
 न स्वर्गं लोकमतिनयेदिति छांदो. १।८।५
 न स्विदेतेऽप्युच्छिष्टा इति न वा अजी-
 विष्यमिमां न खादन् छांदो. १।१०।४
 न इन्ति न निबध्यते भ. गी. १८।१७
 न हत्वाहमप्रणीय स्वविष्टामित्याजहामि बा.मं. ७
 न इन्त्यते इन्त्यमाने शरीरे
 [कठो. २।१८+ भ. गी. २।२०
 न इन्त्यमानेऽपि देहे (?) (मा.पा.) कठो. २।१८
 न ह पुरा ततः संवत्सर आस बृह. १।२।४
 न ह्यर्षिर्षेसंविदः अ. पू. ४।२२
 न ह वा असंविदाना एव द्रागिवाभि
 वृत्पद्यन्ते इति आर्षे. ६।१
 न ह वा अस्मा उदेति न निमोचति छांदो. ३।११।३
 न ह वा अस्यानन्नं जगधं भवति बृह. ६।१।१४
 न ह वा एतस्यर्चा न यजुषा न
 साम्नाऽर्थोऽस्ति यः सावित्रं वेद नृ. पू. १३४
 न ह वा एतस्य साम्ना नर्चा न
 यजुषार्थो नु विद्यते अव्यक्तो. ४
 न ह वा एतत्केचिदुपधावन्तो
 विन्दन्ति नाभिपश्यति आर्षे. ३।२
 न ह वा एनं मिथुचिदेमीति शौनको. ४।३
 न ह वा एवविदि किञ्चनानन्नं भवति छांदो. ५।२।१
 न ह वा एष परमतीवोदेति आर्षे. ६।३
 न ह वा महीयांसो भागकृप्ति-
 मप्याभजन्ति शौनको. १।४
 न ह वाच नस्तद्येन निष्कर्म इममेवे-
 त्यन्तलि कुत्वोपास्थिषत छाग. ६।४
 (स होवाच) न ह वाविष त्वद्भाग-
 वेयी भवति शौनको. १।४
 न ह वैतद्वायव्या एकं च न पदं प्रति(वा.) बृह. ५।१४।५

न ह वै देवान् पापं गच्छति बृह. १।५।२०
 न ह वै परमित्था कश्चनाश्रोत्य-
 संविदान इव आर्षे. ८।१
 न ह वै सशरीरस्य सतः प्रिया-
 प्रिययोरपहतिः (मा. पा.) छा.उ. ८।१२।१
 न हाप्सु प्रेत्यप्सुमान् भवति छा.उ. २।४।२
 न हास्मात्पूर्वाः प्रजाः प्रैति कौ. त. २।१०
 न हास्मात् पूर्वाःप्रजाःप्रयन्तीति कौ. त. २।८
 न हास्य कर्म क्षीयते बृह. १।४।१५
 न हास्य प्रियं प्रमायुकं भवति बृह. १।४।८
 न हास्य प्रियं प्रमायुक्तं भवति (मा.पा.) बृह. १।४।८
 न हास्योद्ग्रहणायेव स्याद्यतो यतस्त्वा-
 ददीत उवणमेव बृह. २।४।१२
 नहि कल्याणकृत्कश्चित् भ. गी. ६।४०
 नहि कश्चन शक्त्यात्सकृद्वाचा नाम
 प्रज्ञापयितुम् कौ. त. २।३
 नहिकश्चित्क्षणमपिजातु तिष्ठत्यकर्मकृत् भ. गी. ३।९
 नहि किञ्चित्स्वरूपोऽस्मि निर्व्यापार-
 स्वरूपवान् ते. बि. ३।४४
 नहि घ्रातुघ्रातिर्विपरिलोपो विद्यते-
 ऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२४
 नहि चञ्चलताहीनं मनः कचन दृश्यते ।
 चञ्चलत्वं मनोधर्मो बह्वेधर्मो
 यथोष्णता महो. ४।९९
 नहि जनिर्मरणं गमनागमौ नच मलं
 विमलं न च वेदनम् । चिन्मयं
 हि सकलं विराजते... वराहो. ३।५
 नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते भ. गी. ४।३८
 न हि तृप्तेः परं सुखम् यो. शि. २।२१
 नहि तेभगवन्व्यक्तिं विदुर्देवानदानवाः भ. गी. १०।१४
 न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्य-
 शेषतः [भ. गी. १८।११+ भवसं. १।५२
 न हि द्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपो विद्यते-
 ऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२३
 न हिनस्त्यात्मनाऽऽत्मानं भ. गी. १३।२९
 नहि नानास्वरूपं स्यादेकैवस्तु कदाचन वराहो. ३।१
 नहि पथ्यमपथ्यं वा रक्षाः सर्वेऽपि :
 नीरखाः यो. च. ६८१

नहि प्रजानामि तव प्रवृत्ति	भ.गी. ११३१
नहि प्रज्ञापेत उपस्थ आनन्दं रतिं	कौ. त. ३।७
प्रजातिं कश्चन प्रज्ञापयेत्	कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेत चक्षू रूपं किञ्चन	कौ. त. ३।७
प्रज्ञापयेत्	कौ. त. ३।५
नहि प्रज्ञापेत शरीरं सुखं दुःखं	कौ. त. ३।७
किञ्चन प्रज्ञापयेत्	कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेत श्रोत्रं शब्दं कश्चन	कौ. त. ३।७
प्रज्ञापयेत्	कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेतः प्राणो गन्धं कश्चन	कौ. त. ३।७
प्रज्ञापयेत्	कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेता जिह्वाऽन्नरसं कश्चन	कौ. त. ३।७
प्रज्ञापयेत्	कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेता धीः काचन सिद्धयेन्न	कौ. त. ३।७
प्रज्ञातव्यं प्रज्ञापयेत्	कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेता वाङ्माम किञ्चन	कौ. त. ३।७
प्रज्ञापयेत्	कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेतो पादावित्यां काचन	कौ. त. ३।७
प्रज्ञापयेताम्	कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेतो हस्तौ कर्म किञ्चन	कौ. त. ३।७
प्रज्ञापयेताम्	कौ. त. ३।७
न हि प्रतीक्ष्यते मृत्युः कृतं वाऽस्य	भवसं. १।३८
न वा कृतम्	भ. गी. २।८
नहि प्रपद्यामि ममापनुद्यात्	तै.आ. १।३।२
नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्	मैत्रा. ६।१०
[क्र.अ.८।२।२२=मं.१०।७।१६	
[ना.पू.ता.४।८+सहवै. १९+	
नहि बीजस्य श्वादुपरिमहोऽस्तीति...	मं.आ. २।७
नहि मदन्यादिति जातविवेकः शुद्धा-	
द्वैतप्रज्ञादिति मिदागंधं निरस्य	
...परिपक्वो भवति	
नहि मन्तुर्मेतेर्विपरिलोपो विद्यते-	वृह. ४।३।२८
ऽविनाशित्वात्, न तु तद्वितीय-	
मस्ति, ततोऽन्यद्विभक्तं यन्मन्वीत	
नहि मरणप्रभवप्रणाशहेतुर्भम	वराहो. ३।१२
चरणस्मरणाद्वेतेऽस्ति किञ्चित्	
नहि रसयितु रस्यतेर्विपरिलोपो	वृह. ४।३।२५
विद्यतेऽविनाशित्वात्	

नहिवर्तुर्वेतेर्विपरिलोपो विद्यते-	वृह. ४।३।२६
ऽविनाशित्वात्	
नहि विज्ञातुर्विज्ञातेर्विपरिलोपो	वृह. ४।३।३०
विद्यतेऽविनाशित्वात्	म.वा.२. १२
न हि शीर्यतेऽसङ्गो नहि सज्जते	
न हि श्रोतुः श्रुतेर्विपरिलोपो	वृह. ४।३।२७
विद्यतेऽविनाशित्वात्	
न हि साध्यसमो हेतुः सिद्धौ	अ. शां. २०
साध्यस्य युज्यते	कठो. १।२१
न हि सुज्ञेय अणुरेष धर्मः-(मा.पा.)	कठो. १।२१
न हि सुविज्ञेयमणुरेष धर्मः	
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति	भवसं. १।४२
मुखे मृगाः	
न हि स्पष्टः स्पष्टेर्विपरिलोपो विद्यते-	वृह. ४।३।२९
ऽविनाशित्वात्, नतुतद्वितीयमस्ति	नृसिंहो. ८।३
न हीदं सर्वं स्वत आत्मवित्	म.वा.२.८
न हृष्यति ग्लायति यः सजीवन्मुक्तः	महो. ४।४६
न हेम कटकात्तद्वज्रगच्छद्दार्ढ्यापरा	वृह. ५।१४।५
न हेव तद्गायत्र्या एकं च न पदं प्रति	आर्षे. १।२
न हेव शकुवत इति नास्येशीमहि	वृह. १।३।१८
न हेवालं आर्येभ्यो भवति	
न हेवालोक्तया आशाऽस्ति य एव-	वृह. १।३।२८
मेतत्साम वेद	वृह. ५।१४।७
न हेवास्मै स काम ऋष्यते (मा.पा.)	वृह. ५।१४।७
न हेवास्मैसकामः समुद्यते [गायत्र्यु. ५	कौ. त. ३।१३
न हेवेनं तृष्णीयातां	छाग. २।४
न होत्तमातधम उपनेतेति	१।१२. १।१२
न ह्यत्यायन् पूर्वं, येऽस्यायंस्ते	नृसिंहो. ९।६
ह परावभुतः	मैत्रा. ६।३०
न ह्यत्र किञ्चानुभूयते	कठो. २।१०
न ह्यत्रोद्वर्त्मना गतिः	कौ. त. ३।९
न ह्यभुवैः प्राप्यते हि ध्रुवं तत्	नृसिंहो. ५।३
न ह्यन्यतरतो रूपं किञ्चन सिद्धयेत्	
न ह्यन्यदस्यप्रमेयमनात्मप्रकाशम्	
न ह्ययमोतो नानुज्ञाताऽसङ्गत्वा-	नृसिंहो. ८।३
द्विकारित्वादसत्त्वात्.	नृसिंहो. ८।५
न ह्ययमोतो नानुज्ञातैतदात्म्यं हीदं सर्वं	
न ह्यशब्दभिवेहास्ति, चित्तमयो ह्यय-	
मोह्यारम्भिनमयमिदं सर्वम्	नृसिंहो. ८।२

न ह्यसङ्गस्तसङ्कल्पः भ. गी. ६।२
 न ह्यस्ति द्वैतसिद्धिः, आत्मैव सिद्धः नृसिंहो. ९।१
 न ह्यस्य प्राच्यादिदिशः कल्पन्ते मैत्रा. ६।१७
 न ह्येतस्मादिदिनेत्यन्यत्परमस्त्यथ बृह. २।३।६
 नामधेयम् नृसिंहो. ९।६
 न ह्येतन्निरात्मकमपि नात्मा पुरतो १ ऐत. १।६।२
 हि सिद्धः महो. ४।२२
 न ह्येष कदाचन संविशति आ च महा. १।६।२
 पुराच... पथिभिश्चरन्तं.. नाकर्मसु नियोक्तव्यं नानार्येण
 सहावसेत् महो. ४।२२
 नाकस्य पृष्ठमभिसंवसानो वैष्णवी महाना. ६।१९
 लोक इह मादयन्ताम् महाना. ५।२०
 नाकस्य पृष्ठमारुह्य गच्छेद्ब्रह्मसलोकतां
 नाकस्य पृष्ठे ते मुकुतेऽनुभूत्वेमं
 लोकं हीनतरं वा विशन्ति मुण्ड. १।२१०
 नाकस्य पृष्ठे महतो वसन्ति परं
 धाम त्रैपुरं चाविशन्ति [त्रि. महो. ७
 नाकाशस्य घटाकाशे विकारा- +त्रिपुरो. ७
 वयवो यथा अद्वैत. ७
 नाकाशी कर्णः च चतुर्ऋचो भवति संहितो. ५।१
 नाकृतेन कृतेनार्यो न श्रुतिस्मृति-
 विभ्रमैः । निर्मेन्दुर इवाम्भोधिः
 स तिष्ठति यथास्थितः महो. ४।४१
 नाकृतेनेह कश्चन भ. गी. ३।१०
 नाकृत्वा निस्तिष्ठति कृत्वैव
 निस्तिष्ठति कृतिरस्त्वेव छां. ७।२१।१
 नाग-कूर्म-कृकर-देवदत्त-धनञ्जया
 उपप्राणाः पैङ्गलो. २।३
 नागदन्तादिसम्भूतं चतुरस्रं सु-
 शोभनम् । हेमरत्नचित्रं वापि
 शुरोरासनमुत्तमम् शिवो. ७।६४
 नागमेवाप्येति यो नागमेवास्तमेति
 नागः कूर्मोऽयमर्थः कृकरो देवदत्तो
 धनञ्जयः [ब्र. वि. ६७+ शिवो. ७।६४
 नागादिवायवः पञ्च त्वगस्थ्यादिषु
 संस्थिताः [त्रि. भा. २।८२+ सुबालो. ९।१३
 नागादिवायवः पञ्च त्वगस्थ्यादि-
 संस्थिताः यो. चू. २३
 नागादिवायवः पञ्च त्वगस्थ्यादि-
 संस्थिताः जाद. ४।३०
 नागादिवायवः पञ्च त्वगस्थ्यादि-
 संस्थिताः शां. १।४।८

नागाननोऽहं नमतां सुसिद्धः हेरम्बो. १२
 नाभिर्न पृथ्वी न तेजोनवायुर्नव्योम.. ग. शो. ३।२
 नाभौ प्रमीयते सहवे. २३
 नाङ्गेन विमूर्च्छति, सर्वमायुरेति छांदो. २।१९।२
 नाचार्यहासीति न ब्राह्मणहासीति छांदो. ७।१५।३
 नाज्येषु सर्वधर्मेषु शाश्वताशाश्वताभिधा अ. शां. ६०
 नाडीनामाश्रयः पिण्डो नाडयः
 प्राणस्य चाश्रयः बराहो. ५।५४
 नाडीभ्यां वायुमाकृष्य कुण्डल्याः
 पार्श्वयोः क्षिपेत् । धारयेदुदरे पश्चात्.. यो. शि. १।९३
 नाडीभ्यां वायुमारोप्य नाभौ तुन्दस्य
 पार्श्वयोः । घटिकैकां बहेद्यस्तु
 व्याधिभिः स विमुच्यते शां. १।७।४९
 नाडीशुद्धिमवाप्नोति पृथक्चिह्नोप-
 लक्षितः । शरीरलघुता दीर्घबहिः जाद. ५।११
 नाडीशुद्धिं च कृत्वाऽऽदौ प्राणायामं
 समाचरेत् म. वा. र. १
 नाडीपुञ्जं सदा सारं नरभावं
 महामुने । समुत्सृज्यात्मना-
 ऽऽत्मानमहमित्यवधारय जा. व. ४।६१
 (एवं) नाडीस्थानं वायुस्थानं
 तत्कर्म च सम्यग्ज्ञात्वा
 नाडीसंशोधनं कुर्यात् शां. १।४।९
 नाडयः प्राणस्य चाश्रयः बराहो. ५।५४
 नातपस्कस्यात्मज्ञानेऽधिगमः कर्मशुद्धिर्वा मैत्रा. ४।३
 नातः परं वेदितव्यं हि किञ्चित् श्वेता. १।१२
 नातिक्रामेद्ब्रह्मोहाद्यत्र दोषो न विद्यते १ संसो. २।६३
 नातिशुष्मे च न ब्राह्मणं ब्रूयात् ३ ऐत. १।३।४
 नातिभ्रमणशीलः स्यात् शिवो. ७।६१
 नात्मज्ञस्यैष विषय आत्मज्ञो ह्यात्म-
 मात्रदृक् [अ. प्र. ४।३+ बराहो. ३।२७
 नात्मनो बोधरूपस्य मम ते सन्ति
 सर्वदा । इति यो वेद वेदान्तेः
 सोऽतिवर्णाश्रमी भवेत् ना. प. ६।१७
 नात्मभावेन नानेन न स्वेनापि
 कथञ्चन । न पृथक्पृथक्
 किञ्चिदिति तत्त्वविदो विदुः वैतथ्य ३५
 नात्मा देहो नेन्द्रियाण्यन्तरङ्गं
 नाहङ्कारः साक्षी नित्यः प्रत्यगात्मा भवति. ३।२७

नात्मानमवसादयेत्
 नात्मानं न परं चैव न सत्यं
 नापि चानृतम्
 नात्मानं माया स्पृशति
 नात्मा मनुष्यो न च देवयक्षौ..
 नात्मेन्द्रियमनोबुद्धिगोचरं कर्म...
 नात्यर्थं सुखदुःखाभ्यां शरीरमुप(घात)-
 तापयेत् [कठश्रु. ७+
 [२सञ्ज्यासो. १३+
 नात्यश्रुतस्तु योगोऽस्ति
 नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिन-
 कुशोत्तरम् [१यो.त.३५+
 नात्र काचन भिदाऽस्ति
 नात्र तिरोहितमिवास्ति
 नात्र मित्रामित्रादिविचारणा
 नात्र ह्यत्यंतसंवासो लभ्यते
 येन केनचित्
 नाथ रुद्रो नैश्वरो न बिन्दुर्नो कलेति
 नाह एवानुसन्धेयो योग-
 साक्षात्प्रमिच्छता
 नाहकोटिसहस्राणि...लयं यान्ति
 ब्रह्मप्रणवनादके
 नाहते कस्यचित् पापं
 नाहबिन्दुकलाध्यात्मस्वरूपं च...
 निरतिशयाद्वैतपरमानन्दलक्षण-
 सादिनारायणं ध्यायेत्
 नाहरूपं भुवोर्मध्ये मनसो मण्डलं
 विदुः [यो. शि. १।१७८
 नाहरूपापराशक्तिर्ललाटस्यतुमध्यमे
 नादशमन्यत्रमना अभूवं नाभौषमिति
 नादस्वरूपो भरतः
 नादः पञ्चाक्षरो भवति
 नादः पञ्चकूटाक्षरो भवति
 नादः सन्धानम्
 नादाधारा समाख्याता अवलन्ती
 नादरूपिणी
 नादान्तर्गोचिरूपकः
 नादान्तर्गोचिरेव सः

अ.गी. ६।१६
 आगम. १२
 नृ.पू. ५।२
 भवसं. २।२६
 आयुर्वे. ४
 कुंडिको. ११
 कठश्रु. २७
 अ. गी. ६।१६
 अ. गी. ६।११
 म. वा. र. ४
 बृ. उ. १।३।२८
 तारोप. ५
 भवसं. १।२०
 स्वसंवे. १
 वराहो. २।८
 ना. बि. ५०
 अ. गी. ५।१५
 त्रि.म.ना.७।१२
 +५।१५
 यो. शि. ६।४८
 बृह. १।५।३
 तारसा. ३।८
 रामो. १।२
 श्रीबि.ता. १।२
 गणप. ७
 वराहो. ५।२९
 ते. बि. ५।५
 ते. बि. ५।६, ७

नादान्ते परमात्मनि सम्प्रतिष्ठाप्य
 ध्यायीतेशानम्
 नादाभिन्न्यक्तिरित्येतच्चिह्नं तत्सिद्धि-
 सूचकम् । यावदेतानि सम्पश्ये-
 तावदेवं समाचरेत्
 नादासक्तं सदा चित्तं विषयं नहि
 काङ्क्षति
 नादे चित्तं विलीयते
 नादेन ब्रह्म विजिज्ञासस्व
 नादोऽन्तरङ्गसारङ्गबन्धनेवागुरायते
 नादो बिन्दुश्च चित्तं च त्रिभिरेक्यं
 प्रसाधयेत्
 नादो महाप्रभुर्ज्ञेयो, भरतःशङ्खनामकः
 नादो यावन्मनस्तावन्नादान्तेऽपि
 मनोन्मनी
 नादो वै ब्रह्म
 नादोऽहं, बिन्दुरहम्
 नादो हि भूतानामानन्दः
 नाद्वैतवादं कुर्वीत गुरुणा सह..
 नाधमानोवृषभंचर्षणीनां [चिन्त्यु. १५।३ ते.आ.३।१५।२
 नाधार्मिकनृषाक्रान्ते न दंशमशका-
 वृते.. देशे रोगप्रदे वसेत्
 नाधो त्याज्यं नाधो त्याज्यं (भस्मापः)
 नाध्यात्मिकं नाधिभूतं नाधिदैवं
 न मायिकम्
 नाध्वनि प्रमीयते
 नानधीतवेदायोपदिशेत्
 नानन्दं न निरानन्दं न चलं नाचलं
 स्थिरम् । न सन्नासन्न चैतेषां
 मध्यं ज्ञानिमनो विदुः
 नानन्दंनरतिनप्रजाति विजिज्ञासीता-
 नन्दस्य रतेः प्रजातेर्विज्ञातारं विद्यात्
 नानजं परिगृहीतं (भवति)
 नानपत्यः प्रमीयते लब्धाहारो भवति
 नानया ज्ञातयाभूयो मोहपङ्केनिमज्जति
 नानवाप्तमवाप्तव्यं
 नाना तु विद्या चाविद्या च, यदेव
 विद्यया करोति अद्वयोपनिषदा
 तदेव वीर्यवत्तरं भवति

अ. शिखो. ३
 जा. द. ५।१२
 ना. बि. ४२
 ना. बि. ४१
 गान्धर्वो. १
 ना. बि. ४५
 यो. शि. ६।७२
 तारसा. २।४
 ना. बि. ४८
 गान्धर्वो. १
 अद्वैतो. १
 गान्धर्वो. ६
 यो.शि. ५।५९
 ते.आ.३।१५।२
 शिखो. ७।८६
 भस्मजा. १।५
 ते. बि. ६।९
 सहवे. २३
 सुत्रलो. ५।१
 महो. ९।९६
 को. त. ३।८
 बृह. ६।१।१४
 सहवे. २३
 महो. ५।२९
 अ.गी. ६।१२
 नादो. १।१।१०

नानात्मभेदहीनोऽस्मिन्नाखण्डानन्दविग्रहः मैत्रे. ३।८
 नानात्ययानां रसानां समवहार-
 मेकतां गमयन्ति (मा.पा.) छां.उ. ६।९।१
 नानात्ययानां वृक्षाणां रसान्
 समवहारमेकतां रसं गमयति छां. उ. ६।९।१
 नानात्ममस्ति कलनायु न वस्तुतोऽन्तः अ. पू. २।४४
 नानाभावान्पृथग्विधान् भ. गी. १८।२१
 नानामार्गैस्तु दुष्प्रापं कैवल्यं
 परमं पदम् [१यो.त. ६+ यो. शि. १।३
 नानायोगिनस्तं गत्वा शेतेऽसौ
 वासनावशात् त्रि. ब्रा. २।१७
 नानारूपा दशवक्त्रं विधत्ते
 नानारूपान्या च बाहून्विभक्तिं गुह्यका. ७०
 नानार्येण सहावसेत् महो. ४।२२
 नानावर्णाकृतीनि च भ. गी. ११।५
 नानाविधानि दिव्यानि भ. गी. ११।५
 नानाविधानि रूपाणि हाटके
 कनकादिवत् ना.पू. ता. ५।७
 नानाविधैर्विचारैस्तु न बाध्यं
 जायते मनः यो. शि. १।६०
 नानाशक्तप्रहरणाः भ. गी. १।९
 नानिस्तिष्ठच्छ्रद्धाति नितिष्ठन्नेव
 श्रद्धाति छांदो. ७।२०।१
 नानुतिष्ठन्ति मे मतम् भ. गी. ३।३२
 नानुध्यायाद्बहुच्छब्दान्वाचोविश्लि-
 पनं हि तत् [बृह. ४।४।२१+
 [अ.पू. ४।३७+वराहो. ४।३३+ शाट्या. २३
 नानुवर्तयतीह यः भ. गी. ३।१६
 नानुशोचन्ति पण्डिताः भ. गी. २।११
 नानुशोचितुमर्हसि भ. गी. २।२५
 नानुसन्धेः परा पूजा न हि तृप्तेः
 परं सुखम् यो. शि. २।२१
 नानोपनिषदभ्यासः स्वाध्यायो यज्ञ
 इति । ज्ञानयज्ञः स विज्ञेयः शाट्याय. १५
 नान्ते न मर्त्यं न पुनस्तर्थाधि भ. गी. ११।१६
 नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञं नोभयतः-
 प्रज्ञं न प्रज्ञानघनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञं माण्डू. ७

नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञं नोभयतः-
 प्रज्ञं न प्रज्ञानघनमदृष्टमन्यव-
 हार्यमप्राप्यं [नृ. पू. ४।२+ रामो. २।४
 नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञं...स्वान्तः-
 स्थितः स्वयमेवेति य एवं वेद
 स मुक्तो भवति ना. प. ९।२०
 नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञं नोभयतः-
 प्रज्ञं न प्रज्ञं नाप्रज्ञं प्रज्ञानघनम् ग. शो. १।४
 नान्तःप्रज्ञो न बहिःप्रज्ञो
 नोभयतःप्रज्ञः सुबालो. ५।१५
 नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा
 नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां भ. गी. १५।३
 नाभरसं विजिज्ञासीत अभरस-
 विज्ञातारं विद्यात् भ. गी. १०।४०
 नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढाः
 नान्यदतोऽस्ति द्रष्टुं को. त. ३।८
 नान्यदतोऽस्ति मन्तुं मुण्ड. १।२।१०
 नान्योऽतोऽस्ति विज्ञाता बृह. ३।८।११
 नान्यदतोऽस्ति विज्ञातृ बृह. ३।८।११
 नान्यदतोऽस्ति श्रोतृ बृह. ३।८।११
 नान्यत्किञ्चन मिषत् बृह. ३।८।११
 नान्यत्किञ्चन शाश्वतम् बृह. ३।८।११
 नान्यत्किञ्चिद्वेदितव्यं स्वव्यतिरेकेण
 नान्यदस्तीति वादिनः २पेत. १।१
 नान्यदस्तीति संवित्त्वा परमा
 सा ब्रह्मकृतिः अ. पू. १।४७
 नान्यभारायणादुपासितव्यम् ना. प. ६।२
 नान्यस्मै कस्मैचन यद्यप्यत्मा
 इमामद्भिः परिगृहीतां धनस्य
 पूर्णी दद्यात् भ. गी. २।४२
 नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं
 नान्यं शृण्वन्ति न नमन्ति नगायन्ति
 नान्यः कश्चिन्मत्तो व्यतिरिक्त इति
 नान्यः पन्था अयनाय विद्यते
 [महावा. ३+चिन्त्यु. १२।७+
 नान्यः पन्था दुःखविमुक्तिहेतुः
 नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय
 [येता. ३।८६।१५चिन्त्यु. १३।११
 नान्यः पन्था विमुक्तये त्रि. ब्रा. ना. ४।३
 नान्यः पन्था विमुक्तये के. १

नान्यः परमः पन्था विद्यते मोक्षाय
 नान्ये जानन्ति गुह्यमिदम्
 नान्येषामियं ब्रह्मविषयं ब्रह्मविद्या
 नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा (गुह्यते)
 नान्योऽतोऽस्ति द्रष्टा
 नान्योऽतोऽस्ति मन्ता
 नान्योऽतोऽस्ति श्रोता
 नान्यो वस्तुल्य एतस्य कश्चित्
 नान्यो हेतुर्विद्यते ईशनाय
 नापदि ग्लानिमायान्ति निशि
 हेमाम्बुजं यथा
 नापानोऽस्तं गतो यत्र प्राणश्चास्त-
 मुपागतः । नासाप्रगमनावर्त
 तश्चित्तत्त्वमुपाश्रय
 नापुत्राय प्रदातव्यं नाशिष्याय
 कदाचन
 नापुत्राय नाशिष्याय नासंवत्सर-
 रात्रोषिताय नापरिज्ञातकुल-
 क्षीलाय दातव्या, नैवचप्रवक्तव्या
 नापुत्रायाशिष्याय वा पुनः
 नापृष्टः कस्यचिद्भूयान्न चान्यायेन
 पुच्छतः
 नापो मूत्रपुरीषाभ्यां नाम-
 दोषेण मस्करी
 नापेक्षते भविष्यच्च वर्तमानेनतिष्ठति
 नापुवन्ति महात्मानः
 नाप्रज्ञमपि न प्रज्ञाचनं चादृष्टमेव च
 नाप्रवक्ते (भूयात्) इत्याचार्याः
 नाप्रशान्ताय दातव्यं न चाशिष्याय
 नै पुनः [श्वेता. ६।२२+
 नाप्रसं संपुटं सत्त्वरजस्तमोगुण-
 रक्षितं तत्त्वं चेति
 नाप्सु प्रमीयते
 नाप्रकवित्परमं प्रैति वाम
 नाप्रकाय कदाचन
 नाभावो विद्यते सतः
 नाभिहन्तारसमारभ्य .. जामदग्नौ
 विजानीयात्

कालिको. ३
 सि. सा. १।१
 भस्मजा. २।१६
 मुण्ड. ३।१।८
 बृह. ३।७।२३
 बृह. ३।७।२३
 बृह. ३।७।२३
 कठो. १।२२
 श्वेताश्व. ६।१७
 महो. ४।१८
 अ. पू. ५।३२
 अ. वि. ४७
 सुबालो. १६।१
 श्वेताश्व. ६।२२
 १सं.सो.२।१०२
 १सं.सो. २।७२
 अ. पू. २।२८
 अ. गी. ८।१५
 ना. प. ८।१२
 ३पेत्. २।६।४
 अ.पू. ५।११९
 अद्वैतो. ३
 सहस्रै. २३.
 शाटयाय. ४
 अ. गी. १८।६७
 अ. गी. २।१६
 त्रि.भा.२।१४९

नाभिकन्दादवः स्थानं कुण्डल्या
 अङ्गुलं मुने । अष्टप्रकृतिरूपा सा
 कुण्डली मुनिसत्तम
 नाभिकन्दे च नासाग्रे पादाङ्गुष्ठे च
 यत्नवान् । धारयेन्मनसा प्राणान्
 सन्ध्याकालेषु वा सदा
 नाभिकन्दे समौ कृत्वा प्राणापानौ..
 हंसहंसेति यो जपेत्, जरामरण-
 रोगादि न तस्य भुवि विद्यते
 नाभिकन्दे कायव्यूहज्ञानम्
 नाभिदेशे स्थितं चक्रं दशा(रं)खं
 मणिपूरकम् । [यो.शि.१।१७२ +५।९
 नाभिनन्दति न द्वेष्टि
 नाभिनन्दति नैष्कर्म्यं न कर्मस्वनु-
 षज्जते । सुसमो यः परित्यागी
 सोऽसंसक्त इति स्मृतः
 नाभिनन्दत्यसम्प्राप्तं प्राप्तं मुञ्जे यथे-
 प्सितम् । यः स सौम्यसमाचारः
 सन्तुष्ट इति कथ्यते
 नाभिनन्देत्तमरणं नाभिनन्देत्तजीवितम्
 (एवं) नाभिभूयत्यसौ पुरुषोऽभि-
 भवत्ययं भूतात्मा
 नाभिमध्ये सर्वरोगविनाशः
 नाभिस्थाने स्थितं विश्वं शुद्धतापं
 सुनिर्मलम्
 नाभिहृदयकण्ठमूर्धसु जाग्रत्स्वप्न-
 सुषुप्तिपुरीयावस्थाः
 नाभिर्हृदयं कण्ठं मूर्धा च
 नाभेरजः स वै ब्रह्मा
 नाभेरधोगतास्तिस्रो नाड्यः स्युरधोमुखाः यो.शि.५।२६
 नाभेरुपरि नासान्तं वायुस्थानं... त्रि.भा.२।१३९
 नाभेर्व्योम (अजायत) ग.शो. ३।१९
 नाभेस्तिर्यंगश्च ऊर्ध्वं कुण्डलिनीस्थानम् शाण्डि. १।४।५
 नामौ चित्तसंयमाह्लोकज्ञानम् शाण्डि. १।७।५२
 नामौ तु मणिवद्विम्बं यो जानाति यो. चू. ९
 स योगवित् यो. चू. ९
 नामौ दशदलपञ्चं हृदयेद्वादशारकम् यो. चू. ९
 नामौ लिङ्गस्य मध्ये तु चडयानाख्यं यो.शि. ५।३८
 तु चण्डवैत्

नाभ्या अपानोऽपानान्मृत्युः शिशं

निरभिद्यत

२पेत्. १४

‘नाभ्या आसीत्’...‘अन्नपतेऽन्नस्य’

इति मन्त्रेण...कैवल्यमुक्तिरुच्यते राधोप. ४१२

नाभ्या आसीदन्तरीक्षं [चिन्त्यु. २।१६ ऋ.अ. ८।४।१९

[=मं. १०।९०।१४+

वा.सं. ३१।१३

नाभ्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तप्रमाणं

धारयेत्सुधीः । तेभिर्धार्यमिदं

सूत्रं क्रियाङ्गं तंतुनिर्मितम्

परब्र. १७

नाभ्यां वा एते अराः प्रतिष्ठिताः

नृ. पू. ५।२

नामगोत्रादि वरणं देशं कालं श्रुतं

कुलम् ।.. रुपापयेन्नैव सद्यतिः

ना. प. ४।२

नामग्राहमेतेन सर्वमभिपद्यन्ते

शौनको. १।५

नामजात्यादिभिर्मेदैरष्टधा...सा मां

पातु सरस्वती

सरस्व. १७

नामत्वा विजानाति

छांदो. ७।१८।१

(अथ) नामधेयंसत्यस्यसत्यमिति

नामरूपमन्नं च जायते

बृह. २।३।६

नामरूपविमुक्तोऽहं

मुण्ड. १।१।९

नामरूपविहीनात्मा...वैदेही

मुक्त एव सः [ते. बि.

४।४९-५३

नामरूपात्मकं सर्वं...सा मां

पातु सरस्वती

सरस्व. २३

नामरूपात्मकं हीदं सर्वं तुरीयत्वा-

चिद्रूपत्वाद्योतत्वादनृणात्त्वा-

बलुक्तानत्वादविकल्परूपत्वात्

नृसिंहो. २।७

नामरूपादिकं नास्ति

ते. बि. ५।११

नामं वा ऋग्वेदो यजुर्वेदः

सामवेद आथर्वणश्चतुर्थः

छांदो. ७।१।४

नामसङ्गीर्तनादेव शिवस्या-

शेषपातकैः...प्रमुच्यते

शिवो. १।२०

नामात्रे चिद्यते गतिः

आगम. २३

नामादिभ्यः परे भूम्नि स्वाराज्ये

चेत्स्थितोऽप्ये । प्रणमेत्कं तदा-

ऽऽत्मज्ञो न कार्यं कर्मणा तदा

याज्ञव. ६

नामानि कृत्वाऽभिवदन्यदास्ते-

[महाना. ३+चिन्त्यु. १२।७+

पारमा. ७।५

नाम्न आत्माप्रेरात्मा ज्योतिषमात्मा

को. स. ४।१६

नाम्नि मन्त्रा एकं भवन्ति, मन्त्रेषु

कर्माणि [छांदो. ७।४।१+

७।५।१

नाम्नो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे

भगवान् ब्रवीत्विति

छांदो. ७।१।५

नायका मम सैन्यस्य

भ. गी. १।७

नायमस्तीत्येवैनमाहुर्दयं वेद

छांदो. ७।५।२

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न

मेधया न बहुना श्रुतेन [कठो. २।२३ +मुण्ड. ३।२।३

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च

प्रमादात्तपसो वाऽप्यलिङ्गात्

मुण्ड. ३।२।४

नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्

कठो. २।१८

नायं भूत्वा भविता वा न भूयः

भ. गी. २।२०

नायं योगे विमुक्त आख्यातो-

पसर्गानुपात्तेः

२ प्रणवो. १६

नायं लोकोऽस्ति न परः

भ. गी. ४।४०

नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य

भ. गी. ४।३१

नायं हन्ति न हन्यते (आत्मा)

[कठो. २।१९+

भ. गी. २।१९

नारदः पितामहमुवाच गुरुस्त्वं

जनकस्त्वम्

ना. प. २।१

नारंभानारमेत् कश्चित्

ना. प. ५।३३

नारसिंहेन वाऽनुष्टुभा मञ्जराजेन

तुरीयं विद्यात्

नृसिंहो. २।८

नाराजकेजनपदे चरत्येकचरो मुनिः

ना. प. ६।४३

नारायण एवेदं सर्वम् [ना.पू. ९।६+

ना.उ.ता. १।५

नारायण एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यं

नारा. २

नारायणक्रीडाकन्तुकं परमाणुव-

द्विष्णुलोकसुसंलभम् (ब्रह्माण्डं)

त्रि.म.ना. ६।२

नारायणपदमवाप्नोति य एवं वेद

तारसा. ३।९

नारायणपरं ब्रह्म नारायणनमोऽस्तु

ते [महाना. ९।४+

त्रि.म.ना. ७।११

नारायणपरो ज्योतिरात्मा

नारायणः परः

महाना. ९।४

नारायणपरो ध्याता ध्यानं

नारायणः परः

महाना. ९।४

नारायणमनादि च

ना.उ.ता. १।८

नारायण महाविष्णो...हृषीकेश

जयो नमः

ना.पू.ता. ३।५

नारायणव्यतिरिक्तं न किञ्चिदस्ति	त्रि.म.ना. ५।५	नारायणाद्वादशादित्याः सर्वे वसवः	
नारायणशब्दपरब्रह्मश्रीमहामाया-		सर्वे ऋषयः...समुत्पद्यन्ते	त्रि.म.ना. २।७
प्रकृतिसर्वमेकजननी लक्ष्मीर्भवति	ना.पू.ता. २।१	नारायणाद्वादशादित्याः सर्वे देवा	
नारायणसायुज्यमवाप्नोति	नारा. ५	ऋषयो मुनयः... सर्वे नारायणः	ना.पू.ता. ५।६
नारायण इरे कृष्ण.. महाविष्णो		नारायणाद्विरण्यगर्भो जायते	त्रि.म.ना. ३।७
नमोऽस्तु ते	ना.उ.ता. ३।५	नारायणाद्ब्रह्मा जायते	नारा. १
नारायणं कारणपुरुषमकारणं परं		नारायणाद्वा अन्नमागतं मकं...	
ब्रह्मोम्	नारा. ४	पूतमन्नमयाचितमसंकल्पप्रमभीया-	
नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं		न्न कश्चन याचेत	सुबालो. १२।१
परायणम्	महाना. ९।३	नारायणान्न किञ्चिदस्ति	ना. उ.ता. १।५
नारायणं शिवं शान्तं	ना.पू.ता. १।६	नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।	
नारायणः परब्रह्मेति य एवं वेद	ना.उ.ता. ३।१	तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्	त्रि.म.ना. ७।१०
नारायणः परवस्तु भवतीति विज्ञायते	ना.उ.ता. २।१	[+ना.पू.ता. +३।१ ऊर्ध्वपुं.२+ २ वतदु. १३६	
नारायणः परं ब्रह्म [ना.पू.ता.१।४+]	ना.उ.ता. १।५	नारायणायशांताय..शरण्यायनमोनमः	ना.उ.ता. २।४
नारायणः स भगवान् परब्रह्मस्वरूपी		नारायणायेति पञ्चाक्षरं परं ब्रह्मस्वरूपं	तारसा. १।३
सर्वदेवान्तमोचरः	ना.पू.ता. २।४	नारायणायेति पञ्चाक्षरं भवति(मंत्रः)	ना. पू.ता. ३।१
नारायणः सर्वपुरुष धेवदं परब्रह्म	ना.उ.ता. १।५	नारायणे प्रलीयन्ते [नारा. १+]	त्रि.म.ना. ३।७
नारायणः सर्वभूतान्तर्गम्यात्मा	ना.उ.ता. १।५	नारायणे मय्यचला भक्तिस्तु वर्धते	ऊर्ध्वपुं. ६
नारायणः सर्वं खल्विदं ब्रह्म	ना.पू. ता. ५।४	नारायणोऽखिलब्रह्माण्डाधिपतिरेकः	राधिको. ३
नारायणः स्थावरजङ्गमात्मको भवति	ना.पू.ता. ५।६	नारायणोऽहं नरकान्तकौऽहं	
नारायणः स्वयं ज्योतिः	ना. उ.ता. १।५	पुरान्तकौऽहं..निरहं च निर्ममः	कुण्डिको. १७
नारायणात्प्रजापतिः प्रजायते	नारा. १	नार्चनं पितृकार्यं च तीर्थयात्राव्रतानि	
नारायणात्मवर्तन्ते नारायणे प्रलीयन्ते		च ।.. न विधिलौकिकी क्रिया	ना. प. ६।४०
[नारा. १+]	त्रि.म.ना. २।७	नार्यो नरविहङ्गानामङ्गबन्धनवापुराः	
नारायणात् प्राणो जायते	नारा. १	[महो. ३।४५+]	याज्ञव. १४
नारायणात्मा वेदं सर्वं निर्विकारं...		नालमात्रविनिष्कम्पो धारणा-	
प्रतिपाद्यते	ना.उ.ता. ३।१	योजनं तथा	अ. ना. २।३
नारायणात्सर्वे देवाश्च जायन्ते	त्रि.म.ना. २।७	नालस्थतन्नुना मेरुश्चालितश्चेज्जगद्भवेत्	ते. वि. ३।८२
नारायणादखिललोकसृष्ट प्रजापतयो		नाल्पे सुखमस्ति, भूमावेव सुखं,	
जायन्ते	त्रि.म.ना. २।७	भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्यः	छांदो. ७।३३।१
नारायणादखिललोकाश्च जायन्ते	त्रि.म.ना. २।७	(एवमपि) नावमत्तिपङ्कं कर्णधार	
नारायणादण्डविराट्स्वरूपो जायते	त्रि.म.ना. २।७	इव यन्तेव गजं विरक्तः पुरुषः	
नारायणादिन्द्रो जायते [नारा. १+]	त्रि.म.ना. २।७	सर्वदा ब्रह्माहमिति व्यवहरेत्	ना.प. ६।२
नारायणादेकाग्रश्च रुद्राश्च जायन्ते	त्रि.म.ना. ३।७	नावमन्येव कश्चन । न चेनं वेदब्रा-	
नारायणादुग्रो जायते	नारा. १	धित्यै वैरं कुर्वीत केनचित्	ना. प. ३।४२
नारायणाद्वादशादित्या ब्रह्मा ऋषयः		नावायो म इह शश्वदस्ति	भा. प्र. ६
सर्वाणि कृन्दासि नारायणादेव		नावाह्वं न विसर्जनं न मन्त्रं न	
समुत्पद्यन्ते	नारा. ३	ब्रह्मणं नोऽसिद्धं च	व. इ. ९

नावाहनं न विसर्जनं न मन्त्रं नामन्त्रं
न ध्यानं नोपासनं.

ना. प. ३।८७

नाविज्ञानं सत्यं वदति विज्ञानमेव
सत्यं वदति

छांदो. ७।१७।१

नाविज्ञाप्य गुरुं गच्छेत्

शिवो. ७।२४

नाविद्वान्न स्वैरिणी -(मा. पा.)

छां. उ. ५।११।५

नाविद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुतो

यक्ष्यमाणो वै भगवन्तोऽहमस्मि

छां. उ. ५।११।५

नाविशुक्तात्परमं स्थानम्

भस्मजा. २।८

नाविद्यानुभवात्मा न स्वप्रकाशे..

नृसिंहो. ९।६

नाविद्यास्तीह नो नो माया शान्तं

ब्रह्मेदमवलम्बम्

म. वा. र. १७

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमा-

हितः । नाशान्तमनसो वापि प्रज्ञाने-

नैनमाप्नुयात्

कठो. २।२४+

[ना. प. ९।१९+

महो. ४।६९

नावृत्तिर्ब्रह्मणः काचिदन्याभावादनावृतं

२आत्मो. २८

नावेदविन्मनुते तं बृहन्तं [शाटया. ४+

इतिहा. २०

नावेव सिन्धुं दुरितात्यभिः

महाना. ६।१३

[+क्र. अ. १।७।७=मं. १।९९।१+

त्रि. ता. १।२

नावैष्णवो ब्रजेन्मुक्तिं बहुशास्त्रयुतो-

ऽपि वा । वैष्णवोवर्णहीनोपि याति..

भवसं. ५।२३

नाशप्राप्यं सुखाद्धीनं (दृश्यमानं)

वैतथ्य. ३२

नाशयान्यात्मभावस्थः

भ.गी. १०।११

नाशुचित्वं न चोच्छिष्टं तस्य सूत्रस्य

धारणात् ।

परब्र. १२

नाशौचं नाभिकार्यं च न पिण्डं नोद-

कक्रिया । न कुर्यात्पार्वणादीनि

ब्रह्मभूताय भिक्षवे

पैङ्गलो. ४।६

नाश्रद्धधन् मनुते अश्रद्धधेव मनुते

अद्धा त्वेव विजिज्ञासितव्या

छांदो. ७।१९।१

नामीलं कीर्तयेदेता एव देवताः

प्रीणाति

सहस्र. १९

नासच्छास्त्रेषु सज्जेत... अतिवादांस्त्य-

जैत्कर्तान् पक्षं कश्चन नाभयेत्

ना. प. ५।३३

नासतो विद्यते भावः

भ.गी. २।२६

नासन्नं शयनं ज्ञानं.. सोपानतकः

प्रकृतीक शिवपुस्तकमाचनम्

शिवो. ७।८७

नासन्नं सरवाशिने मृयात्-इत्याचार्याः

३ऐत. ३।६४

नासामधारणाद्वापि जितो

(वायुः) भवति..

जा. द. ६।२३

नासामे अच्युतं विद्यात् तस्वान्ते

तु परं पदम्

ब्र. वि. ४२

नासामे चित्तसंयमादिन्द्रलोकज्ञान

शांदि. १।७।५२

नासामे चैव हृन्मध्ये... स्रवन्त-

ममृतं पश्येत्...

वराहो. ५।३२

नासामे (प्राणानां) धारणादीर्घमायुः

स्याद्देहलाघवम्

त्रि. ब्रा. १।११

नासामे वायुविजयं भवति

शांदि. १।७।४५

नासामे शशभृद्विस्त्रे.. स्रवन्तममृतं

पश्येन्नेत्राभ्यां सुसमाहितः

जा. द. ५।६

नासादि केशान्तमूर्ध्वपुण्ड्रं विष्णोः

कात्याय. १

नासामेवाप्येति योनासामेवास्तमेति

सुबालो. ९।३

नासादिकेशपर्यन्तमूर्ध्वपुण्ड्रं तु

धारयेत् [यज्ञोप. २+

सुदर्श. २

नासादिकेशान्तमूर्ध्वपुण्ड्रं विष्णोः..

चरणद्वयाकृति

नारदो. १

नासाऽध्यात्मं, प्रातर्व्यमधिभूतं,

पृथिवी तत्राधिदैवतं...

सुबालो. ९।३

नासाभ्यन्तरचारिणौ

भ.गी. ५।२७

नासाभ्यां वायुमाकृष्य नेत्रद्वन्द्वे

निरोधयेत्.. नेत्ररोगा विनश्यन्ति

जा. द. ६।३०

नासाभ्यां वायुमाकृष्य... प्रत्याहारः

समाख्यातः

जा. द. ७।१०.४

नासिकामे चतुर्भिः शङ्खिभिर्यश-

मिद्वर्दशभिः क्रमादङ्गुलान्ते...

स तु योगी भवति

अद्वयता. ३

नासिकापुटमङ्गुल्यापिधायैकेन

मारुतम् ।.. शब्दमेव विचिन्तयेत्

अ. ना. २०

नासिकाभ्यां प्राणः, प्राणाद्वायुः...

२ ऐत. १।४

नासिके एवोक्तं, यथाऽन्तरिक्षं तथा

१ ऐत. १।२

नासिकोत्तरवेदिः (शारीर्यज्ञस्य)

प्रा. हो. ४।२

नासीरामेवाप्येति यो नासीरा-

मेवास्तमेति

सुबालो. ९।९

नासौ(योगी)मरणमाप्नोति पुनर्योग-

बलेन तु.. मृतस्य मरणं कुतः

यो. वि. १।४५

नास्तमेति न बोधेति नौविद्वति न

विद्वति (नित्)

महो. ५।१०२

नास्ति काकमतादन्यदभ्यासाख्य-

मतः परम् । तेनैव प्राप्यते मुक्तिः

नास्ति चित्तं न चाविद्या.. ब्रह्मैवैक-

मनाद्यन्तमब्धिवत्प्रविजृम्भते

नास्ति दृष्टान्तिकं सत्ये नास्ति दार्ष्टा-

न्तिकं ह्यजे

नास्ति देहसमः शोच्यो नीचो गुण-

विवर्जितः । कलेवरमहङ्कार-

गृहस्थस्य महागृहम्

नास्ति धर्मसमं मित्रं

नास्ति धर्मसमः सखा

नास्ति नादात्परो मन्त्रो न देवः

स्नात्मनः परः ।

नास्ति नास्ति जगत्सर्वं

गुरुशिष्यादिकं नहि

नास्ति नास्ति विमुक्तोऽस्मि नकार-

रहितोऽस्म्यहम्

नास्ति निर्मनसः क्षतिः

नास्ति पातो लयस्थानां

महातत्त्वेऽपि वर्तिनाम्

नास्ति पुनः समुद्धानां विचित्रं

घातुचेष्टितम्

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य

नास्ति माया च वस्तुतः

नास्ति यस्य शरीरं वा जीवो वा..

नास्ति सत्तातिरेकेण नास्ति माया च..

नास्त्यकृतः कृतेन

नास्त्यनात्ममयं जगत्

नास्त्यसत्तेतुकमसत् सद्सद्देतुकंतथा

नास्त्यसावाभ्याभावात्

नास्त्यन्तौ विस्तरस्य मे

नास्त्येषा परमार्थेन (माया)

नास्त्यारण्यपुरुषाः क्षीयन्ते [छांदो.

नास्त्य केन च कर्मेणा लोको मीयते

नास्त्य जस्यैतज्जीर्यति

नास्त्य तावलोको जीर्यते यावदेतयोर्न..

अन्तरिक्षस्य च वायौश्च

नास्त्य तावलोको जीर्यते..

अर्था च वरुणस्य च

यो.शि. १।१४४

अ.पू. ५।१०

ते. बिं. ५।२९

महो. ३।२७

शिवो. ६।१६७

शिवो. १।१६७

यो.शि. २।२०

य. वा. २.४

मैत्रे. ३।१९

महो. ४।९७

अमन. १।८३

भवसं. १।१२

भ. गी. १।११९

पा. ब्र. ४९

ते. बिं. ५।१०

पा. ब्र. ४९

मुण्ड. १।२।१२

महो. ६।१०

अ. शां. ४०

महो. २।८

१०।१९

महो. ९।११२

४।११२

कौ. त. ३।१

छांदो. ८।१।५

१।१७३

१।७६

नास्त्य तावलोको जीर्यते यावदेतयोर्न

जीर्यते पृथिव्याश्चाग्नेश्च

नास्त्य तावलोको... यावदेतयोर्न

जीर्यते दिवश्चादित्यस्य च

नास्त्य तावलोको जीर्यते यावदेषां

न जीर्यते दिशां च चन्द्रमसश्च

नास्त्यान्नं क्षीयते य एवं वेद

नास्त्य (यतेः) नक्तं न वा दिवा

नास्त्यपापंचनचकृषो मुखान्नीलं वेत्ति

नास्त्य प्रजा पुराकालात्प्रवर्तते

नास्त्य प्रजा पुराकालात् प्रमीयते

नास्त्य प्रजा पुराकालात् सम्मोहमेति

नास्त्य सान्ध्येण स्यामाः, घ्नन्ति त्वेवैनं

नास्त्याब्रह्मवित्कुले भवति [मुण्ड. ३।२।९

नास्त्याश्च कश्चिज्जनिता न चाविपः

नास्वादयेत्सुखं तत्र निस्सङ्गः प्रज्ञया

भवेत् । निश्चलं निश्चरचित्तं..

नाहङ्कारात्परो रिपुः

नाहमत्र भोग्यं पश्यामि

[छांदो. ८।९।२+८।१०।२+

नाहमस्मि न चान्योऽस्ति न चायं

न च नेतरः

नाहमस्मि न चान्योऽस्मि

देहादिरहितोऽस्म्यहम्

नाहमस्मि न सोऽस्म्यहम्

नाहमेतत्कर्म प्राज्ञासिषमिति

नाहमेतत्सुखं दुःखं प्राज्ञासिषमिति

नाहमेतद्रूपं प्राज्ञासिषम्

नाहमेतद्देवं ताव यद्रोत्रस्त्वमसि

नाहमेतन्नाम प्राज्ञासिषम्

नाहमेतमजरसं प्राज्ञासिषमिति

नाहमेतमानन्दं रतिं प्रजातिं प्राज्ञा-

सिषमिति नहि प्रज्ञापेतौ पादा-

वित्यां कांचन प्रज्ञापयेताम्

नाहमेतं गन्धं प्राज्ञासिषमिति नहि

प्रज्ञापेतं चक्षुर्यं किञ्चन प्रज्ञापयेत्

नाहमेतं शब्दं प्राज्ञासिषमिति हि

प्रज्ञापेतौ जिह्वाभरसं कञ्चन प्रज्ञापयेत्

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

१।७।२

१।७।४

१।७।५

बृह. २।१।२

कठश्रु. १०

कौ. त. ३।१

कौ. त. ४।६

कौ. त. ४।१३

कौ. त. ४।१२

छां. ८।१०।२

+माण्डू. १०

गुह्यका. ६८

अद्वैत. ४५

महो. ३।१६

८।११।२

अ. पू. २।४

मैत्रे. ३।८

ते. बिं. ३।४

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

छांदो. ४।४।२

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

कौ. त. ३।७

नाहमेतामित्यां प्राज्ञासिषमिति नहि
प्रज्ञापेता धीः काचन सिद्ध्येत् कौ. त. ३।७
नाहमेनाननुपतस्थिरद्वा वा. मं. ६
नाहमेभिर्विना किञ्चिन्नमयैते विना.... महो. ६।४१
नाहमेवं ब्रवीमि ब्रवीमीति होवा-
चान्यो ह्यन्यस्मिन्प्रतिष्ठितः छांदो. ७।२४।२
नाहं कर्ता च भोक्ता च न बोध्यो
न च बाध्यकः अक्षयुप. २४
नाहं कर्ता नैव भोक्ता प्रकृतेः
साक्षिरूपकः सर्वसारो. ९
नाहं कर्ता बन्धमोक्षौ कुतो मे सर्वसारो. १२
नाहं कर्तेत्यरः कर्ता कर्म वा प्राप्तनं मम अक्षयुप. २८
नाहं सत्त्वयमेव * सम्प्रत्यात्मानं
जानात्ययमहमस्मीति [छांदो. ८।११।१,२
नाहं चेतः शोकमोहौ कुतो मे सर्वसारो. १२
नाहं तद्गवन्वेद यत्र गमिष्यामीति बृ. उ. ४।२।१
नाहं त्वाप्तपहायपरागामिति [कठ. २+ कठश्रु. १८
नाहं दुःखी न मे देहो बन्धः को-
ऽस्यात्मनि स्थितः महो. ४।१२६
नाहं देहो जन्ममृत्यूः कुतो मे सर्वसारो. १२
नाहं देहो न च प्राणो नेन्द्रियाणि
मनो नहि जा. द. १०।४
नाहं न चान्यदस्तीह ब्रह्मैवाऽस्मि... महो. ५।६९
नाहं नान्यो न चैवेको न चात्मेको-
ऽह्योऽह्यः अ. पू. २।२१६
नाहं नेदमिति ध्यायंस्तिष्ठ त्व-
मचलाचलः महो. ६।३६
नाहं पदार्थस्य न मे पदार्थ इति भाविते ।
नाहतः शीतलया बुद्ध्या कुर्वतो
लीलया क्रियाम् । यो नूनं वास-
नात्यागो ज्येयो ब्रह्मन्प्रकीर्तितः महो. ६।४२
नाहं प्रकाशः सर्वस्य म. गी. ७।२५
नाहं प्राणः क्षुत्पिपासे कुतो मे सर्वसारो. १२
नाहं ब्रह्मेति जानाति तस्मै
मुक्तिर्न जायते पैङ्गलो. ४।२३
नाहं ब्रह्मेति सङ्कल्पास्तुष्टाह्वयते
मनः । सर्वं ब्रह्मेति सङ्कल्पात्
सुरदानमुच्यते मनः महो. ४।१२४

नाहं भवाम्यहं देवो नेन्द्रियाणि
दशैव तु । न बुद्धिर्न मनः
शश्वन्नाहङ्कारस्तथैव च सर्वसारो. ७
नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति
वेद च । यो नस्तद्वेद तद्वेद.. केनो. २।२
नाहं मांसं न चास्थीनि देहादन्यः
परोऽस्म्यहम् । इति निश्चित-
वानन्तः क्षीणाविद्यो विमुच्यते महो. ४।१२७
नाहं विप्रो न च नरपतिर्नापि वैश्यो
न शूद्रो... किन्तु... लक्ष्मीभर्तुः
पदकमल्योर्दासदासानुदासः भवसं. २।३४
नाहं वेदेन तपसा म. गी. १।१५३
नाहं वेद्यं व्योमवातादिरूपं सर्वसारो. ११
नाहं सन्नाप्यसन्मयः अ. पू. ५।९१
निकषे हेमरेखाभा यस्य रेखा
प्रदृश्यते । तदक्षमुत्तमं विद्यात्
निक्षिप्ते कतके विहाय कलुषं यद्वज्रलं
निर्मलं... तद्वत्सर्वमिदं विहाय
सकलं... तत्त्वं तत्सहजस्वभाव-
ममलं तेजोऽमनस्के ध्रुवम् अमन. २।७६
निखानयन्ति शंकुभिः (यदिदं) आर्षे. १।९
निखिलनिगमोदितसकामकर्म-
व्यवहारो लोकः महावा. २
(ॐ) निगमं शङ्करोऽब्रवीत् सि. वि. ६
निगमो जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि. २
निगमो बसुदेवो यो वेदार्थः कृष्णरामयोः कृष्णो. ६
निगिरेषे बृहन्नूनुर्मेकं चलवदस्त्विदम् ते. वि. ६।८६
निगृहीतस्य मनसो निर्विकल्पस्य
धीमतः ।.. सुषुप्तेऽन्यो न तत्समः अद्वैतो. ३४
निगृहीतानि सर्वशः म. गी. २।६८
निगृह्णाम्युत्सृजामि च म. गी. ९।१९
निग्रहः किं करिष्यति म. गी. ३।२३
नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले
[अ. खि. ५।८७।१२+ श्रीसू. १२
निष्ठाभ्येमा * (पुनः) शांतिमत्यन्तमेति
[कठो. १।१७+ श्वेता. ४।१३
नित्यचिन्मात्ररूपोऽस्मि श्वेता. ३।१६
नित्यतृप्तोऽप्यमु जानोऽप्यसमः
समदर्शनः । कुर्वन्नपि न कुर्वन्निः २ आत्मो. १३

नित्यतप्तो निराश्रयः	म. गी. ४।२०	नित्यशेषस्वरूपोऽस्मि सर्वातीतो-	
नित्यनिर्मलरूपात्मा ह्यात्मनोऽन्यन्न		ऽस्यहं सदा	तै.वि. ३।१२
किञ्चन	ते. वि. ६।४०	नित्यसृष्टिहेतुभूता च का	राधिको. १
नित्यपरिपूर्णमखण्डानन्दामृतविशेषं		नित्यस्योक्ताः शरीरिणः	म. गी. २।१८
शाश्वतं परमं पदं	त्रि.म. ना. ७।७	नित्यसाकारस्त्वाद्यन्तश्चान्यः	
नित्यप्रबुद्धचित्तत्वं कुर्वन्वाऽपि		शाश्वतः (नारायणः)	त्रि.म. ना. २।१
जगत्क्रियाम् । आत्मैकत्वंविदित्वा	महो. ४।११	नित्यं च समचित्तत्वं	म. गी. २।३।१०
त्वं त्रिष्टाशुक्लमहाविबल		नित्यं त्रिषवणस्नायी पथोमूल-	
नित्यबुद्धविशुद्धैकसच्चिदानन्द-	तै.वि. ३।११	फलादिभुक् ।... ततः सिद्धमनु-	
मस्यहम्		भूत्वा जीवन्मुक्तो भवेन्मुनिः	रामर. ४।१-९
नित्यमगन्धवशं यत् । अन्नाद्यनन्तं		नित्यं दर्शनकाक्षिणः	म. गी. १।१५२
सह्यतः परं ध्रुवं निचार्य तन्मृत्यु-		नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्	म. गी. ३।१५
मुखात्प्रमुच्यते	कठो. ३।१५	नित्यं वा मन्यसे मृतम्	म. गी. २।२६
नित्यमङ्गलमन्दिरम् [त्रि.म. ना. ७।८x	सि. सा. ६।१	नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदन्ययं	
नित्यमन्तर्मुखः स्वच्छः स्वात्मनाऽन्तः-		तद्गतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः	मुण्डको. १।१६
प्रपूर्णधीः ।... कुरु कर्माणि वै द्विज	अ. पू. ९।११५	नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं च तदन्ययं	
नित्यमुक्तस्वरूपं कैवल्यानन्दरूपं	सि. सा. ६।१	[पा. ब्र. ३४+महो. ४।८६+	उद्ग्रह. ३२
नित्यमुक्तस्वरूपमनाधारमादि-		नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं च तद-	
मध्यातश्चान्यं	त्रि. म. ना. ७।७	न्ययम् । तद्गतयोनिं पश्यन्ति	
नित्यमेकाग्रभक्तिः स्याद्गोपीचन्दन-		धीरा आत्मानमात्मनि	उद्ग्रह. ३२
धारणात्	वासुदे. १३	(ॐ) नित्यं शुद्धं बुद्धं निर्विकल्पं	
नित्ययुक्तस्य योगिनः	म. गी. ८।१४	निराख्यातमनादिनिधनमेकं...	
नित्ययुक्ता उपासते [म. गी. ९।१४	+१२।२	सर्वदाऽनवच्छिन्नं परं ब्रह्म	यो. पू. ७२
नित्यहीलामजनानन्दोऽयं		नित्यं शुद्धं बुद्धं मुक्तं..	म. वा. र. १४
रसोऽनिर्वचनीयः	सामर. ४९	नित्यं शुद्धं बुद्धं मुक्तं सत्यं सूक्ष्मं	
नित्यविद्विषकर्मफलत्यागः प्रत्याहारः	शांडि. १।८।१	परिपूर्णमद्वयं... ब्रह्मैव	नृसिंहो. ९।८
नित्यशुद्धचिदानन्दसत्तामानोद्भिन्नव्ययः	ते. वि. ३।११	नित्यं स गच्छेत्पदमनामकम्	२प्रणवो. १३
नित्यशुद्धबुद्धपरब्रह्मानन्दमयोभवति	ना. पू. ता. २।४	नित्यं सर्वगतं विद्धि शब्दब्रह्म सनातनम्	गान्धर्वो. ४
नित्यशुद्धबुद्धमुक्तसत्यपरमानन्दान्वा-		नित्यं सर्वसन्देहनाशनम्	निर्वाणो. ८
द्ययपरिपूर्णः परमात्मा ब्रह्मैवाहं		नित्यः शुद्धः सदाशिवः । सर्वासर्व-	
रासोऽस्मि	म. वा. र. ९	विहीनोऽस्मि	मैत्रे. ३।६
नित्यशुद्धविशुद्धैकमखण्डानन्द-		(किन्तु) नित्यः शुद्धो निरञ्जनो	
मद्वयम् । सत्यं ज्ञानमनन्तं यत्परं		विमुरद्वयः शिव एकः...	त्रि. वा. १
ब्रह्माहमद्वयम्	बराहो. ३।२	नित्यः शुद्धो निरञ्जनो विमुरद्वयः	त्रि. वा. १।१
(तदनु) नित्यशुद्धः परमात्माऽहमेव	मं. ब्रा. ३।२	शिव एकः	
नित्यशुद्धाय बुद्धाय नित्यायाद्वैत-		नित्यः शुद्धो बुद्धमुक्तस्वभावः...	
रूपिणे । ज्ञानन्दायात्तरूपाय		ज्ञानन्दादिभिर्यः परः सोऽहमस्मि	मैत्रे. १।१६
नारायणं ज्ञानोऽस्तु तै	ना. उ. वा. २।२	नित्यः सर्वगतः स्यात्पुनरुक्तोऽयं	
		सनातनः [भवसं. २।३९+	म. गी. २।२४

नित्यः सर्वगतो ह्यात्मा कूटस्थो
 दोषवर्जितः। एकः सन्निवृत्ते भ्रान्त्या
 सायथा न स्वरूपतः [जा.द.१०।२+ अ.पू. ५।७५
 नित्यानन्दमयब्रह्म केवलं सर्वदा स्वयम्
 [ते.वि. ६।७२+ ६।१०२
 नित्यानन्दमयोऽप्यात्मा ना. प. ८।१६
 नित्यानन्दस्वरूपोऽहम् ते.वि. ३।२७
 नित्यानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञान-
 मूर्ति... भावातीतं त्रिगुणरहितं
 सुदुर्लभं नमामि शु. र. १।१९
 नित्यानन्दं सदेकरसं (आत्मानं) नृसिंहो. १।१
 नित्यानन्दः प्रसन्नात्मा ह्यन्यचिन्ता-
 विवर्जितः स जीवन्मुक्त उच्यते म.वा.र. ८
 नित्यानन्दो निर्विकल्पो निराकृत्यः।
 अचिन्त्यशक्तिर्भगवान् गिरीशः शरभो. २१
 [मोक्ष इति च] नित्यानित्यवस्तु-
 विचारादनित्य-संसार-सुख-
 दुःखविषयसमस्त-क्षेत्र-ममता-
 वृत्त्यक्षयो मोक्षः निरा. उ. २२
 नित्यानित्यविवेकश्चह्यमुत्रविरागता वराहो. २।३
 नित्यानित्यत्वे परस्परविरुद्धधर्मौ,
 तयोरेकस्मिन्ब्रह्मण्यत्यन्त-
 विरुद्धं भवति त्रि.म.ना. २।१
 नित्यानित्यो व्यक्तान्यक्तो
 ब्रह्माब्रह्माहम् अ. शिरः. १
 नित्यानुभवरूपस्यकौमैत्रानुभवः पृथक् अवधू. २१
 (अथ) नित्योऽक्षरः परमः स्वराट् त्रि. म. ना. २।८
 नित्योदितं विमलमाद्यमनन्तरूपं
 ब्रह्मास्मि अ. पू. १।१९
 नित्योदितो निराभासो द्रष्टा
 साक्षी चिदात्मकः महो. ६।८०
 (अथ) नित्यो देव एको नारायणः नारा. २
 नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानां...
 तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां
 शान्तिः शान्तिती नेतरेषाम् कठो. ५।१३
 नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानां...
 तत्कारणं साङ्ख्ययोगाधिगम्यं
 [श्रुता. ६।१३+ भवसं. २।४८

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानां...
 तं पीठं येऽनुभजन्ति धीरास्तेषां
 सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् गो. पू. ३।३
 नित्या नित्यानां चेतना चेतना-
 नामेका बहूनां विदधाति कामान् गुह्यका. ७१
 नित्योऽयं धर्मो ब्राह्मणानां ब्रह्मचारि-
 गृहिवानप्रस्थयतीनाम् भस्मजा. १।६
 नित्यो निष्कलङ्को निर्विकल्पो
 निरञ्जनो निराकृत्यः शुद्धो
 देव एको नारायणो न
 द्वितीयोऽस्ति कश्चित् त्रि.म.ना. १।५
 नित्योऽस्मि विमलोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।२
 नित्योऽहं निरवद्योऽहं निष्क्रियो-
 ऽस्मि निरञ्जनः।... निर्मलो
 निर्विकल्पोऽहं.. ब्र.वि. ९७
 नित्योऽहं शाश्वतो ह्यजः ते.वि. ३।४८
 निदाघ शृणु सत्त्वस्था जाता भुवि
 महागुणाः। ते नित्यमेवाभ्युदिता
 मुदिता स्व इवेन्दवः महो. ४।१७
 निदाघो नाम मुनिराट् प्राप्तविद्यश्च
 बालकः। विद्वत्स्तीर्थयात्रार्थं
 पित्रानुज्ञातवान् स्वयम् महो. ३।१
 निदाघो नाम मुनिः पप्रच्छ ऋभुं
 भगवन्तमात्मानात्मविवेकमनु-
 ब्रूहीति ते.वि. ५।१
 त्रिदिध्यासनमित्येतत् पूर्णबोधस्य
 कारणम् (श्रवणं तु गुरोः पूर्वं
 मननं तदनन्तरम्) शु. र. ३।१३
 त्रिदिध्यासनं दध्यात् कुण्डिको. ९
 निद्राघरूपनाशस्तु वर्तते देहसुक्तिके
 निद्रादौ जागरस्यान्ते... लक्षणं
 मुक्तचेतसः अमन. २।६४
 निद्रालस्यप्रमादोत्थं भ.गी. १८।१९
 निद्राभयसरीसृपं हिसादितरङ्गं
 तृष्णावर्तं दारपङ्कं संसारवाधिं
 वर्तु... तारकमवलोकयेत् म.वा. ३।२

निद्राभिधे स्नानशौचे नेच्छामि न
करोमि च । द्रष्टारश्चेत्कल्पयन्तु
किं मे स्यादन्यकल्पनात् अथधू. १४
निद्राया लोकवार्तायाः शब्दादेरात्म-
विस्मृतेः । कचिन्नावसरं दत्त्वा
चिन्तयात्मानमात्मनि अप्यात्मो. ५
निद्रालस्ये मोहरागौ... गुणास्तामसस्य शरीरकां. ८
निद्रैवान्तर्हितेन्द्रियः शुद्धितमया धिया
स्वप्नद्वयः पश्यतीन्द्रियविलेऽविवशः
प्रणवाख्यः.. सोऽपि प्रणवाख्यः.. मैत्रा. ६।२५
निधनमिति अक्षरं तत्सममेव भवति छांदो. २।१०।४
निधानं बीजमव्ययम् अ.गी. ९।१८
निधाय भारं पुनरस्तमेति चिन्त्यु. १४।१
निधिदाताऽन्नदो मत इति द्वितीयः पादः ग. पू. १।१३
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं अ.गी. २।३६
(एवं) निन्दागर्व-भस्सर-दम्भ-दपेच्छा-
द्वेष-मुख-दुःख-काम-क्रोध-लोभ-
मोहद्वर्षासूयादंकारादींश्च हित्वा
स्ववपुः कुणपमिव दृश्यते प. हं. ३
निन्दाघो अस्मान्दिष्टाश्च सर्वास्ता-
न्मध्यमा (भस्मसात्) कुरु सहवै. ८
निन्दास्तुतिव्यतिरिक्तो न मन्त्रतन्त्रो-
पासको देवान्तरध्यानशून्यः...
ब्रह्मप्रणवानुसन्धानेन यः कृतकृत्यो
भवति स परमहंसपरिव्राट् प. हं. ५.११
निन्दाहङ्कारमत्सरगर्वदम्भेभ्या-
सूयेच्छाद्वेषमुखदुःखकामक्रोध-
लोभमोहादीन् विमुञ्च्य...
जातरूपधरश्चरेदात्मानम् ना.प. ३।८७
निन्दितो न शपेत्परां [कठक. ७+
निपातेषु चैनं वैय्याकरणा उक्षजं
समाभनन्ति २प्रणवो. १४
निपीड्य सीबिनीं सुक्ष्मं दक्षिणेत-
रगुरुतः । वामं वाम्येनं गुरुफेनं
शुक्लासनमिवं स्पृष्टम् जा. द. ३।८
निवृत्तः स्वेन कर्मणा अ.गी. १८।६०
निवृत्तान्ति वनचर्य [अ.गी. ४।४१ +१।९
निवृत्तान्ति महाबाहो अ.गी. १४।५

निबन्धायासुरी मता अ.गी. १६।५
निबोधस्वात्मबोधोऽयं सद्यः प्रत्ययकारकः अमन. २।२५
निभगाऽहं त्वयि मृजे स्वाहा तैत्ति. १।४।३
निमज्जनं पृथिव्याः स्थानादपसरणं
सुराणां [मैत्रा. १।८+ मैत्रे. १।३
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् अ.गी. ११।३३
निमित्तस्त्वातुरः, अनिमित्तः क्रम-
सङ्ख्यासः ना. प. ५।३
निमित्तस्यानिमित्तत्वमिष्यते
भूतदर्शनात् अ. शां. २५
निमित्तं किञ्चिदाश्रित्य खलु शब्दः
प्रवर्तते । यतो वाचो निर्वर्तन्ते कठक. ३४
निमित्तं हि सदा चित्तं संपृक्-
त्यवसु त्रिषु । अनिमित्तो
विपर्यासः कथं तस्य भविष्यति अ. शां. २७
निमित्तानि च पश्यामि अ.गी. १।३०
निमिषार्धं न तिष्ठन्ति वृत्तिं ब्रह्ममयीं
विना (ब्रह्मनिष्ठाः) ते. वि. १।४७
निमिषोच्छ्वासपलकैर्नाडिभिः
प्रहरैर्दिनैः अमन. १।३२
निमीलनादि कूर्मकर्म (कूर्मबायोः) शां. १।४।९
निमीलनादिकूर्मस्य क्षुधा तु कुकरस्य च जा. द. ४।३४
निमीलितदर्शनममादष्टिः अ. जी. २।२
निमीलितस्थस्य पुरत्रयाणि सि. वि. १।६
निमेषकाले तस्याः प्रलयो भवति त्रि.म.ना. ४।६
निम्नाभिं कम्बुकण्ठं (गणेशं) ग. पू. २।७
निम्लोचन्ति ह्यन्या देवताः, न वायुः.. बृह. १।५।२२
नियतस्य तु सङ्ख्यासः अ.गी. १८।७
नियतं कुरु कर्म त्वं अ.गी. ३।८
नियतं क्रियतेऽर्जुन अ.गी. १८।९
नियतं सङ्गरादिवं अ.गी. १८।२३
नियतिश्चहिताः शृङ्गारादयो न च
रक्षा अणिमादयः भावनो. ३
नियतिं न विमुञ्चन्ति महान्तो
भास्करा इव । (अविबन्धुसमयाद्वा
भवन्ति विशदाशयाः) महो. ४।२०+ ना.प. ५।२२
नियन्तेभ्यः सर्वादिस्मान्ति चण्डिहो. १।४
नियम्य भरतर्षभ अ.गी. ३।४१

नियमान्नभतेऽर्जुन
नियामनसमर्थोऽयं निनादो
निशिताकुशः । नादोऽन्तर-
ङ्गसारङ्गबन्धने वागुरायते
नियमः स्वान्तरिन्द्रियनिग्रहः
नियमानन्दविशेषगण्यं मुनिजनैरुप-
सङ्कीर्णं नैमिषारण्यं...
नियमेष्वप्रमत्तस्तु यमेषु च
सदा भवेत्
नियुक्तस्तु यतिः आद्यं देवे वा मांस-
मुत्सृजेत् । यावन्ति पशुरोमाणि
तावन्नरकमृच्छति
नियोजयसि केशव
निरञ्जनमनन्तब्रह्मानन्दसमष्टिकन्दं..
स्वरूपप्रकाशमनिशं ज्वलति
निरञ्जनमनामयं हुम्फट्कुर्वाणं...
शिवं प्रणम्य... कृताञ्जलिपुटः
प्रपद्यते
निरञ्जनं निराकारं निराश्रयं निरति-
शयद्वैतपरमानन्दलक्षणमादि-
नारायणं ध्यायेत्
निरञ्जनं निष्कियं सन्मात्रं चिदा-
नन्दैकरसं शिवं प्रशान्तममृतं
स्वरूपं च ब्रह्म
निरञ्जनं परब्रह्मस्वरूपं परब्रह्मणः
परमरसप्रकैवल्यं... विजयते
निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति
निरञ्जने विलीयते मत्तोवायू
निरञ्जनो निराख्यातो निर्विकल्पो..
(७७) निरञ्जनो निराख्येयो
निर्विकल्पो निरामयः (पाठः)
निरञ्जनो निर्विकारो निरभिमानः
(आत्मा)
निरञ्जनो निर्विकारः... सोऽचिन्त्यो
निर्वर्ण्यश्च पुनात्यशुद्धान्यपूतानि
निरतिशयदिव्यतेजोमण्डलं... निरति-
शयपरमानन्दपारावारमनन्तै-
रानन्दपुरुषैश्चिद्वैरधिष्ठितम्
निरतिशयदिव्यतेजोराशिः

भ. गी. ३।७

ना. वि. ४५

निर्वाणो. ५

ना. प. १।१

ना. प. ६।३२

इतिहा. २८

भ. गी. ३।१

त्रि.म.ना. ७।७

भस्मजा. १।१

त्रि.म.ना. ७।१२

शाण्डि. २।१।३

त्रि.म.ना. ७।९

मुण्ड. ३।१।३

ना. वि. ५०

सि. वि. १

सि. वि. १

१ आत्मो. १

१ आत्मो. १

त्रि.म.ना. ७।९

त्रि.म.ना. ७।९

निरतिशयदिव्यतेजोराश्यन्तर-
समासीनमादिनारायणं ध्यात्वा
...विद्याविद्ययोः सन्धौ वैकुण्ठ-
पुरमाभाति
निरतिशय-निरङ्कुश-सर्वज्ञ-सर्वशक्ति...
कल्याणगुणाकारो भवति
निरतिशयपरमानन्दपरममूर्तिविशेष-
मण्डलं... द्वात्रिंशद्व्यूहभेदैरधिष्ठितम्
निरतिशयपरमानन्दलक्षणपरब्रह्मणः
परममूर्तिपरमतत्त्वविलासविशेष-
मण्डलं... द्वात्रिंशद्व्यूहभेदैरधिष्ठितम्
निरतिशयब्रह्मगन्धस्वरूपं... आदि-
नारायणं ध्यायेत्
निरतिशयब्रह्मानन्दपरममूर्तिमहायन्त्रं
...चित्स्वरूपं... विजयते
निरतिशयलक्षणमहाविष्णुस्वरूपं...
विष्वक्सेनं ध्यात्वा... ब्रह्मतेजो-
मयानवलोक्योपासकः परमा-
नन्दं प्राप
निरतिशयानन्दचामरविशेषैः परि-
सेवितं... निरतिशयाद्वैतपरमा-
नन्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत्
निरतिशयाद्वैतपरमानन्दलक्षणोभूत्वा
निरतिशयानन्दतेजोमण्डलमद्वैत-
परमानन्दलक्षणपरब्रह्मणः...
द्वात्रिंशद्व्यूहभेदैरधिष्ठितम्
निरतिशयानन्दतेजोराशिविशेषं (ब्रह्म)
निरतिशयानन्ददिव्यतेजोराशिः
निरतिशयानन्द-परममङ्गलविशेष-
समष्ट्याकारं... द्वात्रिंशद्व्यूहभेदै-
रधिष्ठितम्
निरतिशयानन्दपारावारो भूत्वा...
महामायां नमस्कृत्य... महाचिराद्-
पदं प्राप
निरतिशयानन्दमयानन्तपरमविभूति-
समष्ट्या विश्वाकारः
निरतिशयानन्दलक्षणं प्रणवाख्यं
विमानं विशाजते

त्रि.म.ना. ६।६

त्रि.म.ना. १।६

त्रि.म.ना. ७।८

त्रि.म.ना. ७।८

त्रि.म.ना. ७।१३

त्रि.म.ना. ७।९

त्रि.म.ना. ६।६

त्रि.म.ना. ७।९

त्रि.म.ना. ८।१

त्रि.म.ना. ७।८

त्रि.म.ना. ४।१

त्रि.म.ना. ३।६

त्रि.म.ना. ७।८

त्रि.म.ना. ६।३

त्रि.म.ना. २।६

त्रि.म.ना. ७।९

निरतिशयानन्दसहस्रप्राकारैरलङ्कृतं...

शश्वदमितपुष्पवृष्टिभिः समन्ततः

सन्ततम् । तदेव त्रिपाद्विभूति-

वैकुण्ठस्थानं परमकैवल्यम्

त्रि.म.ना. ७।८

निरतिशयानन्दं प्राप्य...बोधानन्द-

विमानपरम्परासुपासकः परमा-

नन्दं प्राप

त्रि. म.ना. ६।७

निरतिशयानन्दाद्वितीयोऽहमेव

त्रि.म.ना. ८।६

निरतिशयानन्दानन्ततटिपर्वताकार-

मद्वितीयं स्वयम्प्रकाशमनिशं

ज्वलति

त्रि.म.ना. ७।७

निरतिशयानन्दैरनन्तवृन्दावनैरति-

शोभितमंखिलपवित्राणां परम-

पवित्रं...तुलसीवैकुण्ठं प्रविश्य...

निरतिशयसौन्दर्यलवण्याधि-

देवतां...श्रीसखीमेवं तुलसीं

ध्यात्वा...गत्वा गत्वा ब्रह्मवनेषु...

तत्रानन्दतरङ्गिण्याः प्रवाहेषु

स्नात्वा बोधानन्दवने प्राप्य...

तन्मध्ये च शुद्धबोधानन्दवैकुण्ठं

यदेव ब्रह्मविद्यापादवैकुण्ठम्

त्रि.म.ना. ६।८

निरन्तरनिरुपमनिरतिशयोत्कट-

ज्ञानानन्दानन्तगुच्छफलेरलङ्कृतं

...आदिनारायणं ध्यायेत्

त्रि.म.ना. ७।१२

निरन्तरसमाधिपरम्पराभिर्जगदी-

श्वराकाराः सर्वत्र सर्वावस्थासु

विभान्ति

त्रि.म.ना. ५।५

निरन्तरं नारायणो वैकुण्ठे रम्यः

रहस्यलीलां सङ्ग्रायमानोऽभवत्

निरन्तरमिन्द...शाश्वतं परमं पदं...

स्वयम्प्रकाशमनिशं ज्वलति

त्रि.म.ना. ७।७

निरवयं निरखनम् । अमृतस्यपरंसेतुं

निरवयं निरखनं निराकारं निरा-

अयं...आदिनारायणं ध्यायेत्

त्रि.म.ना. ७।१६

निरवधिनाराचमिकिरपातो निदाव-

विनोदनधारागृहसीकरवर्षणमिव

प्रवितन्त्यमेवं दृढवैराग्याद्वैधो भवति

निरवधिनिरवधौऽहं शुभतरभावो

ऽहमप्रमेयोऽहम्

भा. प्र. ७

निरवयवं निराधारं निर्विकारं...

निर्मलं निरवयं...कूटस्थमचलं...

देशतः कालतो वस्तुतः परिच्छेद-

रहितं...शाश्वतं परमं पदं...

ज्वलति

त्रि.म.ना. ७।७

‘निरवयवं ब्रह्मचैतन्यं’ इति सर्वोप-

निषत्सु सर्वशास्त्रसिद्धान्तेषु श्रूयते

त्रि.म.ना. २।१

निरवयवात्मा केवलः सूक्ष्मो निर्ममो

निरखनो निर्विकारः...पुनात्य-

शुद्धान्यपूतानि

१ आत्मो. ६

निरस्तकल्पनाजालमचित्तत्वं परं पदम्

महो. ९।६०

निरस्तविषयासङ्गं सन्निरुद्धं मनो

हृदि । यदा यात्युन्मनीभावं

तदा तत्परमं पदम्

म. वि. ४

निरस्तविषयासङ्गं सन्निरुद्धमनोहृदि । यदा

यात्युन्मनीभावस्तदा तत्परमं पदम्

त्रि. ता. ५।४

निरस्तातिशयाद्बहुमुखभावैकलक्षणा ।

मेषजं भगवत्प्राप्तिरेकान्ता-

त्यन्तिकी मता

भवसं. १।३१

निरस्ताविषासमोमोहो (अहं)

एवेति [ग. शो. १।४+

राशो. ३।४

निरंशोऽस्मि चिदाकाशमिति मत्वा न

शोचति

अ. दू. ५।१२

निरंशोऽस्मि निराभासो न मनो-

ऽनेन्द्रियोऽस्म्यहम्

ते. वि. ३।४४

निराकारं निराभासं

२ तत्त्वो. २

निराकारं निराभयं निरतिशयाद्वैत...

आदिनारायणं ध्यायेत्

त्रि.म.ना. ७।१२

निराकारा निष्परिग्रहा अशिखा

अयज्ञोपवीता अन्धा वधिरा मुग्धाः

क्षीबा मूका उन्मत्ता इव परिवर्त-

मानाः...प्रणवमेव परं ब्रह्मात्मप्रकाशं

शून्यं ज्ञानन्तस्तत्रैव परिसमाप्ताः

नृसिंहो. ६।३

निराकारोऽस्म्यहं सदा । केवलं

ब्रह्मात्रोऽस्मि

ते. वि. ३।२१

निरात्मकत्वादसङ्ख्योऽयोनिश्चित्यः

निरात्मकत्वान्न सुखदुःखभाग्यवति

मैत्रा. ६।२०

निरात्मकत्वान्न सुखदुःखभाग्यवति

मैत्रा. ६।२१

निरात्मकमात्मैवेदं सर्वं तस्मात्सर्वा-
त्मकेनाकारेण सर्वात्मकमात्मान-
मन्विच्छेत् नृसिंहो. ७।२
निराधारं निर्विकारं निरञ्जनमनन्तं
ब्रह्मानन्दसमष्टिकन्दं.. सि.सा. १।१
निरानन्दोऽपि सानन्दः सबासच
बभूव सः अ. पू. ३।१८
निरामयं शान्तमुमासहायं १ बिल्वो. ११
निरालम्बस्तु (योगः) समस्तनाम-
रूपकर्मातिदूरतया... भावनं
निरालम्बयोगः... त्रि.म.ना. ८।४
निरालम्बपीठः (पीठम्) निर्वाणो. १।४
निरालम्बं पदं प्राप्तं १ तत्त्वो. ७
निरालम्बं समाश्रित्य सालम्बं विज-
हाति यः । स सञ्जयासी च योगी
च कैवल्यं पदमभुते निरालं. २
निराशता निर्भयता नित्यता समता
ज्ञता ।... हेयोपादेयनिर्मुक्ते ज्ञे
तिष्ठन्त्यपवासनम् महो. ६।२९, ३०
निराशीरपरिमहः अ. गी. ५।१०
निराशीनिर्ममो भूत्वा अ. गी. ३।३०
निराशीर्यत्चित्तात्मा अ. गी. ४।११
निराश्रयमतिनिर्मलानन्तकोटि-
रविप्रकाशैकोज्ज्वलं.. कैवल्यानन्द-
रूपं.. शाश्वतं शश्वद्विभाति सि.सा. ६।१
निराहारस्य देहिनः अ. गी. २।५
निरिच्छत्वाकर्ताऽसौ कर्ता सन्निधि-
मात्रतः (आत्मा) महो. ४।१४
निरिच्छं प्रतिबिम्बन्ति जगन्ति
मुकुटे यथा महो. ५।५५
निरिच्छे संस्थिते रत्ने यथा लोकः
प्रवर्तते । सत्तामात्रे परे तस्ये
सुखेवायं जगद्रूपः महो. ४।१३
निरिच्छोः परिपूर्णस्य नेच्छा
सम्भवति कचित् अ. पू. ६।७
निरिन्द्रियो तियन्ताऽहं अ. वा. २.९
निरिन्धनच्योविरिषोपशान्तो न
योद्विजेदुद्विजेयत्रयत्र... अ. वा. २. ९
निरीधरोऽहं निरहं च निर्ममः कुण्डिको. १०

निरीहोऽस्मि निरामयः । सदा-
ऽसङ्गस्वरूपोऽस्मि ते. वि. ३।६
निरुक्तस्त्रयोदशस्तोमः सञ्चरो हुङ्कारः छांदो. १।१३।३
निरुक्तं चानिरुक्तं च.. यदिदं
किञ्च । तत्सत्यमित्याचक्षते तैत्ति. २।६
निरुक्तः सोमस्य मृदुःश्लक्ष्णवायोः
श्लक्ष्णं बलवदिन्द्रस्य... तान्सर्वा-
नेवोपसेवेत वारुणं त्वेव वर्जयेत् छां. उ. २।२२।१
निरुद्धं योगसेवया अ. गी. ६।२०
निरुध्य मारुतं गाढं शक्तिचालन-
युक्तिः । अष्टधा कुण्डलीभूता-
मृज्वी कुर्यात्तु कुण्डलीम् यो. सि. १।८२
निरुध्य वायुना दीप्तो बहिरुहति
कुण्डलीम् । पुनः सुषुम्नया वायु-
र्वह्निना सह गच्छति जा. द. ६।४२
निरुपमनिरवद्यनित्यशुद्धबुद्ध.. विमान-
जालाबलिभिः समाकुलम् सि. सा. ६
निरुपाधिकनित्यं यत्सुप्तौ सर्वसुखा-
त्मकम् । सुस्वरूपत्वमस्त्येतत्.. बराहो. ३।१०
निरुपाधिकसाकारस्त्रिविधः ब्रह्मवि-
द्यासाकारश्चानन्दसाकार
उभयात्मकसाकार इति त्रि.म.ना. २।१
(तस्मादेव) निरुपाधिकसाकारस्य
निरवयवत्वात्स्वाधिकमपि
दूरतो निरस्तम् त्रि.म.ना. २।१
निरुपाधिकी संविदेव कामेश्वरः भावनो. ९
निर्गतगुणत्रयम् निर्वाणो. ३
निर्गता विगताऽभीष्टा हेयोपादेय-
वर्जिता । ब्रह्मन्समाधिबन्धेन
परिपूर्णमनोगतिः अ. वा. २. १०
निर्गुणध्यानयुक्तस्य समाधिश्च ततो
अवेत् १ यो. उ. १०५
निर्गुणं गुणभोक्तुं च अ. गी. १३।१५
निर्गुणं निष्क्रियं सूक्ष्मं.. एकमेवा-
द्वितीयं ब्रह्म अ. ध्यातो. ६२
निर्गुणं निष्क्रियं निर्मलं निरवयं..
निराकारं.. आदिनारायणं ज्ञायेत् त्रि.म.ना. ७।१२
निर्गुणः केवलात्माऽस्मि ते. वि. ३।२१
निर्गुणः केवलोऽस्त्यहम् मैत्रे. ३।२२

निर्गुणः साक्षीभूतः शुद्धः (आत्मा) २ आत्मो. ६
 निर्गुणः.. निष्क्रियो निरवयव आत्मा म. वा. र. १५
 निर्गुणोऽस्मि शिवोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३४
 निर्गुणोऽस्मि समोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३४
 निर्गुणोऽहं परात्परः ते. बिं. ४११
 निर्गुणः शान्तसन्देहो जीवन्मुक्तो..
 अनिर्वाणोऽपि निर्वाणश्चित्रदीप
 इव स्थितः अक्षुप. ४२
 निर्जीवः काष्ठवत्तिष्ठेत् अमन. १२५
 निर्णिज्य कसं चमसं वा पश्चादग्नेः..
 संविशति चर्मणि वा स्थण्डिले वा छान्दो. ५१२८
 निर्दग्धवासनाबीजः.. सदेहो वा विदे-
 हो वा न भूयो दुःखभागभवेत् अ. पू. ५१८
 निर्दोषं हि समं ब्रह्म भ. गी. ५१४
 निर्द्वन्द्वः सदाऽचलगात्रः.. नित्यशुद्धः
 परमात्माऽहमेवेत्यखण्डानन्दः पर्णः..
 ब्रह्माहमिति कृतकृत्यो भवति म. वा. र. ८
 निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थः भ. गी. २४५
 निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थः सर्वत्र
 समदर्शनः ना. प. ४१२३
 निर्द्वन्द्वो निरहङ्कारो निराशीरपरिग्रहः ते. बिं. १३
 निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो भ. गी. ५३
 निर्धनोऽपि सदा तृष्टोऽप्यसहायो
 महाबलः २ आत्मो. १२
 निर्धृताशेषपापौघो मत्सायुज्यं
 भजत्ययम् मुक्तिको. १२१
 निर्बीजं त्रैपदं तत्त्वं तदस्मीति
 विचिन्तये सुबा. शीर्षक. १
 निर्बीजा वासना यत्र तत्तुर्यं
 सिद्धिदं स्मृतम् अ. पू. ५१६
 निर्भावं निरहङ्कारं निर्मलस्कमनीहितम् १ सं. सो. २३७
 निर्गुणवक्ता इति इ स्माह ह्रस्वो
 माण्डूकेयः ३ ऐत. १५४२
 निर्ममः शुद्धध्यानपरायणोऽध्यात्म-
 निष्ठः.. ब्रह्माहमस्मीति ब्रह्मप्रणव-
 मनुस्मरन्.. सत्त्वासेनैव देहत्यागं
 करोति स कृतकृत्यः.. ना. प. ३८७
 निर्ममेति विमुच्यते [पैल्लो. ४१२० + महो. ४८३
 निर्ममो निरञ्जनो निर्विकारः... ४४

सोऽचिन्त्यो निर्वर्ण्यश्च पुना-
 त्यशुद्धानि.. एष परमात्मा नाम १ आत्मो. ३
 निर्ममो निरहङ्कारः [ना. प. ६१२५ + भ. गी. २१७१ + १२१३
 निर्ममो निरहङ्कारो निरपेक्षः ना. प. ३७६
 निर्ममोऽध्यात्मनिष्ठः.. ज्ञानवैराग्ययुक्तो..
 भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय कल्पते प. हं. प. ६
 निर्मलगात्रम्, निरालम्बपीठम् निर्वाणो. ४
 निर्मलनिर्वाणमूर्तिरेवाहम् आ. प्र. ७
 निर्मलसहजस्थितपुरुषे न दिवारात्रि-
 भेदोऽप्यस्ति अमन. २१०९
 निर्मलं निर्मलस्कं च निराभासं
 सदा त्यज अमन. २१२६
 निर्मलायां निराशायां स्वसंवितां
 स्थितोऽस्म्यहम् १ सं. सो. २५१
 निर्मानमोहा जितसङ्गदोषाः भ. गी. ११५५
 निर्मानश्चानहङ्कारो.. नैव कुप्यति न
 द्वेष्टि नानृतं भाषते गिरा ना. प. ५१२९
 निर्मूलं कलनां त्यक्त्वा वासनां यः
 शमं गतः ज्ञेयं त्यागमिमं विद्धि
 मुक्तं तं ब्राह्मणोत्तमम् महो. ६४६
 निर्मूलप्रविण्णमाकृततया निर्जीवकाष्ठो-
 पमः.. निर्वातस्थितदीपवत्
 सहजवान् पार्श्वस्थितिर्दृश्यते अमन. २१७५
 निर्मोक्षायैव भूतानां लिङ्गमागो
 निरर्थकः ना. प. ४३३
 निर्यक्ष्ममचीचते कृत्याभिर्नृतिं च सहवै. ५
 निर्योगक्षेम आत्मवान् भ. गी. २१४५
 निर्लेपकं निरापायं कूटस्थमचलं
 ध्रुवम् । ज्योतिषामपि तज्ज्योति-
 स्तमः पारे प्रतिष्ठितम् यो. सि. ३१२१
 निर्वचनमनौपम्यं निरुपाख्यं किं
 तदवाच्यम् मैत्रे. ६७
 निर्वाणो देवता, निष्कुलप्रवृत्तिः निर्वाणो. १
 निर्वाणोपनिषद्देयं.. स्वमात्रं.. चिन्तयेत् निर्वाणो. शीर्ष.
 निर्वाणोऽस्मि निरीदोऽस्मि निरंशोऽस्मि १ सं. सो. २५६
 निर्वातस्थितदीपवच्च सहजाखण्ड-
 स्वभावं परं.. तेजोऽमनस्कं ध्रुवम् अमन. २१७६
 निर्वातस्थो यथा दीपो.. जगद्व्यापार-
 निर्युक्तस्तथा योगी लयज्जतः अमन. ११२६

निर्वाणपदमाश्रित्ययोगी कैवल्यमश्नुते त्रि. ब्रा. १७३
 निर्वाणवाग्निर्मननः क्षीणचित्तः
 प्रशान्तधीः ।..जाग्रत्येव सुषुप्तिस्थः
 कुरु कर्माणि वै द्विज अ.पू.५।११४
 निर्विकल्पमनन्तं च... अप्रमेय-
 मनाद्यन्तं यज्ज्ञात्वा मुच्यते बुधः त्रि. ता. ५।९
 निर्विकल्पमनन्तं च हेतुदृष्टान्त-
 वर्जितम् । ज्ञात्वा च.. शिवम् ।
 न निरोधः.. इत्येषा परमार्थता अ. बि. ९
 निर्विकल्पस्वरूपात्मा सविकल्प-
 विवर्जितः ते. बि. ४।७५
 निर्विकल्पस्वरूपोऽस्मि ते. बि. ३।६
 निर्विकल्पं निरञ्जनम् । एकमेवाद्वयं
 ब्रह्म नेह नानाऽस्ति किञ्चन अध्यात्मो. ६२
 निर्विकल्पं निरञ्जनं निराख्यात-
 मनादिनिबन्धनमेकं परं ब्रह्म यो. चू. ७२
 निर्विकल्पं परं तत्त्वं सदा भूत्वा
 परं भवेत् सौभाग्य. १६
 निर्विकल्पः प्रसज्जात्मा प्राणायामं
 समाचरेत् म. वा. २. १
 निर्विकल्पः समाधिः स्यान्निवात-
 स्थितदीपवत् सरत्त्व. ५३
 निर्विकल्पा च चिन्मात्रा वृत्तिः प्रज्ञेति
 कथ्यते । सा सर्वदा भवेद्यस्य ना. प. १।१
 स जीवन्मुक्त इष्यते (वच्यते) अ. गी. १।१५५
 निर्विकल्पेन मनसा यश्चेच्छक्तिदेहे
 स कालीरूपो भवेत् तैत्ति. २।६
 निर्विकल्पो निराकाङ्क्षः सर्वव्यापी
 सोऽचिन्त्यो निवेण्यश्च पुनात्य-
 शुद्धानि.. एष परमात्मा नाम आयुर्वे. ११
 निर्विकल्पोऽस्मि नित्योऽस्मि निरा-
 लम्बोऽस्मि निर्द्वयः अ. गी. १।१६
 निर्विकल्पो ह्ययं दृष्टः प्रपञ्चो-
 पशमोऽद्वयः अमन. २।७२
 निर्विकारतया वृत्त्या ब्रह्माकारतया
 पुनः । वृत्तिविस्मरणं सम्यक् म. गी. १।१६
 समाधिरभिधीयते अ. सा. ८०
 निर्विकारस्तथा शिवः योगो. २४, २१
 निर्विकारस्तथा शिवः अध्यात्मो. २९

निर्विकारं निराश्रयम् । ज्योतिषामपि
 तज्ज्योतिस्तमःपारे प्रतिष्ठितम् यो. शि. ३।२१
 निर्विकारे निराकारे निर्विशेषे
 भिदा कुतः अध्यात्मो. २५
 निर्विकारो निरामयः । सर्वनादान्त-
 रोऽसि त्वं.. ते. बि. ५।७१
 निर्विकारोऽहमन्ययः ते. बि. ३।६
 निर्विकारोऽस्मि सोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१०
 निर्विशेषब्रह्मतत्त्वं स्वमात्रमिति
 चिन्तये योगकुं. शीर्षे.
 निर्विशेषं निरञ्जनम् । अलक्षणमलक्ष्यं
 तदप्रतर्क्यमनूपमम् यो. शि. ३।१६
 निर्विशेषे परानन्दे कथं शब्दः
 प्रवर्तते ।.. तद्ब्रह्मानन्दमद्वन्द्वं..
 विदित्वा स्वात्मरूपेण न
 विभेति कुतश्चन कठरु. ३५
 निर्वैरः शान्तो दान्तः सर्वतोनिर्वेदमा-
 साद्य.. स-रि-ग-म-प-ध-नि-स-
 संज्ञैर्वैराग्यबोधकरैः स्वरविशेषैः..
 मोहयन्नागतं.. नारदमवलोक्य..
 शौनकादिमहर्षयः... उपवेशयित्वा
 स्वयं सर्वेऽप्युपविष्टाः ना. प. १।१
 निर्वैरः शान्तो दान्तः सङ्गयासी... ना. प. १।१
 देहत्यागं करोति स मुक्तो भवति अ. गी. १।१५५
 निर्वैरः सर्वभूतेषु म. गी. १।१६
 निलयनं चानिलयनं च तैत्ति. २।६
 निर्वर्तते तदुभयं वशित्वं चोपजायते आयुर्वे. ११
 निर्वर्तन्ते क्रियाः सर्वास्तस्मिन्दृष्टे
 परावरे अ. गी. १।५
 निवसिष्यसि मय्येव म. गी. १।१६
 निवातस्थितदीपवदचलसम्पूर्णभावा-
 भावविहीनकैवल्यज्योतिर्भवति म. ब्रा. २।६
 निवार्यमाणयत्नेनतद्धर्तुं नावश्यक्यते अमन. २।७२
 निवासः शरणं सुहृत् म. गी. १।१६
 निवृत्तस्याप्रवृत्तस्यनिश्चलादितदास्थितिः अ. सा. ८०
 निवृत्तिविषयाणां च प्रत्याहारो
 न संशयः योगो. २४, २१
 निवृत्तिः परमा वृत्तिरामन्दी-
 श्लेषः अध्यात्मो. २९

निवृत्ते: सर्वदुःखानामीशानः प्रमु-
 रव्ययः । अद्वैतः सर्वभावानां देव-
 स्तुर्यो विभुः स्पृतः
 निवृत्तोऽपि प्रपञ्चो मे सत्यवद्भाति
 सर्वदा । सर्पादौ रज्जुसत्तेव ब्रह्म-
 सत्तेव केवलम्
 निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः
 शम्भुरामर
 निशोचति निपतति वर्षिष्यति वा
 इति तेज एव तत्पूर्वं दर्शयित्वा-
 ऽथापः सृजते
 निश्चयज्ञानमासनं (ब्रह्मीभूतस्य)
 निश्चयं च परित्यज्य अहं ब्रह्मेति
 निश्चयम् । आनन्दभरितस्वान्तो
 वैदेही मुक्त एव सः
 निश्चयं शृणु मे तत्र
 निश्चयेन सर्वाद्वैतं कर्तव्यम्
 निश्चलज्ञानमासनम् (आत्मनः)
 निश्चलत्वं प्रदक्षिणत्वम् [आत्मपू. १
 निश्चलं निश्चरचित्तमेकीकुर्यात्...
 निश्चलं निर्विकल्पं च निराकारं
 निराश्रयम्
 निश्चलं (निचं) मोक्ष उच्यते
 निश्चितं चात्मभूतानामरिष्टं
 योगसेवया
 निश्चितं मतमुत्तमम्
 निश्चितं मुक्तियुक्तं च यत्तद्भवति
 नेतरत्.. मायया जायते तु सः
 निश्चितायां यथा रज्ज्वां विकल्पो
 विनिवर्तते । रज्जुरेवेति चाद्वैतं
 तद्वात्मविनिश्चयः
 निश्चिता विगताभीष्टा हेयोपादेय-
 वर्जिता ।...परिपूर्णं मनोगतिः
 निश्चेष्टाः स्युः सादृश्या हरिण्यो
 गानानन्दे लीयते विश्वमेतत्
 निश्चेष्टो निर्गतारम्भो ह्यानन्दं याति
 तत्त्ववित्
 निश्चेष्टो निर्विकारश्च लयो जीवति
 योगिताम्

आगम. १०

आ. प्र. १३

नीलक. २।६

छांदो. ७।११।१

मं. ब्रा. २।५

ते. विं. ४।३८

म. गी. १८।४

स्वसंवे. ४

आत्मपू. १

+मं. ब्रा. २।५

अद्वैत. ४५

ते. विं. १।६

यो.शि. ६।५८

२ योगत. १५

म. गी. १८।६

अद्वैत. २३

वैतथ्य. १८

अ. पू. १।५०

गान्धर्वो. ९

अमन. २।२१

वराहो. २।८१

निश्चयेयसकराद्युगौ

निश्चयेयसाययुजीतजपध्यानपरायणः

निश्चासभूता मे (रामस्य) विष्णो-

वेदा जाताः सुवर्स्तराः । तिलेषु

तिलवद्दे वेदान्तः सुप्रतिष्ठितः

निश्चासोच्छ्वासकासाश्च प्राणकर्म..

निश्चासोच्छ्वासनं सर्वं मासानां

संकमो भवेत्

निश्शब्दं तत्परं ब्रह्म परमात्मा समीयते

निश्शब्दं देशमास्थाय तत्रासनमवस्थितः

निश्शब्दं परमं पदं [ना. विं. ४९+

निश्शब्दः शून्यभूतस्तु मूर्च्छि स्थाने

ततोऽभ्यसेत्

निश्शेषितजगत्कार्यः प्राप्तखिल-

मनोरथः

निषिद्धैर्नवभिर्द्वारैर्निर्जने निरुपद्रवे ।

निश्चितं त्वात्ममात्रेणावशिष्टं

योगसेवया

निषेधनं प्रपञ्चस्य रेचकाख्यः

समीरितः । ब्रह्मैवास्मीति

या वृत्तिः पूरको वायुरुच्यते

निष्कलं निर्मलं शान्तं सर्वातीतं

निरामयम् । तदेव जीवरूपेण

पुण्यपापफलैर्वृतम् [१यो.त.८+

निष्कलका समा शुद्धा.. सा ब्रह्म-

परमात्मेति नामभिः परिगीयते

निष्कलको निरञ्जनो निर्विकल्पो

निराख्यातः शुद्धो देव एको

नारायणो न द्वितीयोऽस्ति कश्चित्

निष्कलारमा निर्मलात्मा..

निष्कलको निर्विकल्पो निरञ्जनो

निराख्यातः शुद्धो देव एको नारा-

यणो न द्वितीयोऽस्ति कश्चित्

निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निरवयं

निरञ्जनम्

निष्कलं निर्गुणं शान्तं निर्विकारं

निराश्रयम् । निर्लेपकं निरापायं

कूटस्थमचलं ध्रुवम् [म.विं. २१+ यो.शि. ३।२१

म. गी. ५।२

त्रि.ब्रा.२।१२८

मुक्तिको. १।९

जा. द. ४।३१

जा. द. ४।४५

ना. विं. ४८

क्षुरिको. २

ध्या. विं. २

मैत्रा. ६।२३

महो. २।२९

१यो.त. १४२

ते. विं. १।३२

यो. शि. १।५

म. वा. र. १३

नारा. २

म. वा. र. १५

त्रि.म.ना. १।५

श्वेता. ६।१९

निष्कलं निर्मलं साक्षात् सकलं
 गंगानोपमम् । एतद्रूपं समायातः
 स कथं मोहसागरे यो. शि. १।२०
 निष्कलं निश्चलं शान्तं ब्रह्माहमिति
 संस्मरेत् त्रि. ता. ५।२०
 निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निरवद्यं
 निरञ्जनम् । अमृतस्य परं सेतुं श्वेताश्व. ६।१९
 निष्कलं निष्प्रपञ्चं च परं तत्त्वं
 तदुच्यते । यस्मादुत्पद्यते सर्वं
 यस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् अमन. १।९
 निष्कलः सकलोभावः सर्वत्रैव व्यवस्थितः ब्र. वि. ३८
 निष्कलात्मा निर्मलात्मा बुद्धात्मा
 पुरुषात्मकः ते. वि. ४।६८
 निष्कलाय विमोहाय शुद्धाया शुद्ध-
 वैरिणे । अद्वितीयाय महते श्री-
 कृष्णाय नमो नमः गो. पू. ४।१२
 निष्कलां निष्क्रियां शान्तां...
 ब्रह्माननकरादेवीं गुह्यामेकां समाश्रये गुह्यका. ७३
 निष्कले निष्क्रिये शान्ते निरवद्ये
 निरञ्जने । अद्वितीये परे तत्त्वे
 व्योमवत्कल्पना कुतः २ आत्मो. ३०
 निष्कलो निरञ्जनो निरभिमानः १ आत्मो. ६
 निष्कलोऽस्मि निराकृतिः कुण्डिको. २५
 निष्कल्मषो भवेद्भक्तो... राजन्
 शुद्धान्नभोजनात् । प्रसीदन्ती-
 निद्रयाण्याशु सत्त्वं च परिवर्धते भवसं. ४।१५
 निष्कामानामेव श्रीविद्यासिद्धिः
 निष्कुलप्रवृत्तिः, निष्केवलज्ञानम् सौभाग्य. ४
 निष्कर्म्य वनमास्थाय ज्ञानयज्ञो
 जितेन्द्रियः । कालकाङ्क्षी चरन्नेव
 ब्रह्मभूयाय कल्पते निर्वाणो. १
 निष्क्रियोऽस्म्यविकारोऽस्मि
 निर्गुणोऽस्मि निराकृतिः ना. प. ५।२६
 निष्ठा ज्ञानस्य या परा म. वा. १. ९
 निष्ठा स्वेव विजिज्ञासितव्या भ. गी. १८।५०
 निष्ठा वेदान्तवाक्यानामथ वाचा-
 मगोचरा । अहं सच्चिदानन्द-
 मत्रैवादिमं न चेतारः छांदो. ७।२०।१
 महो. २।११

निष्ठां भगवो जिज्ञास इति छांदो. ७।२०।१
 निष्पत्तौ वैष्णवः शब्दः कण्ठतीति सौभाग्य. १४
 कणो भवेत्
 निष्पन्ना खिलभावशून्यनिभृति-
 स्वात्मस्थितिस्तत्क्षणात्.. निर्वात-
 स्थितदीपवत्सहजवान् पार्श्व-
 स्थितिर्दृश्यते अमन. २।७५
 निष्पन्नं ब्रह्म तत्तदा । स्वस्थं शान्तं
 सनिर्वाणमकथ्यं सुखमुत्तमम् अद्वैत. ४६, ४७
 निस्तिष्ठन्नेव श्रद्धाति निष्ठा त्वेव
 विजिज्ञासितव्या छांदो. ७।२०।१
 निस्स्तुतिर्निर्नेमस्कारो निःस्वधाकार
 एव च । चलाचलनिकेतश्च
 यतिर्यादृच्छिको भवेत् [वैतथ्य. ३८+ ना. प. ६।४४
 निस्स्तोत्रो निर्विकारश्च पूज्यपूजा-
 विवर्जितः अ. पू. ५।१००
 निस्स्त्रीकस्य क भोगभूः [याज्ञव. १७+ महो. ३।४८
 निस्त्रैगुण्यपदोऽहं कुक्षिस्थानेकलोक-
 कलनोऽहम् । कूटस्थचेतनोऽहं.. आ. प्र. ६
 निस्त्रैगुण्यस्वरूपानुसन्धानं समयम् निर्वाणो. ६
 निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन भ. गी. २।४५
 निस्पृहः सर्वकामेभ्यः भ. गी. ६।१८
 निस्सङ्गतत्त्वयोगज्ञो निरपेक्षः शनैः
 शनैः । पाशं छित्वा यथा हंसो.. क्षुरिको. २१
 निस्सङ्गव्यवहारत्वाद्भवभावनवर्जनात् ।
 शरीरनाशदर्शित्वाद्वासना न प्रवर्तते अ. पू. ४।८८
 निस्सङ्गः प्रज्ञया भवेत् । निश्चलं
 निश्चरच्चित्तमेकीकुर्यात्प्रयत्नतः अद्वैत. ४५
 निस्संशय ऋषिः, निर्वाणो देवता निर्वाणो. १
 निस्सृतः सर्वभावेभ्यश्चिह्नं यस्य
 न विद्यते आयुर्वे. २७
 निहत्य धार्तराष्ट्रान् भ. गी. १।३६
 निहव एकारो विश्वेदेवा औहो
 इकारः प्रजापतिर्हिकारः प्राणः
 स्वरोऽन्नं या वाग्विराट् छांदो. १।१३।२
 निहितमस्माभिरेतद्यथावदुक्तं मनसि मैत्रा. ४।५
 निहितं गुहायाममृतं विभाजमान-
 मानन्दं तं पश्यन्ति विद्वांसः.. सुबालो. ८।१

निहितं ब्रह्म यो वेद परमे व्योम्नि संज्ञिते । सोऽश्रुते सकलान्कामान्..	कठरु. १४	नृसिंह इत्याह-यथा यजुरेवैतत् नृसिंह एवैकल एष तुरीय एष एवोप्रः	अव्यक्तो. ३ नृसिंहो. ४।२
नीतिरस्मि जिगीषताम् नीरदामं स्वरं सान्द्रं दक्षिणाग्निरु-	भ.गी. १०।३८	नृसिंह एष एव भीषण एष एव नृसिंहत्वाद्भीषणत्वात्... एतद्ब्रह्म	नृसिंहो. ४।२ नृसिंहो. ७।५
दाहृतम् नीरागं निरुपासङ्गं निर्द्वन्द्वं निरुपा-	पं. ब्र. ३	नृसिंह देवेश तव प्रसादतः ।.. वेदात्मकं ब्रह्म निजं विजानते	स्कन्दो. १३
श्रयम् । विनिर्याति मनोमोहात्..	महो. ५।६७	नृसिंहमनृसिंहं भीषणमभीषणं भद्रमभद्रं मृत्युमृत्युममृत्युमृत्युं	
नीरुजश्च युवा चैव भिक्षुर्नावसथे वसेत् । परार्थे न प्रतिप्राहं..	१सं.सो. २।९३	नमाम्यनमाम्यहमनहं नृसि- हानुष्टुभैव बुबुधिरै	नृसिंहो. ६।१
नीलजीमूतसङ्काशं.. वनमालिनं..	ना.पू.ता. ४।१२	नृसिंहश्चिद्रूप एव नृसिंहं लोकसंहारं सञ्जघान महाबलः	नृसिंहो. ९।१ शरभो. ५
सुधीः संस्मरेत्प्रजपेत्		नृसिंहं षष्ठं स्थानं (जानीयात्) नृसिंहः स्वयमुद्रभौ	नृ. पू. २।३ नृसिंहो. ४।३
नीलः पतङ्गो हरितो लोहिताक्षस्तडि- द्रुर्भ ऋतवः समुद्राः । अनादिमत्त्वं	श्वेताश्व. ४।४ तारोप. ३	नृसिंहानुष्टुभैव जानीयात् (ॐ) नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय	नृसिंहो. ६।१
विभुत्वेन वर्तसे यतो जातानि भुवनानि विश्वा		धीमहि । तन्नः सिंहः प्रचोदयात्	नृ. प. ४।३
नीलाख्या सरस्वती		नृसिंहोऽसौ परमेश्वरोऽसौ हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा सन्सर्वमस्ति	नृसिंहो. ४।२
नीला च मुखविद्युन्मालिनी सर्वौ- षधीनां सर्वप्राणिनां पोषणार्थं		नेति नेति नह्येतस्मादिति नेत्यन्यत्परं नेङ्कर्ते न विवर्तते न च नीत इति	बृह. २।३।६ छाग. ६।१
सर्वरूपा भवति	सीतो. १०	नेङ्कर्ते सोपमा स्मृतां नेति नेतीति रूपत्वादशरीरो भवत्ययम्	भ.गी. ६।१९ वराहो. २।६८
नीलतोयदमध्यस्था विद्युल्लेखेव भास्वरा । नीवारशूकवत्तन्वी पीता		नेति नेतीति विहाय यदवशिष्यते सद्वयं ब्रह्म तत्सिद्धयैलक्ष्यत्रयानु-	बृह. २।३।६ छाग. ६।१
भास्वत्यणूपमा । तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः	महाना. ९।१२ ना.उ.ता. १।६	सन्धानः कर्तव्यः	भ.गी. ६।१९
[+कालिको. ५+		नेतिनेतीत्यात्मा [बृह. ३।९।२६+४।२।४ +४।४।२२ (अथ) नेति नेत्येतदित्येतेति	वराहो. २।६८
नीहारधूमार्कानलानिलानां स्वद्योत- विद्युत्फटिकाशनीनाम् । एतानि		नेति हेवोवाच वेत्थो यथाऽसौ लोक एवं बहुभिः पुनः पुनः प्रयत्नैर्न	बृह. ६।२।२
रूपाणि पुरःसराणि ब्रह्मण्यभि- व्यक्तिकराणि योगे	श्वेताश्व. २।११	सम्पूर्यता ३ इति	बृह. ६।२।२
नूनं चैत्यांशरदिता चिद्यदात्मनि लीयते ।.. सत्तासामान्यता तदा	अ. पू. १।२४	नेति हेवोवाच याज्ञवल्क्यो यथेवोपक- रणवतां जीवितं तथैव ते जीवितं	बृह. ४।५।३
नृकेसरिविमहं योगिष्यैर्यं परं पदं वास जानीयाद्यो जानीते		स्यादमृतत्वस्य तु नाशाऽस्ति वित्तेनेति [बृ.उ. २।४।२+	बृह. ४।५।३
सोऽमृतत्वं च गच्छति	नृ. पू. १।९	नेतोऽन्ये विद्यन्ते यथैव ये म इम उपनिहिता इति	छांदो. १।१०।२
नृचक्षुषं त्वा हविषा विधेम	ते.आ. ३।१५।१ चित्त्यु. १५।१	नेत्पाष्मान् मृत्युमन्ववायानीति	बृह. १।३।१०
[महाना. १३।१३+			
नृचक्षुषं द्रुतसज्ज्योमसद्वज्रा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्	नृ. पू. ३।१ मं. ४।४।५		
[कठो. ५।२+महाना. ८।६+१२।३+			
[ऋ. अ. ३।७।१४=			

नेत्यन्यत् परमस्त्यथ नामवेद्यः
 सत्यस्य सत्यमिति प्राणा वै
 सत्यं तेषामेव सत्यम् बृह. २।३।६
 नेत्यमृतम्, तदेतत्पुष्पफलं वाचो
 यत्सत्यम् १ ऐत. ३।६।४
 नेत्यां विजिज्ञासीतैतारं विद्यान्
 मनोविजिज्ञासीतमन्तारविद्यात् कौ. त. ३।८
 नेत्रस्थं जागरितं विद्यात्कण्ठे स्वप्ने
 समाविशेत् [ब्रह्मो. २१+ ना. प. ५।१३
 नेत्रादिरहितोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१४
 नेदममूलं भविष्यति छां. ६।८।३, ५
 नेदं ब्रह्मेति निश्चयः, एष एव
 क्षयस्तस्या ब्रह्मेदमिति निश्चयः अ. पू. ५।१९
 नेदीयसितमो इव दवीयसि तमा एव आप्तं. ७।१
 नेन्द्रियं न शरीरं न नाम न रूपम् ग. शो. ३।२
 नेन्द्रियाणि नचैवार्थाः सुखदुःखस्यहेतवः आयुर्वे. २
 नेन्मा पाप्मा मृत्युराप्नुवदिति यद्यु चरे-
 त्समापिपथिषेत्तेनो एतस्यै देवतायै
 सायुज्यं सलोकतां जयति बृह. १।५।२३
 नेमामसृष्टदिदुदस्यमानः वा. मं. ३
 नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः कठो. ५।१५+
 [मुण्ड. २।२।१०+येता. ६।१४+ गुह्यका. ४५
 नेमे धावा पृथिवी न नक्षत्राणि
 न सूर्यो न चन्द्रमाः (आसन्) महो. १।१
 नेमे मे कश्च महिमानमन्यः वा. मं. १२
 नेष्टं देहगृहं मम ।.. नाशैकधर्मिणो
 बृह. केव. कायस्य रस्यता महो. ३।३०
 नेह नानास्ति किञ्चन [कठो. ४।११+ बृ. उ. ४।४।१९
 [त्रि. म. ना. ३।३+अध्यात्मो. ६३+ निरालं. ११
 नेह नानेति चाग्नायादिन्द्रो माया-
 मिरित्यपि । अजायमानो बहुधा
 मायया जायते तु सः अद्वैतो. २४
 नेहन्ते प्रकृतादन्यद्रमन्ते शिष्टवर्त्मनि
 (सत्त्वस्थाः) महो. ४।१८
 नेहामिकमनाशोऽस्ति अ. गी. २।४०
 नेनैतद्वले नीलवर्णो यदा विश्राम्यते
 मनः । तदा क्रोधश्च कामश्च
 मनोभिन्नमतिर्विवेत् विश्रामो. ४

नैकत्राशी न बाह्यदेवार्चनं कुर्यात् (यतिः) ना. प. ७।१
 नैकाकिता युक्तेति गुणाभिर्ममे ग. शो. ३।४
 नैकान्नाशी भवेत्कचित् । चित्तशुद्धि-
 र्भवेद्यावत्तावन्नित्यं चरेत्सुधीः ना. प. ५।५०
 नैतज्जाग्रन्न च स्वप्नः सकल्पानाम-
 सम्भवात् । सुषुप्तभावो नाप्येत-
 दभावाज्जडतास्थितेः अ. पू. ५।१०९
 नैतत्त्वय्युपपद्यते अ. गी. २।३
 नैतद्वर्णीयत्वतोऽभीते-नमः परम-
 ऋषिभ्यः मुण्ड. ३।२।११
 नैतद्ब्राह्मणो विवक्तुमर्हति समिधः
 सोम्याहरोप त्वा नेष्ये छां. उ. ४।४।५
 नैतदशकं विज्ञातुं, यदेतद्यक्षमिति केनो. ३।६, १०
 नैतदेवा आप्नुवन्पूर्वमर्शत् ईशा. ४
 नैतः सेतुमहोरात्रे तरतो न जरा न
 मृत्युर्न शोको न सुकृतं न दुष्कृतः
 ..अपहतपाप्मा ह्येष ब्रह्मलोकः छान्दो. ८।४।१
 नैतावता विदितं भवतीति बृह. २।१।१४
 नैतां सृष्ट्वां वित्तमयीमवाप्तो यस्यां
 मज्जन्ति बहवो मनुष्याः कठो. २।३
 नैति मामेति सोऽर्जुन अ. गी. ४।९
 नैते सृती पार्थ जानन् अ. गी. ८।२७
 नैनमूर्ध्वं न तिर्यश्चं न मध्ये परि-
 जगमत् । न तस्येशे कश्चन.. महाना. १।१०
 नैनमेते रश्मयः प्रत्यायन्ति बृह. ५।५।२
 नैनमेते रश्मयः प्रत्याययन्ति (मा. पा.) बृ. उ. ५।४।२
 नैनं कृताकृते तपतः बृह. ४।४।२३
 नैनं चक्षुर्जहाति सर्वाण्येनं भूतान्य-
 मिरक्षन्ति बृह. ४।१।४
 नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति
 पावकः [अ. गी. २।२३+ भवसं. २।३८
 नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहत्यग्निः... सामर. १००
 नैनं पश्यन्त्यचेतसः अ. गी. १५।११
 नैनं पाप्मा तपति सर्वं पाप्मानं तपति बृह. ४।४।२३
 नैनं पाप्मा तरति सर्वं पाप्मानं तरति बृह. ४।४।२३
 नैनं पुरा कालात्प्राणो जहाति बृह. २।१।१०
 नैनं पुरा कालान्मृत्युरागच्छति बृह. २।१।१२

नैनं प्राणो जहाति सर्वाण्येनं
भूतान्यभिरक्षन्ति बृह. ४।१।३
नैनं मनो जहाति सर्वाण्येनं
भूतान्यभिरक्षन्ति बृह. ४।१।६
नैनं मृत्युराप्नोति मृत्युरस्यात्मा
भवत्येतासां देवतानामेको भवति बृह. १।२।७
नैनं वाग्जहाति सर्वाण्येनं
भूतान्यभिरक्षन्ति बृह. ४।१।२
नैनं वाचा क्षियं ब्रुवन्नैनमस्त्री पुमान्ब्रुवन् १ ऐत. ३।८।५
नैनं विद्वांसमनृतं ५ हिनस्ति बृह. ५।५।१
नैनं श्रोत्रं ५ जहाति सर्वाण्येनं
भूतान्यभिरक्षन्ति बृह. ४।१।५
नैनं हृदयं जहाति सर्वाण्येनं
भूतान्यभिरक्षन्ति बृह. ४।१।७
नैनामूर्ध्वं न तिर्यक्च न मध्यं
परिजगमत् गुह्यका. ६२
नैनां प्राप्य विमुह्यति भ.गी. २।७२
नैनेन किञ्चनानावृतं नैनेन
किञ्चनानासंवृतम् बृह. २।५।१८
नैरात्म्यवादकुहकैर्मिथ्या दृष्टान्त-
हेतुभिः । आत्म्यल्लोको न जानाति
वेदविद्यान्तरं तु यत् मैत्रा. ७।८
नैव किञ्चित् करोति सः भ.गी. २।२०
नैव किञ्चित् करोमीति भ.गी. ५।८
नैव कुर्वन्न कारयन् भ.गी. ५।१३
नैव केनच नाप्यं, कुत उ एतावत्
प्रतिगृहीयात् बृह. ५।१४।६
नैव चिन्त्यं न (चाचिन्त्यमचिन्त्यं)
चाचिन्त्यं नाचिन्त्यं चिन्त्यमेव च ।
पक्षपातविनिर्मुक्तं ब्रह्म सम्पद्यते
(तदा) ब्रुवम् [त्रि.ता. ५।६+ प्र. वि. ६
नैव तत्र काचन मिदाऽस्त्यत्र हि
मिदामिव मन्यमानः शतधा
सहस्रधा भिन्नो मृत्योः स मृत्यु-
माप्नोति तदेतद्वद्वयं स्वप्रकाशं
महानन्दमात्मैवेतत् नृसिंहो. ८।७

नैव तत्र काचन मिदाऽस्त्यत्र
तस्यायमादेशोऽमान्त्रश्चतुर्थोऽव्यव-
हार्यः प्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैत
ॐकार आत्मैव संविशत्यात्म-
नाऽऽमानम् नृसिंहो. २।७
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन भ.गी. ३।१८
नैव त्यागफलं लभेत् भ.गी. १८।८
नैव देहादिसङ्घातो घटवदृष्टिगोचरः बराहो. २।२४
नैवमात्मा प्रवचनशतेनापि लभ्यते, न
बहुश्रुतेन, न बुद्धिज्ञानाश्रितेन, न
मेधया, न वेदैर्नयज्ञैर्नतपोभिरग्रेः सुबालो. १।१४
नैव सव्यापसव्येन भिक्षाकाले
विशेद्वृहान् १ सं.सो. २।६३
नैव स्त्री न पुमानेष न चैवायं
नपुंसकः । यद्यच्छरीरमादत्ते तेन
तेन स युज्यते [श्वेताश्व. ५।१०+ भवसं. २।२५
नैव स्त्री न पुमानेषा नैव चेयं
नपुंसका । यद्यच्छरीरमादत्ते
तेन तेनैव युज्यते गुह्यका. ६५
नैवं पापमवाप्स्यसि भ.गी. २।३८
नैवं शोचितुमर्हसि भ.गी. २।२६
नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न
चक्षुषा । अस्तीति ब्रुवतोऽन्यत्र
कथं तदुपलभ्यते कठो. ६।१२
नैवातोऽद्वयो ह्ययमात्मैकल एव नृसिंहो. ८।१
नैवात्मनःसदाजीवेविकारावयवौ तथा अद्वैत. ७
नैवाददीत पाथेयं यतिः किञ्चिद-
नापदि । पक्वमापसु गृहीयात् १ सं.सो. २।९२
नैवास्या अन्तं गच्छत्यनन्ता हि दिशो
दिशो वै सन्नाद बृह. ४।१।५
नैवेह किञ्चनाग्र आसीत् [बृह. १।२।१ + सुबालो. ६।१
नैवेतेन सुरभि न दुर्गन्धि विजानाति छान्दो. १।२।५
नैवेनं ब्रूयुः पितृहासीति, मातृ-
हासीति, न भ्रातृहासीति.. छान्दो. ७।१५।३
नैवेषोऽस्य बोधेन दुष्यति छान्दो. ८।१०।१, २
नैषा तर्केण मतिरापनेया प्रोक्ताऽन्ये-
नैव सुविज्ञानाय प्रेष्ठ कठो. २।९
नैषा योगसिद्धिः (पूर्वोक्ता) महावा. २
नैषा (पूर्वोक्ता) मनोऽन्यः महावा. २

नैषा समाधिः (पूर्वोक्ता)	महावा. २
नैषोऽन्धकारोऽयमात्मा	महावा. २
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां	भ. गी. १८।४९
नैष्कर्म्यं पुरुषोऽभुते	भ. गी. ३।४
नैष्कर्म्येण न तस्यार्थस्तस्यार्थोऽस्ति	
न कर्मभिः।।.यस्यनिर्वासनं मनः	मुक्तिको. २।२०
नो एतन्नाना तद्यथा रथस्यारेषु नेमि-	
रपिता नामावरा अर्पिता एवमेवैता	
भूतमात्राः प्रज्ञामात्रास्वर्पिताः	
प्रज्ञामात्राः प्राणे अर्पिताः	कौ. त. ३।९
नो एव स्वयं नास्य प्रजा पुरा	
कालात्प्रवर्तते	कौ. त. ४।६
नो एव स्वयं नास्य प्रजा पुरा-	
कालात् सम्मोहमेति	कौ. त. ४।१२
नो एव स्वयं नास्य प्रजा पुरा	
कालात्प्रमीयते	कौ. त. ४।१३
नो एवान्यत्रैतस्माद्दसाऽपराणि	
पञ्च वर्षाणि	छांदो. ८।११।३
नो एवासाधुना कनीयानेष सर्वेश्वर	
एष भूताधिपतिरेष सेतुर्विधरणः	बृह. ४।४।२२
नो एवासाधुना कर्मणा कनीयानेष	
होवैनं साधु कर्म कारयति तं	
यमन्वानुनेषत्येष एवैनमसाधु कर्म	
कारयति	कौ. त. ३।९
नो एवेमानि भूतानि विनाशमेवा-	
पीतो भवति नाहमत्र भोग्यं	
पश्यामि [छांदो. ८।११।१,२	
नो चेन्मौनं समास्थाय निर्मानो	
गतमत्सरः । भावयन्मनसा विष्णुं	
लिपिकर्मोर्पितोपमः	महो. ३।९७
नोचारयेत् तद्वाक्यमुच्चार्य नरकं	
भजेत् । (न गुरोरप्रियं कुर्यात्	
पीडितस्ताडितोऽपि वा)	शिवो. ७।३७
नोऽप्युक्तेन विश्वसेनैव गात्राणि	
चालयेत् । एवं भावं नियुञ्जीयात्	
कुम्भकारयेति लक्षणम्	अ. ना. १४

नोत्तिष्ठति न तिष्ठति । न च याति न	
चायाति न च नेह न चेह चित्	महो. ५।१०२
नोत्थापयेत्सुखासीनं शयानं न	
प्रबोधयेत् । आसीनो गुरुमासीनं	
शयानं न प्रबोधयेत्	शिवो. ७।३९
नोदेति नास्तमायाति सुखदुःखे	
मनःप्रभा । यथाप्राप्तस्थितिर्यस्य	
स जीवन्मुक्त उच्यते	वराहो. ४।२२
नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम्	भ. गी. ५।२०
नोद्वेगी न च तुष्टात्मा संसारे	
नावसीदति	महो. ६।६३
नो न वेदेति वेद च	केनो. २।२
नोपजनः स्मरन्निदः शरीरः स यथा	
प्रयोज्य आचरणे युक्त एवमेवाय-	
मस्मिञ्छरीरे प्राणो युक्तः	छांदो. ८।१२।१
नोभयतः प्रज्ञो न प्रज्ञानघनो न	
प्रज्ञो नाप्रज्ञोऽपि नो विदितं वेद्यं	
नास्तीत्येतन्निर्वाणानुशासनमिति	सुबालो. ५।१५
नोभयतः प्रज्ञां प्रज्ञानघनां...चतुर्थ-	
खण्डात्मिकां मन्यन्ते	श्रीवि. ता. ४।१
नौषधानि न मन्त्राश्च न होमा न	
जपस्तथा । त्रायते मृत्युनोपेतं	
जरया चापि मानवम्	भवसं. १।१६
न्यग्रोधफलमत आहरेतीदं भगव	
इति भिन्धीति	छांदो. ६।१२।१
न्यमीमिषद्वा ३ इत्यधिदैवतम्	केनो. ४।४
न्यायार्जितधनं श्रान्ते श्रद्धया वैदिके	
जने । अन्यद्वा यत्प्रदीयन्ते	
तद्दानं प्रोच्यते मया	जा. व. २।७
न्याय्यं वा प्राप्य चाप्रियम्	भ. गी. १८।१५
न्यास इति ब्रह्मा, ब्रह्मा हि परः,	
परो हि ब्रह्मा	महाना. १६।१२
न्यास इत्याहुर्मनीषिणो ब्रह्माणं	महाना. १७।१२
न्यासोपयोगस्तथैवाध्व्यदाने च...	
बीजन्यासो हंसन्यास इति...वर्णयन्ति	सूर्यता. ३।१

उपनिषद्वाक्यमहाकोशः

[उत्तरार्धः]

प

पुष्कमापस्तु गृहीयाद्यावद्वं
न लभ्यते
पुष्कविज्ञानाज्जीवन्मुक्तो भवति
पुष्कवायुदिवापुष्कयाचमानोऽब्रजेदधः
पुष्कपातविनिर्मुक्तं ब्रह्म सम्पद्यते
पुष्कं कश्चन नाश्रयेत्
पुष्कवैमासोऽसौ द्वौ मासौ वा वसेत्
पुष्केऽस्तु कुकुटो हन्ति निकर्षेण तु
सूकरः । आगतं गतया श्वानं
चक्षुषा वृषलीपतिः
पुष्कविन्द्रेन्द्रियपशुं वल्गुत्तृष्णा गृहाङ्गणम् ।
चित्तमृत्युजनाकीर्णं नेष्टुं वेदगृहं मम
पुष्कान्यसं चतुर्विधम्
पुष्ककृत्यनियन्तारं पञ्चब्रह्मात्मकं
ब्रह्म । पञ्चब्रह्मोपसंहारं कृत्वा
स्वात्मनि संस्थितः
पुष्ककृत्यरूपा परमेश्वरी भवति
पुष्ककृत्यः प्रसूतिरिति... उद्गायति...
प्रतिहरति... उपद्रवति... निध-
नमुपयन्ति तत्सौभसद्वयं भवति

१ सं.सो. २।९२
त्रि.म.ना. ५।५
१ सं.सो. २।९४
अ. वि. ६
ना. प. ५।३२
१ सं. सो. १।२

इतिहा. ६३

महो. ३।२९

अ.गी. १५।१४

पुष्कज. १६

ना.पू.ता. २।१

१ ऐत. ३।४।२

पुष्ककोशविबर्जितः । निर्विकल्प-

स्वरूपात्मा

पुष्क चेन्द्रियगोचराः

पुष्क ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्च कर्मेन्द्रियाणि

पुष्कज्ञानेन्द्रियैर्युक्ता ज्ञानशक्तिबलो-
यताः (नागादिवायवः)

पुष्क तन्मात्राणि भूतशब्देनोच्यन्ते
पञ्चमहाभूतानि भूतशब्देनोच्यन्ते-

उद्य तेषांयः समुदायः शरीरमित्युक्तम् मैत्रा. ३।२

पुष्कतन्मात्राः पुष्क सूक्ष्मभूतान्युपा-
दाय पुष्कीकरणे कृते पुष्कमहा-
भूतान्यजायन्ते

पुष्कतन्मात्रेभ्यः पुष्कमहाभूतानि
पुष्कमहाभूतेभ्योऽखिलं जगत्

पुष्कतन्मात्रेभ्यः पुष्कमहाभूतानि ।
पुष्कमहाभूतेभ्यो ब्रह्मैकपादव्याप्त-

मेकमविद्याष्टं जायते

पुष्कत्वं न स पश्यति (गोपीचन्द्र-
धारकः)

ते.वि. ४।७५

अ.गी. १३।६

सामर. १०९

अ. वि. ६८

ग.शो. ४।५

त्रि. ब्रा. १।१

त्रि.म.ना. २।५

गोपीच. ८

पञ्चदशकृत्वः प्रयुक्ता पञ्चदशेन
वज्रेण सम्मिता (गायत्री)
ब्रह्मलोकमभिजयति सन्ध्यो. २
पञ्चदशतिथिरूपेण कालस्य परिणा-
मावलोकनस्थितिः पञ्चदशानित्याः भावनो. ७
पञ्चदशदिनानि पक्षो भवति, पक्षद्वयं
मासो भवति, मासद्वयमृतुर्भवति,
मृतुत्रयमयनं भवति, अयनद्वयं
वत्सरी भवति, वत्सरशतं ब्रह्म-
मार्गेण ब्रह्मणः परमायुःप्रमाणम् त्रि. म. ना. ३।४
पञ्चदशाहानि मास्यः काममपः पिब छा. बो. ६।७।१
पञ्च द्वाशणि मनसा चक्षुरादीन्यमू-
न्यन्तम् । बुद्धीन्द्रियाभिधानानि
तान्येवालोकयाम्यहम् अ. पू. ३।७
पञ्चधा वर्तमानं तं ब्रह्मकार्यमिति
स्मृतम् । ब्रह्मकार्यमिति ज्ञात्वा
ईशानं प्रतिपद्यते पंचत्र. २२
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव
आहुः परे अर्धे पुरीषिणस् प्रभो. १।११
[क. अ. २।३।१६=मं. १।१६४।१२
पञ्चप्राद्वहणो न किञ्चन परब्र. ३
पञ्चवन्पस्वरूपेण पञ्चवन्धा ज्ञान-
स्वरूपाः लिङ्गोप. १
पञ्चब्रह्म परं विद्यारसद्यो जातादि-
पूर्वकम् पंचत्र. २१
पञ्च ब्रह्मभिरङ्गैश्च त्रिमाला पञ्च
सप्त च । धयित्वा मूलमन्त्रेण
सर्वाण्यस्यापि धारयेत् क. जा. २३
पञ्चब्रह्ममयं रूपं स्थूलं वैराजमुच्यते ।
हिरण्यगर्भं सूक्ष्मं तु नादं बीज-
त्रयात्मकम् । परं ब्रह्म परं सत्यं
सर्विद्वानन्दलक्षणम् । (ब्रह्मवपुः) यो. शि. २।१५
पञ्चब्रह्मात्मकं सर्वं स्वात्मनि प्रवि-
लम्ब्य च । सोऽहमीति जानीया-
द्विद्वान्ब्रह्मायुतो भवेत् पं. ब्र. २३
पञ्चब्रह्मात्मकातीतो भासते स्वस्वतेजसा पंचत्र. १७

पञ्चब्रह्मात्मिकीं विद्यां योऽधीते
भक्तिभाविताः । स पञ्चात्मकता-
मेत्य भासते पञ्चधा स्वयम् पंचत्र. २६
पञ्चभिर्गन्धैरमृतैः पञ्चभिर्गन्धैस्तनुभिः
शोधयित्वा पञ्चभिर्गन्धैर्गन्धोदकेन
संस्नाप्य...प्रत्यक्षमादिक्षान्तै-
र्वर्णैर्भाविष्येत् अ. मा. ३
पञ्चभिर्नामभिर्मृशमैश्वर्यकारणाद्भूतिः बृ. जा. १।६
पञ्चभूतकारणं तद्वित्कटाभं तद्वच्चतुः-
पीठम्, तन्मध्ये तत्त्वप्रकाशो भवति मं. ब्रा. २।१
पञ्चभूतमयी तनुः अमन. १।१७
पञ्चभूतात्मकं गङ्गं करे रजसि
संस्थितम् । बालस्वरूपमित्यन्तं
मनश्चक्रं निगद्यते गोपालो. २।३०
पञ्चभूतात्मको देहः पञ्चमण्डलपूरितः वराहो. ५।१
पञ्चभूतानां पतयः पञ्च सदा-
शिवेश्वररुद्रविष्णुब्रह्माणश्चेति यो. चू. ७२
पञ्चभूतान्यहं पञ्चमहाभूतान्यहं अद्वै. भा. ३
पञ्चभूतेषु गन्धवती पृथिव्यासीत् गोपीचं. ८
पञ्चभूमिं समारुह्यसुषुप्तिपदनामिकाम् ।
शान्ताशेषविशेषांशस्तिष्ठत्यद्वैतमात्रके वराहो. ४।१४
(अथ) पञ्चमी रश्मिर्निर्विषयानन्ति मैत्रा. ६।३१
पञ्चम आकाशो भवति ना. पू. ता. १।१
पञ्चमभूम्यां विहरन्ब्रह्मविद्भरो भवति वराहो. ४।१
पञ्च महाभूतानि पञ्च तन्मात्राणि सामर. १०१
(अथ) पञ्च तन्मात्राणि भूतशब्दे-
नोच्यन्ते, पञ्च महाभूतानि
भूतशब्देनोच्यन्तेऽथ तेषां यः
समुदायः शरीरमित्युक्तम् मैत्रा. ३।२
पञ्चमहाभूतेभ्योऽखिलं जगत् त्रि. ब्रा. १।१
पञ्चमहाभूतेभ्यो ब्रह्मोपादव्याप्तमेक-
मविद्याण्डं जायते त्रि. म. ना. २।५
पञ्चमहायज्ञक्रियां निवर्तन्त आत्मानं
प्रार्थयन्ते आत्मनो. ३

पञ्चमं कण्ठचक्रं स्यात्...तत्र ध्यात्वा
 शुचिं ज्ञोतिः सिद्धीनां भाजनं भवेत् योगरा. १२, १३
 पञ्च मा प्रमानांजन्यवन्धुरप्राक्षीत् बृह. ६।२।३
 पञ्चमीभूमिकामेत्यमुषुपदनामिकाम् ।
 ज्ञान्ताशेषविशेषांशस्तिष्ठत्यद्वैतमात्रकः अक्षुप. ३७
 पञ्चमुखं पञ्चस्वरूपं पञ्चाक्षरं
 पञ्चसूत्रं ज्ञानम् लिङ्गोप. १
 (२५) पञ्चमे ऊर्ध्वान्नायः सुमेरुमठः मठान्ना. ७
 पञ्चमे कल्पतरोर्मूले उषा, षष्ठे देवाः राधोप. २।१
 पञ्चमे धामनि ध्येयेयं चान्द्री कामाधः
 शिवाद्यकामा त्रि.ता. १।१६
 पञ्चमे मासे नखरोमव्यादेशः निरुक्तो. १।४
 पञ्चमे मासे पृष्ठवंशो भवति गर्भो. ३
 पञ्चमे स्रवते तालु षष्ठेऽमृतनिषेवणम् ।
 सप्तमेगुहविज्ञानं परा वाचा तथाष्टमे हंसो. ९
 पञ्चमो (आश्रमः) लिङ्गधारणं लिङ्गो. १
 पञ्चन्यामथ मात्रायां यदि प्राणै-
 र्विद्युन्यते । उषितः सह देवत्वं ना. बि. १४
 सोमलोके महीयते
 (इति तु) पञ्चन्यामाहुतावापः पुरुष- छांदो. ९।९।१
 वचसो भवन्तीति
 पञ्चयज्ञा वेदशिरःप्रविष्टाः क्रिया-
 वन्तोऽमी सङ्गता ब्रह्मविद्याम् ।...
 विष्णवात्मका विष्णुमेवापियन्ति शाट्याय. ११
 पञ्चयोजनविस्तीर्णं मृत्योश्च
 मुखमण्डलम् वनदु. १६८
 पञ्चरात्रलयेनापि... दूरश्रवणविज्ञानं अमन. १।५४
 पञ्चरात्राद्बुद्धः, सप्तरात्रात्पेशी निरुक्तो. १।४
 पञ्चरूपपरित्यागावस्वरूपप्रहाणतः ।
 अधिष्ठानं परंतत्त्वमेकं सच्छिष्यतेमहत् बहुचो. ३
 पञ्चवक्त्रं तु रुद्राक्षं... पञ्च ब्रह्म-
 स्वरूपकम् । पञ्चवक्त्रः स्वयं ब्रह्म
 पुंस्त्यां च न्यपोहति रु.जा. २८
 पञ्च वा पते महायज्ञाः सतति प्रता-
 यन्ते सतति सन्तिष्ठन्ते देवयज्ञः
 मितृयज्ञो भूतयज्ञो मनुष्ययज्ञो
 ब्रह्मयज्ञ इति सहवे. १४
 पञ्च विषयाः प्रपञ्चः, तेषां
 ज्ञानस्वरूपाः कौलो. १

पञ्चविंशकमज्ञानं शिवो. १।१२
 पञ्चविंशतिक इत्येके षड्विंश इति
 चापरे । एकत्रिंशक इत्याहुरनन्त
 इति चापरे
 पञ्चविंशतितत्त्वात्मकः पुरुषत्वं
 परब्रह्म भवेत् ना.पू.ता. ५।४
 पञ्चविंशतिवत्सरं गार्हस्थ्यं ना.प. १।१
 पञ्चविंशतिवत्सरं वानप्रस्थाश्रमं ना. प. १।१
 पञ्चविंशतिश्चानुष्टुभः १ ऐत. ३।६।१
 पञ्चविंशत्तमो जीवः सामर. १०१
 पञ्चविंशत्यक्षराणि । पंचदशाक्षरं
 पूर्वम् । दशाक्षरं परम् द्वयोप. १
 पञ्च शब्दादयस्तथा वराहो. १।३
 पञ्च शाखा अथर्वणः सीतो. १६
 पञ्चसप्तगृहाणां तु भिक्षामिच्छेत्क्रिया-
 वताम् । गोदोहमात्रमाकाङ्क्षे-
 निष्क्रान्तो न पुनर्त्रजेत् १ सं.सो. २।६१
 पञ्चसंस्कारयुक्तानां वैष्णवानां
 विशेषतः । गृहार्चनविधाने न
 शङ्खघण्टारवं त्यजेत् सुदर्श. १५
 पञ्चस्रोतोर्भुं पंचयोन्युग्म (वक्त्रां)-
 रूपां पंचप्राणोर्मिं पंचबुद्ध्यादि-
 मूलाम् । पंचावर्ता पंचदुःखौघविगां-
 वक्त्रां पंचप्राणोर्मिं (पंचाशद्देवां)
 पंचपर्वामधीमः [श्वेताश्व. १।५+ ना.प. ९।४
 पञ्चाक्षरमयं शम्भुं परब्रह्मस्वरूपिणम् पञ्चब्र. १.४
 पञ्चाभिना समायुक्तं मन्त्रशक्ति-
 निष्पातकम् सं. म. १०
 पञ्चात्मकमभूत् पिण्डं भ्रातृबद्धं
 गुणात्मकम् [यो.त. १०+ यो.शि. १।८
 पञ्चात्मकस्य गणा ईशतोऽस्य सि. शि. ६
 (२५) पञ्चात्मिकं पञ्चसु वर्तमानं षडा-
 श्रयं षड्गुणयोगयुक्तम् । तं सप्तवातुं
 त्रिमलं द्वितीयं चतुर्विधाहारमयं
 शरीरम् गर्भो. १
 पञ्चात्मकः समर्थः पञ्चात्मिका
 चेतसा बुद्धिर्गन्धरसादिज्ञाना-
 क्षराक्षरमोक्षारं चितयतीति गर्भो. ३
 पञ्चारचकंपरिवर्ततेपृथु[चित्यु. ११।८ तै.भा. ३।१.१।८

पञ्चाङ्गैतत्स्वविदुषां पञ्चसंस्कार- संस्कृतम् । पञ्चावस्थास्वरूपं ते विज्ञेयं सततं विभो	सुदर्श. १४
पञ्चावर्ता पञ्चदुःखौघवेगां पञ्चा- शद्वेदां पञ्चपर्वामधीमः	श्वेताश्व. १।५
पञ्चावर्ता मध्यशक्तिं चिन्तये- द्विद्युदाकृति । तां ध्यात्वा सर्व- सिद्धीनां आजनं जायते बुधः	योगरा. ९।१०
पञ्चावस्थाः-जाग्रत्स्वप्रसुप्तितुरीय- तुरीयातीताः (एवं) पञ्चाशत्कोटियोजनं बहुलं स्वर्णाण्डं ब्रह्माण्डमिति	मं. ब्रा. २।७
पञ्चाशत्स्वरवर्णाख्यमथर्ववेदस्वरूप- कम् । कोटिकोटिगणाध्यक्षं ब्रह्माण्डाखण्डविग्रहम्	राधोप. १।२
पञ्चाशद्द्वर्णसंयुक्तं स्थितिरिच्छा- क्रियान्वितम् ।	पञ्चब्र. ११
पञ्चाशन्मातृकामन्त्रवर्णप्रत्येकपूर्वकम् । लक्ष्मीबाहुन्मथादिश्च तारादिः स्यायनेकधा	पं. ब्र. ४
पञ्चीकृतमहाभूतसम्भवकर्म संचित- स्थूलदेहः कर्मक्षयात्... कूटस्थे प्रत्यगात्मनि विलीयते	रा.रं. २।१७
पञ्चेन्द्रियस्य देहस्य बुद्धेश्च मनेसस्तथा । द्रव्यदेशक्रियाणां च शुद्धिराचार इष्यते	पैङ्गलो. ३।४
पञ्चेन्द्रियस्य पुरुषस्य तदेव स्यादनावृतम् (मा. पा.)	भवसं. ४।४
पञ्चैतानि (पञ्चैतानि) महाबाहो पञ्चेष्टको वा एषोऽग्निः संवत्सरः	छां. ५।७।७
पञ्चैते तस्य हेतवः	भ.गी.१८।१३
पठनाम्ना हि तन्तवः	मैत्रा. ६।३३
पठनमध्यं तु यत्स्थानं नाभिचक्रं तदुच्यते	भ.गी.१८।१५
पठनसंस्थिता नाड्यो नानावर्णाः	यो. शि. ४।१७
पटाद्ब्रह्ममुपायाति घटाच्छकटमुत्कटम् ।	वराहो. ५।२९
चित्तमर्थेषु चरति पादपेष्विव मर्कटः	वराहो. ५।२८
पठनाच्छ्रवणादपि सर्वान्कामान- वाप्नुयात् । नारायणप्रसादेन वैकुण्ठपद्ममुने	अ. पू. ३।६

पणवानकगोमुखाः पण्डिताः समदर्शिनः	भ.गी.१।१३
पतङ्गभक्तमसुरस्य मायया पतङ्गो वाचं मनसा विभर्ति	भ.गी.५।१८
पतन्ति पितरो ह्येषां पतन्ति नरकेऽशुचौ	चित्त्यु. ११।१०
पतिताः शास्त्रजालेषु प्रज्ञया तेन मोहिताः [१ यो. त. ६+	चित्त्यु. ११।११
पतिं पतीनां परमं परस्ताद्विद्वाम देवं पतिं पतीनां परमां पुरस्ताद्विद्यावतां	भ. गी. १।४२
गुह्यकाली परेषाम् पतिं विश्वस्यात्मेश्वरं ५ शाश्वतं ५	भ.गी.१६।१६
शिवमच्युतम् पतिं विश्वेश्वरं देवं समुद्रे विश्वरूपिणम्	यो. शि. १।४
पत्रं पुष्पं फलं तोयं पत्रं पुष्पं फलं दद्यात्स्त्रियो वा	श्वेता. ६।७
पुरुषस्य वा । अवश्यं वशमित्याहु- रात्मना च परेण च	गुह्यका. ६६
पत्रैर्वा एतत्सर्वतः परिक्रामति छन्दांसि वै पत्राणि	महाना. ९।३
पत्रैः फलैर्वा जलैर्वाऽन्यैर्वाऽभिपूज्य विश्वेश्वरं मां ततोऽभीयात्	महो. १।६
पथि प्रयान्तं यान्तं च यत्नाद्वि- श्रामयेदुक्तम् । क्षुत्पिपासातुरं	भ.गी.९।२६
ज्ञातं ज्ञात्वा शक्तं च भोजयेत् पथ्यं मितं च शुद्धं च रस्यं हृदय-	वनदु. ९५
नन्दनम् । क्षिण्यं दृष्टिप्रियं कोष्णमन्नं भोज्यं मनीषिभिः	नृ. पू. ५।६
पद एवं त्रियुयुजे परस्मिन् पदमाद्यमनाद्यन्तं तस्य बीजं न विद्यते	भस्मजा. २।१०
पदं करोत्यलङ्घयेऽपि तृप्ता विफल- मीहते । चिरं तिष्ठति नैकत्र	शिवो. ७।३२
तृष्णा चपलमर्कटी पदं गच्छन्त्यनामयम्	भवसं. ४।१६
पदं तदनु यातोऽस्मि केवलोऽस्मि जयाम्यहम्	वा. मं. १
पदान्तराण्यसङ्ख्यानि प्रभवन्त्यन्य- थैतयोः (अज्ञानमूलमभुवोः)	अ. पू. ४।६८
	महो. ३।२३
	भ.गी. २।९१
	१सं.सो. २।५५
	महो. ५।२

पदार्थप्रविभागः कार्याकार्यवि-
निर्णयम् । जानात्यधिगतश्चान्यो
गृहं गृहपतिर्यथा अक्षुप. १५
पदार्थभावनादार्थं बन्ध इत्यभिधीयते महो. २।४१
पदार्थभावना षष्ठी (भूमिका)
[महो. ५।२५+ वराहो. ४।१
पदार्थवृन्दे देहादिधिया सन्त्यज्य
दूरतः । आशीतलान्तःकरणो
नित्यमात्मपरो भव अ.पु. ५।६९
पदेभ्यो वाक्यसम्भवः यो.शि. ३।६
पद्मयो भूमिर्दिशः भोत्रात् [क्र.अ. ८।४।९
[=मं.१०।९०।१४+वा.सं.३१।१३+पु. सू. १३
पद्मयो शूद्रोऽञ्जायत पु. सू. ११
[क्र.अ. ८।४।१९=मं.१०।९०।१२+ वा.सं.३१।११
पद्मकरं पद्मासनं पद्मनयनं पद्मबान्धवं सूर्यता. १।८
पद्मकं स्वस्तिकं वापि भद्रासन-
मथापि वा । बद्धा योगासनं
सम्यगुत्तराभिमुखः स्थितः ।
नासिकापुटमङ्गुल्या पिधायैकेन
मारुतम् । आकृष्य धारयेदग्नि
शब्दमेव विचिन्तयेत् अ.ना. १९,२०
पद्मकोशप्रतीकाशः हृदयं महाना. ९।६
पद्मकोशप्रतीकाशं...हृदयेषाप्यधो-
मुखं...तस्य मध्ये महानग्निः...
तस्य मध्ये वह्निशिखा... तस्याः
शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः चतुर्वे. ४।६
पद्मपत्रमिव च्छिन्नमूर्ध्वबायुविमोक्षणो ।
ध्रुवोर्मध्ये ललाटस्थं तज्ज्ञेयं
च निरञ्जनम् २ योगत. १४
पद्मपत्रमिवाभ्रसा अ.गी. ५।१०
पद्मसूत्रनिभा सूक्ष्मा शिखाभावदृश्यते
परा ।... वरदं सर्वभूतानां सर्व
व्याप्यैव तिष्ठति १ प्रणवो. १०, ११
पद्मसूत्रनिभा सूक्ष्मा शिखा सा
दृश्यते परा । सा नाडी सूर्यसंकाशा त्र. वि. १०
पद्मस्योद्गाढं कृत्वा बोधचन्द्राम्नि-
सूर्यकम् । तस्य हृद्बीजमाहृत्य
आत्मानं चरते ध्रुवम् ध्या.वि. ३५

पद्माक्षे स्थापितो मेरुर्निगीर्णो भृङ्ग-
सूनुना । निदाघ विद्धि तादृक्त्वं
जगदेतद्भ्रमात्मकम् महो. ४।६५
पद्मासनगतः स्वस्थो गुदमाकुञ्च्य
साधकः।...ब्रह्ममन्थि ततो भित्त्वा
विष्णुमन्थि भिनत्त्यतः।...सहस्र-
कमले शक्तिः शिवेन सह मोदते योगकुं. १।८३
पद्मासनस्थ एवासौ भूमिमुत्सृज्य
वर्तते । अतिमानुषचेष्टादि तथा
सामर्थ्यमुद्भवेत् १ यो. त. ५५
पद्मासनस्थितो योगी नाडीद्वारेषु
पूरयन् । मारुतं कुम्भयन्त्यस्तु स
मुक्तो नात्र संशयः ध्या.वि. ७०
पद्मासनं समारुह्य समकायशिरोधरः ।
नासाग्रदृष्टिरेकान्ते जपेदोङ्कार-
मन्ययम् यो. चू. ७१
पद्मासनं सुसंस्थाप्य जानूवोरन्तरे
करौ । निवेश्य भूमावातिष्ठे-
द्व्योमस्थः कुकुटासनः त्रि.त्रा. २।४१
पद्मासनं सुसंस्थाप्य तदंगुष्ठद्वयं पुनः ।
व्युत्क्रमेणैव हस्ताभ्यां बद्धपद्मासनं.. त्रि.त्रा. २।४०
पद्मासनासीनः कृष्णध्यानपरायणः
शेषदेवोऽस्ति राधोप. १।३
पद्मास्य वक्षाः परमः सुपुण्यः पद्मा
जनित्री परमस्य वासः पारमा. ७।७
पद्मिन्य इव हेमन्ते क्षीयन्ते भोग-
वासनाः [महो. ५।७८+ मुक्तिको. २।४१
पद्मो स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपहृये
अग्रिमम् [क्र. खि. ५।८७।४+ श्रीसू. ४
पद्मो दक्षिणकर्णे तु महापद्मास्तु वामके ।
शङ्खः शिरःप्रदेशे तु गुलिकस्तु
भुजान्तरे गाढो. ३
पद्म्यां भूमिर्दिशः भोत्रात् [क्र. अ. ८।४।१९
[=मं.१०।९०।१४वा.सं.३१।१३+ चिन्म. १२।६
पद्म्याः शूद्रोऽञ्जायत [सुबा. १।४+ चिन्म. १२।६
[+क्र. मं. १०।९०।१२+ वा.सं. ३१।११
पयसा यं प्राभीयात्सोऽस्य सायं
होमः । यत्प्रातः सोऽयं प्रातः ।
अदृशे तदर्शनम् । यत्पौर्णमास्ये

तत्पौर्णमास्यम् । यद्वसन्तं केश-
श्मश्रुलोमनखानि वापयेत् सो-
ऽस्याभिष्टोमः कठक. ३
पयसि ह्रीद* सर्वं प्रतिष्ठितं यच्च
प्राणिति यच्च न बृह. १।५।२
पयस्स्त्रावानन्तरं धेनुस्तनक्षीरमिव
सर्वेन्द्रियवर्गे परिनष्टे मनो-
नाशो भवति तदेवामनस्कम् मं.ब्रा. ३।२
पयस्विनी च याम्यस्य कर्णान्ति
प्रीच्यते बुधैः जा.द. ४।२०
पयस्विन्याः प्रजापतिः (देवता) जा.द. ४।३८
पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वं
प्रविलीयन्ति कामाः मुण्ड. ३।२।२
पयो ब्राह्मणस्य व्रतं, यवागू राजन्यस्य,
आमिक्षा वैश्यस्य सहवै. १२
पयोर्वै च सृजेच्च गाम् बृ.जा. ३।५
(तत्पयः) पयो होवाग्ने मनुष्याश्च
पशवश्चोपजीवन्ति तस्मात्कुमारं
आर्च्यं घृतं वैवाग्ने प्रतिलेहयन्ति
स्वर्नं वाऽनुवापयन्ति बृह. १।५।२
परं ह्येषो वा शिवप्रकोप्येयः शिवङ्करः अ. शिखो. ३
परकायमनोयोगः परकायप्रवेशकृत् यो. शि. ५।४८
परचित्ते चित्तलंयमात्परचित्तज्ञानम् शां. १।७।५२
परजीवोपाधिमायाविशेषे विद्वांसः
तस्मै पञ्चलक्ष्यं प्रत्यगभिन्नं ब्रह्म पैङ्गलो. ३।१
परतत्त्वसमाख्यातं जन्मबन्धविनाशकम् अमन. १।१४
परतत्त्वमिदं ब्रह्म स्यान्नास्ति परमार्थतः अ. शां. ७३
परब्रह्मण्यो लोच्यत् । स्वभावादेव
न भयाद्यः पश्यति स पश्यति अ.पू. १।३८
परब्रह्मेष्वभिध्याने मनसाऽनिष्ठ-
चिन्तनम् । वितथामिनिवेशश्च
त्रिविधं कर्म मानसम् भवसं. ५।३
परधर्मास्त्वनुष्ठितात् [भ.गी. ३।३५+ १८।४७
परधर्मो भयावहः भ.गी. ३।३५
परमेमास्वरतया मा न भूयमहं सदा ।
भूयासमिति यो ब्रूया सोऽहं
विष्णुर्मुनीश्वरः वराहो. २।८
(तद्वत्) परब्रह्मणः सर्वार्थमकस्य
साकारनिराकारमेव विरोधो नास्त्येव त्रि.म.ना. २।३

(तस्मात्) परब्रह्मणः परमार्थतः
साकारनिराकारौ स्वभावसिद्धौ त्रि.म.ना. २।४
परब्रह्मणि लीयेत न तस्योत्क्रान्तिः १यो. स. १०८
(तस्मात्) परब्रह्मणोऽधस्तनपादे
सर्वकारणे मूलकारणव्यक्ता-
विभावो भवति त्रि.म.ना. २।४
परब्रह्मपुरे विरजं निष्कलं शुभमक्षरं
विरजं विभाति परब्र. १
परब्रह्म सच्चिदानन्दानन्दराधाकृष्णयोः
परस्परसुखाभिलाषसात्वादन
इव तत्सच्चिदानन्दामृतं कथ्यते राधो. २।२
परब्रह्मस्वयं चात्मा साक्षान्नारायणः स्मृतः ना.उ.ता. १।८
परब्रह्मस्वरूपोऽहं ते. बि. ३।१
परमकैवल्यः स एव कैलासः सि.सा. १।१
परमगुरुपदेशेन सहसारे जलज्योतिर्वा
...षोडशान्तस्थतुरीयचैतन्यं
वाऽन्तर्लक्ष्यं भवति अद्वयता. ७
परमचिद्विलाससमष्टयाकारं निर्मलं
निरवयं...परमानन्दलक्षणापरि-
च्छिन्नानन्तज्योतिः शाश्वतं
शश्वद्विभाति सि. सा. ६।१
परमतस्वरहस्यवक्ता त्वमेव नान्यः
कश्चिदस्ति त्रि.म.ना. १।१
(तस्मात्) परमपरं परमार्थं च बृह-
द्वहत्या बृहंयति तस्मादुच्यते परं ब्रह्म बृहको. २०
परमपुरुषं चिद्रूपं परमात्मा त्रि. ता. ५।१
परमपुरुषोऽहम् अद्वैतमा. १
परमप्रकृतिरहम् अद्वैतमा. १
परममङ्गलाकारमनन्तासनं विराजते त्रि.म.ना. ७।९
परममङ्गलानन्तदिव्यतेजोभिर्ज्वलन्त-
मनिशं...निरतिशयाद्वैतपरमा-
नन्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना. ७।१२
परममौल्यस्त्वेक एव श्रूयते सर्वत्र त्रि.म.ना. ८।२
परमन्त्र-परकन्त्र-परतन्त्र-शतसहस्र-
कोटितेजःपुञ्जं मेदय मेदय...
सर्वायुषवराय स्वाहा लांगूलो. ७
परमन्त्रपरयज्ञपरतन्त्राभिर्गुण्विद्विधि
...ऽनमः शिवाय दधाने. २।२

परमयोगिभिर्विमृश्यम्... शाश्वतं परमं	
पदं... स्वयंप्रकाशमनिशं ज्वलति	त्रि.म.ना.७।७
परमहंसस्य सत्यलोकः	१सं.सो.२।५९
परमरहस्यशिवतत्त्वज्ञानेन	
(चिरजीवनमानंदानुभवश्च)	द. मू. १
परमहंसपरिव्राजकानामासनशयना-	
दिकं... परित्यजेत्	आरुणि. ४
परमहंसस्य पञ्चगृहेषु करपात्रं	
फलाहारो गोमुखं तुरीयाती-	
तस्यावधूतस्याजगद्भुक्तिः	ना. प. ५।७
परमहंसः शिखायज्ञोपवीतरहितः	
[ना.प.५।५+	१सं.सो.२।१३
परमहंसः सौहृदम्	निर्वाणो. १
परमहंसादित्रयाणां न कटिसूत्रं न	
कौपीनं न वस्त्रं न कमण्डलुर्नदण्डः	ना. प. ५।६
परमहंसा न दण्डधरा मुण्डाः	
कन्याकौपीनवाससः	आश्रमो. ४
(तत्र) परमहंसा नाम संवर्तकारुणि-	
श्वेतकेतुर्वासकभुनिदाघदत्तात्रेय-	
शुकवामदेवहारीतकप्रभृतयः	याज्ञव. २
(अथ) परमहंसा नाम संवर्तका-	
रुणि-श्वेतकेतु-जडभरत-दत्तात्रेय-	
शुकवामदेवहारीतकप्रभृतयोऽष्टौ	
मासांश्चरन्तो योगमार्गे	
मोक्षमेव प्रार्थयन्ते	भिक्षुको. ४
परमहंसाश्रमणास्वलितस्वरूपध्यानेन	
बैहत्यागं करोति स मुक्तो भवति	ना. प. १।१
परमहंसो ललाटे प्रणवेनैकमूर्ध्व-	
पुंड्रं वा धारयेत् [गौपीचं. ४+	वामुदे. ४
परमहंसो वामुदेवोऽहमेव	वराहो. २।३७
परमहंसस्य सत्यलोकः	ना.प.५।९
परमं पुरुषं दिव्यं	भ.गी.८।८
परमं पौरुषं यत्नमास्थायावाय सद्यसम् ।	
यथाशास्त्रमनुद्वेगमाचरन्को न	
मिद्धिषाक्	महो. ५।८६
परमं ब्रह्म विज्ञाय वत्सकृत्तान्यथो-	
त्सृजेत् । (शास्त्राण्यधीत्य	
मेवावी अम्यस्य च पुनः पुनः)	अ. ना. १
परमं मंगलं वदेत्	शिक्षो. ७।६१

परमं रूपमैश्वरम्	भ.गी.११।९
परमं वै श्वेवधेरिव परस्परोद्धरणं	
यन्निष्कामत्वम्	मैत्रा. ६।३०
परमं व्योमैक आत्मानमेके	आर्षे. ३।३
परमं हैव लोकं जयति य एवं वेदै-	
तद्वै परमं तपो यं प्रेतमरण्यं	
हरन्ति	वृह. ५।११।१
परमा तारा सा देवतानां च देवता	तारोप. १३
परमात्मनि यो रक्तो विरक्तोऽपरमा-	
त्मनि । सर्वैषणाविनिर्मुक्तः	
स भैक्षं भोक्तुमर्हति	ना.प. ३।१८
परमात्मनि लीनं तत्परं ब्रह्मैव जायते	योगकुं. ३।२४
परमात्मनोरेकत्वज्ञानेन तयोर्भेद	
एव विभक्तः सा सन्धा	प. हं. ४
परमात्मपदं नित्यं तत्कथं जीवतां	
गतम् । सर्वभावपदातीतं	
ज्ञानरूपं निरञ्जनम्	१ यो. ९
परमात्मभूः पुरुषभुवः पुरुषभुवः	
पुरुषभूर्भुवः सुवः	सूर्यता. ४।१
परमात्मस्वरूपो हंसः	पा. प्र. ३
परमात्मा गुणातीतः सर्वात्मा	
भूतभावनः	ते.वि.४।४१
परमात्मानं बाह्यान्ते लब्धांशे	ग. सो. ५।६
(अथ) परमात्मा नाम यथाक्षर	
उपासनीयः	१ आत्मो. ३
परमात्मा परं ज्योतिः परं धाम	
परा गतिः	ते. वि.६।६७
परमात्माब्रह्मगुणप्रकाशेनान्यत्र विदितः	पा. प्र. ४
परमात्मा महेश्वरः	रुद्रह. १३
परमात्मा सै शुष्यन्तां ज्योतिरहं	
विरजा विपाप्मा भूयास्व स्वहा	महाता. १४।१८
परमात्माऽयमव्ययः	भ.गी.१३।३२
परमात्मा संवाशिब आदिभूतः परः	त्रि. ता. १।९
परमात्मा समाहितः	भ.गी. ६।७
परमात्मास्त्वहं शिवः	मैत्रे. ३।१२
परमात्माहमच्युतः	महो. ५।८९
परमात्मेति चाप्युक्तः	भ.गी. १३।३२
परमात्मेत्युदाहृतः	भ.गी. १५।१७

परमात्मैव शिष्यते अ.पू. १।४४
 परमात्मैव स्वप्रकाशः नृसिंहो. ९।१
 परमाद्वैतसाम्राज्यं तन्नाम ब्रह्म मे गतिम् महो. शीर्षकं
 परमानन्दघनोऽहं परमानन्दैक-
 भूमरूपोऽहम् आ. प्र. ९
 परमानन्दपूर्णो यः सजीवन्मुक्त उच्यते ते. बि. ४।३
 परमानन्दपूर्णोऽहं संस्रामिकिमिच्छया अवधू. ११
 परमानन्दलक्षणापरिच्छिन्नानन्तपरं
 ज्योतिः शश्वतं शश्वद्विभाति त्रि. म. ना. ७।७
 परमानन्दसम्बोहो वासुदेवोऽहमिति अक्षुप. ४९
 परमाप्नोति पूरुषः भ. गी. ३।१९
 परमार्थस्त्वबाधितब्रह्मसुखविषये
 प्रवृत्तिरेव न जायते... त्रि. म. ना. ५।३
 परमार्थतो न किञ्चिदस्ति क्षण-
 शून्यानादिमूलाविद्याविलासत्वात् त्रि. म. ना. ३।३
 परमार्थदृष्ट्या तत्प्रत्ययलक्ष्याणि
 दृष्ट्वा... परं ब्रह्म प्राप्नोति मं. ब्रा. ३।१
 परमार्थेन विप्रेन्द्र मिथ्या सर्वं तु दृश्यते महो. ५।१६५
 परमार्थैकविज्ञानं सुखात्मानं स्वय-
 म्भूम् । स्वस्वरूपतया सर्वं वेदं
 स्वानुभवेन यः । स धीरः स तु विज्ञेयः वराहो. २।२९
 परमा वा एषा छन्दसां यदनुष्टुप्
 [च. पू. १।१++ ग. पू. १।६
 परमां वत् काष्ठां प्रापच्छ्रिया यशसा
 ब्रह्मवर्चसेन य एवं विदो ब्राह्मणस्य
 पुत्रो जायते बृह. ६।४।२८
 परमेबाह्वरं प्रतिपद्यते स यो ह वै
 तद्वच्छायमशरीरमलोहितं शुभ्र-
 मक्षरं वेदयते प्रभो. ४।१०
 परमे व्योमन्प्रतिष्ठिता (वारुणीविद्या) तैत्ति. ३।६
 परमेश्वरस्तुतिर्मानम् आत्मपू. १
 परमेश्वरोऽसौ हि सर्वत्र सर्वदा
 सर्वात्मा सन् सर्वमस्ति नृसिंहो. ४।२
 परमेषुपि निष्ठावान् हीयते हरि-
 र्व्याजः । मावोऽप्यभावमायाति
 जीयेन्तै वै विगीश्वराः महो. ३।५१
 परमोवाक् पदमेति महामनाः महो. ६।५२
 परमोऽस्मि परात्परः मैत्रे. ३।१०
 परमिष्यतिर्जायते पुरुषोत्तमाश्च सि. बि. २

परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति सवद्वहतेऽथ हन्यते छांदो. ६।१६।१
 परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति स न दह्यते-
 ऽथ मुच्यते छां. ६।१६।२
 परस्तस्मात्तु भावोऽन्यः भ. गी. ८।२०
 परस्तादोङ्कारप्रयुक्त्येतथैव तद्वाच्या-
 ययदेश यज्ञस्य पुरस्ताद्युच्यत एषा
 पश्चात्सर्वत एतया यज्ञस्तपते २प्रणवो. ४
 परस्ताद्यशो गुहासु मम महाना. ६।१०
 परस्तान्नसन्नासन्नसदसदित्येतन्निर्वाणा-
 नुशासनमिति वेदानुशासनमिति
 [सुबालो. २।१+११।३+१३।५+२+ १४।२+१५।३
 परस्परं भावयन्तः भ. गी. ३।११
 परस्परं विरुद्धयन्ते तैरयं न विरुद्धयते अद्वैत. १७
 परस्परं सौम्यगुणत्वात् षड्विधो रसः गर्भो. २
 परस्योत्सादनार्थं वा भ. गी. १७।१९
 परहंसाश्रमस्थो हि ज्ञानादेरविधानतः ।
 अशेषचित्तवृत्तीनां त्यागं
 केवलमाचरेत् ना. प. ४।२५
 परं गुह्यतमं विद्धि ह्यस्ततन्द्रो निरा-
 श्रयः । सोमरूपकला सूक्ष्मा
 विष्णोस्तत्परमं पदम् ते. बि. १।५
 परं जन्म विवस्वतः भ. गी. ४।४
 परं ज्योतिरुपसम्पद्य स्वेन रूपेणाभि-
 निष्पद्यत आत्मेति होवाचै-
 तदमृतमभयमेतद्ब्रूहेति [मैत्रा. २।२+ छां. उ. ८।३।४
 परं ज्योतिरुपसम्पद्यते सर्वमायुरेति
 वसीयान्भवति आर्षे. ६।३
 परं ज्योतिः स्वप्रकाशमयो ब्रह्मानन्द-
 मयो नित्यो निर्विकल्पो निरञ्जनो
 निराख्यातः शुद्धो देव एको
 नारायणः न द्वितीयोऽस्ति कश्चित् त्रि. म. ना. २।८
 परं ज्ञानमहं वच्मि येन तत्त्वं
 प्रकाशते । येन सञ्चिद्यते सर्व-
 माशापाशाविबन्धनम् अमन. १।२
 परं तत्त्वं तदुच्यते अमन. १।१०
 परं दृष्ट्वा निवर्तते भ. गी. २।५९
 परं पौष्टमभित्य नीत्वा चित्तम-
 चित्तताम् । ध्यानतो हृदयाकाशे
 चित्तिचिच्चक्रपारया । मनो मारय
 निःशङ्कं त्वां निवृज्यन्ति नारयः महो. ४।९३

परं ब्रह्म कृष्णात्मको नित्यानन्दैक्य-

स्वरूपः सोऽहम्

गोपालो. २।३

परं ब्रह्म चतुर्थके

मृत्युलां. ३

परं ब्रह्म तत्प्रतिसरयोग्यत्वाद्वहु-

मार्गवृत्ति कल्पयन्ति

परब्र. ५

परं ब्रह्म परं ज्योतिः सर्वेषां त्वं

पालेनाय हुतममृतं बहिष्यसे स्वाहा

पारमा. २।३

परं ब्रह्म परं धाम

भ.गी.१०।१२

परं ब्रह्म परं सत्यं सच्चिदानन्दलक्षणम्

यो.शि. २।१६

परं ब्रह्म सनातनम् । सच्चिदानन्द-

रूपं तद्वाङ्मनसगोचरम्

रुद्रह. २६

परं ब्रह्मानुसन्दध्याद्विश्वादीनां क्रमः

क्रमात्

ना.प. ८।९

परं ब्रह्माहमस्मीतिस्मरणस्य मनोनहि

ते.वि.५।३०

परं ब्रह्माहमस्मीति भावयन्योगी

मत्सायुज्यमवाप्नोति

गोपीचं. ४

परं ब्रह्माहमेव तत्

वराहो. ३।२

परं भावमजानन्तः [भ.गी.७।२४+

९।११

परं भूयः प्रवक्ष्यामि

भ.गी. १४।१

परं मृत्योर् अनु परेहि पन्थाम्

[क्र. अ. ७।६।२६=

मं.१०।१८।१+

[वा.सं.३५।७+अथर्व.१२।२।२४

तै.आ.३।५।२

[पु. सू. ७+चित्त्यु.१५।२+

महाना. १३।८

परं वा एतदात्मनो रूपं यदजमज-

मयो ह्यर्थं प्राणः

मैत्रा. ६।११

परं विदग्धोदरपूरणाय भ्रमन्ति

काका इव सुरयोऽपि

मैत्रे. २।२५

पदं सत्यमबाधितं सोऽहमित्यात्मान-

मादाय मनसैक्यं कुर्यात्

गोपालो. २।४

परः पूर्वं प्रतिष्ठाप्य निगृहीतानलं

तप्तः । हीत्वा पारमपारेण

पञ्चानुशील भूर्धनि

मैत्रा. ६।२१

परः स्निमानो जविबरस्य शुकं

किं सीमिच्छरं मन्यमानः । न

ह स्वाहमप्रणीय स्वचिदाभित्या

जहामि शपमानमिजु

वा. मं. ७

पराहृष्टिदन्मेघः । प्रत्यग्दृष्टिर्निमेघः

त्रि.म.ना.४।६

पराहृष्टया स्वस्वरूपचिन्तनमेवोन्मेघः

त्रि.म.ना.४।६

पराग्वा एतद्विजमहर् भवेत्तदोमिति

१९५.३।६।५

पराहेत्यन्यामयी, पराहेत्यनाशकी

अरुणो. ४

[तै. आ.

१।२७।४

पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते

मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्

कठो. ४।२

पराश्च खानि व्यतृणत् स्वयम्भू-

स्तस्मात्पराङ्मुख्यति नान्तरात्मन्

कठो. ४।१

परामृतरसोऽस्म्यहम्

ते.वि.३।३९

परातीतारूपो भवेदिति द्वितीयः

गुह्यषोढा. २

परात्परतरं चैव यत्पराचैव यत्परम् ।

यत्परात्परतो ज्ञेयं तन्मे मनः

२ शिवसं. १७

शिवसङ्कल्पमस्तु

शरमो. ३०

परात्परतरं ब्रह्म परात्परतरो हरिः

२ शिवसं. १८

परात्परतो ब्रह्मा...तन्मे मनः

परात्परतरो ब्रह्मा तत्परात्परतो हरिः ।

तत्परात्परतोऽधीशस्तस्मात्स्या-

दुत्तरः शिवः

सदानं. ४

परात्परतरो भवेत् । शिवोभवेदित्येकः

गुह्यषोढा. १

परात्परतरो हरिः

शरमो. ३०

परात्परतरोऽधीशस्तस्मात्तुल्योऽधिकोनहि

शरमो. ३०

परात्परं परमं वेदितव्यं सर्वावसाने

सकृद्वेदितव्यम्

ना.प. ९।१६

परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्

मुण्ड. ३।२।८

परात्परं पुरुषं याति विद्वान्

कैव. १

परात्परं पुरुषं विश्वधाम

पञ्चम. १९

परात्परं यन्महतो महान्तं स्वरूप-

तेजोमयशान्तं शिवम्

महो. ४।७१

[ना. प. ९।१८+

महाना. १।९

परात्परोऽहं जनचित्प्रकाशः । मेघा

यथा व्योम न च स्पृशन्ति संसार-

दुःखानि न मां स्पृशन्ति

वराहो. ३।३

परादुष्कृन्तिय च सुख [त्रिमु.१,२,३+

[क्र.अ.४।४।२५=

महाना. १२।२

[वा.वे.१।१४१+

मं९।८२।४

परान्तकाले परासृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे

तै.आ.१०।१०।१

परार्थं न प्रतिष्ठाप्य न दद्याच्च कथञ्चन ।

(नीरुजश्च युवा चैव भिक्षुर्नावसये

वसेत्)

महाना. ८।१५

१ सं.सो.३।९३

पशानन्दरसाक्षुब्धो रमते स्वात्मना-		परिज्ञायोपमुक्तो हि औमो भवति तुष्टये महो. ५७१
ऽऽत्मनि	म.वा.र. ८	परिणामेऽमृतोपमम् म.गी.१८।३७
परापरमथापरे	त्रैतय्य. २७	परिणामे विषमिव म.गी.१८।३८
परापवादमुक्तो जीवन्मुक्तः	निर्वाणो. २	परित्यक्तोऽयमात्मा नस्तद्देहो
परापश्यन्तीमध्यमावैखरीरूपा सर-		त्रिरोचते छाग.६।४
स्वतीति चतुर्विधा वाचो वदन्ति	ना.पू.ता.५।८	परित्राणाय साधूनां म.गी. ४।८
परापृतोऽस्मिहं पूर्णः प्रभुरस्मि पुरातनः	म.वि. १००	परिधावापृथिवी यन्नि सद्यः परिलोका-
पस्युष्टोऽस्मि लब्धोऽस्मि ओदितो-		न्परिविशः परिसुवः [मं.मं.१।११५।३ महाना. २।६
ऽस्म्यचिरादहम्	१४.सं.सो.२।३१	परिपूर्णचन्द्रामृतरस्यैकीकरणं
परायणं ज्योतिरेकं तपन्नम्	प्रभो. १।८	नैवेद्यम् [मं.आ.२।९+ आत्मपू. १
पराया निर्वृतेः स्थानं यत्तज्जीवितमुच्यते	महो. ३।१२	परिपूर्णपराकाशमग्नमनाः प्राप्तोन्मन्यवस्थः
परायामहोदीभूय पश्यन्त्यां द्विदलीकृता	योगकुं. ३।१८	..ब्रह्माहमस्मीतिकृतकृत्योभवति मं. आ. ३।३
पराकपो ह्योदीधीः	मान्धर्वो. २	परिपूर्णमनाद्यन्तमप्रमेयमविक्रियम् अद्यात्मा. ६०
परावरसंयोगः । तारकोपदेशः	निर्वाणो. ५	परिपूर्णस्वरूपं तत्त्वतः कमलसम्भव ।
परावरैक्यरसास्वादनम्	निर्वाणो. ५	सकलं निष्कलं चैव पूर्णत्वाच्च
परावरोऽस्म्यहं प्राज्ञः प्रपञ्चोपशमो-		तदेव हि यो.वि.१।१९
ऽस्म्यहम्	म.वि. ९९	परिपूर्णः परात्माऽस्मिन्देहे विद्याधि-
परास्य द्विषन् पाप्मा भ्रातृव्यो	बृह. १।३।७	कारिणि । बुद्धेः साक्षितया
भवति [+१पेत.१।४।४+]	१।८।२.३	स्थित्वा स्फुरन्नहमितीर्यते शु.र. ३।३
परास्य आरं पुनरस्तमेति	चिन्त्यु. १।४।४	परिप्रतिष्ठितं देभुर्यच्छतु दधातना-
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयतेत्वाभाषिकी		त्रयोऽर्णवः सुवो राजैकं च महाना. ६।११
ज्ञानबलक्रिया च [श्वेता. ६।८+]	भवसं. २।४४	परिप्रमेन सेवया म.गी.४।३४
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते	शुद्धका. ६७	परि ये प्रिया भ्रातृव्याः वैत्ति. ३।१०।४
परां विवक्षातामेति शृङ्खलाबद्धसिंह-		परिब्राट् त्रिशिखी सीता चूडा
परा (पनः) । (स्वयं कस्वित्त-		निर्वाणमण्डलम् मुक्तिको. १।३४
तन्मात्राजाताभ्यन्तरवर्ति च)	महो. ५।१२९	परिवा ब्रजेद्युर्वै प्रेयाद्यदेवैनं समा-
परां सिद्धिमितो गताः	म.गी. ३।४।१	पयति तथा समापयितव्यो भवति कौ.त.२।१५
परिगलितममस्तजन्मपाशः सकल-		परिव्राजका अपि चतुर्विधा भवन्ति
विलीनतमोमयाभिमानः । परस-		कुटीचराबहूदकाहंसापरमहंसाश्चेति आश्रमो. ४,२
रसमयी परात्मसत्तां जलगतसैन्धव-		परिव्राजकाः पश्चिमलिङ्गाः निर्वाणो. १
खण्डवन्महात्मा	म.पू. २।१६	(अथ) परिव्राद्धिवर्णासा मुण्डो-
परिचरन्नुपसत्ता भवति	छान्दो. ७।८।१	ऽपरिग्रहः शुचिरब्रह्मेही मैक्षणो
परिचर्यात्मकं कर्म	म.गी.१८।४४	ब्रह्मभूयाय भवति जावा. ५
परिचीयमानयोगस्यवशत्वंयातिमादतः	योगो. १०	परिव्राडेकशटी मुण्डोऽपरिग्रहः...
परिचीयमानस्य तथा वायुर्वै		जतरूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत् ना.प. ३।८७
विद्यतोमुखः	योगी. १२	परिव्राडेकाकी चरति भयत्रस्त-
परिज्ञातत्वभावं व शुक्रं स जनको		सारङ्गवत्तिष्ठति ना.प.२।२९
नृपः । जानीय मुदितत्मानमव-		परिव्राट्पिर्ममो भवेत् ना.प. ३।३३
लोक्य नजान ह	महो. २।२८	

परिश्रिते त्वेव दद्याच्छ्रीका हि
 पितरः स्मृताः इतिहा. ५४
 परिसमुद्राः परिलिप्याग्निमुपसमाधाय
 परिस्तीर्यावृताज्यं सस्कृत्य
 पुनः सा नक्षत्रेण मन्थ्य सन्नीय
 जुहोति बृह. ६।३।१
 परि सर्वमिदं जगत् चिन्त्य. ११।१०
 परिलिङ्गालादपरोऽपि दृष्टः श्वेताश्व. ६।५
 परिक्षुतं क्षपमाद्यं पलं च... स्वात्मी-
 कृत्य सुकृती सिद्धिमेति त्रि. महो. १२
 परिक्षुतं क्षपमाजं फलं (पलं) च भक्तानि
 योनीः सुपरिष्कृताश्च । निवेदयन्
 देवतायै महत्यै स्वात्मीकृते
 सुकृते सिद्धिमेति त्रिपुरो. १२
 परिक्षुताहविषा भावितेन प्रसङ्कोचे
 गळिते वै मनस्तः त्रि. म. १५
 परिक्षुता हविषा भावितेन.. वैमनस्कः त्रिपुरो. १५
 परीक्षकैः स्वर्णकारैर्द्वयं सम्प्रोच्यते
 तथा । सिद्धिर्भिलक्षयेत्सिद्धं
 जीवन्मुक्तं तथैव च यो. शि. १।१५९
 परीक्ष्य दद्याद्द्वेणवीमात्मनिष्ठाम्
 शादण्या. ३४
 परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो
 निर्वेदमायाबाह्यकृतः कृतेन मुण्ड. १।३।१२
 परीत्य लोकान् परीत्य भूतानि परीत्य
 सर्वाः प्रदिशो दिशश्च । प्रजापतिः
 प्रथमजा ऋतस्यात्मन्नात्मान-
 मभिसम्बभूव महाना. २।७
 परीक्षुतो वरीक्षुतो ब्रह्मणा
 सङ्गते. २३
 परेच्छया च दिग्वासाः क्लृप्तः
 कुर्यात्परेच्छया ना. प. ५।१६
 परेच्छाचारणम् निर्वाणो. २
 परेण तन्तुं परिषिच्यमानम् । अन्तरा-
 दित्ये मनसा चरन्तम् । देवानां
 हृदये ब्रह्मान्वविन्तम् चिन्त्य. ११।६
 परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राज-
 (ते यद्यतयो) देवयतयो
 विशन्ति [महाना. ८।१४+ कैव. ३
 परेणैवात्मनश्चापि परस्यैवात्मना तथा ।
 अभयं समवाप्नोति स परिवाद... ना. प. ३।२

परेण प्रातस्तथाप्य शुचिर्भूत्वा समा-
 हितः । कृत्स्नानो दौतवस्त्रः
 पयोर्वै च सूजेच गाम् कृ. जा. ३।५
 परे लयं गतो योगी चतुर्विंशति-
 वासरान् । तस्य प्राक्काश्यसिद्धिः
 स्यादीप्सितं लभते ध्रुवम् अमन. १।६९
 परेऽप्यग्रे सर्वे एकीभवन्ति मुण्ड. ३।२।७
 परैरष्टबाह्यात्मा सर्ववेदान्तगोचरः
 परैरवद्यो नाक्रान्तो (राजा) न राष्ट्रं
 बहु मन्यते महो. ५।७४
 परीक्षा प्रत्यक्षा ऋषिसंहिता भवति
 परीक्षेण परीक्षप्रिया इव हि देवाः
 परीक्षेणैव परीक्षप्रिया इव हि देवाः
 परीक्षप्रिया इव हि देवाः
 [२ ऐत. ३।१४+ महो. ५।७४
 परो भगवान्मिलक्षणो निरञ्जनो
 निरुपाधिराभिरहितो देवः त्रि. ता. १।५
 (ॐ) परोरजसे सावदोम् त्रि. म. ना. ७।११
 परो रजसेऽसावदोम् [त्रि. ता. १।१, ९+ पारायणो. १।१
 परोरजसेऽसावदोमा प्रापदिति बृह. ५।१४।७
 परोरजा य एष तपति बृह. ५।१४।३
 परे लोकानामजितो जितात्मन् भवते-
 भवाय पारसा. १।१
 परोवरीय एव हास्मिँल्लोके जीवनं
 भवति छांदो. १।९।३
 परोवरीयसो ह लोकाश्चरति छांदो. २।७।२
 परोवरीयो हास्य भवति परोवरीयसो
 ह लोकाश्चरति, य एतदेवं विद्वान्
 परोवरीया समुदीयमुपास्ते छांदो. १।९।२
 परोवरीयांसमभिप्रणुत्यमन्तर्जुषाणं
 मुक्तानि विश्वा जाव. १०।१
 परोवरीयो हास्य भवति परोवरीयसो
 ह लोकाश्चरति य एतदेवं विद्वान्
 प्राणेषु पंचविधं परोवरीयः
 सामोपास्ते छांदो. २।७।२
 परोवरीयो हैभ्यस्तावदस्मिँल्लोके
 जीवनं भविष्यति छांदो. १।९।३
 परो हास्यादित्यजयाज्ययो भवति
 यजेत्य एको सुवनस्य गोसा छांदो. २।१०।६
 पकावरीः १

पर्जन्यस्य विद्युत् चित्स्यु. ९।२
 पर्जन्यादन्नसम्भवः भ. गी. ३।१४
 पर्जन्ये तृप्यति विद्युत्तृप्यति छांदो. ५।२२।२
 पर्जन्येनौषधिवनस्पतयः प्रजायन्ते महाना. १७।१३
 पर्जन्यो वाऽभिर्गौतम तस्य संवत्सर
 एव समिदभ्राणि धूमो विद्युदर्चि- बृह. ६।२।१०
 रशानिरङ्गाराह्वादुनयो विस्फुलिङ्गाः
 पर्जन्यो वाव गौतमाग्निस्तस्य वायुरेव
 समिदभ्रं धूमो विद्युदर्चिरशनि- छांदो. ५।५।१
 रङ्गाराह्वादुनयो विस्फुलिङ्गाः
 पर्णं वनस्पतेरिवाभि नः शयिता- महाना. १३।७
 रयिः सचतां नः शचीपतिः
 पर्णाग्निदेशे त्वणिमादिसिद्धयो वेदाश्च
 साक्षाः सपुरीणमन्त्राः । तस्मा- १ बिल्वो. ६
 दयं बिल्ववनस्पतिर्भहान्. ना. प. ४।१९
 पर्यदेत सदा योगी वीक्ष्यन्वसुषातलं
 पर्यदेत्कीटवद्भौ वर्षास्वेकत्र संवसेत् ।
 एकवासा अवासा वा एकदृष्टि- ना. प. ४।१७
 रलोलुपः (भिक्षुः)
 पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव
 सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः मुण्ड. ३।२।२
 पर्याप्तकामस्य कृतात्मनश्च.. (मा. पा.) मुंडको. ३।२।२
 पर्याप्तं त्विदमेतेषां भ. गी. १।१०
 पर्यायेण पश्यन्तीवेमं मोघं संविद्वाना इति
 पर्यारणः परमेष्ठि नृचक्षाः वा. मं. २५
 पर्येणं ज्ञियन्ते द्विषन्तः सपत्नाः तैत्ति. ३।१०।४
 पर्वणि न विचिन्वेत् (तुलसी) यदि
 विचिन्वति स विष्णुहा भवति तुलस्यु. २
 पर्वताग्ने नदीतीरे बिल्वमूले वनेऽथवा ।
 मनोरमे शुचौ देशे मठं कृत्वा
 समाहितः जा. द. ५।४
 पर्वोत्सवेषु सर्वेषु दद्याद्रन्वपवित्रकम् शिवो. ७।९
 पल्लवखलेनापि हृद्भाभ्योश्चलनं भवेत् ।
 अनाहतः स विज्ञेयो न तत्रैवं
 न्यसेत्पुनः अमन. १।४०
 पलालमिव धान्यार्थी त्यजेद्रन्वमशेषतः ।
 भन्यमभ्यस्य मेधानी ज्ञानविज्ञान-
 (उत्तरः) वस्वतः [म. नि. १८+ त्रि. ता. ५।१८

पलाष्टकलयेनापि कामस्तस्य निवर्तते अमन. १।४२
 पलैः षष्टिभिरेव स्याद्वटिका
 कालसम्मिता अमन. १।३३
 पल्ययते कर्म कुरुते विपल्येति [बृह. ४।३।३, ४, ५
 पवनः पवतामस्मि भ. गी. १०।३१
 पवनः स्थैर्यमायाति लययोगोदये
 सति (मनोऽलये) यो. शि. १।१३५
 पवनात्पावमानः मैत्रा. ६।७
 पवनावच्छिन्नोर्ध्वज्वलनसंविदुल्का-
 काशदेहो दीपः भावनो. ९
 पवित्रमिदमुत्तमम् भ. गी. ९।२
 पवित्रमिह विद्यते भ. गी. ४।३८
 पवित्रं च एतत्तस्य न्यसनम् नृ. षट्च. ७
 पवित्रं ज्ञानमुच्यते [ना. प. ३।८२+ ब्रह्मो. १२
 पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते सुदर्श. ५
 [ऋ. अ. ५।७।३।८=मं. ९।८३।१+ सा. वे. १।५६५
 [तै. आ. १।११।१+ लिङ्गोप. १
 पवित्रं धारयेज्जन्तुरक्षणाथम् कुंडिको. ९
 पवित्रं परमं भवान् भ. गी. १०।१२
 पवित्रं ज्ञानशाटी च उत्तरासङ्गमेव
 च । यज्ञोपवीतं वेदांश्च (अतोऽति
 रिक्तं यत्किञ्चित्) सर्वं तद्वर्जये- कुंडिको. १०
 यतिः [कठ. ५+
 पवित्रे निर्जने देशे... नात्युपनीचे
 क्षासनं... वक्ष्यपक्षासनं कृत्वा
 सरस्क्यास्तु चालनम् । दक्ष-
 नाड्या समाकुप्य बहिर्ध्वं पवनं
 क्षनैः । यथेष्टं पूरयेद्वायुं.. योगकु. १।२२
 पशवश्चात्मानवान्तं मध्यवर्तिनश्च
 युक्तात्मानो यतन्तौमामेकंप्राप्सुम् भस्मजा. २।७
 पशवोऽपशवस्तापसो न तापसः त्रि. ता. ५।१
 पशव्यासुरसंहिता भवति संहितो. १।१
 पशुकुटुकीदाद्या धृतिं संप्राप्नुवति
 वै (अजरामरपिण्डो यो जीव-
 न्मुक्तः स एव हि) यो. शि. १।१६१
 पशुपतिरह्वाविडः संसारी जीवः
 स एव पशुः जावात्सु. २
 पशुपतिरस्यूलवयेन चित्स्यु. २१।१

पशुपाशपरः शान्तः परमज्ञान-
देशिकः । शिवः शिवाय भूतानां
सं विज्ञाय विमुच्यते

पशुभ्य एकं प्रायच्छत्
पशुमान् भवति यस्तथाऽबीते
पशुषु पञ्चविधं सामोपासीत
पशूनांरूपमग्रस्य.. [श्रीसू. ११ क्र. खि.
पशून्देवताभ्यः प्रत्यौहत्
पशून् निन्देच्छद्रतम्
पशून्श्च मह्यमावहं जीवनं च

विशो दश
पशून्स्ताश्चक्रे वायव्यान् [पु.सू. ६+
[+ क्र. अ. ८। ४। १८ = मं. १०। ९०। ८
पश्चाज्जन्मान्तरशतैर्यौगादेव विमुच्यते
पश्चात्प्रतीच्यस्ताः समुद्रात्समुद्रः मेवा-
पियन्ति

पश्चादग्नेः संविशति चर्मणि वा
स्थण्डिले वा
पश्चादुभयं पुरस्तादित्युपतिष्ठते
पश्चादुपासीत पूर्वोक्तकर्मतः मन्त्रवित्..
पश्चाद्भूमिमथो पुरः [चित्यु. १२। २+
[क्र. अ. ८। ४। १५ = मं. १०। ९०। ५+

पश्चान्मायादासी प्रकटिता
पश्चिमवर्लेकपिलवर्णे यदाविश्राम्यतेमनः
पश्चिमा गरुडवाहिनी वैष्णवी
पश्चिमा तृतीया कुक्षिर्भवति
पश्चिमाभिमुखं लिङ्गं... तं ध्यात्वा-

ऽऽकर्षयेज्जगत्
पश्चिमाभिमुखो भूत्वा सुवरिति
न्याहृतिर्बुधं...

पश्चिमाभिमुखो भूत्वा भूरिति न्याहृति-
पैशुवेवः
पश्चिमायां भवतु सरस्वती

पश्चिमायां वैराग्यस्थानं
पश्चिमे वरुणाय वायव्ये मित्राय
पश्चिमेऽस्युल्लेखिताः.. नैर्ऋत्या भद्राः
पश्यन्त्युष्णं सृष्टाजिघ्रन्

पश्यत्यकृतबुद्धित्वात्
पश्यत्यक्षुः स शृणोत्यकर्णः
[ना. पू. ९। १४+

शिवो. १। १६

बृह. १। ५। १, २

संहितो. १। १

छांदो. २। ६। १

५। ८७। ११

बृह. १। २। ७

छां. २। १। ८। २

महाना. २। ९

चित्यु. १२। ४

वा. सं. ३। १। ६

यो. शि. १। ५५

छांदो. ६। १। ०। १

छान्दो. ५। २। ८

सन्ध्यो. २

अ. ना. २२

पु. सू. ५

वा. सं. ३। १। ५

सामर. २

विश्रामो. ५

गायत्रीर. ५

गायत्रीर. ३

योगरा. ८

महो. १। ४

चतुर्वे. १

गायत्रीर. ३

अस्मजा. २। ९

सूर्यता. ४। १

राघोप. १। ५

म. गी. ५। ८

म. गी. १८। १६

शेता. ३। १९+

भवसं. २। ४५

पश्यत्यक्षुः सा शृणोत्यकर्णा
पश्यत्यां तुरीयप्राज्ञः, परार्थां तुरीय-
तुरीयः

पश्यन्तश्चक्षुषा [बृह. ६। १। ८, १०

पश्यन्तश्चक्षुषा शृण्वन्तः श्रोत्रेण

ध्यायन्तो मनसैवमिति प्रविवेश

ह वाक्

पश्यन्तश्चक्षुषा ध्यायन्तो मनसै-

वमिति प्रविवेश ह श्रोत्रम्

पश्यन्तश्चक्षुषा शृण्वन्तः श्रोत्रेणैवमिति

प्रविवेश ह मनः

पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः

(यं) पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः

पश्यन्ति देहिक्न्मूढाः शरीराभास-

दर्शनात् । अहिनिर्त्यनीवायं

मुक्तदेहस्तु तिष्ठति

पश्यन्ति यत्सुषुप्तिस्थान एकीभूत-

प्रज्ञानघन एवानन्देऽभूत्

पश्यन्ति व्यक्ततां भूयो जायन्ते

बुद्धिदा इव

पश्यन्ती पञ्चदश परा षोडश इति

षोडशमात्रात्मकः प्रणवः

पश्यन्नपि सदा नैव पश्यति स्वात्मनः

पृथक्

पश्यन्त्यस्यां महात्मानः सुवर्णं

पिप्पलाशनम्

पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्

पश्यन्त्यां द्विदलीकृता-

पश्यन्नात्मनि तुल्यति

पश्यन्वेदान्तमानेन सद्य एव विमुच्यते

पश्यन्वे तज्ज पश्यति, नहि द्रष्टुं शक्नु-
परिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात्

पश्य मे पार्थ रूपाणि

पश्य मे योगमैश्वरम् [म. गी. ९। ५+

पश्यादित्यान् वसुन् रुद्रान्

पश्याद्य सचराचरम्

पश्याम एव भगवो न च वयं पश्यामो

नैव वयं वक्तुं शक्नुमो नमस्तोऽस्तु

भागवत्प्रसीद

गुह्यका. ५१

प. हं. प. १०

११, १२,

छान्दो. ५। १। ८

छांदो. ५। १। १०

छांदो. ५। १। ११

म. गी. १५। १०

मुण्ड. ३। १। ५

२ ब्राह्मो. १७

श्रीवि. वा. ३। १

मंत्रिको. १८

तुरीयो. २

वराहो. २। १७

मंत्रिको. ७

म. गी. १५। ११

योगकुं. ३। १८

म. गी. ६। २०

वराहो. २। १४

बृह. ४। ३। २३

म. गी. ११। ५

११। ८

म. गी. ११। ६

म. गी. ११। ७

सिंहो. ९। १०

पञ्चमस्कन्धः स शृणोम्यकर्णः । अहं

विजानामि विविक्तरूपो न चास्ति

वेत्ता मम चित्सदाहम्

पञ्चमस्कन्धाणि भारत

पञ्चमि त्वा सर्वतोऽन्तरूपम्

पञ्चमि त्वा दीप्तहुताश्वक्मम्

पञ्चमि त्वा दुर्निरीक्ष्य समन्तात्

पञ्चमि देवांस्तव देव देहे

पञ्चमि विश्वेश्वर विश्वरूप

पञ्चमि वैतन्त्रिहितं गुहायाम्

पञ्चम त्वा वयम् रा ३, २, ३, ३, ३हुं

३, आ ३, ३ जा ३, यो ३, आ

३, ३, १, १, १ इति

पञ्चम त्वा वयं वैरा ३, ३, ३, ३, ३

हुं ३ आ ३, ३ ज्या ३ यो

३ आ ३, ३, १, १, १ इति

पञ्चम त्वा वयम् साम्रा ३, ३, ३, ३, ३

हुं ३ आ ३, ३, ३ यो ३ आ

३, २, १, १, १ इति

पञ्चम त्वा वयम् स्वारा ३, ३,

३, ३, ३हुं ३ आ ३, ३ ज्या ३ यो ३

आ ३, ३, १, १, १ इति

पञ्चम शरदः शतमिन्द्र जीवेत्याक्षिपः

पञ्चमैतां पाण्डुपुत्राणां

पाण्डवाः पण्डितं मन्या न ते

किमपि जानते

पाङ्कमिदं सर्वं यदिदं किञ्च

पाङ्के वा इदं सर्वम् । पाङ्केनैव पातं

स्पृणोतीति

पाञ्चजन्यं, हृषीकेशः

पाणिनाऽन्तर्धाय वसन्तास्तेन वा

प्रच्छाद्यस्वर्गाद्योकाङ्कामानवाप्नुहीति

पाणिपादादिमात्रोऽयमहमित्येष

निश्चयः । अहङ्कारस्तृतीयोऽसौ

लौकिकस्तु च एव सः

पाणिपात्रश्चरन्योगी नासकृद्भैक्षमाचरेत् ।

तिष्ठन्मुञ्च्यश्चरन्मुञ्च्यन्मध्यमेनाच-

मनं तथा

पाणिपात्रेणासनं कुर्यात् [१ सं.सौ. १।२+

कैव. २१

भ.गी. १।१।६

भ.गी. १।१।१६

भ.गी. १।१।१९

भ.गी. १।१।१७

भ.गी. १।१।१५

भ.गी. १।१।१६

गुह्यका. ३६

छांदो. २।२४।४

छां. २।२४।८

छां. २।२४।१३

छां. २।२४।१२

सन्ध्यो. ३

भ.गी. १।३

अमन. २।१०२

बृह. १।४।१७

तैत्ति. १।७।१

भ.गी. १।१५

कौ.त. २।१५

महो. ५।९२

ना.प. ५।२१

कठमु. ६

पाण्डवानां धनञ्जयः

भ.गी. १।०।३७

पाण्डरगगनम् (परमहंसस्य)

निर्वाणो. ४

पाण्डरं शुक्रमित्याहुर्लोहिताख्यं

महारजः । विद्रुमद्रुमसङ्काशं

योनिस्थाने स्थितं रजः

ध्या.वि. ८७

पातालजङ्घकं मुनिचरणं कालाङ्गुष्ठकं

तारकाजालाङ्गुलं दृष्ट्वास्तु वन्ति स्म

ग. शो. ४।७

पातालानामधोभागे कालाग्निः

प्रतिष्ठितः । स मूलाग्निः

शरीरेऽग्निर्यस्मान्नादः प्रजायते

यो.शि. ५।२९

पात्रमस्य भवेत्पाणिस्तेन नित्यं स्थितिं

नयेत् । पाणिपात्रश्चरन्योगी

नासकृद्भैक्षमाचरेत्

१ सं.सौ. २।७७

पात्रं विसृजेत्, पवित्रं विसृजेत्

आहणि. २

पादचतुष्टयात्मकं ब्रह्म

त्रि.म.नां. १।३

पादचतुष्टयात्मकं ब्रह्म, तत्रैकमविद्या-

पादं । पादत्रयममृतं भवति

त्रि.म.नां. ४।२

पादत्रयं परमकैवल्यम्

त्रि.म.नां. ८।३

पादत्रयं परमवैकुण्ठः

त्रि.म.नां. ८।३

पादत्रयात्मकं ब्रह्म कैवल्यं शाश्वतं परम्

त्रि.म.नां. ४।२

पादत्रयेऽपि किं वक्तव्यं निरतिशया-

नन्दाविर्भावो मोक्ष इति मोक्षलक्षणं

पादत्रये वर्तते

त्रि.म.नां. ८।२

पादमैत्र्यादिकं तु ब्रह्मत्वरूपकथनमेव

त्रि.म.नां. ४।२

पादयोः सञ्चारः

ना.प. ६।३

पादसन्धौ संयमाभितल्लोकज्ञानम्

छांदि. १।७।२

पादस्थानानि पत्राद्यैः कृत्वा देवगृहं

विशेत् । पात्रास्तरितपादश्च नित्यं

भुञ्जीत वाग्यतः

शिवो. ७।४८

पादस्योपरि यन्मध्यं तद्रूपं नाम

कृन्तयेत् । मनो द्वारेण तीक्ष्णेन

योगमाश्रित्य नित्यशः

शुभिको. १२

पादहस्तयोरपि सर्वगात्रेषु सर्वव्यापी

समानः

शाण्डि. १।४।७

पादं च षड्भुवनं किला विव्रितसे

चित्त्यु. १।१५

पादा अकार उकार मकार इति

माण्डू. ८

पादा इति पादविदो विषया इति तद्विदुः

वैतथ्य. २१

पादाङ्गुष्ठ-गुल्फ-जंघा-जानू-रुपायुर्मेद-

नाभिहृदयकण्ठकृपतालनासाक्षि-

भूमध्यललाटमूर्ध्नीं स्थानानि तेषु
 क्रमादारोहावरोहक्रमेण प्रत्याहरेत् शाण्डि. १।८।१
 पादाङ्गुष्ठधारणाच्छरीरलघुता भवति शाण्डि. १।७।४५
 पादाङ्गुष्ठावधिः कन्दादधो याता च
 कोशिकी (नाडी) त्रि. ब्रा. २।७४
 पादाङ्गुष्ठे कराङ्गुष्ठे स्फुरणं यस्य न
 श्रुतिः । तस्य संवत्सरादूर्ध्वं
 जीवितस्य क्षयो भवेत् त्रि. ब्रा. २।१२२
 पादाङ्गुष्ठौ तु पाणिभ्यां गृहीत्वा
 भवणावधि । धनुराकषेकाकृष्टं
 धनुरासनमीरितम् त्रि. ब्रा. २।४३
 पादादिकं गुणास्तस्य शरीरं तत्त्व-
 मुच्यते । धर्मोऽस्य दक्षिणं
 चक्षुरधर्मोऽथो परः स्मृतः ना. वि. २
 पादादि जानुपर्यन्तं पृथिवीस्थानमुच्यते १ यो. त. ८४
 पादाद्यैरर्धचैर्नग्निस्तृचेन द्वादश-
 निर्नामभिः... षड्विजैः सम्पुटिताः.. सूर्यता. १।९
 पादाद्योभागे संयमादतल्लोकज्ञानं शाण्डि. १।७।५२
 पादा मात्रा मात्राश्च पादाः
 (ओङ्कारस्य) माण्डू. ८
 पादाभावाद्गतिर्नास्ति हस्ताभावात्
 क्रिया न च ते. वि. ५।१९
 पादात्रेवास्या एकमङ्गुद्वयं तयोरित्या-
 परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ. त. ३।५
 पादे संयमादितल्लोकज्ञानम् शाण्डि. १।७।५२
 पादो रथः (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।२
 पादोऽस्य विश्वा भूतानि
 [त्रि. म. ना. ४।४+पू. सू. ३ चित्यु. १२।२
 [त्रि. म. ना. ४।४+पू. सू. ३ वा. सं. ३१।३
 पादोऽस्य सर्वा भूतानि छां. ३।१२।६
 पादोऽस्येहामवत् पुनः पु. सू. ४
 [त्रि. म. ना. ४।४+ चित्यु. १२।२
 [त्रि. म. ना. ४।४+पू. सू. ३ वा. सं. ३१।४
 पादो च गन्तव्यं च मनश्च मन्तव्यं च प्रश्नो. ५।८
 पादो च गन्तव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
 पादो च व्यन्तास्येतां यन्मां
 नामभिष्य इति छांदो. ५।१।७।२
 पादो स्वेतावात्मन इति होवाच छांदो. ५।१।७।२
 पादो वदवाकति वसदो. ९।१

पापकर्षणो गोभूमिवेदवेदितो गोपीजन-
 विद्याकलापरेकः गो. पू. १।३
 पापकारी पापो भवति, पुण्यः पुण्येन
 कर्मणा भवति, पापः पापेन बृह. ४।४।५
 पापपूर्णस्य मर्त्यस्य त्रिपुण्ड्रोद्भूले
 शिवे । रुद्राक्षधारणे द्वेषः स्वत
 एव प्रजायते सि. शि. ६
 पापफलनरकादिमांस्तु शुभकर्मफल-
 स्वर्गमस्त्विति काङ्क्षते मं. ब्रा. २।७
 पापभाजो हि श्रोतृणामसूयावतां
 पापश्चापकामन्ति इतिहा. २
 पापमेवाश्रयेदस्मान् भ. गी. १।३६
 पापहर वीर हनुमन् ईश्वरावतार
 वायुनन्दनमञ्जनासुतबन्धयबन्धय लांगूली. ८
 पापं कर्म न श्लिष्यत इति छांदो. ४।१४।३
 पापं चन्द्र इव राहोर्मुखात्प्रमुच्य
 धूत्वा शरीरमकृतं कृतात्मा
 ब्रह्मलोकमभिसम्भवामि छांदो. ८।१३।१
 पापं चरति पुरुषः भ. गी. ३।३६
 पापः कर्मणा (पापेन भवति) बृह. ३।२।१३
 पापादस्मात्प्रवर्तितुम् भ. गी. १।३९
 पापाद्विभेति सततं न च भोगमपेक्षते मध्यप. ९
 पापेभ्यो रक्षन्ताम् म. ना. १।१।३, ४
 पाप्मना गृहीत इव आम्यमाणं मेघा. ४।२
 पाप्मना ह्येतद्विद्धम् छां. १।२।४, ५,
 पाप्मना ह्येष विद्धः छांदो. १।२।२, ३
 पाप्मानं प्रजहि ह्येनं भ. गी. ३।४१
 पाप्मानं मृत्युमन्वावायानीति बृह. १।३।१०
 पायुरन्यात्मं, विसर्जयितव्यमधिभूतं,
 मृत्युस्तत्राधिदेवतं.. सुबालो. ५।१३
 पायुमूलादधोर्ध्वगाऽलम्बुसा भवति शाण्डि. १।४।६
 पायुश्च विसर्जयितव्यं च प्रश्नो. ४।८
 पायुश्च विसर्जयितव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
 पायुमेवाप्येति यः पायुमेवास्तमेति सुबालो. ९।८
 पायूपस्थेऽपानं चक्षुः श्रोत्रे मुख-
 नासिकाभ्यां प्राणः स्वयं प्रतिष्ठते
 मध्ये तु समानः प्रश्नो. ३।५

पायोराकुम्भं कुर्यात् कुण्डलीं
चालयेत्तदा । मृत्युचक्रगतस्यापि

तस्य मृत्युभयं कुतः

यो.शि.१।८३

पायोःरुत्सर्गः

ना.प. ६।३

पारं गच्छति तन्निधनमेतद्वामदेव्यं
मिथुने प्रोतम्

छांदो.२।१३।१

पाराय तमसः परस्तात्

मुण्ड. २।२।६

पारिव्राज्यं गृहीत्वा तु यः स्वधर्मे न
तिष्ठति । तमारुढच्युतं विद्यादिति

वेदानुशासनम्

शाटपाय. २९

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यंचापि सर्वशः ।

असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्या-

चतुर्विधम्

भवसं. ९।४

पार्थ नैवेह नामुत्र

भ.गी.६।४०

पार्थ सम्पदमासुरीम्

भ.गी.१६।४

पार्थस्य च महात्मनः

भ.गी.१८।७४

पार्थिवः पञ्चमात्रस्तु चतुर्मात्रस्तु

वारुणः ।...एकमात्रस्तथाऽऽकाशो

ह्यमात्रं तु विचिंतयेत्

अ.ना. ३१

पार्थिवे वायुमारोप्य लकारेण

समन्वितम् । ध्यायंश्चतुर्मुखाकारं

चतुर्वक्त्रं हिरण्यमयम् । धारयेत्पञ्च

चटिकाः पृथिवीजयमाप्नुयात्

१ यो. त. ८५

पार्थस्यबोधिताः सन्तः पूर्वाचार-

क्रममागतम् । आचारमाचन्येव

सुसुखदुःखदुःखिताः

महो. ५।३८

पार्थे राधिका चेति । तस्या अंशो

लक्ष्मीदुर्गाविजयादिशक्तिरिति

राधोप. १।५

पाणिवातेन संपीड्य योनिमाकुम्भ-

येद्वदम् । अपानमूर्ध्वमाकृष्य

मूलवन्धो विधीयते

यो.चू. ४६

पाणिमागेन सम्पीड्य योनिमा-

कुम्भयेद्वदम् (उद्धानास्यो हि

बन्धोऽयं योगिभिः समुदाहृतः)

१ यो. त. १२०

पाणि वामस्य पादस्य योनिस्थाने

नियोजयेत्

१ यो. त. ११२

पालाशमासनं शय्यां पादुके वृन्त-

पावनम् । वर्जयेद्यापि निर्वासं

रक्तं न तु समुद्रवम्

शिवो. ७।९१

पालाशं बैलवमाश्रित्यमौदुम्बरं दण्डं

मौञ्जीं मेखलां यज्ञोपवीतं च

आरुणि. ५

त्यक्त्वा शूरो य एवं वेद

पालवैकं धारयेज्जन्तुसंरक्षणार्थं

वर्षावर्षावर्जनमिति

कठभु. २२

पावकः शक्तिमध्ये तु नाभिचक्रे

रविः स्थितः

ब्र.वि. ६८

(श्री) पावकानःसरस्वतीवाजेभिः

[ऋ.मं.१।३।१०+वा.सं.२०।८४+

सा.वे.१।१८९

पावनानि मनीषिणाम्

भ.गी. १८।५

पावनी परमोदारा शुद्धसत्त्वानुपातिनी ।

आत्मध्यानमयी नित्या सुषुप्ति-

स्थेव तिष्ठति

१ सं.सो.२।४४

पाशबद्धस्तथा जीवः पाशमुक्तः

सदाशिवः

स्कन्दो. ७

पाशबद्धः स्यूतो जीवः पाशमुक्तः

सनातनः । तुषेण बद्धो ब्रीहिः

स्यात्तुषाभावेन तण्डुलः

ना.उ.ता.१।७

पाशुपतब्रह्मविद्यासंवेद्यं परमाक्षरम् ।

परमानन्दसम्पूर्णं रामचन्द्रपदं भजे

पा.ब्र.शीर्षकं

पाशं छित्त्वा यथा हंसो निर्विशङ्कं

समुत्क्रमेत् । छिन्नपाशस्तथा जीवः

संसारं तरते सदा

सुरिको. २२

पाशैः पशुरिव बद्धं बन्धनस्थस्ये-

वास्वातन्त्र्यम्

मैत्रा. ४।२

पाषाण इव निश्चलः

योगो. २२

पाषाणलोहमणिमृण्मयविग्रहेषु

पूजा पुनर्जननभोगकरी मुमुक्षोः

मैत्रे. २।२६

पाहि गीर्भश्चतस्रभिर्वस्रो स्वाहा

महाना. ७।९

पाहि नो अग्न एकया

महाना. ७।५

पांशुना च प्रतिच्छिन्नशून्यागारप्रति-

अयः । वृक्षमूलनिकेतो बा.. (यतिः)

ना.प. ९।२५

पिङ्गला चोत्थिता तस्मादक्षनासा-

पुटावधि

त्रि.भा. २।७१

पिङ्गला चोर्ध्वगा याम्यनासान्तं भवति

तु यत् । तदुत्तरायणं प्रोक्तं..

शांदि. १।४।६

पिङ्गलायामिडायां तु वायोः सङ्क्रमणं

तु यत् । तदुत्तरायणं प्रोक्तं..

जा.व. ४।४०

पिङ्गलाया विरिञ्चिः स्यात् (विता)

जा.व. ४।४५

पिङ्गलायां रविः (चरति) [शां. १।४।६ जा. द. ४।४०

पिङ्गलायाः पृष्ठतो याम्यनेत्रान्तं पूषा

भवति

शां. १।४।६

पिण्डवर्जितः पिण्डस्थोऽपि प्रत्यगात्मा

सर्वव्यापी भवति

पैङ्गलो. ४।९

पिण्डपातेन या मुक्तिः सा मुक्तिर्न

तु हन्यते

यो. शि. १।१६३

पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्यं लिङ्गसूत्रात्मनोरिव योगकुं. १।८१

पिण्डांश्च निक्षिपेत्तत्र आद्यन्तं

प्रणवेन तु ।...स्वाहान्ते जुहुयात्तत्र.. वृ. जा. ३।१३

पिण्डे पिण्डे शरीरस्य पिण्डदानेन

सम्भवः

पिण्डो. ९

पितरं पुत्रमग्निमुपवीतं कर्म कलत्रं

चान्यदपि (त्यजेत्)

आरुणि. ५

पितरं मातरं कलत्रपुत्रमाप्तबन्धुवर्गं...

वाऽनुमोदयित्वा...आग्नेय्यामेव

कुर्यात्

प हं. प. २

पितरौ चास्य दासत्वं कुरुतस्त-

त्पचोदितौ (येन यत्र कृतं कर्म

स तत्रैव प्रजायते)

शिवो. ७।११०

पिता त्वं मातरिश्चनः

प्रश्नो. २।११

पिता पुत्रं प्रेक्ष्याह्वयति

कौ. त. २।१५

पितामहस्तथेत्यङ्गीकृत्य (आह-)

ना. प. ४।३८

पितामहं पुनः पप्रच्छ नारदः कथं

यज्ञोपवीती ब्राह्मण इति

ना. प. ३।७७

पिता माता प्रजैत एव मन एव पिता

वाङ्मता प्राणः प्रजा

बृह. १।५।७

पिता मेऽमन्यत नाननुशिष्य

हरेतेति [बृह. ४।१।२,

३, ४, ५, ६, ७

पिताऽसि लोकस्य चराचरस्य

भ. गी. १।१४३

पिताऽहमस्य जगतः

भ. गी. ९।१७

पिताऽहं, माताऽहं, पुत्रोऽहम्

अद्वैत. भा. २

पितृ रेतोधिकान्युत्सुको, मातृ रेतोति-

रेकास्त्री, उभयोर्बीजतुल्यत्वा-

अपुंसको भवति

गर्भो. ३

पितृकृतस्यैवसौऽवयजनमसि स्वाहा

महाना. १।४।१

पितृगेहेषु या कन्या रजः पश्यत्य-

संस्कृता । सा कन्या वृषली नाम

तत्पतिर्वृषलीपतिः

इतिहा. ६७

पितृभ्रो मातृभ्रो ब्रह्मभ्रो गुरुहननः

कोटियतिभ्रोऽनेककृतपापो यो मम

षण्णवतिकोटिनामानि जपति स

तेभ्यः पापेभ्यः प्रमुच्यते

रामर. १।९

पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव

तैत्ति. १।११।२

पितृमातृगुरुशुश्रूषाध्यानवान् स्वर्गीयः

कांचनदाता... भवति

संहितो. ४।१

पितृमातृवधोत्पन्नं बुद्धिपूर्वमथं च यत् ।

तदनुष्ठानमात्रेण सर्वमेतद्विलीयते

रामो. ५।१८

पितृमातृसहोदरदारापत्यगृहारामक्षेत्र-

ममतासंसारारवणसङ्कल्पो बन्धः

निरा. २१

पितृयागोक्तविधानेन ब्राह्मणानभ्यर्च्य...

पितृलोकाच्चन्द्रं, ते चन्द्रं प्राप्यान्नं

ना. प. ४।३१९

भवन्ति

बृह. ६।३।१६

पितृलोकादाकाशं

छांदो. ५।१०।४

पितृश्राद्धे पितृ-पितामह-प्रपिता-

महान्...युगमकूट्या ब्राह्मणा-

नर्चयेत्

ना. प. ४।३९

पितृहा वै त्वमसि मातृहा वै त्वमसि

छांदो. ७।१५।२

पितृणामर्थमा चास्मि

भ. गी. १०।२९

पितृनथ पितामहान्

भ. गी. १।२६

पितृन् यान्ति पितृव्रताः

भ. गी. ९।२५

पितृणामेव महिमानं गत्वा चन्द्रमसः

सायुज्यं सलोकतामाप्नोति

महाना. १।८।१

पितृणां प्रथमा स्वधा

प्रश्नो. २।८

पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः

भ. गी. १।१४४

पितोत्तररूपम् । प्रजा सन्धिः

तैत्ति. १।३।६

पित्रादिशरीरदहने पुत्रादीनां ब्रह्म-

हत्यादिदोषसम्भवाच्च, तस्मान्न

देहो ब्राह्मणः

व. सु. ४

पित्र्यं वा गान्धर्वं वा दैवं वा प्राजा-

पत्यं वा ब्राह्मं वाऽन्येषां वा

भूतानाम्

बृह. ४।४।४

पिधाय बुद्ध्या द्वाराणि मनो ध्याने

निवेशयेत्

ना. प. ६।७

पिपीलिका यथा लम्बा देहे ध्याना-

द्विमुच्यते । असौ किं वृश्चिकैर्दष्टो

देहान्ते वा कथं सुखी

यो. शि. १।३३

पिपीलिकायांलम्बायांकण्डूस्तत्रप्रवर्तते

यो. शि. १।११।४

पिबन्त्येनामविषयामविज्ञातां कुमा-

रकाः । एकस्तु पिबते देवः

स्वच्छन्दोऽत्र वशानुगः

मंत्रिको. ६

पिहितः सहस्राक्षेण हिरण्मयेनानन्दे-

नैष वाव विजिज्ञासितव्यः

मैत्रा. ६।८

पीठकल्पमूलकन्दनालपद्मपत्रकेसर-

कर्णिकासूर्यमण्डलसोमवह्नि-

ब्रह्मविष्णुरुद्रसत्त्वरजस्तम आत्मा-

न्तरात्मा परमात्मभूः

सूर्यता. ४।१

पीठं जालंबरं नाम तिष्ठत्यत्र चतुर्मुख

यो.शि. ५।११

पीडया क्रियते तपः

भ.गी. १७।१९

पीतवर्णोत्तरदले यदा विश्राम्यते

मनः । तदा शृङ्गारभोगौ च

कल्पनायां मतिर्भवेत्

विश्रामो. ७

पीतवासंसं पीतालङ्कारसम्पन्नां...

चिया सच्चिन्त्य...भूविम्बत्रयमनु-

सन्धाय...देवीमाहूय ध्यायेत्

पीताम्बरो. १

पीतास्तु वैश्या विज्ञेया कृष्णाः शूद्रा

उदाहृताः (रुद्राक्षाः)

रु. जा. ९

पीतोदकोऽभ्यनृणा दुग्धदोहा

निरिन्द्रियाः । अनन्दादनाम ते

लौकास्तान्स गच्छति ता ददत्

कठो. १।३

पुङ्गवानुपुङ्गविषयेक्षणतत्परोऽपि ब्रह्मा-

वलोकनधियं न जहाति योगी

वराहो. २।८२

पुण्डरीकं तु तन्मध्ये आकाशो दहरो-

ऽस्ति तत् । स शिवः सच्चिदानन्दः

सोऽन्वेष्टव्यो मुमुक्षुभिः

पं. प्र. ३५

पुण्ड्राक्षय ऊर्ध्वा अकार उकारो मकारः

वासुदे. ४

पुण्यपापकर्मानुसारी भूत्वा प्राप्तशरीर-

संयोगमप्राप्तशरीरसंयोगमिव

कुर्वाणो यदा दृश्यते तदोपहित-

जीव इत्युच्यते

सर्वसारो. ५

पुण्यपापे समूलोन्मूलिते प्राक्परोक्ष-

मपि कस्त्वलमलकवद्वाक्यमप्रति-

बद्धापरोक्षसाक्षात्कारं प्रकृत्यते

पैङ्गलो. १।३

पुण्यमेतत्समासाद्य

यो. शि. ९

पुण्यमेवामु गच्छति न ह वै देवान्

पापं गच्छति

बृह. १।५।२०

पुण्यवतां पुण्येषु सज्जमानः

पारमा. २।७

(एवं)पुण्यस्य कर्मणो दूराद्गन्धो वाति

महाना. ७।९

पुण्यः पुण्यानां पुण्याय स्वाहा

पारमा. ४।६

पुण्यःपुण्येनकर्मणाभवति, पापः पापेन

बृह. ४।४।५

पुण्यः शरण्यः सकलस्य जन्तोः

हेरम्बो. ११

पुण्यायतनचारी च भूतानामविहिंसकः

ना.प. ५।३०

पुण्यां च पुण्यः पुरुषे पुरग्रे तां

राजिमन्तां निशि चोदितानां

निदधाति पुष्ट्यै हरन्पराय स्वाहा

पारमा. ९।८

पुण्येन पुण्यं लोकं नयति, पापेन

पापमुभाभ्यामेव मनुष्यलोकम्

प्रश्नो. ३।७

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च

भ.गी. ७।९

पुण्यो वा दैविकं सत्त्वं सत्त्वमार्षि

सत्त्वं सत्त्वं सत्पथाय स्वाहा

पारमा. ५।१

पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा भवति,

पापः पापेनेति

बृह. ३।२।१३

पुत्र उपरिष्ठादभिनिपद्यते

कौ.व. २।१५

पुत्रदारगृहादिषु

भ.गी. १।१९

पुत्रदुःखस्य नास्त्यन्तो धनी चेन्मित्रयते

तदा

याज्ञव. २०

पुत्रपौत्रादिभिः समृद्धो भवति

मुद्रलो. ५।१

पुत्रं दृष्ट्वा त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं

सर्वमित्यनुमन्त्रयेत्

कठश्रु. ४

पुत्रं दृष्ट्वा त्वं यज्ञस्त्वं सर्वमित्यनु-

मन्त्रयेत्

सं.सो. १।२

पुत्राज्जन्म पितुर्यथा

अ. शां. १५

पुत्रादिदेहेष्वभिमानशून्यं भूत्वा

वसेत्सौख्यतमे ह्यनन्ते

मैत्रे. १।१९

पुत्रान् प्रौत्रान् सखींस्तथा

भ.गी. १।२६

पुत्राप्तबन्धुभवस्थलं विहाय दूरतो वसेत्

ना.प. ७।१

पुत्रांश्च पशूश्चेच्छेयेत्येच्छते

छांदो. ७।३।१

पुत्रे मित्रे कलत्रे च रिषौ स्वात्मनि

सन्ततम् । एकरूपंमुनेयत्तदार्जवं..

जा.व. १।१६

पुत्रैषणायाश्च वितैषणायाश्च

लोकैषणायाश्च व्युत्थायाश्च

मिक्षाचर्यं चरन्ति

बृह. ३।५।३

पुत्रो गायत्रं छन्दः शुद्धो वर्णः

रमणवो. १४

पुत्रो देयः शिरो देयं न देया षोडशाक्षरी ना.पू.वा. ३।२

पुनस्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्

[महाना. ११।२४

प्राणाग्नि. ८

पुनस्तु वसवः पुनातु वरुणः

पुनात्वधर्मर्षणः

महाना. ६।५

(अथ) पुन- (त्रैतीयाऽवती-)-रवती

वा व्रती वा स्नातको वाऽस्नातको

(वोत्सन्नाग्निरनमिको) वा यदहरेव

विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत् [जाबालो. ४ याज्ञ. १

पुनश्चाचम्य कर्म स्वं कर्तुमर्हति

सत्तमः । (आचम्य वसनं धौतं

ततश्चैतत्प्रधारयेत्)

वृ.जा. ३।३३

पुनरावर्तिनोऽर्जुन

भ.गी. ८।१६

पुनश्चावचं व्यभुवानः

वा.मं. १८

पुनरेतस्यां (मालायां) सर्वात्म-

कत्वं भावयित्वा... आदिक्षान्तै-

रक्षरैरक्षमालामष्टोत्तरशतं स्पृशेत्

अ. मा. ५

(अथ) पुनरेव नारायणः सोऽन्य-

त्काग्रो मनसाध्यायत

महो. १।३, ४

पुनर्गुहा सकला मायया च पुरुष्येषा

विश्वमाताऽऽदिविद्या

त्रिपु. म. ८

पुनर्जन्मनिवृत्त्यर्थं मोक्षस्याहर्निशं

स्मरेत्

परब्र. ८

पुनर्जन्मकरी प्रोक्ता मलिना वासना

बुधैः । पुनर्जन्माङ्कुरं त्यक्त्वा

स्थितिः संभृष्टबीजवत्

मुक्तिको. २।६२

पुनर्जन्म न विद्यते

भ.गी. ८।१६

पुनर्नाभिजायते पुनर्नाभिजायते

निरा. च. ३३

पुनर्भवमिन्द्रियैर्मनसि सम्पद्यमानैः

प्रश्नो. ३.९

पुनर्भोजनमध्वानं भाराध्ययनसङ्गमम् ।

दानं प्रतिग्रहं होमं श्राद्धमुक् चष्ट

वर्जयेत्

इतिहा. ३८

पुनर्भनः पुनरायुर्म आगात्

सहवै. ८

पुनर्योगं च शंससि

भ. गी. ५।१

पुनर्वत्सरशतं तस्य प्रलयो भवति ।

तदा जीवाः सर्वे प्रकृतौ लीयन्ते

त्रि.म.न. ३।४

पुनश्चायुः पुनः श्रोत्रं म आगात्

सहवै. ८

पुनश्च जन्मान्तरकर्मयोगात्स एव

जीवः स्वपति प्रबुद्धः

कैव. १४

पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते

भ.गी. ११।३९

पुनश्चतुष्पष्टिमात्राः प्रकृतिपुरुषद्वैविध्य-

मापाद्य ... सगुणनिर्गुणत्वमेत्य

एकोऽपि ब्रह्मप्रणवः

तुरीयो. २

पुनश्चित्तं पुनराधीतं म आगात्

सहवै. ८

पुनश्चैकादशः स्मृतः

छांदो. ७।२६।२

पुनस्ते प्राण आयाति परो यक्षं

सुवामि ते

सहवै. ६

पुनस्ते सिद्धश्चतो मे प्रादुरभूवन्

गो. पू. ३।८

पुनस्त्यजेत्पिङ्गलयाशनैरेव न वेगतः ।

पुनः पिङ्गलयाऽऽपूर्य पूरयेदुदरं शनैः १ यो.त. ३८

पुनः पञ्चधा ज्ञेयं गिहितं गुहायां

मैत्रा. ६।४

पुनः पिङ्गलयाऽऽपूर्यतन्मात्रैः षोडशभि-

स्तथा । अकारमूर्तिमत्रापि स्मरेत्

जा.द. ६।७

पुनः पिङ्गलयाऽऽपूर्यकुम्भित्वा रेचये-

दिडया

छांदो. १।५।३

पुनः पिङ्गलयाऽऽपूर्यवह्निबीजमनुस्मरेत् ।

पुनर्विरेचयेद्विमान्

जा. द. ५।९

पुनः पुनः सर्वावस्थासु ज्ञानज्ञेयो

ध्यानध्येयो लक्ष्यालक्ष्ये दृश्या-

दृश्ये चोहापोहादि परित्यज्य

मुक्तो भवति

मं. ब्रा. २।६

पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोन्या द्रवति

प्राणायैव

बृह. ४।३।३६

पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोन्या

द्रवति स्वप्रायैव

बृह. ४।३।१५

पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोन्या द्रवति

स्वप्रान्तायैव

बृह. ४।३।१७

पुनः स्वश्रमाचारपरो भवेदित्युच्यते

पुनात्यशुद्धान्यपूतानि

ना. प्र. ५।१

पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोन्या

द्रवति बुद्धान्तायैव [बृह.

४।३।१६, ३४

पुनः प्राणः पुनराकृतं म आगात्

पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहं

सहवै. ८

पुमात्रेतः सिञ्चति योषितायां

पुमांश्चरति निःस्पृहः

अ.शिरो. १

पुरतोऽस्मात्सर्वस्मात्सुविभातमन्विष्या-

सतममुत्कृष्टतमं... पुरमेव ब्रह्म

मकारेण जानीयात्

मुण्ड. २।१।५

भ.गी. २।७१

नृसिंहो. ५।७

पुरात्रये क्रीडति यश्च जीवस्ततः

सुजातं सकलं विचित्रम्

पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसः ।

अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तश्च

विमुच्यत एतद्वैतत्

पुरश्चक्रे द्विपदः पुरश्चक्रे चतुष्पदः ।

पुरः स पक्षी भूत्वा पुरः पुरुष

आविशदिति

पुरस्तात्सुविभातमव्यवहार्यमेवाद्वयं

पुरस्ताद्ब्रह्मणस्तस्य विष्णोरद्भुतकर्मणः ।

रहस्यं ब्रह्मविद्याया धृताग्निं

सम्प्रचक्षते

पुरं जनपदं ग्राममरण्यमिव पश्यति

पुरं हन्त्रीमुखं विश्वमातू रवे रेखा

...स षोडशीकं पुरमध्यं विभर्ति

पुरं (पुरीं) हिरण्मयीं ब्रह्मा

विवेशापराजिता

पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः

पुरा किलेदं न किंचनासीन्न

द्यौनान्तरिक्षं न पृथिवी

पुरा जगन्मातृतपःप्रभावादासीन्महा-

बिल्ववनस्पतिर्महान्

पुराणपठिताममृतोद्भवाममृतरसमञ्जरीं

...दर्शनात्पापनाशिनीं...य एवं

वेद स वैष्णवो भवति

पुराणपुरुषाय शुद्धबुद्धाय...घृणिः सूर्य

आदित्य ॐ नमो नारायणाय

पुरातनोऽहं पुरुषोऽहमीशो हिरण्मयो-

ऽहं शिवरूपमस्मि [कैव.२+

पुरा तत्स्वरूपज्ञानेन महान्तः सर्व

ब्रह्मभावं गताः

पुरा देवाः पशुपाशाद्विमुक्ताः शिवं

पूज्यैव हरिपद्मादयोऽपि । ऐन्द्र-

नीलं पूजितं विष्णुनाऽऽसील्लिङ्गं

वैद्यै विभिना पद्मरागम्

पुरा तृतीयसवनस्योपाकरणाज्जघनेना-

हवनीयद्वौदङ्गुल उपविश्य स

आदित्य ५ स वैश्वदेव ५ सामा-

भिगायति

कैवल्य. १४

कठो. ५।१

बृह. २।५।१८

नृसिंहो. ९।८

१प्रणवो. १

अ.पू. १।३४

त्रिपुरो. १०

अरुणो. ३

चाक्षुषो. ४

अव्यक्तो. १

१ बिल्वो. २

तुलस्यु. २

ना.उ.ता.२।३

१बिल्वो. १३

त्रि.म.ना.१।२

सि.शि. २१

छां.२।२४।११

पुरान्तकोऽहं पुरुषोऽहमीशः

पुरा प्रातरनुवाकस्योपाकरणाज्जघनेन

गार्हपत्यो प्राङ्मुख उपविश्य

स वासव ५ सामाभिगायति

पुरा प्रोक्ता मयाऽनघ

पुरा मत्पुत्र पुरुषसूक्तोपनिषद्ब्रह्मस्य-

प्रकारं...विराट्पुरुषेणोपदिष्टं

रहस्यं ते विविच्योच्यते

पुरा माध्यन्दिनस्य सवनस्योपाकरणा-

ज्जघनेनाग्नीध्रो यस्योदङ्गुल उपविश्य

स रौद्र ५ सामाभिगायति

पुरा रुद्रेण गदिताः

पुरा व्यासो महातेजाः सर्ववेद-

तपोनिधिः । प्रणिपत्य शिवं

सान्धं कृताञ्जलिरुवाच ह

पुरुजित्कुन्तिभोजश्च

पुरुष एव सविता स्त्री सावित्री स यत्र

पुरुषस्तस्त्री यत्र वा स्त्री स

पुरुषस्ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम्

पुरुष एवेदं विश्वं-कर्म तपो

ब्रह्मपरासृतम् [मुण्ड. २।१।१०+

पुरुष एवेदं सर्वम् [सि. वि.३+

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्

(भाव्यम्) [ऋ.अ.८।४।१७=

[+श्वेताश्व.३।१५+त्रा.सं.३।१२+

पुरुष एवोक्थम्

पुरुषप्रयत्नसाध्यवेदान्तश्रवणादि-

जनितसमाधिना जीवन्मुक्त्यादि-

लामो भवति

पुरुषविदस्तदिदमन्तरिक्षं प्रजापते-

द्वितीया चितिः

पुरुषविदः सेयं प्रजापतेः प्रथमा चितिः

पुरुषविदः सैषा द्यौः प्रजापतेस्तृतीया

चितिः

पुरुषविधः सोऽनुवीक्ष्य नान्यदात्मनो-

ऽपश्यत्

पुरान्तकोऽहं पुरुषोऽहमीशः

पुरा प्रातरनुवाकस्योपाकरणाज्जघनेन

गार्हपत्यो प्राङ्मुख उपविश्य

स वासव ५ सामाभिगायति

पुरा प्रोक्ता मयाऽनघ

पुरा मत्पुत्र पुरुषसूक्तोपनिषद्ब्रह्मस्य-

प्रकारं...विराट्पुरुषेणोपदिष्टं

रहस्यं ते विविच्योच्यते

पुरा माध्यन्दिनस्य सवनस्योपाकरणा-

ज्जघनेनाग्नीध्रो यस्योदङ्गुल उपविश्य

स रौद्र ५ सामाभिगायति

पुरा रुद्रेण गदिताः

पुरा व्यासो महातेजाः सर्ववेद-

तपोनिधिः । प्रणिपत्य शिवं

सान्धं कृताञ्जलिरुवाच ह

पुरुजित्कुन्तिभोजश्च

पुरुष एव सविता स्त्री सावित्री स यत्र

पुरुषस्तस्त्री यत्र वा स्त्री स

पुरुषस्ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम्

पुरुष एवेदं विश्वं-कर्म तपो

ब्रह्मपरासृतम् [मुण्ड. २।१।१०+

पुरुष एवेदं सर्वम् [सि. वि.३+

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्

(भाव्यम्) [ऋ.अ.८।४।१७=

[+श्वेताश्व.३।१५+त्रा.सं.३।१२+

पुरुष एवोक्थम्

पुरुषप्रयत्नसाध्यवेदान्तश्रवणादि-

जनितसमाधिना जीवन्मुक्त्यादि-

लामो भवति

पुरुषविदस्तदिदमन्तरिक्षं प्रजापते-

द्वितीया चितिः

पुरुषविदः सेयं प्रजापतेः प्रथमा चितिः

पुरुषविदः सैषा द्यौः प्रजापतेस्तृतीया

चितिः

पुरुषविधः सोऽनुवीक्ष्य नान्यदात्मनो-

ऽपश्यत्

कुण्डिको. १७

छांदो.२।२४।३

भ.गी. ३।३

ना. प. २।१

छां. २।२४।७

शिवो. १।५

शुक्र. १।१

भ. गी. १।५

सावित्र्यु. ९

ग. पू. १।४

नृ. पू. ५।५

मं. १०।९०।२

पु. सू. २

१ ऐत.१।२।४

मुक्तिको. २।१

मैत्रा. ६।३३

मैत्रा. ६।३३

मैत्रा. ६।३३

बृह. १।४।१

पुरुषश्चाक्षुषो योऽयं दक्षिणेऽक्षिण्यव-
स्थितः । इन्द्रोऽयमस्य जायेयं सव्ये
वाक्षिण्यवस्थिता

मैत्रा. ७।११

पुरुषश्चाधिदैवतम्

भ.गी. ८।४

पुरुषश्चेता प्रधानान्तस्थः स एव

भोक्ता प्राकृतमन्नं भुङ्क्त इति

मैत्रा. ६।१०

पुरुषसंज्ञको (संज्ञो-) ऽबुद्धिपूर्वमिहै-
वावर्ततेऽशेनेति

मैत्रा. २।५

पुरुषस्य कर्तृत्वभोक्तृत्वमुखदुःखादि-
लक्षणश्चित्तधर्मः केशरूपत्वाद्बन्धो

भवति, तन्निरोधनं जीवन्मुक्तिः

मुक्तिको. २।१

पुरुषस्य वाग्रसः

छांदो. १।१।२

पुरुषस्य रेतः (रसः)

बृह. ६।४।१

पुरुषस्य विपश्चितः

भ.गी. २।६०

पुरुषं जातमप्रतः [चित्त्यु. १२।३+

[क्र.अ. ८।४।१८=मं. १०।९०।६

वा. सं. ३१।९

पुरुषं कृष्णपिङ्गलमूर्ध्वरेतसं विश्वरूपं

अस्मजा. २।४

पुरुषं कृष्णं कृष्णदन्तं पश्यति

(स्वप्ने) स एनं हन्ति

३ऐत. २।४।७

पुरुषं निर्गुणं साङ्ख्यमथर्वशिरसो विदुः

मंत्रिको. १४

पुरुषं पुरुषर्षभ

भ.गी. २।१५

पुरुषं शाश्वतं दिव्यं

भ.गी. १०।१२

पुरुषं सौम्योत्त हस्तगृहीतमानय-

न्त्यपहर्षीत्

छांदो. ६।१६।१

पुरुषं सौम्योत्तोपतापिनं ज्ञातयः

पर्युपासते

छांदो. ६।१५।४

पुरुषः परमात्माऽहं पुराणः परमोऽस्म्यहं

ब्र.वि. ९९

पुरुषः प्रकृतिस्थोहि भुङ्क्ते प्रकृति-

जान्गुणान् [भ.गी. १३।२२+

भवसं. २।९

पुरुषः स परः पार्थ

भ.गी. ८।२२

पुरुषः साङ्ख्यदृष्टीनामीश्वरो योग-

वादिनाम्

अ.पू. ३।२०

पुरुषः सुखदुःखानां

भ.गी. १३।२१

पुरुषः त्यागको ज्ञेयः सत्यं सम्मार्जनं

स्मृतम् । अहिंसा गोमयं प्रोक्तं

शिवो- १।२५

शान्तिश्च सलिलं परम्

पुरुषात्केशलोमानि जायन्ते च

क्षरन्त्यपि

गुह्यका. २७

पुरुषानु परा देवी सा काष्ठा सा परा गतिः

गुह्यका. ४२

पुरुषार्थैर्हितैस्तृप्तेन सर्वोपचारोपयोगः सूर्यता. ४।१

पुरुषान्नपरं किञ्चित्सा काष्ठासापरा गतिः कठो. ३।११

पुरुषार्थाः सागराः

भावनी. २

पुरुषेण सम्मितं भवति मायया परि-

वेष्टितं भवति (षोडशारं चक्रं)

नृ.पू. ५।९

पुरुषे त्वेवाविस्तरामात्मा

१ऐत. ३।२।३

पुरुषे सर्वशास्तरं बोधानन्दाभयं

शिवम् । धारयेद्बुद्धिमाभित्यं

सर्वपापविशुद्धये

जा.द. ८।७

पुरुषे ह वा अयमादितो गर्भो भवति

२ ऐत. ४।१

पुरुषोत्तमात्सकलानि तीर्थानि जायन्ते

सि. वि. ३

पुरुषो नारायणो भूतं भव्यं भविष्य-

वासीत्

मुद्रलो. २।३

पुरुषो निधनम्

छांदो. २।१८।१

पुरुषो वा अक्षितिः स हीदमन्नं धिया

धिया जनयते

बृ.उ. १।५।२

पुरुषो वा अक्षितिः स हीदमन्नं पुनः

पुनर्जनयते

बृह. १।५।२

पुरुषो वाऽग्निर्गौतम तस्य व्यात्तमेव

समित्प्राणो धूमो वागर्चिश्चक्षुरङ्गाराः

बृह. ६।२।१२

पुरुषो वाव गौतमाभिस्तस्य वागेव

समिधुपमन्त्रयते स धूमो योनि-

रर्चियेदन्तः करोति तेऽङ्गारा

अभिनन्दा विस्फुलिङ्गाः

छांदो. ५।७।१

पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतु-

र्विंशतानि वर्षाणि तत्प्रातःसवनम्

छांदो. ३।१६।१

पुरुषो वाव सुकृतम्

२ऐत. २।३

पुरुषो वै रुद्रस्तन्महो नमोनमः

महाना. १०।११

पुरुषो ह वा अयं सर्व आं वंदे विदले

३ऐत. १।५।२

(अथ) पुरुषो ह वै नारायणो-

ऽकामयत प्रजाः सृजेयेति

नारा. १

पुरुहूतमृगमिणं विश्वेवदसम्

आषे. १०।२

पुरुच्येषा विश्वमात्तादिविद्या

त्रिपुरो. ८

पुरो देवाः प्रपद्यन्ते पश्चादेवं विसर्जयेत् इतिहा. ६२

पुरोधसां च मुख्यं मां

भ.गी. १०।२४

पुरोनुवाक्या च याज्या च शस्यैव

तृतीया

बृह. ३।१।१०

पुरोवाच प्रजापतिः

भ.गी. ३।१०

रो वातो हिङ्गारो मैथो जायते

छांदो. २।३।१

पुलिङ्गं सर्वमीशानं कीलिङ्गं भगवत्युमा रुद्रह. ९
 पुष्करमहं पवित्रमहमुग्रं च मध्यं च
 बहिश्च पुरस्ताज्योतिरित्यहमेव अ.शिरः. १
 पुष्णामि चोषधीः सर्वाः अ.गी. १५।१३
 पुष्पमध्ये यथा गन्धः पयोमध्ये
 (ऽस्ति सर्पिवत्) यथा घृतम्।
 तिलमध्ये यथा तैलं पाषाणेष्विव
 काञ्चनम् [व्या.विं. ५+१यो.त. १३६+ २यो.त. ८
 पुष्पवत्सकलं विद्याद्वन्द्वस्तस्य तु
 निष्कलः ब्र. विं. ३७
 पुष्पाणां फलानि. (रसः) बृह. ६।४।१
 पुष्पाण्यादायावयतौ वै च जगान्य-
 म्नाश्चान्वावयवाश्चाप्सरसः कौ. त. १।३
 पुष्पात्प्रकाशते यद्वत्फलं पुष्पविनाशकं अमन. २।१७
 पुष्पितवचनेन मोहितास्ते भवन्ति स्वसंवे. ३
 पुंसः प्रव्रजनं प्रोक्तं नेतराय कदाचन पैङ्गलो. ४।५
 पुंसा कर्त्रा मातरि मासिषिक्तः कौ. त. १।२
 पुंसां दुर्वासिनारञ्जुनीरीबडिशपिण्डका
 [महो. ३।४६+ याज्ञव. १५
 पुंसो वत्सो रुद्रो देवता २ प्रणवो. १४
 पूजनाद्भीर्भायनाशो भवेत् कामराज. १
 पूजयित्वा विवस्वन्तस्यर्घदानं
 समाचरेत् सूर्यता. २।५
 पूजयेच्च शिवज्ञानं वाचयीत च पर्वसु शिवो. ७।७८
 पूजयेद्यथानयोगेन सन्तोषैः
 कुसुमैः सितैः शिवो. १।२६
 पूजाहोविसङ्खन अ. गी. २।४
 पूजितो बन्धितश्चैव सुप्रसन्नो यथा
 भवेत्। तथा जेत्ताड्यमानस्तु
 तदा भवति भैक्षमुक्
 पूर्णमद्वयमखण्डचेतनं विश्वमेदकलना-
 विवर्जितम्। ...तत्सदाऽहमिति
 मौनमाश्रय म. वा. र. ५
 पूर्णं पावनं नमामि सद्यः समस्ताघ-
 शासकं अस्मजा. १।४
 पूर्णं प्रातःकृदयाद्रौमयं ब्रह्मपूर्णं निधाय
 वयम्बकमिति मन्त्रेण शोषयेत् अस्मजा. १।२
 पूर्णं मन्त्रावमगताः अ.गी. ४।१०
 पूर्णं पथुषिदं च यत् अ.गी. १।७।१०

पूर्णे वामहस्ते वामदेवायेति निधाय...
 तेनैवापादशीर्षमुद्धूतनमाचरेत् अस्मजा. १।४
 पूतो देवलोकान् समभुते सहवे. ११
 पूरककुम्भकरेचकैः षोडशचतुःषष्टि-
 द्वात्रिंशत्संख्यया यथाक्रमं
 प्राणायामः मं. ब्रा. १।१३
 पूरकं द्वादशं कुर्यात् कुम्भकं षोडशं
 भवेत्। रेचकं दश चोद्धारः
 प्राणायामः स उच्यते यो. च. १०८
 पूरकं शास्त्रविज्ञानं कुम्भकं स्वगतं स्मृतम् वराहो. ५।५
 पूरकः कुम्भकस्तद्वेचकः पूरकः पुनः वराहो. ९।१८
 पूरकाद्यनिलायामाहुताभ्यासादखेद-
 जात्। एकान्तध्यानयोगाच्च मनः-
 स्वंदो निरुद्धयते शांदि. १।७।२७
 पूरकान्ते तु कर्तव्यो बन्धो जाल-
 न्धराभिधः [शाण्डि. १।७।११+
 [यो. शि. १।१०९+ यो. कुं. १।५१
 पूरयेत्सर्वमात्मानं सर्वद्वारं निरुध्य च... क्षुरिको. ४
 पूरितं कुम्भयेत्पश्चाच्चतुःषष्ट्या तु मात्रया त्रि. ब्रा. १।१७
 पूरितं धारयेत्पश्चाच्चतुःषष्ट्या तु
 मात्रया। उकारमूर्तिमत्रापि
 संस्मरन्प्रणवं जपेत् जा. द. ६।४
 पूरितं पिङ्गलया द्वात्रिंशन्मात्रया
 मकारमूर्तिध्यानेन.. शांदि. १।६।२
 पूरितं रेचयेत्पश्चान्मकारेणानिलं बुधः जा. द. ६।५
 पूर्णत्वमस्ति चेत्किञ्चिदपूर्णत्वं
 प्रसज्यते। तस्मादेतत्कचिन्नास्ति.. ते. वि. ५।२९
 पूर्णबोधकरं स्वयम् पं. ब्र. ८
 पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते
 पूर्णमद्वयमखण्डचेतनं ह्यन्तिमः
 पूर्णरूपो महानात्मा प्रीतात्मा... वराहो. ३।६
 पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ते. वि. ४।६३
 पूर्णानन्दैकविज्ञानं शान्तिपाठः
 पूर्णानन्दो हरिर्मायारहितः पुरुषोत्तमः रामो. ४।१
 पूर्णापूर्णमसद्विद्धि सि. वि. १
 पूर्णापूर्णमसद्विद्धि ते. वि. ३।५६
 पूर्णापूर्णमसद्विद्धि कामराज. २
 पूर्णापूर्णमसद्विद्धि ना. प. ३।८७
 पूर्णापूर्णमसद्विद्धि अस्मजा. १।४
 पूर्णापूर्णमसद्विद्धि अ.गी. ४।१०
 पूर्णापूर्णमसद्विद्धि अ.गी. १।७।१०

पूर्णात्पूर्णं सुखात्मकम् महो. ५।४६
 पूर्यते प्रजया पशुभिर्नास्यास्माल्लोका-
 त्प्रजोद्धर्तते बृ. उ. २।१।५
 पूर्वजन्मकृताभ्यासात्सरवरं फल-
 मश्नुते । एतदेव हि विज्ञेयं तत्काक-
 मतमुच्यते यो.शि. १।१४३
 पूर्वजातीः स्मरति (गर्भस्थो जीवः) गर्भो. ३
 (ॐ) पूर्वदले श्वेतवर्णे यदा
 विश्राम्यते मनः । तदा धैर्यमुदारं
 च धर्मकीर्तिमतिर्भवेत् विश्रामो. १
 पूर्वदृष्टमदृष्टं वा यदस्याः प्रतिभासते ।
 संविदस्तत्प्रयत्नेन मार्जनीयं
 विजानता अ. पू. ४।५५
 पूर्वपत्रे सूर्यायामेयपत्रे रवये दक्षिणे
 विवस्वते नैर्ऋतौ खगाय पश्चिमे
 वरुणाय वायव्ये मित्राय सौम्ये
 आदित्याय ईशान्ये नमो महसे सूर्यता. ४।१
 पूर्वपूर्वं प्रकुर्वीत यावदुत्थानसम्भवः ।
 सम्भवत्युत्तमे प्राज्ञः प्राणायामे
 सुखी भवेत् जा.द. ६।१५
 पूर्वब्रह्मणः प्रभुविमतं हिरण्यम् छांदो. ८।५।३
 पूर्वभागे सुषुम्नाया राकाया संस्थिता कुहूः जा.द. ४।१८
 पूर्वभागे ह्यधोलिङ्गं शिखिन्यां चैव
 पश्चिमम् । ज्योतिर्लिङ्गं भ्रुवोर्मध्ये
 नित्यं ध्यायेत्सदा यतिः ब्र. वि. ८०
 पूर्वमक्षरं पूर्वरूपं, उत्तरमुत्तररूपं,
 योऽवकाशः पूर्वरूपोत्तररूपे,
 अन्तरेण सा संहितेति इयेत. १।५।१
 पूर्वमेकमेवाद्वितीयं ब्रह्मासीत् गोपालो. २।१३
 पूर्वमेवाक्षरं पूर्वरूपं, उत्तरमुत्तररूपं,
 योऽवकाशः पूर्वरूपोत्तररूपे
 अन्तरेण येन सन्धिं विवर्तयति येन
 स्वरः स्वरं विजानाति येन मात्रा
 मात्रा विमजते सा संहिता इयेत. १।५।२
 पूर्वयोनिषहस्राणि दृष्ट्वा चैव ततो
 मया । आहारा विविधा भुक्ताः
 पीता नानाविधाः स्तनाः गर्भो. ४
 पूर्ववासनया युक्तः शरीरं
 चान्यदधुयात् यो.शि. १।१४१

पूर्वस्मिन्निशीला, आग्नेय्यां श्रद्धा
 (तत्र) पूर्वस्यां दिशि ब्रह्मा
 कृताञ्जलिर्हर्निशं मामुपास्ते अस्मजा. २।१३
 पूर्व तु तारकं विद्यादमनस्कं तदुत्तरम्
 [मं. ब्रा. १।४+ अद्वयता. ५
 पूर्व देवेभ्योऽमृतस्य ना३ भाई (मा. पा.) तैत्ति. ३।१०।६
 पूर्व देवेभ्यो अमृतस्य नाभिः नृ. पू. २।१४
 पूर्व देवेभ्योऽमृतस्य ना ३ भायि तैत्ति. ३।१०।६
 पूर्व बीजयुता विद्या ह्याख्याता
 याऽतिदुर्लभा योगकुं. २।३७
 पूर्व मनः समुदितं परमात्मतत्त्वात् महो. ५।५२
 पूर्व यथोदिता या बाग्विलोमेनास्तगा
 भवेत् योगकुं. ३।१९
 पूर्व यः कथितोऽभ्यासश्चतुर्थांशं परि-
 ग्रहेत् । दिवा वा यदि वा सायं
 याममात्रं समभ्यसेत् श्रयो. व. ६७
 पूर्वाभ्यासेन तेनैव अ. गी. ६।४४
 पूर्वा सन्ध्या हंसवाहिनी ब्राह्मी मध्यमा
 वृषभवाहिनी माहेश्वरी । पश्चिमा
 गरुडवाहिनी वैष्णवी गायत्रीर. ५
 पूर्वादिदिशि गणेशबटुकक्षेत्रपाल-
 योगिन्यः तारोप. ११
 पूर्वा दिक्प्रथमा कुक्षिर्भवति गायत्रीर. ३
 पूर्वापरापरिज्ञानमजातेः परिदीपकं
 पूर्वाभिमुखो भूत्वा भूरिति व्याहृति-
 गांयत्रं छंद ऋग्वेदोऽग्निर्देवता अ. शां. २१
 पूर्वायां भवतु गायत्री महो. १।४
 पूर्वविस्थात्रयं यत्र जाग्रदित्येव संस्थितं गायत्रीर. ५
 पूर्वाऽस्य मात्रा जागरति जागरितं अ. पू. ५।८७
 द्वितीया स्वप्नं तृतीया सुषुप्तिश्चतुर्थी अ. शिखो. ३
 पूर्वाऽस्य मात्रा पृथिव्यकारः स
 ऋग्भिर्ऋग्वेदो ब्रह्मा वसवो गायत्री अ. शिखो. १
 गार्हपत्यः गायत्रीर. ६
 पूर्वाहा कालिका सन्ध्या गायत्री कुमारी गायत्रीर. ६
 पूर्वा दृष्टिमवष्टभ्य ध्येयत्यागविला-
 सितीम् । जीवन्मुक्ततया स्वस्थो
 लोके विहर विज्वरः महो. ६।६६

पूर्वं महाशाला महाश्रोत्रियाः, न नोऽद्य

कश्चनाश्रुतममतमविज्ञातमुदा-

हरिष्यतीति ह्येभ्यो विदांचक्रुः

पूर्वरपि सुसुखमिः

पूर्वं: पूर्वतरं कृतम्

पूर्वोक्तत्रिकोणस्थानादुपरि पृथिव्या-

दिपञ्चवर्णकं ध्येयम्

पूर्वोक्तेन क्रमेणैव सम्यगासनमास्थितः ।

चालनं तु सरस्वत्याः कृत्वा प्राणं

निरोधयेत्

पूर्वो नारायणः प्रोक्तोऽनादिसिद्धो

मन्त्ररत्नः सदाचार्यमूलः

पूर्वो यो देवेभ्यो जातः

पूर्वो विवृतकरणस्थितश्च । द्वितीयः

स्पष्टकरणस्थितश्च

पूर्वो हि (ह)जातः स उ गमै अन्तः

[अ. शी. २।६+तै.आ. १०।१३

[वा.सं. ३२।४+सूर्यता. १।३+

पूष पृथ्वी बहुला न उर्वी

पूर्वा हि भोक्ता भवति [गोपालो.

पूषणमियं वै पूषे य॥ ह्रीद॥ सर्वं

पुष्यति यदिदं किञ्च

पूषणेकैवं यमसूर्यप्राजापत्यं व्यूहरहमीन्,

समुहं तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं

तत्ते पश्यामि [ईशा. १६+

पूषा चालन्मुसा चैव श्रोत्रद्वयसुपागते

(नाड्यौ)

पूषा यज्ञस्विनी चैव पिङ्गला

पूषपूर्वयोः

पूषाधिदेवता प्रोक्ता वरुणा वायुदेवता

पूषा यज्ञस्विनी नाड्यौ तस्मादेव

समुत्थिते

पूषायाश्च सरस्वत्या मध्ये प्रोक्ता

यज्ञस्विनी

पूषा वामाक्षिपर्यन्ता पिङ्गलायास्तु

पूषतः

पूषा सरस्वतीमध्ये यज्ञस्विनी भवति

पूषा स्वर्गाकरेण

पूषो दत्तात्रेया प्रतिपूषामि

छांदो. ६।४।५

भ.गी. ४।१५

भ.गी. ४।१५

ध्या. बि. ९५

योगकुं. १।९३

द्वयोप. १

चिन्त्यु. १३।२

२प्रणवो. १६

श्वेता. २।१६

महाना. २।१

महाना. ६।१५

१।१।११

बृह. १।४।१३

बृह. ५।१५।१

यो.शि. ५।२२

जा.द. ४।१५

जा.द. ४।३६

त्रि.ब्रा. २।७२

जा.द. ४।१६

जा.द. ४।२०

छां.डि. १।४।६

चिन्त्यु. ८।२

चिन्त्यु. १०।१

पृतनाजित॥ सहमानमुग्रमग्नि॥

हुवेमपरमात्सवस्थात् [महाना. ६।१७+ वनदु. ११८

पृच्छामि त्वा धर्मसम्मूढचेताः

भ.गी. २।७

पृथक्केशिनिषूदन

भ.गी. १८।१

पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं

भ.गी. १८।२१

पृथक्त्वेन धनञ्जय

भ.गी. १८।२९

पृथगात्मानं प्रेरितारं च मत्वा

जुष्टस्ततस्तेनामृतत्वमेति

श्वेताश्व. १।६

पृथग्भावेन तत्त्वानां

दुर्वासो. २।१७

पृथग्भूते षोडशकलाः...पृथिव्यादिषु

संस्थिताः

त्रि.ब्रा. २।१२

पृथां प्रसृजन्तीं प्रमृज्यामृजाङ्गीय

ऊर्वोरुपादधात् तस्मै मुख्याय

वरदाय पित्रे स्वाहा

पारमा. ६।६

पृथग्ग्रथभेणयोऽनुयन्ति

छांदो. ५।१४।१

पृथिवी कलाऽन्तरिक्षं कला द्यौः कला

समुद्रः कलैष वै स्वैभ्यं चतुष्कलः

पादो ब्रह्मणोऽनन्तवान्नाम

छांदो. ४।६।३

पृथिवी गार्हपत्योऽन्तरिक्षं दक्षिणाग्नि-

द्यौराहवनीयः

मैत्रा. ६।३४

पृथिवीच पृथिवीमात्रा चापश्चोपमात्राच

प्रश्नो. ४।८

पृथिवीचतुरस्रं च पीतवर्णं लवणं

१यो.त. ८५

पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मण-

स्त्वा मुखे जुहोमि स्वाहा

राधोप. ४।२

पृथिवीतो ह्रीदं सर्वमुत्तिष्ठति यदिदं किञ्च

१येत. १।२।७

पृथिवी त्रिहोता

चिन्त्यु. ७।१

पृथिवी त्वमथाच्युतः

मैत्रा. ५।२

पृथिवी देवतामारः पृथिवी त्वा देवता

रिण्यतीत्येनं ब्रूयात्

३येत. १।३।३

(तत्र) पृथिवी धारणे आपः

पिण्डीकरणे तेजः प्रकाशने

वायुर्व्यूहने आकाशमवकाशप्रदाने

गर्भो. १

पृथिवी पाद उच्यते

गुह्यका. १८

पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा

तैत्ति. १।२

पृथिवी पूता पुनातु माम्

महाना. १।११

पृथिवी पूर्वरूपम्

तै. उ. १।३।१

पृथिवी पूर्वरूपम्, द्यौरुत्तररूपं, वायुः

संहितेति माण्डूकेयः

३येत. १।१।१

पृथिवी पूर्वरूपं, द्यौरुत्तररूपं, वृष्टिः

सन्धिः, पर्जन्यः सन्धाता

३ ऐत. १।२।१

पृथिवीमय आपोमयः (आत्मा)

बृह. ४।४।५

पृथिवी मरो या अवस्तात्ता आपः

२ ऐत. १।२

पृथिवीमेवाप्येति यः पृथिवीमेवास्तमेति

सुबालो. ९।३

पृथिवीमेव भगवो राजन्निति होवाच

छांदो. ५।१७।१

पृथिवीयोगतो मृत्युर्न भवेदस्य योगिनः

१ यो. त. ८७

पृथिवीलोकमेव पुरोनुवाक्यया जयत्य-

न्तरिक्षलोकं याज्ययाद्युलोकं २ सस्यया

बृह. ३।१।१०

पृथिवी वा अन्नम्

तैत्ति. ३।९

पृथिवी वाक्पाणि-पाद-पायूपस्थाः

त्रि. ब्रा. १।३

पृथिवी वाव गौतमाग्निस्तस्याः

संवत्सर एव समिदाकाशो धूमो

रात्रिरर्चिर्दिशोऽङ्गारा अवान्तर-

दिशो विस्फुलिङ्गाः

छां. उ. ५।६।१

(७) पृथिवी वाऽन्नमापोऽन्नादाः

सुबालो. १४।१

पृथिवी वायुराकाश आपो ज्योतींषी-

त्येतानीमानि च क्षुद्रमिश्राणीव

२ ऐत. ५।३

पृथिवी वायुराकाश आपो ज्योतींषीति

१ ऐत. ३।१।१

पृथिवी विश्वस्य धारिणी [मुण्ड. २।१।३+

ग. पू. ता. १।४

पृथिवी ओणी (गायत्र्याः)

सन्ध्यो. २३

पृथिवी सुवर्चा युवतिः सजोषाः

ग. शो. ३।२

पृथिवी हिंकारोऽग्निः प्रस्तावो अंतरिक्ष-

मुद्रीथ आदित्यः प्रतिहारो

द्यौर्निधनमित्यूध्वेषु

छांदो. २।२।१

पृथिवी हिंकारोऽन्तरिक्षं प्रस्तावो

द्यौरुद्रीथो दिशः प्रतिहारः समुद्रो

निधनमेताः शक्यो लोकेषु प्रोताः

छांदो. २।१७।१

पृथिवी होता

चिन्त्यु. २।१

पृथिवी प्रपद्येऽन्तरिक्षं प्रपद्ये दिवं

प्रपद्ये इत्येव तद्वचोचम्

छांदो. ३।१५।५

पृथिवी मित्वाऽऽपो भिनन्ति

सुबालो. ११।२

पृथिवी * शरीरं (अप्येति)

बृह. ३।२।१३

पृथिवी शरीरैः

चिन्त्यु. ४।१

पृथिव्यभिरन्नमादित्यः

छांदो. ४।११।१

पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्विशोऽवान्तरदिशा

अभिवायुरादित्यश्चन्द्रमानक्षत्राणि ।

आप ओषधयो वनस्पतय आकाश

आत्मा । इत्यभिभूतम्

तैत्ति. १।७।१

पृथिव्यग्नेजोवाय्वाकाशश्रोत्रत्वक्च-

क्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूप-

स्थमनोविकाराः षोडश शक्तयः

भावनो. ३

पृथिव्यग्नेजोवाय्वाकाशगन्धरसरूप-

स्पर्शशब्दवाक्यानि पादपायूप-

स्थत्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणमनो-

बुद्धयहङ्कारचित्तज्ञानानि

गायत्रीर. ९

पृथिव्यप्सु प्रलीयते

सुबालो. २।२

पृथिव्यंशे तु देहस्य चतुर्बाहुं किरीटिनं

त्रि. ब्रा. २।१४२

पृथिव्या आपः (रसः)

बृह. ६।४।१

पृथिव्या आपो रसः

छांदो. १।१।२

पृथिव्या इत्येषां भूतानां ब्रह्म सम्पद्यते

२ सञ्जयासो. १६

पृथिव्या ओषधयः, ओषधीभ्योऽन्नम् ।

अन्नात्पुरुषः [ना. उ. ता. १।५+

तै. उ. २।१।१

पृथिव्या ओषधयः । ओषधीभ्योऽन्नम् ,

अन्नाद्रेतः । ततः पुरुषः

ग. शो. २।५

(अथातः) पृथिव्यादिमहाभूतानां

समवायं शरीरम्

शारीरको. १

पृथिव्यादि-शिवान्तं तु अकाराद्याश्च

वर्णकाः । कूटान्ता हंस एव स्यात्... ब्र. वि. ६२

पृथिव्यापश्च तेजश्च वायुराकाश-

पञ्चमः

दुर्वासो. २।१४

पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश-

मेव च [वराहो. १।५+

भवसं. २।१५

पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाश-

मित्यस्मिन्पञ्चात्मके शरीरे..

गर्भो. १

पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाश इति

पञ्चस्वरूपं लिङ्गम्

लिङ्गोप. १

पृथिव्यापस्तेजो वाय्वाकाशं दहति

सुबालो. १५।२

पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाश मे

शुद्धयन्तां

महान्त. १४।१२

पृथिव्यामाकाश एकादशैकादश

तैत्ति. ३।११।१

पृथिव्यामाकाशः प्रतिष्ठितः । आकाशे

पृथिवी प्रतिष्ठिता

तैत्ति. ३।९

पृथिव्यायतनं निर्भुजं, दिव्यायतनं

प्रतृष्णो...

३ ऐत. १।३।१

पृथिव्या रूपं स्पर्शाः, अन्तरिक्षस्यो-

ष्माणः, दिवः स्वराः

३ ऐत. २।५।१

पृथिव्याश्च वैभवाणवमेदा पीतवर्णा
मृदो जायन्ते

गोपीचं. ८

पृथिव्यां तृप्यन्त्यां यत्किञ्च पृथिवी
चाग्निश्चाधितिष्ठतस्तत्तृप्यति...

छांदो. ५।२१।२

पृथिव्यां धारयेच्चित्तं पातालगमनं भवेत्

यो.शि. ९।४९

पृथिव्यां नाश्रु पातयेत्

कुंडिको. ४

पृथिव्यां यत्किञ्चिद्वस्तुमात्रं तस्याभि-
दैविकं रूपं तत्रैवास्ति

सामर. १०

पृथिव्यां या देवता सैषा पुरुषस्या-

पानमवष्टभ्यान्तरा यदाकाशः स

समानो वायुर्व्यानः

प्रश्नो. ३।८

(तस्य) पृथिव्येव समिदग्निर्धूमो

रात्रिरर्चिश्चन्द्रमा अङ्गारा

नक्षत्राणि विस्फुलिङ्गाः

बृह. ६।२।११

पृथिव्येव यस्यायतनमग्निर्लोको

मनो ज्योतिः

बृह. ३।९।१०

पृथिव्यै चैनमग्नेश्च देवी वागाविशति

बृह. १।५।१८

पृथुः समस्तान्प्रचचार लोका-

नव्याहृतो वैरिविदारिचक्रः । स

कालवाताभिहतो विनष्टः क्षिप्तं

यथा शास्मलितूलमग्नौ

भवसं. १।२४

पृथ्वी देवी महीत्यनेन व्याचक्षते

त्रि. ता. १।८

पृथ्वी विश्वस्य धारिणी [कैव. १५+

नारा. १

पृथ्व्यस्तेजोनिलखानि चिन्त्यं-

श्वेता. ६।२

पृथ्व्यस्तेजोऽनिलखे समुत्थिते

पञ्चात्मके योगगुणे प्रवृत्ते ।

न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः

प्राज्ञस्य योगाग्निमयं शरीरम्

श्वेताश्व. २।१२

पृषदाज्यं स सजीय पृषदाज्यस्यो-

पथात् जुहोति

बृ. उ. ६।४।२४

पृषभागेऽमृतं न्यस्तं देवैर्ब्रह्मादिभिः पुरा

१ बिल्बो. १४

पृषभागेऽमृतं यस्मादर्चयेन्मम तुष्टये

१ बिल्बो. १०

पृषभागे सयमाद्वरुणलोकज्ञानम्

शांडि. १।७।५२

पृषमध्यस्थितेनास्मा... सुषुम्ना

सुप्रतिष्ठिता

ऊ. द. ४।१०

पेसरिन्दाय पिन्वते

चिन्त्यु. ११।७

पेलवोनियताकारो गन्धोनाहमचेतनः

१ सौ. सो. २।१९

पैप्पलादं महाशास्त्रं न देयं यस्य

कस्यचित् । नास्तिकाय कृतघ्नाय

दुर्बुद्ध्याय दुरात्मने

शरमो. ३३

पोष्यन्त्यद्विरभिषीवयन्ति (यदिदं)

आर्षे. १।२

पोषणादि शरीरस्य समानः कुरुते सदा

त्रि. प्रा. २।८६

पौण्ड्रकालिकनागाभ्यां चामराभ्यां

सुवीजितम् ।... ' विष्णुवाह नम-

स्तुभ्यं क्षेमं कुरु सदा मम ' एवं

ध्यायेन्निसन्ध्यासु गरुडनागभूषणम्

गारुडो. ४

पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं

भ. गी. १।१५

पौरुषेण प्रयत्नेन यस्मिन्नेव पदे मनः।

योज्यते तत्पदं प्राप्य निर्विकल्पो

भवानघ

महो. ४।१०३

पौरुषेण प्रयत्नेन लालयेच्चित्तबालकम्

मुक्तिको. २।७

पौर्णमासी चामावास्या च स्तनौ

सन्ध्यो. २३

(अथ) पौर्णमास्यां पुरस्ताच्चंद्रमसं

दृश्यमानमुपतिष्ठेत्

कौ. त. २।९

पौर्णमास्यां वाऽमावास्यायां वा शुद्ध-

पक्षे वा पुण्ये नक्षत्रेऽभिमुपसमा-

धाय... आज्याहुतीर्जुहोति

कौ. त. २।३

पौलकसोऽपौलकसः (भवति)

बृह. ४।३।२२

पौलकसो न पौलकसो विप्रा न विप्राः

त्रि. ता. ५।१

पौलक्रेऽथ पलाशे वा पात्रे गोशृङ्ग

एव वा । आदधीत हि गोमूत्रं

गन्धद्वारेति गोमयम्

बृ. जा. ३।७

प्रकाश उपजायते

भ. गी. १४।११

प्रकाश एव सततं तस्मादद्वैत एव हि ।

अद्वैतमिति चोक्तिश्च प्रकाशाव्य-

भिचारतः

पा. ब्र. २५

प्रकाश एव सततं तस्मान्मौनं हि युज्यते

पा. ब्र. २६

प्रकाशकमनामयम्

भ. गी. १४।६

प्रकाशते स्वयं भेदः कल्पितो

मायया तयोः

अ. पू. ४।३३

प्रकाशभूता वै तत्करा अस्वार्थाः

मैत्रा. ७।८

प्रकाशमध्ये माया करोति

अद्वैतो. ४

प्रकाशयति तत्परम्

भ. गी. ९।१६

प्रकाशयति भारत

भ. गी. ९।३।६

प्रकाशयन्तमन्तस्थं ध्यायेत्कूटस्थ-

मज्जयम्

पैङ्गलो. ३।६

प्रकाशवानस्मिँल्लोके भवति प्रकाशवतो

इ लोकाश्रयति

प्रकाशः परमेष्ठिनः

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च

प्रकाशात्मकं लिङ्गं विद्यालिङ्गम्

प्रकाशेभ्यः सदोमित्यन्तश्शरीरे

विद्युदशोतयति मुहुर्मुहुरिति

विद्युत्प्रतीयात्

प्रकृतिस्त्वन्तःसृष्टं तत्त्वादिगुणसाम्यतः

प्रकृतिभिरभिपरीत्य तैजसं शरीरं

कृत्वा... पुनरिमं लोकं प्रतिपद्यते

प्रकृतिमहदहमाद्या महामायाः

प्रकृतिर्माया पुरुषः शिवः

प्रकृतिस्त्वां नियोक्षयति

प्रकृतिस्थानि कर्षति

प्रकृतिं च गुणैः सह

प्रकृतिं पुरुषं चैव [भ.गी.१३।२

प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः

प्रकृतिं यान्ति भूतानि

प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्

प्रकृतिं विद्धि मे पराम्

प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय

प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य

प्रकृतिः पुरुषश्चोभौ समाया-

द्रहणः स्मृतौ

प्रकृतिः स्वेति विज्ञेया, स्वभावं न

जहाति या

प्रकृतेरन्यथाभावो न कथञ्चिद्भविष्यति

[भ. शां. २९+

प्रकृतिर्गुणसम्भूदाः

प्रकृतेर्ज्ञानवानपि

प्रकृतेस्तु जगत्सर्वं विकारं प्रोच्यते

बुधैः । तस्मादेतद्विकारोऽपि सर्वं

तु त्रिगुणात्मकम्

प्रकृतेः क्रियमाणानि

प्रकृत्यष्टकरूपंचस्थानंगच्छति कुण्डली

प्रकृत्याकाशवज्ज्ञेयाः सर्वे धर्मा

अनादयः

प्रकृत्या परमेष्ठिर्जगद्योन्याङ्घ्रिवाङ्कमृत

छांदो. ४।५।३

प्र. जि. १०१

भ.गी.१४।२२

लिङ्गोप. २

अ.शिखो. २

सरस्व. ३६

निरुक्तो. २।२

गोपीचं. ७

ग. पू. २।८

भ.गी.१८।५९

भ.गी. १५।७

भ.गी.१३।३४

+१३।२०

भ.गी. ९।१२

भ.गी.१३।३४

भ.गी. ९।७

भ.गी. ७।५

भ.गी. ४।६

भ.गी. ९।८

रामर. ५।९

अ. शां. ९

अद्वैत. २१

भ.गी. ३।२९

भ.गी. ३।३३

भवर्स. ४।६

भ.गी. ३।२७

योगकुं. १।७४

अ. शां. ९१

रा. पू. ४।८

प्रकृत्या नियताः स्वया

प्रकृत्या सहितः इयामः पीतवासा

जटाधरः

प्रकृत्यैव च कर्माणि

प्र क्षत्रमत्रमाप्नोति क्षत्रस्य सायुज्यं

सलोकतां जयति

प्रक्षाल्य पाणी उदपात्रं पूरयित्वा

तेनैनां त्रिरभ्युक्षति ' उत्तिष्ठतो

विश्वावसोऽन्यामिच्छ ' इति

प्रक्षिप्तं लवणं तोये क्रमाद्यद्विलीयते ।

मनोऽप्यभ्यासयोगेन तद्ब्रह्मणि

लीयते

प्रक्षीणचित्तदर्पस्य निगृहीतेन्द्रियद्विषः।

पश्चिन्य इव हेमन्ते क्षीयन्ते भोग-

वासनाः [महो.५।७७+

प्रक्षयन्ति मामिमे महाशाला

महाश्रोत्रियाः

प्रगलितनिजमायोऽहं निस्तुल-

दृशिस्वरूपमात्रोऽहम्

प्र च जुह्वत्यथो आहुर्दर्शपूर्णमासाविति

प्रचारण-विलेखन-स्थूलाशुष्मेध-

निमेषादि वायोः

प्रचारणोत्तारणश्वासादिका वाय्वंशाः

प्रचारो वायुलक्षणम्

प्रचोदयादिति प्रचोदितकाम इमां

लोकान् प्रत्याश्रयते

प्रचोदयिता चैवोऽस्य

प्रचोदयिताऽस्य को भगवन्नेतदस्माकं

ब्रूहीति तान्होवाच

प्रजन इति भूयांसस्तस्माद्भूयिष्ठाः

प्रजायन्ते

प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च

प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः

प्रजहाति यदा कामाव

प्रजननं वै प्रतिष्ठा लोके साधु...

प्रजननं सन्धानम्

प्रजया पशुभिरन्नाद्येन तेजसा

ब्रह्मवर्चसेति

भ.गी. ७।२०

रा.पू.सा.४।७

भ.गी.१३।३०

बृह. ५।१३।४

बृह. ६।४।१९

अमन. १।२८

मुक्तिको. २।४१

छांदो. ५।११।३

आ. प्र. २

बृह. १।५।२

शारीरको. ३

पैङ्गलो. २।२

वराहो. ५।२

गायत्रीर. २

सैत्रा. २।४.९.१

मैत्रा. २।३

महाना. १६।१३

तैत्ति. १।९।१

भ.गी. १०।२८

भ.गी. २।५५

महाना. १७।७

तैत्ति. १।३।३

छां. उ. ५।२.१।२

प्रजहाति यदा कामान्सर्वांश्चित्तगता-
न्युने । मयि सर्वात्मके तुष्टः स

जीवनमुक्त उच्यते

वराहो.४।२८

प्रजाकामो वै प्रजापतिः स तपोऽतप्यत

प्रश्नो. १।४

प्रजाकामो ह वै प्रजापतिः (मा.पा.)

प्रश्नो. १।४

प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च

तैत्ति.१।९।१

प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च

तैत्ति. १।९।१

प्रजानां रेतो हृदयम्

१ऐत. १।३।१

प्रजापतये पुरुषं

चित्त्यु.१०।२

प्रजापतये स्वादेत्यमौ हुत्वा मन्ये

सः सवमवनयति

बृह.६।३।३

प्रजापतिमेवाप्येति यः प्रजापति-

मेवास्तमेति

सुबालो. ९।९

प्रजापतिरमृतमानन्द इत्युपस्थे

तैत्ति.३।१०।३

प्रजापतिरुद्गीथेन

चित्त्यु.८।२

प्रजापतिर्जायते पुरुषोत्तमात्

सि. वि.२

प्रजापतिर्दश होता

चित्त्यु. ७।४

प्रजापतिर्देवान् (असृजत्)

बृह.५।५।१

प्रजापतिर्मनवे मनुः प्रजाभ्यः

छांदो.८।१५।१

प्रजापतिर्लोकानभ्यतपत् [छां.२।२३।२

+४।१७।१

(अथ) प्रजापतिर्लोकान्सिद्धमाणा-

स्तस्या एव विद्याया यानि त्रिंश-

दक्षराणि तेभ्यस्त्रीं लोकां...

अन्यक्तो.६

प्रजापतिर्वा एषोऽप्रेऽतिष्ठत्स नारमतैकः

मैत्रा. २।६

प्रजापतिर्विराट् चैव पुरुषः सलिल-

मेव च । स्तूयते.. विभु..

मंत्रिको. १३

प्रजापतिर्ह कर्माणि ससृजे । तानि

सृष्टान्ययोन्येनास्पृधन्त

बृह. १।५।२१

प्रजापतिर्हिकारः प्राणः स्वरोऽर्ज

या वाग्विराट्

छांदो.१।१३।२

प्रजापतिर्लोकेषु गागीति

बृह.३।६।१

प्रजापतिश्चरति गर्भे अंतः

वा.सं.३।१।९

[महाना. १।१+

चित्त्यु.१३।१

प्रजापतिश्चरति गर्भे त्वमेव प्रतिजायसे

प्रश्नो.२।७

प्रजापतिश्छन्दमयो विगर्भः

एका. ७.९

(सत्यं) प्रजापतिस्तपस्तत्त्वाऽनुक्याहर-

हृदयस्वरित्येषा हाय प्रजापतेः

त्यविद्या तनूनां लोकवतीति

मैत्रा. ६।६

प्रजापतिस्तं यज्ञाय वसीयांसमात्मानं

मन्यमानो मनो यज्ञेनेजे

अन्यक्तो.५

प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च

अ.गी.१।१३।९

प्रजापतिश्च शरणं प्रपन्नोऽभूव, सत्त्वा...

छांदो.२।२२।४

प्रजापतिं यो भुवनस्य गोपाः

महाना.१३।९

प्रजापतिः कथं न्विमाः प्रजाः सृजेय-

मिति चिन्तयन्..

अन्यक्तो. ७

प्रजापतिः प्रजा असृजत

ग. पू. १।३

प्रजापतिः प्रजायते, तस्मान्नाशायणः

प्रजायते

ना.पू.ता. ५।३

प्रजापतिः प्रजायते ह प्रजया पशुभिः

बृह.६।१।६

प्रजापतिः प्रजया संविदानः

[नृ. पू. २।६+ चित्त्यु.

११,१२,१३

प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा व्यसंसत...

३ऐत. २।६।१

प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्यात्मना-

ऽऽत्मानमभिसम्बभूव

महाना.२।७

प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य । अस्माभि-

र्देत्तं जरसः परस्तादच्छिन्नं

तंतुमनुसञ्चरेम [अथर्व.१२।१।६१

सहवै. ९

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा

जातानि परितः बभूव [पारमा.६।८+ म.जा.१३।१६

[क्र.मं.१०।१२१।१०+वा.सं.१०।२०+ २३।६५

प्रजापतेरनुमतिः

चित्त्यु. ९।२

प्रजापतेः सभां वेदम प्रपद्य यशोऽहं

भवामि

छांदो.८।१४।१

प्रजा प्रतिष्ठा तन्तूनामिष्टापूर्तः परायणम्

इतिहा. ६

प्रजायते ह प्रजया पशुभिः, य एवं वेद

बृह.६।१।६

प्रजा सन्धिः । प्रजननं सन्धानम्

तै.व.१।३।६

प्रजा ह तिस्रो अत्यायमीयुः

१ऐत.१।१।२

प्रजां पशुन्वनानि अस्माकं ददातु

चित्त्यु.११।१०

प्रजां मा मे रीरिष आयुरुष नृचक्षसं

त्वा... [महाना.१३।१३+

चित्त्यु.१५।१

प्रजलद्धहिगं हविर्यथा न यजमान-

मासादयति

अस्म.जा.२।७

प्रज्ञप्तेः सनिमित्तत्वमिष्यते युक्तिदर्शनात्

अ.शां. २५

प्रज्ञप्तेः सनिमित्तत्वमन्यथाद्वयनाशतः

अ.शां. २४

प्रज्ञया चक्षुः समारुह्य चक्षुषा सर्वाणि

रूपाण्यामोति

को.व.३।६

प्रज्ञया जिह्वां समारुह्य जिह्वया सर्वा-
नक्षरसानाप्नोति

कौ. त. ३।६

प्रज्ञया पादौ समारुह्य पादाभ्यां
सर्वा इत्या आप्नोति

कौ. त. ३।६

प्रज्ञया प्राणं समारुह्य प्राणेन सर्वा-
मन्धानाप्नोति

कौ. त. ३।६

प्रज्ञया यो विजानाति (प्रत्यगात्मब्रह्म-
णोर्भेदं) स जीवन्मुक्त उच्यते

म.वा.र. ८

प्रज्ञया वाचं समारुह्य वाचा सर्वाणि
नामान्याप्नोति

कौ. त. ३।६

प्रज्ञया शरीरं समारुह्य शरीरेण सुख-
दुःखे आप्नोति

कौ. त. ३।६

प्रज्ञया श्रोत्रं समारुह्य श्रोत्रेण सर्वान्
शब्दानाप्नोति

कौ. त. ३।६

प्रज्ञया सत्यसङ्कल्पं (आप्नोति)

कौ. त. ३।२

प्रज्ञया हस्तौ समारुह्य हस्ताभ्यां
सर्वाणि कर्माण्याप्नोति

कौ. त. ३।६

प्रज्ञया हि विपश्यति

कौ. त. १।५

प्रज्ञयैव धियं समारुह्य प्रज्ञयैव धियो
विज्ञातव्यं कामानाप्नोति

कौ. त. ३।६

प्रज्ञयोपस्थं समारुह्योपस्थेनानन्दं रतिं
प्रजातिमाप्नोति

कौ. त. ३।६

प्रज्ञा च यस्मात्प्रसृता पुराणी

[शाण्डिल्यो. २।२।३+

श्वेताश्व. ४।१८

प्रज्ञा च तस्याः प्रसृता परा सा

गुह्यका. ६१

प्रज्ञातोऽहंप्रशान्तोऽहंप्रकाशः परमेश्वरः ।

एकधा चिन्त्यमानोऽहं द्वैताद्वैतविलक्षणः ब्र.वि. १०१

प्रज्ञानघन एवानन्दमयो ह्यात्मा-

ऽऽनन्दमुक् चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयः

पादः [ग. शो. १।३+५।६+

रामो. ता. २।३

प्रज्ञानघन एवायं

नृसिंहो. ८।५

(न) प्रज्ञानघनमदृश्यमव्यवहार्यमप्राह्यम-

लक्षणमचिन्त्यमन्यपदेयमेकात्म-

प्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं शान्तं

शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते

रामो. २।४

प्रज्ञानघनमानन्दं ब्रह्मास्मीति विभावयेत् अक्षुप. ९१

प्रज्ञानघनमानन्दं यः पश्यति स पश्यति जा.द. ४।६०

प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म इत्यादि-

वाक्यविचारः

मठान्ना. ४

प्रज्ञानमेव तद्रह्य सत्यप्रज्ञानलक्षणम् ।

एवं ब्रह्मपरिज्ञानादेव मर्त्योऽमृतो भवेत् वराहो. २।१९

प्रज्ञानं ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा कौ. त. २।४

प्रज्ञानं ब्रह्म [२२२.५।३+शु.र. २।१+

प्रज्ञानं ब्रह्म मय्यपि आ. प्र. १

प्रज्ञानं ब्रह्मेति वा अहं ब्रह्मास्मीति वा शु. र. ३।२

भाष्यते बहुचो. ४

प्रज्ञानादिमहावाक्यरहस्यादिकलेवरम् ।

विकलेवरकैवल्यं त्रिपाद्राममहं भजे शुक्र. शीर्षकं

प्रज्ञा नाम देवतावरोधिनीसामेऽमुष्मा-

दिदमवरुन्धां तस्यै स्वाहा कौ. त. २।३

प्रज्ञानेत्रो लोकः, प्रज्ञा प्रतिष्ठा,

प्रज्ञानं ब्रह्म [२२२.५।३+

प्रज्ञानेनैवमाप्नुयात् आ. प्र. १

प्रज्ञा प्रतिष्ठा तन्तूनामिष्टापूर्तेः परायणम् ना.प. १।१९

प्रज्ञामयोदेवतामयोब्रह्ममयोऽमृतमयः इतिहा. ६

सम्भूय देवता अप्येति १२२. २।४।३

प्रज्ञामात्रा न स्युर्न भूतमात्राः स्युः कौ. त. ३।८

प्रज्ञामात्राः प्राणे अर्पिताः कौ. त. ३।९

प्रज्ञारूपा हि पश्यन्ती तुरीयस्य

परा मता गान्धर्वो. १

प्रज्ञावादांश्च भाषसे भ. गी. २।११

प्रज्ञेत्येनदुपासीत बृह. ४।१।२

प्रज्ञेनैषा विद्या जगत्सर्वमात्मा नृसिंहो. १।१

प्रज्ञैवास्या एकमङ्गमुदूढम् कौ. त. ३।५१

प्रणतः सर्वदा तिष्ठेत् सर्वजीविषु भोगतः यो. चू. ७३

प्रणम्य शिरसा देवं भ. गी. ११।१४

प्रणय उपवीतम् परम. ६

प्रणव इत्येवं ह्याहोद्रीथः मैत्रा. ६।४

प्रणवत्वात्प्रकृतिरिति वदन्ति

ब्रह्मवादिनः सीतो. ५

प्रणवप्रकृतिरुपत्वात् सा सीता

प्रकृतिरुच्यते सीतो. १

प्रणवमेव परं ब्रह्मात्मप्रकाशं शून्यं

जानन्तस्तत्रैव परिसमाप्तास्तस्मा-

देवानां व्रतमाचरन्नोद्धारे परे

ब्रह्मणि पर्यवसितो भवेत् नृसिंहो. ६।३

प्रणवरूपस्यास्य परमात्मनोऽङ्गानि

जानीते ग. शो. ५।१

प्रणवस्य ध्वनिस्तद्वत्तदर्थं ब्रह्म चोच्यते यो. चू. ८०
 प्रणवस्वरूपं लिङ्गं ब्रह्मलिङ्गम् लिङ्गो. २
 प्रणवहंसशिखोपवीतित्वमवलम्ब्य परब्र. २२
 भौक्षसाधनं कुर्यात् परब्र. २
 प्रणवहंसः परं ब्रह्म । न प्राणहंसः परब्र. २
 प्रणवहंसान्तर्ध्यानप्रकृतिं विना पा. ब्र. ४
 न मुक्तिः
 प्रणवहंसोनादबिभृत्सूत्रं स्वहृदि परब्र. ७
 चैतन्ये विधृतिं त्रिविधं ब्रह्म
 प्रणवं ब्रह्मविष्णुशिवोत्पत्तिं... सरस्व-
 त्स्वरूपं सत्यत्रेता-
 द्वापरानुगीतम् राधो. २३२
 प्रणवं ब्रह्मसूत्रं ब्रह्मब्रह्मभयम् पा. ब्र. ३
 प्रणवं सावित्रीं यजुर्लक्ष्मीं नृसिंह-
 गायत्रीमित्यङ्गानि जानीयाद्यो
 जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. ४११
 प्रणवं हृदयं त्रिधात्सर्वस्य हृदि
 स्थितम् आगम. २८
 प्रणवः सर्वभूतेषु अ. गी. ७१८
 प्रणवाख्यं प्रणेतां नामखणं विष्णुमित्रं
 मिचरमिचर्युं पुनः पञ्चधा ज्ञेयं
 निदिधेयं मुद्रायाम् खेत्ता. ६१४
 प्रणवात्मनो ब्रह्मा प्रणवात्मनो हरिः यो. चू. ७६
 प्रणवात्मनो रुद्रः प्रणवो हि यो. चू. ७७
 यो अवेत् त्रि. म. ना. ११३
 प्रणवात्मकं ब्रह्म, प्रणवात्मकेतौकं ब्रह्म
 प्रणवात्मकेतौकं देहत्यागं करोति यः
 सोऽमृतः स कृतकृत्यः तुरीया. ३
 प्रणवात्मिकाभूमिका अकारोकारमका-
 राधमात्रारिमका चराहो. ४११
 प्रणवात्मिकमन्त्रात्मकं ब्रह्म त्रि. म. ना. ११३
 प्रणवानामयुतजंभवति [अ. शि. १६+ पैकुलो. ४२४
 [अहो. ६१८३+ तारसा. ३१९+ अतुर्वे. ७
 प्रणवान्तर्बती हंसो ब्रह्मसूत्रम् पा. ब्र. ३
 प्रणवेन नियुक्तेन बिन्दुयुक्तेन बुद्धि-
 मान् । मूलाधारस्य विप्रेन्द्र मध्ये
 ये तु निरीक्षयेत् जा. द. ६१४१
 प्रणवेन विमुञ्च्य स प्रणवेनाभिमानि-
 त्वाभावेन तु तेनैव दिग्बन्धनं कारयेत् बृ. जा. ४११

प्रणवेन शिखामुत्कृष्य यज्ञोपवीतं
 छित्त्वा... तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थ-
 स्वरूपानुसन्धानं कुर्वन्नुदीचीं प. हं. प. ५
 दिशं गच्छेत्
 प्रणवेनाहरेद्विद्वान् बृहतो वटकानथ ।
 अणोरणीयानिति हि मन्त्रेण च
 विचक्षणः बृ. जा. ३१२९
 प्रणवे नित्ययुक्तस्य न भयं विद्यते
 प्रणवेनैव तस्मिन्नवस्थिताः आगम. २५
 प्रणवो जायते पुरुषोत्तमात् नृसिंहो. ६१२
 प्रणवो जीवः सि. वि. २
 प्रणवोद्गीथवपुषे महाश्वशिरसे नमः परब्र. २
 त्रि. म. ना. ७११०
 प्रणवो धनुः शरो आत्मा ब्रह्म
 तल्लक्ष्यमुच्यते [मुं. उ. २१२४+ व्या. वि. १४
 प्रणवो ब्रह्म निर्भयम् आगम. २५
 प्रणवो हि प्रकाशते यो. चू. ७८
 प्रणवो ह्यपरं ब्रह्म प्रणवश्च परः स्मृतः आगम. २६
 प्रणव्यति चित्तं तथाऽऽश्रयेण सहैवं खेत्ता. ६१२७
 प्रणोदेवीसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती सरस्व. ६
 [क्र. मं. ६१६१४+ तै. सं. ११८२२
 प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याय (वीर्येण) मृगो
 न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः [नृ. पू. २१९+ ना. पू. ता. ४१७
 [क्र. मं. १११५४१२+ वा. सं. ५१२०
 प्रतद्वोचे अमृतं नु विद्वान् महाना. २१४
 प्रतर्दनं वरं ते ददानि कौ. त. ३११
 प्रतर्दनो ह वै वैवोदासिरिन्द्रस्य प्रियं
 धामोपजगाम कौ. त. ३१२
 प्रतिग्रहेषु दारिद्र्यं दानं निष्फलमेव
 च ।... स्वाभ्यायैर्मृत्युमाप्नुयात् इतिहा. ४२३
 प्रतिजाने प्रियोऽसि मे अ. गी. १८१६५
 (स होवाच) प्रतिज्ञातो म एव वरः
 यां तु कुमारस्यांते वाचमभाषया-
 स्तां मे ब्रूहीति बृह. ६१२१५
 प्रवितिष्ठति स मे प्रवितिष्ठति कुर्वे,
 च एवं वेद बृह. ६११३, ३
 प्रतिपदिवतोऽङ्गाले अन्नावास्या तयैव
 च । पौर्णमास्यां स्थिरीकुर्वीत च
 यथा हि ज्ञानयथा योमर्क. ३१२

प्रतिपद्यते स्वर्गं लोकं य एतानेवं पञ्च

ब्रह्मपुराणान्स्वर्गस्य लोकस्य

द्वारपान्चैव

छांदो. २।१३।६

प्रतिबिम्बन्ति सरसीव तटहुमः

अ. पू. ४।७१

प्रतिबिम्बा एव जीवा इति कथ्यन्ते

क्रि.म.ना. ४।९

प्रतिबुद्धः सर्वविदिति

ब्रह्मो. १

प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वं हि विन्दते

कैनो. २।४

प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वं

विदन्ते (मा. पा.)

कैनो. २।४

प्रतिभासत एवेदं न जगत्परमार्थतः ।

ज्ञानदृष्टौ प्रसन्नायां प्रबोधविततोदये

महो. ५।१०८

प्रतिमुञ्चस्व स्वां पुरम्

अरुणो. १

प्रतियोगिविनिर्मुक्तं तुर्यतुर्यमहं महः

नृ.पू. शीर्षकं

प्रतियोगिविनिर्मुक्तं श्रीरामपदमाश्रये

रामर. शीर्षकं

प्रतिरूप इति वा अहमेतमुपास इति

स य एतमेवमुपास्ते प्रतिरूपः

हैवैनमुपगच्छति, ना प्रतिरूपमथो

प्रतिरूपोऽस्माज्जायते

बृह. २।१।८

प्रतिरूप इति वा अहमेतमुपास इति स

यो हैतमेवमुपास्ते प्रतिरूपो हैवास्य

प्रजायामाजायतैनातिप्रतिरूपः

कौ.त. ४।१०

प्रतिलोमरूपमेव स्याद्यत्क्षत्रियो

ब्राह्मणमुपनयीत

कौ.त. ४।१८

प्रतिलोमं चैतद्यद्ब्राह्मणः क्षत्रियमुपेया-

द्वद्वा मे वक्ष्यतीति

बृह. २।१।१५

प्रतिलोमः शरबर्हिस्तीर्त्वा तस्मिन्नेताः

शरभृष्टीः प्रतिलोमाः सर्पिषाक्ता

जुहुयात्

बृह. ६।४।१२

प्रतिभातेऽनुवाते वा न तिष्ठेदुरुणा सह

शिवो. ७।१५

प्रतिवेशोऽसि प्रमा पाहि प्रमा पयस्व

तै.उ. १।४।७

प्रतिषिद्धानि चैतानि सेवमानो व्रजे-

वधः (सञ्जयासी)

१सं.सो. २।८९

प्रतिष्ठा च मे भूयात्

चित्यु. ७।१

प्रतिष्ठायै स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य हुत्वा

मन्त्रे सम्पादयन्मनयेत्

छांदो. ५।२।५

प्रतिष्ठावान् भवति

तैत्ति. ३।१०।३

प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गाणि

सत्यमायतनम्

कैनो. ४।८

प्रतिष्ठा सर्वभूतानां प्रज्ञानघनलक्षणः ।

तद्विद्याविषयं ब्रह्म सत्यज्ञान-

सुखाद्वयम्

अ.पू. ४।२७

प्रतिष्ठा सर्वभूतानां प्रज्ञानघनलक्षणः

कठह. ११

प्रतिष्ठा सूकरीविष्ठासमा गीता मह-

र्षिभिः... तस्मादेनां परित्यज्य

कीटवत्पर्यटेद्यतिः

ना.प. ५।१९

प्रतिष्ठा ह वा एषा, यन् प्रणवः

शौनको. ४।५

प्रतिष्ठा वयं लोकः सामाभिसः

स्थापयामः प्रतिष्ठासः स्तावः

हि सामेति

छांदो. १।८।७

प्रतिष्ठा वेद प्रति ह तिष्ठति, अस्मिन्

लोकेऽमुष्मिन् चक्षुर्वाव प्रतिष्ठा

छांदो. ५।१।३

प्रतिष्ठित इव ह्येवं लोकः

संहितो. ४।२

प्रतिष्ठितोऽने हृदयं सन्निधाय

मुण्ड. २।२।७

प्रतिष्ठितोऽन्यथमात्मान- (नन्यथ)

मानो... (मा.पा.) [छां.उ. ७।४।३+

अ.पा. ३

(अथ) प्रतिस्पृष्ट्या जलो मन्थमाधाय

जपत्यमो नामास्यमा हि ते सर्व-

मिदः स हि ज्येष्ठः श्रेष्ठो

राजाधिपतिः

छांदो. ५।२।६

प्रतिहर्तव्या देवता प्रतिहारमन्त्रायत्ता..

तां चेदविद्वान्प्रहरिष्यसि मूर्धा ते

विपत्तिष्यति

छां. १।९०।९९

प्रतिहास्यै मरुतः प्राणान्दधति

सहस्र. २२

प्रतीची दिक् प्रत्यञ्चः प्राणाः

बृह. ४।२।४

प्रतीच्यामिन्द्रः सन्नताङ्ग उपास्ते

असमन्ता. २।११

प्रतीच्योऽन्याः [नयः] यां यां च

दिशमनु.. [त्यन्दन्ते]

बृह. ३।८।९

प्रतीच्यो यां यां च.. वा अक्षस्य (मा.पा.)

बृह. ३।८।९

प्रतीतिमन्त्रयोगाच्च जायते पश्चिमेपथि

यो.वि. १।१२२

प्र ते प्रतीमि तदु मे निबोध

कौ. १।१४

प्रत्नोषि कमीड्यो अञ्जरेषु सनाथः

होता नव्यश्च सरिस [महाना. ६।१८+

बृह. ११९

प्रत्यक्षदेवतं भानुः परोक्षं सर्वदेवताः

सूर्यवा. १।१०

प्रत्यक्षमाविधान्तैर्वर्णैर्भाषयेत् (भाळां)

अ. मा. ३

प्रत्यक्षमज्जं देहे सङ्केपाच्छृणु गौतम

प्र. वि. ५३

प्रत्यक्षरमुभयतो माया लक्ष्मीश्च भवति

ग. पू. २।२

प्रत्यक्षमज्जं धर्म्यं

अ. गी. ५।२

प्रत्यगभिन्नपरोऽहं विष्वक्ताशेषविधि-

निषेधोऽहम्

आ. प्र. ३

प्रत्यगभिन्नं ब्रह्मैवावशिष्यत इति

पैङ्गलो. २।१०

प्रत्यगात्मानमज्ञानमायाशक्तेश्च

साक्षिणम् । एकं ब्रह्माहमस्मीति

ब्रह्मैव भवति स्वयम्

कठरु. १५

प्रत्यगात्मा परं ज्योतिर्माया सा तु महत्तमः

पा. ब्र. २१

प्रत्यगात्मा परात्मा माया चेति कथं..

सर्वसारो. १

प्रत्यगानन्दरूपात्मा मूर्ध्नि स्थाने परे

पदे । अनन्तशक्तिसंयुक्तो जगत्

दूषेण भासते

त्रि. ब्रा. २।९

प्रत्यगानन्दं ब्रह्मपुरुषं प्रणवस्वरूपम् ।

अकार उकारो मकार इति

नारा. ४

प्रत्यगेकरसं पूर्णमनन्तं सर्वतोमुखम्

अध्यात्मो. ६१

प्रत्यगदृष्टिर्निमेषः

त्रि. म. ना. ४।६

प्रत्यगदृष्ट्यास्वस्वरूपचिन्तनमेवोन्मेषः

त्रि. म. ना. ४।६

प्रत्यगधातुर्नात्र संशीतिरस्ति

मैत्रे. १।१६

प्रत्यङ्मुखा प्राङ्मुखौ च नेह..

बा. मं. ६

प्रत्यङ्मुखास्तिसृषु सञ्चुकोच्चान्तकाले

[श्वेताश्व. ३।२+

बटुको. २२

प्रत्यङ्मुखास्तिसृषु सर्वतोमुखः

श्वेता. २।१६

प्रत्यङ्मुखस्तिसृषु विश्वतोमुखः

महाना. २।१

प्रत्यवायो न विद्यते

अ. गी. ९।२

प्रत्याहारविषयेन जायते धारणा शुभा

यो. चू. १११

प्रत्याहारस्तथा ध्यानं प्राणायामोऽथ

धारणा । तर्कश्चैव समाधिश्च

षडङ्गो योग उच्यते

अ. ना. ६

(अथ) प्रत्याहारः, स पञ्चविधः

शांङ्गि. १।८।१

प्रत्येकं सप्तविंशतिधा भिन्नत्वेनेच्छा-

ज्ञानक्रियात्मकब्रह्मप्रान्थिमद्रस-

तन्तुब्रह्मनाडी ब्रह्मसूत्रम्

भावनो. ८

प्रत्येवास्याहुतयस्तिष्ठन्त्यथो प्रतिष्ठित्यै

महाना. १०।१३

प्रत्यैहतामग्निना स्रुत्युमस्मद्देवानामग्ने

भिक्षा शचीभिः

महाना. १३।१०

(ततः) प्रथमपादादुग्ररूपो देवः

प्रादुरभूत्

अध्यक्तो. ७

प्रथममाग्नेयं... चतुर्विधं ब्राह्ममिति

प्रत्यक्षं देवतानि

गायत्रीर. ७

प्रथममाग्नेयं... दिव्यं विंशम् । दिग्दे-

वतानि चत्वार्यक्षराणि

सन्ध्यो. २१

प्रथमरूपः पृथिवीरूपो भवति

चा. पू. ता. १।१

प्रथमस्तप एव (धर्मस्कन्धः)

छां. २।२३।१

प्रथमं कामस्ततः शक्तिस्तदनु तुरीयं

द्वावेतौ परैतानि पञ्चाक्षराणि भवन्ति

कामराज. १

प्रथमं चेतनं यत्स्यादनाख्यं चेतनं...

चित्तः... बीजजाग्रत्तदुच्यते

महो. ५।१०

प्रथमं तु ललाटके... द्वादशं कण्ठपृष्ठे

मोक्षं देहि शिरसि

ऊर्ध्वपुं. ६

प्रथमं निस्सृता दृष्टिः संलम्बा यत्र

कुत्रचित् । स्थिरीभूता च तत्रैव

विनश्यति शनैः शनैः

अमन. २।६५

प्रथमं प्रथमेन द्वितीयं द्वितीयेन तृतीयं

तृतीयेन चतुर्थं चतुर्थेन पञ्चमं

पञ्चमेन षष्ठं षष्ठेन प्रत्यक्षर-

मुभयतो माया लक्ष्मीश्च भवति

ग. पू. २।२

प्रथमं प्रथमेन संयुज्यते, द्वितीयं

द्वितीयेन तृतीयं तृतीयेन चतुर्थं

चतुर्थेन पञ्चमं पञ्चमेन

नृ. पू. २।२

प्रथमं ब्रह्मचक्रं स्याच्चिरादुत्तं भगाकृति

योगरा. ५

प्रथमं यः पिबेदग्नेदः प्रीणातु

आचम. ४

प्रथमं पृथिवीतत्त्वं जलतत्त्वं द्वितीयकम् ।

तेजस्तत्त्वं तृतीयं स्याद्वायुतत्त्वं

चतुर्थकम् । आकाशं पञ्चमं तत्त्वं

मनः षष्ठमुदीरितम् । सप्तमं परमं

तत्त्वं यो जानाति स मोक्षभाक्

अमन. १।१२

प्रथमं वासिष्ठं..... चतुर्विंशमाङ्गिरसं

वैश्वामित्रमिति प्रत्यक्षराणा-

मृषयो भवन्ति

गायत्रीर. ७

प्रथमं सत्यवसुसंज्ञकान् विश्वान्देवान्

... सर्वत्र युगमकूत्या ब्राह्मणानर्चयेत्

ना. प. ४।३९

प्रथमा भक्तिमुन्दरी प्रकटिता । पञ्चा-

न्मायादासी प्रकटिता

सामर. २

प्रथमभूमिकैवोक्ता सुसुक्ष्मप्रदायिनी

अ. पू. ५।८१

प्रथमाभ्यासकाले तु विन्नाः स्युः

१ यो. त. ३०

प्रथमायां तु मात्रायां यदि प्राणैर्वि-

युज्यते । भरते वर्षराजाऽसौ सार्व-

भौमः प्रजायते

ना. वि. १२

प्रथमारक्तपीतामहद्रव्यदैवत्या (मात्रा) अ.शिखो. १
 प्रथमावरणे मित्रादयो द्वादशमन्त्राद्याः सूर्यता. ५१
 प्रथमा शब्दब्रह्ममयी स्वाध्यायकाले
 प्रसन्ना उद्भावनकरी सात्त्विका सीतो. ३
 प्रथमे चिच्छिणीगात्रं द्वितीये गात्रमंजनम्।
 तृतीये खेदनं याति चतुर्थे कम्पते
 शिरः ॥ पञ्चमे स्रवते तालु षष्ठेऽमृतनि-
 वेक्षणम्। सप्तमे गूढविज्ञानं परावाचा
 तथाऽष्टमे ॥ अद्वयं नवमे देहं दिव्यं
 चक्षुस्तथामलम्। दशमे परमं ब्रह्म
 भवेद्ब्रह्मात्मसन्निधौ (१० नादफलानि) हंसो. ८-१०
 प्रथमेन तु पिण्डेन कलानां तस्य सम्भवः पिण्डो. ४
 प्रथमे दिवसे कार्यं कुम्भकानां चतुष्टयं योगकुं. १५४
 (ॐ) प्रथमे पश्चिमात्मनायाः
 शारदामठः कीटवागीसंप्रदायः मठान्ना. ३
 प्रथमोत्तमे अक्षरे सत्यं मध्यतोऽनृतं
 तदेतदमृतमुभयतः सत्येन परि-
 गृहीतं सत्यभूयमेव भवति बृह. ५५५१
 प्रथमो मूलबन्धस्तु द्वितीयोद्धीयनाभिधः
 (कुम्भकः) [योगकुं. १४१+ यो.शि.११०३
 प्रथमौ द्वावहङ्कारावङ्गीकृत्वा त्वलौ-
 किकौ। तृतीयाऽङ्कृतिस्त्याज्या
 लौकिकी दुःखदायिनी महो. ५१९५
 प्रथितः पुरुषोत्तमः भ.गी.१५१८
 प्रदक्षिणमावृत्त्यैतच्चैतच्चानवेक्षमाणाः
 प्रत्यायन्ति कठरु. २
 प्रदक्षिणात्रयं कृत्वा शिवरूपमिति स्फुटम् १ बिल्वो. ८
 प्रदद्याच्च गवां हितम् शिवो. ७१९२
 प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः भ.गी. १४१
 प्रद्युम्नमग्नौ वाय्वंशे सङ्कर्षणमतः परम्।
 व्योमांशे परमात्मानं वासुदेवं सदा
 स्मरेत् त्रि.ब्रा.२१४४
 प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः भ.गी.१६१८
 प्रधानक्षेत्रज्ञपतिर्गुणेशः संसारमोक्ष-
 स्थितिबन्धहेतुः [श्वेता. ६१६+ भवसं. २४६
 प्रधानं प्रकृतिः शक्तिर्निस्त्या चाविकृति-
 स्तथा। एतानि तस्या नामानि
 विष्णुमाश्रित्य या स्थिता भवसं. २१४४

प्रधानाः प्राणवाहिन्यौ भूयस्तासु
 दश स्मृताः यो. चू. १६
 प्रनष्टस्ते धनञ्जय (मोहः) १८७२
 प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्त्यं नृ.पू. २११३
 प्रथ्यायितव्यं सर्वमिदं अ.शिखो. ३
 प्रपञ्चमखिलं यस्तु ज्ञानाग्नौ जुहुया-
 द्यतिः। आत्मन्यग्नीन्समारोप्य १ सं.सो. २१००
 सोऽग्निहोत्री महायतिः
 प्रपञ्चमुक्तचित्तोऽस्मि प्रपञ्चरहितो-
 ऽस्म्यहम् मैत्रे. ३२०
 प्रपञ्चलयः सम्पद्यते प्रपञ्चस्य मनः-
 कल्पितत्वात् मं.ब्रा. २१६
 प्रपञ्चवृत्तिपरित्यज्यजीवन्मुक्तो भवेत् सं.सो. २१७९
 प्रपञ्चावाङ्मुखः स्वरूपानुसन्धानेन ना.प. ५५५४
 प्रपञ्चे यदि विद्येत (द्वैतं) निवर्तेत
 न संशयः म.वा.र. ४
 प्रपञ्चोऽपि द्विविधः, विद्याप्रपञ्च-
 आविद्याप्रपञ्चेति त्रि.म.वा. ३२२
 प्रपञ्चोपशमं शिवम् ना.प. ८१२३
 प्रपञ्चो यदि वक्तव्यः सोऽपि शब्द-
 विवर्जितः ते.वि.उ. ११२१
 प्रपञ्चो यदि विद्येत निवर्तेत न संशयः आगम. १७
 (अहो) प्रपञ्चोऽयमनादिसिद्धो भवति सामर. ९७
 प्रपदाश्च स्फिचश्चैव सर्वाङ्गानि प्रचक्षते गुह्यका. २२
 प्रपद्यन्ते नराधमाः भ.गी. ७१५
 प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः भ.गी. ७२०
 प्रपद्ये शरणं देवीं दुन्दुगं दुरितं हर देव्यु. २३
 प्रपश्यद्विर्जनार्दनं भ.गी. १३९
 प्र पूर्य मनसा वन्दमानः चित्तु. १५५३
 प्र प्र यज्ञपतिं तिर चित्तु. १११२
 प्रबुद्धबुद्धेः प्रक्षीणभोगेच्छस्य निरा-
 शिषः। नास्त्यविद्यामलमिति महो. ५१०६
 प्राज्ञस्तूपदिशेद्गुरुः
 प्रबुद्धा यत्र ते, विद्वान्सुषुप्तिं याति याज्ञव. २५
 योगिराद्
 प्रबुद्धा बह्मियोगेन मनसा मरुता सह।
 सूचीब्रह्मात्रमादाय ब्रजत्यूर्ध्वं
 सुषुप्तया यो. चू. ३८

प्रबुद्धोऽपि सुषुप्तिस्थः सुषुप्तिस्थः

प्रबुद्धवान्

अ-पू.३।१२

प्रबुद्धोऽस्मि प्रबुद्धोऽस्मि दुष्टश्चोरोऽय-

मात्मनः । मनोनाम निहन्त्येनं

मनसाऽस्मि चिरं हृतः

महो. ६।२७

प्रब्रूहि त्वं श्रद्धधानाय मह्यं-(मा.पा.)

कठो. १।१३

प्रभञ्जनमेवाप्येतियः प्रभञ्जनमेवास्तमेति

सुबालो. ९।८

प्रभवत्यहरागमे

भ. गी. ८।१९

प्रभवन्त्यहरागमे

भ. गी. १८।१८

प्रभवन्त्युपक्रमणः

भ. गी. १६।९

प्रभवं न महर्षयः

भ. गी. १०।२

प्रभवः प्रलयस्तथा

भ. गी. ७।६

प्रभवः प्रलयं स्थानं

भ. गी. ९।१८

प्रभवः सर्वभावानां सतामिति विनिश्चयः

आगम. ६

प्रभवाप्ययौ हि भूतानां [नृ.पू.४।२+

नृसिंहो. १।४

[+रामो. २।४+

ग.शो. १।४

प्रभामध्यगतं पीतं नानारत्नप्रवेष्टितम्

ध्या. विं. २७

प्रभाशून्यं मनश्शून्यं बुद्धिशून्यं

चिदात्मकम् । अतद्व्यावृत्तिरूपो-

ऽसौ समाधिर्मुनिभावितः

मुक्तिको. २।५५

प्रभाशून्यं मनश्शून्यं बुद्धिशून्यं

निरामयम् । सर्वशून्यं

निराभासं समाधिरभिधीयते

सौभाग्य. २१

प्रभाऽस्मि क्षशिसूर्ययोः

भ. गी. ७।८

प्रभीमकर्मा तपसोपविद्धात्

ब्रा. सं. ४

प्रभुरस्मि पुरातनः

ब्र. वि. १००

प्रभुविमितः हिरण्यं

छांदो. ८।५।३

प्रभुं वरेण्यं पितरं महेशं यो ब्रह्माणं

विदधाति तस्मै

शरभो. ३

प्रभुः प्रभूणामपिविघ्नराजः सिन्दूरवर्णः

पुरुषः पुराणः

हेरम्बो. ९

प्रभुः इमाणो बहुलाः श्रियम्

चिन्त्यु. ११।७

प्रमाणप्रमेयादध्मान्मार्गादतिरिक्तोऽयं

भागो रक्षात्मकः

सामर. ३

प्रमाधि बलवद्बुद्धम्

भ. गी. ६।३४

प्रमादबोद्धो समसः

भ. गी. १४।१७

प्रमादात्पतितो भवति

भस्मजा. १।६

प्रमादात्त्यक्त्वा भस्मधारणं न गायत्री

जपेत्

भस्मजा. १।६

प्रमादालस्यनिद्राभिः

भ. गी. १४।८

प्रमादिनो बहिश्चित्ताः पिशुनाः कलहो-

त्सुकाः । सन्न्यासिनोऽपि दृश्यन्ते

देवसन्दूषिताशयाः

याज्ञव. ५

प्रमादेनापि नान्तर्देवसदनेपुरीषंकुर्यात्

भस्मजा. २।८

प्रमादे सञ्जयत्युत

भ. गी. १४।९

प्रमादो ब्रह्मनिष्ठायां न कर्तव्यः

कदाचन । प्रमादो मृत्युरित्याहु-

त्रिंशयां ब्रह्मवादिनः

अधमात्मो. १४

प्रमादो मोह एव च

भ. गी. १४।१३

प्रमेयोऽपि प्रमाणतां पृथक्त्वादुपेत्या-

त्मसम्बोधनार्थं

मैत्रा. ६।१४

प्रमोद उत्तरः पक्षः

तैत्ति. २।५

प्रयतः प्रणवोक्कारं प्रणवं पुरुषोत्तमम् ।

ॐक्कारं प्रणवात्मानं तन्मे मनः

शिवसङ्कल्पमस्तु

२शिवसं. २१

प्रयताञ्जलिः कवातियङ्कुमिमभिर्मन्त्रयेत

सहवै. २२

प्रयत्नाद्यतमानस्तु

भ. गी. ६।४५

प्रयागं हृत्सरोरुद्दे

जा. द. ४।४९

प्रयाणकाले च कथं

भ. गी. ८।२

प्रयाणकालेऽपि च मां

भ. गी. ७।३०

प्रयाणकाले मनसाऽचलेन

भ. गी. ८।१०

प्रयाता यान्ति तं कालं

भ. गी. ८।२३

प्रयाति शुद्धं परमात्मरूपम्

कैव. २४

प्रयासाय स्वाहा

चिन्त्यु. २०।१

प्रयोजनार्थं रुद्रेण मूर्तिरेका त्रिधा कृता

रुद्रह. १५

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्मिषन्मिषन्नापि

[१ सं. सो. २।४७+

भ. गी. ५।९

प्रलयं याति देहभृत्

भ. गी. १४।१४

प्रलयादिकं श्रूयमाणत्वादनित्यत्वं

वदन्त्ये (प्रपञ्चस्य)

त्रि. म. ना. ३।३

प्रलयान्तामुपाश्रिताः

भ. गी. १६।११

प्रलयावस्थायां विश्रमणार्थं भगवतो

दक्षिणवक्षःस्थले श्रीवत्साकृति-

भूत्वा विश्राम्यतीति सा योगशक्तिः

सीतो. २६

प्रलये न व्यथन्ति च

भ. गी. १४।१६

प्रलये सर्वशून्यं भवति

त्रि. म. ना. ३।४

प्रवक्ष्याम्यनसृयवे	भ. गी. ९।१
प्रवक्ष्यामिदं पर्वतानां यस्सीमिन्द्रो	
अकरोदनीकैः	बा. मं. १०
प्रवचनं सन्धानम्	तै.व. १।३।५
प्रवचनेन प्रशंसया व्युत्थानेन, तमेतं	
ब्राह्मणाः शुश्रुवांसोऽनूचाना	
उपलभन्ते	सुबालो. ९।१४
प्रवदन्ति न पण्डिताः	भ. गी. ५।४
प्रवदन्त्यविपश्चितः	भ. गी. २।४२
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः	भ. गी. १७।२४
प्रवर्तन्तेऽशुचिप्रताः	भ. गी. १६।१०
प्रवालमौक्तिकस्फटिकशङ्करजताष्टापद-	
चन्दनपुत्रजीविकाब्जे रुद्राक्षाः	अ. मा. २
प्रवाहतो नित्यत्वं वदन्ति केचन	त्रि. म. ना. ३।२
(प्रपञ्चस्य)	
प्रविचार्य चिरं ज्ञानं मुक्तोऽहमिति	
मन्यते	यो. शि. १।५४
प्रविचार्य चिरं साधुं स्वात्मनिश्चय-	
माप्तवान्	महो. २।२
प्रविभक्तमनेकधा	भ. गी. ११।१३
प्रविविक्तमुक्तैजसः [ग. शो. ५।६+	रामो. ता. १।२
प्रविविक्तं तु तैजसम्	आगम. ४
प्रविवेश ह चक्षुः	बृह. ६।१।९
प्रविवेश ह मनः	बृह. ६।१।११
प्रविवेश ह रेतः	बृह. ६।१।१२
प्रविवेश ह वाक्	बृह. ६।१।८
प्रविवेश ह श्रोत्रम्	बृह. ६।१।१०
प्रविष्णुरस्तु तवसस्तवीयान् [ऋक्सं.]	ना. पू. ता. ४।५
प्रवृत्तौऽन्यतररीरथो दासीनिष्को-	
ऽस्त्यर्जं पश्यसि	छांदो. ५।१३।२
प्रवृत्तिर्द्विविधा प्रोक्ता मार्जारी चैव	
वानरी	१ सं. सो. २।१०२
प्रवृत्तिलक्षणं कर्म ज्ञानं सकयास-	
लक्षणम्	ना. प. ३।१६१
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च [भ. गी. १६।७+	१८।३०
प्रवृत्ते शब्दसम्पाते	भ. गी. १।२०
प्रवृद्धधर्ममणुमेतमाप्य—(मा. पा.)	कठो. २।१३
प्रवृद्धोऽस्मि प्रवृद्धोऽस्मि प्रसन्नोऽस्मि	
परोऽस्यहम्	मैत्रे. व. ३।१४

प्रवृद्ध धर्ममणुमेतमाप्य	कठो. २।१३
प्रवेपनाय मृत्यवे	चित्त्यु. १५।१
प्रवेष्टुं च परंतप	भ. गी. ११।५४
प्रव्रजिष्यन्वा अरेऽयमस्मात्स्थानादस्मि	बृह. ४।५।२
प्रव्रजेद्ब्रह्मचर्येण प्रव्रजेच्च गृहादपि ।	
वनाद्वा प्रव्रजेद्विद्वानातुरे वाऽथ	
दुःखितः	भवसं. १।२
प्रशस्तगोमयमाहरेत्	बृ. जा. ३।१
प्रशस्ते कर्मणि तथा	भ. गी. १७।२६
प्रशान्तचापलं वीतशोकमस्तसमी-	
हितम् । मनो मम मुने शान्तं	
तेन जीवाभ्यनामयः	अ. पू. ५।६।२
प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय	मुण्ड. १।२।१३
प्रशान्तमनसं ह्येनं	भ. गी. ६।१४
प्रशान्तवृत्तिकं चित्तं परमानन्ददाय-	
कम् । असम्प्रज्ञातनामाऽयं समाधि-	
र्योगिनां प्रियः	मुक्तिको. २।५४
प्रशान्तसर्वसङ्कल्पं विगताखिल-	
कौतुकम् । विमताशेषसंरम्भं	
चिदात्मानं समाश्रय	अ. पू. ५।२३
प्रशान्तात्मा विगतभीः	भ. गी. ६।१४
प्रशान्तेन्द्रियसद्वातः शुद्धबुद्धि-	
समन्वितः । प्राणापानौ ततो	
जित्वा मनःशत्रून् सुखी भवेत्	अमल. २।८६
प्रशान्तोऽहमनन्तोऽहं परिपूर्णश्चिरन्तनः	अध्यात्मो. ६८
प्रशासितारं सर्वेषामणीयांसमणोरपि ।	
रुक्माभं स्वप्रधीगम्यं विद्यात्तं	
पुरुषं परम्	भवसं. २।४३
प्रश्न-मुण्डक-माण्डूक्यार्थवशिरो-ऽथर्व-	
शिखाबृहज्जाबालनृसिंहतापनीनारद-	
परिव्राजक-सीतां-शरभ-महानारा-	
यण-रामरहस्यरामतापनीशांडिल्य-	
परमहंस-परिव्राजकान्नपूर्णा-सूर्यात्म-	
पाशुपत-परब्रह्म-त्रिपुरातपन-देवी-	
भावना-ब्रह्म-जाबाल-गणपतिमहा-	
वाक्य-गोपालतपन-कृष्ण-हयग्रीव-	
दत्तात्रेयगारुडानामथर्ववेदगवताना-	
मेकत्रिशत्सङ्ख्याकानामुपनिषदां	
अष्टं कर्णेभिरिति शान्तिः	मुक्तिको. १।५७

प्रसक्ताः कामभोगेषु	भ.गी.१६।१६	प्र ह षोडश वर्ष जीवति	छांदो.३।१६।७
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी	भ.गी.१८।३४	प्रहसन्निव भारत	भ.गी.२।१०
प्रसन्नचेतसो ह्याशु	भ.गी.२।६५	प्रहितां वा अहमध्यात्मं सयोगं	
प्रसन्नवदनो जेता धृष्टयष्टकविभूषितः	रा.पू.ता.४।८	निविष्टं वेद	१ ऐत. १।५।२
प्रसन्नं सामवेदाख्यं नानाष्टकसमन्वितम्	पं. ब्र. ६	प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां	भ.गी.१०।३०
प्रसन्नात्मात्मनि स्थित्वा सुखमक्षयमश्नुते	मैत्रे. १।११	प्रह्लादिनी प्रज्ञा विश्वभद्रा विलासिनी	गायत्रीर. ९
प्रसन्नात्माऽऽत्मनि स्थित्वा सुखम-		प्राकृतमन्नं त्रिगुणभेदपरिणामत्वान्मह-	
व्ययमश्नुते [मैत्रा. ६।२०+	६।३४।४	दायं विशेषान्तं लिङ्गम्	मैत्रा.६।१०
प्रसन्नोऽस्मि परोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।१४	प्राक्कर्मनिर्मितं सर्वमीश्वराधीनमेव वा	अक्षयुप. २५
प्रसन्नोऽहं प्रसन्नोऽहं वरान्वरयेति	ग.शो. ३।८	प्राक्कर्मफलपाकेनावर्तान्तरकीटव-	
प्रसह्य सङ्कल्पपरम्पराणां सञ्छेदने		द्विभ्रान्ति नैव गच्छति	पैङ्गलो. २।९
सन्ततसावधानः । आलम्बनाशाद-		प्राक्तनानि प्रथातानि गताः सर्ग-	
पचीयमानं शनैः शनैः शान्ति-		परम्पराः । कोटयो ब्रह्मणां याता	
मुपैति चेतः-	अमन. २।६६	भूपा नष्टाः परागवत्	वराहो. ३।२२
प्रसादमधिगच्छति	भ.गी. २।६४	प्राक्प्रत्यगात्मनो रूपं स्वाम्यं	
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यं	भ.गी.११।४४	दास्यमिति स्थितिः	भवसं.२।५७
प्रसादाद्ब्रह्मणस्तस्य विष्णोरद्भुतकर्मणः	ब्र. वि. २	प्राक्शरीरविमोक्षणान्	भ.गी. ५।२३
प्रसादे सर्वदुःखानां	भ.गी. २।६५	प्रागुत्पत्तेरजं सर्वं तेनासौ कृपणः स्मृतः	अद्वैत. १
प्रसार्य भुवि पादौ तु दोभ्यामङ्गुष्ठ-		प्रागुदयान्निर्वर्त्यशौचादिकंततः स्नायात्	भस्मजा.२।२
मादरात् । जानूपरि ललाटं तु		प्राग्दले पुण्यावृत्तिराग्नेयां निद्रालस्यौ	ना.प. ६।५
पश्चिमं तानमुच्यते	त्रि.ब्रा.२।५०	प्राग्वोदग्वा प्रामाजिष्कस्य	सन्ध्यो. १
प्रसासद्विस्तपसा मा विचक्षे	बा. मं. ४	प्राङ्कासीनः स्वाध्यायमधीयीत	सहवै. १५
प्रसीद देवेश जगन्निवास	भ.गी.११।२५	प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा बद्धशिखो	
प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर ।		यज्ञोपवीती...त्रिराचामेत्	आचम. १
आधिव्याधिभुजङ्गेन दष्टं मा-		प्राङ्मुखाश्च सुरा हव्यं पितरश्चाप्युद-	
मुद्धर प्रभो	गो. पू. ४।१३	ङ्मुखाः । प्रतिगृह्णन्ति सम्बाध-	
प्रस्तौतेन वै यज्ञेन देवाः स्वर्गं लोकमायन्	सहवै. १	मग्निना ब्राह्मणेन च	इतिहा. ५१
प्रस्तौतो ह वै यज्ञोपवीतिनो यज्ञः	सहवै. १	प्राङ्मुखोऽध्यापयेद्गुरुः	शिवा. ७।६३
प्रस्तौतर्या देवता प्रस्तावमन्वायता तां		प्राचीदिक्कला प्रतीची दिक्कला दक्षिणा	
चेद्विद्वान् प्रस्तोष्यसि मूर्धा ते		दिक्कलोदीची दिक्कलैष वै सोम्य	
विपतिष्यतीति [छांदो.१।१०।९+	११।४	चतुष्कलः पादो ब्रह्मणः प्रकाश-	
प्रस्थानं वृद्धाश्रमं वा गच्छेत्	कठश्रु. २०	वान्नाम	छांदो. ४।५।२
प्रस्वेदजनको यस्तु प्राणायामेषु		प्राचीनयोग्यं कं त्वमात्मानमुपास्स इति	छां. ५।१३।१
सोऽधमः । प्रस्वेदजननं यस्य प्राणा-		प्राचीनशाल औषमन्यवः सत्ययज्ञः	छां. ५।११।१
यामस्तु सोऽधमः [जा.द.६।१४+	त्रि.ब्रा.२।१०४	प्राचीमुदीची वा निवर्तयंश्चरेत् पात्री	
प्रस्वेदः प्रथमः पश्चात्कम्पनं मुनि-		दण्डी युगमात्रावलोक्य	शाठ्याय. १८
पुङ्गव । उत्थानं च शरीरस्य चिह्न-		प्राजापत्य आपयाणादुरोरपरित्यागी	आश्रमो. १
मेतज्जितोऽनिले	जा.द. ६।४३	प्राजापत्यमासहस्रसंवत्सरान्तक्रतुनेति	
प्रस्वेदो जायते पूर्वं मर्दनं तेन कारयेत्	१यो.व. ५१	(यजति)	मैत्रा. ६।३६

प्राजापत्यं गृहस्थानां (ततः) प्राजापत्यं रायस्पोषं गौपत्यं यच्च एतद्रहस्यं सायम्प्रातर्ध्ययि- द्वहोरात्रकृतं पापं नाशयति प्राजापत्यो हारुणिः सुपर्णयः प्रजापतिं पितरमुपससार प्राज्ञरूपा हि पश्यन्ती तुरीयस्य परा मता प्राज्ञस्त्वस्वप्रनिद्रया प्राज्ञः कारणबद्धस्तु द्वौ तौ तुर्यं न सिद्धयतः प्राज्ञः किञ्चन संवेत्ति तुर्यं तत्सर्व- दृक् सदा प्राज्ञः प्रसन्नमधुरो दैन्यादपगताशयः प्राज्ञात्मकस्तु भरतो मकाराक्षर- सम्भवः । अर्धमात्रात्मको रामो ब्रह्मानन्दैकविग्रहः प्राज्ञात्मकोऽनिरुद्धोऽसौ मकाराक्षर- सम्भवः । अर्धमात्रात्मकः कृष्णो यस्मिन्विभवं प्रतिष्ठितम् प्राज्ञास्तु पुरुषार्थेन पदमुत्तममागताः प्राज्ञेनात्मनापोज्जितो..न चैत्वपि न श्वस(सि)त्यपि...शिवा जिघत्सन्निति प्राज्ञो मकार इत्येवं परिपश्येत्क्रमेण तु प्राज्ञो मकारसम्भूता तार्तीया च तृतीयका प्राज्ञोऽविच्छिन्नः पारमार्थिकः सुषुप्त्य- भिमानिती प्राज्ञस्य नाम भवति प्राञ्चः प्रत्यञ्चोऽहम् प्राण आकाशो द्यौर्विद्युदिति प्राण आचार्यः प्राणो ब्राह्मणः प्राण आद्यो हृदि स्थाने अपानस्तु पुनर्गुदे । समानो नाभिदेशे तु उदानः कण्ठमाश्रितः । व्यानः सर्वेषु चाङ्गेषु व्याप्य तिष्ठति सर्वदा प्राण इति होवाच । सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्राणमेवाभिसंविशन्ति प्राण इति प्राणविदो भूतानीति च तद्विदः	वि. पु. गोपीचं. ८ महाना. १७।१ गान्धर्वो. १ आगम. १४ आगम. ११ मां. आगम. १२ अ. पू. २।३१ रामो. ता. १।४ गोपालो. २।६ भवसं. १।४४ श्रीवि. ता. १।४ पैङ्गलो. २।६ अशिर. १ छां. ४।१३।१ छां. ७।१५।१ अ. ना. ३५ छां. १।११।५ वैतथ्यप्र. २०	प्राण उक्थमित्येव विद्यात् (अथ ह) प्राण उत्क्रमिष्यन् यथा महासुहयः सैन्धवः पद्भीशशङ्कन् संवृहेदेव* हैवेमान्प्राणान्संववर्ह प्राण उदक्रामत्तः प्राण उत्क्रान्तेऽपद्यत प्राण उद्गाता (यज्ञस्य) प्राण ऋच इत्येव विद्यात् प्राण एवं तद्रूत्वाऽवति (अथ खलु) प्राण एव प्रज्ञात्मेदं शरीरं परिगृह्योत्थापयति प्राण एव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः प्राण एव सम्राडिति होवाच प्राण एवामृतम् प्राण एवायतनमाकाशः प्रतिष्ठा प्राणकर्मणि चापरे प्राणश्चयसमीपस्थमपानोदय- कोटिगम् । अपानप्राणयोरैक्यं चिदात्मानं समाश्रय प्राणदेवताश्चत्वारः प्राणदेवतास्ताः सर्वा नाड्यः प्राणन्तः प्राणेन [छांदो. ५।१।८, [+बृ. उ. ६।१।८, ९, १०, ११, १२ प्राणबन्धन* हि सोम्य मनः प्राणभृत्सु त्वेवाविस्तरामात्मा, तेषु हि रसो दृश्यते प्राणमनूत्क्रामन्त* सर्वे प्राणा अनूत्क्रामन्ति प्राणमन्नेनाप्यायस्व । अद्यायामपाने निविश्यामृत* हुतम् प्राणमभ्युज्जिहते सैषा देवता प्रस्ताव- मन्वायत्ता प्राणमय इन्द्रियात्मा मनोमयः सङ्कल्पात्मा प्राणमयश्चक्षुर्मयः (आत्मा) प्राणमुख्यत्वेन पञ्चविधोऽस्ति प्राणमेवाप्येति यः प्राणमेवास्तमेति प्राणमेवैतया करोति	१ ऐत. १।४।६ बृह. ६।१।१३ १ ऐत. १।४।४ महाना. १८।१ १ ऐत. २।२।११ बृह. १।५।१० कौ. त. ३।३ छां. ३।१८।४ बृह. ४।१।३४ ... बृह. ४।१।३ मं. गी. ४।२७ अ. पू. ५।३० परब्र. १ ब्रह्मो. १ ९, १०, ११ छांदो. ६।८।२ १ ऐत. ३।३।२ बृह. ४।४।२ महाना. १६।४ छांदो. १।११।५ सुबालो. ५।१५ बृह. ४।४।५ भावनो. ६ सुबालो. ५।२ याज्ञव. १
--	---	---	---

प्राणयात्रानिमित्तं च व्यङ्ग्यं भुक्त-
वज्जने । काले प्रशस्ते वर्णानां
मिक्षार्थं पर्यट्टेदृहान् ना.प.५।२०
प्राणयात्रिकमात्रः स्यान्मात्रासङ्गा-
द्विनिर्गतः ना.प.५।१८
प्राणलिङ्गानां शुद्धसिद्धिर्न भवति रुद्रोप. २
प्राणलिङ्गी शिवरूपः रुद्रोप. २
प्राणवत्त्वान्महेश्वरत्वाच्च शिवस्तदैव गुरुः रुद्रोप. ३
प्राणवायोस्तु संरोधात्प्राणायामस्तु
पठ्यते योगो.३०
प्राणश्च देहो वायुरायामः कुम्भकःस्मृतः योगकुं.१।१९
प्राणश्च निवारयितव्यं च प्रभो.४।८
प्राणश्च मे भूयात् चित्त्यु.७।२
प्राणश्चित्तेन संयुक्तः परमात्मनि तिष्ठति जा.द.६।१७
प्राणसन्धारणार्थं यथोक्तकाले विमुक्तो
भैक्षमाचरन्नुदरमात्रसंग्रहः याज्ञव. ३
प्राणसन्धारणार्थं यथोक्तकाले विमुक्तो
भैक्षमाचरन् ... सञ्जयासेन
देहत्यागं करोति स परमहंसः जावा. ६
प्राणसन्धारणार्थं यथोक्तकाले करपात्रे-
णान्येन याचिताहारमाहरन्...
देहत्यागं करोति स कृतकृत्यः ना. प.३।८७
प्राणसंज्ञस्तथाऽपानः पूज्यः प्राण-
स्तयोमुने जा.द.४।२५
प्राणसंज्ञो मुनिश्रेष्ठ मूर्धानं प्राविशद्यदा ।
तदन्त्यं विषुवं प्रोक्तं जा.द.४।४४
प्राणसंयमनं चैव प्रत्याहारश्च धारणा ।
आत्मध्यानं समाधिश्च प्रोक्तान्य-
ज्ञानि वै क्रमात् ते.वि. १।१६
प्राणसंयमनेनैव ज्ञानान्मुक्तो भविष्यति जा.द.६।१२
प्राणसंशितमसीति तत्रैते द्वे ऋचौ भवतः छांदो.३।१७।६
प्राणस्त उदक्रमिष्यद्यन्मां नागमिष्य इति छांदो.५।१४।२
प्राणस्तैजसा युक्त सहात्मना यथा-
संकल्पितं लोकं नयति प्रभो. ३।१०
प्राणस्तैजोमयौऽमृतमयः पुरुषोऽयमेव बृह.२।५।४
प्राणस्त्वं प्राप्य सर्वाणि भूतानि श्वेत.२।३।४
प्राणस्त्वा वशो हास्यतीत्येनं ब्रूयात् श्वेत. १।४।१
प्राणस्त्वेव आत्मन इति होवाच छां. ५।१४।२

प्राणस्पन्दजये यत्नः कर्तव्यो
धीमतोषकैः अ.पू.४।८९
प्राणस्य प्राणमुत् चक्षुषश्चक्षुरुत् श्रोत्रस्य
श्रोत्रं मनसो ये मनो विदुः बृह.४।४।१८
प्राणस्य का गतिरित्यत्रमिति होवाच छांदो.१।८।४
प्राणस्य च मे प्राणो भूयात् चित्त्यु.७।३
प्राणस्य रूपं स्पर्शाः, अपानस्योष्माणः,
व्यानस्य स्वराः श्वेत.२।५।१
प्राणस्य वै सम्राट्, कामाय याज्यं
याजयति बृह.४।१।३,३
प्राणस्य शोधयेन्मार्गं रेचपूरककुम्भकैः यो.शि.५।३७
प्राणस्य ह्यन्वपानमेता अपियन्ति श्वेत. ३।३।३
प्राणस्येदं वशे सर्वं त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम् प्रभो.२।१३
प्राणस्यैतद्वशे सर्वं-(मा. पा.) प्रभो. २।१३
प्राणस्यैव सम्राट् कामाय बृह.४।१।३
प्राणस्योत्क्रमणासन्नकालस्त्वातुरसंज्ञकः ना.प.३।५
प्राणं गच्छ स्वाहेत्येवमेवैतदाह जावा. ४
प्राणं च हास्मै तदाकाशं चोचुः छां.४।१०।५
प्राणं चेदिडया पिबेन्नियमितं भूयो-
ऽन्यथा रेचयेत् ।...शुद्धा नाडिगणा
भवन्ति यमिनो मासद्वयादूर्ध्वतः यो.चू. ९८
प्राणं तदा वाचि जुहोति यावद्वै
पुरुषः प्राणिति कौ. त. २।५
प्राणं ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा कौ.त. २।४
प्राणं ते मयि दध इति पुत्रः कौ.त.२।१५
प्राणं देवा अनुप्राणन्ति । मनुष्याः
पशवश्च ये तैत्ति. २।३
प्राणं प्रपद्येऽमुनाऽमुनाऽमुना छांदो.३।१५।३
प्राणं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तैत्ति. ३।३
प्राणं प्रागिडया पिबेन्नियमितं भूयोन्य-
था रेचयेत्पीत्वा पिङ्गलया समीरण-
मथो बद्धा त्यजेद्दामया । सूर्या-
चन्द्रमसोरनेन विधिनाऽभ्यासं
सदा तन्वतां शुद्धा नाडिगणा
भवन्ति यमिनां मासत्रयादूर्ध्वतः शां.डि.१।७।१
प्राणं प्राणान्तं सर्वे प्राणा अनुप्राणन्ति कौ. त. ३।२
प्राणं प्राणः (गच्छति) कौ. त.२।१३
प्राणं मे त्वयि दधानीति पिता कौ.त.२।१५

प्राणं वा एते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा

रत्या संयुज्यन्ते

प्राणः सितमसीति तत्रैते ऋचौ

भवतः—(मा. पा.)

प्राणः क्षणितोः प्रक्षत्रमत्रमाप्नोति

प्राणः पवमानेन, पवमानो विश्वेदेवैः,

विश्वेदेवाः स्वर्गेण लोकेन, स्वर्गो

लोको ब्रह्मणा, सैषावरपरा संहिता

प्राणः प्रजा

प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः

प्राणः प्रसूतिर्भुवनस्य योनिर्व्याप्तं

त्वया एकपदेन विश्वम्

प्राणः प्राणेन याति प्राणः प्राणं ददाति

प्राणाय ददाति प्राणोऽहं पिता प्राणो

माता प्राणो भ्राता प्राणः स्वसा

प्राण आचार्यः प्राणो ब्राह्मणः

प्राणः प्राविशत्तत्प्राणे प्रपन्न उदतिष्ठत्

प्राणः शरीरमन्नं न परिचक्षीत्

प्राणः शरीरं परिरक्षति

प्राणः शरीरादधिको द्वादशाङ्गुलमानतः

प्राणः सर्वाणि भूतानि

प्राणः साम

प्राणः सामवेदः

प्राणः सूर्योऽग्निरथ वा पचत्यन्तरिदं वपुः

प्राणः स्वरोऽन्नं या वाग्विराट्

प्राणा अहः अथसि व्यूदिरऽहः

श्रेयानस्म्यहः श्रेयानस्मीति

प्राणा आदिस्था इदं मे तृतीयसवनं

प्राणा इत्येवाचक्षते

प्राणा गुहाशयाभिहिताः सप्त सप्त

प्राणाग्रय एवैतस्मिन् पुरे जायति

प्राणाङ्गनामा संस्पर्शो यः स पूरक

इत्येत

प्राणाङ्गुलीं खं वायुर्व्योतिरापः

पृथिवीन्द्रियम्

प्राणात्प्राणो ब्रह्मेत्येव आहुः

प्राणादयस्तु पञ्चैव पञ्च शब्दादयस्तथा

प्राणादयो वै पुनरेव तस्मादभ्युचरन्ती-

ह यथाक्रमेण [मैत्र्यु. ६।२६+

प्रश्नो. १।१३

छां. ३।१७।६

बृ. उ. ५।१३।४

३ऐत. १।६।३

बृह. १।५।७

प्रश्नो. १।८

एका. उ. ३

छां. ७।१५।१

१ऐत. १।४।६

तै. उ. ३।११।१

सुबालो. ४।३

त्रि. ब्रा. २।५।१

१ऐत. २।३।४

छांदो. १।७।१

बृह. १।५।५

अ. पू. २।५।९

छां. १।१३।२

छांदो. ५।१।६

छां. ३।१६।६

छां. ५।११।५

महाना. ८।२

प्रश्नो. ४।३

अ. पू. ५।२।८

प्रश्नो. ६।४

बृ. उ. ५।१२।१

वराहो. १।३

६।३१

प्राणादि चतुर्दशवायुभेदा अन्नमय-

कोशे यदा वर्तन्ते तदा प्राणमयः

कोश इत्युच्यते

प्राणादिपञ्चकं तेषु प्रधानं तत्र च द्वयम्

प्राणादिपञ्चवायुश्च बीजं वर्णच स्थानकम्

प्राणादिभिरनन्तैस्तु भावैरेतैर्विकल्पितः

प्राणादिलिङ्गस्वरूपं गुरोर्लिङ्गम्

प्राणादिस्पन्दनं वरम्

प्राणाद्यनिलसंशान्तौ युक्त्या ये पद-

मागताः । अनामयमनाद्यन्तं ते

स्मृता योगयोगिनः

प्राणाद्याः पञ्च विख्याता नागाद्याः

पञ्च वायवः

प्राणाद्वा एष उदेति प्राणेऽस्तमेति

तं देवाश्चक्रिरे धर्मः...

प्राणाद्व्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते

प्राणाद्वायुः, अक्षिणी निरभिद्येताम्

प्राणाद्वायुरजायत

[अ. अ. ८।४।१९=

प्राणाद्वायुः (अजायत)

प्राणाधिपः सञ्चरति स्वकर्मभिः

प्राणानवकीर्य याति कैवल्यम्

प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा

विशान्तकः । तेनाग्नेनाप्यायस्व

प्राणानां सङ्कल्प्य मन्त्राः सङ्कल्पन्ते

प्राणानेतदाह तस्यासत ऋषयः सप्त

तीर इति प्राणा वा ऋषयः

प्राणानेतदाह वागष्टमी ब्रह्मणा

संविदानेति

प्राणान् प्रपीड्येह स युक्तचेष्टः क्षीणे

प्राणे नासिकयोच्छ्वसीत । दुष्टाश्च-

युक्तमिव बाहमेन विद्वान्मनो धार-

येताप्रमत्तः [श्वेताश्व. २।९+

प्राणान् प्राणेषु जुह्वति

प्राणान्सर्वान्परमात्मनि प्रणाययती-

त्येतस्मात्प्राणवः

प्राणान्सर्वान्प्रलीयत इति प्रलयः

सर्वसारो. ४

त्रि. ब्रा. २।७।८

ध्या. वि. ९५

वैतथ्य. १९

लिङ्गोप. २

अ. पू. ४।४३

अ. पू. ५।५०

ध्या. वि. ५७

बृह. १।५।२३

तैत्ति. ३।३

२ऐत. १।४

चित्यु. १२।६

मं. १०।९०।१३

ग. शो. ३।११

श्वेताश्व. ५।७

पैत्रलो. ४।५

सूर्यता. १।८

महाना. १६।८

छांदो. ७।४।२

बृह. २।५।३

बृह. २।२।३

अ. अ. ३।२६

अ. गी. ४।३०

अ. शिखो. १

अ. शिखो. १

प्राणान्सन्धारयेत्तस्मिन्नासाभ्यन्तर-

चारिणः । भूत्वा तत्रायतप्राणः

शनैरेव समभ्यसेत्

यो.शि.६।७

प्राणान् सन्धारयेत्तस्मिन्नासाभ्यन्तर-

चारिणः । भूत्वा तत्र गतप्राणः

शनैरेव समुत्सृजेत्

क्षुरिको. ५

प्राणापानगतीं हृत्वा

भ.गी.४।२९

प्राणापानयोरैक्यं कृत्वा धृतकुम्भको

नासाप्रदर्शनदृढभावनया द्विकरा-

ङ्गुलिभिः षण्मुखीकरणेन प्रणव-

ध्वनिं निशम्य मनस्तत्र लीनं भवति

मं. ब्रा.२।४

प्राणायामव्यानोदानसमाननाग-

कूर्मकृकरदेवदत्तघनञ्जया इति

दश वायवः

भावनो. ४

प्राणापानसमानोदानव्यानानाग-

कूर्मकृकरदेवदत्तघनञ्जया एते

दश वायवः सर्वासु नाडीषु चरन्ति

शांडि. १।४।७

प्राणापानवशो जीवो ह्यधश्चोर्ध्वं च

(प्र-) धावति [ध्या.बिं. ५८+

यो. चू. २८

प्राणापानव्यानोदानसमाना मे

शुद्धयन्तां ज्योतिरहं विरजा

विषाप्मा भूयासः स्वाहा

महाना. १।४।७

प्राणापानव्यानोदानसमानाः

प्राणवृत्तयः

पैङ्गलो. २।३

प्राणापानसमाक्षिप्तस्तथा जीवो न

विश्रमेत्

यो.शि.६।५२

प्राणापानसमाक्षिप्तस्तद्वज्जीवो न विश्रमेत्

ध्या. बिं. ६०

प्राणापानसमाक्षिप्तस्तथा जीवो न तिष्ठति

यो.चू.२७

प्राणापानसमानाख्या व्यानोदानौ

च वायवः

यो.चू. २२

प्राणापानसमायुक्तः

भ.गी.१५।१४

प्राणापानसमायोगो ज्ञेयं योगचतुष्टयं

यो.शि.१।१३८

प्राणापानसमायोगः प्राणायामो भवति

शांडि.१।६।१

प्राणापानसमायोगाच्चंद्रसूर्यैकता भवेत्

यो.शि.१।५६

प्राणापानादिचेष्टादि क्रियते व्यान-

चायुना

त्रि.ब्रा.२।८५

प्राणापानाभ्यां प्रतिलोमानुलोमाभ्यां..

सचिवानन्दः परमात्माऽऽधिर्भवति

महावा. २

प्राणापानावजिह्वं च चरन्ती

चित्यु.१।४।३

प्राणापानौ नादविन्दू मूलबन्धेन

चैकताम् । गत्वा योगस्य संसिद्धिं

यच्छतो नात्र संशयः

यो.त. १२१

प्राणापानौ ब्रीहियवौ तपश्च

मुंड.२।१।७

प्राणापानौ समानश्च उदानो व्यान

एव च । नागः कूर्मश्च कृकरो

देवदत्तो घनञ्जयः (१० प्राणाः)

त्रि.ब्रा.२।७७

प्राणापानौ समौ कृत्वा

भ.गी.५।२७

प्राणापानौ संविदानौ जहि तम्

चित्यु. १।४।३

प्राणा भूत्वा एकैकमेतानि सर्वाण्ये-

वैतानि प्रज्ञापयन्ति

कौ.त. ३।२

प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहाव्यानाय

स्वाहाउदानाय स्वाहा

प्रा.हो. १।११

प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय

स्वाहा समानाय स्वाहोदानाय

स्वाहेति पञ्चभिरभिजुहोति

मैत्रा. ६।९

प्राणाय स्वाहा वसिष्ठायै स्वाहेत्यमौ

हुत्वा मन्ये सः स्वमवनयति

वृह.६।३।२

प्राणायाम इति प्रोक्तो रेचपूरककुम्भकैः

जा.द. ६।१

प्राणायामदृढाभ्यासैर्युक्त्या च गुरु-

दत्तया । आसनाशनयोगेन

प्राणस्पन्दो निरुध्यते

अ.पू.४।८७

प्राणायामद्विषट्केन प्रत्याहारः प्रकीर्तितः

यो.चू.१११

प्राणायामनिरोधश्च मन्त्रैर्द्वादशभि-

स्तथा । न तद्वादशमात्रस्तु

ह्युद्घातः प्रथमः स्मृतः

योगो. ५

प्राणायामपरस्यास्य पुरुषस्य महात्मनः ।

देहश्चोत्तिष्ठते तेन किञ्चिज्ज्ञाना-

द्विमुक्तता

जा.द.६।१७

प्राणायामसुतीक्ष्णेन मात्राधारेण योग-

वित् । वैराग्योपलघ्पेन छित्वा तं

तु न बध्यते

क्षुरिको. २४

प्राणायामस्ततः कार्यो नित्यं सत्त्व-

स्थया धिया

योगकुं. १।६२

प्राणायामस्तथाप्राणः प्राणस्यायामुच्यते

योगो. ४

प्राणायामस्तथा ब्रह्मन्प्रत्याहारस्ततः परम्

जा.द.१।५

प्राणायामं ततः कुर्यात्पद्मासनगतः

स्वयम्

१यो.त.३२

प्राणायामेन चित्तं तु शुद्धं भवति सुप्रत

जा.द. ६।१६

प्राणायामेन युक्तस्य विप्रस्य नियता-
त्मनः । ...सत्यस्थं चैव जायते योगो. १३

प्राणायामेन युक्तेन सर्वरोगक्षयो भवेत् ।

प्राणायामविद्युक्तेभ्यः सर्वरोग-
समुद्भवः यो.चू.११६

प्राणायामैकनिष्ठस्य न किञ्चिदपि
दुर्लभम् जा.द. ६।२०

प्राणायामैर्देहोषान् धारणाभिश्च
क्लिष्यम् । प्रत्याहारेण विषया-
न्ध्यानेनान्ध्यान्ध्याङ्गुणान् [अ.ना.८+ योगो. १५

प्राणायामैर्वशीकृत्वा सर्वाभिन्द्रिय-
वाहिनीम् । ततो युञ्जीत मेधावी

प्राणं च मनसा मुनिः दुर्वासो. २।१५

प्राणायामो भवेदेवंपातकन्धनपावकः यो. चू. १०८

प्राणा रुद्रा इदं मे माध्यन्दिनं सवनं छांदो. ३।१६।४

प्राणा वसव इदं मे प्रातस्सवनं छांदो. ३।१६।२

प्राणा वा ऋषयः बृह. २.२।३

प्राणा वाव रुद्रा एते हीदं सर्वं
रोदयन्ति छांदो. ३।१६।३

प्राणा वाव वसव एते हीदं सर्वं
वासयन्ति छांदो. ३।१६।१

प्राणा वावादित्या एते हीदंसर्वमाददते छांदो. ३।१६।५

प्राणाविरूढश्चरति जीवस्तेन विना नहि त्रि.ब्रा. २।६२

प्राणा वै गयास्तत्प्राणांस्तत्रे तद्य.

द्रुयांस्तत्रे बृह. ५।१४।४

प्राणा वै यशो विश्वरूपं बृह. २।२।३

प्राणा वै यशो वीर्यं तत्प्राणेषूत्क्रान्तेषु

शरीरं च श्रयितुमधियत तस्य शरीर

एव मन आसीत् बृह. १।२।६

प्राणा वै सत्यं तेषामेव सत्यम् बृह. २।१।२०

प्राणाश्चलन्तु तद्धर्मैः कामैर्वा हन्यतां

मनः । आनन्दबुद्धिपूर्णस्य मम

दुःखं कथं भवेत् आ.प्र. २१

प्राणास्तु रुद्रा विज्ञेया हविमुक्तं

परं स्मृतम् दुर्वासो. २।११

प्राणांस्त्वं भूमानमभिगायताद्ब्रह्मो

मे भविष्यन्तीति छांदो. १।५।४

प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च भ.गी. १।३३

प्राणिकर्मवशादेव पटो यद्वत्प्रसारितः

प्राणिकर्मक्षयात् पुनस्तिरोभावयति ।

तस्मिन्नेवाखिलं विधं सङ्कोचित-
पटवद्वर्तते पैङ्गलो. १।२

प्राणिनां देहमध्ये तु स्थितो हंसः

सदाच्युतः अ. वि. ६९

प्राणिनां देहमाश्रितः भ.गी. १।५।१४

प्राणी भवति सर्वमायुरेति, ज्यो-
रजीवति, महान्प्रजया पशुभिर्भवति छांदो. २।११।२

प्राणेगते यथादेहः सुखंदुःखं न विन्दति ।

तथा चेत्प्राणयुक्तोऽपि स कैवल्य-
श्रमे वसेत् ना. प. ३।२७

प्राणे गलितसंविच्चैः तादृशं

द्वादशान्तगे । अभ्यासादूर्ध्व-
रन्ध्रेण प्राणस्पन्दो निरुध्यते शां. १।७।३१

प्राणे तृप्यति चक्षुस्तृप्यति छांदो. ५।१९।२

प्राणे त्वमसि सन्धाता ब्रह्मन् महाना. १।७।१९

प्राणेन च स्वराख्येन प्रथिता

वैखरी पुनः यो.शि. ३।५

प्राणेन जातानि जीवन्ति तैत्ति. ३।३

प्राणेन रक्षन्वरं कुलायं बहिष्कुलाया-

दमृतश्चरित्वा । स ईयतेऽमृतो

यच्च कामं हिरण्यमयः पुरुष

एक हंसः बृह. ४।३।१२

प्राणेन सर्वान्ान्धानामोति कौ. त. ३।४

प्राणेन होवामुष्मिलोकेऽमृतत्वमामोति कौ. त. ३।२

(परमं पदमिति च) प्राणेन्द्रियाद्यन्तः-

करणगुणादेः परतरं सच्चिदानन्द-

मयं नित्यमुक्तब्रह्मस्थानं परमं पदम् निरा. ३. २९

प्राणेऽपानं तथाऽपरं भ.गी. ४।२९

प्राणेभ्यो देवा देवेभ्यो लोकाः

(विप्रतिष्ठन्ते) [कौ.त. ३।३, ३+४।१९

प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितम् तैत्ति. ३।७

प्राणेषु च विषंपरोवरीयः सामोपासीत छांदो. २।७।१

प्राणे सर्वं समर्पितं प्राणः प्राणेन

याति प्राणः प्राणं ददाति प्राणो

ह पिता प्राणो माता प्राणो

आत्मा प्राणः स्वसा प्राण आचार्यः

प्राणो ब्राह्मणः छांदो. ७।१५।१

प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते बृह. ५।१३।२
 प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि रमन्ते बृह. ५।१२।१
 प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि सम्यञ्चि बृह. ५।१३।३
 प्राणैरयममुष्मिन् स यदोत्क्रमिष्यन्
 भवति बृह. ५।५।२
 प्राणैर्बलं बलेन तपस्तपसा ब्रह्मा...
 स्मारेण विज्ञानं विज्ञानेनात्मानं
 वेदयति म.ना. १७।१३
 प्राणैर्मनः, मनसश्च विज्ञानं, विज्ञाना-
 दानन्दो ब्रह्मयोनिः म.ना. १७।१३
 प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां यस्मिन्वि-
 शुद्धा विभवत्येष आत्मा मुण्ड. ३।१।९
 प्राणो अग्निः परमात्मा पञ्चवायु-
 मिरावृतः प्रा.हो. १।१२
 प्राणोऽग्निस्तस्येमा इष्टकाः मैत्रा. ६।३३
 प्राणोऽग्निः परमात्मा वै पञ्चवायुः
 समाश्रितः। स प्रीतः प्रीणातु मैत्रा. ६।९
 विश्वं विश्वमुक् प्राणोऽग्निः सूर्य इति प्रतापवत्येषा(तनूः) मैत्रा. ६।९
 प्राणो देहस्थितो यावदपानं तु
 निरोधयेत् यो. चू. १००
 (तस्य) प्राणो धूमो वागर्चिश्चक्षुरङ्गाराः
 श्रोत्रं विस्फुलिगास्तस्मिन्नेतस्मिन्-
 ज्ञमौ देवा अन्नं जुहति तस्या
 आहुत्यै रेतः सम्भवति बृह. ६।२।१२
 प्राणो नाम देवताऽवरोधिनी सा...
 तस्यै स्वाहा कौ. त. २।३
 प्राणोन्मेषनिमेषाभ्यां संसृतेः प्रलयोदयौ अ.पू. ५।४।१
 प्राणोऽपानस्तथा व्यानः समानोदान एव
 च। नागः कूर्मश्च कृकरो देवदत्तो
 धनञ्जयः। एते नाडीषु सर्वासु
 चरन्ति दश वायवः जा.द. ४।२३
 प्राणोऽपानो व्यान इत्यष्टावक्षराणि बृह. ५।१४।३
 प्राणोऽपानो व्यान इति प्राणवत्येषा(तनूः) मैत्रा. ६।५
 प्राणोऽपानः समानश्चोदानो व्यानस्तथैव
 च। नागः कूर्मः कृकरो देवदत्तो
 धनञ्जयः। प्राणाद्याः पञ्चविक्रयाता
 नागाद्याः पञ्च वायवः ध्या. वि. ५६

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च
 वायवः। पञ्चक्रमेन्द्रियैर्युक्ताज्ञान-
 शक्तिबलोद्यताः ब्र. वि. ६६
 प्राणो ब्रह्म, कं ब्रह्म, खं ब्रह्म छांदो. ४।१०।५
 प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात् तैत्ति. ३।३
 प्राणो ब्रह्मेति हस्मा ह कौषीतकिस्तस्य
 ह वा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो मनो कौ. त. २।१
 दूतं चक्षुर्गात्रं श्रोत्रं संश्रावयितु
 प्राणो ब्रह्मेति ह स्माह पैङ्गयस्तस्य हवा
 एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो वाक्परस्ता-
 चक्षुरारुन्धे चक्षुः परस्ताच्छ्रोत्र-
 मारुन्धे श्रोत्रं परस्तान्मन आरुन्धे
 मनः परस्तात्प्राण आरुन्धे कौ. त. २।२
 प्राणो ब्रह्मेत्येक आहु स्तन्न, तथा
 शुष्यति वै प्राण ऋतेऽन्नात् बृह. ५।१२।१
 प्राणो भ्राताप्राणः स्वसा प्राण आचार्यः छां. ७।१५।१
 प्राणो मनुष्याः बृह. १।५।६
 प्राणोऽयमनिशं ब्रह्मन्स्पन्दशक्तिः
 सदागतिः अ. पू. ५।२५
 प्राणो वंश इति विद्यात् श्रैत. १।४।१
 प्राणो वंश इति स्थविरः शाकन्त्यः श्रैत. २।१।१
 प्राणो वा अन्नम् तैत्ति. ३।७
 प्राणो वा अन्नस्य रसः, मनःप्राणस्य,
 विज्ञानं मनसः मैत्रा. ६।१३
 प्राणो वा अमृतं नामरूपे सस्यं
 ताभ्यामयं प्राणश्छन्नः बृह. १।६।३
 प्राणो वा आयुः कौ. त. ३।२
 प्राणो वा अहमस्म्येषे, प्राणः सर्वाणि
 भूतानि प्राणो ह्येष य एष तपति श्रैत. २।३।४
 प्राणो वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किञ्च छां. ३।१५।४
 (उक्तं) प्राणो वा उक्तं प्राणो हीदं
 सर्वमुत्थापयत्युद्धास्मादुक्तविद्वीर-
 स्तिष्ठत्युक्तस्य सायुज्यं सलोकतां
 जयति बृह. ५।१३।१
 प्राणो वा आशाया भूयान् यथा वा
 बरा नामौ समर्पिता एवमस्मि-
 न्प्राणे सर्वं समर्पितम् छांदो. ७।१५।१
 प्राणो वा उत्प्राणेन हीदं सर्वमुत्तन्वम् बृ. ७. १।१।२३
 प्राणो वाव ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च छांदो. ५।१।१

प्राणो वाव तदभ्यार्चत्	१ ऐत. २।१।१
प्राणो वाव संवर्गः, स यदा स्वपिति,	
प्राणमेव वागप्येति, प्राणं चक्षुः,	
प्राणं ओत्रं, प्राणं मनः, प्राणो	
होवैतान्सर्वान्संवृक्के	छांदो. ४।३।३
(क्षत्रं)-प्राणो वै क्षत्रं, प्राणो हि त्रायते..	बृह. ५।१३।४
प्राणो वै गृत्सोऽपानो मदः	१ ऐत. २।१।३
प्राणो वै ब्रह्मः, सोऽपानेन नातिप्रहेण	
गृहीतोऽपानेन हि गन्धाञ्जिघ्रति	बृह. ३।२।२
प्राणो वै ज्येष्ठश्च अष्टश्च, ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च	
स्वानां भवति	बृह. ६।१।१
प्राणो वै बलं, तत्प्राणे प्रतिष्ठितम्	बृह. ५।१४।४
प्राणो वै ब्रह्मेत्यप्राणतो हि किं स्यात्	बृह. ४।१।३
प्राणो वै यज्ञस्योद्गाता	बृह. ३।१।५
प्राणो वै रं प्राणे हीमानि सर्वाणि	
भूतानि रमन्ते	बृह. ५।१२।१
प्राणो वै वायुः	मैत्रा. ६।३३
प्राणो वै सम्राट् परमं ब्रह्म, नैनं	
प्राणो जहाति	बृह. ४।१।३
प्राणो व्यानोऽपान उदानः समानः	तैत्ति. १।७।१
प्राणोऽसौ लोकः	बृ.उ. १।५।४
प्राणो हीदं सर्वमुत्थापयति	बृह. ५।१३।१
प्राणो(प्राणो)ऽस्मात्सर्वान् गन्धानभि-	
विस्तृजते	कौ. त. ३।४
प्राणोऽस्मि प्रज्ञात्मा तं मामायुरमृत-	
मित्युपास्व	कौ. त. ३।२
प्राणो ह पिता, प्राणो माता, प्राणो	
भ्राता, प्राणः स्वसा, प्राणआचार्यः,	
प्राणो ब्राह्मणः	छांदो. ७।१५।१
प्राणो हविः	चिन्त्यु. १।१
प्राणो हिङ्करो वाक्प्रस्तावश्चक्षुःकरीयः	
ओत्रं प्रतिहारो मनो निधनं परो-	
वरीयांसि वैतानि	छांदो. २।७।१
प्राणो हि भूतानामायुः	तैत्ति. २।३
प्राणो हि वा अङ्गानां रसः	बृह. १।३।१९
प्राणो हि वै क्षत्रं त्रायते हैनं प्राणः	बृह. ५।१३।४
प्राणो ह्यविज्ञातः प्राणपनं तद्भूत्वाऽवति	बृह. १।५।१०
प्राणो होवैतानि सर्वाणि भवति	छां. ७।१५।१४
प्राणो होवैतानि सर्वाणि भवन्ति	छां. ५।१।१५

प्राणो होवैतान्सर्वान्संवृक्क इति	छांदो. ४।३।३
प्राणो ह्येष आत्मा	ब्रह्मो. १
प्राणो ह्येष येष्वतपति [१ ऐत. २।१।१+]	३।४
प्राणो ह्येष यः सर्वभूतैर्विभाति विज्ञा-	
नन्विद्वान्भवतेनातिवादी । आत्म-	
कीड आत्मरतिः क्रियावानेष	
ब्रह्मविदां वरिष्ठः	मुण्डो. ३।१।४
प्राणो ह्येष सर्वभूतैर्विभाति (मा.पा.)	मुण्डो. ३।१।४
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति	
[अ. मा. ७+नारा. ५+]	देव्यु. २६
प्रातरादित्यमुपतिष्ठते-दिशामेक-	
पुण्डरीकमस्यहं मनुष्याणामेक-	
पुण्डरीकं भूयासमिति	बृह. ६।३।६
प्रातर्मन्थन्दिने सायमर्धरात्रे च (तु)	
कुभकान् । शनैरशीतिपर्यन्तं चतु-	
वारं समभ्यसेत् [त्रि. ब्रा. २।१०।१+]	यो. त. ४३
[शाण्डिल्यो. १।७।२]	
प्रातर्मध्याह्नयोः षण्मासकृतानि	
पापानि नाशयति	गायत्रीर. ११
प्रातश्चित्रादिवर्णाखण्डसूर्यचक्रवर्द्धि-	
ज्वालांबलीवत्तद्विहीनान्तरिक्ष-	
वत्पश्यति	अद्वयता. ४
प्रातःकाले च पूर्वैर्गुर्यद्भक्तैः प्रार्थितं	
मुहुः। तत्रैक्षं प्राक्प्रणीतं स्यात्स्थितिं	
कुर्यात्तथापि वा	१ सं. सो. २।६७
प्रातः प्रसाधनं दत्त्वा कार्यं	
सम्भार्जनाञ्जनम् ।	शिवो. ७।२४
प्रातः स्नात्वा विधानेन सन्ध्याकर्म	
समाप्य च । भूतिरुद्राक्षभरण	
उदीचीं दिशमाश्रयेत्	२ विल्वो. ७
प्रातः स्नानोपवासादिकायुक्तेषांश्च	
वर्जयेत्	१ यो. त. ४८
प्रादक्षिण्यादारिद्र्यनाशिनीं घ्राणतर्पणा-	
दन्तर्मलनाशिनीं च एवं वेद स	
वैष्णवो भवति	तुलस्यु. २
प्रादुर्भावश्च भूतानां देहत्यागस्तथैव च ।	
प्राप्तिव्यायामयोगश्च विधानमनुवर्तते	भवसं. १।११
प्रादुर्भूतोऽपराष्ट्रेऽस्मिन् [श्रीसू. ७+क.	वि. ५।८।७७
प्राधान्यतः कुक्ष्ये	अ. गी. १०।१९

प्राधान्येनात्र मेव एव, स मेवः वस्तुतस्त्वमेव एव	त्रि.मं.जा. २।२
प्राप्तकर्मकरो नित्यं शत्रुमित्रसमान- दृक् । ईहितानीहितैर्मुक्तो न शौचति न काङ्क्षति	महो. ६।६४
प्राप्तं प्राप्तव्यमखिलं भवता पूर्णचेतसा । स्वरूपे तपसि ब्रह्ममुक्तत्वं भ्रान्तिमुत्सृज	महो. २।७२
(एवं) प्राप्तानन्दः परमयोगी भवति प्राप्तानुत्तमविभ्रान्तिर्न किञ्चिदिह वाञ्छति	मं. ब्रा. २।९ महो. २।४७
प्राप्तुं तत्सहजस्वभावमनिशं सेवध्व- मेकं गुरुम्	अमन. २।४१
प्राप्ते ज्ञानेन विज्ञाने ज्ञेये च परमात्मनि ...हृदि संस्थिते	...
प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम्	भ.गी. १८।७१
प्राप्य चान्ते ततश्चैव ज्ञानयोगप्रनुत्त- मम् । अविरोधेन धर्मस्य सञ्चरेत् पृथिवीमिभाम्	ना.प. ६।३३
प्राप्य ज्ञानदशामेतां पशुम्लेच्छादयो- ऽपि ये । सदेहा वाऽप्यदेहा वा ते मुक्ता नात्र संशयः	महो. ५।३९
प्राप्यन्ते मां न पुनरावर्तन्ते प्राप्य पुण्यकृताः लोकान्	भस्मजा. २।७ भ.गी. ६।४१
प्राप्य सर्वज्ञतां कृत्वां ब्राह्मण्यं पद- मद्वयम् । अनापन्नादिमध्यान्तं किमतः परमीहते	अ.शां. ८५
प्राप्य सम्प्राप्यते येन भूयो येन न शौच्यते । पराया निर्वृतेः स्थानं यत्तज्जीवितमुच्यते	महो. ३।१२
प्राप्यन्तं कर्मणस्तस्य यत्किञ्चेद् करोत्ययम् । तस्माल्लोकात्पुनरैति..	बृह. ४।४६
प्रायश्चित्तीयस्त्वधस्तात्तिर्यक्तिस्रो दिमांशुप्रभाभिः प्रजननकर्मा(अग्निः)	प्रा.हो. २।४
प्रायेण श्रीमतां लोके भोक्तुं शक्तिर्न विद्यते	भवसं. १।१३
प्रायश्चित्कर्माप्यन्तमहिनिर्माकव- त्प्रवहरति	पैङ्गलो. ४।४

प्रारब्धकल्पनाप्यस्य देहस्य भ्रान्तिरेव हि	अध्यात्मो. ५।७
प्रारब्धनाशात्प्रतिभाननाशः..	वराहो. २।६९
प्रारब्धप्रतिभासनाशपर्यन्तं चतुर्विधं स्वरूपं ज्ञात्वा देहपतनपर्यन्तं स्वरूपानुसन्धानेन वसेत्	ना. प. ७।३
प्रारब्धमसतः कुतः	अध्यात्मो. ५८
प्रारब्धं सिद्धयति तदा यदा देहात्मना स्थितिः । देहात्मभावो नैवेष्टः	
प्रारब्धं त्यजतामतः	अध्यात्मो. ५६
प्रारब्धागाम्यर्जितानिकर्मत्रयमितीरितम्	वराहो. १।१२
प्रारब्धान्ते देहहानिर्मायेति क्षीयतेऽखिला	वराहो. १।७१
प्रावृट्कालप्रारम्भे यथा मण्डूकादीनां प्रादुर्भावस्तद्वत्सर्वात्मना नष्टाया अविद्याया उन्मेषकाले पुनरुदयो भवति	त्रि.मं.ना. ५।१
प्राश्याचम्यायं निधिरथवा परिब्राह्मि- वर्णवासासुण्डोपरिग्रहः शुचिरद्रोही भैक्षमाणो ब्रह्मभूषाय भवति	याज्ञव. २
प्रास्मा आशा अशृण्वन् प्राहुस्त्यागं विज्ञक्षणाः	चिन्त्यु. १५।२ भ.गी. १८।२
प्रियमित्येनदुपासीत प्रियं भवत्यस्य ब्रह्मवर्चसं कुले य एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते	छां. ५।१२।२ ५।१३।२+१४।२+१५।२+१६।२+ १७।२
प्रियं भुवाणं प्रूयात्प्रियः स्रोत्यतीतीश्वरी ह तथैव स्यात्	बृह. १।४।८
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्	भ.गी. ११।४४
प्रिया च मानसी, प्रतिकृपा च चाक्षुषी प्रियात्मजनन-वर्धन-परिणाम-क्षय-	कौ.त. १।३
नाशाः षड्भावाः	मुद्रलो. ४।२
प्रियाप्रिये न स्पृशतस्तथैव च शुभा- शुभे । तमसा प्रस्तवद्भानादप्रतो- ऽपि रविर्जनैः	२मात्मो. १५ बृह. ९।४।४
प्रिया बतारे नः सती प्रियं भाषसे	बृह. ९।४।४
प्रिया वै खलु नो भवति सती प्रियमवृथत्	बृह. ९।४।४

प्रियां वाचमभिवदन्त्योऽर्चयन्त्य एष

वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः

प्रियेषु स्वेषु सुकृतमप्रियेषु च
दुष्कृतम् । विसृज्य ध्यानयोगेन

ब्रह्माप्नोति सनातनम्

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थं

प्रियो ह वै भवति स्मरन्ति देवास्य

प्रीतिः प्रीत्या भवति

प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये

प्रेत्याहमालोकादमृता भवन्ति

प्रेत्येन्द्रो भूतैषु लोकेषु राजति

प्रेमानन्द एव सृष्टिस्त्वाधिदैविकी

प्रेमात्तन्मनुभवन्तो भक्तास्तलीलोप-

योग्या भवन्ति

प्रेयो मन्दो योगक्षेमौ वृणीते

प्रेरयेद्वा तथा भिक्षुः स्वप्नेऽपि न

कदाचन

प्रेहामृतस्य यच्छतामेतद्ब्रह्मकमोचनम्

प्रेहि तु तत्र प्रतीत्य ब्रह्मचर्यं वत्स्याव

इति भवानेव गच्छस्विति

प्रेहि तु तत्र प्रतीत्य ब्रह्मचर्यं वत्स्यावः

(मां. पा.)

मुण्ड. १।२।६

ना.प. ३।५१

भ.गी. ७।१७

कौ.त. २४

सामर. ९५

भ.गी. १७।४

केनो. २।५

१ऐत. ३।७।२

सामर. ३९

सामर. ९२

कठो. २।२

ना.प. ४।९

सहवै. ९

बृह. ६।२।४

बृ.व. ६।२।४

प्रोक्तमादित्यमाहात्म्यं यन्मां त्वमनु-

पृच्छसि

प्रोक्तवानहमव्ययम्

प्रोक्तं कचिदविद्येति कचिदिच्छेति

सम्मतम्

प्रोक्ता च सात्त्विकी रुद्रे भक्ते ब्रह्मणि

राजसी

प्रोच्यते गुणसङ्ख्याने

प्रोच्यमानमक्षेपेण

प्रोता त्वमेता विचितिः क्रमाणां

प्रजापतिश्छन्दमयो विगर्भः

प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्

(अथ) प्रोष्याऽऽयन् पुत्रस्य मूर्धान-

मभिमृशति

प्लवदाचरणम्

प्लवा ह्येते अष्टदा यज्ञरूपा अष्टादशो-

क्तमवरं येषु कर्म

प्लावयेद्योगमार्गेण सोऽमृतत्वाय कल्पते

प्लुतप्रणवप्रयोगेण समस्तमोमिति

प्रयुक्त आत्मज्योतिः सकृदावर्तते

प्लुतप्लुत्युपसंहारः

सूर्यता. १।१०

भ.गी. ४।१

महो. ५।१३३

कृष्णो. ४

भ.गी. १८।१९

भ.गी. १८।२९

एका. व. ९

मुण्ड. १।२।१३

कौ.त. २।११

निर्वाणो. ८

मुण्ड. १।२।७

बृ.जा. ३।१७

अ.शिखो. १

तुरीयो. १

फ

फट्फट्जहि महाकृत्ये विधूमाभिषम-

प्रमे । हन शत्रूंश्चिशूलेन कुट्टास्ये

पिब शोणितम्

फलपत्रोदकाहारः पर्वतवनवनदेवता-

लयेषु सञ्चरेत्

फलमुदिष्य वा पुनः

(पुरुषः) फलमूलोदकान्वितं तपोवनं

प्राप्य... फलमूलपुष्पवारिभिः...

वैदान्तश्रवणं कुर्वन्योगं समारभेत्

फलविशुद्धाङ्गी सङ्ख्यासं सहस्रैर्द्विसान्

फलं कतकबृक्षस्य यद्यप्यन्तुप्रसाद-

कृत् । न नामग्रहणादेव तस्य

वारि प्रसीदति

फलं त्यक्त्वा मनीषिणः

फलं यज्ञतपःक्रियाः

फलादुत्पत्त्यमानः सज्जते देतुः प्रसिद्धयति

वनदु. ९४

ना.प. ४।४८

भ.गी. १७।११

शांडि. १।५।१

१सङ्ख्यासो. ६

भवसं. १।५०

भ.गी. १।५१

भ.गी. १७।३५

अ. सां. १७

फलानां पुरुषः, पुरुषस्य रेतः

फले सक्तो निबध्यते

फलोदयः क्रियापूर्वो निष्क्रियो नहि

कुत्रचित्

फलो वा एष लोकानामजरौ महात्मा

विश्वं यः पाति

फालोर्द्विगललाटविशेषमण्डले निरन्तरं

तेजस्कारकयोगविस्फुरणेन

पश्यति चेत् सिद्धो भवति

फेनपा उन्मादकाः शीर्षेर्णफल्-

भोजिनो यत्र तत्र वसन्तोऽपरि-

चरणं कृत्वा...आत्मानं प्रार्थयन्ते

फेनादण्डं भवत्यण्डाद्ब्रह्मा भवति

[अ. शिरः. ३।१५+

फेनादुदुदमभवत् । अण्डाद्ब्रह्माऽभवत्

बृह. ६।४।१

भ.गी. ५।१२

अध्यात्मो. १९

पारमा. ८।३

अद्वयवा. ३

आत्मो. ३

बहुको. ३७

गायत्री. १

ब

बटरकाणि सम्पत्तन्तीव दृश्यन्ते तानि
तदा न पश्येत्तदप्येवमेव विद्यात् ३ऐत. २।४।६
बटुको हि शाश्वतेन पुराणेन वेषमूर्जेण
तपसा नियन्ता बटुको. २३
बदरीफलमात्रं तु (रुद्राक्षस्य)
मध्यमं प्रोच्यते बुधैः । अधमं
अणमात्रं स्यात् ... रु.जा. ७
बद्धपद्मासनस्तिष्ठन्नधोन्मीलितलोचनः।
...स्पर्शान् परिहरन्कनैः अ. पू. ३।४
बद्धपद्मासनं कृत्वा सरस्वत्यास्तु
बालनम् । दक्षनाड्या समाकृष्य
बहिष्पं पवनं शनैः । यथेष्टं पूरयेद्वायुं.. योगकुं. १।२३
बद्धपद्मासनो योगी प्राणं चन्द्रेण
पूरयेत् ..भूयः सूर्येण रेचयेत् यो. चू. ९५
बद्धपद्मासनो योगी नमस्कृत्य गुरुं
शिवम् । नासामष्टष्टिरेकाकी
प्राणायामं समभ्यसेत् यो. चू. १०६
बद्धमुक्तो महीपालो प्रासमात्रेण
तुष्यति । परैरबद्धो नाक्रान्तो
न राष्ट्रं बहु मन्यते महो. ५।७४
बद्धः खेचरतां (रसः) धत्ते ब्रह्मत्वं
रक्षयेत्तसि वराहो. २।७९
बद्धः सुनादगन्धेन सद्यः सन्त्यक्तवा-
पलः । नादग्रहणतश्चित्तमन्तरङ्ग-
भुजङ्गमः ना. बि. ४३
बद्धो मुच्येत बन्धनात् सूर्यता. १।१३
बद्धो मुक्तोऽहमद्भुतात्माऽहम् आ. प्र. १०
बद्धो हि बासनाबद्धो मोक्षः स्याद्वा-
सनाक्षयः मुक्ति. २।६८
बध्नन्कराभ्यां श्रोत्रादि करणानि
बध्नातथम् । युज्जानस्य यथोक्तेन
वर्त्मना स्ववशं मनः त्रि. ब्रा. २।११६
बध्नाति हि शिरोजातमधोगामि
प्रयोजनम् । ततो जालन्धरो
बन्धः कष्टदुःखोपनाशनः यो. चू. ५०
बध्ना प्राणासनं विप्रो ननुकायः समा-
हितः । नासापन्यस्तनयनः बि. ब्रा. २।९२

बध्ना योगासनं पूर्वं हृद्देशे हृदयाञ्जलिः त्रि. ब्रा. २।१४५
बन्धत्वमपि चेन्मोक्षो बन्धाभावे क
मोक्षता ते. बि. ५।२४
बन्धनस्थस्येवास्वातंत्र्यं, यमविषयस्थ-
स्यैव बहुभयावस्थम् मैत्रा. ४।२
बन्धमुक्तिविहीनोऽहंशाश्वतानन्दविग्रहः ते. बि. ३।३७
बन्धमुद्रा कृता येन नासामे तु
स्वलोचने ब्र. वि. ६९
बन्धमोक्षस्वरूपात्मा बन्धमोक्षविवर्जितः ते. बि. ४।६६
बन्धमोक्षादिकं नास्ति सद्वाऽसद्वा
सुखादि वा ते. बि. ५।३८
बन्धमोक्षादिहीनोऽस्मि शुद्धब्रह्मास्मि
सोऽस्त्यहम् मैत्रे. ३।९
बन्धमोक्षौ न चात्मनि २आत्मो. २९
बन्धं कुर्वन्ति धातवः अमन. १।३७
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति भ. गी. १८।३०
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तं (मुक्त्यै,
मुक्ता) निर्विषयं स्मृतम् (मनः)
[ब्र. बि. २+ मैत्रा. ४।१७+ अमन. २।७५
बन्धास्थामथ मोक्षास्थां सुखदुःख-
दशामपि । त्यक्त्वा सदसदास्थां
त्वं तिष्ठाम्बुधमहाविभवत् महो. ६।५३
बन्धुपुत्रमनुमोदयित्वाऽनवेक्ष्यमाणो
द्वन्द्वसहः प्रशान्तः । प्राचीमुदीचीं
वा निवर्त्यश्चरेत् शाट्याय. १८
बन्धुरात्माऽऽत्मनस्तस्य भ. गी. ६।६
बन्धो जालन्धराख्योऽयममृता-
प्यायकारकः यो. त. १।१११
बन्धोजालंधराख्योऽयममृत्युमातङ्गकेसरी १यो. त. ११९
बन्धो मोक्षः सुखं दुःखं ध्यानं चित्तं
सुरासुराः । गौणं मुख्यं परं
चान्यत् सर्वं मिथ्या न संशयः ते. बि. ५।४४
बन्धुश्च बन्धुर्कर्णश्च नीलम्रीवश्रयःशिवः नीलरु. ३।२
बन्धस्यमाणमिव चाकश्यमानमिव
जाज्वल्यमानमिव देदीप्यमानमिव
लेलिहानं तदेव मे ब्रह्म आर्षे. ५।३

बर्होपीडाभिरामाय रामायाकुण्ठमेधसे ।

रमामानसहंसाय गोविन्दाय

नमो नमः

गो. पू. ४।७

बलमिति विद्युति

तैत्ति. ३।१०।२

बलवीवदनाम्भोजमालिने नृत्तशालिने ।

नमः प्रणतपालाय श्रीकृष्णाय

नमोनमः

गो. पू. ४।१०

बलं ज्ञानं सुराणां वै तेषां

ज्ञानं हर्त क्षणात्

कृष्णो. १२

बलं देवानाममृतस्य विष्णोः

सुदर्श. ६

बलं बलवतां चाहं

भ.गी. ७।११

बलं वाव विज्ञानाद्भूयोऽपि ह

शतं विज्ञानवतामेको बलवा-

नाकम्पयते

छान्दो. ७।८।१

बलं भीमाभिरक्षितम्

भ.गी. १।१०

बलं भीष्माभिरक्षितम्

भ.गी. १।१०

बलं वाव विज्ञानाद्भूयोऽपीहशतं (मा.पा.)

छां. उ. ७।८।१

बलात्कामपिशाचेन विवशः परिभूयते

महो. ३।३४

बलादिव नियोजितः

भ.गी. ३।३६

बलाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्

ब्रवीतु

छांदो. ७।८।२

बलेचित्तसंयमाद्धनुमदादिवलम्

शांडि. १।७।५२

बलेन तपः, तपसा अद्धा (भवति)

महाना. १।७।१३

बलेन पर्वताः (तिष्ठन्ति)

छांदो. ७।८।१

बलेन लोकस्तिष्ठति, बलमुपास्व

छांदो. ७।८।१

बलेनापःपर्वताबलेनदेवमनुष्याः(मा.पा.)

छां. उ. ७।८।१

बलेन वै पृथिवी तिष्ठति, बलेनान्तरिक्षं

बलेन द्यौर्बलेन पर्वता बलेन देव-

मनुष्या बलेन पशवश्च वयांसि च

तृणवनस्पतयः श्वापहान्याकीटपिपी-

लकंबलेनलोकस्तिष्ठतिबलमुपास्वेति

छांदो. ७।८।१

बलेन वै लोकास्तिष्ठन्ति (मा. पा.)

छां. उ. ७।८।१

बस्तिस्ते व्यमत्स्यथन्मां नागमिष्य इति

छांदो. ५।१६।२

बस्तिस्त्वैव आत्मन इति होवाच

छांदो. ५।१६।२

बह्व इमेऽस्मिन्पुरुषे कामा नाना-

त्यया व्याधिभिः परिपूर्णोऽस्मि

नाशिष्यामीति

छांदो. ४।१०।३

बह्वो ज्ञानतपसा

भ.गी. ४।१०

बहवो नैकमार्गेण प्राप्ता नित्यत्वमागताः भ. वि. २५

बहवो मर्या ब्राह्मणायना निरिन्द्रिया

विमुक्तोऽस्माल्लोकात्प्रयन्ति

बृह. ६।४।४

बहिरङ्गा जगत्कारणभूता सेवाविद्या-

रूपेण जीवबन्धभूता क्रिया शक्तिश्च

लीलाशक्तिश्चरति

राधिको. ९

बहिरन्तश्च भूतानां

भ.गी. १।३।१६

बहिरन्तश्चोपवीती विप्रः सञ्च्यस्तुमर्हति ।

एकयज्ञोपवीती तु नैव सञ्च्यस्तुमर्हति परब्र. २०

बहिरस्तङ्गते प्राणे यावन्नापान उद्गतः ।

तावत्पूर्णां समावस्थां बहिष्ठं

कुम्भकं विदुः

मुक्तिको. २।५२

बहिरुपशमिते चराचरात्मा स्वयमनु-

भूयत एव देवदेवः

अ. पू. १।५५

बहिर्मायया वेष्टितं भवति चक्रं

नृ. पू. ५।३

बहिर्लक्ष्यं तु नासाग्रे चतुष्षडष्टदश-

द्वादशाङ्गुलीभिः... व्योमत्वं

पश्यति स तु योगी

मं. ब्रा. १।३

बहिर्विरेचनं वायोरुदराद्रेचकः स्मृतः

जा. द. ६।१३

बहिश्चेतो गृहीतं सद्बुद्धं वैतथ्यमेतयोः

वैतथ्य. ९

बहिश्चेतो गृहीतं सद्बुद्धं वैतथ्यमेतयोः

वैतथ्य. १०

बहिस्तीर्थात्परं तीर्थमन्तस्तीर्थं

महामुने । आत्मतीर्थं महा-

तीर्थमन्यतीर्थं निरर्थकम्

जा. द. ४।५३

बहिः कुर्वन्नकुर्वन्वा कर्ता भोक्ता

नहि कश्चित्

अ. पू. १।५७

(अथ) बहिःकृतेन्द्रियार्थान्त्वशरीरा-

दुपलभते

मेवा. ६।८

बहिः कृत्रिमसंरम्भो हृदि संरम्भ-

वर्जितः । कर्ता बहिरकर्तान्तर्लोके

विहर शुद्धधीः

महो. ६।६८

बहिः प्रज्ञो विमुर्विद्यो ह्यन्तः-

प्रज्ञस्तु तैजसः

आगम. १

बहिः प्रपञ्चशिखोपवीतित्वमनाहृत्य

प्रणवहंसशिखोपवीतित्वमवलम्ब्य

मोक्षसाधनं कुर्यात्

परब्र. २२

बहिःसर्वसमाचारो लोकेविहर विष्णुरः

महो. ६।६७

बहिःसूत्रं त्यजेद्विद्वान्योगमुत्तम-
मास्थितः । ब्रह्मभावमिदं सूत्रं
धारयेद्यः स चेतनः [ब्रह्मो. ९+ ना. प. ३।८०
बहिःसूत्रं त्यजेद्विप्रो योगविज्ञान-
तत्परः । ब्रह्मभावमिदं सूत्रं
धारयेद्यः स मुक्तिभाक् परब्र. ११
बहुधा विश्वतोमुखम् भ.गी. ९।१५
बहुनाऽत्र किमुत्तेन गोपीचन्दन-
मण्डनम् । न तत्तुल्यं भवेल्लोके गोपीचं. २१
नात्र कार्या विचारणा बृह. ६।४।४
बहु वा इदं सुप्तस्य वा जाग्रतो भ.गी. २।४१
त्रा रेतः स्कन्दति
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च
बहुशास्त्रकथाकन्थारोमन्थेन वृथैव
किम् । अन्वेष्टव्यं प्रयत्नेन मारुते
ज्योतिरान्तरम् मुक्ति. २।६३
बहुशोभमानासुमाहैमवतीताः होवाच
किमेतद्यक्षमिति केनो. ३।१२
बहुस्यां प्रजायेय [छां.उ.६।२।३+
[तैत्ति. २।६+ शां.डि.३।१।३
बहुदकस्य स्वर्गलोकः [ना.प.५।९+ १सं.सो.२।५५
बहुदकस्यासंक्रुप्तं माधुकरम् ना. प. ५।७
बहुदकः शिखादिकन्थाधरस्त्रिपुण्ड्र-
धारी कुटीचकवत्सर्वसमो मधुकर- १सं.सो.२।१४
पुत्त्याष्टकवलाशी [ना.प.५।५+
(अथ) बहुदका नाम त्रिदण्ड-कम-
ण्डलु-शिखा-यज्ञोपवीत-काषाय-
वस्त्रधारिणो ब्रह्मर्षिगृहे मधुमांसं
वर्जयित्वाऽष्टौ प्रासान्भैक्षाचरणं
कृत्वा योगमार्गे मोक्षमेव प्रार्थयन्ते भिक्षुको. २
बहुदकास्त्रिदण्डकमण्डलुशिक्यपक्ष-
जलषविप्रपात्रपादुकासनशिखा-
यज्ञोपवीत-कौपीन-काषायवेष-
धारिणः साधुवृत्तेषु ब्राह्मणकुलेषु
भैक्षाचर्य चरन्त आत्मानं प्रार्थयन्ते आश्रमो. ४
बहुदको हंसत्वमवलम्ब्य...तुरीयासी-
त्तावधूतवेषेणाद्वैतनिष्ठापरः प्रण-
वात्मकस्त्वेन वेदस्यांगं करोति यः
सोऽवधूतः तुरीया. ३

बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं भ.गी. १।१२३
बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः ।
किं स्वयमस्य कर्तव्यं यन्मयाऽद्य
करिष्यति कठो. १।५
बहूनि पुण्यानि कृतानि येन तेनैव
लभ्यः परमेश्वरोऽसौ शरभो. २
बहूनि मे व्यतीतानि भ.गी. ४।५
बहून्यदृष्टपूर्वाणि भ.गी. १।१।६
बह्वध्यामिन्द्रगोमतीम् चित्त्यु. १।१।६,
बह्वहं चरन्ती परिचरन्ती परिचारिणी
यौवने त्वामलमे साऽहमेतन्न वेद
यद्गोत्रस्त्वमसि जवाला तु नामाऽह-
मस्मि सत्यकामो नाम त्वमसि छांदो. ४।४।२
बह्वी प्रजां जनयन्ती स रूपाम् ।
अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते महाना. ८।४५
बह्वीः प्रजा असृजत् मैत्रा. २।६
बह्वीः प्रजा पुरुषात्सम्प्रसृताः मुण्ड. २।१।५
बह्वीः सन्धा अतिक्रम्य दिवि प्रह्लादीन-
तृणवहमन्तरिक्षे पौलोमान्पृथिव्यां
कालकाश्यास्तस्य मे तत्र न लोम
च नामीयते कौ. त. ३।१
बह्वृचाख्यब्रह्मविद्यामहाखण्डार्थ-
वैभवम् । अखण्डानन्दसाम्राज्यं
रामचन्द्रपदं भजे बृहृच. शोर्षकं
बह्वथः स्याम प्रजायेमहि छांदो. ६।२।४
बाधिर्यं महानुपचय इवेदं नावहेलनया
अवितव्यमेवं वृढवैराग्याद्गोघो भवति महो. ४।२६
बालस्वभावोऽसङ्गो निरवधो मौनेन
पाण्डित्येन निरवधिकारतयो-
पलभ्येत कैवल्यमुक्तं निगमनं सुबालो. १३।१
बालं प्रमाद्यन्तं वित्तमौहेन मूढं कठो. २।६
बालाप्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वं देवं
जातरूपं वरेण्यम् । तमात्मस्थं येऽनु-
पश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्भवति
नेतरेषाम् बटुको. १
बालाश्च कुलबुद्धाश्च निर्दहन्त्यवमानिताः इतिहा. २१
बालैर्वदस्तु लोकोऽयं सुखलेनाभिहन्यते शिवो. ७।१०४

बालोन्मत्तपिशाचवदनुन्मत्तोन्मत्त-
वदाचरंस्त्रिदण्डं शिष्यं पात्रं
कमण्डलुं कटिसूत्रं कौपीनं च
परित्यज्य...जातरूपधरश्चरेदा-

त्मानमन्विच्छेत्

ना. प. ३।८७

बालोन्मत्तपिशाचबन्मरणं जीवितं वा
न काङ्क्षेत कालमेव प्रतीक्षेत निर्देश-

मृतकन्यायेन परिभ्राडिति

ना.प. ५।१५

बालो बालेषु वृद्धेषु वृद्धो धीरेषु धैर्य-
वान् । युवा यौवनवृत्तेषु दुःखितेषु
सुदुःखधीः

अ.पू. २।३०

बाल्यमल्पदिनेरेव यौवनश्रीस्ततो

जरा । देहेऽपि नैकरूपत्वं काऽऽस्था

बाह्येषु वस्तुषु

भवसं. १।२१

बाल्यं च पाण्डित्यं च निर्विद्याय-

मुनिरमौनं मौनं च निर्विद्य...

बृह. ३।५।१

बाल्येन तिष्ठासेत्

सुबालो. १३।१

बाल्येनैव हितिष्ठासेन्निर्विद्याब्रह्मवेदनम् ।

ब्रह्मविद्यां च बाल्यं च निर्विद्य...

मुनिरात्मवान् [अ. पू. ४।३८+

शाठ्याय. २४

बाहू राजन्यः कृतः [ऋक्सं.

मं. १०।९०।१२

[वा.सं. ३१।११+सुबा. १।४+

चित्त्यु. १२।५

बाह्यचिन्ता न कर्तव्या तथैवान्तर-

चिन्तिका । सर्वचिन्तां परित्यज्य

चिन्मात्रपरमोभव । (सर्वचिन्तां समु-

त्सृज्य स्वस्थो भव सदा क्रमो)

[शां. १।७।२०+

वराहो. २।४४

बाह्यज्ञाने विनष्टे च ततः सर्वसमो भवेत्

अमन. १।२१

बाह्यप्रणव आर्षप्रणवः, उभयात्मको

विराट्प्रणवः

ना. प. ८।१

बाह्यवदान्तरेऽप्यात्मनश्शुःसंयोगेनैव

रूपप्रवृत्तकार्योन्मात्

अद्वयता. ६

बाह्यस्थविषयं सर्वं रेचकः समुदाहृतः ।

पूर्वकं शास्त्रविज्ञानं कुम्भकं

स्वरातं स्मृतम्

वराहो. ५।५८

बाह्यरूपशेषसत्तात्मा

भ. गी. ५।२१

बाह्यस्याभ्यन्तरे कालानलसदृशं

पराकाशम्

मं. ब्रा. ४।१

बाह्यं प्राणं समाकृष्य पूरयित्वोदरेण

च । नासाग्रे नाभिमध्ये च पादा-

ङ्गुष्ठे च धारयेत्

जा. द. ६।२२

बाह्यात्प्राणं समाकृष्य पूरयित्वोदरे

स्थितम् । नाभिमध्ये च नासाग्रे

पादाङ्गुष्ठे च यत्नतः । धारये-

न्मनसा प्राणं सन्ध्याकालेषु वा

सदा । सर्वरोगविनिर्मुक्तो भवेद्योगी..

शां. १।७।४३

बाह्यात्माऽन्तरात्मा परमात्मा च

१ आत्मी. १

बाह्यादापूरणं वायोरुदरे पूरको हि सः

जा. द. ६।१२

बाह्यान्तारकाकारं व्योमपञ्चक-

विग्रहम् । राजयोगैकसंसिद्धं

रामचन्द्रमुपास्महे

मं. ब्रा. शीर्षक

बाह्याभ्यन्तरमन्धकारमयमाकाशम्

मं. ब्रा. ४।१

बाह्याभ्यन्तरवीक्षणाद्विस्फुटतमः स

परस्ताद्भूतैष दृष्टोऽदृष्टोऽव्यवहार्यो-

ऽप्यल्पोनाल्पः साक्ष्यविशेषोऽनन्यो

सुखदुःखोऽद्वयः परमात्मा

नृसिंहो. ९।७

(एवं) बाह्याभ्यन्तरस्थव्योमपञ्चकं

तारकलक्ष्यम्

अद्वयता. ४

बाह्याभ्यन्तःकरणानां रूपग्रहण-

योग्यतास्त्वित्यावाहनम्

भावनो. ८

बाह्यार्चनं परिहरेदपुनर्भावाय

मैत्रे. २।२६

बाह्यार्थवासनोद्भूता तृष्णा बद्धेति

कथ्यते । सर्वार्थवासनोन्मुक्ता

तृष्णा मुक्तेति भण्यते

महो. ६।५०

बाह्योः क्षत्रं (अजायत)

ग. शो. ३।११

विन्दुनादकलाज्योतीरवीन्दुध्रुव-

तारकम् । शान्तं च तदतीतं

च परं ब्रह्म तदुच्यते

यो. शि. ६।८६

विन्दुनादसमायुक्तसन्निवीजं विचिन्त-

येत् । पञ्चाद्विरेचयेत्सम्यक्प्राणं..

जा. द. ५।८

विन्दुनादमहालिङ्गविष्णुलक्ष्मीनि-

केतनम् । देहं विष्णुबाल्यं प्रोक्तं

तिद्धिदं सर्वदेहिताम्

यो. शि. ९।४

विन्दुनादात्मकं बीजं वह्निसोम-

कलात्मकम्

रामर. ५।९

विन्दुमूलशरीराणि शिरास्तत्रप्रतिष्ठिताः

यो. चू. ५६

विन्दुरीशानः

ना. पू. ता. १।३

विन्दुरीश्वरसंज्ञस्तु शत्रुघ्नश्चक्रादस्वयं तारसा. २।३
 विन्दुरुत्तररूपम् गणप. ७
 विन्दुर्ब्रह्मा रजः शक्तिर्विन्दुरिन्दू रजो
 रविः । उभयोः सङ्गमादेव प्राप्यते यो.चू. ६२
 परमं पदम् ता.सा. २।१
 विन्दुस्तुरीयाक्षरो भवति तारसा. ३।४
 विन्दुस्वरूपः शत्रुघ्नो भूर्भुवस्तस्मै वै
 नमोनमः
 विन्दुः क्षरतिनो यस्य कामिन्यालिङ्गि-
 तस्य च । यावद्विन्दुः स्थितो देहे
 तावन्मृत्युभयं कुतः
 विन्दुः पञ्चमकूटाक्षरो भवति ध्या.वि. ८४
 विन्दुः पञ्चमाक्षरो भवति श्रीवि.ता.१।२
 विन्दुः शिवो रजः शक्तिर्विन्दुरिन्दू रामो. १।२
 रजो रविः ध्या.वि. ८८
 विन्दुरोङ्कारः सीतो. ११
 विन्दौ स्वप्नविश्वो नादे स्वप्नतैजसः प. हं. १०
 विभर्त्यव्यय ईश्वरः भ.गी.१५।१०
 विभर्मि धर्ममवसे जनानाम् वा. मं. १२
 विमैमि वा एतदेतेभ्यो यथैतत्परावृत्तं शौनको. १।३
 विभ्रच्छ्रयं यशः सत्यं ब्रह्मचर्यं तपो
 वैराग्यं मन एषेर्यसंप्रणवाव्याहृतय
 न्मग्यजुःसामाथर्वाङ्गिरसः सर्वाणि
 छन्दांसि तान्यङ्गे समाश्रितानि महो. १।३
 विभ्रत्याकाशाधारम् निर्वाणो. ५
 विलप्रवेशतो यत्र ब्रह्मनाड्यन्तरं
 प्रजेत् । तस्मान्नित्यं मूलबन्धः
 कर्तव्यो योगिभिः सदा योगकुं. १।४६
 विश्वद्रुमस्यान्तिकमेवपूजकः प्रदक्षिणी-
 कृत्य ततो मनुं स्वयम् । जप-
 न्वितस्तिप्रमित्ताश्च शास्त्राच्छ्रित्वा...
 बलानि भक्त्या चिनुयात् १विल्वो. १२
 विल्वपत्रं विनापूजा व्यर्था भवति सर्वदा २विल्वो. ६
 विल्वपत्रं विना वस्तु नास्ति किञ्चि-
 त्तत्त्वम् २विल्वो. १५
 विल्वपूजनतोलोकेमत्पूजायाः परा नहि २विल्वो. १९
 विद्यानि मध्ययति (दुःस्वप्ने) ३ये. २।४।७

बीजजाग्रत्तथा जाग्रन्महाजाग्रत्तथैव
 च । जाग्रत्स्वप्नस्तथास्वप्नः स्वप्नजाग्र-
 त्सुषुप्तिकम् । इति सप्तविधो मोहः महो. ५८
 बीजनिद्रायुतः प्राज्ञः आगम. १३
 बीजं तदहमर्जुन भ.गी.१०।३९
 बीजं प्राणं च शक्तिं च दृष्टिं वश्या-
 दिकं तथा । मन्त्रयन्त्राख्यगाय-
 त्रीप्राणस्थापनमेव च । भूतदिकपाल-
 बीजानि यन्त्रस्याङ्गानि वै दश त्रि.म.ना.७।१२
 बीजं मायाविनिर्मुक्तं परं ब्रह्मेति
 कीर्त्यते रामर. ५।१२
 बीजं मां सर्वभूतानां भ.गी. ७।१७
 बीजाक्षरं परं विन्दुं नादं तस्योपरि
 स्थितम् । सशब्दं चाक्षरे क्षीणे
 निश्शब्दं परमं पदम् ध्या. वि. २
 बीजाक्षरेण ल्हौ (हसौ) रूपेण
 तज्जापकानां सम्पत्सारस्वतौ भवतः हयग्री. ६
 बीजाङ्कुराख्यो दृष्टान्तः सदा साध्य-
 समो हि सः अ. शां. २०
 बीजाज्ञानमहामोहापहवाद्यद्विशिष्यते ।
 निर्बीजं त्रैपदं तत्त्वं तदस्मीति
 विचिन्तये सुबा.शीर्षक
 बीजानीतराणि चेताराणि चाण्डजानि...
 बीजोक्तमुभयार्थत्वं रामनामनि दृश्यते रामर. ५।११
 बुद्धयो वै धियस्ता योऽश्माकं प्रचोदया-
 दित्याहुर्मनीषिणः मैत्रा. ६।७
 बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् भ.गी.२।४१
 बुद्धिकर्मेन्द्रियप्राणपञ्चकैर्मनसा धिया ।
 शरीरं सप्तदशभिः सुसूक्ष्मं
 लिङ्गमुच्यते शारीरको. ११
 बुद्धिगुहायां सर्वाङ्गसुन्दरं पुरुषरूप-
 मन्तर्लक्ष्यमित्यपरे मं. वा. १।५
 बुद्धिप्राज्ञमतीन्द्रियम् भ.गी. ६।२१
 बुद्धिनाशात् प्रणश्यति भ.गी. २।६३
 बुद्धिप्रतिबिम्बितचैतन्यं जीवा
 इत्यपरे मन्यन्ते त्रि.म.ना.४।९
 बुद्धिमतामनायासेनाचिरादेव तत्त्व-
 ज्ञानं भवति त्रि.म.ना.८।४
 बुद्धिमेवाप्यैति यो बुद्धिमेवास्तमेति सुबालो. १।११

बुद्धियुक्तो जहातीह
बुद्धियोगमुपाभित्य
बुद्धियोगाद्धनञ्जय
बुद्धिरध्यात्मं, बोद्धव्यमधिभूतं, ब्रह्मा
तत्राधिदैवतम्...

बुद्धिरव्यक्तमेव च
बुद्धिरुदानयोगेन चक्षुर्द्वारा रूपगुणः
षादाधिष्ठितोऽमौ तिष्ठति..

बुद्धिर्ज्ञानमसम्भोहः

बुद्धिर्धृतिः स्मृतिः प्रज्ञानमित्येके
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि

बुद्धिर्मनोऽहङ्कार इति चेतनवत्येषा

बुद्धिर्यस्य न लिप्यते

बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु

बुद्धिर्वाऽन्नमव्यक्तमन्नादं

बुद्धिर्व्यतितरिष्यति

बुद्धिश्च बोद्धव्यं च नारायणः

बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव
च [कठो. ३।३+

बुद्धिं मोहयसीव मे

बुद्धिः पत्नी (शारीरयज्ञस्य)

बुद्धिः पर्यवतिष्ठते

बुद्धिः सा पार्थ तामसी

बुद्धिः सा पार्थ राजसी

बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी

बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञपात्राणि [गर्भो. ११+ प्रा. हो. ४।३

बुद्धीन्द्रियाणि यानीमान्येतान्यस्य

रश्मयः

बुद्धोरत्ना महात्परः

बुद्धेरुणेनात्मगुणेन चैव आराग्रमात्रो-

ऽप्यपरोऽपि दृष्टः

बुद्धेर्भेदं धृतेर्ब्रह्म

बुद्धेः पूर्णविकासोऽयं जागरः परिकीर्त्यते

बुद्धौ शरणमन्विच्छ

बुद्ध्या धृतिगृहीतया

बुद्ध्या बुद्धयति, मनसा सङ्कल्पयति,

वाचा वदति

बुद्ध्या युक्तो यथा पार्थ

भ.गी. २।५०

भ.गी. १८।५७

भ.गी. २।४९

सुबालो. ५।७

भ.गी. १३।६

त्रि. ब्रा. १।६

भ.गी. १०।४

मैत्रा. ६।३१

भ.गी. ७।१०

मैत्रा. ६।५

भ.गी. १८।१७

भ.गी. २।३९

सुबालो. १४।१

भ.गी. २।५२

सुबालो. ६।१

पैङ्गलो. ४।१

भ.गी. ३।२

प्रा. हो. ४।१

भ.गी. २।६५

भ.गी. १८।३२

भ.गी. १८।३१

भ.गी. १८।३०

प्रा. हो. ४।३

मैत्रा. २।९

कठो. ३।१०

श्वेताश्व. ५।८

भ.गी. १८।२९

वराहो. २।६०

भ.गी. २।४९

भ.गी. ६।२५

गर्भो. १

भ.गी. २।३९

बुद्ध्या बुध्यति, चित्तेन चेतयत्य-

हङ्कारेणाहङ्करोति

बुद्ध्या विशुद्ध्या युक्तः

बुद्ध्या सम्भितं स्थापयित्वा तु रुद्रे

बुद्ध्याऽनिमित्ततां सत्यां हेतुं पृथगना-

प्नुवन् । वीतशोकं तथा काम-

मभयं पदमभ्युते

बुद्ध्या पदमनानात्वं नमस्कुर्मोयथाबलम्

बुद्ध्यादिविकारान्तस्तरङ्गः सागरेयथा

बुद्ध्यादण्डमभवत्

बुद्ध्या भावसमन्विताः

बुद्धो बालकवत्कीडेत्कुशलो जडव-

चरेत् । वदेदुन्मत्तवद्विद्वान्गोचर्या

नैगमश्चरेत्

बृहच्च तद्विव्यमचिन्त्यरूपं सूक्ष्माच्च

तत्सूक्ष्मतरं विभाति [मुण्ड. ३।१।७+ गुह्यका. ३७

बृहज्जाबालाभिधां मुक्तिभृति ममोपदेशं

कुरुष्व

बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवातितान् श्वेताश्व. २।३

बृहज्ज्योतिषं त्वासादयामि

बृहतीमभिसम्पादयेदेष वै कृत्स्न

आत्मा यद्वृहती

(एवमेव) बृहती सर्वतः छन्दोभिः

शरीरैः परिवृता

बृहत्तिथिर्दश पञ्चच नित्यासषोडशीकं

पुरमथ्यं विभर्ति

बृहत्पाण्डुरवासाः सोमराजमिति

बृहत्पाण्डुरवासा अतिष्ठाः सर्वेषां

भूतानां मूर्धेति

बृहत्पाण्डुरवासाः सोमो राजेति वा

बृहत्पाण्डुरवासाः सोमो राजेति

(मा. पा.)

बृहत्साम तथा सामां

बृहद्बृहन्नं मधोर्मधुवनं तालस्तालवनं

काम्यं काम्यवनं बहुला बहुलवनं

कुमुदः कुमुदवनं खदिरः खदिरवनं

भद्रो भद्रवनं भाण्डीर इति भाण्डी-

रवनं श्रीवनं लोहवनं वृन्दावनमेतै-

राष्ट्रता पुरी भवति (मथुरा) गोपालो. १।१६

ना. प. ६।४

भ.गी. १८।५१

अ.शिरः. ३।९

अ. शां. ७८

अ.शां. १००

आ. प्र. १५

गायत्रीर. १

भ.गी. १०।८

ना.प. ५।३८

गुह्यका. ३७

बृ. जा. १।४

श्वेताश्व. २।३

चिन्त्यु. १९।९

१ ऐत. ३।५।३

१ ऐत. ३।५।४

त्रिपुरो. १०

कौ. त. ४।१८

कौ. त. ४।२

बृह. २।१।३

बृ. उ. २।१।३

भ.गी. १०।३५

बृहद्रथन्तरयो रूपेण संहिता सन्धीयते

इति तादर्थ्यः

इयेत. १।६।१

बृहद्रथन्तरे अनूच्ये भद्रयज्ञायज्ञीये

कौ. त. १।५

बृहद्रथन्तरे सामनी पूर्वी पादौ ध्यैत

कौ. त. १।५

(ॐ) बृहद्रथो (ह) वै नाम राजा

राज्ये ज्येष्ठं पुत्रं निधापयित्वेदम-

शाश्वतं मन्यमानः शरीरं वैराग्य-

मुपेतोऽरण्यं निर्जगाम [मैत्रा. १।१

+मैत्रे. १।१

बृहन् प्राण्डरवासः सोमराजमिति

बृह. २।१।१५

बृहस्पतिरुपवक्ता

चिन्त्युप. २।१

बृहस्पतिर्वै शुक्रो भूत्वेन्द्रस्याभयाया-

सुरेभ्यः क्षयायेमामविद्यामसृजत्

मैत्रा. ७।९

बृहस्पतिः पुरोधया

चिन्त्यु. ८।२

बृहस्पते अति यदर्यो अर्हान्मुमद्विभाति

क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस क्रतु

प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्

वनदु. ३१

[क्र.मं. २।२३।१५+वा.सं. २६।३

[+तै. सं. १।८।२२।२

बृहस्पते न परः साम्नो विदुः

इयेत. १।५।४

बोद्धव्यमेवाप्येति यो बोद्धव्यमेवास्तमेति

सुबालो. ९।१

बोद्धव्यं च विकर्मणा

भ.गी. ४।४७

बोद्धा भवति कर्ता भवति विज्ञाता

भवत्यन्नमुपास्वेति

छांदो. ७।९।१

बोधचन्द्रमसि पूर्णविग्रहे मोहरादुमु-

षितात्मतेजसि । ज्ञानदानयजना-

दिकाः क्रिया मोचनावधि वृथैव

सिष्ठते

वराहो. २।७४

बोधयन्तः परस्परम्

भ.गी. १०।९

बोधयन्तीं त्वासादयामि

चिन्त्यु. १९।१

बोधस्योपरतिः फलम्

अध्यात्मो. २८

बोधानन्दमयानन्तधूपदीपावलिभिरति-

शोभितं... निरतिशयाद्वैतपरमा-

नन्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना. ७।१२

बोधानन्दमयानन्तपरमविलासविभूति-

विशेषसमष्टिमण्डल. चिद्रूपादित्य-

मण्डलं द्वात्रिंशद्व्यहमेदैरधिष्ठितम्

त्रि.म.ना. ७।८

बोधानन्दमयै-रनन्तनित्यपरिजनैः

परिसेवितं श्रीसखीमेवं लक्ष्मीं

ध्यात्वा... बोधानन्दवनं प्राप्य...

यदेव ब्रह्मविद्यापादवैकुण्ठं सह-

ज्ञानन्दप्राकारैः समुज्ज्वलति

त्रि.म.ना. ६।८

बोधानन्दमयैरनन्तनित्यमुक्तैः परिसेवितं सि. सा. ६

बोधानन्दमहोज्ज्वलम्

सि.सा. ६

ब्रह्मकर्मसमाधिना

भ.गी. ४।२४

ब्रह्मकर्म स्वभावजम्

भ.गी. १८।४२

ब्रह्मकल्पवनामृतपुष्पवृष्टिभिः सन्तत-

मानन्दं ब्रह्मानन्दरसनिर्भरैरसंख्यै-

रतिमङ्गलं... निरतिशयाद्वैतपरमा-

नन्दलक्षणमादिनारायणं...

त्रि.म.ना. ७।१२

ब्रह्मकार्यमिति ज्ञात्वा ईशानं

प्रतिपद्यते

पञ्चब्र. २२

ब्रह्म-कैवल्य-जाबाल-श्वेताश्वौ हंस

आरुणिः

मुक्ति. १।३१

ब्रह्मक्षत्रादिकं सर्वं यस्य स्यादोदनंसदा

पा. ब्र. ४४

ब्रह्मक्षत्रियवैश्यशूद्रा इति चत्वारो

वर्णास्तेषां वर्णानां ब्राह्मण एव

प्रधान इति वेदवचनानुरूपं

स्मृतिभिरप्युक्तम्

व. सू. उ. २

ब्रह्म खल्विदं वाव सर्वम्

मैत्रा. ४।६

ब्रह्मग्रन्थि ततो भित्वा विष्णुग्रन्थि

भिनत्यसौ । विष्णुग्रन्थि ततो

भित्वा रुद्रग्रन्थि भिनत्यसौ

वराहो. ५।६५

ब्रह्मग्रन्थि ततो भित्वा विष्णुग्रन्थि

भिनत्यतः । रुद्रग्रन्थि च भित्त्वैव

कमलानि भिनत्ति षट्

यो.कुं. १।८५

ब्रह्मग्रन्थं कृतग्रन्थं गोपग्रन्थं गुरुतरुणः ।

तेषां पापानि नश्यन्ति गोपी-

चन्दनधारणात्

गोपीचं. ११

ब्रह्मचर्यमहिंसा च शरीरं तपउच्यते

भ.गी. १७।१४

ब्रह्मचर्यमहिंसा च सत्यास्तेयापरिग्रहान् ।

सेवेत योगी निष्कामो योग्यतां

स्वमनो नयन्

भवसं. ३।१६

ब्रह्मचर्यमहिंसां चापरिग्रहं च सत्यं च

यत्नेन हे रक्षत हे रक्षतं...

आरुणि. ३

ब्रह्मचर्यमेव तद्यद्रात्रौ रत्या संयुज्यन्ते

प्रश्नो. १।१३

ब्रह्मचर्यशान्तिसंग्रहणम्

निर्वाणो. ८

(यदि वेतरथा) ब्रह्मचर्यादेन प्रव्रजेत्

गृहाद्वा वनाद्वा

प. हं. प. १

ब्रह्मचर्यं नाम सर्वावस्थासु मनो-
 वाक्यकर्मभिः सर्वत्र मैथुनत्यागः शां. १।१।३
 ब्रह्मचर्यं परिसमाप्य गृही भवेत् जा. वा. ४
 ब्रह्मचर्यं भवति...। किं गोत्रोन्वह-
 मस्मीति... [मा. पा.] छां. उ. ४।४।१
 ब्रह्मचर्यं भवति विवत्स्यामि किं गोत्रो-
 ऽहमस्मीति छां. द. ४।४।१
 ब्रह्मचर्यमृतपात्रं वा ऽल्लापुपात्रं दारुपात्रं वा
 ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भवेत् । गृहाद्धनी
 भूत्वा प्रव्रजेत् [ना. प. ३।७७+ याज्ञव. १
 ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भूत्वा वानप्रस्था-
 श्रममेत्य वैराग्यभावे ऽप्याश्रमक्रमा-
 नुसारेण यः सञ्जयस्यति स कर्म-
 सञ्जयासीति [१ सं. सो. २।१३+ ना. प. ५।३
 ब्रह्मचर्यापरिग्रहाहिंसासत्यं यत्नेन रक्षन्
 ... भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय भवति प. हं. प. ६
 ब्रह्मचर्याश्रमे क्षीणे (स्त्रियो) गुरुशुश्रूषणे
 रतः । वेदानधीत्यानुज्ञात उच्यते
 गुरुणा ऽऽश्रमी [कुण्डिको. १।६+ २ सञ्जयासो. २
 ब्रह्मचर्याश्रमे ऽधीत्यवानप्रस्थाश्रमे ऽधीत्य
 ससर्वसंविद्यासंसङ्ग्यासंसङ्ग्यासम् निर्वाणो. ८
 ब्रह्मचर्येण सन्तिष्ठेदप्रमादेन मस्करी
 कठरु. ८
 ब्रह्मचर्येण सञ्जयस्य सङ्ग्यासाज्जातरूप-
 धरो वैराग्यसङ्ग्यासी ना. प. ५।३
 ब्रह्मचर्येण हरन्ति देवाः पा. ब्र. ३
 ब्रह्मचर्येण हेव यो ज्ञाता तं विन्दते ऽथ
 यदिष्टमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव
 तद्ब्रह्मचर्येण हेवेष्टात्मानमनुविन्दते छां. द. ८।५।१
 ब्रह्मचर्येण हेव सत आत्मनस्त्वाणं विन्दते-
 ऽथ यन्मौनमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव
 तद्ब्रह्मचर्येण हेवात्मानमनुविद्य मनुते छां. द. ८।५।२
 ब्रह्मचर्ये भगवति वत्स्याम्युपयां
 भगवन्त्वमिति छां. ४।४।३
 ब्रह्मचर्येण हेवात्मानमनुविन्दते छां. द. ८।५।१
 ब्रह्मचर्येण हेवात्मानमनु विद्य मनुते छां. ८।५।२
 ब्रह्मचात्मानमोमित्येकीकृत्य तदेक-
 मजरममृतमभय-मोमित्यनुभूय
 तस्मिन्निर्दुःखं त्रिशरीरमारोग्य
 तन्मयं हि तदेवेति संदरेत् चृ. वि. १।२

ब्रह्मचारिव्रते स्थितः भ. गी. ६।१४
 ब्रह्मचारी गृहस्थश्च २ तत्त्वो. ३
 ब्रह्मचारी गृहस्थो वा ललाटहृदयकण्ठ-
 बाहुमूलेषु वैष्णवायत्र्या कृष्णा-
 दिनामभिर्वा धारयेत् वासुदेवो. ४
 ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो वा मुख्य-
 वृत्तिकाचेद्ब्रह्मचर्यसमाप्यगृहीभवेत् ना. प. ३।७७
 ब्रह्मचारी ज्ञानवान्भवति ना. उ. ता. ३।१
 ब्रह्मचारी धनदायी मेधावी श्रोत्रियः
 प्रियो विद्यया वा विद्यां यः प्राह
 तानि तीर्थाणि षण्मम संहितो. ३.५
 ब्रह्मचारी मिताहारी योगी योग-
 परायणः । अब्दादूर्ध्वं भवेत्सिद्धो
 नात्रकार्या विचारणा [यो. चू. ४२+ व्या. वि. ७२
 ब्रह्मचारी वानप्रस्थो (वा) ललाट-
 कण्ठ-हृदय-बाहुमूलेषु वैष्णव-
 गायत्र्या कृष्णादिष्वनामभिर्वा
 धारयेत् [वासुदेवो. ३+ गोपीचं. ४
 ब्रह्मचारी वेदमधीत्य वेदोक्ताचरित-
 ब्रह्मचर्येण दारानाहृत्य पुत्रानुत्पाद्य
 ताननुपाधिभिर्वितत्येष्ट्या च
 शक्तितो यज्ञैः कठरु. २
 ब्रह्मचारी वेदमधीत्य वेदो वेदान्वा
 चरेद्ब्रह्मचर्यम् कठरु. १७
 ब्रह्म चिद्ब्रह्म भुवनं ब्रह्मभूतपरम्परा ।
 ब्रह्माहं ब्रह्मचिच्छत्रुब्रह्मचिन्मित्र-
 वान्धवाः अ. पू. ५।२०
 ब्रह्मचैतन्यं तेषु प्रतिबिम्बितं भवति त्रि. म. ना. ४।५
 ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निज्जा-
 ध्येमा ५ शान्तिमत्यन्तमेति कठो. १।१७
 ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्तात् [महाना. ५।५+ २ शिवसं. ३२
 [वा. सं. १३।३+ अथर्व. ४।१।१+
 [तै. सं. ४।२।८।२+ साम. १।३२१
 ब्रह्मज्येष्ठमुपासते तैत्ति. २।५
 ब्रह्मज्ञानप्रभासं न्याकालो गच्छति
 धीमताम् पा. ब्र. ७
 ब्रह्मज्ञानोत्पत्तेः प्रकृतिं व्याख्यास्यामः ।
 को नाम स्वयम्भूः पुरुष इति गायत्री. १
 ब्रह्मज्ञानोपायतया यद्विभूतिः प्रकीर्तिता का. र. शीर्षक

ब्रह्मज्ञेयमजं नित्यमजेनाजं विबुद्धयते
 ब्रह्मणः पादचतुष्टयं निविशेषं भवति त्रि.म.ना.४।१
 ब्रह्मणःसोम्यतेपादं ब्रवाणीति।छां.४।६।३ +७।३+८।३
 ब्रह्मणश्च ते पादं ब्रवाणीति छांदो. ४।५।२
 ब्रह्मणस्त्वा शपथेन शपामि वनदु. १६०
 ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः भ.गी.१७।२३
 ब्रह्मणस्पतिमेकाक्षरं ग.शो. ५।६
 ब्रह्मण्यं बहुपुत्रताम् । अद्धामेधे प्रज्ञा तु
 आतवेदः संददातु महाना.१४।५
 ब्रह्मणः कुत चद्रवः १आत्मो. २६
 ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः
 [तैत्ति. १।४।१ ना.प. ४।४५
 ब्रह्मणः सकाशात्पञ्चमहाभूतानि
 तन्मात्राणि जायन्ते ना.पू.ता.५।३
 (प्रकृतिरिति च-) ब्रह्मणः सका-
 शान्नानाविचित्रजगन्निर्माणसामर्थ्य-
 बुद्धिरूपा ब्रह्मशक्तिरेव प्रकृतिः निरा. ८
 ब्रह्मणः सर्वभूतानि जायन्ते परमात्मनः यो.शि. ४।५
 ब्रह्मणः सलोकतां सार्ष्टितां सायुज्यं यान्ति नृ. प. १।७
 ब्रह्मणः सायुज्यमृषयोऽगच्छन् सहवै. १३
 ब्रह्मणा कल्पिताकारा लक्षशोऽप्यथ
 कोटिशः । संख्यातीताः पुरा जाता
 जायन्तेऽद्यापि चाभितः (जीवाः) महो.५।१३६
 ब्रह्मणा तन्यते विश्वं मनसैव स्वयम्भुवा ।
 मनोभयमतो विश्वं यन्नाम परिदृश्यते महो. ४।५०
 ब्रह्मणा त्वा शपामि वनदु. १६०
 ब्रह्मणा पिहिता गुहा इतिहा. १७
 ब्रह्मणा मुखेन न वै देवा अभन्ति न
 पिबन्त्येतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति छांदो.३।१०।१
 ब्रह्मणा वाव सर्वे वेदा महीयन्ते तैत्ति. १।५।३
 ब्रह्मणि म आत्माऽमृतत्वाय म.ना.१६।२,३
 ब्रह्मणे त्वामहसाँ मित्यात्मानंयुञ्जीत म.ना.१७।१५
 ब्रह्मणेदक्षिणां दत्त्वा शान्त्यै पुलकमाहरेत् बृ.जा. ३।१९
 ब्रह्मणे स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्ये स१९स्रव-
 मवनयति बृह. ६।३।३
 ब्रह्मणेव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति छांदो.३।१०।३
 ब्रह्मणो जायमानस्य ब्रह्मत्वं च तथा
 भवेत् (सुवर्णाज्जायमानस्य सुव-
 र्णत्वं च शाश्वतम्) यो. शि. ४।७

ब्रह्मणोऽन्यतरभास्तिब्रह्मणोऽन्यजगन्नच ते.वि. ६।४९
 ब्रह्मणोऽन्यत्पदं नहि ते.वि. ६।५०
 ब्रह्मणोऽन्यत्फलं नहि ते.वि. ६।५०
 ब्रह्मणोऽन्यन्न किञ्चन ते.वि. ३।३२
 ब्रह्मणोऽपि मायोपाधिवशात्सगुण-
 परिच्छिन्नादिप्रतीतिरुपाधिवि-
 लयान्निर्गुणनिरवयवादिप्रतीति-
 रित्युपनिषत् त्रि.म.ना.३।७
 ब्रह्मणोवापतद्विजयेदेवामहीयध्वम् (मा.पा.) केनो. ४।१
 ब्रह्मणो वा एतद्विजये महीयध्वम् केनो. ४।१
 ब्रह्मणो वायुरभवत् गायत्रीर. १
 ब्रह्मणो वायुर्वायोरोक्कार ओक्कारात्सा-
 वित्री सावित्र्या गायत्री गायत्र्या
 लोकाः भवन्ति [म.शिरः.३।१५+ बटुको. २७
 ब्रह्मणो वावैतत्तेजः परस्यामृतस्य.. मैत्रा. ६।२७
 ब्रह्मणो वावैता अध्यास्तनवः परस्या-
 मृतस्याशरीरस्य मैत्रा. ४।६
 ब्रह्मणो विवरं यावद्विशुदाभासनाल-
 कम् । वैष्णवी ब्रह्मनाडी च निर्वाण-
 प्राप्तिपद्धतिः त्रि.ब्रा. २।६
 ब्रह्मणोऽव्यक्तम् त्रि.ब्रा. १।१
 ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाऽहं म.गी.१४।२७
 ब्रह्मणो हृदयस्थानं कण्ठे विष्णुः
 समाश्रितः । तालुमध्ये स्थितो
 रुद्रो ललाटस्थो महेश्वरः ब्र. वि.४१
 ब्रह्मण्यमृते तेजोमये परञ्जोतिर्मये...
 रमते... (गणेशः) ग. शो.५।७
 ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षो ब्रह्मण्यो विष्णु-
 रच्युतः [नारा. ४+ आ. प्र. १
 ब्रह्मण्याधाय कर्माणि म.गी. ५।१०
 ब्रह्मण्येव विज्ञीनात्मा निर्विकारो
 विनिष्क्रियः अध्यात्मो.४३
 ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनः।
 ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षो ब्रह्मण्यो
 विष्णुरच्युतः [नारा. ४ आ. प्र. १
 ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृच्छ्रध्वद्ब्रह्मलोके महीयते इतिहा. १३
 ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते मुण्ड. २।२।४
 ब्रह्म तं परादाद्योऽन्यत्रात्मनो ब्रह्म वेद बृह.४।५।७

ब्रह्मर्तजोभयानन्तरसप्रवाहैरतिशोभितं
 ब्रह्मविद्या-तरङ्गिण्याः प्रवाहैः
 सुमङ्गलं निरतिशयानन्तदिव्यानन्द-
 तैजोज्वालाराशिमण्डलं ज्वलति सि.सा. ३।१
 ब्रह्मर्तजोरात्र्यभ्यन्तरसमासीनं...
 त्रिष्वक्सेनं ध्यात्वा...विद्याविभूति
 व्याप्य...परमानन्दं प्राप त्रि.म.ना.६।६
 ब्रह्मत्वं रसचेतसि वराहो.२।७९
 ब्रह्मत्वे योजिते स्वामिजीवभावो
 न गच्छति वराहो.२।७०
 ब्रह्म देहत्वमापन्नं वारिबुद्बुद्धतामिव ।
 दशद्वारपुरं देहं दशनाडीमहापथम् यो.शि.१।१६५
 ब्रह्मद्वारमिदमित्येवैतदाह यस्तपसा-
 हतपाप्मा मैत्रा. ४।४
 ब्रह्मद्वारे प्रविष्टे तु सम्यक्कथनमाचरेत् योगकुं.२।४२
 ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति भ.गी. २।७२
 ब्रह्मनिष्ठस्तथा योगी पृथग्भावं
 न विन्दति अमन. १।३१
 ब्रह्मभूतिथिर्नमस्यः कठो. १।९
 ब्रह्मन्निधिं मनसा वेदयन्तः पश्यन्तो
 गुह्यमपरं परं च । अनध्वगा
 अध्वसु पारयिष्णवः ब्राह्मणास्तु
 स्रष्टाः सूर्येण इतिहा. १८
 ब्रह्मस्त्वमसि विश्वधृत्तेजोवास्त्वमसि म.ना.१७।१५
 ब्रह्मन् देवदर्शीत्याख्याथर्वणशास्त्रायां
 परमतत्त्वरहस्याख्याथर्वणमहा-
 नारायणोपनिषदि त्रि.म.ना.१।२
 (ॐ) ब्रह्मन् ॐ ब्रह्मन् ग. शो. २।१
 ॐ ब्रह्मन् वराहो. २।१९
 (एवं) ब्रह्मपरिज्ञानादेव मत्तोऽमृतो
 भवेत् मुण्ड. २।२।११
 ब्रह्म पश्चात् ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण
 ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा तैत्ति. २।५
 ब्रह्मपुत्रस्तपस्तेपे सिद्धक्षेत्रे महायशाः
 स सर्वस्य वक्ता ग. पू. १।६
 ब्रह्मपूता पुनातु माम् महाना.११।२
 ब्रह्म प्रजापति (अस्तुजत्) बृह. ५।५।१
 ब्रह्मप्रणवध्यानानुसन्धानपरो भूत्वा
 सर्वकर्मनिर्मुक्तः...सत्यवाक्बुद्धि-

रद्रोही ग्राम एकरात्रं पत्तने पञ्चरात्रं
 क्षेत्रे पञ्चरात्रतीर्थे पञ्चरात्रमनिकेतः
 स्थिरमतिर्नानृतवादी गिरिकन्दरेषु
 वसेदेक एव ना.प. ७।२
 ब्रह्मप्रणवमनुस्मरन् भ्रमरकीटन्यायेन
 शरीरत्रयमुत्सृज्य सत्रयासेनैव
 देहत्यागं करोति, स कृतकृत्यो
 भवति ना.प. ३।८७
 ब्रह्मप्रणवसन्धानं नादोज्योतिर्मयःशिवः ना. वि. ३०
 ब्रह्मप्रणवसंलभनादो ज्योतिर्मयात्मकः ना. वि. ४६
 ब्रह्मप्रणवः षोडशमात्रात्मकः सोऽवस्था-
 चतुष्टयचतुष्टयगोचरः प. हं. पं. ९
 ब्रह्म प्रपद्ये ब्रह्मकोशं प्रपद्ये सहवै. २३
 ब्रह्मप्रवृत्तौ तत्प्रणवहंससूत्रेणैव ध्यान-
 माचरन्ति पा. ब्र. ३
 ब्रह्म ब्रह्मविदां च यत् अ.पू. ३।१९
 ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः भ.गी. ८।२४
 ब्रह्म ब्रह्मेत्यथायान्ति ये विदुर्ब्राह्मणा-
 स्तथा । अत्रैव ते लयं यान्ति मंत्रिको. २०
 लीनाश्चाव्यक्तशालिनः
 ब्रह्म ब्राह्मणैश्च गां, गोभिर्ब्राह्मणान्
 ब्राह्मण्येन हविर्हविषा आयुरायुषा
 सत्येन सत्यं धर्मेण धर्मं तर्पयामि... अ.शिरः.१।१
 ब्रह्म ब्राह्मी व्याहृतिं ब्रह्मदैवतं...भूतानि २ प्रणवो. २
 स्थावरजङ्गमान्धभवत्
 ब्रह्मभावमिदं सूत्रं धारयेद्यः स चेतनः
 [ब्रह्मो. ९+ ना. प. ३।८०
 ब्रह्मभावमिदं सूत्रं धारयेद्यः स मुक्तिभाक् परब्र. ११
 ब्रह्मभावं प्रपद्येव यतिर्नावर्तते पुनः २ ब्राह्मो. २५
 ब्रह्मभावे मनश्चारं ब्रह्मचर्यं जा.द. १।१४
 ब्रह्मभूतमकल्मषम् भ.गी. ६।२७
 ब्रह्मभूतः प्रशान्तात्मा ब्रह्मानन्दमयः
 सुखी । स्वच्छरूपो महामौनी
 वैदेही मुक्त एव सः
 ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा
 ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति
 ब्रह्मभूयाय कल्पते [भ.गी. १४।२६+ १८।५३
 ब्रह्मभेदो न कथितो ब्रह्मव्यतिरिक्तं
 न किञ्चिदस्ति त्रि.म.ना.४।३

ब्रह्ममात्रमिदं सर्वं ब्रह्मणोऽन्यन्न किञ्चन ते.वि.३।३२
 ब्रह्ममात्रं जगदिदं ते.वि.५।३०
 ब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नः...ब्रह्मभूयाय भवति प.हं. प. ६
 ब्रह्ममूर्धानं दिक्श्रवणं ब्रह्माण्डगण्डं... ग.शो. ४।७
 दृष्ट्वा स्तुवन्तिस्म त्रिसु. १+
 ब्रह्मेतु माम् । मधु मेतुमाम् । ब्रह्म-
 मेव मधुमेतु माम् । [तै.आ.१०।४८+ म.ना.१२।१
 ब्रह्ममेधया । मधु मेधया ब्रह्ममेव मधु-
 मेधया । अद्या म्ने देवसेवितः
 प्रजावत्सावीः सौभगम् [त्रिसु.२+ म.ना.१२।२
 ब्रह्म मेधवा । मधु मेधवा ब्रह्ममेव
 मधु मेधवा [म. ना. १२।३ त्रिसु. ३
 ब्रह्ममेव मधु मेधवा [त्रिसु. ३+महाना १२।३+
 [तै. आ.+ १०।५०
 ब्रह्मयज्ञेन यक्ष्यमाणः प्राच्यां दिशि
 प्रामादच्छदिर्दर्शुदीच्यांप्रागुदीच्यां
 बौद्धि आदित्ये दक्षिणत उपवी-
 योपविश्यहस्ताववनिज्यत्रिराचामेत् सहवै. १५
 ब्रह्मयज्ञो वा प्लव यत्पूर्वेषां वचनं मैत्रा. १।१
 ब्रह्मरन्ध्रे गते वायौ नादश्चोत्पद्यतेऽनघ जा.द. ६।३६
 ब्रह्मरन्ध्रं सुषुम्णाया वदनेन पिधाय
 आ । अलम्बुसा सुषुम्णायाः
 कुहूर्नाडी वसत्यसौ वराहो. ५।२३
 ब्रह्मरन्ध्रे भ्रुवोर्मध्ये हृदये चित्रविं
 हरिम् । गोपीचन्दनमालिष्य
 तत्र ध्यात्वाऽनुयात्परम् वासुदेवो.११
 ब्रह्मरन्ध्रे महास्थानेवर्ततेऽसततं शिवा ।
 चिच्छक्तिः परमा देवी मध्यमे
 सुप्रतिष्ठिता यो.शि.६।४७
 ब्रह्मरूपतया पश्यन्ब्रह्मैव भवति स्वयम् वराहो.२।१३
 ब्रह्मरूपतया ब्रह्म केवलं प्रतिभासते २ आत्मो. १
 ब्रह्मरूपं च विज्ञेयं सर्वरूपं विभावयेत् २ बिल्वो. ९
 ब्रह्मलोकपदान्तेषी रुद्राराधनतत्परः अ. ना. २
 (अत एव) ब्रह्मलोकस्था अपि ब्रह्म-
 सुसाक्षिन्तश्रवणादि कृत्वा तेन
 सह केवलं सम्पन्नो मुक्ति.१।५८
 ब्रह्मलोकौ गतः प्रौक्तौ वायव्यः प्राणरूपिणः।
 पतञ्जल्य जीवन्त्यो लोमानि परिचक्षते गुणका.१७

ब्रह्मवर्चसेन मे सम्पितृस्व महाना.१६।११
 ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भवति [मा. पा.] छां.उ.२।१२।२
 ब्रह्मवर्चस्यर्षिसंहिता भवति संहितो. १।१
 ब्रह्मवर्चस्वी भवति यस्तथाऽवीते संहितो. १।१
 ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भवति सर्वमायुरेति
 ज्योग्जीवति महान्प्रजयां पशु-
 भिर्भवति महान्कीर्त्या न प्रत्यङ्कु-
 मिमाचामेन्न निष्ठीवेत्तद्व्रतम् छांदो.२।१२।३
 ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् बृह. १।४।१
 ब्रह्म वा इदं सर्वम् नृसिंहो. ७।५
 ब्रह्मवाक्यं तत् महावा. २
 (ॐ) ब्रह्मवादिनो वदन्ति । किं कारणं
 किंब्रह्म कुतः स्म जातोजीवाम केन
 क च सम्प्रतिष्ठाः श्वेताश्व. १।१
 ब्रह्मवादिनो वदन्ति यद्वसूनां प्रातः स-
 वनः रुद्राणां माध्यन्दिनः सवन-
 मादित्यानां च विश्वेषां च देवानां
 तृतीयसवनम् छांदो.२।२४।१
 ब्रह्मवादिनो वदन्त्यस्तमित आदित्ये
 कथं वास्योपस्पर्शनमिति १ सं.सो. १।३
 ब्रह्मवान् भवति (ब्रह्मोपासकः) तैत्ति.३।१०।४
 ब्रह्मविज्ञानी किं गृह्णाति जहाति किम् पा. ब्र.३२
 ब्रह्मविज्ञानलाभाय...शान्तिदान्त्या-
 दिभिः सर्वैः साधनैः सहितो भवेत् ना.प. ६।२६
 ब्रह्मविज्ञानसम्पन्नः प्रतीतमखिलं जगत्।
 पश्यन्नपि सदा नैव पश्यति
 स्वात्मनः पृथक् [पा. ब्र. ५।१+ वराहो.१।२७
 ब्रह्मविद् इव सोम्य ते मुखं भाति
 को नु त्वाऽनुशशासेति छांदो.४।१४।२
 ब्रह्मविदाप्रोति परम् [तैत्ति.२।१।१+ भस्मजा. २।५
 ब्रह्मविदित्येवमेवैव भगवन्निति वै
 याज्ञवल्क्य जावा. ५
 ब्रह्मविदिदमयमिदमेकविंशतिरन्नादन्न-
 रसमयात्प्राणो ह्यानोऽपान
 आकाशः पृथिवी पुच्छः षड्विंशतिः तैत्ति. २।१०
 ब्रह्मविदिवसोम्यभासि, कोनुत्वानुशशास छांदो.४।१४।२
 ब्रह्मविद्विद्वसति ज्ञानात्सर्वं ब्रह्मात्मनैव
 तु । ब्रह्मज्ञानादिकं सर्वं यस्य
 त्यादोदनं सदा पा. ब्र. ४४

ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः भ.गी.५।२०
 ब्रह्मविद्य एवं वेदेत्युपनिषत् तैत्ति. २।१०
 ब्रह्मविद्यापरिज्ञानं ब्रह्मप्राप्तिकरं स्थितम् शु.र.उ. ३।१
 ब्रह्मविद्यासाकारश्चानन्दसाकार उभया- त्रि.म.ना.२।१
 त्मकसाकारश्चेति
 ब्रह्मविद्यासेविनो ज्ञानिन आत्मवेदनेन सामर. ५२
 तां लीलां न प्राप्नुवन्ति
 ब्रह्मविद्यां च बाल्यं च निर्विद्य मुनि- शाट्या. २४
 रात्मवान् [अ. पू. ४।३८ पैङ्गलो. ४।१
 ब्रह्मविन्मात्रेणाकुलमेकोत्तरशतं तारयति
 ब्रह्मविष्णुमयो रुद्रः, अग्नीषोमात्मकं
 जगत् । पुलिङ्गं सर्वमीशां रुद्रह. ९
 स्त्रीलिङ्गं भगवत्युमा वृ.जा.४।३७
 ब्रह्मविष्णुमहेशानां त्रय्यग्नीनांच धारणं
 ब्रह्मविष्णुमहेश्वरत्वमनुसन्धाय...मूल- परब्र. ४
 मेकं सत्यं सृष्टमयं विज्ञातं स्यात्
 ब्रह्मविष्णुमहेश्वरात्मकमभिप्रयकलोपेवं पा. ब्र. ३
 चिद्वन्थिबन्धनम्
 ब्रह्मविष्णुरुद्रादयो यस्मादुत्पद्यन्ते सामर. २२
 लीयन्ते
 ब्रह्म-विष्णु-रुद्रादीनामेकलक्ष्यं सर्व-
 कारणं परं ब्रह्मात्मन्येव पश्यमानो गो. पू. ३।८
 गुहाविहरणमेव निश्चयेन ज्ञात्वा... पा. ब्र. ३
 परं ब्रह्म प्राप्नोति मुक्तिको. २।६४
 भ.गी. १।३।११
 ब्रह्मविष्णुरुद्रेन्द्रास्ते सम्प्रसृयन्ते
 सर्वाणि चेन्द्रियाणि सह भूतैः त्रि.ब्रा. २।१६२
 ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणी चैतन्यदीप्ता
 (माया) नृसिंहो. ९।३
 ब्रह्मविष्णुशिवादीनां मन्त्रं जाप्यं
 विशारदैः योगरा. ३
 ब्रह्मविष्णवादिगणानामीशभूतमित्याह
 तद्गणेश इति ग. शो. ३।१
 ब्रह्मविष्णवादिभिः सेव्यं सर्वेषां जनकं
 परम् (ब्रह्म) पञ्चब्र. १३
 [आसुरमिति च-] ब्रह्मविष्ण्वीशानेंद्रा-
 दीनामैश्वर्यकामनया निरशनजपाभि-
 होत्रादिष्वन्तरात्मानं सन्तापयति
 चात्युपरागद्वेषविहिंसादम्भा-
 यपेक्षितं तप आसुरम् निरा. २७
 ५३

[जीव इति च-] ब्रह्मविष्ण्वीशाने-
 न्द्रादीनां नामरूपद्वारा स्थूलोऽह-
 मिति मिथ्याध्यासवशाज्जीवः निराळ. ७
 ब्रह्मवृत्त्या हि पूर्णत्वं तथा पूर्णत्वम-
 भ्यसेत् ते. बि. १।४२
 ब्रह्मवेदनमात्रेण ब्रह्माप्नोत्येव मानवः कठक. १२
 ब्रह्मवेदस्याथर्वणं शुक्रमत एव मन्त्राः
 प्रादुर्बभूवुः २ प्रणवो. ४
 ब्रह्मव्यतिरिक्तं न किञ्चिदस्ति त्रि.म.ना.४।२
 (तस्मात्) ब्रह्मव्यतिरिक्तं सर्वं
 बाधितमेवं त्रि.म.ना.३।३
 ब्रह्मव्यतिरिक्तं सर्वं नश्वरमिति निश्चि-
 त्याथो क्रमेण यः सञ्जयसति स
 सञ्जयासोऽनिमित्तसञ्जयासः ना. प. ५।४
 ब्रह्मशब्देन तद्ब्रह्म स्वप्रकाशात्मरूपकम् शु.र.उ. ३।८
 ब्रह्म शाश्वतम् त्रि. ता. १।५
 [तप इति च-] ब्रह्म सत्यं जगन्मि-
 थ्येत्यपरोक्षज्ञानाभिना ब्रह्माद्यैश्व-
 र्याशासिद्धसङ्कल्पबीजसन्तापं तपः निराळ. २८
 ब्रह्मसदनं चरतो मे ध्यातः स्तुतः पर-
 भेश्वरः... परार्धान्ते सोऽबुध्यत गो. पू. ३।८
 ब्रह्मसन्ध्याक्रिया मनोयागः पा. ब्र. ३
 ब्रह्म स ब्रह्मविस्त्वयम् मुक्तिको. २।६४
 ब्रह्म सम्पद्यते तदा भ.गी. १।३।११
 ब्रह्म सम्पद्यते योगी न भूयः संसृतिं
 ब्रजेत् त्रि.ब्रा. २।१६२
 ब्रह्म सरूपमनुमेनमायायनं मा
 विवधीर्विक्रमस्त्व[महाना. १३।११+ चित्त्यु. १५।१
 (तथा) ब्रह्म सर्वान्तरात्मा मध्ये
 प्रकाशितम् अद्वैतो. ३
 ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति छो. २।२३।१
 ब्रह्मसाक्षात्कारानुभवविशेषबोधवार-
 त्तानन्तप्राकारैः समुज्ज्वलितम् सि. सा. ३।१
 ब्रह्मसूत्रपदं ज्ञेयं ब्राह्मं विध्युक्तलक्षणम् पा. ब्र. १।१
 ब्रह्मसूत्रपदैश्वर्यं भ.गी. १।३।५
 ब्रह्मसूत्रमहमेव, विद्वान्निवृत्सूत्रं
 त्यजेद्विद्वान्य एवं वेद आरुणि. ३
 ब्रह्म सोमोऽहं पवनः सोमोऽहं पवते
 सोमोऽहं... अममजा. ३।५

ब्रह्मस्थाने तु नादः स्याच्छाकिन्यमृत-
वर्षिणी । षट्चक्रमण्डलोद्धारं ज्ञान-
दीपं प्रकाशयेत्

ब्र.वि. ७६

ब्रह्म स्वयम्भु ब्रह्मणे स्वयम्भुवे स्वाहा
ब्रह्मस्वरूपविज्ञानाज्जगद्भोज्यं भवेत्सुखं

चित्यु. ६११

ब्रह्मस्वरूपं निरञ्जनं परमं व्योमकं

पा. ब्र. ४५

तत्सामान्यतुर्थं पादं जानीयाद्यो
जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति

नृ. पू. ११२

ब्रह्मस्वरूपं निरञ्जनं परमव्योम्निकं
तत्सामान्यः षष्ठं पादं जानीयात्तेन

वक्रतुण्डाय हुमिति यो जानी-
यात्सोऽमृतत्वं च गच्छति

ग.पू. ११२२

ब्रह्मस्वात्मतया नित्यं भक्षितं सकलं तदा

पा. ब्र. ४६

ब्रह्म स्वानुभूतिः, गुरुः शिवो देवः

रुद्रोप. ३

ब्रह्महत्या-सुरापान-स्वर्णस्तेय-गुरुतल्प-
गमन-तत्संयोगिपातकेभ्यः पूतो

पैङ्गलो. ४१२४

भवति

ब्रह्महत्यां वा एते प्रन्ति [त्रिसु. १+
ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये तस्य ह ब्रह्मणो

महाना. १२११

विजिग्ये देवा अमहीयन्त त येक्षन्ता-
स्माकमेवायं विजयोऽस्माकमेवायं

महिमेति

केनो. ३११

ब्रह्म ह वा इवमग्र आसीत्

मैत्रा. ६११७

ब्रह्म (ह) वै ब्रह्माणं पुष्करे पुष्करे
ससृजे

२ प्रणवो. १

ब्रह्म ह श्वेताश्वतरोऽथ विद्वान्

श्वेताश्व. ६१२१

ब्रह्मास्तपस्व तपस्वेत्युक्त्वाऽन्तर्हिते

सत्स्थित्वा तपश्चर

ग. शो. ३१८

ब्रह्मस्तेन्द्रियाणि याजकानि ध्यात्वा

...संस्तुतुं रसं ध्यात्वैवमग्नौ

ब्रह्मऽहंस्पर्शात्कलेवरोवज्रंहीयते

मुद्रलो. २१५

ब्रह्माकारमनोवृत्तिप्रवाहोऽहङ्कृतिं विना

...

ब्रह्माकारसमुद्भवम्

भ.गी. ३११५

ब्रह्माश्रयपरे यज्ञं

भ.गी. ४१२५

ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्

भ.गी. ४१२४

ब्रह्माजलक्षणयुक्तो यज्ञसूत्रम् ,

यज्ञसूत्रम् ।

पा. ब्र. ३

ब्रह्मा च नारायणः

नारा. २

ब्रह्माण्मीरं कमलासनस्थं

भ.गी. ११११५

ब्रह्माणसुपदिशति स्म ब्रह्मन् कुरु सृष्टिं ग. शो. ३१४

ब्रह्माणमेवाप्येति यो ब्रह्माणमेवास्तमेति सुबालो. ११११

ब्रह्माणं पृथिवीभागे विष्णुं

जा.द. ८१५

तोयांशके तथा

ब्रह्माण्डतद्गतलोकान्कार्यरूपांश्च कार-

णत्वं प्रापयित्वा...सर्वाणि भौति-

कानि कारणे भूतपञ्चके संयोज्य

भूमिं जले जलं वह्नौ वह्निं वायौ

वायुमाकाशे चाकाशमहङ्कारे चाह-

ङ्कारं महति महदव्यक्तेऽव्यक्तं पुरुषे

क्रमेण विलीयते

पैङ्गलो. ३१४

ब्रह्माण्डमपि पिण्डाण्डं त्यजतां मल-

भाण्डवत् । चिदात्मनि सदानन्दे

देहरूढामहं धियम् । निवेश्य

लिङ्गमुत्सृज्य केवलो भव सर्वदा

अध्यात्मो. ८१५

ब्रह्माण्डस्योदरे देवा दानवा यक्षकि-

ञ्जराः । मनुष्याः पशुपक्षयाद्यास्त-

त्तत्कर्मानुसारतः

कठरु. ११९

ब्रह्माण्डं चैव पिण्डाण्डं लोका भूरा-

दयः क्रमात्...स्वस्वोपाधिलयादेव

लीयन्ते प्रत्यगात्मनि

योगकुं. ३१२२

ब्रह्माण्डं पञ्चभूतस्थं पञ्चभूतमयी

तनुः । सर्वं भूतमयं चेति त्यक्त्वा

नास्तीति भावयेत्

अमन. १११७

ब्रह्माण्डं सकलं पश्येत् पाणिस्थमिव

मौक्तिकम्

अमन. ११८०

ब्रह्माण्डाखण्डविग्रहम् (महेशं)

ब्रह्माण्डाद्बहिरुर्ध्वं हि महत्तत्त्वमहङ्कृतिः

पं. ब्र. ११

ब्रह्माण्डार्धं कपालं हि शिरस्तस्या

विभावयेत्

शुद्धका. ८

ब्रह्माण्डावरणं विनश्यति तद्धि विष्णोः

स्वरूपम्

त्रि.म.ना. ३१५

ब्रह्मात्मसच्चिदानन्दात्मकमंत्रमित्युपा-

सितव्यम्

श्रीवि.कु. १११

ब्रह्मात्मैकस्वविज्ञानं हेयं मिथ्यात्व-

कारणात्

परब्र. ३

ब्रह्मात्मैवात्र होव न विचिकित्स्यमित्यो

सत्यं तदेतत्पण्डिता एव पश्यन्ति

नृसिंहो. ११८

ब्रह्मादयश्च (इंद्रादयश्च) यक्षान्ता
 वृन्तभागे व्यवस्थिताः (विल्ववृक्षस्य) २ विल्वो. १०
 ब्रह्मादयस्त्रयो मूर्तयः... अकारोकारम-
 कारा एते सर्वे प्रणवमयोर्ध्वपुण्ड्र-
 त्रयात्मकारस्तदेतदोमित्येकधा
 समभवन् गोपीचं. ४
 ब्रह्मादयस्त्रयो मूर्तयस्त्रिस्तो व्याहृतय-
 क्षीणि छन्दांसि त्रयोऽस्य इति वासुदे. ४
 ब्रह्मादिकार्यरूपाणि स्वे स्वे संहृत्य
 कारणे। सर्वकारणमव्यक्तमनिरूप्य-
 मचेतनम्। साक्षादात्मनि सम्पूर्णं
 धारयेत्प्रणवेन तु। इन्द्रियाणि
 समाहृत्यमनसाऽऽत्मनि योजयेत् जा.द. ८।८-९
 ब्रह्मादिकीटपर्यन्ता प्राणिनो मयि
 कल्पिताः। बुद्ध्यादिविकारान्त-
 स्तरङ्गः सागरे यथा आ. प्र. १५
 ब्रह्मादिपञ्चब्रह्माणोयत्रविश्रान्तिमाययुः।
 तदखण्डं सुखाकारं रामचन्द्रपदंभजे पं. ब्र. शीर्षकं
 ब्रह्मादिपिपीलिकापर्यन्तं सर्वप्राणि-
 बुद्धिष्ववशिष्टतयोपलभ्यमानः सर्व-
 प्राणिबुद्धिस्थो यदा तदा कूटस्थः
 इत्युच्यते सर्वसारो. ५
 ब्रह्मादिलोकपर्यन्ताद्विरक्त्या यलमेत्
 प्रियम्। सर्वत्र विगतस्नेहः
 सन्तोषं परमं विदुः जा.द. २।६
 ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं मूषामात्रा उपाधयः।
 ततः पूर्णं स्वमात्मानं पश्येदेका-
 र्त्मना स्थितम् अध्यात्मो. १९
 ब्रह्मादीनामगोचरा (अनन्तमहामाया) त्रि.म.ना. ४।९
 ब्रह्मादीनां वाचकानां मन्त्रोऽन्वर्था-
 विसंज्ञकः। जप्तव्यो मन्त्रिणा नैवं
 विना देवः प्रसीदति रा. पू. १।११
 ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषि-
 विप्राणां महिषो मृगाणाम्
 [महाना. ८।४+१२।३+ वनदु. ४७, ६०
 ब्रह्मा देवानां प्रथमः सम्बभूव यो.चू. ७२
 ब्रह्मा देवानां प्रथमः सम्बभूवविश्वस्य
 कर्ता भुवनस्य गोप्ता मुंढको. १।१

ब्रह्मा देवानां सवितुः कवीनामृषि-
 विप्राणां महिषो मृगाणाम् ग.पू. १।१
 ब्रह्माद्यं स्थावरान्तं च पश्यन्ति
 ज्ञानचक्षुषः मंत्रिको. १६
 ब्रह्माद्वितीयमेव सत्यम् त्रि.म.ना. ४।९
 ब्रह्माधोराङ्गिरसे ददौ (ब्रह्मविद्यां) सुबालो. ७।३
 ब्रह्मानन्दकारणम् (गोपीचंदनम्) गोपीचं. ६
 ब्रह्मानन्दमयविमानकोटिभिरतिमङ्गल-
 मनन्तोपनिषदर्थारामजालसङ्कुलं...
 प्रणवाख्यं विमानं विराजते त्रि.म.ना. ७।९
 ब्रह्मानन्दमयानन्त-प्राकार-प्रासाद-
 तोरणविमानोपवनावलिभिर्ज्वल-
 च्छिखरैरुपलक्षितो निरुपमनित्य-
 निरवद्यनिरतिशयनिरवधिकब्रह्मा-
 नन्दाचलो विराजते [त्रि.म.ना. ५।५+ सि.सा. १।१
 ब्रह्मानन्दपरं ज्योतिः ते.वि. ४।५९
 ब्रह्मानन्दमयी विद्यायापरा सा परा गतिः गान्धर्वो. ५
 ब्रह्मानन्दरसनिर्भरैरसङ्गैरतिमङ्गलं...
 निरतिशयाद्वैतपरमानन्दलक्षण-
 मादिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना. ७।१२
 ब्रह्मानन्दरसारुढो ब्रह्मानन्दैकचिद्ब्रह्मः ते.वि. ४।६०
 ब्रह्माभूतरसे तृप्तो ब्रह्मानन्दानुभावकः ते.वि. ४।५८
 ब्रह्मानन्दसमष्टिकन्द...ब्रह्मानन्द-
 मयानन्तनिरतिशयानन्दसागरा-
 कारम्। आत्मसमानानन्दविभूति-
 पुरुषानन्तानन्दमण्डितं नित्य-
 मङ्गलमनन्तविभवम् सि.सा. १।१
 ब्रह्मानन्दं परमं दक्षिणे च ब्रह्मानन्दं
 परमं चोत्तरे च पा. प्र. ३५
 ब्रह्मानन्दं सदा पश्यन्कथं बध्येत कर्मणा ब्राह्मो. २।१६
 ब्रह्मानन्दानुसन्धाने नास्मादन्यत्तु
 किञ्चन। सुलभं त्रिषु लोकेषु
 यज्ज्ञात्वाऽमृतमभुते गान्धर्वो. ११
 ब्रह्मानन्दाभूतरसाम्भोनिधितरङ्गिण्याः
 प्रवाहैरतिमङ्गलम् सि. सा. ६।१
 ब्रह्मानन्दाभ्रसंजातेवृन्दावननिवासिनि।
 सर्वावयवसम्पूर्णं अभूतोपनिषद्वत्।
 त्वं मासुद्धरकल्याणि महापापाधि-
 दुस्तरात् तुलस्य. ११

ब्रह्मानन्दे निमग्नस्यविषयाशानतः सवेत्
(यद्वा) ब्रह्मानन्दे विलीयताम् (धीः)

ब्रह्मा नारायणः, शिवश्च नारायणः

ब्रह्मान्वविन्दद्दश होतारमणं

ब्रह्मा पूरक इत्युक्तो विष्णुः कुम्भक
उच्यते । रेचो रुद्र इति प्रोक्तः

प्राणायामस्य देवताः

ब्रह्मा ब्रह्मणी वेदितव्ये

ब्रह्माब्रह्माऽहं प्राञ्चः प्रत्यञ्चोऽहम्

ब्रह्माभयं वै ब्रह्माभयं हि वै ब्रह्म

भवति य एवं वेद

ब्रह्माभूतसत्तासक्तो ब्रह्माभूतसः स्वयम्

ब्रह्माभूतसत्तास्वादो ब्रह्माभूतसत्तायनः

ब्रह्माभूतसत्तासो ब्रह्मानन्दशिवाचनः

ब्रह्माभूतं पिबेद्भैक्षमाचरेद्देहरक्षणे ।

वसुदेकान्तिको भूत्वा चैकान्ते

[स्कन्दो. १२+

(अथ) ब्रह्मा रुद्रो विष्णुरित्यधि-

पतिवत्येषा

ब्रह्मा रुद्रो विष्णुरित्येकेऽन्यमभि-

ध्यायन्त्येकेऽन्यम्

ब्रह्मार्यणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा

हुतम् । ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म-

कर्मसमाधिना [शरभो. २७+

ब्रह्मावर्ते महाभाण्डीरवटमूले महासत्राय

समेता महर्षयः शौनकादय-

स्ते ह समित्पाणयस्तत्त्वजिज्ञा-

सवो मार्कण्डेयं चिरजीविनमुपस-

मेत्य प्रपच्छुः केन त्वं चिरं जीवसि

केन वाऽऽनन्दमनुभवसीति

ब्रह्माहोऽसि गौतम यो मामुपागा

पहि त्वा ज्ञापयिष्यामीति

ब्रह्मविलोकनधियं न जहाति योगी

ब्रह्मविलोकयंस्तद्रूपो भवति

ब्रह्मविलोकयोगपट्टः

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सर्वा वा भूत-

जातयः । नाशमेवानुपावन्ति

सलिलानीव वाडवम्

आ.प्र. १७

१ अवधू. २५

त्रि.म.ना. २।८

चित्त्यु. ११।१

ध्या. वि. २१

देव्यु. १

अ. शिरः. २

बृह. ४।४।२६

ते. वि. ४।५७

ते. वि. ४।५६

ते. वि. ४।५७

मैत्रे. २।३

मैत्रा. ६।५

मैत्रा. ४।५

अ. गी. ४।२४

द. मू. १

कौ. त. १।१

वराहो. २।८२

अद्वयता. १

निर्वाणो. २

महो. ३।५२

ब्रह्मा विश्वः कतमः स्वयम्भूः प्रजा-

पतिः संवत्सरः

ब्रह्मा शक्तिर्महादेवोजन्यते पुरुषोत्तमात्

ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्

ब्रह्मासाध्यं च यो गच्छेद्ब्रह्महा स

प्रकीर्तितः

ब्रह्माऽसि पूर्णोऽसि परात्परोऽसि

ब्रह्मा सृजति लोकान्वै

ब्रह्मास्त्रां महाविद्यां शाम्भवी... देवी-

माहूय ध्यायेत्

ब्रह्मास्मि नेतरकलाकलनं हि किञ्चित्

ब्रह्मास्मि प्रभवोऽस्म्यहम्

ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि

ब्रह्माहमस्मि, योऽहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि

ब्रह्माहमस्मीति कृतकृत्यो भवति

ब्रह्माहमस्मीति चिन्तयन्निदं सर्वं यदय-

मात्मेति भावयन्कृतकृत्यो भवति

ब्रह्माहमस्मीति तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थ-

स्वरूपानुसंधानं कुर्वन्नुदीचीं दिशं

गच्छेत्

ब्रह्माहमस्मीति भावयन्गुर्वर्थं ग्राममुपेत्य

ध्रुवशीलोऽष्टौ मास्येकाकी चरे-

द्वावेवाचरेत्

ब्रह्माहमिति यस्यान्तः स जीवनमुक्त

उच्यते

ब्रह्माहं ब्रह्म चिच्छत्रुर्ब्रह्म चिन्मित्र-

बान्धवाः

ब्रह्माहं, विष्णुरहं, सौरोऽहं, ब्राह्मोऽहम्

ब्रह्मा हि परः परो हि ब्रह्मा

ब्रह्मा हैव ता ३ इ ऊर्ध्वं त्वेवोदसर्पत्

ब्रह्मेदं बृंहिताकारं बृहद्बृहदवस्थितम्

ब्रह्मेन्द्रमग्निं जगतः प्रतिष्ठाम् । दिव

आत्मानं सवितारं बृहस्पतिम् ।

चतुर्होतारं प्रदिशो नु क्लृप्तम् । वाचो

वीर्यं तपसाऽन्वविन्दत्

ब्रह्मैकमेव, ब्राह्मणत्वमेकमेव

ब्रह्मैकस्त्वं द्विधा त्रिधा शांतिस्त्वं

ब्रह्मैतद्ब्रह्मण उज्जहार

ब्रह्मैव केवलमहं परिपूर्णमस्मि

म. ना. १७।१२

सि. वि. ३

भस्मजा. २।७

शिवो. ७।६२

ते. वि. ५।६१

ते. वि. ५।८८

पीताम्बरो. १

अ. पू. १।१९

मैत्रे. ३।१

त्रि.म.ना. ८।३

महाना. ६।७

मं. ब्रा. ३।३

मं. ब्रा. २।८

प. हं. प. ५

प. हं. प. ७

ते. वि. ४।२

अ. पू. ५।२०

अद्वै. भा. १

म. ना. १६।१२

१ ऐत. १।४।२

अ. पू. २।३७

चित्त्यु. ११।२

परब्र. ६

चतुर्वे. ८

चित्त्यु. ११।६

वराहो. २।७३

ब्रह्मैव केवलं शुद्धं विद्यते तत्त्वदर्शने २ आत्मो. ३
 ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं भ.गी. ४।२४
 ब्रह्मैव पुष्पं तां अमृता आपेः छांदो. ३।५।१
 ब्रह्मैव ब्रह्मवित् स्वयम् २ आत्मो. २३
 ब्रह्मैव भवति, इत्याह भगवान्ब्रह्मा शरभो. ३७
 ब्रह्मैव भवति स्वयम् कठरु. १५
 ब्रह्मैव वित्तं पुरुषस्य केवलम् इतिहा. ४४
 ब्रह्मैवविद्यते साक्षाद्ब्रह्मस्तुतोऽवस्तुतोऽपिच पा. ब्र. ३२
 ब्रह्मैव सकलं स्वयम् ते.वि. ६।४३
 ब्रह्मैव सन्नब्रह्माप्येति [बृह. ४।४।६+ सुबा. ३।३+
 [नृसिंहो. ५।२, ५।९, ५।८+ सहवै. २
 ब्रह्मैव सर्वमित्येव भाविते ब्रह्म वै पुमान् ।
 सर्वत्रावस्थितं शान्तं चिद्ब्रह्मेत्य- अ. पू. ५।२१
 नुभूयते
 ब्रह्मैव सर्वनामानि रूपाणि विविधानि
 च । कर्माण्यपि समग्राणि यो.शि. ४।६
 विभर्तीति विभावय ते. वि. ६।४२
 ब्रह्मैव सर्वं चिन्मात्रं ब्रह्ममात्रं जगत्त्रयम् ते.वि. ६।३१
 ब्रह्मैव सर्वं नान्योऽस्ति
 [ईश्वर इति च-] ब्रह्मैव स्वशक्तिं
 प्रकृत्यभिधेयामाश्रित्य लोकान्
 सृष्ट्वा प्रविश्यांतर्यामित्वेन ब्रह्मा-
 दीनांबुद्धीन्द्रियनियन्तृत्वादीश्वरः निरालं. ६
 ब्रह्मैवान्तत उपनिश्रयति स्वां योनिं
 उ य एन५ हिनस्ति बृह. १४।११
 ब्रह्मैवास्मि न चेतः महो. २।११
 ब्रह्मैवावाप्नोति ग.शो. ३।१
 ब्रह्मैवास्मि निरामयम् अ.पू. ५।६८
 ब्रह्मैवाहमस्मीति निश्चित्य निर्विकल्प-
 समाधिना स्वतन्त्रो यश्चरति स
 सङ्गयासी निरालं. ३२
 ब्रह्मैवास्मीति यावृत्तिः पूरकोवायुरुच्यते ते.वि. १।३२
 ब्रह्मैवास्मीति सद्ब्रह्मया निरालम्बतया
 स्थितिः ते.वि. १।३६
 ब्रह्मैवाहमस्मीति..या भाष्यते सैषा
 बौद्धिः श्रीविद्या पञ्चदशाक्षरी.. बह्वचो. ४
 ब्रह्मैवाहमस्मीत्यनवरतं ब्रह्मप्रणवानु-
 सन्धानेन यः कृतकृत्यो भवति स
 ह परमहंसपरिब्राट् प.हं. ९.११

ब्रह्मैवाहमिति स्मरन्...मुक्तो भवति ना.प. ५।५०
 ब्रह्मैवाहमिति ज्ञात्वावीतशोकोभवेन्मुक्तिः महो. ४।२९
 ब्रह्मैवाहं न जीवोऽहं ब्रह्मैवाहं न
 मेदभूः ते.वि. ६।३३
 ब्रह्मैवाहं न देहोऽहं ब्रह्मैवाहं न गोचरः ते.वि. ६।३३
 ब्रह्मैवाहं न संसारी ब्रह्मैवाहं न मे मनः ते. वि. ६।३२
 ब्रह्मैवाहं परात्परः ते.वि. ६।३४
 ब्रह्मैवाहं न संशयः ते.वि. ३।३९
 ब्रह्मैवाहं सच्चिदानन्दरूपं सर्वसारो. ११
 ब्रह्मैवाहं सनातनम् [ते.वि. ३।३२+ ६।३१
 ब्रह्मैवाहं सर्ववेदान्तवेद्यं नाहं वेद्यं
 व्योमवातादिरूपम् सर्वसारो. ११
 ब्रह्मैवेदममृतं तत्पुरस्ताद्ब्रह्मानन्दं परमं
 चैव पश्चात् पा. ब्र. ३५
 ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म
 दक्षिणतश्चोत्तरेण मुंड. २।२।११
 ब्रह्मैवेदं विजृम्भते अ. पू. २।३६
 ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम् मुण्ड. २।२।११
 ब्रह्मैवेदं सर्वं सच्चिदानन्दरूपं नृसिंहो. ७।३
 ब्रह्मैवैकमनाद्यन्तमब्धिवत्प्रविजृम्भते अ. पू. ५।१०
 ब्रह्मैवोपाप्नोति तैत्ति. १।८।१
 ब्रह्मोऽप्येन प्रतरेत् विद्वान् स्रोतानि
 सर्वाणि भयावहानि श्वेता. २।८
 ब्रह्मोपनिषदो ब्रह्म पा. ब्र. ५
 ब्रह्मोवाच नाहं वेदि ग. शो. ३।९
 ब्राह्मण एकहोता । ब्राह्मणे
 स्वयम्भुवे स्वाहा चित्त्यु. ७।१
 ब्राह्मणक्षत्रियविशां भ.गी. १।८।४१
 ब्राह्मणत्वं ब्रह्म धानार्हत्वं यत्तत्त्वम-
 लक्षितान्तःशिखोपवीतत्वम् परब्र. ५
 ब्राह्मणस्त एकं मुखं, तेन मुखेन राज्ञो-
 ऽस्ति, तेन मुखेन मामन्नाहं कुरु कौ. व. २।९
 ब्राह्मणस्य दक्षिणे हस्ते पञ्च तीर्थानि
 भवन्ति आचम. ३
 ब्राह्मणस्य विज्ञानतः भ.गी. ३।४६
 ब्राह्मणस्य शरीरं जायते यज्ञोप. १
 ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं हत्वा च
 किंस्त्रियम् । सच्चिनोति नरो रामो. ५।१५
 भौदाद्यत्तदपि नाशयेत्

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यसंयो		ब्राह्मणास्तु सदृशाः सूर्येण	इतिहा. १८
वर्णा द्विजातयः	भवसं. २।६२	ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च	भ.गी.१७।२३
ब्राह्मणः पञ्चाक्षरमनुभवति	रुद्रोप. १	ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः (रुद्राक्षजातयः)	रु. जा. ८
ब्राह्मणः शिवपूजारतः	रुद्रोप. १	ब्राह्मणाः पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च	
ब्राह्मणः श्वेतवर्णः क्षत्रियोरक्तवर्णो वैश्यः		लोकैषणायाश्च व्युत्थायाथ भिक्षा-	
पीतवर्णः शूद्रः कृष्णवर्ण इति		चर्यं चरन्ति	बृह. ३।५।१
नियमाभावात् (न देहो ब्राह्मणः)	व. सू. उ. ४	ब्राह्मणे गवि हस्तिनि	भ.गी.५।१८
अथ ब्राह्मणः, स ब्राह्मणः केन स्या-		ब्राह्मणे मनुष्येष्वेताभ्यां हि रूपाभ्यां	
द्यैन स्यात्तेनेदृश एवातोऽन्यदार्तम्	बृह. ३।५।१	ब्रह्माऽभवत्	बृह. १।४।१५
(ततो) ब्राह्मणः समाहितो भूत्वा		ब्राह्मणे मनुष्येष्वेताभ्यां रूपाभ्यां.. (मापा.)	बृ. उ. १।४।१५
तत्स्वरूपदैक्यमेव सदा कुर्यात्	पैङ्गलो. ३।४	ब्राह्मणेष्वमृतमिति तज्जलं शिरसि क्षिपेत्	बृ. जा. ३।१८
ब्राह्मणातिक्रमो नास्ति मूर्खो मन्त्रं		ब्राह्मणो द्विपदां वरः	इतिहा. ४९
विवर्जयेत् । ज्वलन्तमग्निमुत्सृज्य		ब्राह्मणो निर्वेदमायात्	मुंढ. १।२।१२
नहि भस्मनि हूयते	इतिहा. ४५	ब्राह्मणो बिभृयाच्छ्रुतान्नक्तान्नाजा	
ब्राह्मणानामयमेव धर्मोऽयमेव धर्मः	भस्मजा. १।६	तु धारयेत् । पीतान्वैश्यस्तु बिभृया-	
ब्राह्मणानां तु सर्वेषां वैदिकानामनु-		त्कृष्णाच्छूद्रस्तु धारयेत् (रुद्राक्षान्)	रु. जा. १०
त्तमम् । गोपीचन्दनवारिभ्यामूर्ध्व-		ब्राह्मणो मनुष्येषु, क्षत्रियो क्षत्रियेण..	बृह. १।४।१५
पुण्ड्रं विव्रीयते	वासुदे. १४	ब्राह्मणो यजेत; न सुरां पिबेत्	
ब्राह्मणानां यशो राज्ञां यशो विशां		ब्राह्मणो वै मुखाज्ज्ञे बाह्योः क्षत्रं	
यशोऽहमनुप्रापत्सि	छां. ८।१४।१	ऊर्वोर्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रः	ग.शो. ३।११
ब्राह्मणानां सहस्रेषु भुक्त्वा तु नव		ब्राह्मणोऽष्टाचत्वारिंशद्वर्षवासी च	आश्रमो. १
सप्त च । भवन्ति ह्यायिके भूत्वा		ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् [चित्र्यु. १२।५ + सुबालो. १।४	
न्यायिके च न संशयेत्	इतिहा. ४७	[ऋ. अ. ८।४।१९ = मं. १०।९०।१२	वा. सं. ३।१।११
ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानिकल्पान्		ब्राह्मण्यं कुलगोत्रे च नामसौन्दर्य-	
गाथाज्ञाराशंसीः प्रीणाति	सहस्रै. १५	जातयः । स्थूलदेहगता एते स्थूला-	
ब्राह्मणास्त निन्देत्तद्व्रतम्	छां. २।२०।२	द्विन्नस्य मे नहि	आ. प्र. २३
ब्राह्मणा भगवन्तस्तदेव बहु मन्येध्वम्	बृह. ३।८।१२	ब्राह्मण्यं सकलं तस्य इति ब्रह्मविदो विदुः	ब्रह्मो. १५
ब्राह्मणा भगवन्तो यो वो ब्रह्मिष्ठः स		ब्राह्मी नारायणी माहेश्वरी कौमारी	
एता गा उदजताम्	बृह. ३।१।२	अपराजिता वाराही नारसिंहिका	
ब्राह्मणा भगवन्तो यो वः कामयते		चेत्यष्टपत्रगाः	कालिको. १
स मा पृच्छतु	बृह. ३।९।२७	ब्राह्मीमिष्टिं यजेत्तासामहोरात्रेण निर्वपेत्	कुण्डिको. २
ब्राह्मणा भगवन्तो हन्ताहमिमं द्वौ		ब्राह्मीं वाव स उपनिषदमब्रूमेति	केनो. ४।७
प्रभौ प्रख्यामि	बृह. ३।८।१	ब्राह्म्यादयः सप्त मातरो नवमे	सूर्यता. ५।१
ब्राह्मणा ये भक्तिमार्गं न विदन्ति		ब्रूयाद्ब्रह्मभद्रकम्	शिवो. ७।८१
तेषां सम्भाषणं स्पर्शं न कुर्यात्	सामर. २२	बृह. चोदयित्री सूनुतानां चेतन्ती	
ब्राह्मणा वाचं स्मरन्तेषामेवमिति	छां. १।२	सुमतीनाम् [ऋ. सं. १।३।११ +	
		[वा. सं. १२।१२ +	तै. सं. १।५।११

भ

भक्तवत्सलः स्वयमेव सर्वेभ्यो मोक्ष-
विन्नेभ्यो भक्तिनिष्ठान्सर्वान्
परिपालयति

त्रि.म.ना.८।४

भक्तानां धारणात्पापं (रुद्राक्षस्य)

दिवा रात्रि कृतं हरेत् । लक्षं तु

दर्शनात्पुण्यं कोटिस्तद्धारणाद्भवेत्

रु. जा. उ. ४

भक्तानां भक्त एव ज्ञातिः

सामर. २२

भक्तानां भक्तैः सह कार्यं, नान्यैः

सामर. २२

भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारण-

मच्युतम्

गणपत्यु. १२

भक्ता राजर्षयस्तथा

भ.गी. ९।३३

भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः

भ.गी. १२।२०

भक्तास्त्वां पथुपासते

भ.गी. १२।१९

भक्तिमान् मे प्रियो नरः

भ.गी. १२।१९

भक्तिमान्यः स मे प्रियः

भ.गी. १२।२७

भक्तियोगान्मुक्तिः

त्रि.म.ना.८।४

भक्तियोगेन सेवते

भ.गी. १४।२६

भक्तियोगो निरुपद्रवः

त्रि.म.ना.८।४

भक्तिरव्यभिचारिणी

भ.गी. १३।११

भक्तिरस्य (कृष्णस्य) भजनम्

गो.पू. २।२

भक्तिर्भक्त्या भवति

सामर. ९५

भक्तिं मयि परां कृत्वा

भ.गी. १८।६८

भक्तौऽसि मे सखा चेति

भ.गी. ४।३

भक्त्या त्वनन्यया शक्यः

भ.गी. ११।५४

भक्त्या मामभिजानाति

भ.गी. १८।५५

भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव

भ.गी. ८।१०

भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया

भ.गी. ८।२२

भक्त्या नम्रतनोर्विष्णोः प्रसादम-

करोद्विभुः

शरभो. १८

भक्त्या विना ब्रह्मज्ञानं कदापि न

जायते

त्रि.म.ना.८।४

भक्त्या सर्वसिद्धयः सिद्ध्यन्ति

त्रि.म.ना.८।४

भक्त्याऽऽसाध्यं न किञ्चिदस्ति

त्रि.म.ना.८।४

भक्त्याऽनुपपन्ना प्रादक्षिण्यादारिद्र्य-

मात्रिणी...य एवं वेद स वैष्णवो

भवति (तुलसी)

तुलस्यु. २

भगव इति तं प्रतिशुश्राव

छांदो. ४।८।२

भगव इति ह प्रतिशुश्राव

[छांदो. ४।५।१+६।२+७।२

+८।२+९।२

भगवच्छरीरमिदं मैथुनादेवोद्धृतं

संविदपेतं...निरयएवमूत्रद्वारेण

मैत्रे. १।४

भगवत् आदिपुरुषस्य नारायणस्य

नामोच्चारणमात्रेण निर्धूतकल्लिर्भवति

कल्लि. १

भगवतो वा अहमवित्याऽन्यानवृषि

छां. १।११।२

भगवन् देवाः प्रजां विधारयन्ते

प्रश्नो. २।१

भगवन्कृत्येव प्रजा विधारयन्ते (मा.पा.)

प्रश्नो. २।१

भगवन् किमादौ प्रयुक्तं ध्यात्वं

ध्यायितव्यं किं तद्ध्यानं को

वा ध्याता कश्च ध्येयः

स.शिखो. १

भगवन् कुत एष प्राणो जायते

प्रश्नो. ३।१

भगवन् कुतो ह वा इमाः प्रजाः

प्रजायन्ते

प्रश्नो. १।३

भगवन्कोऽवधूतः, तस्य का स्थितिः किं

लक्ष्म किं संसरणमिति

१ अवधू. १

भगवन् तदभ्यासवशाद्गमरकीट-

न्यायात्तदभ्यासः कथमिति

ना. ५.६।१

भगवन्तावध्रे वदतां ब्राह्मणयो-

र्विवदतोर्वाचं श्रोष्यामीति

छांदो. १।८।२

भगवन् भक्तिनिष्ठां मे प्रयच्छ

त्रि.म.ना.८।७

भगवन्यद्येवमस्यात्मनो महिमानं

सूचयसीत्यन्यो वा परःकोऽयमारमा

मैत्रे. ३।१

भगवंस्त्वं नो गतिः

मैत्रे. १।४

भगवन् सर्वविजय सहस्रारापराजितः

शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि श्रीकरं

श्रीसुदर्शनम्

वनदु. ९२

भगवानाभिरस्पृष्टो येन वृष्टः स सर्वदृक् सः सर्वः

भगः शक्तिर्भगवान्काम ईश उभा

दाताशविह सौभागानाम् । सम-

प्रधानो समसत्त्वो समोजो तयोः

शक्तिरजरा त्रिभ्योऽत्रिः

त्रिपुरी. १४

भजतां प्रीतिपूर्वकम्

भ.गी. १०।१०

भजते मामनन्यभाक्

भ.गी. ९।३०

भजत्येकत्वमास्थितः

भ.गी. ६।३१

भजनानन्दोपासकानां न वर्णो न

देशो न कालोऽस्ति

सामर. २२

भजन्ते मां दृढव्रताः

भ.गी. ७।२८

भजन्त्यनन्यमनसः

भ.गी. ९।१३

भजेद्भ्रमरकीटवत् सैव सायुज्यमुक्तिः

मुक्ति. १।२४

भद्रमित्याह भद्रः खल्वयं श्रिया जुष्टः अन्यक्तो. ३

भद्रं पश्यन्त उपसेदुरग्रे

चित्त्यु. ११।९

[तै.सं. ५।७।४।३+

तै.आ. ३।११।९

अयंप्रदमकल्याणं वैर्यसर्वस्वहारिणम् ।

मनःपिशाचमुत्सार्य योऽसि

सोऽसि स्थिरो भव

अ.पू. ५।३५

अयमौहशोकक्रोधागस्त्यागः

निर्वाणो. ५

अयं क्रोधमथाहस्यमतिस्वप्नाति-

जागरम् । अत्याहारमनाहारं

नित्यं योगी विवर्जयेत्

अ.ना. २८

अयं चाभयमेव च

भ.गी. १०।४

अयाज्ञानाभ्यामिन्द्रियसङ्घातैः कम्पन्निव

मृततुल्या मूर्च्छा भवति

पैङ्गलो. २।९

अयात्तस्याभिस्तपति अयात्तपति सूर्यः ।

अयाद्दिदृश्ववायुश्च मृत्युर्धावति पंचमः

कठो. ६।३

अयात्सारङ्गवदेकत्र न तिष्ठेत्

ना.प. ७।१

अयाद्रणादुपरतं

भ.गी. २।३५

अयेन च प्रव्यथितं मनो मे

भ.गी. ११।४५

अरवाजोऽङ्गिरसे परावरां (ब्रह्मविद्यां

प्रोवाच)

मुण्डो. १।२

अरवाजो बृहदाचक्रे अग्नेः

३ऐत. १।६।२

अरे अरेषु समुपह्वयाम प्रसासहि

आर्षे. १०।२

(अथ) भर्ग इति भासयतीमाँल्लोका-

निति रञ्जयतीमानि भूतानि

गच्छत इति गच्छत्यस्मिन्ना-

गच्छत्यस्मा इमाः प्रजास्तस्मा-

द्भारकत्वाद्भर्गः

मैत्रा. ६।७

(अथ) भर्ग इति योह वा अस्मिन्नादित्ये

निहितस्तारकेऽक्षिणि चैष भर्गाख्यो

आभिर्गतिरस्य हीति भर्गो भर्जति

चैष भर्ग इति

मैत्रा. ६।७

भर्ग इत्यापो ह वै भर्गः

गायत्रीर. २

भर्गो देवस्य धीमहि मधुनक्त्युतोषसौ

मधुमत्पार्थिवः रजः मधु द्यौरस्तु

नः पिता भुवः स्वाहा

बृह. ६।३।६

भर्ता भोक्ता महेश्वरः

भ.गी. १३।२३

भर्ता च मे भूयात्

चित्त्यु. ७।१

भर्ता सन्निभयमाणो विभर्ति

चित्त्यु. १४।१

भर्ता स्वानां श्रेष्ठः पुर एताः

बृह. १।३।१८

भवताऽप्येष एवार्थः कथितो

वाग्विदांवर

महो. २।३३

भवति च सर्वेषु पादेषु चतुरात्मा

नृसिंहो. ३।२

भवति हास्य सुवर्णं य एवमेतत्साम्नः

सुवर्णं वेद

बृह. १।३।२६

भवति हास्य स्वं य एवमेतत्साम्नः

स्वं वेद

बृह. १।३।२५

भवतीत्यनुशुश्रुम

भ.गी. १।४

भवतोऽज्ञानमेव च

भ.गी. १४।१७

भवत्यत्यागिनां प्रेत्य

भ.गी. १८।१२

भवन्तः सर्व एव हि

भ.गी. १।११

भवत्यखिलजन्तूनां यदन्तस्तद्ब्रह्मः

स्थितम्

अ. पू. १।३६

भवत्यज्ञादोऽधिपतिर्य एवं वेद

बृह. १।३।१८

भवत्यस्यान्नमापश्च पृथिवीचात्रमेत-

न्मयानि ह्यन्नानि भवन्ति

१ऐत. ३।१।२

भवत्यस्यान्नमोषधिवनस्पतयोऽन्नम्

१ऐत. ३।१।३

भवन्ति भावा भूतानां

भ.गी. १०।५

भवन्ति विविधा रोगाः पवनव्यत्यय-

क्रमात्

धो. चू. ११७

भवन्ति सम्पदं दैवी

भ.गी. १६।३

भवन्ति हास्य पशवः, पशुमान्भवति

छांदो. २।६।२

भवन्तो (देवाः) वै न मद्भिन्नाः

गणेशो. ४।१०

भव भावनया युक्तो मुक्तः परमया

धिषा । धारयात्मानमव्यग्रो

प्रस्तचित्तं चितः पदम्

महो. ४।९२

भव वर्जितचिन्मात्रं सर्वं

चिन्मात्रमेव हि

तै. विं. २।२५

भवं यत्कारुद्रतन्निम्ना

चित्त्यु. २१।१

भवानः संप्रथस्तमः

चित्त्यु. १७।१

भवानिदं जगत्सर्वं व्याप्यैव परितिष्ठति

गणेशो. ३।७

भवानेव गच्छति

बृह. ६।३।४

भवान् श्रीष्मश्च कर्णश्च भ. गी. १।८
 भवाप्ययौ हि भूतानां भ. गी. १।१२
 भवामि न चिरात्पार्थ भ. गी. १।२।७
 भविता न च मे तस्मात् भ. गी. १।८।९
 भविष्यति पुनर्धनम् भ. गी. १।९।३
 भविष्यते स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्ये
 संस्रवमवनयति बृह. ६।३।३
 भविष्याणि च भूतानि भ. गी. ७।२६
 भवेदनर्थाय विना प्रमाणं (परमार्थः) ब्र. वि. ३२
 भवेशुगपदुत्थिता भ. गी. १।१।२२
 भस्मदिग्धाङ्गो रुद्राक्षभूषणो भामेव
 सर्वभावेन प्रपन्नो मदेकपूजानिरतः
 सम्पूजयेत् भस्मजा. २।१०
 भस्मधारणमकृत्वा नाभ्रीयादापोऽन्न-
 मन्यद्वा भस्मजा. १।६
 भस्मनिष्ठस्य दहान्ते दोषा भस्मामि-
 सङ्गमात् । भस्मस्नानविशुद्धात्मा
 भस्मनिष्ठ इति स्मृतः बृ. जा. ५।१९
 भस्मनो यद्यभावस्तद्गानर्थभस्मद्वाहन-
 जन्यमन्यद्वावश्यं मन्त्रपूतं धार्यम् भस्मजा. १।७
 भस्ममुष्टिं समादाय संहितामन्त्र-
 मन्त्रिताम् । मस्तकात्मादपर्यन्तं
 मलस्नानं पुरोदितम् बृ. जा. ४।२
 भस्म व्यापांडुरांगः अग्निशकलधरो
 ज्ञानमुद्राक्षमालावीणापुस्तैर्विराज-
 स्करकमलधरोयोगपट्टाभिरामः ।
 ...सव्यालःकुत्तिवासाः सततमवतु
 चोदक्षिणामूर्तिरीशः द. मू. ९
 भस्मसन्दिग्धसर्वाङ्गी भस्महीनत्रि-
 पुण्ड्रकः । भस्मवायीः च पुरुषो
 भस्मनिष्ठ इति स्मृतः बृ. जा. ५।२०
 भस्म सर्वावभक्षणात् बृ. जा. १।६
 भस्मसात्कुरुते यथा अ. गी. ४।३७
 भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन अ. गी. ४।३७
 भस्माधिक्यमभीप्सुस्तु अचिकं गोमयं
 हरेत् बृ. जा. ३।२२
 भस्मायुषाय विधादे त्रीक्ष्णवर्द्धाम्
 भीमहि । तन्नो ज्वरः प्रसोदयात् बृ. जा. २।५।८

भस्मोद्भूतिसर्वाङ्गं जटाजूटभरं
 विभुम्... एवं यः सततं ध्याये-
 देवदेवं सनातनम् । स मुक्तः सर्व-
 पापेभ्यो निःश्रेयसमवाप्नुयात् शांति. ३।२३
 भागमेकं न्यसेद्भूयो द्वितीयं वेदिमध्यतः
 तृतीयभागे पूजा स्यादिति लिङ्गं
 त्रिधा स्थितम् शिवो. ३।३
 भागार्थं सृष्टिरित्यन्ये क्रीडार्थमिति
 चापरे । देवस्यैव स्वभावोऽय-
 माप्तकामस्य का स्पृहा आगम. ९
 भातीत्युक्ते जगत्सर्वं भानब्रह्मैवकेवलम् वराहो. २।७३
 भानाभानविहीनात्मावैदेहीमुक्तएवसः ते. वि. ४।७९
 भानुकोटिसमप्रभम् । प्रसन्नं सामवेदाख्यं पञ्चम. ६
 भानुनेव जगत्सर्वं भास्यतेयस्यतेजसा रक्षात्मा. ८
 भानुमध्यगतः सशी ध्या. वि. ३६
 भाभिर्गतिरस्य हीति मार्गः मैत्रा. ३।७
 भारो विवेकिनः शास्त्रं भारो ज्ञानं
 च रागिणः । अशान्तस्य मनो
 भारो भारोऽनात्मविदो वपुः महो. ३।१५
 भार्या पुत्रो गृहं धनं सर्वं तेभ्यो देयम् स्वसेवे. ४
 भार्यायै रेतः संवत्सरस्य तेजोभूतस्य
 भूतस्यात्मभूतस्य त्वमात्माऽसि की. व. १।६
 भावमाहमनीडाख्यं भावाभावकरं
 शिवम् । कलासर्गाकरं देवं ये
 विदुस्ते जहुस्तनुम् श्वेता. ५।१४
 भावतीर्थं परं तीर्थं अमार्गं सर्वकर्मसु जा. व. ४।५१
 भावना भावमात्रेण सङ्कल्पः क्षीयते स्वयम् महो. ५।१८३
 भावनामखिलात्यक्त्वा यच्छिष्टं सन्मयो
 भव [मैत्रे. २।६८५-अ. पू. ५।१८५ वराहो. ४।२९
 भावनासंभवेनात्र कारणम् शो. वि. ३।२३
 भावना सर्वभावेभ्यः संस्तुत्यैव स-
 स्थितः । अवशिष्टं परं ब्रह्म केवलो-
 ऽस्मीति भावय. अ. मू. ५।१५
 भावमव्ययमीक्षते अ. गी. १।८।२०
 भावमुत्सर्धयतुष्णाशामोहादिरहितः
 (वर्तते स ब्रह्मणः) ब. मू. ९
 भावप्रतिष्ठं चित्तिश्चैत्यं व्यतिरिक्तमि-
 वात्मनः । सङ्कल्पतामिवायाति
 भीजमकुरतामिव महो. ५।१८०

भावयन्मनसा विष्णुं परमात्मान-

मीश्वरम् (यतिः)

ना.प. ५।४९

भाववृत्त्या हि भावत्वं शून्यवृत्त्या हि
शून्यता

ते.वि. १।४२

भावशुद्धिद्वरेर्भक्तिस्तिष्ठति कुरुणा

तथा ।...आनृशंसं सतां सङ्गः

पारमैकान्त्यहेतवः

भवसं. ५।२०

भावसंवित्प्रकटितामनुरूपा च

माहते । चित्तस्योत्पत्त्युपरमा

वासनां मुनयो विदुः

मुक्तिको. २।२४

भावसंशुद्धिरित्येतत्

भ.गी. १।७।१६

भावं भावेन सौम्यं सौम्येन...प्रसति

त्वेन तेजसा

अ.शिरः. ३।३

भावा अप्यद्वयेनैव तस्मादद्वयता शिवा

वैतथ्य. ३३

भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि

शु. र. १।१९

भावाभावदशाकोशं दुःखरत्नसमु-

द्रूपम् । बीजमस्य शरीरस्य चित्त-

भावावशानुगम्

अ.पू. ४।४०

भावाभावदहनं

निर्वाणो. ७५

भावाभावद्वयातीतं स्वप्नजागरणा-

विगम् । मृत्युजीवननिर्मुक्तं तत्त्वं

सत्त्वविदो विदुः

अमन. २।६१

भावाभावमजं सर्वमितिमत्वा सुखीभव

अ.पू. ५।६७

भावाभावविनिर्मुक्तं जरामरणवर्जितम् ।

प्रशान्तकलनारम्यं नीरारं पद-

माश्रय

महो. ६।७२

भावाभावनिर्मुक्तं भावनामात्रगोचरं

यो.शि. ३।२२

भावाभावविहीनोऽस्मि भासा हीनो-

ऽस्मि भास्यहम्

मैत्रे. ३।५

भावाभावविद्वद्धातीतः...परं ब्रह्म

प्राप्नोति

मं. ब्रा. ३।१

भावाभावेपदार्थानां हर्षामर्षविकारदा ।

यदिना वासना यैषा सा सङ्ग

इति कथ्यते

अ. पू. ५।५

भावाभावो तत्तत्स्यक्त्वा निर्विकल्पः

सुखी भव

महो. ४।१०९

भावा विभवभूतयः । अयमशलाका-

सदृशः परस्परमसङ्गिनः

महो. ३।४

मवांश्च सर्वान् विनियोजयेद्यः ।

तैषामभावे कृतकर्मनाशः

श्वेता. ६।४

भावितं तीव्रवेगेन यद्रस्तु निश्चया-

त्मकम् । दृश्यं ह्यदृश्यतां नीत्वा

ब्रह्माकारेण चिन्तयेत्

ते.वि. १।२०

भावितं तीव्रसंवेगादात्मना यत्तदेव

सः । भवत्याशु कपिश्रेष्ठ विगते-

तरवासनः

मुक्ति. २।५८

भावेनगलितेभावे स्वस्थस्तिष्ठामिकेवलः

१सं.सो. २।३६

भावेध्वरतिरायाता पथिकस्य मरुद्विव

महो. ३।६

भावैरसद्भिरैवायमद्वयेन च कल्पितः

वैतथ्य. ३३

भावोऽप्यभावमायाति जीर्यन्ते वै

दिगीश्वराः

महो. ३।५१

भासनाद्भसितम्

बृ.जा. १।६

भासमानमिदं सर्वं मानरूपं परं पदम् ।

पश्यन्वेदान्तमानेन सद्यएवविमुच्यते

वराहो. २।१४

भासस्तवोप्राः प्रतपन्ति विष्णो

भ.गी. १।१३०

भासस्तस्य महात्मनः

भ.गी. १।११२

भासा त्वया व्योम्नि कृतः सुतार्क्ष्यस्त्वं

वै कुमारस्त्वमरिष्टनेमिः

एका. ८. ४

भासा हीनोऽस्मि भाऽस्म्यहं

मैत्रे. ३।५

भास्कराय विद्महे महाद्युतिकराय

धीमहि । तन्नो आदित्यः प्रचोदयात्

वनदु. १२१

भास्कराय विद्महे महाद्युतिधराय

धीमहि । तन्नो आदित्यः प्रचोदयात्

महाना. ३।१०

भास्याम्यहमिति चन्द्रमाः

बृह. १।५।२२

भास्वतीमेवाप्येति यो भास्वती-

मेवास्तमेति

सुवालो. ९।१३

भास्वती स्मृता चतुर्थः पादो भवति

भवति च सर्वेषु पादेषु चतुरात्मा

नृसिंहो. ३।३

भास्वती त्वासादयामि

चित्त्यु. १९।१

भाः सत्यस्तस्मिन्नन्तर्हृदये यथा

ब्रीहिर्वा यवो वा स एष सर्वस्ये-

शानः सर्वस्याधिपतिः सर्वमिदं

प्रशान्ति

बृह. ५।६।१

मिह्मादनसमुद्योगाद्येन केन नि-

मन्त्रितम् । अथाचितं तु तद्भैरवं

भोक्तव्यं च ह्यसुखम्

तं.सो. १।६८

मिक्षादि वैदलं पात्रं स्नानद्रव्यम-
वारितम् । एतां वृत्तिमुपासीना
चातयन्तीन्द्रियाणि च २सञ्ज्यासो. १५
मिक्षादि वैदलं पात्रं स्नानद्रव्यम-
वारितम् । एवं वृत्तिमुपासीनो
यतेन्द्रियो जपेत्सदा कुण्डिको. १३
मिक्षामात्रेण जीवी स्यात्स यति-
र्भक्तिवृत्तिहा ना.प. ५।१२
मिक्षामात्रेण यो जीवेत्स पापी
यतिवृत्तिहा प. हं. ७
मिक्षार्थमटनं यस्य विष्मूत्रकरणाय
च । योजनान्न परं याति सर्वथा
पञ्चरेव सः ना.प. ३।६५
मिक्षाशी यत्किञ्चिन्नाद्यात् कठरु. ४
मिक्षा सर्वत्र लभ्यते १सं.सो. २।९९
मिक्षुर्नैहिकामुष्मिकापेक्षः ना. प. ५।११
मिक्षाशनं दद्यात्पवित्रं धारयेज्जन्तु-
संरक्षणार्थम् २सञ्ज्यासो. १०
मिक्षुश्चतुर्दशकरणानां न तत्रावकाशं
दद्यात् ना. प. ७।३
मिक्षूणां पटलं यत्र विश्रातिमगम-
त्सदा । तपैपदं ब्रह्म तत्त्वं ब्रह्ममात्रं
करोतु माम् मिश्रुको.शीर्षकं
(ॐ अथ) मिक्षूणां मोक्षार्थिनां
कुटीचक-बहुदक-हंस-परम-
हंसाश्चेति चत्वारः (भेदाः) मिश्रुको. १
मिथते चेज्जडो भेदश्चिदेका सर्वदाखलु रुद्रह. ४५
मिथते हृदयप्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व-
संशयाः । क्षीयन्ते चास्य कर्माणि
तस्मिन्नुष्टे परावरे [मुण्ड. २।२।८+ यो.शि. ५।४५
[महो. ४।८२+ अ. पू. ४।३१+ सरस्व. ५६
मिथते हृदयमन्थिः...क्षीयन्ते परमा-
काशे ते यान्ति परमां गतिम् यो.शि. ६।४०
मिथते तासां नामरूपे समुद्र इत्येवं
प्रोच्यते एवमेवास्त्य..पौडशकलाः
...अस्ति गच्छन्ति प्रभो. ६।५
मिथते तासां नामरूपे पुण्य इत्येवं
प्रोच्यते । एषोऽकलोऽप्यतो भवति प्रभो. ६।५

मिन्दन्ति योगिनः सूर्य योगाभ्यासेन
वै पुनः यो.शि. १।७५
मिन्नं भगव इति (शिष्य आह) छां. ६।१२।१
मिन्ना प्रकृतिरष्टधा म. गी. ७।४
...
मिन्ने तमसि चैकस्त्वमेक (मे) एवानु-
पश्यति [ब्र. विं. १५+ त्रि.ता. ५।१५
मिन्ने पञ्चात्मके देहे गते पञ्चसु
पञ्चधा । हंसस्त्यक्त्वा गतो देहं
कस्मिन्स्थाने व्यवस्थितः पिंडो. २
मिया देयम् तैत्ति. १।११।३
भीमकर्मा वृकोदरः म. गी. १।१५
भीमार्जुनसमा युधि म. गी. १।४
भीषणमभीषणं नृसिंहो. ६।१
भीषणमित्याह-भीषावा अस्मादादित्य
उदेति भीतश्चन्द्रमा भीतोवायुर्वाति
भीतोऽग्निर्देहतिभीतः पर्जन्यो वर्षति अव्यक्तो. ३
भीषणं सप्तमं स्थानं (जानीयात्) नृ. पू. २।३
भीषाऽस्मादग्निश्चन्द्रश्च भस्मजा. २।६
भीषाऽस्मादग्निश्चन्द्रश्च सृत्युर्धावति
पञ्चमः [तैत्ति. २।७+ नृ. प. २।१०
भीषाऽस्माद्वातः पवते तैत्ति. २।८
[नृ. पू. २।१०+ भस्मजा. २।६
भीषोदेति सूर्यः तैत्ति. ३।८
[नृ. पू. २।१०+ भस्मजा. २।६
भीष्मद्रोणप्रमुखतः म. गी. १।२५
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु म. गी. १।११
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथाऽसौ म. गी. १।१२
मुक्ते प्रकृतिजान् गुणान् म. गी. १।३२
मुखते ते त्वत्वं पापाः म. गी. ३।१३
मुखानं वा गुणान्वितम् म. गी. ५।१३
मुखीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान् म. गी. २।५
मुव इति बाहू, द्वौ बाहू द्वे एते अक्षरे बृह. ५।५।३, ४
मुव इति वायुः तैत्ति. १।५।२
मुव इति वायो तैत्ति. १।६।१
मुव इति सामानि तैत्ति. १।५।२
मुव इत्यन्तरिक्षं तैत्ति. १।५।१
मुव इत्यन्तरिक्षलोकाः गायत्री. २
मुव इत्यपानः तैत्ति. १।५।३

भुक्ताभरसादिकं गात्रेऽग्निना सह...

साङ्गोपाङ्गकलेवरं व्याप्नोति

शांडि. १।४।७

भुक्त्वाजन्मसहस्राणि भूयः संसार-

सङ्कटे । पतन्ति केचिदबुधाः...

महो. ५।१४३

भुजः करिष्यमाणः

चित्त्यु. १।४।४

भुज्यते शिवसम्प्रीत्यै मिताहारः

स उच्यते

योगकुं. १।४

भुञ्जन्मूत्राशुत्सृजन्वा कदाचिन्न तत्रो-

च्छिष्टं भजते शुद्धदेही

सि. शि. ११

भुवनाधिपतिविशंपतिपशुपति-

स्थाणुभवाः

सूर्यता. ५।१

भुवनावीति तद्विदः

वैतथ्य. २४

भुवः प्रपद्येऽमुनाऽमुनाऽमुना

छांदो. ३।१५।३

भुवः स्वाहेत्यमौ हुत्वा मन्ये...

संनवमवनयति

बृह. ६।३।३

भुवोऽन्नं वायवेऽन्तरिक्षाय स्वाहा

महाना. ७।१

भुवो वायवेऽन्तरिक्षाय स्वाहा

महाना. ७।२

भुसुण्डः कालाभिरुद्रं अग्नीषोमात्मानं

भस्मत्तानविधिं पप्रच्छ

बृ. जा. २।१

भूतमात्ममचेतसः

भ.गी. १।७।६

भूतमात्ममिमं कृत्स्नं

भ.गी. ९।८

भूतधामः स एवायं

भ.गी. ८।१९

भूततोऽभूततो वाऽपि सृज्यमाने

समा भूतिः

अद्वैत. २३

भूतदिकपालवीजानि यन्नस्याङ्गानि

वै दश

त्रि.म.ना.७।१२

भूतपिशाचशाकिनीप्रेतवन्ताक-

नाशको भवति

नृ.षट्च. ८

भूतप्रकृतिमोक्षं च

भ.गी. १।३।५

भूतप्रेतपिशाचप्रहाराक्षसापस्मार-

भवमीतिभ्योऽभिरक्षणाद्रक्षेति

बृ. जा. १।६

भूतभर्तुं च तज्ज्ञेयं

भ.गी. १।३।७

भूतभावन भूतेश

भ.गी. १०।१५

भूतभावोद्भवकरः

भ. गी. ८।३

भूतभूतं च भूतस्थः

भ. गी. ९।५

भूतभ्रादे पृथिव्यादिपञ्चमहाभूतानि

चक्षुषादिकरणानि चतुर्विधभूत-

प्रामाण्य

ना.प. ४।३९

भूतसत्त्वतुरीयभागेन ज्ञानेन्द्रियमसृजत

पैङ्गलो.

२।४

भूतसम्प्राप्ते काले भिन्ने तमसि वैखरे ।

अन्तः पश्यन्ति सत्त्वस्था निर्गुणं

गुणगह्वरे

मंत्रिको. ३

भूतस्य जातिमिच्छन्ति वादिनः

केचिदेव हि । अभूतस्यापरे

धीरा विवदन्तः परस्परम्

अ. शां. ३

भूतस्यात्मभूतस्य त्वमात्माऽसि

कौ. त. १।६

भूतं न जायते किञ्चिदभूतं नैव जायते

अ. शां. ४

भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोङ्कार एव

नृ. पू. ४।२

भूतं भविष्यत्प्रभवः क्रियाश्च कालः

क्रमस्त्वं परमाक्षरं च

एकां. उ. ६

भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं चिन्मात्रमेव हि

ते.वि. २।२८

(अथ) भूतं भव्यं भविष्यदिति

कालवत्येषा

मैत्रा. ६।५

भूतं भव्यं भविष्यदिति सर्वमोङ्कार

एव [गणेशी. १।१+

रामो.ता.२।१

भूतं भव्यं भविष्यच्चिकालोदितम्-

व्ययम् । तदप्योङ्कारमेवायं विद्धि

मोक्षप्रदायकम्

ना. प. ८।६

भूतं भव्यं यच्च वेदा वदन्ति

श्वेताश्व. ४।९

भूतादिर्महति विलीयते

सुबालो. २।२

भूतादि भित्त्वा महान्तं भिनत्ति

सुबा. १।१२

भूतादेराकाशं (जायते)

सुबालो. १।१

भूतानामन्न एव च

भ.गी. १०।२०

भूतानामस्मि चेतना

भ.गी. १०।२२

भूतानामीश्वरोऽपि सन्

भ. गी. ४।६

भूतानां त्रयमप्येतत्सर्वोपरमबाधकम् ।

तत्सुषुप्तं हि यत्स्वप्नं मायामात्रं

प्रकीर्तितम्

ना.प. ८।१८

भूतानि गुणा अनुयाजाः, जिह्वेडा

प्रा. हो. ४।३

भूतानि तत्त्वसंज्ञानि कूटस्थोऽक्षर-

संज्ञितः

ना.उ.ता. ३।६

भूतानि तं परादुर्योऽन्यत्रात्मनो

भूतानि वेद [बृ. उ. २।४।६+

४।५।७

भूतानि पञ्च तन्मात्राणि

महो. १।२

भूतानि यान्ति भूतेज्याः

भ.गी. ९।२५

भूतानीति च तद्विदः

वैतथ्य. २०

भूताय स्वाहेत्यमौ हुत्वा मन्ये

सं५ संवमवनयति

बृह. ६।३।३

भूतावासमिमं (शरीरं) त्यजेत् ना.प. ३।४८
 भूतिभूतिमतां सुकृतं कृताय स्वाहा पारमा. ३।६
 भूतेन पञ्चमः प्रोक्तः षष्ठः षोडशतः सूर्यता. २।३
 स्वरात्
 भूतेन्द्रियार्थानतिक्रम्य ततः प्रव्रज्याज्यं धृतिगुण्डं धनुर्गृहीत्वाऽनभिमान-
 मयेन चैवेषुणा तं...निहत्याद्यम् मैत्रा. ६।२८
 भूतेभिर्देवैरभिरभिष्टुतोऽहमेव भस्मजा. २।५
 भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्मा-
 लोकादमृता भवन्ति केनो. २।५
 भूतेष्वहमवस्थितः वासुदे. ९
 भूत्यै न प्रमदितव्यम् तैत्ति. १।१११
 भूत्वा तत्र गतप्राणः शनैरथ
 समुत्सृजेत् क्षुरिको. ५
 भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा भ.गी. १।१५०
 भूत्वा भूत्वा प्रलीयते भ.गी. ८।१९
 भूत्वा भूत्वा स्थिरं योगी योगो. २३
 भूत्वा यास्यसि लाघवम् भ.गी. २।३५
 भूदेवी सखागरान्भस्मसप्तद्वीपा वसुन्धरा
 भूरादिचतुर्दशवनानामाधाराधेया
 प्रणवात्मिका भवति सीतो. १०
 भूः प्रपद्येऽमुनाऽमुनाऽमुना छां. ३।१५।३
 भूभारमखिलं निचखान सङ्कर्षणो. २
 भूमौ स्वेव विजिज्ञासितव्यः छां. ७।२३।१
 भूमानन्दस्वरूपोऽस्मि ते.वि. ३।१३
 भूमानप्रकृतिध्यात्वाकृतकृत्योऽमृतोभवेत् सौ. ल. १५
 भूमानं भगवो विजिज्ञासे छां. ७।२३।१
 भूमावयस्त्रिण्डं निहितं यथाऽचिरेणैति
 भूमित्वम्...प्रणश्यति चित्तं तथा मैत्रा. ६।२७
 भूमिकात्रितयं जाग्रदुत्थी स्वप्न उच्यते अक्षुप. ३९
 भूमिकात्रितयाभ्यासात् (सत्त्वापत्ति-
 ज्ञानभूः) महो. ५।३०
 भूमिकात्रितयाभ्यासादज्ञाने क्षय-
 मागते । समं सर्वत्र पश्यन्ति पारमा. ३।५
 चतुर्षु भूमिकां गताः छां. ७।२३।१
 भूमिकापञ्चकाभ्यासाद्विभेदे (५१-) तु अक्षुप. ३३
 विरतेवशात् । सत्त्वात्मनिस्थितेशुद्धे
 सत्त्वापत्तिरुदाहता [महो. ५।३०+ वराहो. ४।६

भूमिकापञ्चमाभ्यासात्स्वात्मारामतया
 भृशम् । पदार्थभावनानाम षष्ठी
 भवति भूमिका वराहो. ४।८, ९
 भूमिकासप्तकं चैतद्धीमतामेव गोचरम् महो. ५।३९
 भूमित्रयेषु विहरन्मुमुक्षुर्भवति वराहो. ४।१
 भूमिप्राऽस्य कीर्तिर्भवति ३पेत्. २।५।३
 (३५) भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टाक्ष-
 राणि [वृ.व. ५।१४।१+ गायत्र्यु. १
 भूमिरापोऽनलो वायुराकाशश्चेतिपञ्चकः १यो.त. ८३
 भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धि-
 रेव च [ते.वि. ९।७६+ भं.गी. ७।४
 भूमिरापस्तथा तेजो वायुर्योम च
 चन्द्रमाः । सूर्यः पुमांस्तथा चेति
 मूर्तयश्चाष्ट कीर्तिताः ना.पु.ता. १।१२
 भूमिर्धेनुर्धरणी लोकधारिणी
 [महाना. ४।५+सुदर्श. ३+ यज्ञोप. ३
 भूमिर्माता दितिर्नो जनित्रं भ्राताऽन्त-
 रिक्षमभिश्च एतः सहस्रै. १०
 [अथर्व. ६।१२०।२+ ते.वा. २।६।३
 भूमिशापी ब्रह्मचारी निष्कामो गुरु-
 भक्तिमान् (राममंत्रं जपेत्) रामर. ४।३
 भूमिषट्चिराभ्यासाद्देहस्यानुपलं-
 भनात् । यत्स्वभावैकनिष्ठत्वं महो. ५।३४
 सा ज्ञेया तुर्यगा गतिः
 भूमिं जले जलं वह्नी वह्निं वायो वायु-
 माकाशे चाकाशमहङ्कारे चाहङ्कारं
 महति महदव्यक्तंऽव्यक्तं पुरुषे
 क्रमेण विलीयते पैङ्गलो. ३।३
 भूमिः शय्याऽस्ति निस्तीर्णा यतयः
 केन दुःखिताः १सं.सौ. २।९९
 भूमेर्ब्रतन्वन प्रतरन्प्रकामः पोष्यमानः
 पञ्चभिः स्वगुणैः प्रसन्नैः सर्वाणि
 मां धारयिष्यसि स्वाहा पारमा. ३।५
 भूमेव सुखं भूमात्वेवविजिज्ञासितव्यः छां. ७।२३।१
 भूमौ तिष्ठति भूमिस्ते न वेद स ह्यात्मा गोपालो. १।९
 भूमौ दर्भाखने रम्ये..कृत्वा मनोमयी.. अ.ना. १८-२१
 भूमौ वा पतितं व्योम व्योमपुष्पं
 सुगन्धकम् ते.वि. ६।९७

भूम्यादित्यान्तरे यस्तु छादयेच्चतुर-
कुलम् । तां तु सन्ध्यां परां
विद्याच्छायासम्भेदने परे सन्ध्या. ११
भूय एव तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया
संवत्सरं संवत्स्यथ यथाकामं
प्रभान्पृच्छथ प्रभो. ११२
भूय एव नो भगवन्विज्ञापयत्विति
नृसिंहो. ७१
भूय एव महाबाहो भ.गी. १०११
भूय एव मा भगवान् विज्ञापयतु +१०१३+
[छांदो. ६।८।७+९।४+१०।३+ ११।३+१२।३
भूयश्च सृष्ट्वा त्रिदशानथेशीसर्वाधिपत्यं
कुरुते भवानी गुह्यका. ६४
भूयश्चान्ते विश्वमायानिवृत्तिः
[श्वेता. १।१०+ ना. प. ९।९
भूयस्तेनैव मार्गेण जाप्राय धावति
सम्राट् सुबालो. ४४
भूयस्तेनैव मार्गेण स्वप्रस्थानं नियच्छति परब्र. २
भूयस्तेनैव स्वप्राय गच्छति जलोकावत् ब्रह्मो. १
भूयः कथय तृप्तिर्हि भ.गी. १०१८
भूयः सृष्ट्वा यतयस्तथेशः सर्वाधिपत्यं
कुरुते महात्मा श्वेता. ५।३
भूयाभूयो द्विपक्षाभयवरदकरातप्त-
कार्तस्वराष्ट्राभ्राभ्राभेभयुग्मद्वय-
करधृतकुम्भाद्विरासिच्यमाना सौभाग्य. ३
भूयासमिति यो द्रष्टा सोऽहं विष्णु-
मुनीश्वर वराहो. २।८
भूयासं चाक्षयं चापपुनर्मृत्युं जयति,
ब्रह्मणः सायुज्यं गच्छति सहवै. १८
भूयो जन्मविनिर्मुक्तं जीवन्मुक्तस्य
तन्मनः । स ह्यपोऽसौ मनोनाशो
जीवन्मुक्तस्य विद्यते सुक्ति. २।३४
भूयो येन (जीवितेन) न शोच्यते महो. ३।१२
भूरभये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा महाना. ७।३
भूरभये पृथिव्यै स्वाहा महाना. ७।२५
भूरजोऽन्वो समुत्पन्ने जगद्भवतु सर्वदा ते.वि. ६।८१
भूरभवनस्यै पृथिव्यै स्वाहा, भुवोऽभं
वायवेऽन्तरिक्षाय स्वाहा महाना. ७।१
भूरभि सुवोऽसि सुवरसि भूर्भूतये स्वाहा पारमा. ५।६

भूरिति भुवो लोकः । भुव इत्यन्तरिक्ष-
लोकः । स्वरिति स्वर्गलोकः ।
महरिति महर्लोकः । जन इति
जनो लोकः । तप इति तपो-
लोकः । सत्यमिति सत्यलोकः गायत्रीर. २
भूरिति वा अग्निः तैत्ति. १।५।२
भूरिति वा अयं लोकः तैत्ति. १।५।१
भूरिति वा ऋचः तैत्ति. १।५।२
भूरिति वै प्राणः तैत्ति. १।५।३
भूरिति व्याहृतिर्गायत्रं छन्दस्त्रिवृतं
स्तोमं प्राचीं दिशं वसन्तमृतुं वाच-
मध्यात्मं जिह्वां रसमितीन्द्रिया-
प्यन्वभवन् २प्रणवो. ३
भूरित्यग्नौ प्रतितिष्ठति तैत्ति. १।६।१
भूरित्यग्भ्यो भुवरिति यजुर्भ्यः स्वरिति
सामभ्यः छां. ४।१७।३
भूर्भुवं वा भुवो वा सुवो वा किञ्चि-
त्स्वनन्तं सुषुवे सर्वस्य दातारम-
जरं जरित्रे स्वाहा पारमा. ८।६
(अथ) भूर्भुवः स्वरिति लोकवत्येषा
भूर्भुवः स्वरित्येषवास्य प्रजापतेः
स्थविष्ठा तनूर्या लोकवतीति ।
स्वरित्यस्याः शिरो नाभिर्भुवो
भूः पादा आदित्यश्चक्षुः मैत्रा. ६।६
भूर्भुवः स्वर्लोणि स्वर्गभूपातालानि
त्रिपुराणि त्रि.ता. १।१
भूर्भुवः सुवरभ ओम् महाना. ७।२
भूर्भुवः सुवरभमोम् महाना. ७।१
भूर्भुवः सुवरभं चन्द्रमसे दिग्भ्यः स्वाहा महाना. ७।१
भूर्भुवः सुवः ब्रह्म स्वयम्भु चिन्त्यु. ६।१
भूर्भुवः सुवरिति वा एतास्त्रिचो
व्याहृतयः तैत्ति. १।५।१
भूर्भुवः सुवर्भ्रद्वेतदुपास्यैतत्तपः म. ना. ७।८
भूर्भुवः सुवर्भ्रहरोम् महाना. ७।३
भूर्भुवः सुवर्भ्रन्द्रमसे दिग्भ्यः स्वाहा महाना. ७।२
भूर्भुवः सुवर्भ्रन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च
दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा महाना. ७।३
भूर्भुवः सुवर्भ्रन्द ओम् महाना. ७।३
(७) भूर्भुवः सुवरिति व्याहृतयः २प्रणवो. १८

भूर्भुवः स्वरिमे लोकाश्चन्द्रसूर्यामि-
देवताः । यासुमात्रासु तिष्ठन्ति
तत्परं ज्योतिरोमिति यो.शि. ६।५६

भूर्भुवः स्वरिमे लोकाः सोमसूर्यामि-
देवताः । यस्य मात्रासु तिष्ठन्ति
तत्परं ज्योतिरोमिति यो. चू. ८५

भूर्भुवः स्वर्मेहर्जनस्तपः सत्यं तलं
वितलं सुतलं रसातलं तलातलं
महातलं पातालं.. एवं.. ब्रह्मांडं.. राधोप. १।२

भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि [प्रवर्ग्या. ३+ वा.सं. ३६।३

भूर्भुवः स्वःपते रायस्पते वाजिपते
गोपते ऋग्यजुस्सामाथर्वाङ्गिरः-
पते नमो ब्रह्मपुत्राय ग. पू. १।५

भूर्भुवः स्वः स्वाहेत्यमौ हुत्वा मन्ये
स ५ सवमवनयति बृह. ६।३।३

भूर्भुवः पादयोस्तस्य भुवर्लोकस्तु
जानुनि । सुवर्लोकः कटीदेशे
नामिदेशे महर्जगत् ना. बि. ३

भूर्भुवः नारायणः, भुवश्च नारायणः
भूर्भुवः नक्षत्राणि ना. उ. ता. १।५

भूर्भुवः आदिर्मेध्यं भुवः स्वस्ते शीर्षं
[अ. शिरः. ३।१+ सन्ध्यो. २३

भूर्भुवः दधामि, भुवस्ते दधामि, स्वस्ते
दधामि सर्वं त्वयि दधामीति बटुको. १७

भूर्भुवः आदिर्मेध्यं भुवस्ते स्वस्ते शीर्षं
विश्वरूपोऽसि बृह. ६।४।२५

भूर्भुवः प्रपद्ये भुवः प्रपद्ये स्वः प्रपद्ये
चतुर्वे. ८

भूर्भुवः स्वः प्रपद्ये सहवे. २२

भूर्भुवः स्वाहेत्यमौ हुत्वा मन्ये
स ५ सवमवनयति बृह. ६।३।३

भूर्भुवः प्रकृतिपुरुषमयो हि स धनद
इति प्रकृतिर्माया पुरुषः शिव इति ग. पू. २।८

भूर्भुवः नादविर्बर्णं पितरसुपसंसार
अधीदि भगवन्प्रदोति वै. ३।३

भूर्भुवः स्वः भवतो विशन्ति सविजिज्ञासस्व वै. ३।११

भूर्भुवः स्वः भवतो विशन्ति सविजिज्ञासस्व
कारणाद् । सामन्तश्चेन्द्रिकाकान्ते-
र्वैतो मन्ये विवेकिनः महो. ५।७९

भृष्टबीजसमुत्पन्नेष्वद्विभेज्यगदस्तु सत् ते. बि. ६।५४

भेददृष्टिरविद्येयं सर्वथा तां विसर्जयेत् महो. ५।११३

भेदनिम्नाः (भिन्नाः) पृथग्वादा-
स्तस्मात्ते कुपणाः स्मृताः अ. शां. ९४

भेदस्तयोर्विकारः स्यात्सर्गं न ब्रह्मणि
कचित् (विभाति ब्रह्मसर्गयोः) सरस्व. ४७

भेदः सर्वत्र मिथ्यैव धर्मादेरनिरूपणात् ।
अतश्च कारणं नित्यमेकमेवाद्वयं खलु पञ्चम. ३३

(ततः) भेदाभावात् कदाचिद्बहि-
र्गतेऽपि मिथ्यात्वमानात् मं. प्रा. २।६

भेदाभेदस्तथा भेदाभेदः साक्षात्परात्मनः।
नास्ति स्वात्मातिरेकेण स्वयमेवास्ति
सर्वदा पा. ब्र. ३३

भेषजकृतो ह वा एष यज्ञो
यत्रैवंविद्ब्रह्मा भवति छांदो. ४।१७।८

भैक्षाशनं च मौनित्वं तपो ध्यानं
विशेषतः । सम्यग्ज्ञानं च वैराग्यं
धर्मोऽयं मिश्रुके मतः ना. प. ५।४४

भैक्षेण वर्तयेन्नित्यं नैकान्नाशी भवेत्
कचित् । निरीक्षन्ते त्वनुद्दिष्टास्त-
द्रूढं यत्नतो ब्रजेत् १ सं. सो. २।६०

भैक्षेण वर्तयेन्नित्यं नैकान्नाशी भवेत्
कचित् । चित्तशुद्धिर्भवेद्यावत्ताव-
न्नित्यं चरेत्सुधीः ना. प. ५।४६

भेषज्याहारपात्राणि वस्त्रशय्यासनं
गुरोः । आनयेत्सर्वव्यत्नेन प्रार्थ-
यित्वा धनेश्वरान् शिवो. ७।३७

भो किमादौ किं जातमिति सद्योजातं पं. ब्र. १

भोक्ता च प्रसुरेव च अ. गी. ९।२४

भोक्ता भोग्यश्च यद्भवेत् कैव. १८

भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा सर्वं
भोक्तं त्रिविधं ब्रह्मेतत् भेदांश. १।१२

भोक्तारं यज्ञतपसां अ. गी. ५।२९

भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते अ. गी. ९।३।२१

भोक्तेति वै (च) भोक्तृविदो भोक्त-
मिति च तद्विदः वैतथ्य. २२

भोगशक्तिर्भोगरूपा... सर्वं कियते सोतो. २७

भोगान्भवाति विपुलाय लिङ्गे
सम्पूजितः शिवः शिवो. ७।७३

भोगान्भुक्त्वा च मुच्यन्ते प्रलये
 कर्मयोगिनः शिवो. १।३१
 भोगाभोगा महारोगाः सम्पदः परमा-
 पदः । वियोगायैव संयोगा आधयो
 व्याधयोऽधियाम् अक्षुप. २६
 भोगेच्छामात्रको बन्धस्तस्यागो
 मोक्ष उच्यते महो. ५।९७
 भोगेच्छां दूरतस्त्यक्त्वात्रयमेतत्समाचर
 भोगेभ्यो ह्यरतिर्जाता हृदयाद्वा अ. पू. ४।८२
 सुकलादिह महो. २।७१
 भोगैकवासनां त्यक्त्वा त्यज त्वं
 मेदवासनाम् महो. ४।१०९
 भोगैर्धर्मगतिं प्रति अ.गी. २।४३
 भोगैर्धर्मप्रसक्तानां अ.गी. २।४४
 भोग्यमजीजनत् बहुचो. १
 भोजनं तामसप्रियम् अ.गी. १७।१०
 भोजयेत्तद्दशांशतः रामर. ४।८
 भोजयेद्द्वितिनश्चात्र स्वगुरुं च विशेषतः शिवो. ७।७७
 भोज्यमिति च तद्विदुः वैतथ्य. २२
 भो पवित्रं सुलभं सुकरम् कात्याय. १
 भो प्रजापते त्वमव्यक्तादुत्पन्नोऽसि
 व्यक्तं ते कृत्यमिति अव्यक्तो. २
 भो भगवन् ब्रह्मपुत्र कथं मुक्त्युपायोऽ.. ना.प. १।१
 भो भगवन् ब्रह्मविष्णुरुद्राणां मध्ये
 को वाऽधिकतरो ध्येयः... शरभो. १
 भोमाधिन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा
 महाप्रयत्नं तरति देव्यु. २६
 भवतीव च मे मनः अ.गी. १।३०
 भवदसि...प्रस्तब्धमस्येकशफमसि(मा.पा.)बृ.उ. ६।३।४
 भवत्कीटकार्येण दीक्षिताः शिव-
 योगिनः शिवपूजापथे गुरुपूजा-
 विधौ च महेश्वरपूजनान्मुक्ताः रुद्रोप. ३
 भवत्कीटन्यायेन शरीरत्रयमुत्सृज्य
 सन्न्यासेनैव देहत्यागं करोति
 स कुतकृत्यो भवति मा.प. ३।८७
 भवन्निधानवशकुनिः पक्षौ संहृत्य
 तयो जीवोऽपि जायतस्त्वन्नप्रपञ्चे
 व्यबहृत्य भ्रान्तोऽज्ञानं प्रविश्य
 स्वानन्दं मुने

भ्रमः पञ्चविधो माति तदेवेह समु-
 च्यते । जीवेश्वरौ मित्ररूपाविति
 प्राथमिको भ्रमः । आत्मनिष्ठं
 कर्तृगुणं वास्तवं वा द्वितीयकः ।
 शरीरत्रयसंयुक्तजीवः सङ्गी तृतीयकः ।
 जगत्कारणरूपस्य विकारित्वं
 चतुर्थकः । कारणाद्विजगत्तः
 सत्यत्वं पञ्चमो भ्रमः अ. पू. १।१३
 भ्रष्टबीजोपमा येषां पुनर्जननवर्जिता ।
 वासनारसनाहीना जीवन्मुक्ताहिते.. अ.पू. ४।५२
 भ्रष्टबीजोपमा भूयो जन्माङ्कुर-
 विवर्जिता । हृदि जीवद्विमुक्तानां
 शुद्धा भवति वासना १सं.सो. ३।४३
 भ्राजिष्णवे विश्वदेतवे नमः सूर्यो. ६
 भ्रातरं वा स्वसारं वा छां. ७।१५।२
 भ्राताऽन्तरिक्षमभिशस्त एनः सहै. १०
 भ्रातृहा त्वमसि छां. ७।१५।२
 भ्रातृन्वा भोजयेच्छ्राद्धे पुत्रं वापि
 गुणान्वितम् । आत्माच वापि
 सुखीत न विप्रं वेदवर्जितम् इतिहा. ७७
 भ्रान्तं पश्यति दुर्वृष्टिः सर्वं मदवशादिव मुक्ति. २।६०
 भ्रान्ता एवाखिलास्तेषां क मुक्तिः
 केह वा सुखम् वराहो. २।५५
 भ्रान्तिहरणम् निर्वाणो. ७
 भ्रुवोरन्तर्गता दृष्टिर्मुद्रा भवति लिचरी ।
 न रोगो मरणं तस्य न निद्रा न
 क्षुधा तृषा व्या.वि. ८०
 भ्रामयन् सर्वभूतानि अ.गी. १८।६१
 भ्रुवोर्घ्राणस्य च यः सन्निधः स
 एव शोर्लोकस्य परस्य च
 सन्निर्भवति [जावा. ३।४ भ्रामो. ३।४
 भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् अ.गी. १८।१०
 भ्रुवोर्मध्ये ललाटस्थं तज्ज्ञेयं च
 निरञ्जनम् इयोगत. १४
 भ्रुवोर्मध्ये ललाटे तु नासिकायास्तु
 मूलतः । जानीयाद्वस्तुं स्थानं
 ब्रह्मायतनं महत् व्या.वि. ४०

भ्रूचक्रं सप्तमं विद्याद्विन्दुस्थानं च

वह्निदुः । भ्रुवोर्मध्ये वर्तुलं च

ध्यात्वा ज्योतिः प्रमुच्यते

भ्रूणहत्यां वा पते प्रन्ति [त्रिसुप. २+

भ्रूणहाऽभ्रूणहा (भवति)

भ्रूवहरादुपरि सच्चिदानन्दतेजःकूटरूपं

परं ब्रह्मावलोकयन्स्तद्रूपो भवति

भ्रूमध्यदृष्टिरप्येषा मुद्रा भवति खेचरी

भ्रूमध्यनिलयो विन्दुः शुद्धस्फटिक-

सन्निभः । महाविष्णोश्च देवस्य

तत्सूक्ष्मं रूपमुच्यते

योगरा. १५

महाना. १२।२

बृह. ४।३।२२

अद्वयता. १

१यो. त. ११८

यो. शि. ५।३४

(तत्र) भ्रूमध्ये गतो जीव आपाद-

मस्तकं व्याप्य कृषिभ्रवणाद्यस्त्रि-

क्रियाकर्ता भवति

भ्रूमध्ये चित्तसंयमात्तपोलोकज्ञानं

भ्रूमध्ये तारकालोकशान्तावंतमुपा-

गते । चेतनैकतने बद्धे प्राणस्फंदो

निरुद्धयते

भ्रूमध्ये सच्चिदानन्दतेजःकूटरूपं

तारकं ब्रह्म

भ्रूयुगमध्यविले दृष्टिं तद्द्वारोर्ध्वस्थित-

तेज आविर्भूतं तारकयोगो भवति

भ्रूयुगमध्यविले तेजस आविर्भावः

पैङ्गलो. २।७

शांदि. १।७।५३

शांदि. १।७।३३

मं. प्रा. १।२

अद्वयता. ६

मं. प्रा. १।४

म

मकरन्दं पिबन्मृज्जो गन्धाब्जापेक्षते

यथा । नादासक्तं सदा चित्तं

विषयं न हि काङ्क्षति

मकारतुरीयांशा पञ्चमी

मकारभावे प्राज्ञस्य मानसामान्य-

शुक्लदम् । मात्रासम्प्रतिपत्तौ तु

लयसामान्यमेव च

मकारमूर्तिः कृष्णाङ्गी वृषवाहिनी

बृहदा त्रिशूलधारिणी सरस्वती

भवति

मकारवाच्यः शिवस्वरूपो हनुमान्

मकारअतुर्थी किंस्थानमित्युभा-

योष्ठौ स्थानम्..

मकारश्च पुनः प्राज्ञं

मकारआभि- (स्वमि-) सङ्काशो

विब्रूमो विद्युतोपमः [अ. वि. ८+ १ प्रणवो. ८

मकारआप्यकारश्च शुकारश्चेति

कीलकम्

मकारस्तामसः कृष्णो ब्रह्मोति

स्योच्यते

मकारस्तुरीयाब्रह्मद्वारो भवति

मकारस्तुरीयाद्वारो भवति

मकारस्त्वम्पदार्थवान्

मकारस्थूलोऽग्रे सुषुप्तविद्यः

मकारं तु स्मरन् पञ्चाद्रेचयेद्विद्या-

उपनिषद्

ना. वि. ४२

वराहो. ४।१

आगम. २१

शांदि. १।६।१

तारसा. ३।८

२ प्रणवो. १६

आगम. २३

गुणका. ८२

यो. च. ७६

श्रीवि. ता. १।२

रामो. १।२

रामर. ५।१३

वराहो. ४।१

जा. द. ६।९

मकारः शतावयवोपेतः

मकारः सहस्रावयवान्वितः

मकाराक्षरसम्भूतः शिवस्तु हनुमान्

स्मृतः । विन्दुरीश्वरसंज्ञस्तु

शत्रुघ्नश्चक्रराट् स्वयम्

मकारे च भ्रुवोर्मध्ये प्राणशक्त्या

प्रबोधयेत्

मकारे जाग्रत्प्राज्ञः

मकारेण ब्रह्मणाऽनुसन्दध्यात्

मकारेण मनआद्यवितारं मन-

आदिसाक्षिणमन्विच्छेत्

मकारे तु लयं प्राप्ते तृतीये प्रणवांशके

मकारे लभते नादमर्धमात्रा तु

तिश्चाला

मकारे लीयते ब्रह्मः प्रणवो हि

प्रकाशते

मकारे व्यञ्जनमित्याहुः

मकारोऽभ्युदयार्थत्वात् स भावेति

च कीर्त्यते...

मकारो ब्रह्मो भवति

मकारोऽस्मि सनातनः

मकारो हृदि सुषुप्तः

मज्जन्मच्छांस्वद्वयः प्राप्ताजीः सार्धं

विरोचनेन किमिच्छन्पुनरागमः

[छान्दो. ८।१।२+१०।३+

मज्जन्मच्छांस्वद्वयः प्राप्ताजीः सार्धं

ना. प. ८।९

तुरीयो. १

तारसा. २।२

अ. वि. ७०

प. हं. प. १०

नृसिंहो. ७।४

नृसिंहो. ७।५

ध्या. वि. १२

१ यो. त. १२९

यो. च. ७८

२ प्रणवो. १२

रामर. १।७

तारसा. १।४

मैत्रे. ३।१२

यो. च. ७४

+११।२

केनो. ३।२२

मधवन्मर्त्यं वा इदं शरीरमात्तं

सृत्युना

छांदो. ८।१२।१

मवाद्यं अविष्टार्धमाग्नेयं क्रमेणोत्क्र-

मेणसार्पाद्यं अविष्टार्धान्तं सौम्यम् मैत्रा. ६।१४

मभित्तः सततं भव

म. गी. १८।५७

मभित्तः सर्वदुर्गाणि

म. गी. १८।५८

मभित्ता मद्रतप्राणाः

म. गी. १०।९

मभित्तं न मत्कथनमन्योन्यं मत्प्र-

भाषणम् । मदेकपरमो भूत्वा

कालं नय महामते

वराहो. २। ४६

मज्जातः शुक्रं, शुक्रशोणितसंयोगा-

द्वावर्तते गर्भः

गर्भो. २

मज्जा निधनम्

छांदो. २।१९।१

मज्जामेदोभ्यां सम्पूर्णं शिराजाल-

समावृते । नवद्वारे पुरे देहे

ममत्वं च शरीरके

दुर्वाधो. २।७

ममकं शुद्धवस्त्रं च स्त्रीकयालौल्य-

मेव च । दिवा स्वापं च यानं

च श्रुतीनां पतनानि षट्

ना. प. ३।७।१

ममकीदृतेषु कुरुष्वाटिक्या सह

आयथोपस्तिर्ह चाक्रायण

इय्यधामे प्रद्राणक उवास

छांदो. १।१०।१

ममकीदृतेषु कुरुष्वाटिक्यासह[मा.पा.]छां. १।१०।१

मणिकर्ण्यो मम क्षेत्रे गाङ्गायां वातटे

पुनः । म्रियेत दृढी वज्रन्तोर्मु-

क्तिर्नातो वरान्तरम्

रामो. वा. ३।३

मणिपूरकचक्रं हृदयचक्रं, अष्टदल-

मधोमुखम् । तन्मध्ये ज्योतिर्म-

यलिङ्गाकारं ध्यायेत्

सौभाग्य. २७

मणिपूरं नाभिदेशं हृदयस्थमना-

हृतम् । विशुद्धिः कण्ठमूले च

आज्ञाचक्रं च मस्तकम्

योगकुं. ३।११

मणिचक्रं तथा गुल्फे स्फुरणं यस्य

मेवयति । चण्पासावधिरतस्य

जीवितस्य स्थितिर्मेव

त्रि. भा. १२३

मणिचक्रं द्वादशैव स्कन्धे मन्त्राक्षरं

वदेत् । मन्त्रोच्चरतिमालामुप-

नीतं प्रत्यक्षयेत्

ह. भा. १६

(यद्वा) मण्डलाद्वा स्तनबिम्बमेकं

मुखं चाधस्त्रीणि गुहासदनानि

त्रिपुरो. ११

मत् एव केषाञ्चित्कैश्चिद्भेदः

स्वसंवे. ३

मत् एव तन्निष्ठाः मत् एव न

निर्वाणं नो निरय इति

स्वसंवे. २

मत् एव न श्रानगर्दभौ

स्वसंवे. ३

मत् एव यत्र विरिञ्चिविष्णुरुद्रा

ईश्वरश्च गच्छन्ति

स्वसंवे. ३

मत्तङ्ग भगवन्गुरो राजश्यामला-

रहस्योपनिषदं मेऽनुब्रूहि

राजश्या. १

मत्तं यस्य न वेद सः

कैनो. २।३

मत्तश्च मन्तयितव्यं च नारायणः

सुबालो. १

मत्ता बुद्धिर्जनार्दन

म. गी. ३।१

मतिर्नाम वेदविहितकर्ममार्गेषु अद्वा

शांडि. १।२।१

मतिविज्ञानसम्पत्तिशुद्धये (रुद्राक्षं)

धारयेत्सुधीः

ह. जा. ३०

मतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्या

छांदो. ७।१८।१

मत्कर्मकृन्मत्परमः

म. गी. ११।५५

मत्कर्मपरमो भव

म. गी. १२।१०

मत्त एव पृथग्विधाः

म. गी. १०।५

मत्त एवेति तान् विद्धि

म. गी. ७।१२

मत्तपेरावतोबद्धः सर्वपीकीणकोटरे

महो. ४।६४

मत्तः कश्चिन्नान्यो व्यतिरिक्त इति

फलपत्रोदकाहारः पर्वतवनदेव-

तालयेषु सञ्चरेत्

ना. प. ४।४८

मत्तः परतरं नान्यत्

म. गी. ७।७

मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगच्छून्यं

चाशून्यं च अहमानन्दानानन्दा-

विज्ञानाविज्ञाने अहम्

देव्यु. १

मत्तः सर्वं प्रवर्तते

म. गी. १०।८

मत्तः सर्वाणि भूतानि मत्तः सर्वं

चराचरम्, भवन्तो वै न मज्जिजाः

गणेशो. ४।९

मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च

म. गी. १५।१५

मत्तो न कश्चिन्नान्यो व्यतिरिक्त

इत्यात्मन्यालोच्य... देहपतन-

पयन्तं स्वरूपानुसन्धानेन वसेत्

ना. प. ७।३

मत्तौऽन्यदस्ति चेन्मिथ्या यथा

मदमरीचिका

ते. वि. ६।७५

मत्तौ व्यतिरिक्तः कश्चिज्जास्तीति

तुरीयादी. ३

मत्पादाकृतयश्च ऊर्ध्वपुण्ड्रानासावयः

स्पृताः रेखा द्वादशकल्पाने

मत्पादात्तरिप्यसि

मत्पादादावप्रोति

मत्वा धीरो न शोचति

मत्सरो मुष्टिकोऽजयः

मत्संस्थामधिगच्छति

मत्सान्निभ्यात्प्रवर्तन्ते देहाद्या

अजडा इव

मत्सारभूतं यद्यत्स्यान्मथुरा सा

निगद्यते

मत्स्थानि सर्वभूतानि

मत्स्थानीत्युपधारय

मत्स्यकूर्मवराहनारसिंहवामनराम-

रामकृष्णबुद्धकल्कसद्योजात-

वामदेवा अघोरतत्पुरुषेशानपर-

मेश्वराः षोडशदलाः

मत्स्वरूपपरिज्ञानात्कर्मभिर्नसबध्यते

मत्स्वरूपमेव सर्वं मत्प्रतिरिक्तमणु-

मात्रं न विद्यते

मत्स्वरूपस्त्वयं ज्ञेयो बिल्ववृक्षो

विधानतः

मथुरावन-मधुवनमहावन-खादिरवन-

भांडीरवननंदीश्वरवननंदवनानंद-

वनखांडवनपलाशवनशोकवन

केतकवन-द्रुमवन-गन्धमादनवन-

शेषशायिवन-श्यामायुवन-भुव्यु-

वन-वधिवन-वृषभानुवनसङ्केत-

वनदीपवन-रासवन-क्रीडावनो-

त्सुकवनान्येतानि चतुर्विंशति-

वनानि

मथुरायां विशेषेण मां व्यायन्मोक्ष-

ममृते

मथुरायां स्थितिर्मेघान्स्वर्वा मे

मविष्यति

मवृक्षेपनं पुण्यं चक्रतीर्थान्तः

स्थितं चक्रसमायुक्तं पीतवर्णं

मुक्तिसाधनं भवति

ऊर्ध्वपुं. ६

म. गी. १८।६८

म. गी. १८।५६

कठो. ६।६

कृष्णो. १४

म. गी. ६।१५

सर्वसारो. ९

गोपालो. २।२५

म. गी. ९।४

म. गी. ९।६

ना. पू. ता. ६।१

वराहो. २।२८

त्रि. म. ना. ८।१

१ बिल्वो. २

राधोप. ३।१

गोपालो. २।२०

गोपालो. २।४

गोपीचं. १

मदनाथः शिवं वाग्भक्तम्, चतुर्थे

कामकलामयं

मदनुग्रहाय परमं

मदन्तिहा मानिनी मङ्गला च

सुभा(म)गा च सा [त्रि.म.६+ त्रिपुरो. ६

मदमोहेन यः शूद्राणां पुत्रमुत्पादये-

हिजः । यावत्तिष्ठत्स वै भूमौ

तावत्तिष्ठेत् सुदारुणे

मदर्थमपि कर्माणि

मदर्थं त्यक्तजीविताः

मदाभिमानमात्सर्यलोभमोहाति-

शायिताम् । बहिरप्यास्थिता-

मीषस्यजत्यहिरिव त्वचम्

मदीयं च त्वदीयं च ममेति च तवेति

च । मद्यं तुभ्यं मयेत्यादि तत्सर्व-

वितथं भवेत्

मदीयोपासकस्यासाध्यनकिञ्चिदस्ति त्रि. म. ना. ८।७

मदीयोपासनां कुरु, मामेव प्राप्स्यसि त्रि. म. ना. ८।६

मदुपासकस्तस्माभिरतिशयाद्वैतपर- त्रि. म. ना. ८।७

मानन्दलक्षणः परब्रह्म भवति त्रि. म. ना. ८।७

मदुपासकः सर्वोत्कृष्टः स भवति त्रि. म. ना. ८।७

मदुपासनकः सर्ववन्द्यो भवति त्रि. म. ना. ८।७

मदुपासनया सर्वमङ्गलानि भवन्ति त्रि. म. ना. ८।७

मदुपासनया सर्वं जयति त्रि. म. ना. ८।७

मदेकपूजानिरतः सम्पूजयेत्,

तद्वदमभामि

मद्वेतेनान्तरात्मना

मदुष्टे पादं वक्ता

मद्वक्त एतद्विज्ञाय

मद्वक्तः सङ्गवर्जितः

मद्वक्तं यान्ति मामपि

मद्वक्तिनिष्ठो भव

मद्वक्ति लभते पराम्

मद्वक्तेष्वभिधान्यति

मद्वानं सोऽधिगच्छति

मद्वाना मानसा जाताः

मद्वानाद्योपपद्यते

मद्यं मांसं च लघुवंपलाण्डं शिषु-

मेव च । श्लेष्मातकं विद्वराह-

मसस्यं वर्जयेन्नरः

त्रि. सा. ३।१६

म. गी. १४।१

त्रिपुरो. ६

इतिहा. ७९

म. गी. १२।१०

म. गी. १।९

अव्युप. १६

ते. वि. १।५०

त्रि. म. ना. ८।७

त्रि. म. ना. ८।६

त्रि. म. ना. ८।७

त्रि. म. ना. ८।७

त्रि. म. ना. ८।७

त्रि. म. ना. ८।७

मत्सजा. २।१०

म. गी. ६।४७

छांदो. ३।८।१

म. गी. १३।१९

म. गी. १३।५५

म. गी. ७।२३

त्रि. म. ना. ८।६

म. गी. १८।५४

म. गी. १८।५८

म. गी. १४।१९

म. गी. १५।६

म. गी. १३।१९

क. जा. ४०

मध्याह्नी मां नमस्कुरु [म.गी. १।३४+ १८।६५

मधूपमव्ययं ब्रह्म आदिमध्यान्त-

वर्जितम् । स्वप्नं सचिदानन्दं

भवत्या जानाति चाव्ययम्

मद्रेषु चरकाः पर्यव्रजाम

मद्रेष्ववसाम पतञ्जलस्य काप्यस्य

गृहेषु यज्ञमधीयानाः

मध्यतिरिक्तमणुमात्रं न विद्यते

मध्यतिरिक्तमबाधितं न

किञ्चिदस्ति

मध्यतिरिक्तं सर्वं बाधितम्

मधुकरराजानं माक्षिकवत्

मधुकरवृत्त्याऽऽहारमाहरन् कुशो

यूत्वा... कारागृहविनिर्मुक्त-

चोरवत् पुत्राप्तबन्धुभवस्थलं

विधाय दूरतो वसेत्

मधु क्षरन्ति तद्रसम्

मधुनक्तमुतोषसि मधुमत्

पार्थिवः रजः

[महाना. १२।२+क्र.मं. १।९०।७ + त्रिसुप. ३+

[भा. सं. १३।२८+

मधुनाऽभिषिच्य गुरुदारगमनात्

पूषो भवति

मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमा

वस्तु सूर्यः [त्रिसुप. ३

मधुमेतु याम् । ब्रह्ममेव मधुमेतुमाम्

[त्रिसुप. १+

मधुमेधया । ब्रह्ममेव मधुमेधया

[त्रिसुप. २+

मधुमेधया । ब्रह्ममेव मधुमेधया

[त्रिसुप. ३+

मधुरामु-लवण-तिक्त-कटु-कषाय-

रसाच्चिन्दति

मधुरादिमयो रसः

मधुवाचा क्रतायते मधु क्षरन्ति

सिन्धवः [बृ. ६।३।६+महाना. १२।२+ क्र.सं.

[मं. १।९०।६+भा. सं. १३।२७

[ते. सं. ४।२।१।३+

त्रिसुप. ३

वासुदे. ८

बृह. ३।३।१

बृह. ३।७।१

त्रि. म. ना. ८।६

त्रि. म. ना. ८।६

त्रि. म. ना. ८।६

ब्रह्मो. १

ना. प. ७।१

महाना. ११।१०

बृह. ६।३।६

+ त्रिसुप. ३+

ते. सं. ४।२।९।३

भस्मजा. २।११

महाना. १२।२

महाना. १२।१

महाना. १२।२

महाना. १२।३

गर्भो. १

बृ. जा. २।४

मध्यतोऽनृतं तदेतद्वसृतमुभयतः

सत्येन परिगृहीतं सत्यभूय-

मेव भवति नैनं विद्वांसम-

नृतं ५ दिनस्ति

मध्यतोऽस्मा अन्नं ५ राध्यते

मध्यन्दिनमादित्याभिमुखो-

ऽधीयानः पञ्चमहापात-

कोपपातकात्प्रमुच्यते

मध्यन्दिने प्रबलमधीयीत

मध्यन्दिने माध्यन्दिनं (कर्म)

कृत्वोपस्थानान्तं ध्यायमान

आदित्याभिमुखोऽधीयानः

सुरापानात्पूतो भवति

मध्यमश्च द्वाविंशत्कनिष्ठो-

विंशतिमात्रकः

मध्यमं शास्त्रचिन्तनम्

मध्यमा (मात्रा) चतुर्दशी,

पश्यन्ती पञ्चदशी परा

मध्यमा तैजसात्मनः

मध्यमामेवाप्येति यो मध्यमामेवा-

स्तमेति

मध्यमायां भवतु सावित्री

मध्यमायां मुकुलिता वैखर्या विकसी-

कृता । पूर्वं यथोदिता या वा-

ग्विलोमेनास्तगा भवेत्

मध्यमा वृषभवाहिनी माहेश्वरी

मध्यलक्ष्यं तु प्रायश्चित्तादिवर्ण-

सूर्यचन्द्रबह्विज्वालावलीव-

चद्विहीनान्तरिक्षवत्पश्यति

मध्यस्थकुण्डलिनीमाश्रित्य

मुख्या नाड्यश्चतुर्दश भवन्ति

मध्यं चैवाहमर्जुन

मध्यं छन्दसां बृहती

मध्यं क्षेपामङ्गानामात्मा

मध्याह्नाचामेति, कथमिति, लवणमिति छांदो. ६।१३।२

मध्याह्नकालिका सन्ध्या सावित्री

युवती.. भुवोलोके व्यवस्थिता

(अथ) मध्याह्ने तीक्ष्णं रुद्रस्तपति

मध्याह्ने सूर्याभिमुखः पठेत्

बृह. ५।५।१

तैत्ति. ३।१०।१

नारा. ५

सहस्रै. १७

भस्मजा. १।७

योगो. ६

मैत्रे. २।२१

ना. प. ८।४

गान्धर्वो. १

सुबालो. ९।८

गायत्रीर. ५

योगकुं. ३।१९

गायत्रीर. ५

मं. ब्रा. १।२

शांडि. १।४।५

भ. गी. १०।३२

१पेट. ३।५।४

१पेट. ३।५।४

छांदो. ६।१३।२

गायत्रीर. ६

सन्धयो. २३

सूर्यो. ९

मध्यमे कैवल्यत्मा	अद्वैतो. १
मध्यमे तिष्ठन्ति राजसाः	भ. गी. १४।१८
मध्यमे ज्ञाभिर्भवति	नृ. पू. ५।२
मध्यमे बिन्दुत्रिकोणं तदनु ऋतुगणं..	ग. पू. २।१०
मध्यमे बीजात्मकं देवं यजेत्	ग. पू. २।१०
मध्यमे भास्करं ध्यायेदुपचारान्	
समर्प्यार्घ्याणि दद्यात्	सूर्यता. ५।१
मध्यमे लक्ष्मीनारायणं विक्षेप-	
शक्त्यावरणं	ना. पू. ता. ६।१
मध्यमे वामनमासीनं विश्वेदेवा उपासते	कठो. ५।३
मध्यमे भाति, विसानि भक्षयति	
(दुःस्वप्ने)	३ ऐत. २।४।७
मनआदिचतुर्वशकरणैः पुष्कलै-	
रादित्याद्यनुगृहीतैः शब्दादी-	
न्विषयान्स्थूलान्यदोषलभते	
तदात्मनो जागरणम्	सर्वसारो. ३
मनआदिश्च प्राणादिश्चेच्छादिश्च	
सत्त्वादिश्च पुण्यादिश्चैते प्रश्नवर्गाः	सर्वसारो. ५
मन इति मनोविदो बुद्धिरिति च	
तद्विदः । चित्तमिति चित्तविदो	
वर्मावर्गौ च तद्विदः	वैतथ्य. २५
मन उदक्कामन्मीलित इवाग्रन्	
पिक्वास्तैव	१ ऐत. १।४।४
(अथ ह) मन उद्गीथमुपासाच्च-	
क्रिरेतद्वासुराः पाप्मनाविविधुः	छांदो. १।२।६
मन उपवक्ता	चित्त्यु. १।१
(अथ ह) मन ऊचुस्त्वं न उद्गायेति	
तथेति तेभ्यो मन उद्गायत्	बृह. १।३।६
मन एतानि चर्षूषि यस्माद्गतमिदं	
पाशुपतं यत्प्रस्मनाऽङ्गानि संस्पृष्टो-	
यस्माद्गता तदेतत्पाशुपतं पशु-	
षाक्षविमोक्षणाय	अ. शिरः. ३।११
मन एतानि चर्षूषि... तदेतद्गुदकं	
पशुपाशविमोक्षणाय	बटुको. २४
मन एनं तद्गुत्वाऽवति	बृह. १।५।९
मन एव जगत्सर्वं मन एव	
महारिपुः	ते. वि. ५।९८
मन एव पिता बाह्वाता प्राणः प्रजा	बृह. १।५।७

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध-	
मोक्षयोः । बन्धनं (बन्धाय-	
बन्धस्य) विषयासक्तं (विषया-	
सङ्गि) मुक्त्यै [मुक्तं-मोक्षे-	
मुक्तौ-मुक्तेः) निर्विषयं स्मृतम्	
(मनः-तथा) [ब्र. वि. २+	शाठ्याय. १
[मैत्रा. ६।३४, ११+	अमन. १।७७
[भवसं. ३।१४+	त्रि. ता. ५।३
मन एव महद्बुद्धं मन एव	
जरादिकम्	ते. वि. ५।९९
मन एव महद्बुद्धं मनोऽन्तःकरणं	
च तत्	ते. वि. ५।१०१
मन एव महारिपुः	ते. वि. ५।९८
मन एव समर्थ हि मनसो दृढनिग्रहे	महो. ४।१०५
मन एव सम्राडिति होवाच	बृह. ४।१।६
मन एव सविता वाक्सावित्री	सावित्र्यु. ८
मन एव हि कालश्च मन एव मलं तथा	ते. वि. ५।९९
मन एव हि तेजश्च मन एव	
मरुन्महान्	ते. वि. ५।१०३
मन एव हि बिन्दुश्च उत्पत्तिस्थिति-	
कारणम् । मनसोत्पद्यते बिन्दुर्यथा	
क्षीरं गता- (घृता-) तमकम्	
[यो. शि. ६।७३+	योगकुं. ३।५
मन एव हि भूमिश्च मन एव हि	
तोयकम्	ते. वि. ५।१०१
मन एव हि सङ्कल्पो मन एव हि	
जीवकः	ते. वि. ५।१००
मन एव हि संसारो मन एव	
जगत्त्रयम्	ते. वि. ५।९८
मन एवाप्येक्षि यो मन एवास्तमेति	सुबालो. ९।१०
मन एवायतनमाकाशः प्रतिष्ठा-	
ऽऽनन्द इत्येव दुष्पासीत	बृह. ४।१।६
मन एवास्यात्मा वाग्जासा प्राणः प्रजा	बृह. १।४।१७
मननात् प्राणनान्मैत्रः सर्ववाच्यस्य	
वाचकः	रा. पू. १।१२
(तस्मात्) मननादौ सङ्ख्यासि-	
नामधिकारः	ना. प. ५।८
म (मा) ननान्मन उच्यते	महो. ४।१२३
मननोत्थे मनस्येव बंधः सांसारिकोद्वेगः	अ. पू. २।२४

मनश्चालमस्थिरम्
मनश्च मन्तव्यं च
मनश्चन्द्रं (अप्येति)
मनश्चन्द्रो रविर्वार्युर्दृष्टिरभिरुदाहृतः।

भ. गी. ६।२४
प्रश्नो. ४।८
बृह. ३।२।१३

विन्दुनादकला ब्रह्मन्विष्णु-
ब्रह्मेशदेवताः

यो. शि. ६।७०

मनश्चेदुन्मनीभूयाञ्च पुण्यं न च
पातकम्

यो. शि. ६।६१

मनश्चुदिरान्तरं (शौचं)

शांङ्गि. १।१।३

मनश्चान्द्रमा [२ ऐत. १।४+

ग. शो. ३।११

मनश्च विज्ञानं विज्ञानादानन्दो
ब्रह्मयोनिः

महाना. १७।१३

मनश्चेन्द्रियग्रामं

भ. गी. ६।२४

मनश्चेत्तु क्षुरं गृह्य सुतीक्ष्णं बुद्धि-
निर्मलम् । पादस्योपरि यन्मध्ये

क्षुरिको. ११

तद्रूपं नाम कृन्तयेत्

मनश्चेत्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मानमहान्परः

[कठो. ३।१०+४।४+गुह्यका. ४१ भ. गी. ३।४२

मनसः काममाकृतिं वाचः सत्य... श्रीसू. १०

मनसः सत्त्वमुत्तमम् । सत्त्वादधि-

महानात्मा महतोऽव्यक्तमुत्तमम् कठो. ६।७

मनसः साक्षी बुद्धेः साक्षी

प्राणस्य साक्षी तमसः साक्षी

सर्वस्य साक्षी

नृसिंहो. २।२

मनसा कर्मणा वाचा सज्जनानुप-

सेवते । यतः कुलश्रिदानीय

नित्यं शास्त्राण्यवेक्षते ॥ तदासौ

प्रथमाभेकां प्राप्तो भवति

भूमिकाम्

अक्षुप. ११

मनसाऽऽकाशश्चाकाशाद्वायुर्वायो-

ज्योतिर्योतिष आपोऽद्भ्यः

पृथिवी पृथिव्या इत्येषां भूतानां

ब्रह्म सम्पद्यते

२ सकयासो. १६

मनसा धारयेचापि धारणं नाति-

विन्दति । निवृत्तिर्विषयाणां च

प्रत्याहारो न संशयः

योगो. ३१

मनसा मन आलोक्य उन्मन्यस्तं

सदा स्मरेत्

यो. शि. ६।६३

मनसा मन आलोक्य तस्य जेत्यपरमं
पदम्

योगकुं. ३।५

मनसा मन आलोक्य दृश्यन्ते

प्रत्यया दश

यो. शि. ६।६४

मनसा मन आलोक्य मुक्तो

भवति योगवित्

यो. शि. ६।६३

मनसा मन आलोक्य योगनिष्ठः

सदा भवेत्

यो. शि. ६।६४

मनसा मन आलोक्य वृत्तिशून्यं

यदा भवेत् । ततः परं परब्रह्म

दृश्यते च सुदुर्लभम्

[शांङ्गि. १।७।१८+

यो. शि. ६।६२

मनसा मनसि चिच्छे निरहङ्कारतां

गते । भावेन गलिते भावे

स्वस्थस्तिष्ठामि केवलः

१ सं.सो. २।३६

मनसा परमात्मानं ध्यात्वा तद्रूप-

तामियात्

त्रि. भा. २।२९

मनसा प्राप्यते त्वात्मा ह्यात्मा-

पत्त्या निवर्तते [मैत्रा. ४।३+

मैत्रे. १।७

मनसा भाव्यमानो हि देहतां

याति देहकः । देहवासनया

मुक्तो देहधर्मेन लिप्यते

महो. ४।६७

मनसा वा अग्रे सकल्पयति । अथ

वाचा व्याहरति । तस्मान्मन

एव पूर्वरूपं, वागुत्तररूपम्

३ ऐत. १।१।३

मनसा वाचं नयति चक्षुषा मीयते

जगत् । भूतस्य कर्णो श्रोतारा-

वन्नं प्राणेन सम्मितम्

इतिहा. ४

मनसा वाऽथ विध्युक्तमन्त्रा-

वृत्त्याथवा जले

ना. प. ३।११

मनसा वै सम्राट् स्त्रियमभिहार्यते

तस्यां प्रतिरूपः पुत्रो जायते

स आनन्दः

बृह. ४।१।६

मनसा शान्तिः, शान्त्या चित्तं,

चित्तेन स्मृतिः, स्मृत्या स्मारः

स्मारेण विज्ञानं, विज्ञानेनात्मानं

वेदयति

महाना. १७।१३

मनसा शृणोति

मैत्रा. ६।१०

मनसा सकल्पयति, वाचा वदति

गर्भो. १

मनसा सर्वाणि ज्ञातान्याप्नोति कौ. त. ३।४
 मनसा हि कामान्कामयते बृह. ३।२।७
 मनसा सृष्टा आपश्च वरुणश्च १ ऐत. १।७।६
 मनसा होव स्वस्विमानि भूतानि
 जायंते, मनसा जाह्नानि जीवन्ति,
 मनः प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तैत्ति. ३।४
 मनसा होव पश्यति मनसा शृणोति
 [बृ. उ. १।५।३+ मैत्रा. ६।३०
 मनसिजा नारदादयः सर्वे ऋषयः ना. पू. ता. ५।६
 मनसि तृप्यति पर्जन्यस्तृप्यति छांदो. ५।२२।२
 मनसि निषण्णः श्रीप्राणाय प्रह्ला-
 नाय स्वराट् पुरुषोत्तमः सि. वि. ३
 मनसि सङ्कल्पविकल्पे दुग्धे पुण्य-
 यापि संदाशिवः शक्त्यात्मा सर्व-
 प्रावस्थितः स्वयञ्छोतिः शुद्धो
 बुद्धो नित्यो निरञ्जनः शान्तः
 प्रकाशत इति हंसो. ११
 मनसे स्वाहा प्रजास्यै स्वाहेत्यधौ
 हुत्वा मन्ये सखसवमवनयति बृह. ६।३।२
 मनसेतान्कामान्पश्यन्मते छांदो. ८।१२।५
 मनसैव मनश्चिच्छत्वा सा स्वयं लभ्यते
 गतिः अ. पू. १।५३.
 मनसैव मनश्चिच्छत्वा कुठारेणैव
 पादपम् । पदं पावनंमांसाद्य
 खय एव स्थिरो भव महो. ६।३३
 मनसैव मनश्चिच्छत्वा पार्श्व परम-
 बन्धनम् । भवादुत्तारयात्मानं
 मोक्षायन्नेन सार्यते महो. ४।१०७
 मनसैवागुप्रहृष्य नैह नानास्ति
 किञ्चन । मृत्योः स मृत्यु-
 भाप्नोति य इह नानेव पश्यति बृह. ४।४।१९
 मनसैवमात्रस्य नैह नानास्ति
 किञ्चन । मृत्योः स मृत्यु-
 भाप्नोति य इह नानेव पश्यति कठो. ४।११
 मनसैवेन्द्रजालभीर्जगति प्रवि-
 शन्त्यते । बावदेतत्सम्भवति
 तावन्मोक्षो न विद्यते महो. ४।४९

मनसोत्पद्यते विन्दुर्वथा क्षीरं घृता-
 त्मकम् । न च बन्धनमध्यस्थं
 तद्वै कारणमानसम् योगकु. ३।६
 मनसो धारणं यत्समुक्तस्य च
 यमादिभिः । धारणा सा च
 संसारसागरोत्तारकारणम् त्रि. भा. २।१३४
 मनसो धारणादेव पवनो धारितो
 भवेत् । मनसः स्थापनेहेतुरुच्यते.. त्रि. भा. २।११४
 मनसो निगृहीतस्य लीलाभोगो-
 ऽरूपकोऽपि यः । तमेवालम्ब-
 विस्तारं छिष्टत्वाद्बहु मन्यते महो. ५।७३
 मनसो निप्रहायत्तमभयं सर्व-
 योगिनाम् अद्वैत. ४०
 मनसोऽप्युन्मनीभावाद्देताभावं
 प्रचक्षते अमन. २।७८
 मनसोऽभ्युदयो नाशा मनोनाशो
 महोदयः [महो. ५।९७+ मुक्तिको. २।३९
 मनसो मनः यत् केनो. ११२
 मनसो ये मनो विदुः । ते निष्कियु-
 र्ब्रह्म पुराणमध्यम् बृह. ४।४।१८
 मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्
 [बृ. जा. १।२+ उ. पू. १।१
 मनसो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे
 भगवान्प्रवीतु छांदो. ७।३।२
 मनसो विजयान्नान्या गतिरस्ति
 भगवर्णवे महो. भा. ७६
 मनसो शुन्मनीभावे द्वैतं नैवोप-
 लभ्यते वैकुण्ठो. ४।२०
 मनस्तत्र लयं याति त्रिणिणोः
 परमं यदम् जा. वि. ४७
 मनस्तादृशगुणगतं रसतन्मात्रवेदनम् महो. ५।१५०
 मनस्तां भूततां विद्धि यदा नश्यति
 साऽनव । चित्तनाशमिदं
 हि तत्स्वरूपमितीरितम् अ. पू. ४।१६
 मनस्ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा
 कौ. उ. २।४
 मनस्ते मयि इह इति पुनोऽन-
 रक्षाम्ये स्वयि क्वातीमि पिता कौ. उ. २।१५

मनस्त्वं भूत्वा मनः प्रदोमेत्वत्तो
भूतं सम्भावयिष्यसि सर्वेषां
कायानामहमर्हते स्वाहा

पारमा. २।६

मनस्स्थानं गलान्तं बुद्धेर्वदनमह-

कारस्य हृदयं चित्तस्य नाभिरिति

शारीरको. २

मनस्त्यन्तस्तु तैजसः

आगम. २

मनस्सकृत्परहितांस्त्रीन्पृष्ट्वा पञ्च

सप्त वा । मधुमक्षिकवत्कृत्वा

माधुकरमिति स्मृतम्

१ सं. सो. २।६६

मनस्सर्वेन्द्रियाणि जायन्ते

पुरुषोत्तमात्

सि. बि. २

मनः कर्माणि जायन्ते मनो

लिप्यति पातकैः । मन-

श्चेदुन्मनीभूयाञ्च पुण्यं

न च पातकम्

यो. शि. ६।६१

मनः कायाभिमाहन्ति स प्रेरयति

मारुतम् । मारुतस्तूरसि

चरन्मन्द्रं जनयति स्वरम्

मैत्रा. ७।११

मनः परस्तात्प्राण आरुन्धे

कौ. त. २।२

मनःपवनयोन्यांशादिन्द्रियार्थान्

विमुञ्चति-

अमन. १।२०

मनः पितरः प्राणो मनुष्याः

बृ. व. १।५।६

मनःपूतिमुच्छिष्टोपहृतमित्थनेन

तत्पावयेत्

मैत्रा. ६।९

मनः पूर्वरूपं, वागुत्तररूपम्

३ ऐत. १।१।२

मनः पूर्वं मनः सर्वे मनस्तस्माच्च

उत्पद्येत्

दुर्वासो. २।१६

मनः प्रचारशून्यं परमात्मनि

लीनं भवति

मं. प्रा. ३।२

मनःप्रशमनोपायोयोगइत्यभिधीयते

महो. ५।४२

मनःप्रसादः सौम्यत्वं

भ. गी. १७।१६

मनः प्राणे प्राणस्तेजसि तेजः

परस्यां देवतायां [छांदो. ६।८।६

+१५।१,२

मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः

भ. गी. १८।३३

मनः प्राविशदशयदेव

१ ऐत. १।४।६

मनःपञ्चानीन्द्रियाणि

भ. गी. १५।७

मनः पञ्चेन्द्रियातीतं तन्मयो

भवति इति

अ. पू. १।२१

मनःसङ्कल्पकं ध्यात्वा संक्षिप्या-

त्मनि बुद्धिमान् । धारयित्वा

तथात्मानं धारणा परिकीर्तिता

अ. ता. १।६

मनः सत्येन शुद्धयति

भवसं. ३।१८

मनः सर्वत्र संयम्य ॐकारं तत्र

चिन्तयेत्

यो. शि. ३

मनः सर्वेन्द्रियाणि च । खं वायु-

ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य

धारिणी । नारायणाद्ब्रह्मा

जायते । नारायणाद्बुद्धो जायते

नारा. १

मनः संयम्य मश्चित्तः

भ. गी. ६।१४

मनः सर्वेर्ष्यतैः सहाप्येति

कौ. त. ३।३

मनस्सन्दोषशान्त्याऽयं संसारः

प्रविलीयते

शांडि. १।७।२५

मनः स्वात्मनि चाप्यस्तं प्रविश्य

परमेश्वरः । मनस्स्थं तस्य सत्त्व-

स्थो ददाति नियमेन तु

पा. ब्र. १७

मनागपि मनो व्योम्नि वासना-

रजनीक्षये । कलिका तनुतामेति

चिदादित्यप्रकाशनात्

महो. ४।११७

मनागपि विचारेण चेतसः स्वस्थ

निग्रहः । पुरुषेण कृतो येन तेनाप्तं

जन्मनः फलम्

अ. पू. ४।९२

मनागृर्वासनो भूत्वा सङ्कल्प चरणा-

बुधौ । संवृतास्योन्मीलनाभः

उपविष्टश्च वाग्यतः

योगो. २०

मनीषया मनः

महाना. १७।१३

मनुरिद्धाकवेऽप्रवीत्

भ. गी. ४।१

मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसिस्वाहा

महाना. १४।१

मनुष्यग्राह्ये सनक-सनन्दन-सन-

त्कुमार-सनत्सुजातान्...

ब्राह्मणानर्चयेत्

ना. प. ४।३९

मनुष्या एत एव

छांदो. १।५।६

मनुष्याणां जनार्दन-

भ. गी. १।४४

मनुष्याणां सहस्रेषु

भ. गी. ७।३

मनुष्याः पञ्चवक्त्र वे

तैत्ति. ३।३

मनुष्याः पार्श्वे सर्वसः [भ. गी. ३।२।३ + ४।३१

मनुष्यो वाऽपि यक्षो वा स्वेच्छया-
ऽपीक्षणाद्भवेत् । सिद्धौ व्याघ्रो
गजो वाऽश्वः स्वेच्छया बहुता-
मियात्

१ यो. त. ११०

मनो वनविकल्पं तु यच्छती-

न्द्रियतां शनैः

महो. ५।१२६

मनोऽस्य हि शृङ्खला [महो. ५।९८+

मुक्तिको. २।३९

मनो दुर्निग्रहं चलम्

भ. गी. ६।३५

मनो द्रुतं वेद द्रुतवान्भवति

कौ. त. २।१

मनो दूरतरं याति ग्रामे कालेयको यया

महो. ३।१८

मनो दृश्यमिदं द्वैतं यत्किञ्चित्स-

चराचरम् । मनसो ह्यमनीभावे

द्वैतं नैवोपलभ्यते

अद्वैत. ३१

मनोदृश्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित्स-

चराचरम् । मनसोऽप्युन्मनी-

भाबाहूताभावं प्रचक्षते

अमन. २।७८

मनोऽस्य दैवं चक्षुः स वा एष एतेन

दैवेन चक्षुषा मनसैतान्कामान्

पश्यन्नमते

छांदो. ८।१२।५

मनोद्वारेण तीक्ष्णेन योगमाश्रित्य

नित्यशः

क्षुरिको. १२

मनोऽध्यात्मं, मंतव्यमधिभूतं, चन्द्र-

स्तत्राधिदैवतं, नाडी तेषां

निबन्धनम्

सुबालो. ५।६

मनोऽध्यात्मं ज्ञानं ज्ञेयमिती-

न्द्रियाण्यन्वभवत्

२ प्रणवो. ३

मनोऽध्यानयोगेन त्वद्गारा स्पर्श-

गुणः पाण्यविष्टितो वायौ

तिष्ठति वायुस्तिष्ठति

त्रि. भा. १।६

मनोऽध्यायस्सर्वप्राणाश्चन्द्राश्चान्ति

मनोनाथस्तु माततः

कौ. त. ३।३

मनो नाम देवताचरोधिनी सा मे

ऽमुष्माविद्मन्नदन्दात्स्यैस्वाहा

कौ. त. ३।३

मनोनाथोमहोदयः [महो. ५।९८+

मुक्तिको. २।३९

मनो नियन्ता प्रकृष्टिमयोऽस्य

प्रबोदनेन खल्वीरिते परि-

भ्रमतीदं शरीरं चक्रमिव

मैत्रा. २।९

मनोनिरोधिनी कन्या

निर्वाणो. ३

मनोनिर्मयतादेव विकल्पा बहुवस्तथा

त्रि. भा. २।१४

मनोनुकूले न तु चक्षुषीदने

गुहानिवाताश्रयणे पयोजयेत्

शेताश. २।१०

मनोऽन्तरिक्षलोकः प्राणोऽसौलोकः

बृह. १।५।३

मनोऽप्यन्यत्र निक्षिप्तं चक्षुरन्यत्र

पातितम् । तथापि योगिनां

योगो ह्यविच्छिन्नः प्रवर्तते

त्र. वि. ४४

मनो बुद्धिरहङ्कारश्चित्तमित्यन्तः-

करणचतुष्टयम्

शास्त्रीको. २

मनोबुद्धिरहङ्कारश्चित्तसङ्घातका

अमी । न त्वं नाहं न चान्यद्वा

सर्वं ब्रह्मैव केवलम्

ते. वि. ६।३४

मनोबुद्धिरहङ्कारश्चित्तं चेति चतुष्टयम् वराहो. १।४

मनो बुद्धिरहङ्कारः खानिछान्ति-

जलानि भूः । एताः प्रकृतय-

स्त्वष्टौ विकाराः षोडशापरे

शास्त्रीको. १२

मनोबुद्धिसमाधानमर्थतत्त्वपरी-

क्षणम् । तत्त्वस्युत्पत्तेरुपस्थाना-

त्सर्वमेतत्प्रवर्तते

आयुर्वे. १८

मनोबुद्धिस्तथैवात्माहव्यक्तं नृप-

सत्तम । इन्द्रियेभ्यः पराणीह

चत्वारि कथितानि च

भद्रसं. १।३९

मनोबुद्धयोश्चित्ताहङ्कारौ चांतर्मुक्तौ

त्रि. भा. ३।३

मनोब्रह्म (यज्ञस्य) [महाना. १।८।१+

गर्भो. ११

मनो ब्रह्मेति व्यजानात्

तैत्ति. ३।४

मनो ब्रह्मेत्युपासीतेत्यध्यात्मम्

३।१८।१

मनो भित्त्वा भूतार्दि भिनत्ति

सुबालो. ३।१२

मनोमयज्ञानमयान् सन्त्यद्वयत्वा

क्रमेण तु । षट्स्थवीपवन्त्य-

दन्तरेव प्रकाशते

योगसू. ३।३२

मनोमयः प्राणशरीरदेवा प्रतिष्ठितौ-

ऽजो हृदयं सज्जिवाय

सुषुप्त. ३।३।७

मनोमयः प्राणमयः (आत्मा)

बृह. १।४।५

मनोमयः प्राणशरीरो भारुपः

सत्यसङ्कल्प आत्मेति

मैत्रा. २।९

मनोमयः प्राणशरीरो भारुपः

सत्यसङ्कल्प आकाशात्मा

सर्वकर्मा सर्वकामः सर्वगन्धः

सर्वरसः सर्वमिदमभ्यात्तो-

ऽवाक्यताद्वरः

छान्दो. ३।१४।२

मनोमयः सङ्कल्पात्मा विज्ञान-

मयः कालात्माऽऽनन्दमयो

लयात्मैकत्वं नास्ति द्वैतं कुतः सुबालो. ५।१५

मनोमयेन प्राणोऽपि तथा पूर्णः

स्वभावतः । तथा मनोमयो

ह्यात्मा पूर्णो ज्ञानमयेन तु

कठरु. २३

मनोमयोऽयं पुरुषो मांः सत्यं

बृह. ५।६।१

मनो मारय निश्शङ्कं त्वां

प्रब्रूयन्ति नारयः

महो. ४।९४

मनो मे त्वयि दधानीति पिता

मनस्ते मयि दध इति पुत्रः

कौ. त. २।१५

मनो मे दिशतु वैष्णवी

लक्ष्म्यु. ३

मनो मे वाचि प्रतिष्ठितं [२ ऐत.

शांतिपा.

मनो यजुर्वेदः प्राणः सामवेदः

बृह. १।५।५

मनो यजुः प्रपद्ये [प्रवर्या. १+

वा. सं. ३६।१

मनो यज्ञस्य हंसो यज्ञसूत्रम्

पा. ब्र. ३

मनोयुक्तान्तरदृष्टिस्तारक-

प्रकाशाय भवति

मं. ब्रा. १।४

मनो रयः (शारीरयज्ञस्य)

प्रा. हो. ४।३

मनोऽयकारणमहमेव

मं. ब्रा. ५।१

मनोऽचोभिरग्राहं पूर्णात्पूर्णं

सुखात्सुखम्

महो. ५।४६

मनोऽश्वात् प्राणवायुः स्ववशे

स्थाप्यते सदा । नासिकापुटयोः

प्राणः पर्यायेण प्रवर्तते

त्रि. ब्रा. २।११६

मनो वा आयतनम्

बृह. ६।१।५

मनोवाङ्मायकर्माणि मे शुद्ध्यन्तां

व्योतिरहं विरजा विपाप्मा

भूयासः स्वाहा

महाना. १४।१४

मनोवागगोचरम्

निर्वाणो. ३

मनोवाचामगोचरं ब्रह्म

त्रि. म. ना. १।३

मनोवाचामगोचरम्

त्रि. म. ना. ७।७

[+अध्यात्मो. ६३

+सि. सा. ६।१

मनो वाक् वाचो भूयो यथा वै द्वे

वाऽऽमलके द्वे वा कोले द्वौ

वाधौ मुष्टिरनुभवत्येवं वाचं च

नाम मनोऽनुभवति

छान्दो. ७।३।१

मनो वाऽहं मुष्टिरग्राह्यः

सुबालो. १४।१

मनो विकल्पसंज्ञात्वं तद्विकल्प-

परिक्षयात् । क्षीयते दग्ध-

संसारो निःसार इति निश्चितः महो. २।३४

मनोविनाशस्तु गुरुप्रसादान्निमेष-

मात्रेण तु साध्य एव

अमन. २।२९

मनोविरचितं त्यक्त्वाऽमनस्कं भज

अमन. १।७

मनोविलाससंसार इति मे

निश्चिता मतिः

महो. ४।६८

मनो वै ग्रहः, स कामेनातिग्रहेण

गृहीतः

बृह. ३।२।७

मनो वै ब्रह्मेति

बृह. ४।१।६

मनो वै यज्ञस्य ब्रह्मा, तद्यदिदं

मनः सोऽसौ चन्द्रः स ब्रह्मा

स मुक्तिः साऽतिमुक्तिः...

बृह. ३।१।६

मनो वै सम्राट् परमं ब्रह्म

बृह. ४।१।६

मनोऽन्याधेश्विकित्सार्थमुपायं

कथयामि ते । यद्यत्स्वाभिमतं

वस्तु तत्त्यजन्मोक्षमश्नुते

महो. ४।८८

मनोऽन्यानयोगेन त्वग्द्वारा स्पर्श-

गुणः पाण्यधिष्ठितो वायौ

तिष्ठति वायुस्तिष्ठति

त्रि. ब्रा. १।६

मनोऽस्मात्सर्वाणि ध्यातान्य-

भिविसृजते

कौ. त. ३।४

मनोऽस्य देवं चक्षुः स वा एष

एतेन देवेन चक्षुषा मनसै-

तान्कामान्पश्यन्मते

छान्दो. ८।१२।५

मनोऽहङ्कार एव च

ते. बिं. ५।१००

मनो ह वा आयतनम्

छान्दो. ५।१।५

मनो ह वाक् यजमान इष्टफलमेवो-

दानः स एनं यजमानमहरह-

ब्रह्म गमयति

प्रभो. ४।४

मनो हविः

चिर्यु. ६।१

मनोऽहं गगनाकारं मनोऽहं सर्वतो-

मुखम् । मनोऽहं सर्वमात्मा च

न मनः केवलः परः

यो. शि. ६।६०

मनो हिङ्कारो वाक्प्रस्तावश्चक्षुः

रुद्रीयः ओन्नं प्रतिहारः प्राणो

निधनमेतद्वायव्यं प्राणेषु प्रोक्तं

छान्दो. २।११।१

मनो हि द्विविधं प्रोक्तं-शुद्धं चा-
शुद्धमेव च । अशुद्धं काम-
सङ्कल्पं (लप्तात्) शुद्धं
कामविवर्जितम्

[+ त्रि. ता. ५।२+

मनो हि ब्रह्म मन उपास्व

मनो हि विजिज्ञास्यं

मनो होचक्राम तत्संवत्सरं प्रोष्या-
गत्यौवाच कथमशक्तं महेते

जीवितुमिति

मनो हृदि निरुध्य च

मनो ह्यात्मा, मनो हि लोको

मनो ब्रह्म, मन उपास्वेति

मन्तव्यमेवाप्येति मन्तव्य-

मेवास्तमेति

मन्त्रकल्पो ब्राह्मणभृगयजुस्सामाथ-
र्वाण्येषा व्याहृतिश्चतुर्णां वेदा-
नामानुपूर्व्येण

मन्त्रपूर्वं तु यच्छ्राद्धममन्त्राय
प्रयच्छति (छिन्दन्ति दातृहस्तं
च जिह्वाप्रमितरस्य च)

मन्त्रमित्युच्यते ब्रह्मन् मदधिष्ठान-
तोऽपि वा । मूलत्वात् सर्व-
मन्त्राणां मूलाधारसमुद्भवात्
...मूलमन्त्र इति स्मृतः

मन्त्रयोगो लयश्चैव राजयोगो
हठस्तथा । योगश्चतुर्विधो
प्रोक्तो योगिभिस्तत्त्वदर्शिभिः

मन्त्रराजाय विद्महे महामन्त्राय
धीमहि । तन्नो मन्त्रः

प्रचोदयात्

मन्त्रदीनमदक्षिणम्

मन्त्रं विना कर्म कुर्यात्प्रत्मन्या-
हुषिवद्भवेत्

मन्त्राणां परमो मन्त्रस्तारेति परमा

तारा सा देवतानां च देवता

मन्त्राणां मातृका देवी

मन्त्राणां सङ्कल्पे कर्माणि सङ्कल्पन्ते

कर्मणा च संकल्पे लोकः सङ्कल्पते छान्दो. ७।४।२

ब्र. वि. १

मैत्रा. ६।३४

छान्दो. ७।३।१

बृह. १।५।९

बृह. ६।१।११

भ. गी. ८।१२

छान्दो. ७।३।१

सुबालो. ९।१०

२ प्रणवो. १८

इतिहा. २७,२८

यो. शि. २।८-९

योगराजो. १,२

वनदु. १५२

भ. गी. १७।१३

ना. प. ३।८

तारोप. १३

देव्यु. २१

मन्त्रानधीयीतेत्यथाऽधीते कर्माणि

कुर्वीतेत्यथ कुरुते पुत्राश्च पशूः

श्चेच्छेयेत्यथेच्छत इमं च लोक-

मसुं चेच्छेयेत्यथेच्छते

छान्दो. ७।३।१

मन्त्राश्च मामभिमुखीभवेयुः

२ प्रणवो. ४

मन्त्रोपनिषदं ब्रह्म पदक्रमसम-

न्वितम् । पठन्ति भार्गवा

ह्येते ह्यथर्वाणो भृगुत्तमाः

मन्त्रिको. १०

मन्त्रो ल्यो हटो राजयोगोऽन्त-

र्भूमिकाः क्रमात् । एक एव

चतुर्धाऽयं महायोगोऽभिधीयते

यो. शि. १।१२९

मन्त्रोऽहमहेमवाज्यं

भ. गी. ९।१६

मन्ये सः स्रवमवनयति

बृह. ६।३।२

मन्दं परिहरन्कर्म स्वदेहमनुपाल-

येत् । वर्षासुजीर्णकटवत्तिष्ठन्न-

प्यवसीदति

शिवो. ७।१२४

मन्मथक्षेत्रपालाः

निर्वाणो. १

मन्मना भव मद्रक्तः [भ.गी. ९।३४+

१८।६५

मन्मना मय्याहितासुर्मय्येवार्पि-

ताखिलकर्मा भस्मदिग्धाङ्गो

रुद्राक्षभूषणो मामेव सर्वभावेन

प्रपन्नो मदेक-पूजा-निरतः

सम्पूजयेत्

मस्मजा. २।१०

मन्मया मामुपाश्रिताः

भ. गी. ४।१०

मन्यन्तां संशयापन्ना न मन्येऽह-

मसंशयः

१ अवधू. १६

मन्यते तमसाऽऽवृता

भ. गी. १८।३२

मन्यते नाधिकं ततः

भ. गी. ६।२९

मन्यन्ते मामबुद्धयः

भ. गी. ७।२४

मन्यसे यदि तच्छक्यं

भ. गी. ११।४

मन्युरकाशीन्मन्युः करोति, नाहं

करोमि

महाना. १४।४

मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवो

मन्युरहोता वरुणो जातवेदाः

वनदु. १०१

[+क्र.मं. १०।८३।२+

अथर्व. ३२।२

मन्युः कारयिता नाहं कारयिता

महाना. १४।४

मन्युः कर्ता, नाहं कर्ता

महाना. १४।४

मन्युः पशुः (यज्ञस्य)

महाना. १८।१

मन्त्रोऽहं मां तद्विद्वांस माहं पौत्र-

मघं रुद्रमिति न हास्मात्पूर्वाः

प्रजाः प्रैति

मन्वानो वै तन्न मनुते

मम चरणस्मरणेन पूजया च

स्वकृतमसः परिमुच्यते हि जन्तुः

मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय

मम तेजोऽशसम्भवम्

ममत्वेन भवेज्जीवो निर्ममत्वेन केवलः

मम देहे गुडाकेश

मम पुत्रो मम धनमहं सोऽयमिदं

मम । इतीयमिन्द्रजालेन

वाचनैव विवल्गति

मम प्रतिष्ठां भुव आण्डकोशा

विचैमि सं च हि नु यो विरक्षी

मम प्रसादं कुरु कुरु

मम प्रियेण विल्वेन त्वं कुरुष्व

मदचैनम्

मम भूतमहेश्वरम्

मम माया दुरत्यया

मम यज्ञसा विरजां वा अयं नदीं

प्रापन्न वायं जिगीष्यतीति

मम योनिरप्स्वन्तःसमुद्रे । य

एवं वेद स देवीपदमाप्नोति

मम यो निर्महद्ब्रह्म

मम यो वेत्ति तत्त्वतः

मम रूपमिति ज्ञेयं सर्वरूपं तदेव हि

मम रूपा रवेस्तेजश्चन्द्रनक्षत्र-

महतेजांसि च

मम वचममुवेनावभावै कात्यायनाय

मम वर्तमानुवर्तन्ते [अ.गी. ३।२३+

मम वद्वानि सर्वाणि युगान्यपि

मम समिद्धेऽहौषोः प्राणापानौ त

आददेऽसाविति (जुहुयात्)

मम समिद्धेऽहौषोः पुत्रपशून्

आददेऽसाविति (जुहुयात्)

मम समिद्धेऽहौषीरिष्टासुकृते त

आददेऽसाविति

कौ. उ. २।१०

बृह. ४।३।२८

बराहो. ३।१२

चाक्षुषो. २

अ. गी. १०।४१

यो. चू. ८४

अ. गी. ११।७

महो. ४।१२९

बा. मं. ९

लाङ्गलो. ६

१ बिल्वो. ४

अ. गी. ९।११

अ. गी. ७।१४

कौ. उ. १।३

देव्यु. ४

अ. गी. १४।३

अ. गी. १०।७

१ बिल्वो. ६

पा. ब्र. २

महाना. ६।१२

४।११

पा. ब्र. २

बृह. ६।४।१२

बृह. ६।४।१२

बृह. ६।४।१२

मम समिद्धेऽहौषीराशापराकाशौ

त आददेऽसाविति (जुहुयात्) बृह. ६।४।१२

मम सर्वकार्याणि साधय साधय लाङ्गलो. ६

मम साधर्म्यमागताः अ. गी. १४।२

ममाकर्तुरलेपस्य यथारब्धं प्रवर्ततां १ अवधू. २२

(ॐ) ममाग्रतः सदा विष्णुः

पृष्ठतश्चापि केशवः । गोविन्दो

दक्षिणे पार्श्वे वामे च मधुसूदनः विष्णुह. १।१

ममाऽत्मा भूतभावनः अ. गी. ९।५

ममाव्ययमनुत्तमम् अ. गी. ७।२४

ममेति द्वाक्षरं सृत्युच्यक्षरं न

ममेति च

शिवो. ७।११५

ममेति बध्यते जन्तुर्निर्ममेति विमुच्यते

पैङ्गलो. ४।२०

[महो. ४।७२+बराहो. २।४४+

शिवो. ७।११४

ममेवांशो जीवलोके

अ. गी. १५।७

ममुला भवन्ती त्वासादयामि

चिन्त्यु. १९।१

मया तत्तमितीदमभुते तद्यथा-

सद्यदि मे असद्विदुः

बा. मं. १९

मया ततमिदं सर्वं

अ. गी. ९।४

मयाऽतिरिक्तं यत्तद्वा तत्तन्नास्तीति

निश्चिनु । अहं ब्रह्मास्मि सिद्धो-

ऽस्मि नित्यशुद्धोऽस्म्यहं संदा

ते. वि. ३।२०

मया द्रष्टुमिति प्रभो

अ. गी. ११।४

मयाऽध्यक्षेण प्रकृतिः

अ. गी. ९।१०

मया प्रमादात्प्रणयेन वाऽपि

अ. गी. ११।४१

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं

अ. गी. ११।४७

मया भूतं चराचरम्

अ. गी. १०।३९

मया हतांस्त्वं जहि मा व्ययिष्टाः

अ. गी. ११।३४

मयि चानन्ययोगेन

अ. गी. १३।११

मयि जीवत्वमीशत्वं कल्पितं

वस्तुतो नहि । इति यस्तु वि-

जानाति स मुक्तो नात्र संशयः

सरस्व. ९७

मयि तेज इन्द्रियं यशो द्रविणं सुकृतं

बृह. ६।४।६

मयि ते तेऽपि चाप्यहम्

अ. गी. ९।२९

मयि प्राणाश्चैव मनसा जुहोमि

स्वाहा

बृ. उ. ६।४।२४

मयि बुद्धि निवेदन

अ. गी. १५।८

मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो

भ्राजो दधातु

महाना. १३१६

[तै. सं. ३।३।१।२+

तै.आ.४।४२।२

मयि मेधां मयि प्रजां मयीन्द्र

इन्द्रियं दधातु

महाना. १३१६

मयि मेधां मयि प्रजां मय्यग्निस्तेजो

दधातु

महाना. १३१६

मयि सञ्जयस्य मत्परः

अ. गी. १४।५७

मयि सञ्जयस्य मत्पराः

अ. गी. १२।६

मयि सर्वमिदं प्रोतं

अ. गी. ७।७

मयि सर्वं लयं याति तद्रक्षाद्वय-

मस्यहम्

कैव. १९

मयि सर्वं प्रतिष्ठितम्

कैव. १९

[+भस्मजा. २।६+

२।१३

मयि सर्वाणि कर्माणि

अ. गी. ३।३०

मयैव चेतनेनेमे सर्वे घटपटादयः ।

सूर्यान्ता ञ्जवभासन्ते दीपेने-

वात्मतेजसा

१ सं. सो. २।२२

मयैव विहितान्दि तान्

अ. गी. ७।२२

मयैवैताः स्फुरन्तीह विचित्रेन्द्रिय-

वृत्तयः । तेजसाऽन्तःप्रकाशेन

यथाऽग्निक्वणपङ्कयः

१ सं. सो. २।२३

मयैवैते निहताः पूर्वमेव

अ. गी. ११।३३

मयोपदिष्टे कैवल्ये साक्षाद्भ्रष्टाणि

शाश्वते । विहाय पुत्रो निर्वेदा-

त्प्रकाशं यास्यति स्वयम्

शु. र. १।४

मयो मह्यमस्तु प्रतिगृहीत्रे

चित्त्यु. १०।१,४

मय्यखण्डसुखान्मोघौ बहुधा

विश्ववीचयः । उत्पद्यन्ते

चिलीर्यते मायामाकृतविभ्रमात्

कुं. ड. १४

मय्यसौ स्वात्मानं हविष्यावेत्

अथैवानुष्टुम्भर्चा । ज्ञान-

योगोऽयमेव

अव्यक्तो. ४

मय्ययमभिर्वाधातु

चित्त्यु. ११।८

मय्यवितमनोजुष्टिः [अ.गी. ८।७

+१२।१४

मय्यावेक्षितचेतसाप्

अ. गी. १२।७

मय्यावेक्ष्य मनो ये मां

अ. गी. १२।२

मय्यासक्तमनाः पार्थ

अ. गी. ७।१

मय्येव मनं बाधस्व

अ. गी. १२।८

मय्येव सकलं जातं मयि सर्वं

प्रतिष्ठितम्

कैव. १९

मरणं न तु वायौश्च भयं भवति

योगिनः

१ यो. त. ९७

मरणे यत्र सर्वेषां तत्रासौ परि-

जीवति । यत्र जीवन्ति

मूढास्तु तत्रासौ मृत एव वै

यो. शि. १।४६

मरणं यदि चेज्जन्म जन्माभावे

मृतिर्न च

ते. वि. ५।२४

मरणादतिरिच्यते

अ. गी. २।३४

मरणे सम्भवे चैव गत्यागमन-

योरपि । स्थितौ सर्वशरीरेषु

आकाशेनाविलक्षणः

अद्वैत. ९

मरीचयः स्वायम्भुवः

अरुणौ. १

मरीचयौऽर्कस्यास्तं गच्छतः सर्वा

एतस्मिन्तेजोमण्डल एकी-

भवन्ति । ताः पुनः पुनरुदयतः

प्रचरन्त्येवं ह वै तत्सर्वं परे देवे

मनस्येकीभवन्ति

प्रभो. ४।२

मरीचिर्महतामसि

अ. गी. १०।२१

मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः

[चित्त्यु. ११।११+

१३।२

मरुज्जयो यस्य सिद्धः सेवयेत्तं

गुरुं सदा

यो. शि. १।८०

मरुतः प्राणैरिन्द्रं बलेन बृहस्पतिं

अथर्वचसेन...

सहस्रै. २२

मरुतः सद्यो हविर्धानाभ्यां

चित्त्यु. ८।१

मरुतामेव तावदाचिपत्यः

स्वाराज्यं पर्येता

छान्दो. ३।१।४

मरुतामेवैको भूत्वा सोमेनैव

मुखेनैवदेवाभृतं दृष्ट्वा तृप्यति

छान्दो. ३।१।३

मरुतो जगती सप्तदशो वै रूपं

वर्षा अपानः शुक्र आदित्याः

पश्चादुद्यन्ति

मैत्रा. ७।३

मरुत्तन्तं वृषभं वावृषान- [अ.मे.

३।४।५।५+

[६।१९।१९+

शौनको. ४

[वा.सं. ७।३५+तै.सं. १।४।१७।१

मरुदभ्यसनं सर्वमनोयुक्तं समभ्यसेत् ।

इतरत्र न कर्तव्या मनोवृत्ति-

मनीषिणा

शांडि. १।७।३७

मरुभूमौ जलं सर्वं मरुभूमात्रमेव

तत् [महो. ४।८४+

वराहो. २।७२

मर्कट एनमास्कन्दयति (दुःस्वप्ने)

३ ऐत. २।४।७

मर्त्यं चामृतं च स्थितं च यच्च

सच्च त्यच्च

बृह. २।३।१

मर्त्यं नास्त्यमृतं कुतः

सुबालो. ५।१०

मर्त्यः स्विन्मृत्युना वृक्कणः कस्मा-
न्मृलात्प्ररोहति । जात एव न

जायते को न्वेवं जनयेत्पुनः

बृह. ३।१।३१

मर्त्यं वा इदं शरीरमात्तं मृत्युना

छांदो. ८।१२।१

मर्त्यानि हीमानि शरीराणी ३

अमृतैषा देवता...

१ ऐत. १।८।४

मर्त्येनामृतमीप्सत्येवं सम्पन्नः

१ ऐत. ३।२।३

मलं त्यजेत्कुहूनाडी मूत्रं मुञ्चति

वारुणी

यो. शि. ५।२६

मलं संवेद्यमुत्सृज्य मनो निर्मूलयन्

परम् । आशापाशानलं छित्त्वा

संविन्मात्रपरोऽस्म्यहम्

१ सं. सो. २।४८

मलिना (वासना) जन्महेतुः स्या-

च्छुद्धा जन्मविनाशिनी

मुक्तिको. २।६१

मलिना वासना यैषा साऽसन्न

इति कथ्यते

अ. पू. २।५

महाकेन कृतं युद्धं सिंहोघैरेणुकोटरे

महो. ४।६४

महाकेन हृतेसिंहेजगत्सत्यं तदास्तु ते

ते. वि. ६।८६

मस्तकस्थामृतास्वादं पीत्वा ध्यानेन

सादरम् । दीपाकारं महादेवं

उबलन्तं नाभिमध्यमे । अभि-

षिच्यामृतेनैव हंस हंसेति

यो जपेत् । जरामरणरोगादि

न तस्य भुवि विद्यते

ब्र. वि. २२

मस्तिष्कादूर्ध्वं प्रेरयत्यवमानोऽधि-

शीर्षतः । तद्वा अथर्वणः शिरो

देवकोशः समुज्जितः

अ. शिरः. ३।१४

मह इति तन्त्रमाः

तैत्ति. १।५।२

मह इति प्रज्ञा

तैत्ति. १।५।३

मह इति ब्रह्मणि

तैत्ति. १।६।२

मह इति महलोकः

गायत्रीर. २

मह इत्यन्नम् । अन्नेन वाव सर्वे

प्राणा महीयन्ते

तैत्ति. १।५।३

मह इत्यादित्यः । आदित्येन वाव

सर्वे लोका महीयन्ते

तैत्ति. १।५।२

महच्छैलेन्द्रनीलं वा सम्भवेचेदिदं

जगत् । मेरुरागत्य पद्माक्षे

स्थितश्चेदस्त्विदं जगत्

ते. वि. ६।८५

महच्छोकभयं प्राप्ताः स्मो न

चैतत्सर्वैः समभिहितं ते वयं

भगवन्तमेवोपधावाम

२ प्रणवो. १९

महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः

परः । पुरुषात्तु परा देवी

सा काष्ठा सा परा गतिः

गुह्यका. ४२

महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः

परः । पुरुषात्तु परं किञ्चित्सा

काष्ठा सा परा गतिः

कठो. ३।११

महता दुःखेन जातमात्रस्तु वैष्ण-

वेन वायुना संस्पृष्टस्तदा न

स्मरति जन्ममरणानि न च

कर्म शुभाशुभं विन्दति

गर्भो. १०

महतां च लोकं परं च लोकं दहति

सुबालो. १।५।२

महतां वा अयं महानोदसी

व्याप्य स्थितः

अव्यक्तो. ३

महति स्यन्दने स्थितौ

म. गी. १।१४

महति श्रूयमाणे तु महाभेर्यादिक-

ध्वनौ । तत्र सूक्ष्मं सूक्ष्मतरं

नादमेव परामृशेत्

ना. वि. ३६

महतीं श्रियमभते

नृ. पू. ३।२

महती ज्ञानसंपत्तिः शुचिर्षा-

रणतः सदा (रुद्राक्षाणां)

रु. जा. ९

महतो महत्तरं (ब्रह्म)

त्रि. म. ना. ७।७

महतोऽव्यक्तमुत्तमम्

कठो. ६।७

महतोऽहङ्कारः [+त्रि.म.ना.२।५+

[त्रि. ब्रा. १।१+

गोपालो. २।१३

महत्तरा महिमा देवतानाम्

त्रि. महो. १

महत्पदमत्रैतत्समर्पितम्

मुण्ड. २।३।१

महत्पदमत्रैतत्सर्वमर्पितम् (मा.पा.)

मुण्ड. २।३।१

महत्पदं ज्ञात्वा ब्रह्ममूले वसेत्

सुबालो. १।३।२

महत्त्वज्ञानतमसि ममो जराभरणः

द्वैतैरभिभूयमानः...निर्मुच्यते निरुक्तो. २।२

महत्त्वं जडत्वं काठिन्यं विद्यते

यस्मिन्नक्षतेरेतन्महि लकारः

परं धाम

त्रि. ता. १।८

महत्त्वान्महत्त्वान्मानत्वान्मुक्त-

त्वान्महादेवत्वात्...सच्चिदान-

न्दमात्रः स स्वराद् भवति नृसिंहो. ७।१

महदव्यक्तेऽव्यक्तं पुरुषे

क्रमेण विलीयते

पैङ्गलो. ३।४

महदहङ्कार-पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाश-

त्वेन बृहद्रूपेणाण्डकोशेन कर्म-

ज्ञानार्थरूपतया भासमानमद्वि-

तीयमखिलोपाधिविनिर्मुक्तं...

चैतन्यं ब्रह्म

निरा. ५

महदहङ्कृतितमोभिश्च मूलप्रकृत्या

परिवेष्टितं (ब्रह्माण्डं)

त्रि. म. ना. ६।२

महदादि जगन्मायामयं मय्येव

केवलम्

वराहो. ३।१५

महद्भयं ब्रह्ममुद्यतं य एतद्विदु-

रमृतास्ते भवन्ति

कठो. ६।२

महदेहा जिह्वया भुवं लिहानाः

वंष्ट्राभ्यासाकाशा महच्छब्दाः

(प्राणिनः) ब्रह्माणं हंतुमुद्युक्ताः

ग. शो. ३।६

महर्षयः क्षप्त पूर्वं

भ. गी. १०।६

महर्षिवेद्यं अन्तर्बाह्येन्द्रियैरदृश्यम्

मं. ब्रा. १।४

महर्षीणां च सर्वशः

भ. गी. १०।२

महर्षीणां भृगुरहं

भ. गी. १०।२५

महः पुरुषं प्रतिष्ठा

तैत्ति. २।४

महाः इन्द्रो बभ्रवाहुः षोडशी

महाना. ५।८

महाकर्ता महाभोक्ता महात्यागी

भवानव

अ. पू. १।१८

महाकाशाय विष्णवे स्मशानवासिने

धीमहि । तन्नो ब्रह्मः प्रचोदयात्

पारायणो. १

महाक्षरी वा विदेन युद्यते चे-

ज्जगत्स्थितिः

तै. बि. ६।९२

महाक्षरी गजगतिं गतश्चे-

ज्जगदस्तु तत्

तै. बि. ६।९३

महाचमस्यः प्रवेदयते

तैत्ति. १।५।१

महाचिदेकैवेहास्ति महासचेति

थोच्यते

अ. पू. ५।५५

महात्मनश्चतुरो देव एकः

छांदो. ४।३।६

महात्मानस्तु मां पार्थ

भ. गी. ९।१०

महात्रिपुरसुन्दरी वै प्रत्यक् चितिः

बह्वचो. २

महात्रिपुरसुन्दरी बहिरन्तरनुप्रविश्य

स्वयमेकैव विभाति

बह्वचो. २

महादेवमन्तःपार्श्वेनौषिष्ठहनः

शिङ्गीनिकोशाभ्याम्

चित्यु. २।११

महादेवे त्रिपुण्ड्रस्य धारणे भस्म-

कुण्ठने ।

पुण्यलेशविहीनस्य

अद्धा नैव प्रजायते

सि. शि. ५

महादेवो भगवान्नन्दिकेशः षडा-

ननस्तुम्बुरुर्नारदश्च । सरस्वती

पर्वत-श्चित्रकेतु-र्हाहाहूश्चेति

गाने रसज्ञाः

गान्धर्वो. १०

महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै

(त्नीं) च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः

प्रचोदयात् [ना. पू. ता. ४।३+ वनदु. १२५

महाधियः शान्तधियो ये याज्ञा

विमनस्कतां...

महो. ५।६१

महानभिः काष्ठमार्द्रं च शुष्कं

कृत्वा ददेदीश्वरोत्कृष्टबुद्धिः ।

ददेत्पापान्याशु विज्ञानदात्री

न संसारे मज्जते वा कदाचित्

सि. शि. ४

महानन्वमुदकमुपस्पृश्यापोऽवगाह्य... सूर्यता. १।८

महानदीधूर्मेय इवानिवर्तकमस्य

यत्पुराकृतम्

मैत्रा. ४।२

महानरकसाम्राज्ये मत्तदुष्कृत-

वारणाः । आशाशरशला-

काढया दुर्जया हीनिप्रयारयः

महो. ५।७६

महानवोऽयं पुरुषो योऽङ्गुष्ठामे

प्रतिष्ठितः । तमग्निः परिधि-

न्नामि सोऽस्यान्ते अयुताय च

प्रा. हो. २।२

महानव्यक्ते विलीयतेऽव्यक्तमक्षरे

विलीयते, अक्षरं तमसि विली-

यते, तमः परे देव एकीभवति

सुबालो. २।३

महानहं विश्वमहं विचित्रम्

महानुक्त्यासिन्नुर्बन्धुर्बन्धनस्य गोप्ता

केव. २।१

हरम्भो. २

महान्कीर्त्यर्तु न निन्देत्तद्वत्तम् छांदो. २।१६।२
 महान्कीर्त्या तपन्तं न निन्देत्तद्वत्तम् छांदो. २।१४।२
 महान्कीर्त्या न काश्चन परिहरे-
 च्छद्वत्तम् छांदो. २।१३।२
 महान्कीर्त्या न प्रत्यङ्मुष्मिमाक्षमेज
 निष्ठीवेत्तद्वत्तम् छांदो. २।१२।२
 महान्कीर्त्या पशून् निन्देत्तद्वत्तम् छांदो. २।१८।२
 महान्कीर्त्या ब्राह्मणाञ्च निन्दे-
 च्छद्वत्तम् छांदो. २।२०।२
 महान्कीर्त्या महामनाः स्यात्तद्वत्तम् छांदो. २।११।२
 महान्कीर्त्यालोकाञ्च निन्देत्तद्वत्तम् छांदो. २।१७।२
 महान्कीर्त्या वर्षन्तं न निन्देत्तद्वत्तम् छांदो. २।१५।२
 महान्कीर्त्या संवत्सरं मज्जोनाम्नी-
 यात्तद्वत्तम् छांदो. २।१९।२
 महान्प्रजया पशुभिर्भवति [छांदो. २।११।२-२।२०।२
 महान्त्वसस्य महिमानमाहुः, अन-
 यमानो यदनञ्जमत्तीति वै वयं
 ब्रह्मचारिभेदमुपास्महे छांदो. ४।३।७
 महान्तं दहत्यव्यक्तं दहत्यक्षरं
 दहति मृत्युं दहति मृत्युर्वै
 परे देव एकीभवति सुबालो. १५।२
 महान्तं भिनत्ति, महान्तं भित्त्वा-
 ऽव्यक्तं भिनत्त्यव्यक्तं भित्त्वा-
 ऽक्षरं भिनत्त्यक्षरं भित्त्वा मृत्युं
 भिनत्ति, मृत्युर्वै परे देव एकी-
 भवति सुबालो. ११
 महान्तममहान्तं विष्णुमविष्णुं...
 नमोऽनन्तान्महामनहं नृसिंहा-
 शुभैव बुधधरे नृसिंहो. ६।१
 महान्तं विष्णुमात्मानं मत्वा धीरो
 नक्षीयति [छांदो. २।२१+४।४+ ना. प. ९।१५
 महान्प्रकार इव रागाव्यभिन्द्र-
 जालमिव मायामयं मैत्रा. ४।२
 महान् प्रभुर्वै पुरुषः सत्त्वस्यैव प्रवर्तकः श्वेताश्व. ३।१२
 महान् भवति तैत्ति. ३।१०।३
 महान्भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-
 वर्चसेन महान्कीर्त्या तैत्ति. ३।६
 महान् भोक्तृ प्रजापतेः चित्त्यु. १४।४
 महान् वा जस्य महिमा शौनको. १।४

महापातकपापिष्ठसङ्गत्या सञ्चितं
 च यत् । नाशयेत्तत्कथालाप-
 शयनासनभोजनैः रामो. ५।१७
 महापातकयुक्तानां पूर्वजन्मार्जि-
 तागसाम् । त्रिपुण्ड्रोद्धूलनद्वेषो
 जायते सुदृढं बुधाः बृ. जा. ५।११
 महापातकात्पूतो भवति मुद्रलो. ५।१
 महापातालपादान्तलम्बा तस्या
 जयं स्मरेत् । ब्रह्माण्डार्धं कपालं
 हि शिरस्तस्या विभावयेत् गुह्यका. ८
 (अथ) महापीठे सपरिवारं समेतं
 चतुस्सप्तात्मानं चतुरात्मानं मूला-
 मावभिरूपं प्रणवं संदध्यात् नृसिंहो. ३।४
 महापुरुष आत्मानं चतुर्धा कृत्वा
 त्रिपादेन परमे व्योम्नि चासीत् मुद्रलो. ३।४
 महापुरुषइतियमवोचाम संवत्सरएव ३ ऐत. २।३।१
 महापुरुषोपेतं यो वेद स एव
 नित्यपूतस्थः लिङ्गोप. २
 महापुरुषो यच्चित्तं तत्सदा मय्ये-
 वावतिष्ठते प. हं. २
 महापुरुषो यस्तच्चित्तं मय्येव तिष्ठते तुरीया. ३
 महाप्रथमान्तार्धस्याद्यन्तवन्तो
 द्वितीयान्तार्धस्याद्यं षणं तृतीया-
 न्तार्धस्याद्यं नाम चतुर्थान्तार्ध-
 स्याद्यं साम जानीते सोऽमृतत्वं
 च गच्छति नृ. पू. १।६
 महाप्रलयसम्पत्तौ ह्यसत्तां समुपा-
 गते । अशेषदृश्ये सर्गादौ शान्त-
 मेवावशिष्यते मुण्डो. ४।५५
 महाबाहो बहुबाहुरुपादं भ. गी. १।१२.३
 महाभारतमाख्यानं कुरुक्षेत्रं
 सरस्वतीम् । केशवं गां च
 गङ्गां च कीर्तयन्नावसीदति विष्णुह. १।८
 महाभूतानि प्रयाजाः प्रा. हो. ४।३
 महाभूतान्यहङ्कारः भ. गी. १।३।६
 महाभूतैः पंचमिरावृतं महदहङ्कृति-
 तमोभिश्च मूलप्रकृत्या परिवे-
 षितम् (ब्रह्माण्डं) त्रि. म. जा. ६।२

महाभूतोत्पत्त्युद्गमाङ्गोपाधिकाः सर्वे
जीवा इत्येके वदन्ति त्रि. म. ना. ४१९
महामनुसमुद्भवं तदिति ब्रह्म
शाश्वतम् त्रि. ता. १५
महामायं महाविभूति सच्चिदानन्द-
मात्रमेकरसं पुरमेव ब्रह्म मका-
रेण जानीयात् नृसिंहो. ५७
महामाया महालक्ष्मीर्महादेवी
सरस्वती । आधारशक्ति-
रव्यक्ता यथा विश्वं प्रवर्तते यो. शि. २।११
महामुद्रा नभोमुद्रा ओडयाणं च
जलन्धरम् । मूलबन्धं च
यो वेत्ति स योगी मुक्तिभाजनम् यो. चू. ४५
महामुद्रा महाबन्धो महावेधश्च
खेचरी १ यो. त. २६
महामेघे वा मरीचिरिव पश्येत् ,
तदप्येतमेव विद्यात् ३ ऐत. २।४।६
महायोगेश्वरो हरिः भ. गी. ११।९
महाराज बृहद्रथेक्ष्वाकुवंशध्वज-
शीर्षात्मज्ञः कृतकृत्यस्त्वं मरु-
न्नाम्नोविभ्रुतोऽसीत्ययं खत्वा-
त्मातेकतमो भगवान् वर्ण्य इति मैत्रे. १।५
महारात्र उषस्युदिते ब्रज ५-
स्तिष्ठन्नासीनः शयानोऽरण्ये
ग्रामे वा यावत्तरस ५ स्वा-
ध्यायमधीते सर्वा लोका जयति सहवे. १९
महालक्ष्मीर्महादेवी सर्वलोकैक-
मोहिनी ना. पू. ता. २।२
महालक्ष्मीर्ब्रूलप्रकृतिर्भवति ना. पू. ता. २।४
महालक्ष्मीश्च विद्याहे सर्वसिद्धिश्च
धीमहि । तन्नो देवी
प्रचोदयात् देव्यु. ९
महालीलास्थानं क्षराक्षराभ्यामधिकं
पुनश्चोत्तमाधिष्ठानम् सामर. ५
महावाक्यत्रयं भवेत् गुह्यका. ८०
महावाक्यान्त्युपदिशेत्सषडङ्गानि
देशिकः शु. र. ३।१५
महावाक्यार्थतो दूरो ब्रह्मास्मी-
त्यतिदूरतः ते. वि. ५।५

महावाक्यार्थमनुस्मरन् ब्रह्माहमस्मि
अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि योऽहमस्मि
ब्रह्माहमस्मि अहमेवाहं मां
जुहोमि स्वाहा त्रि. म. ना. ८।३
महाविज्ञानमिव प्रतिपदेनाध्यव-
सायमिव यत्रैतदिच्छेत्त्येत्यभि-
पश्यति आवे. ९।१
महाविद्या जगन्माता मुनीनां
मोक्षदायिनी ना. पू. ता. २।३
महाविद्यावतां पुंसां मनःक्षोभं
करोति यः । सप्तरात्रौ
व्यतीतायां सचशत्रुर्विनश्यति वनदु. ९६
महाविभूति सच्चिदानन्दमात्रमेक-
रसं पुरमेव ब्रह्म मकारेण
जानीयात् नृसिंहो. ५७
महाविष्णुमहेशानां प्रलयेष्वपि
योगिनाम् । नास्ति पातो लय-
स्थानां महातत्त्वेऽपि वर्तिनाम् अमन. १।८३
महाविष्णुमित्याह-महतां वा व्ययं
महानोदसी व्याप्य स्थितः अव्यक्तो. ३
महाविष्णुं तृतीयं स्थानं (जानीयात्) नृ. पू. २।३
महाविष्णोरेकैकरोमकूपान्तरेष्वनन्त-
कोटिब्रह्माण्डानि सावरणानि
भवन्ति त्रि. म. ना. ६।३
महाविष्णोश्च देवस्य तत्सूक्ष्मं
रूपमुच्यते यो. शि. ९।३४
महाविष्णोः करतले विलसन्त्यनन्त-
कोटिब्रह्माण्डानि त्रि. म. ना. ६।३
महाविष्णोः क्रीडाक्षरीररूपिणी
ब्रह्मादीनामगोचरा (महामाया) त्रि. म. ना. ४।९
महाव्याहृतिभिः सन्धाय
गायत्री जपेत् सन्धयो. २
महाशनो महापाप्मा भ. गी. ३।३७
महाशून्यं ततो याति सर्वसिद्धि-
समाश्रयम् सोमाय. १३
महाश्मशानेऽप्यानन्दवने वासः निर्वाणो. ४
महाश्रेयांसि सेवन्ते त्रि. म. ना. ८।७
महासिद्धान्तः निर्वाणो. ४

महासूत्रं महासूत्रमे महासूत्रम्

महाकारणे च संहृत्य मात्रा-

भिरोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं

चिन्तयन् असेत्

नृसिंहो. ३।४

महाहविर्होता

चित्त्यु. ५।१

महिमान एवैषामेते त्रस्य ५ सिंशस्वेव

देवा इति

बृह. ३।१।२

महिमानमस्या वक्तुं स्वायुर्मानेना-

पि वक्तुं न चोत्सहे

राधिको. ५

महिमानं त्वमुज्येह पश्यामीति

यदिदमस्मिन्नवायत्तमिति

आर्षे. २।२

महिमानं त्वेवास्मोपासे, स पत-

दस्मिन्नन्तर्हिरण्यः पुरुषो

हिरण्यवर्णो हिरण्यश्मश्रुरा-

नृत्वाप्रेक्ष्यो दीप्यमान इव..

आर्षे. ६।२

महिमानं त्वेवास्मोपासे यदिद-

मन्त्रान्वायत्तमिति

आर्षे. ४।२

महिमा एवाश्नोति सर्वसायुसेति

वसीयान् भवति

आर्षे. ८।२

महिमाः पश्येमाविज्ञान इति

आर्षे. ८।१

महिमां त्यज्यते भार्या भगेनोपा-

जितं धनम् । तद्व्ययमुपजीव-

न्यः स वै माहिषिकः कृतः

इतिहा. ६९

महीत्यनेनाशेषं काम्यं शमणीकं

दृश्यं शक्तिकृतं स्पष्टीकृतमिति

त्रि. ता. १।२५

महेश्वरत्वान्महासत्त्वान्महाचित्वा-

न्महोमन्दत्वान्महाप्रभुत्वाच्च

मकारार्थेनानेनात्मनैकीकुर्यात्

नृसिंहो. ७।१

(वी.) महो अर्णः सरस्वती

प्रचेतयति केतुना । धियो

विधा विसृजति

सरस्व. १४

[अ. मं. १।३।१२+

वा. सं. २०।६

महीरगावष्ट इव विपदष्टं (भूतात्मानं)

मैत्रा. ४।२

महीरगाय वीरोरगाय वृद्धोरगाय

पृथुर्गाय विद्युदुल्काय ज्वलदु-

ल्काय च पञ्चकल्पिता नमः

स्वाहा अन्ववीषदपदान्ता

० अन्ववीषा अवन्ति

ता. पू. ता. ४।११

महाविष्णो विमन्तु

चित्त्यु. १३।५

मंस्यन्ते त्वां महारथाः

अ. गी. २।३५

सा कर्मफलहेतुर्भूः

अ. गी. २।३७

मा खेदं भज हेयेषु नोपादेयपरो

भव । हेयादेयदृशौ त्यक्त्वा

शेषस्थः सुस्थिरो भव

महो. ६।२८

मा गृधः कस्यस्विद्धनम्

ईशो. १

मा च तेख्यास्म तीरिषत्

अरण्यो. १

मा छिदो मृत्यो मावधीर्मा मे बलं

विवृहो मा प्रमोषीः

महाना. १३।१३

मा छिदो मृत्यो मावधीः..

चित्त्यु. १५।१

माण्डूक्यमेकमेवालं मुमुक्षुषां

विमुक्तये

मुक्तिको. १।२६

मातरं पितरं भार्यां बुभान्...

अनुमोदयित्वा...

कठसु. ३

मातरिषा वा अहमस्मीति

केनो. ३०६

मातरीव परं यान्ति विषमाणि

मृदूनि च । विश्वासमिह

भूतानि सर्वाणि शमशालिनि

महो. ४।३०

मातरो विविधा दृष्टाः पितरः

सुहृदस्तथा

सिद्धको. १।६

मातर्मे मधुकैटभन्नि महिषघाणा-

पहादोषमे... शुम्भध्वंक्षिनि

कालि सर्वदुरितंदुर्गेनमस्तोदर

वसु. १६६

माता धाता पितामहः

अ. गी. ५।१७

माता पिता भ्राता निवाहः शरणं

सुहृदतिर्नारायणो विराज्ञा

सुबालो. ६।१

मातापित्रोर्मलोद्भूतंमलमांसमयं वपुः

अध्यात्मो. ६

माता पूर्वकृपम्

तेति. १।३।६

मातामहौ सावित्री गायत्री जरा-

त्युर्वी पृथ्वी बहुला विश्वा भूता

कतमा का या सा सत्येत्य-

मृतेति वसिष्ठः

महाना. १०।१४

माताऽमाता (भवति)

बृह. ४।३।२२

मातुलाः श्वशुराः पौत्राः

अ. गी. १।३६

मातृ रेतोविकात्स्नी भवन्ति

अर्भो. ३

मातृकश्चित्युतं मन्त्रं द्वादशान्वं तु

यो जपेत् । क्रमेण लभते ज्ञान-

मणिप्राद्विशुषान्वितम्

१ को. ३।२१

मातृकामालया मंत्री मनसैव
 मनुं जपेत् । अथैक्यं
 वैष्णवे पीठे जपेद्दक्षरलक्षकम् राम. ४१७
 मातृकारहितं मंत्रमादिशन्ते न
 कुत्रचित् ब्र. वि. ६३
 मातृदेवो भव तैत्ति. १।११
 मातृमानविहीनोऽस्मि मेघहीनो
 शिवोऽस्म्यहम् भैत्रे. ३।१३
 मातृमास्ते मातृ-पितामही-
 प्रपितामहीः ना. प. ४।३५
 मातृसूतकसम्बन्धसूतकेसह जायते ।
 सूतसूतकजं देहं स्पृष्ट्वा ज्ञानं
 विधीयते भैत्रे. ३।७
 मातृहा वै त्वमसि छांदो. ७।१५।२
 मा ते मूर्धा व्यतप्तदनतिप्रभ्यां वै
 देवतामतिपृच्छसि, गार्गी
 मातिप्राक्षीः बृह. ३।६।१
 मातेषु पुत्रान्...विधेहि नः (भा. पा.) प्रभो. २।१३
 मातेषास्मा अदिते शर्म यच्छ सद्देवै. ६
 मातेषु पुत्रान्नक्षत्वं श्रीश्च प्रज्ञां
 च विधेहि प्रभो. ३।१३
 मा ते व्यथा मा च विमूढभावः भ. गी. ११।३५
 मा ते क्षुद्रोऽस्त्वेकर्मणि भ. गी. १।४७
 मात्माद्वादशयोगेन प्रणवेन ज्ञेयः
 ज्ञेयः । पूरयेत्सर्वमात्मानं सर्व-
 द्वारं निरुध्य च क्षुरिको. ३
 मात्राद्वादशसंयुक्तौ दिवाकरनि-
 शाकरो । दोषजालमवप्रन्तौ
 ज्ञातव्यौ योगिभिः सदा यो. च. १०९
 मात्रा बलम् तैत्ति. १।२।१
 मात्राभिरोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्प-
 कस्य चिन्त्ययन् प्रसेत् कृषिहो. ३।४
 मात्रामात्राः प्रतिमात्राः कुर्यात् कृषिहो. ३।७
 मात्राभिमात्राः प्रतिमात्रागतौ
 स्वयम्प्रकाशः स्वये ब्रह्मा भवति ज. शिखी. ५
 मात्रालिङ्गपदं त्यक्त्वा शब्दव्य-
 त्तनञ्जितम् । अस्वरेण मका-
 रेण पदं सूक्ष्मं च गच्छति ज. ना. ४

(अथ) मात्राऽशितपीतनाडी-
 सूत्रगतेन प्राण आप्यायते गर्भो. ३
 मात्राश्च पादाः, अकार उकारो
 मकार इति माण्डू. ६
 मात्रासङ्गाद्विनिर्गतः ना. प. ५।६
 मात्रासम्प्रतिपत्तौ तु लयसा-
 मान्यमेव च आंगम. २१
 मात्रासम्प्रतिपत्तौ स्यादाप्तिश्चा-
 मान्यमेव च आंगम. १९
 मात्रासम्प्रतिपत्तौ स्यादुभयत्वं
 तथाविधम् आंगम. २७
 मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय भ. गी. १।१४
 मा त्वं मामपहाय परागाः, नाहं
 त्वामपहाय परागामिति कठक. २
 मादकं दुर्जरं चैव दग्धानं विष-
 मिश्रितम् ।...प्राप्तं यत्पीड-
 नाज्जन्तोरभक्ष्यं तत्प्रचक्षते भवसं. ४।१३, १४
 मा देव्यस्तुतेदि मा मनुष्यः चित्तु. ५।३
 माद्यति प्रमदां दृष्ट्वा सुरां पीत्वा
 च माद्यति । तस्मादृष्टिर्विषां ना. प. ६।३७
 नारीं दूरतः परिवर्जयेत् भ. गी. १।१४
 माधवः पाण्डवश्चैव माधुकरेण करपात्रेणास्यपात्रेण
 कालं नयेत् (यतिः) १ सं. लो. ३।५९
 माधुकरमसंकुप्तं प्राक्प्रणीतमयाचि-
 तम् । मधुमक्षिकवत्कृत्वा १ सं. लो. ३।५९
 भैक्षं पञ्चविधं स्यूतम् छांदो. ३।१६।२
 माध्यन्दिनं सवनमनुसन्तनुतेति तैत्ति. ३।९०।३
 मानवान् भवति मानवो ब्रह्मैवैक ऋत्विक्कुरुनश्चामि-
 रक्षत्येवंविद्धं वै ब्रह्मा यज्ञं
 यजमानं सर्वान्भस्विजो-
 ऽभिरक्षति छांदो. ४।१७।१०
 मानसपूजया जपेन ध्यानेन
 कीर्तनेन स्तुत्या मानसेन
 सर्वेण नित्यस्थलं प्राप्नोति शोधोप. १।६+४।४
 मानसमिति विद्वांसस्तस्मा-
 दिह्वा २ ख एव मानसे रमन्ते महाभा. १६।१२

मानसस्य तयोपांशोः सहस्रगुण
 उच्यते (जपः) जा. द. २।१५
 मानसस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषः बृह. २।५।७
 मानसं कोटिगुणं (जपकर्म) शांडिल्यो. १।२।१
 मानसं तु मनसाध्यानयुक्तं (जपकर्म) शांडि. १।२।१
 मानसं ब्रह्म माहेश्वरं ब्रह्म मानसं
 हंसः सोऽहं हंसः पा. ब्र. ३
 मानसं मननं विदुः (शौचं) जा. द. १।२०
 मानसं वै प्राजापत्यं पवित्रं
 मानसेन मनसा साधु पश्यति महाना. १७।११
 मानसा ऋषयः प्रजा अस्तृजन्त महाना. १७।११
 मानसीर्वासनाः पूर्वं त्यक्त्वा
 विषयवासनाः । मैत्र्यादि-
 वासनानाङ्गीर्गृहाणामलवासनाः मुक्तिको. २।६९
 मानसे च विलीने तु यत्सुखं...
 तद्ब्रह्म चामृतं शुक्रं.. सागतिः मैत्रा. ६।२४
 मानसे तु कृते दण्डे प्राणायामो
 विधीयते १सं. सो. २।९७
 मानसेन मनसा साधु पश्यति महाना. १७।११
 मानसे विलयं याते कैवल्य-
 मवशिष्यते शांडि. १।७।२३
 मानसे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मान्मानसं
 परमं वदन्ति महाना. १७।११
 मानसो मननध्यानभेदाद्वैविध्य-
 माश्रितः जा. द. २।१४
 मानस्तोक इति सद्योजातमित्या-
 दिपञ्चमब्रह्ममैत्र्यमसङ्गद्वयमि-
 रिति अस्म वायुरिति..जलमिति
 अस्म स्थलमिति अस्म व्योमेति
 अस्म देवा अस्म ऋषयो अस्म
 सर्वं ह वा एतदिदं अस्म पूर्तं
 पावनं नमामि अस्मजा. १।४
 मानस्तोक इति समुद्रृत्य मानो
 महान्तमिति जलेन त्रियायुष-
 मिति शिरोललाटवक्षःस्कन्धेषु
 ...तिस्रो रेखाः प्रकुर्वीत का. रुद्रो. २
 मानस्तोक इति समुद्रृत्य जलेन
 संस्पृश्य त्रियायुषमिति शिरो-
 ललाटवक्षःस्कन्धेष्विति... जा. बाल्यु. ६

मा नस्तोके तनये मान आयुषि
 मानो गोषु मानो अश्वेषु
 रीरिषः ।...तन्मे मनः शिव-
 सङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. २९
 मा नस्तोके तनये मा न आयुषि
 ...हविष्मन्तः सद्मिन्त्वा
 हवामहे (नमसा विधेम ते) महाना. १३।१५
 [श्वेता. ४।२२+क्र.नं. १।११४।८+
 [वा. सं. २०।१६ तै.सं. ३।४।११२
 मानस्तोकेतिमंत्रेण मन्त्रितं भस्म
 धारयेत् बृ. जा. ५।१
 मा नः प्रजाः रीरिषो मोत वीरान्
 [महाना. १३।८+ चित्त्यु. १५।२
 मानापमानयोस्तुल्यः भ. गी. १४।२५
 मानावमानहीनोऽस्मि मैत्रे. ३।४
 मानुषस्य भगवन्नातम वित्तस्य
 वरं वृणीथाः... छान्दो. ५।३।६
 मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति. १।९।१
 मानुषीं तनुमाश्रितम् भ. गी. ९।११
 मानुषे तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषः बृह. २।५।१३
 मा नो महान्तमिति जलेन सम्स्पृश्य का. रुद्रो. २
 मा नो महान्तमुत मानो अर्भकं
 मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् महाना. १३।१४
 [क्र.मं. १।११४।७+वा.सं. १६।१७ अथर्व. ११।२।२९
 मा नो महान्तमुत मानो अर्भकं...
 तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. ३८
 मा नो हिः सीञ्जातवेदो
 गामश्वं पुरुषं जगत् महाना. २।१०
 मा नो भवान् बहोरनन्तस्या-
 पर्यन्तस्याभ्यवदान्योऽभूदिति बृह. ६।२।७
 मा पुत्र रोदः रुदम् छान्दो. ३।१५।२
 मा फलेषु कदाचन भ. गी. २।४७
 (ते होचुः) मा भगव उत्कमीर्न
 वै शक्ष्यामस्त्वद्वते जीवितुं बृह. ६।१।१३
 मा भगवानवोचत्कतमासादेवतेति छांदो. १।११.४६
 मा भव ब्राह्मभावात्मा ब्राह्मकात्मा
 च मा भव । भावनामखिलां
 त्यक्त्वा यच्छिष्टं तन्मयो भव मैत्रे. २।२८
 [अ. पू. ५।१०४+ वराहो. ४।१९

मा भवाङ्गो भवद्भस्त्वं जहि संसार-

भाषनाम् । अनात्मन्यात्म-

भावेन किमन्य इव रोदिवि महो. ४।१३०

मा भैषीर्गौतमजितोवैते लोक इति सूर्यता. ३।१

मामकाः पाण्डवाश्चैव भ. गी. १।१

मामनुस्मरतश्चित्तंमामेवात्र विलीयते यो. शि. ३।२५

मामनुस्मर युद्धय च भ. गी. ८।७

मामन्तेवासिनमनुशासयामोक्षमिति भस्मजा. १।१

मामप्राप्यैव कौन्तेय भ. गी. १६।२०

मामात्मगुणां वहते स्वभूत्यै तां

राजिमन्तां धूर्धूरयन्तीं धूरसि

ध्रुवाय स्वाहा

पारमा. ९।६

मामात्मपरदेहेषु भ. गी. १६।१८

मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणं

मेऽस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु.

केनो. शां. पा.

मामांयुरमृतमित्युपास्व कौ. उ. ३।२

मामाश्रित्य यतन्ति ये भ. गी. ७।२९

मामिकामेवव्याहृतिमादितः कृणुध्व-

मित्येवं मामका अधीयन्ते

२ प्रणवो. २०

मामिच्छामुं धनञ्जय भ. गी. १२।९

मामुपेत्य तु कौन्तेय भ. गी. ८।१६

मामुपेत्य पुनर्जन्म भ. गी. ८।१५

मामेकं शरणं ब्रज [त्रि.म.ना.८।६+ भ. गी. १८।६६

मा मे बलं विवृहो मा प्रमोषीः चित्त्यु. १५।१

[महाना. १३।१३+

तै. आ. ३।१५।१

मामेभ्यः परमव्ययम् भ. गी. ७।१३

मामेव ये प्रपद्यन्ते भ. गी. ७।१४

मामेव विजानीहि, एतदेवाहं

मनुष्याय हिततपं मन्ये

कौ. त. ३।१

मामेव विदित्वाऽमृतत्वेनेति

वरति शोकम्

भस्मजा. २।५

मामेव विदित्वा सांख्यतिकीं कजं

ब्राह्मयति

भस्मजा. २।५

मामेव वेदाश्चतुर्मुर्तिधराः

भस्मजा. २।१३

मामेव स्तुवन्ति वेदाः साङ्गः

सौपनिषदः

भस्मजा. २।११

मामेव विदित्वा संसृति-

पाशात्प्रमुच्यते

भस्मजा. २।७

मामेवानुत्तमां गतिम्

भ. गी. ७।१८

मामेवैष्यसि युक्त्वैवं

भ. गी. ९।३४

मामेवैष्यसि सत्यं ते

भ. गी. १८।६५

मामेवैष्यत्यसंशयः

भ. गी. १८।६८

मामेवैष्यत्यसंशयः

भ. गी. ८।७

मामैतस्मिन् संवदिष्टा अतिष्टाः

सर्वेषां भूतानां राजेति

बृह. २।१।२, ३, ६

मामैतस्मिन् संवादयिष्टा असुरिति वा

कौ. त. ४।१२

मा मैतस्मिन्संवदिष्टाः असुरिति

वा अहमेतमुपासे

बृह. २।१।१०

मामैतस्मिन्संवदिष्टा आत्मन्वीति

वा अहमेतमुपासे

बृह. २।१।१३

मामैतस्मिन् संवादयिष्टाः इन्द्रो

वैकुण्ठोऽपराजिता सेनेति वा

कौ. त. ४।७

मा मैतस्मिन्संवदिष्टा इन्द्रो

वैकुण्ठोऽपराजिता सेनेति

बृह. २।१।६

मा मैतस्मिन्संवदिष्टास्तेजस्वीति

वा अहमेतमुपास इति स य

एतमेवमुपास्ते तेजस्वी ह भवति

बृह. २।१।४

मा मैतस्मिन्संवदिष्टाः, (समवाद-

यिष्टाः) द्वितीयोऽनपग इति

वा अहमेतमुपासे [बृह. २।१।११+ कौ. त. ४।११

मा मैतस्मिन् संवादयिष्टा नाज्ञ

आत्माऽग्निरात्मा ज्योतिष्ट

आत्मेति वा अहमेतमुपास इति

कौ. त. ४।१६

मा मैतस्मिन् संवादयिष्टा नान्य-

स्यात्मेति वा अहमेतमुपास इति

कौ. त. ४।९

मा मैतस्मिन्संवदिष्टाः पूर्णम-

प्रवर्तीति वा अहमेतमुपास इति

बृह. २।१।५

मा मैतस्मिन्संवदिष्टाः पूर्ण-

मप्रवर्तिं ब्रह्मेति वा...

कौ. त. ४।६

मा मैतस्मिन् संवादयिष्टाः प्रजा-

पतिरिति वा अहमेतमुपास इति

कौ. त. ४।१४

मा मैतस्मिन्संवदिष्टाः प्रतिरूप

इति वा अहमेतमुपास इति

[बृह. २।१।८+

कौ. त. ४।१०

मा मैतस्मिन्संवदिष्टा अतिष्टाः

सर्वेषां भूतानां मूर्त्वा राजेति वा

बृह. २।१२

मा मैतस्मिन्संवादिष्टा बृहत्पाण्डर-
 काशाः सोमो राजेति बृह. २।१।३
 मा मैतस्मिन्संवादिष्टाः, मृत्युरिति
 मा अहमेतमुपास इति बृह. २।१।१२
 मा मैतस्मिन् संवादयिष्टा मृत्यु-
 रिति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।१३
 मा मैतस्मिन् संवादयिष्टा यमो
 राजेति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।१५
 मा मैतस्मिन्संवादिष्टा रोचिष्णुरिति
 वा अहमेतमुपास इति बृह. २।१।९
 मा मैतस्मिन्संवादिष्टाः, विषासहि-
 रिति वा अहमेतमुपास इति बृह. २।१।७
 मा मैतस्मिन्संवादयिष्टा विषास-
 हिरिति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।८
 मा मैतस्मिन् संवादयिष्टाः शब्द-
 स्यात्मेति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।५
 मा मैतस्मिन् संवादयिष्टाः सत्य-
 स्यात्मा विद्युत आत्मा तेजस
 आत्मेति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।१७
 मा मैतस्मिन्संवादयिष्टाः सोमो
 राजन्स्यामेति वा कौ. त. ४।३
 मा मैतस्मिन्संवादयिष्टास्तेजस
 आत्मेति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।४
 मा मोपरोत्सीरति मा सृजैनं कठो. १।२९
 मायया एतत्सर्वं वेष्टितं भवति नृ. पू. ५।२
 माययाऽपहृतज्ञानाः भ. गी. ७।१५
 माययाभिद्यते ह्येतन्नान्यथा जंकथञ्चन अद्वैत. १९
 मायया मोहिताः शम्भोर्महादेवं
 जगद्गुरुम् । न जानन्ति सुराः
 सर्वे सर्वकारणकारणम् पञ्चम. १८, १९
 मायया ह्यन्यदिव नृसिंहो. ९।१
 मायाकार्यमिदं मेदमस्ति चेद्ब्रह्म-
 भावनम् ते. बि. ६।१००
 मायाकार्यादिकंनास्ति मायानास्ति ते. बि. ५।३३
 मायाकुण्डलिनी क्रियामधुमती
 कालीकलामालिनी... द्वीङ्कारी
 त्रिपुरा परा परमयी माता
 कुमारीत्यसि बनदु. ५

मायाकूटौ बन्धमोक्षौ न स्तः
 स्वात्मनि वस्तुतः आत्मो. २६
 माया च तमोरूपानुभूतिः नृसिंहो. ९।२
 माया चाविद्या च स्वयमेव भवति नृसिंहो. ९।३
 मायातत्कार्यविलये नेश्वरत्वं
 न जीवता बराहो. २।५२
 मायातीतं गुणातीतं ब्रह्म त्रि. म. ना. १।३
 मायादेवो बलगहनो ब्रह्मारातीस्तं
 देवमीडे दक्षिणास्यम् ग. पू. १।६
 मायानाम अनादिरन्तवती प्रमाणा-
 प्रमाणसाधारणा न क्षती
 नाक्षती न संदक्षती स्वय-
 मधिका विकाररहितानिरूप्य-
 मागा सतीतरलक्षणशून्या
 सा मायेत्युच्यते सर्वसारो. ६
 मायाऽन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः
 [श्रीसू. ६+ क्र. खि. ५।८७।६
 मायाभिरको अभिचाकशानः बा. मं. ११
 मायाममताहङ्कारदहनम् निर्वाणो. ६
 मायामात्र एष एवोमः नृसिंहो. ५।१
 मायामात्रमिदं द्वैतमद्वैतं परमार्थतः आगम. १७
 मायामात्रविकासत्वान्मायातीतो-
 ऽहमद्वयः आ. प्र. २०
 मायामात्रं जगत्कृत्स्नं तदा भवति
 निर्धृतिः जा. द. १०।१२
 मायामात्रं विदित्वैवं सच्चिदेक-
 रसो ह्ययम् ना. प. ८।२१
 मायामेतां तरन्ति ते भ. गी. ७।१४
 मायायाः समुत्पन्ना आसुराः कर्म-
 जडा अन्यधर्मरता एव भवन्ति सामर. ३
 मायावशादेव देवा मोहिता
 समतादिभिः शरभो. २८
 माया वा एषा नारसिंही सर्वमिदं
 सृजति नृ. पू. ३।२
 माया वा एषा वैनायकी सर्वमिदं
 सृजति, सर्वमिदं रक्षति, सर्व-
 मिदं संहरति ग. पू. ना. ५।३

मायावाक्यद्वन्द्वकारमुचितप्रज्ञोऽसि
सत्त्वादहं ब्रह्मास्मीति मुहुर्मुहुर्वद-
सि रे जीव त्वमुन्मत्तवत्
मायाविद्धो विहायैव उपाधी परजी-
वकोः । अथर्वणं सच्चिदानन्दं परं
ब्रह्म विलक्ष्यते
मायावी मायाया क्रीडति स ब्रह्मा
मायाशक्तिर्ललाटाग्रभागे व्योमा-
न्वुजे तथा । नादरूपः पद्म
शक्तिर्ललाटस्थ तु मध्यमे
(अथ) मायाशक्तिलितब्रह्मासीत्
मायाशरीरो मधुरस्वभावस्तस्य
ध्यानात्पूजनात्तत्स्वरूपाः
माया सत्त्वरजस्तमोमयी
मायासम्बन्धतश्चेष्टोः अन्तःकरण-
सम्बन्धात् प्रमातेत्यभिधीयते
माया सा त्रिविधा प्रोक्ता सत्त्व-
राजस्रवायसी
माया तु प्रकृति विद्यान्मायिनं तु
महेश्वरम् । तस्यावयवभूतेस्तु
व्याप्तं सर्वमिदं जगत्
मायां तु प्रकृति विद्यात्प्रभुं
तस्या महेश्वरीम् । अस्या अव-
यवैः सूक्ष्मैर्व्याप्तं सर्वमिदं जगत्
मायेत्यसुराः (उपासते)
मायेषा तस्य देवस्य ययाऽये
मोहितः स्वयम्
मायोपाधिर्जगद्योनिः सर्वज्ञत्वा-
दिलक्षणः
मायोपाधिविनिर्मुक्तं शुद्धमित्य-
भिधीयते
मायोपाधिः सच्चिदानन्दलक्षणो
जगद्योनिस्तत्पदवाच्यो भवति
मारणमोहनवशीकरणस्तन्मन-
जुम्भणाकर्षणोपादनमिच्छा-
विशेषणयुक्तैर्मर्माणि बन्धय..
मारय मारय नमः सम्पन्नायतमः
सम्पन्नाय त्वाहा
मारवेतिपञ्चभुजैः (हुनेत्)

भवसं. २।३३

अध्यात्मो. ३२

शक्ति. ३।१।३

यो. कि. ६।४८
गोपीचं. ८

हेरम्बो. ६

सन्निको. ९

कठरु. ४२

कृष्णोप. ४

चेष्टा. ४।१०

गुह्यका. ५५

मुद्रलो. ३।२

वैतथ्य. १९

अध्यात्मो. ३०

कठरु. ४१

पेङ्गलो. ३।१

लांगलो. ७

कृत्वात्रे. २।२

प. पू. २।१३

मारुतक्षये वेपथुः सम्भवेति

नाम्भसेनैव जीवति

वराहो. ५।५

मारुतस्तूरसिचरन्मन्द्रंजनयति त्वरम्

मेजा. ५।१९

मारुतस्य लयो नाथस्तन्नाथं

लयमाश्रय

वराहो. ३।८०

मारुते मध्वसन्धारे मनस्स्थैर्यं

प्रजायते । यो मनःसुस्थितो

भावः सैवावस्था मनोन्मनी

शांदि. १।७।१०

मारुतो नैनं शोषयति

सामर. १००

मारुपत्वादतो रामो मुक्तिमुक्ति-

फलप्रदः । आद्यो रा तत्पदार्थः

स्यान्मकारस्त्वम्पदार्थवान्

रामर. ५।१२

मार्गे बिन्दुं समाबध्य वह्निं

प्रज्वाल्य जीवने । शोषयित्वा तु

सलिलं तेन कायं दृढं भवेत्

वराहो. ५।३०

मार्दवं ह्रीरचापलम्

स. गी. १६।३

माला निमग्नते ब्रह्मन्

गोपालो. ३।३३

मा शुचः सम्पदं देवीं

स. गी. १६।३

मा शोचीरात्मविज्ञानी शोक-

स्यान्तं गच्छिष्यति

शांडिल्यो. ३।४

माषमात्रां तथा दृष्टिं श्रोत्रे स्थाप्य

तथा भुवि । भ्रवणे नासिके

गन्धा यतः स्वं न च संभ्रयेत्

कुण्डिको. १९

माषैरेतावद्विरमिषिच्यवरुणलोके

कामो वरुणलोकमवाप्नोति

भक्त्या. २।१२

मासचतुष्केण त्वग्व्यादेशः

निरुक्तो. १।४

मासत्रयेण ग्रीवाव्यादेशः

निरुक्तो. १।४

मासत्रयेण पादप्रदेशो भवति

गर्भो. ३

मासद्वयस्तुर्भवति

कि. म. वा. ३।४

मासद्वयेन शिरः सम्पद्यते

गर्भो. ३

मासमात्रं त्रिसन्ध्यायां जिह्वा-

ऽऽरौप्य मारुतम् । असृतं

च पिबेन्नाम्रौ मन्दं मन्दं

निरोधयेत्

जा. द. ३।२९

मासमात्रात्कठिनो भवति

निरुक्तो. १।४

मासमेकं त्रिसन्ध्यं तु जिह्वा-

रौप्य मारुतम् ।... जराः

सर्वेऽपि नश्यन्ति...

शांदि. १।७।१०

मासमेकं लयो यस्य लभस्तिष्टेद-

खण्डितः । प्रजागतिं स

योगीन्द्रो यावन्मोक्षं स गच्छति

अमन. १।७३

मा सङ्कल्प्य सङ्कल्पं मा भावं

भावय स्थितौ । सङ्कल्पनाशने

यत्तो न भूयोऽननुगच्छति

महो. ५।१८२

मा सर्वं सन्नयमितोऽभुनजदिति

बृह. १।५।१७

मासं दीक्षितो भवति, यो मासः

स संवत्सरः, संवत्सरादेवात्मानं

पुनीते

सहस्रै. १२

मासात्पूर्वं मृतो मर्त्यो ह्यागतश्चे-

ज्जगद्भवेत्

ते. वि. ६।८०

मासानां मार्गशीर्षोऽहं

अ. गी. १०।३५

मासाभ्यन्तरे कठिनो भवति

गर्भो. ३

मासाभ्यन्तरे पिण्डो भवति

गर्भो. ३

मासि मासि कुशाग्रेण जलबिन्दुं

च यः पिबेत्

योगो. १७

(अथ) मासि मास्यमावास्यायां

पश्चाच्चन्द्रमसं दृश्यमानमुप-

तिष्ठेत्

कौ. त. २।८

मासेभ्यः पितृलोकं पितृलोका-

चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति

बृह. ६।२।१६

मासेभ्यः संवत्सरं

छांदो. ४।१५।५

मासेभ्यो देवलोकं, देवलोका-

वादित्यमादित्याद्वैद्युतं तान्

त्रैद्युतान्पुरुषो मानस एत्य

ब्रह्मलोकान् गमयति

बृह. ६।२।१५

मासो वै प्रजापतिस्तस्य कृष्णपक्ष

एव रयिः शुक्लः प्राणः

प्रश्नो. १।१२

माऽऽत्माकं प्राणेन प्रजया पशुभि-

रवक्षेष्टाः

कौ. त. २।९

माहात्म्यमपि चान्यथम्

अ. गी. १।१२

माऽहं पौत्रमघं रुदं [कौ. त. २।८+

आ. अ. गृ. १।१३।७

माहं प्राणानामादित्यानां मध्ये

यज्ञो विलोप्सीय

छांदो. ३।१६।६

माहं प्राणानां मध्ये वसुतां यज्ञो

विलोप्सीय

छांदो. ३।१६।२

माहं प्राणानां वराणां मध्ये यज्ञो

विलोप्सीय

छांदो. ३।१६।४

माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा..

केनो. शां. पा.

मां च योऽन्यमिचारेण

अ. गी. १।४।२६

मां चवान्तःशरीरस्थं

अ. गी. १।७।६

मां तु वेदं न कश्चन

अ. गी. ७।२६

मां ध्यायन्त उपासते

अ. गी. २।६

मां प्रति मां प्रतीति सर्वेण

छांदो. २।९।१

समस्तेन साम

छांदो. २।९।१

मांसपाञ्चालिकायास्तु यंत्रलोले-

ङ्गपञ्चरे ।...स्त्रियः किमिव

शोभनम्

याज्ञव. ८

मांसमुद्गीयः

छांदो. २।१९।१

मांसान्मेदः

गर्भो. १

मांसान्यस्य शकाराणि किनाटं

स्त्राव तत्स्थिरम्

बृह. ३।९।३०

मांसास्तृक्पूथविष्मूत्रक्षायुमज्जास्थि-

संहतौ । देहे चेत्प्रतीतिमान्मूढो

भवति नरकेऽपि सः [ना. प. ३।४८ + ४।२८

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य

अ. गी. ४।३०

मिताहारो नाम चतुर्थीशावशेषक-

सुस्निग्धमधुराहारः

शांडिल्यो. १।१।३

मितेरपीतेर्वा मिनोति ह वा इदं

सर्वमपीतिश्च भवति

माण्डू. ११

मितेरपीतेर्वा स्थूलत्वात्सूक्ष्मत्वा-

द्वीजत्वात्साक्षित्वाच्च मिनोति

ह वा इदं सर्वमपीतिश्च भवति

नृसिंहो. २।६

मित्रद्रोहे च पातकम्

अ. गी. १।३८

मित्र उपवक्ता

चिन्त्यु. ३।१

मित्ररविसूर्यभानुखगपूषाहिरण्य-

गर्भमरीच्यादित्यसवित्रक-

भास्कराख्यैः षड्बीजैः संपुटिताः सूर्यता. १।९

मित्रस्य श्रद्धा

चिन्त्यु. ९।१

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षे [प्रवर्ग्या. १८ + वा. सं. ३६।१८

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि

समीक्षे [प्रवर्ग्या. १८+

वा. सं. ३६।१८

मित्रस्वजनबन्धूनां कुर्यान्नाम

शिवात्मकम्

शिवो. १।२२

मित्रादिषु समो मैत्रः समस्तेष्वेव

जन्तुषु । एकोद्धानी प्रशान्तात्मा

स संसरति नेतरः

ना. प. ६।३१

मित्राद्यैः सह सम्मन्य सम्बद्धो

न प्रपद्यते

अ. शां. ३५

मित्रावरुणावरपादौ

सहवै. २३

मित्रावरुणावाशिषा

चित्यु. ८।१

मित्रावरुणौ पङ्क्तिखिण्वत्रयस्त्रिंशौ

शाकरैर्वते

मैत्रा. ७।५

मित्राद्वादकं मूत्रमिव (त्यजेत्)

ना. प. ७।१

मित्रः सुपर्णश्चन्द्र इन्द्रो वरुणो

रुद्रस्त्वष्टा विष्णुः सविता

एका. १२

गोपतिस्त्वम्

मिथुनान्मिथुनात्प्रजायते सर्वमायु-

रेति ज्योर्जीवति महान्प्रजया

पशुभिर्भवति

छान्दो. २।१३।२

मिथ्याचारः स उच्यते

भ. गी. ३।६

मिथ्याभूतान् स्वप्रतुल्यान् विषय-

भोगाननुभूय...अतृप्तः सदा

परिधावति

त्रि. म. ना. ५।३

मिथ्यैव व्यवसायस्ते

भ. गी. १८।५९

मिनोति ह त्रा इदं सर्वमपीतिश्च

भवति [माण्डू. ११+

नृसिंहो. २।६

मिश्रं ह्येतद्वै देवानभाजयदिति

हुतं च प्रहुतं च

बृह. १।५।२

मीमांसते ब्रह्मवादिनो ह्रस्वा दीर्घा

प्लुता चेति

नृ. पू. ३।३

मीमांसते ब्रह्मवादिनो ह्रस्वा वा

दीर्घा वा प्लुता वेति

ग. पू. २।३

मुक्तसङ्गः समाचर

भ. गी. ३।९.

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी

भ. गी. १८।२६

मुक्तसाकारस्त्वैच्छिकः

त्रि. म. ना. २।१

मुक्तात्मानः सर्वमेवापियन्ति (मा.)

मुण्डको. ३।२।५

मुक्ता वेणुमिवोत्तमम्

महो. ६।१६

मुक्ता हर्षविषादाभ्यां शुद्धा

भवति वासना

अ. पू. ५।६

मुक्तिस्तु ज्ञेयमित्युक्ता भूमिका-

सप्तकात्परम्

महो. ५।२३

मुक्तिहीनोऽस्मि मुक्तोऽस्मि

मैत्रे. ३।२२

मुक्तोऽस्तण्डानन्दबोधो ब्रह्मभूयाय

फलपते

१ विल्वो. २३

मुक्तो यः स च मे प्रियः

भ. गी. १२।१५

मुक्तोऽहं मौक्षरूपोऽहं निर्वाण-

मुखरूपवान्

ते. वि. ३।४०

मुखतोऽस्मा अत्र राध्यते

तैत्ति. ३।१०।१

मुखमभितृप्तं सर्वं प्रोक्षति

आचम. ५

मुखं किमस्य कौ बाहू

चित्यु. १२।५

[ऋ.मं.१०।९०।११+

वा. सं. ३।१।१०

मुखं च परिशुष्यति

भ. गी. १।२८

मुखं च रोदसी ज्ञेयं द्यौर्लोक-

श्चिब्रुकं तथा (देव्याः)

गुह्यका. १६

मुखं प्रतीकं, मुखेनेत्येतत्स देवा-

नपि गच्छति

बृह. १।५।२

मुखं ह्यस्याः सम्राण्ण विदाश्च-

कारेति होवाच

बृह. ५।१४।८

मुखं ह्यस्याः ससम्भ्रमं विदांच-

कारेति होवाच

गायत्र्यु. ५

मुखात् सत्त्वं स वै विष्णुः

गणेशो. ३।४

मुखादभिरजायत [पु.सू.१२+

वा. सं. ३।१।२२

मुखादिद्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुर-

जायत [ऋ. मं.१०।९०।१३+

चित्यु. १२।६

मुखाद्वाग्वाचोऽग्निर्नासिके निर-

मिद्येतां नासिकाभ्यां प्राणः

२ ऐत. १।४

मुखे आहवनीय उदरे गार्हपत्यो

हृदि दक्षिणाग्निः

गर्भो. ११

मुखेन मुखं सन्वाय [बृह. ६।४।९,

१०।११, २१

मुखेन वायुं संगृह्य प्राणरश्मिं

रेचयेत्

यो. वि. १।९५

मुख्यमेवाप्येति यो मुख्यमेवा-

स्तमेति

सुबालो. ९।६

मुख्यात्पूर्वोत्तरैर्भागैर्भूते भूते

चतुश्चतुः । पूर्वमाकाशमाश्रित्य

पृथिव्यादिषु संश्रिताः

त्रि. ब्रा. २।२

मुख्यादूर्ध्वं परा ज्ञेया न परानु-

त्तरान्विदुः

त्रि. ब्रा. २।३

मुख्यन्ते तेषां कर्मभिः

मुख्यन्ते सर्वकिल्बिषैः

भ. गी. ३।३१

मुण्डोऽपरिग्रहः शुचिरद्रोही भैक्ष-

माणो ब्रह्मभूयाय भवति

भ. गी. ३।१३

मुद्रिता करुणा मैत्री उपेक्षा च

चतुष्टयम्

याज्ञव. २

वराहो. १।१३

मुदितामुदिताख्योऽस्मि
 मुद्रा-पुस्तक-वहि-नागविलसद्वाहुं
 प्रसन्नाननं मुक्ताहारविभूषणं
 शशिकला-भास्वत्किरीटो-
 ज्ज्वलम् ।...न्यग्रोधान्तनिवासिनं
 परगुरुं ध्यायान्यभीष्टाप्तये
 मुद्रा भवति खेचरी
 मुद्रां मद्रार्थदात्रीं सपरशुहरिणं
 बाहुभिर्बाहुमेकं जान्वासक्तं
 दधानो भुजगविलसमावद्ध-
 कक्ष्यो वंटाघः...दद्यादाद्यः
 शुकाद्यैर्मुनिभिरभिसृतो भाव-
 शुद्धि भवो नः
 मुद्रेयं खलु खेचरी भवति सा
 लक्ष्यैकताना शिवा शून्या-
 शून्यविवर्जितं स्फुरति सा
 तत्त्वं पदं वैष्णवी
 मुनयो वागवदन्ति न तस्य ग्रहणं
 (अथ) मुनिरमौनं च मौनं च
 निर्विद्य
 मुनिरुन्मत्तबालवत् । कविर्मूक-
 वदात्मानं तद्दृष्ट्यादर्शयेन्नृणाम्
 मुनिमौक्षपरायणः
 मुनिः कौपीनवासाः स्यान्नम्रो वा
 ध्यानतत्परः । एवं ज्ञानपरो
 योगी ब्रह्मभूयाय कल्पते
 मुनिः स्यात्सर्वनिस्तृष्टः
 मुनीनामप्यहं व्यासः
 मुनीनां विवेकबुद्धिर्भवति
 मुनीनां सम्प्रयुक्तं च न देवा
 न परं विदुः
 मुने तत्त्वावाप्तिर्निजगुरुमुखादेव
 हि भवेत्
 मुने नास्त्राद्यतेतद्विषयमक्षयमुच्यते
 मुमुक्षुः काश्यामेवासीना वीर्यवन्ती
 विद्यावन्तः
 मुमुक्षुः पुरुषाः... मुमुक्षुर्भव
 श्रोत्रियः... सद्गुरुं विधिवदुप-

मैत्रेय्यु. ३।१६

द. मू. १५

यो. शि. ५।४०

द. मू. ६

शांडि. १।७।१५

अ. शिरः. ३।१०

बृह. ३।५।१

ना. प. ५।३४

अ. गी. ५।२८

ना. प. ४।३२

ना. प. ३।३४

अ. गी. १०।३७

ना. मू. ता. २।१

ते. वि. १।१२

अमन. १।५

मही. ५।११४

अस्मजा. २।१६

सङ्गन्योपहारपाणयोऽष्टोत्तर-
 शतोपनिषदं विधिवदधीत्य...

विदेहमुक्तिः सैव कैवल्य-

मुक्तिरिति

मुक्तिको. १।५८

मुमुक्षुर्वा ब्रह्मवादिनश्च (यंनमन्ति)

नृ. पू. २।१३

मुमुक्षुर्भवति जपात्

नृ. पू. १।५

मुमुक्षुभिः प्राणजयः कर्तव्यो

मोक्षहेतवे

यो. शि. १।६६

मुमुक्षुः परहंसाख्यः साक्षान्मोक्षैक-

साधनम्

ना. प. ६।२७

मुमुक्षुः सर्वदा संसारतारकं तारक-

मनुस्मरन् जीवन्मुक्तो वसेत्

ना. प. ७।१२

मुमुक्षुणां विरक्तानां तथा चाश्रम-

वासिनाम् । प्रणवत्वात्सदाध्येयो.. रामर. ५।१६

मुमुक्षुणां मोक्षलक्ष्मीर्भवति

ना. पू. ता. २।१

मुमुक्षोरन्तःशिखोपवीतधारणम्

परब्र. २

मुहुर्मुहुः शिरः श्मश्रु न स्पृशेत्कर-

जैर्बुधः । न लिङ्गाकर्षणं कुर्या-

दात्मनो वा परस्य वा

शिवो. ७।५५

(एवं) * मुहूर्तत्रयं भावनापरो

जीवन्मुक्तो भवति

भावनो. १०

मुहूर्तमपि यो नित्यं नासाभेमनसा

सह । सर्वं तरति पाप्मानं तस्य

जन्म शतार्जितम्

शांडि. १।७।५१

मुहूर्तं चिन्तयेन्मां यः सर्वबन्धैः

प्रमुच्यते

वराही. २।३२

मुमुक्षुर्दक्षिणे कर्णे यस्य कस्यापि

वा स्वंयम् । उपदेक्ष्यसि

मन्मन्त्रं स मुक्तो भविता शिव

रामो. ३।८

मूकीकरणमाजिममुद्रैव बाधिर्यं

महानुपचय इवेदं नावहेलनया

भवितव्यमेवं दृढवैराग्याद्बोधो

भवति

महो. ४।२६

मूढग्राहेणात्मनो यत्

अ. गी. १७।१९

मूढयोर्निषु जायते

अ. गी. १४।१५

मूढा जन्मनि जन्मनि

अ. गी. १६।२०

* (एवं) मुहूर्तत्रितये मुहूर्तद्वितये मुहूर्तमात्रं वा भावनापरो
 जीवन्मुक्तो भवति इति पाठान्तरम् ।

मूढैः प्रकल्पितं दैवं तत्परास्ते ध्वयं
गताः । प्राज्ञास्तु पुरुषार्थेन
पदमुत्तममागताः

मूढोऽयं नाभिजानाति
मूत्रश्लेष्मरक्तशुक्रस्वेदा अवंशाः
मूत्रं मुञ्चति वारुणी
मूत्रं (घेनोः) चोपनिषत्प्रोक्तं
कुर्याद्भस्म ततः परम्

मूर्च्छितो हरति व्याधिं मृतो
जीवयति स्वयम् । बद्धः
स्वेचरतांधत्तेजस्रस्त्वंरसचेतसि

मूर्त इति मूर्तविदोऽमूर्त इति
च तद्विदः

मूर्तस्य सम्भवन्ति याः
मूर्तं भगवतो रूपं सर्वापाश्रय-

निस्तृप्तम् । एषा वै धारणा
क्षेया यचितं तत्र धारयेत्
मूर्तामूर्तं च नारायणः
मूर्तामूर्तादि चिन्मयम्
मूर्तित्रयमसद्विद्धि सर्वभूतमसद्वि-
सदा । सर्वतत्त्वमसद्विद्धि
इहं भूमा सदाशिवः

मूर्तिमद्भिरन्तमहामायाजाल-
विशेषैः परिबेविता (योगमाया) वि. मं. ना. ६।५
(अथ) मूत्रद्वारेण निष्क्रान्त-

मूर्तिभिर्मिश्रितं शरीरं..
मूर्ताः ते व्यपतिष्यन्मां नागमिष्य
मूर्ता स्वेष्ट आत्मन इति होवाच
मूर्ता द्रौणिकलक्षः
मूर्तानामस्य संक्षेप्ताप्यथर्वा

हृदयं च यत्
मूर्तानमिति मूर्तन्यग्रे न्यसेत्
मूर्ता ब्रह्मा शिखान्तः
मूर्तिं निचक्षेयमात्मस्यलोकज्ञानं
मूर्तिं द्वारमथापरम्
मूर्तिं शतकुनेरः
मूर्तिं संयमाद्रसलोकज्ञानं (मनसः)
मूर्त्याध्यायात्मनः प्राणं

भवसं. १।४४
अ. गी. ७।२५
शरीरको. ३
यो. शि. ५।२६
बृ. जा. ३।२

बराहो. २।७९

वैतथ्य. २३
अ. गी. १४।४

भवसं. ३।२८
त्रि. म. ना. २।८
ते. वि. २।३३

ते. वि. ३।५१

मैत्रा. ३।४३
छांदो. ५।१२।२
छांदो. ५।१२।३
प्रा. हो. ४।३

अ. शि. ३।१४
अस्यजा. १।५
पायत्रीर. १०
छांदि. १।७।५२
अ. ना. २७
आचम. ५
छांदि. १।७।५२
अ. गी. ८।१२

मूर्त्याध्यायात्मनः प्राणान् योगा-
भ्यासं स्थितश्चरन्

मूलच्छेदादिव द्रुमः
मूलप्रकृतिजननीमविद्यालक्ष्मीमेवं
ध्यात्वा विविधोपचारैराराध्य
...महाविराट्पदं प्राप

मूलप्रकृतिरूपत्वात् सा सीता
प्रकृतिः स्मृता
मूलमन्त्रद्वयं च ' विष्णोर्नुकम् '
' गन्धद्वारास् ' इत्येताभिरभि-
मन्त्रयेत्

मूलमूलेपतान्महापापभञ्जिनीं
कर्षणादन्तर्मलनाशिनीं य
एवं वेद स वैष्णवो भवति
मूलमेकं कृत्यं सृष्ट्यं विज्ञातं स्यात्
मूलघृष्टाटमध्यस्था बिन्दुनाद-
कलाभ्या

मूलाधारगता शक्तिः स्वाधारा..
तस्यामुत्पद्यते नादः

मूलाधारत्रिकोणस्था सुषुम्ना
द्वादशाङ्गुला । मूलार्धच्छिन्न-
वंशाभा ब्रह्मताडीति सा स्मृता

मूलाधारं यत्तु प्राणः प्रविष्टः
पण्डितोत्तमः । तदाद्यं विधुवं
प्रोक्तं तापसेस्तापकोत्तम

मूलाधारं स्वाधिष्ठानं मणिपूरं
तृतीयकम् । अनाहतं विशुद्धं
च आज्ञाचक्रं च षष्ठकम्

मूलाधारसहस्रधारपर्यन्तं...ब्रह्म-
रन्ध्रादामूलाधारपर्यन्तं गता-

गतरूपेण प्रादक्षिण्यं
मूलाधारादारभ्य ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तं

सुषुम्ना सूर्याभा
मूलाधाराद्विष्टकं सहस्रारोपरि

स्थितम् । योगज्ञानैकफलकं
रामचन्द्रपदं अजे

मूलाधाराद्विष्टकं शक्तिस्थानमुदी-
रितम् । कण्ठादुपरि मूर्तान्तं
शान्मवं स्थानमुच्यते

त्रि. ना. २।१९

अ. पू. ४।५४

त्रि. म. ना. ६।२

सीतो. १

नारदो. १

तुलस्यु. २

परम. ४

अ. पू. १।४

यो. शि. ३।३

यो. शि. ५।१७

जा. द. ४।४३

योगकुं. ३।९

आमनो. १०

मं. ना. १।२

यो. च. शीर्षक

बराहो. ५।५३

मूलाधारे स्मरेदित्यं त्रिकोणं

तैजसां निधिम्

कालिको. ४

मूलाविद्या प्रथमपादे, नान्यत्र..

त्रि. म. ना. ११४

मूले शून्यं विजानीयात् ।

शून्यं वै परं ब्रह्म

ग.पू. ३११

मूलेन श्रियते होता ध्रुवस्थानं

कथं भवेत्

आत्मो. १

मूलास्यद्रुतदेमाभं स्फुरितं विमला-

स्मरे । सन्निवेशमथादत्ते

तत्तेजः स्वस्वभावतः

महो. ५१५५

मृगतृष्णाजलं पीत्वा तृप्तश्चेद-

स्त्विदं जगत्

ते. बि. ६१७४

मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं

म. गी. १०१३०

मृगतृष्णान्बुबुद्ध्यादिशान्तिमात्रा-

त्मकस्त्वसौ

महो. ५१४१

(तत्र) मृज्जलाभ्यां बाह्यं मनः

शुद्धिरान्तरम्

शांडिल्यो. १११३

मृडाजरित्रे रुद्रस्तवानो अन्यत्ते

अस्मन्नियपन्तु सेनाः

नृ. पू. २१४

[क्र. मं. २१३१११+

तै.सं. ४१५१०१४

[अथर्व. १८११४०+

मृणालतन्तुसूक्ष्मा कुण्डलिनी

मं. ब्रा. ११२

मृण्मयान्यप्सु (पात्राणि) जुहुयात्

कठरु. २

मृतगात्रस्यशोभादर्धेनजय उदाहृतः

त्रि. ब्रा. २१८७

मृतश्चाहं पुनर्जातो जातश्चाहं

पुनर्मृतः । नानायोगिनिसहस्राणि

निरुक्तो. ११५

मया यान्युषितानि वै

मृतसूतकजं देहं स्मृष्ट्वा ज्ञानं

मैत्रे. २१७

विधीयते

मृतस्य मरणं कुतः

यो. शि. ११४५

मृता मोहमयी माता जातो

बोधमयः सुतः । मृतकद्वयसम्प्राप्तौ

कथं सन्ध्यामुपास्महे

मैत्रे. २११३

मृते च नैदं शरीरं चेतनवत्प्रतिष्ठा-

पितं प्रचोदयिता चैषोऽस्येति

मैत्रे. २१९

मृतो मोक्षमश्नुत इति

गोपीचं. ८

मृत्तिकानां सङ्क्षेपेन बोद्धुमशक्तेन

च । न शुद्ध्यन्ति दुरात्मानो

येषां भावो न निर्मलः

भारत. ३१९९

मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं

प्रतिष्ठितम्

महाना. ४१५

मृत्तिके प्रतिष्ठितं सर्वं तन्मे

निर्णुद मृत्तिके

महाना. ४१७

मृत्तिके ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेना-

भिमन्त्रिता

महाना. ४१६

मृत्तिके हन मे पापं त्वयि सर्वं

प्रतिष्ठितम्

यज्ञोप. ३

मृत्तिके हन मे पापं यन्मया

दुष्कृतं कृतम्

महाना. ४१५

मृत्यवे त्वा ददानीति [मा.पा.]

मृत्यवे त्वां ददामीति

कठो. ११४

मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहा

मृत्युचक्रगतस्यापि तस्य

कठो. ११४

मृत्युभयं कुतः

यो. शि. ११८३

मृत्युनैवेदमावृत्तमासीत्

मृत्युमृत्युत्वाभ्रमामित्वात्

बृह. ११२११

मृत्युमृत्युममृत्युमृत्युं (नारसिंहं)

मृत्युमृत्युं नवमं स्थानं (जानीयात्)

नृसिंहो. ७१५

मृत्युमेवाप्येति यो मृत्युमेवास्तमेति

मृत्युरपानो भूत्वानामिप्राविशत्

नृ. पू. २१३

मृत्युरस्यात्मा भवति

मृत्युरेवाप पुनर्मृत्युं जयति

सुबालो. ९१८

मृत्युर्धावति पञ्चमः [कठो. ६१३+

मृत्युप्रोक्तां नचिकेतोऽथ लब्ध्वा

२ ऐत. २१४

विद्यामेतां योगविधिं च कृत्स्नम् ।

ब्रह्मप्राप्तो विरजोऽभूद्विमृत्युः

मृत्युर्न जननाभावात्

मृत्युर्यस्योपसेचनं क इत्था

कठो. ६११८

ते. बि. ९१२०

कठो. २१२४

वैद यत्र सः

मृत्युर्वा असत्सदमृतम्

मृत्युर्वै तमो ज्योतिरमृतं

मृत्युर्वै परे देव एकीभवति

बृह. ११३१२८

बृह. ११३१२८

[सुबालो. १११२+१३४+

मृत्युसंसारवर्त्मनि

मृत्युसंसारसागरात्

मृत्युं चतुर्थस्याद्यार्थान्त्यं साम तु

जानीयाद्यो जाहीते सोऽमृतत्वं

च गच्छति

१४११+१५१२

म. गी. ९१३

म. गी. १२१७

रु. पू. ११५

मृत्युं च नाभिनन्देत जीवितं
 वा कथञ्चन ना. प. ३।६०
 मृत्युं यजे प्रथमजामृतस्य चित्त्यु. १५।३
 मृत्युं श्रुतिपरायणाः भ. गी. १३।२७
 मृत्युः सर्वहरश्चाहं भ. गी. १०।३०
 मृत्योर्मांमृतं गमय [अक्ष्यु. २+ चाक्षुषो. २
 मृत्योर्मांमृतं गमयामृतं मा
 कुर्वित्येतदाह बृ. उ. १।३।२८
 मृत्योर्मांमृतं गमयेति... (मा. पा.) बृ. उ. १।३।२८
 मृत्योर्मृत्युमित्याह मृत्योर्वा अयं
 मृत्युरमृतत्वं प्रजानामन्नादानाम् अव्यक्तो. ३
 मृत्योस्तुल्यं त्रिलोकीं प्रसितुमति-
 रसान्निःसृता किं नु जिह्वा...
 देवैर्देव्यास्त्रिशूलक्षतमहिषजुषो
 रक्तधारा जयन्ति वज्रपं. ४
 मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव
 पश्यति [कठो. ४।१०+ आ. प्र. १
 [बृ. उ. ४।४।१९+
 मृत्योः स मृत्युमाप्नोति नृसिंहो. ८।७
 मृत्योः स मृत्युं गच्छति य इह
 नानेव पश्यति कठो. ११
 मृदमिजं हि कार्यकम् पञ्चम. २९
 मृदा तोयेन शुद्धिः स्यान्न कुशो
 न धनव्ययः श्वसं. ३।२०
 मृदु ऋणं वायोः छांदो. २।२२।१
 मृद्वस्मगोमयजलं पत्रपुष्पेन्धनं
 समित् । पर्याप्तमष्टकं ह्येत-
 दुर्वर्धं तु समाहरेत् शिवो. ७।२६
 मृद्वत्संस्थमयस्पिण्डं यथाभ्यय-
 स्कारादयो नाभिप्रवन्ति मैत्रा. ६।२७
 मृद्वोहवैस्त्रिभिस्तु (लिङ्गचैः) अद्वैता. १५।१
 मृषा वै किञ्च मासं वदिष्टा ब्रह्म
 तै ब्रवाणीति कौ. त. ४।१८
 मृषैवोदेति सकलं मृषैव प्रविलीयते ।
 (ततः) मेघापायैः शुमानिवा-
 त्माविर्भवति [पैङ्गलो. ३।४+ कलिसं. ४
 मेघा यथा ज्योम न च स्पृशन्ति
 संसारदुःखानि न मां स्पृशन्ति वराहो. ३।३

मैत्रे अमेघे वा विद्युतं पश्येत्,
 मेघे वा विद्युतं न पश्येत् ३ ऐत. २।४।६
 मेघो जायते स प्रस्तावो वर्षति
 [छांदो. २।३।१+ २।१५।१
 मेघो मूत्वा प्रवर्षति त इह त्रीहि-
 यवा ओषधिवनस्पतयस्तिल-
 माषा इति जायन्ते छांदो. ५।१०।६
 मेघो यत्सम्प्लवते स हिङ्कारो य-
 द्बर्षति स प्रस्तावो याः प्राच्यः
 स्यन्दन्तेसवद्ग्रीथो याः प्रतीच्यः
 स प्रतिहारः समुद्रो निधनम् छांदो. २।४।१
 मेद्रादुपरि निक्षिप्य सव्यं गुल्फं
 ततोपरि । गुल्फान्तरं च
 संक्षिप्य मुक्तासनमिदं मुने जा. व. ३।९
 मेदसः स्नायवः गमो. २
 मेदसः स्नावा, स्नावोऽस्थीनि निरुक्तो. १।२
 मेधया मनीषा महाना. १७।१३
 मेधया हि तपसाऽजनयत्पिता बृह. १।५।२
 मेधातिथिं क्वाण्वमिन्द्रो जहार वा. मं. १
 मेधा इष्टिर्धृतिर्मतिर्मनीषा २ ऐत. ५।२
 मेधा देवी जुषमाणा न आगा-
 द्विश्वाची भद्रा सुमनस्यमाना महाना. १३।१
 मेधावी छिन्नसंशयः भ. गी. १८।१०
 मेधावी राजा सर्वेभ्यो मान्तेभ्य
 उदरोत्सीत् बृह. ४।३।३३
 मेधां म इन्द्रो दधातु महाना. १३।३
 मे बहुधा प्रजाः करिष्य इति प्रभो. १।४
 मेघहीनः शिवोऽस्त्यहम् मैत्रे. ३।१३
 मेरुमध्यगता देवाश्चलन्ते मेरु-
 चालनात् वराहो. ५।६४
 मेरुशृङ्गवदोष्ठासिगङ्गाचक्रयो-
 पमा । दृष्ट्वाचस्मिन्मुने मुक्ता
 हारस्योष्ठासशालिता [याज्ञ. १०+ महो. ३।४।१
 मेरुः शिखरिणामहम् भ. गी. १०।२३
 मेरुः सीम तदण्डोऽस्या प्रहरत्त-
 समाकुलः गुह्यका. ९
 मेरुनिष्ठ बहुलाश्च शिखरम् चित्त्यु. ११।६
 मैत्रः करुण एव च भ. गी. १२।१३

मैत्रायणी कौषीतकी बृह-

व्याचालतापनी

मुक्ति. ११३२

मैत्रेय्यात्मनि खल्वरे दृष्टे श्रुते मते

विज्ञात इह सर्वं विदितं..

बृह. ४।५।६

मैत्रेय्यात्मनो वा अरे दर्शनेन

भवणेन मत्या विज्ञानेनेदं

सर्वं विदितम्

बृह. २।४।५

मैत्र्यादिभिर्गुणैर्युक्तं भवत्युत्तम-

वासनम्। भूयोजन्मविनिर्मुक्तं

जीवन्मुक्तस्य तन्मनः

अ. पू. ४।१७

मैत्र्यादिवासना नाग्रीर्गृहाणामल-

वासनाः

मुक्तिको. २।६९

मोक्ष इत्युच्यते सन्निः स एव

विमलक्रमः

महो. २।३९

मोक्षस्तु परं तत्त्वं (दर्शयेत्)

अ. वि. ५३

मोक्षद्वारं बिलं चैव सुषिरं मण्डलं

विदुः

अ. ना. २७

मोक्षद्वारे द्वारपालाश्चत्वारः परि-

कीर्तिताः। क्षमो विचारः

सन्तोषश्चतुर्यः साधुसङ्गमः

महो. ४।२

मोक्षमार्गे प्रतिष्ठानात्सुषुम्ना

विश्वरूपिणी

यो. क्षि. १।११९

मोक्षमार्गे कसाधनो ब्रह्मचर्यः

समाप्त्य गृही भवेत्

प. हं. प. १

मोक्षयिष्यामि मा शुचः

अ. गी. १८।६६

मोक्षलक्षणमित्येतत्परं रहस्य-

मित्येवं ब्राह्म

मैत्रा. ६।२०

मोक्षहीनोऽस्म्यहं सदा

मैत्रे. ३।२२

मोक्षः सर्वात्मतासिद्धिः

कौलो. १

मोक्षः स्याद्वासनाक्षयः

मुक्तिको. २।६८

मोक्षानन्दैकसिन्धुरेवाहम्

आ. प्र. ५

मोक्षार्थं पूजयेत्तस्मादुरुमूर्ति-

स्थमीधरम्

शिवो. ७।७४

मोक्षयिषा (अहङ्कृतिः) न बन्वाय

जीवन्मुक्तस्य विद्यते

महो. ५।९१

मोक्षभवात्परिग्रहो न गति-

स्तस्य विद्यते

शाटपाय. २८

मोक्षे निवृत्तिर्निर्गोपयोगी

मोक्षप्रवर्तकः

आयुर्वे. ९

मोक्षो भवेदसङ्कल्पत्वात्तदभ्यासं

धिया कुरु

अ. पू. ५।१०३

मोक्षोमेऽस्तिवति चिन्ताऽन्तर्जाता

चेदुत्थितं मनः

अ. पू. २।२४

मोक्षो रजस्तमोऽभावाद्बलवत्कर्म

सञ्चयात्

आयुर्वे. १४

मोक्षयसे कर्मबन्धनैः

अ. गी. ९।२८

मोक्षज्ञाना विचेतसः

अ. गी. ९।१२

मोघं पार्थ स जीवति

अ. गी. ३।१६

मोघाशा मोघकर्माणः

अ. गी. ९।१२

मोघामेवाप्येतियोमोघामेवास्तमेति

सुबालो. ९।५

मोदन्ते स्वे स्वे पदे पुण्यलब्धे सर्वै-

र्देवैः पूजनीयो गणेशः

हेरम्बो. ९

मोदप्रमोदरूपात्मा मोदादिबिनि-

वर्जितः

ते. वि. ४।६७

मोदो दक्षिणः पक्षः

तैत्ति. २।५

मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणा

वधीत् [वनदु. ४२, ५५, ६७, ७८

अ. मं. १।३८।६

मोहजालकनिर्धूतो विश्वं पश्यति

स्वप्नवत्

२ अथर्व. ७

मोहजालकसङ्घातो विश्वं पश्यति

स्वप्नवत्

त्रि. ब्रा. २।१६५

मोहजालसमावृताः

अ. गी. १६।१६

(राजन्) मोहजालस्यैष वै

योनिर्यदस्वर्गैः सहस्वर्गस्यैषः

मैत्रा. ७।८

मोहनं सर्वदेहिनाम्

अ. गी. १४।८

मोहभानुजसंक्रांतं विवेकारुणं

सृक्ण्डुजम् ।...उज्जीवयन्

निजानन्दे स्वस्वरूपेण संस्थितः

द. मू. १९

मोहमेव च पाण्डव

अ. गी. १४।२६

मोहात्तस्य परित्यागः

अ. गी. १८।७

मोहादारभ्यते कर्म

अ. गी. १८।२५

मोहाद्ब्रह्मत्वाऽसद्ब्राह्मन्

अ. गी. १६।१०

मोहान्धकारे निस्सारे उदेति

स्वयमेव हि

द. मू. १८

मोहाज जानन्ति सुरेन्द्रमुल्याः

शरभो. २

मोहितं नाभिजानाति

अ. गी. ७।११

मोहिनीं सर्वलोकानां तां विद्यां
 शाम्बरीत्रयाम् । अमीष्टफलदां
 देवीं बन्दे तां जगदीश्वरीम् वनदु. २२
 मोहोऽयं विगतो मम म. गी. ११।१
 मौनमात्मविनिग्रहः म. गी. १७।१६
 मौनवाग्निरहम्भावो निर्मानोमुक्त-
 मत्सरः । यः करोति गतोद्वेगः
 स जीवन्मुक्त उच्यते महो. २।५०

मौनं चैवास्मि गुह्यानां म. गी. १७।३८
 मौनं योगासनं योगस्ति-
 क्षैकान्तशीलता । निस्स्पृहत्वं
 समत्वं च सप्तैतान्येकदंढिनाम् ना. प. ४।२४
 मौनं स्तुतिः मं. ब्रा. २।५
 मौख्योन्मेषनिमेषाभ्यां कर्मणां
 प्रलयोदयो । तद्विलीनं कुरु
 बलादुरुशास्त्रार्थसङ्गमैः अ. पू. ५।४२

य

य अणुर्यः श्रेष्ठः स वै वेगवान्भवति ग. शो. २।३
 य आकाशमन्तरे सञ्चरन्
 यमाकाशो न वेद मध्यात्मो. १
 य आकाशं ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।१२।२
 य आकाशे तिष्ठन्नाकाशादन्तरो
 यमाकाशो न वेद बृह. ३।७।१२
 य आण्डकोशे भुवनं विभर्ति चित्त्यु. १।१।४
 य आत्मदा बलदा यस्य विश्व
 उपासते प्रशिक्षं यस्य देवाः ।..
 यस्य छायामृतं यो मृत्युमृत्युः.. नृ. पू. २।१२
 [क्र.मं. १०।१२१।२+ अथर्व. ४।२।१+
 [बा. सं. २५।१३+ तै. सं. ४।१।८।४
 य आत्मदा बलदा यस्य विश्वे
 उपासते.. यस्य छायामृतं यस्य
 मृत्युः...स्तन्मे मनः शिव.. २ शिवसं. ३४
 य आत्मनि तिष्ठन्नात्मानमन्तरा
 वमयति श. प. १४।५।३०
 य आत्मन्येवावस्थीयते प. हं. ९.
 य आत्मानं क्रियाभि- (भिःसुरासं)
 गृहं करोति मातरं पितरं आर्या
 पुत्रान्बन्धून्नुभोवयित्वा...
 वैश्वानरेष्टीर्निर्वपेत् [१ सं. सो. १।२ + कठश्रु. १
 य आत्माऽपहृतपाप्मा... अवि-
 जिघत्सुः (मा. पा.) छांदो. ८।७।१३
 य आत्माऽपहृतपाप्मा सोऽन्वेष्टव्यः छांदो. ८।७।१,३
 य आत्माऽपः प्रादवाचम्यायं
 विधिः परित्राजकानाम् जाबालो. ५

य आत्मा सर्वान्तरस्तं मे व्याचक्ष्व
 [बृह. ३।४।१,२ ५।१
 (अथ) य आत्मा स सेतु-
 विधृतिरेषां लोकानां... छांदो. ८।४।१
 य आदित्यमन्तरो वमयत्येष त
 आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।९
 (अथ) य आदित्याद्यः स
 कालः सकलः मैत्रा. ६।१५
 य आदित्ये तिष्ठन्नादित्यादन्तरो
 यमादित्यो न वेद बृह. ३।७।९
 य आनन्दे यो हृद्याकाशे य
 एतस्मिन्सर्वस्मिन्नन्तरे सञ्चरति
 सोऽथमात्मा सुषाढो. ५।१
 य आरण्याः पशवो विश्वरूपाः चित्त्यु. १।१।३२
 य आविवेश भुवनानि मिथ्या प्रजा-
 पतिः प्रजया संविदानः । त्रीणि
 ज्योतीषि स च ते स्रषोडशी.. नृ. पू. ३।६
 [+ बा. सं. ८।३६ तै. बा. १०।१०।२
 य आधुणोत्थवितथेन कर्णावकृतं
 कुर्वन्मृतं सम्प्रयच्छन् ।
 तं मन्येव पितरं मातरं च
 तस्मै न दुष्टेत् संक्षिप्तो. ३।६
 य आशां ब्रह्मेत्युपास्त आशयाऽयं
 सर्वे कामाः समुदन्त्यमोघा
 दास्याशिषो अवन्ति छांदो. ७।१।४।२
 य आस्ते मत्तसा स्परम् अ. गी. ३।६
 (अथ) य इच्छेत् पुत्रो मे
 कपिलः पित्रो जायेत हो

वेदानुब्रवीत सर्वमायुरिया-
दिति दध्योदनं पाचयित्वा
सर्पिष्मन्तमश्रीयातां बृह. ६।४।१५
(अथ) य इच्छेद्ब्रुहिवा मे पण्डिता
जायेत सर्वमायुरियादिति
तिलोदनं पाचयित्वा सर्पि-
ष्मन्तमश्रीयाताम् बृह. ६।४।१७
(अथ) य इच्छेत् पुत्रो मे
पण्डितोऽविगीतः समितिङ्गमः
शुश्रूषितां वाचं भाषिता जायेत
सर्वान्वेदानुब्रवीत सर्वमायुरि-
यादिति मा५ सौदनं पाचयित्वा
सर्पिष्मन्तमश्रीयाताम् बृह. ६।४।१८
(अथ) य इच्छेत्पुत्रो मे श्यामो
लोहिताक्षो जायेत त्रीन्वेदानु-
ब्रवीत सर्वमायुरियादित्योदनं
पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्रीयातां बृह. ६।४।१६
य इति सदाशिवपुरुषः गायत्रीर. २
य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ऋ.मं. १।१६४।३९
[नृ.पू.४।३] श्वेताश्व. ४।८+ सद्भव. १५
य इदमथर्वशिरो ब्राह्मणोऽधीते अ. शिरः. ३।१६
य इदमधीतेसोऽपिकृतकृत्यो भवति १ अवधू. ३३
(अथ) य इदमविद्वानधोपहासे बृह. ६।४।३
चरत्यासा५ स्त्रीणा५ सुकृतं वृद्धे बृह. ६।४।४
य इदमविद्वांसोऽधोपहासं चरन्ति
य इदं गायत्रीरहस्यमधीते तेन गायत्रीर. ११
य इदं गायत्रीरहस्यमधीते दिवस-
कृतं पापं नाशयति गायत्रीर. ११
य इदं गायत्रीरहस्यं ब्राह्मणः पठेत्
तेन गायत्र्याः षष्टिसहस्र-
लक्षानि जप्तानि भवन्ति गायत्रीर. ११
य इदं त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय
दद्यात् । भ्रूणहत्यां वा एते
घ्नन्ति । ये ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णं
पठन्ति [महाना. १२।३+ त्रिसुप. ३
य इदं परमं गुह्यं (मा.पा.) कठो. ३।१७

य इदं विष्णुहृदयमधीते स ब्रह्म-
हत्यायाः पूतो भवति विष्णुह. ३।१
य इदं शिवसङ्कल्पं सदा ध्यायन्ति
ब्राह्मणाः । ते परं मोक्षं
गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिव-
सङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. ३७
य इमं च लोकं परं च लोक५
सर्वाणि भूतानि योऽन्तरो बृह. ३।७।१
य इमं त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय
दद्यात् । भ्रूणहत्यां वा एते
घ्नन्ति । ये ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णं
पठन्ति [महाना. १२।२+ त्रिसुप. २
य इमं परमं गुह्यं म. गी. १८।६८
य इमं परमं गुह्यं श्रावयेद्ब्रह्मसंसदि ।
प्रयतः श्राद्धकाले वा तदान-
न्त्याय कल्पते कठो. ३।१७
य इमं मध्वदं वेद आत्मानं जीव-
मंतिकात् । ईशानं भूतभव्यस्य
न ततो विजुगुप्सत एतद्वै तत् कठो. ४।५
य इमं सृष्टियज्ञं जानाति मोक्ष-
प्रकारं च सर्वमायुरेति मुद्रलो. २।५
य इमान् लोकानीशत ईशनीभिः बटुको. २२
य इमा विश्वा भुवनानि चकूपे
तस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये
[अ. शिरः. ३।१३+ अथर्व. ७।८७।१
य इमा वेद स सर्वान्कामानवाप्य
सर्वा५ल्लोकाञ्चित्वा मामेवा-
भ्युपैति अव्यक्तो. ४
य इमा ५ल्लोकानीशत ईशनीभिः
[श्वेता. ३।२+ अ. शिरः. ३।७
य इमां चक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो
नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो
भवति चाक्षुषो. ३
य इमां न विन्दते नाधीयते
सन्ध्याकाले नोपासते ते
सन्ध्या भवन्ति सन्ध्या. ३

य इमां परमरहस्यशिवतत्त्वविद्या-
मधीति स सर्वपापेभ्यो
मुक्तो भवति द. मू. २३

य इमां बटुकोपनिषदं ब्राह्मणो-
ऽधीतेऽश्रोत्रियः श्रोत्रियोभवति बटुको. २८

य इमां ब्रह्मविद्याममावास्यायां
पठेच्छृणुयाद्वा यावज्जीवं न
हिंसन्ति सर्पाः गारुडो. २८

य इमां महोपनिषदं ब्राह्मणोऽधीते-
ऽश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति चतुर्वे. ७

य इमां वैखरीं शक्तिं योगी
स्वात्मनि पश्यति । स वा-
क्सिद्धिमवाप्नोति सरस्वत्याः
प्रसादतः यो. शि. ३१०

य इमां विद्यामधीते स सर्वान्
वेदानधीते अन्यक्तो. ६

य इमां वैष्णवीं निष्ठां परित्यजति
स स्तेनो भवति शाट्याय. २६

य इमां सर्वाणि छदांसि वेद
(अथ) य इमे ग्राम इष्टापूर्ते
दत्तमित्युपासते ते धूममभि-
सम्भवन्ति छांदो. ५।१०।३

य इमे पुंड्राः सुह्रा उल्लुम्भा दरदा
वर्धरा इति न ह वा असंविदा
एव द्रागिवाभि तत् पथंत इति आपें. ६।१

य इह कपूयचरणा अभ्याशो ह
यत्ते कपूयां योनिमापद्येरन् छांदो. ५।१०।७

य इह नानेव पश्यति कठो. ४।१०

[वृ. उ. ४।४।१९+ आ. प्र. १

(अथ) य इहात्मानमनुविष्य
ब्रजन्त्येतां च सत्यान्कामां
स्तेषां सर्वेषु लोकेष्वकामचारो
भवति छांदो. ८।१।६

य ईशानः स भगवान् महेश्वरः
[अ. शिरः. ३।४+ बटुको. १९

य ईश्वरः शृणोत्यल्लभ्यते शृणोति नहि
प्रवेद सुष्ठुतस्य पन्थाम् ना. पू. शा. ४।८

य ईशेऽस्य जगतो मित्यमेव
नान्यो हेतुर्विद्यत ईशनाय श्वेताश्व. ३।१७

य ईशेऽस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै
देवाय हविषा विषेभ्यः श्वेताश्व. ४।१३

[अ. मं. +१०।१२।१३ तै. सं. ४।१८।४

य उ एतं हिनस्ति स्वां स
योनिमुच्छति बृह. १।४।११

य उत्तराण्ये बलउतर वाचोत
तिष्ठन्नुत ब्रजन्नुतासीन एत
शयानोऽधीयीतेव स्वाध्यायं
तपस्वी पुण्यो भवति सहवे. १६

य उत्तरतः स चकारः
[अ. शिरः. ३।४+ बटुको. १९

य उदानेनोदानिति स त आत्मा
सर्वान्तरः बृह. ३।४।१

(अथखलु) य उद्गीथः स प्रणवो
यः प्रणवः स उद्गीथः छांदो. १।५।१, ५

य उपनयनादूर्ध्वं त्रिरात्रमक्षार-
लवणाशीगायत्रीमन्त्रीसगायत्रः आश्रमो. १

य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु केनो. शां. पा.

य उपनिषद्वाङ्मयी वाचं स उपनिषद-
मन्त्रमेति केनो. ४।७

य उपस्थे, य आनन्दयितव्ये, यः
प्रजापतौ, यो नाड्यां... सुबाडो. ५।१५

य उ ईवं विदं स्वेषु प्रतिपत्ति-
र्मुभूषतिनर्हैवाळंभार्येभ्यो भवति बृह. १।३।१८

य उ ईवंविदास्पधेतेऽनुश्रुत्यत्यनु-
श्रुष्य हेवान्ततो म्रियत बृह. १।५।२१

इत्यप्यात्मम् १ ऐत. ३।४।१

य उष्माणः स प्राणः १ ऐत. ३।४।१

य एकः स उद्गो यो उद्गः स ईशानो
य ईशानः स भगवान्महेश्वरः

[अ. शिरः. ३।४+ बटुको. १९

य एको जाडवानीकस ईशानीभिः श्वेता. २।१

य एको देव आत्मशक्तिमवानः
सर्वज्ञः सर्वेश्वरः सर्वभूतान्तरात्मा साण्डि. २।१।४

य एकोऽयणो बहुषा कश्चिद्विद्या-
वृणानेकमिदितार्थो दधाति ।
विचैति चान्ते विद्यमानो स
देवः सन्नोतुप्रसाद्यभवात्सुनक्तु श्वेताश्व. ४।१

य एतच्च धारयेद्गोपीचन्दनमृत्तिका- निरुक्त्यानि...धारणमात्रेण च	
ब्रह्मलोके महीयते	गोपीचं. ६
य एतत्तारकं ब्रह्म ब्रह्मणोः नित्य- मधीते, स पाप्मानं तरति	रामो. ११२
य एतदक्षरं गार्गि विदित्वाऽस्मा- होकात्प्रैति स ब्राह्मणः	बृह. ३।८।१०
य एतदथर्वशिरोऽधीते । प्रातर- धीयानो रात्रिकृतं पापं नाश- यति । सायमधीयानो दिवस- कृतं पापं नाशयति	महावा. ६
य एतदभिपद्येव गृहीयादथो विस्फुरन्तीव धावन्तीवोप- प्लवन्तीवोपस्त्रिद्वयन्तीव ते हेवाभिपद्यन्ते	आर्षे. ५।४
य एतदस्मिन्नन्तरे हिरण्यमयः पुरुषो...हिरण्यवर्णो..	आर्षे. ६।२
य एतदुपनिषदं नित्यमधीते सोऽभिपूतोभवति[मैत्रलो. ४।२३ + सुब्रलो. ५।१	
य एतदेवं विद्वानक्षरमुद्रीथमुपास्ते	छां. १।१।७
य एतदेवं विद्वानक्षरं प्रणौति	छांदो. १।४।५
(अथ) य एतदेवं विद्वानभिहोत्रं जुहोति	छांदो. ५।२४।२
य एतदेवं विद्वानात्मसम्मितमति- मृत्यु सप्तविधं सामोपास्ते	छांदो. २।१०।६
य एतदेवं विद्वानृत्तुषु पञ्चविधं सामोपास्ते	छांदो. २।५।२
य एतदेवं विद्वान्परोवरीयां स- मुद्रीथमुपास्ते	छांदो. १।९।२
य एतदेवं विद्वान्पशुषु पञ्चविधं सामोपास्ते	छांदो. २।६।२
य एतदेवं विद्वान्प्राणेषु पञ्चविधं परोवरीयाः सामोपास्ते	छांदो. २।७।२
य एतदेवं विद्वान्वाचि सप्तविधं सामोपास्ते	छांदो. २।८।३
य एतदेवं विद्वान्बृष्टौ पञ्चविधं सामोपास्ते	छांदो. २।११।३
य एतदेवं विद्वान्ब्रह्मणोः पञ्चविधं सामोपास्ते	छांदो. २।१४।३

य एतदेवं विद्वान् सर्वास्वप्सु पञ्चविधं सामोपास्ते	छांदो. २।४।२
य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति [+श्वेता. ३।१, १०,	कठो. ६।९ १३+४।१७
य एतन्मार्गे आसक्तास्ते रक्षरूपिणीं सृष्टिमन्तरुत्पद्यमाना भवन्ति	सामर. ३
य एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते [१३।२+१४।२+१५।२+	छांदो. ५।१३।२ १६।२+१७।२
य एतस्मिन्सर्वस्मिन्नन्तरे सञ्चरति सोऽयमात्मा तमात्मानमुपासी-	
तामृतमभयमशोकमनन्तम्	सुबालो. ५।१, १४
य एतं मंत्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं नित्यमधीते स मृत्युं तरति	नृ. पू. ५।३०
य एतं मंत्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं नित्यमधीतेसोऽग्निस्तम्भयति	नृ. पू. ५।११
य एतानि नारसिंहानि चक्राण्ये- तेष्वङ्गेषु बिभृयात् तस्यानुष्टुभं सिद्धयति	नृ. षट्च. ७
य एतानेवं पञ्च ब्रह्मपुरुषान् स्वर्गस्थलोकस्थं द्वारपान्वेद	छांदो. ३।१३।६
(अथ ह) य एतानेवं पञ्चाग्नीन् वेद न स ह तैरप्याचरन्पाप्मना लिप्यते	छांदो. ५।१०।१०
य एतान्येवं विद्वानुद्रीथाश्चराण्यु- पास्तं उद्रीथ इति	छांदो. १।३।७
य एतामुपनिषदमधीते सोऽब्रवी अती भवति	राधिको. ९
य एतामेव ब्रह्मोपनिषदं वेद	छांदो. ३।११।३
य एतामेव साम्नामुपनिषदं वेद	छांदो. १।१३।४
य एतां महोपनिषदं वेद स कृत- पुरश्चरणो महाविष्णुर्भवति	नृ. पू. १।७
य एतां मायां शक्तिं वेद स प्राप्मानं तरति	नृ. पू. ३।२
य एतां विद्यां तुरीयां ब्रह्मयोगि- स्वरूपां तामिहामुषे शरणं प्रष्ये	त्रि. वा. ५।२१
य एतेऽत्र समागताः	अ. गी. १।२३
य एतेन चतुर्थीषु पञ्चयोरुभयो- रपि । कथं जपेदपूपानां तत्त्वणाः	
उपनिषदो भवेत्	नृ. पू. ३।११

य एते ब्रह्मलोके तं वा एतं देवा आत्मानमुपासते तस्माच्चेष्टा*	
सर्वे च लोका आत्ताः	छांदो. ८।१२।६
(अथ) य एतौ मन्यानौ न विदुस्ते कीटाः पतङ्गा यद्विदं	
वन्दशुकम्	बृह. ६।२।१६
य एनमजमन्ययम्	अ. गी. २।२१
य एनमेवं विदुरमृतास्ते भवन्ति	श्वेता. ४।२०
य एनमेवं वेद तमनवरुद्धयैवामन्यत बृह.	१।२७
(अथ) य एनं द्विषन्ति यांश्च स्वयं द्वेष्टि स एनं सर्वे परितो म्रियन्ते कौ. त. २।१३	
(अथ) य एनं प्रत्याह तमिह वृष्टिर्भूत्वा वर्षति	कौ. त. १।२
य एनं मंत्रराजं गणपतेः सर्वदं नित्यं जपति सोऽग्नि*	
स्तम्भयति, स उदकं स्तम्भयति	गणेशो. ५।१
य एनं मंत्रराजं गणेशं वेद सर्ववेद	गणेशो. ५।४
य एनं मंत्रराजं नित्यमधीते स विघ्नानाकर्षयति	गणेशो. ५।२
य एनं मंत्रराजं वैत्रराजं नित्य- मधीते स ऋचोऽधीते	ग. शी. ५।४
य एनं विदुरमृतास्ते भवन्ति (मा. पा.)	कठो. ६।९
य एनं वेत्ति हन्तारं	भ. गी. २।१९
य एनं वेद सत्येन भर्तुं	चिस्यु. १।४।१
य एनां विदुरमृतास्ते भवन्ति	गुह्यका. ६३
य एवमेतच्छन्दसां छन्दस्त्वं वेद	१ ऐत. १।६।१
य एवमेतच्छिरसः शिरस्त्वं वेद	१ ऐत. १।४।१
य एवमेतद्वितेरदितित्वं वेद	बृह. १।२।५
य एवमेतदकृत्यार्कत्वं वेद	बृह. १।२।१
य एवमेतत्सत्यस्य सत्यत्वं वेद	१ ऐत. १।५।३
य एवमेतत्साम वेद	बृह. १।३।२३, २८
य एवमेतत्साम्नः सुवर्णं वेद	बृह. १।३।२६
य एवमेतत्साम्नः स्वं वेद	बृह. १।३।२५
य एवमेतदनत्याजं वेद तद्विद्वा*	
ओत्रिया अशिष्यन्त	बृह. ६।१।१४
य एवमेतमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते (मा. पा.)	छां. उ. ५।११।२
य एवमेतं महर्षयं प्रथमजं वेद सत्यं प्रोचति	बृह. ५।४।१

य एवमेता महासंहिता श्याक्याता वेद सन्धीयते प्रजया यशुभिः	तै. उ. १।३
य एवमेतां चक्षुषो विभूर्ति वेद	१ ऐत. १।७।४
य एवमेतां प्राणस्य विभूर्ति वेद	१ ऐत. १।७।३
य एवमेतां मनसो विभूर्ति वेद	१ ऐत. १।७।६
य एवमेतां वाचो विभूर्ति वेद	
प्राणेन सृष्टौ. अनुचरन्ति	१ ऐत. १।७।२
य एवमेतां ओत्रस्य विभूर्ति वेद	१ ऐत. १।७।५
य एवमेवं विद्वानुपास्ते	
[छान्दो. ४।११।२+]	१२।२+१३।
य एवं गणेशतापिन्युपनिषदं वेद संसारं तरति...	गणेशो. ५।८
य एवं नित्यं वेदयते गुहाशयं प्रभुं पुराणं सर्वभूतं हिरण्यम्	एका. उ. १३
य एवं निर्बीज एव भवति निर्बीजं वेद	सुबालो. ९।१४
य एवं ब्रूयाद्ब्रह्मदर्शमिति तस्मा एव अरुधाम	बृह. ५।१४।४
य एवं विदित्वा सदा तमुपास्ते पुरुषः स नारायणो भवति	त्रि. म. ना. २।९
य एवं विदि पापं कामयते यश्चैन- मभिधासति स एषोऽश्मत्पण्डः	छान्दो. १।२।८
य एवं विदुरमृतास्ते भवन्ति	महाना. १।११
य एवं विदो ब्राह्मणस्य पुत्रो जायत इति	बृह. ६।४।२८
य एवं विद्वानवोपहासं चरति, आषां कीणां सुकृतं वृद्धे	बृह. ६।४।३
य एवं विद्वानिमं न्यानयन्नमनु- तिष्ठेत् सर्वज्ञोऽनन्तशक्तिः	
सर्वकर्ता भवति	अन्यको. ५
य एवं विद्वानुदगम्यते प्रमीयते	महाना. १८।१
य एवं विद्वानेतदाक्यापयेत्	गोपीचं. ६
य एवं विद्वानेतदुपास्ते [बृह. ४।१।२, ३. ४. ५. ६, ७]	
य एवं विद्वान्यतिदुस्ते दद्यादनु- ग्रहार्थं मायापल्लवः सर्वमायुरेति	गोपीचं. ८
य एवं विद्वान्गोपीचन्दनं धारये- दक्षत्रं प्रदमाप्रोति	गोपीचं. ८
य एवं विद्वान्प्राणं वेद न हास्य प्रजा दीयतेऽशुचौ भवति	प्रश्नो. १।११

य एवं विद्वान्महारात्र उषस्युदिते...

स्वाध्यायमधीते...सर्वालोका-

ननृणोऽनुसञ्चरति

सहवै. १९

य एवं विद्वान् मेघे वर्षति

विद्योतमाने स्तनयत्यवस्फूर्ज-

यति पवमाने वायावमावास्यां

स्वाध्यायमधीते तप एव तत्तप्यते

सहवै. १८

य एवं विद्वान् अत्रिभुते नाचिकेतम् ।

स मृत्युपाशान्पुरतः प्रणोद्य

लोकान्तिगो मोदते स्वर्गलोके

कठो. ११८

य एवं वेत्ति पुरुषं

भ. गी. १३।२३

य एवं वेद तस्योपनिषन्नायाचेदिति

कौ. त. २।१, २

य एवं वेद निदानवान् भवति

नृ. पू. ४।३

य एवं वेद प्रजापतेः सोऽपि

अथर्वक इमामृचमुद्रायमुद्रयित-

जटाकलापः प्रत्यग्योति-

प्यात्मन्येव रन्तारमिति

अन्यक्तो. ७

य एवं वेद ब्रह्मणो महिमानमाप्नोति

महाना. १७।१

य एवं वेद विद्युद्ब्रह्मेति

बृह. ५।७।१

य एवं वेद, श्रिया हैवाभिषिष्यते

नृ. पू. ४।३

य एवं वेद स कैवल्यमनुभवति

द. मू. २३

य एवं वेद स गणेशो भवति

गणेशो. ४।९

य एवं वेद स तपोऽतप्यत

बृ. जा. १।३

य एवं वेद स देवीपदमवाप्नोति

देव्युप. ४

य एवं वेद स परब्रह्मभामक्षेत्रज्ञमुपैति

ब्रह्मो. १

य एवं वेद स पुरुषस्तदीयोपास-

नया तस्य साधुन्यमेति

त्रि. म. ना. १।६

य एवं वेद स महान्भक्षति

अक्षु. ३

य एवं वेद स समानानामधिको भवेत्

अन्यक्तो. ६

य एवं वेद स मुक्तिभागभवति

मं. ब्रा. १।१

य एवं वेद स मुक्तो भवति

ना. प. ९।२०

य एवं वेद स मुख्यो भवति

गणेशो. २।५

य एवं वेद स विष्णुरेव भवति

नारा. २

य एवं वेद स वैष्णवो भवति

तुलस्यु. २

य एवं वेद स शोकं हरति

देव्युप. १२

य एवं वेद स कीदृश्यायाऽप्रमुक्त्यते

तुलस्यु. १८

य एवं वेद सोऽमृतो भवति

वारसा. १।३

य एवं वेदाहं ब्रह्मास्मीति य एवं

सर्वं भवति

म. वा. १. १९

य एवं वेदेति महोपनिषत्

मृ. पू. १।७

य एवं वेदेति रहस्यं

नृसिंहो. ८।२, ४, ६

य एवायमग्नौ पुरुष एतमेवाहं

ब्रह्मोपास इति

बृह. २।१।७

य एवायमप्सु पुरुष एतमेवाहं..

बृह. २।१।८

य एवायमप्सु पुरुषः स एष

बदैव शाकल्य तस्य का

देवतेति वरुण इति

बृह. ३।९।१६

य एवायमाकाशे पुरुषः, एतमेवाहं

ब्रह्मोपास इति

बृह. २।१।९

य एवायमात्मनिपुरुषः, एतमेवाहं..

बृह. २।१।१३

य एवायमादशे पुरुषः, एतमेवाहं..

बृह. २।१।९

य एवायमादशे पुरुषः स एष

बदैव शाकल्य तस्य का

देवतेत्यसुरिति

बृह. ३।९।१९

य एवायं काममयः पुरुषः स एष

बदैव शाकल्य तस्य का

देवतेति क्षिय इति

बृह. ३।९।११

य एवायं छायामयः पुरुषः स एष

बदैव शाकल्य तस्य का

देवतेति मृत्युरिति

बृह. ३।९।१४

य एवायं छायामयः पुरुष एतमेवाहं

ब्रह्मोपास इति

बृह. २।१।१२

य एवायं दिक्षुपुरुषः, एतमेवाहं..

बृह. २।१।११

य एवायं पुत्रमयः पुरुषः स एष

बदैव शाकल्यतस्यकादेवतेति

प्रजापतिरिति

बृह. ३।९।१७

य एवायं मुख्यप्राणः (मा.पा.)

छां. च. १।५।३

य एवायं मुख्यः प्राणस्तमुद्गीथ-

मुपासाञ्चक्रिरे

छान्दो. १।२।७

य एवायं मुख्यः प्राणस्तमुद्गीथ-

मुपासीत

छान्दो. १।५।३

य एवायं यन्तं पञ्चाच्छब्दोऽनूदेति,

एतमेवाहं ब्रह्मोपासे

बृह. २।१।१०, १२

य एवायं वायौ पुरुषएतमेवाहं..

बृह. २।१।६

य एवायं शारीरः पुरुषः स एष

बदैव शाकल्य तस्य का

देवतेत्यसुरमिति

बृह. ३।९।१०

य एवाय* श्रोत्रः प्रातिश्रुतः
 पुरुषः स एष बदेव शाकल्य
 तस्य का देवतेति दिश इति बृह. ३।९।१३
 य एवासावादित्ये पुरुष एतमेवाहं
 ब्रह्मोपासे बृह. २।१।२
 य एवासावादित्ये पुरुषः स एष
 बदेव शाकल्य तस्य का
 देवतेति सत्यमिति बृह. ३।९।१२
 य एवासौ चन्द्रे पुरुष एतमेवाहं
 ब्रह्मोपास इति बृह. २।१।३
 य एवासौतपति तमुद्गीथमुपासीत छान्दो. १।३।१
 य एवासौ विद्युति पुरुष एतमेवाहं.. बृह. २।१।४
 य एवेतो यतः सम्भूतो भवति (मा. पा.) छां. उ. ५।९।२
 य एवेदमप्रतिरूप* संकल्पयति
 स एव पाप्मा बृह. १।३।६
 य एवैक उद्भवे सम्भवे च य
 एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति श्वेता. ३।१
 (अथ) य एवेतमनुभवति.. स
 हैवालं आर्येभ्यो भवति बृह. १।३।१८
 य एवेनं पुरस्तात्प्रत्याचक्षीरंस्त
 एवेनमुपमन्त्रयन्ते ददामस्त इति कौ. त. २।१,२
 य एवैष आकाशे पुरुषस्तमेवा-
 हमुपास इति कौ. त. ४।६
 य एवैष आदर्शे पुरुषस्तमेवाहं.. कौ. त. ४।१०
 य एवैष आदित्ये पुरुषस्तमेवाह-
 मुपासे कौ. त. ४।२
 य एवैष चन्द्रमसि पुरुषस्तमेवाहं
 ब्रह्मोपास इति कौ. त. ४।३
 य एवैष च्छायायां पुरुषस्तमेवाह-
 मुपास इति कौ. त. ४।३
 य एवैष दक्षिणेश्वन् पुरुषस्तमेवाह-
 मुपास इति कौ. त. ४।१६
 य एवैष प्रतिश्रुत्कायां पुरुषस्तमेवाह-
 मुपास इति कौ. त. ४।११
 य एवैष प्राज्ञ आत्मा येनैतत्सुप्तः
 स्वप्नमाचरति तमेवाह-
 मुपास इति कौ. त. ४।१५
 य एवैष धायौ पुरुषस्तमेवाहमुपास इति कौ. त. ४।७
 य एवैष विद्युति पुरुष एतमेवाहं
 ब्रह्मोपास इति कौ. त. ४।४

य एवैष शब्दः पुरुषमन्वेति तमे-
 वाहमुपास इति कौ. त. ४।१९
 य एवैष शारीरः पुरुषस्तमेवाह-
 मुपास इति कौ. त. ४।१४
 य एवैष सन्येऽक्षन् पुरुषस्तमेवाह-
 मुपास इति कौ. त. ४।१७
 य एवैष स्तनयित्ना पुरुष एतमेवाहं
 ब्रह्मोपास इति कौ. त. ४।५
 य एवैषोऽग्नौ पुरुषस्तमेवाहमुपासे कौ. त. ४।८
 य एवैषोऽप्सु पुरुषः तमेवाहमुपासे कौ. त. ४।९
 य एष आदित्ये पुरुषः स परमेष्ठी
 ब्रह्मात्मा महाना. १७।१२
 य एष आदित्ये पुरुषो दृश्यते
 सोऽहमस्मि छांदो. ४।११।१
 य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषस्तस्य
 भूरिति शिरः बृह. ५।५।३
 य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुष-
 स्तस्य हेष रसः बृ. उ. २।३।३
 (अथ) य एष एतस्मिन्मण्डले-
 ऽर्चिर्दीप्यते तानि सामानि महाना. १७।१
 (अथ) य एष एतस्मिन्मण्डले-
 ऽर्चिषि पुरुषस्तानि यजुषि महाना. १७।१
 य एष चन्द्रमसि पुरुषो दृश्यते
 सोऽहमस्मि छांदो. ४।१२।१
 य एष तपति तस्य संवत्सर
 आत्माऽयमग्निरर्कस्तस्यैमे
 लोका आत्मानः बृह. १।२।७
 य एष तपति सतो हेष रसः बृह. २।३।२
 य एष तपत्यग्निना पिहितः
 सहस्राक्षेण हिरण्यमेवाण्डेन.. मैत्रा. ६।८
 य एष देवोऽन्यदेवाण्य सम्प्रसादो-
 ऽन्तर्याम्यसङ्गचिद्रूपः पुरुषः परम. २
 य एष विज्ञानमयः पुरुषः कैष
 तदाऽभूत्कृत एतदागात् बृह. २।१।१६
 य एष विज्ञानमयः... य एषोऽन्त-
 र्हृदय आकाशस्तस्मिन्मण्डले बृह. २।१।१७
 य एष विद्युति पुरुषो दृश्यते
 सोऽहमस्मि स एवाहमस्मि छांदो. ४।१२।१

(अथ) य एष सम्प्रसादोऽस्मा-

च्छरीरात् समुत्थाय स्वेन
रूपेणाभिनिष्पद्यते एष आत्मा

...एतद्ब्रह्म [मैत्रा. २।२+ छां. उ. ८।३।४

य एष स्तन इवावलम्बते

सेन्द्रयोनिः [तैत्ति. १।६।१+ परब्र. २

य एष स्वप्ने महीयमानश्चरत्येष

आत्मेति होवाच छान्दो. ८।१०।१

य एषोऽक्षिणि पुरुषो दृश्यत

एष आत्मा [छान्दो. ४।१५।१ + ८।७।४

य एषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मा तं

कथमहं विजानामि जाबालो. २

य एषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मा

सोऽविमुक्ते प्रतिष्ठितः जाबालो. २

य एषोऽनन्तोऽव्यक्तपरिपूर्णा-

नन्दैकचिदात्मा रामो. ३।१

य एषोऽन्तरक्षिणि पुरुषो दृश्यत

एष आत्मा (मा. पा.) छां. उ. ४।१५।१

(अथ) य एषोऽन्तरादित्ये

हिरण्यमयः पुरुषः... महाना. १०।१

(अथ) य एषोऽन्तरादित्ये...

पुरुषो यः पश्यति मां हिरण्य-

वत्स एषोऽन्तरे हृत्पुष्कर

एवाभितोऽन्नमत्ति मैत्रा. ६।१

(अथ) य एषोऽन्तरे हृत्पुष्कर

एवाभितोऽन्नमत्ति स एषोऽग्नि-

दिवि अत्रः सौरः कालारूयो-

ऽदृश्यः सर्वभूतान्नमत्ति मैत्रा. ६।२

य एषोऽन्तर्हृदय आकाशस्त-

स्मिच्छेते... [बृ. उ. २।१।१७+ बृह. ४।४।२२

य एषोऽन्तर्हृदय आकाशेऽथैनयो-

रेतदन्नम् बृह. ४।२।३

य एषोऽन्तर्हृदये लोहितपिण्डो-

ऽथैनयोरेतत्प्रावरणम् बृह. ४।२।३

य एषो वाह्यावष्टम्भनेनोर्ध्व-

मुक्कान्तः... तमप्रणुदत्येष आत्मा... मैत्रा. २।२

य ओषधीनां प्रभुर्भवति ताराधि-

पतिः सोमस्त्वस्मान्महृतीयं

पादं जानीयात् नृ. पू. १।४

य ओषधीषु यो वनस्पतिषु

तस्मै नमः

श्वेता. २।१७

यकारं प्राणवीजं च नीलजीमूत-

सन्निभम्

ध्या. वि. ५

यकारः परमात्मा भवति

तारसा. १।४

यकारः पुरुषो भवति

तारसा. १।४

यक्षगन्धर्वाप्सरोगणसेवितमन्तरिक्षं

तत्साम्नो द्वितीयं पादं जानीयात् नृ. पू. १।२

यक्षगन्धर्वाप्सरोगणसेवितमन्तरिक्षं

द्वितीयं पादं जानीयान्निधिदातेति ग. पू. १।१२

यक्षरक्षांसि राजसाः

म. गी. १।७।४

यक्षा नु जीवन्ति सर्वं जीवति

गणेशो. २।५

यक्षोपासकाः सदा त्याज्याः

सामर. २७

यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये

म. गी. १।६।१५

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षुषि

पश्यति

केनो. १।७

यच्च कालमकालं वा निश्चयः

संशयो नहि

ते. वि. ५।१४

यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यते

श्रूयतेऽपि वा

महाना. ९।५

(अथ) यच्चतुर्यममृतं तन्मरुत

उपजीवन्ति

छान्दो. ३।९।१

यच्चतुष्पदा तेन जगती

अव्यक्तो. ६

यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ

म. गी. १।५।१२

यच्चन्द्रमसोरोहितंरूपंतेजसस्तद्रूपं

छान्दो. ६।४।३

यच्च प्राणिति यच्च कस्मात्तानि

न क्षीयन्तेऽद्यमानानि सर्वदा

बृह. १।५।१

यच्चप्राणितियच्चनेतिपश्यसि हीदृ५५०

बृह. १।५।२

यच्च भव्यं सनातनम् (स विष्णुः)

कैव. ९

यच्च माण्डूकेयीयमध्यायं प्रब्रूम-

स्तेन नोणकारषकारावुपाप्ताविति ३ ऐत. २।६।२

यच्च यावच्च चिन्मात्रं यच्च यावच्च

दृश्यते ।... सर्वं चिन्मात्रम्

ते. वि. २।३८

यच्च सच्च त्यच्च

बृह. ३।३।१

यच्चयावच्चदूरस्थं सर्वचिन्मात्रमेवहि

ते. वि. २।३९

यच्च यावच्च लक्ष्यते

ते. वि. २।३९

यच्च यावच्च वेदान्ताः सर्वचिन्मात्रं

ते. वि. २।४०

यच्च स्थावरं सर्वं तत्प्रज्ञानैत्रं

प्रज्ञाने प्रतिष्ठितम्

३ ऐत. ५।३

यच्च स्वभावं पचति विश्वयोनिः

पाच्यंश्च सर्वान्परिणामयेद्यः श्वेताश्व. ५।५

यच्चान्यत्रिकालातीतं तदप्योङ्कार एव मांहु. १

[च. पू. ४।२+नृसिंहो. १।२+ रामो. २।१

यच्चान्यदतिरिक्तं कालातीतं

तदप्योङ्कार एव राघोप. २।२

यच्चान्यद्ब्रह्मिच्छसि भ. गी. ११।७

यचापि सर्वभूतानां भ. गी. १०।३९

यचाप्युत्क्रामतीश्वरः भ. गी. १५।८

यचावहासार्थमसत्कृतोऽसि भ. गी. ११।४२

यचास्येहास्ति यच्च नास्ति सर्वं

तदस्मिन्समाहितम् छांदो. ८।१।३

यचित्तत्त्वमनाख्येयं स आत्मा

परमेश्वरः महो. ४।११८

यचित्तस्तन्मयो भवति गुह्यमेतत्

सनातनम् मैत्रा. ६।३४

[मैत्रे. १।१०+ शाटपा. ३

यचित्तस्तेनैव प्राणमायाति प्रभो. ३।१०

यचेदं दृश्यते किञ्चिज्जागत्सावर-

जङ्गमम् । तत्सर्वमस्थिरं... भवसं. १।१९

यच्छन्दोभिरात्मानं समधात्तस्मात्

संहिता ३ ऐत. २।६।१

यच्छरीरं सा पृथिवी १ ऐत. ३।३।२

(अथ) यच्छान्तं तस्याऽऽधारं

क्षमण यत्समुद्भूतमिदं तस्यान्नं मैत्रा. ६।३६

यच्छिरस्तेन रुद्रः, मूर्ध्नि शतकुबेरः,

सर्वदेवत्यास्ते प्रीणन्तु आचम. ५

यच्छिरोऽग्रयत् तच्छिरोऽभवत् १ ऐत. १।४।२

यच्छुद्धं तदपां, यत्कृष्णं तदन्नस्या-

पागाचंद्राचन्द्रत्वं वाचारम्भणं

विकारोनामभेयं त्रीणि रूपा-

णीत्येव सत्यम् छांदो. ६।४।३

यच्छुद्धं तदपां, यत्कृष्णं तदन्नस्या-

पागावावित्यावावित्यत्त्वम् छांदो. ६।४।२

यच्छुद्धं तदपां, यत्कृष्णं तदन्नस्या-

पागाद्विपुवी विधुत्वम् छांदो. ६।४।४

यच्छुद्धं तदैधुवं यदैधुवं तत्परं

अथ [अ. शिरः. ३।४+ बृहको. १९

(अथ) यच्छुद्धे अक्षरे अग्नि-

व्याहरति तत्प्रतृणस्याम् च

एवोभयं, अन्तरेणोभयं व्याप्तं भवति ३ ऐत. १।३।३

यच्छेद्वाच्यनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान

आत्मनि । ज्ञानमात्मनि महति

नियच्छेत्तद्यच्छेज्ज्ञान्तआत्मनि कठो. ३।१३

यच्छोकमुच्छोषमिन्द्रियाणाम् भ. गी. २।८

यच्छुतं यदृष्टं तत्तत्सर्वमविज्ञातमिव

यो वसेत्तस्य स्वप्रावस्थायामपि

तादृगवस्था भवति ना. प. ९।११

यच्छ्रेय एतयोरेकं

यच्छ्रेयसो देवानस्तृजताथ यन्मर्त्यः भ. गी. ५।१

सन्नमृतानस्तृजत तस्मादतिस्पृष्टिः

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे बृह. १।४।६

यच्छ्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्र-

मिदं श्रुतम् । तदेव ब्रह्म त्वं

विद्धि नेदं यदिदमुपासते केनो. १।८

यजन्त इह देवताः

यजन्ते तामसा जनाः भ. गी. ४।१२

यजन्ते नामयज्ञैस्ते

यजन्ते अद्वयाऽन्विताः [भ.गी. भ. गी. १७।४

यजन्ते सात्त्विका देवान्

यजन्तो मासुपासते भ. गी. १६।१७

यजन्त्यविधिपूर्वकम्

यजमानश्चिरैतानमीनमिध्यायेत् भ. गी. १।१५

यजमानाय वार्यम्

यजमानो रजसापच्यत्यति श्रुति- भ. गी. १।२३

आपच्यस्तापतिष्ठति मैत्रा. १।१

यजमानो हविर्गृहीत्वा देवताभि-

ध्यानमिच्छति चित्तु. २।१

यजुरात्मक उकारः

यजुरित्येष हीदं सर्वं युनक्ति मैत्रा. ६।३४

यजुर्द्वितीयात् (पादादकल्पयत्)

यजुर्निगदो वृथावाक्कदमितम् राघो. २।२

यजुर्मयं कर्तव्यं होवा, कर्तव्यं

साममयसुद्रावा बृहको. ३।९

यजुर्वेदमी नृसिंहगायत्रीमित्यज्ञानि

जानीयात् नृ. पू. ४।१

यजुर्वेदमी कौशल्याय नेच्छन्ति

नृ. पू. १।३

यजुर्वेद एव पुष्पं ता अमृता आपः छान्दो. ३।२।१

यजुर्वेदे तिष्ठति मध्ये अहः सूर्यता. १।५

यजुर्वेदे दीर्घप्लुतोदात्त एकाक्षर
ओङ्कारः २ प्रणवो. १२

यजुर्वेदोऽन्तरिक्षं च दक्षिणाग्नि-
स्तथैव च । विष्णुश्च भग-

वान्देव उकारः परिकीर्तितः

[ब्रह्मवि. ५+ १ प्रणवो. ५

यजुर्वेदोद्वितीयः पादः (गायत्र्याः) गायत्रीर. ३

यजुर्वेद द्वितीयः पादः ग. पू. १।१३

यजुर्वेद भुवः स शिवो भवति ग. पू. ३।१

यजुषः सायुज्यं सलोकतां
जयति, य एवं वेद बृह. ५।१३।२

यजुषामेव तद्रसेन यजुषां वीर्येण
यजुषां यज्ञस्य विरिष्टं सन्धधाति छांदो. ४।१७।५

यजुषां वायुर्देवतं तदेव ज्योतिः २ प्रणवो. २१

यजुषि यजुः, साम्निसाम, सूत्रे
सूत्रं, ब्राह्मणे ब्राह्मणं, ऋके

ऋकः, प्रणवे प्रणवः २ प्रणवो. ९

यजुस्तस्मादजायत [चित्यु. १२।४+ वा. सं. ३१।७

[अ. अ. ८।४।१८=मं. १०।९०।९+

यजुः-प्राणो वै यजुः, प्राणे हीमानि
सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते बृह. ५।१३।२

यजुर्वेदः सामशिरा असामृद्धिर्व्ययः को. त. १।७

यजुष्येव मधुकृतो यजुर्वेद एव पुष्पं

ता अमृता आपः छांदो. ३।२।१

यजुषि यो वेद स वेद यज्ञम् इतिहा. ९

यजेत वाऽथमेधं वा लीलं वा

वृषमुत्सृजेत् इतिहा. ९५

यजेत्सन्ध्यासु प्रतिपत्तिमिरुपचारैः गो. पू. ३।१

यज्जगन्नालकं भानं नित्यं भाति

स्वतः स्फुरत् । स एव जगतः

साक्षी सर्वात्मा विमलाकृतिः

[अ. पू. ४।२६+ कठक. १०४

यज्जगत्तु से पर्वताः छांदो. ३।१९।२

यज्जगत्तु से पर्वताः...

शिवसङ्कल्पमस्तु वा. सं. ३४।१

[१शि. सं. १+ २ शिवसं. ८

यज्जगत्तो मनोराज्यं यज्जगत्स्वप्न
उच्यते महो. ५।१४

यज्जुहोषि ददासि यत् भ. गी. ९२७

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोऽहं भ. गी. ४।३९

यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यत् भ. गी. ७।२

यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे भ. गी. १४।१

यज्ज्ञात्वाऽमृतमभुते भ. गी. १३।१३

यज्ज्ञात्वा मोक्षयसेऽशुभात् [भ.गी. ४।१६+९।१

यज्ञ इति-यज्ञो हि देवाः, यज्ञेन हि

देवा दिवं गताः । देवास्तस्मा-

द्यज्ञे रमन्ते महाना. १६।१२

यज्ञ एव सविता छन्दांसि सावित्री

स यत्र वेदस्तत्र छन्दांसि सावित्र्यु. ४

यज्ञक्षपितकल्मषाः भ. गी. ४।३०

यज्ञदानतपःकर्म [भ.गी. १८।३+ १८।५

यज्ञदानतपःक्रियाः भ. गी. १७।२४

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तः भ. गी. ३।१३

यज्ञशिष्टासृतभुजः भ. गी. ४।३१

यज्ञश्च मे भूयात् चित्यु. ७।१

यज्ञसूत्रप्रणवब्रह्मयज्ञक्रियायुक्तो

ब्राह्मणः पा. ब्र. ३

यज्ञसूत्रसम्बन्धी ब्रह्मयज्ञः पा. ब्र. ३

यज्ञस्तपस्तथा दानं भ. गी. १७।७

यज्ञस्तपांसि नियमात्तानि वै

विविधानि च । गुरुवाक्ये तु

सर्वाणि सम्पद्यन्ते न संशयः शिवो. ७।४०

यज्ञस्त्वमेवैकविमुः पुराणः एका. व. २

यज्ञस्य पंक्तिः चित्यु. ९।१

यज्ञस्य प्रसृत्या अजिनं वासो वा

दक्षिणत उपवीय दक्षिणं

बाहुमुद्धरते सहवै. १

यज्ञस्यर्द्धिमनु संतिष्ठत् महाना. १६।११

यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां च अरुणो. १

यज्ञं दानं जपं तीर्थं श्राद्धं वै

देवतार्चनम् । तर्पणं मार्जनं

चान्यन्नं कुर्यात्तुलसीं विना तुलस्यु. १६

यज्ञं पोहि विभावसो स्वाहा महाना. ७।४

यज्ञं प्रवितिष्ठन्तं यजमानोऽनु

प्रवितिष्ठतिसहस्रा भेषान्भवति छांदो. ४।१६।५

यज्ञः रिध्यन्तं यजमानोऽनुरिष्यति

स दृष्ट्वा पापीयान्भवति

छान्दो. ४।१६।३

यज्ञः कर्मसमुद्भवः

मं. गी. ३।१४

यज्ञो इति च तद्विदः

वेतथ्य. २२

यज्ञोऽङ्गं ब्रह्मसम्पत्तिः

पा. ब्र. ३

यज्ञोऽङ्गवति पर्जन्यः

मं. गी. ३।१४

यज्ञायाचरतः कर्म

मं. गी. ४।२३

यज्ञार्थं कर्मणोऽन्यत्र

मं. गी. ३।९

यज्ञाश्च विहिताः पुरा

मं. गी. १।७।२३

यज्ञे तपसि दाने च

मं. गी. १।७।२७

यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि

मं. गी. १।७।२५

यज्ञेन दानेन तपसाऽनाशकेनैतमेव

विदित्वा मुनिर्भवति

बृह. ४।४।२२

यज्ञेन द्विषन्तो मित्रा भवन्ति

मं. ना. १।७।१

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः [क्र. अ.

८।४।१९=

[मं. १।७।९०।१६+

वा. सं. ३१।१६

[मं. ना. २।४+पु.सू.१६+

चिन्त्यु. १२।७

(यज्ञ इति) यज्ञेन हि देवा दिवं गताः

मं. ना. १।७।१०

यज्ञेनासुरा नापातुदन्त

मं. ना. १।७।१०

यज्ञेनेत्युपसंहारः सृष्टेर्मोक्षस्य

चैरितः । य एवमेतज्ज्ञानाति

स हि मुक्ती भवेदिति

मुद्रलो. १।९

यज्ञेनैवोपजुहति

मं. गी. ४।२५

यज्ञे सर्वे प्रतिष्ठितं तस्माद्यज्ञं

परमं वदन्ति

मं. ना. १।७।१०

यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गातिं प्रार्थयन्ते

मं. गी. ५।२०

यज्ञो दानं तपः कर्म

मं. गी. १।८।५

यज्ञो दानं तपश्चैव

मं. गी. १।८।५

यज्ञोपवीतं बहिर्न निवसेः त्वमन्तः

प्रविश्य...मेघां ग्रथच्छ

भा. प. ४।४७

यज्ञोपवीतमेव देव, विपरीतं

प्राचीनावीतम्

सहचै. १

यज्ञोपवीतं कृत्वाऽप आचम्य

त्रिषदपात्रं प्रविश्योद्यन्त-

मादित्यमुपतिष्ठेत्

को. त. २।७

यज्ञोपवीतं निष्कृत्य पुत्रं दृष्ट्वा त्वं

ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्व-

भोद्धारस्त्वं स्वाहा...त्वं प्रति-

ष्ठाऽधीति भवेत्

कठक. १

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्य-

त्सहजं पुरस्तात् [ब्रह्मो. ५+ ना. प. ४।४६

[+पा. गृ. सू.

२।२।१०

यज्ञोपवीतं यागं सत्रं स्वाध्यायं च

सर्वकर्माणि सञ्जस्यायं ...

कौपीनं...परिग्रहेत्

प. हं. २

यज्ञोपवीतं वेदांश्च सर्वतद्वर्जयेद्यतिः कठक. ५

यज्ञोपवीती धृतचक्रधारी यो

ब्रह्मवित्...बह्विसंयुक्तं क्षीशूदे-

र्बाहुभ्यां धारयेत् [यज्ञोप. १+

सुदर्श. १

यज्ञो भूत्वा यज्ञमासीद् स्वां योनिं

जातवेदो भुव आजायमानः

ना. प. ४।४६

यज्ञात्वा मुख्यते जन्तुरमृतत्वं

च गच्छति

कठो. ६।८

यज्ञात्वाऽमृतमभुते

गान्धर्वो. ४।११

यज्ञानाग्निः स्वातिश्चिह्नममं भस्म

करोति तप । बृहज्जावाल-

निगमशिरोवेद्यमहं महः

वृ. जा. शीर्षकं

यज्ञानाद्यान्ति मुनयो ब्राह्मण्यं

परमाद्भुतम् । तत्रैपदब्रह्मतत्त्व-

महमस्मीति चिन्तये

व.सू. शीर्षकं

यज्ञानेन कृतार्थो भवति तत्रित्यं

शाम्भवीमुद्रान्वितम्

मं. जा. ३।१

यज्ञयोषिर्वेद्युतं यदजर्ज्यं तदवरमिति

शौनको. २।३

यज्ञयोतिः स आदित्यः

मेन्ना. ६।३

यत् इन्द्र अयामहे ततो नो अयम्

कुधि [महाना. ५।१+

वनदु. १।५३

[क्र. मं. ८।६।१।३+

अथर्व. १९।१५।३

[साम. १।२७४+

तै.जा. १।०।१।९

यत् एतस्य तस्यैव रक्षो य एष

एतस्मिन्मण्डले पुरुषस्तस्य

क्षेप रक्ष इत्यधिदैवतम्

बृह. २।३

यत् एतस्य तस्यैव रक्षो योऽग्रं

दक्षिणेऽन्यपुरुषस्तस्य क्षेप रक्षः

बृह. २।३।५

यत् एवेतो यतः सम्भूतो भवति

छान्दो. ५।१।३

यत् यथा यथा चैवा यथा नष्टेय-

सण्डितम् । तद्वत् यथा रोष-

याकाया अन्नं कुर्व चिकित्सने

महो. ५।१।३६

यतचित्तेन्द्रियक्रियः	भ. गी. ६।१२	यतीनां ज्ञानदं प्रोक्तं वनस्थानां	
यततामपि सिद्धानां	भ. गी. ७।३	विरक्तिदम् (भस्म)	बृ. जा. १।६
यतते च ततो भूयः	भ. गी. ६।४३	यतीनां तु शतं पूर्णमेकमेकेन रुद्र-	
यततो ह्यपि कौन्तेय	भ. गी. २।६०	जापकेन तत्समम्	नृ. पू. ५।१६
यतन्तोऽप्यकृतात्मानः	भ. गी. १५।११	यतीनां यतचेतसाम्	भ. गी. ५।२६
यतन्तो योगिनश्चैनं	भ. गी. १५।११	यतेन्द्रियमनोबुद्धिः	भ. गी. ५।२८
यतन्तश्च दृढव्रताः	भ. गी. ९।१४	यतेः संव्यवहाराय पात्रलोपः	
यतयः केन दुःखिताः	१ सं. सो. २।९९	स उच्यते	१ सं. सो. २।८१
यतयः संशितव्रताः	भ. गी. ४।२८	यतोऽजरोऽमृतः स भवतीति	गायत्र्यु. ५
यतयो भिक्षार्थं ग्रामं प्रविशन्ति		यतो जातानि भुवनानि विश्वा	श्वेताश्व. ४।४
पाणिपात्रमुदरपात्रं वा	आरुणि. ९	यतो न क्रमते ज्ञानमसङ्गं तेन	
यतवाक्कायमानसः सूर्यभक्तो		कीर्तितम्	अ. शां. ९६
ब्रह्मचारी व्रतधरः	सूर्यता. २।१	यतो (निर्विषयो नाम) निर्विषय-	
यतवाक्कायमानसः	भ. गी. १८।५२	स्यास्य मनसो मुक्तिरिष्यते ।	
यतश्चोदेति सूर्योऽस्तं यत्र च		अतो (तस्मात्) निर्विषयं	
गच्छति । तं देवाः सर्वेऽर्पिता-		नित्यं मनः कार्यं मुमुक्षुणा	त्रि. ता. ५।१
स्तदुनात्येति कश्चन । एतद्वै तत्	कठो. ४।९	यतो यतः समीहसे ततो नो	
यतः कुतश्च नैतमेकादश नव	तैत्ति. २।१०	अभयं कुरु [प्रवर्गा. २२+	वा. सं. ३६।२२
यतः कुतश्चिदानीय नित्यं		यतो बभूव भुवनस्य गोपाः	नृ. पू. २।८
शास्त्राण्यवेक्षते	अक्ष्युप. ११	यतो यत आवर्तते तत्तद्गच्छति	छान्दो. ४।१७।९
यतः पवमानपावकशुचिसङ्घातो		यतो यतस्त्वाददीत लवणमेव	बृह. २।४।१२
हि जाठरस्तस्मादभिर्यष्टव्य-		यतो यतो निश्चरति	भ. गी. ६।२६
श्चेतव्यः स्तोतव्योऽभिध्यातव्यः	मैत्रा. ६।३४	यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते ।	
यतः प्रवृत्तिर्भूतानां	भ. गी. ६।१८।४	यतो वा यन्ति यत्रैव यन्ति च ।	
यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी	भ. गी. १५।४	तदेतदक्षरं परं ब्रह्म	ग. पू. १।३
यतः प्रसृता जगतः प्रसृतिः	महाना. १।४	यतो वा इमानि... यतोऽग्निः	
यतः सर्वैः परित्यक्तं नरं		पृथिव्यप्तेजोवायुः । यत्कराग्रा-	
धर्मोऽनुगच्छति	शिवो. ६।१६७	द्रह्यविष्णुरुद्रा अजायन्त	गणेशो. ४।८
यवात्मा दृढनिश्चयः	भ. गी. १२।१४	यतो वा इमानि..येन जातानि	
यवाहारो जितक्रोधो जितसङ्गो		जीवन्ति, यत्प्रयन्त्यभिसं-	
जितेन्द्रियः	ते. बि. १।३	विशन्ति, तद्विजिज्ञासस्व ।	
यतिर्न करान् वसेन्न कस्यापि न मेत्	ना. प. ५।८	तद्ब्रह्मेति	तैत्ति. ३।१
यतिर्ममधारणं त्यक्त्वैकदोषोऽप्य		यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते...	
द्वादशसहस्रप्रणवं जप्त्वा		यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तं	
शुद्धो भवति	भस्मजा. १।६	मामेवं विदित्वोपासीत	भ. जा. २।५
यतिर्यादृच्छिको भवेत् [ना. प. ६।४४	वैतथ्य. ३७	यतो वाचो निर्वर्तन्ते अप्राप्य	
यतिस्तर्जनीया शिरोललाटहृदयेषु		मनसा सह	शांदि. २।३
प्रणवेन ध्यायेत्	गोपीचं. ४	[तैत्ति. २।४, ५+शरभो. १८+	श्रवो. २२

यतो वाचो निर्वर्तन्ते अप्राप्य...

आनन्दं ब्रह्मणो विद्वाञ्

विमेति कदाचन (कुतश्चन)

[तैत्ति. २।४,५+

शरभो. १८

यतो वाचो निर्वर्तन्ते अप्राप्य...

आनन्दमेतज्जीवस्य यज्ज्ञात्वा

मुच्यते बुधः

ब्रह्मो. २२

यतो वाचो निर्वर्तन्ते यो मुक्तैरव-

गम्यते । यस्य..संज्ञाः कल्पिताः.. महो. ४।५७

यतो वाचो निर्वर्तन्ते विकल्पकल-

नान्विताः । विकल्पसंक्षया-

ज्जन्तोः पदं तदवशिष्यते

अ. पू. २।३३

यतो वाचो निर्वर्तन्ते निमित्ता-

नामभावतः (निमित्तं

किञ्चिदाश्रित्य खलु शब्दः

प्रवर्तते)

कठरु. ३४

यतो विशन्ति तद्विजिज्ञासस्व

तैत्ति. ३।११

यतो वीरः कर्मण्यः सुदृशो युक्त-

भावा जायते देवकामः

नृ. पू. २।५

यतो वै समुद्राः सरितः पर्वताश्च,

यतो वै चराचरम्

ग. शो. ४।८

यतो हरिं द्रावयति तच्छ्रीचूर्णं

श्रियावधृतं आदित्यवर्णं

श्रीफले धारयेत्

कात्याय. १

यत्कठिनं सा पृथिवी, यद्द्रवं ता

आपः, (तदापो) यदुष्णं

तत्तेजः, यत्सञ्चरति स वायुः,

यत्सुषिरं तदाकाशमित्युच्यते

[गर्भो. १+

शारीरको. १

यत्करोषि यदभासि

अ. गी. ९।२७

यत्कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यते

बृह. ४।४।५

यत्कर्मणाऽत्यरीरिचं यद्वा

न्यूनमिहाकरम्

बृ. उ. ६।४।२४

यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति रागात्ते-

नातुराः क्षीणलोकाश्चयन्ते

मुण्ड. १।२।९

यत्कल्याणं जिघ्रसि तदात्मने

ते विदुः

बृह. १।३।३

यत्कल्याणं पश्यति तदात्मने

ते विदुः

बृह. १।३।४

यत्कल्याणं वदति तदात्मने ते विदुः बृह. १।३।२

यत् कल्याणं शृणोति तदात्मने ,, बृह. १।३।५

यत्कल्याणं सङ्कल्पयति तदात्मने ,, बृह. १।३।६

यत्कामो भवति य एवं वेद बृ. जा. १।३

यत्किञ्च दुरितं मयि । इदमहं

माममृतयोनौ सूर्ये (सत्ये)

ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा

महाना. १।३।४

यत्किञ्च प्रजाः साधु कुर्वन्ति,

यस्तद्वेद, यत्स वेद स मयैत-

दुक्त इति

छांदो. ४।१।४, ६

यत्किञ्च वाचो हुमिति स हिङ्कारो

यत्प्रेतिसप्रस्तावोयदेतिसआदिः

छांदो. २।८।१

यत्किञ्च विजिज्ञास्यं मनसस्तद्रूपं

बृह. १।५।९

यत्किञ्च विज्ञातं वाचस्तद्रूपम्

बृह. १।५।८

यत्किञ्चाविज्ञातं प्राणस्य तद्रूपम्

बृह. १।५।१०

यत्किञ्चिदपि सङ्कल्पस्तापत्रय-

मितीरितम्

ते. वि. ५।९७

यत्किञ्चिदपि हीनोऽस्मि

मैत्रे. ३।१७

यत्किञ्चिदिदमा श्रम्य

आ शकुनिभ्य इति...

छांदो. ५।२।१

यत्किञ्चिद्दृश्यते लोके... तत्सर्व-

मसदेव हि

ते. वि. ६।५२

यत्किञ्चिद्यज्ञ किञ्चिच्च सर्वं

चिन्मयमेव हि

ते. वि. २।२७

(अथ) यत्किञ्चेदमार्द्रं तद्रेतसो-

ऽसृजत तदु सोमः

बृह. १।४।६

यत्किञ्चेदं प्राणिजङ्गमं च पतत्रिच

२ ऐत. ५।३

यत्कुमारी मन्द्रयते यथोषिद्यत्

पतिव्रता । अरिष्टं यत्किञ्च

अरुणो. ५

क्रियते अग्निस्तदनुवेधति

यत्कुसीदमप्रतीतं मयेह येन

यमस्य निधिनाचरामि हि

सहस्रै. ४

यत्कृत्वा देवयानं वा पन्थानं

प्रतिपद्यन्ते । पितृयाणं वापि

न ऋषेर्वचः श्रुतम्

बृह. ६।२।२

यत्केवलं ज्ञानगम्यम् (ब्रह्म)

शांडिल्यो. २।१।३

यत्कतुर्भवति तत्कर्म कुरुते यत्कर्म

कुरुते तदभिसम्पद्यते

बृह. ४।४।५

यत्खलु साधु तत्सामेत्याचक्षते

छांदो. २।१।१

यत्तच्छान्तमजरममृतमभयं परम् प्रश्नो. ५।७
 यत्तच्छान्तं मतं मम भ. गी. १३।३
 यत्तत्तत्पुरुषं प्रोक्तं वायुमण्डल- पञ्चम. १०
 संवृतम् । पञ्चामिना समायुक्तं. भ. गी. १८।२५
 यत्तत्तामसमुच्यते अ. पू. ३।२२, २३
 यत्तत्त्वं तदसौ स्थितः (आत्मा ब्रह्म) यत्तन्निगुणमव्यक्तं नित्यं सदसदा-
 त्मकम् । प्रधानं प्रकृतिं प्राहु- भवसं. २।१३
 रविशेषं विशेषवत् गो. पू. ४।३
 यत्तत्पदं पञ्चपदं तदेव स वासु- म. र. १४।११
 देवो न यतोऽन्यदस्ति भ. गी. १८।२३
 यत्तत्सत्यं विज्ञानमानन्दं (ब्रह्म) यत्तत्सात्त्विकमुच्यते
 (अथ) यत्तदजायत सोऽसा- छांदो. ३।१९।३
 वादित्यः भ. गी. १८।३८
 यत्तदमेऽमृतोपमम् भ. गी. १८।३७
 यत्तदमे विषमिव रुद्रह. ३१
 यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्ररूपवर्जितम् यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुः-
 यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुः- श्रीत्रं तदपाणिपादं...तद्भूतयोनिं
 परिपश्यन्ति धीराः मुण्ड. १।६
 यत्तदन्यत्कमजरमचिन्त्यमज-
 मव्ययम् भवसं. ३।३
 यत्तन्नस्तत्पञ्चमस्य, यत्तिसहः प्रचो-
 दयादिति तत् षष्ठस्य नृ. षट्च. ५
 यत्तपस्यसि कौन्तेय भ. गी. ९।२७
 (अथ) यत्तपोदानमार्जवमहिंसा सत्यवचनमिति वा अस्य
 वक्षिणाः छांदो. ३।१७।४
 यत्तप्यथा बहुधा मे पुराचित्तनुभुवे-
 ऽहमुरणोबोभुवे । अतस्त्य पन्था-
 मसि हि प्रपन्नोऽयसे स मे
 सत्यमिदं कमेहि वा. मं. २२
 यत्तत्सात्त्विकमुच्यते भ. गी. १८।२३
 यत्तस्य ज्योतिरिव सम्पद्यती-
 त्यतस्तत्त्वावमचिरेणैति मैत्रा. ६।२७
 यत्तस्य पीठं हैरण्याष्टपलाशमम्बुसं गो. पू. ३।१
 यत्तानि तु मुग्धतरयुनिशब्दवाच्येः
 जीवन्मुहुरे रचितान्तीतिभवन्ति स्वसंवे. १

यत्तारं तत्सूक्ष्मं यत्सूक्ष्मं तच्छुद्धं
 यच्छुद्धं तद्वैद्युतं यद्वैद्युतं
 तत्परं ब्रह्म [अ. शिरः. ३।४+ बटुको. १९
 यत्तासां दिशामन्तस्तद्रमयांचकार
 (मा. पा.) बृ. उ. १।३।१०
 यत्तु कामेप्सुना कर्म भ. गी. १८।२४
 यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन् भ. गी. १८।२५
 यत्तु चञ्चलताहीनं तन्मनो-
 ऽमृतमुच्यते महो. ४।१०.१
 यत्तु नो हृदयते किञ्चिद्यन्तु किञ्चि-
 दिव स्थितम् । मनः षष्ठेन्द्रिया-
 तीतं तन्मयो भव वै मुने अ. पू. १।२१
 यत्तु पौरुषयत्नेन कृतं तन्मध्यमं
 भवेत् (रुद्राक्षछिद्रं) रु. जा. १३
 यत्तु प्रत्युपकारार्थं भ. गी. १७।२९
 यत्तुर्योङ्काराग्रपरास्थिरभूमिवरा-
 सनम् । प्रतियोगिविनिर्मुक्तं
 तुर्यतुर्यमहं महः नृ. पू. शीर्षकं
 यत्तु होतर्गायत्रीं कथं हलीभूतो
 बहसीति गायत्र्यु. ५
 (अथ) यत्तृतीयममृतं तदादित्या
 उपजीवन्ति वरुणेन मुखेन न
 वै देवा अमन्ति छांदो. ३।८।१
 यत्तृतीयं तच्छिखायां, यच्चतुर्थं
 तत्सर्वेष्वङ्गेषु नृ. षट्च. ७
 यत्तृतीयं तद्वाह्यं वलयं भवति नृ. षट्च. ३
 यत्ते कश्चिदब्रवीत्तच्छृणुवामेति बृह. ४।१।२
 यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि बृह. ५।१५।१
 यत्ते सुसीमं हृदयमभिचंद्रमसिभितम् कौ. त. २।८
 यत्ते सुसीमे हृदये हितमन्तः
 प्रजापतौ । मन्येऽहं मांतद्विद्वांसं
 माहं पौत्रमघं रुद्रम् कौ. त. २।१०
 यत्तेऽहं प्रीयमाणाय भ. गी. १०।१
 यत्त्वयोक्तं वचस्तेन भ. गी. ११।१
 यत्पञ्चमं तत्सर्वेषु... यत् षष्ठं
 तत्सर्वेषु देशेषु नृ. षट्च. ७
 (अथ) यत्पञ्चमममृतं तत्साध्या
 उपजीवन्ति ब्रह्मणा मुखेन न
 वै देवा अमन्ति छांदो. ३।१०।१

यत्प्रदं विमलमद्वयं शिवं तत्सदा-

हमिति मौनमाश्रय

वराहो. ३१६

यत्परं तेजस्तज्जोषाऽभिहितमग्रा

आदित्ये प्राण एतद्वाच स-

त्स्वरूपं नमसः खेऽन्तर्भूतस्य

यदोमित्येतदक्षरम्

मैत्रा. ७११

यत्परं जापरं त्यजति स

जाग्रदभिधीयते

ब्रह्मो. १

यत्परं ब्रह्म स एकः, य एकः स

रुद्रः, यो रुद्रः स ईशानः...स

भगवान्महेश्वरः [अ.शिरः. ३।४+ बटुको. १९

यत्परं ब्रह्म सर्वात्मा विश्वस्यायतनं

महत् । सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं नित्यं

स त्वमेव त्वमेव तत्

कैव. १६

यत्परात्परतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिव-

सङ्कल्पमस्तु

२ शिवसं. १७

(अथ) यत्पशुभ्यस्तृणोदकं

विन्दति तेन पशूनां (लोकः)

बृह. १।४।१६

यत्पश्यति तु तत्सर्वं ब्रह्म पश्यन्स-

माहितः । प्रत्याहारो भवेदेष

ब्रह्मविद्धिः पुरोदितः

जा. द. ७।३

यत्पश्यमानमात्माभिजुषाणमन्तः...

सुषुप्त्यानभिगम्यमानाय स्वाहा पारमा. १।८

यत्पादाम्बुरुहद्वन्द्वं मृग्यते विष्णुना

सह । स्तुत्वा स्तुत्यं महेशान-

मबाहुनंसगोचरम्

शरभो. १७

यत्पितृभ्यो निपृणाति यत्प्रजा-

भिच्छ्रुते तेन पितृणां (लोकः)

बृह. १।४।१६

यत्पितृभ्यः स्वधा करोत्यप्यपस्त-

स्पितृयज्ञः सन्तिष्ठते

सहवै. १४

यत्पिबति तदस्य सौमपानम्

(शारीरयज्ञस्य)

महाना. १८।१

यत्सुण्डरीकं पुरमण्यसंस्थम् ।

तत्रापि दहं गगनं विशोकस्त-

स्मिन्यदन्त्यस्तदुपासितव्यम्

महाना. ८।१६

यत्पुरुषं व्यवधुः कतिधा व्यक-

ल्पयन् [अ.अ. ८।४।१९

मै. १०।९०।११+

[वा. सं. ३१।१०+पु.सू. ११

चिन्त्यु. १२।५

यत्पुरुषेण इविषा देवा यज्ञमतन्वत

[अ. अ. ८।४।१८।६=

मै. १०।९०।११+

[वा. सं. ३१।१४+पु.सू. १६

चिन्त्यु. १२।३

यत्पुरुषेणेत्यनया सृष्टियज्ञः समी-

रिज्ञः । अनेनैव च मन्त्रेण

मोक्षश्च समुदाहृतः

मुद्रलो. १।६

यत्पूर्णातन्वैकबोधस्तद्ब्रह्मैवाहम-

स्मीति कृतकृत्यो भवति

प. ई. ९

यत्पृथिव्याऽऽजस्वमान्तरिक्षे

विरोदसी । इमाऽस्तदापो

वरुणः पुनात्वघमर्षणः

महाना. ६।४

यत्पौर्णमास्ये तत्पौर्णमास्यम्

कठव. ३

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्यो-

तिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न

ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे

मनः... [१ शिवसं. ३+

२ शि. सं. ४

यत्प्रत्यक्षं तद्दे इति

शौनवी. ४।७

यत्प्रथमं तच्चतुररं यद्वितीयं तच्चतु-

ररं यत्तृतीयं तच्चतुररं यच्चतुर्थं

तत्पञ्चारं यत्पञ्चमं तत्पञ्चारं

यच्छष्ठं तदष्टारं तदेतानि षडेव

नारसिंहानि चक्राणि भवन्ति

शु. पट्टच. १

यत्प्रथमं तदाचक्रं यद्वितीयं तत्सु-

चक्रं यत्तृतीयं तन्महाचक्रं

...तदेतानि षडेव नार-

सिंहानि चक्राणि भवन्ति

शु. पट्टच. १

यत्प्रथमं तद्वान्तरवलयं भवति ।

यद्वितीयं तन्मध्यमं वलयं

...तदेतानि त्रीण्येव वलयानि

भवन्ति

शु. पट्टच. ३

यत्प्रथमं तद्द्वये, यद्वितीयं

तच्छिरसि, यत्तृतीयं तच्छि-

खायां, यच्चतुर्थं तत्सर्वेष्वङ्गेषु

यत्पञ्चमं तत्सर्वेषु यत् षष्ठं

तत्सर्वेषु देशेषु

शु. पट्टच. ७

(सहोवाच-) यत्प्रथमं नाम्यकीर्तयो

नामग्राहमथ नानुवस्य इति

शौनवी. १।५

(अथ) यत्प्रथमास्तमिते

तन्निबन्धम्

ब्राह्मो. २।१४६

(अथ) यत्प्रथमोदिते स प्रस्तावः छान्दो. २।९।३

यत्प्रदक्षिणं प्रक्रमन्ति तेन पाप्मान-
मवधुन्वन्ति

सहवै. २

यत्प्रपदाभ्यां प्रापयत ब्रह्मेणं पुरुषं
तस्मात्प्रपदे...

१ ऐत. १।४।१

यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति, तद्विजि-
ज्ञासस्व, तद्ब्रह्मेति

तैत्ति. ३।१

यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति, तं मामेव
विदित्वोपासीत

भस्मजा. २।५

(अथ) यत्प्रशशस्सतुः कर्म हेव
तत्प्रशशस्सतुः पुण्यो वै पुण्येन

बृह. ३।२।१३

कर्मणा भवति पापः पापेन
यत्प्राक्सवनेभ्यः सैकाविधा

त्रीणि सवनानि यदूर्ध्वं
सा पञ्चमी

१ ऐत. ३।३।४

यत्प्राक्चक्षीतिभ्यः सैकविधा
यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः

१ ऐत. ३।४।३

प्रणीयते । तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि
तेदं यदिदमुपासते

केनो. १।९

यत्प्राणैः प्रतितिष्ठसि (मा.पा.)

प्रश्नो. २।७

यत्प्रातरनुवाको यत्प्रलगं यदाज्यं
यन्मरुत्वतीयमिति

छाग. २।२

यत्प्रातर्मध्यन्दिनं सायं च तानि
सवनानि

महाना. १।८।१

यत्प्रातः सोऽयं प्रातः (होमः)

कंठरु. ३

यत्प्रियमानन्दं तदेतत्सर्वाकारा

महात्रिपुरसुन्दरी

बह्वचो. ३

यत्प्र कालमकालं वा निश्चयः

संशयो नहि

ते. विं. ५।१४

यत्प्र काले त्वनावृत्तिः

भ. गी. ८।२३

यत्प्र कुण्डलिनी नाम पराशक्तिः

प्रतिष्ठिता [यो. शि. ९।६+

वराहो. ५।५१

यत्प्र कुत्र स्थितस्य शिरसि व्योम-

ज्योतिर्दृष्टं चेत्स तु योगी भवति

अद्वयता. ३

यत्प्र कुत्रापि ज्ञियते देहान्ते देवः

परमं ब्रह्म तारकं व्याचष्टे

नृ. पू. १।७

यत्प्र कुत्रापि वा काश्यां मरणे स

महेश्वरः । जन्तोर्वक्षिणकर्णे तु

मत्तारं समुपाविशेत्

मुक्तिको. १।२०

यत्प्र कुत्रापि वा नादे लगाति प्रथमं

मनः । तत्रतत्र स्थिरीभूत्वा

तेन सार्धं विलीयते

ना. वि. ३८

यत्प्र क चार्या वाचो भाषन्ते

विदुरेनं तत्र

३ ऐत. २।५।३

यत्प्र क चैति तदेव प्रतितिष्ठत्येवं

विद्वान्

बृह. १।२।३

यत्प्र कापि स्थितं च यत्तन्नहि धार्यं

संस्कारसहितं धार्यम् (भस्म)

बृ. जा. ३।१

यत्प्र गत्वा धाम्नि लयं यान्ति

योगीन्द्राः

सामर. ५५

यत्प्र गत्वा न निवर्तन्ते योगिनः

(तत्परमं पदं) [नृ. पू. ५।१६+

ना. प. ९।२२

यत्प्र गुरुस्तत्र शिवः । शिवगुरुस्व-

रूपो महेश्वरः

रुद्रोप. ३

यत्प्र चतुर्धा मुक्तयः सेव्यमाना

आसते

सामर. ९२

यत्प्र चन्द्रस्तन्नक्षत्राणि यत्प्र वा

नक्षत्राणि स चन्द्रमास्ते द्वे

योनिस्तदेकं मिथुनम्

सावित्र्यु. ७

यत्प्र च मथुरा गोकुलं द्वारका

वैकुण्ठपुरी श्वेतपुरी रामपुरी

यमपुरी नरसिंहपुरी नरनारा-

यणपुरी कुबेरपुरी गणेशपुरी

शक्रपुरी एता देवतास्तिष्ठन्ति

राधोप. ४।१

यत्प्र चिन्मात्रकलना यात्यपहव-

मञ्जसा । तच्चिन्मात्रमखण्डैक-

रसं ब्रह्म भवान्यहम्

ते. विं. शीर्षक

यत्प्र चैवात्मनाऽऽत्मानं [यो. शि. ३।१४+ भ. गी. ६।२०

यत्प्र जाग्रति शुभाशुभं निरुक्त-

मस्य देवस्य... परापरं ब्रह्म

ब्रह्मो. १

यत्प्र जीवन्ति मूढास्तु तत्रासौ

मृत एव वै (योगी)

यो. शि. १।४६

यत्प्र ज्योतिरजसं यस्मिँल्लोके-

ऽभ्यर्हितं

आ. प्र. १

यत्प्र तु व्यञ्जनवन्तः प्रयुज्येरन्

क्षोद्युकावध्या इनावप्रजसा-

बुद्धावृजमानौ स्याताम्

संहितो. ३।४

(अथ) यथिगुणं चतुरशीति-
लक्ष्योनिपरिणतं भूतत्रिगुण-
मेतद्वै नानात्वस्य रूपम् मैत्रे. ३।३

यत्र त्वस्य सर्वमात्मेवामृतत्केन
कं पश्येत... बृह. ४।५।१५

(अथ) यत्र देव इव राजेवाह-
मेवेदं सर्वोऽस्मीति मन्येत
सोऽस्य परमो लोकः बृह. ४।३।२०

यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये
धामान्यभ्यैरयन्त महाना. २।५

(अथ) यत्र द्वैतीभूतं विज्ञानं
तत्र हि शृणोति पश्यति
जिघ्रति रसयते चैव स्पर्शयति
सर्वमात्मा जानीतेति मैत्रा. ६।७

यत्र धर्ममधर्मं वा शुद्धं वाऽशुद्ध-
मणवपि ते. विं. ५।१३

यत्र धर्मा न वर्तन्ते विवेकस्तत्र
नोच्यते अ. शां. ६०

यत्र न चन्द्रमा भाति, यत्र न
नक्षत्राणि भान्ति, यत्र नाग्नि-
र्बहति, यत्र न मृत्युः प्रविशति,
यत्र न दुःखं...परमं पदं.. नृ. पू. ५।१६

यत्र न जरा न मृत्युर्न कालो न
भङ्गो न जयो न विवादो न
हिंसा न शान्तिर्न स्वप्न एवं
लीलाकामशरीरी स्वविनो-
दार्थं भक्तैः सहोत्कण्ठितैस्तत्र
क्रीडति कृष्णः राबोप. ४।२

यत्र न मोहो न दुःखं ग. शो. ५।६

यत्र न सूर्यस्तपति, यत्र न वायुर्वाति नृ. पू. ५।१६

यत्र नान्यत्पश्यति नान्यकृष्णोति
नान्यद्विजानाति स भूमा छांदो. ७।२४।१

यत्र नाभ्युदितं चित्तं तद्वै सुख-
मकुत्रिमम् अ. पू. ५।४५

यत्र नासन्नं सद्रूपं नाहं नाप्यन-
द्वद्वतिः । केवलं क्षीणमनन
आस्तेऽद्वैतेऽतिनिर्मयः

[अथयुप. ४१+

वराहो. ४।१७

यत्र निशितासिशतपातनमुत्पल-
ताडनवत्सौढव्यं... नाबहेल-
नया भवितव्यमेवं दृढवैराग्या-
द्वोषो भवति महो. ४।२६

(अथापि) यत्र नील इवामिर्दृश्यते
यथा मयूरग्रीवा ३ ऐत. २।४।६

यत्र नृसिंहादयो देवतां आवरणानि राबोप. ४।२

यत्र पुरुषस्तत्त्वी यत्र वा स्त्री
स पुरुषस्ते द्वे योनिस्तदेकं

मिथुनम् सावित्र्यु. ९

यत्र पार्थो धनुर्धरः भ. गी. १८।७७

यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः चित्त्यु. १२।७

[+महावा.४+पु.सू.१६+

[मं. १०।९०।१६+

यत्र बिन्दुश्च नादश्च सोमसूर्याग्नि-
वायवः । इन्द्रियाणि च सर्वाणि

लभ्यं गच्छंति सुव्रत यो. शि. ३।११

यत्र (विद्यायां) ब्रह्म प्रतिष्ठितम्,
विश्वेदेवाः प्रतिष्ठिताः, यस्तां

न वेद किमन्यैर्वेदैः करिष्यति अव्यक्तो. ३

यत्र ब्रह्माण्डानि कोटिशो विराज-
मानानि राजन्ते सामर. ५५

यत्र ब्रह्माण्डान्युत्पद्यन्ते लीयन्ते सामर. ५

यत्र ब्रह्मा पवमानेति षट् ३ ऐत. २।४।४

यत्र आर्गवी यमुना समुद्रमसृत-
मयं बृन्दावनानि नीलपर्वतः

गोवर्धनसिंहासनं प्रासादो

अणिमण्डपो विमलादिषोडश-

चण्डिकागोप्यः राबोप. ४।२

(अथापि) यत्र भूमिं ज्वलंतीमिव

पश्येत तदप्येवमेव विद्यादिति

प्रत्यक्षदर्शनानि ३ ऐत. २।४।६

यत्र मनस्त्वद्वाग्यत्र वा वाक् तन्म-

नस्ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ९

यत्र मन्त्रमन्त्रं वा विद्याऽविद्या न.. ते. वि. ५।१४

यत्र यज्ञस्तत्र छन्दांसि यत्र वा

छन्दांसि स यज्ञस्ते द्वे योनि-

स्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ९

यत्र यत्र धृतो वायुरक्षे सोमादि-
दूषिते । धारणादेव महत्तस्त-
त्तदारोग्यमभुते

त्रि. आ. १२०

यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र परं
पदम् [पैङ्गलो. ४।११+

सौभाग्य. २३

यत्र यत्र मनो याति ब्राह्मणस्तत्र
वर्धनात् । मनसा धारणं चैव
धारणा सा परा मता

ते. नि. १।३५

यत्र यत्र मनो याति न निवार्य
मनस्वदा । अवारितं क्षयं
याति वार्यमाणं तु वर्तते (वर्धते)

अमन. २।७०

यत्र यत्र धृतो ज्ञानी येन वा केन
सुख्यता । यथा सर्वगतं व्योम
तत्र तत्र लयं गतः

पैङ्गलो. ४।१३

यत्र योगेश्वरः कृष्णः

भ. गी. १८।७८

यत्र रश्मिभिर्यो न तपतः

ग. शो. ५।६

यत्र रसावात्मानमुपसंहृत्याजुगुप्सत्

सौवको. ४।५

यत्र लक्ष्मीर्जम्बवती राधिका
विष्णोः चन्द्रावली सरस्वती
ललितादिरिति

राधोप. ४।१

यत्र लोकाः न लोका देवा न देवा
देवा न देवा यज्ञा न यज्ञा
लोका न यज्ञा... एकमेव तत्परं

ब्रह्म विभाति निर्वाणम्

ब्रह्मो. ३

यत्र वरुणस्तदापो यत्र वा आप-
स्तद्वरुणस्ते द्वे योनिस्तदेकं
मिथुनम्

सावित्र्यु. २

यत्र वर्णा न वर्तन्ते विवेकस्तत्र
नोच्यते

अ. शां. ६०

यत्र वा अस्य सर्वमात्मैवाभूत्..

बृह. २।४।१४

(अथ) यत्र वागुबारयत्युपैव
तत्र न्येतीत्येवमेवैतत्

बृह. ४।१।५

यत्र वा अग्निविद्यं स्यात्तत्रान्योऽन्यत्
पश्येत्

बृह. ४।१।३१

यत्र वा पितुस्तत्पुत्रस्यैवतदुक्तं
भवति

१ ऐत. १।८।१

यत्र वा पुनर्वाग्निनवाति(न)भान्ति

ग. शो. ५।६

यत्र वायुस्तदाकाशो यत्र वा आ-
काशस्तद्वायुस्ते द्वे योनिस्तदेकं
मिथुनम्

सावित्र्यु. ३

यत्र विद्याविद्ये न विदामः

गोपालो. १।३३

यत्र त्रिराण्नुसिंहोऽवभासते तत्र
खलूपासते

अन्यक्तो. ९

यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् । यस्मि-
न्निदं संचविचैति सर्वं स
ओतः प्रोतश्च विशुः प्रजासु

महाना. २।३

यत्र वृक्षा आधिदैविका देवा एव
भवन्ति

सामर. ६

यत्र वैकुण्ठेऽनेकशो भक्ता जयन्त-
कुमुदजयविजयगरुडाद्याः शतशः
पार्षदाः राजमाना भवन्ति

सामर. ९३

यत्र सङ्कल्पनं तत्र मतोऽस्तीत्यत्र-
गम्यताम्

महो. ४।५२

यत्र सप्तावरणानि तेजोमयानि

सामर. ५

यत्र समुद्रतीरे च निरन्तरं काम-
धेनुवृन्दम्

राधोप. ४।२

यत्र सर्वमात्मैवाभूत्तत्र कुत्र वा
मनुते । कथं वा गच्छतीति

गोपालो. १।१०

यत्र क्षुप्ता जज्ञा नित्यं प्रबुद्धस्तत्र
संयमी । प्रबुद्धा यत्र ते विद्वान्सु-
षुप्तिं याति योमिराद्

ब्राह्म. २५

यत्र सुप्तो न कञ्चन कामयते
तत्सुषुप्तम्

श्री. नि. ता. ३।९

यत्र सुप्तो न कञ्चन कामं कामयते
न कञ्चन स्वप्नं पश्यति

बृह. ४।१।१९

यत्र सुप्तो न कञ्चन कामं कामयते
... स्वप्नं (स्वप्ने) पश्यति तत्सुषुप्तम् माण्ड. ५

गणेशो. १।३+नृ. पू. ४।२

यत्र सुप्तो न कञ्चन कामं कामयते
न कञ्चन स्वप्नं पश्यति

सुबालो. ४।४

यत्र सुहार्दः सुकृतो मदन्ते त्रिहाय
यत्र रोगं तन्वां स्वायाम्

सहवै. १०

यत्र स्तनयितुस्तद्विद्युयत्र वा
विद्युत्तत्र स्तनयितुस्ते द्वे

सावित्र्यु. ५

योनिस्तदेकं मिथुनम्

यत्र ह कच पुत्रस्य तस्मिन्, यत्र

वा पितुस्तत्पुत्रस्य

१ यत्. १।८।१

यत्र हि द्वैतमिव भवति तदितर

इतरं जिघ्रति

बृह. २।४।१४

यत्राभिर्मृत्युर्न दहति (न) प्रविशति

ग. शो. १।६

यत्राभिस्तत्र पृथिवी यत्र वै पृथिवी

तत्राभिस्ते द्वे योनिस्तदेकं

मिथुनम्

सावित्र्यु. १

यत्रात्सना सृष्टिलयौ जीवन्मुक्ति-

दशागतः । सहजः कुरुते योगं

सेयं निष्पत्तिभूमिका..

वराह. ५।७५

यत्रादितस्तदयौ यत्र वा द्यौस्तदा-

दितस्तदेवोभिस्तदेकमिथुनम्

सावित्र्यु. ६

यत्राद्वैतीभूतं विज्ञानं कार्यकारण-

कर्मनिर्मुक्तं निर्वचनप्रज्ञौषम्यं

निकामाख्यं किं तद्वज्रवाच्यम्

मैत्रा. ६।७

यत्रान्तर्याम्यादिभेदस्तत्त्वतो न हि

युज्यते । निर्मेदं परमाद्वैतं स्व-

मात्रमवशिष्यते

अध्यात्मो. शीर्षकं

यत्रान्यत्पदस्यत्यन्यच्छृणोत्यन्य-

द्विजानाति तदल्पम्

छांदो. ७।२४।१

यत्रापहवतां याति स्वाविद्यामद-

विभ्रमः । तपिपाशाग्राग्रापाख्यं

स्वमात्रमवशिष्यते

त्रि. म. ना. शीर्षकं

यत्रायुः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा

गुण्ड. १।२।११

यत्रायं पुरुषो म्रियते उद्विग्नः

प्रपाः प्राप्नन्त्याहो ३ वेति..

बृह. ३।२।११

यत्रायं पुरुषो म्रियते किमेनं न

जहातीति नामेत्यनन्तं वै

नामानन्ता विभेदेवा ज्ञानन्त-

मेव स तेन लोकं जयति

बृह. ३।१।१२

यत्रायं पुरुषो रमते तत्रायं रसो

म्रियति

सामर. ५

यत्रायं मणिमानं ज्येति

बृ. उ. ३।३।३६

यत्रारि प्राक्षानस्यान्वेयणा

तदेवमर्हति

छांदो. ४।१।१०

यत्रात्माकृतिमिमात्रो विद्यते न

कदाचन । इतिहासस्य आलम्बं

निरात्मनः हरिं भजे

निरा. शीर्षकं

यत्रासंभिजतां याति स्वातिरिक्त-

मिदावतिः । संविन्मात्रं वरं

महा तत्स्वमात्रं विजृम्भते

स्कन्दो. शीर्षकं

यत्रासां दिशामन्तस्तद्भयान्कार

बृह. ३।१।१०

यत्रासौ केशान्तो विवर्तते

तेजि. १।५।११

यत्रासौ संस्थितः कृष्णः क्षीभिः

शक्त्या समाहितः

गोपालो. ३।२

यत्रास्तमितशायी स्यान्निरभि-

रनिकेतनः । यथा लब्धोपजीवी

स्यान्मुनिर्दान्तो जितेन्द्रियः

ना. प. ५।२६

यत्रास्ति वासना क्षीना तत्सुष्ठु

न सिद्धये

अ. पू. ९।१६

यत्रास्ते च शुक्लान्दिव्ययोग-

प्रदायकः ।... तेनेत्यः

सम्यगभ्यासं कुर्यादादात्मतन्निहतः योगा. २।१४

यत्रास्य पुरुषस्य मृतस्याभि

वागप्येति

बृह. ३।३।१३

यन्मिदं प्राप्नुवताः सप्तदश

एकत्रिंश इति कास्यः स्वभावात्

छांदो. २।११+४।१

यत्रैतत्कर्णावपिगृहं निनवमि

तदधुरिवमिश्रितं ज्वलत उपधू-

णोति तदेतद्दृष्टं च सुष्ठु वेत्सु-

पासीत, चक्षुष्यः सुष्ठु भवति

छांदो. १।१३।८

यत्रैतत्पुरुषः स्वर्गो मरिष्यन्नावस्थं

न्येत्यसंमोहं नैति तदाहु-

रुदक्रमीचितम्

को. व. २।३

(अथ) यत्रैतत्पुरुषः पिबन्निति

तेजः पचन्तीति नयते

छांदो. ६।८।५

यत्रैतत्पुरुषः सुप्तः स्वप्नं प्राप्नुवन्

पश्यत्यस्मिन्प्राण एवैकधा

भवति

को. व. ३।३

यत्रैतत्पुरुषः स्वपिति नाम सदा

सोम्य नाम तदा संप्रपन्नो भवति

छांदो. ६।८।१

यत्रैतत्पुरुषोऽभिधिम्यति सामास

एव तदक्षितं जयन्ते

छांदो. ६।८।३

(अथ) यत्रैतदक्षिमानं नीलो

भवति तदाक्षितमासीनामाहु-

र्जनासि मां जानासिमासिति

छांदो. ८।५।४

यत्रैतदधुवतः एतदागात्

को. व. ३।१८

(अथ) यत्रैतदस्माच्छरीरादु-
त्क्रामत्यथैतरेव रश्मिभिरुर्ध्व-
माक्रमते

छांदो. ८।६।५

यत्रैतदस्मिच्छरीरे सत्स्पर्शेनोष्णि-

मानं विजानाति तस्यैषाश्रुतिः

छांदो. ३।१३।८

यत्रैतदित्येत्यभिपश्यति

आर्षे. ९।१

यत्रैतदूर्ध्वोद्धासी भवति

बृह. ४।३।३५, ३८

यत्रैतदेवास्तत्प्राप्य तदसृतो

भवति, यदसृता देवाः

को. त. २।१४

(अथ) यत्रैतदाकाशमनु विषणं

चक्षुः स चाक्षुषः पुरुषः

छांदो. ८।१२।४

(अथ) यत्रैनं जन्तीव जिनतीव

हस्तीव विच्छाययति

बृह. ४।३।२०

यत्रैव जातं सकलेवरं मनस्तत्रैव

लीनं कुरुते स योगात् । स

एव मुक्तोहिनिरहङ्कृतिः सुखी..

यो. शि. १।१२३

यत्रैव विद्वद्ब्रह्मा ब्रह्माणा (मा.)

छां. उ. ४।१७।९

यत्रैव विद्वद्ब्रह्मा भवति

छांदो. ४।१७।८, ९

यत्रैव एतद्बालाके पुरुषोऽशयिष्ट

यत्रैतदभूद्यत एतद्गाद्विता

नाम हृदयस्य नाड्यः

को. त. ४।१९

यत्रैव जगदाभासो दर्पणान्तः पुरं

यथा । तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा

कृतकृत्यो भवानस

अध्यात्मो. १०

यत्रोपरमतेचित्तं निरुद्धयोगसेवया ।

यत्रैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि

तुष्यति [यो. शि. ३।१४+]

म. गी. ६।२०

यत्रोपाकृते प्रावरजुवाकेन पुरा

छां. उ. ४।१६।४

यत्सकललोकरक्षणचक्रं यन्माया-

त्मा तच्चतुर्थस्य

नृ. पद. ६

यत्सकदुपस्पृशति तेन सामानि...

प्रीणाति

सहस्र. १५

(अथ) यत्सङ्गवेलायां स आदि-

स्तदस्यवयास्त्यन्वायत्तानि

छांदो. २।९।४

यत्सचरति स वायुः [गर्भो. १+]

शारीरको. १

यत्सचरत्युपविशत्युत्तिष्ठते

च स प्रवर्यः

महाना. १८।१

यत्सत्यं ब्रह्म तद्विष्णुं नृणाम्

महो. ४।१३२

यत्सत्यं तदुपास्यताम्

पञ्चलो. ४।१७

यत्सत्यं वा विष्णुरुच्योगः सूर्यो

गौर्वा विष्णुर्विशत् विश्वं, विश्वं

सन्दधानः तद्विश्वं विष्णवे विश्व-

रूपाय स्वाहा

पारमा. ४।५

यत्सत्यं विज्ञानमानन्दं निष्क्रियं

निरञ्जनं सर्वगतं सुसूक्ष्मं

सर्वतोमुखमनिर्देश्यममृतमस्ति

तदिदं निष्कलं रूपम्

शांडिल्यो. ३।२

यत्सत्त्वमुभयोरनुगोप्ता तत्सत्यं

सत्यपदाय सत्याय स्वाहा

पारमा. ४।९

(अथ) यत्सत्रायणमित्याचक्षते

ब्रह्मचर्यमेव तद्ब्रह्मचर्येण ह्येव

सत आत्मनश्चाणं विन्दते

छांदो. ८।५।२

यत्सप्तभूमिकाविद्यावेद्यानन्दकले-

वरम् । विकलेवरकैवल्यं राम-

चन्द्रपदं भजे

अक्षु. शीर्षिके

यत्सप्ताज्ञानि मेधया तपसाऽजन-

यत्पितेति मेधया हि तपसा

जनयत्पितैकमस्य साधारणमि-

तीदमेवास्य तत्साधारणमज्ञं

यदिदमद्येत

बृह. १।५।२

यत्सप्ताज्ञानि मेधया तपसाऽजन-

यत्पिता । एकमस्य साधारणं द्व

देवानभाजयत् । त्रीण्यात्मने-

ऽकुरुते पशुभ्य एकं प्रायच्छत्

बृह. १।५।१

यत्समत्वं तयोरत्र जीवात्मपरमा-

त्मनो...समाधिरभिधीयते

सौभाग्य. २०

यत्समाधौ परं ज्योतिरनन्तं

विश्वतौमुखम् । तस्मिन्दृष्टे

क्रियाकर्म यातायातो नविद्यते

यो. चू. १।३

यत्समूलमावृद्धेयुर्वृद्धं न पुनरामयत्

बृह. ३।९।३३

(अथ) यत्समुद्रमिदं तस्याजं

मेत्रा. ६।३६

(अथ) यत्सम्प्रति मध्यन्दिने स

उद्गीयस्तदस्य देवा अन्वायत्ताः

छांदो. २।९।५

यत्सम्मितमनु संयन्ति प्राणिन-

स्तन्मे भनः शिवसङ्कल्पमस्तु

२ शिवसं. ३

यत्सर्वनिष्ठमजरं समस्तं

पारमा. १।८

यत्सर्वस्य सौमोऽमेव जनिता

विधाधिको ब्रह्मो महर्षिः

अस्यजा. ३।५

(अथ) यज्ञैतदस्माच्छरीरादु-
त्क्रामत्यथैतरेव रश्मिभिरुर्ध्व-
माक्रमते

छांदो. ८।६।५

यज्ञैतदस्मिच्छरीरे सत्स्पर्शेनोष्णि-

मानं विजानाति तस्यैषाश्रुतिः

छांदो. ३।१३।८

यज्ञैतदित्येत्येत्यमिपश्यति

आर्वे. ९।१

यज्ञैतदृचोच्छासी भवति

बृह. ४।३।३५, ३८

यज्ञैतदेवास्तत्प्राप्य तदमृतो

भवति, यदमृता देवाः

कौ. त. २।१४

(अथ) यज्ञैतदाकाशमनु विषण्णं

चक्षुः स चाक्षुषः पुरुषः

छांदो. ८।१२।४

(अथ) यज्ञैतं ज्ञन्तीव जिन्तीव

हस्तीव विच्छाययति

बृह. ४।३।२०

यज्ञैव जातं सकलेवरं मनस्त्रैव

लीनं कुरुते स योगात् । स

एव मुकोदिनिरहङ्कृतिः सुखी..

यो. शि. १।१२३

यज्ञैर्विद्वद्भवायुषा ब्रह्माणा (मा.)

छां. उ. ४।१७।९

यज्ञैर्विद्वद्भा भवति

छांदो. ४।१७।८, ९

यज्ञैव एतद्वालाके पुरुषोऽशयिष्ठ

यज्ञैतदभूयत एतदगाद्धिता

नाम हृदयस्य नाड्यः

कौ. त. ४।१९

यज्ञैव जगदामासो दर्पणान्तः पुरं

यथा । तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा

कुतश्चेत्यो भवानव

अध्यात्मो. १०

यत्रोपरमत्तैचित्तं निरुद्धयोगसेवया ।

यत्रचैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि

तुष्यति [यो. शि. ३।१४+

अ. गी. ६।२०

यत्रोपाकृते प्रातरनुवाकेन पुरा

छां. उ. ४।१६।४

यत्सकललोकरक्षणचक्रं यन्माया-

त्मा तच्चतुर्थस्य

नृ. बद्ध. ६

यत्सकदुपस्पृशति तेन सामानि...

प्रीणाति

सहवे. १५

(अथ) यत्सङ्गवैलायां स आदि-

स्तवस्यवयास्थन्यायत्तानि

छान्दो. २।९।४

यत्सञ्चरति स वायुः [गर्भो. १+

शारीरको. १

यत्सञ्चरत्युपविशत्युत्तिष्ठते

च स प्रवर्ग्यः

महाना. १८।१

यत्सत्यं ब्रह्म तद्विस्मृतं नृणाम्

महो. ४।१३२

यत्सत्यं वदुपास्यताम्

पैङ्गलो. ४।१७

यत्सत्यं वा विष्णुरुचोमाः सूर्यो

गौर्वा विष्णुर्विशत् विश्वं, विश्वं

सन्दधानः तद्विष्यं विष्णवे विश्व-

रूपाय स्वाहा

पारमा. ५।५

यत्सत्यं विज्ञानमानन्दं निष्क्रियं

निरञ्जनं सर्वगतं सुसुक्ष्मं

सर्वतोमुखमनिर्देश्यममृतमस्ति

तदिदं निष्कलं रूपम्

शाङ्ख्यो. ३।२

यत्सत्त्वमुभयोरनुगोप्ता तत्सत्यं

सत्यपदाय सत्याय स्वाहा

पारमा. ४।९

(अथ) यत्सत्रायणमित्याचक्षते

ब्रह्मचर्यमेव तद्ब्रह्मचर्येण ह्येव

सत आत्मनश्चाणं विन्दते

छान्दो. ८।५।३

यत्सप्तभूमिकाविद्यावेद्यानन्दकले-

वरम् । विकलेवरकैवल्यं राम-

चन्द्रपदं भजे

अद्व्यु. शीर्षके

यत्सप्ताज्ञानि मेधया तपसाऽजन-

यत्पितेति मेधया हि तपसा

जनयत्पितैकमस्य साधारणमि-

तीदमेवास्य तत्साधारणमज्ञं

यदिदमद्येत

बृह. १।५।३

यत्सप्ताज्ञानि मेधया तपसाऽजन-

यत्पिता । एकमस्य साधारणं द्व

देवानभाजयत् । त्रीण्यात्मने-

ऽङ्कुरत पशुभ्य एकं प्रायच्छत्

बृह. १।५।१

यत्समत्वं तयोरत्र जीवात्मपरमा-

त्मनो...समाधिरभिधीयते

सौभाग्य. २०

यत्समाधौ परं व्योतिरनन्तं

विश्वतोमुखम् । तस्मिन्दृष्टे

क्रियाकर्म यातायातो नविद्यते

यो. च. १।३

यत्समूलमावृद्धेयुर्वर्द्धं न पुनराभवत्

बृह. ३।९।३३

(अथ) यत्समुद्रमिदं तस्याज्ञं

मैत्रा. ६।३६

(अथ) यत्सम्प्रति मध्यन्दिने स

उद्गीथस्तवस्य देवा अन्वायन्ताः

छान्दो. २।९।५

यत्सन्मितमनु संयन्ति प्राणिन-

स्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु

२ शिवसं. ३

यत्सर्वनिष्ठमजरं समस्तं

पारमा. १।८

यत्सर्वस्य सौमोऽग्नेव जनिता

विद्याधिको ब्रह्मो महर्षिः

भस्मजा. २।५

यत्सर्वहृदयागारं यत्र सर्वं प्रतिष्ठि-
तम् । वस्तुतो यन्निशाचारं वासु-

देवपदं भजे

वासुदे. शीर्षकं

यत्सर्वशास्त्रासिद्धान्तं यत्सर्व-

हृदयानुगम्

अ. पू. ३।२१

यत्सर्वं चाप्यसर्वं च यत्सर्वं

तदसौ स्थितः

अ. पू. ३।२३

यत्सर्वं तदुद्यम्

पं. ब्र. १

यत्सर्वं परिपश्यतीति सौक्ष्म्यात्

सूर्यता. १।२

यत्सर्वं सर्वगं वस्तु यत्सर्वं

तदसौ स्थितः

अ. पू. ३।२२

यत्सर्वस्वरसमिधावान्याशाम्

सहवै. ९

यत्सर्वस्वरं वत्स्यथ अथ वेदिष्य-

थेति । ते ह संवत्सरमूषुः

छाग. ४।३

यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म य आत्मा

सर्वान्तरत्नं मे व्याचक्ष्व

बृह. ३।४।१

यत्साक्षात्प्राप्यते स्थानं

अ. गी. ५।५

यत्साक्षुर्भवतिसाक्षुर्बतेत्येवतवाहुः

छान्दो. २।१।३

यत्साम्पराथै महति ब्रूहिन्स्तत्...

कठो. १।२९

यत्सामानि सोम पश्यः पवते...

तदेवांस्तर्पयति

सहवै. १४

यत्सामानि सोमाहुतिभिः...

तदेवांस्तर्पयति

सहवै. १४

यत्साम्यज्ञानकालाभित्वातिरिक्ता-

स्तिताभ्रमम् । करोति भस्म

भस्मजा. शीर्षकं

निश्शेषं तद्ब्रह्मैवास्मि केवलम्

महाना. १८।१

यत्सारं प्रातरत्ति तत्समिबम्

पारमा. ८।१

यत्सारभूतं सकलं धरित्री मोद-

प्रायेणानुभूतमनुविधं सूक्ष्मः

नृ. षट्च. ४

यत्सारस्वतं तत्तृतीयस्य, यस्य

यत्कामं देवं तत्तृतीयस्य

बा. मं. १०

यत्सौमिन्द्रो अकरोदनीकैः

नृ. षट्च. ६

यत्सुचकं यत्प्रियात्मा तद्वितीयस्य

छान्दो. ३।१९।२

यत्सुवर्णं च खा सोः

(ऋषीरे) यत्सुषिरं तदाकाशम्

शारीरको. १

[गमो. १+

यत्सुषुप्तञ्च जामतश्चैनञ्चकुम् तस्याव-

यजनमसि स्वाहा

महाना. १४।२

यत्सूक्ष्मं तन्मुकुटं [षट्को. १९+

अ. शिरः. ३।४

यत्स्वपन्तश्च जामतश्चैनञ्चकुम्

तस्यावयजनमसि स्वाहा

महाना. १४।२

यत्स्वयं प्राक्तनं कर्म पितामातेति

तत्स्मृतम्

शिवो. ७।१०९

यत्स्वरूपज्ञानिनः सर्वमविदितं

विदितं भवति । तत्सर्वं

परमरहस्यं कथितम्

त्रि. म. ना. ८।६

यत्स्वाध्यायमवीयीतैकामप्यृचं

यजुः साम वा तद्ब्रह्मयज्ञः

सन्तिष्ठते

सहवै. १४

यथा कटकशब्दार्थः पृथग्भावो न

काञ्चनात् । न हेमकटकात्तद्व-

द्रच्छच्छब्दार्थता परा

महो. ४।४६

यथा करी करेणैव पानीयं प्रपिबेत्

सदा । सुषुम्ना वज्रजालेन

पवमानं प्रसेत्तथा

यो. शि. १।११७

(ते होचतुः) यथाऽकला अव-

दन्तो वाचा प्राणन्तः प्राणेन

पश्यन्तश्चक्षुषा शृण्वन्तः

श्रोत्रेण विद्वान्सः

बृह. ६।१।८

यथाकर्म यथाविधं (स...प्रत्या-

जायते)

को. त. १।२

यथा कला अवदन्तः प्राणन्तः

प्राणेन पश्यन्तश्चक्षुषा शृण्वन्तः

श्रोत्रेण व्यायन्तो मनसैवमिति

प्रविवेश ह वाक्

छां. ५।१।८

यथाकामं प्रभान्पृच्छथ यदि

विज्ञास्यामः सर्वं ह वो

वक्ष्याम इति

प्रश्नो. १।२

(अतः) यथाकामं जपित्वा पश्येम

शरदः शतमिन्द्र जीवेत्याक्षिपः

प्रार्थयते

सन्ध्यो. ३

यथां कायस्तथा सर्वं चित्तदृश्य-

भवस्तुकम्

अ. छां. ३।६

यथाकारी यथाचारी तथा भवति,

साधुकारी साधुर्भवति, पाप-

कारी पापो भवति

बृह. ४।४।५

यथाऽऽकाशस्तथा देह आकाशा-

दपि निर्मलः

यो. शि. १।४२

यथाऽऽकाशस्थितो नित्यं भ. गी. ९।६
 यथाकाशं समुद्दिश्य गच्छति
 पथिकैः पथि । नानातीर्थाणि
 दृश्यन्ते नानामार्गास्तु सिद्धयः यो. शि. १।१५७
 यथाऽऽकाशे द्विचन्द्रत्वं तद्वत्सत्यं
 जगत्स्थितिः यो. शि. ४।१६
 यथाऽऽकाशौ घटाकाशो महाकाश
 इतीरितः । तथा भ्रान्तैः (न्तैः)
 द्विधा प्रोक्तो ह्यात्माजीविश्वरा-
 त्मना [अ. पू. ५।७७+ जा. व. १०।३
 यथा काश्यो वा वेदेहो बौधयुत्रं
 उज्ज्वं वनुरधिज्यं कृत्वा द्वौ
 बाणवन्तौ सपत्नाविव्याधितौ
 इस्ते कृत्वोपोत्तिष्ठेदेवमेवाहं
 त्वाद्वाभ्यां प्रश्नाभ्यामुपोदस्थां बृह. ३।८।२
 यथा कुमारको निष्काम आनन्द-
 मभियाति । तथैव देवः स्वस्व
 आनन्दमभियाति परब्र. २
 यथा कुमारो निष्काम आनन्द-
 मुपभाति.. ब्रह्मो. १
 यथा कुर्वति भास्त भ. गी. ३।२५
 यथा कूपः शतधारः सहस्रधारो बध्निः सङ्गताः १५।५
 यथा कृताय विजितायावदेया
 संयन्त्येवमेनं सर्वं
 तद्विश्वमेति छां. ४।१।४, ६
 यथा केशः सहस्रधामिन्न एव-
 मस्यैताहिता नामनाड्योऽन्त-
 र्द्वये प्रविष्टिता भवन्ति बृह. ४।३।३
 यथा केशः सहस्रधा मिन्नस्त्वया
 दिवा नाम नाड्यो भवन्ति सुबालो. ४।४
 यथा केशः सहस्रधा मिन्नस्त्वया-
 ऽणिज्ञा तिष्ठन्ति बृह. ४।३।२०
 (दिवा नाम नाड्यः) नि. भा. १९
 यथा कौशस्तथा जीवो यथा
 जीवस्तथा शिवः यो. शि. १९
 यथा कतुरस्मिँल्लोके पुरुषो भवति
 तपेयः प्रेत्य भवति स कतुं
 कुर्वीत ब्रह्मो. ३।९।४।१

यथाक्रमोऽयं परलोकास्थाने भवति
 तमाक्रममाक्रम्योद्यमान्प्राप्स्यन्
 आनन्दाश्च पश्यति बृह. ४।३।९
 (ते होचतुः) यथा ङीवा
 अप्रजायमाना रेतसा.. बृह. ६।१।१२
 यथाक्षणं यथाशास्त्रं यथादेशं
 यथासुखम् । यथासम्भवस-
 त्सङ्गमिमं मोक्षपथक्रमम् ॥
 तावद्विचारयेत् प्राज्ञो
 यावद्विश्रान्तिमात्मनि महो. ४।३।९
 यथा क्षारमयत्नेन प्राप्यते लवणं
 स्वयम् । ब्रह्मज्ञान्यप्ययत्नेन
 निर्वाणं मनसस्तथा अमन. १।३०
 यथा क्षुरः क्षुरचानेऽवहितः
 स्याद्विश्वम्भरो वा विश्वम्भर-
 कुलाये तं न पश्यन्ति बृ. व. १।४।७
 यथा खलु सोम्येमास्तिष्ठो
 देवंताः... (मा. पा.) छां. व. ६।८।६
 यथा खं श्येनमाश्रित्य याति
 स्वमालयमेवं सुषुप्तो ब्रूते ब्रह्मो. १
 यथा गङ्गा शिवसङ्गात्तथैव न सतकं
 वा ताप्यद्भुचित्वमेवाम् सि. शि. १०
 यथागन्धर्वनगरं यथावारिमन्थले
 यथा गुरुस्तथैवेशो यथैवेशस्तथा
 गुरुः । पूजनीयो महाभक्त्या
 न मेदो विच्यतेऽनयोः ब्र. पू. १।२०
 यथाऽग्निगर्भा पृथिवी यथा सौ-
 रिन्ध्रेण गर्भिणी । वायुर्विशां यो. शि. ५।५८
 यथा गर्भे एवं गर्भे दधामि ते बृह. ६।४.२२
 यथाऽग्निनाऽयःपिण्डो वाऽग्निभूतः
 कर्तुमिहैन्यमानो नानात्व-
 मुपेत्येवं वाच सत्त्वसौ श्रुतारक्ष-
 त्तः पुरुषेणाग्निभूतो गुणै-
 र्हैन्यमानो नानात्वमुपैति वैशा. ३।३
 यथाऽग्निर्दीप्तमन्यस्यो नोत्तिष्ठेन्मथनं
 विना । विना चाभ्यासव्यवहार-
 ज्ञानदीपस्तथा नहि
 [यो. शि. ६।७६+ योगकुं. ३।१४

यथाऽग्निर्देवानां ब्राह्मणो मनुष्याणां

मसन्तः ऋतूनामेवं गायत्री

छन्दसाम्

सन्ध्यो. १८

यथाऽग्निर्वै देवानामन्नादः सोमो-

ऽन्नमग्निर्वाग्भित्येवंवित्...

मैत्रा. ६।१०

यथाऽग्नेः क्षुद्रा विस्फुलिङ्गा व्युत्थर-

न्त्येवमेवास्मादात्मनः सर्वे

प्राणाः... व्युत्थरन्ति

बृह. २।१।२०

यथाऽग्नेर्ज्वलतो सर्वादिष्टो विस्फु-

लिङ्गान्निप्रतिष्ठेरन्नेवमेवैतस्मा-

दात्मनः प्राणा यथायतनं

विप्रतिष्ठन्ते [कौ. त. ३।३+

४।१९

यथा घटघटमध्ये बहुचन्द्रो-

ऽपि दृश्यते

अद्वैतो. ९

यथाङ्गारानपोह्य भस्मनि जुहुया-

त्तादृक्स्तस्यात्

छांदो. ५।२४।१

यथा च सरणंप्राप्य आत्माभवति.

कठो. ५।६

यथाऽचिरात् सर्वपापं व्यपोह्य

परात्परं पुरुषं याति विद्वान्

कैव. १

यथा वायुः पुष्करिणीं समिङ्ग-

यति सर्वतः

बृ. च. ६।१।२३

यथा जपाकुसुमसामिध्याद्रक्त-

स्फटिकप्रतीतिस्तदभावे शुद्ध-

स्फटिकप्रतीतिः

त्रि. म. ना. ३।७

यथा जले जलं क्षिप्तं क्षीरे क्षीरं

घृते घृतम् । अविशेषो भवेत्तद्व-

जीवात्मपरमात्मनोः

पैङ्गलो. ४।१०

यथा जलोकाऽप्रमथं नयत्यात्मानं

नयति परं सन्धय

ब्रह्मो. १

यथा जातरूपधरो निर्गन्धोनिष्प-

रिग्रहः... सञ्ज्यासेन देहत्यागं

करोति स परमहंसो नाम

जाबालो. ६

यथा जातरूपधरो निर्गन्धो निष्प-

रिग्रहस्तत्त्वब्रह्ममार्गे सन्धयर्षपक्षः

...सञ्ज्यासेनैव देहत्यागं करोति

स कुलकुलो भवति

ता. प. ३।८७

यथा जात्यन्तस्य रूपज्ञानं न विद्यते

तथा गुरूपदेशेन विना कल्पको-

टिभिस्तत्त्वज्ञानं न विद्यते

त्रि. म. ना. ५।४

यथा ज्ञात्यसि तच्छृणु

म. गी. ७।१३

यथा तथा वा भवतु क्षुपनायन-

कर्मणि । उपदिष्टे मम सुते

ब्रह्मणि त्वत्प्रसादतः

शु. ६. १।५

(अथ) यथा तप्तोर्विस्मर्पिस्तृण-

काप्रसंस्पर्शेनोज्ज्वलतीत्येवं

वाव खल्वसावप्राणाख्यः प्राण-

संक्षयशैवोज्ज्वलति

मैत्रा. ६।२६

यथा तमः सविदानुज्ञकरसो

ह्ययमात्मा चिद्रूप एव

नृसिंहो. २।७

यथा तरङ्गकलोलैर्जलमेव स्फुर-

त्यलम् । घटनाम्ना यथा

पृथ्वी पटनाम्ना हि तन्तवः

यो. सि. ४।१७

यथा तु कथा च भुवनं वा

भुवनं वा भूयादभ्याशमेव

यत्तथा स्यात् [३ ऐत. १।३।४+

१।४।२

यथा तु खलु सौम्येमास्तिष्ठो

देवताः पुरुषं प्राप्य त्रिवृषि-

वृदेकैका भवति

छांदो. ६।८।६

यथा तु खलु सौम्येमास्तिष्ठो

देवताः...(मा. पा.)

छां. च. ६।४।७

यथा तूली तुलाधारां... मनो-

वृत्तिस्तथाऽऽत्मनि

अमन. २।७४

यथा तृणाशिनो विवेकहीनाः

परप्रेष्याः... तथा सत्त्वामिनः

इव सर्वज्ञ ईशः पशुपतिः

जाबालो. ४

यथा तृतीयकाले तु सविः प्रत्याहरे-

त्प्रभाम् । तृतीयाङ्गस्थितो

योगी विकारं मानसं हरेत्

यो. नृ. १२।१

यथाऽऽदौ तथाऽऽत्मनि यथा

स्वप्ने तथा पितृलोके

कठो. ६।५

यथाऽऽदशो मूलेन च

म. गी. ३।२८

यथा दासं दग्धोऽग्निरविक्रमो

ह्ययमात्मा

नृसिंहो. २।७

यथाऽहौ दिक्कादित्य एवमिदं

शिरसि चक्षुः

३ ऐत. १।२।२

यथा दीपो निवातस्यः

म. गी. ६।१९

यथा दुन्दुभेः खं, तेन स ऊर्ध्वं

आक्रमते स आदित्यमागच्छति बृह. ५।१०।१

यथा देहान्तरप्राप्तेः कारणं भावना
नृणाम् । विषयं ध्यायतः पुंसो-

विषये रमते मनः

यो. शि. ३।२४

यथा द्यौरिन्द्रेण गर्भिणी, वायुर्विशां

यथा गर्भं पवं गर्भं दधामि ते

बृह. ६।४।२२

यथाधिकारवाङ्मयसेत्पूर्णदीक्षांलभेत्

गुह्यषोढा. १

यथाऽग्नीमहे स्वर्ग्या देवस्य हिता

भवति

संहितो. १।१

यथा ध्यानेन वैराग्यमैश्वर्यं

स्वस्य पूजनात्

रा. पू. १।५

यथा न जायते किञ्चिच्छायमानं

समन्ततः

अद्वैत. २

यथा नदी जायते सागर एकोऽपि

सागरप्रतिभासितः । तथा ब्रह्म

सर्वान्तरात्मा मध्ये प्रकाशितम्

अद्वैतो. ३

यथा नदीनां बहुवोऽनुवेगाः

भ. गी. ११।२८

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रा-

यणाः समुद्रं प्राप्यास्तं... (मा.)

मुण्डको. ३।२।८

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे

गच्छन्त्यस्तं नामरूपे विहाय ।

तथा विद्याज्ञानरूपाद्विमुक्तः

परात्परं जगदन्वामुपैति

गुह्यका. ३८

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं

गच्छन्ति नामरूपे विहाय । तथा

विद्याज्ञानरूपाद्विमुक्तः परात्परं

पुरुषमुपैति दिव्यम्

मुण्ड. ३।२।८

यथा नद्यः किङ्किणी कांस्यचक्रक-

मेकविः कुन्विका वृष्टिनिवाते..

भैत्रा. ६।२२

(सहोवाच) यथा नत्त्वं गौतम

मापराधास्तव च पितामहाः

बृह. ६।२।८

यथाऽनादिसर्वप्रपञ्चो दृश्यते,

नित्योऽनित्यो वेति संशय्येते

त्रि. म. ना. ३।२

यथाऽनादिसिद्धोऽयं जीवसङ्घः,

तथा मायाऽप्यनादिसिद्धा

भवति, सा त्रिविधा...

सामर. ९८

यथा नामी वाचकेन नाम्ना

योऽभिमुखो भवेत् । तथा

मीजातमको मन्त्रो मन्त्रिणो-

ऽभिमुखो भवेत्

रा. पू. ४।३

यथा नास्ति नभोवृक्षस्तथा नास्ति

जगत्स्थितिः

यो. शि. ४।१९

यथा निरङ्कुशो हस्ती कामान्प्राप्य

निवर्तते । अवारितं मनस्तद्वत्

स्वयमेव निलीयते

अमन. २।७१

यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयमेव

प्रशाम्यति । ग्राह्यभावे मनः-

प्राणो निश्चलज्ञानसंयुतः..

२ अवधू. ६

यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयमेव

प्रशाम्यति । ग्राह्यभावे...

त्रि. भा. २।१६३

यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयोना-

वुपशाम्यति । तथा वृत्तिक्षयाच्चित्तं

स्वयोनावुपशाम्यति

[भैत्रा. ६।३४+

भैत्रे. १।७

यथा निर्मितको जीवो जायते

त्रियतेऽपि वा । तथा जीवा

अमी सर्वे भवन्ति न भवन्ति च

भ. शां. ७०

यथा निर्वाणकाले तु दीपो दग्ध्वा

लयं ब्रजेत् । तथा सर्वाणि

कर्माणि योगीदग्ध्वा लयं ब्रजेत्

छुरिको. २३

यथा नु खलु सोम्येमास्तिस्रो

देवताः पुरुषं प्राप्य त्रिवृषिवृदे-

कैका भवति तन्मे विजानीहीति

छांदो. ६।४।७

यथा नु खलु सोम्येमास्तिस्रो

देवतास्त्रिवृषिवृदेकैका भवति

तन्मे विजानीहि

छांदो. ६।३।३

यथाऽनुशासनं यं यमन्तमभिकामा

भवन्ति यं जनपदं यं क्षेत्रमागं

तं तमेवोपजीवन्ति

छांदो. ८।१।५

यथान्तरं न भेदाः स्युः शिवकेशवयो-

स्तथा । देहो देवालयः प्रोक्तः

स जीवः केवलः शिवः

स्कन्दो. १०

(ते होचुः) यथा अन्धा अपश्यन्त-

श्चक्षुषा प्राणन्तः प्राणेन.. विद्वान्-

सो मनसा प्रजायमाना रेतसै-

वमजीविष्येति प्रविशेह ह चक्षुः

बृह. ६।१।९

यथाऽन्धा अपश्यन्तः प्राणन्तः

प्राणेन वदन्तो वाचा शृण्वन्तः

यथा देहान्तरप्राप्तेः कारणं भावना
नृणाम् । विषयं ध्यायतः पुंसो

विषये रमते मनः

यो. शि. ३।२४

यथा घौरिन्द्रेण गर्भिणी, वायुर्विशां

यथा गर्भं एवं गर्भं दधामि ते

बृह. ६।४।२२

यथाधिकारवाक्यसेत्पूर्णदीक्षांलभेत्

गुह्यषोढा. १

यथाऽधीमहे स्वर्ग्या देवस्य हिता

भवति

संहितो. १।१

यथा ध्यानेन वैराग्यमैश्वर्यं

स्वस्य पूजनात्

रा. पू. १।५

यथा न जायते किञ्चिज्ज्ञायमानं

समन्ततः

अद्वैत. २

यथा नदी जायते सागर एकोऽपि

सागरप्रतिभासितः । तथा ब्रह्म

सर्वान्तरात्मा मध्ये प्रकाशितम्

अद्वैतो. ३

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः

भ. गी. ११।२८

यथा नद्यः स्थन्दमानाः समुद्रा-

यणाः समुद्रं प्राप्यास्तं... (मा.)

मुण्डको. ३।२।८

यथा नद्यः स्थन्दमानाः समुद्रे

गच्छन्त्यस्तं नामरूपे विहाय ।

तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः

परात्परं जगदन्वाप्नुयैति

गुह्यका. ३८

यथा नद्यः स्थन्दमानाः समुद्रेऽस्तं

गच्छन्ति नामरूपे विहाय । तथा

विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं

पुरुषमुपैति दिव्यम्

मुण्ड. ३।२।८

यथा नद्यः किङ्किणी कांस्यचक्रक-

मेकविः कृन्धिका वृष्टिनिवाते..

मैत्रा. ६।२२

(सहोवाच) यथा नस्त्वं गौतम

मापराधास्तव च पितामहाः

बृह. ६।२।८

यथाऽनादिसर्वप्रपञ्चो दृश्यते,

नित्योऽनित्यो वेति संशय्येते

त्रि. म. ना. ३।२

यथाऽनादिसिद्धोऽयं जीवसङ्घः,

तथा मायाऽप्यनादिसिद्धा

भवति, सा त्रिविधा...

सामर. ९८

यथा नामी वाचकेन नाम्ना

योऽभिमुखो भवेत् । तथा

बीजात्मको मन्त्रो मन्त्रिणो-

ऽभिमुखो भवेत्

रा. पू. ४।३

यथा नास्ति नमोवृक्षस्तथा नास्ति
जगत्स्थितिः

यो. शि. ४।१९

यथा निरंकुशो हस्ती कामान्प्राप्य

निवर्तते । अवारितं मनस्तद्वत्

स्वयमेव निलीयते

अमर. २।७१

यथा निरिन्धनो बहिः स्वयमेव

प्रशाम्यति । ग्राह्याभावे मनः-

प्राणो निश्चलज्ञानसंयुतः..

२ अवधू. ६

यथा निरिन्धनो बहिः स्वयमेव

प्रशाम्यति । ग्राह्याभावे...

त्रि. भा. २।१६३

यथा निरिन्धनो बहिः स्वयोना-

वुपशाम्यति । तथा वृत्तिभ्रयाभित्तं

स्वयोनावुपशाम्यति

[मैत्रा. ६।३४+

मैत्रे. १।७

यथा निर्मितको जीवो जायते

त्रियतेऽपि वा । तथा जीवा

अमी सर्वे भवन्ति न भवन्ति च

अ. शां. ७०

यथा निर्वाणकाले तु दीपो दग्ध्वा

ल्यं ब्रजेत् । तथा सर्वाणि

कर्माणि योगीदग्ध्वा ल्यं ब्रजेत्

क्षुरिको. २३

यथा नु खलु सोम्येमास्तिस्रो

देवताः पुरुषं प्राप्य त्रिवृषिवृदे-

कैका भवति तन्मे विजानीहीति

छांदो. ६।४।७

यथा नु खलु सोम्येमास्तिस्रो

देवतास्त्रिवृषिवृदेकैका भवति

तन्मे विजानीहि

छांदो. ६।४।४

यथाऽनुशासनं यं यमन्तमभिकामा

भवन्ति यं जनपदं यं क्षेत्रमागं

तं तमेवोपजीवन्ति

छांदो. ८।१।५

यथान्तरं न मेदाः स्युः शिवकेशवयो-

स्तथा । देहो देवालयः प्रोक्तः

स जीवः केवलः शिवः

स्कन्दो. १०

(ते होचुः) यथा अन्धा अपश्यन्त-

श्छक्षुषा प्राणन्तः प्राणेन..विद्वान्-

सो मनसा प्रजायमाना रेतसै-

वमजीविष्मेति प्रविवेश ह चक्षुः

बृह. ६।१।९

यथाऽन्धा अपश्यन्तः प्राणन्तः

प्राणेन वदन्तो वाचा शृण्वन्तः

यथा सिद्धरसस्पर्शात्ताम्रं भवति
काचनम् । गुरुपदेशश्रवणा-
च्छिष्यस्तत्त्वमयो भवेत् अमन. २।४६
यथाऽसिद्धारां कर्तेव हितामवक्रामे-
यद्युवेयुवेह वा विद्वयिष्यामि
...एवमनृतात्मानं जुगुप्सेत् महाना. ७।९
यथा सिंहो गजो व्याघ्रो भवेद्वश्यः
शनैः शनैः । तथैव सेवितो
वायुरन्यथा हन्ति साधकम्
[यो. चू. ११८+ शाण्डि. १।७।६
यथा सिंहो मृगो बाऽपि नीयमानो
व्यवस्थितः...परिचीयमानस्य
तथा वायुर्वै विश्वतोमुखः योगो. ११
यथा सुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिङ्गाः
सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः ।
तथाऽभ्रराद्विविधाः सोम्य
आवाः प्रजायन्ते मुण्ड. २।१।१
यथा मुनिपुणः सम्यक्परदोषेक्षणे
रतः । तथा चेन्निपुणः स्वेष्टु
को न मुच्येत बन्धनात् वराहो. ३।२५
यथा सुप्तोत्थितः कश्चिद्विषयान्
प्रतिपद्यते । जागृत्यैव ततो
योगी योगनिद्राक्षये तथा अमन. २।६२
यथा मुह्यः पद्मीशशङ्कन्सङ्घिदे-
देवमितरान्प्राणान्समखिदत् छां. उ. ५।१।१२
यथा सोमः राजानमाप्यायस्वा-
पक्षीयस्वेत्येवमेनाः स्तत्र
भक्षयन्ति बृह. ६।२।१६
यथा सोम्य पुरुषं गान्धारेभ्योऽभि-
नद्धाक्षमानीय तं ततोऽतिजने
विन्दजेत् छांदो. ६।१४।१
यथा सोम्य मधु मधुकृतो
निमित्तश्छन्ति नानात्ययानां
बुध्वाणां रसान्समवहारमे-
कताः रसं गमयन्ति छांदो. ६।१।१
यथा सोम्य महतोऽभ्याहतस्यैक-
मङ्गारं खद्योतमात्रं परिशिष्टं
तं तृणैरुपसमाधाय प्रज्वाल-
येत्तेन ततोऽपि बहु बहेत् छांदो. ६।७।५

यथा सोम्यैकेन नखनिर्कुतनेन
सर्वं क्राष्णायसं विज्ञातम्
स्याद्वाचारम्भणं... छांदो. ६।१।६
यथा सोम्यैकेन लोहमणिना सर्वं
लोहमयं विज्ञातम् स्याद्वाचा-
रम्भणं...लोहमित्येव सत्यम् छांदो. ६।१।५
यथा सोम्यैकेन मृत्पिण्डेन सर्वं
मृन्मयं विज्ञातम् स्याद्वाचा-
रम्भणं विकारो नामधेयं
मृत्तिकेत्येव सत्यम् छांदो. ६।१।४
यथा सौक्ष्म्याच्चिदाभास्य आका-
शो नोपलक्ष्यते । तथा निरंश-
श्चिदावः सर्वगोऽपि न लक्ष्यते महो. ५।१९
यथाऽसौ दिव्यादिव्यादित्य एव-
मिदं शिरसि चक्षुः ३ ऐत. १।२।२
यथाऽसौ आवापृथिव्यावन्तरेणा-
काशः, तस्मिन्हास्मिन्माकाशे
प्राण आयत्तः ३ ऐत. १।२।२
यथा सौम्य महतोऽभ्याहितस्यैको-
ऽङ्गारखद्योतमात्रः परिशिष्टः
स्यात्तेन ततोऽपि न बहु बहेत् छांदो. ६।७।३
यथा स्तेनो यथा भ्रूणहैवमेष भवति सहवै. १२
यथा क्षीपुमाः सौ सम्परिष्वत्तौ स
इममेवात्मानं द्वेधाऽपातयत्ततः
पतिश्च पत्नी चामवतां बृह. १।३।३
यथा स्थितमिदं यस्य व्यवहारवतो-
ऽपि च । अस्तं गतं स्थितं व्योम
स जीवन्मुक्त उच्यते वराहो. ४।२९
यथाऽस्या उदरमेवममुष्या अभ्रमणं ३ ऐत. २।५।२
यथाऽस्यास्तत्रय एवममुष्या भङ्गलयः ३ ऐत. २।५।२
यथाऽस्याः शिर एवममुष्याः शिरः ३ ऐत. २।५।२
यथाऽस्याः स्पर्शा एवममुष्याः स्पर्शाः ३ ऐत. २।५।२
यथाऽस्याः स्वरा एवममुष्याः स्वराः ३ ऐत. २।५।२
यथाऽस्यै जिह्वैवममुष्यै वाक्तेन ३ ऐत. २।५।२
यथा स्वच्छन्दतः प्राणो निपत-
त्याशु गच्छतः ।...परिचीय-
मानस्य तथा वायुर्वै विश्वतोमुखः योगो. ११

यथा स्वप्नमयो जीवः...तथा जीवा

जमी सर्वे

अ. शां. ६८

यथा स्वप्ने तथा पितृलोके

कठो. ६।५

यथा स्वप्ने द्रव्याभासं चित्तं चलति

मायया । तथा जाग्रद्व्याभासं

चित्तं चलति मायया

अ. शां. ६९

यथा स्वप्ने द्रव्याभासं स्पन्दते

मायया मनः । तथा जाग्र-

द्व्याभासं स्पन्दते मायया मनः

अद्वैत. २९

यथाऽहनि तथा रात्रौ । नास्त्य नक्तं

न (वा) दिवा [१ सं. सो. १।३+ कठ . १०

यथाऽहमन्यो न स्यां तथा कल्पय

कल्पय, कल्याणं कुरु कुरु

बाष्पुषो. २

यथाऽहमेवां नैकम्भन वेद

छांदो. ५।३।५

यथा ह वै बहवः पशवो मनुष्यं

मुन्युरेवमेवैकः पुरुषो देवान्

मुनक्ति

बृह. १।४।१०

यथा ह वै पदेनानुविन्देदेवं कीर्तिः

श्लोकं विन्दते

बृह. १।४।७

यथा हि वै सरसि पद्मं तिष्ठति

तथा मूल्यां तिष्ठति

गोपालो. १६

यथा हस्तिः काष्ठेषु, तिलेषु तैल-

मिव तं विदित्वा मृत्युमत्येति

हंसो. ४

यथा होवेयं शम्भ्वती तर्चयत्येव-

मसौ शम्भ्वती तर्चयन्ती

३ ऐत. २।५।२

यथा होवेयं लोमशेन चर्मणा

पिहिता भवत्येवमसौ लोमशेन

चर्मणा पिहिता

३ ऐत. २।५।२

यथा होवेह प्रजा अन्वाविशन्ति...

तं समेवोपजीवन्ति

छांदो. ८।१।५

यथेष्टारक्षसं व्याप्ता शर्करा वर्तते

तथा । अह्वयप्रसरूपेण व्याप्नो-

ऽहं वै जगन्मयम्

आ. प्र. १४

यथेच्छया यथेच्छिद्वानात्मारामः

यथा मुनिः

कुण्डिको. २८

यथेच्छसि तथा कुरु

अ. गी. १८।६३

यथेष्टमाकाशमाकाशाद्वायुं वायु-

मूर्त्या घृते भवति

छांदो. ५।१०।५

यथेतमेत्य जघनेनाग्निमासीनो

व२शं जपति

बृह. ६।३।६

यथेन्द्रगोपो य ।ऽऽयर्चिर्यथा पुण्ड-

रीकं...वा अस्य श्रीभवति

बृह. २।३।६

यथेमे दंशमशकादयस्तृणवज्रय-

तयोद्भूतप्रध्वंसिनः

मैत्रा. १।५

यथेयंनप्राक्त्वत्तःपुराविद्या ब्राह्मणा-

न्वाच्छति तस्मादु सर्वेषु लोकेषु

क्षत्रियस्यैव प्रशासनमभूत्

छांदो. ५।३।७

यथेयं न प्राक् त्वत्तु पुरा विद्या

ब्राह्मणान्...(मा. पा.)

छां. उ. ५।३।७

यथेयं विद्येतः पूर्वं न कस्मिंश्चन

ब्राह्मणं उवाच त्वां त्वहं तुभ्यं

वक्ष्यामि

बृह. ६।२।८

यथेरिणे बीजमुप्तं नरेन्द्र नास्य

वप्ता लभते बीजभागम् । एवं

आद्धमप्रतिष्ठितं विनश्यति

इतिहा. २९

यथेष्टधारणा-(णं वा) द्वायो रनलस्य

प्रदीपनम् । नादाभिव्यक्तिरा-

रोग्यं जायते नाडिशोषनात्

[यो. चू. ९९+

शाण्डि. १।५।८

यथेष्टधारणाद्वायोः सिद्धयेत्केवल-

कुम्भकः । केवले कुम्भके सिद्धे

रेचपूरविवर्जिते । न तस्य दुर्लभं

किञ्चिदपि लोकेषु विद्यते

१ यो. त. ५०

यथेष्टमेव वर्तते यद्वा योगी महेश्वरः।

अभ्यासभेदतो भेदः फलं तु

सममेव हि

१ यो. त. १११

यथेह क्षुधिता बाला मातरं पर्यु-

पासते । एव२ सर्वाणि भूता-

न्यग्निहोत्रमुपासते

छांदो. ५।२४।५

यथैकस्मिन्घटाकाशेरजोभूमादिभि-

र्युते । न सर्वे संप्रयुज्यन्ते

तद्वज्जीवाः सुखादिभिः

अद्वैतो. ५

यथैतत्कूबरस्तक्ष्णापोज्झितो

नेहते मनाक् । परित्यक्तो-

पमात्मानस्तद्वदेहो विरोचते

छाण. ६।४

यथैतं काष्ठमारमानद्धमनुपश्या-

मस्तथैवावसौ भूत्वाः स्पन्दते

छाण. ६।९

यथैतावेदस्याष्टानुपनिषदोभवन्ति ...
 यथैवांसि समिद्धोऽग्निः भ. गी. ४।३७
 यथैवमवमन्यन्ते जनाः...तथा
 युक्तश्चरेद्योगी ना. प. ६।१०
 यथैव खल्वयं भगवोऽस्मिच्छरीरे
 साध्वलकृते साध्वलकृतो
 भवति...एवमेवायमस्मिन्नन्धे-
 ऽन्धो भवति छांदो. ८।१।१
 यथैव तु महासिंहः कुञ्जरो
 वाऽथदुर्मदः...परिचीयमानः
 कालेन वशत्वं चैव गच्छति ।
 परिचीयमानयोगस्य वशत्वं
 याति मारुतः योगो. ८
 यथैव तु स्मोपसन्ना अथानसूयवो
 यथोपश्रद्धिन इति छाग. ३।५
 यथैव तेन न गुरुर्भोजनीयस्तथैव
 चाक्षं न भुनक्ति श्रुतं तत् शाटपाय. ३५
 यथैव द्विविधा रज्जुर्द्वानिर्नोऽज्ञा-
 निर्नोऽनिशम् । यथैव सन्मयः
 कुम्भस्तद्ब्रह्मोऽपि चिन्मयः यो. शि. ४।२१
 यथैव निश्चितः कालः सूर्यचन्द्र-
 निबन्धनात् । आपूर्ये कुम्भितो
 वायुर्बहिर्नो याति साधके यो. शि. १।१२०
 यथैव बिम्बं मृदयोपलिप्तं तेजोमयं
 भ्राजते तत्सुघातम् । तद्वात्म-
 तत्त्वं प्रसमीक्ष्य देही एकः
 कृतार्थो भवते वीतशोकः श्वेता. २।१४
 यथैव लोहकाराणां भस्मा वेगेन
 चाल्यते । तथैव स्वशरीरस्थं
 चालयेत्पवनं शनैः योगकुं. १।३४
 यथैव वटव्रीजस्थः प्राकृतश्च महा-
 द्रुमः । तथैव रामव्रीजस्थं जगदे-
 तन्मराचरम् [रामर. ५।१०+ रा.पू.ता.२।२
 यथैव व्योम्नि नीलत्वं यथा नीरं
 मलयुगे । पुरुषत्वं यथा स्थानौ
 तद्वद्विषं चिदात्मनि यो. शि. ४।१५
 यथैव शूयो वैतालौ गन्धर्वाणां
 पुरं यथा । यथाऽऽकाशे द्वि-
 चन्द्रत्वं तद्वत्स्वयं जगत्स्थितिः यो. शि. ४।१६

यथैवेदं नमः शून्यं जगच्छून्यं
 तथैव हि वा. र. ४।२०
 यथैवापाङ्गतः सेतुः प्रवाहस्य
 निरोधकः । तथा शरीरगा
 छाया ज्ञातव्या योगिभिः सदा वसहो. ५।४१
 यथैवासावितश्चेतोऽमुतश्चासुतश्च
 सम्प्रद्रवत इवोपशुष्यत इवो-
 पस्कन्दमभिगृहीताभियातयेदेव छाग. ५।३
 यथैवासौ प्रतिसृत्तरेण समः समेन
 क्रीडेदेवं हेष संक्रीडतीति छाग. ५।३
 यथैवासौ राजानं वा राजपुरुषं
 वा निलयनं प्रापयेदेवं हैवैष
 यन्ता (रं) निलयनं प्रापयतीति छाग. ५।३
 यथैवेदमावां भगवः साध्वलकृतौ
 सुवसनौ परिष्कृतौ च एव-
 मेवमौ भगवः साध्वलकृतौ
 सुवसनौ परिष्कृतौ च छांदो. ८।८।३
 यथैवेदं नमः शून्यं जगच्छून्यं
 तथैव हि महो. ५।१८४
 यथैवेशस्तथा गुरुः । पूजनीयो
 महाभक्त्या यो. शि. ५।५६
 यथैवेह बीजस्याङ्कुरा वाऽथ धृमा-
 र्चिर्विस्फुलिङ्गा इवाग्नेश्चेत्यत्रो-
 दाहरन्ति मैत्रा. ६।३१
 यथैवैष कपालाष्टकं सन्नयति
 तमेव स्तन इव लम्बते वेद-
 देवयोनिः महो. १
 यथैवैष देवदत्तो यष्ट्याऽपि ताडय-
 मानो नयतीत्येवमिष्टापूर्तैः
 शुभाशुभैर्न लिप्यते महो. १
 यथैवैषा बन्धयैवैषा रतिमात्रं फल-
 मस्या वृत्तच्युतस्येव मैत्रा. ७।९
 यथैवोत्पलनालेन तोयमाकर्षयेन्नरः।
 तथैवोत्कर्षयेद्वायुं योगी योग-
 पथे स्थितः ज्ञा. वि. ३८
 यथैवोपकरणवतां जीवितं तथैव
 ते जीवितं स्यात् [बृह. २।४।२ + ४।५।३
 यथैवोपसृत्तवरो वाविस्तिर्यगुल्लन्ती-
 भिरिव वीचीभिः शफरीभिः

रवोपस्कन्दमुत्प्लवेदेवं हैवैवोऽभि-
 सूत्तराणामेव धुर्याणां चक्रम-
 क्षामरीणामुत्प्लवतीति छाग. ९।३
 यथैवेव देवदत्तो यष्ट्या च ताडय-
 मानो नयति, एवमिष्टापूर्तकर्मा
 शुभाशुभैर्न लिप्यते परब्र. १
 यथैवा जन्मदुःखेषु न भूयस्त्वां
 नियोक्ष्यति । स्वात्मनि स्व-
 परिस्पन्दैः स्फुरत्यच्छैश्चिद्वर्णवः महो. ५।११७
 यथैवा देवतैव च यथैतां देवता च
 सर्वाणि भूतान्यवन्त्येव हैवं-
 विद च सर्वाणि भूतान्यवन्ति बृ. उ. १।५।२०
 यथैवा पुरुषे छायेतस्मिन्नेतदाततं
 मनोधिष्ठिते नायात्यस्मिच्छरीरे प्रश्नो. ३।३
 यथैवा वन्ध्यैवैषा रतिमात्रं फल-
 मस्या वृत्तच्युतस्येव नारम्भ-
 णीया मैत्रा. ७।९
 यथोक्तं पर्युपासते भ. गी. १२।२०
 यथोदकं गिरौ सृष्टं समुद्रेषु विधा-
 वति । एवं धर्मान्पृथक्पश्यंस्ता-
 मेवानुविधावति गुह्यका. ४३
 यथोदकं दुर्गे वृष्टं पर्वतेषु विधा-
 वति । एवं धर्मान्पृथक्पश्यं-
 स्तानेवानुविधावति कठो. ४।१४
 यथोदकं शुद्धे शुद्धमासिकं तादृगेव
 भवति । एवं मुनेर्विजानत कठो. ४।१५
 यथोदके त्र्ययमनुप्रविष्टं तथा-
 त्वरूपो निरुपाधिसंस्थितः पैङ्गलो. ४।११
 यथोन्मेषो जायते तथा चिरंतना-
 तिसूक्ष्मवासनाबलात् पुनर-
 विधाया ज्वयो भवति त्रि. म. ना. ४।६
 यथोपपन्नचानुवर्ण्यमैश्वाचर्य
 चरन्त आत्मानं मोक्षयन्त इति आश्रमो. ४
 यथोपयासमास्त्रीवाधिवक्ष्यते इति
 (अथ) यथोर्णनामिस्तन्तुनोर्ध्व-
 मुत्क्रान्तोऽवकाशो लभ्यतीत्येवं

वाव खल्वसावमिष्यातौमित्यने-
 नोर्ध्वमुत्क्रान्तः स्वातंत्र्यं लभते मैत्रा. ६।२२
 यथोर्णनामिः सूत्राणि सृजत्यपि
 गिलत्यपि...उन्तपद्यन्ते विलीयन्ते
 तथा तस्यां जगत्यपि गुह्यका. २६
 यथोर्णनामिः सृजते गृह्णते च
 यथा पृथिव्यामोषधयः सम्भ-
 वन्ति । यथा सतः पुरुषात्केश-
 लोमानि तथाऽक्षरात्सम्भवतीह
 विश्वम् मुं. १।१।७
 यथोल्बेनाऽऽवृत्तो गर्भः भ. गी. ३।३६
 यदक्षरं नारसिंहमेकाक्षरं तद्भवति
 यदक्षरं पञ्चविधं समेति युजो
 युक्ता अभियत्संवहन्ति १ ऐत. ३।८।१
 यदक्षरं परंब्रह्म तत्सूत्रमितिधारयेत्
 [परब्र. ७+ ब्रह्मो. ६
 ना. प. ३।७७
 यदक्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं
 ग्राहं ग्राहेण भावं भावेन सौम्यं
 सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण प्रस्रति
 तस्मै महाप्रासाय नमः चतुर्वे. ८
 यदक्षरं वेदविदो वदन्ति भ. गी. ८।११
 यदक्षरादक्षरमेति युक्तं युजो युक्ता
 अभियत्संवहन्ति १ ऐत. ३।८।२
 यदग्निर्ज्वलत्यथैतन्म्रियते यज्ञ
 ज्वलति तस्यादित्यमेव तेजो
 गच्छति कौ. त. २।१२
 यदग्निर्वायुरिन्द्रस्ते ह्येननेदिष्टं
 पस्पशुस्ते ह्यनत्प्रथमो विदां-
 चकार ब्रह्मेति केनो. ४।२
 यदग्निं न विन्देदप्सु जुहुयादापो
 नै सर्वा देवताः सर्वाभ्यो
 देवताभ्यो जुहोमि स्वाहा ना. प. ३।७७
 यदग्नेरभिवर्तनानि [छाग. २।२+ ४।२
 यदग्नी जुहोत्यपि समिधं तदेव-
 यज्ञः सन्तिष्ठते सहवे. १४
 यदग्ने चानुवन्धे च भ. गी. १८।१९
 यदग्ने वेदशास्त्राणि तुलसी तां
 नमाम्यहम् तुलस्य. १

रेवोपस्कन्दशुक्लवेदेवं हैवैवोऽभि-
 सुत्वरानामेव धुर्याणां चक्रम-
 तामरीणामुत्प्लवतीति छाग. ९।३
 यथैवैव देवदत्तो यष्ट्या च ताडय-
 मानो नयति, एवमिष्टापूर्तकर्मा
 शुभाशुभैर्न लिप्यते परब्र. १
 यथैषा जन्मदुःखेषु न भूयस्त्वां
 नियीक्ष्यति । स्वात्मनि स्व-
 परिस्पन्दैः स्फुरत्यच्छैश्चिद्वर्णवः महो. ५।११७
 यथैषा देवतैव * स यथैषां देवता *
 सर्वाणि भूतान्यवन्त्येव * हैवं-
 विद * सर्वाणि भूतान्यवन्ति बृ. उ. १।५।२०
 यथैषा पुरुषे छायेतस्मिन्नेतद्वाततं
 मन्तोधिकृते नायात्यस्मिच्छरीरे प्रश्नो. ३।३
 यथैषा वन्त्यैवैषा रतिमात्रं फल-
 मस्या वृत्तच्युतस्येव नारम्भ-
 णीया मैत्रा. ७।९
 यथोक्तं पर्युपासते भ. गी. १२।२०
 यथोदकं गिरौ सृष्टं समुद्रेषु विधा-
 वति । एवं धर्मान्पृथक्पश्यंस्ता-
 भवानुविधावति गुह्यका. ४३
 यथोदकं दुर्गे वृष्टं पर्वतेषु विधा-
 वति । एवं धर्मान्पृथक्पश्यं-
 स्तानेवानुविधावति कठो. ४।१४
 यथोदकं शुद्धे शुद्धमासिक्तं तादृगेव
 भवति । एवं मुनेर्विज्ञानत आत्मा भवति गौतम कठो. ४।१५
 यथोदके तीयमनुप्रविष्टं तथा-
 त्वरूपो निरुपाधिसंस्थितः पैङ्गलो. ४।११
 यथोन्मेषो जायते तथा चिरंतना-
 तिसूक्ष्मवासनाबलात् पुनर-
 विधाया उदयो भवति त्रि. म. ना. ४।६
 यथोपपन्नचातुर्वर्ण्यमैश्वराचर्यं
 चरन्त आत्मानं मोक्षयन्त इति आश्रमो. ४
 यथोपयातमात्मैवाभिचक्षत इति आर्षे. ५।३
 (अथ) यथोर्णनामिद्वन्तुनोर्ध्व-
 मुत्क्रान्तोऽवकाशं लभतीत्येवं

वाव सत्त्वसावभिध्यातोमित्यने-
 नोर्ध्वमुत्क्रान्तः स्वातन्त्र्यं लभते मैत्रा. ६।२२
 यथोर्णनामिः सूत्राणि सृजत्यपि
 गिलत्यपि... उन्त्यद्यन्ते विलीयन्ते
 तथा तस्यां जगत्यपि गुह्यका. २६
 यथोर्णनामिः सृजते गृह्णते च
 यथा पृथिव्यामोषधयः सम्भ-
 वन्ति । यथा सतः पुरुषात्केश-
 लोमानि तथाऽक्षरात्सम्भवतीह
 विश्वम् मुंड. १।१।७
 यथोल्बेनाऽऽवृत्तो गर्भः भ. गी. ३।३६
 यदक्षरं नारसिंहमेकाक्षरं तद्भवति नृ. पू. ५।७
 यदक्षरं पञ्चविधं समेति युजो
 युक्ता अभियत्संवहन्ति १ ऐत. ३।८।१
 यदक्षरं परंब्रह्म तत्सूत्रमितिधारयेत् प्रश्नो. ६
 [परब्र. ७+ ना. प. ३।७७
 यदक्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं
 ग्राहं ग्राहेण भावं भावेन सौम्यं
 सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण प्रसृति
 तस्मै महाप्रासाय नमः चतुर्वे. ८
 यदक्षरं वेदविदो वदन्ति भ. गी. ८।११
 यदक्षरादक्षरमेति युक्तं युजो युक्ता
 अभियत्संवहन्ति १ ऐत. ३।८।२
 यदग्निर्ज्वलत्यथैतन्निद्रयते यज्ञ
 ज्वलति तस्यादित्यमेव तेजो
 गच्छति कौ. त. ५।१२
 यदग्निर्वायुरिन्द्रस्ते ह्येनमेदिष्टं
 पस्पशुस्ते ह्यनत्प्रथमो विदां-
 चकार ब्रह्मेति केनो. ४।२
 यदग्निं न विन्देदप्सु जुहुयादापो
 वै सर्वा देवताः सर्वाभ्यो
 देवताभ्यो जुहोमि स्वाहा ना. प. ३।७७
 यदग्नेरभिवर्तनानि [छाग. २।२+ ४।२
 यदग्नी जुहोत्यपि समिधं तदेव-
 यज्ञः सन्तिष्ठते सहवे. १४
 यदग्ने चानुबन्धे च भ. गी. १८।१९
 यदग्ने वेदस्यास्त्राणि तुलसी तां
 नयाम्यहम् तुलस्य. ९

यदज्ञानाद्भवेत्तमितरत्तत्प्रणश्यति यो. शि. ४।९
 (अथ) यदतः परो दिवा ज्योतिः छांदो. ३।१३।७
 दीप्यते विश्वतः पृष्ठेषु..
 यदत्र षष्ठं त्रिशतं सुवीरं यज्ञस्य
 गुह्यं नवनावमाय्यम् । दश-
 पञ्च त्रिशतं यत्परं च तन्मे
 मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. ७
 यदत्रैनो अवतत्सुवामि सहवै. ९
 यदथर्वाङ्गिरसो मधोः कृत्या य-
 द्राक्षणातिहिंसासांपुराणानि
 कल्पान्गाथानाराशंसीर्मेदसः
 कृत्याभस्यपितृन्स्त्वधाभमिवहन्ति सहवै. १४
 यदथर्वाङ्गिरसो मध्वाहुतिभिः...
 तदेवांस्तर्पयति, त एनं तृप्ता
 आयुषा... ब्रह्मवर्चसाज्ञाद्येन
 च तर्पयन्ति सहवै. १४
 यददीन्यं नृणामहं बभूवादित्सन्धा-
 संजगरजनेभ्यः । अग्निर्मां तस्मा-
 दिन्द्रश्च संविदानौ प्रमुचंताम् सहवै. ५
 (अथ) यदनाकाशाद्यनमित्या-
 चक्षते ब्रह्मचर्यमेव तत् छांदो. ८।५।३
 यदनादि निरामयम् (ब्रह्म) महो. २।६८
 यदनादिभूतं यदनन्तरूपं यद्वि-
 ज्ञानरूपं यदेवाः सर्वे ब्रह्म
 ज्येष्ठमुपासते मणेशो. ४।१
 यदनु कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजतं
 सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम्
 [रामो. १।१+तारखा. १।१+ जाधालो. १
 यदनुक्तमनिष्पन्दं दीपकं तेजसापि अ. पू. ३।२२
 यदनुक्ता समर्थयिता इ वै कामानां
 अवति य एतदेवं विद्वानक्षर-
 मुदीयमुपासते छांदो. १।१।८
 (अथ) यदनुकृते तेन ऋषीणां
 (लोकाप्रप्तिः) बृह. १।४।१६
 यदनुकृते वा एष उपबसन्नेव हि
 सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा स सर्वमस्ति नृसिंहो. ४।२
 यदेतन्मोके नानावर्णं नानारूपं
 नानाशब्दं... शौनको. १।५

यदन्तरा पितरं मातरं चेति नाहमत
 एकं च न वेद बृह. ६।२।२
 यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत यां यन्मातरं
 पितरं वा जिहि १सिम [सहवै. १० अथर्व. ६।१३.०।१
 [+तै. सं. १।८।५।३+ तै. का. २।५।२
 यदन्तरिक्षं यदाशसाऽतिक्रामामि सहवै. ४
 यदन्तर्नोऽसाविह प्राहयात् छाग. ३।५
 यदन्तः पूर्णमवगत्य पूर्णः गुह्यका. ४६
 यदन्ति यच्च दूरके [३ऐत. २।४।४+ वनदु. १२९
 [ऋ. मं. ९।६७।२१
 यदन्नमग्निर्वहुधा विराद्धि रुद्रैः
 प्रजग्धं यदि वा पिशाचैः ।
 सर्वं तदीशानो अभयं कृणोत प्रा. हो. १।६
 यदन्नमग्नि बहुधा विरूपं वासो
 हिरण्यमुत गामजामविम् सहवै. १०
 यदन्नमव्यनृतेन देवा दास्यन्न दा-
 स्यन्तुत वा करिष्यन् सहवै. १०
 यदन्नेनातिरोहति [चित्यु. १२।१+ पु. सू. ३
 [+ऋ. मं. १०।९०।२+ वा. सं. ३।१२
 यदन्यद्देवेभ्यश्च प्राणेभ्यश्च तत्सत् कौ. त. १।६
 यदपां क्रूरं यदमेध्यं यदशान्तं
 तदपगच्छतात् महाना. ५।१८
 यदपि बहुधाक्षीरज्ञ किञ्च प्रति-
 पद्यत इति तन्मे ब्रह्मेति आषे. ७।३
 यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे
 मनः शिव.. [१ शिवसं. २+ २ शिव. सं. ३
 यदभावनामास्थाय यदभावस्य
 भावनम् । तद्यथा वस्तुवशित्वं
 तदचित्तत्वमुच्यते अ. पू. ४।५०
 यदमीवामदः प्रियम्, तदैतूपमामभि. चित्यु. १५।२
 यदमुत्र तदन्विह कठो. ४।१०
 यदमुष्मिन्नादित्ये तपस्यज्ञो चा-
 धूमके... यः पचत्यन्नमित्येवं ब्राह्मेन्द्रा. ६।१७
 यदमुष्मिन्नादित्येऽथ सोमेऽग्नौ
 त्रिषुति विशात्स्यथ सत्त्वेन मैत्रा. ६।२४
 दृष्ट्वाऽसुतत्वं गच्छति मैत्रा. ६।३
 यदभूतं तत्सरयं तद्ब्रह्म
 यदयमात्माऽनेन देवत्सर्वं वेद बृह. ३।५।७

यद्यमात्मा माया मात्र पश्यन्मौमः..	नृसिंहो. ५।१
यद्यमेक इवैव पवते	बृह. ३।९।९
यदयं शवशयितमशयिष्ठेति	छाग. ४।२
(अथ) यदरण्यायनमित्याचक्षते	
ब्रह्मचर्यमेव तत्	छांदो. ८।५।३
यदचिन्मद्यदणुभ्योऽणु च यस्मिन्-	
छोका निहिता लोकिनश्च	मुण्ड. २।२।२
यदयं प्रतिभानंतन्मनइत्यभिधीयते	महो. ४।५।१
यदयं येद्रुकः किञ्चित्तन्नम्रः पुरतः	
स्थितः । पाणिद्वयेन गृहीयात्	
स्थापयेत्तच्च सुस्थिरम्	शिवो. ७।११
यदवाचीनमेनो भ्रूणइत्यायास्त-	
स्मान्नोक्ष्यच्च इति त एतैरजुहवुः	सहवै. ११
यद्वत्सं तन्मर्त्यं स भगवः	
कस्मिन्प्रतिष्ठित इति	छांदो. ७।२४।१
यदवश्यं पराधीनैस्त्यजनीयं शरी-	
रकम् । कस्मात्तेन विमूढात्मा	
न साधयति शाश्वतम्	शिवो. ७।१२।१
यदवस्फूर्जति सौनु वषट्कारो	
वायुरात्मा	सहवै. १८
(अथ) यदवोचं भुवः प्रपथ	
इत्यग्निं प्रपथे वायुं प्रपथ	
आदित्यं प्रपथ इति	छांदो. ३।१५।६
(अथ) यदवोचं भूः प्रपथ इति	
पृथिवीं प्रपथेऽन्तरिक्षं प्रपथे	
दिवं प्रपथ इति	छांदो. ३।१५।९
(अथ) यदवोचं स्वः प्रपथ	
इत्यग्रेवं प्रपथे यजुर्वेदं प्रपथे	
सामवेदं प्रपथ इति	छांदो. ३।१५।७
यदभाति तद्विः [त्रि. प. ४+	महाना. १८।१०
(अथ) यदभाति यत्पिबति य-	
त्रमते तदुपसर्धैवेति	छांदो. ३।१७।२
यदभीयात्रेतीमक्षी भवेत्	भस्मजा. २।१०
यदभुमापासयेत्प्रजां विच्छिन्त्यात्	कठरु. २
यदध्वत्तन्मेभ्यमभूदिति तदेवाध-	
मेवद्व्याधमेवत्वम्	बृह. १।२।७
यदद्याध्वपदा तेन गायत्री	अग्न्यक्तो. ६
यदसाके क्षमं स्वच्छं स्थितं तदुयं-	
मुच्यते	अ. पू. ५।१०७

यदसाधु तदसामेति	छांदो. २।१।१
यदसाधु भवत्यसाधु मतेत्येव तदाहुः	छांदो. २।१।३
यदसुरान्तकचक्रं यत्सत्यात्मा	
तत् पश्यत्य	नृ. पट्ट. ६
यदस्ति तदस्ति यन्नास्ति नास्ति तत् स्वसंवे. २	
यदस्ति सन्मात्रं यद्विभाति	
चिन्मात्रं... तदेतत्सर्वाकारा	
महान्निपुरसुन्दरी	बह्वचो. २
यदस्तीह तदेवास्ति विज्वरो भव	
सर्वदा । यथाप्राप्तानुभवतः	
सर्वत्रानभिवाञ्छनात्	महो. ६।१४
यदस्मान्नमस्कारेण मुच्येध्वं न वै	
जातु शुष्माकमिमं कश्चिद्ब्रह्मो-	
यं जेतो	बृह. ३।८।१२
यदस्मिभिर्द सर्वमध्यज्जोत्तेनाध्यर्ध	
इति कतम एको देव इति	बृह. ३।९।९
यदस्य गृहेषु श्वापदा वयस्यो-	
पिपीलिकाभ्य उपजीवन्ति	
तेन तेषां लोकः	बृह. १।४।१६
यदस्य त्वं यदस्य च देवेष्वथ नु	
मीमांस्यमेव ते मन्ये विदितम्	केनो. २।१
यदस्य प्रथयश्चका युगमश्चोका	
(रु) त्रिका	छाग. ७।१
यदस्यविज्ञानंतज्जुहोति [त्रि.सू.४+	म.ना.१८।१०
यदस्यामं तच्छान्तमशब्दमभय-	
मशोकमानन्दं.. उपासीत..	मैत्रा. ६।३३
यदस्यान्तरं सूत्रं तद्रथ	अ. मा. २
यदस्यान्यद्रश्मिश्चतमूर्ध्वमेव व्यव-	
स्थितम् । तेन देवनिष्कायानां	
स्वधामानि प्रपथते	मैत्रा. ६।३०
यदहङ्कारमाभित्य	अ. गी. १८।५९
यदहमायतनमस्मि त्वं तदातयन-	
मसीति	छांदो. ५।१।१४
यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत्	जाबालो. ४+
[ना. प. ३।७७+प.ह.प.२+	याज्ञव. १
यदहरेव जुहोति तदहः पुनर्मृत्यु-	
मप्यजयति	बृह. १।५।२
यदहं वसिष्ठोऽस्मि त्वं वसिष्ठोऽसि	छांदो. ५।१।१२

यदहं स त्वं ममैव रूपेण
न्युत्थयिष्यन्ति त्वामिति शौनको. ३।३
यदहं सर्वं भवानि यद्वायत्री वै शौनको. २।२
पुरोगास्तर्हि मे स्यादिति कौ. त. २।७
यदहोरात्राभ्यां पापं करोति महाता. ११।६
स तद्भुङ्क्ते महाना. ११।३, ४
यदह्नात कुरुते पापं तदह्नात् सामर. २
प्रतिमुच्यते छादो. ५।२।९
यदह्ना पापमकार्षे मनसा वाचा महाना. ११।३, ४
हस्ताभ्यां पद्मयामुदरेण संहितो. १।२
शिश्ना । अहस्तद्वलुप्यतु
यदा कर्ममार्गे रतिरसतां ते आसुरा
भवन्ति नृ. पट्च. ६
यदा कर्मसु काम्येषु क्षियं स्वप्नेषु छादो. ४।३।१
पश्यति । समृद्धिं तत्र जानी-
यात्तस्मिन्स्वप्ननिदर्शने
यदा कन्दितमिव निष्कन्दितमिव संहितो. १।२
सां मित्रहः
यदा चक्रं यदात्मा तत्प्रथमस्य यत्सु-
चक्रं यत्प्रियात्मा तद्वितीयस्य
...यदसुरान्तकचक्रं यत्सत्यात्मा
तत् षष्ठस्य नृ. पट्च. ६
यदा चन्द्रोऽस्तमैति वायुमेवाप्येति छादो. ४।३।१
यदा च बाह्यमार्गेण जिह्वा ब्रह्मविले
प्रजेत् । तदा ब्रह्मार्गेण
ब्रह्मन्दुर्मेघं त्रिदशैरपि योगकु. २।४०
यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति
मानवाः । तदा देवमविहाय
दुःखस्यान्तो भविष्यति श्वेता. ६।९७
यदाज्यं यन्मरुत्वतीयं [छा. १।२.४] श्वेता. ४।९
यदा अद्वैतज्ञानं यन्मम्यमं सां नार-
सिंहगायत्री.. नृ. पट्च. ३
यदा समस्तत्र दिवा न रात्रिर्न
रक्षं चासच्छिव एव कैवल्यः श्वेता. ४।९८
यदा समस्तत्र दिवा न रात्रिर्न सज्ज
चासज्जगत्सर्वं सुखा शुद्धको. ६।१
यदा तालुमूले गाढतमो दृश्यते
तदभ्यासावसण्डमण्डला-
कारज्योतिरुच्यते म. भा. २।२

यदा तु ध्यायते मन्त्रं वाचकम्पौ-
ऽभिजायते यो. शि. १
यदा तु नाडीशुद्धिः स्यात्तदा
चिह्नानि बाह्यतः । जायन्ति
योगिनो देहे १ यो. त. ४४
यदा तु राजयोगेन निष्पन्ना
योगिभिः क्रिया । तदा विवेक-
वैराग्यं जायते योगिनो ध्रुवसु १ यो. त. २९
यदा तु विदितं तत्त्वं परं ब्रह्म
सनातनम् । तदैकवर्णं संगृह्य
सोपवीतां शिखां त्यजेत् ना. प. ३।२८
यदा ते मोहकलिलं म. गी. २।५२
यदात्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं दीपोप-
मेनेह युक्तः प्रपश्येत् । अजं
ध्रुवं सर्वतत्त्वैर्विशुद्धं ज्ञात्वा देवं
मुच्यते सर्वपापैः श्वेता. २।१५
यदाऽऽत्मनाऽऽत्मानमणीरणीयांश्च
द्योतमानं मनश्चात्पश्यति
तदात्मनाऽऽत्मानं दृष्ट्वा निरात्मा
भवति मैत्रा. ६।२०
यदात्मनो न विजानीयस्तन्मे प्रवृत्तं छादो. ८।८।१
यदात्मशुचिर्विशः सद्बुद्धिर्देवतानि,
य एवविद्वान्...स्वाध्यायमधीते
सर्वोद्धोकाश्चयति सद्बु. १९
यदात्मैव जगत्सर्वमिति निश्चित्य
पूर्णता म. पू. १।३५
यदा त्वमभिवर्षस्यमेमाः प्राण ते
प्रजाः । आनन्दरूपास्तिसृन्ति
कामावाप्तं भविष्यति प्रश्नो. १०
यदादानं प्रदार्थस्य वासना सा
प्रकीर्तिता [म. पू. ४।३.६.४] शुद्धिको. २।५७
यदादानेन सह संयुज्यते तदा
पश्यति देवलोकान्देवान्स्वर्गं
जयन्तं चेति सुबालो. ४।१
यदादित्यगते तेजः म. गी. १।५।१२
यदादित्यस्य मध्ये उदित्वा मयूख
भवति मैत्रा. ६।३५
यदादित्यस्य मध्येऽदृष्टो...एतद्ब्रह्म मैत्रा. ६।३५
यदादित्यस्य मध्ये यजुर्विद्यति मैत्रा. ६।३५

यदहं स त्वं ममेव रूपेण
न्युत्थयिष्यन्ति त्वामिति शौनको. ३।३
यदहं सर्वं भवानि यद्वायत्री वै शौनको. २।२
पुरोगास्तत्किं मे स्यादिति कौ. त. २।७
यदहोरात्राभ्यां पापं करोति महाना. ११।६
स तद्ब्रूते
यदह्वा कुरुते पापं तदह्वात्
प्रतिमुच्यते
यदह्वा पापमकार्षे मनसा वाचा महाना. ११।३, ४
हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण
शिवा । अहस्तदवलुप्यतु
यदा कर्ममार्गे रतिरसतां ते आसुरा
भवन्ति सामर. २
यदा कर्मसु काम्येषु क्षियं स्वप्रेषु
पश्यति । समृद्धिं तत्र जानी-
यात्तस्मिन्स्वप्ननिदर्शने छांदो. ५।२।९
यदाकन्दितमिव निष्कन्दितमिव
सौ मित्रहः सहितो. १।२
यदा चक्रं यदात्मा तत्प्रथमस्य यत्सु-
चक्रं यत्प्रियात्मा तद्वितीयस्य
...यदसुरान्तकचक्रं यत्सत्यात्मा
तत् षष्ठस्य नृ. पदच. ६
यदा चन्द्रोऽस्तमैति वायुमेवाप्येति छांदो. १।३।१
यदा च बाह्यमार्गेण जिह्वा ब्रह्मविलं
भ्रजेत् । तदा ब्रह्मगर्भं
ब्रह्मन्दुर्भेयं त्रिदशैरपि योगसु. २।४०
यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति
मीनवाः । तदा देवमविज्ञाय
दुःखस्यान्तो भविष्यति श्वेता. ६।१०
यदाज्यं यन्मरुतवतीयं [छां. २।३४ + १।२
यदा वैतर्हीजं यन्मध्यमं सौ नार-
द्विहायत्री.. नृ. पदच. ३
यदा समस्तत्र दिवा न रात्रिर्न
सर्गं चोद्यच्छिव एव केचन श्वेता. ४।१८
यदा समस्तत्र दिवा न रात्रिर्न सप्त
चासन्नगवत्येव शुद्धा शुद्धको. ६।१
यदा साधुमूले गाढतमो दृढवर्तः
तद्भ्यासावखण्डमण्डला-
कारज्योतिर्विद्यते म. भा. २।२

यदा तु ध्यायते मन्त्रं तावन्मन्त्रो-
ऽभिजायते यो. शि. १
यदा तु नाडीशुद्धिः स्यात्तदा
चिह्नानि बाह्यतः । जायन्ते
योगिनो देहे १ यो. व. ४४
यदा तु राजयोगेन निष्पन्ना
योगिभिः क्रिया । तदा विवेक-
वैराग्यं जायते योगिनो ध्रुवसु १ यो. व. २९
यदा तु विदितं तत्त्वं परं ब्रह्म
सनातनम् । तदैकवृण्डं संगृह्य
सोपवीतां शिखां त्यजित् ना. प. ३।१८
यदा ते मोहकलिलं भ. गी. २।५२
यदात्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं दीपोप-
मेनेह युक्तः प्रपश्येत् । अजं
ध्रुवं सर्वतत्त्वेर्विशुद्धं ज्ञात्वा देवं
मुच्यते सर्वपापैः श्वेता. २।१५
यदाऽऽत्मनाऽऽत्मानमगोरीणीयांस
द्योतमानं मनश्चयात्ययति
तदात्मनाऽऽत्मानं दृष्ट्वा निरात्मा
भवति मैत्रा. ६।२०
यदात्मनो न विजानीयस्तन्मे प्रवृत्तं छांदो. ८।८।१
यदात्माशुचिर्ब्रह्मः सवृद्धिर्देवतानि
य एवंविद्वान्...स्वाध्यायमधीते
सर्वल्लोकां जयति सहस्रै. १२
यदात्मैव जगत्सर्वमिति निश्चित्य
पूर्णता भ. पू. २।३५
यदा त्वमभिवर्षस्यमेमाः प्राण ते
प्रजाः । आनन्दरूपास्तियन्ति
कामायाजं भविष्यति प्रश्नो. १०
यदादानं प्रदार्थस्य वाचना सा
प्रकीर्तिता [भ. पू. ४।१६ + ५।५७
यदादानेन सह संयुज्यते तदा
पश्यति देवलोकान्देवान्स्वकन्दं
जयन्तं चेति सुबालो. ४।१
यदादित्यगतं तेजः भ. गी. १।५।१२
यदादित्यस्य मध्ये उदित्वा मयूले
भवतः मैत्रा. ६।३५
यदादित्यस्य मध्येऽप्युतः...एतद्ब्रह्म मैत्रा. ६।३५
यदादित्यस्य मध्ये यजुर्वीज्यति मैत्रा. ६।३५

यदादित्यस्य रोहितः रूपं तेजस-
स्तद्रूपं, यच्छुद्धं तदपां, यत्कृष्णं
तदजस्यापागादभेरभित्तं वाचा-
रन्मणं विकारो नामधेयं ग्रीणि
रूपाणीत्येव सत्यम्

छांदो. ६।४।२

यदादिशेदुरुः किञ्चित्तत्कुर्याद-
विचारतः

शिवो. ७।३०

यदादेवदत्तस्य द्रव्यादिविषयाजायते

गर्भो. २

यदा द्रष्टाऽनुपश्यति

भ. गी. १४।१९

यदा न कस्यचन वेद, हिता नाम

तादृशो द्वांसप्ततिसहस्राणि

हृदयात्सुरीततममिप्रतिष्ठन्ते

बृह. २।१।१९

यदा न कुरुते भावं सर्वभूतेषु

पापकर्म । कर्मणा मनसा

वाचा तदा भवति भैक्षमुक्

ना. प. ३।२३

यदा न भाव्यते किञ्चिन्निर्वासन-

तयाऽऽत्मनि । बालमूकादिवि-

ज्ञानमिव च स्थीयते स्थिरम् ॥

तदा जाड्यविनिर्मुक्तमसंवेदन-

साधतम् । आश्रितं भवति

प्राज्ञो यस्माद्भूयो न लिप्यते

अ. पू. ४।६१

यदा न भाव्यते किञ्चिद्धेयोपादेय-

रूपि यत् । स्थीयते सकलं

स्थक्त्वा तदा चित्तं न जायते

अ. पू. ४।४७

यदा न भाव्यते भावः कचिज्जगति

वस्तुनि । तदा हृदम्बरे शुल्बे

कथं चित्तं प्रजायते

अ. पू. ४।४९

यदा न मनुते मनः, अमनस्ता

तदोदेति

अ. पू. ४।४८

यदा न लभते हेतुनुत्तमाधम-

मध्यमाम् । तदा न जायते

चित्तं हेत्वभावे फलं कुतः

अ. शां. ७६

यदा न लीयते चित्तं न च वि-

क्षिप्यते पुनः । अनिङ्गनम-

नामाद्ये निष्पले प्रत्य तच्चदा

अद्वैतो. ४६

यदातुष्यायते मंत्रं मात्रकम्पौऽपि

जायते

यो. शि. १।७०

यदाप चच्छुष्यन्ति वायुमेवाग्नि-

र्यन्ति । वायुर्धैवैतान्सर्वान्संवृद्ध

इत्यभिदैवतम्

छांदो. ४।३।२

यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा

सह । बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः

परमां गतिम् [कठो. ६।१०+ मैत्रा. ६।३०

यदा पश्यति चात्मानं केवलं

परमार्थतः । मायामात्रं

जगत्कृत्स्नंतदाभवतिनिर्वृतिः

जा. द. १०।१२

यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं

कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम् ।

तदा विद्वान्पुण्यपापे विधूय

निरञ्जनः परमं सान्ध्यमुपैति

मुण्ड. ३।१।३

यदापस्त्रोतस्सरण्योरिवामिः ।

एवंमात्मात्मनि जायते

इतिहा. ४९

(सः) यदाऽपानेन सह संयुज्यते

तदापश्यतियक्षराक्षसगन्धर्वान्

सुबालो. ४।२

यदा पिङ्गलया प्राणः कुण्डली-

स्थानमागतः । तदा तदा

भवेत्सूर्यग्रहणं मुनिपुङ्गव

जा. द. ४।४७

(अथ) यदा प्रजाः सृष्टा न

जायन्ते प्रजापतिः कथं न्विमाः

प्रजाः सृजेयमिति चिन्तयन्नुप-

मितीमासुचं गातुमुपाक्रामत्

अव्यक्तो. ७

यदा प्रस्पन्दते प्राणो नाडी संस्पर्श-

नोद्यतः । तदा संवेदनमयं

चित्तमाशु प्रजायते

अ. पू. ४।४२

यदा आरं तन्द्रयते स भर्तुम् ।

निधाय आरं पुनरस्तमेति ।

तमेव मृत्युममृतं तमाहुः

चिन्त्यु. १४।४

यदामासेन रूपेण जगद्भोज्यं

भवेत् तत् । मानसः स्वात्मना

आरं भक्षितं भवति ध्रुवम्

पा. प्र. ४७

यदा भूतपृथग्भावं

यदा मनसि चैतन्यं भाति सर्वत्रां

अ. गी. १३।३१

तदा संप्रयति स्वयम्

[अ. पू. ५।७८+]

जा. द. १०।९

यदा मनसि वैराग्यं जातं सर्वेषु
वस्तुषु । तदैव सञ्ज्यसेद्विद्वा-
नन्यथा पतितो भवेत् मैत्रे. २।१९
यदा मनसि सञ्जातं वैतृष्यं सर्व-
वस्तुषु । तदा सञ्ज्यासमिच्छेत
पतितः स्याद्विपर्यये ना. प. ३।१२
यदा मन्मथकलादिर्भवति तदा
निष्क्रीलिता भवेत् कामराज. १
यदा यत्र यथा यस्मात्स्थिरं भवति
मानसम् । तदा तत्र तथा तस्मा-
न्न तु चाल्यं कदाचन अमन. २।६९
यदा यदा परिक्षीणा पुष्टा चादृक्कृति
भवेत् ।...प्रवर्तन्ते रुगादयः यो. शि. १।३६
यदा यदा हि धर्मस्य म. गी. ४।७
यदा यात्यमनीभावं तदा तत्परमं
पदम् मैत्रा. ६।३४
यदा यात्युन्मनीभावस्तदा तत्परमं
पदम् । यत्र यत्र मनो याति
तत्र तत्र परं पदम् पैङ्गलो. ४।२१
यदाऽलम्बुद्धिर्भवेत्तदा कुटीचको
वा बहुदको वा...सर्वमप्सु
विस्तृज्याथ जातरूपधरश्चरेत् प. हं. प. ८
यदा लेलायते ह्यर्चिः समिद्धे हव्य-
बाहने । तदाज्यभागावन्तरेणा-
हुतीः प्रतिपादयेच्छ्रद्धया हुतम् मुंड. १।२।२
यदा वाव ते स्मरेयुरथ गृण्यु-
रथमन्वीरञ्च विजानीरन्
स्मरेण वै पुत्रान् विजानाति
स्मरेण पशून् स्मरमुपास्वेति छांदो. ७।१३।१
यदा विनियतं चित्तं म. गी. ६।१८
यदा वै करोत्यथ निस्तिष्ठति
नाकृत्वा निस्तिष्ठति छांदो. ७।२१।१
यदा वै चैतयतेऽथ सङ्कल्पतेऽथ
मनस्यथ वाचमीरयति छांदो. ७।५।१
यदा वै निस्तिष्ठत्यथ अदधाति
नानिस्तिष्ठन् अदधाति
निस्तिष्ठमेव अदधाति छांदो. ७।२०।१
यदा वै पुत्रोऽस्मादोकात्प्रैति,
स वायुप्रागच्छति बृह. ५।१०।१

यदा वै बहिर्विद्वान्मनो नियन्ये-
न्द्रियार्थं प्राणोनिवेशयित्वा
निस्सङ्कल्पस्ततस्तिष्ठेत् मैत्रा. ६।१९
यदा वै मनुतेऽथ विजानाति
नामत्वा विजानाति छांदो. ७।१८।१
यदा वै मिथुनौ समागच्छत
आपयतो वै तावन्यो-
न्यस्य कामम् छांदो. १।१।६
(सः) यदा वैरस्मेण सह संयुज्यते
तदा पश्यति दृष्टं च श्रुतं च
शुक्तं चाशुक्तं च सबासब
सर्वं पश्यति सुबालो. ४।२
यदा वै विजानाति, अथ सत्यं
वदति नाविजानन्सत्यं वदति छांदो. ७।१७।१
यदा वै अदधात्यथ मनुते ना-
अदधन्मनुते छांदो. ७।१५।१
यदा वै सङ्कल्पयतेऽथ मनस्यथ
वाचमीरयति छांदो. ७।४।१
यदा वै सुखं लभतेऽथ करोति
नासुखं लब्ध्वाकरोति सुखमेव
लब्ध्वा करोति छांदो. ७।३।१
[सः] यदा व्यानेन सह संयुज्यते
तदा पश्यति देवांश्च ऋषींश्च सुबालो. ४।२
यदा शेते रुद्रस्तदा संहरते प्रजाः
यदाऽस्य षोडशीकस्य सार्धत्रि-
कोटीर्जपतितदा ब्रह्महत्यांतरति बृहको. २७
यदा सङ्कीर्यते चित्तमभावात्यन्त-
भावनात् । चित्सामान्यस्व-
रूपस्य सत्तासामान्यता तदा कलिसं. ५
यदा सङ्कीर्यते प्राणो मानसं च
प्रलीयते । तदा समरसत्त्वं
यत्समाधिरभिधीयते अ. पू. १।२३
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु
यदा सद्गुरुकटाक्षो भवति तदा
अगवत्कथाभ्रवणज्यानादौ
अदधा जायते त्रि. स. ना. ५।४
(सः) यदा समानेन सा संयुज्यते
तदा पश्यति देव लोकान्धनानि. सुबालो. ४।२

यदा सर्वसमो जातो भवेत्तदा-

पारवर्जितः । परं ब्रह्मणि

सर्वौघो योगी प्राप्तलयस्तदा अमन. १।२२

यदा सर्वाणि भूतानि समाधिस्थो

न पश्यति । एकीभूतः परेणालौ

तदा भवति केवलः

[अ. पू. ५।८०+

जा. द. १०।११

यदा सर्वाणि भूतानि स्वात्मन्येव

हि पश्यति । सर्वभूतेषु आत्मानं

ब्रह्म सम्पद्यते तदा

[अ. पू. ५।७९+

जा. द. १०।१०

यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा येऽस्य

हृदि श्रिताः (स्थिताः) । अथ

मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म सममुते कठो. ६।१४

[+ वृ. उ. ४।४।७+

शाटभाय. २५

यदा सर्वे अभिचन्ते हृदयस्येह

प्रन्थयः । अथ मर्त्योऽमृतो

भवत्येवावदनुशासनम् कठो. ६।१५

यदा संहरते चार्यं

अ. गी. २।९८

यदा संहर्ष्यते शास्त्रं तदा सिद्धिः

करे स्थिता । न शास्त्रेण विना

सिद्धिर्विद्वा चैव जगत्त्रये

योगकुं. २।११

यदा सुषुप्तिर्भविष्यानन्दिनः

प्राणा भवन्ति

छांदो. ७।१०।१

(अथ) यदा सुषुप्तो भवति यदा

न कस्यचन वेद हिता नाम

नाड्यो द्वायप्रतिसहस्राणि

हृदयात्पुरीततमभिप्रतिष्ठन्ते

बृह. २।१।१९

यदा सूर्योऽस्तमेति वायुमेवाप्येति

बृह. ४।३।१

यदा स्थात्यसि निश्चला

अ. गी. ३।५३

यदाऽस्माच्छरीरान्मर्त्यादुत्क्राम-

न्त्यथ रीदयन्ति

बृह. ३।५।४

(अथ) यदाऽस्य वाक्पुनसि सम्प-

द्यते मनः प्राणे प्राणस्तेजसि

तेजः परस्माद् देवतायामथ न

जानाति

छांदो. ६।१५।२

यदा इवनीये गार्हपत्येऽन्वाहाये-

पचने सम्पादयत्यथ

कठमु. ४

यदा हंसो नादे लीनो भवति, तदा

न तुर्यातीतमुन्मनमजपो-

संहारमित्यभिधीयते

हंसो. ६

यदा हि नेन्द्रियाण्येषु

अ. गी. ६।४

यदा ह्येव अद्वैतेऽयदक्षिणां ददाति

बृह. २।१।२१

यदा ह्येवैष एतस्मिन्नल्पमप्यन्तरं

नरः । विजानाति तदा तस्य

भयं स्यान्नात्र संशयः

कठरु. ३१

यदा ह्येवैष एतस्मिन्नद्वयेऽन्तात्म्ये-

ऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयं प्रतिष्ठां

विन्दते । अथ सोऽभयं गतो

भवति

तैत्ति. २।७

यदा ह्येवैष एतस्मिन्नल्पमप्यन्तरं

वरः । विजानाति तदा तस्य

भयं स्यान्नात्र संशयः [महो. ४।७९ कठरु. ३१

यदा ह्येवैष एतस्मिन्नद्वयत्वादि-

लक्षणे । निर्भेदं परमाद्वैतं विन्दते

च महायतिः

कठरु. २९

यदा ह्येवैष एतस्मिन्नुदरमन्तरं

कुरुते, अथ तस्य भयं भवति

तैत्ति. २।७

यदि कर्कोटकदूतोऽसि यदि वा

कर्कोटकः स्वयं

गारुडो. १९

यदि काममनुरुद्धयते सम्भरतां

इमां योनिं सन्दध्यादिवृमत्र

मनः श्लेष्मरेतसः सम्भवति

निबन्धो. १।३

यदि खल्वभाति प्राणसमुद्यो

भूत्वा मन्ता भवति

मैत्रा. ६।११

(अथ) यदि गन्धमाल्यलोक-

कामो भवति सङ्कल्पादेवास्य

गन्धमाल्ये समुत्तिष्ठतः

छान्दो. ८।१।६

(अथ) यदि गीतवादित्रकामो

भवति सङ्कल्पादेवास्य गीत-

वादिते समुत्तिष्ठतः

छान्दो. ८।२।६

यदि गुलिकदूतोऽसि

यदि वा गुलिकः स्वयं

गारुडो. २३

यदि च नार्चिषमेवाभि सम्भवन्त्यर्चि-

षोऽहं मापूर्यमाणपद्मपूर्य-

माणपद्माद्यान्मदुद्वेति

छान्दो. ४।१५।५

यदि च नार्चिषमेवाभि सम्भवन्त्यर्चि-

षोऽहं मापूर्यमाणपद्मपूर्य-

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते
पद्मः सङ्गदेष्टा अवीश्वोमिच्छेत्तत्

[कठो. २।१५+

गुह्यज्ञा. ३९

यदि ज्ञानमनुरुद्धयते तदमुहो
भवति

निरुक्तो. १

(अथ) यदि तस्याः कर्ता भवति
तत एव संस्त्यमात्मानं कुरुते

छां. ६।१६।२

यदि ते कर्मविचिकित्सा वा कृत-
विचिकित्सा वा स्यात्

तैत्ति. १।२।१३

यदि ते नेन्द्रियार्थभीः स्पन्दते
हृदि वै द्विज । तदा विज्ञात-

महो. ५।१७४

विज्ञेया समुत्तीर्णो भगार्णवात्
यदितोऽयास्य अङ्गिरसोऽन्येनो-

द्रायदिति वाचा च होव स
प्राणेन चौदगायदिति

बृह. १।३।२४

यदि त्वचा स्पृष्टं यदि मनसा
ध्यातं यद्यपानेनाभ्यपानितं

२ ऐत. ३।११

यदिदमग्निमिच्छन्ति पोष्टूल्यं-
न्त्याद्विरभिधीवयन्ति

आर्षे. १।२

यदिदमद्वैव पराः परावतोऽभि-
पद्यन्ते सम्पन्नमेवैतत्

आर्षे. ५।३

यदिदमद्यते (अन्नं) तस्यैव घोषो
भवति [बृ. च. ५।९।१+

मैत्रा. २।८

यदिदमन्तरिक्षमनारम्भमाणमिव
केनाक्रमेण यजमानः स्वर्गं

लोकमाक्रमत इति

बृह. ३।१।६

यदिदमन्तरेणैतदुपयन्ति पर्यास
इवैष दिवस्पृथिव्योरिति

आर्षे. २।१

यदिदमस्मिन्नन्तःपुत्रे हृद्य-
मस्मिन्हीमे प्राणाः प्रतिष्ठिताः

छांदो. ३।१५।३४

(अथ) यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे बृहत्
पुण्डरीकं वेदम बृहरोऽस्मिन्न-

न्तराकाशस्मिन्चदन्तस्तद-
न्नेहव्यस्य

छांदो. ८।१।१,२

यदिदमाकाशमिवैतत्तत्र स्तन-
यन्ति विस्रोतमाना इव

आर्षे. १।१

यदिदमित्येतद्भाण्डकोशादुदयन्ति
नाभ्यपानं इव

आर्षे. ३।२

यदिदमिति यावापृथिव्योरन्तरा-
मिव नोपयन्ति नाभिः कथं

नाभुवन्ति

आर्षे. ३।१

यदिदमित्यामस्मिन् चिदीक्षन्वै
यदिदमग्न्यजुषैरेवोपवत्त्वं होजु-

छाग. ३।३

(यतो) पाद्यासीत्

छाग. ३।१

यदिदमग्न्यजुषैरेवोपवत्त्वं नो जुहुवु-
र्यदैनमुपाद्यासिषुः

छाग. १।३

यदिदमेक इदम एवाहुस्तम एके
ज्योतिरेकेऽवकाशमेक परमं

आर्षे. ३।३

व्योमेक आत्मानमेक इति

यदिदं किञ्च जगत्सर्वं प्राण एजति
निःसृतम् । महद्भयं वज्रमुद्यतं

कठो. ६।२

यदिदं किञ्च तत्सत्यमित्याचक्षते

तैत्ति. २।६

यदिदं किञ्च तत्सृष्ट्वा कवेबाहु-
प्राविशत्

तैत्ति. २।६

(एवमेव) यदिदं किञ्च मिथुन-

मापिपीलिकाभ्यस्तत्सर्वमसृजत

बृह. १।३।४

यदिदं किञ्चर्चो यजूरं षि सामानि
छंदांसि यज्ञान् प्रजाः पशून्

बृह. १।३।५

यदिदं किञ्च सर्वमसृजत

ग. पू. १।६

यदिदं किञ्चाभ्य आकृमिभ्य
आकीटपतङ्गेभ्यस्तत्तेऽजमापो

वास इति

बृह. ६।१।९४

यदिदंकुरुपञ्चालानां ब्राह्मणानस्य-
वादीः किं ब्रह्म विद्वानिति

बृह. ३।५।१९

यदिदं दृश्यते किञ्चित्तत्तास्तीति
भावय । यथा गन्धर्वगणं यथा

वारि मरुस्थले

अ. पू. १।२०

यदिदं दृश्यते सर्वं जगत्स्थानर-
जस्रमस्य । तत्सुपुत्राविम स्वप्नः

कल्पान्ते प्रविनश्यति

महो. ४।४४

यदिदं ब्रह्मपुच्छाकार्यं सत्यज्ञाना-
द्वयात्मकम् । सारमेव रक्षं

लब्ध्वा सुखी भवति सर्वत्र

क. क. २९

(अथ) यदिदं ब्रह्मपुरं पुण्डरीकं
तस्मात्तद्विद्याममार्कं दीपयत्

प्रकाशय

आ. प्र. १

यदि लिङ्गं सकलं सकलनिष्कलं
च स्थूलं सूक्ष्मं च तत्परं
स्थूले स्थूलं सूक्ष्मे सूक्ष्मं कारणे
तत्परं च सवानं. १४
यदि सर्वमप्सोतं च प्रोतं च
यदि सर्वमहोरात्राभ्यामाप्तं
सर्वमहोरात्राभ्यामभिपन्नम्
यदि सर्वमाददाना यन्ति
तस्मादादित्या इति बृह. ३।१।४
यदि सर्वं पूर्वपक्षापरपक्षाभ्या-
माप्तं सर्वं पूर्वपक्षापरपक्षा-
भ्यामभिपन्नम् बृह. ३।१।५
यदि सर्वं मृत्युनाऽऽप्तं सर्वं
मृत्युनाऽभिपन्नम् बृह. ३।१।६
यदि सर्वं मृत्योरजं, का स्विता
देवता यस्या मृत्योरजम् बृह. ३।२।१०
यदि वातुमपेक्षते पुत्राय शुश्रूषवे
दास्यत्यन्यस्मै शिष्याय वा
[नृ. पू. १।४+ ग. पू. २।१
यदि दीर्घा भवति महती भ्रिय-
माप्नुयादसुतत्वं च गच्छति ग. पू. २।३
यदि दीर्घा भवति महती भ्रिय-
माप्नोत्यसुतत्वं च गच्छति नृ. पू. ३।३
(अथ) यदि द्विमात्रेण मनसि
सम्पद्यते सोऽन्तरिक्षं यजुर्भि-
रुज्जीयते प्रश्नो. ५।४
यदि धर्मोऽनुरुद्धयते तदेवोद्भवति निरुक्तो. १
यदि नागकद्रुतोऽसि यदि वा
नागकः स्वयम् गारुडो. २५
यदिन्द्र एवोद्गीयस्तद्वषभ इति शौनको. ४।७
यदिन्द्रियान्तं तन्मूर्तिवारकम् मं. ब्रा. १।४
यदिन्द्रियान्तं तन्मूर्तिमत् अद्वयता. ६
यदि पद्मकद्रुतोऽसि यदि वा पद्मकः
स्वयं सचरति सचरति... गारुडो. २०
यदि पोष्णकालिकद्रुतोऽसि यदि
वा पोष्णकालिकः स्वयं गारुडो. २४

यदि पुता भवति ज्ञानवान्भव-
त्यसुतत्वं च गच्छति [ग. पू. २।३+ नृ. पू. ३।३
यदि भ्राः सदृशी सा स्यात् म. गी. १।१।१२
(अथ) यदि भ्रातृलोककामो
भवति सङ्कल्पादेवास्य भ्रातरः
समुत्तिष्ठन्ति छांदो. ८।२।३
यदि मन्यसे सु वेदेति केनो. २।१
यदि मन्येतोपपदस्यामीत्योदनं
धानाः सत्तून्... सहवै. १२
यदि महापद्मकद्रुतोऽसि यदि वा
महापद्मकः स्वयं गारुडो. २१
(अथ) यदि मातृलोककामो
भवति सङ्कल्पादेवास्य मातरः
समुत्तिष्ठन्ति छांदो. ८।२।२
यदि मामप्रतीकारं म. गी. १।४६
यदिमास्तिष्ठोऽयासाविति चत्वारोति शौनको. ४।७
यदिमा विस्फूर्जयत एवाभिपद्यन्ते आर्वे. ८।१
यदिमांस्त्रीनभिषत्ते तच्चिषेति शौनको. ४।७
यदिमे द्वे एवाक्षरे त्रिभिरुपन्वन्ति
तत्रय इति शौनको. ४।७
(अथ) यदि यजुष्टो रिभ्येदुवः
स्वाहेति दक्षिणाम्ने जुहुयात् छांदो. ४।१७।५
यदि योन्थाः प्रमुक्येऽहं गर्भो. ८, ९
यदि लूतानां प्रलूतानां यदि वृश्चि-
कानां यदि घोटकानां यदि
स्थावरजङ्गमानां.. गारुडो. २६
यदि वा इममभिर्मस्ये कनीयो-
ऽन्नं करिष्य इति बृह. १।२।५
यदि वा कुरुते रागादधिकस्य
परिमहम्। रौरवं नरकं
गत्वा तिर्यग्योनिषु जायते ना. प. ३।३०
यदि वाचाऽभिष्याह्वं यदि
प्राणेनाभिप्राणितं २ ऐत. ३।११
यदि वा तक्षकः स्वयं, स चरति... गारुडो. १६
यदि वा न महिम्नीति छांदो. ७।२।३।१
यदि वासुकिद्रुतोऽसि यदि वा
वासुकिः स्वयम् गारुडो. १७
यदि विचिन्वति स विष्णुर्वा भवति तुलस्यु. २

यदि विद्यास्यामः सर्वं ह नो
वक्ष्याम इति प्रश्नो. १।२
यदि वेतरथा ब्रह्मचर्यादिव प्रव्रजे-
द्वहाद्वा वनाद्वा [ना.प. ३।७७ + प. ह. प. १
[याज्ञव. १+ जाबालो. ४
यदि शङ्खकदूतोऽसि यदि
चा शङ्खकः स्वयम् गारुडो. २२
यदि शैलसमं पापं विस्तीर्णं बहु-
योजनम् । मिथते ध्यानयोगेन
नान्यो मेदः कदाचन ध्या. वि. १
(अथ) यदिष्टमिस्त्याचक्षते ब्रह्म-
चर्यमेव तत । ब्रह्मचर्येण ह्येवे-
ष्टात्मानमनुविन्दते छांदो. ८।५।१
(अथ) यदि सखिलोककामो
भवति सङ्कल्पादेवास्य सखायः
समुत्तिष्ठन्ति छांदो. ८।२।५
(अथ) यदि सामतो रिष्येत्स्वः
स्वाहेत्याहवनीये जुहुयात्
(अथ) यदि खीलोककामो
भवति सङ्कल्पादेवास्य
स्त्रियः समुत्तिष्ठन्ति छांदो. ८।२।९
यदि साममसामो नैवेवोऽस्य
दोषेण दुष्यति छांदो. ८।१०।२
यदि स्वदेहशुक्लाष्टुमिच्छा चेदु-
त्सृजेत्स्वयम् १ यो. त. १०७
(अथ) यदि स्वसृलोककामो
भवति सङ्कल्पादेवास्य स्वसारः
समुत्तिष्ठन्ति छांदो. ८।२।४
यदि वा अपि बह्विबाम्नावभ्या-
वृषति सर्वमेव तत्संवहृत्येव
हैवेवमिद्यपि बह्वि पापं कुरुते बृह. ५।१४।८
यदि ह वा अप्यनैवविन्महत्पुण्यं
कर्म करोति सङ्कास्यान्ततः
क्षीयते बृह. १।४।१५
यदि वा अप्येवंविद्वद्भिः प्रति-
गृह्णाति न ह्येव सङ्गायत्र्या
एकं वनं पदं प्रति बृह. ५।१४।५
यदि सर्वं वेत्येवेति समुदिर,
नास्य सङ्कल्पं पद्मासिमिति आर्ष. ४।१

यदि हेतोः फलात्सिद्धिः फलसिद्धिः
अ हेतुतः । कतरत्पूर्वनिष्पन्नं
यस्य सिद्धिरपेक्षया अ. शां. १८
यदि ब्रह्म न वर्तेय अ. गी. ३।२३
यदि ह्रस्वा भवति सर्वं पाप्मानं
तर-(दह-) त्यसृतत्वं च गच्छति
[नृ. पू. ३।३+ ग. पू. २।३
यदी- शृणोत्यलर्कं शृणोति नहि
प्रवेदं सुकृतस्य पन्थाम् सहवे. १९+
[ऋ.मं. १०।७।१६+तै.आ. १।३।१ ऐ. आ. ३।२।४।३
यदु किञ्चेमाः प्रजाः शोचन्त्य-
मैवासां तद्भवति पुण्यमेवासुं
गच्छति बृह. १।५।२०
यदु कृष्णमिवाभूदित्यन्नस्य रूप-
मिति तद्विदांचकुः छांदो. ६।४।६
यदु च नार्चिषमेवाभिसम्भवन्ति
(मो. पा.) छां. ७.४।१५।९
(अथ) यदुचैस्तच्छरीरं, तस्मा-
दाबिरावीहिं शरीरम् १ ऐत. ३।६।७
(अथ) यदुचैस्तच्छरीरं, तस्मा-
त्तत्तिर इव तिर इव ह्यशरीरम् १ ऐत. ३।६।७
यदुच्छिष्टमभोज्यं यद्यद्वा दुश्चरितं
मम । सर्वं पुनन्तु मामपोऽस-
त्तांच प्रतिषहं स्वाहा [महाना. १।१२+
[प्रां. हो. १।९ तै.आ. १०।२३ १
यदुष्ठासनिद्विधासावेतावाहुती
समं नयतीति स समानः प्रश्नो. ४।४
(अथ) यदुज्ज्वलत्येतद्ब्रह्मणो रूपं
चैतद्विष्णोः परमं पदम् मैत्रा. ६।२६
(अथ) यदुर्वक् आत्मानं पश्येत्-
दमिमन्त्रयेत् मयि तेज इन्द्रियं
यशो ब्रविण- सुकृतमिति बृह. ६।४।६
यदुदितं भगवति तत्सर्वं क्षमय
क्षमय स्वाहा वनहु. १३१
यदुदिति स उद्गीथो यत्प्रतीति स
प्रतिहारो यदुपेति स उपव्रवो
यजीति तन्मिथनम् छांदो. २।८।२
यदुद्गीथं समभिरभिप्रपद्यन्ते
तत्समेति शौनको. ४।७

यदुपमन्त्रयते स घूमः छांदो. ५४।३
 यदुपानेषेतैतद्वाष्पाना इति छाग. ३।३
 यदु रोहितमिवामृदिति तेजसः छांदो. ६।४।६
 स्तद्रूपमिति
 यदुल्लव स मेघो नीहारे वा वनसनयस्ता नक्षो यद्वास्तोयः
 मुक् स समुद्रः छांदो. ३।१९।२
 यदु शुक्रमिवामृदित्यपा रूपमिति
 वृद्धिर्वाचकुः छांदो. ६।४।६
 यदुष्णं तत्तेजो यत्सम्भरति स
 बायुः [गर्भो. १+ शारीरको. १
 (अथ) यदूर्ध्वमपराह्णत्वागस्त-
 मयात्स उपद्रवस्तदस्यारण्या
 अन्वायत्ताः छांदो. २।९।७
 यदूर्ध्वं गार्भि दिवो यदवाक्
 ...इत्याचक्षत आकाशे तदोतं
 च प्रोतं चेति बृह. ३।८।४
 (अथ) यदूर्ध्वं मध्यन्दिनात्प्रा-
 गमराह्णत्सप्रतिहारस्तदस्य गर्भा
 अन्वायत्ताः छांदो. २।९।६
 यदूर्ध्वं याज्ञवल्क्य दिवो यदवाक्
 पृथिव्या यदन्तःस्था वा पृथिवी
 इमे यदूतं च भवन् भविष्य-
 येत्याचक्षते कस्मिं स दोतं च बृह. ३।८।३, ६
 यदुपमन्त्रयते स घूमः सद्देव. ५
 यदुचोऽवीते पय आहुतिभिरेव
 तरेत्रांस्तर्पयति सद्देव. १४
 यदुचोऽवीते पयसः कृत्या अस्य
 पितुन्त्सवा अभिवहन्ति सद्देव. १४
 यदुच्छ्रया चौपपन्नं अ. गौ. २।३२
 यदुच्छाकाभतो नित्यं प्रीतिर्या
 जायते नृणाम्। तत्सन्तोषं विदुः
 प्राज्ञाः परिकानैकतत्पराः जा. द. २।५
 यदुच्छाकाभसन्तुष्टः ४।२२
 यदुच्छाकाभसन्तुष्टः सुवर्णादीन्
 परिग्रहेत् [ना. प. ३।८७ अ. गौ. ४।२२
 यदेकमाहारे निष्कियं शिवं सम्प्राप्तं
 परं ब्रह्म अ. र. १।७।३१
 यदेकमद्वितीयम् शांति. २।६

यदेकमव्यक्तमनन्तरूपं निश्चयं
 पुराणतमसः प्रस्तात् [म. ना. १।५ त्रि. म. ना. ४।३
 यदेकं चाप्यनेकं च साञ्जनं च
 निरञ्जनम्। यत्सर्वं चाप्य-
 सर्वं यत्तत्त्वं तदसौ स्थितः अ. पू. ३।२।३
 यदेकादशपदा तेन त्रिष्टुप्।
 यच्चतुष्टुपदा तेन जगती अथ्यक्तो. ६
 यदेतत्कर्णाविपिबाय शृणोति
 स यदोत्क्रमिष्यन्भवति नैनं
 चौषं शृणोति मैत्रा. २।८
 (अथ) यदेतत्पुरुषो रैतौ भवत्या-
 दित्यस्य तद्रूपम् १ ऐत. ३।७।३
 यदेतदनुपपद्यत्यात्मानं (मा. पा.) बृह. ४।४।१५
 यदेतदन्तर्हृदये चालकमिवाथैन-
 योरेषा सृतिः बृह. ४।२।३
 यदेतदन्तरेधावापृथिवीअनभुवदिव... आर्षि. १।१
 यदेतद्रच्छतीव च मनोऽनेन चैत-
 दुपस्मरत्यमीक्षणं सङ्कल्पः केनो. ४।५
 यदेतद्बुद्धयं मनश्चैतत् २ ऐत. ६।२
 यदेतद्रेतस्तदेतत्सर्वेभ्योऽङ्गेभ्यस्तेजः
 संभूतं २ ऐत. ४।३
 यदेतन्निष्ठतो न्ययुतदा ३ इति
 न्यमीमिषदा ३ इत्यभिदैवतम् केनो. ४।४
 यदेतन्महदुक्तं तदेतत्पञ्चविधं
 त्रिवृत्पञ्चदशं सप्तदशमेकविंशं
 पञ्चविंशमिति १ ऐत. ३।४।२
 यदेतस्मिच्छरीरे सुखं भवति (मा.) प्रभो. ४।६
 यदेतस्मिन्मण्डलेऽर्चिर्दीप्यति वज्र-
 म्यमाणमिव... तदेव मे ब्रह्म आर्षि. ५।२
 यदेने सार्धवौ धर्मा आ च
 गच्छेयुरप च तमेयुः छांदो. २।१।६
 यदेमिरच्छादयेत्तच्छन्दोऽसौ चन्दस्त्वं
 यदेमिः स्याद्विभिर्गुणैः छांदो. १।४।२
 यदेव किंच प्रतिजग्राहमग्निमी
 तस्मादवृणं कृणोतु अ. गौ. १।८।४०
 यदेव जाग्रदयं पश्यति तदग्रा-
 विद्याया मन्यते सद्देव. १०
 बृह. ४।३।२०

यदेव तीव्रसंवेगाद्दृढं कर्म कृतं
पुरा । तदेव वासनान्व्यूहो
देवशब्देन कथ्यते अवसं. १।४६
यदेव ते कश्चिदब्रवीत्...मे बद्धु-
वाष्पः (मा. पा.) बृ. उ. ४।१।४
यदेव ते कश्चिदब्रवीत्तच्छृण्वामे-
त्यब्रवीन्म उदङ्कः शौत्वायनः
प्राणो वै ब्रह्मेति [बृह. ४।१।३, ४, ५, ६, ७
यदेव भगवान् वेद तदेव मे ब्रूहि बृह. २।४।३
यदेव भगवान् वेद तदेव मे विब्रूहि बृह. ४।५।४
यदेवमेतदन्वायत्तमुपास्ते सर्व-
आयुरेति वसीयान्भवति स
एव स पाप्मा अवसं. ४।३
यदेव विद्यया करोति श्रद्धयोप-
निषदा तदेव वीर्यवत्तरं भवति छांदो. १।१।१०
यदेव साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म य आत्मा
सर्वान्तरस्त्वं मे व्याचक्ष्व बृह. ३।४।२+५।१
यदेवेदमप्रतिरूपं जिघ्रति स
एव स पाप्मा बृह. १।३।३
यदेवेदमप्रतिरूपं शृणोति स
एव स पाप्मा बृह. १।३।५
यदेवेदमप्रतिरूपं पश्यति स एव
स पाप्मा बृह. १।३।४
यदेवेदमप्रतिरूपं वदति स एव
स पाप्मा बृह. १।३।२
यदेवेह तदमुत्र यदमुत्र तदन्विह ।
मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह
नानेव पश्यति कठो. ४।१०
यदेव आकाश आनन्दो न स्यात् तैत्ति. २।७
यदेव पुरोगा एदेव मे भागवेयी
स्यादिति शौनको. १।३
यदेवयन्निवृत्तसर्वपुनाति तस्मादेव
एव यद्वस्तस्यमनश्चवाक्चवर्तनी छांदो. ४।१।६।१
यदेव सर्वाणि भूतान्यनुप्रविष्ट-
स्तन्मर्त्योः आभिवेशेति शौनको. ४।८
यदेवमनुष्यस्यत्यात्मानं देवमथ सा ।
विज्ञानं भूतमेव्यस्य न ततो
विज्ञानं भूतमेव्यस्य न ततो

यदेवज्जरामाप्नोति प्रचक्षते वा
किं ततोऽतिशिष्यते छांदो. ८।१।४
यदेवेनं समापयति तथा समाप-
यितव्यो भवति को. त. २।२५
यदोक्कारस्तस्माद्विद्वानेतेनैवाय-
तनेनैकतरमन्वेति प्रभो. ५।२
यदोमित्येतदक्षरम् मैत्रा. ६।५
यदोषधीभिः पुरुषान् पशून्
विवेश भूतानि चराचराणि महाना. १।४
यदोपयामानि [छाग. २।२+ ४।२
यदोष्णं स पुरुषोऽथ यः पुरुषः
सोऽग्निर्वैश्वानरः मैत्रा. २।८
यद्वत्वा न निवर्तन्ते भ. गी. १५।६
यद्वायत्री तद्वायत्रं, यद्वसवस्तद्वसव्यं शौनको. २।१
यद्वायत्री वै पुरोगास्तत्किमेस्यादिति शौनको. २।२
यद्वाह्वनीयः प्राणः प्रभो. ४।३
यद्वक्षिणां यत्पतीचीं यदुदीचीं
यदूर्ध्वं यदन्तरा दिशो यत्सर्वं
प्रकाशयति तेन सर्वान्प्राणा-
न्निमेषु सन्निधत्ते प्रभो. १।६
यद्वशं तद्वशम्, यत्पौर्णमास्ये
सत्पौर्णमास्यं, यद्वसन्ते केश-
श्मश्रुलोमनखानि वापयेत्सो-
ऽस्याग्निष्टोमः कठश्रु. २।१
यद्वस्त्रावपि कक्ष्यं वामिति बृह. २।५।१७
यदिवा च नक्तं चैनश्चकुम तस्या-
वयजनमसि त्वाहा महाना. १।४।३
यदिशो वेत्थ सदेवाः सप्रतिष्ठाः बृह. ३।९।१९
यद्वश्यं तद्वसद्विद्धि वेदं सर्वमस-
त्सदा । शास्त्रं सर्वमसद्विद्धि न
मां विद्धि तथाविधम् तै. वि. ३।५२
यद्वष्टं दृष्टमनुपश्यति...सच्चासव
सर्वं पश्यति प्रभो. ४।५
यदेवादेवहेळनं देवासश्चकुमा वयं
यदेवा देवहेळनं यद्वदीव्यं नृणामहं
बभूवायुष्टे विश्वतो दधदित्येते-
राज्यं जुह्वत सदेव. १।३

यदेवानां चक्षुष्या गो अस्ति
यदेव किंच प्रतिजग्राह-
मग्निर्मा तस्मादनुणं कृणोतु
यदेवाश्च प्राणाश्च तद्यं तदेतया
वाचाऽभिव्याह्रियते -
यद्दोषा लक्षणमुदकेऽबाधा अङ्ग
तदाहरेति तद्वावमृश्य न विवेद
यद्भवं तदापः
यद्वाग्निशवक्षरा तेनानुष्टुप्
(अथ) यद्वितीयममृतं तदुद्रा
उपजीवन्तीन्द्रेण मुखेन न
वै देवा अग्नन्ति न पिबन्त्ये-
तदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति
यद्वितीयं तन्मध्यमं वलयं भवति
यद्भिः परिमृजति तेन यजुषि...
प्रीणाति
(अथ) यद्वितीये स कोशे स्वपिति
तदेमं च लोकं परं च लोकं
पश्यति सर्वाच्छब्दान्विजा-
नाति स सम्प्रसाद इत्याचक्षते
यद्द किञ्चाभुतेत्येनं मन्यते यथ-
न्तरिक्षलोकमभुतेत्येनं मन्यते
यद्द किञ्चोदं प्रेता ३ इ तदसौ
सर्वमस्ति
यद्दमस्तस्माद्वर्मात् परं नास्त्यतो
अमलीयान् बलीयाः स-
माह्वयते
यद्दविरमो हूयते तदादित्यं गमयति
तत्सूर्योऽग्निमभिवर्षति तेनाज्ञं
भवत्यज्ञाद्भूतानामुत्पत्तिः
(अथ) यद्दसति यज्जक्षति य-
ज्मैथुनं चरति स्तुतशक्यैव तदेति
यद्दस्ताभ्यां चकर किस्विधा-
ययक्षाणां वयमुपजिघ्रमानः
यद्द किञ्चाजमद्यतेऽनेनैव तदद्यत
इह प्रतितिष्ठति
यद्द किञ्चाजानात्योमित्येव तदा
देवा एव समद्विर्यवज्ज्ञा

सहवे. १०

कौ. त. १।६

छांदो. ६।१३।१

शारीरको. १

अव्यक्तो. ६

छांदो. ३।७।१

नृ. षट्च. ३

सहवे. १५

सुबालो. ४।३

१ ऐत. ३।३।१

१ ऐत. १।२।७

बृह. १।४।१४

मैत्रा. ६।३७

छांदो. ३।१७।३

सहवे. ५

बृह. १।३।१७

छांदो. १।१।८

यद्वितं तदसद्विद्धि न मां विद्धि

तथाविधम्

यद्धि परं तपस्तदुर्ध्वं तदुराध्वं

यद्धि भूतमात्रा न स्युर्न प्रज्ञा-

मात्राः स्युः

यद्दीरामयस्तस्माद्विरणमयः

यद्वयेतदन्यत्रास्मत्स्याच्छ्वानो

वैनदद्युर्वयाऽसि वैनद्वि-

मधनीरग्निति

यद्वयेतदवेदिष्यन् कथं मे नावक्ष्य-

ग्निति भगवाऽस्त्येव मे

तद्गवीत्विति

यद्गतामस्य लभेमहि लभेमहि

धनमात्राम्

यद्वाहं तन्मन्त्रः

यद्विभर्ति तस्माद्भरद्वाजः

यद्गहा तज्ज्योतिः

यद्गहा रुद्रहृदयमहाविद्याप्रका-

शितम् । तद्गहामात्रावस्थान-

पदवीमधुना भजे

यद्गहाविदो वदन्ति परा वैवापराध

(यो इ वै) यद्गहाण्डस्यबहिर्ग्याप्तम्

यद्गहाणस्तस्माच्छर्हि तेक्षिणष्टे तपति

तदेवाऽभ्युत्ता

यद्गहाणानीतिहासान् पुराणानि

कल्पान् गाथानाराराशंसी-

मैदसः कूर्या अस्य पितृन्

स्वभा अभिवर्हति

यद्गहाणानीतिहासान् पुराणानि

कल्पान् गाथानाराराशंसीमैदो-

हुतयो देवानामभवन् साभिः

धुवं पाप्मानमपात्रन्

यद्गहाणानीतिहासान् पुराणानि

कल्पान् गाथानाराराशंसीमैदो-

तिभिरेव तदेवास्तपयति

यद्गहाणेभ्योऽहं ददाति तन्मनु-

ष्ययज्ञः सन्तिष्ठते

यद्गहं तन्म जायुव [म.ता. १२।२+

यजुर्वेद इति स यजुर्वेदः

ते. वि. ३।५३

महाना. १६।१२

कौ. त. ३।८

१ ऐत. १।३।१

बृह. ३।९।२५

छांदो. ६।१।७

छांदो. १।१०।६

नृ. षट्च. ३

१ ऐत. २।२।१

मैत्रा. ६।३

रुद्रह. शीर्षके

मुण्ड. १।४

शमो. ४।२

सहवे. १७

सहवे. १४

सहवे. १३

सहवे. १३

सहवे. १४

सहवे. १४

त्रिष्टुप. २

सन्ध्यो. २७

यदूतजालं निखिलं वै विस्तृष्ट-
मेतादृशं त्वां न विदन्ति केचि-

दृष्ट्यान्तरेण परिपश्यन्ति मूढाः २ रुद्रो. ७३

यदूतयोर्नि परिपश्यन्ति श्रीराः (मा.) मुण्डको. १।२।६

यदूतं यच्च अन्यम् [चित्त्यु. १२।१ क्र.मं. १०।९०।२

यदूतेभ्यो बलिं हरति तदूतप्रज्ञः
सन्निष्ठते सहवै. १४

यदूतयुगातीतं तदमूर्तिं तारकमिति मं. भा. १।४

यदूतयुगातीतं तदमूर्तिमत् अद्वयता. ५

यदूतविशेषमात्रज्ञो ब्रह्मजयोनित्त-

दितरे चामरमुल्याः सृष्टिचक्र-

प्रणेतारः सम्बभूवुः लक्ष्म्यु. ९

यद्यपि न विन्देदप्सु जुहुयात् जाबालो. ४

यद्यच्छरीरमादत्ते तेनतेन स युज्यते श्वेताश्व. ५।१०

यद्यच्छुद्धमशुद्धं वा करोत्यामरणा-

न्तिकम् । तत्सर्वं ब्रह्मणे कुर्यात् जा. द. ७।३

यद्यच्छृणोति कर्णाभ्यां तत्तद्वात्मेति

भावयेत् । लभते नासया

यद्यत्तत्वात्मेति भावयेत् १ यो. त. ७०

यद्यजुषि घृतस्य कूल्या...

अस्य पितृन्स्वधा अभिवहति सहवै. १४

यद्यजुषि घृताहुतयो यत्सामानि

सोमाहुतयो यदथर्वाङ्गिरसो

मध्वाहुतयो... तामिः क्षुधं

पाप्मानमपाप्मन् सहवै. १३

यद्यजुषि घृताहुतिभिर्यत्सामानि

सोमाहुतिभिर्यदथर्वाङ्गिरसो

मध्वाहुतिभिर्यद्वाद्यपानातीति-

हान्प्राणानि कल्पान्नाभ-

जायन्ते एसीर्मेदाहुतिभिरेव

सरेवास्तर्पयति सहवै. १४

(अथ) यद्यज्ञः इत्याचक्षते ब्रह्म-

चर्यमेव तत् छांदो. ८।५।१

यद्यत्प्रवृत्तिं तदुभ्यां तत्तद्वात्मेति

भावयेत् १ यो. त. ६९

यद्यत्प्रवृत्तिं तदुभ्यां तत्तद्वात्मेति प्रत्याहारः शांति. १।८।१

यद्यत्प्रीतिकरं पुंसां वस्तु राजेन्द्र

जायते । तदेव दुःखवृक्षस्य भवसं. १।२९

बीजत्वमुपाच्छति

यद्यत्सम्भाव्यते लोके सर्वसङ्कल्प-

सम्भ्रमः ते. वि. ५।४९

यद्यत्संवेद्यते किञ्चित्तन्नास्थापरि-

वर्जनम् महो. ४।११०

यद्यत्सावयवं तत्तदनित्यमित्यनु-

मानाचेति प्रत्यक्षेण कृष्टत्वाच्च त्रि. म. जा. २।१

यद्यत्स्वाभिमतं वस्तु तस्यजन्

मोक्षमभते महो. ४।८८

यद्यदाचरति श्रेष्ठः म. गी. ३।२९

यद्यद्विधायति चित्तेन यद्यत्सङ्कल्पते

कचित्... सर्वं शशविषाणवत् ते. वि. ५।८५-८९

यद्यद्विभूतिमत् सत्त्वं म. गी. १०।४९

यद्यनन्तकदूतोऽसि यदि वाऽनन्तकः

स्वयम्... इन्द्रस्यवज्रेण स्वाहा गारुडो. १६

(अथ) यद्यन्नपानलोककामो

भवति सङ्कल्पादेवास्यान्नपाने

समुत्तिष्ठतस्तेनान्नपानलोकेन

सम्पन्नो महीयते छां. उ. ८।२।७

यद्यपानेनाभ्यपानितम् २ ऐत. ३।११

यद्यपि दशरात्रीर्नाग्नीयाद्यद्युद्

जीवेद्यवाऽद्वष्टाऽश्रोताऽमन्ता

ऽवोद्वाऽकर्वाऽविज्ञाता भवति छां. उ. ७।१।१

यद्यपुत्रो भवत्यात्मानमेवेदं

ध्यात्वाऽनवेक्षमाणः प्राची-

मुदीचीं वा दिशं प्रव्रजेत् १ सं. सो. १।२

यद्यपुत्रो भवत्यात्मानं ध्यात्वा-

ऽनवेक्षमाणः प्राचीमुदीचीं वा.. कठसु. ५

यद्यपेक्षाऽस्ति तदनुरूपो भवति न. म. ५।१४

यद्यप्येतच्छुष्काय स्थाणवे (मा.) छां. उ. ५।३।३

यद्यप्येते न पश्यन्ति म. गी. १।३८

यद्यप्येतच्छुष्काय स्थाणवे ब्रूया-

ज्जायेरजेवास्मिच्छाखाः प्ररोहेयुः छांदो. ५।३।३

पलाशानीति

(अथ) यद्यप्येतानुत्क्रान्तप्राणा-

च्छूलेन समासं व्यतिष्ठं दद्वै-

त्रैत्रं ब्रूयुः पितृहाऽसीति छां. उ. ७।३।५।३

यद्यद्वन्ति तत्तदा भवन्ति (मा.) छांदो. ६।९।३

(अथ) यद्यल्पविद्वित्तवान्भवति
तस्मा एवोत शुभ्रवन्ते चित्तः
शेवैषामेकायनं चित्तमात्मा

चित्तं प्रतिष्ठा चित्तमुपास्वेति छांदो. ७।५।२

यद्यशक्तो भवति योऽद्वेषः स

तपस्यते स तप इति कठश्रु. ८

यद्यहमिममवेदिष्यं कथं ते

नावक्ष्यमिति प्रश्नो. ६।१

यद्यहमिममवेदिष्यं (मा. पा.)

प्रश्नो. ६।१

यद्यहमिमां न वेदिष्यं कथं ते

नावक्ष्यमिति छांदो. ९।३।५

यद्याज्या यदनुवाक्या यत्प्रात-

रनुवाको यत्प्रउगं यदाज्यं
यन्मरुत्वतीयमिति छाग. २।२

यद्यातुरः स्यान्मनसा वाचा (वा)

सद्यसैदेवपन्थाः [जाबालो. ५ प. हं. प. ५

यद्यातुरो वाऽग्निं न विन्देदप्सु

जुहुयात् प. हं. प. ४

यद्युचरेत्समापिपयिषेतेनो एतस्यै

देवस्यैसायुज्यं सलोकतां
जयति बृ. उ. १।५।२३

यद्युत्तरोत्तराभावे पूर्वरूपं तु

निष्कलम् । निवृत्तिः परमा
तृप्तिरानन्दोऽनुपमः स्वतः अध्यात्मो. २९

यद्यवेयुवेह वा विद्वयिष्यामि कर्तुं

पतिष्यामीत्येवमनृतादात्मानं
जुगुप्सेत् महाना. ७।९

(अथ) यद्येनमुभयमन्तरे ब्रुवन्तं

पर उपवदेत् ३ ऐत. १।३।३

(अथ) यद्येनमूष्मसूपालमेत

प्रजापतिः शरणं प्रपन्नोऽभूवं छांदो. २।२२।४

(अथ) यद्येनं निर्मुजं ब्रुवन्त-

मुपवदेत् ३ ऐत. १।३।१, १

(अथ) यद्येनं प्रतृणं ब्रुवन्तं

पर उपवदेत् ३ ऐत. १।३।३

(अथ) यद्येनं स्पृशेत्पूपालमेत

यस्य शरणं प्रपन्नोऽभूवम् छांदो. २।२२।४

यद्येवं ब्रह्मणि स्यात्तत्को न मुच्येत

बन्धनात्

मैत्रा. ६।२४

यद्यवहार्यमचिन्त्यमन्यपदेश्य-

मेकात्मप्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं

शिवं शान्तमद्वैतं चतुर्थं

मन्यन्ते स ब्रह्मप्रणवः

ना. प. ८।२४

यद्याचष्टे स आचार्यस्तेनैव स

मृतोऽथो गच्छति

नृ. पू. १।३

(तत्र) यद्रक्तं तत्पुंसोरुपमभूत् ।

यद्धरितं तन्मायायाः

अन्यको. १

यद्रमते तदुपसदः

महाना. १८।१

(शरीरे) यद्रवं ता आपः

गर्भो. १

यद्राजाभिक्रयणानि [छाग. २।२+ ४।२

यद्राज्यमुखलोमेन

भ. गी. १।४५

यद्राज्यात्कुरुते पापं तद्राज्यात्प्रति-

मुच्यते

महाना. ११।६

यद्राज्या पापमकार्षं, मनसा वाचा

हस्ताभ्याम्, पद्भ्यामुदरेण

शिखा, रात्रिस्तदवलुम्पतु

महाना. ११।४

यद्रूपं सद्रूपं तन्मायासंवलितोऽयं

जीवसङ्गः कर्मकाण्डरतो भवति सामर. ९९

(अथ) यद्रजः कश्चिच्छून्यागारे

कामिन्यः प्रविष्टाः स्पृशती-

न्द्रियार्थीस्तद्रथो न स्पृशति

प्रविष्टान्सङ्ग्यासी योगी

चात्मयाजी चेति

मैत्रा. ६।१०

यद्रन्मृदि घटभ्रान्तिः शुक्रौ हि

रजतस्थितिः । तद्रद्रह्मणि

जीवत्वं वीक्षमाणे विनश्यति

यो. शि. ४।१३

यद्रर्षति स प्रस्तावः

छांदो. २।४।१

यद्रसन्ते केशश्मश्रुलोमनखानि

वापयेत्सोऽस्यामिष्टोमः

कठरु. ३

यद्वा अयं विद्वान्नेत्यमाचितः स्यात्

छांदो. ७।५।२

यद्वा अहमायतनमस्मि, त्वं तदा-

यतनमसीति मनः (उवाच)

बृह. ६।१।१४

यद्वा अहं प्रजातिरस्मि, त्वं तत्प्र-

जातिरसीति रेतः (उवाच)

बृह. ६।१।१४

यद्वा अहं प्रतिष्ठाऽस्मि, त्वं तत्प्र-

तिष्ठोऽसीति चक्षुः (उवाच)

बृह. ६।१।१४

यद्वा अहं वसिष्ठाऽस्मि, त्वं तद्-
 सिष्ठोऽसि (इति वागुवाच) बृह. ६।१।१४

यद्वा अहं सम्पदस्मि, त्वं तत्सम्प-
 दसीति श्रोत्रं (उवाच) बृह. ६।१।१४

यद्वा ऋते प्राणाद्रेतः सिच्येत
 पूयेज सम्भवेत् ३ ऐत. २।२।२

(तदाहुः) यद्वा एतस्य वीर्यं
 यच्छुक्रं यज्ज्योतिर्यदमृतं यदजर्यं
 तदवरमिति शौनको. २।३

यद्वा एतेऽमुह्यधियन्त तदेवाप्यद्य
 कुर्वन्ति बृह. १।५।२३

यद्वा कृतममृतश्चराणां यत्सर्वनि-
 ष्ठमजरं समस्तम् पारमा. १।८

(छी) यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि
 राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा ।
 चतस्र ऊर्ध्व(ऊर्ज) दुदुहे पयांसि
 कस्विदस्याः परमंजगाम हयग्री. ६

[सरस्व. ७ क्र.मं. ८।१००।१

यद्वाच ओमिति यच्च नेति
 यच्चास्याः क्रूरं यदि चोत्वाणिष्णु १ ऐत. ३।८।३

यद्वाचाऽनभ्युदितं येन वागभ्यु-
 द्यते । तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि
 नेदं यदिदमुपासते केनो. १।४

यद्वाचा यन्मनसा बाहुभ्या-
 मूरुभ्यामष्टीवज्रयाः शिश्रै-
 र्यदनृतं चक्रुम वयम् सहवै. ४

यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः भ. गी. २।६

यद्वा प्रज्ञामात्रा न स्युर्न भूतमात्राःस्युः कौ. त. ३।८

यद्वायुरजमायुर्वा एष यद्वायुः २ ऐत. ३।१०

यद्वाव विजिज्ञासितव्यम् छांदो. ८।१।२

यद्वां पूर्वं परिबिष्टं यदमौ तस्मै
 गोत्रायेह जायापती सः२२मेयाम् सहवै. १०

यद्विकारि यतश्च यत् भ. गी. १३।४

यद्विजृम्भते तद्विद्योतिते..(मा.पा.) बृ. उ. १।१।१

यद्विज्ञातमिवाभूदित्येतासामेव
 देवतानां समासः छांदो. ६।४।७

यद्विज्ञानरूपं यदेवाः सर्वे ब्रह्म
 उच्येदमुपासते ग. शो. ४।१

यद्विज्ञानात् पुमान् सद्यो जीव-
 न्मुक्तत्वमाप्नुयात् महो. २।३७

यद्विद्वाःसश्चाविद्वाःसश्चैनश्चकुम्भ
 तस्यावयजनमसि स्वाहा महान्त. १४।२

यद्विद्युतोरोहिनं रूपं तेजसस्तद्रूपं
 यद्विद्युद्विद्योततेऽयैतन्म्रियते यज्ञ
 विद्योतते तस्य वायुमेव तेजो
 गच्छति कौ. त. २।१२

यद्विभाति चिन्मात्रम् बह्वचो. ३

यद्विश्वमसृजन्त तस्माद्विश्वसृजः
 यद्वृक्षो वृक्णो रोहति मूलान्नवतरः
 पुनः । मर्त्यः स्वन्मृत्युना वृक्णः
 कस्मान्मूलात्परोहति नृ. पू. १।७

यद्वेत्य तेन मोपसीद तत ऊर्ध्वं
 वक्ष्यामीति छांदो. ७।१।१

यद्वेदविद्याभिगमः स्वधर्म-
 स्यानुचरणं... मैत्रा. ४।३

यद्वेदेष्टुक्तं तद्विद्वांस उपजीवन्ति
 यद्वेव समः पुषिणा समो मशकेन
 समो नागेन सम एमिक्षिभि-
 लोकेः समोऽनेन सर्वेण मैत्रा. ७।१०

तस्मादेव सामाभुते बृह. १।३।२२

यद्वै किञ्चानूक्तं तस्य सर्वस्य
 ब्रह्मेत्येकता बृह. १।५।१७

यद्वै किञ्चैतदध्यगीष्टा नामैवैतत्
 यद्वै चतुर्थं तत्तुरीयं दर्शतं पदं
 यद्वै चतुर्थं तत्तुरीयं दर्शतं पदं
 परोरजाय एष तपतीति छांदो. ७।१।३

यद्वै तत्पुरुषे शरीरविदं वाव तद्य-
 दिदमस्मिन्नन्तःपुरुषे हृदयम-
 स्मिन्हीमे प्राणाः प्रतिष्ठिता एत-
 देव नातिशीयन्ते गायत्र्यु. २

यद्वैतत्सुकृतम् छांदो. ३।१३।४

यद्वै तन्न जिघ्रति जिघ्रन्वै तन्न
 जिघ्रति नहि घ्रातुर्घ्रातेर्विपरि-
 लोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् छांदो. ३।१३।४

यद्वै तन्न मनुते मन्वानो वै तन्न
 मनुते नहि मन्तुर्मतेर्विपरिलोपो
 विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ३।३।१८

यद्वै तन्न रसयते रसयन्तै तन्न
रसयते नहि रसयितु रस-
यतेविपरिलोपो विद्यतेऽवि-
नाशित्वात्

बृह. ४।३।२५

यद्वै तन्न वदति वदन्तै तन्न वदति
नहि वक्तुर्वक्तैर्विपरिलोपो
विद्यतेऽविनाशित्वात्

बृह. ४।३।२६

यद्वै तन्न विजानाति विजानन्तै
तन्न विजानाति नहि विज्ञातु-
विज्ञातिर्विपरिलोपो विद्यतेऽवि-
नाशित्वात्

बृह. ४।३।२७

यद्वै तन्न शृणोति शृण्वन्तै तन्न
शृणोति नहि श्रोतुः श्रुतेर्वि-
परिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात्

बृह. ४।३।२७

यद्वै तन्न स्पृशति स्पृशन्तै तन्न
स्पृशति नहि स्पृष्टुः स्पृष्टैर्वि-
परिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात्

बृह. ४।३।२९

यद्वै तन्न यद्येतीदं वाव तद्योऽयं बहिर्धा
पुरुषादाकाशो यो वै स बहिर्धा
पुरुषादाकाशः

छांदो. १।१२।७

यद्वै तन्न तत्परं ब्रह्म [अ. शि. ३।१४+

बटुको. १९

यद्वै तन्न प्राणिनिः

छाग. १।३

यद्वै प्राणिनि स प्राणो यद्वै प्राणिनि
यो व्यानोऽयं यः प्राणापानयोः
प्राणिनिः स व्यानो यो व्यानः
सोऽयं

छांदो. १।३।३

यद्वै सः स ऋग्वेदः, यद्वै सः स
स यजुर्वेदः, स्वरिति स्वर्गो
लोकः स सामवेदः, तदिति
सोऽथर्ववेद इति

सुन्ध्यो. २०

यद्वै बाह्याक्रमति मनसा सह

गणेशो. ३।२

यद्वै बाह्याक्रमति मनसा सह
बा. मयुजी. देवदेडनम् । (देळनं)

[महाना. १४।२+

क्र.मं. १०।३७।१२

यद्वै तन्न तत्प्रत्यक्षस्य अत्यन्तम्

अन्यको. ४

यद्वै तन्न तत्प्रत्यक्षस्य अत्यन्तम्
अन्यको. ४

यद्वै तन्न तत्प्रत्यक्षस्य अत्यन्तम्
मिति मत्वा विवक्तुः पुरुषः

यद्वै तन्न तत्प्रत्यक्षस्य अत्यन्तम्

ता. म. ६।२

यन्नराजाय विद्महे महायन्त्राय

धीमहि । तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात् वनदु. १५०

यन्त्रस्यपूर्वद्वारे द्वारश्रियैक्षेत्रपालाय
मायायै नमः

सूर्यता. ४।१

यन्त्रं विना देवता च न प्रसीदति
सर्वदा

सूर्यता. ५।१

यन्त्रारूढानि मायया

भ. गी. १८।६१

यन्न ज्वलति तस्यादित्यमेव तेजो
गच्छति

कौ. त. २।१२

यन्नत्यादेवपरंश्रुत्कोपरशिवः

सि. वि. ३

यन्नमस्यं चिदाख्यातं यत्सिद्धीनां

च कारणम् । येन विज्ञातमात्रेण

जन्मबन्धात्प्रमुच्यते

यो. शि. ३।१

यन्न सन्तं न चासन्तं नाश्रुतं न

बहुश्रुतम् । न सुवृत्तं न दुर्वृत्तं

वेद कश्चित्स ब्राह्मणः

ना. प. ४।३४

यन्नीलं परः कृष्णं तत्साम तदे-

तस्यामृच्यध्यूढं साम

छां. उ. १।६।५, ६

यन्नु इयं... कथं तेनामृता

स्थामिति- (मा. पा.)

बृ. उ. २।४।२

यन्नु म इयं भगोः सर्वा पृथिवी

वित्तेन पूर्णा स्यात् [बृह.

२।४।२+४।५।३

यन्नु हो तद्गायत्रीविद्वद्भ्याः, कथं

कथं हस्तीभूतो बह्वीति

बृह. ५।१४।८

यन्नारसिंहं तत्प्रथमस्य, यन्महा-

लक्ष्म्यं तद्वितीयस्य... यत्कोष-

दैवतं तच्छुभस्य । तदेतानि

षण्णां नारसिंहचक्राणां षडान्त-

राणि बलयानि भवन्ति

नृ. षट्च. ४

यन्नारसिंहाय तत्प्रथमस्य यद्विद्महे

तद्वितीयस्य

नृ. षट्च. ५

यन्नैष एतत्सुप्तोऽभूद्य एष

विज्ञानमयः पुरुषः

बृ. उ. २।४।१७

यक्यायं तदसत्सदा । यद्वितं

तदसद्विद्धि

यन्मदिमे विव्यति तन्म पदं ते

ये अक्षयवद्वे ताननूयम्

ते. वि. ३।५।३

भा. मं. ३।२

यन्मनसा न मनुते, येनाहुर्मनो-
मत्तम् । तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि
नेदं यदिदमुपासते केनो. १।६
यन्मनस्त्रिजगत्सृष्टिस्थितिव्यसन-
कर्मकृत् । तन्मनो विद्यं याति
तद्विष्णोः परमपदम् [ध्या.वि.२५+ म.ब्रा. ५।१
यन्मनुष्यान् वासयते यदेभ्योऽशनं
वृदाति, तेन मनुष्याणां (आत्मा) बृह. १।४।१६
यन्मनोऽनुविधीयते भ. गी. २।६७
यन्मन्त्रेक्षितलान्छिताभमनयं
मृत्युश्च वज्राशिषो...वन्दे-
ऽभीष्टगणाधिपं भयहरं विघ्नौघ-
नाशं परम् वनदु. ८६
यन्मन्युर्जायामावहदित्यध्यात्म-
मन्त्राजपेत् कठश्रु. २२
यन्मन्त्रो परिजनस्यार्थं कृतं कर्म
शुभेऽशुभम् । एकाकी तेन दह्ये-
ऽहं गतास्ते फलभोगिनः गभो. ५
यन्मया पूरितं विश्वं महाकल्पा-
स्तुना यथा वराहो. २।३६
यन्मया युक्तमसाधूनां पापेभ्यश्च
प्रतिग्रहः महाना. ५।१५
यन्मया मनसा वाचा कृतमेतः कदाचन
यन्मायि माता यदा पिपेव सहै. १०
यन्मरणं तदवभृथः (आत्मयज्ञस्य) सहै. ४
(अथ) यन्मर्त्यः सन्नमृतानसृजत महाना. १८।१
यन्महाचक्रं यज्योतिरात्मा तत्तृतीयस्य बृह. १।४।६
यन्महावाक्यसिद्धान्तमहाविद्या-
कलेवरम् । विकलेवरकैवल्यं नृ. षट्च. ६
यन्मन्त्रेण पदं भजे महावा. शीर्षकं
यन्महावीरसम्भरणानि [छाग. २।२+ ४।२
यन्मन्त्रेण निषेधं चिदाकाशतया
स्थितम् । परमाद्वैतसाम्राज्यं
तन्नामब्रह्म मे गतिः महो. शीर्षकं
यन्मातरं पितरं वाजिहिसिम सहै. १०
यन्मायया मोहितचेतसो मामा-
मावमापूर्णमलम्बन्तः । परं
विघ्नौघपरपूरणाय भ्रमन्ति
काका इव कुरवोऽपि मैत्रे. २।२५

यन्मां वदसि केशव भ. गी. १०।१४
यन्मुखं तदाहवनीयः महाना. १८।१
(अथ) यन्मूर्तं तदसत्यं, यद्मूर्तं
तत्सत्यं तद्ब्रह्म मैत्रा. ६।३
यन्मूलं सर्वलोकानां यन्मूलं
चित्तबन्धनम् । मूलबन्धः सदा
सेव्यो योग्योऽसौ ब्रह्मवादिनाम् ते. वि. १।२७
यन्मूले सर्वतीर्थानि यन्मध्ये ब्रह्मदेवताः तुलस्यु. ९
यन्मृत्युर्जयमावहमित्यध्यात्म-
मन्त्रान्पठेत् कठश्रु. ४
यन्मृत्युर्नावपश्यति, यन्ब्रह्मानावपश्यति भस्मजा. २।१६
यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो
वातितृणं बृहस्पतिर्मे तदघातु
[प्रवर्गा. २+ वा. सं. ३६।३
यन्मे त्वदन्त्येन न दृष्टपूर्वम् भ. गी. ११।४७
यन्मेऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान्त्सीध-
दोषधीरप्यसरत् यदप इदमहं
तद्रेत आददे... बृह. ६।४।५
यन्मे मनसा वाचा कर्मणा वा.. महाना. ५।१६
यन्मौनमासनं शान्तं तच्छ्रेष्ठासङ्गं
उच्यते अथ्युप. २५
(अथ) यन्मौनमित्याचक्षते
ब्रह्मचर्यमेव तत्, ब्रह्मचर्येण
होवात्मानमनुविद्य मनुते छांदो. ४।५।२
यन्मौनं योगिभिर्गम्यं तद्भजे-
त्सर्वदा बुधः ते. वि. १।२०
यमघो निनीषति तमसाधु (कर्म)
कारयति ...
यमध्वरे ब्रह्मविदः स्तुवन्ति सामै-
र्यजुभिः क्रतुभिस्त्वमेव एका. ८. १०
यमध्वर्युरभि लोकं पूर्णधीत् वा. सं. १५
यमनियमयुतः पुरुषः सर्वसङ्ग-
विवर्जितः छांदो. १।५।१
यमतिथिमासनप्राणायामप्रत्या-
हारधारणाध्यानसमाधयो-
ऽष्टाङ्गानि सांख्य. १।१।३
यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहार-
धारणाध्यानसमाधयोऽष्टाङ्ग-
योग उच्यते २ अथ्यु. १

यमन्तस्समुद्रे कवयोऽवयन्ति
यमन्वाह नभसो न पक्षी काष्ठा-

मिन्दन्गोभिरितोऽमुतश्च

यमप्येति भुवनं साम्पराये

यमराज्यमभिष्टोमेनाभियजति

यमविषयस्थस्यैव बहुभयावस्थं

यमव्यक्तं न वेद [सुबालो. ७।१+ अध्यात्मो. १

यमश्च नियमश्चैव आसनं प्राण-

संबन्धः ॥ प्रत्याहारो धारणा

च ध्यानं धूमध्यमे हरिम् ।

समाधिः समतावस्था साष्टांगो

योग उच्यते

यमश्च नियमश्चैव तथैवासनमेव

च ॥ प्राणायामस्तथा ब्रह्मन्

प्रत्याहारस्ततः परम् । धारणा

च तथा ध्यानं समाधिश्चाष्टमं

मुने [जा. द. १।४, ५+ वराहो. ५।११

यमभवनं कुशिकासो अग्निं

वैद्यानरममृतजातं गमय्ययी

कर्मः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति, यज्ञ इति

समाधिश्चाष्टमयोगसङ्कल्पो बन्धः

यमः संयमिनामहम्

यमादित्या अंशुमाप्याययन्ति

यमाद्यष्टांगसंयुक्तः शान्तं सत्य-

परायणः

यमाद्यासनजायासद्विष्ठाभ्यासात्पुनः

पुनः । सोऽपि मुक्तिं समाप्नोति

सद्विष्णोः परमं पदम्

यमाश्वा न निर्वर्तते

यमाय सौमं सुनुत यमाय जुहुता हविः

[वनदु. ४१, ५४+ क्र.मं. १०।१४।३

यमित्येकमध्वरमेति स्वर्गं लोकं

य एवं वेद

यमुत्त्वा मुच्यते योगी [नारा. ४+ आ. प्र. १

यमित्येकमध्वरमेति स्वर्गं लोकं

यमित्येकमध्वरमेति स्वर्गं लोकं वृह. ५।१।१

यमेव न प्रतिपद्यतेऽप्योक्तत्वाहु-

जागृतिर्यथा यथास्यैव इति वृह. ४।३।१४

महाना. १।३

वा. मं. १५

नृ. पू. २।८

मैत्रा. ६।३६

मैत्रा. ४।२

अध्यात्मो. १

१ यो. त. २४

१ यो. त. २४

वराहो. ५।११

आर्वे. १०।१

वृह. ३।१।२१

म. वा. र. २०

भ. गी. १०।२९

कौ. त. २।८

जा. द. ५।३

वराहो. ४।३९

मैत्रा. ४।३

क्र.मं. १०।१४।३

वृह. ५।३।१

आ. प्र. १

वृह. ५।१।१

वृह. ४।३।१४

यमेव विद्याश्रुतमप्रमत्तं मेधाविनं

ब्रह्मचर्योपपन्नम् । (अस्मा) तस्मा

इमामुपसन्नाय सम्यक् परीक्ष्य

दद्याद्वैष्णवीमात्मनिष्ठाम्

[शाट्याय. ३४+ मुक्तिको. १।५२

यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष

आत्मा विवृणुते तनूः स्वाम्

[कठो. २।२२+ मुण्ड. ३।२।३

यमैश्च नियमैश्चैव आसौतश्च

सुसंयुतः । नाडीशुद्धिं च

कृत्वादौ प्राणायामं समाचरेत्

यमो हि नियमस्त्यागः

यया तु धर्मकामार्थान्

यया त्यजेत्तयाऽऽपूर्य धारयेद्विरोधतः

यया धर्ममधर्मं च

यया स्वप्नं भयं शोकं

ययेदं धार्यते जगत्

यवैरेतावद्भिरभिषिच्य सूर्यलोककामः

सूर्यलोकमवाप्नोति

यशस्विनावेवं (उभौ) भवतः

यशस्विनीकुहूमध्ये वारुणी प्रति-

ष्ठिता भवति

यशस्विनी च वामस्य पादाङ्ग-

ष्ठान्तमिष्यते

यशस्विनी सौम्या च पादाङ्गष्ठान्त-

मिष्यते

यशस्विन्या मुनिभेष्ट भगवान्

आस्करस्तथा

यशस्विन्याः कुहोर्मध्ये वारुणा

सुप्रतिष्ठिता

यशोजनेऽसानि स्वाहा

यशोदा इव बिन्दुः

यशो बलं ज्ञानं वैराग्यं मेधां प्रयच्छेति

यज्ञोपवीतं छित्त्वा ॐ भूः स्वाहे-

त्यप्सु वक्षं कटिसूत्रं च विसृज्य

सञ्जयस्तं प्रयेति त्रिवारमभिमन्त्रयेत्

यशोब्रह्मवचसमन्नाद्यंकीर्तिस्त्वा जुषतां

यशोदा मुक्तिकोदिनी

त्रि. ब्रा. २।५३

ते. वि. १।१५

भ. गी. १८।३४

१ यो. त. ३९

भ. गी. १८।३१

भ. गी. १८।३५

भ. गी. ७।५

भस्मजा. २।१२

वृह. ६।४।८

शांडि. १।४।६

जा. द. ४।१९

शांडि. १।४।६

जा. द. ४।३७

जा. द. ४।१६

तैति. १।४।५

राधिको. २।२

१ सं. सो. ५।६

को. त. २।१५

कुण्डो. ३

यशो राज्ञां यशो विशां यशोऽहमनु-

प्रापत्तिं स हाहं यशसां यशः छांदो. ८।१४।१

यशोऽरिष्टंचिन्मात्रंचिदानंदंविचितय मुक्तिको. २।५

यशोऽहं ब्रवानि ब्राह्मणानां (मा.) छांदो. ८।१४।१

यशोऽहं भवामि ब्राह्मणानां छांदो. ८।१४।१

यश्चक्षुरन्तरो यमयत्येष त आत्मा-

ऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।१८

यश्चक्षुर्गोमृ (वेद) गोप्तृमान् भवति कौ. त. २।१

यश्चक्षुषि तिष्ठश्चक्षुषोऽन्तरो यं

चक्षुर्न वेद यस्य चक्षुः शरीरम् बृह. ३।७।१८

यश्चक्षुषि भोगस्तं देवेभ्य आगायत् बृह. १।३।४

यश्चक्षुषि यो द्रष्टव्ये य आदित्ये

(सोऽयमात्मा) सुबालो. ५।१

यश्च नः शपतः शपात् सूर्यता. २।१

यश्चन्द्रतारकमन्तरो यमयत्येष त

आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।११

यश्चन्द्रतारके तिष्ठश्चन्द्रतारकादन्तरो

ये चन्द्रतारकं न वेद बृह. ३।७।११

यश्चन्द्रमास्तं यत्प्रत्याह तमत्तिसृजते कौ. त. १।२

यश्च विश्वं सृजति विश्वं बिभर्ति...

स आत्मा शांडि. २।१।४

यश्च श्रीत्रियोऽवृजिन्मेऽकामहंतः बृह. ४।३।३३

यश्च सर्वगतः साक्षी लोकस्यात्मेति

कथ्यते । भूतग्रामशरीरेषु ना. महो. ११

नश्यत्सु न विनश्यति

यश्चाचारविहीनोऽपि यो वा पूजा कौलो. ९

न कुर्वते । यदि ज्येष्ठं न मन्येत

नन्दते नन्दने वने महाना. ५।२०

यश्चाप्सु वरुणः स पुनात्वघमर्षणः

यश्चायमध्यात्ममात्मा तेजोमयो-

ऽमृतमयः (मा. पां.) बृह. २।५।१४

यश्चायमन्तरात्मजाकाशः बृह. २।३।४, ५

यश्चायमस्मिन् धर्मे तेजोमयोऽमृत-

मयः पुरुषो यश्चायमध्यात्मम् बृह. २।५।११

यश्चायमस्मिन्मौ तेजोमयोऽमृत-

मयः पुरुषो यश्चायमध्यात्मं बृह. २।५।३

यश्चायमस्मिन्माकाशः...पुरुषः बृह. २।५।१०

यश्चायमस्मिन्मात्मनि...पुरुषः बृह. २।५।१४

यश्चायमस्मिन्मादित्ये...पुरुषः बृह. २।५।५

यश्चायमस्मिन्मानुषे...पुरुषः बृह. २।५।१३

यश्चायमस्मिन्वायौ...पुरुषः बृह. २।५।४

यश्चायमस्मिन्सत्ये...पुरुषः बृह. २।५।१२

यश्चायमस्मिन् स्तनयिल्लो...पुरुषः बृह. २।५।९

यश्चायमस्मिन्श्चन्द्रे...पुरुषः बृह. २।५।७

यश्चायमस्यां पृथिव्यां...पुरुषः बृह. २।५।१

यश्चायमस्यां विद्युति...पुरुषः बृह. २।५।८

यश्चायमात्मा तेजोमयोऽमृतमयः

पुरुषोऽयमेव स योऽयमात्मे-

दममृतमिदं ब्रह्मेदं सर्वम् बृह. २।५।१४

यश्चायमासु दिक्षु...पुरुषः बृह. २।५।६

यश्चायमात्स्वप्सु...पुरुषः बृह. २।५।२

यश्चासावादित्य एकमेतदित्यवोचाम

यश्चासावादित्ये, स एकः ३ ऐत. २।४।३

यश्चित्तमन्तरे सञ्चरन्त्यं चित्तं न वेद अभ्यात्मो. १

यश्चित्तं ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।५।३

यश्चित्ते यश्चेतयितव्ये यः क्षेत्रज्ञे...

(सोऽयमात्मा) सुबालो. ५।९

यश्चेतनमात्रःप्रतिपुरुषःक्षेत्रज्ञः [मैत्रा. २।५+४।५

यश्चेनमभिदासति स एषोऽश्मा खणः छांदो. १।२।८

यश्चेन्न मन्यते हतम् भ. गी. २।१९

यश्चेवं विद्वान् प्रयुज्यते यथा चाग्नि-

चन्द्रसूर्याभास्वन्तोऽपहततमस्काः संहितो. २।३

यश्चेवं वेद यस्यैते स्वरवन्तः प्रयुज्यन्ते संहितो. २।३

यश्चेषोऽग्नौ, यश्चायं हृदये, यश्चा-

सावादित्ये सपषपकः [मैत्रा. ६।१७ + ७।७

यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपश्छन्दो-

म्यश्छन्दास्याविवेश महाना. ७।६

यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः । छन्दो-

म्योऽध्यमृतात्सम्भूय तैत्ति. १।४।१

[ना. प. ४।३८ तै. भा. ७।४।१+ १०।६।१

यष्टव्यमेवेति मनः भ. गी. १।७।११

यष्टिका कमलासनः कृष्णो. ८

यष्टया वा पाणिना बोधहत्यातिक्रमेत् बृह. ६।४।७

यस्तद्वेद यत आबभूव चित्त्यु. १।४।२

यस्तद्वेद यंतस वेद स मयैतदुक्त इति छांदो. ४।१।४

यस्तद्वेद स पितुः पितासत् महाना. २।४

यस्तद्वेद स वेद सर्व सर्वा दिशो

बलिमश्मै हरन्ति छांदो. २।२।१

यस्तन्तुनाम इव तन्तुभिः प्रधानजैः

स्वभावतो देव एकः स्वमावृणोत्

यस्तपसाऽपहृत्तपाप्मा

यस्तवसि तिष्ठन्तमस्रोऽन्तरो यं

तेजो न वेद यस्य तमः शरीरं..

यस्तमात्मानमनुविद्य विजानाति

छां. ए. ८।७।१+

यस्तमोऽन्तरो यमयत्येष त आत्मा-

ऽन्तर्याम्यमृतः

यस्तं वेद स वेदवित् [ध्या.वि. ३७+

यस्तां (ब्रह्मविद्यां) न वेद

किमन्यैवेदैः करिष्यति

यस्तां न वेद किमुचा करिष्यति

यस्मिन्त्याज सचिद्विदं सखायं न तस्य

वाच्यमपि भागो अस्ति [सहवै. १९+

[भ.सं. मं. १०।७।१६+

यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागी-

त्यागिधीयते [भ.गी. १८।११

यस्तु ब्राह्मणस्य हस्त्रं प्रणवं जपते-

ऽन्वहम् । तस्य ब्राह्मण्यमसिद्धेः

परं ब्रह्म प्रकाशते

यस्तु मूढोत्पलुद्विर्वा सिद्धिजातानि

वाञ्छति । स सिद्धिसाधनैर्यौगै-

स्तानि साधयति क्रमात्

यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन

मनसा सदा । तस्येन्द्रियाणि

बह्यानि सदस्या इव सारथेः

यस्तु विज्ञानवान्भवति समनस्कः

सदा शुचिः । स तु तत्पद-

माप्नोति यस्माद्भूयो न जायते

यस्तु वेदोदितं धर्मं त्यक्त्वा ज्ञानं

समाश्रयेत् । स पाखण्डीति

विज्ञेयो वरकं चाधिगच्छति

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानु-

पश्यति । सर्वभूतेषु चात्मानं

सतो न विजुगुप्सते [ईशा. ६+

यस्तर्णनाम इव तन्तुभिः प्रधानजैः

स्वभावतः । देव एकः स्वमा-

वृणोति स नो दधातु अद्याव्ययम्

भवसं. २।४७

मैत्रा. ४।४

बृह. ३।७।१३

८।१२।६

बृह. ३।७।१३

म. गी. १५।१

अन्यक्तो. ३

गुह्यका. ५३

३।१२. २।४।१

तै.आ. १।३।१

भवसं. १।५३

१ सं.सो. २।१०४

अ. पृ. ४।५

कठो. ३।६

कठो. ३।८

भवसं. १।६४

वा. सं. ४०।६

श्वेता. ६।१०

यस्तेजसि तिष्ठस्तेजस्रोऽन्तरो यं

तेजो न वेद..स त आत्मा..

यस्तेजोऽन्तरे सञ्चरन्त्यं तेजो न वेद

यस्तेजो ब्रह्मेत्युपास्ते तेजस्वी वै स

तेजस्वतो लोकान्भास्वतोऽप-

हृततमस्कानभिसिद्धयति

यस्ते मन्योऽविघद्वज्र सायक सह

ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्

[ऋ. मं. १०।८३।१+

यस्ते स्तनः शशयो यो मयो भूयेन

विश्वा पुष्यसि वीर्याणि । यो

रत्नवा वसुविद्यः सुदन्नः सर-

स्वति तमिह धातवे करिति

[ऋ. मं. १।१६४।४९+

[+वा. सं. ३८।५+

यस्ते स्व इतरो देवयानात्

यस्त्वचमन्तरो यमयत्येष त

आत्माऽन्तर्याम्यमृतः

यस्त्वचि तिष्ठस्त्वचोन्तरो यं

त्वक् न वेद यस्य त्वक् शरीरं..

यस्त्वचि यः स्पर्शयितव्ये यो वायौ

यो नाड्यां सोऽयमात्मा

यस्त्वधीते वा स सर्वपातकेभ्यः

पूतो भवति

यस्त्वमसि सौऽहमस्मि

यस्त्वविज्ञानवान्भवत्यमनस्कः सदा-

ऽशुचिः । न स तत्पदमाप्नोति

संसारं चाधिगच्छति

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन

मनसा सदा । तस्येन्द्रियाण्य-

बह्यानि दुष्टास्या इव सारथेः

यस्त्वं भूत्वा पर्जन्यो विभ्रेति

यस्त्वात्सरतिरेव स्यात्

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा

यस्त्विमा अवयतीरोपास्ते त परा..

यस्तेजसाऽधीते सौऽप्येवमेव भवति

यस्त्वेषमेव प्रादेशमात्रमयि विमान-

मात्मानं वैधानरमुपास्ते त सर्वेषु

बृह. ३।७।१४

अध्यात्मो. १

छांदो. ७।११।२

वनदु. १००

अथ. ४।३२।१

बृह. ६।४।२७

अथर्व. ७।१०।१

तै. आ. ४।८।२

चित्त्यु. १५।३

बृह. ३।७।२१

बृह. ३।७।२१

सुवालो. ५।५

वासुदे. १७

कौ. त. १।६

कठो. ३।७

कठो. ३।५

पारमा. ३।१

अ. गी. ३।१७

अ. गी. ३।७

सांख्य. ८।३

कान्तो. १

लोकेषु सर्वेषु भूतेषु सर्वेष्वत्म- स्वन्नमत्ति	छांदो. ५।१८।१
यस्त्वेतर्हि ब्रूयान्मूर्धातिविपतिष्यतीति	छांदो. १।८।६
यस्त्वेन परमतीवीच्यन्तं पश्य-	
नुपास्ते पापीयान्भवति	आर्षे. ६।३
यस्त्वेन परमनूद्यन्तं वेदाय तथोपास्ते	
परं ज्योतिरुपसम्पद्यते सर्वमायु-	
रेति वक्षीयान्भवति	आर्षे. ६।३
यस्त्वेवं विजानीयात्स ज्ञारायण-	
ज्ञायुष्यमवाप्नोति	ऊर्ध्वधुं. ६
यस्त्वेवं ब्राह्मणो विद्यात्	चित्त्यु. १३।२
यस्त्वेवोभयमंतरेणाहृतस्य नास्त्युपवादः ३ ऐत. १।३।१	
यस्मा एवमुपतिष्ठतेऽहमदःप्रापमिति	गायत्र्यु. ५
[नृ. उ. ५।१४।७+	
यस्माद्भारमतीतोऽहं	भ.गी. १५।१८
यस्माच्च बृहति बृंहयति च सर्वं	
तस्मादुच्यते परं ब्रह्म	शांडि. ३।२।१
यस्माच्छन्दोभिश्छन्नस्तस्माच्छब्दांसी-	
त्याचक्षते	१ ऐत. १।६।१
यस्माच्छिन्नः सुखपूर्णः सर्वज्ञः	
सर्वगः प्रभुः । तस्मात्स पाद-	
रहितः स विशुद्धः स्वभावतः	शिबो. १।१५
यस्माच्छ्रोत्रत्वगक्ष्यादि स्वादिकर्मे-	
न्द्रियाणि च । व्यावृत्तानि परं	
प्राप्तुं न समर्थानि तानि तु	कठक. ३३
यस्माज्जातमिदं विश्वं यस्मिन्नेव	
विलीयते । स एव भगवान्	
विष्णुः शास्ता सर्वेश्वरः	भवसं. ५।१५
यस्माज्जातो भगात्पूर्वं तस्मिन्नेव	
भगे रमन्..	यो. त. १३२
यस्माच्छानोपदेशार्थं गुरुरास्ते	
सदाशिवः	शिबो. ७।४५
यस्माच्चतुर्पदेष्टाऽसौ तस्मादुत्तरो	
गुरुः [इबो. ७+	आह्वयता. १२
यस्मात्तेज आत्मीयं कृत्वा सर्वा-	
नस्मान् पादयिष्वसि स्वाहा	पारमा. २।९
यस्मात्परमपरं परायणं च बृहद्ब्रह्म	
बृंहयति तस्मादुच्यते परं ब्रह्म	अ. शिरः. ३।५

यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चित्	
यस्माज्जाणीयो न ज्यायोऽस्ति	
कश्चित् । वृक्ष इव स्तब्धो दिवि	
तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण	
सर्वम् [श्वेता. ३।९+	महाना. ८।१३
यस्मात्प्रपञ्चः परिवर्ततेऽयम्	श्वेता. ६।६
यस्मात्सर्वमाप्नोति सर्वमादत्ते सर्व-	
मत्ति च तस्मादुच्यते आत्मा	शांडि. ३।२।१
यस्मात्सर्वस्मात्पुरतः सुविभातो-	
ऽतश्चिद्भन एव	नृसिंहो. ८।५
यस्मात् सर्वेषां भूतानां वा वीर्यतमः	
श्रेष्ठतमश्च सिंहो वीर्यतमः	
श्रेष्ठतमश्च तस्मान्नृसिंहः...	नृ. पू. २।९
यस्मात्सुदुश्चरं तपस्तप्यमानायान्नये	
पुत्रकामायातितरां बुष्टेन	
भगवता ज्योतिर्मयेनात्मैव दत्तो	
यस्माच्चानसूयायामत्रेस्तनयो-	
ऽभवत्तस्मादुच्यते दत्तात्रेय इति	शांडि. ३।१।१
यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वाँल्लोकान्सर्वा-	
न्देवान्सर्वानात्मनः सर्वाणि	
(भूतानि) स्वतेजसा ज्वलति	
ज्वालयति ज्वालयते ज्वालयते...	
तस्मादुच्यते ज्वलन्तम्	नृ. पू. २।७
यस्मात्स्वमहिम्ना..सर्वानात्मनः	
सर्वाणि भूतान्युद्ब्रूह्यात्यजसं	
सृजति तस्मादुच्यत उग्रम्	नृ. पू. २।४
यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वाँल्लोकान्स-	
र्वान्...विरमति विरामयत्यजसं	
सृजति विसृजति वासयति	
यतो वीरः कर्मण्यः सुदृक्षो	
युक्तमावा जायते	नृ. पू. २।५
यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वाँल्लोकान्...	
व्याप्नोति व्यापयति..तस्मादुच्यते	
महाविष्णुम्	नृ. पू. २।६
यस्मात्स्वमहिम्ना स्वमकानां स्मृत	
एव मृत्युमपमृत्युं च मारयति..	नृ. पू. २।१२
यस्मात्स्वमहिम्ना...स्वयमनिन्दि-	
योऽपि सर्वतः पश्यति..तस्मा-	
दुच्यते सर्वतोमुखम्	नृ. पू. २।८

यस्मान्न जातः परो अन्योऽस्ति नृ. पू. २।६
 यस्मान्नोद्विजते लोकः भ.गी. १२।१५
 यस्मान्नोद्विजते...हर्षामर्षभयोन्युक्तः
 स जीवन्मुक्त उच्यते वराहो. ४।२६
 यस्मिन्छान्तिः शमः शौचं सत्यं
 सन्तोष आर्जवम् । अकिञ्चन-
 मदम्भश्च स कैवल्यश्रमे वसेत् ना. प. ३।२१
 यस्मिन्काले स्वमात्मानं योगी जानाति
 केवलम् । तस्मात्कालात्समारभ्य
 जीवन्मुक्तो भवेत्सौ वराहो. २।४२
 यस्मिन्क्रोधं यां च तृष्णां क्षमां च
 [अ. शिरः. ३।११+ वटुको. २३
 यस्मिन् गता न निवर्तन्ति भूयः भ.गी. १४।१५
 यस्मिन्गृहे विशेषेण लभेद्भिक्षां च
 वासनात् । तत्र नो याति यो भूयः
 स यतिर्नेतरः स्मृतः ना. प. ६।१४
 यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदुः
 [श्वेता. ४।८+महाना. १।२+ बह्व. ४
 [क्र. मं. १।१६४।३९
 यस्मिन्धौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतं
 मनः सह प्राणैश्च सर्वैः । तमेवैकं
 जानथ आत्मानमन्या वाचो
 विमुञ्चथा मृतस्यैष सेतुः मुण्ड. २।२।५
 यस्मिन्नयमात्माऽधिक्शियन्ति सुवनानि
 विश्वा सुबालो. २।१
 यस्मिन्नयमात्मा स्वपिति शब्दानां
 च करोति सुबालो. ४।३
 यस्मिन्नहमुत्क्रान्ते उत्क्रान्तो भवि-
 श्यामि कस्मिन्वा प्रतिष्ठिते प्रति-
 ष्ठास्यामीति प्रभो. ६।३
 यस्मिन्नात्मा समतुप्यञ्जुतेषि...
 सर्वयुजो भवन्ति १ पेश. ३।८।४
 यस्मिन्नास्तेऽन्वेव मा भगवः शाधीति छांदो. ४।२।४
 यस्मिन्निदमोतं प्रोतं च शांडि. २।१।२
 यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो
 यस्मान्पराये महति ब्रूहि नस्तत् कठो. १।२९
 यस्मिन्निदं सर्वमभ्यार्णोत्तेनाज्यर्धइति बृ. उ. ३।९।९
 यस्मिन्निदं सर्वमभ्यार्णोत् (मा.पा.) बृ. उ. ३।९।९

यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोतं तस्माद-
 न्यन्नपरकिञ्चनास्ति [वटुको. २९+ अ. शिरः. ३।१४
 यस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वं यस्मिन्
 विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति शांडि. २।१।२
 यस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वम् ।
 तमीशानं वरदं देवमीड्यं
 निचाय्येनां शान्तिमत्यन्तमेति श्वेता. ४।११
 यस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वं
 यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदुः ।
 तदेव भूतं तदु भव्यमा इदं महाना. १।१
 यस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वं
 ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु महाना. २।३
 यस्मिन्निद्रो वरुणो मित्रो अर्यमा
 देवा ओकांसि चक्रिरे नृ. पू. २।१३
 यस्मिन्नृचः साम यजुषि यस्मिन्प्र-
 तिष्ठिता रथनाभाविबाराः ।
 यस्मिन्श्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां
 तन्मे मनः.. [१ शिवसं. ५+ २ शि. सं. ६
 यस्मिन्नेव पुरुषशरीरे विनाऽप्य-
 भिहोत्रेण विनापि साङ्ख्य-
 योगेन संसारविमुक्तिर्भवतीति प्रा. हो. १।१
 यस्मिन् पञ्च पञ्चजना आकाशश्च
 प्रतिष्ठितः । तमेव मन्य आत्मानं बृह. ४।४।१७
 यस्मिन् प्राणः पञ्चधा संविवेश ।
 प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानाम् मुण्ड. ३।१।९
 यस्मिन् भावाः प्रलीयन्ते लीना-
 श्चाव्यक्तां ययुः मंत्रिको. १८
 यस्मिन्मुक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्च
 तमेवं ज्ञात्वा मृत्युपाशाञ्छिनत्ति श्वेताश्व. ४।१५
 यस्मिँल्लयं याति पुरत्रयं च कैव. १४
 यस्मिँल्लोका ओताश्च प्रोताश्च तस्य
 हृत्पद्याज्जातोऽजयोनः गोपालो. १।१४
 यस्मिँल्लोका निहिता लोकिनश्च ।
 तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु बाङ्मनः मुण्ड. २।२।९
 यस्मिन्व उत्क्रान्त इदं शरीरं
 पापीयो मन्यते, स बलिष्ठ इति बृह. ६।१।७
 यस्मिन्व उत्क्रान्ते शरीरं पापिष्ठ-
 तरमिव दृश्येत स वः श्रेष्ठः छांदो. ५।१।७
 यस्मिन्निज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति शांडि. २।२

वस्मिन्नितीयते शब्दस्तत्परं ब्रह्म
गीयते । धियं हि लीयते ब्रह्म

सोऽमृतत्वाय कल्पते

म. वि. १३

यस्मिन् विशुद्धे विभवत्येष आत्मा

मुण्ड. ३।१।९

यस्मिन् सर्वभूतानि प्रलयं यान्ति

सङ्ख्यम् । स मनः सर्वभूतानां

प्रभुः परिपठ्यते

ना. महो. २६

यस्मिन् चित्तं सर्वभूतं प्रजानां तन्मे

मनः ... [१ शिवसं. ५

२शिव. सं. ६

यस्मिन् सर्वविद् भूतं ब्रह्म स्थावर-

जङ्गमम् । तस्मिन्नेव लयं यान्ति

शिवसं. सागरे यथा

मंत्रिको. १७

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभू-

द्विजानतः । तत्र को मोहः कः

शोक एकत्वमनुपश्यतः

ईशा. ७

यस्मिन् लीयते शब्दस्तत्परं ब्रह्म गीयते

१प्रणवो. १३

यस्मिन् विद्यते न दुःखेन गुरुणाऽपि

विचार्यते [यो. शि. ३।१३+

म. गी. ६।२२

यस्मिन् स्तद्वरं पुण्डरीकं कुमुदमिवा-

नेकधा विकसितं [सुबालो. ४।१+

११।१

यस्मिन् पच्यते कालो यस्तं वेद

स वेदवित्

मैत्रा. ६।१५

यस्मै वा एतदन्नं तस्मा एतन्नं दत्तम्

छांदो. ४।३।६

यस्मै वासि तस्मै वासीत् यदाः

संस्तुतं सर्वमीशमशिषे स्वाहा

धारमा. १०।८

यस्य कटाक्षात्समुत्पन्नाः (ब्रह्मादयः)

लोकानां ब्रह्माण्डानामुत्पत्ति-

स्थितिलयान् कुर्वन्ति

सामर. ५५

यस्य कस्य च धर्मस्य प्रहेण भगवानसौ

अ. शां. ८२

यस्य किञ्चिदहं नास्ति... सर्वत्र परि-

पूर्णत्वा... आनंदरतिरव्यक्तः

... शुद्धचैतन्यरूपात्मा स जीव-

न्मुक्त उच्यते

ते. वि. ४।४-७

यस्य किञ्चिद्बहिर्नास्ति किञ्चिदन्तः

कियन्न च । अक्षौवात्मा त संशयः

ते. वि. ५।९

यस्य चक्षुः शरीरं यश्चक्षुरन्तरो

यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः

बृह. ३।७।१८

यस्य चन्द्रतारकरं शरीरं यश्चन्द्र-

तारकमन्तरो यमयत्येष त आत्मा

बृह. ३।७।११

यस्य चात्मादिकाः संज्ञाः कल्पिता

न स्वभावतः (परमात्मनः)

महो. ४।५७

यस्य चाद्यपदाद्भूमिर्द्वितीयात्सलि-

लोद्भवः । ... पञ्चमादम्बरोत्पत्तिस्त-

मेवैकं समभ्यसेत्

गो. पू. ४।१

यस्य चित्तं न चित्ताख्यं चित्तं

चित्तत्वमेव हि । तदेव तुर्या-

वस्थायां तुर्यातीतं भवत्यतः

अ. पू. ५।४६

यस्य चित्तं शरीरं, यश्चित्तमन्तरे

सम्भरन्त्यं चित्तं न वेद

[सुबालो. ७।१+

अध्यात्मो. १

यस्य चित्तं स्वपवनं सुषुम्नां प्रविशेदिह

१ यो. त. ८३

यस्य चेच्छा तथाऽनिच्छा इत्य

कर्मणि तिष्ठतः । न तस्य लिप्यते

प्रज्ञा पञ्चपत्रमिवान्धुभिः

महो. ५।१७३

यस्य छायामृतं यो मृत्युमृत्युः

नृ. पू. २।१२

(अथ) यस्य जायायै जारः स्यात्तं

चेद्द्विष्यात्... शरभृष्टीः प्रतिलोमाः

सर्पिषाक्ता जुहुयात्

बृह. ६।४।१२

यस्य ज्ञानमयी शिक्षा । स

शिखीत्युच्यते विद्वान्नेतरे

केशधरिणः [ब्रह्मो. १२+

ना. प. ३।८३

यस्य ज्ञानेन सर्वरहस्यं विदितं

भवति

त्रि. म. ना. ६।२

यस्य तमः शरीरं यस्तमोन्तरो

यमयत्येष त आत्मा

बृह. ३।७।१३

यस्य तेजः शरीरं, यस्तेजोऽन्तरे

सम्भरन्त्यं तेजो न वेद [सुबालो. ७।१

+अध्यात्मो. १

यस्य तेजः शरीरं यस्तेजोन्तरो

यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्य-

मृत इत्यभिदेवतम्

बृह. ३।७।१४

यस्य त्वक् शरीरं यः... एष त आत्मा

बृह. ३।७।२१

यस्य दिशः शरीरं यो... एष त आत्मा

बृह. ३।७।१९

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे

तथा शुरौ । तस्यैते कथिता

द्वार्याः प्रकाशन्ते महात्मनः

[सुबालो. १६।२+

शेवा. ६।२३

यो. वि. २।२३

यस्य देवे परा... स ब्रह्मवित्परं
 प्रेयसिदिति वेदानुशासनम् शाठ्या. ३७
 यस्य देव्यां परा भक्तिर्यथादेव्यां गुह्यका. ७६
 तथा गुरौ । तस्यैते कथिता ह्यर्थाः
 यस्य देशं न जानाति नामगोत्रे
 त्रिपुरुषम् । कन्यादानं पितृ-
 श्राद्धं तमस्कारं च वर्जयेत् इतिहा. ६४
 यस्य देहादिकं नास्ति यस्य ब्रह्मेति
 निश्चयः । परमानन्दपूर्णो यः
 स जीन्मुक्त उच्यते ते. वि. ४।३
 यस्य द्यौः शरीरं, यो... एष
 त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।८
 यस्य नाहंकृतो भावः भ. गी. १८।१७
 यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य
 न लिप्यते । कुर्वतोऽकुर्वतो
 वापि स जीवन्मुक्त उच्यते वराहो. ४।२५
 यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न
 लिप्यते । यः समः सर्वभूतेषु
 जीवितं तस्य शोभते १ सं. सो. २।३९
 यस्य पृथिवी शरीरं, यः पृथिवी-
 मन्तरे सञ्चरन् पृथिवीनवेद.. सुबालो. ७।१
 यस्य पृथिवी शरीरं यः पृथिवी-
 मन्तरी यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।३
 यस्य प्रतापकल्पा उत्पन्ना ब्रह्म-
 विष्णुकर्मादयो देवाश्च
 दिक्पालाः कोटिश उत्पद्य-
 माना लीयमानाश्च भवन्ति सामर. ५
 यस्य प्रथमपदाद्भूमिद्वितीयपदाज्जलं
 तृतीयपदोत्तेजश्चतुर्थपदाद्वायु-
 म्पञ्चमपदाद्वायोमेति गो. पू. ३।१२
 यस्य प्रपञ्चमानं न ब्रह्माचारमपीह
 न । अतीतावीतभावो यो
 विहीनो शुद्ध एव सः म. र. २७
 यस्य प्राणः शरीरं यः प्राणमन्तरो
 यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।१६
 यस्य प्राणो विहीनोऽन्तःसाधके
 जीविते सति । पिण्डो न पतित-
 सम्यचित्तं दीपः प्रभायते यो. शि. १।६४

यस्य बुद्धिः शरीरं, यो बुद्धिमन्तरे
 सञ्चरन् बुद्धिर्न वेद
 [सुबालो. ७।१+ अध्यात्मो. १
 यस्य ब्रह्म च क्षत्रं चोभे भवत
 ओदनः । मृत्युर्यस्योपसेचनं
 क इत्या वेद यत्र सः कटो. २।३५
 यस्य मनः शरीरं यो मनोऽन्तरो
 यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।२७
 यस्य मनः शरीरं यो मनोऽन्तरे
 सञ्चरन् यं मनो न वेद
 [सुबालो. ७।१+ अध्यात्मो. १
 यस्य मृत्युः शरीरं, यो मृत्युमन्तरे
 सञ्चरन् मृत्युर्न वेद
 [सुबालो. ७।१+ अध्यात्मो. १
 यस्योर्निपरिपश्यन्ति धीरास्तन्मे.. २ शिवसं. १।५
 यस्य रेतः शरीरं यो रेतोऽन्तरो
 यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।२३
 यस्य लिङ्गं प्रपञ्चं वा ब्रह्मेवात्मा
 न संशयः ते. वि. ५।३७
 यस्य वर्णाश्रमाचारो गलितः
 स्वात्मदर्शनात् । स वर्णाना-
 श्रमान्सर्ववृत्तित्यस्वात्मनि स्थितः ना. प. ६।३८
 यस्य वाक् शरीरं, यो वाक्मन्तरो
 यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।१७
 यस्य बाहुनसी शुद्धे सम्यगुप्ते च
 सर्वदा । स वै सर्वमवाप्नोति
 वेदान्तोपगतं फलम् ना. प. ३।४७
 यस्य वायुः शरीरं यो वायुमन्तरो
 यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।७
 यस्य वायुः शरीरं, यो वायुमन्तरे
 सञ्चरन् यं वायुर्न वेद
 [सुबालो. ७।१+ अध्यात्मो. १
 यस्य वाऽस्तं गतं चित्तं वद्विशति
 दिनानि वै । लभते जगदीशत्वं
 येन विश्वगुरुर्भवेत् अमर. १।७७
 यस्य विज्ञानं शरीरं यो विज्ञान-
 मन्तरो यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।२२

यस्य वेदश्च वेदी च विच्छिद्येते त्रि-

पुरुषम् । स वै दुर्गाह्वाणो नाम

सर्वकर्मबहिष्कृतः

यस्य वैकङ्कत्यग्निहोत्रहवणी भवति

यस्य वेतत्कर्म, स वेदितव्य इति

यस्य श्रवणेन सर्वबन्धाः

प्रविनश्यन्ति

यस्य श्रोत्रं शरीरं यः श्रोत्रमन्तरो

यमयत्येष त आत्मा

यस्य सङ्कल्पनाशः स्यात्तस्यमुक्तिः

करे स्थिता

यस्य सर्वाणि भूतानि शरीरं,

यः सर्वाणि भूतान्यन्तरो

यमयत्येष त आत्मा

यस्य सर्वे समारम्भाः

यस्य स्त्री तस्य भोगेच्छा निः-

स्त्रीकस्य क भोगमूः । स्त्रियं

त्यक्त्वा जगत्त्यक्तं जगत्त्यक्त्वा

सुखी भवेत् [महो. ३।४८+ याज्ञव. १७

यस्य स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते विश्रामो. ११

यस्य स्यादद्धा न विचिकित्सा-

ऽस्तीति ह स्माह शाण्डिल्यः छांदो. ३।१४।४

यस्य स्वं भवति, भवति हास्य स्वं

यस्य हि सोमः प्राणा वाप्ययङ्कुरा

एतद्गन्ध...

यस्या अन्तो न विद्यते तस्मा-

दुच्यतेऽनन्ता

यस्याकाशः शरीरं, य आकाश-

मन्तरे सञ्चरन् यमाकाशो

न वेद [सुबालो. ७।१+

यस्याकाशः शरीरं, य आकाश-

मन्तरो यमयत्येष त आत्मा

यस्याक्षरं शरीरं, योऽक्षरमन्तरे

सञ्चरन्त्यमक्षरं न वेद

[सुबालो. ७।१+

यस्या गात्रा ब्रह्मार्गा वदन्ति

यस्या ग्रहणं नोपलभ्यते तस्मा-

दुच्यतेऽलक्ष्यं

यस्याग्निहोत्रमदर्शमपौर्णमासम-

चातुर्मास्यमनाग्रयणमतिथि-

वर्जितं च

यस्याग्निहोत्रमदर्शमनाग्रयणम् (मा. पा.)

यस्याग्निः शरीरं योऽग्निमन्तरो

यमयत्येष त आत्मा

यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मा-

दुच्यतेऽज्ञा

यस्याण्डकोशं शुष्ममाहुः प्राणमुल्बम्

यस्यात्सरतिरेवान्तः कुर्वन् कर्मेन्द्रियैः

क्रियाः । न वशो हर्षशोकाभ्यां

स समाहित उच्यते

यस्यादित्यः शरीरं य आदित्यमन्तरो

यमयत्येष त आत्मा

यस्यादौ भयाद्भगवानुत्तस्ते स्वयं...

यस्यानाणीयोनज्यायोऽस्ति किञ्चित्

यस्यानुभवपर्यन्ता बुद्धिस्तत्त्वे

प्रवर्तते । तदृष्टिगोचराः सर्वे

मुच्यन्ते सर्वपातकैः

यस्यानुवित्तः..ऽस्मिन्सन्दोषे गहने (मा.)

यस्यानुवित्तः प्रति बुद्ध्यात्माऽस्मि-

न्सन्दोषे गहने प्रविष्टः । स

विश्वकृत्स हि सर्वस्य कर्ता

यस्यानृचस्तु मुक्ते तस्य विद्धि

ब्रह्मैव वित्तं पुरुषस्य केवलम्

यस्यान्तरिक्षं शरीरं योऽन्तरि-

क्षमन्तरोयमयत्येष त आत्मा

यस्यान्तस्थानि भूतानि

यस्यान्नमिदं सर्वं न च योऽन्नं भवति

यस्यापः शरीरं योऽपोऽन्तरे सञ्च-

रन्त्यमापो न विदुः [सुबा. ७।१+

यस्यापः शरीरं, योऽपोऽन्तरो यम-

यत्ति, एष त आत्मा

यस्यामर्तं तस्य मर्तं मर्तं यस्य न

वेद सः । अविज्ञातं विजानतां...

यस्याव्यक्तं शरीरं, योऽव्यक्तमन्तरे

सञ्चरन्त्यमव्यक्तं न वेद

[सुबालो. ७।१+

मुण्ड. १।२।३

मुण्डको. १।२।३

बृह. ३।७।५

देव्यु. २०

चित्त्यु. १।१।४

अ. पू. १।३७

बृह. ३।७।९

पारमा. २।९

गुह्यका. ४६

वराहो. ४।४३

बृह. ४।४।१३

बृह. ४।४।१३

इतिहा. ४४

बृह. ३।७।६

अ. गी. ८।२२

सुबालो. ५।१५

अध्यात्मो. १

बृह. ३।७।४

केनो. २।३

अध्यात्मो. १

इतिहा. ६५

महाना. १०।१३

कौ. त. ४।१८

त्रि. म. ना. १।२

बृह. ३।७।१९

मं. ब्रा. २।६

बृह. ३।७।१५

अ. गी. ४।१९

याज्ञव. १७

विश्रामो. ११

छांदो. ३।१४।४

बृह. १।३।२५

मैत्रा. ६।३५

देव्यु. २०

अध्यात्मो. १

बृह. ३।७।१२

अध्यात्मो. १

राधिको. ५

देव्यु. २०

यस्यास्त्यद्वैतमात्मज्ञानं तदेव

यज्ञोपवीतम्

प. हं. प. ११

यस्याहङ्कारः शरीरं, योऽहङ्कार-

मन्तरे सञ्चरन्त्यमहङ्कारो

न वेद [सुबालो. ७१+

अध्यात्मो. १

यस्यां जाग्रति भूतानि

भ. गी. २।६९

यस्यां देवा अधिरुद्रा निषेदुः ।

यस्तां न वेद किमृचा करिष्यति गुह्यका. ५३

यस्यां मज्जन्ति बहवो मनुष्याः

कठो. २।३

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं

पुरुषानहम् [श्री. सू. २+

ऋ. खि. ५।८७।२

यस्यां हिरण्यं प्रभूर्ति गावो

दास्योऽध्वान्... [श्री. सू. १५+

ऋ. खि. ५।८७।१५

यस्याः परतरं नास्ति सैवा दुर्गा

प्रकीर्तिता । दुर्गास्संत्रायते

यस्मादेवी दुर्गेति कथ्यते

देव्यु. २२

यस्याः परं नापरमस्ति किञ्चित्

गुह्यका. ४६

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न

जानन्ति तस्मादुच्यतेऽज्ञेया

देव्यु. २०

यस्येच्छा लोके वा प्रजायति लोके

यस्मै वासितस्मेवासीत् यद्वाः

संजातयत्सर्वमीशमाशिषेस्त्वाहा

पारमा. १०।८

यस्येच्छा विद्यते काचित् सा सिद्धि

साधयत्यहो । निरिच्छोः परि-

पूर्णस्यनेच्छासम्भवति कचित्

अ. पू. ४।७

यस्येदं जन्म पाश्चात्यं तमाश्वेव

महामते । विशन्ति विद्या

विमला मुक्ता वेणुमिवोत्तमम्

महो. ६।१५

यस्येदं धीराः पुनन्ति कवयो

ब्रह्माणमेतं त्वा वृणुत इन्दुम्..

तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु

२ शिवसं. १६

यस्येदं मण्डलं भित्वा मारुतो

याति मूर्धनि । यत्र यत्र अग्ने-

द्वाऽपि न स भूयोऽभिजायते

अ. ना. ३९

यस्यैता ब्रह्ममूर्तयो बृहद्ब्रह्माणं

ब्रह्म आदधान... स्वाहा

पारमा. ३।१०

यस्यैवानि सुगुप्तानि जिह्वोपस्थोदरं

करः । सञ्चयसेरुक्तोद्वाहो

प्राणायामो ब्रह्मचर्यवान्

ना. प. २।१५

यस्यैव निश्चितो भावस्तस्य

मुक्तिर्न दूरतः

शिवो. ७।३८

यस्यैवं परमात्माऽयं प्रत्यग्भूतः

प्रकाशितः । स तु याति च

पुम्भावं स्वयं साक्षात्परामृतम्

आ. व. १०।८

यस्यैवं भवति क्षान्तिः सोऽमृत-

त्वाय कल्पते

अ. शां. ९२

यस्यै वा एषां वै तेषामेवैतस्मिन्

पर्वण्यभिमुपसमाधायैतयैवा-

वृता आज्याहुवीर्जुहोति

कौ. त. २।४

यस्यैष आत्मा वृणुते तनूं स्वां तस्य

प्रसादेन हि तस्य लाभः

२ देव्यु. २०

यस्योदावोऽयनुथमुच्चमुच्चैरुगाय

स्वाहा

पारमा. १०।७

यस्योपरि त्वं मुनयो न पश्यन्ति

तस्मै मुख्याय विष्णवे स्वाहा

पारमा. २।१

यस्योपरिष्ठादधितिष्ठदात्मा सर्वोप-

रिष्ठात्परमात्मा मुक्तं तं विरजं

नित्यमनु सम्पराय स्वाहा

पारमा. १०।३

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेऽधिक्षि-

यन्ति भुवनानि विश्वा

नृ. पू. २।९+

[ऋ. मं. १।१५४।२

ना. पू. सा. ४।७

यस्त्वेवोभयमन्तरेणाहतस्यनास्त्युपवाहः श्येत्तरं. १।३।१

यं कामं कामयेत सोऽस्त्यं सङ्कल्पा-

देवसमुत्तिष्ठतितेनसंपन्नो महीयते

छांदो. ८।२।१०

यं कामं कामयेत तं स एष एवं-

विदुर्वातात्मने वा यजमानाय वा..

बृह. १।३।२८

यं कामं कामयेत तमागायति

तद्वैतलोकजिदेव न हैवालो-

क्यताया आशाऽस्ति य एवमेत-

त्साम वेद

बृह. १।३।२८

यं गत्वा चतुर्धा मुक्त्यो द्वारे तिष्ठन्ति

आमर. ५४

यं चिन्तयन्तो निगमान्तरूपं...तं

देवमुख्यं सुरतं भवाय स्वाहा

पारमा. ९।७

यं जनपदं यं क्षेत्रभागं तं तमेवो-

पजीवन्ति

छांदो. ८।१।५

यं ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुरमृतत्वं वगच्छति

कठो. ६।८

यं तदेतयावाचा व्याह्रियते सत्यमिति

कौ. त. १।६

यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वं बहु-

लौऽसि प्रजया च धनेन च छांदो. ५।१५।१

यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वं बहु

विश्वरूपं कुले दृश्यते छांदो. ५।१३।१

यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वं सुतं

प्रसुतमासुतं कुले दृश्यते छांदो. ५।१२।१

यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वं

रयिमान्पुष्टिमानसि छांदो. ५।१६।१

यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वं

पृथक्बल्य आयन्ति पृथग्प्रथ-
श्रेण्योऽनुयन्ति छांदो. ५।१४।१

यं त्वं पालनयाभिभूतं देवाः सर्वे
विचरन्ति ते देवास्त्वमेव सर्वे माया
मायैशते स्वाहा

पारमा. २।१०

यं त्वं मनुष्याय हिततमं मन्यस इति

कौ. त. ३।१

यं देवाः परमं पवित्रं भविष्यन्त्या-

तिषु प्रणताः प्रधानाः पारमा. १।१०

यं द्विष्यात्, असावस्मै कामो मा-

समुद्धीति वा बृह. ५।१४।७

यं नत्वा मुनयः सर्वे निर्भिन्नं यान्ति

तत्पदम् । गणेशोपनिषद्देव्यं

तद्देवास्मि सर्वगम् गणप. शीर्षकं

यं प्रविश्य भवन्तीह मुक्ता वै द्विज-

सत्तमाः । सं वासुदेवो विज्ञेयः

परमात्मा सनातनः ना. महो. १४

यं प्राप्य न निवर्तन्ते

भ. गी. ८।२१

यं भावं दर्शयेद्यस्य तं भावं स तु

पश्यति वैतथ्य. २९

यं मां स्मृत्वाऽगाधतः स्पर्शरहितापि

सर्वा सरिद्राधा भवति गोपालो. १।२

यं मां स्मृत्वाऽगाधा गाधा भवति...

अपुतः पुतो भवति.. अग्रती

प्रती भवति.. अग्रोत्रियः

अग्रोत्रियो भवति.. सकामो

निष्कामो भवति गोपालो. १।२

यं यज्ञैर्मुनयो जुषन्ति पारमा. १।१०

यं यमन्तमभिकामो भवति यं कामं

कामयते सौऽस्य सङ्कल्पादेव

समुत्तिष्ठति छांदो. ८।२।१०

यं यं क्रतुमधीते तेन तेनास्येष्टं भवति,

अग्नेर्वायोरादित्यस्य सायुज्यं

गच्छति सहवै. १९

यं यं जजान स उ गोपो अस्य

चित्त्यु. १४।४

यं यं वापि स्मरन् भावं [ना.प. ५।१० + भ. गी. ८।६

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते

नाधिकं ततः [यो. शि. ३।१३ + भ. गी. ६।२२

यं लोकं मनसा संविभाति विशुद्ध-

सत्त्वः कामयते यांश्च कामान् ।

तं तं लोकं जयते तांश्च कामां-

स्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः

मुण्ड. ३।१।१०

यं(यत्) लोहितं श्लेष्मा रेतस्ता आपः

१ ऐत. ३।३।२

यं वाव सा यदिदमस्मिन्पुरुषे शरीर-

मस्मिन्हीमे प्राणाः प्रतिष्ठिताः छांदो. ३।१२।३

यं वाव सा येयं पृथिव्यस्याः हीदं

सर्वं भूतं प्रतिष्ठितम् छांदो. ३।१२।२

यं विश्वरूपं परमात्मपुण्यं

पारमा. ९।७

यं विष्णुर्नावपश्यति

भस्मजा. २।१६

यं वै सोम्यैतमणिमानं न निभा-

लयस एतस्य वै सोम्यैवोऽणिग्न

एवं महान्यप्रोधस्तिष्ठति

छांदो. ६।१२।२

यं सन्न्यासमिति प्राहुः

भ. गी. ६।२

यं सूरयो जपन्तो योगिनः सूक्ष्मैः

सुप्रदर्शनैः पश्यन्तीश्वराय स्वाहा पारमा. १।१०

यं स्मृत्वा मुक्ता अस्मात्संसाराद्भवन्ति

गोपालो. १।१४

यं हि न व्यथयन्त्येते

भ. गी. २।१५

यः कर्ता सोऽयं वै भूतात्मा करणैः

कारयिताऽन्तःपुरुषः मैत्रा. ३।३

यः कवित्वं निरातङ्कं मुक्तिमुक्ती च

वाञ्छति । सोऽभ्यर्थ्यैनां दश-

श्लोक्या नित्यं स्तौति सरस्वतीम् सरस्व. ३१

यः कश्च शब्दो वागेव सा

बृह. १।५।३

यः कश्चिदात्मानमद्वितीयं जातिगुण-

क्रियाहीनं... करतलामलकवत्सा-

क्षादपरोक्षीकृत्य... दम्भाहङ्का-

रादिभिरसंस्पृष्टचेता वर्तेत एव-

मुक्तलक्षणः स एव ब्राह्मण इति

व. सू. उ. ९

(अथ) यः कश्चिद्विद्वानपहतपाप्मा-

व्यश्नोऽवदातमनास्तमिष्ठ आबुत्त-

चक्षुः सोऽन्तरात्मा गत्या बहि-
रात्मनोऽनुमीयते मैत्रा. ६।१
यः काममोहितः शूच्यां पुत्रमुत्पा-
दयेद्द्विजः । यावदुत्पाद्यते
भूमौ तावत्तिष्ठेत्सुदारुणे इतिहा. २४
यः कारणानि निखिलानि तानि
कालात्मयुक्तान्यधितिष्ठत्येकः ना. प. ९।२
[श्वेताश्व. १।३+
यः कालं ब्रह्मेत्युपासीत कालस्त-
स्यातिदूरमपसरति मैत्रा. ६।१४
यः कुं धरमाणः कुं धरतां कुं धरता-
मित्यवोचत् तां सानुमन्तो
विदधत्स्वतेजसा तस्मै..स्वाहा पारमा. ६।५
यः कौटुम्ब्येन कुट्टस्तिष्ठति सोऽति-
वाचं च दीक्षयति इतिहा. १०
यः परः स महेश्वरः [महाना. ८।१७
[ना. च. ता. १।२+ शु. र.उ. ३।१८
यः पश्यति तथाऽऽत्मानं भ.गी. १३।३०
यः पश्यति स पश्यति [भ.गी. ५।५+ १३।२८
यः पश्यतीन्द्रियविलेऽविशः
प्रणवाख्यं प्रणेतारं...सोऽपि
प्रणवाख्यः प्रणेतार मैत्रा. ६।२५
यः पश्यतीमां हिरण्यवस्थात् मैत्रा. ६।१
यः पाति सोमममृतस्य नाभि
कालातिगः पाति विश्वं सदैव २ देव्यु. २९
यः पादे, यो गन्तव्ये, यो त्रिणौ,
यो नाड्यां...सोऽयमात्मा सुबालो. ५।१०
यः पादौ प्रोक्षति, यश्चक्षुषी, यश्च-
न्द्रमादित्यौ, यन्नाभिं तेन पृथिवी आचम. १।५
यः पायौ, यो विसर्जयितव्ये, यो
सृत्यौ, यो नाड्यां...सोऽयमात्मा सुबालो. ५।१३
यः पार्थिवानि विममे रजांसि ना.पू. ता. ४।४
[ऋ.मं. १।१५४।१+त्रा.सं. ५।१८+
[तै. सं. १।२।१३।३+ अथर्व. ७।२६।१
यः पिता स पुनः पुत्रो यः पुत्रः
स पुनः पिता यो. त. १३३
यः पिबेदमृतं विद्वान् सकलं
अन्नमश्नुते शांदि. १।७।४७

यः पुण्डरीकः परमान्तरात्मा
कर्माङ्गरूपं कमलं दधार ।
सासिष्वसन्तं सरसे रसाय स्वाहा पारमा. ७।८
यः पुनरेतत् त्रिमात्रेणोमित्येतेनैवा-
क्षरेण परं पुरुषमभिध्यायित प्रश्नो. ५।५
यः पुनरेतं त्रिमात्रेण [मा.पा.] प्रश्नो. ५।५
(अथ) यः पुरुषः सोऽग्निः मैत्रा. २।८
यः पूजयति मां भक्त्या सोऽहमेव
न संशयः १ वित्तो. ३०
यः पूर्वं तपसो जातमद्भ्यः पूर्व-
मजायत । गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तं
यो भूतेभिर्व्यतिष्ठत, एतद्वैतत् कठो. ४।६
यः पृथिवीमन्तरे सञ्चरन्त्यपृथिवी नवेद अभ्यात्सो. १
यः पृथिव्यां तिष्ठन् पृथिव्या अन्तरो
यं पृथिवी नवेद..एष त आत्मा बृह. ३।७।३
यः प्रजानामेकराष्मानुषीणां मृत्युं
यजे प्रथमजामृतस्य [चि.स्यु. १।५।३+ तै.आ. ३।१५।२
यः प्रणवमधीते स सर्वमधीते नृ. पू. ५।१५
यः प्रणवः स सर्वव्यापी [अ.शिरः. ३,४+ बटुकी. १९
यः प्रणवः स उद्गीथः [छांदो. १।५।१+ मैत्रा. ६।४
यः प्रदद्याद्वातं सम्यक् फलानि च
विशेषतः..यावत्तत्पत्रकुसुमकन्द-
मूलफलानि च । तावद्वर्षसहस्राणि
शिवलोके महीयते शिवो. ७।१३
यः प्रयाति त्यजन् देहं भ. गी. ८।१३
यः प्रयाति स मद्भावं भ. गी. ८।५
यः प्रागादित्यात्सोऽकालोऽकलो-
ऽथ य आदित्याद्यः सकालः सकलः मैत्रा. ६।१५
यः प्राज्ञो विधरणः सर्वान्तरोऽक्षरः शुद्धः मैत्रा. ७।६
यः प्राणतो निमिषतो महिष्वैक
इद्राजा जगतो बभूव । य ईशे
अस्यद्विपदश्चतुष्पदः...तन्मे मनः.. २ शिवसं. ३३
यः प्राणपवनस्पन्दश्चित्स्पन्दः स
एव हि । प्राणस्पन्दजये यतनः
कर्तव्यो धीमतोचकैः अ. पू. ४।८९
यः प्राणभोगस्तं देवेभ्य आगायत् बृह. १।३।३
यः प्राणः स वायुः १ पंच. ३।३।२
(अथ) यः प्राणापानयोः सन्धिः
स न्यानः छांदो. १।३।३

यः प्राणे तिष्ठन् प्राणादन्तरो यं
प्राणो न वेद.. बृह. ३।७।१६

यः प्राणेन प्राणिति स त आत्मा
सर्वान्तरः बृह. ३।४।१

यः प्राणैः प्रतितिष्ठसि प्रश्नो. २।७

यः प्राणो व्यानोऽपानः समान
उदानः स शिरःपक्षसी पृष्ठ-
पुच्छवानेषोऽग्निः मैत्रा. ६।३३

यः शङ्खः स स्वयं विष्णुर्लक्ष्मीरूपो
व्यवस्थितः कृष्णोप. १६

यः क्षतद्वित्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति कैव. २।५

यः क्षतं च सहस्राणां सहस्रं श्राद्ध
आचरेत् । एकस्मान्मन्त्रवित्पूतः
सर्वमर्हति ब्राह्मणः इतिहा. ४६

यः शब्दस्तदोमित्येतदक्षरं मैत्रा. ६।२३

यः शरीरेन्द्रियादिभ्यो विहीनं सर्व-
साक्षिणम् । पारमार्थिक-(परमा-
र्थिक-)विज्ञानं सुखात्मानं स्वय-
म्प्रभम् । [ना. प. ६।१६+ वराहो. २।२९

यः शास्त्रविधिसुत्सृज्य भ.गी. १६।२३

यः शिवं शिवमित्येवं ब्रह्मरं मन्त्र-
मभ्यसेत् । एकाक्षरं वा सततं
स याति परमं पदम् शिवो. १।२१

यः शिवः स परं ब्रह्म तत्सामो-
ऽन्त्यं पादं जानीयात् यो
जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति
परं ब्रह्मैव भवति ग. पू. २।१

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा[श्रीसू. १६+ क.खि. ५।८७।१६

यः शृणोति सङ्गद्वापि ब्रह्मैव
भवति स्वयम् (ध्रुवम्) मैत्रे. ३।२५

यः आह्वानि कुरुतेऽसङ्गतानि न
देवयानेन पथा स याति इतिहा. १९

यः श्रीकामः शान्तिकामः...भास्करं
आवन्तमुपासीत सूर्यता. १।८

यः श्रोत्रे संभावयितुं (वेद)
संभावयितुमान्भवति को. त. २।१

यः श्रोत्रे तिष्ठन् श्रोत्रादन्तरो यः
श्रोत्रं न वेद बृह. ३।७।१९

यः श्रोत्रे भोगस्तं देवेभ्य आगायत् बृ. उ. १।३।५

यः श्रोत्रे यः श्रोतव्ये यो दिक्षु
...सोऽयमात्मा सुबालो. ५।२

यः स ईश्वर इत्युक्तः सर्वज्ञत्वादि-
भिर्गुणैः सरस्व. ४१

यः सकृदुच्चारयति तस्य संसार-
मोचनं भवति अद्वयता. १३

यः सकृदुच्चारणः संसारविमोचनो भवति द्वयोप. ८

यः सङ्कल्पं ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।४।३

यः सच्चिदानन्दाद्वैतैकचिदात्मा
भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमोनमः रामो.ता. ५।४८

यः सञ्चरश्चासञ्चरश्च न
व्यथतेऽथो न रिष्यति बृह. १।५।२०

यः सत्येनातिवदति छांदो. ७।१६।१

यः सदा मुक्त एव सः भ. गी. ५।२

यः सदाऽहरहर्जपति स वै ब्राह्मणो
भवति (सूर्यमन्त्रं) सूर्यो. ९

यः समः सर्वभूतेषु जीवितं तस्य शोभते १ सं.सो. २।३९

यः समस्तार्थजालेषु व्यवहार्यपि
निःस्पृहः (शीतलः) । परार्थेष्विव
पूर्णात्मा स जीवन्मुक्त उच्यते
[महो. २।६२+ वराहो. ४।२७

यः स मामेति पाण्डव भ.गी. ११।५५

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य
ज्ञानमयं तपः । तस्मादेतद्ब्रह्म
नाम रूपमन्त्रं च जायते मुंड. १।१।९

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्यैष महिमा भुवि ।
दिव्ये ब्रह्मपुरे ह्येष व्योमन्यात्मा
प्रतिष्ठितः मुण्ड. २।२।७

यः सर्वज्ञानभिज्ञेहः भ. गी. २।५७

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यो यस्य..तस्माद-
ब्रह्मरूपेण जायते जगदावलिः रुद्रह. ३३

यः स सर्वेषु भूतेषु भ. गी. ८।२०

यः सर्वव्यापी सोऽनन्तः [अ.शिरः. ३।४ बटुको. १९

यः सर्वाणि भूतान्यन्तरोयमयत्येष
त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।१५

यः सर्वान्देवानीशते ईशानीभिः अ.शिरः. ३।५

यः सर्वान्देवानीशते...तस्मादुच्यते
ईशानः बटुको. २०

यः सर्वान् प्राणान्सम्भक्ष्य सम्भक्ष- णेनाजः संसृजति । विसृजति तीर्थमेके व्रजन्ति	अ. शिरः. ३।५
यः सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन् सर्वेभ्यो भूतेभ्योऽन्तरो यः सर्वाणि भूतानि न विदुः	बृह. ३।७।१५
यः सर्वोपरमे काले सर्वानात्मन्यु- पसंहृत्य स्वात्मानन्दसुखे मोदते प्रकाशते वा स देवः	द.मृ. २
यः सव्यं पाणिं पादौ प्रोक्षति... तेनाथर्वाङ्गिरसो...प्रीणाति	सहवै. १५
यः साङ्ग्यसमिद्धिर्यजति स सर्वलभते	गणप. १३
यः सावित्रं वेद, अहोनाहाश्वथ्यः	सूर्यता. ३।१
यः सुयुक्तोऽजस्रं चिन्तयति तस्माद्विद्यया...चोपलभ्यते ब्रह्म	भैत्रा. ४।४
यः सूक्ष्मान् सञ्चरमाणान्भावभा- वान्भव्याभवन्यन्कुर्वन्नात्मीय-	
ममितो धुनोति धुरं बहिष्यसेस्वाहा	पारमा. २।८
यः सूर्यः सोऽहमेव च	सूर्यो. ६
यः सेतुरीजानानामक्षरं ब्रह्म यत्परम्	कठो. ३।२
यः स्तनः पूर्वेपीतस्तं निपीड्य मुदमभ्रुते	१ यो. त. १३१
यः स्वन्यं पूर्वं पीत्वाऽपि निष्पीड्य च पयोधरान्	२ योगत. ३
यः स्मरं ब्रह्मेत्युपास्ते यावत्स्मरस्य गतं तत्रास्य यथा कामचारो भवति	छांदो. ७।१३।२
यः स्वजनान्नीलप्रीवो यः स्वजनान्दरिः	नीलरु. ३।१
यः स्वयं लोकमवधारमवधारयन्स्वाहा	पारमा. ६।१
यः स्वयं सृष्टमात्मना गुप्तमनुसन्दि- तानमचरंचरन्तंस्वयं क्रीडं क्रीड- यन्क्रीडान्तरमनुप्राविशत्स्वाहा	पारमा. ६।२
यः स्वरूपपरिभ्रंशश्चेत्यार्थे चित्ति- मज्जनम् । एतस्मादपरो मोहो न भूतो न भविष्यति	महो. ५।४
(अथ) या अक्षजापस्ताभिः पर्जन्यः	बृह. २।२।२
(अथ) या अन्या आहुतयोऽन्त- वत्यस्ताः कर्ममद्यो भवन्ति	कौ. उ. २।५

या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीनाम् । ये वाऽवेदेषु क्षेरते तेभ्यः सर्वेभ्यो नमः [+वा. सं. १३।७+ या इष्टका यावतीर्वा यथा वा या उमा सा स्वयं विष्णुर्यो विष्णुः स हि चन्द्रमाः या ओषधयः सोमराज्ञीर्बन्धीः शतविचक्षणाः । बृहस्पतिप्रसू- तास्ता नो शुभ्रन्तवंहसः या ओषधीः सोमराज्ञीरिति तिसृभि- रन्नपत इति द्वाभ्यामनुमन्नयते या कनीनका तयाऽऽदित्यः... यक्ष्यमाणो वै भगवन्तोऽहमस्मि यावदेकैकस्मा ऋत्विजे धनं दास्यामि तावद्भगवद्भयो दास्यामि वसन्तु भगवन्त इति याग-व्रत-तपो-दान-विधिविधान- ज्ञानसम्भवो बन्धः । या गौर्वरिष्ठा सह सोर्धरित्री... पूजते स्वाहा या च प्रागात्मनो माया तथाऽन्ते च तिरस्कृता । ब्रह्मवादिभिरु- द्रीता सा मायेति विवेकतः याचितायाचिताभ्यां च भिक्षाभ्यां कल्पयेत्स्थितम् (ति) या जाग्रति महीयते, तां वैखरी- माचक्षते या ज्या न्यानः शास्या याज्ञवल्क्य अयज्ञोपवीती कथं ब्राह्मण इति (अथ ह) याज्ञवल्क्य आदित्यमण्डल- पुरुषं प्रपच्छ याज्ञवल्क्य किञ्चोतिरयं पुरुष इति याज्ञवल्क्यस्त्वां..अक्रता इति (मा.) (अथ ह) याज्ञवल्क्योऽन्यद्वृत्त- मुपाकरिष्यन् याज्ञवल्क्यो मण्डलपुरुषं प्रपच्छ याज्ञवल्क्यो महामण्डलपुरुषं प्रपच्छ	नीलरु. २।११ तै.सं. ४।२।६।४ कठो. १।१९ रु. ह. ५ प्रा. हो. १।२ प्रा. हो. १।१ बृह. २।२।२ छांदो. ५।११।५ निरा. उ. २१ पारमा. १०।१ वराहो. २।५१ १सं.सो. २।७१ गान्धर्वो. २ बृह. ३।१।१० जाबालो. ५ मं. प्रा. २।१ बृह. ४।३।२ बृह. ३।१।१८ बृह. ४।५।१ मं. प्रा. ३।१ मं. प्रा. ३।१
--	--

याज्ञवल्क्यो ह वै महामुनिरादि-

त्यलोकं जगाम

मं. ब्रा. १।१

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव

ते धनुः । शिवा शरण्या या तव

तया नो मृड जीवसे [नीलक. १।७ + तै. सं. ४।५।१।१

या तदभिमानं कारयति साऽविद्या

सर्वसारो. २

यातयामं गतरसं

भ. गी. १७।१०

याति नास्त्यत्र संशयः

भ. गी. ८।५

याति पार्थानुचिन्तयन्

भ. गी. ८।८

या तिरश्ची निपद्यतेऽहं विधरणी

इति तां त्वा घृतस्य धारया यजे

बृह. ६।३।१

यातुधानाश्च रक्षांसि पिशाचा

असुरास्तथा । एते हरन्ति

वै श्राद्धं देवं यत्र निवर्तयेत्

इतिहा. ६१

या ते अग्ने यज्ञिया तनूस्तयेद्धारो-

हात्मात्मानम् । अच्छा वसूनि

कुण्वन्नस्मेनर्या पूरुणि

ना. प. ४।४२+

[तै. सं. ३।४।१०।५

या ते तनूर्वाचि प्रतिष्ठिता या

श्रोत्रे या च चक्षुषि । या च

मनसि सन्तता शिवां तां कुरु

मौलकमीः

प्रश्नो. २।१२

या ते रुद्र शिवातनूर्योरा पाप-

काशिनी [श्वेता. ३।५+

नीलक. १।८+

[लिङ्गोप. १+वा. सं. १६।२+

तै. सं. ४।५।१।१

यादृच्छिको भवेत्स भिक्षुः

प. हं. ८

यादृच्छिको भवेद्यदृच्छालाभसन्तुष्टः

सुवर्णादीन् परिग्रहेत् (यतिः)

ना. प. ३।८७

यादृशं द्रव्यमभाति सात्त्विकं राजसं

तु वा । तादृशं गुणमाप्नोति

शुणैः कर्मगतिं तथा

भवसं. ४।८

यादृशा भक्तास्तादृशं सुखं तादृशो

लीलाभावश्च भवेत्

सामर. ३०

या देवानां प्रभवा चोद्भवा च

विद्याधिपा सर्वभूतेषु गूढा ।

हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं

या नो बुद्ध्या शुभया संयुक्तु

गुह्यका. ५६

या धनसंययस्ता नद्यः

छांदो. ३।१९।२

यानि यानि च आकाशाः

१ ऐत. ३।३।२

यानि दुःखानि या तृष्णा दुःसह्ये

दुराधयः । शान्तचेतस्सु तत्सर्वं

तमोऽर्केष्विव नश्यति

महो. ४।२९

या नित्यं संवर्ते महीयते, तां

पश्यन्तीमाचक्षते

गान्धर्वो. २

यानि पञ्चधा त्रीणि त्रीणि तेभ्यो

न ज्यायः परमन्यदस्ति

छांदो. २।२१।३

यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि

चक्षुःप्रतिरोधकदुष्कृतानि

सर्वाणि निर्मूलय..

चक्षुषो. २

या निशा सर्वभूतानां

भ. गी. २।६९

यानि ह्येव जाग्रत्पश्यति तानि सुप्त

इत्यत्रायंपुरुषः स्वयं श्योतिर्भवति

बृह. ४।३।१४

(अथ) यानीतराणि स्तोत्राणि

तेष्वात्मनेऽन्नाद्यमागायेत्

बृह. १।३।२८

यानूष्मणोऽधिदैवतमवोचाम मज्जा-

नस्तेऽध्यात्मम्

३ ऐत. २।२।२

यानूष्मणोऽवोचाम रात्रयस्ताः

३ ऐत. २।२।१

यानेव हत्वा न जिजीविषामः

भ. गी. २।६

यान्ति देवव्रता देवान्

भ. गी. ९।२५

यान्ति ब्रह्म सनातनम्

भ. गी. ४।३१

यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्

भ. गी. ९।२५

(अतो) यान्यन्यानि वीर्यवन्ति

कर्माणि यथाऽग्नेर्मन्थनमाजेः

सरणं..तानि करोति

छांदो. १।३।५

यान्यनवद्यानि कर्माणि, तानि

सेवितव्यानि, नो इतराणि

तैत्ति. १।११।२

यान्यक्षराण्यवोचामाहानितानि

३ ऐत. २।२।१

यान्यक्षराण्यधिदैवतमवोचामा-

स्थीनि तान्यध्यात्मम्

३ ऐत. २।२।२

(अथ) यान्यष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि

तृतीयसवनम्

छांदो. ३।१६।५

यान्यस्माकं सुचरितानि, तानि

त्वयोपास्यानि नो इतराणि

तैत्ति. १।११।२

यान्येतानि देवजातानि गणश

आख्यायन्ते वसवो रुद्रा

आदित्या विद्येदेवा मरुतइति

बृह. १।४।१२

यान्येतानि देवत्रा क्षत्राणीन्द्रो	
वरुणः सोमो रुद्रः पर्जन्यो	
यमो मृत्युरीशान इति	बृह. १।४।११
यान्सन्धीनधिदैवतमवोचाम	
पर्वाणि तान्यध्यात्मम्	३ ऐत. २।२।२
यान् सन्धीनवोचामाहोरात्राणां	
ते सन्धयः	३ ऐत. २।२।१
या परा सा परा गतिः	गान्धर्वो. ५
या पुरस्ताद्युञ्जत ऋचोऽक्षरे	
परमे व्योमन्निति	२ प्रणवो. ५
या प्रतीतिरनागस्का तच्चि-	
द्ब्रह्मास्मि सर्वगम्	अ. पू. ५।२२
या प्रत्यग्दृष्टिभिर्जीवैर्व्ययमानानु-	
भूयते । ज्ञापिनी ज्ञप्तिरूपैका	
सा मां पातु सरस्वती	सरस्व. १५
या प्राणेन सम्भवत्यदितिदैवता-	
मयी । गुहां प्रविश्य तिष्ठन्ती	
या भूतेभिर्व्यजायत	कठो. ४।७
या प्राणेन संविशति (मा. पा.)	कठो. ४।७
या बुद्धिर्गर्भमव्ये सा बुद्धिर्बाल्या-	
वस्था न भवति	अद्वैतो. २
या बुद्धिर्बाल्यावस्था भवति सा	
बुद्धिर्यौवनावस्था न भवति	अद्वैतो. २
या बुद्धिर्यौवनावस्था सा बुद्धि-	
र्युनावस्था न भवति	अद्वैतो. २
या भार्या (जननी हि सा) मातरेवहि	१ योगत. १३२
यामिरादित्यस्तपति रश्मिभिस्ताभिः	
पर्जन्यो वर्षति	महाना. १७।१३
याभिरिवं विनुयुर्दाशुषः प्रजाः	वा. सं. १७
याभिर्विभूतिमिलोकान्	भ. गी. १०।१६
या (अदितिः) भूतेभिर्व्यजायत,	
यत्तद्वैतत्	कठो. ४।७
या मनसि सन्तता (मा. पा.)	प्रश्नो. २।१२
या मन्द्रा स्वरवती सा देवहूः	संहितो. १।२
याममात्रं तु यो नित्यमभ्यसेत्स तु	
कालजित्	१ यो.त. १२६
याममात्रं प्रतिदिनं योगी यत्नाद-	
वन्निवृत्तः	१ यो. त. ७२

याममात्रं वासुदेवं चिन्तयेत् कुम्भकेन	
यः । सप्तजन्मार्जितं पापं तस्य	
नश्यति योगिनः	त्रि. ब्रा. १४८
या माता सा पुनर्भार्या या भार्या	
मातरेव हि (जननी हि सा)	२ योगत. ४
[१ यो. त. १३२+	
(अथ) यामिच्छेदधीतेति तस्या-	
मर्थं निष्ठाय मुखेन मुखम्	
सन्धायापान्याभिप्राण्यात्	बृह. ६।४।११
(अथ) यामिच्छेन्न गर्भं दधीतेति	
तस्यामर्थं निष्ठाय...इत्यरेता	
एव भवति	बृह. ६।४।१०
यामिन्द्रसेनेत्याहुस्तां विद्यां ब्रह्म-	
योनिं सरूपामिहायुषे शरणं प्रपद्ये	नृ. पू. ३।४
यामिमां पुष्पितां वाचं	भ. गी. २।४२
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्य-	
स्तवे । शिवां गिरित्र तां कुरु	
माहि *सीः पुरुषं जगत् [येता. ३।६ +नीलक. १।५	
[+वा.सं. १६।३+	तै.सं. ४।५।१।१
यामेव कुमारस्यान्ते वाचमभाष-	
थास्तामेव मे ब्रूहि	छांदो. ५।३।६
याम्यकर्णान्तं यशस्विनी भवति	शांडि. १।४।६
यायावरा यजन्तो...दक्षतः प्रति-	
गृह्णन्तः शतसंवत्सराभिः क्रिया-	
भिर्यजन्त आत्मानं प्रार्थयन्ते	आश्रमो. २
या योदेति मनोमात्री वासना	
वासितान्तरा । तांतां परिहरे-	
त्प्राज्ञस्ततोऽविद्याक्षयो भवेत्	महो. ४।१०८
यावच्चित्तस्य गतं तत्रास्थ यथा-	
कामचारो भवति	छांदो. ७।५।३
यावच्चोपाधिपर्यन्तं तावच्छुभेषु-	
दुरुम् । गुरुवद्गुरुभार्यायां तत्पुत्रेषु	
च वर्तनम्	पैङ्गलो. ४।८
यावज्जीवति तावच्च दुःखैर्नानाविधैः	
श्रुतः । तन्तुकारणपक्षमौचैरास्ते	
कार्पासबीजवत्	भवसं. १।८
यावत्तः खलु पिण्डान् स प्राप्नोति	
हविषो नृचः । तावत्तः शूलान्	
व्रसति प्राप्य वैवस्वतं यमम्	इतिहा. २६

यावती दृश्यकलना सकलेयं विलो-
क्यते । सा येन सुष्ठु सन्त्यक्ता
स जीवन्मुक्त उच्यते महो. २।५३
(अथ) यावतीयं त्रयी विद्या
यस्तावत्प्रतिगृहीयात्सोऽस्या
एतद्वितीयं पदमाप्नुयात् बृह. ५।१४।६
यावतीर्वै देवतास्ताः सर्वा वेदविदि
ब्राह्मणे वसन्ति तस्माद्ब्राह्मणे-
भ्यो वेदविद्भ्यो दिवे दिवे
तमस्कुर्यामि.. सहचै. १९
यावत्केवलसिद्धिः स्यात्तावत्सहित-
मभ्यसेव योगकुं. १।२०
यावत् एनं प्रजायामुद्गीथं वेदिष्यते
परोवरीयो द्वैभ्यस्तावदस्मिँल्लोके
जीवनं भविष्यति छांदो. १।९।३
यावत्तेजसो गतं तत्रास्य यथाकाम-
चारो भवति छांदो. ७।११।२
यावत्प्रयत्नलेशोऽस्ति यावत्सङ्कल्प-
कल्पना । श्रेयस्त्वं मनसा प्राप्तं
तावत्तत्त्वस्य का कथा अमन. २।५६
यावत्स्यो वै कालस्य कलास्तावतीषु
चरत्यसौ यः कालं ब्रह्मे-
त्युपासीत मैत्रा. ६।१४
यावत्सङ्कल्पस्य गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति यः सङ्कल्पं... छांदो. ७।४।३
यावत् सञ्जायते किञ्चित् भ. गी. १।३।७
यावत्सर्वं न सन्त्यक्तं तावदात्मा
न लभ्यते । सर्वसङ्गपरित्यागे
शेष आत्मेति कथ्यते अ. पू. १।४५
यावत्स्मरस्य गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति यः स्मरं
ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।१३।२
यावदनुविक्षो यावदनुचन्द्रमा-
स्तावानस्य लोको भवति १ ऐत. १।७।५
यावदनुधौ यावदन्वादित्यस्तावानस्य
लोको भवति १ ऐत. १।७।६
यावदनु पृथिवी यावदभिरस्तावा-
नस्य लोको भवति १ ऐत. १।७।२

यावदन्तरिक्षं यावदनुवायुस्तावानस्य
लोको भवति १ ऐत. १।७।३
यावदन्नस्य गतं तत्रास्य यथाकाम-
चारो भवति योऽन्नं ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।१।२
यावदन्वापो यावदनुवरुणस्तावा-
नस्य लोको भवति १ ऐत. १।७।६
यावदपां गतं तत्रास्य यथाकाम-
चारो भवति, योऽपो ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।१०।२
यावदाकाशस्य गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति य आकाशं.. छांदो. ७।१२।२
यावदाशाया गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति य आशां
ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।१४।२
यावदादहनश्चोर्ध्वमधस्तात्पावनं
भवेत् बृ. जा. २।८
यावदायुषं ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते
न च पुनरावर्तते छांदो. ८।१५।१
यावदितः पुरस्तादुदयति सूर्यः,
तावदितोऽमुं नाशय वनदु. १६०
(अथ) यावदिदं प्राणि, यस्तावत्
प्रतिगृहीयात्, सोऽस्या एत-
त्तृतीयं पदमाप्नुयात् बृह. ५।१४।६
यावदुन्मेषकालस्तावन्मेषकालो
भवति त्रि.म. ना. ४।६
यावदुष्णं भवत्यन्नं तावद्भुञ्जीतवाग्यतः इतिहा. ८१
यावदेकैकस्मा ऋत्विजे धनं दास्यामि
तावद्भगवद्भ्यो दास्यामि छांदो. ५।११।५
यावदेतानिरीक्षेऽहं भ. गी. १।२२
यावदेनो दीक्षामुपैति दीक्षित एतैः
सततं जुहोति सहचै. १२
यावदृष्टिर्भुवोर्मध्ये तावत्काल-
मयं कृतः यो. च. ९१
यावद्भयानस्य गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति यो ध्यानं
ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।३।२
यावदेतुफलावेशस्तावदेतुफलोद्भवः ।
क्षीणे हेतुफलावेशे नास्ति
हेतुफलोद्भवः अ. शां. ५५

यावदेतुफलादेशः संसारस्ताव-

दायितः । क्षीणे हेतुफलावेशे

संसारं न प्रपद्यते

अ. शां. ५६

यावद्वयस्मिच्छरीरे प्राणो वसति

तावदायुः

कौ. त. ३१२

यावद्विद्यते सा दीक्षा [महाना. १८१ + त्रिमुप. ४]

यावद्वलस्य गतं तत्रास्य यथाकाम-

चारो भवति यो बलं ब्रह्मेत्युपास्ते

छांदो. ७८१२

यावद्विन्दुः स्थितो देहे तावन्मृत्यु-

भयं कुतः । यावद्वद्वानभोमुद्रा

तावद्विदुर्नगच्छति [ध्या. बि. ८४ + यो. चू. ५८]

यावद्वा मक्षिकायाः पत्रं

तावन्तरेणाकाशः

बृह. ३।३।२

यावद्यावन्मुनिश्रेष्ठ स्वयं सन्त्यज्य-

तेऽखिलम् । तावत्तावत्परालोकः

परमात्मैव शिष्यते

अ. पू. १।४४

यावद्वाचो गतं तत्रास्य यथाकाम-

चारो भवति, यो वाचं

ब्रह्मेत्युपास्ते

छांदो. ७।२।२

यावद्वायुः स्थितो देहे तावज्जीवो

न मुञ्चति

यो. चू. ९०।९१

यावद्वा शक्यते तावद्द्वारयेज्यप-

तत्परः । पूरितं रेचयेत्पञ्चा-

न्मकारेणानिलं बुधः

जा. द. ६।५

यावद्विहीनं मनो न तावद्वासनाक्षयः

अ. पू. ४।७८

यावद्विज्ञानस्य गतं तत्रास्य यथा-

कामचारो भवति, यो विज्ञानं

ब्रह्मेत्युपास्ते

छांदो. ७।७।२

यावदे पुरुषः प्राणिति न ताव-

प्राणितुं शक्नोति

कौ. त. २।५

यावदे पुरुषो भासते न ताव-

प्राणितुं शक्नोति

कौ. त. २।५

यावन्निस्तु कराद्गृह्णाः पतन्ति

अलविन्दवः । भूत्वा वज्राणि

ते सर्वे पतन्ति ह्यसुरेषु वै । ततो

विभावसुस्तेषां प्रीतास्मा-

ऽऽन्यायते वरम्

सन्ध्यो. १२, १३

यावन्तीह वै भूतान्यग्नमदन्ति

तावत् स्वन्तस्थोऽग्नमस्ति यो

हैवं वेद

मेत्रा. ६।१३

यावन्तो देवास्त्वयि जातवेदस्ति-

येभ्यो व्रन्ति पुरुषस्य कामान्

बृह. ६।३।१

यावन्तो वैश्वदेवस्य निविद्युच्यन्ते

बृह. ३।९।१

यावन्न चित्तोपशमो न तावत्तत्त्व-

वेदनम् । यावन्न वासनानाश-

स्तावत्तत्त्वागमः कुतः

अ. पू. ४।८०

यावन्न तत्त्वविज्ञानं ताव-

चित्तशमः कुतः

अ. पू. ४।७९

यावन्न तत्त्वसम्प्राप्तिर्न ताव-

द्वासनाक्षयः

अ. पू. ४।८०

यावन्न लभ्यते शास्त्रं तावद्वा

पर्यटेद्यतिः । यदा सैल्लभ्यते

शास्त्रं तदा सिद्धिः करे स्थिता

योगकु. २।११

यावन्नाम्नो गतं तत्रास्य यथाकाम-

चारो भवति यो नाम

ब्रह्मेत्युपास्ते

छांदो. ७।१।५

यावन्निश्चसितो जीवस्ताव-

भिष्कलतां गतः

प्र. वि. १९

यावन्नोत्पद्यते सत्या बुद्धिर्नैतदहं

यथा । नैतन्मम च विज्ञाय ज्ञः

सर्वमतिवर्तते

आयुर्वे. २५

यावन्मनसो गतं तत्रास्य यथा-

कामचारो भवति यो मनो

ब्रह्मेत्युपास्ते

छांदो. ७।३।२

यावन्मनस्तत्र मरुत्प्रवृत्तिर्याव-

न्मरुषापि मनोनिवृत्तिः

अमन. २।२७

यावन्ममेकमित्यास्था तावच्चित्ता-

दिबिभ्रमः

अ. पू. ५।११

यावमुच्य गेष्णो तो गेष्णो

यन्नाम तन्नाम

छांदो. १।७।५

यावर्णपदवाक्यार्थस्वरूपेणैव वर्तते ।

अनादिनिबन्धानन्ता सा मां

पातु सरस्वती

सरस्व. ९

यावद्विज्ञस्य देव्ये स्यात्तावदेवाग्र

विस्तरः । लिङ्गवृत्तीयभागेन

भवेद्देवाः समुच्छ्रयः

शिबो. २।६

याऽवसानेऽस्य चतुर्थ्यर्धमात्रा सा	
सोमलोक ओङ्कारः	नृ. पू. ३।१
याऽवसानेऽस्य चतुर्थ्यर्धमात्रा सा	
विद्युमतीसर्ववर्णापुरुषदेवत्या	अ. शिखी. १
यावन्तं इ वा इमा वित्तस्य पूर्णा	
वर्हस्त्वर्गं लोकं जयति	
तावन्तं लोकं जयति	सहस्रै. १८
या वाक् सर्क तस्मादप्राणजनपान-	
मृचेमभिव्याहरति	छांदो. १।३।४
यावानर्थं उदपाने	अ. गी. २।४६
यावानु वै रक्षस्तावानात्मा	संहितो. ४।१
यावान् यश्चास्मि तत्त्वतः	अ. गी. १८।५५
यावान्वा अयमाकाशस्तावानेषो-	
ऽन्तर्हृदय आकाशः	छांदो. ८।१।३
यावान् संवत्सरस्तमेतावतः कालस्य	
परस्तादिसृजत	बृह. १।२।४
या वा प्रजा स प्राणः	कौ. त. ३।३
या वाऽस्या अग्न्यास्तनवस्तां अभि-	
ध्यायदध्वयैजिहुयात्	मैत्रो. ४।६
या वितैषणा सा लोकैषणा	बृह. ३।५।१
या वेदाविषु गायत्री सर्वव्यापि-	
मदेधरी । ऋग्यजुःसामाथर्वैश्च	
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु	रक्षिवसं. १९
या वेदान्वायैतत्स्वैकस्वरूपा	
परमार्थतः । नामरूपात्मना	
व्यक्ता सा मां पातु संरखती	सरस्व. ५
या वै वरदा स्त्रीपाया सुप्रसन्ना	
सुखयति सहस्रपुरुषान्	लक्ष्यु. ५
या वै शिवा भगवती अणिमा-	
सिद्धिस्तस्यै वै नमोनमः	आथ. द्वि. ३
या वै शिवा भगवती अणिमा-	
विजयाविजयकंतस्यैवैनमोनमः	आथ. द्वि. १
या वै शिवा भगवती ईशित्वसि-	
द्धिस्तस्यै वै नमो नमः	आथ. द्वि. ५
या वै शिवा भगवती प्राकान्यसि-	
द्धिस्तस्यै वै नमो नमः	आथ. द्वि. ७
या वै शिवा भगवती मुक्तिसिद्धि-	
स्तस्यै वै नमो नमः	आथ. द्वि. ८

या वै शिवा भगवती महिमासि-	
द्धिस्तस्यै वै नमो नमः	आथ. द्वि. ४
या वै शिवा भगवती लघिमासि-	
द्धिस्तस्यै वै नमोनमः	आथ. द्वि. ३
या वै शिवा भगवती वशित्व-	
सिद्धिस्तस्यै वै नमोनमः	आथ. द्वि. ६
या वै ता इमाः प्रजास्तिस्रो अत्या-	
यमायन्	१ ऐत. १।१।३
या वै विष्णुं पालने सन्नियुक्ते रुद्रं	
देवं संहतौ चापि गुह्या । तां वै	
देवीमात्मबुद्धिप्रकाशां सुमुख्यै	
शरणमहं प्रपद्ये	गुह्यको. ७३
या वै सा गायत्रीयं पृथिव्यसां	
हीदं. . . (मा.)	छांदो. ३।१।३।२
या वै सा गायत्रीयं वाव सा वैयं	
पृथिव्यस्यां. . . हीदं. सर्वं श्रूतं	
प्रतिष्ठितमेतामेव नातिशीयते	छांदो. ३।१।३।२
या वै सा पृथिवीयं वाव सा वदि-	
दमस्मिन्पुरुषे शरीरमस्मिन्हीमै	
प्राणाः प्रतिष्ठिता एतदेव नाति-	
शीयन्ति	छांदो. ३।१।३।३
या वै सा सूर्तिरजायताऽन्नं वै तत्	२ ऐत. ३।३
या व्याहृतिराहुतिर्यदस्य विज्ञानं	
तज्जुहोति [महाना. १८।१+]	त्रिसुप. ४
यां शक्तिस्तद्दशाद्दश विकृतत्वेन	
भासते । अत्राप्यावृत्तिनाशेन	
विभाति ब्रह्मसर्गयोः	सरस्व. ४३
या शतेन प्रतनोषि सहस्रेण विरोहसि ।	
तस्यास्ते देवीष्टके विधेम हविषा	
वयम् [महाना. ४।३+]	बलतु. १।५७
[+ वा. सं. १३।२१+]	वै. सं. ४।३।३।३
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो	
वप । अवतत्य धनुस्त्व. सह-	
क्षाश्च शतैरुषे [नीलरु. २।५+]	वा. सं. १३।५
[+ वै. सं. ४।५।१।३]	
याश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्यै-	
साम्यश्च नमो नमः	सहस्रै. २४
याश्च सृत्योः प्राणवस्यस्ताभ्यो	
नमो नमस्तैर्नैव सुदयत २	अ. मा. ५

या अथवा धारणा मेधा बारदेवी
विधिवल्लभा । भक्तजिह्वाप्रसदना
समादिगुणदायिनी सरस्व. २९
या साङ्गोपाङ्गवेदेषु चतुर्वर्गैव
गीयते । अद्वैता ब्रह्मणः शक्तिः
सा मां पातु सरस्वती सरस्व. ७
या सा तृतीया मात्रा ईशान-
देवत्या कपिला वर्णेन यस्तां
ध्यायते नित्यं स गच्छेद्देशानपदं
[अ. शिरः. ३।१०+ २ प्रणवो. १३
या सा द्वितीया मात्रा विष्णु-
देवत्या कृष्णा वर्णेन यस्तां
ध्यायते नित्यं स गच्छे-
द्वैष्णवं पदं [२ प्रणवो. १३+ अ. शिरः. ३।१०
या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या
रक्ता वर्णेन यस्तां ध्यायते
नित्यं स गच्छेद्ब्राह्मं प्रदम् २ प्रणवो. १३
या सा चतुर्थी मात्रा सर्वदेवत्या
व्यक्तीभूता खं विचरति शुद्ध-
स्फुटिकसन्निभा वर्णेन यस्तां
ध्यायते नित्यं स गच्छेत्पद-
सन्नामकम् २ प्रणवो. १३
या साऽर्धचतुर्थी मात्रा सर्वदेवत्या-
ऽव्यक्तीभूता खं विचरति...
यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेत्
प्रथमनामयम् अ. शिरः. ३।१०
या शक्तिर्यो रेखाः सदनानि भूमी-
विषिष्टपाणिगुणप्रकाराः ।
पञ्चयं पूरकं पूरकाणां मन्त्री
प्रथमे मदनो मदन्या त्रिपुरो. ५+
यास्ते सौम प्रजावत्सोभिस्तो अहं त्रिपुर. १
[महाना. १२।१५+
यास्ते सौम प्राणाः स्ताञ्जुहोमि त्रिपुर. १
[+महाना. १२।१
याऽस्य तृतीयारेखा साऽऽहवनीयो-
मकारस्तमो धौर्लोकः परमात्मा
ज्ञानशक्तिः सामवेदस्तृतीयसवनं
महादेवो देवतेति [का. ब्रह्मो. ४+ आवालय. ८

याऽस्य (भस्मनः) द्वितीया रेखा
सा दक्षिणाभिरुकारः सत्त्व-
मन्तरिक्षमन्तरात्माचेच्छाशक्ति-
र्यजुर्वेदो माध्यन्दिनं सवनं
सदाशिवो देवतेति का. ब्रह्मो. ४
याऽस्य द्वितीया रेखा सा दक्षिणा-
भिः...माध्यन्दिनसवनं विष्णु-
देवो देवतेति आवालय. ८
याऽस्य प्रथमा रेखा सा गार्हपत्य-
आकारो रजो भूर्लोकः स्वात्मा
क्रियाशक्तिर्ऋग्वेदः प्रातस्सवनं
महेश्वरो देवतेति का. ब्रह्मो. ४
याऽस्य प्रथमा रेखा सा गार्हपत्यः
...प्रजापतिर्देवो देवतेति आवालय. ८
या स्वप्ने महीयते, तां मध्यमा-
माचक्षते गान्धर्वो. ३
या स्वच्छा समता शान्ता जीव-
न्मुक्त्यवस्थितिः । साक्ष्यवस्था
व्यवहृतौ सा तुर्या कलनोच्यते अ. पू. १।३०६
या हुता अतिनेदन्ते पितृलोकमेव
ताभिर्जयत्यतीव हि पितृलोकः बृह. ३।१।८
या हुता अधिशेते मनुष्यलोकमेव
ताभिर्जयत्येव हि मनुष्यलोकः बृह. ३।१।८
या हुता उज्ज्वलन्ति या हुता अति-
नेदन्ते या हुता अधिशेते किं
ताभिर्जयतीति बृह. ३।१।८
या हुता उज्ज्वलन्ति देवलोकमेव
ताभिर्जयति दीप्यत इव हि
देवलोकः बृह. ३।१।८
या होता हृदयस्य नाड्यस्ताः पिङ्ग-
लस्याग्निस्तिस्रस्तिस्रः कांयो. ८।५।१
या होव पुत्रेणः सा वितैषणा
यावितैषणासालोक्येणा वसे
होते पण्ये एव अमृतः [बृह. ३।५।१+ कांयो. ८।५।२
यां कल्पयन्ति नोऽरयः कूरां कृत्यां
वधूमिव । तां ब्रह्मणे च निर्णुमा
प्रत्यक्षवारमुच्छतु वनद. १२८
यां गामुशन्तीमुशन्नभिपूर्णा...
ब्रह्माय पित्रे स्वाहा पारमो. ६।१७

(अथ) यां चतुर्थी जुहुयात्तां जुहुयात्समानाय स्वाहेति समानस्तृप्यति	छांदो. ५।२२।१
यां तु कुमारस्यान्ते वाचमभाषथा- स्तां मे ब्रूहीति	बृह. ६।२।५
(अथ) यां तृतीयां जुहुयात्तां जुहुयादपानाय स्वाहेत्य- पानस्तृप्यति	छांदो. ५।२१।१
यां त्वमापः सत्यधृतिर्वतासित्वादृक्छो भूयान्नचिकेतः प्रष्टा	कठो. २।९
(अथ) यां द्वितीयां जुहुयात्तां जुहुयाद्व्यानाय स्वाहेति व्यान- स्तृप्यति	छांदो. ५।२०।१
(अथ) यां पञ्चमीं जुहुयात्तां जुहुयादुदानाय स्वाहेत्युदान- स्तृप्यति	छांदो. ५।२३।१
यां यामहं मुनिश्रेष्ठ संश्रयामि शुणाश्रयम् । तांतांकृन्ततिमे तृष्णा तन्त्रीमिव कुमूषिका	महो. ३।२२
यां यां वासनां प्राप्नोति तं तं लिङ्गशरीरं प्राप्नुवन्नास्ते	सामर. १००
यां यां वासनामात्मा विलापयमानो भवति तत्तद्भावेन तत्तद्विङ्गं विलीयमानं भवति	सामर. १०२
यां विदित्वाऽखिलबन्धनिर्मर्ध्याखिल- वर्त्मना । योगी याति परं स्थानं आ मां पातु सरस्वती	सरस्व. २१
याः प्राच्यः स्यन्दन्ते स उद्गीयो याः प्रवीच्यः स प्रतिहारः समुद्रौ निषेनम्	छांदो. २।४।१
याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः [प्रा.हो. १।३ - क्र.मं. १०।९७।१९ [वा. सं. १२।८९	
युक्त आसीत् मत्परः [अ.गी. २।६१+ ६।१४	
युक्त इत्युच्यते तदा	अ. गी. ६।१८
युक्त इत्युच्यते योगी	अ. गी. ६।८
युक्तचेष्टस्य कर्मसु	अ. गी. ६।१७
युक्तस्वभावबोधस्य	अ. गी. ६।१७
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा	अ. गी. ५।१२

युक्तं युक्तं त्यजेद्वायुं युक्तं युक्तं च (प्र) पूरयेत् । युक्तं युक्तं प्रव- क्ष्नीयादेवं सिद्धिमवाप्नुयात्	शांडि. १।७।७
[यो. चू. ११९+	
युक्तात्मानः सर्वमेवाविशन्ति	मुण्ड. ३।२।५
युक्ताहारविहारस्य	अ. गी. ६।१७
युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे । सुवर्गोऽयं शक्त्या..	श्वेता. २।२
युक्तो मन्येत तत्त्ववित्	अ. गी. ५।८
युक्त्या वै चरतो ब्रह्मस्य संसारो गोष्पदाकृतिः	महो. ६।९
युक्त्या श्रुत्या स्वानुभूत्या ज्ञात्वा सार्वत्स्यमात्मना । (स्वात्म- न्येव सदा स्थित्या मनो नश्यति योगिनः ।)	अप्यात्मो. ४
युक्त्वाय मनसा देवान् सुवर्धतो धियां दिवम् । बृहज्ज्योतिः करि- ष्यतः सविता प्रसुवाति तान्	श्वेता. २।३
युगपत्सम्भवे यस्मादसम्बन्धो विषाणवत्	अ. शां. १.६
युजे वां ब्रह्म पूर्णं नमोभिर्विष्णो- कायन्ति पथ्येव सुराः	श्वेता. २।५
युज्यते नात्र संशयः	अ. गी. १०।१७
युज्यते वेष्टनं वायोराकाशस्य च खण्डनम् । ग्रन्थनं च तरङ्गा- णामास्था नायुषि युज्यते	महो. ३।११
युज्यन्ते हास्यै सर्वाणि भूतानि श्रेष्ठपाय युज्यते मन उत युज्यते धियो विप्रा	बृह. ५।१३।२
विप्रस्य बृहतो विपश्चितः	श्वेता. २।४
युज्यतो योगमात्मनः	अ. गी. ६।१९
युज्यन्ते सदाऽऽत्मानं [अ. गी. ६।१५+६।२८	
युज्यानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः	श्वेता. २।१
युज्यीत प्रणवे चेतः प्रणवो ब्रह्म निर्मयम् । प्रणवे नित्ययुक्तस्य न अयं विद्यते कचित्	आगम. २५
युद्धाय कृतनिश्चयः	अ. गी. २।३७
युद्धे चाप्यपलायनम्	अ. गी. १८।४१

युद्धेन पौरुषेण च तं हेन्द्र उवाच
 प्रतदेन वरं ते ददानीति कौ. त. ३।१
 युद्धे म्रियचिकीर्षवः भ. गी. १।२३
 युद्धयस्व जेताऽसि रणे सपत्नान् भ. गी. १।१३४
 युद्धयस्व विगतज्वरः भ. गी. ३।३०
 युधामन्युश्च विक्रान्तः भ. गी. १।६
 युनाकि युजते वाऽपि तस्माद्योग
 इति स्मृतः मैत्रा. ६।२५
 युयुत्सुं समुपस्थितम् भ. गी. १।२८
 युयुधानो विराटश्च भ. गी. १।४
 युवतिभगगतं बिन्दुमूर्ध्वं नयन्ति...
 तैतेषां देहसिद्धिः अमन. २।३१
 युवमस्मासु नियच्छतम् ।
 प्र प्र यज्ञपतिं तिर चित्त्यु. ११।१२
 युवा भवति वृद्धोऽपि सततं मूल-
 बन्धनात् ध्या. वि. ७४
 युवा यौवनवृत्तेषु दुःखितेषु
 सुदुःखधीः अ. पू. २।३०
 युवा सुवासाः [अरुणो. १+ क्र. मं. ३।८।४
 युवा स्यात्साधु-युवाध्यायकः तैत्ति. २।८
 युवैव धर्मशीलः स्यादनिमित्तं
 हि जीवितम् भवसं. १।४१
 यूनश्च परदारादि दारिद्र्यं च कुटु-
 म्बिनः । पुत्रदुःखस्य नास्त्यन्तो
 वनी चेन्म्रियते तदा याज्ञव. २०
 ये अन्यधर्मरहिता अन्यासक्तिरहि-
 तास्ते तन्मण्डलं न प्राप्नुवन्ति सामर. ७५
 ये अन्योपासका भक्ता आनन्दे-
 नाश्रिताः कर्मजडाः कर्मकाण्डो-
 पासका एव ते सामर. ७५
 ये अर्वागुत वा पुराणे वेदं विद्धा-
 समभितो वदन्ति । ते परि-
 वदन्ति सर्वे अग्निं द्वितीयं तृतीयं
 च इत्यसमिति [सहवै. १९+ अथर्व. १०।८।१७
 [४तै. आ. २।१५।१
 ये अद्वारात्रे ते दर्शपूर्णमासौ त्रिसुप. ४
 [महाना. १८।१+
 ये कववस्ते पशुबन्धाः [महाना. १८।१+त्रिसुप. ४

ये कण्ठलग्नतुलसीनलिनाक्षमालाः...
 श्रीवैष्णवा मुवनमाशु पवित्रयन्ति सुदर्श. १३
 ये कर्मणा देवानपियन्ति तैत्ति. २।८।१
 ये केचन जगद्भावास्तानविद्यामया-
 न्विदुः । कथं तेषु किलात्मज्ञस्य-
 काविद्यो निमज्जति वराहो. ३।२८
 ये केचनैते ते सर्वेऽप्यज्ञानिनः स्वसंवे. ३
 ये केचास्मच्छ्रेयांसो ब्राह्मणाः, तेषां
 त्वयाऽऽसने न प्रशसितव्यम् तैत्ति. १।११।३
 ये के चोभयादतः चित्त्यु. १२।९
 ये प्राच्याः पशवो विश्वरूपाः चित्त्यु. ११।११
 [अथर्व. २।३४।४ तै. आ. ३।११।१२
 ये च सन्तानजा दोषा ये दोषा देह-
 सम्भवाः । प्रेषाग्निर्निर्देहस्तर्वास्तु-
 षामिरिव काश्चनम् १ सं. सो. ३।८
 (अथ) ये चान्ये ह नित्यप्रमुदिताः...
 तैः सह न संवसेत् मैत्रा. ७।८
 (अथ) ये चान्ये ह पुरयाजका
 अयाज्ययाजकाः... तैः सह न
 संवसेत् मैत्रा. ७।८
 (अथ) ये चान्ये ह यक्षराक्षस-
 भूतगणपिशाचोरगग्रहादी-
 नामर्थं पुरस्कृत्य शमयाम
 इत्येवं ब्रुवाणाः...तैः सह
 न संवसेत् मैत्रा. ७।८
 (अथ) ये चान्ये ह बृथाकषाय-
 कुण्डलिनः...तैः सह न संवसेत् मैत्रा. ७।८
 (अथ) ये चान्ये ह बृथातर्क-
 दृष्टान्तकुहकेन्द्रजालैर्वैदिकेषु
 परिस्थातुमिच्छन्ति तैः सह
 न संवसेत् मैत्रा. ७।८
 ये चाप्यक्षरमव्यक्तं भ. गी. १५।१
 ये चास्य ऋत्विजः पूर्ववद्गुणीत्वा
 सर्वास्ताश्च नैधानरेष्टीर्निर्वपेत्
 सर्वस्वं वधात् कठमु. ३
 ये चास्य विषमा केचिदिवि
 सूर्यादयो प्रहाः । तेचास्य द्यौम्या
 आयन्ते शिवाः सुखकराः सदा सन्त्यो. ८

(अयं) ये चास्येह जीवा ये च
 प्रेता यच्चान्यदिकृच्छ्रं लभते
 सर्वं तदत्र गत्वा विन्दते छांदो. ८।३।२
 ये चैव सात्त्विका भावाः म. गी. ७।१२
 ये जनाः पथ्यपास्ते म. गी. ९।२२
 ये च तत्र ब्राह्मणाः समदर्शिनः,
 युक्ता आयुक्ता अलक्ष्णा
 ब्रमेकामाः स्युः, यथा ते तत्र
 वर्तेरन्, तथा तत्र वर्तेथाः तैत्ति. १।११।४
 ये तद्विदुरमुतास्ते भवन्त्यथेतरे
 दुःखमेवापियन्ति बृह. ४।४।१४
 ये तपःक्षीणदोषास्ते नैव पश्यन्ति
 भाविताम् गुह्यका. ३५
 ये तां विदुस्त इमे समासते गुह्यका. ५३
 येऽतिरम्याण्यरण्यानि.. विहाया-
 तिरतां कामे..ते दैवमोहिताः शिवो. ७।१२९
 ये तु ज्ञानिनो भवन्ति ये तत्त्वज्ञानि-
 नश्च तैस्तेषां को विशेषः स्वसंवे. ३
 ये तु धर्म्यामृतमिदं म. गी. १२।२०
 ये तु मोहान्वात्सीर्णास्तेः प्राप्तं
 परमं पदम् महो. ५।४१
 ये तु विचार्यविज्ञाने विद्वांस इति
 कीर्तिताः । आत्मतत्त्वं न
 जानन्ति दर्वी पाकरसं यथा अमन. २।१००
 ये तु वृत्तिं विजानन्ति ज्ञात्वा वै
 वर्धयन्ति ये । ते वै सत्पुरुषा
 वन्या वन्यास्ते भुवनत्रये ते. बि. १।४४
 ये तु सर्वाणि कर्माणि म. गी. १२।६
 ये तु सुप्रविदो लोके ते च
 यज्ञोपवीतिनः परब्र. १३
 ये तेऽष्टौ प्रहा अष्टावतिप्रहाः
 कथमेव इति बृह. ३।२।१
 ये ते सद्ब्रह्मयुतं पाशा मृत्यो
 मर्त्याय हन्तवे । तान्यहस्त्रं
 मायया सर्वानवयुजामहे
 [महाना. १३।१९९+ कै. ब्रा. ३।१०।८।२
 येऽन्याथंस्ते परावधुः १ पेत. १।१।१
 ये त्वधारमनिर्द्वयं म. गी. १२।३
 ये त्वेकमयस्यन्तः म. गी. ३।३२

ये दर्म हस्ते गृह्णन्ति, ते तं स्व
 न प्राप्नुवन्ति सामर. ७।१
 ये देवा अन्तरिक्षपदस्तेभ्यो नमो.. म. सा. ५
 ये देवा दिविषदस्तेभ्यो नमो भगव-
 न्तोऽनुमदन्तु शोभायै... ध. मा. ५
 ये देवाः पृथिवीपदस्तेभ्यो नमो
 भगवन्तोऽनुमदन्तु शोभायै... म. सा. ५
 ये द्विषन्ति विरुपाक्षं ते द्विषन्ति
 जनार्दनम् । ये रुद्रं नाभिजा-
 नन्ति ते न जानन्ति केशवम् बृह. ७
 येन कर्माणि प्रचरन्ति धीरा यतो
 वाचा मनसा चाक यन्ति
 ...तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. २
 येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञ
 कृण्वन्ति विदथेषु धीराः... २ शिवसं. ३
 तन्मे मनः [१ शिवसं. २+ २ शिवसं. ३
 येन केन प्रकारेण सुखं धैर्यं च
 जायते । तत्सुखासनमित्युक्त-
 मशक्तस्तत्समाश्रयेत् जा. द. ३।१३
 येन केनाक्षरेणोक्तं येन केन वि-
 निश्चितम् । येन केनापि गदितं
 येन केनापि मोदितम् ॥...सर्वं
 मिथ्येति निश्चितम् [ते. बि. ५।५६-५८
 येन केनापि तेजसा तत्स्वगृहोक्तं
 मार्गेण प्रतिष्ठाप्य...बहिं सोमाय
 स्वाहेति मन्त्रेण तत्तत्तिलग्रीहिभिः
 साज्यैर्जुहुयात् अस्मजा. १।२
 येन केनासनेन सुखधारणं भवत्य-
 शक्तस्तत्समाचरेत् शांति. ३।३।१२
 येन चक्षुषि पश्यति । तदेव ब्रह्म
 त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केनो. १।७
 येन जातानि जीवन्ति अत्यन्त्य-
 भिसंविशन्ति । तं मामेव विदि-
 त्वोपासीत अस्मजा. ३।५
 येन जातानि जीवन्ति । अत्यन्त्य-
 भिसंविशन्ति । तद्विजिज्ञासस्व तैत्ति. ३।१
 येन तपसा शिवः शिवोऽभूत् तत्र
 रुद्रशिवपुष्करिण्यां ये मत्स्वर्गं
 कृण्वन्ति ते तां लीलां प्राप्नुवन्ति सामर. ५०

येन ते संसारिण आत्मना विरागायव श्रीवि.ता.४।१
 येन त्रितो अर्णवाभिर्वभूव...
 तेनाहं ज्योतिषा ज्योतिरा-
 ज्ञान आक्षि सहचै. ४
 येन दक्षिणाभिमुखः शिनोऽपरो-
 क्षीकृती भवति तत्परमरहस्य-
 शिवतत्त्वज्ञानम् द. मू. १
 येन देवां यान्ति येन पितरो येन
 ऋषयः परमपरं परायणं च अ. शिरः. ३।११
 येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं...
 येनेदं जगत्प्राप्तं प्रजानां तन्मे मनः २ शिवसं. ९
 यन द्वारेण गन्तव्यं ब्रह्मद्वारमना-
 भयम् । मुखेनाच्छाद्य तद्द्वारं
 प्रसुप्ता परमेश्वरी यो. चू. ३७
 येन धर्ममधर्मं च मनोमननमीहितम् ।
 धर्ममन्तः परित्यक्तं स जीव-
 न्युक्तं उच्यते महो. २।५२
 येन प्रकाशते विश्वं यत्रैव प्रविलीयते ।
 तद्ब्रह्म परमं शान्तं तद्ब्रह्मास्मि.. पञ्चम. २०
 येन प्रजापतिः प्रजाः पर्यगृहीता-
 रिष्ट्यै तेन त्वा परिगृह्णामि कौ. त. २।११
 येन प्राणः प्रणीयते, तदेव ब्रह्मत्वं विद्धि केनो. १।९
 येन अचरसिद्धिः स्वाहूचराणां
 जयै धमः १ यो.त. ५९
 येन भूतान्यक्षेपेण अ. गी. ४।५५
 येन नमस्यन्ति गोविन्दं ते नमस्यन्ति
 शङ्करम् । येऽर्चयन्ति हरि-
 भक्त्या तेऽर्चयन्ति बृषभजम् रुद्रह. ६
 येन मात्रा मात्राविभजते सा संहिता ३ ऐत. १।५।१
 येन मासुपयान्ति ते अ. गी. १०।१०
 येन गौरीण गन्तव्यं ब्रह्मस्थानं
 निरामयम् । मुखेनाच्छाद्य
 तद्द्वारं प्रसुप्ता परमेश्वरी आ. वि. ६५
 येन गौरीण गन्तव्यं तद्द्वारं मुखेना-
 च्छाद्य प्रसुप्ताकुण्डलिनी कुण्डला-
 कारां सर्पवद्विष्टिता भवति शांति. १।७।३७
 येन यज्ञस्तापते सप्तर्षीणां
 तन्मे मनः... [१ शिवसं. ४+ २ शि. सं. १
 येन यज्ञं कुरु कुरु स यज्ञेयप्रजावर्त शिवो. ७।११०

येन यमस्य निविनाचरामि सहचै. ४
 येन रुद्रेण जगदूर्ध्वं धारितं, पृथिवी
 द्विधा त्रिधा घर्ता भारिता नामा
 येऽन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय नमोनमः अ. शिरः. ३।११
 येन रूपं रसं गन्धं... एतेनैव
 विजानाति किमत्र परिशिष्यते कठो. ४।३
 येन तैवः पञ्चवोत कूपाः चिन्त्यु. १।१।५
 येन लोकास्तुष्टा भवन्ति गोपालो. १।१४
 येन वागभ्युद्यते । तदेव ब्रह्मत्वं विद्धि केनो. १।५
 येन वा पश्यति येन वा शृणोति
 येन वा गन्धानाजिघ्रति येन
 वा वाचं व्याकरोति येन वा
 स्वादु चास्वादु च विजानाति १ ऐत. ३।१
 येन वैताः शिरा अनुव्याप्ता एष स ज्ञानः मैत्रा. ३।१
 येन श्रेयोऽहमायुयाम् अ. गी. ३।१
 येन श्रीव्रमिदं श्रुतम् । तदेव
 ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केनो. १।१४
 येन सम्यक्परिह्राय हेयोपादेय-
 मुज्झता । चित्तस्यान्तेऽर्पितं
 चित्तं जीवितं तेन शोभते १ अ. गी. २।४१
 येन सर्वमिदं ततम् [अ. गी. २।१७+ १।८।३६
 येन सर्वमिदं प्रकाशितम् । कोऽन्य-
 स्तस्मात्परः स्वसंवे. ४
 येन सर्वमिदं प्रोतं पृथिवी चान्त-
 रिक्षं च द्यौश्च दिशश्चावान्तर-
 विश्वं स वै सर्वमिदं जगत् महाभा. १।७।१७
 येन सर्वमिदं प्रोतं सूत्रं मणिगणा-
 इव । तत्सूत्रं धारयेद्योती
 योगवि-(ब्राह्मणोयतिः) चत्त्व-
 (दर्शनः) दक्षिणान् महो. ८
 [ना. प. ३।७९+ परम. १०
 येन सूर्यं तमसो निर्मुनीच सहचै. ४
 येन स्वात्तेनेदं एवातोऽन्यदाते रुद्र. ३।५।१
 येन स्वराः स्वरं विजानाति येन
 मात्रा मात्रा विभजते सा संहिता ३ ऐत. १।५।१
 येन किमन्त्युपयौ ह्याप्तकामा यत्र
 तत्त्वस्य परमं निधानम् मुण्ड. ३।१।५
 येनाहर् पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच
 वां तत्स्वतो ब्रह्मविद्याम् मुण्ड. १।५।१३

येनाचिरात्सर्वपापं व्यपोह्य
 परात्परं पुरुषमुपैति विद्वान् सदानं. ८
 येनात्मैवात्मना जितः म. गी. ६।६
 येनायं च लोकः परश्च लोकः
 सर्वाणि च भूतानि सन्दृब्धानि
 भवन्ति बृह. ३।७।१
 येनाभूतं खं च दिवं महीं च येना-
 दित्यस्तपति तेजसा भ्राजसा च महाना. १।३
 येनाभूतं नित्यमिदं हि सर्वं ज्ञः
 कालकालो गुणी सर्वविधः ।
 तेनेशितं कर्म विवर्तते ह श्वेता. ६।२
 येनाभूतं भूतं भवत्यमतं मतम-
 विज्ञातं विज्ञातमिति कथं नु
 अगवः स आदेशो भवतीति छांदो. ६।१।३
 येनासनं विजितं जगद्ययं तेन
 विजितं भवति शांति. १।३।१३
 येनासावधृतीभूत्वा मोक्षी भवति ।
 तस्मादविमुक्तमेव निषेवेत ।
 अविमुक्तं न विमुञ्चेत्
 [रामो. १।१+ तारसा. १।१
 येनासावधृतीभूत्वा सोऽधृत्वं
 च गच्छति नृ. पू. १।७
 येनासौ गच्छते मार्गं प्राणस्तेन हि
 गच्छति । अतः समर्थ्यसेनित्यं
 सन्मार्गगमनाय वै अ. ना. २६
 येनाहं नासुता स्यां किमहं तेन कुर्यां
 बृह. २।४।३
 येनाहुर्मनो मतम् । तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि केनो. १।५
 येनेष्टते शृणोतीदं जिघ्रति व्याक-
 रोति च । स्वाद्वस्वादु विजानाति
 तत्प्रज्ञानमुदीरितम् शु. र. ३।१
 येनेदमहं पच्यते यदिदमष्टते तस्यैव
 बोधो भवति [बृह. ५।१।१+ मैत्रा. २।८
 येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृही-
 तमभ्युतेन सर्वम् ।...तन्मे मनः
 शिवसङ्कल्पमास्तु [१ शिवसं. ४+ २ शि. सं. १
 येनेदं आच्यते ब्रह्मचक्रम् श्वेता. ६।१
 येनेदं विधं जगत्तो बभूव वै देवा
 अपि महतो जातवन्ताः...तन्मे मनः २ शिवसं. १०

येनेदं सर्वं विजानाति तं केन
 विजानीयात् [बृह. २।४।१४+ ४।५।१५
 येनेदं सर्वं सञ्चरति विचरति सर्वम् ।
 तमीशानं पुरुषं देवमीड्यं
 निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति अ. शिरः. ३।८
 येनेदं हित्वाऽऽत्मन्येव सायुज्यमुपैति मैत्रा. ४।१
 येनेन्द्रो विश्वा अजहादरातीस्तेनाहं
 ज्योतिषा ज्योतिरानशान आक्षि सहवै. ४
 येनेमा विश्वा भुवनानि तस्युः
 [चित्यु. १।१९+ तै. जा. ३।११।९
 ये नैकरूपाश्चावस्ताद्रश्मयोऽस्य
 सुदुप्रभाः । इह कर्मोपभोगाय
 तैः संसरति सोऽवज्ञः मैत्रा. ६।३०
 येनैतद्विषमिदं चेतनवत्प्रतिष्ठापितं
 येनैष भूतस्तिष्ठत्यन्तरात्मा मैत्रा. २।३
 येनैष भूतस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा महाना. ८।३
 येऽन्नं ब्रह्मोपासते मुण्ड. २।१।९
 (अथ) येऽन्यथाऽतो विदुरन्य-
 राजानस्ते क्षय्यलोका भवन्ति तैत्ति. २।२
 ये पचन्त्यात्मकारणात् छांदो. ७।२५।२
 ये पञ्च पञ्चदश शतं सहस्रमयुतं
 न्यर्तुदं च...तन्मे मनः... अ. गी. ३।३३
 ये पितृन्यजन्ति तेपितृलोकं प्राप्नुवन्ति २ शिवसं. १४
 येऽपि स्युः पापयोनयः सामर. २७
 ये पूर्वं देवा ऋषयश्च तद्विदुस्ते अ. गी. ९।३२
 तन्मया अमृता वै बभूवुः श्वेता. ५।६
 (अथ) ये प्रभवो ध्यानापादांशा
 इवैव ते भवन्ति ध्यानमुपास्व छांदो. ७।६।१
 येऽप्यन्यदेवताभक्ताः अ. गी. ९।२३
 ये प्रत्ययापन्ना भक्तास्ते तं रसमनु-
 भवन्ति ब्रजलीलायाम् सामर. ३४
 ये प्राणं ब्रह्मोपासते तैत्ति. २।३
 ये प्राप्य परमां गतिं भूयस्ते न
 निवर्तन्ते २ सङ्ख्यासो. २१
 ये प्रेमभजने निमग्नास्ते तां
 लीलाभापद्यन्त सामर. ४९
 ये बाहुमूलपरिचिह्नितशङ्खचक्राः...
 अविष्णवा भुवनमागृण्यविप्रयन्ति सुवर्ग. ११
 ये विन्द्व इवामुचरन्त्यजस्रं मैत्रा. ६।१५

ये ब्रह्मविष्णुरुद्रास्तेभ्यः सगुणेभ्यः ॐ नमस्तद्दीर्घमस्याः प्रतिष्ठापयति	अ. मा. ५
ये ब्राह्मणा अन्यविद्योपासकाः कर्मजडाः कर्मकाण्डोपासकाः कालोपासकाः कर्मधर्मदेवपित्रु- पासका एव भवन्ति ते	सामर. ७५
ये ब्राह्मणा ब्रह्मचर्यं चरन्त्यथो ख- त्वाहुर्नैदसम्मितोऽयमितिहासः	इतिहा. ८
ये ब्राह्मणा ब्रह्मवर्चसमुपासमानास्ते..	सामर. २७
ये ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णं पठन्ति ते सोमं प्राप्नुवन्ति [महाना. १२+	त्रिसुप. १, २, ३
ये भजन्ति तु मां भक्त्या	भ. गी. १२९
ये भस्मधारणं त्यक्त्वा कर्म कुर्वन्ति मानवाः। तेषां नास्ति विनिर्मोक्षः संसारजन्मक्रोदिभिः	बृ. जा. ५।१०
ये भस्मधारणं दृष्ट्वा नराः कुर्वन्ति ताडनम्। तेषां चाण्डालतो जन्म ब्रह्मभूतं विपश्चिता	बृ. जा. ५।१४
ये भूताः प्रचरन्ति दिवा नक्तं बलिमिच्छन्तो विदुदस्य प्रेष्टाः.. [महाना. १५।६+	तै.आ. १०।६७।२
ये भ्रान्ता भजनमार्गमविदुषः पण्डितमानिनस्तेषां सम्भाषणं स्पर्शनं च न कुर्यात्	सामर. २७
ये मनो हृदयं ये च देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यरश्मिः.. तन्मेमनः..	२ शिवसं. ११
ये मन्त्रा या विद्यास्तेभ्यो नम- स्ताभ्यश्चोन्नमस्तच्छक्तिरस्याः प्रतिष्ठापयति	अ. मा. ५
ये मा नयन्ति मिथु चाकशानाः येमिथुनमुत्पादयन्तेतेषामेवैष ब्रह्मलोकः	बा. मं. ६
ये मे मतमिदं नित्यं	प्रश्नो. १।१५
(अथ) ये यज्ञेन दानेन तपसा लोकाञ्जयन्ति ते धूममभि- सम्भवन्ति	भ. गी. ३।३१
ये यथा मां प्रपद्यन्ते	बृह. ६।२।१६
ये यं प्रेतं विचिकित्सा मनुष्येऽस्ती- त्येके नायमस्तीति चैके	भ. गी. ४।११
	कठो. १।२०

येयं पृथिवी यदन्तरिक्षं ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान्कामांश्छन्दतः प्रार्येयस्व मरणं माऽनुप्राप्नीः	छांदो. ७।१०।१
ये ये भावाः स्थिता लोके तान- विद्यामयान्विदुः। त्यक्त्वाविद्यो महायोगी कथं तेषु निमज्जति	कठो. १।२५
ये रसिकानन्दीमाज्ञां प्राप्तास्ते तां प्राप्नुवन्ति (लीलां)	अ. पू. ४।४
ये रसिकानन्दोपासकास्ते सर्वा- त्मभावेन भजनं कुर्वते	सामर. ४३
ये राजर्षयो ब्रह्मर्षयस्तेपि चासत्कृत्वा प्रागसन्त एव सुखमामनन्ति	सामर. २२
येऽर्धमासाश्च मासाश्च ते चातुर्मास्यानि महाना. १८।१	लक्ष्म्यु. ७
ये लोकाः सन्ततमामनन्ति शिरसा हृदयेन तामेकां लोकपूष्यां न ते दुर्गतिं यान्ति	लक्ष्म्यु. ९
(अथ) येऽल्पाः कलहिनः पिशुना उपवादिनस्तेऽथ ये प्रभवो ध्याना- पादाः शा इवैव ते भवन्ति	छांदो. ७।१।१
ये यथा मां प्रपद्यन्ते	भ. गी. ४।११
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योषाः ये वाभिरोचने दिवि ये च सूर्यस्य रश्मिषु। येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः	भ. गी. ११।३६
ये वा ललाटफलके लसदूर्ध्वपुण्ड्राः श्रीवैष्णवा मुवनमाशु पवित्रयन्ति	नीलक. २।१०
ये विदुर्यान्ति ते परम्	सुवर्ध. १३
येषुन्दावनेष्ट्यास्तेजाभिभौतिकाः सिद्धाः	भ. गी. १३।३५
ये वृन्दावनोद्भवास्तुलसीकाष्ठाङ्कित- मालाः कण्ठे धारयन्ति, ते कृतार्थतां प्राप्नुवन्ति	सामर. ५५
ये वै के च यज्ञास्तेषां सर्वेषां यज्ञ- इत्येकता	सामर. ९५
ये वै के च लोकास्तेषां सर्वेषां लोक इत्येकता	बृह. १।५।१७
ये वै के चास्मालोकात् प्रयन्ति, चन्द्रमसमेव ते सर्वे गच्छन्ति	बृह. १।५।१७
	कौ. उ. १।३

(अथ) ये शतमाजानदेवानामानन्दाः
 स एकः प्रजापतिलोक आनन्दः बृह. ४।३।३३
 (अथ) ये शतं कर्मदेवानामानन्दाः
 स एक आजानदेवानामानन्दः बृह. ४।३।३३
 (अथ) ये शतं गन्धर्वलोक आनन्दाः
 स एकः कर्मदेवानामानन्दः ये
 कर्मणा देवत्वमभिसम्पद्यन्ते बृ. उ. ४।३।३३
 (अथ) ये शतं पितॄणां जितलो-
 कानामानन्दाः स एको गन्धर्व-
 लोक आनन्दः बृह. ४।३।३३
 ये शतं प्रजापतिलोक आनन्दाः स
 एको ब्रह्मलोक आनन्दः बृह. ४।३।३३
 ये शतं मनुष्याणामानन्दाः स एकः
 पितॄणां जितलोकानामानन्दः बृह. ४।३।३३
 ये शरीराण्यकल्पयन्, ते ते देहं
 कल्पयन्तु अरुणौ. १
 ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य भ. गी. १७।१
 ये शुद्धबाधना भूयो न जन्मानर्थ-
 भागिनः। ज्ञातज्ञेयास्त उच्यन्ते.. महो. २।४०
 ये शीवा वैष्णवाः शाक्ताः...तेभ्यो
 जमानसो भगवन्तोऽनुमदन्तु... अ. मा. ५
 ये शीवाः शाक्ताः...कौला जैनाः..
 अन्यधर्मैर्दृढासक्ता भवन्ति सामर. ७५
 ये आश्रयन्ति सततं शिवधर्म...
 ते नमस्याः स्वभक्तिः शिवो. ७।१३८
 ये वर्णवर्तितस्त्वज्ञाः...जटी मुण्डी
 शिखी वाऽपि मुच्यते वराहो. १।१७
 येषामनुग्रहात्सम्भवो भवति तेषां
 सौभाग्यं रुचिरास्ते सामर. १०१
 येषामर्थे काङ्क्षितं नो भ. गी. १।३३
 येषामहोरात्रं सेवाकथायां निस्थ-
 भास्तिस्तेषां भजनानन्दो भवति सामर. २२
 येषामिव पञ्चक्षराधिकारो वर्तते तेषां
 प्रणवाधिकारः... सामर. १।६
 येषां कीर्तिः श्वेद्वर्णललाटे भस्म-
 दर्शनात्। तेषामुत्पत्तिश्चाङ्क्यः.. बृ. जा. ५।१९
 येषां कीर्तिः भवेद्भस्मधारणे। तत्प्रमाणके
 ते महापातकैर्युक्ताः.. बृ. जा. ५।१५
 येषां च त्वं बहुमतः भ. गी. २।३५

येषां तपो ब्रह्मचर्यं येषु सत्यं
 प्रतिष्ठितम् (तेषां ब्रह्म..प्राप्तिः) प्रश्नो. १।१५
 येषां त्वन्तगतं पापं भ. गी. ७।२८
 येषां नाशितमात्मनः भ. गी. ५।१६
 येषां नास्ति मुने श्रद्धा श्रौते
 भस्मनि सर्वदा। गर्भाधानादि-
 संस्कारस्तेषां नास्तीति निश्चयः बृ. जा. ५।१३
 येषां निमेषणोन्मेषौ जगतः प्रलयो-
 दयौ। तादृशाः पुरुषा यान्ति.. महो. ६।२५
 येषां निर्वाणमार्गं रुचिर्भवति ते
 सन्न्यासिनो भवन्ति सामर. १०१
 येषां मनसि निश्चयस्तेषां प्रीति-
 रूप्यते सामर. २२
 येषां लोक इमाः प्रजाः भ. गी. १०।६
 येषां वृत्तिः समा वृद्धा परिपक्वा...
 ते वै सद्ब्रह्मतां प्राप्ताः, नेतरे ते. बि. १।४५
 येषां साम्ये स्थितं मनः भ. गी. ५।१९
 येषां हृदयादूर्ध्वा नाड्युच्चरति यथा
 केशः सहस्रधा..एवमस्यैता नाम
 नाड्योऽन्तर्हृदये प्रतिष्ठिताः.. बृह. ४।२।३
 येषु प्राणाः प्रतिष्ठिताः स यदा
 प्राणेन सह संयुज्यते तदा
 पश्यति नद्यो नगराणि.. सुबालो. ३।१
 ये समुत्थाय शृण्वन्ति शिवधर्म
 दिनेदिने। न ते प्रकृतिमानुषाः शिवो. ७।१३९
 ये संवत्सराश्चपरिवत्सराश्च तेऽहर्गणाः महाना. १८।१
 ये साङ्ख्यादितत्त्वमेवास्तेभ्यो नमो.. अ. मा. ५
 (अथ) येऽस्य दक्षिणा रश्मयस्ता
 एवास्य दक्षिणा मधुनाड्यो...
 ता अयुता आपः छांदो. ३।२।१
 (अथ) येऽस्य प्रत्यङ्घ्रौ रश्मयस्ता
 एवास्य प्रतीच्यो मधुनाड्यः.. छांदो. ३।३।१
 (अथ) येऽस्योदङ्घ्रौ रश्मयस्ता
 एवास्योदीच्यो मधुनाड्यः.. छांदो. ३।४।१
 (अथ) येऽस्योर्ध्वा रश्मयस्ता
 एवास्योर्ध्वा मधुनाड्यो..ता
 अयुता आपः छांदो. ३।५।१
 ये हि पारं गता बुद्धेः संसारादन्व-
 रस्य च। तेषां तदास्पदं हकारः.. अ. पू. ३।२६

ये हि विज्ञातविज्ञेयाः...विच्छिन्नप्रत्ययः

सर्वे ते स्वतन्त्रास्तनौ स्थिताः अ. पू. ४।११

ये हि वृत्ति विहायैनां ब्रह्माख्यां पावनीं

पराम् । वृथैव ते तु जीवन्ति.. ते. वि. १।४३

ये हि संस्पर्शभा भोगाः

भ. गी. ५।२२

यैरेव जायते रागो मूर्खस्याधिकतां

गतेः । तैरेव भोगैः प्राज्ञस्य विरागः.. महो. ५।१६९

यैरेवाश्रितस्यासकृदिहा (दुपा) वर्तनं

द्वयते इत्युद्धतुर्महसि..

[मैत्रा. १।७+

मैत्रे. १।३

(अथो) येः सन्निरगच्छति सर्वा-

स्तानतिरोचते

बृह. २।१।९

यो अपोन्तरे सञ्चरन्त्यमापो न विदुः

अध्यात्मो. १

यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं

ना.पू.ता. ४।४

[+क्र. मं. १।१५४।१+

वा. सं. ५।१८

[तै.सं. १।२।१३+

अथर्व. ७।२६।१

यो अस्याध्यक्षः परमेव्योमन्

ऋ.मं. १०।१२९।७

योऽकामो निष्काम...आत्मकामो

न तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति

बृह. ४।४।६

योग आत्मा, महः पुच्छं प्रतिष्ठा

तैत्ति. २।४

योग आत्मा, चरणमस्य बन्धुर्दमः

प्रतिष्ठा विदुषो न भूमिम्

इतिहा. ११

योगक्षेम इति प्राणापानयोः...

तैत्ति. ३।१०।२

योगक्षेमं बहाम्यहम्

भ. गी. ९।२२

योगज्ञानपरो नित्यं स योगी न

प्रणश्यति

त्रि. ब्रा. २।२०

योगज्ञाने यत्पदाप्तिसाधनत्वेन

विश्रुते । तत् त्रैपदं ब्रह्मतरङ्गं

स्वभावात्प्रवशिष्यते

यो.शि. शीर्षकं

योगज्ञाने न विद्येते तस्य भावो

न विद्येतेति

त्रि. ब्रा. २।२१

योगज्ञानैकसंश्लिष्टशिवतत्त्वतयो-

स्वरूपम् । प्रतियोगिविनिर्मुक्तं

परं ब्रह्म बहाम्यहम्

त्रि. ब्रा. शीर्षकं

योगज्ञो योगनिष्ठश्च सदा

योगात्मकः शुचिः । गुरुभक्ति-

समायुक्तः पुरुषज्ञो विशेषतः

अद्वयता. ६

योगध्यानं सदा कृत्वा ज्ञानं

तन्मयतां ब्रजेत्

प्र. वि. ५९

योऽसन्निर्मलधारेण क्षुरेणानल-

वर्चसा । छिन्देन्नाडीशतं धीरः..

क्षुरिको. १८

योगप्रकाशकं योगैर्ध्यायेष्वानन्य-

भावतः

त्रि. ब्रा. २।२१

योगप्रवृत्तिं प्रथमां वदन्ति

श्वेता. ३।१३

योगभ्रष्टोऽभिजायते

भ. गी. ६।४३

योगमात्मविशुद्धये

भ. गी. ६।१२

योगमायासमावृतः

भ. गी. ७।२५

योगयज्ञः सदैकाग्र्यभक्त्या सेवा

दरेर्गुरोः । अहिंसा तु तपोयज्ञो

वाङ्मनःकायकर्मभिः

शाङ्खाय. १४

योगयज्ञास्तथाऽपरे

भ. गी. ४।२८

योगयुक्तो भवाजुन

भ. गी. ८।२५

योगयुक्तो विशुद्धात्मा

भ. गी. ५।७

योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म

भ. गी. ५।६

योगयुक्त्या तु तद्रूपं प्राप्यमानं

समन्ततः । शाक्तेनामृतवर्षेण

ह्यधिकारान्निवर्तते

बृ. जा. २।१३

योगविघ्नकराहारं वर्जयेद्योगविचमः

१ यो. त. ४६

योगशिखां महागुह्यं यो जानाति

सहामतिः । न तस्य किञ्चिद-

ज्ञातं त्रिषु लोकेषु विद्यते

यो.शि. ५।६०

योगस्तुर्विधः प्रोक्तो योगिभि-

स्तत्त्वदर्शिभिः

योगरा. २

योगश्चाष्टाङ्गसंयुतः

अनङ्ग. ३।१३

योगसङ्ग्यस्तकर्माणं

भ. गी. ४।४१

योगसिद्धिं विना देहः प्रमादाद्यदि

नश्यति । पूर्ववासनया युक्तः

शरीरं चान्यद्वाप्नुयात्

यो.शि. १।१४१

योगस्थः कुरु कर्माणि

भ. गी. २।४८

योगस्थेनैव मार्गेण ह्येकाग्र-

मानसो भवेत्

दुर्वाखो. २।६

योगहीनं कथं ज्ञानं मोक्षदं भवति

ध्रुवम् (तीहभोः) । योगो हि (ऽपि)

ज्ञानहीनस्तु न क्षमो मोक्षकर्मणि

[१ यो. त. १५।४+

यो.शि. १।१३

योगं तं विद्धि पाण्डव

भ. गी. ६।२

योगं निवेद्यमाणस्तु न दोषं

प्राप्नुयात्कचित्

योगं युञ्जन् मदाश्रयः

योगं योगेश्वरात् कृष्णात्

योगः कर्मसु कौशलम्

योगः प्रोक्तः पुरातनः

योगाबलितमानसः

योगात्परतरं पुण्यं योगात्परतरं

शिवम् । योगात्परतरं सूक्ष्मं

योगात्परतरं नहि

योगात्संसारनिवृत्तिः

योगादेव विमुच्यते

योगानन्दस्वरूपोऽहं मुख्या-

नन्दमहोदयः

योगाभ्यासमनास्तिव्यं त्यागः

कर्मफलस्य च

योगाभ्यासरतो नित्यं स्वधर्मनि-

रतश्च यः । प्राणसंयमनेनैव

ज्ञानान्मुक्तो भविष्यति

योगाभ्यासेन मे रोग उत्पन्न इति

कथ्यते । ततोऽभ्यासं त्यजेदेवं

प्रथमं विप्रमुच्यते

योगारूढस्तदोच्यते

योगारूढस्य तस्यैव

योगिष्वेयं परमं पदं चिन्मात्रं

योगिनश्चित्तशान्त्यर्थं कुर्वन्ति

प्राणरोधनम्

योगिनस्तत्त्वसम्पन्ना न जायन्ति

न शरते

योगिनं सुखमुत्तमम्

योगिनः कर्म कुर्वन्ति

योगिनः पर्युपासते

योगिनः सहजावस्था स्वयमेव प्रकाशते

योगिनः सहजावस्था स्वयमेवोप-

जायते

योगिनामपि सर्वेषां

योगिनामात्मनिष्ठानां माया

स्वात्मनि करिष्या । साक्षिरूप-

तया सावि ब्रह्मज्ञानेन बाधिता

योगो. ८

भ. गी. ७।१

भ. गी. १८।७५

भ. गी. २।५०

भ. गी. ४।३

भ. गी. ६।३७

यो. शि. १।६७

जा. द. ६।३८

यो. शि. १।५५

ते. वि. ६।६८

भवसं. ५।२०

जा. द. ६।१२

योगकु. १।५८

भ. गी. ६।४

भ. गी. ६।३

ग. शो. ता. ५।६

अ. पू. ४।४४

अमन. २।५९

भ. गी. ६।२७

भ. गी. ५।११

भ. गी. ४।२५

वराहो. २।७७

महो. ४।७८

भ. गी. ६।४७

पा. ब्र. ५०

योगिनां योगलक्ष्मीर्भवति

योगिनोऽङ्गे सुगन्धश्च जायते

बिन्दुधारणात्

योगिनो बिभ्यति ह्यस्मादभये

भयदर्शिनः

योगिनो यतचित्तस्य

योगी निमेषमात्रेण लयेन लभते

ध्रुवम् । स्पर्शनं परतत्त्वस्याप्यु-

त्थानं च पुनः पुनः

योगी नियतमानसः

योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्

योगी प्राप्य निवर्तते

योगी ब्रह्मभूयाय कल्पते

योगी भवति कश्चन

योगी मुह्यति कश्चन

योगी युञ्जीत सततं

योगी विगतकल्मषः

योगीश्वरः सर्वज्ञो मयोऽप्रमे-

योऽनाद्यन्तः

योगी संशुद्धकिल्बिषः

योगेन ऊर्ध्वमन्थिनः सूर्य

भगवन्तमुपासते

योगेन योगं संरोच्य भावं भावेन

चाञ्छसा

योगेन योगो ज्ञातव्यो योगो

योगात्प्रवर्धते । योऽप्रमत्तस्तु

योगेन स योगी रमते चिरम्

योगेन रहितं ज्ञानं न मोक्षाय

भवेद्विषे

योगेन सदानन्दस्वरूपदर्शनम्

योगेन हि वै शब्दब्रह्म विजिज्ञासत्त्व

योगेनाभ्यभिचारिण्या

योगेश्वर ततो मे त्वं

योगैश्वर्यं च कैवल्यं जायते

यत्प्रसादतः । तद्वैष्णवं

योगतत्त्वं रामचन्द्रपदं भजे

योगो नष्टः परन्तप

योगोऽनिर्विण्णजैतसा

ना. पू. ता. २।१

१ यो. त. ६।२

अद्वैता. ३९

भ. गी. ६।२९

अमन. १।३४

भ. गी. ६।१५

भ. गी. ८।२८

भ. गी. ८।२५

ना. प. ४।३२

भ. गी. ६।२

भ. गी. ८।२७

भ. गी. ६।१०

भ. गी. ६।२८

मैत्रा. ७।१

भ. गी. ६।४५

सूर्यता. १।७

सौ. ल. १६

सौ. ल. ५

यो. शि. १।५१

निर्वाणो. ३

गान्धर्वो. ५

भ. गी. १८।३३

भ. गी. ११।४

१ यो. त. शीर्षक

भ. गी. ४।२

भ. गी. ६।२९

योगोऽपि ज्ञानहीनस्तु न क्षमो

मोक्षकर्मणि

यो.शि. १।१३

यो गोपीचन्दनाभावे तुलसीमूल-

सृत्तिकाम् । मुमुक्षुर्वारयेन्नित्य-

मपरोक्षात्मसिद्धये

वासुदे. १५

योगो भवति दुःखहा

भ. गी. ६।१७

योगो मोक्षे च सर्वासां वेदनाना-

मवर्तनम् । मोक्षे निवृत्ति-

निर्दोषा योगो मोक्षप्रवर्तकः

आयुर्वे. ९

योगो हि प्रभवाप्ययौ

कठो. ६।११

योगो हि बहुधा ब्रह्मन् भिद्यते

व्यवहारतः

१ यो. त. १९

योगो ह्यष्टाङ्गसंयुतः

वराहो. ५।१०

योऽग्निमन्तरो यमयत्येष त आत्मा-

ऽन्तर्याम्यमृतः

बृह. ३।७।५

योऽमो तिष्ठन्मेरन्तरो यमग्निर्न वेद

यस्याग्निः शरीरम्.. एष त आत्मा..

बृह. ३।७।५

योऽमो रुद्रो योऽऽन्तर्य ओषधी-

र्वारुध आविवेश

अ. शिरः. ३।१३

योऽप्येऽभ्याह्न्याज्जीवन् क्षत्रेत्स एष

जीवेनात्मनाऽनुप्रभूतः

छांदो. ६।११।१

यो घोषः स आत्मा

१ ऐत. २।४।१

यो जङ्गमानां सकलं विभर्षि सर्व

वियद्विचरते शक्ष्यन्, तन्नौकूले

बान्तिकेऽजस्रं स्वाहा

पारमा. ८।९

(इति)यो जपति स भूतिमान्भवति

ग. पू. ता. १।१०

यो जागर्ति सुषुप्तिस्थो यस्य जाम्बज

विद्यते । यस्य निर्वासनो बोधः

स जीवनमुक्त उच्यते

वराहो. ४।२३

यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति

त्रि. ता. २।२१

[+नृ. पू. १।३-७+२।३+४।१

यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति,

परं ब्रह्मैव भवति

ग. पू. ता. २।१

यो जित्वा पवनं मोहाद्योगमिच्छति

योगिनाम् । सोऽपकं कुम्भमा-

दाय सागरं तर्तुमिच्छति

यो. शि. १।६३

यो जिह्वायां, यो रसयितव्ये, यो

वक्त्रे यो नाड्यां...सम्भरति,

सोऽयमारमा

सुबाहो. ५।४

योऽज्ञानाद्वा शिवशब्दं गृणान्

पापैर्बोरैर्मुच्यते

सि. शि. ८

योऽणिष्ठस्तन्मनः (अन्नस्य)

छांदो. ६।५।१

योऽणिष्ठः स प्राणः (अपां)

छांदो. ६।५।२

योऽणिष्ठः सा वाक् (तेजसः)

छांदो. ६।५।३

योऽतिवाचं नयति स वै सर्व

द्विजः खलु मानसं वेदेति

इतिहा. १०

योऽतीत्य स्वाश्रमान् वर्णानात्मन्येव

स्थितः पुमान् । सोतिवर्णाश्रमी

प्रोक्तः सर्ववेदार्थवेदिभिः

ना. प. ६।१९

(अथ) योऽसृष्टा गुल्मीभृता

सम्पूर्णा सः सृष्टा संयता

वाक् सा पुत्र्यपशन्या

संहितो. १।४

योऽत्यमानानवेक्षेऽहं

भ. गी. १।२३

यो दक्षयज्ञे सुरसङ्गान् विजित्य

विष्णुं बबन्धोरगपाशेन वीरः ।

तस्मै रुद्राय नमो अस्तु

शरभो. १२

यो वृदाति महाविद्यां हंसाख्यां

पारमेश्वरीम् । तस्य दास्यं

सदा कुर्यात्प्रज्ञया परया सह

प्र. वि. ३७

यो दिक्षु तिष्ठन् दिग्भ्योऽन्तरो यं

दिशो न विदुः

बृह. ३।७।१०

यो दिवि तिष्ठन् दिवोऽन्तरो यं

द्यौर्न वेद.. एष त आत्मा..

बृह. ३।७।८

यो दिशोऽन्तरो यमयत्येष त

आत्माऽन्तर्याम्यमृतः

बृह. ३।७।१०

यो दूर्वाकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो

भवति

गणप. १३

यो देवानामधिपो यस्मिँल्लोका

अधिभ्रिताः । य ईशेऽस्य

द्विपदश्चतुष्पदः कदम्बे देवाय

हविषा विधेम

श्वेताश्व. ४।१३

यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विधाविधो

रुद्रो महर्षिः । हिरण्यगर्भ

पश्यति जायमानं स नो देवः

शुभया स्मृत्या संयुक्तु

महाना. ८।१३

[तै. आ. १०।१०।३

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विधा-

धिपो रुद्रो महर्षिः । हिरण्य-

गर्भं जनयामास पूर्वं स नो
 बुद्ध्या शुभया संयुक्तु [श्वेताश्व. ३।४+४।१२
 यो देवेभ्य आतपति यो देवानां
 पुरोहितः । पूर्वो यो देवेभ्यो
 ज्ञातः । नमो ऋचाय ब्राह्मणे चित्त्यु. १३।२
 [वा.सं.३।१२०+ तै.आ.३।१२।२
 यो देवोऽसौ योऽप्सु यो विश्वं भुवन-
 माविवेश । य ओषधीषु यो
 वनस्पतिषु तस्मै देवाय नमोनमः श्वेता. ३।१७
 यो ओषश्चतुरश्चतुर्थश्चतुरः पदार्थान्सर्व
 लोकस्य सन्दधानस्ते सन्ते
 सत्त्वमादधानाय स्वाहा पारमा. ३।९
 योऽकामानवस्थितान् म. गी. १।२२
 योऽधीते नित्यं सर्वान्कामानवाप्नोति ना. उ.ता. ३।१
 योऽधीते स सर्वं तरति ग.शो. ५।१
 यो धूर्धुरं धूर्धुरं धूर्धुराणां सुधूर्धुरसि
 धूर्धुराणां धूरसि धर्वङ्ग मे स्वाहा पारमा. ६।९
 यो ज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्ध्यानस्य
 गतं तत्रास्ययथाकामचारोभवति छांदो. ७।६।२
 यो ज्ञायति रसति भजति सोऽमृतो
 भवति गो.पू. १।३
 यो न इत्थमसक्रेऽत्ययमास्येन्तरति
 सोऽयास्य आङ्गिरसोऽङ्गानां
 हि रसाः बृह. १।३।८
 यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति म. गी. ५।२३
 योऽनन्तस्त्वत्तारम्बु ब्रुको. १९
 यो नन्दः परमानन्दो यशोदा
 मुक्तिगोहिनी कृष्णो. ३
 यो न वेद न हृतं हरन्तम् वा. मं. ५
 यो नस्तद्वेद तद्वेद नो न वेदेति वेदश्च केनो. २।२
 यो न स्वरूपज्ञः सज्येष्टोऽपि कनिष्ठो
 ब्रह्मात्मा ननुत्तरणं न कुर्यात् ना. प. ५।८
 यो न हृष्यति न द्वेष्टि म.गी. १२।१७
 यो नः सपत्नो यो रणो मर्तो भिदा
 सति देवाः सहवै. ८
 यो नाहर्षा यः प्राणे यो विज्ञाने य
 ज्ञानन्दे स चरति सोऽयमात्मा सुबालो. ५।१
 यो नाम ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो
 नाम्नो मृत्यः छांदो. ७।१।५

यो नासायां, यो प्रातव्ये, यः
 पृथिव्यां यो नाड्यां...स चरति सुबालो. ५।३
 यो नित्यमधीते वाचमसिमोमादित्य-
 ब्रह्मविष्णुरुद्रेः पूतो भवति दत्तात्रे. ३।१
 (अथ) योनिद्वारं सम्प्राप्तो यन्न-
 णापीड्यमानो महता दुःखेन
 जातमात्रस्तु वैष्णवेन वायुना
 संस्पृष्टस्तदानस्मरति जन्ममरणानि गर्भो. १०
 योनिमध्ये महाक्षेत्रे जपाबन्धूक-
 सन्निभम् । रजो वसति जन्तूनां
 देवीतत्त्वं समावृतम् यो.शि. १।१३६
 योनिमध्ये स्थितं लिङ्गं पश्चिमाभि-
 मुखं तथा । मस्तके मणिवज्रिजं
 यो जानाति स योगवित् । तप्त-
 चामीकराकारं तद्विलेखेन विस्फुरत् श्या. बि. ४५
 योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय
 देहिनः । स्थाणुमन्येऽनुसंयति
 यथाकर्म यथाश्रुतम् कठो. ५।७
 (तस्याः) योनिरर्चिर्यदन्तः करोति
 तेऽङ्गारा अभिनन्दा विस्फुलिङ्गाः
 [छां. उ. ५।८।१+ बृह. ६।२।१३
 योनिस्थानंद्वयोर्मध्ये कामरूपं निगद्यते यो. चू. ७
 योनि वामेन सम्पीड्य मेढ्रादुपरि
 दक्षिणम् । भ्रूमध्ये च मनोलक्ष्यं
 सिद्धासनमिदं भवेत् शांदि. १।३।७
 यो नु कथं सयुग्वारैक इति छांदो. ४।१।३.५
 योऽनुक्रमेण सङ्गस्यति स सङ्गस्तो
 भवति [१सं. सो. १।१+ कठश्रु. १
 यो नूनं वासनात्यागी ध्येयो ब्रह्मन्
 प्रकीर्तितः महो. ६।४३
 योऽनृतमभिवदति तस्मान्नाहार्हा-
 मनृतं वक्तुम् प्रभो. ६।१
 यो नृसिंहः समाख्यातो मद्भारण-
 कर्मणि रास. पू. ३।५६
 योनेरिव प्रच्युतो गर्भः स वान्ययो
 अनुष्व सहवै. ९
 यो नो भगवन्नभयं वेदससे बृह. ४।२।४
 योऽन्तर्काळे सर्वलोकान् सञ्जहार शरयो. ४

योऽन्तरिक्षमन्तरो यमयत्येष त

आत्माऽन्तर्याम्यमृतः

बृह. ३।७।६

योऽन्तरिक्षे तिष्ठन्नन्तरिक्षादन्तरो

यमन्तरिक्षं न वेद

बृह. ३।७।६

योऽन्तश्शीतलया बुद्ध्या रागद्वेषवि-

मुक्त्या । साक्षिवत्पश्यतीदं हि

जीवितं तस्य शोभते

१सं.सो. २।४०

योऽन्तस्तत्तारम्

अ. शिरः. ३।४

योऽन्तस्सुखोऽन्तरारामः

भ. गी. ५।२४

योऽन्नं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो-

ऽज्ञाद्रूप इति

छांदो. ७।१।२

(अथ) योऽन्यां देवतामुपास्ते-

ऽन्योऽसावन्योऽस्मीति

बृह. १।४।१०

योऽपानप्राणयोरैक्यं स्वरजोरेत-

सस्तथा । ... एवं तु द्वन्द्व-

जालस्य संयोगो योग उच्यते

यो.शि. १।६८

योऽपानेनापानिति स त आत्मा

सर्वान्तरः

बृह. ३।४।१

योऽपोन्तरो यमयत्येष त आत्माऽन्त-

र्याम्यमृतः

बृह. ३।४।७

योऽपो ब्रह्मेत्युपास्त आप्नोति सर्वा-

न्कामाः स्तृप्तिमान्भवति

छांदो. ७।१०।२

योऽप्सु तिष्ठन्नप्सोऽन्तरो यमापो न

विदुर्यस्यापः शरीरं योऽपोऽन्तरो

यमयत्येष त आत्मान्तर्याम्यमृतः

बृह. ३।७।४

यो बलं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्बलस्य

गतं तत्रास्ययथाकामचारोभवति

छांदो. ७।८।२

यो बुद्धेः परतस्तु सः

भ. गी. ३।४२

यो बुद्धौ यो बोद्धव्ये यो ब्रह्मणि

यो नाड्यां..सञ्चरतिसोऽयमात्मा

सुबालो. ५।७

यो बुद्धयन्तरस्थो व्यायीह मनः-

शान्तिपदमनुसरत्यात्मन्येव धत्ते

मैत्रा. ६।३४

यो ब्रह्मचार्यैककिरेवमावास्यायां

शान्तिमभि प्रणीयोपसमाचाय

द्विराव्यस्योपचातं जुहोति

सहवे. २२

यो ब्रह्मशब्दः प्रणवः प्रधानः शब्दः

....चराय स्वाहा

पारमा. १।६

यो ब्रह्माणं विदधाति तस्मै

शरभो. ३

यो ब्रह्माणं विदधाति पूवै

[श्वेताश्व. ६।१८+

गो. पू. ४।६

यो ब्रह्मा तत्साम्नश्चतुर्थपादं जानीयात्

ग. पू. २।१

यो ब्रह्मा ब्रह्मविदामात्मास्यादात्म-

चक्षुषां भूतिर्भूतिमतां सुकृतै

कृताय स्वाहा

पारमा. ३।६

यो ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्बलस्य गतं

तत्रास्य यथाकामचारो भवति

छांदो. ७।८।२

यो ब्राह्म(णोऽ)णःपापकृन्मन्त्रकृच्च

स जीवति । ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृच्छ-

श्चद्रह्मलोके महीयते

इतिहा. १३

यो ब्राह्मणो ब्रह्मविद्ब्रह्मविदां मनीषी

यो भगवान्महेश्वरः स भगवान्

बटुकेश्वरः

बटुको. १९

यो भवेत्पूर्वसङ्ग्याक्षी तुल्यो वै

धर्मतो यदि । तस्मै प्रणामः

कर्तव्यो नेतराय कदाचन

याज्ञव. ४

यो भाण्डीरवटः स एव देवेन्द्रासीत्

यो मुञ्जे स्तेन एव सः

सामर. ९०

यो भूतेभिर्व्यपश्यति (मा.पा.)

यो मत्स्यकूर्मादिवराहसिंहान् विष्णुं

क्रमन्तं वामनमादिविष्णुम् ।

विविक्तवं पीडयमानं सुरेशं भस्मी-

चकार मन्मथं यमं च । तस्मै

रुद्राय नमो अस्तु

शरभो. १४

यो मज्जक्तः समेप्रियः [भगी. १२।१४

यो मध्यमस्तन्माः सं, योऽणिष्ठस्त-

न्मनः (अज्ञस्य)

+१२।१६

यो मध्यमस्तल्लोहितं, योऽणिष्ठः स

प्राणः (अपां)

छांदो. ६।५।१

यो मध्यमः स मज्जा योऽणिष्ठः सा

वाक् (तेजसः)

छांदो. ६।५।३

यो मध्येऽभ्याहन्याज्जीवन्सवेत्

यो मनसि तिष्ठन्नमनसोऽन्तरो यं

छांदो. ६।११।१

मनो न वेद, .. एष त आत्मा..

यो मनसि भोगस्तं देवेभ्य आगायत्

यो मनसि यो मन्तव्ये यन्नन्दे यो

नाड्यां..सञ्चरति सोऽयमात्मा

बृह. ३।७।२६

बृह. ३।१।६

सुबालो. ५।६

यो मनस्सुस्थिरीभावः सैवावस्था
मनोन्मनी म. र. १०।११

यो मनो ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्मनसो
गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति छांदो. ७।२।२

यो मम ब्रह्मोपनिषदं मम गीतां
मन्त्रामसहस्रं मद्भिश्चरुपं... नित्यं
स्तौति तत्सदृशो भवेत् रामर. १।९

यो मां ददाति स इदेवमा इवा
[+ तैत्ति. ३।१०।६ नृ. पू. २।१४

यो मानसं वेद स वेद ब्रह्म इतिहा. ९

यो मामजमनादि च भ. गी. १०।३

यो मामेवमसम्पूढः भ. गी. १५।१९

यो मां वेद निहितं गुहाचित् स
इदित्याबोभवीदाशयस्यै वा. मं. १८

यो मां द्वेष्टि जातवेदो यं चाहं द्वेष्टि
येच माम् । सर्वास्तानमे सन्दह सहवै. ८

यो मां द्वेष्टि तं जहि चिन्त्यु. १४।३

यो मां नित्यं स्तौति समत्सदृशो भवेत् रामर. १।९

यो मां वेद स सर्वान्देवान् वेद अ. शिरः. १।१

यो मां पश्यति सर्वत्र भ. गी. ६।३०

यो मां स्मरति नित्यशः भ. गी. ८।१४

यो मुद्रां वेत्ति खेचरीम्... (पीडयते
न च रोगेण) यो. चू. ९३

यो मूलेऽभ्याहन्याज्जीवन् सवेत् छांदो. ६।११।१

यो मे भक्त्या प्रयच्छति भ. गी. ९।२६

यो मोक्षकसहस्रेण यजति स
वाञ्छितफलमवाप्नोति गणप. १३

यो मोहयन् भूतानां सर्गादिरक्षणाय
यः सङ्कोचः सङ्कोचनाय स्वाहा पारमा. ३।४

यो यच्छ्रद्धः स एव सः भ. गी. १७।३

यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्व-
ह्वः, तमाहुतमशीमहि इतिहा. २०

यो यज्ञस्योत्थवनं पश्येत् ३ ऐत. २।३।१

(अथ) यो यत्पूर्वी सन्ध्यामुपास्ते
तद्वायव्याः शिरः सन्ध्यो. २३

यो यदिच्छति तस्य तत् कठो. २।१६

(अथ वाव सः) योऽयमन्तः-
पुरुष आकाशः छां. ३।१२।८, ९

योऽयमन्तःपुरुषः, येनेदमजं पच्यते मैत्रा. २।६

योऽयमन्तमयः सोऽयं पूर्णः प्राणमयेन तु कठरु. २०

योऽयमन्तमयो ह्यात्मा भाति
सर्वशरीरिणः । ततः प्राणमयो
ह्यात्मा विभिन्नश्चान्तरः स्थितः कठरु. २०

यो यमर्थं प्रार्थयते तदर्थं चेहते
क्रमात् । अवश्यं स तमाप्नोति
न चेदर्थान्निवर्तते भवसं. १।४२

योऽयमवधूतमार्गस्थो लोके दुर्ल-
भतरो न तु बाहुल्यो यद्येको
भवति स एव नित्यपूतः तुरीया. २

(अथ) योऽयमवाचं सङ्क्रामत्येष
वाव सोऽपानः मैत्रा. २।७

योऽयमुक्तः स पुरुषो नामरूप-
ज्ञानागोचरं संसारिणमतिदुर्ज्ञेयं
विषयं विहाय... दृष्टमात्रेण
मोक्षदं वेषमाददे मुद्रलो. २।२

(अथ) योऽयमूर्ध्वमुत्क्रामतीत्येष
वाव स प्राणः मैत्रा. २।७

योऽयमेवंविदपुरुषस्तस्य वित्तमेव
पञ्चदश कला आत्मैवावस्य
षोडशी कला बृह. १।५।१५

यो यस्यानुषक्त इत्येवं ह्याह मैत्रा. ४।६

योऽयं दक्षिणेऽक्षे पुरुषस्तस्य
भूरिति शिर एकः शिर एक-
मेतदक्षरम् बृह. ५।५।४

योऽयं दक्षिणेऽक्षे पुरुषस्तस्य द्वेष रसः बृह. २।३।५

योऽयं नकारः सोऽयमकारः स
सद्योजातो भूर्कृग्वेदः सम्पुटमुच्यते सि. शि. २०

योऽयं परमहंसमार्गो लोके दुर्लभतरः,
न तु बाहुल्यो यद्येको भवति स
एव नित्यकृत्स्थः स एव वेद-
पुरुष इति विदुषो मन्यन्ते प. हं. २

(अथ) योऽयं पीताशितमुद्रिरिति
निगिरति चैष वाव स उदानः मैत्रा. २।७

योऽयं बहिर्भा पुरुषादाकाशः
योऽयं भगवोऽप्सु परिरुयायते,
यश्चायमादशं कतम एषः छांदो. ८।७।४

योऽयं मकारः सोऽयमुकारः स
वामदेव आपो यजुर्वेदो वनत्रमुच्यते सि. शि. २०

योऽयं मध्यमः प्राणस्तानि ज्ञातुं दधिरे बृह. १।५।२१
 योऽयं यकारस्तदिदं समस्तमोमिति
 निर्विशेषप्रणवः स सर्वोत्तम ईशान
 आकाश आगमो लिङ्गमुच्यते सि. शि. २०
 योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः भ. गी. ६।३३
 योऽयं वकारः सोऽयं नादः स तत्पु-
 रुषः स तेजोऽयं वेदोऽयं चोमुच्यते सि. शि. २०
 योऽयं विज्ञानघन उक्तामन प्राणं
 दहत्यपानं व्यानमुदानं समानं
 ...मृत्युर्वै परे देह एकीभवतीति
 परस्तान्न सन्नासन्न सदसदित्येत-
 निर्वाणम् सुबालो. १५।२
 योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु य एषो-
 ऽन्तर्हृदय आकाशस्तस्मिञ्छेते बृह. ४।४।२२
 योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु ह्यचन्त-
 व्योतिः पुरुषः स समानः बृह. ४।३।७
 योऽयं शिकारः सोऽयं मकारः स
 चोरः स वायुः सामवेदो गुण
 उच्यते सि. शि. २०
 योऽयं शुद्धः पूतः शून्यः शान्तादि-
 लक्षणोक्तः स्वकैर्लिङ्गैरुपगृह्यः मैत्रा. ६।३१
 योऽयं सितासितैः कर्मफलैरभिभूय-
 मानः सदसद्योनिमापद्यते (भूतात्मा) मैत्रा. ३।२
 योऽयं स्थविष्ठमन्नघातुमपाने
 स्थापयत्यणिष्ठं चाङ्गेऽङ्गे समं
 नयत्येष वाव स समानः मैत्रा. २।७
 यो याजयति प्रति वा गृह्णाति
 यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको येनेदं
 सर्वं विचरति सर्वम् । तमीशानं
 पुरुषं देवमीड्यं निचाय्येमां
 शान्तिमत्यन्तमेति भ. शिरः. ३।८
 यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको
 यस्मिन्निदं स च विद्येति सर्वम् ।
 तमीशानं वरदं देवमीड्यं निचा-
 य्येनां शान्तिमत्यन्तमेति [येताः ४।११+५।१
 यो यो यां यां तनुं भक्तः भ. गी. ७।२१
 यो यो ह्येत्येतः प्रेति न तमिह
 वर्तनाय लभते छां. ६।३।१

यो रहस्योपनिषदमधीते पुर्वतुमहात्
 सर्वपापविनिर्मुक्तः साक्षात्कैवल्य-
 मश्नुते शु. र. ३३
 यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः..
 सरस्वति तमिह धातेवऽकः बृह. ६।४।२७
 [क्र.मं१।१६४।४९+वा.सं.३८।५+ वै.वा.४।८।१
 यो रामं संस्मरेन्नित्यं भक्त्या मनु-
 परायणः । तस्याहमिष्टसंसिद्धयै
 दीक्षितोऽस्मि मुनीश्वराः रामर. ३।१३
 यो रुद्रः स ईशानो य ईशानः स
 भगवान्महेश्वरः [भ.शिरः.३।४+ बटुको. १९
 यो रुद्रः स स्वयं ब्रह्मा यो ब्रह्मा
 स हुताशनः बृह. ६
 यो रुद्रो अमौ यो अप्सु य ओषधीषु
 योरुद्रो विश्वा भुवनाविवेशैवमेव.. भ.समजा. ३।५
 यो रुद्रो अमौ यो अप्सु य ओषधीषु
 यो रुद्रो विश्वा भुवनोऽऽविवेश ।
 तस्मै रुद्राय नमो अस्तु वनपु. ३६
 [२ शिवसं. ३५+
 यो रुद्रोऽमौ यो रुद्रोऽस्वन्तयौ रुद्र
 ओषधीर्वीरुध आविवेश । यो रुद्र
 इमा विश्वा भुवनानि चकूपे तस्मै
 रुद्राय नमो नमः भ.शिरः. ३।३३
 यो रुद्रोऽप्सु यो रुद्र ओषधीषु यो
 रुद्रो वनस्पतिषु...तस्मै.. भ. शि. ३।३५
 यो रेतसि तिष्ठन् रेतसोऽन्तरो य
 रेतो न वेद.. एष त आत्मा.. बृह. ३।५।२३
 यो रेतः सिञ्चति तद्रूप एव भवति
 योऽर्चयेत्प्रतिमां मां च स मे
 प्रियतरो मुनि गोपालो. २।६
 यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति
 यो लीलैर्यजति त्रिपुरं ददाह विष्णुं
 कविं सोमसूर्याग्निनेत्रा । सर्वं
 देवाः पशुतामवापुः स्वयं तस्मात्
 पशुपतिर्वभूव गरुडो. ११
 यो लोकत्रयमाविश्य
 योऽवकाशः पूर्वरूपोत्तररूपे अन्तरेण
 सा संहितेति भ.गी. १।५।२
 योऽवतिष्ठति नेङ्गते भ. गी. १।५।२

यो वंशीवदोऽयं साक्षाच्छिवोऽयम् सामर. ५०
 यो वः कामयते तं वः पृच्छामि
 सर्वान्वा वः पृच्छामि बृह. ३।९।२७
 यो वः शिवंतमो रसस्तस्य भाजयते
 नः । उशतीरिव मातरः महाना. ५।१३
 [क्र.मं. १०।९।२+प्रवर्या. १५+ वा. सं. ३६।१५
 यो वा आयुः परमात्मा न मीढुषः..
 परम्पराय स्वाहा पारमा. ४।३
 यो वा इदं कश्चिद्भूयाद्वेदेति यथा
 वेत्थ तथा ब्रूहीति बृह. ३।७।१
 यो वा यतदक्षरं गार्ग्यविदित्वा-
 ऽस्माल्लोकात्प्रेति स कृपणः बृह. ३।८।१०
 यो वा यतदक्षरं गार्ग्यविदित्वा-
 ऽस्मिँल्लोकेजुहोति यजते तप-
 न्तव्यते बहूनि वर्षसहस्राण्य-
 न्तवदेवास्य तद्भवति बृह. ३।८।१०
 यो वा एवं नारसिंहं चक्रमधीते
 स अर्धेषु वेदेष्वधीतो भवति षट्च. ८
 यो वा एतामुपनिषदमेवंवेद (भा.पा.) केनो. ४।९
 यो वा एतामेवं वेद, अपहत्य पाप्मान-
 यन्तः स्वर्गलोकेऽव्ययेप्रतितिष्ठति केनो. ४।९
 यो वा एतां सावित्रीमेवं वेद स
 पुनर्वसुं जयति सावित्र्यु. १०
 यो वा एवं क्रमेण सञ्जयसति, यो
 वा एवं पश्यति, किमस्य यज्ञो-
 पवीतं, काऽस्य शिखा, कथं
 वास्योपस्पर्शनमिति १ सं. सो. १।३
 यो वा एवं क्रमेण सञ्जयसति, यो
 वोत्तिष्ठति, किमस्य यज्ञोपवीतं,
 का वाऽस्य शिखा, कथं वास्यो-
 पस्पर्शनमिति कठशु. ८
 यो वा गविष्ठः परमः प्रधानः पदं
 वा यस्य सत्त्वमासीत्...तस्मै
 सुकृत्य विष्णवे स्वाहा पारमा. २।१
 यो वाचं परिवेष्टी वेद परिवेष्टी-
 मान्भवति को. त. २।१
 यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्वाचो गतं
 तत्रास्य यथाकामचारो भवति छां. ७।१२

यो वाचि तिष्ठन् वाचोऽन्तरो यं
 वाङ्म वेद..एष त आत्मा.. बृह. ३।७।१७
 यो वाचि भोगस्तं देवभ्य आगायत् बृह. ३।३।२
 यो वाचि यो वक्तव्ये योऽग्नौ यो
 नाड्यां...सञ्चरति सोऽयमात्मा सुबालो. ५।१०
 यो वा त्रिमूर्तिः परमः परश्च त्रिगुणं
 जुषाणः सकलं विधत्ते ।...त्रिधा
 त्रिरूपं सकलं धराय स्वाहा पारमा. १।७
 यो वा दशात्मा उपरिस्पृशन्वा
 देवानां जेनातिषामुत्तरः जेनाति-
 ष्योतिषे स्वाहा पारमा. ३।५
 यो वा दशानां प्रसूताः समस्तास्तां तां
 दधानाः समयात्सुबीजाः शब्दादि-
 रीत्यै स्वबलं बलाय स्वाहा पारमा. ८।१०
 यो वा नृसिंहो विजयं विभर्षि
 साराजिमन्तं रयिदं कवीनां...
 तस्मै सुयन्त्रे सुश्रेवष्ये स्वाहा पारमा. ७।२
 यो वा परं ज्योतिः परं सन्दधानः
 परमात्मा पुरुषं सञ्जनयिष्यसे
 स्वाहा पारमा. ३।८
 या वाप्यहिंसीज्जरया जरन्तं...
 तस्मै नृसिंहाय सुरेशपित्रे स्वाहा पारमा. ६।१०
 यो वामपादार्चितविष्णुनेत्रस्तस्मै
 ददौ चक्रमतीव हृष्टः । तस्मै
 रुद्राय नमो अस्तु शरभो. ११
 यो वामपादेन जघान कालं घोरं
 पपेऽथो हाहाहलं बृहन्तम् ।
 तस्मै रुद्राय नमो अस्तु शरभो. १०
 यो वा वायुर्द्विगुणोऽन्तरात्मा सर्व-
 धामन्तश्चरतीह विष्णोः । स त्वं
 देवान्मनुष्यान्मृतान्परि सञ्जी-
 वसे स्वाहा पारमा. २।२
 यो वायौ तिष्ठन्वायोरन्तरो यं वायुर्न
 वेद..एष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।७
 यो वासुदेवो भगवान् क्षेत्रज्ञो निर्गु-
 णात्मकः । ज्ञेयः स एव राजेन्द्र
 जीवः सङ्कर्षणः प्रभुः ना. महो. २९
 यो विज्ञानमन्तरो यमयत्येष त
 आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।२३

(अ) यो विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्ते
विज्ञानवतो वै स लोकाञ्ज्ञान-
वतोऽभिषिद्धयति

छांदो. ७।७।२

यो विज्ञाने तिष्ठन्विज्ञानादन्तरो यं
विज्ञानं न वेद.. एष त आत्मा..

बृह. ३।७।२२

यो विज्ञानं ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो
यतिर्वा स महापातकोपपातकेभ्यः
पूतो भवति

जाबाल्यु. ९

योऽविमुक्तं पश्यति स जन्मान्त-
रितान्दोषान्वारयति

रामो. ता. ४।९

यो विद्वद्ब्रह्माश्रमान्वर्णानात्मन्येव
स्थितः सदा । अतिवर्णाश्रमी

योगी अवधूतः स कथ्यते

१ अवधू. २

यो विश्वर्षीन् ध्यायन्नकुर्वन्निश्वं
ह्रीषद्विष्णवे याः प्रभविष्णवे ता
अभितम्भरित्रे स्वाहा

पारमा. ९।४

यो विस्फुलिङ्गेन ललाटजेन सर्वं
जगद्रूपमात्सङ्करोति । पुनश्च
सृष्ट्वा पुनरप्यरक्षदेवं स्वतन्त्रं
प्रकटीकरोति, तस्मै रुद्राय
नमो अस्तु

शरभो. ९

यो वेद गहनं गुह्यं पावनं च तथो-
दितम् । अभीषोमपुटं कृत्वा
न स भूयोऽभिजायते

बृ. जा. २।१६

यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्
[तैत्ति. २।१।१+]

ना.उ.ता. १।५

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च
प्रतिष्ठितः । तस्य प्रकृतिलीनस्य
सः परः स महेश्वरः

महाना. ८।१७

[शु. र. ३।१८+]

ना.उ.ता. १।२

(अथ) यो वेदेदमभिन्याहाराणीति
स आत्मा, अभिन्याहाराय वाक्

छांदो. ८।१२।४

(अथ) यो वेदेदं जिघ्राणीति स
आत्मा, गन्वाय घ्राणम्

छांदो. ८।१२।४

(अथ) यो वेदेदं मन्वानीति स
आत्मा, मनोऽस्य देवं चक्षुः

छांदो. ८।१२।५

(अथ) यो वेदेदं शृण्वानीति
स आत्मा, श्रवणाय श्रोत्रम्

छांदो. ८।१२।४

यो वेदो वेदानामाधारः वेदान्तरात्मा
सरसो रससङ्ख्यातो रसं

पारमा. ५।७

यो वै गान्धर्वविद्यामुपास्ते, सोऽग्नि-
पूतो भवति

गान्धर्वो. १२

यो वै तत्काप्य सूत्रं विद्यात्तं चान्त-
र्यामिणमिति स ब्रह्मवित्स लोक-
वित्स वेदवित्स सर्वविदिति

बृह. ३।७।१

यो वै तमनु भार्यान् बुभूषति स
हैवालं भार्येभ्यो भवति

बृह. १।३।१८

यो वै तं पुरुषं विद्यात् सर्वस्यात्मनः
परायणं स वै वेदिता स्यात् [बृह. ३।९।१०-१७]

यो वैतामक्षितिं वेद सोऽज्ञमस्ति
प्रतीकेन स देवानपि यच्छति

बृह. १।५।१

यो वै तामक्षितिं वेदेति, पुरुषो वा
अक्षितिः

बृह. १।५।२

यो वै तां ब्रह्मणो वेदअमृतेनावृतां
पुरीम् (रं) तस्मै ब्रह्म च ब्रह्मा च
आयुः कीर्ति (ब्राह्माश्च चक्षुः
प्राणं) प्रजाददुः

अरुणो. ३

[अथर्व. १०।२।२९+]

तै. वा. १।२।७।३

यो वैतां वाचं वेद यस्या एष विकारः
स सम्प्रतिवित् । अकारो वै
सर्वा वाक्

१ ऐत. ३।६।७

यो वै देवं महादेवं प्रणवं पुरुषोत्तमम् ।
यः सर्वे सर्ववेदैश्च तन्मे मनः..

२ शिवसं. २०

(अथ) यो वै नारायणः स भग-
वान्परब्रह्मण आनन्दो भवति

ना.पू. वा. १।१

यो वै प्राणः सा प्रज्ञा, या वा प्रज्ञा
स प्राणः

को. त. ३।३.४

या वै बटुकः स भगवान्यश्च काल-
स्तस्मै वै नमो नमः (एवं सर्वत्र)

बटुको. १०

यो वै बटुकः स भगवान्यश्च कृष्णः..

बटुको. १५

यो वै बटुकः स भगवान्यश्च मेही..

बटुको. ६

यो वै बटुकः स भगवान्यश्च तेजः..

बटुको. १०

यो वै बटुकः स भगवान्यश्च दम्भः..

बटुको. १६

यो वै बटुकः स भगवान्यश्च द्यौः..

बटुको. ९

यो वै बटुकः स भगवान्यश्च ब्रह्मा..

बटुको. २

यो वै बटुकः स भगवान्यश्च शुभः..

बटुको. ७

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च वायुः

[अ. शिरः. २।६+ २ रुद्रो. ९, २९

यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च विनायकः २ रुद्रो. ९

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च विष्णुः २ रुद्रो. २

[अ. शिरः. २।२+

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सर्व २ रुद्रो. ३६

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सुवः २ रुद्रो. २९

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सूर्यः २ रुद्रो. १०

[अ. शिरः. २।७+

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सोमः अ. शिरः. २।८

यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च स्कन्दः २ रुद्रो. ६

[अ. शिरः. २।३+

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाकाशः २ रुद्रो. २६

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाग्निः २ रुद्रो. ८

[अ. शिरः. २।५+

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाष्टौ प्रहाः २ रुद्रो. १७

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चेन्द्रः २ रुद्रो. ७

[अ. शिरः. २।४+

यो वै रुद्रः स भगवान् या च द्यौः अ. शिरः. २।१७

यो वै रुद्रः स भगवान्या च पृथिवी अ. शिरः. २।१५

यो वै रुद्रः स भगवान् या च भूः २ रुद्रो. २७

[अ. शिरः. २।११+

यो वै रुद्रः स भगवान् या चोमा २ रुद्रो. ४

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सुवः २ रुद्रो. २८

[अ. शिरः. २।१२+

यो वै रुद्रः स भगवान् याश्चापस्तस्मै

वैनमोनमः [अ. शिरः. २।१८+ २ रुद्रो. २३

यो वै रुद्रः स भगवान्ये च ऋषयः २ रुद्रो. १८

यो वै रुद्रः स भगवान्ये चाष्टौ प्रतिप्रहाः अ. शिरः. २।१०

यो वै रुद्रः स भगवान्ये चाष्टौ वसवः २ रुद्रो. १९

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाष्टौ प्रहाः अ. शिरः. २।९

यो वै वेदः स वेदः ब्रह्म, ब्रह्मैवावाप्नोति ग. शो. ३।१

यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै

तस्मै देवमात्मबुद्धिप्रकाशं सुसुखं

शरणमर्हं प्रपद्ये श्वेताश्व. ६।१८

यो वै स बहिर्धा पुरुषादाकाशः छांदो. ३।१२।७

यो वै स संवत्सरः प्रजापतिः

षोडशकलोऽयमेव सः बृह. १।५।१५

यो वै सोऽन्तःपुरुष आकाशः छांदो. ३।१२।८

यो व्यानः सा वाक् तस्मादप्राणः

जनपानन्वाचमभिव्याहरति छांदो. ५।३।३

यो व्यानेन व्यानिति स त आत्मा

सर्वान्तरः बृह. ३।३।१

योऽशनायापिपासे शोकं मोहं जरां

मृत्युमत्येति बृह. ३।५।१४

योषा वा अग्निगौतम तस्याः उपस्थ

एव समिष्ठोमानि धूमो योनिरर्चि-

र्यदन्तः करोति तेऽङ्गारा अग्नि-

नन्दा विस्फुलिङ्गाः बृह. ६।२।१३

योषा वाव गौतमाग्निस्तस्या उपस्थ

एव समिद्यदुपमन्त्रयते स धूमः छांदो. ५।८।१

योऽष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि ब्रह्मचर्यं

चरेत्, प्रतिवेवं द्वादश वा याव-

द्ब्रह्णान्तं वा वेदस्य, स ब्राह्मणः आश्रमो. १

योऽसा आदित्ये पुरुषः सोऽसा-

वहमिति मैत्रा. ६।३९

योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि

बृह. ५।१५।१

योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि

ईशा. १६ गोपालो. ३।१३

(ॐ) योऽसाविन्द्रियात्मा गोपालः..

(ॐ) योऽसावुत्तमपुरुषो गोपालः गोपालो. ३।१५

ॐ तत्सत्

योऽसि सोऽसि जगत्यस्मिन्हीलया

विहरानघ महो. ६।१

योऽसौ सोऽहमस्मीति वा या भाष्यते

सैषा षोडशी बृह. ५।१५।१

योऽसौ तपन्नदेति

सूर्यता. १।३

योऽसौ देवो भगवान् सर्वैश्वर्यसम्पन्नः

...मायया क्रीडति स ब्रह्मा स

विष्णुः स रुद्रः स इन्द्रः स

सर्वे देवाः छांदो. ३।१।३

योऽसौ परापरो देव ॐ कारो नाम

नामतः । निदशब्दः शून्यभूतस्तु

मूर्ध्नि स्थाने ततोऽयसेत् मैत्रा. ६।३३

(ॐ) योऽसौ प्रधानात्मा गोपालः ॐ

तत्सद्भूतः सुवस्तस्मै वैनमोनमः गोपालो. ३।१२

(ॐ) योऽसौ ब्रह्म, परं वै ब्रह्म

ॐ तत्सद्भूतः सुवः.. गोपालो. ३।१६

(७७) योऽसौ भूतात्मा गोपालः

ॐ तत्सद्गुरुवः सुवः...

योऽसौ वेद यदिदं किञ्चात्मनि
ब्रह्मण्येवानुष्टुभं जानीयाद्यो

जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति

(७८) योऽसौ सर्वभूतात्मा गोपाल

ॐ तत्सद्गुरुवः सुवस्तस्मै वै

नमोनमः

योऽसौ सर्वेषु भूतेष्वविश्य तिष्ठति

भूतानि विदधाति स वो हि

स्वामी भवति

योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यते ह्यज

ईश्वरः । तस्मात्तद्धारणादेतल्लिङ्ग-

देहमलौकिकम्

योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यते ह्यज

ईश्वरः । अकायो निर्गुणो ह्यात्मा

तन्मै मनः शिवसङ्कल्पमस्तु

योऽसौ सर्वैर्गीयते...स वो हि

स्वामी भवति

योऽसौ सूर्यं तिष्ठति, योऽसौ गोषु

तिष्ठति, योऽसौ गोपान्पाल-

यति, योऽसौ सर्वेषु देवेषु

तिष्ठति ।...सबोहिस्वामीभवति

योऽस्ति कल्पितसंवृत्त्या परमार्थेन

नास्त्यसौ

योऽस्माकमविद्यायाः परं पारं तार-

यतीति नमः परमगुरुभ्यः

योऽस्मात्पूर्वो बुभूषति य एवं वेद

योऽस्मान् द्वेष्टि, यं च वयं द्विष्मः

[वनदु. १६०+म.ना. ५।११+

[प्रवर्गा. २३+

योऽस्मि सोऽस्मि नमोऽस्तु ते

(अथ) योऽस्य दक्षिणः सुषिः

स व्यानस्तच्छ्रोत्रं स चन्द्रमा-

स्तदेवच्छरीरं यशश्चेत्युपासीत

भीमान्युदासी भवति

(अथ) योऽस्य निरुक्तानि वेद

स सर्वं वेद

गोपालो. ३।१४

नृ. पू. १।७

गोपालो. ३।१७

गोपालो. १।१२

सदानं. १०

२ शिवसं. २२

गोपालो. १।१२

गोपालो. १।१२

अ. शां. ७३

प्रश्नो. ६।८

बृह. १।४।१

कौ.उ. २।९

वा. सं. ३६।२३

१सं.सो. २।३१

छांदो. ३।१३।२

छांदो. ३।१३।२

(अथ) योऽस्य प्रत्यङ्मुखिः सोऽपानः

सा वाक् सोऽग्निस्तदेव ब्रह्मवर्चस-

मन्नाद्यमित्युपासीत ब्रह्मवर्च-

स्यन्नादो भवति

योऽस्य भर्गः कं सञ्चिन्तयामी-

त्याहुर्ब्रह्मवादिनः

योऽस्या एतदेवं पदं वेद

[बृ.उ. ५।१४।१,२+

(अथ) योऽस्योदङ्मुखिः स समान-

स्तन्मनः स पर्जन्यस्तदेतत्कीर्ति-

श्च व्युष्टिश्चेत्युपासीत कीर्ति-

मान्युष्टिमान्भवति

(अथ) योऽस्योर्ध्वः सुषिः स

उदानः स वायुः स आकाशस्त-

देतदोजश्च महश्चेत्युपासीतौजस्वी

महस्वान्भवति

यो ह खलु वाचोपरिस्थः श्रूयते स

एव वा एष शुद्धः पूतः शून्यः...

स्वे महिम्नि तिष्ठति

(अथ) यो ह खलु वावशरीरं...भूतात्मा

(अथ) यो ह खलु वावास्य ताम-

सोऽशोऽसौ स योऽयं रुद्रः

(अथ) यो ह खलु वावास्य राज-

सोऽशोऽसौ स योऽयं ब्रह्मा

(अथ) यो ह खलु वावाऽस्य सास्वि-

कोऽशोऽसौ स एव विष्णुः

(अथ) यो ह खलु वावैतस्यांशोऽयं

यश्चेतनमात्रः प्रतिपूरुषं क्षेत्रज्ञः

योऽहङ्कारे, योऽहङ्कर्तव्ये, यो रुद्रे

यो नाड्यां...सञ्चरतिसोऽयमात्मा

योऽहमनेन न प्रेक्षामीति स ह

षोडशं वर्षशतमजीवत्

योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि [म.ना. ६।७+

योऽहमस्मीति वा सोऽहमस्मीति वा

यो हरिस्तस्मान्नः पञ्चमं पादं

जानीयात्

(अथ) यो ह वा अस्माहोकात्स्वं

लोकमदृष्ट्वा प्रैति, स एनमवि-

दितो न भुनक्ति

छांदो. ३।१३।३

मैत्रा. ६।७

गायत्र्यु. १,२

छांदो. ३।१३।४

छांदो. ३।१३।५

मैत्रा. २।४

मैत्रा. ३।२

मैत्रा. ५।५

मैत्रा. ५।५

मैत्रा. ५।५

मैत्रा. २।५

सुबालो. ५।८

छांदो. ३।१६।७

त्रि.म.ना. ८।३

बह्वचो. ४

ग. पू.ता. २।९

बृह. १।४।१५

यो ह वा अस्मिन्नादित्ये निहित-
स्तारकेऽक्षिणि चैष भर्गाख्यः मैत्रा. ६।७
यो ह वा आत्मानं पञ्चविधमुक्तं
वेदः, यस्मादिदं सर्वमुत्तिष्ठति, स
सम्प्रतिवित् १ ऐत. ३।१।१
यो ह वा आयतनं वेदायतनमहं
स्वानां भवति, मनो ह वा आयतनं छांदो. ५।१।५
यो ह वा एतमोङ्कारं वेदावश्यः स्यात् २ प्रणवो. ९
यो ह वा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो
मनो दूतं वेदः, दूतवान्भवति कौ. त. २।१
यो ह वै प्रतिष्ठां वेद प्रति ह तिष्ठ-
त्यस्मिन् लोकेऽमुष्मिन् चक्षु-
र्वाव प्रतिष्ठा छांदो. ५।१।३
यो ह वै ज्येष्ठं च श्रेष्ठं च वेद
ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च स्वानां भवति छांदो. ५।१।१
यो ह वै त्वक्कामेन कामान्कामयते
सोऽकामी भवति गोपालो. १।१२
(ॐ) यो ह वै...नादस्वरूपोभरतो... तारसा. ३।५
(ॐ) यो ह वै...स भगवांस्तत्परः
...नित्यशुद्धबुद्धमुक्तसत्यपर-
मनन्ताद्वयपरिपूर्णः परमात्मा
ब्रह्मैवाहं रामोऽस्मि तारसा. ३।८
(ॐ) यो ह वै...स भगवान्बिन्दु-
स्वरूपः शत्रुघ्नो...तस्मै वै नमोनमः तारसा. ३।४
यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पद-
मच्येति । अनपञ्चवन्स्वैमायुरेति नारा. ३
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च
पुरुषो भूर्भुवःस्वस्तस्मै वै नमोनमः नृ. पू. ४।८
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्या
च स्वस्वती...तस्मै वै नमोनमः नृ. पू. ४।१०
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्चविष्णुः नृ. पू. ४।६
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च ब्रह्मा नृ. पू. ४।५
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च
महेश्वरौ भूर्भुवःस्वस्तस्मै वै नमोनमः नृ. पू. ४।७
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्चेश्वरः नृ. पू. ४।९
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च कालः नृ. पू. ४।२६
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च जीवः नृ. पू. ४।३५
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च प्राणः नृ. पू. ४।३१
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च मनुः नृ. पू. ४।२७

यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्चमृत्युः नृ. पू. ४।२८
यो ह वै नृसिंहो भगवान्यश्च यमः नृ. पू. ४।२९
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च
विराट् पुरुषः... नृ. पू. ४।३४
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च सर्वं नृ. पू. ४।३६
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च सूर्यः नृ. पू. ४।३३
यो ह वै नृसिंहो भगवान्यश्च सोमः नृ. पू. ४।३३
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्चान्तकः नृ. पू. ४।३०
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्चोङ्कारः नृ. पू. ४।१२
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्याच गौरी नृ. पू. ४।१२
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यानि च
पञ्च महाभूतानि... नृ. पू. ४।२५
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्याच प्रकृतिः नृ. पू. ४।१३
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्याच विष्णो नृ. पू. ४।१४
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्याच श्रीः नृ. पू. ४।११
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्याश्च
चतस्रो मात्राः नृ. पू. ४।१६
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्याश्च
सप्त व्याहृतयः... नृ. पू. ४।१९
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्ये च
द्वादशादित्याः... नृ. पू. ४।२३
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्येचाष्टौ महाः नृ. पू. ४।२४
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्ये चाष्टौ
लोकपालाः... नृ. पू. ४।२०
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्ये चाष्टौ
वसवः भूर्भुवः स्वस्तस्मै नमोनमः नृ. पू. ४।२१
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्
ये वैकादश रुद्राः... नृ. पू. ४।२२
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्
ये च पञ्चाक्षयः... नृ. पू. ४।२८
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्येच वेदाः
साङ्गाः सखाखाः सेतिहासाः... नृ. पू. ४।१७
(ॐ) यो ह वै परमात्मा नारायणः... ता. सा. ३।३
यो ह वै प्रजापतिं वेदः प्रजायते ह
प्रजया पशुभिः बृह. ६।१।६
यो ह वै प्रतिष्ठां वेद प्रतितिष्ठति बृह. ६।१।३
यो ह वै ब्रह्मो यज्ञो वेदाहन्त्यहर्देवेषु
देवमभ्युहं स सम्प्रतिवित् १ ऐत. ३।१।१
यो ह वै योऽन्तःकरणचतुष्टयात्मा रामो. ५।११

यो ह वै यो ब्रह्मा विष्णुर्महेश्वरो यः
सर्वदेवात्मा.. रामो. ५१५
यो ह वै वसिष्ठं वेद, वसिष्ठो ह
स्वानां भवति, वाग्वाव वसिष्ठः छांदो. ५११२
यो ह वै वसिष्ठां वेद वसिष्ठः स्वानां
भवति बृ. उ. ६।१।२
(अथ) यो ह वै विद्ययैनं परमु-
पास्ते सोऽहमिति स ब्रह्मविद्वभवति शांडि. ३।२।२
यो ह वै शिशुः साधनः सप्रत्या-
घानः सस्थूलः स दामं वेद.. बृह. २।२।१
(ॐ) यो ह वै श्रीपरमात्मा...
उकार उपेन्द्रस्वरूपो हरिनायकः तारसा. ३।२
(ॐ) यो ह वै श्रीपरमात्मा...
कलातीता भगवती सीता
चित्स्वरूपा तारसा. ३।७
(ॐ) यो ह वै श्रीपरमात्मा नारा-
यणः स भगवान् कलास्वरूपो
लक्ष्मणोभूर्भुवः सुवस्तस्मैवैनमोनमः तारसा. ३।६
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः स भगवानद्वैत-
परमानन्द आत्मा य ॐ नमो
भगवते वासुदेवाय भूर्भुवः सुव-
स्तस्मै वै नमो नमः रामो. ५१४४
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः स...यच्च
त्रैलोक्यं भूर्भुवः सुवस्तस्मै.. रामो. ५१२६
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः स...यच्च
ब्रह्मातन्दासृतं.. रामो. ५१३
यो ह वै...यच्च भूतं भव्यं भविष्यत् रामो. ५१३५
यो ह वै...यच्चासृतं भूर्भुवः रामो. ५११६
यो ह वै...यत्तारकं ब्रह्म रामो. ५१४
यो ह वै...यद्रक्षाण्डस्य बहिर्व्याप्तं रामो. ५१३६
यो ह वै...यश्च प्राणो... रामो. ५११२
यो ह वै...यश्च महादेवः... रामो. ५१४३
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यश्च महेश्वर.. रामो. ५१४२
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यश्च मृत्युः.. रामो. ५११५
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यश्च यमः.. रामो. ५११३
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यश्चाखण्डेकरसात्मा रामो. ५१२
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यश्चान्तकः रामो. ५११४
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यश्चोद्धारः.. रामो. ५१३९
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यः परमात्मा रामो. ५१४६

यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यः परमपुरुषः.. रामो. ५१४१
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यः सर्वभूतात्मा.. रामो. ५१८
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यः सूर्यः रामो. ५१२७
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यः सोमः रामो. ५१२८
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यः स्थावर-
जङ्गमात्मा..भूर्भुवः सुवस्तस्मै.. रामो. ५११८
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान्-
द्वैतपरमानन्द आत्मा यत्परं ब्रह्म रामो. ५११
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...या गौरी रामो. ५१२४
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...या जानकी.. रामो. ५१२५
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यानि च
नक्षत्राणि..तस्मै वै नमोनमः रामो. ५१२९
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यानि च
पञ्चमहाभूतानि.. रामो. ५११७
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...या प्रकृतिः.. रामो. ५१३८
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यो ब्रह्मा
विष्णुर्महेश्वरो यः सर्वदेवात्मा.. रामो. ५१५
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...या लक्ष्मी भूर्भुवः.. रामो. ५१२३
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...या विद्या.. रामो. ५१२१
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...याश्चतस्रोर्धमात्राः रामो. ५१४०
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...या सरस्वती.. रामो. ५१२२
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...याः सप्त
महाव्याहृतयः.. रामो. ५१२०
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...येच द्वादशादित्याः रामो. ५१३५
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...येच नव ग्रहाः.. रामो. ५१३०
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...ये चाष्टौ वसवः रामो. ५१३२
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...ये चाष्टौ
लोकपालाः... रामो. ५१३१
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...ये चैकादशरुद्राः रामो. ५१३३
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...ये देवासुर-
मनुष्यादिभावाः... रामो. ५१९
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...ये पञ्चाभयः.. रामो. ५११९
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...ये मत्स्य-
कूर्माद्यवताराः... रामो. ५११०
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...ये सर्वे वेदाः..
साङ्गाः सशाखाः सेतिहासपुराणाः.. रामो. ५१६
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...यो जीवान्तरात्मा.. रामो. ५१७
यो ह वै श्रीरामचन्द्रः...योऽन्तः-
करणचतुष्टयात्मा.. रामो. ५१११

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यो महाविष्णुः.. रामो. ५।४५
 योहवै श्रीरामचन्द्रः...यो विज्ञानात्मा.. रामो. ५।४७
 योहवै श्रीरामचन्द्रः...यो हिरण्यगर्भः.. रामो. ५।३७
 यो ह वै सम्पदं वेद, स५ हास्मै
 कामाः पद्यन्ते दैवाश्च मानुषाश्च,
 ओत्रं वाव सम्पत् छांदो. ५।१४
 यो ह वै सम्पदं वेद सर्व हास्मै
 पद्यते (मा. पा.) बृ. उ. ६।१४
 यो ह वै सम्पदं वेद स५ हास्मै पद्यते बृह. ६।१४
 यो ह वै सुश्लोकमौले धर्माननु-
 तिष्ठमानोऽग्निना चक्रं योमिर्वै...
 तप्ततनूः सायुज्यं सलोकता-
 माप्नोति सुदर्श. ५
 यो ह संयोगो ध्यानं जुषमाणः सिन्धुः
 सन्धुक्षणानां संयोगः सन्दधानः

पुण्यः पुण्यानां पुण्याश्च स्वाहा पारमा. ४।६
 यो हस्ते य आदातव्ये य इन्द्रे यो
 नाड्यां...सञ्चरति सोऽयमात्मा सुबालो. ५।११
 यो हीमानि न विद्यात्कथं सोऽनु-
 शिष्टो भ्रुवीत छांदो. ५।३४
 यो हैववित्स सवित्स द्वैतवित्सैक-
 धामेतः स्यात्तदात्मकश्च मैत्रा. ६।३५
 यो ह्येव प्रभवः स एवाप्ययः ३ऐत. २।६।४
 यो हैवं वेद सञ्जयासी योगी
 चात्मयाजी चेति मैत्रा. ६।१०
 यो ह्येष महिमा बभूव क एषः ब्रह्मो. १
 यौवनस्था गृहस्थाश्च प्रासादस्थाश्च ये
 नृपाः । सर्व एव विशीर्यन्ते शुष्क-
 स्तिग्धान्नभोजनाः शिवो. ७।१२२

र

र इति-रञ्जयतीमानि भूतानि मैत्रा. ६।७
 रकारमग्निबीजं च अपानादित्य-
 सन्निभम् व्या. बि. ९५
 रकारोऽण्डं विराड् भवति तारसा. १।४
 रकारो बह्विवचनः प्रकाशः पर्यवस्यति रामर. ५।४
 रक्तमांसमयस्यास्य सबाह्याभ्यन्तरे
 मुने । नाशैकधर्मिणो ब्रूहि कैव
 कायस्य रम्यता महो. ३।३१
 रक्तमूत्रलालास्वेदादिकमबंशाः पैङ्गलो. २।२
 रक्तवर्णो मणिप्रख्यः प्राणवायुः
 प्रकीर्तितः अ. ना. ३७
 रक्तशुद्धपदैकीकरणं पाथम् सावनो. ८
 रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवास-
 सम्...एवं व्यायति यो नित्यं
 स योगी योगिनां वरः गणप. ९
 रक्ता गायत्री । येता सावित्री ।
 कृष्णा सरस्वती गायत्रीर. ५
 रक्षांसि भीतानि विशो ब्रवंति भ. गी. १।१।३६
 रक्षांसि ह वा पुरोनुवाके तपोप्रमति-
 मुन्ततान्प्रजापतिर्वरेणोपामन्त्रयत सद्भवै. २
 ६५

रक्षोहणो वो बलगहन इति तृतीयः
 पादः । साम वै तृतीयः पादः ।
 वक्रतुण्डाय हुमिति चतुर्थः पादो-
 ऽथर्वश्चतुर्थः पाद इति ग. पू. १।१३
 रघुवंश्याय विद्याहे सीतावल्लभाय
 भीमहि । तन्नो रामः प्रचोदयात् वनदु. १४३
 रजसस्तु फलं दुःखं भ. गी. १४।१६
 रजसि प्रलयं गत्वा भ. गी. १४।१५
 रजसो लोभ एव च भ. गी. १४।१७
 रजस्तमश्चाभिभूय भ. गी. १४।१०
 रजस्तमस्वरूपेण भावा यज्ञबहिष्कृताः भवसं. ४।७
 रजस्तमोभ्यां विद्वस्य सुसमिद्वस्य
 वेदिनः । पुत्रदारकुटुम्बेषु सक्तस्य
 न कदाचन मैत्रा. ६।२८
 रजस्येतानि जायन्ते भ. गी. १४।१२
 रजः कर्मणि भारत भ. गी. १४।९
 रजः सत्त्वं तमश्चैव भ. गी. १४।१०
 रजोगुणसमुद्भवः भ. गी. ३।३७
 रजो भूमिस्त्वमा रोदयस्व प्रवदन्ति
 धीराः । आक्रान्समुद्रः प्रथमे
 विधर्मजनयन्प्रजा भुवनस्य राजा महाना. ६।९

रजो रागात्मकं विद्धि भ.गी. १४।७
 रजो वसति जन्तूनां देवीतत्त्वं
 समावृतम् । रजसो रेतसो
 योगाद्राजयोग इति स्मृतः यो.शि. १।१३७
 रज्जुखण्डे परिज्ञाते सर्परूपं न तिष्ठति ना. बि. २७
 रज्जुबद्धा विमुच्यन्ते तृष्णाबद्धा न
 केनचित् महो. ६।३९
 रज्जुबद्धो यथा इयेनो गतोऽप्या-
 कृष्यते पुनः । गुणबद्धस्तथा जीवः
 प्राणापानेन कर्षति यो. चू. २९
 रज्जुदेवैति चाद्वैतं तद्वदात्मविनिश्चयः वैतथ्य. १८
 रज्जुर्भाताऽदितिस्तथा कृष्णोप. २१
 रज्जुसर्पेण दष्टश्चेन्नरो भवतु संसृतिः ते. बि. ६।७७
 [अज्ञानमिति च-] रज्जौ सर्पभ्रान्ति-
 रिवाद्वितीये सर्वानुस्यूते सर्वमये
 ब्रह्मणि देवतिर्यङ्गस्थावरस्त्री-
 पुरुषवर्णाश्रमबन्धमोक्षोपाधि-
 नानात्मभेदकल्पितं ज्ञानमज्ञानं निरा. उ. १६
 रज्ज्वज्ञानात्क्षणेनैव यद्वद्रज्जुर्हि
 सर्पिणी । भाति तद्वच्चितिः
 साक्षाद्विधाकारेण केवला यो. शि. ४।२
 रथमाभिरिवाभिरुयायेत छिद्रां वा
 छायां वा पश्येत् ३ ऐत. २।४।५
 रथन्तरमिति थकारणामेव दीप्तं दर्शयति संहितो. २।४
 रथन्तरे बृहत्साम सप्तवैधैस्तु गीयते मंत्रिको. ९
 रथन्तरे अन्वक्षरं (भ-) थकारान्
 स्वरवन्ति यथाक्षरं दर्शयेत् संहितो. २।२
 रथं स्थापय मेऽच्युत भ. गी. १।२१
 (अथ) स्थान्रथयोगान्पथः सृजते
 न तत्रानन्दा मुदः प्रमुदो भवन्ति बृह. ४।३।१०
 (अथवा) रथेन धावयन्नथचक्रे
 पर्यवेक्षत एवमहोरात्रे पर्यवेक्षत
 रथोपस्थ उपाविशत् कौ. त. १।४
 रथो मे सर्वान् समुद्रान् संयाति भ. गी. १।४७
 रथ्यायां बहुवस्त्राणि मिश्रा सर्वत्र
 लभ्यते । भूमिः शय्याऽस्ति इतिहा. ८५
 विस्तीर्णा यतयः केन दुःखिताः १ सं. सो. २।९९
 रमते परिमत्तु जीर्णे शयाने नैनं
 जहात्यहः सुपूज्येण चित्त्यु. १४।९

रमते धीर्यथाप्राप्ते साध्वीवान्तः-
 पुराजिरे । सा जीवन्युक्तो-
 देति स्वरूपानन्ददायिनी महो. ४।३८
 रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दे
 चिदात्मनि । इति रामपदेनासौ
 परं ब्रह्माभिधीयते रा. पू. १।६
 रममाणः स्त्रीभिर्वायानैर्वाज्ञातिभिर्वा
 नोपजनस्मरन्निदं शरीरं
 स यथा प्रयोग्य आचरणे
 युक्त एवमेवायमस्मिच्छरीरे
 प्राणो युक्तः छां. उ. ८।१२।३
 रमारमणो वैकुण्ठे नारायणः
 स्वयं ध्यानापन्नोऽभवत् सामर. ३
 रमिति-प्राणो वै रं, प्राणे हीमानि
 सर्वाणि भूतानि रमन्ते बृ. उ. ५।१२।१
 रम्भास्तम्भेन काष्ठेन पाकसिद्धौ
 जगद्भवेत् ते. बि. ६।७८
 रम्यदेशे ब्रह्मघोषसमन्विते.. देवाय-
 तने...सुशोभनमठं...सर्वरक्षास-
 मन्वितं कृत्वा तत्र वेदान्तश्रवणं
 कुर्वन्योगं समारमेत् शांदि. १।५।१
 रयिरिति मनुष्याः (देवमुपासते)
 रयिः ककुब्जान् दधद्विनष्टं रयिम-
 द्विधानं तस्मै ककुब्जे विकटाय
 पित्रे स्वाहा पारमा. ७।३
 रयीणां पति थजतं बृहन्तं रा राग-
 मुक्तं गुरुं सश्रीकं तं राधि-
 रूपं रयिभूतभूतं रयिमत्सुरत्रः
 स्वाहा पारमा. ७।९
 रमाऽरमेच्छाऽपुनर्भवति तत्र रमा
 पुण्येन पुण्यलोकं नयत्यरमा
 पापेन पापं सुबालो. ११।१
 रविमध्ये स्थितः सोमः सोममध्ये
 हुताशनः । तेजोमध्ये स्थितं
 सत्त्वं सत्त्वमध्ये स्थितोऽच्युतः मैत्रा. ६।३८
 रवेरुदयास्तमथयोः किलकर्म कर्तव्यम् सं. भा. २।४
 (लौकिकभेदे) रश्मयो धूमोऽह-
 रश्चिश्चन्द्रमा अङ्गारा नक्षत्राणि
 विष्फुलिङ्गाः बृह. ६।२।९

रश्मिभिरेषोऽस्मिन्प्रतिष्ठितः प्राणे-

रश्मिमुष्मिन्स यदोत्क्रमिष्यन्

भवति शुद्धमेवैतन्मण्डलं पश्यति बृह. ५।५।२

रश्मिरिक्तः सविता मे नियच्छतु

चित्यु. ११।७

रश्मिं रश्मीनां मध्ये तपन्तं

चित्यु. ११।४

रश्मीस्त्वं पर्यावर्तयाद्ब्रह्मो वै ते

अविष्यन्ति

छांदो. १।५।२

रश्मीस्त्वं पर्यावर्तयतात् (मा.पा.)

छां. उ. १।५।२

रसजया आव्यमाना मधुरामुत्कि-

कटुकषायलवणभेदाः षड्रसाः,

षड्रसवः क्रियाशक्तिः पीठम्

भावनी. २

रसनं च रसयितव्यं च (मा.पा.)

प्रभो. ४।८

रसनं प्राणमेव च

भ.गी. १५।९

रसनाद्वायुमाकृष्य यः पिबेत्सततं

नरः । श्रमदाहौ तु न स्यातां

नहसन्ति व्याधयस्तथा

शांदि. १।७।४५

रसना पीड्यमानेयं षोडशी बोर्ध्व-

गामिनी

प्र. वि. ७३

रसनां तालुनि न्यस्य स्वस्थचित्तो-

निरामयः । आकुञ्चितशिर-

स्तस्मिन्निबन्धनन्योगमुद्रया । इत्तो

अथोक्तविधिनाप्राणायामं समाचरेत्

त्रि. ब्रा. २।९३

रसमाण्डमिवात्मानं सुस्थिरं

प्रायेत्सदा

अमनः २।५५

रसयन्ने तन्न रसयते, नहि रसयितु-

रसयतेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविना-

शित्वात्

बृह. ४।३।२५

रसयितव्यमेवाप्येति यो रसयित-

व्यमेवास्तमेति

रसज्य आपो रसाग्रथां मिनाः

सुबालो. ९।४

रसवर्जं रसोऽप्यस्य

गोपालो. १।८

रसस्य मनस्यैव चञ्चलत्वं स्वमा-

वतः । रसो बद्धो मनो बद्धं किं

न सिद्धयति भूतले

वराहो. २।७८

रसं रसानां परमास्वादनीयमनास्वादं

रसवर्जं सुगुप्तम्

२ देव्यु. २३

रसं सर्वमसन्नमयम्

ते. वि. ३।५७

रसं हेवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति

तैत्ति. २।७

रसाच्छोणितं, शोणितान्मांसं,

मांसान्मेदो मेदसः स्नायवः,

स्नायुभ्योऽस्थीनि, अस्थिभ्यो

मज्जा, मज्जातः शुक्रं

गर्भो. २

रसादयो हि ये कोशा व्याव्याता-

स्तैत्तिरीयके । तेषामात्मा परो

जीवः खं यथा सम्प्रकाशितः

अद्वैत. ११

रसानां शोषणं सम्यङ्मुहामुद्रामिधीयते

ध्या. वि. ९२

रसे वृद्धिगते नित्यं वर्धन्तेधातवस्तथा

वराहो. ५।४८

रसो वै सः, रसं हेवायं लब्ध्वा-

ऽऽनन्दी भवति

तैत्ति. २।७

रसोऽहमप्सु कौन्तेय

भ. गी. ७।८

रसौषधिक्रियाजालमन्त्राभ्यासादि-

साधनात् । सिद्धयन्ति सिद्धयो

यास्तु कल्पितास्ताः प्रकीर्तिताः

यो.शि. १।१५२

रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्याः

भ.गी. १।७।८

रहस्यं रामतपनं वासुदेवं च मुद्रलम्

मुक्ति. १।३५

रहस्यं हेतुदुत्तमम्

भ. गी. ४।३

रहस्योपनिषद्भाग्ना सषडङ्गमिहो-

च्यते । यस्य विज्ञानमात्रेण मोक्षः

साक्षात् संशयः

शु. र. १।१३

रहस्योपनिषद्ब्रह्म ध्यातं येन विष-

यिता । तीर्थैर्मन्त्रैः श्रुतेर्जप्यैस्तस्य

किं पुण्यहेतुभिः

शु. र. १।१६

राकामहं सुहवां सुष्ठुती हुवे...

वीरं शतदायमुक्थ्यं स्वाहा

पारमा. ७।४

राकाहया तु या नाडी पीत्वा च

सलिलं क्षणात् । क्षुत्सुत्यादये-

दघ्नाणे श्लेष्माणं सञ्चिनोति च

यो.शि. ५।२४

राक्षसं भवति आर्द्धं दैवं यत्र निवर्तयेत्

इतिहा. ६२

राक्षसान्मर्त्यरूपेण राहुर्मनसिजं

यथा । प्रभादीनांस्तथा कृत्वा..

रा. पू. १।३

राक्षसीमासुरीं चैव

भ. गी. ९।१२

रागद्वेषभयादीनामनुरूपं चरन्नपि ।

योऽन्तर्ज्यौमवदच्छन्नः स जीव-

न्मुक्त उच्यते

वराहो. ४।२४

रागद्वेषवियुक्तात्मा समलोष्टाश्म-

काञ्चनः । प्राणिर्हिसानिवृत्तश्च

ना. प. ३।३५

मुनिः स्यात्सर्वनिःस्पृहः

रागद्वेषवियुक्तैस्तु अ. गी. २।६४
 रागद्वेषं मदं मायां द्रोहं मोहं परा-
 त्मसु । षडेतानि यतिर्नित्यं मन-
 साऽपि न चिन्तयेत् ना. प. ३।७०
 रागद्वेषौ व्यवस्थितौ अ. गी. ३।२८
 रागद्वेषौ व्युदस्य च अ. गी. १८।५१
 रागद्वेषौ सुखं दुःखं धर्माधर्मौ
 फलाफले । यः करोत्यनपेक्ष्यैव
 स जीवन्मुक्त उच्यते महो. २।४९
 रागं नीरागतां नीत्वा निर्लेपो भव
 सर्वदा वराहो. २।४८
 रागादयः कामक्रोधलोभमोहजरा-
 मरणसुखदुःखान्यनुभवन्त
 ध्यापयन्ते सामर. १०१
 रागादयः कामक्रोधादयो गुणाः
 साधनरूपा भवन्ति सामर. १०२
 रागादयः प्रसज्येरंस्तेनासौ
 नारकी भवेत् ना. प. ४।१६
 रागाद्यपेतं हृदयं, वागदुष्टाऽनृता-
 दिना । हिंसादिरहितं कर्म
 यत्तदीश्वरपूजनम् जा. द. २।८
 रागाद्यधर्मभवे प्राज्ञ पुण्यपाप-
 विमर्दनम् । तयोर्नाशि क्षरीरेण
 न पुनः सम्प्रयुज्यते जा. द. ६।५१
 रागी कर्मफलप्रेप्सुः अ. गी. १८।२७
 राजत्वात्सर्वयोगानां राजयोग
 इति स्मृतः अमन. २।३
 राजधानी कुम्भीपाकमिव शवपिण्ड-
 वदेकत्राजं न देवतार्चनम् ।
 प्रपञ्चवृत्ति परित्यज्य जीव-
 न्मुक्तौ भवेत् शं. खो. २।७९
 राजधानी कुम्भीपाकमिव शव-
 पिण्डवदेकत्राजं न देवान्तर-
 दर्शनं प्रपञ्चवृत्ति परित्यज्य
 स्वदेशमुत्सृज्य... ज्ञातचरदेशं
 विहाय दूरतो वसेत् ना. प. ७।१

राजन्तं दीप्यमानं तं परमात्मान-
 मव्ययम् । देहिनां प्रापयेद्यस्तु
 राजयोगः स उच्यते अमन. २।४
 राजन् संस्मृत्य संस्मृत्य अ. गी. १८।७६
 राजयोगस्य माहात्म्यं कोवा जानाति
 तत्त्वतः । ज्ञानात्सिद्धिर्मुक्तिरिति
 गुरोर्ज्ञानं च लभ्यते अमन. २।५
 राजवार्तादि तेषां स्याद्विश्रवावार्ता
 परस्परम् ना. प. ३।५८
 राजविद्या राजगुह्यं अ. गी. ९।२
 राजसमायात्मको ब्रह्मा पा. प्र. २
 राजसं चलमधुवम् अ. गी. १७।१८
 राजसः परिकीर्तितः अ. गी. १८।२७
 राजसा तामसाश्च ये अ. गी. ७।१२
 राजसी क्रियाशक्तिः गणेशो. ४।३
 राजस्ये क्षत्र एव तद्यशो दधाति
 सैषा क्षत्रस्य योनिर्यद्रक्ष्य
 राजसो ब्रह्मा सात्त्विको विष्णु-
 स्तामसोरुद्रइतिपत्रयो गुणयुक्ताः यो. चू. ७२
 राजसो ब्रह्मा सात्त्विको विष्णु-
 स्तामसो वै हरः गणेशो. ४।६
 राजस्याः पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्च
 कर्मेन्द्रियाणि, पञ्चवायवश्चाज्जायन्त गणेशो. ४।४
 राजा त एकं मुखं, तेन मुखेन विशो-
 ऽस्ति, तेनैव मुखेन मामन्नादं कुरु कौ. व. २।९
 राजा त्वा वरुणो नयतु देवि दक्षिणे
 वैश्वानराय रथम् त्रित्यु. १०।४
 राजा नचक्षममन्वीत् अ. गी. १।२
 राजा वरुणो नयतु देवि दक्षिणे-
 ऽग्नये हिरण्यम् त्रित्यु. १०।१
 राजाऽसौ यक्ष्यते स मा सर्वै-
 रात्विजैर्वृणीतेति छांदो. १।१०।६
 राजोवाच-पञ्चमानि रत्नानि
 गौर्मेऽजस्रं दुहति, रविर्मेऽजस्रं
 विह्वहति, त्विधिर्मेऽजस्रं पिनष्टि इतिहा. ८५
 राज्यं भोगाः सुखानि च अ. गी. १।३३
 राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यं अ. गी. २।६
 राज्ञः शीघ्रस्य तृप्तासः अरुणो. १
 राज्ञां राज्यलक्ष्मीर्भवति ना. पू. वा. २।१

राज्ञीनाम प्रतीची, सुभूतानामोदीची छांदो. ३।१५।२
 रातिर्दातुः परायणं तिष्ठमानस्य तद्विदः बृह. ३।९।२८
 रात्रि युगसहस्रान्तां भ. गी. ८।१७
 रात्रेरपक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाण-
 पक्षाद्यान्वणमासान्दक्षिणादित्य
 एति मासेभ्यः पितृलोकं पितृलोका-
 बन्धं ते चन्द्रं प्राप्याभं भवन्ति बृह. ६।२।१६
 रात्रेरपरपक्षमपरपक्षाद्यान्वदक्षिणैति
 मासांस्तान्नेते संवत्सरमभि-
 प्राप्नुवन्ति छांदो. ५।१०।३
 रात्र्यागमे प्रलीयन्ते भ. गी. ८।१८
 रात्र्यागमेऽवशः पार्थ भ. गी. ८।१९
 राधाकृष्णप्रियो भवति (भक्तः) राधिको. ९
 राधाकृष्णयोरेकमासनम्.. एकं मनः,
 एकं ज्ञानम्, एक आत्मा.. राधो. २।१
 राधा कृष्णेनारायिता, राधा कृष्ण-
 माराधयत् राधिको. ४
 राधा राक्षेयरी रम्या कृष्णमन्त्रा-
 चिदेवता राधिको. ६
 राम एव परं ब्रह्म राम एव परं
 तपः । राम एव परं तत्त्वं
 श्रीरामो ब्रह्म तारकम् रामर. १।६
 रामचन्द्रश्चिदात्मकः रामो. २।४
 रामत्वंपरमात्माऽसिसचिदानन्दविग्रहः मुक्तिको. १।४
 रामनाम भुवि क्वातमभिरामेण
 वा पुनः । राक्षसान्मर्त्यरूपेण
 राहुर्मनसिर्जं यथा रा. पू. ता. १।३
 रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपौत्तम ।
 भो वक्ष्यास्यान्तकात्मकं
 (भियं वापयदेहि मे) रक्षां
 (कुह) देहि भियं च मे. रामर. २।८१
 [रा. पू. ४।१५+ त्रि. म. जा. ७।१०
 राममन्त्रं यो जपेत् स रामो भवति रामर. १।७
 रामं त्रिनेत्रं सोमार्धचारिणं
 शूलिनं परम् । अस्त्रोद्बलित-
 सर्वाङ्गं कपदिनमुपात्महे रामर. २।३२
 रामः शङ्खभूतामहम् भ. गी. १०।३१

रामाभिरामां सौन्दर्यसीमां
 सोमावतंसिकाम् । पाशाकुश-
 धनुर्बाणधरां व्यायेजिलोचनाम् रामर. २।३३
 रामोऽहमनिरुद्धोऽहमात्मानं
 चार्चयेद्बुधः गोपाळो. २।९
 रायस्पोषस्य दाता चेति प्रथमः
 पादो भवति, ऋग्वै प्रथमः
 पादः, निषिदाताज्ञदो मत
 इति द्वितीयः पादः, यजुर्वै
 द्वितीयः पादः ग. पू. ता. १।१३
 रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय
 सुवीर्याधारण्याः पशवो विश्व-
 रूपाः । विरूपाः सन्तु बहु-
 वैकरूपाः [चिन्त्यु. ११।१२, १३
 रायामीक्षो रहितो भरन्त्यै रां रां
 वहन्त्याहितः रायां पतिं रां रां
 धरते धरिष्यै रां वहतोद्वाय
 स्वाहा पारमा. १।५
 रायां पतत्रे रयिमादधात्रे रायौ
 बृहन्तं रयिमत्सुपुण्यं, राता-
 जिमन्तं रतये रमन्तं तं
 बिम्बवन्तं ककुदाय भद्रे स्वाहा पारमा. ७।१०
 रिच्यंत इव वा एष प्रेवरिच्यते
 यो याजयति प्रति वा गृह्णाति सहवै. २०
 रिपुणा हन्यते रिपुः महो. ५।१११
 रिपौ बद्धे स्वदेहे च समैकाल्यं
 प्रपश्यतः । विवेकिनः कृतः
 कोषः स्वदेहाग्रयवेज्जिव याज्ञव. ३२
 रुक्मान्वरनिभाकाशं रक्तवर्णं
 चतुर्भुजम् (गणेशं) ग. पू. २।५
 रुचिरं रेचकं चैव वायोरारुर्ध्वं
 तथा । प्राणानामाशयः प्रोक्ता
 रेचपूरककुम्भकाः म. ना. १०
 रुजां हरत्त्वं सिक्कं पापहीनो
 ह्यपाणिपादो निर्विकारस्त्वमात्मा २ रुद्रो. ६२
 रुद्र एवाभिरिति संघट्टनाधीशो भवेत् पारायणो. १
 रुद्रग्रन्थि तसो मित्वा ततो याचि
 शिवात्मकम् यो. शि. १।१२५

रुद्रजापकशतमेकमेकेनार्थवशिर-

विशस्वाभ्यापकेन तत्समं ताप-

नीयोपनिषदभ्यापकशतं

नृ. पू. ५।१६

रुद्रपीठं च वर्यं च वज्रदण्डोज्ज्वलं तथा ।

इत्येवदासनं प्रोक्तं नानारूपगुणा-

न्वितम्

दुर्वासो. २।३

रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणं

अ. शिरः. ३।९

रुद्रमेवाप्येति यो रुद्रमेवास्तमेति..

सुवालो. ९।१२

रुद्र यत्ते दक्षिणं मुखं तेन मां पाहि

चित्यम्

श्वेताश्व. ४।२१

रुद्ररूपे महायोगी संहरत्येव तेजसा ।

नारायणे मनो गुञ्जन्नारायण-

मयो भवेत्

यो.शि. ५।५४

रुद्रस्य दक्षिणे पार्श्वे रतिर्ब्रह्मा

त्रयोऽमयः

रुद्रह. ४

रुद्रस्य नयनादुत्पन्ना रुद्राक्षा इति

लोके कथायन्ते

रु. जा. ४४

रुद्रं लोहितेन

चित्त्यु. २१।१

रुद्रः पशूनां गुहया निमग्नः

एका. उ. ९

रुद्रः प्रणीती तमनः प्रजापतिः

बा. मं. २४

रुद्रः सूर्य उमा छाया तस्मै तस्यै

नमो नमः

रुद्रह. १९

रुद्रः सोम उमा तारा तस्मै तस्यै

नमो नमः

रुद्रह. १९

रुद्राक्षमूर्धं तद्गङ्गा तन्नालं विष्णुरेव

च । तन्मुखं रुद्र इत्याहुस्त-

द्विन्दुः सर्वदेवताः

रु. जा. ४२

रुद्राक्षं द्वादशमुखं महाविष्णु-

स्वरूपकम्

रु. जा. ३७

रुद्राग्रेर्यत्परं वीर्यं तद्रस्म परि-

कीर्तितम्

बृ. जा. ५।१८

रुद्राणामैतावदाधिपत्यं स्वाराज्यं

पर्येता

छांदो. ३।७।४

रुद्राणामेवैको भूत्वेद्रेणैव मुखेनैत-

देवाद्युतं दृष्ट्वा तृप्यति

छांदो. ३।७।३

रुद्राणां भाष्यन्दिनं स्ववनमा-

दित्यानां च विधेयां च

देवानां तृतीयसवनम्

छांदो. २।२४।१

रुद्राणां वाहुरश्वास्मि

अ. गी. १०।२३

रुद्रात्यवर्तते बीजं बीजयोनि-

र्जनार्दनः

रुद्रह. ८

रुद्रादयो यं ध्यायन्ति...तद्धाम

सर्वेषां देवादीनामपि दुर्लभतरम्

सामर. ९४

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्याः

अ. गी. ११।२२

रुद्रानुवाकेन दिने दिने द्विजो-

ऽभिषिच्य मामर्चयत्यूर्ध्वरेणविल्वैः १ विल्वो

रुद्रेषु रौद्री, ब्रह्माणीषु ब्राह्मी,

देवेषु दैवी, मनुष्येषु मानवी

(मूर्तयः)...स्वपदे तिष्ठन्ति

गोपालो. ३।२

रुद्रो गन्ध उमा पुष्पं तस्मै

तस्यै नमो नमः

रुद्रह. २२

रुद्रोऽग्नीत्, बृहस्पतिरुपवक्ता

चित्त्यु. २।१

रुद्रोऽजीजनत्, सर्वे मरुद्गणा

अजीजनन्

बह्वचो. १

रुद्रो दिवा उमा रात्रिस्तस्मै

तस्यै नमो नमः

रुद्रह. २०

रुद्रो नर उमा नारी तस्मै तस्यै

नमो नमः

रुद्रह. १७

रुद्रो ब्रह्मा उमा वाणी तस्मै

तस्यै नमो नमः

रुद्रह. १८

रुद्रो ब्रह्मोपनिषदो हंसज्योतिः

पञ्चपतिः प्रणवस्तारकः

स एवं वेद

पा. ब्र. ६

रुद्रो यज्ञ उमा वेदिस्तस्मै तस्यै

नमो नमः

रुद्रह. २०

रुद्रो यागदेवो विष्णुरर्ध्वर्युर्होतेन्द्रो

देवता यज्ञमुख

पा. ब्र. ३

रुद्रो येन कृतो वंशस्तस्य माया

जगत्कथम्

कृष्णो. ११

रुद्रो रुद्रश्च दन्तिश्च नन्दिः षण्मुख

एव च । गहडो ब्रह्म विष्णुश्च...

म. नां. ६।१२

रुद्रोऽयं अक्षरः सोमा तस्मै तस्यै

नमो नमः

रुद्रह. २३

रुद्रोलिङ्गमुमापीठं तस्मै तस्यै नमो नमः

रुद्रह. २३

रुद्रो बहिरुमा स्वाहा तस्मै तस्यै...

रुद्रह. २१

रुद्रो विष्णुदमा लक्ष्मीस्तस्मै तस्यै...

रुद्रह. १८

रुद्रो बृथ उमा बह्वी तस्मै तस्यै...

रुद्रह. २२

रुद्रो वेद उमा शाखं तस्मै तस्यै...

रुद्रह. २१

रुद्रो हि शाश्वतेन वै पुराणेनेषमूर्जेण

तपसा नियन्ता

अ. शिरः. ३।११

रूपकार्यसमाख्याश्च भिद्यन्ते तत्र

तत्र वै

अद्वैत. ६

रूपग्रहणप्रयोजनस्य मनश्चक्षुरधीनत्वात्

अद्वयता. ६

रूपमत्यद्भुतं हरेः

भ.गी. १८।७७

रूपमिति गान्धर्वाः (उपासते)

मुद्रलो. ३।२

रूपवद्विज्ञेयं ज्ञानरूपमानन्दमयमासीत्

अन्यक्तो. १

रूपवदिदं तेजो रूपाभिभ्यां भिन्नं

गोपालो. १।७

रूपवान् भवति । अतिरूपवान्भवति

गणेशो. २।२

रूपस्थानां देवतानां पुंरुयङ्गाद्यादि-

कल्पना

रा. पू.ता. १।८

रूपं नाहं नामे नाहं न कर्म ब्रह्मै-

वाहं सच्चिदानन्दरूपम्

सर्वसारो. ११

रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्

भ.गी. ११।४७

रूपे महत्ते बहुवक्त्रनेत्रम्

भ.गी. ११।२३

रूपं रूपं जनुषा बोभवीमि माया-

मिरेको अभिचाकशानः

बा. मं. ११

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव [कठो. ५।९+ बृह. २।५।१९

रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च

कठो. ५।९, १०

रूपं शब्दस्तथा स्पर्शो रसो गन्ध-

स्तथैव च । इन्द्रियार्थान्विज्ञा-

नीयात्पञ्चैव नृपसत्तम

भवसं. २।१७

रूपं सर्वमसद्विद्धि रसं सर्वमसन्मयम्

ते. वि. ३।५७

(अथ) रूपाणां चक्षुरित्येतदेषा-

मुक्त्यमतो हि सर्वाणि रूपा-

प्युत्तिष्ठन्ति

बृह. १।६।२

रूपाणि-देवः कुरुते बहूनि

बृह. ४।३।१३

रूपाणि पञ्चतन्मात्राः पुरुषः प्रकृतिर्नव

गुह्यका. ७

रूपाण्येव यस्यायतनं चक्षुर्लोको

मनो ज्योतिः

बृह. ३।५।१२

रूपाण्येव यस्यायतनं चक्षुर्लोको

मनो ज्योतिर्यो वै तं पुरुषं

विद्यात्सर्वस्यात्मनः परायणः

स वै वेदिता स्यात्

बृह. ३।५।१५

रेखोरेखा बलिता यथेका पीवरी

शिला । तथा त्रैलोक्यबलितं

महैकमिह दृश्यताम्

महो. ५।५७

रेचक-पूरक-कुम्भक-भेदेन स

त्रिविधः (प्राणायामः)

शांदि. १।६।१

रेचकपूरकयुक्तः सहितः (कुम्भकः),

तद्वर्जितः केवलः । केवलमिद्धि-

पर्यन्तं सहितमभ्यसेत्

शांदि. १।७।१४

रेचकं पूरकं चैव कुम्भमध्ये निरो-

धयेत् । दृश्यमाने परे लक्ष्ये

ब्रह्मणि स्वयमाश्रितः

वराहो. २।५७

रेचकं पूरकं मुक्त्वा कुम्भकं नित्य-

मभ्यसेत्

जा. द. ६।१८

रेचकं पूरकं मुक्त्वा कुम्भकेन

स्थितः सुधीः

ब्र. वि. २१

रेचकं पूरकं मुक्त्वा कुम्भीकरणमेव

यः । करोति त्रिषु कालेषु नैव

तस्यास्ति दुर्लभम्

त्रि. प्रा. २।१०८

रेचकं पूरकं मुक्त्वा वायुना स्थीयते

स्थिरम् । नाना नादा प्रवर्तन्ते

संसवेचन्द्रमण्डलम्

यो. शि. १।१२७

रेचकः पूरकश्चैव कुम्भकः प्रणवात्मकः ।

प्राणायामो भवेदेवं मात्रा

द्वादशसंयुतः

यो. चू. १०१

रेचकेन तु विद्यात्मा ललाटस्थं

त्रिलोचनम् ।...तत्रार्कचन्द्र-

बह्वीनामुपयुपरि चिन्तयेत्

व्या. वि. ३२-३४

रेचनं पूरणं वायोः शोचनं रेचनं

तथा । चतुर्भिः क्लेशनं वायोः

प्राणायाम उदीर्यते

त्रि. प्रा. २।९४

रेचयेत्पिङ्गलानाड्या द्वात्रिंशन्मात्रया

पुनः ।...शनैरशीतिपर्यन्तं

चतुर्वारं समभ्यसेत्

१ यो. च. ४२

रेच यव यस्यायतनं हृदयं लोको

मनो ज्योतिर्यो वै तं पुरुषं

विद्यात्सर्वस्यात्मनः परायणः

स वै वेदिता स्यात्

बृह. ३।५।१७

रेतस आपः (निरभिद्यन्त)

२ ऐत. १।४

रेतस इति मावोचत जीवतस्तत्प्रायते बृह. ३।५।३२

रेतसस्तेजोमयोऽभ्युत्तमयः पुरुषोऽयमेव बृह. ३।५।३२

रेतसे स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्ये

संस्तवमवनयति

बृह. ६।३।२

रेतो देवाः, देवानां रेतो वर्ष, वर्षस्य रेत औषधयः, औषधीनां रेतो- ऽन्नं, अन्नस्य रेतो रेतः, रेतसो रेतः प्रजाः, प्रजानां रेतो हृदयं, हृदयस्य रेतो मनः, मनसो रेतो वाक्, वाचो रेतः कर्म	१ ऐत. १।३।१ लिङ्गोप. १ बृह. ६।१।६
रेतोबुद्ध्यापमनस्स्वरूपमिति लिङ्गम् रेतो वै प्रजापतिः रेतो होचक्राम, तत्संवत्सरं प्रोच्याम- स्योवाच कथमशक्त मदृते जीवितुमिति	बृह. ६।१।१२
रेफारुदा मूर्तयः स्युः शक्यस्ति स एव च	रा. पू. ता. २।३
रेफो ज्योतिर्मये तस्मात्कृतमाकार- योजनम्	रामर. ५।६
रेकमानि पृथुतामि गवामयं निष्कौ- ऽयमश्नतरीरयो नु म एतां भगवो देवताः शशिषां देवतामुपास्स इति रोगाती गां विहाय प्रशस्तगोमय- माहरेत् (भस्मार्थ)	छांदो. ४।२।२ बृ. जा. ३।१
रोचतालमनं कुर्याद्वयदेवात्मन- स्तनुम् । अङ्गुलीयाक्षसूत्रं च कर्णमात्रे च धारयेत्	शिवो. ७।४४
रोचनी रोचमानः शोभन्ते शोभ- मानः कस्याणः	बृ. पू. २।११

रोचमानां त्वासादयामि रोचिष्णुरिति वा अहमेतमुपास इति, स य एवमेतमुपास्ते रोचिष्णुर्भवति, रोचिष्णु- र्हास्य प्रजा भवति	चित्यु. १९।१ बृह. २।१।९ गणेशो. ३।१३ सूर्यता. १।२ म. गी. १।२९
रोदनादुद्रसंज्ञः (अभवत्) रोदस्योरन्तर्देशेषु अपैतं मृत्युं जयति रोमहर्षश्च जायते	गोपालो. २।१९ चित्यु. ११।१०
रोहिणीतनयो विश्व अकाराक्षर- सम्भवः रोहिणीः पिङ्गला एकरूपाः रौक्मे फलके सूर्यवर्चसि मन्त्र- मानुष्टुभं विन्यस्य तदस्य कण्ठे प्रत्यसुञ्चत्	गोपालो. २।१९ चित्यु. ११।१० अव्यक्तो. ८ बृ. जा. २।२
रौद्री घोरा या तैजसी तनूः रौद्रेण त्वाऽङ्गिरसां मनसा व्यायामि	वनदु. १६०
रौप्यबुद्धिः शुक्तिकायां क्षीपुंसो- र्भ्रमतो यथा (सृष्वैवोदेति सकलं सृष्वैव प्रविक्षीयते)	योगकुं. १।८०
रौहिणीं लब्धयेद्यस्तु ज्ञानाद- ज्ञानतोऽपि वा । आसुरं तद्भवेच्छास्त्रं पितृणां नोपतिष्ठते	इतिहा. ६०

ल

लकारं पृथिवीरूपं व्यानं कञ्चूक- शमिमम्	ध्या. वि. ९६
लक्ष्मात्रं तु प्रजपेत्स्वस्वरूपं भवेन्मनुः	ना. पू. ता. ४।१६
लक्ष्मणप्राणप्रतिष्ठानन्दकर स्थलजला- शिमर्षमेदिनसर्वशत्रून्निघ्निषि छिन्धि लाङ्गूलो. ३	
लक्ष्मणेन प्रणुणितमक्षणः कोणेन आयकम् ।... लक्ष्मणेन घृत- पञ्चमधवा पुष्पकोपरि ।... यसं लब्ध्वा अयाधौ तु वर्ण- लक्ष्मं जपेन्मनुषु	रामर. २।१६

लक्ष्मीमूलप्रकृतिरिति विज्ञायते लक्ष्मीसहायोऽद्वयकुञ्जराकृति- अतुर्मुजमन्त्रकलाकलापः । माया- शरीरी मधुरस्वभावस्तस्य ध्याना- त्पूजनात्तत्स्वभावाः	ना. पू. ता. ५।६ देरम्बो. ६
लक्ष्मी क्षीरसमुद्रराजतनया श्रीरङ्गवामेश्वरी... तां त्रैलोक्य- कुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम्	वनदु. ८४
लक्ष्मं तदेवाक्षरं सोम्य विद्धि	मुण्ड. २।२।३

लक्ष्यं सर्वगतं चैव शरः सर्वगतौ-

लक्ष्यः । वेदा सर्वगतश्चैव शिव-

लक्ष्यं न संशयः

कद्रह. ३९

लक्ष्यालक्ष्यमतिं त्यक्त्वा यस्तिष्ठे-

केवलीत्मना । शिव एव स्वर्थं

साक्षादयं ब्रह्मविदुत्तमः

आत्मो. १९

[महो. ४।८५+

लक्ष्यालक्ष्यविहीनोऽस्मि लयहीन-

रसोऽस्म्यहम्

मैत्रे. ३।१३

लक्ष्येऽन्तर्बाह्यायां दृष्टौ निमेषोन्मेष-

वर्जितायां च इयं शाम्भवी

मुद्रा भवति

मं. ब्रा. १।४

लघुत्वमारोग्यमलोलुपत्वं वर्णप्रसादं

स्वरसौष्ठवं च । गन्धः शुभो मूत्र-

पुरीषमल्पं योगप्रवृत्तिं प्रथमां वदन्ति

श्वेताश्व. २।१३

लक्षाशिना धृतिमता परिभावितव्यं

संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्

ओ. शि. १।९०

लक्षाहारो यमेष्वेको मुख्यो भवति

नैतरः

१ यो. त. २८

लङ्कापुरीदाहन उदधिलङ्घनः सर्व-

सूत्रान्तिष्ठि छिन्धि

काङ्गडो. ३

लज्जा मतिरुत्तिष्ठिश्च पुष्टा लक्ष्मी-

लज्जा ललिता लालपन्ती

त्रि. महो. ६

लब्धयोगनिर्गन्धयोगिनः काळो नास्ति

लब्धयोगोऽथ मुद्रयेत (लब्धयोगेन

शांति. १।७।१८

बोद्धव्यं) प्रसन्नं परमेश्वरम्

(परमेश्वरम्)

यो. शि. १।७८

लब्धयोगिभस्मनो चेदन्यगोक्षारं (वीर्यं)

लब्धं च ततः कामान्

बृ. जा. ३।१

लभते धारणाद्योगं येन शुद्धवति

लभते धारणाद्योगं येन शुद्धवति

मं. गी. ७।२६

लभते नासया यद्यत्तत्तदात्मैति

लभते नासया यद्यत्तत्तदात्मैति

दुर्वासी. १।१३

भावयेत्

१ यो. त. ७०

लभते चैवैकिकम्

मं. गी. ६।४३

लभते ब्रह्मनिर्वाणसूयः क्षीणकर्मपाः

लभते ब्रह्मनिर्वाणं शुद्धा

मं. गी. ५।२५

लभते योनिः

दुर्वासी. १।१०

लभन्ते युद्धमहियम्

मं. गी. २।३२

लम्बोदरोऽहं पुरुषोत्तमोऽहं विष्णो-

न्तकोऽहं विजयात्मकोऽहम्

देवप्रो. १३

लम्बुको ह वासो भवत्यनमो ह

वासो भवति

काव्य. ५।१२

लयमन्त्रहृत्तौ योगो दृष्टाङ्ग-

संयुतः

वराहो. ५।१६

लवणीगश्चित्तलयः कोटिशः

परिकीर्तितः

१ यो. त. २६

लयविक्षेपरहितं मनः कृत्वा

सुनिश्चलम् । यदा यात्यमनी-

भावं तदा तत्परमे पदम्

मैत्रे. ६।३४

लयस्तमश्च विक्षेपस्तेजः स्वेदश्च

शून्यता । एवं हि विष्णुबाहुत्वं

त्याज्यं ब्रह्मविज्ञारदेः

ते. नि. १।४१

लयात् (मनसः) सम्प्राप्यते

सौख्यं स्वात्मानन्दं परं पदम्

यो. नि. १।४२६

लयेन पलमात्रेण आसनस्थो न

खिद्यते । स्वल्पश्वासो भवे-

द्योगी स्वल्पोन्मेषयुतस्तथा

भमन. १।४३

लये सम्बोध्येषितं, विक्षिप्तं शन-

येत्पुनः । सकषायं विजानीयात्

समप्राप्तं न चालयेत्

मैत्रे. ४

ललाटमेकोन्यं, यथा द्यौस्त्वया

ललाटाच्चैव मे रुद्रो देवः क्रोधा-

१ वेत. १।१६

द्विनिस्तुतः

ना. महो. ४०

ललाटाक्रोधजो रुद्रो जायते

ललाटे ऊर्ध्वपुण्ड्रं मध्यच्छिद्रं

लवणमेतदुदकेऽनघायाय मा

सुमासी. ३।१

सि. नि. १

प्रातरुपसीदथाः

काव्य. ५।१११

लवणं तोयसम्पर्काद्यथा तीक्ष्ण-

मये भवेत् । मनोऽपि ब्रह्म-

सम्पर्कसिद्धौ ब्रह्ममयं भवेत्

भमन. १।२९

लवणेन सुवर्णं सन्दध्यात्सुवर्णेन

रजतं रजतेन त्रपु त्रपुणा

सीसं सीसेन लोहं लोहेन

दारु दारुणा चर्म

काव्य. ५।१०।७

लवकं न धावयेज्जनुसंरक्षणार्थं

वर्षवर्जमिति

कठव. ४

लाङ्गलानामेवैते बहुलमनुदात्तानु-
दात्तं चानुदात्तमवृद्धं वृद्धं..भवति संहितो. ३।२
लाभालाभयोः समो भूत्वा...
सञ्ज्यासेन देहत्यागं करोति
स परमहंसः जाबालो. ६
लाभालाभावसद्विद्धि जयाजय-
मसन्मयम् ते. वि. ३।५६
लाभालाभौ जयाजयौ भ. गी. २।३८
लाभालाभे समो भूत्वा...शरीर-
त्रयमुत्सृज्य सञ्ज्यासेनैव देह-
त्यागं करोति स कृतकृत्यो भवति ना. प. ३।८७
लाभालाभौ समौ कृत्वा गोवृत्त्या
प्राणसन्धारणं कुर्वन्...प्रणवा-
त्मकत्वेन देहत्यागं करोति
यः सोऽवधूतः तुरीया. ३
लाभालाभौ समौ कृत्वा गोवृत्त्या
सैश्वमाचरन्...सञ्ज्यासेन देह-
त्यागं करोति स परमहंस-
परिप्राजकः प. हं. प. ८
लभे चैव न हर्षयेत्, प्राण-
वायविकमात्रः स्यात् ना. प. ५।१८
लालनात्सिन्धुललना पालनात्
पालकः पिता । सुहृदुत्तमवि-
न्याधान्मनो मन्ये मनीषिणः महो. ५।८०
लिङ्गतृतीयभागेन भवेद्देहाः
समुच्छ्रयः शिवो. २।२
लिङ्गनालत्सिमाकृष्य वायुमप्य-
प्रतो मुने ।...मूलाधारस्य
विप्रेन्द्र मध्ये तं तु निरोधयेत् जा. द. ६।४०
लिङ्गमोक्षारमिष्यते शिवो. १।२४
लिङ्गरूपिणं मां सम्पूज्य चिन्त-
यन्ति सिद्धाः सिद्धिङ्गताः भस्मजा. २।१३
लिङ्गं प्रचरेच्छाखात् लिङ्गोप. २
लिङ्गं च कारणं चैव चिन्मात्रा-
महि निधते ते. वि. २।३२
(अथ) लिङ्गारसंहृत्य तेजसा
शरीरत्रयं संख्याप्य...मात्रा-
भिरोतानुज्ञाननुज्ञानिकल्परूपं
चिन्तयन्महेश्वरं तृप्तिहो. ३।४

लिङ्गाभावात्तु कैवल्यमिति ब्रह्मानु-
शासनम् ना. प. ४।३७
लिङ्गाभिषेकं निर्माल्यं गुरोरभिषेक-
तीर्थे महेश्वरपादोदकं जन्म-
मालिन्यं प्रक्षालयति १ रुद्रोप. ३
लिङ्गे सत्यपि खल्वस्मिन्ज्ञानमेव
हि कारणम् ना. प. ४।३३
लिप्यते न स पापेन भ. गी. ५।१०
लीयते हि सुषुप्तौ तन्निगृहीतं
न लीयते । तदेव निर्भयं ब्रह्म
ज्ञानालोकं समन्ततः अद्वैत. ३५
लीलया कल्पयामास चित्राः
सङ्कल्पतः प्रजाः । नानाचार-
समारम्भा गन्धर्वनगरं यथा महो. ५।१६२
लीलयैव यदादत्ते दिक्कालकलितं
वपुः । तदेव जीवपर्यायवासना-
वेशतः परम् । मनः सम्पद्यते
लोलं कलनाकलनोन्मुखम् महो. ५।१४५
(एवं) लीलाकामशरीरी स्व-
विनोदार्थं भक्तैः सहोत्कण्ठितै-
स्तत्र क्रीडति कृष्णः राघोप. ४।२
लुप्तपिण्डोदकक्रियाः भ. गी. १।४२
लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः भ. गी. १।८।३७
लेलायन्तीरिव सखिहाना इव
लेलिहसे प्रसमानः समन्तात्
लेशतः प्राप्तसत्ताकः स एव घनतां
शनैः । याति चित्तत्वमापूर्य
दृढं जाडयाय मेघवत् महो. ५।१७९
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् भ. गी. १।१२०
लोकत्रयेऽपि कर्तव्यं किञ्चिन्ना-
स्त्यात्मवेदिनाम् जा. द. १।२४
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव
लोकवासनया जन्तोः शास्त्र-
वासनयाऽपि च । देहवासनया
ज्ञानं यथावन्नैव जायते मुक्तिको. २।२
लोकसंग्रहमेवापि भ. गी. ३।२०
लोकसङ्ग्रहयुक्तानि नैवकुर्यान्नकारयेत् ना. प. ५।३३
लोकस्तदनुवर्तते भ. गी. ३।२१
लोकस्य द्वारमर्चिष्मत्पवित्रम् सुवर्ग. ५

लोकस्य नरकान्मृत्योर्महाभयाच्च
 संरक्षणी (गोपी) गोपीचं. ६
 लोकस्य संकृत्यै सर्वं सङ्कल्पते छांदो. ७।४।२
 लोकस्य सृजति प्रभुः भ. गी. ५।१४
 लोकं मे यजमानाय विन्दैष वै
 यजमानस्य लोक एतास्मि छांदो. २।२४।५
 लोका अलोका देवा अदेवा वेदा
 अवेदा अत्र स्तेनोऽस्तेनो भवति बृह. ४।३।२२
 लोका इति लोकविदो देवा इति
 च तद्विदः वैतथ्य. २१
 लोकातिहारपरोक्षसमापाद्याः
 संहितो. २।१
 लोकादिमग्निं तमुवाच तस्मै या
 इष्टका यावतीर्वा यथा वा । स
 चापि तत्प्रत्यवदद्यथोक्तमथास्य
 मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः कठो. १।१५
 लोकानुमहार्थं मायासहितं ब्रह्म
 संभोगवशादस्य चन्दनस्य
 वैभवम् गोपीचं. ८
 लोकानुवर्तनं त्यक्त्वा त्यक्त्वा देहानु-
 वर्तनम् । शास्त्रानुवर्तनं त्यक्त्वा
 स्वाध्यासापनयं कुरु [अक्षयुष. ४५+अध्यात्मो. ३
 लोकान्तरगतः कर्माजितफलं स
 एव भुङ्क्ते पैङ्गलो. २।७
 लोकान्नोद्विजते च यः भ. गी. १२।१५
 लोकान्प्रत्युत्थायिनस्त एवमे-
 वानुपरिवर्तन्ते बृह. ६।२।१६
 लोकान् सममान् वदनेर्ज्वलद्भिः
 भ. गी. ११।३०
 लोकान् समाहर्तुमिह प्रवृत्तः
 भ. गी. ११।३२
 लोकान्...सर्वाणि च भूतानि
 २ प्रणवो. १
 स्थावरजङ्गमान्यनुभवेयम्
 लोकायवाविसाङ्गयान्ता जीवविभ्रा-
 न्तिमाश्रिताः । तस्मान्मुमुक्षुभि-
 नैव मतिर्जीवेशवादयोः । कार्या
 किन्तु ब्रह्मतत्त्वं निश्चलेन विचार्य-
 चाम् [महो. ४।७४+ वराहो. २।५५
 लोकां लोकं दहति धर्माधर्मं दहत्य-
 भास्करममर्यादं निरालोकमतः
 परं दहति सुबालो. १५।१-२

लोकास्तं परादुर्योऽन्यत्रात्मनो
 लोकान्वेद [बृह. २।४।६+ ४।५।७
 लोकाँल्लोकविदः प्राहुराश्रमा इति
 तद्विदः । स्त्रीपुत्रपुंसकं लैङ्गाः
 परापरमथापरे वैतथ्य. २७
 लोकाः सङ्कल्पन्ते लोकानां सं स्यै
 (मा. पा.) छांदो. ७।४।२
 लोकीभवति सर्वमायुरेति ज्योर्जी-
 वति महान्प्रजया पशुभिर्भवति
 महान्कीर्त्या लोकान् निन्देत्तद्रतम् छांदो. २।१७।२
 लोके जन्म यदीदृशम् भ. गी. ६।४२
 लोके दातारं सर्वभूतान्युपजीवन्ति महाना. १७।५
 लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति महानां. १७।६
 लोके परमहंसपरिव्राजको दुर्लभ-
 तरो यद्येकोऽस्ति प. हं प. ११
 लोकेषु पञ्चविधं सामोपासीत छांदो. २।२।१
 लोके साधु प्रजायास्तनुं तन्वानः
 पितृणामनृणो भवति महाना. १७।७
 लोकेऽस्मिन् द्विविधा निष्ठा भ. गी. ३।३
 लोकौ ब्रह्म गुरुर्ब्रह्म शिष्यो ब्रह्म
 सदाशिवः । पूर्वं ब्रह्म परं
 ब्रह्म शुद्धं ब्रह्म शुभाशुभम् ते. वि. ६।३५
 लोको मामजमव्ययम् भ. गी. ७।२५
 लोको म्रियते जननाय च भवसं. १।२५
 लोकोऽयं कर्मबन्धनः भ. गी. ३।९
 लोपामुद्रायाः शक्तिकूटराजं पठित्वा
 वैष्णवी विद्या द्वादशे धामनि
 व्याचक्षते त्रि. ता. १।१६
 लोभक्रोधादयो दैत्याः कृष्णो. ९
 लोभं मोहं भयं दर्पं कामं क्रोधं
 च किल्बिषम् ते. वि. १।१२
 लोभः प्रवृत्तिरारम्भः भ. गी. १४।२२
 लोभादयः पशवः (शा. यज्ञस्य) गर्भो. ११
 लोभोपहतचेतसः भ. गी. १।३८
 लोभस्य ओषधिवनस्पतयो हृदयं
 निरभिधत २ ऐत. १।४
 लोभस्य ओषधिवनस्पतयो
 ललाटात्क्रोवजो रुद्रो जायते सुबालो. २।१
 लोमशां पशुभिः सह स्वाहा वैति. १।४।१

लोमशेन ह स्म वै चर्मणा पुरः
 वीणा अभिह्वयति ३ प्रेत्, २।५।२
 लोम दिङ्गारस्त्वक्प्रस्तादो मा० स-
 मुदीयोऽस्थि प्रतिह्वारो मज्जा
 निषनसेत्तु ज्ञायज्ञीयमङ्गेषु प्रोतम् ऊंदो, २।१९।१
 लोमाधरोष्ठमथर्ववेदः प्रीणातु आचम, ४
 लोमाति धूमो योनिरर्चयेदन्तः
 करोति तेऽङ्गारा अभितन्वा
 विस्तुलिङ्गाः ब्रुव, ६।२।१३
 लोमाति बहिः (यज्ञस्य) महान्तः १८।१
 लोमाता काचनं वरम् इतिहा, ४९
 लोहितशुक्लरूपगुणसमीगुणसाभ्या-
 निर्वान्यासुलप्रकृतिरासीत् पैङ्गलो, १।२

लोहितं तिलकं व्यायेत् शुक्लका, १।३
 लोहिनी धौर्ध्ववति ३ प्रेत्, २।५।४
 लौकिकवैदिकमप्युपसंहृत्य सर्वत्र
 पुण्यापुण्यवर्जितो ज्ञानाज्ञान-
 मपि विहाय... देहत्यागं
 करोति यः सोऽवधूतः तुरीया, ३
 लौकिकवैदिकसामर्थ्यं स्वचतुर्दश-
 करणप्रवृत्तिं च पुत्रे समारोप्य
 तदभावे शिष्ये तदभावे स्वा-
 त्मन्येव... तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थ-
 स्वरूपासुसन्धानं कुर्वन्नुदीची
 दिशं गच्छेत् प. हं, प. ५
 लौकिकाम्रीनुदरामौ समारोपयेत् आरुणि, २

स

वक्त्रारं जीवजीवं च उदानं
 शङ्खवर्णकम् व्या. वि. ९६
 वक्त्रमेवाप्नोति यो वक्तव्य-
 वेत्तास्त्वमेति सुबालो, ९।६
 वक्त्रा चास्य त्वाहगन्धो न लभ्यो... कठो, १।२२
 वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशम्भित् म.मी. ११।२७
 वक्त्रेण सीतकादपूर्वकं वायुं गृहीत्वा
 वक्त्राशक्तिं कुंभयित्वा नासाभ्यां
 रचयेत्, तैर्न क्षुत्तृष्णालस्य-
 निद्रा न जायते शांडि, १।७।१४
 वक्त्रेणापूर्य वायुं हुतवह्निलये-
 ऽपानमाकृष्य धृत्वा स्वाङ्गुष्ठा-
 वङ्गुलीभिर्वरकरतलयोः षड्वि-
 देन निरुध्य । ... पश्यन्ति
 प्रत्ययांश्च प्रणवबहुविधग्यान-
 संलीनचित्ताः सौभतय, ७
 वक्त्रेणोत्पन्ननालेन तोब्रमाकर्ष्ये-
 तारः । पुनं वायुर्ग्रहीतव्यः
 पूरकस्येति लक्षणम् क. ना, १३
 वक्त्रेणोत्पन्नमेव म.मी. १०।१६
 वक्त्रेणोत्पन्नं हुमिति चतुर्थः क. पू. ता, १।११
 वक्त्रोत्पन्नस्य प्रपीड्य सुनिर्ग-
 मोति च सामाजिणा... तैर्य

व्याधिविनाशिनी सुसहती
 मुद्रा नृणां कथ्यते श्री. च. ६६
 वक्षोऽन्यस्तहनुर्निपीड्य सुषिरं योनेश्च
 वामाङ्घ्रिणा हस्ताभ्यासु-
 धारयन्प्रविततं पादं तथा
 दक्षिणम् । आपूर्य श्वसनेन
 कुक्षियुगलं बध्वा शनै रैच्छये-
 देषा वातकृन्नाशिनी ननु महा-
 मुद्रा नृणां प्रोच्यते व्या. वि. ९३
 वक्षो वसत्यस्य वरां वरिष्ठं वाकं
 ब्रह्माना वक्ष्ये समस्तं तस्मै
 वरिष्ठाय वरप्रवृद्धये स्वाहा वारमा, ९।५
 वक्ष्यन्ते कारणान्यष्टौ स्मृतिर्यै-
 रुपचर्यते आशुर्वे, २०
 वक्ष्यामि भरतर्षभ म. मी. ८।२३
 वक्ष्यामि हितकाम्यया म. मी. १०।६
 वचनात्पुरुषो हान्यक्तमुत्तेज
 त्रिगुणं मुक्ते वैजा, ६।१०
 वचनादानगमनविश्रमार्जन्-
 पञ्चकम् वराहो, १।१२
 वचनादानगमनविसर्गान्ब्रह्मको-
 पेक्षामुदयोऽनङ्गमुमादिवाक्य-
 योऽसौ भावतो, ३

वचनादानगमनविसर्गानन्दास्त-

विषयाः (कर्मेन्द्रियाणां)

पैङ्गलो. २।३

वचनादानगमनविसर्गानन्दाः

पृथिवीकार्थकर्मेन्द्रियविषयाः

त्रि. मा. १।४

वचसा तज्जपेन्नित्यं वपुषा तज्जपेन्नित्यं

असेत् । मन्त्रसा तज्जपेन्नित्यं

तत्परं श्रोतिरोमिति

श्री. चू. ६७

वचसो वाग्व्यापारः

ना. प. ६।३

वचनपञ्चसमुत्पत्तौ मणयश्चैक-

विंशतिः । सुषुम्नासां स्थिताः

सर्वे सूत्रे मणिगणा इव

यो. शि. १।११८

वज्रदेहं वज्रपुच्छं वज्रकायः...

लांगूलो. ३

वज्रनखाय विद्यदे तीक्ष्णदंष्ट्राय

धीमहि । तन्नो नारसिंहः

(नृसिंहः) प्रचोदयात्

महाना. ३।९

[त्रि. म. ना. ७।१०+

वनदु. १३७

वज्रपञ्चरत्नैश्च यः कुर्यात्प्रस-

धारणम् । स सर्वभयनिर्मुक्तः

साक्षाच्छिवमयो भवेत्

वज्रप. ६

वज्रपञ्चरेण भस्मधारणं कुर्यात्

वज्रप. १

वज्रशक्तिपाशाकुशगदाभिमुख-

चन्द्रमुखलपद्यानि द्वादशे..

सूर्यता. ५।१

वज्रस्तम्भवदरमानमवलम्ब्य

स्थितोऽस्म्यहम्

१ सं. सो. २।५०

वज्रपादं पिङ्गुनैत्रं कनकमयलक्ष-

त्कुण्डलाक्रान्तगण्डं...

अथायन्तं शम्भुचन्द्रं पुनःपरिवृष्टं

सत्त्वसारं प्रसन्नम्

लांगूलो. २

कुञ्जोली चाक्षरोली च सहजोली

त्रिधा मता

१ यो. त. ३७

वज्रोलीमन्यसेद्यस्तु स योषी

विद्विधाजन्तम्

१ यो. त. १२६

कुञ्जोऽपि शार्ङ्गः शर्म मे भव

यत्पापं तज्जिवारय

आशुनि. ३

(तथापि) वटबीजसामान्यमेव-

मन्त्रेकादश्याव्यतिरिक्तान्वदात्

सबीजानुत्पाद्य तन्न तज्ज पूर्ण

सत्तिष्ठत्येवमेवैषा माया स्वा-

व्यतिरिक्तानि पूर्णानि क्षेत्राणि

दर्शयित्वा जीवेशवभासेन

करोति माया चाविद्या च

स्वयमेव भवति

नृसिंहो. १।३

वटबीजस्थमिव दत्तबीजस्थं

सर्वं जगत्

वत्तामे. १।१

वटवामिः शरीरस्थो ह्यस्थिमध्ये

प्रवर्तते

यो. शि. ५।३०

वटवेतराभवदश्चवृष इतरः

वृह. १।४।४

वत्सरशतं ब्रह्ममानेन ब्रह्मणः

परसायुःप्रमाणम्

त्रि. म. ना. ३।४

वत्सस्तु स्मृतयश्चास्य तत्सम्भूतं तु

योमथम् । आगाव इति मन्त्रेण

धेनुं तत्राभिमन्त्रयेत्

वृ. जा. १।३

(अथ) वत्सं जातमाहुरवृणाद इति

वत्सं पयसा पुनानाः

वृह. १।५।३

वदन्ति बहुमेदेनवादिनोयोगभूमिकाः

चिन्म. १।५।२

वदन्ते चात्मनो भावं वेदाव्योप-

निप्रविष्टः

अमर. १।५।४

वदन्त्येव परं ब्रह्म बुद्धिमन्त्रस्तु सूरयः

अमर. १।५।५

वदन् बाक् पश्यन्श्चक्षुः शृण्वन् श्रोत्रं

मन्वानो मनस्तान्यस्यैतानि

कर्षणामागयेव

वृह. १।५।७

वदन्तै लज्ज वदति न हि वक्तुर्बलं

विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात्

वृह. १।५।२६

वदिष्यन्ति तदाहिताः

य. ती. २।३६

वदिष्यास्येवाहमिति बारदधे

वृह. १।५।२१

वदेदुन्मत्तवद्विद्वान् गोचर्यानेगमश्चरेत्

ना. प. ५।३७

वधाय दत्तं तमहं कृतामि

चिन्म. १।४।४

वनभाराभष्टादशजायस्ते पुरुषोत्तमान्

चि. वि. २

वनस्पतयश्चोषण्यो लोमानिपरिचक्षते

मुद्रका. १७

वनस्पतयः क्षान्तिर्विद्येदेवाः

शान्ति...[का. सं. ३६।१७+

प्रवर्त. १७

वनाविनिविहारेण चित्तोपशम-

शोभिना । असङ्गमुत्तमोक्तयेन

कालं नश्यति नीतिमान्

आशुप. २०

वनितादिषु वाक्कर्ममनोभि-

तिरूपैः शुचिः

रामर. ५।२

वनी भूत्वा प्रज्जनेत्

आशुलो. ५

वने शुष्कं शकृत् सङ्गृह्य कल्पोक्त-

विधिना कल्पितमुपकल्पं

स्यात् (भस्म)

वृ. जा. ३।३४

वन्दे रुद्रप्रियां नित्यमुत्पन्नां

कामरूपिणीम् । उल्कामुखीं

रुद्रजटीं नागपुष्पशिरोरुहाम्

वनदु. ८५

वैष्णोक्रुमारवचने भीतिश्चेदस्ति

किञ्चन

ते. वि. ६।७३

वन्ध्यापुत्रो न तत्त्वेन मायया

वाऽपि जायते

अद्वैत. २८

वपुर्वैदिकणाकारं स्फुरितं व्योम्नि

पश्यति

महो. ५।१५२

वपुर्नाभमिव प्रवृत्तिं सर्वं हेयं मत्वा

साधनचतुष्टयसम्पन्नो यः सन्न्य-

स्यति स एव ज्ञानसङ्ग्यासी

१सं.सो. २।१३

वपुर्नाहारवधस्य भाति सर्वेषणा-

दिषु । तस्याधिकारः सन्न्यासे

त्यस्तदेहाभिमानिनः

मैत्रे. २।१८

वयमाद्यस्य दातारः पिता त्वं

मातरिश्च नः

प्रश्नो. २।११

वयमेतद्गुणमवष्टभ्य विधारयामः

प्रश्नो. २।२

वयं कलार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः

मुण्ड. २।९

वयं देवस्य भोजनमित्याचामति

छांदो. ५।२।७

वयं नाम प्रपन्नवामा घृतेना- (घृतस्या)

स्मिन्यङ्गे धारयामा नमोभिः

महाना. ८।९

[+ते. आ. १०।१०।२+क्र.मं.

४।५८।२

[+वा. सं. १७।९०

वयं महाचारिन्निदमुपास्महे (मा.पा.)

छांदो. ४।३।७

वयं महाचारिन्निदमुपास्महे दत्तास्मै

मिहामिति

छांदो. ४।३।७

वयं सोमं व्रते तव मनस्तनुषु विभ्रतः

लिङ्गोप. १

[+क्र.मं. १०।५७।६+वा.सं. ३।५६

वयं स्वर्गलोकमेष्यामो वयमेष्यामः

सहवै. १

(ॐ) वयः सुपर्णा चपसेदुरिन्द्रं

श्रियमेधां क्रुष्यो नाधमानाः

महाना. १६।७

[+वा.सं. १+क्र.मं. १०।७३।११

[+धाम. १।३१९

ते.आ. ४।४२।३

वयांसि वैनद्विषभीरमिति

चुह. ३।९।२५

वयो दात्रे मयो मह्यमस्तु

प्रतिग्रहीत्रे

चित्यु. १०।१,४

वरणायां ना-(-स्यां) श्यां च

मध्ये प्रतिष्ठितः [जाबालो. २+ रामो. ३।२

वरदं सर्वभूतानां सर्वं व्याप्यैव

तिष्ठति

१ प्रणवो. ११

वराकृतप्राप्तिः स्नानम्

आत्मपू. १

वराह एनं हन्ति, मर्कट एनमास्क-

न्दति (दुःस्वप्ने)

३ ऐत. २।४।७

वराहरूपिणं मां ये भजन्ति मयि

भक्तिः । विमुक्ताज्ञानतत्कार्या

जीवन्मुक्ता भवन्ति ते

वराहो. १।१६

वरुण एव सविताऽऽपः सावित्री स

यत्र वरुणस्तदापो यत्र वा आप-

स्तद्वरुणस्ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम्

सावित्र्यु. २

वरुणमेवाप्येति यो वरुणमेवास्तमेति

सुबालो. ९।४

वरुणस्य विराट्

चित्यु. ९।१

वरुणेन मुखेन न वै देवा अश्रन्ति

न पिबन्ति

छांदो. ३।८।१

वरुणेनैव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति

छांदो. ३।८।३

वरुणोऽपामघमर्षणस्तस्मात् प्रमुच्यते

महाना. ६।८

वरुणो यादसामहम्

म.गी.१०।२९

वरुणोऽर्यमाः चन्द्रमा कला कलि-

र्धाता...सर्वं नारायणः

सुबालो. ६।१

वरेण्यं श्रेष्ठं भजनीयमक्षरं

नमस्कार्यम्

त्रि. ता. १।६

वरो दक्षिणा, वरेणैव वरं स्पृणो-

त्यात्मा हि वरः

सहवै. २०,२२

वर्गोऽसि पाप्मानं मे वृद्धीत्ये-

तयैवाऽऽवृता मध्ये सन्तमुद्वर्गो-

ऽसि पाप्मानं म वृद्धि

कौ. त. २।७

वर्चोदास्त्वमसि सूर्यस्य

महाना. १७।१५

वर्जयित्वा स्त्रियाः सङ्गं कुर्यादभ्यास-

मादरात् । योगिनोऽङ्गे सुगन्धश्च

जायते बिन्दुधारणात्

१ यो. त. ६२

वर्णत्रयात्मकाः प्रोक्ता रेचपूरक-

कुम्भकाः । स एष प्रणवः प्रोक्तः

प्राणायामस्तु तन्मयः

जा. द. ६।९

वर्ण रत्नं कामदं च सर्वाधिन्याधि-
 मेषजम् । सृष्टिस्थितिलयादीनां
 कारणं सर्वशक्तिधृक् पञ्चम. १२
 वर्णं शुद्धं तमोमिश्रं पूर्णबोधकरं
 स्वयम् । धामत्रयनियन्तारं
 धामत्रयसमन्वितम् पञ्चम. ८
 वर्णः स्वरः । मात्रा बलम् । साम
 सन्तानः तैत्ति. १।२।१
 वर्णाक्षरपदाङ्कशो विभक्त्यामृषि-
 निषेवितामिति वाचं स्तुवन्ति २ प्रणवो. १७
 वर्णादिधर्म हि परित्यजन्तः
 स्वानन्दतृप्ताः पुरुषा भवन्ति मैत्रे. १।१८
 वर्णानां ब्राह्मण एव प्रधान इति
 वेदवचनानुरूपं स्मृतिभिरप्युक्तम् व. सू. २
 वर्णाश्रमधर्मकर्मसङ्कल्पो बन्धः निरा. उ. २१
 वर्णाश्रमं सावयवं स्वरूपमाद्यन्त-
 युक्तं क्षातिकृच्छ्रमात्रम् । पुत्रा-
 विदेहेष्वभिमानशून्यं भूत्वावसे-
 त्सौख्यतमे ह्यनभ्यते मैत्रे. १।१९
 वर्णाश्रमाचारयुता विमूढाः
 कर्मानुसारेण फलं लभन्ते मैत्रे. १।१८
 वर्णाश्रमाचारविशेषाः पृथक्पृथक्
 शिखावर्णाश्रमिणामेकैव परब्र. ६
 वर्णाश्रमाद्यो देहे मायया परि-
 कल्पिताः नात्मनो बोधरूपस्य
 मम ते सन्ति सर्वदा । इति यो
 वेद वेदान्तैः सोऽतिवर्णाश्रमीभवेत् ना. प. ६।१६
 वर्णाश्रमेषु ये धर्माः शास्त्रोक्ता नृप-
 सत्तम । तेषु तिष्ठन्नरो विष्णु-
 माराधयति नान्यथा भवसं. २।६१
 वर्णो ह वै पुरुषः स लोकाधि-
 श्रितो भवत्यनुष्टुब्धे पुरुषः ग. पू. ३।१
 वर्ण्यन्ते स्वस्तिकं पादतलयो-
 बभयोरपि । पूर्वोत्तरे जानुनी
 द्वे कृत्वाऽऽसनमुदीरितम् त्रि. ब्रा. २।३५
 वर्त एव च कमणि भ. गी. ३।२२
 वर्तते कामकारतः भ. गी. १६।२३
 वर्तते विदितात्मनाम् भ. गी. ९।२६
 वर्तन्त इति धारयन् भ. गी. ५।९

वर्तमानानि चार्जुन भ. गी. ७।२६
 वर्तेतात्मैव शत्रुहन् भ. गी. ६।६
 वर्त्याधारस्नेहयोगाद्यथा दीपस्य
 संस्थितिः । अन्तर्याण्डोपयोगा-
 दिमौ स्थितावात्मशुची तथा मैत्रा. ६।३६
 वर्षति स उद्गीथः [छां. उ. २।३।१+ २।१५।१
 वर्षत्येष यथा धर्माभृतधाराः सहस्रशः अभ्यात्मो. ३८
 वर्षन्ते न निन्देत्तद्रतम् छांदो. २।१५।२
 वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य
 विद्युतः । रोहन्तु सर्वबीजान्यव
 ब्रह्म द्विषो जहि [वनदु. ३८, ४०+ ऋ. खि. ५।८।१
 वर्षस्य रेत ओषधयः १ ऐत. १।३।१
 वर्षस्य संकृष्या अन्नं सङ्कल्पयते छांदो. ७।४।२
 वर्षा उद्गीथः छांदो. २।१६।१
 वर्षाभ्योऽन्यत्र यत्स्थानमासनं तदु-
 दाहृतम् । उक्तालान्वादिपात्रा-
 णामेकस्यापीह सङ्ग्रहः १ सं. सो. २।८०
 वर्षाभ्योऽन्यत्र वर्षासु मासांश्च
 चतुरो वसेत् । द्विरात्रं वा
 वसेद्दामे भिक्षुर्यदि वसेत्तदा ना. प. ४।१५
 वर्षासु ध्रुवशीलोऽष्टौ मासानेकाकी
 यतिश्चरेत् भारुणि. ४
 वर्षास्वेकत्र तिष्ठेत् स्थाने पुण्य-
 जलावृते (यतिः) ना. प. ४।२१
 वल्मीकताडनादेव मृतः किन्तु महोरगः वराहो. २।४०
 वशः कौलेयकेनेव ब्रह्मन्मुक्तोऽस्मि
 चेतसा महो. ३।१९
 वशिन्येका निष्क्रियाणां बहूनामेकं
 बीजं बहुधा या करोति गुह्यका. ७०
 वशी सर्वस्य लोकस्य स्थावरस्य
 चरस्य च श्वेताश्व. ३।१८
 वशे सततनम्रः श्र्यात्संहत्याङ्गानि
 कूर्मवत् । तत्सम्मुखं च निर्गच्छे-
 जमस्कारपुरःसरः शिवो. ७।६७
 वश्यमायत्वमेकं सर्वज्ञत्वं च तस्य तु सरस्व. ३९
 वश्याय पङ्कजैर्विद्वान् घनार्थी
 मोदकैर्दुनेत् ग. पू. २।१३
 वश्यां स्फुरन्तीमसतीं निपीड्य
 सम्भक्ष्य सिद्धेन स एव वीरः नृसिंहो. ४।३

वक्ष्यो वाणी शशः पाशः द्वेषोऽङ्कुशः

वक्ष्यो वाणी शशः पाशः द्वेषोऽङ्कुशः

[+क्र.मं. १०१९०६+

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

[छांदो. २।५।१+

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

वक्ष्यो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा

भावनी. ६

चित्त्यु. १२।३

पु. सु. ६, १४

२।१६।१

छांदो. ८।५।३

ना. पू. ता. ६।१

शरभो. २०

छांदो. ५।२।५

सू. ६।१।६

आर्षे. ४।३

महाना. १७।१५

ग. पू. ता. १।१२

छांदो. ३।६।४

छांदो. ३।६।३

अ. गी. १०।२६

मे. २।३

वसोद्वाराणामिन्द्रनगरं तद्वसुः

पर्यवारयन्त

२ प्रणवो. ७

वसोः पवित्रमग्निः सवितुश्च रश्मयः

पुनन्त्वन्नं ममदुष्कृतं च यद्वस्यत्

मेवा. ६।६

वस्तुतो नोपादानमत एव नोपादेयम्

स्वसे. १

वक्ष्यमपि भूमौ वाऽप्यु वा विसृज्य

....ब्रह्माहमस्मीति तत्त्वमस्यादि-

वाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं कुर्व-

न्नुदीचीं दिशं गच्छेत्

प. हं. व. ६

वक्ष्यमुच्छिष्टपात्रमिव (त्यजेद्यतिः)

ना. प. ७।१

वस्त्वभावं सुबुधैव निःसृजं विनिवर्तते

अ. शा. ७।३

वस्त्वेषं परब्रह्म नारायणः संतापनः

ना. पू. ता. ५।६

वस्त्वेतमेवं प्रादेशमात्रमभिविमानं-

मात्मानं वैधानिरमुषास्ते, च

सर्वेषु लोकेषु सर्वेषु भूतेषु सर्वे-

ष्वात्मस्वन्नमत्ति

छांदो. ५।१।४

वहन्ति ह वा एनं तन्तिस्मिन्ब्रह्म,

य एवं वेद

१ ऐत. ३।६।१

वह्निर्ग्नयं तच्च अंगत्रयं यदुणत्रयं

तच्च शक्तित्रयं स्यात्

सि. जि. १५

वह्निर्वैष्णवं चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे दिशः

ओत्रे प्राणमाहुश्च वायुः

विष्णुह. १।४

वह्निस्त्रिगुणं एतं च रेफाक्षरं

समुज्ज्वलम्

गी. त. ९।१

वह्निःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाश्रोणानि

त्रि. प्रा. १।३

वह्नेर्यथा योनिगतस्य मूर्तिर्न दृश्यते

नैव च लिङ्गनाशः

शेता. ३।१३

वह्नेश्च यद्वत्खलु विसृजिष्याः

सूर्यान्मयूखाश्च तथैव तत्त्वं ।

प्राणादयो वै पुनरेव तस्माद्-

भ्युचरन्तीहयथाक्रमेण [मित्रा. ६।१६ + ६।३१

वहो आनिष्ठमारीप्य रेफाक्षरं-

समुज्ज्वलम्

१ गी. त. ९।२

वहो विवर्धमाने तु सुखमन्मादि जीर्णं

वराहो. ५।४०

वंशस्तु भगवान् रघुः शृङ्गमिन्द्रः

समोदुरः

कुण्ठो. ४

वाकी वा अनुवाको वाकं वाकं

संजुषमाणी देवस्य स्वं स्वगुप्तं

स्वं च जीवति च ज्योतिषे स्वाहा

वा. भा. ३।१

वाक् च वक्तव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
 वाक्त्वा प्राणं रेह्यथ यत्र ३ ऐत. १।६।६
 तूष्णीं वा भवति स्वपिति वा चिन्त्यु. १।१
 तदा वाग्भवति तैत्ति. १।६।२
 वाक्पतिर्होता कौ. त. २।२
 वाक्पतिश्चक्षुःपतिः, श्रोत्रपतिर्वि- शारीरको. १
 ज्ञानपतिः, एतत्ततो भवति पैङ्गलो. २।३
 वाक्परस्ताच्चक्षुरारुन्धे तैत्ति. १।६।२
 वाक्पाणिपादपायूपस्थाख्यानि कौ. त. २।२
 कर्मेन्द्रियाणि शारीरको. १
 वाक्पाणिपादपायूपस्थास्तद्वृत्तयः पैङ्गलो. २।३
 (कर्मेन्द्रियाणां) ३ ऐत. १।१।२
 वाक् पूर्वरूपं, मन उत्तररूपं, प्राणः १ ऐत. १।४।६
 संहितेति शूरवीरो माण्डूकेयः
 वाक्प्राविशदशयदेव
 वाक्यमप्रतिबद्धं सत्प्राक्परोक्षाव-
 भासिते । करामलकवद्बोध-
 मपरोक्षं प्रसूयते
 वाक्यार्थस्य विचारेण यदाप्नोति
 शरच्छतम् । एकवारजपेनैव
 ऋष्यादिध्यानतश्च यत्
 (अथ) वाक्श्रोत्रं चक्षुर्मनः
 प्राण इत्येकेऽथ बुद्धिर्धृतिः
 स्मृतिः प्रज्ञानमित्येके
 वाक् सन्धिः, जिह्वा सन्धानम्
 वाक्संहितेति पञ्चालचण्डः,
 वाचा वै वेदाः सन्धीयन्ते
 वागध्यात्मं, वक्तव्यमधिभूतं, अग्नि-
 रुपत्राधिदैवतं, नाडी तेषां
 निबन्धनम्
 वागष्टमी ब्रह्मणा संविदाना
 वाग्यष्टमी ब्रह्मणा संविक्ते
 वागनुष्टुबेतद्वाचमनुब्रूमः
 (तस्य) वागर्चिश्चक्षुरङ्गाराः
 श्रोत्रं विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्ने-
 तस्मिन्नाग्नौ देवा अन्नं जुहति
 वागस्मात्सर्वाणि नामान्यभि-
 विस्तृजते, वाचा सर्वाणि
 नामान्याप्नोति

वागुदक्कामदवदन्नभन्निबन्नास्तैव १ ऐत. १।४।४
 वागेव गीथोच्चगीथा चेति स उद्गीथः बृह. १।३।३३
 वागेवदेवाः, मनःपितरः, प्राणोमनुष्याः बृह. १।५।६
 वागेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः,
 सोऽग्निना ज्योतिषा भाति च
 तपति च कीर्त्या यशसा
 ब्रह्मवर्चसेन छांदो. ३।१।८।३
 वागेवर्क प्राणः सामोमित्येतदक्षर-
 मुद्गीथस्तद्वा एतन्मिथुनं यद्वार्क
 च प्राणश्चर्क च साम च छांदो. १।१।५
 वागेवर्क, प्राणः साम, तदेत-
 दस्यामृच्यध्यूढं च साम तस्मा-
 दृच्यध्यूढं च साम गीयते छांदो. १।७।१
 वागेवर्गेदो मनो यजुर्वेदः प्राणः
 सामवेदः बृह. १।५।५
 वागेव सम्राडिति होवाच-वाचा वै
 सम्राड् बन्धुः प्रज्ञायते बृह. ४।१।२
 वागेव ह्यनुजानाति चिन्मयो
 ह्यमोङ्कारश्चिदेव ह्यनुज्ञाता
 वागेवान्निर्वाचा ह्यन्नमद्यतेऽस्ति ह वै
 नामैतद्यद्विरिति
 वागेवायतनमाकाशः प्रतिष्ठा
 प्रज्ञेत्येनदुपासीत बृह. ४।१।२
 वागेवायं लोकः, मनोऽन्तरिक्षं,
 लोकः प्राणोऽसौ लोकः बृह. १।५।४
 वागेवास्मा एकमङ्गमुदूढं तस्यैनाम
 परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा
 वागेवास्य ज्योतिर्भवतीति, वाचै-
 वायं ज्योतिषास्ते पत्ययते...
 वागेवेदं सर्वमनुजानाति चिन्मयो
 ह्यमोङ्कारश्चिद्वीदं सर्वं
 निरात्मकमात्मसात्करोति
 वागेवेदं सर्वं, न ह्यशब्दमिवेहास्ति,
 चिन्मयो ह्यमोङ्कारश्चिन्मय-
 मिदं सर्वम्
 वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति
 वाचमुपास्वेति
 वागोजः सहोजो मयि प्राणापानौ
 [प्रवर्गा. १+

वागीर्वाचो ह गिर इत्याचक्षते

छांदो. १।१।६

वाग्वि बृहती, तस्या एष पतिः

(उद्गीथः)

छांदो. १।२।११

वाग्वि विज्ञाता वागेनं तद्ब्रूत्वाऽवति

बृह. १।५।८

वाग्धोचक्राम, सा संवत्सरं प्रोष्या-

गत्योवाच कथमशकत महते

जीवितुमिति

बृह. ६।१।८

वाग्धोता, दीक्षा पत्नी, वातोऽध्वर्युः

चित्यु. ६।१

वाग्दण्डः कर्मदण्डश्च मनोदण्डश्च

ते त्रयः । यस्यैते नित्यता दण्डाः

स त्रिदण्डी महायतिः

ना. प. ६।११

वाग्दण्डे मौनमातिष्ठेत्कायदण्डे

त्वभोजनम् । मानसे तु कृते

दण्डे प्राणायामो विधीयते

१ सं.सो.२।९७

वाग्देवी गायत्री शरणमहं प्रपद्ये

गायत्रीर. १०

वाग्व्यष्टमी ब्रह्मणा संवित्ता...(मा.पा.)

बृह. २।२।३

वाग्वा अनुष्टुप् वाचैव प्रयन्ति वा-

चो-(चैवो-) णन्ति, परमा वा

एषा छन्दसां यदनुष्टुबिति

[नृ. पू. १।१+]

ग. पू. १।६

वाग्वा इदं सर्वं भूतं गायति च

प्राथते च

छांदो. ३।१२।१

वाग्वा ऋग्वेदं विज्ञापयति यजुर्वेदं

सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमिति-

हासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं..

छांदो. ७।२।१

वाग्वा ओङ्कारो वागेव ह्यनुजानाति

चिन्मयो ह्ययमोङ्कारश्चिदेव

ह्यनुज्ञाता

नृसिंहो. ८।६

वाग्वाओङ्कारोवागेवेदं सर्वमनुजानाति

नृसिंहो. ८।४

वाग्वा ओङ्कारो वागेवेदं सर्वं,

न हासब्धमिवेहास्ति

नृसिंहो. ८।२

वाग्वा साम्नो भूयसी

छांदो. ७।२।१

वाग्वेदिः, अधीतं बर्हिः, केतो अग्निः

चित्यु. १।१

वाग्वै ब्रह्मः, स नाम्नाऽतिप्राहेण

गृहीतो वाचा हि नामान्य-

मिवदति

बृह. ३।२।३

वाग्वै बृहती तस्या एष पतिस्त-

स्मादु बृहस्पतिः

बृह. १।३।२०

वाग्वै ब्रह्म, तस्या एष पति-

स्तस्मादु ब्रह्मणस्पतिः

बृह. १।३।२३

वाग्वै ब्रह्मेत्यवदतो हि किं स्यात्

बृह. ४।१।२

वाग्वै माता, प्राणः पुत्रः

३ ऐत. ३।६।६

वाग्वै यज्ञस्य होता तद्येयं वाक्

सोऽयमग्निः स होता स मुक्तिः

साऽतिमुक्तिः

बृह. ३।१।३

वाग्वै रथन्तरस्य रूपं, प्राणो

बृहतः, उभाभ्यामु खलु संहिता

३ ऐत. १।६।१

सन्धीयते वाचा च प्राणेन च

बृह. ६।१।२

वाग्वै वसिष्ठा, वसिष्ठः स्वानां भवति

वाग्वै सम्राट् परमं ब्रह्म, नैनं

वाग्जहाति

बृह. ४।१।२

वाग्वै सामेष सा चामश्चेति

तत्साम्नः सामत्वम्

बृह. १।३।२२

वाङ्मामदेवतावरोधिनी सा

मेऽमुष्मादिदमवरुन्धाम्

कौ. त. २।३

वाङ्मनश्चक्षुश्चोत्रजिह्वाघ्राणरेतो-

बुद्ध्याकृतिसङ्कल्पा मे शुभ्यन्तां

ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा

भूयासः स्वाहा

महाना. १।४।८

वाङ्मनःकायसङ्कोभं प्रयत्नेन

विवर्जयेत् । रसमाण्डमिवा-

त्मानं सुस्थिरं धारयेत्सदा

अमन. २।५।५

वाङ्मनो गोचरश्चाहं सर्वत्र

सुखवानहम्

ते. वि. ३।३।८

वाङ्मयस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषो-

ऽयमेव स योऽयमात्मा

बृह. २।५।३

वाङ्मयं तप उच्यते

भ. गी. १।७।१५

वाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मात्पञ्चं वक्त्र-

समन्वितम् । सूर्यो वामश्रोत्र-

बिन्दुः संयुताष्टतृतीयकः

१ वेङ्ग्यु. १६

वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे

वाचि प्रतिष्ठिता विरावीमेपधि

२ ऐत. ६।१

वाच ऋग्रस ऋचः सामः रसः

साम्न उद्गीथो रसः

छांदो. १।१।१

वाचमष्टापदीमहमित्यष्टो हि

चतुरशराणि भवन्ति

१ ऐत. ३।६।२

वाचा ह्यनमद्यतेऽस्ति ह वै नामैत-
 द्यदत्रिरिति सर्वस्यात्ता भवति
 सर्वमस्यान्नं भवति बृह. २।२।४
 वाचिकोपांशुरुचैश्च (जपः) द्विविधः
 परिकीर्तितः । मानसो मनन-
 न्यानभेदाद्वैविध्यमाश्रितः जा. द. २।१४
 वाचि तृप्यन्त्याममिस्तृप्यति छांदो. ५।२।१२
 वाचि वै तदैन्द्रं प्राणं न्यचायन्नित्ये-
 तत्तदुक्तं भवति १ ऐत. ३।५।२
 वाचि हि खल्वेष एतत्प्राणः
 प्रतिष्ठितो गीयते बृह. १।३।२७
 वाचि हि प्राणं जुहुमः, प्राणे वा वाचं ३ ऐत. २।६।३
 वाचे स्वाहा प्रतिष्ठायै स्वाहेत्यग्नौ
 हुत्वा मन्ये सः स्रवमवनयति बृह. ६।३।२
 वाचैव प्रयन्ति वाचो-(चैवो)यन्ति
 [नृ. पू. १।१+ ग. पू. १।६
 वाचोऽग्निः (निरभिद्यत) २ ऐत. १।४
 वाचो यस्मान्निवर्तन्ते तद्वक्तुं केन
 शक्यते ते. वि. १।२१
 वाचो वाच भूयोऽस्तीति तन्मे
 भगवान् ब्रवीतु छांदो. ७।२।२
 वाचो वीर्यं तपसाऽन्वविन्दन् चित्त्यु. १।१२
 वाचो ह गिर इत्याचक्षते छां. उ. १।३।६
 वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य
 प्राणश्चक्षुषश्चक्षुरितिमुच्यं धीराः
 प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति केनो. १।२
 वाच्यं लक्ष्यमिति द्विधाऽर्थसरणी-
 वाच्यस्य हि त्वरूपदे वाच्यं
 भौतिकमिन्द्रियादिरपि यल्लक्ष्यं
 त्वमर्थश्च सः । वाच्यं तत्पद-
 मीशिताकृतमतिर्लक्ष्यं तु सच्चि-
 त्सुखानन्दब्रह्म तदर्थ एष च
 तयोरैक्यं त्वसीदं पदम् शु. र. ३।१०
 वाचपेयः पशुहर्ता, अघ्वयुरिन्द्रो
 देवता अहिंसा धर्मयागः परम-
 हंसोऽघ्वयुः परमात्मा देवता
 पशुपतिर्ब्रह्मोपनिषदो ब्रह्म पा. ब्र. ५
 वाञ्छाकारणे तु वा तुष्टिस्तत्र
 वाञ्छैव कारणम् । तुष्टिस्त्व-

तुष्टिपर्यन्ता तस्माद्वाञ्छां
 परित्यज अ. पू. ५।३७
 वातरशना ह वा ऋषयः श्रमणा
 ऊर्ध्वमन्थिनो बभूवुः सहवै. ११
 वातं प्राणं मनसाऽन्वारभामहे
 प्रजापतिं यो भुवनस्य गोपाः महाना. १३।९
 वातं प्राणः, द्यौः पृष्ठम् चित्त्यु. ४।१
 वातं प्राणः (अज्येति) चक्षुरादित्यं,
 मनश्चन्द्रम् बृह. ३।२।१३
 वातापेर्ध्वनः श्रुतः स्वाहा चित्त्यु. ३।१
 वातोऽघ्वयुः चित्त्यु. ६।१
 (तद्यथा-) वातोऽप्सु शनैर्वाति
 सुखीभवेति, एवं... संहितो. १।४
 वातो वाति, प्रजा निर्मुच्यते संहितो. १।३
 (तद्यथा-) वातो वाति शीघ्रं... बह्व
 विभगं प्रभगंश्येतेव ते मे वैतया संहितो. १।४
 वातोऽस्माद्भीतः पवते ग. शो. ता. ४।२
 वादः प्रवदतामहम् भ. गी. १०।३२
 वादा इति वादविदो भुवनानीति तद्विदः वैतथ्य. २४
 वानप्रस्थगृहस्थाभ्यां न संसृज्येत
 कर्हिचित् । अज्ञातचर्यां ना. प. ५।३०
 लिप्सेत न चैनं हर्ष आविशेत्
 वानप्रस्थशतमेकमेकेन यतिना
 तत्समं यतीनां तु शतं पूर्णमेक-
 मेकेन रुद्रजापकेन नृ. पू. च. ९।१६
 वानप्रस्था अपि चतुर्धा भवन्ति
 वैखानसा औदुम्बरा वाल-
 खिल्या यायावराः... आश्रमो. २
 वामकर्णे संयमाद्वायुलोकज्ञानम् शां. डि. १।७।५२
 वामचक्षुषि संयमाच्छिवलोकज्ञानम् शां. डि. १।७।५२
 वामदक्षिणे सिद्धिर्बुद्धिः (गणेशस्य) ग. पू. ता. २।१०
 वामदेवं महाबोधदायकं पावकात्मकम् पञ्चम. ५
 वामदेवं येऽनुसरन्ति नित्यं मृत्वा
 जनिता च पुनः पुनस्तत् । ते वै
 लोके क्रममुक्ता भवन्ति योगैः
 साङ्ख्यैः कर्मभिः सत्त्वयुक्तैः वराहो. ४।३५
 (ॐ) वामदेवः परमेश्वरं सृष्टि-
 स्थितिलयकारणमुमासहितं
 स्वशिरसा प्रणम्येति होवाच वित्तो. १

वामदेवात् क्षत्रिया वै विशश्च सि. शि. ९
 वायदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः
 ज्येष्ठाय नमो रुद्राय नमः... महाना. १०५
 वामनं त्वां महादेवं सर्वं देवा
 उपासते । त्वत्तो जातं
 जगच्छम्भोस्थितं त्वय्येवलीयते २ रुद्रो. ४६
 वामपादपार्णिं योनिस्थाने
 नियोज्य.. स्वात्मानं आवयेत् ।
 तेनापरोक्षसिद्धिः शांदि. १।७।४३
 वामपादमूलेन योनिं सम्पीड्य
 दक्षिणपादं प्रसार्य... वायुं
 धारयेत् । तेन सर्वकेशहानिः शांदि. १।७।४३
 वामबाहुर्दक्षिणकटयोरन्तश्चरति
 हंसः परमात्मा ब्रह्मगुह्यप्रकारो
 नान्यत्र विदितः पा. ब्र. ४
 वामाङ्गेन समभ्यस्य दक्षाङ्गेन
 ततोऽभ्यसेत् । प्रसारितस्तु यः
 पादस्तमूरुपरि नामयेत् । अय-
 मेव महाबन्धः... १ यो. त. ११४
 वामाभ्यां शत्रुजिह्वावज्रे दधानां...
 देवीमाहूय ध्यायेत् पीताम्बरो. १
 वामांसदक्षकट्यंतं ब्रह्मसूत्रं तु सव्यतः परब्र. १६
 वामांसादिदक्षिणकट्यन्तं विभा-
 व्याच्यन्तग्रहसम्मेलनमेकं ज्ञात्वा
 मूलमेकं सत्यं सृणुमयं विज्ञातं स्यात् परब्र. ४
 वामोरुमूले दक्षाङ्गिं ज्ञान्बोर्वेष्टित-
 पाणिना । वामेन वामाङ्गुष्ठं तु
 गृहीतं मत्स्यपीठकम् । योनिं
 वामेन सम्पीड्य मेढ्रादुपरि
 दक्षिणम् ॥ ऋजुकायः समा-
 सीनः सिद्धासनमुदीरितम् त्रि. ब्रा. २।४९
 वायवो यत्र लीयन्ते, मनो
 यत्र विलीयते यो. शि. ३।१२
 वायव्यस्तु द्विमात्रकः अ. ना. ३१
 वायव्यसिते बहिः प्रत्यहं वर्धते
 तनौ । बहौ विवर्धमाने तु सुख-
 मजादि जीर्यते वराहो. ५।४७
 वायुतो हृदयं प्राजापत्यात्ममात् गमो. २

वायुना गतिमावृत्य निभृतं कर्ण-
 मुद्रया । पुटद्वयं समाक्रम्य
 वायुः स्फुरति सत्वरम् १ यो. त. ११६
 वायुना ज्वलितो बहिः कुण्डली-
 मनिशं दहेत् यो. शि. १।८५
 वायुना पालितो बहिरपानेन
 शनैर्देहमध्ये ज्वलति शांदि. १।४।८
 वायुना वै गौतम सूत्रेणायं च लोकः
 परश्च लोकः सर्वाणि च भूतानि
 सन्दृब्धानि भवन्ति बृह. ३।७।२
 वायुना शक्तिचालेन प्रेरितं खे यथा
 रजः । रविणैकत्वमायाति (याति
 बिन्दुः सदैकत्वं) भवेद्दिव्यवपुस्तदा
 [ध्या. बि. ९०+ यो. चू. ६३
 वायुना सह चित्तं च प्रविशेच्च महापथम् १ यो. त. ८२
 वायुना सह जीवोर्ध्वज्ञानान्मोक्ष-
 मवाप्नुयात् यो. शि. ६।१६
 वायुना हि गौतम सूत्रेण सन्दृब्धानि
 भवन्ति बृह. ३।७।२
 वायुपुत्र महाबाहो किं तत्त्वं ब्रह्म-
 वादिनाम् रा. र. १।२
 वायुपुत्रं विघ्नेशं वाणीं दुर्गां क्षेत्र-
 पालकं सूर्यं चंद्रं नारायणं
 नारसिंहं... सीतां लक्ष्मणं...
 प्रणवमेतानि रामस्यांगानि रा. र. १।७
 वायुभक्षोऽम्बुभक्षो वा विहिता
 नोत्तरेः फलैः । स्वशरीरे
 समारोपः पृथिव्यां नाश्रुपातकाः २ सप्तयामो. ५
 वायुभक्षोऽम्बुभक्षो वा विहितैः
 कन्दमूलकैः । स्वशरीरे समा-
 प्याथपृथिव्यां नाश्रु पातयेत् कुंडिको. ४
 (अथ) वायुमज्जुवन् वाय-
 वेतद्विजानीहीति केनो. ३।७
 वायुमय आकाशमयः (आत्मा)
 वायुमाकाशे चाकाशमहद्वारे बृह. ४।४।५
 वायुमेव भगवो राजमिति होवा-
 चैष वै पृथग्वर्त्मात्मा वैश्वानरो
 यत्त्वमात्मानमुपास्ते तस्मात्त्वां
 पृथग्वलय आयन्ति छांदो. ५।१४।१

वायुमेवाप्येति यो वायुमेवास्तमेति सुबालो. १।५
 वायुरग्निरापः पृथिवी वाङ्मनश्चक्षुः
 ओत्रं च ते प्रकाश्याभिवदन्ति.. प्रश्नो. २।२
 वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं बृह. ५।१५।१
 शरीरम् [ईशा. १७+ १ ऐत. १।७।३
 वायुरस्मै पुण्यं गन्धमावहति सुबालो. २।२
 वायुराकाशे विलीयते सहवै. १८
 वायुरात्माऽमावास्याः स्विष्टकृत् १ रुद्रोप. २
 वायुरिति भस्म, जलमिति भस्म.. १ ऐत. १।१।३
 वायुरेव पवमानो दिशोहरितं प्रविष्टः
 वायुरेव सविताऽऽकाशः सावित्री
 स यत्र वायुस्तदाकाशो यत्र वा
 आकाशस्तद्वायुस्ते द्वे योनि-
 स्तदेवं मिथुनम् सावित्र्यु. ३
 वायुर्गन्धानिवाशयात् भ. गी. १५।८
 वायुर्दिशां यथा गर्भ एवं गर्भं
 दधामि ते बृ. व. ६।४।२२
 वायुर्नावमिवाम्भसि भ. गी. २।६७
 वायुर्भूत्वा धूमो भवति धूमो
 भूत्वाऽभ्रं भवति छांदो. ५।१०।५
 वायुर्यत्राभियुज्यते, सोमो यत्रा-
 तिरिच्यते, तत्र सञ्जायते मनः श्वेताश्व. २।६
 वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो जन्ये-
 जन्ये पञ्चरूपो बभूव गो. पू. २।३
 वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं
 प्रतिरूपो बभूव । एकस्तथा
 सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं
 प्रतिरूपो बहिश्च कठो. ५।१०
 वायुर्यमोऽभिर्वरुणः भ. गी. ११।३९
 वायुर्वा अहमस्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वा
 वा अहमस्मीति केनो. ३।८
 वायुर्वाऽनमाकाशोऽन्नादः सुबालो. १४।१
 वायुर्वाव संवर्गो यदा वा छांदो. ४।३।१
 मदाप्रलये... (मा.पा.)
 वायुर्वाव संवर्गो यदा वा अग्नि-
 रुदायति वायुमेवाप्येति छांदो. ४।३।१
 वायुर्वै गौतम तत्सूत्रं, वायुना वै
 गौतम सृष्टेर्नाथं च लोकः

परश्च लोकः सर्वाणि च
 भूतानि सन्दृब्धानि भवन्ति बृह. ३।७।२
 वायुर्व्यूहने आकाशमवकाश-
 प्रदाने (शरीरस्य) गर्भो. १
 वायुर्हा इकारः, चन्द्रमा अथकारः छां. उ. १।१३।१
 वायुर्हायिकारः (मा. पा.) छां. उ. १।१३।१
 वायुर्होवैतान्सर्वान्संवृद्ध इत्यधिदैवतम् छां. उ. ४।३।२
 वायुवत्स्फुरितं स्वस्मिस्तत्रा-
 हङ्कृतिरुत्थिता । पञ्चात्मक-
 मभूत्पिण्डं धातुबद्धं गुणात्मकम् यो. शि. १।८
 वायुवज्योमगो भवेत् १ यो. त. ९६
 वायुवेग मनोवेग श्रीराम तारक
 परब्रह्म विश्वरूपरूपदर्शन
 लक्ष्मणप्राणप्रतिष्ठानन्दकर
 स्थलजलादिर्मर्ममेदिनू सर्व-
 शत्रून् छिन्धि छिन्धि लांगूलो. ३
 वायुश्च वायुमात्रा च प्रश्नो. ४।८
 वायुश्चाकाशश्चेत्यधिदैवतम् ३ ऐत. १।१।१
 वायुस्तां अग्ने प्रमुमोक्तु देवः चित्त्यु. ११।१३
 वायुं जित्वा विविधकरणैः क्लेश-
 मूलैः कथञ्चित्कृत्वा यत्नं
 निजतनुगतान् शोष्य नाडि-
 प्रवाहान् । अश्रद्धेयां परपुर-
 गतिं साधयित्वाऽति नूनं
 विज्ञानैकव्यसनमुखिनो
 नास्ति मोक्षस्य सिद्धिः अमन. २।३०
 वायुं निरुद्धय मेधावी जीवन्मुक्तो
 भवत्ययम् १ यो. त. १०६
 वायुं बिन्दुं तथा चक्रं चित्तं चैव
 समभ्यसेत् । समाधिमेकेन
 समममृतं यान्ति योगिनः योगकुं. ३।१६
 वायुं भित्त्वाऽऽकाशं भिनत्ति सुबालो. ११।२
 वायुः पञ्चहोता चित्त्यु. ७।२
 वायुः परिचितो यत्नादग्निना
 सह कुण्डलीम् । भावयित्वा
 सुषुम्नायां प्रविष्टेदनिरोधतः १ यो. त. ८१
 वायुः पश्चिमतो वेधं कुर्वन्नापूर्य
 सुस्थिरम् । यत्र तिष्ठति सा
 प्रोक्ता चदाख्या भूमिका बुधैः वराहो. ५।७३, ७४

बायुः प्राणस्तथाऽऽकाशस्त्रिविधो जीवसंज्ञकः	ब्र. वि. १४	वारिजलोचनसहाये वारिगतिं वारयासुकरनिकरैः । पीडित-	
बायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्	२ ऐत. २।४	मत्र भ्रान्तं मामनिशं	
बायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवीं शेष सर्वभूतान्तरात्मा	मुंड. २।१।४	पालय त्वमनवधे	वनदु. १६९
बायुः षट्कोणकं कृष्णं यकारा- क्षरभासुरम् । मारुतं मरुतां		वारिवत्स्फुरितं तस्मिन्स्तत्राहङ्कृति-	
स्थानि...धारयेत्तत्र सर्वज्ञमीश्वरं विश्वतोमुखम्	१ यो. त. ९५	रुत्थिता । पञ्चात्मकमभूत्पिण्डं	१ यो. त. १७
बायुः समानोदानव्यानापानप्राणाः	त्रि. ब्रा. १।३	धातुबद्धं गुणात्मकम्	छांदो. २।२२।१
बायुः सर्वत्रगो महान्	भ. गी. ९।६	वारुणं त्वेव वर्जयेत्	
बायूनां गतिमावृत्त्य धृत्वा पूरक- कुम्भकौ ।...पुटद्वयं समाकृष्य		वारुणे वायुमारोप्य वकारेण सम-	
बायुः स्फुरति सत्वरम् । सोमसूर्यामिसम्बधात्...	वराहो. ५।६१	न्वितम् । स्मरन्नारायणं देवं	
बायोरग्निः (सम्भूतः)	तैत्ति. २।१।१	चतुर्बाहुं किरीटिनम् ।...धारये-	
[+यो. चू. ७२+सुबालो. १।१	पैङ्गलो. १।३	त्पञ्चघटिकाः सर्वपापैः प्रमुच्यते	१ यो. त. ८८
बायोरग्निरभवत्	गायत्रीर. १	(तत्र) वार्ताकवृत्तयः कृषिगोरक्ष-	
बायोरग्निस्तथा चाग्नेराप अद्भयो वसुन्धरा	कठरु. १७	वाणिज्यमगोर्हितमुपयुज्जानाः	आश्रमो. २
बायोरन्तरात्मा वहति समस्तः सपुण्यदेवेति स सुस्मिक्तः	पारमा. १०।२	शतसंवत्सराभिर्यजन्त आत्मानं	
बायोरआत्मानं कवयो निचिक्युः	चिन्त्यु. ११।४	प्रार्थयन्ते	
बायोरायतनं चात्र नामिदेशे समाश्रयेत्	सुरिको. ७	वालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वं देवं	
बायोरेव सुदुष्करम्	भ. गी. ६।२४	जातरूपं वरेण्यम् । तमात्मस्थं	
बायोरोद्धारः [अ.शिरः. ३।१५+	बटुको. २७	ये नु पश्यन्ति धीरास्तेषां	
बायोर्ज्योतिः, ज्योतिष आपः	२ सञ्ज्यासो. १६	शान्तिर्भवति नेतरेषाम्	अ.शिरः. ३।११
बायोर्विम्बं तु षट्कोणं सङ्कुर्वो- ऽत्राधिदेवता	यो. शि. ५।१४	वालाग्रमात्रं हृदये प्रतिष्ठं जीवा-	
बायो तुप्यस्याकाशस्तुप्यति	छांदो. ५।२३।२	भासं मन्यमानैश्च मूढैः । न	
बायो मनोऽलं कुर्यादाकाश- गमनं भवेत्	यो. शि. ९।५१	त्वेष जीवो न शिवश्चादिकर्ता	
वाराणसीमहाप्राज्ञभुवीप्राणस्यमध्यमे	जा. द. ४।४८	यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चित्	२ देव्यु. ३४
वाराणस्यां सृतो वाऽपि इदं वा ब्रह्म यः पठेत् । परैर्न जन्मना		वालाग्रशतभागस्य शतधाकल्पितस्य	
जन्तुमोक्षं च प्राप्नुयादिति	प्रा. हो. ४।४	च । भागो जीवः स विज्ञेयः स	
वाराही पितरूपा कुरुकुला बलि- देवता भावा	भावनो. २	चानन्त्याय कल्पते [श्वेता. ४।९+	अवधं. २।१५
		वालाग्रशतसहस्रकल्पनादिभिः स	
		लभ्यते (परमात्मा)	१ आश्रमो. ३
		वालाग्रशतसाहस्रं तस्य भागस्य	
		भागिनः । तस्य भागस्य भागार्धं	
		तत्क्षये तु निरञ्जनम्	व्या. वि. ४
		वाल्मीको बल्मीकात्, व्यासः कैव-	
		र्तेकन्यायां, शशपृष्ठादौ तमः,	
		वसिष्ठ उर्वश्यां, अगस्त्यः कलशे जातः च. सु. ५	
		वाव किल नो भवान् पुराऽनु-	
		शिष्टानवोचत्	बृह. ६।२।३
		वासनाक्षयविज्ञानमनोनाशो	
		महामते । समकालं चिराभ्यस्ता	

भवन्ति फलदा मताः
[+मुक्तिको. २।१०
वासनाजाले निश्शेषममुना प्रवि-
लापिते कर्मसञ्चये पुण्यपापे
समूलोन्मूलिते प्राक्परोक्षमपि
करतलामलकवद्वाक्यमप्रतिबद्धा-
परोक्षसाक्षात्कारं प्रसूयते पैङ्गलो. ३।३
वासनातन्तुबद्धोऽयं लोको विपरिवर्तते महो. ५।८६
वासनातानवं ब्रह्मन्मोक्ष इत्यभिधीयते महो. २।४१
वासनात्रयपूर्वकं निन्दानिन्दागर्व-
मत्सरदम्भदर्पद्वेषकामक्रोधलोभ-
मोहहर्षामर्षासूयात्मसंरक्षणवादिकं
दृग्ध्वा...देहत्यागं करोति यः
सोऽवधूतः तुरीया. ३
वासनाद्वासुदेवस्य वासितं हि जग-
ज्जयम् । सर्वभूतनिवासोऽसि
वासुदेव नमोऽस्तु ते ना. उ.ता. १।४
वासना द्विविधा प्रोक्ता शुद्धा च
मलिना तथा । मलिना जन्म-
हेतुः स्थाच्छुद्धा जन्मविनाशिनी मुक्तिको. २।६१
वासनानुदयो भोग्ये वैराग्यस्य
तदावधिः । अहम्भावोदयाभावो
बोधस्य परमावधिः अभ्यात्मा. ४१
वासनाप्रक्षयो मोक्षः सा जीव-
न्मुक्तिरिष्यते अभ्यात्मा. १२
वासनामात्रसन्त्यागाज्जरा मरण-
वर्जितम् । सवासनं मनो ज्ञानं
ज्ञेयं निर्वासनं मनः अ. पू. ५।६२
वासनामुक्तो महालीलायामासक्तः
संसारे न निर्विण्णो नाति-
सक्तो भवति सामर. १००
वासनायास्तथा बह्वैर्गुणव्याधि-
द्विषामपि । ज्ञेहवैरविषाणां च
ज्ञेयः स्वल्पोऽपि बाधते अ. पू. ५।१७
वासनारहितैरन्तरिन्द्रियैराहरन्
क्रियाः । न विकारमवाप्नोषि
अवस्थोभयवैरपि अ. पू. ५।३९

वासनावशतः प्राणस्पन्दस्तेन च
वासना । क्रियते चित्तबीजस्य
तेन चित्ताङ्कुरक्रमः मुक्तिको. २।२६
वासनाविलये चेतः शममायाति
दीपवत् मुक्तिको. २।१७
वासनावेगवैचित्र्यात् स्वरूपं न
जहाति तत् । भ्रान्तं पश्यति
दुर्दृष्टिः सर्वं मदवशादिव मुक्तिको. २।६०
वासनासम्परित्यागसमं प्राण-
निरोधनम् अ. पू. ४।८५
वासनासम्परित्यागः प्राणस्पन्द-
निरोधनम् । एतास्ता युक्तयः
पुष्टाः सन्ति चित्तजये किल मुक्तिको. २।४५
वासनासम्परित्यागाच्चित्तं गच्छ-
त्यचित्तताम् [अ.पू.४।८६+ मुक्तिको. २।२८
वासनासम्परित्यागे यदि यत्नं
करोषि भोः । यावद्विलीनं न
मनो न तावद्वासनाक्षयः अ. पू. ४।७८
वासनाहीनमप्येतच्छुरादीन्द्रियं
स्वतः । प्रवर्तते बहिः स्वार्थे
वासनामात्रकारणम् मुक्तिको. २।२२
वासनां वासितारं च...समूलम-
खिलं त्यक्त्वा... महो. ६।७
वासनां सम्परित्यज्य मोक्षा-
र्थित्वमपि त्यज मुक्तिको. २।६८
वासनां सम्परित्यज्य मयि
चिन्मात्रविम्वे । यस्तिष्ठति
गतव्यग्रः सोऽहं सच्चित्सुखात्मकः मुक्तिको. २।१८
वासनाः कल्पयन्सोऽपि यात्य-
हङ्कारतां पुनः महो. ५।१२४
वासनार्थलयेनापि स्वात्मव्योतिः
प्रकाशते । सूर्योभामिरिवादीप्तो
योगी विश्वं प्रकाशते अमन. १।४८
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गच्छाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय.संयाति
नवानि देही [भवसं. २।३७+ अ. गी. २।२२
वासुदेवमयोऽस्म्यहम् विष्णुह. १।३
वासुदेवः सर्वमिति अ. गी. ७।१९

वासुदेवादिचतुर्व्यूहसेवितं विष्णुलोकं
तत्साम्नः पञ्चमं पादं जानीयात् ग. पू. १।१२
वासुदेवे मनो युञ्जन्सर्वसिद्धि-
मवाप्नुयात् यो. शि. ५।५४
वासुदेवोऽजरोऽमरः ते. बि. ६।६९
वास्तुवेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्च
तथा मुने । आयुर्वेदश्च पञ्चैतै
उपवेदाः प्रकीर्तिताः सीतो. २१
विकरोत्यपरान् भावानन्तश्चित्ते
व्यवस्थितान् । नियताश्च बहि-
श्चित्त एवं कल्पयते प्रभुः वैतथ्य. १३
विकलेवरकैवल्यं त्रिपाद्राममहं भजे शु.र.शीर्षकं
विकलेवरकैवल्यं श्रीरामब्रह्म मे गतिः रा.पू.शीर्षकं
विकटाङ्गामुन्मत्तां महाखलां...
पुनर्धेनुं...अशान्तामदुग्धदोहिनीं
वत्सहीनां...नवप्रसूतां शेगातीं
गां विहाय प्रशस्तगोमयमाहरेत् बृ. जा. ३।१
विकल्पसङ्ख्याज्जन्तोः पदं तदवशिष्यते अ. पू. २।३३
विकल्पासहिष्णु, तत्सशक्तिकं
गजैवक्त्रं गजाकारं जगदेवावकन्धै मणेशो. ३।३
विकल्पो विनिवर्तेत कल्पितो यदि
केनचित् आगमः १८
विकारजननीमज्ञामष्टरूपामजां ध्रुवाम् ।
ध्यायतेऽध्यासितातेन तन्यते प्रेर्यते
पुनः । सूयते पुरुषार्थं च
तेनैवाधिष्ठितं जगत् मंत्रिको. ३,४
विकारादिविहीनत्वाज्जागरो मे
न विद्यते वराहो. २।६०
विकारांश्च गुणांश्चैव म.गी. १३।२०
विकाराः षोडशापरे शारीरको. १२
विकिरं प्रकिरं दद्याद्विकिरं ह वै
प्रकिरं मुञ्चति तृप्तिरूपाणि दर्शयन् इतिहा. ५३
विक्षिप्तं च गतायातं सुक्रिष्टं च
सुखीनकं (मनः) अमन. २।५२
विक्षेपशक्तिर्लिङ्गादि ब्रह्माण्डान्तं
जगत्सृजेत् सरस्व. ४२
विक्षेपो नास्ति यस्मान्मे न समाधि-
स्ततो मम । विक्षेपो वा
समाधिर्वा मनसः स्याद्विकारिणः १ अवधू. २१

विगतेच्छामयक्रोधः अ. गी. ५।१८
विग्रहमनुग्रहलिङ्गेषु शक्तिकपालेषु
सर्ववशङ्करं विद्यात् लिङ्गोप. ९
विग्रहवानेष कालः सिन्धुराजः
प्रजानाम् मैत्रा. ६।१६
विग्रराजो ब्रह्मण्यमृते तेजोमये
परंज्योतिर्मये सदानन्दमये रमते गणेशो. ५।७
विग्रराजश्चिदात्मकः सोऽहमोम् गणेशो. १।४
विग्रान्यायान्ति वै बलात् ते. बि. १।४०
विग्रान्तरति महोपसर्गं तरति गणेशो. ५।८
विचक्षणः पञ्चमुखोऽसि प्रजापति-
ब्राह्मणस्त एकं मुखं तेन मुखेन
राज्ञोऽस्मि कौ. त. २।९
विचक्षणादृतवो रेत आभृतं... कौ. त. १।२
विचारणां द्वितीया तु तृतीया
तनुमानसी (ज्ञानभूमिः) महो. ५।२४
विचारणां द्वितीया स्यात्तृतीया
साङ्गमावना (मोक्षभूमिकां) अ. पू. ५।८२
विचारणाशुमेच्छाभ्यामिन्द्रियायैषु
रक्तता । यत्र सां तनुतामैति
प्रौच्यते तनुमानसी [महो. ५।२९ + वराहो. ४।५
विचारेण परिज्ञातस्वभावस्य
सतस्तव । मनः स्वरूपमुत्सृज्य
शममैष्यति विज्वरम् अ. पू. १।४१
विचिकित्सीमे ऋज्वा वा. म. २।३
विचित्रघोषसंयुक्तानाहते श्रूयते ध्वनिः सौमग्यल. ९
विचित्रं विविचेष्टितम् भवस. १।१२
विचित्राः शक्तयः स्वच्छाः समा या
निर्विकारया । चित्ताः क्रियन्ते
समया कलाकलनमुक्तया १ सं. सो. २।२६
विचिन्वति द्वेमानि शरीराणीः १ पेत. १।८।४
विचैति चान्ते विश्रमादौ स देवः
स नो बुद्ध्या शुभया संयुक्तवु
वि नौमि सं च हि नु यो
विरहपी (प्शी) शेता. ४।१
विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघ्रित्सो-
ऽपिपासः सत्यकामः सत्य-
सङ्कल्पः [वराहो. ६।१५ + वराहो. ४।५१

विज्ञानमेव सत्यं वदति विज्ञानं
 त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति छांदो. ७।१७।१
 विज्ञानं विद्वान् भवते नातिवादी मुण्ड. ३।१।४
 विज्ञानं तत्र विज्ञानाति नहि विज्ञातुर्विपरिलोपो विद्यते-
 ऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।३०
 विज्ञानाम्यहं यत्प्राणो ब्रह्म, कं च
 तु खं च न विज्ञानामि छांदो. ४।१०।५
 विज्ञातीयविशेषवर्जितं... शाश्वतं
 परमं पदं... स्वयम्प्रकाशमनिशं
 चलति त्रि.न.ना. ७।७
 विज्ञितात्मा जितेन्द्रियः भ. गी. ५।७
 विजिहीर्ष्व लोकान् कृधि बंधा-
 न्मुंचासिबद्धकम् सहै. ९
 विज्ञेयकुदिन्द्र इवानवब्रवोऽस्माकं
 मन्यो अधिपो भवेह वनदु. १११
 विज्ञेयस्यै वावैतानन्विति शौनको. १।२
 विज्ञरत्वं गतं चेतस्तव संसार-
 वृत्तिषु । न निमज्जति तद्ब्रह्मन्
 गोष्पदेष्विव वारणः अ. पू. १।४२
 विज्ञातब्रह्मत्वस्य यथा पूर्वं न
 संसृतिः । अस्ति चेन्न स-
 विज्ञातब्रह्मभावो बहिर्मुखः अध्यात्मो. ४८
 विज्ञातमविज्ञानताम् (ब्रह्म) केनो. २।३
 विज्ञातं विजिज्ञास्यमविज्ञातमेत
 एव यत्किञ्च विज्ञातं वाचस्त-
 द्रूपं, वाग्धि विज्ञाता, वागेनं
 तद्ब्रह्माऽवति बृह. १।५।८
 विज्ञातात्मा पुरुषः स परेऽक्षरे
 आत्मनि सम्प्रतिष्ठते प्रश्नो. ४।९
 विज्ञातारमरे केन विज्ञानीयात्
 [बृ. उ. २।४।१४+ ४।५।५
 विज्ञाते स्पन्दमाने वै नाभासा
 अन्यतो मुवः अ. शां. ५१
 विज्ञानघन एवास्मि शिवोऽस्मि
 किमसः परम् स्कन्दो. १
 विज्ञानघन एवैतेभ्यो भूतेभ्यः
 समुत्थाय तान्येवानुबिन्दयति बृ. उ. २।४।१२

विज्ञानघनस्वरूपमनन्तचिदादित्य-
 समष्ट्याकारं शिवाद्वैतोपासका
 भजन्ते सि. सा. ६।१
 विज्ञानमयं ब्रह्मकोशम् । चतुर्जालं
 ब्रह्मकोशम् । यन्मृत्युर्नावपश्यति भस्मजा. २।१६
 विज्ञानमयः कालात्माऽऽनन्दमयो
 लयात्मैकत्वं नास्ति, द्वैतं कुतः सुबालो. ५।१५
 विज्ञानमयो मनोमयः प्राण-
 मयश्चक्षुर्मयः बृह. ४।४।५
 विज्ञानमात्ररूपोऽहं सच्चि-
 दानन्दलक्षणः ते. बि. ३।३१
 विज्ञानमात्रं विज्ञानविदां यदमला-
 त्मकम् । पुरुषः साङ्ख्यदृष्टीना-
 मीश्वरो योगवादिनाम् अ. पू. ३।२०
 विज्ञानमानन्दं ब्रह्म रातिर्दातुः
 परायणं, तिष्ठमानस्य तद्विद इति बृ. उ. ३।९।३४
 विज्ञानमानन्दं ब्रह्मरातेर्दातुः
 परायणम् । सर्वसङ्कल्पसन्न्या-
 सश्चेतसा यत्परिग्रहः महो. २।९
 विज्ञानमुपास्व छांदो. ७।७।१
 विज्ञानमेवाप्येति, तदमृतमभय-
 मशोकमनन्तनिर्वीजं.. सुबा. ९।३-१२
 विज्ञानमेवाप्येति यो विज्ञान-
 मेवास्तमेति [सुबालो. ९।२, ७, १०, १३
 विज्ञानवतो वै स लोकान्ज्ञान-
 वतोऽभिसिद्ध्यति छांदो. ७।७।२
 विज्ञानसारथिर्यस्तु मनःप्रग्रह-
 वाज्ररः । सोऽध्वनः पारमा-
 प्रोति तद्विष्णोः परमं पदम्
 [कठो. ३।९+ भवसं. २।१२
 विज्ञानं चाविज्ञानं च तैत्ति. २।६
 विज्ञानं त्वेव विजिज्ञासितव्यम् छांदो. ७।१७।१
 विज्ञानं देवाः सर्वे ब्रह्मज्येष्ठमुपासते तैत्ति. २।५
 विज्ञानं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तैत्ति. ३।५
 विज्ञानं ब्रह्म चेद्वेद तस्माच्चेन्न
 प्रमाद्यति । शरीरे पाप्मनो
 हित्वा सर्वान्कामान्संभृत इति तैत्ति. २।५

विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात् । विज्ञाना-
द्धयेव खस्विमानि भूतानि
जायन्ते । विज्ञानेन जातानि
जीवन्ति । विज्ञानं प्रयन्त्यभि-
संविशन्तीति

तैत्ति. ३।५

विज्ञानं भगवो विजिज्ञासे

छांदो. ७।१७।१

विज्ञानं यज्ञं तनुते । कर्माणि तनुते-
ऽपि च । विज्ञानं देवाः सर्वे

तैत्ति. २।५

ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते

छांदो. ७।७।१

विज्ञानं वाव ध्यानाद्भूयः

विज्ञानात्मा चिदाभासो विश्वो
व्यावहारिको जाग्रत्स्थूलदेहा-
भिमानी कर्मभूरिति च विश्वस्य
नाम भवति

पैङ्गलो. २।६

विज्ञानात्मा यथा देहे जाग्रत्स्वप्न-
सुषुप्तिः । मायया मोहितः

योगकुं. ३।२७

पश्चाद्बहुजन्मान्तरे पुनः

विज्ञानात्मा सह देवैश्च सर्वैः प्राणा
भूतानि सम्प्रतिष्ठन्ति यत्र ।

तदक्षरं वेदयते यस्तु सोम्य स
सर्वज्ञः सर्वमेवाविवेश

प्रश्नो. ४।११

विज्ञानादानन्दो ब्रह्मयोनिः

महाना. १७।१२

विज्ञानाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे

भगवान्ब्रवीतु

छांदो. ७।७।२

विज्ञानाद्धयेव खस्विमानि भूतानि
जायन्ते

तैत्ति. ३।५

विज्ञानाविज्ञानेऽहम्

१ देव्यु. १

विज्ञानेन वा ऋग्वेदं विजानाति

यजुर्वेदं च सामवेदमथर्वणम्

छांदो. ७।७।१

विज्ञानेनात्मानं वेदयति

महाना. १७।१३

विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्

बृह. २।४।५

विज्ञाने स्पन्दमाने वै नामासा

अन्यतो भुवः

अ. शां. ५१

विज्ञानेऽपि तथैव स्युराभासस्या-

विशेषतः

अ. शां. ५७

विज्ञानोऽस्मि विशेषोऽस्मि सोमो-

ऽस्मि सकलोऽस्म्यहम्

मैत्रे. ३।३

विज्ञायते हास्ति हिरण्यस्योपात्तं

गोअध्यानां दासीनां प्रवराणां..

बृह. ६।१।७

विज्ञायते हान्ति...प्रवराणां

परिधानस्य...[भा. पा.]

बृह. ६।२।७

विज्ञाय सेवितश्चोरो मैत्रीमेति न
चोरताम्

महो. ५।७१

विज्ञेयः स शिवः शान्तो नरस्त-

द्भावभावितः । आस्ते सदा

निरुद्विग्नः स देहान्ते विमुच्यते

शिवो. १।२३

विज्ञेयोऽक्षरतन्मात्रो जीवितं वापि

चञ्चलम् । विहाय शास्त्र-

जालानि यत्सत्यं तदुपास्यताम्

पैङ्गलो. ४।१७

विष्मूत्रपित्तकफमज्जामेदोवसाभि-

रन्यैश्च मलैर्बहुभिः परिपूर्णं

कोश इवावसन्नेति

मैत्रे. ३।४

विष्मूत्रवातपित्तकफमज्जामेदो-

वसाभिरन्यैश्चमलैर्बहुभिः परि-

पूर्णमेतादृशे शरीरे वर्तमानस्य

भगवंस्त्वं नो गतिः

मैत्रे. १।३

विष्मूत्रादिविसर्जनमपानवायुकर्म

शांडि. १।४।९

वितता ब्रह्मणो मुखे

अ. गी. ४।३२

विततां भुवमासाद्य विहरामि

यथासुखम्

१ सं. सो. २।५५

वितत्य बाणं तरुणार्कवर्णं व्योमान्तरे

भासि हिरण्यगर्भः

एका. उ. ४

वितथैः सदृशाः सन्तोऽवितथा इव

लक्षिताः

अ. शां. ३१

वितन्वमाना शमायान्तु ब्रह्म-

चारिणः स्वाहा

तै. उ. १।४।४

वितस्तिप्रमितं दैर्घ्यं चतुरङ्गुल-

विस्तृतम् । सृदुलं धवलं प्रोक्तं

वेष्टनाम्बरलक्षणम्

यो. शि. १।८१

विशीर्णबलं बल्कलं वा प्रतिगृही-

यान्नान्यत्प्रतिगृहीयात्

१ सं. सो. १।२

वित्तं बन्धुः प्रजातन्तुः कर्मरूपं

बृहत्सखा । प्रज्ञाप्रतिष्ठा तन्तु-

नामिष्टापूर्तैः परायणम्

इतिहा. ६

वित्तिश्चोपस्तपश्च दमश्चाभ्रद्धा च

सपृथग्य (?) चानाकाशी कर्णं च

योगश्चाचार्यगुरुशुश्रूषा चेति

संहितो. ३।९

(अथ) वित्तं मे स्यादथ कर्म कुर्वीय

बृह. १।४।१७

विचेष्टो यक्षरक्षसाम्	भ. गी. १०।२३	विद्यादानं च कुर्वीत भोगमोक्ष-	
विदाताद्विद्युत्	बृह. ५।७।१	जिगीषया	शिबो. १।३५
विदाम देवं भुवनेशमीड्यम्	श्वेता. ६।७	विद्या दिवा प्रकाशत्वादविद्या	
विद्विद्वाविद्विद्वात्परः	नृसिंहो. १।८	रात्रिरुच्यते	१ सं. सो. २।८३
विदिते तु परे तत्त्वे मत्तो नौ-		विद्याधरस्तृतीयायां गान्धर्वस्तु	
स्तम्भकाकवत्	अमन. २।७३	चतुर्थिका	ना. वि. १३
विदित्वा स्वात्मनो रूपं सुस्पृहातः		विद्याधीशः स्वर एको मदेशस्त्वमेव	
समाधितः। शुक्रमार्गेण विरजाः		त्वं वेद योऽसीश एव	२ रुद्रो. ६८
प्रयान्ति परमं पदम्	वराहो. ४।३८	(शिष्य इति च) विद्याध्वस्तप्रपञ्चा-	
विदित्वा स्वात्मनो रूपं न त्रिमेति		वगाहितज्ञानावशिष्टं ब्रह्मैव शिष्यः	निरा. २५
कुतश्चन(कदाचन)[वराहो. २।२०+ महो. ४।७०		विद्यानन्दतुरीयाख्यपादत्रयममृतं	
विदिशश्च नारायणः [तारा. २+ त्रि. म. ना. २।८		भवति	त्रि. म. ना. ४।४
विदुर्देवा न दानवाः	भ. गी. १०।१४	(अथ च) विद्यानन्दतुरीयाणा-	
विदेहमुक्त एवासौ विद्यते		ममेद एव श्रूयते	त्रि. म. ना. २।१
निष्कलात्मकः	अ. पू. ४।१९	विद्यानन्दतुरीयांशाः (ब्रह्मणः)	
विदेहमुक्तताऽत्रोक्ता सप्तमी योग-		सर्वेषु पादेषु व्याप्य तिष्ठन्ति	त्रि. म. ना. १।४
भूमिका। अगन्या वचसां		विद्यापादो द्वितीयः (ब्रह्मणः)	त्रि. म. ना. १।४
ज्ञान्या सा सीमा सर्वभूमिषु	अक्षुप. ४४	विद्याप्रपञ्चस्य नित्यत्वं सिद्धमेव,	
विदेहमुक्तौ नौदेति नास्तमेति न		नित्यानन्दचिद्विलासात्मकत्वात्	त्रि. म. ना. ३।२
शाम्यति	महो. २।६४	विद्या भवच्छेदकरी मदीयसायुज्य-	
विदेहमुक्तौ विमले पदे परमपावने।		सम्पादनहेतुभूता	१ बिल्वो. १५
...चित्तनाशे विरूपारूपे न		विद्याभीप्सितं नचिकेतसं मन्ये न	
किञ्चिद्विद् विद्यते	अ. पू. ४।२०	त्वा कामा बहवो लोलुपन्ते(न्तः)	
विद्वि त्वमेतन्निहितं मुहासाम्	कठो. १।१४	[कठो. २।४+ मैत्रा. ७।९	
विद्वि नष्टातत्त्वतः	भ. गी. ३।३२	विद्याऽभूद्गोमयं शुभम्	वृ. जा. ३।२
विद्वि पार्थ बृहस्पतिम्	भ. गी. १०।२४	विद्याभ्यासे प्रमादो यः स दिवा	
विद्वि पार्थ सनातनम्	भ. गी. ७।१०	स्वाप उच्यते	१ सं. सो. २।८४
विद्वि प्रकृतिसम्भवान्	भ. गी. १३।२०	विद्यामन्त्रैकसंश्रयो विद्यारूपो	
विद्वि माममृतोद्भवम्	भ. गी. १०।२७	विद्यामयो विश्वेश्वरोऽहमजरोऽहम्	भस्मजा. २।७
विद्वि यकतदिमन्त्रययम्	भ. गी. ४।१३	विद्यामिमां प्राप्य गौरी महेशा-	
विद्वि यनादी उभावपि	भ. गी. १३।२०	दभीष्टसिद्धिं समवाप सद्यः	हेरम्बो. १४
विद्वि येतन्मिह वैरिणम्	भ. गी. ३।३७	विद्याया मनसि संयोगः, मनसा-	
विद्ययाऽमृतमभुते	ईशा. ११	ऽऽकाशश्चाकाशाद्वायुः, वायो-	
विद्यया वा विद्यां यः स्नाह तानि		ज्योतिः, ज्योतिष आपः,	
वीर्यानि षण्ममेति	संहितो. ३।५	अद्भ्यः पृथिवी, पृथिव्या इत्येषां	
विद्यया विन्दतेऽमृतम्	क्रेनो. २।४	भूतानां ब्रह्म सम्पद्यते	२ सक्त्यासो. १६
विद्यया साधयेत्	संहितो. ३।४	विद्यालिङ्गं ज्ञानस्वरूपम्	लिङ्गोप. २
विद्यामोक्षां जीवात्मा बुद्धि-			
वर्तिन शुद्धमति	अत्रसं. ३।१८		

विद्याविद्याभ्यां भिन्नो विद्यामयो

हि यः स कथं विषयी भवति

विद्याविद्ये ईशते यस्तु सोऽन्यः

विद्याविनयसम्पन्ने

विद्याशक्तिः समस्तानां शक्तिरित्य-

भिधीयते । गुणत्रयाश्रया विद्या

सा विद्या च तदाश्रया

विद्या सङ्कीर्तनीया हि येषां कर्म न

विद्यते । ते चावर्त्य विमुच्यन्ते

यावत्कर्म न विद्यते

विद्या सन्धिः । प्रवचनं सन्धानम्

विद्या सम्प्राप्यते ब्रह्मन् सर्वदोषा-

पहारिणी

विद्यासहायवन्तं च आदित्यस्थं

समाहितम् । कपिलं प्राहुराचार्याः...

विद्याऽहमविद्याऽहम्

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम, तवा-

हमस्मि, त्वं मा पालयानर्हते

स्मन्निजे नैव माऽदाः । गोपाय

मा श्रेयसे तेऽहमस्मीति

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय

मां शेवधिष्ठेऽहमस्मि । असूयका-

यानृजवे शठाय मा मा ब्रूया

वीर्यवती तथा स्याम् [शा. ३.३]

विद्याऽहम् । वेदाश्चाहम्

विद्या हि काण्डान्तरादित्यो

ज्योतिर्मण्डलं ग्राह्यं नापरं

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं

सह । अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा

(मृत्युमेति) विद्ययाऽमृतमश्नुते

[ईशा. ११+ मैत्रा. ७।९+]

विद्युति तृप्यन्त्यां यत्किञ्च यद्युश्च

पर्जन्यश्चाधितिष्ठतस्तत्तृप्यति

तस्यानुत्तिं तृप्यति प्रजया प्रशु-

भिराज्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसेनेति

विद्युतोऽभिव्यद्युतदा ३ इति (मा. पा.)

विद्युतो व्यद्युतदा ३ इति

विद्युद्विद्याध्वान्विषः परमे व्योमन्

विद्युद्बहिरद्वोरात्रं निमेषोन्मेषसंज्ञकम्

गोपालो. १।१२

श्वेता. ५।१

भ. गी. ५।१८

बृ. जा. ३।१

शिवो. १।३४

तैत्ति. १।३।५

महो. ५।११०

१ देव्यु. १

संहितो. ३।४

मुक्तिको. १।९१

अद्वै. भा. १

महावा. २

भवसं. ३।१

छांदो. ५।२३।२

केनो. ४।४

केनो. ४।४

मैत्रा. ६।३५

गुह्यका. १८

विद्युद्धसितं (गायत्र्याः)

सन्ध्यो. २३

विद्युद्ब्रह्मेत्याहुर्विज्ञानाद्विद्युद्विद्यत्येनं

प्राप्मनो य एवं वेद विद्युद्ब्रह्मेति

विद्युद्धयेव ब्रह्म

बृह. ५।७।१

विद्योतते स्तनयति स प्रतिहारः

छांदो. २।३५।१

विद्रुमद्रुमसङ्काशं योनिस्थाने स्थितं रजः

ध्या. वि. ८७

विद्रुतसङ्गयासी चेद्रुरोः सकाशात्

प्रणवमहावाक्योपदेशं प्राप्य...

पर्वतवनदेवतालयेषु सञ्चरेत्

ना. प. ४।४८

विद्रुतसङ्गयासी ज्ञानसङ्गयासी

विविदिषासङ्गयासी कर्मसङ्गयासी

ना. प. ५।३

विद्वानप्यासुरश्चेत्स्यान्निष्कूलं

तत्त्वदर्शनम्

ब्रसहो. ३।२३

विद्वानेतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति

प्रश्नो. ५।२

विद्वान् त्रिवृत्सूत्रं त्यजेत्

आरुणि. ३

(तथा) विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः

मुण्ड. ३।२।८

विद्वान्नित्यं सुखे तिष्ठेद्विद्या

चिद्रसपूर्णया

ते. वि. १।५१

(तदा) विद्वान् ब्रह्मज्ञानाग्निना

कर्मबन्धं निर्देहेत्

पैङ्गलो. ४।११

विद्वान् ब्रह्मामृतोऽमृतम्

बृ. ह. ४।४।१७

विद्वान्मनो धारयेताप्रमत्तः

श्वेताश्व. २।१

विद्वान्युक्तः समाचरन्

भ. गी. ३।२६

विद्वान्सर्वमैहिकामुष्मिकसुखश्रमं

ज्ञात्वा.. ब्रह्मचर्यसमाप्य गृहीभवेत्

म. हं. प. १

विद्वान्सतेनलयेन पश्यन्ति

सुबालो. ८।१

विद्वान्स्वदेशमुत्सृज्य सङ्गयासान्तरं

स्वतः । कारागारविनिर्मुक्तचोर-

वहुरतो वसेत्

मैत्रे. २।११

विद्वान्सो मनसा प्रजायमाना

रेतसैवमजीविष्येति [बृह. ६।१।८]

+६।१।९-१३

विशिष्टो य इज्यते

भ. गी. १।७।११

विशिष्टशदावतुपनीतोपनयनानन्तरं

तत्सत्कुलप्रसूतः... साधनचतु-

ष्टयसम्पन्नः सङ्गयस्तुमर्हति

ना. प. ३।१

विधिवत्प्राणसंयामैर्नाडीचक्रे

विशोषिते । सुषुम्नावदनं

भित्त्वा सुखाद्विशतिं मारुतः

छांदो. १।७।९

विधिहीनमसृष्टागम्

भ. गी. १।७।१३

विधूमे च प्रशान्तामौ यस्तु माधु-
 करी चरेत् । गृहे च विप्रमुख्यानां
 यतिः सर्वोत्तमः स्मृतः ना. प. ६।१२
 विधूमे सन्नमुखले व्यङ्गारे भुक्त-
 वज्जने । कालेऽपराद्धे भूयिष्ठे
 मिश्राचरणमाचरेत् १सं.सो. २।७३
 विधूतिरेषां लोकानामसम्भवाय छांदो. ८।४।१
 विधेयते नाम । विधेस्त्वमस्माकं नाम चित्त्यु. १।२
 विध्युक्तकर्मसङ्केपात् सञ्ज्यास-
 स्त्वातुरः स्मृतः ना. प. ३।९
 विध्युक्तकर्मसंयुक्तः कामसङ्कल्प-
 वर्जितः । यमाद्यष्टाङ्गसंयुक्तः... जा. द. ९।२
 विनर्दिसाम्नो वृणे पशव्यमित्यग्ने-
 रुद्गीथोऽनिरुक्तः प्रजापतेर्निरुक्तः छांदो. २।२२।१
 विनष्टदिग्भ्रमस्यापि यथापूर्वं विभाति
 दिक् । तथा विज्ञानविध्वस्तं
 जगन्नास्तीति भावय (जगन्मे
 भाति तन्नहि) [महो. ४।२०+ वराहो. ३।१७
 विनश्यत्स्वविनश्यन्तं भ.गी. १३।२८
 विना कार्यं सदा गुप्तं योगसिद्धस्य
 लक्षणम् यो.शि. १।१५६
 विना तर्कप्रमाणाभ्यां ब्रह्म यो
 वेद वेद सः पा. ब्र. २१
 विना देहेन योगेन न मोक्षं लभते
 चिन्धि । अपकाः परिपकाश्च
 वेदिनो द्विविधाः स्मृताः यो. शि. १।२५
 विना प्रमाणसुष्ठुत्वं यस्मिन्सति
 षडार्यधीः । अयमात्मा नित्य-
 सिद्धः प्रमाणे सति भासते २ आत्मो. ६
 विनायकस्य यद्धानं पूजनं भवमोचनं गणेशो. १।५
 विनायकोऽहमित्येतत्तत्त्वतः प्रवदन्तिये।
 न ते संसारिणो नूनं... गणेशो. १।५
 विनाशमव्ययस्यास्य भ.गी. २।१७
 विनाशस्तस्य विद्यते भ.गी. ६।४०
 विना शक्तिं न मोक्षो न ज्ञानं न
 स्वर्गं न धर्मो न तपो न हरिर्न
 हरी न विरिञ्चिः श्रीचक्रो. २
 विनाशं कालतो याति ततो-
 ऽन्यत्सकलं शुभा (ब्रह्मात्मनः) शारभो. २४

विनाशाय च दुष्कृताम् भ.गी. ४।८
 विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्या-
 मृतमश्नुते ईशा. १४
 विना श्रीतुलसीं विप्रा येऽपि आर्द्रं
 प्रकुर्वते । वृथा भवति तच्छ्राद्धं
 पितॄणां नोपगच्छति तुलस्यु. १४
 विनियम्य समन्ततः भ.गी. ६।२४
 विनोदतः कामिनीमध्ये कामिनी-
 र्दृष्ट्वा च सदानन्दरूपो भवेत् कामराज. २
 विन्दते प्राजापत्यं रायस्पोषं
 गौपत्यम् [भस्मजा. १।७+ नारा. ३
 विन्दन्त्यात्मनि यत्सुखम् भ.गी. ५।२३
 विन्ध्यस्योत्तरे तीरे मारीचो नाम
 राक्षसः । तत्र मूत्रपुरीषाभ्यां
 हुताशनं शमय.. वनदु. १६०
 विन्ध्याटव्यां पायसान्नमस्ति
 चेज्जगदुद्भवः ते. बिं. ६।७८
 विपरीतं ब्रह्मचर्यमनुष्ठेयं मुमुक्षुभिः कठरु. १०
 विपरीतानि केशव भ.गी. १।३०
 विपर्यस्ते वा कन्यके जिह्वेन वा
 हृदयेयातां तदप्येवमेव विद्यात् ३ऐत. २।४।५
 विपर्यस्तो निदिध्यासे किं ध्यान-
 मविपर्यये । देहात्मत्वविपर्यासं
 न कदाचिद्ब्रजाम्यहम् अवधू. १७
 विपर्यासाद्यथा जाप्रदचिन्त्यात्
 भूतवत्स्पृशेत् । तथा स्वप्ने
 विपर्यासाद्धर्मास्तत्रैव पश्यति अ. शां. ४१
 विपर्यासे तयोः क्षीणे तुरीयं पदमश्रते आगम. १५
 विपापो विरजो विचिकित्सो
 ब्राह्मणो भवति बृह. ४।४।२३
 विप्रयोगं प्रियैश्चैव संयोगं च तथा-
 प्रियैः । जरया चाभिभवनं
 व्याधिभिश्चोपपीडनम् ॥...
 प्राप्यन्ते नारकै राजन् भवसं. १।४-६
 विप्राणां विनयो ह्येष शमः
 प्राकृत उच्यते । दमः प्रकृति-
 दान्तत्वादेवं विद्वान्छर्म ब्रजेत् अ. शां. ८६
 विभक्तमिव च स्थितम् भ.गी. १३।१७

विभागकलनां त्यक्त्वा सन्मात्रै-
कपरो भव

अ. पू. ४।६६

विमुरहमनवद्योऽहं निरवधिनिः-
सीमतत्त्वमात्रोऽहम्

आ. प्र. ८

विमुर्नित्यो निष्कलङ्को निर्विकल्पो
निरञ्जनो निराख्यातः शुद्धो
देव एको नारायणो न द्वितीयः

त्रि. म. ना. १।५

विमुर्विभूनां विभवोद्भवाय

पारमा. १।२

विमुं चिदानन्दमरूपमद्भुतम्

कैव. ७

विमुं प्रमितं विचक्षणासन्दी

कौ. त. १।३

विमुं सर्वगतं नित्यं विश्वयोनिम-
कारणम् । व्याप्यव्याप्यं यतः

सर्वं तं वै पश्यन्ति सूरयः

भवसं. ३।४

विमुः साक्षी न संशयः

सर्वसारो. १०

विभूतिर्भसितं अस्म क्षारं रक्षेति

भवन्ति पञ्चनामानि

वृ. जा. १।६

विभूतिं च जनार्दन

भ.गी. १०।१८

विभूतीनां परंतप

भ.गी. १०।४०

विभूतेर्विस्तरो मया

भ.गी. १०।४०

विभूतिं प्रसवं त्वन्ये मन्यन्ते सृष्टि-

चिन्तकाः । स्वप्नमायासरूपेति

सृष्टिरन्यैर्विकल्पिता

आगम. ७

विभेदजनके ज्ञाने नष्टे ज्ञानबला-

न्युने । आत्मनो ब्रह्मणो भेदम-

सन्तं किं करिष्यति

जा. द. ४।६३

विभ्राजदेतद्यतयो विशन्ति

महाना. ८।१४

विभ्राजमानं भूतवर्गेष्वसङ्गं

विलातिगं स्वप्नभाभासमानम्

२ देव्यु. ३३

विभ्राजमानां हरिणी यशसा

सम्परीवृताम् । पुरीं हिरण्मयीं

ब्रह्मा विवेशापराजिता

अरुणो. ३

विभ्राद् स्रग्नाद् भूमधामा स्वमेव

पिताऽसि माता भ्रातृकश्चादिविद्यः

२ रुद्रो. ६२

विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया योगा..

त्रि.म.ना.७।१२

विमुक्तश्च विमुच्यते

कठो. ५।१

विमुक्तं मन्येतात्मानं मुच्यते

नात्र संशयः

अमन. २।४५

विमुक्तः सर्वपापेभ्यः कैवल्यायोप-

कल्पते । सर्वाभिः सिद्धिभि-

स्तस्य किं कार्यं कमलानने

गुह्यका. ८४

विमुक्तिपादपच्छायामृते कुत्र

सुखं नृणाम्

भवसं. १।३०

विमुक्तिरिति पायौ

तैत्ति. ३।१०।२

विमुक्तो मामुपैष्यसि

भ. गी. ९।२८

विमुक्तोऽमृतमश्नुते

भ.गी. १४।२०

विमुच्य निर्ममः शान्तः

भ.गी. १८।५३

विमूढाः कर्तुमुद्युक्ता ये हठाचेतसो
जयन् । ते निवृणन्ति नागेन्द्र-

मुन्मत्तं विसतन्तुभिः

मुक्तिको. २।४७

विमूढा नानुपश्यन्ति

भ.गी. १५।१०

विमूढो ब्रह्मणः पथि

भ. गी. ६।३८

विमृश्यैतदशेषेण

भ.गी. १८।६३

वियदाकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसम-

न्वितम् । अर्धेन्दुलसितं देव्या

बीजं सर्वार्थसाधकम्

१ देव्यु. १४

वियासाय स्वाहा

चित्त्यु. २०।१

वियोगायैव संयोगा आधयो

व्याधयोऽधियाम्

अक्षयुप. २६

वियोगोपदेशः

निर्वाणो. १

विरक्तस्य तु संसाराज्ज्ञानं

कैवल्यसाधनम्

जा. द. ५।४७

विरक्तः पुरुषः सर्वदा ब्रह्माहमिति

व्यवहरेत्

ना. प. ६।१

विरक्तः प्रव्रजेद्धीमान्सरक्तस्तु गृहे

वसेत् । सरागो नरकं याति

प्रव्रजन् हि द्विजाधमः

ना. प. ३।१४

विरक्तः सन् यो वर्षासु ध्रुवशीलोऽष्टौ

मास्येकाकी चरन्नेकत्र निवसेत्

ना. प. १७।१

विरक्ता ज्ञानिनश्चान्ये देहेन

विजिताः सदा । ते कथं

योगिभिस्तुल्या मांसपिण्डाः

कुदेहिनः

यो. शि. १।४८

विरजं निष्कलं शुभ्रमक्षरं यद्ब्रह्म

विभाति स नियच्छति

ब्रह्मो. १

विरजः पर आकाशादज आत्मा

महान्भुवः

बृह. ४।१।२०

विरजानलजं चैव धार्यं प्रोक्तं

महर्षिभिः (भस्म)

विरजा ब्रह्मरूपिणी

विरज्य सर्वभूतेभ्य आविरिञ्चि-
पदादपि । घृणां विपात्य सर्व-
स्मिन्पुत्रमित्रादिकेष्वपि ॥

अद्वालुर्मुक्तिमार्गेषु वेदान्त-
ज्ञानलिप्सया । उपायनकरो

भूत्वा गुरुं ब्रह्मविदं ब्रजेत्
विरलत्वंव्यवहृतेरिष्टचैद्ब्रह्मानमस्तु ते

विरा आ आ आ आं हुं

आ आ आञ्या (मा. पा.)

विरागमुपयात्यन्तर्वासनास्व-
वासरम् । क्रियासुदाररूपासु

क्रमैर्भोदतेऽन्वहम्
विराजति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन

सर्वमायुरेति, ज्योर्जीवति,

महान्प्रजया पशुभिर्भवति

विराजेमेवाप्येति यो विराज-

मेवास्तमेति

विराजा सुदर्शना जिता सोम्या

मौषा कुमाराऽमृता सत्या

मथ्यमा नासीराशिगुरासूरा-

सूर्यास्त्रैराविज्ञेयानि नाडी-

नामानि दिव्यानि

विराजो अविपूरुषः [पु. सू. ५+

[क्र. मं. १०।९०।५+

विरादध्यानं हि तज्ज्ञेयं महा-

पातकनाशनम्

विरादपुरुषेणोपदिष्टं रहस्यं ते

विविच्योच्यते

विरादप्रणवः षोडशमात्रात्मकः

षट्त्रिंशत्तत्त्वातीतः

विरादप्रणवः षोडशमात्रात्मितः

विरादस्थितिप्रलयौ मूलाविद्याण्ड-

परिपालकस्यादिनाशायणस्या-

दोरात्रिसंज्ञकौ

विरादेकपिर्भास्वती स्मृता चतुर्थी

पादौ भवति

बृ. जा. ५।४

क्षुरिको. १६

ना. प. ६।२२

१ अवधू. २०

छां.उ. २।२४।८

अक्षयुप. ७

छांदो. २।१६।२

सुबालो. १।१

सुबालो. ६।१

चित्त्यु. १२।२

वां. सं. ३१।५

गुह्यकां. ६

नां. प. २।१

नां. प. ८।३

तुरीयी. १

त्रि.म.नां. ३।६

नृसिंहो. ३।३

विराद्धिरण्यगर्भश्च ईश्वरश्चेति ते

त्रयः । ब्रह्माण्डं चैव पिण्डाण्डं

लोका भूरादयः क्रमात् ॥ स्व-

स्वोपाधिलयादेव लीयन्ते

प्रत्यगात्मनि

विराद्धिरण्यगर्भेश्वरा आधिविलया-

त्परमात्मनि लीयन्ते

विराडूपे मनो युञ्जन्महिमानमवा-

मुयात् । चतुर्मुखे मनो युञ्ज-

ञ्जगत्सृष्टिकरो भवेत्

विराद्धिश्चः स्थूलश्चाकारः

विरिञ्चिनारायणशङ्करात्मकं नृसिंह-

देवेश तव प्रसादतः । अर्चिन्त्य-

मव्यक्तमनन्तमव्ययं वेदात्मकं

ब्रह्म निजं विजानते

विरूपाक्षेण बभ्रुणा वाचं वदिष्यतीह तः नीलरु. ३।३

विरूपाश्च सरूपाश्च पशूनव-

रुन्धे सर्वमायुरेति

विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः

अमिस्ताः अग्रे प्रमुमोक्तु देवः

विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः ।

तेषां सप्तानामिह

रन्तिरस्तु [चित्त्यु.

विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः ।

वायुस्ताः अग्रे प्रमुमोक्तु देवः

विरोधो न विद्यते ब्रह्मा-

द्वितीयमेव सत्यम्

विलम्बिनीति या नाडी व्यक्ता

नाभौ प्रतिष्ठिता । तत्र नाड्यः

समुत्पन्नास्तिर्यगूर्ध्वमधोमुखाः

विलापिनी (भूमिका) चतुर्थी

स्याद्वासना विलयात्मिका

विलीना ज्ञानतत्कार्ये मयि निद्रा

कथं भवेत्

विवर्णं चतुर्मात्रं सर्वव्यापि...

सर्वाणि च भूतानि स्यान्वर-

जङ्गमान्यन्वभवत्

२ प्रणवो. २

योगकुं. ३।२३

पैङ्गलो. ३।४

यो. शि. ५।५२

यो. चू. ७५

स्कन्दो. १३

नीलरु. ३।३

छांदो. २।१६।२

चित्त्यु. ११।११

११।१२, १३

चित्त्यु. ११।१३

त्रि.म.नां. ४।५

यो. शि. ५।२०

अ. पू. ५।८२

वराहो. ३।५९

विवर्धयति ह्यमृतं तस्मादेव जितां
मही । प्राणवायोस्तु संरोधा-
त्प्राणायामस्तु पठ्यते

विवर्धवान् मनवे प्राह
विविक्तदेशमासाद्य सर्वसम्बन्धवर्जितः
विविक्तदेशसेवित्वं
विविक्तदेशे च सुखासनस्थः शुचिः
विविक्तदेशे शुचिं सन्निविष्टः

समासनं किञ्चिदुपैति पश्चात्
विविक्तसेवी लङ्घ्याशी
विविक्तेति वेदाः स्तुवन्ति
विविक्ते विजने देशे पवित्रेऽति-

मनोहरे । समासीनः सुखासीनः
पश्चात्किञ्चित्समाश्रितः ॥ सुख-
स्थापितसर्वाङ्गः सुस्थिरात्मा
सुनिश्चलः । बाहुदण्डप्रमाणेन
कृषदृष्टिः समभ्यसेत्

विविक्ते विजने रम्ये पुष्पाश्रम-
विभूषिते । स्थानं कृत्वा शिव-
स्थाने ध्यायेच्छान्तं परं शिवम्
विविदिषांसङ्ख्यासी चेच्छतपथं
गत्वा...दण्डं परिग्रहेत्

विविधविचित्रस्थूलसूक्ष्मोत्कृष्ट-
निकृष्टानन्तर्देहान्परिगृह्य...
पुनः पुनस्तत्तत्कर्मफलविषय-
प्रवृत्तिरेव जायते

विविधविचित्रानन्तजगदाकारो
भवति

विविधविचित्रानन्तशक्तेः परब्रह्मणः
स्वरूपपद्मानेन विरोधो न विद्यते
विविधं चास्ति वै प्रोक्तं
प्राणायामस्य लक्षणम्

विविधाश्च पृथक्चेष्टाः
विविधोपायैरपि अविद्याकार्याण्यन्तः-
करणान्यतीत्य कालाननु-
त्तानि जायन्ते

विबुद्धं सच्चिदानन्दं
विबुद्धे कुरुनन्दन

विबुद्धे भरतवध

योगो. ३०

भ. गी. ४।१

त्रि. ब्रा. २।८९

भ. गी. १३।१९

कैव. ५

अमन. १।१५

भ. गी. १८।५२

राधिको. ५

अमन. २।४८

शिवो. ७।२८

नां. प. ४।४९

त्रि. म. नां. ५।३

त्रि. म. नां. २।६

त्रि. म. नां. २।३

योगो. ६

भ. गी. १८।१४

त्रि. म. नां. ४।९

भ. गी. १४।११

भ. गी. १४।१३

भ. गी. १४।२

विवेकयुक्तिबुद्ध्याऽहं जानाम्या-
त्मानमद्वयम् । तथापि बन्ध-
मोक्षादिव्यवहारः प्रतीयते

विवेकरक्षा । विवेकलभ्यम्
विवेकं परमाश्रित्य बुद्ध्या सत्य-
मवेक्ष्य च । इन्द्रियारीनलं
छित्त्वा तीर्णो भव भवार्णवात्

विवेकिनः प्रशान्तस्य यत्सुखं
ध्यायतः शिवम् । न तत्सुखं
महेन्द्रस्य ब्रह्मणः केशवस्य वा

विवेकी सर्वदा मुक्तः संसार-
भ्रमवर्जितः
विवेश भूतानि चराचराणि
विशते तदनन्तरम्
विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः
विशन्ति वस्त्राण्यभिविज्वलन्ति
विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः

[सुदर्श. ६+
विशन्ति विद्या विमला मुक्ता
वेणुमिवोत्तमम् । विरक्तमनसां
सम्यक्स्वप्नसङ्गादुदाहृतम्

विशीर्णं वस्त्रं वस्त्रं वा प्रतिगृह्य
नान्यत्प्रतिगृहीयात्
विशीर्णान्यमलान्येव चेलानि
प्रथितानि तु । कृत्वा कन्यां
बहिर्वासो भारयेद्वातुराश्रितम्

विशुद्धिः कर्णठमूले च आज्ञाचक्रं
च मस्तकम्

विशेषहीनश्च कविः पुराण एष
स्वतन्त्रः पुरुषः पुराणः
विशेषं सम्परित्यज्य सन्मात्रं यद्-
लेपकम् । एकलपं महारूपं

सत्तायास्तत्पदं विदुः
विशेषेण न शूद्रकीपतितोदक्या
सम्भाषणम्

विशेषेणैव कर्तव्यं भस्त्राल्यं
कुम्भकंतिवदम् [यो. शि. १।१००

विशोको विमृत्युरजिघृत्स्वोऽपिपासः
शरीरहीनोऽप्यजरः पुराणः

आ. प्र. १२

निर्वाणी. १२

महो. ५।८४

शिवो. ७।२८

यो. शि. १।१८

महानां. १।१

भ. गी. १८।५५

भ. गी. १३।१९

भ. गी. १३।२८

भ. गी. ८।११

महो. ६।१९

कठश्रु. ७

ना. प. ४।४९

योगकुं. ३।११

२ देव्या. ११

क. १. ४।५५

ना. प. ५।५

योगकुं. १।१९

२ ब्रह्मो. ६६

विश्विष्टं च गतायासं विकल्प-
विषयमहम् । सुविष्टं च
सुलीनं च विकल्पविषयापहम् अमन. २।९४
विश्विष्टं नाम सम्प्रोक्तं राजसं तु
गतागतम् । सुविष्टं सात्त्विकं
प्रोक्तं सुलीनं गुणवर्जितम् अमन. २।९३
विश्वकर्मणः समवर्तताधि चित्त्यु. १३।१
विश्वजित्प्रथमः पादः स्वप्रस्थान-
गतः प्रभुः ना. प. ८।१२
विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखो विश्वतो-
(इस्त उत)बाहुस्त विश्वतस्पात् श्वेताश्व. ३।३
[महाना. २।२+२शिवसं. २६+
[वा. सं. १७।१९+ त्रि.म.ना. ६।४
विश्वतः परमं नित्यं (परमाभित्यं) १ रुद्रो. २
विश्वं नारायणं हरिम्
[महो. १।५+चतुर्वे. २+ महाना. ९।१
विश्वतः पादोऽपाणिर्विश्वतः
पाणिरहमशिराः भस्मजा. २।७
विश्वतः पृष्ठेषु सर्वतः पृष्ठेऽनुत्तमे-
पूचमेषु लोकेष्विदं वाव
तद्यद्विदमस्मिन्नन्तः पुरुषे
ज्योतिस्त्वस्यैषा दृष्टिः छांदो. ३।१४।७
विश्वतैजसप्राज्ञतटस्थमेदैरेक एव
एको देवः साक्षी निर्गुणश्च
तद्ब्रह्माहमिति व्याहरेत् ना. प. ६।६
विश्वतैजसप्राज्ञाः स्वस्वोपाधिलयात्
प्रत्यगात्मनि लीयन्ते पैङ्गलो. ३।४
विश्वतोबाहुं विश्वात्मा तमेकमद्वैतं
निष्कलं निष्क्रियं शान्तं भस्मजा. २।४
विश्वतोइस्त उत विश्वतस्पात्
[महाना. २।२+२शिवसं. २६+ १ रुद्रो. २
विश्वतै नमैषा तनूर्भगवतो
विष्णोर्यद्विदममम् मैत्रा. ६।१३
विश्वतयो ब्राह्मणः शिवं भजति १ रुद्रोप. १
विश्वतविश्वं कृतमकृतं परमपरं
परायणं च त्वम् चतुर्वे. ८
विश्वतसि विश्वायुः सर्वमसि सर्वा-
युरभिभूतौ गायत्रीमावाहयामि

सावित्रीमावाहयामि सरस्वती-
मावाहयामि महाना. ११।७
विश्वमाभासि रोचनम् चित्त्यु. १६।१
विश्वमिदं वृणाति चित्त्यु. ११।३
विश्वमिन्नु समन्वालभध्वमिति शौनको. १।४
विश्वमेनाननु प्रजायते नृ. पू. १।७
विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्वमुपजीवति
[महाना. ९।२+ महो. १।६
विश्वमेवेदं पुरुषः (तैत्तिरीयसंहिता) तै.ना.उ. ११।१
विश्वमेवेदं पुरुषं तं विश्वमुपजीवति चतुर्वे. ३
विश्वम्भरो वा विश्वम्भरकुलाये
तं पश्यन्ति बृह. १।४।७
विश्वम्भरो वा विश्वम्भरकुलाय
एवमेवैष ब्राह्मणात्मेदं शरीरमनु-
प्रविष्ट आलोमभ्य आनखेभ्यः कौ. त. ४।१९
विश्वयोनिं महाशक्तिमायुःप्रज्ञावि-
वर्धनीम् । मातङ्गीं मदिरामोदां
वन्दे तां जगदीश्वरीम् वनदु. २१
विश्वरूपधरं विष्णुं नारायणमना-
मयम् ।...मनसा संस्मरन्ब्रह्म
तुष्टाव परमेश्वरम् रामो.जा. ५।१
विश्वरूपस्य देवस्य रूपं यत्किञ्चि-
देव हि ।... ध्यायतो योगिनो
यस्तु साक्षादेव प्रकाशते त्रि.त्रा. २।१५९
विश्वरूपं करिणं जातवेदसं(मा.पा.) प्रभो. १।८
(ॐ) विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं
हिरण्यमयं पुरुषं ज्योतीरूपं
तपन्तम् । [अक्ष्यु. २+ चाक्षुषो. ४
विश्वरूपं तृतीयेऽह्नि सद्यश्चैव नमोनमः सृत्युला. ४
विश्वरूपं परं ज्योतिस्त्वरूपं
रूपवर्जितम् गोपालो. २।५
विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं परायणं
ज्योतिरेकं तपन्तम् [प्रभो. १।८+ मैत्रा. ६।८
विश्वरूपोऽसि, ब्रह्मैकस्त्वं अ. शिर. ३।१
विश्वव्यापी राघवो यस्तदानीमंत-
र्वधे शङ्खचक्रे गदागजे रा. पू. ता. ९।९
विश्वशास्ता विधरणो विश्वरूपो
रुद्रः प्रणीतीतमनः प्रजापतिः वा. सं. २४

विश्वम् तैजसश्चैव प्राज्ञश्चेति

च ते त्रयः

योगकुं. ३।२१

विश्वम् तैजसः प्राज्ञ एव च,
जीवत्रयं सत्त्वरजस्तमांसि

च गुणत्रयम्

वराहो. १।११

विश्वसृज एतेन वै विश्वमिदमसृजन्त

नृ. पू. १।७

विश्वस्य चक्षुर्विश्ववक्त्रोरुबाहुर्विश्व-

स्पतिर्भुवनस्यास्य गोप्ता

२ रुद्रो. ७७

विश्वस्य चैकां परिवेष्टयित्रीं ज्ञात्वा

गुह्यां शान्तिमत्यन्तमेति

गुह्यका. ५७

विश्वस्य नेता विश्वभर्ता त्वमीशस्तव

ज्ञानात् सर्वमेव ह विन्देत्...

२ रुद्रो. ६५

विश्वस्य योनिं प्रतपन्तमुग्रं पुरः

प्रजानामुदयत्येष सूर्यः

चाक्षुषो. ४

विश्वस्य वैखरी ज्ञेया मध्यमा

तैजसात्मनः । प्राज्ञरूपा हि

गान्धर्वो. १

पश्यन्ती तुरीयस्य परा मता

विश्वस्य स्रष्टारमनेकरूपं विश्वस्यैकं

परिवेष्टितारम्

२ देव्यु. ३२

[श्वेता. ४।१४, १६+५।१३+

विश्वस्यात्त्वविवक्षायामादिसामान्य-

मुत्कटम्

आगम. १९

विश्वस्यादिरहं हरः

गणेशो. ३।१३

विश्वस्यायतनं महत् [कैव. १६+

विश्वस्येशानं दृषमं मतीनाम्

महाना. ९।७

[महाना. १३।११+

विश्वस्यैकं परिवेष्टितारमीशं तं

चित्त्यु. १५।१

ज्ञात्वाऽमृता भवन्ति

श्वेताश्व. ३।७

विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा देवं

मुच्यते सर्वपाशैः [श्वेताश्व.

४।१४+५।१३

विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा

शिवं शान्तिमत्यन्तमेति

श्वेताश्व. ४।१४

विश्वं च विश्वातीतस्त्वं. (शिवः)

२ रुद्रो. ४२

विश्वं तु हृदयं प्रोक्तं पृथिवी

पाद उच्यते

गुह्यका. १८

विश्वं त्वाहुतयः सर्वा यत्र

ब्रह्मामृतोऽसि

प्रा. हो. २।१

विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम्

महाना. ९।१

विश्वं न्यस्तं विष्णुरेको विजज्ञे

ग. पू. २।८

विश्वं पुराणं तमसः परस्तात्

महाना. १।५

विश्वं विभर्ति प्रसुरोऽभूदन्तं

संराजयन्तं सकलं प्ररूढं स नो

वितस्य प्रहिणोतु पथे स्वाहा

पारमा. ८।४

विश्वं विभर्ति भुवनस्य नाभिः

महाना. १।६

विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं

जायमानं च यत् । सर्वो ह्येष

रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो नमः

महाना. १०।११

विश्वं भूतं भुवनं...सर्वस्य

सोमोऽहमेव जनिता विश्वाधिकी

रुद्रो महर्षिः

भस्मजा. २।५

विश्वं यः पाति विमलोऽमलाख्य-

स्तस्मै ककुषे वरदस्य पुष्ट्यै स्वाहा

पारमा. ८।२

विश्वं विचक्षे यमयज्ञभीके नेशे मे

कश्च महिमानमन्यः

वा. मं. १३

विश्वंहीषद्विष्णवे याः प्रभविष्णवे

ता अभितं भरत्रे स्वाहा

पारमा. ९।४

विश्वाय स्वाहेत्यमौ हुत्वा मन्ये

सः स्रवमवनयति

बृह. ६।३।३

विश्वाधारस्त्वमनाधारोऽनाघेयो-

ऽनिर्देश्योऽप्रतर्क्यः व्याप्येदं

सर्वं तिष्ठसीति

गणेशो. ३।१३

विश्वाधिकं शङ्करं ये प्रमृदा हीन

विष्णोर्ब्रह्मणो वा वदन्ति । न

संसारात्प्रमुच्यन्ते कदाचिच्छतैः

करुपैः कोटिभिर्वाथ दोषैः

सि. शि. २

विश्वाधिपः सर्वभूतेषु गूढः

श्वेताश्व. ४।१५

विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः । हिरण्य-

गर्भं जनयामास पूर्वं स नो

बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु

श्वेताश्व. ३।४

विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः । हिरण्य-

गर्भं पश्यति जायमानं

श्वेताश्व. ४।१२

विश्वादि देव सवितर्दुरितानि

परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव

[ऋक्सं. ४।४।२५।५+

महाना. १२।२

विश्वादि नो दुर्गहा जातवेदः

सिन्धुं न नावा दुरितातिपथि

[महाना. ६।१६+वनदु. ११७+ ऋक्सं. ३।८।१९।९

विश्वाभिन्नं ह्येतदहः संशिष्यन्त-

मिन्द्र उपनिषससाद

१ श्वेता. २।३।१

विश्वाचिर्विश्वतोमुखः

महाना. ९।९

विश्वेदेवा अनुषुबेकविंशो वैराजः

कारत्समानो वरुणः साध्या

उत्तरत वृणन्ति तपन्ति

वृणन्ति स्तुवन्ति...

विश्वे देवा ऊर्जा

विश्वेदेवा औहोयिकारः प्रजापति-

हिङ्कारः प्राणः स्वरोऽन्नं या

वाग्विराट्

विश्वे निमग्नपदवीः कृत्तीतां त्वं

जातवेदो भुवनस्य नाथः

विश्वेश्वर नमस्तुभ्यं विश्वात्मा

विश्वकर्मकृत् । विश्वभुविश्व-

मायस्त्वं विश्वक्रीडारतिः प्रभुः

विश्वेश्वरोऽहमजरोऽहम्

विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च

विश्वोत्तीर्णस्वरूपाय चिन्मया-

नन्दरूपिणे । तुभ्यं नमो

हयग्रीव विद्याराजाय स्वाहा

(विष्णवे) [हयग्री. १+

विश्वोदराभिधा नाडी कन्दमघ्ये

व्यवस्थिता

विश्वोदराभिधायास्तु भगवा-

न्पावकः पतिः

विश्वोदरी तु या नाडी सा भुङ्क्तेऽन्नं

चतुर्विधम्

विश्वो वैश्वानरः पुमान्

विश्वोऽसि वैश्वानरो विश्वरूपं

त्वया धार्यते जायमानम्

विश्वोऽसि वैश्वानरोऽसि विश्वं

त्वया धार्यते जायमानम् ।

विशन्तु त्वामाहुतयश्च सर्वाः

प्रजास्तत्र यत्र विश्वामृतोऽसीति

विश्वो हि स्थूलसुक्ष्मि तैजसः

प्रविबिक्तमुक् । आनन्द-

मुक्त्या प्राज्ञः सर्वसाक्षीत्यतः

पुनः (विद्या भोगं निबोधत)

[यो. बृ. ७२+

विषमागो इति, अमृतभागश्चन्द्रमाः

विषमचित्तनिग्रहः

मैत्रा. ७।४

चित्त्यु. ८।३

छांदो. १।१३।२

एका. उ. २

मैत्रा. ५।३

भस्मजा. २।७

भ. गी. १।१२२

त्रि.म.ना.७।१०

जा. द. ४।२३

जा. द. ४।३९

यो. शि. ५।२३

जा. प. ८।११

प्रा. हो. २।१

मैत्रा. ६।९

आगम. ३

छांदि. १।४।६

महो. ३।९०

विषमिव विषयादीन्मन्यमानो

दुरन्ताश्चगति परमहंसो

वासुदेवोऽहमेव

विषमे समुपस्थितम्

विषयव्यावर्तनपूर्वकं चैतन्ये चेत-

स्थापनं धारणं भवति

विषयं ध्यायतः पुंसो विषये

रमते मनः

विषयः स हि बुद्धानां तत्साम्य-

मजसद्वयम्

विषयानन्दवाञ्छामेमाभूदानन्दरूपतः आ. प्र. १६

विषयानिन्द्रियैश्चरन्

विषयानुपसेवते

विषया विनिवर्तन्ते

विषयाशीविषासङ्गपरिजर्जर-

चेतसाम् । अप्रौढात्मविवेका-

नामायुरायासकारणम्

विषयी विषयासक्तो याति

देहान्तरे शुभम्

विषये गच्छति प्राणश्चेष्टते वाग्वदत्यपि

विषयेन्द्रियसंयोगात्

विषयेभ्य इन्द्रियार्थेभ्यो मनो-

निरोधनं प्रत्याहारः

विषयेषु विचरतामिन्द्रियाणां बला-

दाहरणं प्रत्याहारः

विषयेष्वरतिमोक्षे व्यवसायः

परा धृतिः

विषयेष्वात्मतां दृष्ट्वा मनसश्चित्त-

रञ्जकम् । प्रत्याहारः स विज्ञेयो-

ऽभ्यसनीयो मुहुर्मुहुः

विषं दृष्ट्वाऽमृतं दृष्ट्वा विषं त्यजति

बुद्धिमान् । आत्मानमपि दृष्ट्वा-

हमनात्मानं त्याजाम्यहम्

विषं वर्षति सूर्योऽसौ स्रवत्यमृत-

मुन्मुखः । तालुमूले स्थितश्चन्द्रः

सुधां वर्षत्यधोमुखः

विषं विषयवैषम्यं न विषं विषमुच्यते

विषादं मदमेव च

विषादी दीर्घसूत्री च

बराहो. २।३४

भ. गी. २।२

मं. ब्रा. ३।३

यो. शि. ३।२४

अलातशां. ८०

आ. प्र. १६

भ. गी. २।६४

भ. गी. १।५।९

भ. गी. २।५९

महो. ३।९०

ब्र. वि. ५०

पो. ब्र. १३

भ. गी. १।८।३८

मं. ब्रा. १।१

शांदि. १।८।१

आयुर्वे. १६

ते. वि. १।३४

आ. प्र. १८

यो. शि. ५।३३

महो. ३।५४

भ. गी. १।८।३५

भ. गी. १।८।३६

विषासहिर्द्भवति विषासहिर्द्वा
 भजा भवति बृह. २।१७
 विषीदन्त्वमिदं वचः भ. गी. २।१०
 विषीदन्त्वमिदं वाक्यं भ. गी. २।१
 विषीदन्तिदमब्रवीत् भ. गी. १।२
 विषुवायनकालेषु ग्रहणेचान्तरे सदा ।
 बाराणस्यादिदेके स्थाने स्नात्वा
 शुद्धो भवेन्नरः जा. द. ४।५५
 विषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा
 अभयङ्करः महाना. १३।१७
 विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नं भ. गी. १०।४२
 विष्टाश्च मे भूयात् चित्त्यु. ७।२
 विधितो मूत्रितो वाऽज्ञैबहुवैवं
 प्रकल्पितः । श्रेयस्कामः कृच्छ्र-
 गत आत्मनाऽऽत्मानमुद्धरेत् ना. प. ५।३९
 विष्णुकान्तं वासुदेवं विज्ञाननिब्रू
 विप्रत्वं गच्छते तत्त्वदर्शी शाठ्याय. ४
 विष्णुकीडा विष्णुरतयो विमुक्ता
 विष्णुवात्मका विष्णुमेवापियन्ति शाठ्याय. ११
 विष्णुग्रन्थेस्त्वतो मेदात्परमात्तन्द-
 सम्भवः सौभाग्य. ११
 विष्णुचन्दनं वैकुण्ठस्थानादाहृत्य
 द्वारकायां मया प्रतिष्ठितम् ।
 चन्दनकुङ्कुमादिसहितं विष्णु-
 चन्दनं ममाङ्गे प्रतिदिनमालिप्तं
 गोपीभिः प्रक्षालनाद्गोपीचन्दन-
 मारुयातम् वासुदे. २
 विष्णुविद्यादिशताभिधानलक्ष्यम् निर्वाणो. ३
 विष्णुपत्नीं महीं देवीं ऊर्ध्वपुं. १
 विष्णुप्रपञ्चबीजं च माया
 ईकार उच्यते सीतो. २
 विष्णुमुक्ताः ज्ञानवैराग्ययुक्ताः
 अनन्याश्रययुक्तास्तेऽपि त्रं
 समी न जानन्ति सत्पर. २७
 विष्णुमविष्णुं ज्वलन्तमज्वलन्तं...
 नृसिंहान्महाहमनहं नृसिंहा-
 न्महाहमनहं बुबुधिरं नृसिंहो. ६।१
 विष्णुभजनरता नारायणोपासकाः
 भूषणकीर्तिस्मरणवन्दनरता

मत्स्यकच्छपवत्सहस्रसिंहवामन-
 परशुरामोपासका विष्णवास्ते-
 ऽपि तं लोकं न जानन्ति जामर. २७
 विष्णुमुखा वै देवाश्छन्दोभिरिमौ-
 लोकाननपजयमभ्यजयन् महाना. ५।६
 विष्णुमुरुकमं ब्रह्माणमुत प्रजापति
 दधामि देव्यु. ३
 विष्णुमेवाप्येति यो विष्णुमेवास्तमेति
 विष्णुरजीजनत् सुबालो. ९।७
 विष्णुरुवाच-न मे शक्तिः बहुचो. १
 विष्णुरूपमिदं पुण्यं पावनं गणेशो. ३।१२
 पीतवर्णकम् गोपीचं. २६
 विष्णुरूपे महायोगी पालयेद्-
 खिलं जगत् यो. शि. ५।५३
 विष्णुर्नाम महायोगी महाकाग्रो
 महातपाः २ यो. ४. २
 विष्णुर्नाम महायोगी महाभूतो
 महातपाः १ यो. त. १३०
 विष्णुर्यज्ञेन चित्त्यु. ८।२
 विष्णुर्योति कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि
 पिरशतु । आसिञ्चतु प्रजा-
 पतिर्धाता गर्भं दधातु ते
 [ऋक्सं. ८।८।४२।१+ बृह. ६।४।३१
 विष्णुर्ललाटं रुद्रश्चक्षुषी चन्द्रा-
 दित्यौ कर्णौ... निमेषोऽहो-
 रात्रमिति वाग्देवी गायत्री
 शरणमहं प्रपद्ये गायत्री. १०
 विष्णुर्वराहो रजनी रहश्च एका. ४. ६
 विष्णुलोकान्तरं गत्वा विष्णु-
 लोकात्परा गतिः दुर्वासो. १।१५
 विष्णुर्वरिष्ठो वरदानमुख्यः पारसो. ५।४
 विष्णुर्विश्वजगद्योनिः स्वांशभूतैः
 स्वकैः सह । ममांशसम्भवो
 भूत्वा पालयत्यखिलं जगत् शरयो. २३
 विष्णुर्हृदयम् सत्पर. २३
 विष्णुलिङ्गं द्विधा प्रोक्तं व्यक्तम्
 व्यक्तमेकं च । तयोरेकमपि
 त्र्यम्बकं पञ्चत्येव न संशयः शाठ्याय. १

विष्णुश्च भगवान् देवकारः परीकीर्तितः ब्र. वि. ६
 विष्णुं ध्यायतु वीर्यं द्वा ब्रह्मानन्दे
 विलीयताम् । साक्ष्यहं किञ्चि-
 दप्यत्र न कुर्वे नापि कारये अवधू. २५
 विष्णुं प्रथमान्त्यं सुखं द्वितीयान्तं
 भद्रं तृतीयान्तं ग्यहं चतुर्थान्तं
 साम जानीयाद्यो जानीते सो-
 ऽसुतत्वं च गच्छति नृ. पू. उ. १।७
 विष्णुः पाति जगन्नयम् ते. वि. ५।८७
 विष्णुः सर्वेषामधिपतिः परमः पुराणः पारमा. १।१
 विष्णोर्नुकमिति मर्दयेत् [गोपीच. ३ + ऊर्ध्वपुं. २
 विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं ना. पू. ता. ४।४
 [+ ऋक्सं. २।२।२४।१ वा. सं. ५।१८
 विष्णुर्गुणानां पर्येति लोकम् वा. म. १७
 विष्णोर्दास्यपरा भक्तिर्येषां तु न
 भवेत्कचित् । तेषामेव हि भवसं. २।५८
 संसृष्टं निरयं ब्रह्मणा नृप
 विष्णोर्मांश्च प्रदत्तं च कथितं तु
 तृतीयया । एतावानिति मन्त्रेण
 वैभवं कथितं हरेः सुद्रलो. १।३
 विष्णोर्येत्परमं पदं [नृ. पू. ५।१६ + सुबालो. ६।२
 [ऋक्सं. १।२।७।६ + पैङ्गलो. ४।२४
 [बराहो. ५।७८ + स्कन्दो. १।५ + आरुणि. ५
 विष्णुर्गुण्या उत्क्रमणे भवन्ति कठो. ६।१६
 विष्णुप्रपञ्चेषु पुरीशयं स्थितं
 वेदान्तोऽद्वैरपिष्ठुड्यमाणः
 (अभिस्तुयमानः) २ देव्यु. २२
 विसर्गः कर्मसंज्ञितः भ. गी. ८।३
 विसर्जयितव्यमेवाप्येति यो
 विसर्जयितव्यमेवास्तमेति सुबालो. ९।८
 विसृजामि पुनः पुनः भ. गी. ९।८
 विसृज्य जीव एतान् देहाभिमानेन
 जीवो भवति ना. प. ६।४
 विसृज्य यज्ञोपवीतं भूस्त्वादेत्यप्सु
 लुह्यात् क. रु. ३
 विसृज्य स्रष्टारं प्रापं भ. गी. १।४७
 विसृज्येमानि सर्मादौ त्वं
 प्रकाशयसे वत्तः गुह्यका. ३१
 विसृज्यैवात्मनो योगं भ. गी. १०।१८

विस्फुरत्तारकाकारगाढतमोपमं
 पराकाशं भवति सं. ब्रा. १।३
 विस्मयो मे महान् राजन् भ. गी. १८।७७
 विस्मृतजाम्ब्रासनानुफलेन
 तेजस्तेऽस्मीति सं. ब्रा. २।७
 विस्मसादैवास्माल्लोकात् प्रेतीति ह
 स्माह महिदास ऐतरेयः १ ऐत. ३।७।१
 विस्मृतपदार्थं पुनः प्राप्तहर्ष इव...
 स्वशरीरं शवमिव हेयमुपगम्य
 ...दूरतो वसेत् ना. प. ७.१
 विस्फुरत्तारकाकारसन्दीप्यमाना-
 गाढतमोपमं परमाकाशं भवति अद्वयता. ४
 विस्मृतात्मपितामहम् (मनः) महो. ५।१३४
 विस्मृत्य विश्वमेकामः कुत्रचिन्नहि
 धावति । मनो मत्तगजेन्द्रस्य
 विषयोद्यानचारिणः ना. वि. ४४
 विस्मृत्य सकलं बाह्यं नादे दुग्धा-
 म्बुवन्मनः । एकीभूयाथसहसा
 चिदाकाशे विलीयते ना. वि. ३९
 विहङ्गानां तुन्दमध्यम् । देहमध्यं
 नवाङ्गुलं चतुरङ्गुलमुत्सेधा-
 यतमण्डलाकृति शांडि. १।४।४
 विहङ्गानां घृत्ताकारम् (अभिस्थानं)
 तन्मध्ये शुभा तन्वी पावकी
 शिखा तिष्ठति शांडि. १।४।३
 विहरन् जनतावृन्दे देवपूजन-
 कीर्तनैः । खेदाह्लादौ न जानाति
 प्रतिविम्बगतैरिव भ. पू. ५।९९
 विहाय कामान् यः सर्वान् भ. गी. २।७१
 विहाय योगशास्त्राणि नानागुरु-
 मतानि च । निबोध स्वावबोधो-
 ऽयं सद्यः प्रत्ययकारकः अमन. २।२५
 विहाय शास्त्रजालानि यत्सत्यं
 तदुपास्यताम् पैङ्गलो. ४।१७
 विहायस्युच्चैः केचिन्निप-
 तन्त्युत्पतन्ति च महो. ५।१४२
 विहारशय्यासनभोजनेषु भ. गी. ११।४२
 विहोत्रा दधे वयुना विदेक इन्मही
 देवस्य सवितुः परिष्ठुतिः श्वेताश्व. २।४

वीरशक्ते त्वा विस्मिताश्चैव सर्वे
वीक्ष्यमाणे प्रपञ्चे तु ब्रह्मवा-
भाति भासुरम्
वीक्ष्यमाणैव नश्यति (माया)
वीणायास्तु ग्रहणेन वीणावादस्य
वा शब्दो गृहीतः
वीणां करैः पुस्तकमक्षमालां
विभ्राणमभ्राभगलं वराढ्यम् ।
फणीन्द्रकक्ष्यं मुनिभिः शुक्राद्यैः
सेव्यं वटाघः कृतनीडभीडे
वीतमन्युर्गौतमो माभिमृत्यो
वीतरागभयक्रोधः
वीतरागभयक्रोधः
वीतरागभयक्रोधैर्मुनिभिर्वेदपारंगैः ।
निर्विकल्पो ह्ययं दृष्टः
प्रपञ्चोपशमोऽद्वयः
वीत० स्तुके स्तुके । युवमस्मासु
नियच्छतम्
वीरभद्रगिरिशङ्करैकपादहि-
र्बुध्न्यादीना भुवनाधिपतिविशां-
पतिपशुपतिस्थाणुभवाः पञ्चमे
वीरमवीरं महान्तममहान्तं...
नृसिंहानुष्टुभैव बुबुधिरै
वीरमित्याह वीरो वा एष
वीर्यवत्त्वात्
(अथातो) वीरशक्तिश्चतुर्भुजा-
ऽभयवरदपद्मधरा
वीरहत्यां वा एते प्रन्ति । ये
ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णं पठन्ति
[महाना. १२।३+
वीरं द्वितीयं स्थानं (जानीयात्)
वीरं प्रथमस्याद्यार्थान्त्यं तं स
द्वितीयस्याद्यार्थान्त्यं हंभी
तृतीयस्याद्यार्थान्त्यं मृत्युं
चतुर्थस्याद्यार्थान्त्यं साम
तु जानीयात्
वीराश्वने वा अनाशके वा अपां
प्रवेशे वा अभिप्रवेशे वा
महाप्रस्थाने वा

भ. गी. ११।२२
यो. शि. ४।२०
महो. ५।११२
बृह. ४।५।१०
द. मू. ११
कठो. १।१०
भ. गी. २।५६
भ. गी. ४।१०
वैतथ्य. ३६
चित्त्यु. ११।१२
सूर्यता. ५।१
नृसिंहो. ६।१
अव्यक्तो. ३
सीतो. २८
त्रिसु. ३
नृ. पू. २।३
नृ. पू. १।५
जाबालो. ५

वीरान्मा नो रुद्र भामिनोऽवधीर्ह-
विष्मन्तः (नमसा विधेम ते)
संदमित्त्वा हवामहे
[श्वेताश्व. ४।२२+
वीरो वा एष वीर्यवत्त्वात्
वीव पद्यत आर्तिमूच्छति
वीव पद्यते प्रमीयते
वीवयन्ति मिथुचेति विचक्षते
वृक्ष आविर्मूलः शुष्यति स उद्धतत ।
एवमेवानृतं वदन्नाविर्मूल-
मात्मानं करोति
वृक्ष इव तिष्ठासेत् । छिद्यमानो न
ब्रूयात्
वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येक-
स्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्
[महाना. ८।१३+
वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येका
यदन्तः पूर्णमवगत्य पूर्णः
वृक्षधर्मो तौ तिष्ठतः, अतो भोक्त-
भोक्तारौ । पूर्वं हि भोक्ता
भवति । तथेतरोऽभोक्ता
कृष्णो भवतीति
वृक्षमिव तिष्ठासेत् छिद्यमानोऽपि
न कुप्येत
वृक्षमूलनिकेतो वा त्यक्तसर्व-
प्रियाप्रियः (यतिः)
वृक्षमूले शून्यगृहेऽस्मशानवासिनो
वा साम्बरा वा दिगम्बरा वा । न
तेषां धर्माधर्मौ... द्वैतवर्जिता
समलोष्टाश्मकाश्चाना...
सर्वत्रात्मैवेति पश्यन्ति
वृक्षं तु सकलं विद्याच्छाया
तस्यैव निष्कला । सकले
निष्कले भावे सर्वत्रात्मा
व्यवस्थितः
वृजिनं संतरिष्यसि
वृत्तमष्टदलं तृतीयं, चतुर्थं द्वादश-
दलम् ।... एवं यंत्रं समाखिलेत्

महाना. १३।१५
अव्यक्तो. ३
आर्षे. ६।३
आर्षे. ८।३
आर्षे. ८।१
१ ऐत. ३।६।५
शाट्याय. १८
श्वेताश्व. ३।९
गुह्यका. ४६
गोपालो. १।११
सुबालो. १३।३
ना. प. ५।२४
मिथुको. ५
ज्या. वि. ८
भ. गी. ४।३३
ना. पू. ५।१

वृत्तमादौ विलिख्य साष्टमत्रं तत्-
 खिकोणं वृत्तं षडक्षं वृत्तधुलं
 साधुकोणं समालिखेदिति सूर्यतः. ५।१
 वृत्तयश्चत्वारः--मनो बुद्धिरहङ्कार-
 श्रित्तं चेति ना. फ. ५।११
 वृत्तयस्तु तदानीमप्यज्ञाता आत्म-
 गोचराः । स्मरणादनुमीयन्ते अध्यात्मो. ३६
 व्युत्थितस्य समुत्थिताः वृत्तं विहंगमानां तु षडक्षं सर्प-
 जन्मनाम् । अष्टाक्षं स्वेदजानां त्रि. भा. २।५७
 तु तस्मिन्दीपवदुज्ज्वलम् वृथा न छिन्यात् । दृष्ट्वा प्रदक्षिणं
 कुर्यात्. (तुलसी) तुलस्यु. २
 वृद्धायां मोहमायायां कः समा-
 श्वासवानिह महो. ५।१६८
 वृद्धावृद्धयोरवृद्धं, कृष्टाकृष्टयोर-
 कृष्टमित्येवं स्तोत्र्यतमं भवति संहितो. ३।३
 वृद्धो वसुनि पुरोवाच पुत्रेभ्यः इतिहा. ९९
 परमं निधिम् इतिहा. ९९
 वृन्दा भक्तिः क्रिया बुद्धिः सर्व-
 जन्तुप्रकाशिनी कृष्णोप. २५
 वृषिका दर्शनं यान्ति निराशाः इतिहा. ९२
 पितरो गताः इतिहा. ९२
 वृषणापानयोर्मध्ये पाणी आस्थाय-
 संश्रयेत् कुण्डिको. १८
 वृषणां दृष्टसुपर्णां निरुक्तो. २।१
 वृषलीपतिमुक्तानि श्राद्धानि च
 हवीषि च । पितरौ न प्रति-
 गृह्णन्ति दाता स्वर्गं न गच्छति इतिहा. ६८
 (ॐ) वृषादर्विकुलं वै इतिहा. १
 शिविकुलं बभूव इतिहा. १
 वृषा पवित्रे अभि सा नो अग्नये
 वृहत्सोमं वावृषे सुवान इन्दुः महानां. ६।१०
 वृषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः महानां. ५।१२
 वृष्टिः सन्धिः, पर्जन्यः सन्धाता ३ ऐत. १।२।१
 वृष्टेरसं ततः प्रजाः मैत्रा. ६।१७
 वृद्धो पञ्चविधं सामोपासीत छांदो. २।३।१
 वृषोपासो वासुदेवोऽस्मि भ. गी. १०।३७
 वेपुनादविनोदाय गोपाळायाहि-
 मर्षिः । काश्मिरीवृद्धलोकाय

लोलकुण्डलवारिणे ॥ बलवी-
 वदनाम्भोजमालिने नृत्तशालिने ।
 नमः प्रणतपालाय श्रीकृष्णाय... गो. फु. ४।९
 वेत्ताऽसि वेद्यं च परं च धाम भ. गी. १।१।३
 वेत्ति यत्र न चैवायं भ. गी. ६।३९
 वेत्ति लोकमहेश्वरम् भ. गी. १०।३
 वेत्ति सर्वेषु भूतेषु भ. गी. १८।११
 वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम भ. गी. १०।१५
 वेत्थ नु त्वं काप्य तत्सूत्रं, येनायं
 च लोकः परश्च लोकः सर्वाणि बृह. ३।७।१
 च भूतानि सन्दृब्धानि भवन्ति
 वेत्थ नु त्वं काप्य तमन्तर्यामिणं य
 इमं च लोकं परं च लोकम्
 सर्वाणि च भूतानि योऽन्तरो
 यमयतीति बृह. ३।७।१
 वेत्थ पथोर्देवयानस्य पितृयाणस्य
 च व्यावर्तना ३ इति छांदो. ५।३।२
 वेत्थ यदितोऽधि प्रजाः प्रयन्तीति... छांदो. ५।३।३
 वेत्थ यथा पञ्चम्यामाहुतावापः
 पुरुषवचसो भवन्तीति... छांदो. ५।३।३
 वेत्थ यथा पुनरावर्तन्ता ३ इति छांदो. ५।३।३
 वेत्थ यथाऽसौ लोको न
 सम्पूर्यत ३ इति छांदो. ५।३।३
 वेत्थ यथेमाः प्रजाः प्रयत्यो
 विप्रतिपद्यन्ता ३ इति बृह. ६।२।३
 वेत्थ यथेमाः प्रभाः प्रयन्त्यः
 विप्रतिपद्यन्ता ३...(मा. पा.) बृह. ६. ६।२।३
 वेत्थो यतिध्यामाहुत्या ५ हुताया-
 मापः पुरुषवाचो भूत्वा
 समुत्थाय वदन्ती ३ इति बृह. ६।२।३
 वेत्थो यथाऽसौ लोकं एवं बहुभिः
 पुनः पुनः प्रयद्भिर्नसम्पूर्यता ३ इति बृह. ६।२।३
 वेत्थो यथेमं लोकं पुनरापद्यन्ता
 ३ इति ...(मा. पा.) बृह. ६. ६।२।३
 वेत्थो देवयानस्य वा पथः प्रतिपदं
 पितृयाणस्य वा यत्कृत्वा
 देवयानं वा पन्थानं प्रतिपद्यन्ति
 पितृयाणं वापि बृह. ६।२।३

वेद एव परं ज्योतिः वेदतत्त्वार्थविहितं यथोक्तं हि स्वय- म्भुवा । निःशब्दं देशमास्थाय तत्रासनमवस्थितः ॥...	ब्रह्मो. १	वेदाक्षराणि यावन्ति पठितानि द्विजोत्तमैः । तावन्ति हरि- नामानि कीर्तितानि न संशयः ना.च.ता. ३।४	
मात्राद्वादशयोगेन प्रणवेन शनैः शनैः ॥ पूरयेत्सर्वमात्मानं..	क्षुरिको. २	वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् [महाना. ३।७+	वनदु. १३५
वेदनानामधिष्ठानं मनो देहश्च सेन्द्रियः	आयुर्वे. ८	वेदादिशास्त्रार्हिसकधर्माभिध्यान- मस्त्विति वदन्ति	मैत्रा. ७।९
वेदपुरुष इति यमवोचाम येन वेदान्वेद	३ ऐत. २।३।१	वेदादेव विनिर्मोक्षः संसारस्य न चान्यथा । इति विज्ञान-	
वेदपुरुषा इमे गोपाः	सामर. ३२	निष्पत्तिर्धृतिः प्रोक्ता हि वैदिकैः	जा. द. १।१८
वेदमनुब्रवीत सर्वमायुरियादिति	बृह. ६।४।१४	वेदाध्यायीति यो विप्रः सततं ब्राह्मणः स्थितः । साचारः	
वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिन- मनुशास्त्र	तैत्ति. १।११।१	सामिहोत्री च सोऽभिर्वै कन्यवाहनः	इतिहा. ५२
वेदलौकिकमार्गेषु कुत्सितं कर्म यद्भवेत् । तस्मिन्भवति या लज्जा ह्रीः सैवेति प्रकीर्तिता	जा. द. २।१०	वेदानधीत्यानुज्ञात उच्यते गुरुणाऽऽश्रमी	कुण्डिको. १
वेद वा अहं गौतम तत्सूत्रं तं चान्तर्यामिणम्	बृह. ३।७।१	वेदानां वेदं पित्र्यं राशि... सर्पदेवजनविद्यामेतद्भगवोऽध्येमि	छांदो. ७।१।२
वेद वा अहं तं पुरुषं सर्व- स्यात्मनः परायणं यमात्थ..	१२-१७	वेदानां सामवेदोऽस्मि	भ.गी. १०।२२
[बृह. ३।९।१०, ११,	भ. गी. २।४२	वेदान्तछन्देदविदेव चाहम् [कैव. २२+	भ.गी. १५।१५
वेदवादरताः पार्थ		वेदान्तविज्ञानमुनिश्चितार्थाः सक्त्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः	
वेदवेदान्तयोगुह्यं पुराकल्पे प्रचोदितम्	गुह्यका. ७५	[मुण्ड. ३।२।६+महाना. ८।१५+	भवसं. ३।३३
वेदशास्त्रपुराणानि भूतानि सकला- न्यपि । येनार्थवन्ति तं किंतु विज्ञातारं प्रकाशयेत्	२ आत्मो. ९	वेदान्तवेद्यं शिवमप्रमेयम् वेदान्तश्रवणपूर्वकं प्रणवानुष्ठानं	१ बिल्वो. १०
वेदशास्त्रपुराणानि सामान्य- गणिका इव	अमन. २।९	कुर्वन् ब्रह्ममार्गं सम्यक्सम्पन्नः ...भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय भवति	प. हं. प. ६
वेदशास्त्ररूपास्यमानो न च वेद- शास्त्राण्युपास्यति	सुबालो. ५।१५	वेदान्तसारभूतसिद्धान्तानन्त- स्कन्धैर्विराजितं महावाक्यार्थ-	सि. सा. ६
वेदस्यमज्जाणीस्थः, श्रुतं मे..	२ ऐत. शां.पा.	स्वरूपानन्तशाखासमन्वितम् वेदान्ताभ्यासनिरतः शान्तो दान्तो	
वेदस्वरूपोऽनुदितः सपर्यास्त्रिष्टानि तत्तन्मन्दनतद्दलानि	१ बिल्वो. ७	जितेन्द्रियः	ना. प. ६।२९
वेदः शिखा (यज्ञस्य)	महाना. १८।१	वेदान्ते परमं गुह्यं पुराकल्पप्रचो- दितम् । नाप्रशान्ताय दातव्यं	
वेदा अवेदाः (भवन्ति)	बृह. ४।३।२२	(नापुत्रायाशिष्याय वा पुनः) न चाशिष्याय वै पुनः	
वेदा इति वेदविदो यज्ञा इति च तद्विदः	वैतथ्य. २२	[श्वेता. ६।२२+	अ. पू. ५।११९

वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां
च संयमः । अहिंसा गुरुसेवा
च निःश्रेयसकरं परम् भवसं. ५।८
वेदा महर्त्विजः (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।१
वेदा वा एते अराः नृ. पू. ५।६
वेदा वाचः स्यन्दमाना नदा नद्यो-
ऽमिता मताः । कलाः काष्ठा
मुहूर्ताश्च ऋतवोऽयनमेव च गुह्यका. २०
वेदाविनाशिनं नित्यं भ. गी. २।२१
वेदास्तं परादुर्योऽन्यत्रात्मनो बृह. ४।५।७
वेदान्वेद मुद्गलो. १।८
वेदाहमिति मन्त्राभ्यां वैभवं कथितं हरेः
वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं
सर्वगतं विभुत्वात् । जन्म-
निरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्म-
वादिनो हि प्रवदन्ति नित्यम् श्वेताश्व. ३।२१
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य-
वर्णं तमसः परस्तात् । तमेव
विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः
पन्था विद्यतेऽयनाय श्वेता. ३।७
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् । आदि-
त्यवर्णं तमसः परस्तात् । तमेवं
विद्वानमृत इह भवति त्रि.म.ना. ४।३
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य-
वर्णं तमसः परस्तात् । यस्य
योनिं परिपश्यन्ति धीरा-
स्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. १५
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य-
वर्णं तमसस्तु पारे । सर्वाणि
रूपाणि विचित्य धीरः नामानि
कृत्वा भिवदन्यदास्ते [पारमा. ७।५ + चित्त्यु. १२।७
वेदाहं समतीतानि भ. गी. ७।२६
वेदा हि रसाः छांदो. ३।५।४
वेदा ह्यमृतास्तेषां भेदान्यमृतानि छांदो. ३।५।४
वेदाश्च सर्वान् प्रहिणोति चाग्र्यं तं
वै प्रभुं पितरं देवतानाम् शरभो. ३
वेदाः प्राणा भगवतो वासुदेव्य
वै हरेः । तदुक्तकर्माकुर्वाणो
प्राणहर्ता भवेत्तरेः भवसं. १।३५

वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम् केनो. ४।८
वेदाः स्वप्नचाभिस्तस्मिन्स्थाने
तस्या निकुञ्जदेव्याय शो गायन्ति सामर. १०
वेदिकाकारवद्भूतो बलवान्भूत-
मारुतः । स्मर्तव्यः कुम्भकेनैव त्रि.ब्रा. २।१४०
प्राणमारोप्य मारुतम् भ. गी. ८।२८
वेदेषु यज्ञेषु तपस्सु चैव
वेदैरनेकैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेद-
विदेव चाहम् कैव. २२
वेदैरशून्यस्त्रिभिरेति सूर्यः सूर्यता. १.५
वेदैर्न तर्कोक्तिभिरागमैश्च नाना-
विधैः शास्त्रकदम्बकैश्च । ध्याना-
दिभिः सत्करणैर्न गम्यं चिन्ता-
मणिं स्वैकगुरुं विहाय अमन. २।३९
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः भ. गी. १५।१५
वेदोक्तेन प्रकारेण कृच्छ्रचान्द्राय-
णादिभिः । शरीरशोषणं यत्त-
त्तप इत्युच्यते बुधैः जा. द. २।३
वेदोक्तेन प्रकारेण विना सत्यं
तपोधन । कायेन मनसा वाचा
हिंसाऽहिंसा न चान्यथा जा. द. १।७
वेदो यं ब्राह्मणा विदुर्वेदैनेन
यद्वेदितव्यम् बृह. ५.१।१
वेदोऽहमवेदोऽहम् देव्यु. १
वेद्यं पवित्रमोङ्कारः भ. गी. ९।१७
वेद्योऽहमागमान्तैराराध्यः सकल-
भुवनहृद्योऽहम् आ. प्र. ९
वेनस्तत्पश्यन् विश्वा भुवनानि
विद्वान् यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् महाना. २।३
वेपथुश्च शरीरे मे भ. गी. १।२९
(अथ) वेशान्तान् पुष्करिणीः
स्रवन्तीः सृजते... बृह. ४।३।१०
वेद्यंसमुद्धरेन्नित्यंसत्यसन्धानमानसः बराहो. ५।५६
वैकुण्ठस्थानोद्भवं मम प्रीतिकरं
मद्भक्तैर्ब्रह्मादिभिर्धारितं विष्णु-
चन्दनं... गोपीभिः प्रक्षालना-
द्गोपीचन्दनमाख्यातं... मुक्ति-
साधनं भवति [वासुदे. २+ गोपीचं. १
वैकुण्ठः साकारो नारायणः साकारश्च त्रि.म.ना. २।१

वैखरी सर्वविद्यासु प्रशस्ता
 वैखर्या विकसीकृता ना.पू.ता. ५।८
 योगकुं. ३।१९
 वैखानसऋषेः पूर्व विष्णोर्बाणी
 समुद्भवेत् । त्रयीरूपेण सीतो. २३
 सङ्कल्प्य इत्थं देही विजृम्भते
 वैखानसमतस्तस्मिन्नादौ प्रत्यक्ष-
 दर्शनम् । स्मर्यते मुनिभि-
 नित्यं वैखानसमतः परम् सीतो. १७
 वैखानसा औदुम्बरावालखिल्यः फेनपाः आश्रमो. ३
 वैणवं दण्डं कौपीनं परिग्रहेत् आरुणि. ३
 वैतथ्यं सर्वभावानां स्वप्न
 आहुर्मनीषिणः वैतथ्य. १
 वैदिकेषु च सर्वेषु श्रद्धा या
 सा मतिर्भवेत् जा. द. २।१०
 वैद्युतः सन्धानम् तै. उ. १।३।४
 वैद्युदादिमयं तेजो मधुरादिमयो
 रसः । तेजोरसविभेदेस्तु वृत्त-
 भेदबराचरम् बृ. जा. २।४
 वैनतेयश्च पक्षिणाम् भ. गी. १०।३०
 वैयाघ्रपथं कं त्वमात्मानमुपास्ते छांदो. ५।१४।१
 वैरम्भमेवाप्येति यो वैरम्भमेवास्तमेति सुबालो. ९।६
 वैराग्यजनकं श्रद्धाकलत्रं ज्ञान-
 नन्दनम् (न त्यजेत्) मैत्रे. २।२३
 वैराग्यतैलसम्पूर्णं भक्तिवर्तिसम-
 न्विते । प्रबोधपूर्णपात्रे तु
 ज्ञप्तिदीपं विलोकयेत् द. मू. १७
 वैराग्यमरणं कृत्वा ज्ञानं कृत्वा तु
 चित्रगुम् । गाढतामिस्रसंशान्त्यै
 गूढमर्थं निवेदयेत् द. मू. १८
 वैराग्यसङ्ख्यासी ज्ञानसङ्ख्यासी
 ज्ञानवैराग्यसङ्ख्यासी कर्म-
 सङ्ख्यासीति चातुर्विध्यमुपागतः १ सं.सो. २।१३
 वैराग्यसङ्ख्यासो ज्ञानसङ्ख्यासो
 ज्ञानवैराग्यसङ्ख्यासः कर्म-
 सङ्ख्यासश्चेतिचातुर्विध्यमुपागतः ना. प. ९।२
 वैराग्यस्य फलं बोधो बोधस्योपरतिः
 फलम् । खानन्दानुभवाच्छान्ति-
 रैवैवोपरतेः फलम् अध्यात्मो. २८
 वैराग्यं चन्दनं स्मृतम् शिवो. १।२६

वैराग्यं समुपाश्रितः भ.गी. १८।५२
 वैराग्यात्पूर्णतामेति मनो नाश-
 वशानुगम् । आशया रक्तता-
 मेति शरदीव सरोऽमलम् महो. ६।७५
 वैराग्याद्बुद्धिविज्ञानाविर्भावो भवति त्रि.म.ना. ५।४
 वैराग्येण च गृह्यते भ. गी. ६।३५
 वैराग्येणाथ शास्त्रेण महत्त्वादि-
 गुणैरपि । यत्सङ्कल्पहरार्थं
 तत्स्वयमेवोन्नयनमनः महो. ६।७४
 वैराजः शरत्समानो वरुणः साध्या
 उत्तरत उद्यन्ति तपन्ति वर्षन्ति मैत्रा. ७।४
 वैराजात्मोपासनया सजातज्ञान-
 वहिना । दग्ध्वा कर्मत्रयं योगी
 यत्पदं याति तद्भजे ना. वि. शीर्षकं
 वैरूपवैराजे शाकरैरवते कौ. त. १।५
 वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु महाना. १३।७
 वैश्यकर्म स्वभावजम् भ.गी. १८।४४
 वैशारद्यं तु वै नास्ति भेदे
 विचरतां सदा अलातशां. ९४
 वैश्वानराय प्रतिवेद्याम इत्युप-
 तिष्ठेत, यदर्वाचीनमेनो भ्रूण-
 हत्यायास्तस्मान्मोक्ष्यध्वै सहवै. ११
 वैश्वानराय प्रतिवेद्यामो यदी-
 नृणः सङ्करो देवतासु सहवै. ९
 वैश्वानराय रथम् चित्त्यु. १०।४
 वैश्वानराय विष्महे लालीलाय
 भीमहिं । तन्नो अग्निः प्रचोदयान्
 [महाना. ३।११+ वनदु. १३९
 वैश्वानरः कालमृत्यूजिह्वात्रयमिदं स्मृतम् गुह्यका. २२
 वैश्वानरः पवयानः पवित्रैः सहवै. ९
 वैश्वानरः प्रत्नथा नाकमारुहत् चित्त्यु. १०।४
 वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्बाह्यमग्नौ
 गृहान् । तस्यैताः शान्ति
 कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम् कठो. १।७
 वैश्वानरीं निर्वपेत् कठशु. ३
 वैश्वानरेष्टिं निर्वपेत्सर्वस्वं दद्यात् १ सं.सो. १।२
 वैश्वानरोऽप्यन्यत्राप्युक्तं, अयमग्नि-
 वैश्वानरः... मैत्रा. २।८

वैश्वानरो मे दन्धस्तनूपा अव-
 बाधतां दुरितानि विश्वा सहवै. ८
 वैश्वानरोवासुदेवोविश्वतश्चक्षुरस्म्यहम् अ. वि. १०३
 वैष्णवकलायुक्तां मातृकायुक्तां
 वैष्णवीं न्यसेत् षोडोप. २
 वैष्णवं धाम दिव्यगणोपेतं विद्रुम-
 वेदिकामणिमुक्तागणाचितं लक्ष्म्यु. १
 वैष्णवं पञ्चव्याहृतिमयं मन्त्रं
 कृष्णावभासकं कैवल्यस्य
 सृष्ट्यै सततमावर्तयेत् गो. पू. ३।१२
 वैष्णवी ब्रह्मनाडी च निर्वाण-
 प्राप्तिपद्धतिः त्रि. ब्रा. २।६९
 वैष्णवीं विष्णुवल्लभां मृत्युजन्म-
 निवर्हणी...प्राणतर्पणादन्तर्मल-
 नाशिनीं (तुलसी) य एवं वेद
 स वैष्णवो भवति तुलस्यु. २
 वैष्णवो धर्महीनोऽपि याति विष्णोः
 परं पदम् भवसं. ५।२३
 व्यक्तमध्यानि भारत भ. गी. २।२८
 व्यक्तमव्यक्तं वा विधृतं विष्णुलिङ्गं
 त्यजन्न शुद्धयेदखिलैरात्मभासा शाठ्याय. २६
 व्यक्तं वै विश्वं चराचरात्मकम् अव्यक्तो. ४
 व्यक्तं सर्वमुभारूपमव्यक्तं तुमहेश्वरम् रुद्रह. १०
 व्यक्ताव्यक्तगिरः सर्वे वेदाद्या
 व्याहरन्ति याम् । सर्वकामदुधा
 वेतुः सा मां पातु सरस्वती सरस्व. १९
 व्यक्ताव्यक्तं भरते विश्वमीशः श्वेताश्व. १।८
 व्यक्ताव्यक्तो ब्रह्माब्रह्माऽहं अ. शिरः. १
 व्यञ्जनं निष्फलं ब्रह्म प्राणो
 मायेति च स्वरः रामर. ५।५
 व्यञ्जनेरेव रात्रीराप्नुवन्ति,
 स्वरैरहानि १ ऐत. २।४।३
 व्यञ्जनैः स्वरसंयोगं विद्धि
 तत्प्राणयोजनम् रामर. ५।६
 व्यतिरिक्तजडं सर्वस्वप्रवचनविनश्यति स्कन्दो. ३
 व्यतिषिका वा इमे लोकास्तस्मा-
 व्यतिषिक्तान्यज्ञानि भवन्ति च. पू. २।२

व्यपगतकलनाकलङ्कशुद्धः स्वयम-
 मलात्मनि पावने पदेऽसौ ।
 सलिलकण इवाम्बुधौ महात्मा
 विगलितवासनमेकतां जगाम महो. २।७७
 व्यपेतभीः सुमनाः पुनस्त्वं भ. गी. १।१४९
 व्यवधानवशादेव ' हंसः सोऽहं '
 इति मन्त्रेणोच्छ्वासनिश्वासा-
 व्यपदेशेनानुसन्धानं करोति ना. प. ६।७
 व्यवसायात्मिका बुद्धिः [भ. गी.
 २।४१+२।४४
 व्यवहारमिदं सर्वं मा करोतु
 करोतु वा अ. पू. २।१०
 व्याकरणोऽस्याः प्रथमःशीर्षो भवति गायत्री. ३
 व्याकुलितमनसोऽन्धाः खञ्जाः
 कुञ्जा वामना भवन्ति गर्भो. ३
 व्याख्याने तत्समाप्तौ च सम्प्रभे
 स्नानभोजने । भुक्त्वा च
 शयनेस्वप्नेनमस्क्रुयत्सदा गुरुम् शिवो. ७।७
 व्याघ्रबुद्ध्या विनिर्मुक्तो बाणः
 पश्चात्तु गोमतौ । न तिष्ठति
 भिनस्येव लक्ष्यं वेगेन निर्भरम् अघ्यात्मो. ५४
 व्याघ्रचर्मासने स्थित्वा स्वस्तिका-
 द्यासनक्रमात् ॥...मातृका-
 मालया मन्त्री मनसैव मनुं जपेत् रामर. ४।५
 व्याघ्रमुखसर्ववृश्चिकामिज्वालाविषं
 निर्गमय निर्गमय... लाङ्गूलो. ८
 व्याघ्रो वा शरभो वाऽपि गजो
 गवय एव वा । सिंहो वा
 योगिना तेन म्रियन्ते
 हस्तताडिताः १यो. त. ५।९।६०
 व्याचक्षतां ते शास्त्राणि वेदान-
 व्यापयन्तु वा । येऽत्राधिका-
 रिणो मे तु नाधिकारो-
 ऽक्रियत्वतः १ अवधू. १३
 व्याधिरभिर्जलं शब्दं बुभुक्षाश्चा-
 पदो विषम् । ज्वरश्च मरणं
 जन्तोरुच्चाच्च पतनं तथा ॥
 निर्माणे यस्य यदृष्टं तेन
 गच्छन्ति हेतुना भवसं. १।१३

व्याचक्षणस्य तु मे निदिध्यासस्व

[बृ. उ. २।४।४+
व्याप्ताननं दीप्तदुताशनेत्रं
व्याधिशोकगणे घोरे मर्मत्वं हि
शरीरके
व्याधीयन्ते प्राणा अन्नं कनीयो
भविष्यति
व्यानमेवाप्येति यो व्यानमेवास्तमेति
(अथ खलु) व्यानमेवोद्गीथ-
मुपासीत
व्यानः प्रस्तोता (शारीरयज्ञस्य)
व्यानः श्रोत्राक्षिमध्ये च ककुद्भ्यां
गुल्फयोरपि । प्राणस्थाने गले
चैव वर्तते मुनिपुङ्गव
व्यानः श्रोत्रोरुकट्यां च गुल्फ-
स्कन्धगलेषु च । नागादिवायवः
पञ्च त्वगस्थ्यादिषु संभिताः
व्यानः सर्वेषु चाङ्गेषु व्याप्य
तिष्ठति सर्वदा
(ॐ) व्यानात्मने ॐ तत्सद्भूर्भुवः
सुवस्तस्मैवैव्यानात्मनेनमोनमः
व्याने तृप्यति श्रोत्रं तृप्यति
व्यानो दक्षिणः पक्षः
व्यानो विवादकृत्योक्तो मुने
वेदान्तवेदिभिः
व्यानो ह्यर्चिस्समप्रभः
व्यापकतया जगद्व्याप्य तिष्ठति
यत्तद्ब्रह्म वदन्ति त्वराम्
व्यापको हि भगवान् बटुको
भोगायमानो यदा शेते रुद्रस्तदा
संहरते प्रजाः
व्यापको हि भगवान् रुद्रो भोगाय-
मानो यदा शेते रुद्रस्तदा
संहार्यते प्रजाः
व्यापनाद्व्यापी महादेवः
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः
व्याप्यव्यापकता मिथ्या सर्व-
मात्मेति शासनात् । इति ज्ञाते
परे ब्रह्मे भेदस्यावसरः कुतः

४।९।५
भ. गी. १।१२४
दुर्वासो. २।९
छांदो. ७।१०।१
सुबालो. ९।३
छांदो. १।३।३
प्रा. हो. ४।१
जा. द. ४।२८
त्रि. ब्रा. २।८२
अ. ना. ३६
गोपालो. ३।६
छांदो. ५।२०।२
तैत्ति. २।२
जा. द. ४।३२
अ. ना. ३८
सामर. १
बटुको. २७
अ. शिरः. ३।१५
अ. शिखो. २
अ. गी. १।१२०
यो. शि. ४।४

व्याप्यव्याप्यं यतः सर्वं तं वै

पश्यन्ति सूरयः
व्याप्येदं सर्वं तिष्ठसीति
व्यामिश्रेणैव वाक्येन
व्यावहारिकदृष्टिस्तु प्रकाशाव्य-
भिचारतः
व्यावहारिकदृष्टयेयं विद्याविद्या
न चान्यथा
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान्
व्याहृतित्रयमकारोकारमकारेषु
प्रविलाप्य...तत्त्वमस्यादि-
वाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं
कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत्
व्याहृतिं जागतं छन्दः...दर्शन-
मितीन्द्रियाण्यन्वभवन्
व्याहृत्या गायत्र्यभवत्
व्युत्थितस्य भवत्येषा समाधिस्थस्य
चानघ । ज्ञस्य केवलमज्ञस्य
न भवत्येव बोधजा
व्यूढं दुर्योधनस्तदा
व्याहरन् मामनुस्मरन्
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण
व्येव त्वा ज्ञापयिष्यामीति
व्येव त्वा ज्ञापयिष्यामि(मा.पा.)
व्योमज्ज्वलनेन्दिराकलाविन्दु-
मेलनरूपा
व्योमपञ्चकलक्षणं विस्तरेणानुब्रूहि
व्योमपुष्पं सुगन्धकम्
व्योमरन्ध्रगतो नादो
व्योमवृत्तं च धूर्त्तं च हकाराक्षर-
भासुरम्
(अथ) व्योमानिलानलजलाज्ञानां
पञ्चीकरणम्
व्योम्नि मारुतमारोप्य कुम्भकेनैव
यत्नवान्
व्योम्नि व्योम न लक्षयेत्
व्योमन्यात्मा सम्प्रतिष्ठितः(पा.मा.)
व्रजमण्डले गोवर्धनो गिरिदास्ते

भवसं. ३।४
गणेशो. ३।१३
भ. गी. ३।२
पा. ब्र. २४
पा. ब्र. २३
भ. गी. १८।७५
प. हं. प. ५
२ प्रणवो. ३
गायत्रीर. १
अ. पृ. १।२६
भ. गी. १।२
भ. गी. ८।१३
भ. गी. १।३
बृह. २।१।१५
बृह. २।१।१५
तारोप. २
मं. ब्रा. ४।१
ते. वि. ६।९७
व्या. वि. १०३
१ यो. उ. ९८
त्रि. ब्रा. १।६
त्रि. ब्रा. २।१४२
सैत्रा. ४।१६
मुण्डको. २।२।७
सामर. ५५

व्रजश्रीकृष्णसम्भूतः श्रुतिभ्यो
ज्ञानसङ्गतः
व्रतमेतच्छास्त्रं सर्वेषु (देवेषु)
वेदेषु वेदवादिभिरुक्तं भवति
[का. उद्गो. ३+
व्रतयज्ञतपोदानहोमस्वाध्याय-
वर्जितम् । सत्यशौचपरिभ्रष्टं
सञ्चार्यसं नैव कारयेत्
व्रतं नाम वेदोक्तविधिनिषेधा-
नुष्ठाननैयत्यम्
व्रतान्न प्रमदितव्यम्
व्रात्यस्त्वं प्राणैकक्रविरत्ता
विश्वस्य सत्पतिः

गोपालो. २।१८

जाबाल्यु. ७

१ सं. सो. २।५

शांडि. २।१

भस्मजा. २।८

प्रश्नो. २।११

व्रात्यस्यापि गृहे भिक्षेच्छद्वाभक्ति-
पुरस्कृते १ सं. सो. २।६४
व्रीहियवास्तिलमाषा अणुप्रियङ्गवो
गोधूमाश्च मसूराश्च खल्वाश्च
खलकुलाश्च तान्पिष्टान्दधनि
मधुनिघृतउपषिञ्चत्यास्य जुहोति बृह. ६।३।१३
व्रीहेर्वा यवाद्वा सर्षपाद्वा श्यामाका-
द्वा श्यामाकतण्डुलाद्वा एष म
आत्मान्तर्हृदये ज्यायान् पृथिव्या
ज्यायानन्तरिक्षाज्यायान्दिवो
ज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः छांदो. ३।१४।३

श

शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः

[महाना. ३+

चित्त्यु. १२।७

शक्रेण हैमं यक्षराजेन विश्वेदेवै रौप्यं

वसुभिः कांस्यकं च । यदारु-

कूटं वायुना पार्थिवं तदश्वि-

भ्यामासीत्स्फाटिकं पाशिनाथ

सि. शि. २२

शङ्करो भगवानाद्यो ररक्ष

सकलाः प्रजाः

शरभो. १६

शङ्कुना सर्वाणिपर्णानि संतृण्णा-

न्येवमोङ्कारेण सर्वावाक्सन्तृ-

ण्णोङ्कार एवेदं सर्वम्

छांदो. २।२३।३

शङ्खचक्रगदाखड्गधारिणं वन-

मालिनम् ।...कर्मणा मनसा

वाचा संस्मरेत्प्रजपेत्सुधीः

ना.पू.ता. ४।१३-

शङ्खचक्रगदापाणे द्वारकानिलया-

च्युत । गोविन्द पुण्डरीकाक्ष

रक्ष मां शरणागतम् [वासुदे.३

गोपीचं. ३

शङ्खचक्रमहामुद्रापुस्तकाढ्यं

चतुर्भुजम् । सम्पूर्णचन्द्रसङ्काशं

हयग्रीवमुपास्महे

हयग्री. ४

शङ्खचक्रोर्ध्वपुण्ड्रादिधारणं स्मरणं

हरेः । तदीयाराधनं चैव भक्ति-

वैभुविधा स्मृता

मुदर्थो. ८

(भगवन्) शकटमिवाचेतनमिदं
शरीरं कस्यैष खल्वीदृशोमहि-
मातीन्द्रियभूतस्य येनैतद्विधमिदं
चेतनवत्प्रतिष्ठापितम्

मैत्रा. २।३

शकाः खुरा इत्यन्येषां पशूनां
तदूर्ध्वमुदसर्पत् । ता ऊरू
अभवताम्

१ ऐत. १।४।१

शकुनवन्तं चेन्मन्येत प्राणवंशं
समर्षां ३...

३ ऐत. १।४।१

शक्तिद्वयं हि मायाया विक्षेपा-
वृत्तिरूपकम्

सरस्व. ४१

शक्तिः कुण्डलिनी नाम विसतन्तु-
निभा शुभा

योगकुं. १।८२

शक्तिमन्ये मनः कृत्वा शक्तिं

मानसमध्यगाम् । मनसा

मन आलोक्य शाण्डिल्य

त्वं मुखी भव

शांडि. १।७।१८

शक्तियुक्तो भवेत्

गुह्यषोढा. १

शक्तिसेना कल्पना च ब्रह्मण्येवं

हि पञ्चधा

रा. पू. १।१०

शक्त्यूर्ध्वं शक्तिमिति मानवी विद्या

त्रि. ता. १।१६

शक्त्य एवविधो ब्रह्मं

भ. गी. १।१५३

शक्तोतीहिव यः सौतुं

भ. गी. ५।२३

शक्त्योऽवाप्तुमुपायतः

भ. गी. ६।३६

शक्रम नारायणः [त्रि.म.ना.२।८+

नारा. २

शङ्खतोयेन मूलेन भस्मना मिश्रणं
भवेत् । योजितं चन्दनेनैव
वारिणा भस्मसंयुतम् । चन्दनेन
समालिम्पेज्ज्ञानदं चूर्णमेव तत् बृ. जा. ४।९
शङ्खदुन्दुभिनादं च न शणोति
कदाचन (मृतवत्तिष्ठते योगी
स मुक्तो नात्र संशयः) ना. नि. ५२
शङ्खस्य तु ग्रहणेन शङ्खधमस्य वा
शब्दो गृहीतः [बृह. २।४।८+ ४।५।५
शङ्खं चक्रं च संसिद्धिं बिन्दुं च
सर्वमूर्धेति कृष्णो. २१
शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् भ. गी. १।१२
शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् भ. गी. १।१८
शङ्खिनी चैव गान्धारी तदन-
न्तरयोः स्थिते । उत्तरे तु
सुषुम्नाया इडाख्या निवसत्यसौ वराहो. ५।२६
शङ्खिनी नाम या नाडी सव्य-
कर्णान्तमिष्यते । गान्धारा
सव्यनेत्रान्ता प्रोक्ता
वेदान्तवेदिभिः जा. द. ४।२२
शङ्खिन्याश्चन्द्रमास्तद्वत्पयस्विन्याः
प्रजापतिः जा. द. ४।३८
शठे शठ इव स्थितः अ. पू. २।२९
शठो नैष्ठृतिकोऽलसः भ. गी. १।८।२८
शतकृत्वः प्रयुक्ताशतपर्वणावज्रेण
सम्मिता सर्वा लोकानभिजयति सन्ध्यो. २
शतरुद्विषेणेत्येतान्येव ह वा
अमृतस्य नामानि जाबालो. ३
शतरुद्रेण मन्त्रेण भस्मोद्धूलित-
विग्रहाः । निर्धूतरजसः सर्वे
तत्क्षणाच्च वयं मुने बृ. जा. ६।६
शतशो गोपभार्या वेदऋचः सामर. ३२
शतशोऽथ सहस्रशः भ. गी. १।१५
शतशोऽपि जलैर्धौतं सुराभाण्ड-
मिवाशुचि (चित्तमन्तर्गतं
दुष्टं तीर्थस्नानैर्न शुद्ध्यति) जा. द. ४।५४
शतं कुलानां प्रथमं बभूव तथा
पराणां त्रिंशत्तं समग्रम् । एते

भवन्ति सुकृतस्य लोके येषां
कुले सङ्गसतीह विद्वान् शाङ्खाय. ३०
शतंचदशचैकश्च सहस्राणिचविंशतिः छांदो. ७।२६।२
शतं च नव शाखासु यजुषामेव
जन्मनाम् । साम्नः सहस्र-
शाखाः स्युः पञ्चशाखा अथर्वणः सीतो. १६
शतं च दश चैकं च
सहस्राणि च... (मा. पा.) छां. उ. ७।२६।२
शतं चैका च हृदयस्य नाड्यस्तासां
मूर्धानमभिनिःसृतैका । तयो-
र्ध्वमायन्नमृतत्वमेति विष्व-
ङ्मुन्या उत्क्रमणे भवन्ति कठो. ६।१६
[छां. उ. ८।६।६+ यो. शि. ६।४
शतं नियुतः परिवेद विश्वा
विश्ववारः चित्त्यु. ११।३
शतं मा पुर आयसीररक्षन्नधः
श्येनो जवसा निरदीयमिति
गर्भे एवैतच्छयानो वामदेव
एवमुवाच २ ऐत. ५।५
शतं मालाहस्ताः शतमाञ्जनहस्ताः
शतं चूर्णहस्ताः शतं वासो-
हस्ताः शतं कणाहस्तास्तं ब्रह्मा-
लङ्कारेणालङ्कुर्वन्ति कौ. त. १।४
शतं विज्ञानवतामेको बलवाना-
कम्पयते स यदा बलीभवत्यथो-
त्थाता भवति छांदो. ७।८।१
शतं शरद आयुषो जीव पुत्र कौ. त. २।११
शतं शता अस्य युक्ता हरीणाम् चित्त्यु. ११।७
शतं शुक्राणि यत्रैकं भवन्ति,
सर्वे वेदा यत्रैकं भवन्ति,
सर्वे होतारो यत्रैकं भवन्ति,
स मानसीन आत्मा जनानाम् चित्त्यु. ११।१
शतं सहस्राणि प्रयुतानि नाव्यानाम् चित्त्यु. ११।२०
शताक्षरी परमा विद्या त्रयीमयी त्रि. ता. १।४
शतायुषः पुत्रपौत्रान्वृणीष्व बहून्
पशून्हस्तिहिरण्यमश्वान् । भूमे-
र्महदायतनं वृणीष्व स्वयं च
जीव शरदो यावदिच्छसि कठो. १।२३

शतारं शतपत्राढ्यं विकीर्णम्बुज-
कर्णिकम् । तत्रार्कचन्द्रवह्नी-
नामुपर्युपरि चिन्तयेत् ध्या. विं. ३४

शताद्वावशतशरः शतशक्रऋजी-
विणाम् । शतं ब्रह्म तपस्विनां
कूपोऽरण्यस्य तिष्ठति इतिहा. १५

शतैर्महाप्रस्पैरखण्डैस्तण्डुलैरभिषिच्य
चन्द्रलोककामश्रंद्रलोकमवाप्नोति भस्मजा. २।१२

शत्रुभिहत्य गुरुषट्कगणान्निपाता-
द्वन्द्वद्विपो भवति केवलमद्वितीयः वराहो. २।६५

शनिराहुकेतूरगरक्षोयक्षनरविहग-
शरमेभादयोऽधस्तादुद्यन्ति मैत्रा. ७।६

शनैरेवं प्रकर्तव्यमभ्यासं युगपन्न
हि । युगपद्वर्तते यस्य शरीरं
विलयं ब्रजेत् योगकुं. २।३९

शनैः पिङ्गलया तत्र द्वात्रिंशन्मात्रया
पुनः । प्राणायामो भवेद्देवं
ततश्चैवं समभ्यसेत् जा. द. ६।६

शनैः शनैरुपरमेत् भ. गी. ६।२५

शनैः शनैर्यदा प्राणस्तुन्दसन्धिं
निगच्छति । तुन्ददोषं विनिर्धूय
कर्तव्यं सततं शनैः योगकुं. १।५०

शनैः समस्तमाकृष्य हृत्सरोरुह-
कोटरे । प्राणापानौ च बद्धा
तु प्रणवेन समुचरेत् ध्या. विं. १००

शनैः सुमथनं कुर्याद्भूमध्येन्यस्य
चक्षुषी । षण्मासं मथनावस्था
भावेनैव प्रजायते योगकुं. २।४६

शबलाच्छयामं प्रपद्ये छांदो. ८।१३।१

शब्द एक आकाशस्य (गुणः)
शब्दकाललयेन दिवारात्र्यतीतो
भूत्वा सर्वपरिपूर्णज्ञानेनोन्म-
न्यवस्थावशेन ब्रह्मेक्यं भवति मं. ब्रा. २।४

शब्दमायावृत्तो यावत्तावत्तिष्ठति
पुष्करे(ले) । भिन्ने तमसि चैकस्व-
मे(क एवा-)-कमेवानुपश्यति ब्र. विं. १५

शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्मा-
धिगच्छति ब्र. विं. १७

[मैत्रा. ६।२२+] ब्रि. ता. ५।१७

शब्दब्रह्मातिवर्तते भ. गी. ६।४४

शब्दब्रह्माहम् । क्रियायोगोऽहम् ।
ब्रह्माहम् । विष्णुरहम् । सौरो-
ऽहम् । ब्राह्मोऽहम् अद्वै. भा. १

शब्दवानाकाशः शब्दकाशाभ्यां
भिन्नः गोपालो. १।४

शब्दस्पर्शमया येषार्था अनर्था
इव ते स्थिताः । तेषां सक्तस्तु
भूतात्मा न स्मरेच्च परं पदम् मैत्रे. १।५

शब्दस्पर्शरूपगन्धवर्जितो
निर्विकल्पो निराकाङ्क्षः सर्व-
व्यापी सोऽचिन्त्यो निर्वर्ण्यश्च
पुनात्यशुद्धान्यपूतानि १ आत्मो. ३

शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा अग्निकार्य-
ज्ञानेन्द्रियविषया अवाश्रिताः त्रि. ब्रा. १।४

शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा मे शुध्यन्तां
ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा

भूयासः स्वाहा महाना. १।४।१३

शब्दस्पर्श-रूप-रसाश्चापां गुणाः
शब्दस्पर्शरूपरसगन्धास्तद्विषयाः
शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः, पञ्च-
तन्मात्राः, पञ्चगुणबाणाः,
मन इक्षुधनुः शारीरको. ४

शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धाः
पृथिवीगुणाः शारीरको. ४

शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः सुख-
दुःखहेतवः सर्वसारो. ५

शब्द-स्पर्श-रूपाण्यग्निगुणाः
शब्दस्पर्शस्वरूपाभ्यां सङ्कर्षा-
ज्जन्यतेऽनलः शारीरको. ४

शब्दस्पर्शादयो येषार्था अनर्था इव
ते स्थिताः । येष्वासक्तस्तु
भूतात्मा न स्मरेच्च परं पदम् महो. ५।१४९

शब्द-स्पर्शविति वायुगुणौ
शब्दं बधिरवच्छृणु । काष्ठवत्पश्य
वै देहं प्रशान्तस्येति लक्षणम् मैत्रा. ४।२

शब्दं सर्वमसद्विद्धि स्पर्श
सर्वमसत्सदा शारीरको. ४

शब्दः खे पौरुषं नृषु अ. नां. १५

शब्दः खे पौरुषं नृषु ते. विं. ३।५७

शब्दः खे पौरुषं नृषु म. गी. ७।६

शब्दाक्षरं परं ब्रह्म यस्मिन्क्षीणे
यदक्षरम् । तद्विद्वानक्षरं ध्याये-
द्यदिच्छेच्छान्तिमाप्नुयात् ब्र. वि. १६
शब्दादिविषयान् पञ्च मनश्चैवाति-
चञ्चलम् । चिन्तयेदात्मनो अ. ना. ५
शब्दादिष्वनुरक्तानि निगृह्याक्षाणि
योगवित् । कुर्याच्चित्तानुकारीणि
प्रत्याहारपरायणः भवसं. ३।२७
शब्दादीन् विषयानन्ये भ. गी. ४।२६
शब्दादीन् विषयास्त्यक्त्वा भ. गी. १८।५१
शब्दाद्यैर्विषयैस्त्यक्तो लयस्थो
दृश्यते तथा (निर्वातस्थो यथा
दीपो भासते निश्चलो यथा) अमन. १।२७
शब्दानां ज्ञानरूपिणी देव्यु. २१
शब्दार्णमक्षरं ब्रह्म तस्मिन्क्षीणे
यदक्षरम् । तद्विद्वानक्षरं ध्याये-
द्यदिच्छेच्छान्तिमात्मनः त्रि. ता. ५।१६
शब्देनैवाशब्दमाविष्कियते मैत्रा. ६।२२
शम इत्यरण्ये मुनयस्तस्माच्छमे रमन्ते महाना. १६।१२
(ॐ ऐं ह्रीं श्रीं) शमभिरग्निभिः
करच्छं नस्तपतु सूर्यः वनदु. ३३
[कर. सं. ८।१८।९+तै. ब्रा. ३।७।१०।५
शमदमादिदिव्यशक्त्याचरणे
क्षेत्रपात्रपटुता निर्वाणो. ५
शमदमादिसम्पन्नो भावमात्सर्य-
तृष्णाशामोहादिरहितो दम्भा-
हङ्कारादिभिरसंस्पृष्टचेता वर्तत
एवमुक्तलक्षणो यः स एव ब्राह्मणः व. सू. उ. ९
शमवान्यासि मुक्तताम् महो. ५।९४
शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति. १।९।१
शमं विषं विषेणैति रिपुणा हन्यते
रिपुः । ईदृशी भूतमायेयं या
स्वनाशेन हर्षदा महो. ५।१११
शमः कारणमुच्यते भ. गी. ६।३
शमाविषट्कसम्पत्तिर्मुमुक्षा, तां
समम्यसेत् वराहो. २।३
शमायान्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा तै. उ. १।४।४

शमेन शान्ताः शिवमाचरन्ति,
शमेन नाकं मुनयोऽन्व-
विन्दन्, शमो भूतानां
दुराधर्षः शमे सर्वे प्रतिष्ठितम् महाना. १७।४
शमेनापिहिता गुहा इतिहा. १६
शमो दमस्तपः शौचं भ. गी. १८।४२
शमो मित्रं सुदामा च सत्या-
कूरोद्धवो दमः कृष्णोप. १६
शरणागतदीनानां कृपां कुर्वन्तिसाधवः सामर. २३
शरत्प्रतिहारः छांदो. २।१६।१
शरदि क्रीडते तुभ्यं नम
आनन्दशालिने सामर. ४२
शरं धनुषि सन्धाय तिष्ठन्तं
रावणोन्मुखम् । वज्रपाणि
रथारूढं रामं ध्यात्वा जपेन्मनुम् रामर. ३।७३
शरा जीवास्तदङ्गेषु भाति नित्यं
हरिः स्वयम् । ब्रह्मैव शरभः
साक्षान्मोक्षदोऽयं महामुने शरभो. २८
शरीरत्रयतादात्म्यात्कर्तृत्वभोक्तृत्व-
तामगमत् पेङ्गलो. १।५
शरीरत्रयसंयुक्तजीवः सङ्गी
तृतीयकः (भ्रमः) अ. पू. १।१४
शरीरपुरुष इति यमवोचाम स
एवाहं दैहिक आत्मा ३ ऐत. २।३।१
शरीरपुरुषश्छन्दःपुरुषो वेदपुरुषो
महापुरुष इति ३ ऐत. २।३।१
शरीरपोषणादिकं समानकर्म शांदि. १।४।९
शरीरप्रादेशाङ्गुष्ठमात्रमणोरप्यणुं
ध्यात्वाऽतः परमतां गच्छति मैत्रा. ६।३८
शरीरभेदा द्विविधाः सामर. १०१
शरीरमकृतं कृतात्मा ब्रह्मलोक-
मभिसम्भवामि छांदो. ८।१३।१
शरीरमन्नादम् तैत्ति. ३।७
शरीरमस्थिमांसं च त्यक्त्वा युक्ता-
द्यशोभनम् । भूतमुक्तावली-
तन्तुं चिन्मात्रमवलोकयेत् महो. ४।२३
शरीरमिदं मैथुनादेवोद्भूतं
संविदपेतं निरय एव... मैत्रे. १।४
शरीरमिष्मम् (शरीरयज्ञस्य) महाना. १८।१

शरीरमेवास्या एकमङ्गमुदृढं, तस्य
सुखदुःखे परस्तात्प्रतिविहिता
भूतमात्रा कौ. त. ३।५
शरीरयज्ञसंशुद्धचित्तसंजातबोधतः।
मुनयो यत्पदं यान्ति तद्राम-
पदमाश्रये प्रा. हो. शीर्षकं
शरीरयात्राऽपि च ते भ. गी. ३।८
शरीरलघुना दीप्तिर्जाठरामित्रि-
र्धनम् (नाडीशुद्धिचिह्नानि) यो. त. ४५
शरीरलघुताविप्र पादाङ्गुष्ठनिरोधनात् जा. द. ६।२४
शरीरवाङ्मनोभिर्यत् भ. गी. १८।१५
शरीरस्थं प्राणमग्निना सह योगा-
भ्यासेन समं न्यूनं वा यः
करोति, स योगिपुङ्गवो भवति शां. १।४।२
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय भ. गी. १३।३२
शरीरस्य द्वेदिनो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति-
तुरीयावस्थाः सन्ति ना. प. ५।१
शरीरं तावदेव स्यात्षण्णवत्य-
ङ्गुलात्मकम् जा. द. ४।१
शरीरं तु एकादशेन्द्रियात्मकम् सामर. १०१
शरीरं ध्रियते येन वर्तते तत्र कुण्डली बराहो. ५।२२
शरीरं मे विचर्षणम् [ना. प. ४।४५+] तैत्ति. १।४।१
शरीरं यन्वाप्नोति भ. गी. १५।८
शरीरं यज्ञशमलं कुसीदं महाना. ५।९
शरीरं वेदिः (शरीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।२
शरीरं सर्वजन्तूनां षण्णवत्यङ्गु-
लात्मकम् । तन्मध्ये पायु-
देशात्तु द्वाङ्गुलात्परतः परम् बराहो. ५।१९
(तथा) शरीराणि विहाय
जीर्णान्यन्यानि संयाति
नवानि देही भवसं. २।३७
शरीरात्प्राणो द्वादशङ्गुलोऽधिको
भवति शां. १।४।२
शरीरान्तर्गताः सर्वे रोगा विन-
श्यन्ति (स्वस्तिकाद्यष्टासनैः) शां. १।३।१२
शरीराभिमानेन जीवत्वम् ना. प. ६।७
शरीरेण जिवाः सर्वे शरीरं योगि-
भिर्जितम् । तत्कथं कुर्वते तेषां
सुखदुःखादिकं फलम् यो. वि. १।३८

शरीरे पाण्डवस्तदा भ. गी. १७।१३
शरीरे पाप्मनो हित्वा सर्वान्कामान्
समश्रुते तैत्ति. २।५
शरीरे सकलं विश्वं पश्यत्यात्मा-
विभेदतः योगकुं. २।४९
शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः तैत्ति. ३।७
शरीर्यप्यशरीर्येष परि-
च्छिन्नोऽपि सर्वगः २ आत्मो. १४
शर्म मे भव यत्पापं तन्निवारय आरुणि. ३
शर्वः सर्वस्य जगतो विधाता धर्ता
हर्ता विश्वरूपत्वमेति त्रिपुरो. १५
शर्वो विश्वं मायया स्विद्धधार ग. पू. ता. २।८
शल्कैरग्निमिन्धान उभौ लोकौ
सनेमहम् महाना. १३।१२
शवपिण्डवदेकत्रात्रं (त्यजेद्यतिः)
[ना. प. ७।१+] १ सं. सो. २।७९
शशपृष्ठाद्रौतमः, वसिष्ठ उर्वश्यां,
अगस्त्यः कलशे जातः व. सु. उ. ९
शशशृङ्गेण नागेन्द्रो मृतश्चेज्जग-
दस्ति तत् ते. वि. ६।७४
शशिमध्यगतो वह्निर्वह्निमध्य-
गता प्रभा ध्या. वि. २७
शशिरवी जायेते पुरुषोत्तमात् सि. वि. २
शशिक्ष्याने वसेद्विन्दुस्तयोरैक्यं
सुदुर्लभम् ध्या. वि. ८८
शश्वच्छान्तिं निगच्छति भ. गी. ९।३१
शश्वत् सूयमानत्वात्सूर्यः मैत्रा. ६।७
शश्वदमितानन्दाचलोपरिविहारिणीं
मूलप्रकृतिजननीमविद्यालक्ष्मी-
मेवं ध्यात्वा... तथा चानुज्ञात-
श्रोपर्युपरि गत्वा महाविराट्-
पदं प्राप त्रि. म. ना. ६।३
शश्वद्रहमयं रूपं क्रियाशक्ति-
रुदाहृता सीतो. २४
शश्वद्विश्वमिदं जगत् बृ. जा. २।६
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः प्रवर्ग्या. ११
[अ. मं. ७।३५।१+] वा. सं. ३६।११
[अथर्व. १९।१०।१]

शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ [+क्र. मं. ७।३५।१+	प्रवर्ग्या. ११ वा. सं. ३६।११	शाङ्करीयं महाशाखं न देयं यस्य कस्यचित् शाटीद्वयं कुटीचक्रस्य, बहु- दस्यैकशाटी...	ते. वि. ६।१०८ ना. प. ७।८
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुक्रमः [तैत्ति. [प्रवर्ग्या. ९+	१।१।१, १३+ वा. सं. ३६।९	शाठ्यायनीब्रह्मविद्याखण्डाकार- सुखाकृति । यतिब्रुन्दहृदागारं रामचन्द्रपदं भजे	शाठ्या. शीर्षकं मुक्तिको. १।३९
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं पशुभ्यः [प्रवर्ग्या. २२+	वा. सं. ३६।२२	शाठ्यायनी ह्यग्नीवं दत्तात्रेयं च गारुडम्	मुक्तिको. १।३९
शं नः कौलिकः, शं नो वारुणी, शं नः शुद्धिः शं नोऽग्निः	कौलो. शां.	शाण्डिल्यो ह वा अथर्वाणं पप्रच्छा- ऽऽत्मलाभोपायभूतमष्टाङ्गयोग- मनुब्रूहीति	शांदि. १।१।१
शं नः शीक्षा सहनौ यश्चन्दसां भूः स यः पृथिव्योमित्युतं चाहं वेदमनूय्य शं नो द्वादश शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे [प्रवर्ग्या. ८+ क्र. मं. [+वा.सं. ३६।८+अथर्व. ६।२७।१	तैत्ति. १।१३।१ सहवै. शां. पा. १०।१६५।१	शान्त एव चिदाकाशे स्वच्छे शम- समात्मनि । समग्रशक्तिखचिते ब्रह्मेति कलिताभिधे ॥ सर्वमेव परित्यज्य महामौनी भवानघ	अ. पू. ५।११३ मैत्रा. ६।३६ कठो. १।१०
शं नो विश्वशु श्रीदेवी महामाया ब्रैष्णवी शक्तिराद्या	लक्ष्म्यु. ४	शान्तमेकं समृद्धं चैकम् (ब्रह्मरूपके) शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्यात् शान्तसन्देहदौरास्यं गतकौतुक- विभ्रमम् । परिपूर्णान्तरं चेतः पूर्णन्दुरिब राजते	अ. पू. ५।११३ मैत्रा. ६।३६ कठो. १।१०
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये [प्रवर्ग्या. १२+ [वा.सं. ३६।१२+अथर्व. १।६।१	क्र. मं. १०।१।४	शान्तसङ्कल्पप्रबुद्धानां यथास्थित- मिदं जगत्	महो. ५।६८ अ. पू. ५।११०
‘ शं नो देवीरभिष्टये ’ इत्येवमादिं कृत्वाऽथर्ववेदमवीयते	२ प्रणवो. २१	शान्तसंसारकलनः कलावानपि निष्कलः । यः सचित्तोऽपि निश्चितः स जीवन्मुक्त उच्यते	महो. २।६१
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः [प्रवर्ग्या. २+	वा. सं. ३६।२	शान्तं तपो दमस्तपः शमस्तपो दानं तपो यज्ञं तपः	महो. २।६१
शं नो मह इत्यादयो नो इतराणि त्रयोविंशतिः	तैत्ति. १।१३।१	शान्तं ब्रह्मेदमकुमम् शान्तं शिवमक्षरमव्ययं	महो. २।६१
शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा [प्रवर्ग्या. ९+	तैत्ति. १।१।१ वा. सं. ३६।९	शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते, स आत्मा स विज्ञेयः [माण्डू. ७+	महो. २।६१ महाना. ७।८ अ. पू. ५।११२ अस्म. २।४
शंसन्तमनुशंसन्ति बहुचाः शास्त्रकौविदाः	मंत्रिको. ९	शान्तः प्रसन्नवदनो ह्यक्रोधो भक्तवत्सलः । अनेन सदृशो मन्त्रो जगत्स्वपि न विद्यते	रामो. २।४ रामो. ता. ६।२७ मैत्रा. २।४
शाकल्येति होवाच याज्ञवल्क्य- स्त्वा ५ द्विदिमे ब्राह्मणा अङ्गारावक्ष्यणमकता ३ इति शाकायन्यस्य चरणाभिमृश्य- मानो राजेमां गाथां जगाद् शाकरैवते तिरश्ची शाखान्तरोपनिषत्स्वरूपमेव निरूपितम्	बृह. ३।९।१८ मैत्रे. १।२ कौ. त. १।५ त्रि. म. ना. ४।२	शान्तः प्राणोऽनीशात्मा शान्ता दान्ता उपरतास्वितिश्ववः समाहिताः... आत्मानन्दाः... शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्यां चरन्तः	वृषिहो. ६।३ मुण्ड. १।२।११

शान्ताशान्तादिहीनात्मा नादान्त-

ज्योतिरूपकः

ते. बि. ५।५

शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्

भ. गी. ५।१२

शान्तिसमृद्धममृतम्

तैत्ति. १।६।२

शान्तिं निर्वाणपरमां

भ. गी. ६।१५

शान्तिसंस्तृजन्तिपशुपाशविमोक्षणम्

अ. शिरः. ३।१०

शान्तिस्त्वं, पुष्टिस्त्वं

अ. शिरः. ३।१

शान्तो दान्त उपरतस्ति तिक्षुर्यो-

ऽनूचानो ह्यभिजज्ञौ समानः

शास्त्राय. ५

शान्तो दान्त उपरतस्ति तिक्षुः

समाहितो भूत्वाऽऽत्मन्ये-

वाऽऽत्मानं पश्यति

सुबालो. ९।१४

शान्तो दान्तोऽतिविरक्तः

सुशुद्धो गुरुभक्तः

त्रि.म.ना. १।२

शान्तोऽपि व्यवहारस्थः कुर्वन्नपि

न लिप्यते

१ सं. सो. २।३३

शान्तोऽप्राणो निरात्माऽनन्तः

मैत्रा. ७।४

शान्तोऽस्मि पुरुषोत्तमः

मैत्रे. ३।२४

शान्तौ सुषुप्तविश्वः, शान्त्यतीते

सुषुप्ततैजसः

प. हं. प. १०

शान्त्यतीतं स्वराद्बुद्धिः

पं. ब्र. १५

शान्त्या चित्तं (शुद्धं भवति)

महाना. १७।१२

शान्तोऽसौ रस्तेजोमयोऽमृतमयः

पुरुषोऽयमेव स योऽयमात्मेव-

ममृतमिदं ब्रह्मेदं सर्वम्

बृह. २।५।५

शास्त्रमेवैतानमेतत्ते वर्णितं पद्मसंभव

यो. शि. ५।१६

शान्त्यतीतं कथं दुःखमिति तप्तो-

ऽस्मि चैतसा

महो. ३।६

शारीरस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषो-

ऽयमेव स योऽयमात्मा

बृह. २।५।१

शारीरं केवलं कर्म

भ. गी. ४।२१

शारीरं तप उच्यते

भ. गी. १७।१४

शारीरोऽग्निर्नाम जराप्रणुदा-

हविर्वक्त्रं दन्ति

प्रा. हो. २।४

शारीराय कं त्वमात्मानमुपास्ते

छांदो. ५।१५।१

शास्त्रावैव सर्वेऽन्ये वंशाः

समाहिताः स्युः

३ ऐत. २।१।१

शास्त्रतरुं च धर्मस्य

भ. गी. १४।२७

शास्त्रतः पदमव्ययम्

अ. गी. १८।५६

शाश्वतोऽजः स्वतन्त्रः स्वे

महिम्नि तिष्ठति

मैत्रे. २।४

शाश्वतं ध्रुवमच्युतम्

ते. बि. १।८

शाश्वतं परमं पदम्

त्रि.म.ना. ७।७

शाश्वतं वै रुद्रमेकत्वमाहुः

बटुको. २३

शाश्वतं शिवमच्युतम्

महाना. ९।३

शाश्वतं सदाशिवं ब्रह्मादिवन्दितं

योगिध्येयं परमं पदम्

गणेशो. ५।६

शास्ताऽच्युतो विष्णुर्नारायणः

मैत्रा. ७।७

शास्त्रज्ञानात्पापपुण्यलोकात्तुभव-

श्रवणात्प्रपञ्चोपरतः...साधन-

चतुष्टयसम्पन्नो यः सन्नयरयति

स एव ज्ञानसङ्गासी

ना. प. ५।३

[१ सं. सो. २।१३+

शास्त्रमेतत्प्रयत्नेन सदाऽभ्यस्यं

मुमुक्षुभिः । यस्य धारणमात्रेण

स्वयं तत्त्वं प्रकाशते

अमन. २।१०६

शास्त्रसज्जनसम्पर्कवैराग्याभ्यास-

रूपिणी । प्रथमा भूमिकैषोक्ता

मुमुक्षुत्वप्रदायिनी

अ. पू. ५।८१

शास्त्रसज्जनसम्पर्कवैराग्याभ्यास-

योगतः

शांदि. १।७।२६

शास्त्रसज्जनसम्पर्कवैराग्याभ्यास-

पूर्वकम् । सदाचारप्रवृत्तिर्या

प्रोच्यते सा विचारणा

[महो. ५।२८+

वराहो. ४।४

शास्त्रसज्जनसम्पर्कैः प्रज्ञामादौ

विधर्षयेत्

अ. पू. ५।७१

शास्त्रं विनापि सम्बोद्धं गुरवोऽपि

न शक्नुयुः

योगकुं. २।१०

शास्त्रं सर्वमसद्विद्धि ह्यहं सत्य-

चिदात्मकः

ते. बि. ३।५७

शास्त्राण्यधीत्यमेधावी अभ्यस्य च

पुनः पुनः । परमं ब्रह्म (विद्यायाः)

विज्ञाय उल्कावत्ता(त्रा)न्यथोत्सृजेत्

अ. ना. १

शास्त्रीयेणैव मार्गेण वर्तेऽहं

मम का क्षतिः

१ अवधू. ३३

शास्त्रेण न स्यात्परमार्थदृष्टिः

कार्मेक्षमे पश्यति चापरोक्षम् ।

प्रारब्धनाशःप्रतिभाननाश एवं
त्रिधा नश्यति चात्ममाया वराहो. २।६९
शास्त्रे मयि त्वयीशे च ह्यखण्डैक-
रसो भवान् ते. वि. २।४२
शास्त्रैः सज्जनसम्पर्कपूर्वकैश्च तपो-
दमैः । आदौ संसारमुक्त्यर्थे महो. ४।४
प्रज्ञामेव विवर्धयेत्
शांडिल्यपैङ्गलंभिक्षुंमहच्छारीरकंशिला मुक्ति. १।३५
शिखरिणां प्रपतनं ध्रुवस्य प्रचलनं
बृश्चनं वा तरुणां (वातरज्जूनां) मैत्रा. १।८
शिलखण्डी च महारथः भ. गी. १।१७
शिला च दीपसङ्काशा १ प्रणवो. ९
शिला ज्ञानमयी यस्य उन्नीतं च
तन्मयम् । ब्राह्मण्यं सकलं
तस्य इति ब्रह्मविदो विदुः
(वेदानुशासनम्-नेतरेषां तु
किञ्चन)[परब्र. १८+शा. १७ +ना.प. ३।८६
शिला ज्ञानमयी वृत्तिर्यमाद्यष्टांग-
साधनैः त्रि. ब्रा. २।२३
शिला तु दीपसङ्काशा ब्र. वि. ९
शिला प्राणमयी वृत्तिर्यमाद्यष्टाङ्ग-
साधनम् । देहेन्द्रियेषु वैराग्यं
यम इत्युच्यते बुधैः २ अवधू. १
शिखायामेकरुद्राक्षं त्रिशतं
शिरसा बहेत् क. जा. १५
शिखा वर्णाभ्रमिणामेकैव परब्र. ६
शिखाऽस्य मनस्तमोलक्षणं भिस्वा
बुधोऽस्तमाविष्टमागच्छति मैत्रा. ६।२४
शिखां यज्ञोपवीतं छिन्वा
सज्जयस्तं मयेति त्रिवारमुत्तरेत् याज्ञव. १
शिखां यज्ञोपवीतं...विसृज्यैव
परिव्रजति ना. प. ३।७७
शिली मुण्डी चोपवीती कुटुम्बी
यात्रामात्रं प्रतिगृह्णन्मुण्यात् शा. १८
शिथिलीकृतसर्वाङ्ग आनखाम-
शिलाप्रतः ।...स्वयं प्रकाशिते
तत्रो स्वानन्दस्तत्क्षणान्नवेत् अमन. २।५०

शिरसि बाणं बाहुनाभिपीठ-
प्रकृतिरूपकं देहे धारणं यस्य
न विद्यते तदेहं न पश्येत् लिङ्गोप. २
शिरसीशानमन्त्रेण कण्ठे तत्पुरुषेण
तु । अग्नौरेण गले धार्यं तेनैव
हृदयेऽपि च (रुद्राक्षधारणं) क. जा. २१
शिरः कपालं केशान् न कुर्यात्
शिरःपीठं लिङ्गात्मकं सर्वम् लिङ्गोप. २
शिरःपाणिपादपायूपस्थं सर्वं
लिङ्गस्वरूपम् लिङ्गोप. १
शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोरुदरजङ्घ-
शिरोपस्थपायवो मे शुद्ध्यतां
ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा
भूयासः स्वाहा महाना. १४।१०
शिरा नद्धयोऽस्थीन्युपग्रहाः
छाग. ६।२
शिरासु तत्पृष्ठगतासु नित्यं
समातृकाः शक्तिगणा वसन्ति १ विल्वो. ५
शिरोमध्यगते बायौ जा. द. ६।३७
शिरो रक्षतु वाराही चैन्द्री रक्षेद्बु-
जद्वयम् । चामुण्डा हृदयं रक्षे-
त्कुक्षि रक्षतु वारुणी वनदु. ८९
शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तु चीर्णम्
(तेषामेवैतां ब्रह्मविद्यां वदेत्) मुण्ड. ३।२।१०
शिव एकः स्वेन भासेदं सर्वं
दृष्ट्वा तप्तायःपिण्डवदेकं
भिन्नवदवभासते त्रि. ब्रा. १।१
शिव एको ध्येयः शिवंकरः
अ. शिखो. ३
शिव एव जङ्गमरूपः
रुद्रोप. २
शिव एव प्राणलिङ्गी
रुद्रोप. २
शिव एव रुद्रः प्राणलिङ्गी, नान्यो
भवति रुद्रोप. २
शिव एव स्वयं साक्षादयं ब्रह्म-
विदुत्तमः [महो. ४।८५+
शिव एव सदा ध्येयः सर्वसंसार-
मोचकः
शिवगुरुस्वरूपो महेश्वरः
शिवज्ञानविदं तस्मात्पूजये-
द्भिन्नवैर्गुरुम् शिवो. १।३५

शिवज्ञानं परं ब्रह्म तदारभ्य न सन्त्यजेत् । ब्रह्मासाद्य च यो गच्छेद्ब्रह्महा स प्रकीर्तितः	शिवो. ७।६२	शिवव्रतधरं दृष्ट्वा समुत्थाय सदा द्रुतम् । शिवोऽयमिति सङ्कल्प्य हर्षितः प्रणमेत्ततः	शिवो. ७।७२
शिवज्ञानं समभ्यसेत्	शिवो. ७।६१	शिवशक्तिमयं मन्त्रं मूलाधारस्त- मुत्थितम् । तस्य मन्त्रस्य वै ब्रह्मञ्छ्रोता वक्ता च दुर्लभः	यो. शि. २।५
शिवज्ञानात्महस्तेन कस्तं न प्रति- पूजयेत् । (अज्ञानपङ्कनिर्ममं यः समुद्धरते जनम्)	शिवो. ७।४१	शिवशक्त्यमृतस्पर्शं लब्ध एव कुतो मृतिः	बृ. जा. २।१५
शिवज्ञानार्थतत्त्वज्ञं प्रसन्नमनसं गुरुम् । शिवः शिवं समास्थाय ज्ञानं वक्ति न हीतरः	शिवो. ७।४	शिवशक्त्यात्मकं रूपं चिन्मया- नन्दवेदितम्	पा. ब्र. ९
शिवधर्माच्छिवज्ञानं प्राप्य मुक्ति- मवाप्नुयात्	शिवो. १।३०	शिवश्च नारायणः शक्रश्च नारायणः [त्रि.म.ना. २।८+	नारा. २+
(यद्वा) शिवभक्तिस्फुटं सदापि तद्भसितं देवताधार्यम्	रुद्रोप. १	शिवश्चोर्ध्वमयः शक्तिरुर्ध्व- शक्तिमयः शिवः	बृ. जा. २।१०
शिवशक्तिसमायोगे जायते परमा स्थितिः	यो. शि. १।११७	शिवसायुज्यमवाप्नोति	रु. जा. ४५
शिवभक्तिविहीनश्चेत् स चण्डाल उपचण्डालः	रुद्रोप. १	शिवस्य जीवरूपस्य स्थानं तद्धि प्रचक्षते । यत्र कुण्डलिनी नाम परा शक्तिः प्रतिष्ठिता	यो. शि. १।१६९
शिवमक्षरमव्ययं हरिहरहिरण्य- गर्भस्त्र्यष्टारं	भस्मजा. २।४	शिवस्य हृदयं विष्णुर्विष्णोश्च हृदयं शिवः	स्कन्दो. ८
शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते [गणेशो. १।४	भस्मजा. २।४	शिवं तुरीयं यज्ञोपवीतम्	निर्वाणो. ६
शिवमात्मनि पश्यन्ति प्रतिमासु न योगिनः	जा. द. ४।५९	शिवं प्रशान्तममृतं ब्रह्मयोनिम्	कैव. १।६
शिवयाऽनुषक्तो मध्ये दलेऽहं निवसामि नित्यम्	१ बिल्वो. ३	शिवं शक्तिं च सादारण्यामीशं विद्याख्यमेव च	बृ. जा. ४।२०
शिवयोगनिद्रा च	निर्वाणो. २	(यत्) शिवं शान्तमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स ब्रह्मप्रणवः...	ना. प. ८।२३
शिवयोगी शिवज्ञानी शिवजापी तपोधिकः । क्रमशः कर्मयोगी च पञ्चैते मुक्तिभाजनाः	शिवो. १।३६	शिवः क्षरति लोकान् वै विष्णुः पाति जगज्जयम्	ते. वि. ५।८७
शिवरूपः प्राणलिङ्गी	रुद्रोप. २	शिवः पुरुष ईशानो नित्यमात्मेति कथ्यते	महो. ६।६१
शिवलिङ्गधरं विप्रं विपन्नं न तु दाहयेत् । यदि ना दाहयेत्तस्य ब्रह्महत्या तदा भवेत्	सदानं. १३	शिवः शिव इमे शान्तनाम चाद्यं मुहुर्मुहुः । उच्चारयन्ति तद्भक्त्या ते शिवा नात्र संशयः	शिवो. १।९
शिवलिङ्गं त्रिसन्ध्यमभ्यर्च्यकुशे- ष्वासीनो ध्यात्वा (जुहुयात्)	भस्मजा. २।४	शिवः शिवाय भूतानां यस्माद्दानं प्रयच्छति । गुरुमूर्तिः स्थित- स्तस्मात्पूजयेत्सततं गुरुम्	शिवो. ७।२
शिवलिङ्गार्चनयुतश्चाण्डालोऽपि स एव ब्राह्मणाधिको भवति	रुद्रोप. १	शिवः शैवागमस्थानां कालः कालैकवादिनाम्	अ. पू. ३।२१
		शिवः सर्वजगत्पतिः	शिवो. १।१४

शिवः संसारमोचकः पञ्चम. ३६
 शिवामिना तनुं दग्ध्वा शक्ति-
 सोसामृतेन यः । प्लावयेद्योग-
 मार्गेण सोऽमृतत्वाय कल्पते वृ. जा. २।१
 शिवाय विष्णुरुपाय शिवरूपाय स्कन्दो. ८
 विष्णवे.. वृ. जा. ३।३४
 शिवालयस्थमकल्पं शतकल्पं च
 शिवालयस्थं तल्लिङ्गलिप्तं वा मन्त्र-
 संस्कारदग्धं वा (भस्म) वृ. जा. ५।७
 शिवां तां कुरु मोत्कमीः प्रश्नो. २।१२
 शिवेन वचसा त्वा गिरिशच्छा
 वदामसि । यथा नः सर्वमि-
 ज्जगदयक्ष्मसु सुमना असत् नीलरु. १।६+
 [वा. सं. १६।४+ तै.सं. ४।५।१२
 शिवे भक्तिं प्राप्य तद्भक्तसङ्गान्न
 संसृतौ घोरदुःखात्प्रमज्जेत् सि. शि. ७
 शिवेन मे सन्निष्ठस्व स्योनेन
 मे संतिष्ठस्व म. ना. १६।११
 शिवो गुरुः शिवो वेदः शिवो देवः
 शिवः प्रभुः । शिवोऽस्म्यहं
 शिवः सर्वं शिवादन्त्यन्न किञ्चन वराहो. ४।३२
 शिवोऽद्वैत ओङ्कार आत्मैव नृसिंहो. २।७
 शिवो भवेदित्येकः गुह्यषोढा. १
 शिवोमायुतः परमात्मा वरदो देवता ग. पू. २।८
 शिवोमाविशाप्रदाहाय महाना. १६।३
 शिवोऽयं परमं देवं शक्तिरेषा तु
 जीवजा । सूर्याचन्द्रमसोर्योगा-
 ऽसस्तत्पदमुच्यते त्रि. ता. १।११
 शिवोऽहं, नावाशक्तयोऽहम् अद्वै. भा. १
 शिशिरे शिशिरं मध्यमानं फेनं भवति अ. शिरः. ३।१५
 शिशुमेवाप्येति, यः शिशुमेवास्तमेति सुबालो. ९।१०
 शिशं निरभिद्यत, शिश्राद्वैतः २ ऐत. १।४
 शिश्रसंवर्गवर्ज्यं तु दुर्वालो. २।५
 शिश्राहंकारवाञ्छन्तुः महो. ५।९४
 शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् म. गी. २।७
 शिष्याश्च स्वस्वकार्येषु प्रार्थयन्ति...
 स्वाभ्यासेऽबिस्मृतौ... १ यो. त. ७८
 शिष्याणां न तु कारुण्याच्छिष्य-
 सङ्गद ईरितः १सं.सो. २।८३

शीतवातोष्णत्राणकरं
 कौपीनमोमिति ना. प. ४।५०
 शीतोष्णसुखदुःखदाः म. गी. २।१४
 शीतोष्णसुखदुःखमानाव-
 मानवर्जितः प. हं. प. ११
 शीतोष्णसुखदुःखमानावमानं
 निर्जित्य...प्रणवात्मकत्वेन
 देहत्यागं करोति यः, सोऽवधूतः तुरीया. ३
 शीतोष्णसुखदुःखाद्यैर्व्याधिभि-
 र्मानसैस्तथा । अन्यैर्नाना-
 विधैर्जीवैः शस्त्राभिरजलमारुतैः ॥
 शरीरं पीड्यते तैस्तैश्चित्तं
 संक्षुभ्यते ततः [यो. शि. १।२८, २९
 शीतोष्णसुखदुःखेषु [म. गी. ६।७+ १२।१८
 शीतोष्णसुखदुःखेच्छासत्त्वरजस्तमो-
 गुणा वशिन्यादिशक्तयोऽष्टौ भावनो. ६
 शीतोष्णाहारनिद्राविजयः सर्वदा
 शान्तिर्निश्चलत्वं विषयेन्द्रिय-
 निग्रहश्चैते यमाः मं. ब्रा. १।१
 शीतोष्णे क्षुत्पिपासे च सङ्कल्पक-
 विकल्पकम् ।...एतद्भावविनि-
 र्मुक्तं तद्वाह्यं ब्रह्म तत्परम् ते. वि. १।१३, १४
 शीर्यन्ते तारका अपि महो. ३।४९
 शीर्यते ह वा अस्य द्विषन् पाप्मा
 भ्रातृव्यः, परास्य द्विषन्
 पाप्मा भ्रातृव्यो भवति १ऐत. १।४।४
 शीर्षकपालं भित्त्वा पृथिवीं भिनत्ति सुबालो. ११।२
 शीर्षके च ललाटे च कर्णे कण्ठे-
 ऽसकद्वये । कूर्परे मणिवन्धे च
 हृदये नाभिपार्श्वयोः ॥ पृष्ठं
 चैकं प्रतिस्थानं जपेत्तत्राभिदेवताः वृ. जा. ४।१९
 शीर्षान्तर्गतमण्डलमध्यगं पञ्च-
 वक्त्रमुमासहायं नीलकण्ठं
 प्रशान्तमन्तर्लक्ष्यमिति केचित् मं. ब्रा. १।५
 शीर्षे कण्ठे वक्षसि कक्षदेशे नाभौ
 हस्ते सर्वदा प्राणलिङ्गम् ।
 धार्य यथासम्प्रदायं पुरस्तादुरो-
 विदिस्वा हृदये मुख्यमुक्तम् सि. शि. १२

श्रीषोपरि द्वादशाङ्गुलिमानं
ज्योतिः पश्यति तदाऽमृतत्वमेव सं. ब्रा. १।३
श्रीषोपरि द्वादशाङ्गुलसमीक्षितु-
रमृतत्वं भवति अद्वयता. ३
श्रीष्णो द्यौः समवर्तत [पु.सू. १३ चित्त्यु. १२।६
श्रीष्णो द्यौः (अजायत) गणेशो. ३।११
शुक पश्यन्न पश्येस्त्वं साक्षी
सम्पूर्णकेवलः महो. २।७३
शुकमार्गे येऽनुसरन्ति धीराः
सद्योमुक्तास्ते भवन्तीह लोके वराहो. ४।३४
शुकश्च वामदेवश्च द्वेसूती देवनिर्मिते वराहो. ४।३६
शुकेशु मे हरिमाणं रोपणाकासुद्धमसि सूर्यता. २।१+
[अ. सं. १।९०।१२+तै.ब्रा. ३।७।६।२२
शुको नाम महातेजाः स्वरूपा-
नन्दतत्परः महो. २।१
शुको शुको वामदेवोऽपि मुक्त-
स्ताभ्यां विना मुक्तिभाजो
न सन्ति वराहो. ४।३४
शुको विद्वज्जमः प्रोक्तो वामदेवः
पिपीलिका वराहो. ४।३६
शुक्तिकाया यथा तारं कल्पितं
मायया तथा । महवादि जग-
न्मायामयं मय्येव केवलम् वराहो. ३।१५
शुक्लितकारजतंसत्यंभूषणंचेज्जगद्भवेत् ते. बि. ६।७६
शुकभिन्नेन यमो भवति निरुक्तो. १।३
शुकमादाय पुनरेति स्थानं
हिरण्यमयः पुरुष एकहं सः बृह. ४।३।११
शुकशोणितसंयोगादावर्तते गर्भः गर्भो. २
शुकशोणितसंयोगान्मातृपितृ-
संयोगाच्च कथमिदं क्षरीरं
परं संयम्यते निरुक्तो. १।३
शुकः शुकस्य पुरोगाः चित्त्यु. ३।१
शुकः शुशुकां उषो न जारः पपा
समीची दिवो न ज्योतिः
[वज्रदु. ३२+ अ.सं. १।६९।१
शुकातिरेके पुमान् भवति ।
शोणिततिरेके स्त्री भवति ।
द्राघ्यां सवेन नपुंसको भवति निरुक्तो. १।३

शुक्लेण ज्योतीं वि समनुप्रविष्टः
प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः
[महाना. १।१+ तै.ब्रा. १०।१।१
शुक्लकृष्णे गती द्वेते भ. गी. ८।२६
शुक्लदन्तो भस्मदिग्धो मन्त्रेणानेन
मन्त्रवित् । ॐ तद्ब्रूहेति
चोच्चार्य पौलकं भस्म सत्यजेत् बृ. जा. ३।२४
शुक्लध्यानपरायणः... सत्रयासेन
देहत्यागं करोति स परमहंस-
परिब्राजको भवति प. हं. प. ८
शुक्लध्यानपरायणोऽध्यात्मनिष्ठोऽशुभ-
कर्मनिर्मूलनपरः सत्रयासेन देह-
त्यागं करोति स परमहंसो नाम जाबालो. ६
शुक्लस्य कृष्णस्य पीतस्य लोहितस्येति
तासु तदा भवति, यदा सुप्तः
स्वप्नं न कश्चन पश्यति कौ. त. ४।१९
शुक्लस्य नीलस्य पिङ्गलस्य हरितस्य
लोहितस्य पूर्णाः (नाड्यः) बृह. ४।३।२०
शुक्लस्य नीलस्य पीतस्य लोहि-
तस्येत्यसौ वा आदित्यः छांदो. ८।६।१
शुक्लं चन्द्रेण संयुक्तं रजः सूर्य-
समन्वितम् (सूर्येण सङ्गतम्)
[यो. चू. ६४+ ध्या. बि. ९०
शुक्लो रक्तः कृष्णो धूम्रः पीतः
कपिलः पाण्डर इति गर्भो. २
शुचिर्वाऽप्यशुचिर्वाऽपि यो
जपेत्प्रणवं सदा । न स
लिप्यति पापेनपद्मपत्रमिवाम्भसा यो. चू. ८८
शुचिःशुचौ देशे गुप्ततीर्थायतनेषु
सुप्रक्षालितपाणिपादवदनः..
इत्यप उत्सृजेत् सन्ध्यो. १
शुचीनां श्रीमतां गेहे भ. गी. ६।११
शुचौ देशेऽप्यासीनो तर्भान्धारय-
माणः प्राङ्मुख उपविश्य.. सूर्यता. १।८
शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य भ. गी. ६।४१
(ॐ) शुचौ देशे शुचिः सत्त्वस्थः
सदर्शयानः सद्वादी सद्वायी
सद्याजी स्यात् मैत्रा. ६।३०

शुचौ देशे स्वाध्यायमधीयानः
धार्मिकान्विदधदात्मनि सर्वे-
न्द्रियाणि सम्प्रतिष्ठाप्याहिं स-
न्सर्वभूतान्यन्यत्र तीर्थेभ्यः
स खल्वेवं यावदायुषं ब्रह्म-
लोकमभिसम्पद्यते

छांदो. ८।१५।१

शुद्धचिदानन्दब्रह्मविलासा-
नन्दाश्चानन्तपरमानन्द-
विभूतयश्चानन्तवैकुण्ठाश्चानन्त-
परमानन्दसमुद्रादयः सन्त्येव
शुद्धचेतन एवाहं कलाकलनवर्जितः
शुद्धज्ञानामृतं प्राप्य परमाक्षर-
निर्णयम् । गुह्याद्गुह्यतमं गोप्यं
ग्रहणीयं प्रयत्नतः

त्रि.म.ना. ८।३
१सं.सो. २।२०

(अथ) शुद्धबुद्धमुक्तसत्यानन्द-
स्वरूपत्वाच्च

अ. बि. ४६

शुद्धबोधमनोदृशम् (पाठगतं)
शुद्धबोधसौधावलिविशेषैरलङ्कृतं
शुद्धबोधानन्दलक्षणैकैक्यं भवति
शुद्धबोधानन्दविभूतिविशेषं...

त्रि.म.ना. ३।२
अध्यात्मो. ६३
त्रि.म.ना. ७।८
त्रि.म.ना. ४।१

शाश्वतं परमं पदं... स्वय-
म्प्रकाशमनिशं ज्वलति
शुद्धबोधानन्दविशेषाकारं (ब्रह्म)
शुद्धब्रह्मास्मि सोऽस्म्यहम्

त्रि.म.ना. ७।७
त्रि.म.ना. ४।१
मैत्रे. ३।९

शुद्धमात्मानमालिङ्ग्य नित्यमन्त-
स्थया धिया । यः स्थितस्तं क
आत्मेह भोगो बाधयितुं क्षमः
शुद्धमानसः शुद्धचिद्रूपः सद्भिष्णुः
सोऽहमस्मि

अ. पू. २।४२
पैङ्गलो. ४।९

शुद्धमीश्वरचैतन्यं जीवचैतन्यमेव
च । प्रमाता च प्रमाणं च प्रमेयं
च फलं तथा ॥ इति समविर्भ
प्रोक्तं भिद्यते व्यवहारतः

कठक. ४०
तै. बि. ३।५

शुद्धरूपोऽस्त्यहं सदा
शुद्धशौचमिति प्रोक्तं मृजलाभ्यां
तु लौकिकम्

मैत्रे. २।८

शुद्धसत्त्वप्रधानायां मायायां
विम्बितो राजः

सरस्व. ३८

शुद्धसत्त्वे परे लीनो जीवः सैन्धव-
पिण्डवत्

त्रि.ना. २।१६४

शुद्धसन्मात्रसंविद्येः स्वरूपाच्च
चलन्ति ये । रागद्वेषादयो

महो. ५।३

भावास्तेषां नास्त्यसम्भवः
शुद्धसंविन्मयानन्दरूपा भवति

अ. पू. ६।८३

पञ्चमी (भूमिका)
शुद्धस्फटिकसङ्काशं केवलं मोक्ष-
काङ्क्षया । चिन्तयन्परमात्मानं
भानुलक्षं जपेन्मनुम्

रामर. २।५

शुद्धस्फटिकसङ्काशं चन्द्रकोटिसम-
प्रभम् । एवं ध्यायेन्महाविष्णु-
मेवं वा विनयान्वितः

ध्या. बि. २९

शुद्धस्फटिकसङ्काशं किञ्चित्सूर्य-
मरीचिवत् । लभते योग-
युक्तात्मा पुरुषोत्तमतत्परः

२ योगत. ११

शुद्धस्फटिकसङ्काशं स वै ब्रह्म
परमात्मेत्युच्यते

हंसो. ४

शुद्धं बुद्धमनीदृशम्
शुद्धं बुद्धं सदासुक्तमनामकरूपकम्
शुद्धं ब्रह्म शुभाशुभम्
शुद्धं शुद्धेनेतिसन्मृग्यसंशोध्य(भस्म)

अध्यात्मो. ६३
ते. बि. ६।७०
ते. बि. ६।३७
भस्मजा. १।४

शुद्धं सदसतोर्मेध्यं पदं बुद्धाऽव-
लम्ब्य च । सबाह्याभ्यन्तरं
दृश्यं मा गृहाण विशुब्धं मा

महो. ५।१७२

शुद्धं सूक्ष्मं निराकारं निर्विकारं
निरञ्जतम् । अनन्तमपरिच्छे-
द्यमनूपममनामयम् ॥ आत्म-
मन्त्रसदाभ्यासात्परतत्त्वं
प्रकाशते

यो. बि. २।१७

शुद्धः पूतः पुण्यलोको भवति

छां. ५।१०।१०

शुद्धः पूतः शून्यः शान्तोऽप्राणो
निरात्माऽनन्तः [मैत्रा.

६।२८+७।४

शुद्धाकाशे वने जाते चलिते तु
तदा जगत्

ते. बि. ६।९८

शुद्धाकाशो मनुज्येषु पति-
तश्चेत्तदा जगत्

ते. बि. ६।९७

शुद्धद्वैतब्रह्माहमिति भिदागन्धं
निरस्य स्वान्तर्विजृम्भित-
भानुसण्डलभ्यानतदाकारा-

कारितपरं ब्रह्मकारितमुक्ति-
मार्गमारूढः परिपको भवति सं. ब्रा. २।७
शुद्धाद्वैताजाड्यसहजामनस्कयोग-
निद्राखण्डानन्दपदानुवृत्त्या
जीवनमुक्तो भवति सं. ब्रा. २।९
शुद्धा ध्यानेन योगिनः दुर्वासो. १।१०
शुद्धा नाडिगणा भवन्ति यमिनां
मासत्रयादूर्ध्वतः शांडि. १।७।१
शुद्धाभ्यासस्य शांतस्य सदैव
गुरुसेवनात् । गुरुप्रसादात्तत्रैव
तत्त्वज्ञानं प्रकाशते अमन. २।१११
शुद्धां संविदमाश्रित्य वीतरागः
स्थिरो भव अ. पू. ४।९०
शुद्धे चेतसि तस्यैव स्वात्मज्ञानं
प्रकाशते यो. शि. १।६५
शुद्धो ज्ञानमयोऽमलः । आत्माऽहं
सर्वभूतानां विभुः साक्षीनसंशयः सर्वसारो. १०
शुद्धो देव एको नारायणः । न
द्वितीयोऽस्ति कश्चित् [त्रि.म.ना. १।५+२।८
शुद्धो निरवयवात्मा...सो-
ऽचिन्त्यो निर्वर्ण्यश्च पुनात्य-
शुद्धान्यपूतानि आत्मोप. ६
शुद्धो बुद्धो नित्यो निरञ्जनः
शान्तः प्रकाशते हंसो. ११
शुद्धो बोधस्वरूपोऽहं केवलोऽहं
सदाशिवः अष्ट्यात्मो. ६९
शुद्धो भास्वरो गुणभुग्भयो-
ऽनिर्वृतिः (आत्मा) मैत्रा. ७।१
शुद्धोऽस्मि परमोऽस्म्यहम् मैत्र. व. ३।२
शुद्धोऽस्मि शुक्रः शान्तोऽस्मि
शाश्वतोऽस्मि शिवोऽस्म्यहम् अ. वि. १०४
शुद्धोऽहमान्तरोऽहं शाश्वतविज्ञान-
समरसात्माऽहम् आ. प्र. ११
शुद्धोऽहमद्वयोऽहं संततभावोऽहमा-
विशून्योऽहम् आ. प्र. १०
शुद्धो यत्नेन नाडीनां पूर्वोक्त-
ज्ञानसंयुतः त्रि. ब्रा. २।८९
शुद्धा वीर्येण विहस्यु जितो
यदि जगत्तदा ते. वि. ६।९५

शुनि चैव श्याके च भ. गी. १।८।५
शुभं यद्यशुभं विद्धि अशुभा-
च्छुभमिष्यते ते. वि. ५।२३
शुभं वाऽशुभमन्यद्वा यदुक्तं गुरुणा
भुवि । तत्कुर्याद्विचारेण अ. वि. २७
शिष्यः सन्तोषसंयुतः
शुभाशुभकर्मनिर्मूलनपरः सङ्गस्य
...शरीरत्रयमुत्सृज्य सङ्ग्यासे-
नैव देहत्यागं करोति स
कृतकृत्यो भवति ना. प. ३।८७
शुभाशुभकर्मनिर्मूलनपरः सङ्ग्यासेन
देहत्यागं करोति स परमहंसः याज्ञव. ३
शुभाशुभपरित्यागी अ. गी. १२।१७
शुभाशुभफलं कर्ममनोबाग्देह-
सम्भवम् । कर्मजा गतयो
नृणामुत्तमाधममध्यमाः भवसं. ५।१
शुभाशुभफलैरेवं अ. गी. ९।२८
शुभाशुभं च कर्म विन्दति गर्भो. ३
शुभाशुभातिरिक्तः शुभाशुभैरपि
कर्मभिर्न लिप्यते परब्र. २
शुभाशुभाभ्यां मार्गाभ्यां बृहती
वासनासरित् । पौरुषेण प्रयत्नेन
योजनीया शुभे पथि भवसं. १।४७
शुभाशुभाभ्यां मार्गाभ्यां बहन्ती
वासनासरित् । पौरुषेण
प्रयत्नेन योजनीया शुभे पथि मुक्तिको. २।५
शुभाशुभैः कर्मभिर्यो न लिप्यति
कदाचन ना. महो. १५
शुभेच्छादित्रयं भूमिमेदामेदयुतं
स्मृतम् । यथावदेव बुद्धयेदं
जगज्जाग्रति दृश्यते बराहो. ४।११
शुभेच्छा प्रथमा भूमिका भवति बराहो. ४।१
शुभोऽस्मि शोकहीनोऽस्मि चैतन्यो-
ऽस्मि समोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।३
शुभवर्णमाजायते श्वरात् परब्र. २
शुष्कमृज्जारस्तदगित्युपासीत कौ. व. २।६
शुष्के मले तु योगी च स्याद्भूति-
श्रुतिस्ततः । योगकुं. १।६३

शुक्लो वृक्षः पल्लवैरेति शोभां द्रवी-
भावं गण्डशैला लभन्ते ।

निष्प्रेष्टाः स्युः शाद्वलस्था
हरिण्यो गानानन्दे लीयते

विश्वमेतत्

गान्धर्वो. ९

शुष्यन्ते केवला भावाः

महो. ३।५

शुष्यन्त्यपि समुद्राश्च ध्रुवोऽप्य-
ध्रुवजीवनः

महो. ३।५०

शूद्रस्यापि स्वभावजम्

भ. गी. १८।४४

शूद्राणां च परन्तप

भ. गी. १८।४१

शूद्राणां श्रोत्रियागारपचनामि-
समुद्भवं (भस्म)

बृ. जा. ५।५

शूद्रायां सृजते रेतः आढं
भुक्त्वाऽथ यो द्विजः । स
शूद्रयोनिसन्निष्ठं रेतसा
सिञ्चते पितृन्

इतिहा. २३

शूद्राः किमु स्वक्रियया विहीनाः

भवसं. २।६४

शूद्रेण शूद्रः

बृह. १।४।१५

शून्यं तत्प्रकृतिर्मायाब्रह्म-
विज्ञानमित्यपि

महो. ६।६१

शून्यं न सङ्केतः परमेश्वरसत्ता

निर्वाणो. ३

शून्यं वै परं ब्रह्म, तत्र सतारं

समायं सामयसञ्चिरेखं भवति

ग. पू. ता. ३।१

शून्याकृतिः शून्यभवः शब्दो

नाहमचेतनः

१ सं.सो. २।१५

शून्यागारदेवः (मंदिर-) वासिनः

(परमहंसाः)

आश्रमो. ४

शून्यागार-देवगृह-तृणकूट-वल्मीक-
वृक्षमूलकुलालशालामिहोत्रगृह-
नदीपुलिनगिरिकुहरकंदरकोटर-
निर्झरस्थण्डिलेषु तेष्वनिकेत-
वास्यप्रयत्नो... सन्यासेन देह-
स्यागं करोति स परमहंसो
नाम [जांबालो. ६+

याज्ञ. ३

शून्यागार-देवगृहतृणकूटवल्मीक-

वृक्षमूलकुलालशालामिहोत्र-
शालानदीपुलिनगिरिकन्दर-
कुहरकोटरनिर्झरस्थण्डिले...

परमहंसाचरणेन सन्यासेन देह-

स्यागं कुर्वन्ति ते परमहंसा नाम

मिश्रको. ६

शून्यागार-वृक्षमूल-देवगृह-तृणकूट-

कुलालशालामिहोत्रशालामिदि-

गन्तरनदीतटपुलिनभूगृहकंदर-

निर्झरस्थण्डिलेषु... देहत्यागं

करोति स कृतकृत्यो भवति

ना. प. ३।८७

शून्यानां शून्यसाक्षिणी

देव्यु. २१

शून्या प्रेतपुरी तत्र यावदृश्चिक-

दर्शनात्

इतिहा. ९२

शून्यात्मा सूक्ष्मरूपात्मा विश्वात्मा

विश्वहीनकः

ते. वि. ४।४३

शून्याशून्यप्रभावोऽस्मि शोभना-

शोभनोऽस्त्यहम्

मैत्र. उ. ३।५

शून्येन शून्यमपि विप्र यथाऽम्ब-

रेण, नीलत्वमुल्लसति चारु-

तरामिधानम्

महो. ५।५२

शून्येष्वेवावकाशेषु गुहासु च

वनेषु च । नित्ययुक्तः सदा

योगी ध्यानं सन्यगुपक्रमेत्

ना. प. ६।८

शूरा नाम महानाडी

यो. शि. ५।२२

शूरो वीरः पुरुषो भूतसंस्थो

विश्वोविश्वेशः प्राणदश्चाव्ययात्मा

२ रुद्रो. ५७

शृङ्गप्रोतान् पादान् स्पृष्ट्वा इत्वा

तानप्रसात्स्वयम् । नत्वा च

बहुधा दृष्ट्वा वृत्तिहः स्वयमुद्भूतो

नृसिंहो. ४।६

शृङ्गमिन्द्रः सखा सुरः

कृष्णो. ८

शृङ्गं शृङ्गार्धमाकृत्य शृङ्गेणानेन

योजयेत् । शृङ्गेणैव परे शृङ्गे

तमनेनापि योजयेत्

नृसिंहो. ७।६

शृङ्गारकलेति विज्ञायते

शृङ्गेष्वशृङ्गं संयोज्य सिंहं शृङ्गेषु

योजयेत् । शृङ्गाभ्यां शृङ्गमा-

वच्य त्रयो देवा उपासते

नृसिंहो. ६।३

शृणु मे भरतर्षभ

भ. गी. १८।३६

शृणुयादपि यो नरः

भ. गी. १८।७१

शृणुयाम शरदः शतं प्रभवाम शरदः

शतम् [प्रवर्ग्या. २४+

वा. सं. ३।६।२४

शृण्वतः श्रोत्रेण [बृह. ६।१।८,

९, ११, १२

शृणु मे परमं वचः शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् शृण्वन्ति विश्वं अमृतस्य पुत्रा आये घामानि दिव्यानि तस्थुः शृण्वन्तोऽपि बहवो यं न विशुः शृण्वन्त्वज्ञाततत्त्वास्ते जानन् कस्माच्छृणोम्यहम् । मन्यन्तां संशयापन्ना न मन्येऽहमसंशयः शृण्वन्ने तन्न शृणोति नहि श्रोतुः श्रुतेर्विपरिलोपो विद्यतेऽवि- नाशित्वात् शेषी दक्षिणा प्रोक्ता सा यस्या- मीक्षणे सुखम् । दक्षिणाभिमुखः प्रोक्तः शिवोऽसौ ब्रह्मादिभिः शेषकर्मप्रसिद्धयर्थं केशान्समाष्ट वा द्विजः । सङ्क्षिप्य वापयेत्पूर्वं केशश्मश्रुनखानि च शेषनागोऽभवद्रामः कृष्णो ब्रह्मैव शाश्वतम् शेषस्थिरसमाधानो येनत्यजसि सत्यज । त्रिन्मनःकलनाकारं प्रकाशतिमिरादिकम् शेषायुतफणाजालविपुलच्छत्र- शोभितं...निरतिशयाद्वैतपरमा- नन्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत् शेषो ह वै वासुदेवात्सङ्कर्षणो नाम जात आसीत् शैब्यश्च नरपुङ्गवः शैला अपि विशीर्यन्ते शीर्यन्ते तारका अपि शैल्यो वेपथुर्नावाभावयोश्च यथा पुमान् । तथैव ब्रह्मविच्छेष्टः सदा ब्रह्मैव नापरः शैलान् गुरुतो भीतिमार्तुतः पितृ- वदतथा । जनतो व्येष्टबालाच्च शैलान् भयमन्दिरम् शोकमोहविनिर्युक्तो विष्णुं ध्यायन्न सीदति शोकप्रविशमानवसः	भ.गी. १८।६४ भ.गी. १०।१८ श्वेताश्व. २।५ कठो. २।७ अवधू. १६ बृह. ४।३।२७ द. सू. २१ ना. प. ४।३९ कृष्णो. १२ महो. ६।६ त्रि.म.ना. ७।१२ सङ्कर्षणो. १ भ.गी. १।५ महो. ३।४९ २ आत्मो. २१ महो. ३।३३ आ. प्र. १ भ.गी. १।४७	शोकस्थानसहस्राणि हर्षस्थान- शतानि च । दिवसे दिवसे मूढमाविशति न पण्डितम् शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके शोणिततिरेके स्त्री भवति शोणितान्मांसं, मासान्मेदः [गर्भो. १२+ शोधनं नाडिजालस्य चालनं चन्द्रसूर्ययोः । रसानां शोषणं चैव महामुद्राऽभिधीयते शोषनं मलजालानां घटनं चन्द्र- सूर्ययोः । रसानां शोषणं सम्यक्मुद्रामुद्राऽभिधीयते शोभनः शोभमानः कल्याणः शोभनाशोभनोऽस्त्यहम् शोषयाश्रु यथा शोषमेति संसारपादपः शौचमिद्वयनिग्रहः [मैत्रे. २।२+ शौचं नामद्विविधं बाह्यमाभ्यन्तरंचेति शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं भगवन्तं पिप्पलादमपृच्छत् शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः पप्रच्छ शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं इमशानेषु दिगन्तेषु स एव ललना- स्तनः । श्रमिरास्वाद्यते काले लघु- पिण्ड इवान्वसः [महो. ३।४२+ इयामवर्णे मध्यदले यदा विश्रान्यते मनः । तदा सर्वगुणं ज्ञानं चैतन्यं च मतिर्भवेत् इयामवर्णे वायुदले यदा विश्राम्यते मनः । निद्रालस्यभयं देवि मत्सरे च मतिर्भवेत् इयामं वीरासनासीनं ज्ञानमुद्रोप- शोभितम् ।...चिन्तयन्पर- मात्मानं भानुलक्षं जपेन्मनुसु इयामाच्छब्दलंप्रपद्ये, शबलाच्छ्यामं.	भवसं. १।९ कठो. १।१२, १८ निरुक्तो. १।३ निरुक्तो. १।२ यो. चू. ६५ ध्या. वि. ९१ नृ. पू. २।७, ११ मैत्रे. ३।५ मुक्तिको. २।३८ स्कन्दो. ११ शांडि. १।१।३ ब्रह्मो. १ मुण्ड. १।३ भ.गी. १८।४३ याज्ञव. ११ विश्रामो. १० विश्रामो. ६ रामर. २।४ छांदो. ८।१।१
--	---	---	--

श्यामां श्यामवर्णवर्णां ऋक्स्वरूपां

...अक्षणाद्युनप्रदां...यः सर्वं

वेदः स वैष्णवो भवति (तुलसी)

तुलस्यु. २

श्यामाः सखन्निधनस्तथा

म. गी. १।३४

इयेतमदत्कमदत्कः श्वेतं

लिन्दुमाभिगाम्

छांदो. ८।१४।१

इयेनमेवाप्येति यः इयेनमेवास्तमेति

सुबालो. ५।१०

इयेनस्त एकं मुखं तेन मुखेन पक्षिणो-

ऽस्ति तेन मुखेन मामन्नादं कुरु कौ. त. २।९

इयेनो गृध्राणां स्वधृतिर्वनानां सोमः

पवित्रमत्येतिरेभन् [महाना. ८।४+१२।३

अदधदेव मनुते अद्धा त्वेव

विजिज्ञासितन्या

छांदो. ७।१९।१

अदधाना मत्परमाः

म. गी. १२।२०

अद्धया देयम् । अद्धया देयम् ।

श्रिया देयम् । हिंया देयम् ।

भिया देयम् । संविदा देयम्

तैत्ति. १।११।३

अद्धया परया तप्तं

म. गी. १७।१७

अद्धया परयोपेताः

म. गी. १२।२

अद्धया मेधा

महाना. १७।१३

अद्धयाऽर्चितुमिच्छति

म. गी. ७।२१

अद्धस्व सोम्येति स य एषोऽणिमै-

तदास्त्यमिदं सर्वं तत्सत्यं

स आत्मा

छांदो. ६।१२।३

अद्धानुरूपा धीर्देवता

भावनो. ७

अद्धा पत्नी (यज्ञस्य)

महाना. १८।१

अद्धा भवति भारत

म. गी. १७।३

अद्धामयोऽयं पुरुषः

म. गी. १७।३

अद्धा माता, पितरं सत्यमाहुः

इतिहा. ११

अद्धामेधे प्रजाः सन्धदातु स्वाहा

महाना. १४।५

अद्धामेधे प्रजा तु जातवेदः

सन्धदातु स्वाहा

महाना. १४।६

अद्धायामपाने निविष्टोऽमृतं हुतं,

अपानमजेनाप्यायस्व...

महाना. १६।४

अद्धायामपाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि

म. ना. १६।२,३

अद्धायामुदाने निविष्टायामृतं हुतं,

उदानमजेनाप्यायस्व

महाना. १६।४

अद्धायामुदाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि

म. ना. १६।२,३

अद्धायां प्राणे निविष्टायामृतं हुतं,

प्राणमजेनाप्यायस्व

महाना. १६।४

अद्धायां प्राणे निविष्टोऽमृतं जुहोमि

म. ना. १६।२,३

अद्धायां व्याने निविष्टायामृतं हुतं,

व्यानमजेनाप्यायस्व

महाना. १६।४

अद्धायां व्याने निविष्टोऽमृतं जुहोमि

म. ना. १६।२,३

अद्धायां समाने निविष्टायामृतं हुतं,

समानमजेनाप्यायस्व

महाना. १६।४

अद्धायां समाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि

म. ना. १६।२,३

अद्धायां ह्येव दक्षिणा प्रतिष्ठिता

बृह. ३।५।२१

अद्धालुर्मुक्तिमार्गेषु वेदान्तज्ञान-

लिप्सया । उपायनकरो भूत्वा

गुरुं ब्रह्मविदं ब्रजेत्

ना. प. ३।२३

अद्धावन्तोऽनसूयन्तः

म. गी. ३।३१

अद्धावाननसूयश्च

म. गी. १८।७१

अद्धावान् भजते यो मां

म. गी. ६।४७

अद्धावौल्लभते ज्ञानं

म. गी. ४।३९

अद्धाविरहितं यज्ञं

म. गी. १७।१३

अद्धा सत्यं ब्रह्मचर्यं विधिश्च

मुंड. २।१।७

अद्धासत्यो महत्त्वान् तपसो वरिष्ठाः

महाना. १७।१४

अद्धां भगवो विजिज्ञासे

छांदो. ७।१९।१

अमणोऽमणस्तापसोऽतापसो-

ऽनन्वागतं पुण्येनात्नन्वागतं

पापेन तीर्णो हि तदा

सर्वान्छोकान्द्वयस्य भवति

बृह. ४।३।२९

अवणकीर्तनस्मरणवन्दनसेवनाप-

करणदास्यभावेनात्मसमर्पणम्

सामर. ३

अवणामनननिर्विचिकित्सेऽयं वस्तु-

न्येकतानवतया चेतःस्वापनं

निविज्यासनं भवति

पैङ्गलो. ३।२

अवणं चिन्तनं सेवा चक्रत्यकरणं

तथा । असत्कृत्यपरित्यागो

उपायान्तरवर्जनम् ॥ ...

आनुशंस्यं सतां छन्नः पारमै-

कान्त्यहेतवः

भवसं. ५।१३

अवर्णं तु गुरोः पूर्वं मननं तदन्-

न्तरम् । निदिध्यासनमित्ये-

तत्पूर्णवैयस्य कारणम्

छ. प. ३।१३

श्रवणं नास्ति मे सिद्धैर्मननं च
चिदात्मनि ते. बि. ३।४६
श्रवणाङ्गुष्ठयोगेनान्तर्हृदयाकाश-
मैत्रा. ६।२२
श्रवणादेवं प्रतिपद्यन्ते २ प्रणवो. १७
श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः
कठो. २।७
शृण्वन्तोऽपि बहवो यं न विद्युः
चिन्त्यु. ३।१
श्राद्धकर्ता परश्राद्धं यत्तु भुञ्जीत
लोचुपः । नष्टं भवति तच्छ्राद्धं
रौरवं नरकं व्रजेत् इतिहा. ४१
श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा च अध्वानं
योऽधिगच्छति । पितरस्तस्य
तन्मासं भवन्ते पोऽभोजनाः इतिहा. ३४
श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा च भार-
मुद्रहते द्विजः । पितरस्तस्य
तन्मासं भवन्ते भारपीडिताः इतिहा. ३३
श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा च सङ्गमं
न समाचरेत् । पितरस्तस्य
तन्मासं भवन्ते रेतभोजनाः इतिहा. ३०
श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा च सपङ्क्तिः
सहभोजनम् । षण्मासान्पितरो-
ऽभन्ति कर्तुं चच्छिष्टभोजनम् इतिहा. ३१
श्राद्धं भुक्त्वा पुनः श्राद्धं भुञ्जीया-
लोभमोहितः । नष्टं भवति
तच्छ्राद्धं रौरवं नरकं व्रजेत् इतिहा. ३२
श्राद्धे सप्त पवित्राणि दौहित्रः
कुतपस्तिलाः (चच्छिष्टं
शिषनिर्माल्यं वमनं मृतकपेटम्) इतिहा. ५६
श्राभ्यस्येव वाक्, श्राभ्यति चक्षुः,
श्राभ्यति श्रोत्रम्.. बृह. १।५।२१
श्रियं च लक्ष्मीं च पुष्टिं च कीर्तिं
चानुपयताम् महाना. १४।५
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीमां देवी-
जुषताम् [श्रीसू. ३ क.खि.५।८७।३
श्रियं लक्ष्मीमौपलामम्बिकां गां
पत्नीं च यामिन्द्रसेनेत्युदाहु-
स्तां विद्यां ब्रह्मयोगिं सरुपा-
मिहायुवे श्रवणं प्रपद्ये नृ. पू. ३।४

श्रियं वासय मे कुले मातरं
पद्ममालिनीम् [श्रीसू. ११+क. खि. ५।८७।११
श्रिया देयम् । द्विधा देयम् ।
श्रिया देयम् । संविदा देयम् तैत्ति. १।११।३
श्रिया हेवाऽभिषिच्यते सूर्यता. ३।१
[+नृ. पू. १।३+४।३
श्रीकृष्ण रुक्मिणीकान्त गोपी-
जनमनोहर । संसारसागरे मग्नं
मामुद्धर जगद्गुरो गो. पू. ४।१४
श्रीकृष्णाख्यं परं ब्रह्म गोपिकाः
श्रुतयोऽभवन् । एतत्सम्भोग-
सम्भूतं चन्दनं गोपिचन्दनम् गोपीचं. २९
(ॐ) श्रीकृष्णाय गोविंदाय
गोपीजनवल्लभाय ॐ तत्सद्गू-
र्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः गोपालो. ३।३
(ॐ) श्रीकृष्णाय देवकीनन्द-
नाय ॐ तत्सद्गूर्भुवः सुवस्तस्मै
वै नमो नमः गोपालो. ३।९
(ॐ) श्रीकृष्णाय रामाय ॐ
तत्सद्गूर्भुवः सुवस्तस्मै वै
नमो नमः गोपालो. ३।७
(ॐ) श्रीकृष्णायान्द्रिक्दाय
ॐ तत्सद्गूर्भुवः सुवस्तस्मै
वै नमो नमः गोपालो. ३।५
श्रीकृष्णे भगवान् नारायणः
परमात्मा पुरुषोत्तमः त्रिगुण-
रहितः स्वयम् वि. सि. ३
श्रीकृष्णो वै परमं देवतम् गो. पू. १।१
श्रीगणपतेरेनं मन्त्रराजमन्योन्या-
भावात् प्रणवरूपस्यास्य पर-
मात्मनोऽङ्गानि जानीते, स
जानाति ग. शो. ५।१
(ॐ) श्रीगुरुः सर्वकारणभूता शक्तिः
भावनो. २
श्रीचूर्णं श्रीकरं दिव्यं श्रियश्चाङ्गे
समुद्भवम् । पुण्ड्रं च यस्य मध्ये
तु धार्यं मोक्षार्थिभिः स्मृतम् ऊर्ध्वपुं. ४
(ॐ) श्रीगोपालाय निजस्व-
रूपाय ॐ तत्सद्गूर्भुवः
सुवस्तस्मै वै नमो नमः गोपालो. ३।११

श्रीतुलस्यै विद्महे विष्णुप्रियायै
धीमहि । तन्नो अमृता प्रचोदयात् तुलस्यु. ३
श्रीतुलस्यै स्वाहा विष्णुप्रियायै
स्वाहा । अमृतायै स्वाहा तुलस्यु. २
श्रीदेवी त्रिविधं रूपं कृत्वा भग-
वत्सङ्कल्पानुगुण्येन लोक-
रक्षणार्थं रूपं धारयति सीतो. ९
श्रीपरमधाम्ने स्वस्ति चिरा-
युष्योन्नम इति स्कन्दो. १३
श्रीपर्वतं शिरस्थाने केदारं तु
ललाटके । वाराणसी महाप्राज्ञ
भ्रुवोवर्णस्य मध्यमे जा. द. ४।४८
श्रीभूमिर्नीलात्मिका भद्ररूपिणी
प्रभावरूपिणी सोमसूर्याभिरूपा
भवति सीतो. ८
श्रीमत्पुरुषसुक्तार्थं पूर्णानन्दकले-
वरम् । पुरुषोत्तमविरूपात् परं
ब्रह्म भवान्यहम् सुद्रलो. शीर्षकं
श्रीमदूर्जितमेव वा भ. गी. १०।४१
श्रीमन्नारायणचरणौ शरणं प्रपद्ये त्रि. म. ना. ७।१०
श्रीमन्नारायणाकारमष्टाक्षर-
महाशयम् । स्वमात्रानुभा-
त्सिद्धमात्मबोधं हरिं भजे आत्मप्र. शीर्षकं
श्रीमन्नारायणाष्टाक्षरानुस्मरणेन
गायत्र्याः शतसहस्रं जप्तं भवति वारसा. ३।९
श्रीमन्नारायणे मय्यचला भक्तिश्च
भवति वासुदे. १७
श्रीमन्नारायणो ज्योतिरात्मा
नारायणः परः । नारायणपरं
ब्रह्म नारायण नमोऽस्तु ते त्रि. म. ना. ७।११
श्रीमहालक्ष्म्यै नम इति ना. पू. ता. २।१
सप्तक्षरौ मन्त्रः ना. पू. ता. २।१
श्रीमहाविष्णवे तुभ्यं नमो
नारायणाय च । गोविन्दाय
च रुद्राय हरये ब्रह्मरूपिणे ना. पू. ता. ३।४
श्रीमानजो धीमाननिर्देशयः
सर्वसृक् सर्वस्यात्मा मैत्रा. ७।१
श्रीरामचन्द्रसेवक ॐ ह्रां ह्रां ह्रां
आलय आलय लाङ्गलो. ८

श्रीरामतापिनीयार्थं भक्त्येयकले-
वरम् । विकलेवरकैवल्यं
श्रीरामब्रह्म मे गतिः रा. पू. शीर्षकं
श्रीरामतारकपरब्रह्मविश्वरूप-
दर्शन.. स्थलजलाग्निमर्ममेदिन्
सर्वशत्रून् छिन्धि छिन्धि लांगूलो. ३
श्रीरामसन्निधौ मौनी मन्त्रार्थमनु-
भिनितयन् । व्याघ्रचर्मासने
स्थित्वा स्वस्तिकाद्यासनक्रमात् ॥
...अभ्यर्च्य वैष्णवे पीठे जपे-
दक्षरलक्षकम् रामर. ४।५
श्रीरामसन्निध्यवशाज्जगदा(नन्द)
धारकारिणी । उत्पत्तिस्थिति-
संहारकारिणी सर्वदेहिनाम् ॥
सीता भगवती ज्ञेया मूल-
प्रकृतिसंज्ञिता [सीतो. ४+ रामो. १।५, ६
श्रीरामस्य मनुं काश्यां जजाप
वृषभध्वजः रामो. ता. ३।४
श्रीरामः शरणं मम (अष्टारमन्त्रः) रामर. २।३८
श्रीरामः सामात्मकोऽपि अकारः ।
श्रीकृष्णः अर्धमात्रात्मकोऽपि राघो. २।२
श्रीरामो ब्रह्म तारकम् रामर. १।६
श्रीरिति लक्ष्मीरिति लक्ष्यमाणा
भगवतीति विज्ञायते सीतो. ९
श्रीमे भजतु, अलक्ष्मीमे नश्यतु
श्रीर्ह वा एषां कीणां यन्मलो-
द्वासाः, तस्मान्मलोद्वाससं महाना. ५।८
यशस्विनीमभिक्रम्योपमंत्रयेत्
श्रीलक्ष्मीर्वरदा विष्णुपत्नी वसुप्रदा
हिरण्यरूपा बृह. ६।४।६
श्रीवत्सकौस्तुभवनमालाङ्कित-
वक्षसं...निरतिशयाद्वैतपरमा-
नन्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत् त्रि. म. ना. ७।१४
श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं मुक्तामणि-
विभूषितम् । ...एवं ध्यायेन्म-
हाविष्णुमेवं वा विनयान्वितः
श्रीवत्सलस्य स्वरूपं तु वर्तते
लाङ्कनैः सह । श्रीवत्सलक्षणं
तस्मात्कथ्यते ब्रह्मवादिभिः
गोपालो. २।२७

श्रीविष्णु सर्वेश्वरं भजन्ति	ग्रन्थोप. १	श्रुतो विस्तरशो मया	भ. गी. ११२
श्रीवैष्णवा भुवनमाशु पवित्रयन्ति	सुदर्श. १३	श्रुत्याचार्योपदेशेन मुनयो यत्पदं	
श्रीं लक्ष्मींश्च पुष्टिश्च कीर्तिं		ययुः । तत्त्वानुभूतिसंसिद्धं	
चानृण्यतां ब्रह्मण्यं बहुपुत्रताम् ।		स्वमात्रं ब्रह्म भावये	मैत्रे. शीर्षकं
अद्वामेधे प्रज्ञा तु जातवेदः		श्रुत्या यदुक्तं परमार्थमेव तत्संशयो	
सन्वदातु स्वाहा	महाना. १४६	नात्र ततः समस्तम् । श्रुत्या	
श्रीसखि त्वं सदानन्दे मुकुन्दस्य		विरोधे न भवेत्प्रमाणं भवेद्-	
सदा प्रिये । वरदाभयहस्ताभ्यां		नर्थाय विनाप्रमाणम्	त्र. वि. ३२
मां विलोकय दुर्लभे !	तुलस्यु. ५	श्रुत्युत्पन्नात्मविज्ञानप्रदीपो बाध्यते	
श्रीसरस्वतिरूपा पदक्रममन्त्र-		कथम् । अनात्मतां परित्यज्य..	वराहो. २४९
ब्राह्मणकल्पशरीरा सावित्री		श्रुत्वा दृष्ट्वा न कम्पेत शोकहर्षौ	
गोत्रे ब्रह्मदेया भवति	सन्ध्यो. २३	त्यजेद्यतिः	नां. प. ४१०
श्री पावका नः सरस्वती वाजे-		श्रुत्वाऽन्येभ्य उपासते	भ. गी. १३२६
मिर्वाजिनीवती । यज्ञं बहु		श्रुत्वाऽप्येनं वेद न चैव कश्चित्	भ. गी. २२९
धिया वसु [सरस्व. १०४	ऋ.मं. ११३१०	श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च भुक्त्वा च दृष्ट्वा	
श्री श्री सोऽहमर्कमहमहं ज्योतिरहं		घ्रात्वा च यो नरः । न हृष्यति	
शिवः । आत्मज्योतिरहं शुक्रः		ग्लायतिवासविज्ञेयोजितेन्द्रियः	ना. प. ३१३९
सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम्	वनदु. १२२	श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च भुक्त्वा च दृष्ट्वा	
श्रुतं चाश्रुतं चानुभूतं चाननुभूतं		ज्ञात्वा शुभाशुभम् । न हृष्यति	
च सञ्जासच सर्वं पश्यति	प्रभो. ४१५	ग्लायति यः स शान्त इतिकथ्यते	महोप. ४३२
श्रुतं मे गोपाय [तैत्ति. १४११+	नां. प. ४१४५	श्रूयते प्रथमाभ्यासे नादो नाना-	
श्रुतं मे मा प्रहासीः	रयेत. शां.पा.	विधो महान् । वर्धमाने तथा-	
श्रुतं श्रुतमेवार्थमनुशृणोति देश-		भ्यासे श्रूयते सूक्ष्मसूक्ष्मतः	ना. वि. ३३
विशन्तरेश्च प्रत्यनुभूतं पुनः		श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ	
पुनः प्रत्यनुभवति	प्रभो. ४१५	सम्परीत्य विविनक्ति धीरः ।	
श्रुतं सर्वमसद्विद्धि वेदं सर्वम-		श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो	
सत्सत्त्वा । शास्त्रं सर्वमसद्विद्धि,		वृणीते प्रेयोमन्दोयोगक्षेमावृणीते	कठो. २।२
साहं सत्यचिदात्मकः	ते. वि. ३।५०	श्रेयस्त्वं मनसा प्राप्तं तावत्तत्त्वस्य	
श्रुतं एव मे भगवद्दृशेभ्यः		का कथा	अमन. २।५६
[छांदो. ४।९।३+	७।१३	श्रेयः परमवाप्स्यथ	भ. गी. ३।११
श्रुतिवाक्योदितं सूक्ष्मं तद्विष्णोः		श्रेयान् द्रव्यमयाद्यज्ञात्	भ. गी. ४।३३
परमं पदम्	भवसं. ३।५	श्रेयान् वस्यसोऽसानि स्वाहा	तैत्ति. १।४।५
श्रुतिप्रतिपन्ना ते	भ. गी. २।५३	श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः [भ. गी.	३।३५+१८।४७
श्रुतिशास्त्राण्यहम् । मजोऽहम्	अद्वै. भा. २	श्रेयो धीरोऽभिप्रेयसो.. (मा.पा.)	कठो. २।२
श्रुतिस्त्वितिवाचारधारणभ्यान-		श्रेयो भोक्तुं भैक्षमपीह लोके	भ. गी. २।५
कर्मणः । मुख्यया व्याख्यया		श्रेयोविज्ञाः सर्वे प्रलयं यान्ति	त्रि.म.ना. ५।४
क्याताञ्जयति श्रेष्ठमण्डितान्	अमरुप. १४	श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात्	भ. गी. १२।१३
श्रुतेर्नाविदितं शुभा	इतिहा. १६	श्रेष्ठं सर्वपातमभित्याचामति	छांदो. ५।२।७

अष्टा सर्वगता हेषा तृतीया	
भूमिकाऽत्र हि	अक्षुप. ३२
ओतव्यमेवाप्येति यः ओतव्य-	
मेवास्तमेति	सुबालो. ९।२
ओतव्यस्य श्रुतस्य च	म. गी. २।५२
ओता मन्ता द्रष्टा देष्टा घोष्टा	
विज्ञाता प्रज्ञाता । सर्वेषां	
भूतानामन्तरपुरुषः स म	
आत्मेति विद्यात्	३ ऐत. २।४।८
ओता मन्ता द्रष्टा देष्टा स्पष्टा	
घोष्टा विज्ञाता प्रज्ञाता सर्वेषां	
पुरुषाणामन्तःपुरुषः स	
आत्मा विज्ञेय इति	त्रि. ता. ५।१
ओता घ्राता रक्षयिता नेता कर्ता	
विज्ञानात्मा पुरुषः	१ आत्मो. २
ओतुर्देहिन्द्रियातीतं वस्त्वत्र	
त्वम्पदेरितम्	शु. र. ३।६
ओत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणास्तद्वृत्तयः	पेङ्गलो. २।४
ओत्रपतिर्विज्ञानपतिः, एतत्ततो	
भवति	तैत्ति. १।६।३
ओत्रमध्यात्मं शब्दश्रवणमिती-	
न्द्रियाण्यन्वभवन्	२ प्रणवो. ३
ओत्रमयः पृथ्वीमय आपोमयः	बृह. ४।४।५
ओत्रमस्मात्सर्वाञ्छब्दानभि-	
विस्तृजते	कौ. त. ३।४
ओत्रमाकाशे वायौ त्वगग्नौ चक्षु-	
रप्सु जिह्वा पृथिव्यां घ्राणमिति	शारीरको. १
ओत्रमात्मनि चाध्यस्तं स्वयं	
पशुपतिः पुमान् । अनुप्रविश्य	
ओत्रस्य वदाति ओत्रतां शिवः	पा. ब्र. १६
ओत्रमुक्कामवृक्षपञ्चमन्त्रिजनास्तेव	१ ऐत. १।४।४
ओत्रमुद्गीयमुपासाञ्चकिरे तद्वा-	
सुराः पाप्मना विविधुः	छांदो. १।२।५
(अथ ह) ओत्रमूचुस्त्वं न वद्वायेति	
तथेति तेभ्यः ओत्रमुवगायथः	
ओत्रे ओगस्तं देवेभ्य आगायत्	बृह. १।३।५
ओत्रमेव ब्रह्मण्यनुर्थः पादः	छांदो. ३।१८।६
ओत्रमेवाप्येति यः ओत्रमेवास्तमेति	सुबालो. ९।२

ओत्रमेवायतनमाकाशः प्रतिष्ठानन्त	
इत्येनदुपासीत	बृह. ४।१।५
ओत्रमेवास्या एकमङ्गमुद्वं, तस्य	
शब्दः परस्तात्प्रतिविहिता	
भूतमात्रा	कौ. त. ३।५
ओत्रयोः शब्दग्रहणं, जिह्वायाः....	ना. प. ६।३
ओत्रस्य ओत्रं मनसो मनो यद्वा-	
चो ह वाच२ स उ प्राणस्य	
प्राणश्चक्षुश्चक्षुरतिमुच्य धीराः	
प्रत्यास्मालोकादमृता भवन्ति	केनो. १।२
ओत्रस्य ओत्रं मनसो ये मनो विदुः	बृह. ४।४।१८
ओत्रं चक्षुः स्पर्शनं च	म. गी. १।५।९
ओत्रं च ओतव्यं च नारायणः	सुबालो. ६।१
ओत्रं ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा	कौ. त. २।४
ओत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका	
चैव पञ्चमम्	दुर्वासो. २।१३
ओत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा घ्राणं चैव	
तु पञ्चमम् (षोडश विकाराः)	शारीरको. १३
ओत्रं देव२ ओत्रेण हि तच्छृणोति	बृह. १।४।१७
ओत्रं नाम देवतावरोधिनी सा मे-	
ऽसुष्मादिदमवरुन्वां तस्यैवस्नाहा	कौ. त. २।३
ओत्रं परस्तान्मन आरुन्धे	कौ. त. २।२
ओत्रं प्राविशदशयदेव	१ ऐत. १।४।६
ओत्रं मे त्वयि वधानीति पिता,	
ओत्रं ते मयि वध इति पुत्रः	कौ. त. २।१५
ओत्रं लोको मनो ज्योतिः, यो..	
पुरुषं विद्यात्...	बृह. ३।१।१३
ओत्रं वाव सम्पत्	छांदो. ५।१।४
ओत्रं वै प्रहः, स शब्देनातिग्रहेण	
गृहीतः ओत्रेण हि शब्दाच्छृणोति	बृह. ३।२।६
ओत्रं वै ब्रह्म	बृह. ४।१।५
ओत्रं वै सम्पत्	बृह. ६।१।४
ओत्रं वै सत्त्वाद् परमं ब्रह्म	बृह. ४।१।५
ओत्रं शृण्वत् सर्वे प्राणा अनु-	
शृण्वन्ति	कौ. त. ३।२
(वः) ओत्रं संभावयितुं संभावयितु-	
मान्भवति (प्राणस्य ब्रह्मणः)	कौ. त. २।१
ओत्रं सर्वैः शब्दैः सहाप्येति	
(पुरुषं) [कौ. त. ३।३+ ४।१९	

श्रीत्रय होचक्राम, तत्संवत्सरं प्रोष्य (आगत्य) पर्येत्योवाच...	
[छांदो. ५।१।१०+	बृह. ६।१।१०
श्रीत्रः प्रातिश्रुत्कस्तेजोमयोऽमृत- मयः पुरुषः	बृह. २।५।६
श्रीत्राक्षिकटिगुल्फप्राणगलस्फि- ग्देशेषु व्यानः सञ्चरति	शांडि. १।४।७
श्रीत्रादीनि ज्ञानेन्द्रियाणि	शारीरको. १
श्रीत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये	म. गी. ४।२६
श्रीत्रादिशः (निरभिद्यन्त)	२ ऐत. १।४
श्रीत्राद्यायुश्च प्राणश्च हृदयात्सर्व- मिदं जायते	सुबालो. १।५
श्रीत्राय स्वाहाऽऽयतनाय स्वाहे- त्यमौ हुत्वा मन्ये सः सव- मवनयति...	बृह. ६।३।२
श्रीत्रियस्य चाकामहतस्य, ते ये शतं मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रीत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतं देवगन्धर्वाणामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रीत्रियस्य...ते ये शतमाजान- जानां देवानामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रीत्रियस्य...ते ये शतं देवाना- मानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रीत्रियस्य...ते ये शतं कर्मदेवानां देवानामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रीत्रियस्य...ते ये शतं पितॄणां चिरलोकलोकानामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रीत्रियस्य...ते ये शतमिन्द्र- स्यानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रीत्रियस्य...ते ये शतं प्रजापते- रानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रीत्रियस्य...ते ये शतं बृहस्पते- रानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रीत्रियस्य क्षीरेण नोपहासमिच्छेत्	बृह. ६।४।१२
श्रीत्रियस्य...स यश्चायं पुरुषः । यश्चासावावित्ये । स एकः	तैत्ति. २।८
श्रीत्रियं प्रत्यनिष्ठं स्वगुहं गच्छे- द्यपानिधि	बृह. ३।५

श्रीत्रियान्नं न भिक्षेत अद्वाभक्ति- बहिष्कृतम् । त्रात्यस्यापि गृहे भिक्षेच्छद्वाभक्तिपुरस्कृते	१ सं.सो. २।६४
श्रीत्रे आचारौ (शारीरयज्ञस्य)	प्रा. हो. ४।२
श्रीत्रे चित्तस्य संयमाद्यम- लोकज्ञानम्	शांडि. १।७।५२
श्रीत्रेण सर्वाब्जब्दानाप्रोति	कौ. त. ३।४
श्रीत्रेण सृष्टा दिशश्च चन्द्रमाश्च	१ ऐत. १।७।५
श्रीत्रेण हि तच्छृणोति	बृह. १।४।१७
श्रीत्रेण हि शब्दाच्छृणोति	बृह. ३।२।६
श्रीत्रे तृप्यति चन्द्रमास्तृप्यति	छांदो. ५।२।०।२
श्रीत्रे पक्षसी चक्षुषी युक्ते	१ ऐत. ३।८।६
श्रीत्रे हीमे सर्वे वेदा अभिसम्पन्नाः	बृह. ६।१।४
श्रीत्र्याम्यहमिति श्रीत्रम्	बृह. १।५।२१
श्रीताश्रीतेषु धारणम् । वेदोक्त- विधिना श्रीतं तद्रहितमश्रीतम्	लङ्कोप. २
श्रीते स्मार्ते च विश्वासो यत्तदा- स्तिक्यमुच्यते	जा. द. २।६
श्रृङ्गं बलवदिन्द्रस्य	छांदो. २।२।२।१
श्लेष्मणो रसः । रसाच्छोणितम् । शोणितान्मांसम् । मांसान्मेदः । मेदसः स्नावा । स्नावोऽस्थीनि । अस्थिभ्यो मज्जा । मज्जातो रसः	निरुक्तो. १।२
श्लेष्ममूत्रपुरीषेषु दुर्गन्धे जन्म- सम्भवे । व्याधिशोकगणे घोरे ममत्वं हि शरीरके	दुर्वासो. २।८
श्लेष्मादि घनश्चयकर्म	शांडि. १।४।९
श्लोकाः सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यानानि	बृह. ४।१।२
श्रयोनि वा सूकरयोनि वा चाण्डालयोनि वा पापाचारा गच्छन्ति	छांदो. ५।१।०।७
श्वशुरान् सुहृदश्चैव	म. गी. १।२६
श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्निं चाप- राहिकम् । नहि प्रसीक्षते मृत्युः	
कुतं वाऽस्य न वा कुतस्	अथसं. १।३६
श्वनेन सागरे पीते निःशेषेण	
मनो भवेत्	ते. नि. ६।९६
श्वानो वेनहृत्पुर्वयाः सि	बृह. ३।५।२५

आसद्वयलयेनापि कूर्मवातादि-
 वायवः । न वर्तन्ते च साधूनां
 बन्धं कुर्वन्ति धातवः अमन. १।३७
 आसमात्रलयेनापि तेन प्राप्या
 हि वायवः अमन. १।३६
 आससूत्रसमोपेतमिन्द्रियालय-
 सङ्कुलम् । त्रोटयित्वा मनोजालं
 मीनवज्जायते सुखी अमन. २।८५
 आसोच्छ्वासविहीनस्तु निश्चितं मुक्त
 एव सः अमन. २।५८
 आसोच्छ्वासात्मकः प्राणः षड्वि-
 प्राणैः पलं स्मृतम् । पलैः
 षष्टिभिरेव स्याद्वटिका
 कालसन्निता अमन. १।३३
 धित्री कुष्ठी तथा चैव कुन्खी...
 एते गुणा न वक्तव्याः आद्वकर्म-
 बहिष्कृताः (ब्राह्मणाः) इति. ७२-७६
 श्वेदास्तु ब्राह्मणा ज्ञेयाः क्षत्रिया
 रक्तवर्णकाः । पीतास्तु वैश्या
 विज्ञेयाः कृष्णाः शूद्रा वृद्धाः क. जा. ९
 श्वेतकेतु-ऋषु-निदाघ-ऋषम-
 दुर्वासःसंवर्तकवृत्तात्रेयैरैवतक-
 वृद्धव्यक्तलिङ्गः ना. प. ३।८७

श्वेतकेतुर्ह वा आरुणेयः पाञ्चालानां
 परिषदमाजगाम बृह. ६।२।१
 (७२) श्वेतकेतुर्हारुणेय आस तं
 ह पितोवाच छांदो. ६।१।१
 श्वेतकेतुर्हारुणेयः पञ्चात्मना
 समितिमेयाय छांदो. ५।३।१
 श्वेतकेतो यन्नु सोम्येदं महामना
 अनूचानमानी... छांदो. ६।१।१
 श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यं, न वै
 सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य
 ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति छांदो. ६।१।१
 श्वेतमेवाप्येति, यः श्वेतमेवास्तमेति
 सुबालो. ५।१२
 श्वेतसृदेवि पापघ्ने विष्णुदेहसमुद्भवे ।
 ...धारणान्मुक्तिदा भव ऊर्ध्वपुं. ३
 श्वेतः रश्मि बोमुज्यमानम् चित्त्यु. ११।९
 श्वेतः सुरविषाणाभ्यां मुखे पुच्छे
 न पाण्डुरम् । रोहितो यस्तु
 वर्णेन स लीलो वृष उच्यते इतिहा. ९६
 श्वेतो रश्मिः परि सर्व बभूव चित्त्यु. ११।१०
 श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतव
 सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः ।
 अपि सर्व जीवितमल्पमेव त्वैव
 बाह्यस्तव तृत्तगीते कठो. १।२६

प

षट्कोणेषु तारया हंसः सोऽहमिति सूर्यता. ६।१
 षट्चक्रवासिनि वागीश्वरि
 जिह्वामे वस हंसपोढो. ५
 षट्चक्राणि परिज्ञात्वा प्रविशेत्
 सुखमण्डलं (के)
 [यो. शि. ६।७४+ योगकुं. ३।९, १२
 षट्चक्रं षोडशाधारं त्रिलक्ष्यं
 न्योमपञ्चकम् । स्वदेहे यो न
 जानाति तस्य सिद्धिः कथं भवेत् यो. च. ३
 षट्त्रिंशत् गले दध्याद्बाहोः
 षोडश षोडश (रुद्राधान्) क. जा. १६
 षट्पत्रं चक्रं भवति क. पू. ५।२

षट्शतानि दिवारात्रौ सहस्राण्येक-
 विंशतिः । एतत्सङ्ख्यान्वितं
 सन्त्रं जीवो जपति सर्वदा ॥
 अजपा नाम गायत्री योगिनां
 मोक्षदा सदा यो. च. ३२
 षट्शतान्यधिकान्यत्र सहस्राण्येक-
 विंशतिः । अहोरात्रव्रतैः
 आसेर्वायुमण्डलघाततः...
 तत्पृथ्वीमण्डले क्षीणे बलिता-
 याति देहिनाम् वराहो. ५।३.४
 षट्शक्ताणि जायन्ते पुरुषोत्तमात् सि. वि. २
 षट्सु पत्रेषु षडक्षरं सुदर्शनं भवति क. पू. ५।२०

षट्स्वरारूढेन बीजेन, षडङ्गं
 रक्ताम्बुजसंस्थितम्
 षडक्षरं वा एतत्सुदर्शनं महाचक्रं
 षडर्चोऽयं महामन्त्रः सर्व-
 सिद्धिप्रदायकः
 षडाभयमिति कस्मात् ? मधुरा-
 म्ललवणतिकतकटुकषाय-
 रसान्विन्दतीति
 षड्भूमिरहितः षड्भावविकारशून्यः
 सत्यवाक्...गिरिकन्दरेषु
 वसेदेक एव द्वौ वा चरेत्
 ग्रामं त्रिभिर्नगरं चतुर्भिर्ग्राम-
 मित्येकश्चरेत्
 षड्भूमिषड्भावेत्यादिसर्वदोषरहितं...
 करतलामलकवत्साक्षादपरोक्षी-
 कृत्य कृतार्थतया कामरागादि-
 दोषरहितः...एवमुक्तलक्षणो
 यः स एव ब्राह्मण इति
 षड्ज-ऋषभ-गान्धार-मध्यम-
 पञ्चम-धैवतनिषादाश्चेतीष्टा-
 निष्ट-शब्दसंज्ञाः प्रणिधाना-
 द्वाविधा भवन्ति
 षड्जमध्यमसंवाद्या वेदान्
 गायन्ति सामगाः
 षड्जोऋषभगान्धारौ मध्यमः पञ्चम-
 स्तथा । धैवतोऽथ निषादश्च
 स्वराः सप्त प्रकीर्तिताः
 षड्भावविकृतिश्चास्ति जायते
 वधैतेऽपि च । परिणामं क्षयं
 नाशं षड्भावविकृतिं विदुः
 षड्भूमिष्वस्तु पुक्तस्य नित्यमुक्तस्य
 वैदिनः । अनन्तः परमो गुह्यः
 सम्ययोगः प्रवर्तते
 षड्भिः संवत्सरेभूमेरखण्डं लय-
 संस्थितः । वायुतत्त्वस्य सिद्धिः
 स्याद्वायुतत्त्वमयो भवेत्
 षड्भूमिकाचिराभ्यासाद्देवस्यानु-
 पलम्भनात् । यत्स्वभावैक-
 निष्ठत्वं सा ज्ञेया सूर्येणा गतिः

सूर्यो. २
 नृ. पू. ५१२

सूर्यता. २।४

गर्भो. १

ना. प. ७।२

व. सु. उ. ९

गर्भो. १

गान्धर्वो. ७

गान्धर्वो. ३

वराहो. १।८

मैत्रे. ६।२८

अमन. १।७७

वराहो. २।१०

षट्स्वैव परित्यक्तः स्वाश्रमोक्त-
 विधिं चरन् । वंनितादिषु वा-
 कर्ममनोभिर्निःस्पृहः शुचिः
 षड्भ्रात्रविलयेनापि महाशुद्धिः
 प्ररोहति
 षड्भ्रात्रीर्दीक्षितो भवति
 षड्भक्तमपि रुद्राक्षं कार्तिकेयाधि-
 देवतम् । तद्धारणान्महाश्रीः
 स्यान्महदारोग्यमुत्तमम्
 षड्वा ऋतवः, ऋतुभिः सम्मितंभवति
 षड्वा ऋतवः संवत्सरः
 षड्वान्तराणि बलयानि भवन्ति
 षड्विकारविहीनोऽस्मि षट्दोष-
 रहितोऽस्म्यहम्
 षड्विंशकश्च पुरुषः पेशुरङ्गः
 शिवागमे । सप्तविंश इति
 प्रोक्तः शिवः सर्वजगत्पतिः
 षड्विंशको महाविष्णुः सदा
 द्रष्टा भवति
 षड्विंशदङ्गुलिर्हंसः प्रयाणं कुरुते
 बहिः । वामदक्षिणमार्गेण
 प्राणायामो विधीयते
 षड्विंशः परमात्माऽहमिति निश्चया-
 न्मुक्तो भवति
 षड्वै नारसिंहानि चक्राणि भवन्ति
 षड्वै बाह्यानि बलयानि भवन्ति
 षड्वै मध्यमानि बलयानि भवन्ति
 षड्वै लोकाः षड्वा ऋतवो भवन्ति
 षण्डोऽथ विकलोऽप्यन्धो बालक-
 श्चापि पातकी । पतितश्च परहारी
 वैखानसहरद्विजो॥...एते नार्हन्ति
 सङ्ख्यासमातुरेण विना क्रमम्
 षण्णवतितस्वतन्तुवद्यत्तं चित्सूत्र-
 त्रयचिन्मयलक्षणं चिद्वन्धि-
 बन्धनम्
 षण्णां योगे षोढा भवेत्
 (जय) षण्डः पतितोऽङ्गविकलः
 कौणो वधिरोऽर्भको मूकः
 पाण्डवश्च लङ्घी (कुष्ठी)

रामर. ४।२

अमन. १।५६

सहवै. १२

रु. जा. २९

नृ. पू. ५१२

सहवै. १२

नृ. षट्च. ४

मैत्रे. ३।१८

शिवो. १।१४

सामर. १०१

यो. चू. ९३

मं. ब्रा. १।५

नृ. षट्च. १

नृ. षट्च. ६

नृ. षट्च. ५

ग. पू. ३।१

ना. पे. ३।३

पा. ज. ३

षोढोप. २

वैज्ञानसहरद्विजौ भृतका-
भ्यापकः शिपिविष्टोऽनग्निको
(नास्तिको) वैराग्यवन्तोऽप्येते
न सञ्ज्यासाहर्हिः [ना.प. ३।१+

१ सं.सो. २।३

षण्मासमभ्यसेन्मृत्युं जयत्येव न
संशयः
षण्मासा उत्तरायणम्
षण्मासा दक्षिणायनम्
षष्ठभूम्यां विहरन्ब्रह्मविद्वरीया-
न्भवति

यो.शि. १।१०९

म. गी. ८।२४

म. गी. ८।२५

बराहो. ४।१

ना.पू.ता. १।१

षष्ठश्चन्द्रमा भवति

षष्ठं च तालुकाचक्रं घण्टिकास्थान-
मुच्यते । दशमद्वारमार्गं तद्वा-
जदन्तं च तज्जगुः । तत्र शून्ये
लयंकृत्वा मुक्तो भवति निश्चितम्

योगरा. १३

षष्ठं सप्तममथ बह्विधारथिमस्या
मूलत्रिकमा(दि)वेशयन्तः । कथ्यं
कविं कल्पकं काममीशं तुष्टु-
बांसो असृतत्वं भजन्ति

त्रिपुरामहो. ९

षष्टिं कुलान्यतीतानि षष्टिमागा-
मिकानि च । कुलान्युद्धरते

प्राज्ञः सञ्ज्यस्तमिति यो नवेत्

१ सं. सो. २।७

षष्ठीं च यामिन्द्रसेनेत्युत

आहुस्तां विधां...

ग. पू. ता. २।३

(७३) षष्ठे आत्मान्नायः

परमारमा मठः

मठान्ना. ८

षष्ठेन कृतपिण्डेन हृत्कण्ठं

तालु जायते

पिण्डो. ६

षष्ठे मासे मुखनासिकाक्षिभोत्राणि
भवन्ति

गर्भो. ३

षष्ठे मुखनासिकाक्षिभोत्रं च

सम्भवति

निरुक्तो. १।४

षष्ठेऽमृतनिषेवणम्

हंसो. ९

षष्ठ्यामिन्द्रस्य सायुज्यं सप्तम्यां

वैष्णवं पदम्

ना. वि. १९

षष्ठ्यां भूमावसौ स्थित्वा सप्तमीं

भूमिमाप्नुयात्

अभ्युप. ४३

षोडशकलं मारद्वाजः पुरुषं वेत्त्य...

प्रश्नो. ६।१

(इति) षोडशकलावृतस्य

ब्रह्मण आवरण...

कलिसं. ५

षोडशकलो वै पुरुषः

ग. पू. ३।१

षोडशकलो वै पुरुषः, पुरुष

एवेदं सर्वं

नृ. पू. ५।६

षोडशका(क)लः सोम्य पुरुषः

पञ्चदशाहानि माशीः

काममपः पिब

छांदो. ६।७।१

षोडशदले अग्ने चन्द्रावती

राधोप. १।५

षोडशमात्राश्चतुःषष्टिमेदमेत्य...

एकोऽपि ब्रह्मप्रणवः

तुरीयो. २

षोडशवपापलानि, नवज्ञायुशतानि

निरुक्तो. २।१

षोडशसु पत्रेषु मातृकाद्याः स-

विन्दुकाः षोडशस्वरा भवन्ति

नृ. पू. ५।७

षोडशहलतूर्यस्वरविन्दुमेहनरूपा

वारोप. २

षोडशं वर्षशतं जीवति

छांदो. ३।१६।७

(अथ) षोडशारं षोडशपत्रं

चक्रं भवति

नृ. पू. ५।५

षोडशारे दिक्पादाः सायुधाः

ग. पू. ३।१०

षोडशी(मात्रा) पुनश्चतुष्षष्टिमात्रा

ना. प. ८।४

षोडाकपो भवेत्

गुणषोडा. १

स

स अणुर्भवति । स कन्धो भवति

गणेशो. २।२

स आगच्छति मुहूर्तान्येष्टिहांस्ते-

ऽस्मादपद्रवन्ति

कौ. त. १।४

स आगच्छति विचक्षणामासन्दी

कौ. त. १।५

स आगच्छति विरजां नदीं तां

मनसैवात्स्येति

कौ. त. १।४

स आगच्छति विभुप्रमितं ब्रह्म-

यशः प्रविशति

कौ. त. १।५

स आगच्छति सालज्यं संस्थानं

तं ब्रह्मरसः प्रविशति

कौ. त. १।५

स आगच्छतीन्द्रप्रजापती द्वारगोपौ

तावस्मादपद्रवतः

कौ. त. १।५

स आगच्छति तिल्यं वृक्षं तं	
ब्रह्मगन्धः प्रविशति	कौ. त. १।५
स आगच्छत्यारं ह्रदं	
तन्मनसाऽत्येति	कौ. त. १।४
स आजगाम गौसमोयत्रप्रवाहणस्य	
जैबलेरास	बृह. ६।२।४
स आजगाम जैबलिं प्रवाहणं	
परिचारयमाणं...	बृह. ६।२।१
स आत्मन्येवात्मानं परंब्रह्म पश्यति	नृसिंहो. ६।३
स आत्मा तत्त्वमसि [छांदो.	६।८।७+९।४+
[१०।३+११।३+१२।३+	१३।३+१४।३
[+१५।३+१६।३	
स आत्मानमभिध्यायन् बह्वीः	
प्रजां अस्तृजत्	मैत्रा. २।६
स आत्मा परमेश्वरः	महो. ४।११८
स आत्मा प्रजापतेः सभां वैश्वं	
प्रपद्ये यशोऽहं भवामि	छांदो. ८।१।१
स आत्मा स विज्ञेय ईश्वरमास-	
स्तुरीयः	नृसिंहो. १।६
स आत्मा स विज्ञेयः [माण्डू. ७+८. पू. ४।२	रामो. २।४
स आत्मा विज्ञेयः	गणेशो. ५।७
स आदित्यस्तदेतदोजोऽनाद्यमि-	
त्युपासीत	छांदो. ३।१३।१
स आदित्यः स वैश्वदेवः	
सामाभिगायति	छां. २।२४।११
स आदित्यः कस्मिन्प्रतिष्ठित	
इति चक्षुषीति	बृह. ३।९।२०
स आदित्येन चक्षुषा भाति	
न तपति च	छांदो. ३।१८।५
स आदित्यो निष्णुश्चेश्वरश्च	ब्रह्मो. ३
स आदिनारायणोऽहमेव	त्रि.म.ना. ८।६
स आद्यः सोऽक्षरः सोऽनन्तः	
सोऽव्ययो महान्पुरुषः	गणेशो. २।४
स आपः प्रदुषे चमे इमे अन्त-	
रिष्वमथो सुवः	महाना. १।९
स आप्तोर्यामेण सर्वैः क्रतुमिर्यजते	ग. शो. ५।३
स आयुर्यशः कीर्तिमानैश्वर्यवान्भवति	नृ. पू. १।३
स आहाराशमिति तत्सत्यं भवति	बृह. ४।१।४

स इतः प्रयजेव पुनर्जायते तस्य	
तृतीयं जन्म	२ ऐत. ४।४
स इत्येकमक्षरं, तीत्येकमक्षरं,	
यमित्येकमक्षरं, प्रथमोत्तरेऽक्षरे	
सत्यं मध्यतोऽनन्तं तदेतदमृत-	
मुभयतः सत्येन परिगृहीतः	
सत्यभूयमेव भवति	बृह. ५।५।१
स इत्येकमेव परं ब्रह्म विभ्राजते	
निर्वाणम्	त्रि. ता. ५।१
स इदं विश्वं भुवनं विचष्टे	३ ऐत. १।६।७
स इदं सर्वमभ्यपत्रयत यदिदं किञ्च	१ ऐत. २।२।४
स इदं सर्वं पाप्मनो त्रायते	
यदिदं किञ्च	१ ऐत. २।१।६
स इदं सर्वमभिप्रागाद्यदिदं किञ्च	१ ऐत. २।२।३
स इदं सर्वं भवति	बृह. १।४।१०
स इदं सर्वं मध्यतो दूषे	
यदिदं किञ्च	१ ऐत. २।१।२
स इदं सर्वं स मे ददातु	चित्यु. ७।४
स इदित्था बोभवीदाशय्यै	वा. मं. १८
स इदेवो ऋतमन्व (?त्य) यन्तं	
प्रभीमकर्मातपसोऽपविद्धात्	वा. मं. ४
स इन्द्रः स इन्दुः स सूर्यः स	
वायुः सोऽग्निः स ब्रह्मा	
अयम् (गणेशः)	गणेशो. २।१
स इममेवात्मानं द्वेषाऽपातयत्...	बृह. १।४।३
स इमाँल्लोकानस्तृजत (परमात्मा)	२ ऐत. १।२
स इरामयो यद्वीरामयस्तस्मा-	
द्विरण्मयः	१ ऐत. १।३।१
स इह कीटो वा पतङ्गो वा शकुनि-	
र्वा शार्दूलो वा सिंहो वा मत्स्यो	
वा परः श्वा पुरुषो वाऽन्यो	
वैतेषु स्थानेषु प्रत्याजायते...	कौ. त. १।२
स ईक्षत कतरेण प्रपद्या इति	२ ऐत. ३।११
स ईक्षत कथं निवदं मदृते स्यादिति	२ ऐत. ३।११
स ईक्षत यदि वाचाऽभिव्याहृतं	
यदि प्राणेनाभिप्राणितं...यदि	
शिमेन विसृष्टमथ कोऽहमिति	२ ऐत. ३।११
स ईक्षत लोकान् सृजा इति	२ ऐत. ३।१

स ईक्षतेमे नु लोका लोक-	
पात्राणु सृजा इति	२ ऐत. १।३
स ईक्षतेमे नु लोकाश्च लोक-	
पात्राश्चान्नमेभ्यः सृजा इति	२ ऐत. १।३
स ईक्षांचक्रे यस्मिन्नहमुत्क्रान्त	
उत्क्रान्तो भविष्यामि	प्रश्नो. ६।३
स ईयतेऽमृतो यत्र कामः	
हिरण्यः पुरुष एकहः सः	बृह. ४।३।१२
स ईश्वरो भवति	गणेशो. ५।८
स ई पाहि य ऋजीषी (तरुत्रः)	
तरुद्रः स अग्र्यं लक्ष्मीमौपला-	
मन्बिकां गाम् । षष्ठीं च या-	
मिन्द्रसेनेत्युदाहुस्तां विद्यां	
ब्रह्मयोनिस्वरूपाम् [नृ.पू.३।४+	ग. पू. २।३
स उक्थेन यजते	नृ. पू. ९।१४
स उच्छ्रयत्याध्मायत्यात्मातो	
मृतः शेते	बृह. ३।२।११
स उक्तामन् क्रियमाणः पाप्मनो	
विजहाति	बृह. ४।३।८
स उत्तमः पुरुषः	छांदो. ८।१२।३
स उद्गाता, स मुक्तिः,	
साऽतिमुक्तिः	बृह. ३।१।५
स उद्गीथः प्रति स्त्री सह शेते	छांदो. २।१३।१
स उद्गीथोऽङ्गारा भवन्ति	छांदो. २।१२।१
स उद्गीथो विद्योतते, स्तनयति स	
प्रतिहारः [छांदो. २।३।१+	२।१५।१
स उपपातकमहापातकेभ्यः पूतो	
भवति	ना.उ.ता. ३।१
स उ प्राणस्य प्राणः	केनो. १।२
स उस्त्रावृतो गर्भो दश वा नव	
वा मासान्तः शयित्वा यावद्वा-	
ऽव जायते	छांदो. ९।९।१
स उ ह तूष्णीमेव शिक्ष्ये, तत उ	
हेनं यष्टया निचिक्षेप	कौ. व. ४।१८
स ऊर्जमुपजीवतीति प्रशः सा	बृह. १।५।२
स ऊर्जमुपजीवतीति श्लोकाः	बृह. १।५।१
स ऋग्भिर्ऋग्वेदो ब्रह्म वसवो	
गायत्री गार्हपत्यः सा प्रथमः	
पादो भवति	नृसिंहो. ३।२

स ऋग्भिर्ऋग्वेदो ब्रह्म वसवो	
गायत्री गार्हपत्यः सा साप्ताः	
प्रथमो पादो भवति	नृ. पू. २।१
स ऋचोऽधीते स यज्यंयधीते स	
सामान्यधीते सोऽथर्वणमधीते	नृ. पू. ५।१५
स एक आजानजानां देवाना-	
मानन्दः	तैत्ति. २।८
स एक आजानदेवानामानन्दः	बृह. ४।३।३३
स एक इन्द्रस्यानन्दः	तैत्ति. २।८
स एक एव वरोहवैद्वितनुर्नारायणो-	
ऽखिलब्रह्माण्डाधिपतिरेकः	राधिको. ३
स एकधा भवति, त्रिधा भवति	छांदो. ७।२३।२
स एकः कर्मदेवानामानन्दः	
ये कर्मणा देवत्वमभिसम्पद्यन्ते	बृह. ४।३।३३
स एकः पञ्चविंशतिः पुरुषः	महो. १।२
स एकः कर्मदेवानां देवाना-	
मानन्दः	तैत्ति. २।८
स एकः पितॄणां चिरलोकलोका-	
नामानन्दः	तैत्ति. २।८
स एकः पितॄणां जितलोकाना-	
मानन्दः	बृह. ४।३।३३
स एकः प्रजापतिलोक आनन्दः	बृह. ४।३।३३
स एकः प्रजापतेरानन्दः	तैत्ति. २।८
स एकः श्रेष्ठश्च सर्वशास्ता स एव	
वरिष्ठश्च	शरभो. ५
स एकः स य एवंविद्	तैत्ति. २।८
स एकाकी नर एव	चतुर्वे. १
स एकाकी न रमते	महो. १।१
स एकैकः साधारः साधिष्ठानो	
नाधिष्ठानः कं कं कस्मै पदे पदे	
पातः पादाय पादिते स्वाहा	पारमा. ५।१०
स एको गन्धर्वलोक आनन्दः	बृह. ४।३।३३
स एको देवगन्धर्वाणामानन्दः	तैत्ति. २।८
स एको देवः शिवरूपो दुर्यत्वेन	
विकासते	त्रि. वा. १।५
स एको देवानामानन्दः	तैत्ति. २।८
स एको बृहस्पतेरानन्दः	तैत्ति. २।८
स एको ब्रह्मण आनन्दः	तैत्ति. २।८
स एको ब्रह्मलोक आनन्दः	बृह. ४।३।३३

स एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः	तैत्ति. २।८	बृहदभेर्नचो वायोर्यजूंश्च	
स एको मानुष आनन्दः	तैत्ति. २।८	सामान्यादित्यात्	छांदो. ४।१७।२
स एको रुद्रो ध्येयः सर्वेषां		स एतास्तेजोमात्राः समभ्याददानः	बृह. ४।४।१
सर्वसिद्धये	शरभो. ८	स एतां त्रयीं विशामभ्यतपत्तस्या-	
स एतदेव रूपमभिसंविशत्ये-		स्तप्यमानाया रसान्प्राबृहद्भूरि-	
तस्माद्रूपादुदेति	छांदो. ३।७।३	त्युग्भ्यो भुवरिति यजुर्भ्यः	
[+८।३+९।३+१०।३		स्वरिति सामभ्यः	छांदो. ४।१७।३
स एतमानुष्टुभं मंत्रराजमपश्यत्	ग. पू. १।६	स एतेन प्रज्ञाने-(प्रज्ञे-)नात्मना-	
स एतमानुष्टुभं षट्पदं मन्त्रराजं	ग. पू. १।११	स्माल्लोकादुत्क्रभ्यामुष्मिन्	
कथयाञ्चक्रे		स्वर्गेलोके सर्वान्कामानाप्त्वा-	
स एतमेव पुरुषं ब्रह्म तत्तममपश्य-	२ ऐत. ३।१३	ऽमृतः समभवत् [२ऐत. ५।४+	आ. प्र. १
दिदमदर्शमिति		स एतेन रूपेण सर्वां दिशो	
स एतमेव सीमानं विदार्यैनया	२ ऐत. ३।१२	विष्टोऽस्मि	१ ऐत. २।३।४
द्वारा प्रापद्यत्		स एतेभ्यो भगवान्नीललोहितः	
स एतमेवंविद्वाꣳश्रुतुष्कलं पादं	छांदो. ४।७।४, ४	प्रोवाच	सदानं. १
ब्रह्मणो ज्योतिष्मानित्युपास्ते		स एनमविदितो न भुनक्ति	बृह. १।४।१५
स एतस्माज्जीवधनात्परात्परं	प्रश्नो. ५।५	स एनं यजमानमहरहर्ब्रह्म गमयति	प्रश्नो. ४।४
पुरिषायं पुरुषमीक्षते		स एनान् ब्रह्म गमयत्येष देवपथो	
स एतं देवयानं पन्थानमाप-(सा-)		ब्रह्मपथ एतेन प्रतिपद्यमाना इदं	
द्याभिलोकमागच्छति, स वायु-		मानवमावर्त नावर्तन्ते	छांदो. ४।१५।६
लोकं स वरुणलोकं, स आदि-	कौ. त. १।३	स एव कर्माणि करोति देवो होको	
त्यलोकं, स इन्द्रलोकं, स प्रजा-		गणेशो बहुधा निविष्टः	हेरम्बो. १०
पतिलोकं, स ब्रह्मलोकम्		स एव काद्रवेयो...महावायो-	
स एतं प्राञ्चं आवाणमात्मन एव	बृह. ६।४।२४	रहङ्कारं निराचकार	सङ्कर्षणो. १
समुदपारयत् तेनैनामभ्यस्तृजत्	बृ. जा. १।३	स एव कालातीतः स एवाखिल-	
स एतं मुमुण्डः कालाभिरुद्रमगमत्		कर्मातीतः	त्रि.म.ना. १।५
स एतं मंत्रराजं नारसिंहमानुष्टुभ-		स एव काले भुवनस्य गोप्ता	
मपश्यत्तेन वै सर्वमिदमस्तृजत्	नृ. पू. १।१	विश्वाधिपः सर्वभूतेषु गूढः	श्वेताश्व. ४।१५
यविदं किञ्च		स एव गुणातीतः स एव	
स एतं मंत्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं	नृ. पू. २।१	कालातीतः	त्रि.म.ना. १।५
प्रतिगृहीयात् स मृत्युं तरति, स	सहस्रै. ९	स एव चिरन्तनः पुरुषः प्रणवाद्य-	
वाप्मानं तरति, स संसारं तरति		खिलमन्त्रवाचकवाच्य आद्यन्त-	
स एतान्पाशान् प्रमुञ्चन् प्रवेदः		शून्य आदिदेशकालवस्तुतुरीय-	
स एताञ्चोपनिषद्देवस्वतेन्स्तरे		संज्ञानित्यपरिपूर्णः	त्रि.म.ना. १।५
स गुणं ब्रह्म विधिनाऽऽनन्दैक-		स एव जगद्गुरुः स एवाहं विदि	प. इ. प. ११
हर्षं पुरुषोत्तमरूपेण मथुरायां	गोपीचं. २७	स एव जपकोट्या नादमनुभवति	हंसो. ६
नमुदेवसंघान्याविर्गविध्यति		स एव ज्ञानस्वरितृप्तिमिति	कैव. १२
स एतास्तिष्ठौ देवता अभ्यतपत्,			
तासां तप्यमानानाꣳरसान्मा-			

स एव ज्ञातः स जनिष्यमानः

अत्यन्तजनास्तितृष्टति सर्वतोमुखः

[श्वेता. २।१६+ब. शिरः. ३।६+

बटुको. २१

स एव जीवः स्वपिति प्रबुद्धः

कैव. १४

स एव ज्योतिषां ज्योतिः स एव

परमेश्वरः । स एव हि परब्रह्म

तद्ब्रह्माहं न संशयः

स्कन्दो. ५

स एव तुरीयं ब्रह्म

त्रि.म.ता. १।५

स एव तुरीयाकीर्तः स एव विष्णुः

त्रि.म.ता. १।५

स एव द्विविधः प्रोक्तः सहितः

(कृष्णकः) केवलस्तथा

श्रीप्रकृ. १।२०

स एव द्विविधो विन्दुः प्राण्डरो

लोहितस्तथा

ध्या. वि. ८६

स एव नित्यकूटस्थः स एव वेद-

पुरुष इति त्रिदुषो मन्त्र्यन्ते

प. हं. २

स एव नित्यतृप्तः

प. हं. प. ११

स एव नित्यप्रतिपूर्णः पावनिमूर्ति-

वैकुण्ठनारायणः

त्रि.म.ता. २।६

स एव नित्यपूतः स एव वैराग्य-

मूर्तिः स एव ज्ञाज्ञाकारः स

एव वेदपुरुष इति ज्ञानिज्ञेसम्यन्ते तुरीया. ३

स एव नित्यं सकलाः समूर्तयः

सुरसस्त्वन्तास्ते जयन्तो

विजति क्षयाणां तत्त्वसन्नि

हरते पराय स्वाहा

पारमा. ५।१०

स एव परमेश्वरः [त्रि.म.ता. १।५+

स्कन्दो. ५

स एव परं ज्योतिः, स एव

मायातीतः

त्रि.म.ता. १।५

स एव बहुधा जायमानः सङ्कर्षणो. १

स एव भगवान् शेषयुगे तुरीयेऽग्नि

मायायां जायमानो रामानुजो

भूत्वा सर्वा उपनिषद् उद्दिशीषति सङ्कर्षणो. ३

स एव भगवान् ब्रह्मा सर्वलोक-

प्रियमहः

महो. ५।१५८

स एव भगवान्युगसन्धिकाले सार-

वृक्षसन्निकाशो रौद्रिण्यो वासु-

देवः सर्वाणि गदाद्यायुधशस्त्रा-

जन्तुमण्डलानिराचिकीर्षति

भूमाप्रविलं निबलान

सङ्कर्षणो. २

स एव भगवान्युगसन्धिकाले स्वेन

रूपेण युगे युगे तेनैव जायमानः

...चातुर्वर्ण्यधर्मान्प्रवर्तयति

सङ्कर्षणो. ३

स एव भगवान् विष्णुर्नारायण

उदाहृतः । दासभूतमिदं तस्य

ब्रह्मर्षिदसकलं जगत्

भवसं. २।४१

स एव मन्त्रराजो भवति

ता.पू.ता. २।३

स एव मायातीतः स एव गुणातीतः

त्रि.म.ता. १।५

स एव मायापरिमोहितात्मा

शरीरमास्थाय करोति सर्वम्

कैव. १।१२

स एवमास्थाय शरीरमेकम् । माया-

मयं मोहयतीव सर्वम्

हेरन्वो. २

स एव यस्य प्रसीदति तस्य कर-

सलावकलितं धाम

रात्रिको. ५

स एव योगी स गुरुः स सेव्यः

अमन. २।४३

स एव लययोगः स्यात्

१ यो. त. २४

स एव वा एषशुद्धः पूतः शून्यः (आत्मा)

मैत्रा. २।४

स एव विदितादन्यस्तथैवाविदि-

तादपि । अन्येषामिन्द्रियाणां

तु कल्पितानामपीश्वरः

पा. ब्र. १८

स एव विष्णुः स एव समस्तब्रह्म-

वाचकवाच्यः

त्रि.म.ता. १।५

स एव विष्णुः स प्राणः, स कालो-

ऽग्निः, स चन्द्रमाः [कैव. ८+]

कालिको. ५

स एव वेदपुरुष इति विदुषो

मन्यन्ते

प. हं. २

स एव वेदपुरुषो महापुरुषो यस्त-

चित्तं मन्येवावतिष्ठते

प. हं. प. ११

स एव शिवाग्रमीति कथ्यते

भावनो. १०

स एव सत्योपाधिरहितः स एव

परमेश्वरः

त्रि.म.ता. १।५

स एव सर्वभूतात्मा नर इत्यग्नि-

धीयते । अः परः प्रकृतेः

श्रेष्ठः पुरुषः पञ्चविंशकः

भवसं. २।३२

स एव सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यं

सनातनम् । ज्ञात्वा तं मृत्यु-

मत्येति नान्यः पन्था विमुक्तये

कैव. १।५

स एव सर्वो भुवनस्य साक्षी

हेरन्वो. ७

स एव संसारतारणाय गुरुमा-	
श्रित्य कामादि त्यक्त्वा...	
नहि मदन्यदिति जातविवेकः	
...परिपक्वो भवति	मं. ब्रा. २।७
स एव साक्षाद्विज्ञानी स शिवः	
स हरिर्विभिः	महो. ४।७६
स एव स्वीकृतवैराग्यात् कर्मफल-	
जन्मालं संसारबन्धनमलमिति	
विमुक्त्यभिमुखो निवृत्तिमार्ग-	
प्रवृत्तो भवति	मं. ब्रा. २।७
स एव हि परब्रह्म तद्ब्रह्माहं न	
संशयः	स्कन्दो. ५
स एव हि महादेवः स एव हि	
महाहरिः	स्कन्दो. ४
स एवं जीवस्त्रिविधो भवति	सामर. ९८
स एवं तिस्रर्वेषां भूतानामात्मा	
भवति	बृह. १।५।२०
स एवं विद्वानस्मान्छरीरमेवा-	
दूर्ध्वं उत्क्रम्यामुष्मिन्स्वर्गे लोके	
सर्वान्कामानास्वाप्तः समभवत्	२ ऐत. ४।६
स एवाग्निः सलिले सन्निविष्टः,	
तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति	
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय	श्वेताश्व. ६।१५
स एवात्मा भवति (गणेशः)	गणेशो. ५।७
स एवाद्य स उ श्व इति	बृह. १।५।२३
स एवाद्य स उ श्व एतद्वै तत्	कठो. ४।१३
स एवाद्यस्तात् स उपरिष्ठात्	छांदो. ७।२५।१
स एवान्तःकरणसम्भिन्नबोधो-	
ऽस्मत्प्रत्ययावलम्बनस्त्वपद-	
वाच्यो भवति	पैङ्गलो. ३।१
स एवायं पुरुषः स्वयमेव समा-	
राधनवत्परोऽभूत्	सामर. ३
स एवायं पुरुषः स्वरमणार्थे	
स्वस्वरूपं प्रकटितवान्	सामर. ३
स एवायं मया तेऽद्य	भ. गी. ४।३
स एवान्यत्तोऽनन्तो नित्यो	
गोपालः	गोपालो. २।४
स एवाहमस्मि [छांदो. ४।११।१+	१२।१+१३।१
स एवाहं विद्धि	प. हं. प. ११

स एवेदं सर्वम्	छांदो. ७।२५।१
स एवेदमावरीवर्ति भूतम्	अ. शिरः. ३।१४
स एवैष बालाकर्य एवैष चन्द्रमसि	
पुरुषस्तमेवाहं ब्रह्मोपास इति	कौ. त. ४।३
स एष इन्द्रः सर्वं यद्वायत्री उद्गीथो	
वसवः प्रातः सवनमिति	शौनको. २।४
स एष इव एव लोकादयं स लोकः	
सम्प्रतिष्ठितः	संहितो. ४।१
स एष इह प्रविष्ट आनत्नामेभ्यः	बृह. १।४।७
स एष कोशो वसुधानस्तस्मिन्	
विश्वमिदं श्रितम्	छांदो. ३।१५।१
स एष गिरिश्चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक्	
प्राणस्तं ब्रह्मगिरिरित्याचक्षते	१ ऐत. १।८।२
स एष चैतस्मादूर्वाञ्चो लोकाः (मा.पा.)	छांदो. १।७।६
स एष जगदाविर्भावतिरोभावहेतुः	सङ्कर्षणो. ३
स एष जीवेनात्मनाऽनुप्रभूतः	
पेपीयमानो मोदमानस्तिष्ठति	छांदो. ६।११।१
स एष देवः कृतभावभूतः स्वयं	
विशुद्धो विरजः प्रकाशते	रुद्र. ह. ४०
स एष देवोऽम्बरगश्च चक्रे, अन्ये-	
ऽभ्यधिष्ठेत तमो निरुन्ध्यः ।	
हिरण्मयं यस्य विभाति सर्वं,	
व्योमान्तरे रश्मिमिवांशुनाभिः	एका. उ. ८
स एष निरञ्जनोऽकामत्वेनोञ्जुम्भते	त्रि. ता. १।५
स एष नेति नेतीति व्याख्यातं	
निहुते यतः । सर्वमप्राज्ञभावेन	
हेतुनाऽजं प्रकाशते	अद्वैत. २६
स एष नेति नेत्यात्माऽगृह्यो न हि	
गृह्यतेऽशीर्यो न हि शीर्यते-	
ऽसङ्गो नहि सञ्जते	
[बृह. ३।१।२६+४।२।४+४।४।२२ +४।५।१५	
स एष परमानन्दोऽप्यानन्दो ब्रह्म	
तत्परम्	२ देव्यु. ३६
स एष परोवरीयानुद्गीथः	छांदो. १।५।२
स एष पाङ्क्तो यज्ञः पाङ्क्तः पशुः	
पाङ्क्तः पुरुषः पाङ्क्तमिदं सर्वं	
यदिदं किञ्च तदिदं सर्व-	
माप्नोति	बृह. १।४।१७
स एष पुरुषः पञ्चविधः	१ ऐत. ३।३।२

स एष पुरुषः समुद्रः सर्वलोकमस्ति	१ ऐत. ३।३।१
स एष प्रदितां संयोगोऽध्यात्मम्	१ ऐत. १।५।१
स एष प्राणलोवा विहितः	बृह. १।२।३
स एष भस्म ज्योती रुद्राक्ष इति	रु. जा. ४४
स एष मुमुक्षुभिर्ज्यैः	सङ्कर्षणो. ३
स एष मृत्युश्चैवामृतं च	१ ऐत. १।८।४
स एष मोक्षप्रदः, एतस्मृत्या सर्वेभ्यः पाप्मभ्यो मुच्यते	सङ्कर्षणो. ३
स एष यज्ञः पञ्चविधोऽग्निहोत्रं दर्शपूर्णमासौ चातुर्मास्यानि वशुः सोमः	१ ऐत. ३।३।४
स एष यज्ञानां सम्पन्नतमो यत्सोमः	१ ऐत. ३।३।४
स एष ये चामुष्मात्पराश्चो लोकास्तां आप्नोति	छांदो. १।७।७
स एष ये चामुष्मात्पराश्चो लोकास्तेषां चेष्टे	छांदो. १।७।८
स एष ये चैतस्मादर्वाश्चो लोका- स्तेषां चेष्टे	छांदो. १।७।६
स एष रसानां रसतमः परमः पराध्योऽष्टमो य उद्गीथः	छांदो. १।१।३
स एष वाचश्चित्तस्योत्तरोत्तरि- क्रमो यद्यज्ञः	१ ऐत. ३।३।४
स एष वायुः पञ्चविधः-प्राणो- ऽपानो व्यान उदानः समानः	१ ऐत. ३।३।३
स एष विमुक्तो विदुष्कृतो ब्रह्म विद्वान्ब्रह्मैवाभिप्रेति	कौ. त. १।४
स एष वैश्वानरो विश्वरूपः प्राणो- ऽग्निरुदयते	प्रश्नो. १।७
स एष सङ्कल्पः, सङ्कल्पशुपास्वेति	छांदो. ७।४।२
स एष सर्वभूतान्तरात्माऽपहव- पाप्मा दिव्यो देव एको नारायणः [सुबालो. ७।२+	अध्यात्मो. १
स एष सर्वस्येशानः सर्वस्याधि- पतिः सर्वमिदं प्रशास्ति	बृह. ५।६।१
यदिदं किञ्च	कौ. त. २।६
स एष सर्वस्यै त्रयीविद्याया आत्मा	सङ्कर्षणो. ३
स एष सर्वात्मका, स एष...ज्यैः	सङ्कर्षणो. ३
स एष सर्वेभ्यः पाप्मभ्य उदितः, उदिति	छांदो. १।६।७

स एष सर्वेषां मोक्षदश्चासीत्	मुद्रलो. २।३
स एष संवत्सरसमानश्चक्षुर्मयः ओन्नमयश्छन्दोमयो मनोमयो वाङ्मय आत्मा	३ ऐत. २।३।५
स एष संवत्सरः प्रजापतिः षोडशकलः	बृह. १।५।१४
स एष ह्योङ्कारश्चतुरक्षरश्चतुष्पाद- श्चतुर्विंशराश्चतुर्मात्रः स्थूलमेत- द्रस्वदीर्घप्लुत इति	अ. शिलो. १
स एषोऽकलोऽमृतो भवति	प्रश्नो. ६।५
स एषोऽक्षरसम्मानश्चक्षुर्मयः... वाङ्मय आत्मा	३ ऐत. २।२।३
स एषोऽक्षरोऽनन्तः	रामो. ३।२
स एषोऽग्निर्दिविभ्रितः सौरः काला- ख्योऽदृश्यः सर्वभूतान्नमस्ति	मैत्रा. ६।२
स एषोऽमेरिव प्रज्वलतो रथस्ये- वोपशब्दितस्तं यदा न शृणुया- त्तदप्येवमेव विद्यात्	३ ऐत. २।३।६
स एषोऽनन्तः परोवरीयो हास्य भवति	छांदो. १।५।२
स एषोऽन्तरे हृत्पुष्कर एवाश्रितो- ऽन्नमस्ति	मैत्रा. ६।१
स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः	मुण्ड. २।२।६
स एषोऽप्सु प्रतिष्ठितो यत्र क चैति तदेव प्रतिष्ठिति	बृह. १।५।३
स एषोऽधरथः प्रष्टिवाहनो मनो वाक्प्राणसंहतः	३ ऐत. १।१।३
स एषोऽसपत्नो न सपत्नो नास्य सपत्नो भवति	बृह. १।५।१२
स एषोऽसुः, स एष प्राणः, स एष भूतिश्चाभूतिश्च	१ ऐत. १।८।३
स एषोऽहः सम्मानश्चक्षुर्मयः... वाङ्मय आत्मा	३ ऐत. २।३।३
स ऐक्षत यदि वा इममभिमन्स्ये कनीयोऽन्नं करिष्ये	बृह. १।५।५
स ऐक्षत यदिह वाव इम- मभिमन्स्ये... (मा. पा.)	बृ. उ. १।२।५
स ओतः प्रोतश्च विसुः प्रजासु	महाना. २।३

स ओमिति त्रा द्वौदामीयते स

यावत्क्षिप्येन्मनस्तावदादित्य
गच्छति

स ओमित्येतदक्षरमपश्यत्

सकलतीर्थानि जायन्ते पुरुषोत्तमात्

सकलब्रह्माण्डमण्डलं स्वप्रकाशं

ध्यायेत्

सकलपुवनमाता सन्ततं श्रीःश्रियैः

सकलविलीनसमोमयाभिमानः

सकलवेदशास्त्रसिद्धान्तरहस्य-

जन्माभ्यस्तात्यन्तोत्कृष्टसुकृत-

परिपाकवशात्सद्भिः सङ्गोजायते

सकलस्य वा एतद्रूपं यत्संवत्सरः

सकलं निष्कलं चैव पूर्णत्वाच्च

तदेव हि

सकलं निष्कलं सकलनिष्कलं चैति

(अथ) सकलः साधारोऽमृत-

मयश्चतुरात्मा

सकलात्मकाय भीमकर पिङ्गलाक्ष

...स्थलजलाग्निमर्ममेदिन्सर्व-

शत्रून् छिन्धि छिन्धि

सकले निष्कले भावे सर्वत्रात्मा

व्यवस्थितः

सकले सकलो भावो निष्कले

निष्कलस्तथा

सकलोपनिषन्मयः

सकलार्थं विजानीयात् समप्राप्तं न

चालयेत्

सकामभिर्जायते तत्र तत्र । पर्याप्त-

कामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वे

प्रविलीयन्ति कामाः

सकाम्या निष्काम्या देवानां सर्वेषां

मृतानां भवति

सकाम्या मेरौः शृङ्गे यथा सप्त

पुत्रा भवन्ति, तथा निष्काम्याः

सकाम्या भूगोपालचक्रे सप्त

पुत्रा भवन्ति

छांदो. ४।६।५

२ प्रणवी. २

सि. वि. २

भावनी. १

सौभाग्य. २

अ. पू. २।१६

त्रि.म.ना. ५।४

मैत्रा. ६।१५

यो. शि. १।१९

शांडि. ३।१।२

नृसिंहो. ३।३

लौङ्गलो. १

ध्या. वि. ८

त्र. वि. ३९

ना. प. ८।५

अद्वैत. ४४

मुंड. ३।२।२

गोपालो. १।१५

गीताली. १।१५

स कारणं करणाधिपाधिपो न

चास्य कश्चिज्जनिता न

चाधिपः [श्वेता. ६।९+

सकारं च हकारं च जीवो

जपति सर्वदा

सकारः खेचरी प्रोक्तः

सकारः सत्यममृतं प्राप्तिः सोमश्च

कीर्त्यते

सकारो ध्यायते जन्तुर्हकारी हि

भवेद्ब्रह्म

स कालेनेह महता

स कालोऽग्निः स चन्द्रमाः

स किं म एतदुपतपसि योऽहमेनेन

न प्रेष्यामीति

सकुसुको विकुसुको निर्ऋचो यश्च

निस्त्वनः

सकृज्जैव शुचिः स पूतः कर्मण्यो

भवति

सकृज्ज्ञानेन मुक्तिः स्यात् सम्य-

गज्ञाने स्वयं गुरुः

स कृत्वा राजसं त्यागं

सकृदुच्चारितमात्रः स एष ऊर्ध्व-

मन्त्रमतीत्योद्धारः

सकृदुच्चारितं येन शिव इत्यक्षर-

द्वयम् । बद्धः परिकरस्तेन

मोक्षोपगमनं प्रति

सकृदिवा हैवास्मै भवति य

एतामेव ब्रह्मोपनिषद् वेद

सकृदिवा हैवास्मै भवति य

एवं विद्वानेतेन.. संघत्ते

सकृदिवा हैवास्य भवति । य एवं

विद्वानेतेनात्मानं सन्धत्ते

सकृद्विभात-सदानन्दानुभवैक-

गोचरो ब्रह्मविद्यैव भवति

सकृद्विभातो ह्येवैष धर्मो धातु-

स्वभावतः

सकृद्विभातो ह्येवैष ब्रह्मलोकः

सक्तं तु दीर्घतपसा मुक्तमप्यति-

बद्धवत्

भवसि. ३।४३

त्र. वि. १६

यो. चू. ८२

सीतो. ३

यो. चू. ८३

भ. गी. ४।२

कालिको. ५

छांदो. ३।१६।७

सहवै. ५

अ. शिरः. ३।१६

ते. वि. २।४३

भ. गी. १६।८

अ. शिखो. १

शिखो. १।१६

छांदो. ३।११।३

१ सं. सो. १।३

कठश्रु. ११

मं. प्रा. २।६

अ. शां. ८१

छांदो. ४।४।३

अ. पू. १।१५

सप्तमः कर्मण्यविद्वांसः

भ.गी. ३।२६

सप्तमिव तितउनापुनन्तौयत्रवीरि

मनसा वाचमकुत । अत्रा

सखायः सख्यानि जानते

मन्त्रांलक्ष्मीनिहिताधिवाचि

[ना. पू. ता. ४।६+

स कर्तुं कल्पयति

प्र.मं. १०।७१२

स खलु त एत प्रजापतिर्या इदं

चिन्त्य. ७।३

मेकमन्नमक्षितायुः पुरुषो वाच-

भीश्वरोऽभिजायते

संहितो. ५।१

स खलु ब्रह्मा सृष्टश्चिन्तामापेदे

२ प्रणवो. १

स खल्वेवं यो विद्वान् सोपनयना-

आरुणि. ४९

वृष्वमेतानि प्राग्वा त्यजेत्

स खल्वेवं वर्तयन्यावदायुषं ब्रह्म

लोकमभिसम्पद्यते, न च

पुनरावर्तते

छांदो. ८।१५।१

सखा मा गोपायैति दण्डं परिग्रहेत्

१ सं. सी. २।९

सखा मा गोपायौजः सखायो-

ऽस्तीन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्रघ्नः

वार्त्र मे भव यत्पापं तन्निवारय

[आरुणि. ३+ना. प. ४।४९+

प. हं. प. ६

सखैति मत्वा प्रसभं यदुक्तं

भ.गी. ११।४१

स गणेश अय्यक्तः

गणेशो. २।३

स गणेश जीत्मा विज्ञेयः

गणेशो. १।४

स गणेशो महान्भवति

गणेशो. २।२

सगद्गद् भीतभीतः प्रणम्य

भ.गी. ११।३५

सगुणनिर्गुणत्वमेत्य एकोऽपि

ब्रह्मप्रणवः

तुरीयो. २

सगुणनिर्गुणस्वरूपं ब्रह्म

त्रि.म.ना. १।३

सगुणनिर्गुणरूपो भवति

त्रि.म.ना. २।६

सगुणं न्यानमेतत्स्यादणिमादि-

गुणप्रबम् । निर्गुणध्यान-

मुक्तस्य समाधिश्च ततो भवेत्

१ थो.त. १०५

सगुणं मूर्तिध्यानं, निर्गुणमात्म-

यायात्यम्

शांडि. १।८३

सगुणान् समतीत्यैतान्

भ.गी. १४।२६

सगुणो विराट्प्रणवः, संहारो

निर्गुणप्रणवः, उभयात्मकौ-

त्यन्तिप्रणवः

ना. प. ८।३

सगुणो विराट्प्रणवः

तुरीयो. १

स गुरुः सर्वेषां मन्त्राणामुपदेष्टा

भवति

न. पू. ५।८

स गौपीश्वीवानात्मस्त्वेन सृष्टि-

पर्यन्तमालाति

गौपाश्वी. २।३

स भ्रामाद्भ्रामं पृच्छन् पण्डितो

मेधावी गान्धारानेवोपसम्पद्यते

छांदो. ६।१४।२

स घोषो धार्तराष्ट्राणां

भ.गी. १।१९

सङ्करस्य च कर्ता स्यां

भ.गी. ३।२४

सङ्करो नरकायैव

भ.गी. १।४२

सङ्कर्षणाच्च प्रद्युम्नो मनोभूतः स

उच्यते

ना. महो. ३०

सङ्कल्पत्वं हि बन्धस्य कारणं

तत्परित्यज

प्र. पू. ५।१०२

सङ्कल्पनं स्पर्शनदृष्टिमोहैर्मासा-

म्नुवृष्ट्या (चा) त्मविवृद्धि-

जन्म । कर्मानुगाम्यनुक्रमेण

देही स्थानेषु रूपाण्यभि-

सम्प्रपद्यते [श्वेता. ५।११+

भवसं. ३।२४

सङ्कल्पनं मनो विद्धि सङ्कल्पस्तत्र

विद्यते । यत्र सङ्कल्पनं तत्र

मनोऽस्तीत्यवगम्यताम्

महो. ४।५२

सङ्कल्पनं हि सङ्कल्पः स्वयमेव

प्रजायते । वर्धते स्वयमेवाशु

दुःखाय न सुखाय यत्

महो. ५।१८१

सङ्कल्पनिश्चयस्मरणाभिमानानु-

सन्धानास्तद्विषयाः

पेजलो. २।४

सङ्कल्पपादपं तृष्णालतं छित्त्वा

मनोवनम् । विततां मुक्तासाद्य

विहरामि यथासुखम्

१ थं.सी. ३।५४

सङ्कल्पप्रभवान् कामान्

भ.गी. ६।२४

सङ्कल्पमनसी भिन्ने न कदाचन

केनचित् । सङ्कल्पजातं गलिते

स्वरूपमवशिष्यते

महो. ४।५३

सङ्कल्पमात्रकलनेन जातिसमग्रं

सङ्कल्पमात्रकलने हि जग-

द्विलासः । सङ्कल्पमात्रमिदं

मुत्सृज निर्विकल्पमाश्रित्य

मामकपदं हृदि भावयस्व

वाराही. २।२९

सङ्कल्पमात्रसम्भवो बन्धः निरा. च. २१
 सङ्कल्पमूलव्यानादिचिन्ताशत-
 समाकुलाः । कुशेनापि न
 विन्दन्ति प्राप्तव्यं स्थानमीप्सितम् अमन. २।३८
 सङ्कल्पमेव यत्किञ्चित्तत्तन्नास्तीति
 निश्चितम् ते.वि. ५।१०५
 सङ्कल्परहितोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।७
 सङ्कल्पसङ्ख्यवशाद्गलिते तु चित्ते
 संसारमोहमिदिका गलिता भवन्ति महो. ५।५३
 सङ्कल्पात्मकानि सङ्कल्पे प्रतिष्ठितानि छांदो. ७।४।२
 सङ्कल्पादिकं मनो बन्धहेतुः,
 तद्विरुद्धं मनो मोक्षाय भवति मं. ब्रा. २।८
 सङ्कल्पादेवास्य गन्धमाल्ये समु-
 तिष्ठतस्तेन गन्धमाल्यलोकेन
 सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।६
 सङ्कल्पादेवास्य गीतवादिते समु-
 तिष्ठतस्तेन गीतवादितलोकेन
 सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।८
 सङ्कल्पादेवास्य पितरः समुत्तिष्ठन्ति,
 तेन पितृलोकेन सम्पन्नो
 महीयते छांदो. ८।२।१
 सङ्कल्पादेवास्य भ्रातरः समु-
 तिष्ठन्ति, तेन भ्रातृलोकेन
 सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।३
 सङ्कल्पादेवास्य मातरः समुत्तिष्ठन्ति,
 तेन मातृलोकेन सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।२
 सङ्कल्पादेवास्य सखायः समु-
 तिष्ठन्ति तेन सखिलोकेन
 सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।५
 सङ्कल्पादेवास्य स्वसारः समु-
 तिष्ठन्ति तेन स्वसृलोकेन
 सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।४
 सङ्कल्पादेवास्यान्नपाने समुत्तिष्ठत-
 स्तेनान्नपानलोकेन सम्पन्नो
 महीयते छांदो. ८।२।७
 सङ्कल्पादेवास्य क्षियः समुत्तिष्ठन्ति,
 तेन क्षीलोकेन सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।९
 सङ्कल्पादेवानुसन्धानमवर्जनं चेत्प्रति-
 क्षणम् । करोषि तदचित्तत्वं
 प्राप्तं यवासि पावनम् महो. ४।६

सङ्कल्पाः कल्पतरवः भावनी. ९
 सङ्कल्पाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे-
 भगवान्ब्रवीतु छांदो. ७।४।३
 सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च अभिमानो-
 ऽवधारणा (मनोधर्माः) बराहो. १।१३
 (यः) सङ्कल्पाध्यवसायाभिमान-
 लिङ्गः प्रजापतिर्विश्वाक्षः [मैत्रा. + २।५+४।५
 सङ्कल्पो वाव मनसो भूयान् छांदो. ७।४।१
 संकृशस्योपलब्धेश्च परतन्त्रा-
 स्तिता मता अ. शां. २४
 सङ्कोचविकासोत्पत्तिमहामाया-
 विलासात्मक एव सर्वोऽप्य-
 विद्याप्रपञ्चः त्रि.म.ना. ३।३
 सङ्कल्यागं विदुर्मोक्षं सङ्कल्यागा-
 दजन्मता । सङ्गं त्यज त्वं
 भावानां जीवन्मुक्तो भवानव
 अ. पू. ५।४
 सङ्करहितोऽभ्यानयत् गो. पू. ३।१०
 सङ्गस्तेषूपजायते भ. गी. २।६२
 सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः भ. गी. ५।१०
 सङ्गं त्यक्त्वाऽऽत्मशुद्धये भ. गी. ५।११
 सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय भ. गी. २।४८
 सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव भ. गी. १८।९
 सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च भ. गी. १८।६
 सङ्गात् सञ्जायते कामः भ. गी. १८।६२
 सङ्गीतताललयवाद्यवशं गताऽपि
 मौलिस्थकुम्भपरिरक्षणधी-
 नंटीव (पुङ्गवानुपुङ्गवविषयेक्षण-
 तत्परोऽपि ब्रह्मावलोकनधियं
 न जहाति योगी) बराहो. २।८२
 सङ्ग्रामं न करिष्यसि भ. गी. २।३३
 सङ्घातश्चेतना धृतिः भ. गी. १३।६
 सङ्घाताः स्वप्नवत्सर्वे आत्ममाया-
 विव(स-)र्जिताः अद्वैत. १०
 स चक्षुषः पंक्तिं पुनाति अ. शिरः. ३।१६
 स चतुर्भिश्चतुर्भिरक्षरैरष्टौ वसू-
 नजनयत् अ. व्यक्तो. ६
 स चन्द्रमसमागच्छति बृह. ५।१०।१
 स चन्द्रमाः स नक्षत्राणि स
 चराचरात्मकं जगत् गान्धर्वो. ३

स च प्राणायामप्रत्याहारधारणा-
ध्यानसमाधियोगानुमानात्म-
चिन्तकवटकणिका वा

१ आत्मो. ३

स च पादनारायणो जगत्स्रष्टुं
प्रकृतिमजनयत्

मुद्रलो. २।४

स च मे न प्रणश्यति

भ. गी. ६।३०

स च यो यत्प्रभावश्च

भ. गी. १३।४

स च सर्वस्मान्महिम्नो ज्यायान्

मुद्रलो. २।३

स चाक्षुषः पुरुषः, दर्शनाय चक्षुः

छांदो. ८।१२।४

स चानन्तकोटिब्रह्माण्डानामुदय-
स्थितिलयाद्यखिलकार्यकारण-
जालपरमकारणकारणभूतो
महामायातीतस्तुरीयः पर-
मेश्वरो भवति

त्रि.म.ना. २।६

स चानन्तमहामायाविलासाना-
मधिष्ठानविशेषनिरतिशयाद्वैत-
परमानन्दलक्षणपरब्रह्मविलास-
विग्रहो भवति

त्रि.म.ना. २।६

स चानन्तशीर्षा पुरुष अनन्ताक्षि-
पाणिपादो भवति

त्रि.म.ना. २।६

स चानन्त्याय कल्पते [श्रुता. ५।९+

भवसं. २।३५

स चापि तत्प्रत्यवदध्यथोक्तमथास्य
सृत्युः पुनरेवाह तुष्टः

कठो. १।१५

स (ओङ्कारः) चाष्टधा भिद्यते-
अकारोकार-मकारार्ध-मात्रा-

ना. प. ८।२

नाद-बिन्दु-कला-शक्तिश्चेति
स चाऽऽशिक्ष्य पुरोवाचोपनिषत्

महाना. ७।६

सचेतनो निचेतनो भवति,

सर्वं भवति

गणेशो. २।२

सचेताः प्रकृतिं गतः

भ. गी. ११।५१

सच्च-त्यबामवत्

वैत्ति. २।६

सच्च सहेतुकं नास्ति सहेतुकमसत्कृतः

अ. शां. ४०

(सः) सबासच्च सर्वं पश्यति

सुबालो. ४।२

सबासच्च सर्वं पश्यति सर्वः पश्यति

प्रश्नो. ४।५

सच्चित्सुखपरिपूर्णतास्मरणं गन्धः

भावनो. ८

सच्चिदानन्दचनज्योतिर्भवत्

नृसिंहो. ६।१

सच्चिदानन्दचनज्योतिर्भवति

नृसिंहो. ६।१

सच्चिदानन्दपूर्णात्मसुभवात्मकं

सच्चिदानन्दपूर्णात्मानं परं ब्रह्म

सम्भान्याहमित्यात्मानमादाय

मनसा ब्रह्मणैकीकुर्यात्

नृसिंहो. ४।२

सच्चिदानन्दपूर्णात्मा सर्वप्रेमास्पदो-
ऽस्म्यहम्

अ. वि. १०८

सच्चिदानन्दमद्वैतं सच्चिदानन्द-

मद्वयम्

ते. वि. ६।१

सच्चिदानन्दमात्मानमद्वितीयं ब्रह्म

भावयेत्

व. सु. ९

सच्चिदानन्दमात्रमेकरसं पुरमेव

ब्रह्म मकारेण जानीयात्

नृसिंहो. ५।७

सच्चिदानन्दमात्रं हि सच्चिदानन्द-

मन्यकम्

ते. वि. ६।२

सच्चिदानन्दमात्रः स स्वराद्भवति

नृसिंहो. ७।१, ४

सच्चिदानन्दमात्रोऽहं स्वप्रकाशो-

ऽस्मि चिद्धनः

अ. वि. १०९

सच्चिदानन्दमात्रोऽहमनुत्पन्नमिदं

जगत् [ते. वि. ६।५८,

६३, ७१

सच्चिदानन्दमात्रोऽहमिति निश्चित्य

तत्त्यज

ते. वि. ६।१०७

सच्चिदानन्दमेव त्वं सच्चिदानन्द-

कोऽस्म्यहम्

ते. वि. ६।३

सच्चिदानन्दरूपमिदं सर्वं सद्दीदं

सर्वं सत्समिति चिद्धीदं सर्वं

काशते प्रकाशते चेति

नृसिंहो. ७।३

सच्चिदानन्दरूपं तदवाङ्मनसगोचरम्

अ. पू. ४।२९

सच्चिदानन्दरूपाय सर्वधीवृत्ति-

साक्षिणे । नमोवेदान्तवेद्याय

ब्रह्मणेऽनन्तरूपिणे

व. सु. शीर्षक

सच्चिदानन्दरूपाय ज्ञानायामित-

तेजसे । ब्रह्मस्वरूपाय नारायण

नमोऽस्तु ते

ना. उ. २।१

सच्चिदानन्दरूपोऽस्य परमात्मार्य

उच्यते । व्यञ्जनं निष्कलं ब्रह्म

प्राणो मायेति च स्वरः

रामर. ५।५

सच्चिदानन्दलक्षणः । सर्वतीर्थस्व-

रूपोऽस्मि परमात्मास्वहं शिवः

मैत्रे. ६।१२

सच्चिदानन्दलहरी महात्रिपुरसुन्दरी

बहिरन्तरनुप्रविश्य स्वयमेकैव

विभाति

बह्वचो. २

सच्चिदानन्दविग्रहः (श्रीरामः) मुक्तिको. ११४
 सच्चिदानन्दस्वरूपपरवस्तु भवति ना.पू.ता. १११
 [सुखमिति च-] सच्चिदानन्द-
 स्वरूपं ज्ञात्वाऽऽनन्दरूपा निरा. उ. १७
 या स्थितिः सैव सुखम् अवयवा. ६
 सच्चिदानन्दस्वरूपं ब्रह्म ना.उ.ता. २१३
 सच्चिदानन्दस्वरूपाय महात्मने... त्रि.म.ना. ११३
 सच्चिदानन्दं स्वप्रकाशं ब्रह्म
 सच्चिदानन्दात्मकाः स्युर्विष्णो ना.पू.ता. ५७
 नित्ये प्रकल्पिताः
 (तथैव) सच्चिदानन्दात्मोपासकः
 सर्वपस्मिणां द्वैतपरमानन्दलक्षणे त्रि.म.ना. ८१३
 परब्रह्मणि नारायणे मयि त्रि. ब्रा. १
 सच्चिदानन्दात्मकोऽहमजोऽहं भ. गी. १७।२६
 परिपूर्णोऽहमस्मीति प्रविवेश
 सच्छब्दवाच्यमविद्याशबलं ब्रह्म
 सच्छब्दः पार्थ युज्यते
 स छन्दोभिः छन्दो यच्छन्दोभि-
 स्छन्दस्तस्माच्छन्दांसीत्याचक्षते
 छन्दयन्ति इ वा एनं छन्दांसि १ ऐत. १।६।१
 स जन्मान्तरितान् पापान्नाशयति रामो. ४।४
 स जायते त्वत्प्रसुप्तस्य वस्थाः प्राप्य
 पटीयन्त्रवदुद्विग्नो जातो पैङ्गलो. २।६
 मृत इव स्थितो भवति
 स जातः सादुत जामिशंसात्
 व्यायक्तः सादुत वा कन्नीयसः सहवे. ३
 स जातीयप्रवाहश्च विजातीयस्ति-
 रकृतिः । नियमो हि परानन्दः... ते. वि. १।१८
 स जातीयविशेषविशेषितं निरवयवं
 निराधारं निर्विकारं... शाश्वतं
 परमं पदं निरतिशयानन्दा-
 मन्तसत्त्वित्यवतारमद्वितीयं त्रि.म.ना. ७।७
 स्वयत्प्रकाशमनिशं ज्वलति
 स जातीयं न मे किञ्चिद्विजातीयं
 न मे क्वचित् ते. वि. ३।४७
 स जातो अत्यरिच्यत [त्र. मं. +
 १०।९०।५+
 १।५।५+
 ११।६।९+
 स जातो भूतान्यभिधीयते
 किञ्चिद्विजातीयं वावविषदिति १ ऐत. ३।१३

स जातो यावदायुषं जीवति तं
 प्रेतं दिष्टमितोऽग्रय एव हरन्ति
 यत एवेतो यतः सम्भूतो भवति छांदो. ५।९।२
 स जायमान उपजायमानो द्वादश
 त्रयोदश उपमासः कौ. त. १।२
 स जीवति मनो यस्य मनने-
 नोपजीवति महो. ३।१३
 स जीवति यावज्जीवत्यथ यदा
 म्रियते बृह. ६।३।१३
 स जीवन्मुक्तो भवतीत्याह
 भगवन्नारायणो ब्रह्मणम्
 स जीवः शिव उच्यते
 स जीवः केवलः शिवः
 सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः
 सोमं पिब वृत्रहन्तृ विद्वान्
 सज्जन्ते गुणकर्मसु
 स ज्ञायते येन तदस्तदोषं शुद्धं परं
 निर्मलमेकरूपम् । सन्दृश्यते
 वाप्यवगम्यते वा तज्ज्ञानम-
 ज्ञानमतो यदन्यत् भवसं. २।५५
 स ज्येष्ठाज्येष्ठव्यवधानरहितः (त्रिष्णुः) प. हं. म. ३१
 सञ्चारन्वनमार्गेण शुचौ देशे परि-
 भ्रमन् । वायुमक्षोऽन्धमक्षो
 वा विहितैः कन्दमूलकैः ॥
 स्वशरीरे समाप्याय प्रशिक्षां
 ताशु पातयेत्
 सञ्चारधर्मरहिते मयि स्वप्नो
 न विद्यते
 सञ्चितकर्मणि चित्तसंयमात् पूर्व-
 जातिज्ञानम्
 सच्छब्दवाच्यमविद्याशबलं ब्रह्म
 सच्छिन्नाध्यायिन आचार्याः
 पूर्वं बभूवुः
 ' सञ्ज्ञानमनन्तं ब्रह्म ' इत्यादि-
 वाक्यत्रिज्वारः
 सञ्ज्ञायं तान् प्रवीमि ते
 सञ्ज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानं
 मेधा इष्टिर्भूतिर्मतिर्मनीषा ज्ञानः

स्मृतिः सङ्कल्पः क्रतुरसुः
 कामो बश इति...प्रज्ञानस्य
 नामधेयानि २ ऐत. ५।२
 स त पष रसो यञ्चभुः, सतो
 ह्येष रसः ६. उ. २।३।४
 स तच्छो बालोन्मत्तपिशाचवज्रड-
 वृत्त्या लोकमाचरेत् ५।२
 स तत एव निवृत्ते, नैतदशकं
 विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति ३।६, १०
 सततमनुभवेऽहं तौ बलाति-
 व(लेखौ)लान्तौ सावित्र्यु. ११
 सततमात्मन्मांसरतो भवेत्
 सततं कीर्तयन्तो मां अमन. २।४७
 सततं पूजयेद्विष्णुं दिवारात्रं
 न पूजयेत् अ. गी. १।१४
 सततं ब्रह्मवादिनाम् शांडि. १।७।३८
 सततं ह्येतद्रहोमत्वाद्दीरत्वान्मह-
 र्वादिष्णुत्वाज्जलत्वात्सर्वतो-
 मुखत्वाच्चृत्सिंहत्वाद्भीषणत्वाद्भद्र-
 त्वान्मृत्युमृत्युत्वान्नमामित्वादिति नृसिंहो. ७।५
 स तत्र तपसा ब्रह्मचर्येण अद्वया
 सम्पन्नो महिमानमनुभवति प्रश्नो. ५।३
 स तत्र परमं तप आस्थायादित्य-
 भीक्षमाण ऊर्ध्वबाहुस्तिष्ठति मैत्रे. १।२
 स तत्र पर्येति जक्षन्कीडन्नममाणः
 कीमिर्वा यानैर्वा ज्ञातिभिर्वा
 नोपजनं स्मरन्निदं शरीरं छांदो. ८।१२।३
 स तदभिमानो स्पष्टवपुः सर्वस्युल-
 पाळकोविष्णुः प्रब्रान्मुरुषोभवति पैङ्गलो. १।३
 स वन्मयो ह्यमृत ईशसंस्थो हः
 सौम्यो सुवन्स्यास्य गोप्ता चेतो. ६।१७
 स तपस्तत्त्वा इदं सर्वमसृजत्
 स तपस्तत्त्वा स मिथुनमुत्पादयते तैत्ति. २।६
 स तपोऽतप्यत [प्रश्नो. १।४+
 [-५+नृ.पू.१।१+ग.पू.१।३+
 स तथा वाचा तेनात्मनेदं
 सर्वमसृजत् बृ. जा. १।३
 स तथा अद्वया युक्तः ६. १।२।५
 अ. गी. ७।२२

स तस्मिन्नेवाकाशे क्रियमाणगाम
 बहुशोभमानासुमां हैमवतीं तां केनो. ३।१२
 होवाच किमेतद्यक्षमिति अव्यक्तो. ६
 स तस्या आद्यैर्द्वादशभिरक्षरै-
 ब्राह्मणमजनयत् अ. गी. ८।१०
 स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्
 सता सोम्य तदा सम्पन्नो भवति
 स्वमपीतो भवति तस्मादेनं
 स्वपितीत्याचक्षते छांदो. ६।८।१
 सतां हि सत्यं तस्मात्सत्ये रमन्ते
 सति दीप इवालोकः सत्यर्क इव
 वासरः । सति पुष्प इवामोद-
 श्रिति सत्यं जगत्तथा ॥ प्रति-
 भासत एवेदं न जगत्
 परमार्थतः महो. ५।१०७
 सति वज्रासने पादौ कराभ्यां
 धारयेद्बृहम्...कन्वंतत्रप्रपीडयेत् योगकु. १।४८
 सतीषु युक्तिष्वेतासु हठान्नियमयन्ति
 ये । चेतसो दीपमुत्सृज्य
 विचिन्वन्ति तमोऽन्धनैः मुक्तिको. २।४६
 स तूष्णीं मनसा ध्यायन्कथमिमे-
 ऽन्नाद्याः स्युः ग. पू. १।३, ६
 स तेजस्वतो लोकान्भास्वतोऽपहत-
 तमस्कानभिसिद्धयति छांदो. ७।११।३
 स तेजस्वी, स मे ददातु
 स तेनैव संवेदितस्तूर्णमेव जग-
 त्यामभिसम्पद्यते प्रश्नो. ५।३
 स ते प्राणा वाऽऽपो गृहीत्वा हृद-
 यमन्वालय्य जपेत् प्रा. हो. १।१२
 स तेषां तुर्यभागेनकर्मेन्द्रियाण्यसृजत् पैङ्गलो. १।४
 स तेषां सत्त्वतुरीयभागेन ज्ञाने-
 न्द्रियाण्यसृजत् पैङ्गलो. १।४
 स तेषां सत्त्वांशं चतुर्धा कृत्वा
 भागत्रयसमष्टितः पञ्चक्रिया-
 वृत्त्यात्मकमन्तःकरणमसृजत् पैङ्गलो. १।४
 सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि
 प्रीष्या कवयो मनीषेति उपैतं
 तदुपनमति यत्कामो भवति
 [बृ. जा. १।२+ नृ. पू. १।१

सतोऽसत्ता स्थिता मूर्ध्नि रम्याणां
 मूर्ध्नि रम्यता । सुखानां मूर्ध्नि
 दुःखानि किमेकं संश्रयाम्यहम् महो. ६।२४
 सतो ह्येष रसः बृ. उ. २।३।४
 सत्कर्मपरिपाकतो बहूनां जन्म-
 नामन्ते नृणां मोक्षेच्छा जायते पैङ्गलो. २।९
 सत्कर्मपरिपाकात्तु स्वविकारं
 चिकीर्षति । कोऽहं कथमयं
 दोषः संसारारुह्य उपागतः योगकुं. ३।२८
 सत्कारमानपूजार्थं भ.गी. १।७।१८
 सत्कुलभवोपनीतः सम्यगुपनयन-
 पूर्वकं...शान्तो दान्तःसञ्जयासी...
 देहस्यागं करोति स मुक्तो भवति ना. प. १।१
 सत्ता ब्रह्म न चापरा पा. ब्र. ४९
 सत्तामात्रप्रकाशैकप्रकाशं भावनाति-
 गम् (परमात्मानं ध्यायेत्) मैत्रे. १।१४
 सत्तामात्रस्वरूपोऽहं शुद्धमोक्ष-
 स्वरूपवान् ते. बि. ३।३०
 सत्तामात्रं चित्स्वरूपं प्रकाशं
 व्यापकं तथा । एकमेवाद्वयं ब्रह्म गोपालो. २।१४
 सत्तामात्रं हीदं सर्वं सदेव
 पुरस्तात्सिद्धम् नृसिंहो. ९।६
 सत्ता सर्वपदार्थानां नान्या
 संवेदनादृते महो. ५।४७
 सत्तासामान्यकोटिस्थेद्रागित्येवं
 पदे यदि । पौरुषेण प्रयत्नेन
 बलात्सन्त्यज्य बासनाम् ॥
 स्थितिं बध्नासि तत्त्वज्ञ क्षण-
 मप्यक्षयात्मिकाम् । क्षणेऽस्मि-
 न्नैव तत्साधु पदमासादयत्यलुम् अ. पू. ४।७४
 सत्तासामान्यपर्यन्ते यत्तत्कलन-
 योचितम् । पदमाद्यमनाद्यन्तं
 तस्य बीजं न विद्यते अ. पू. ४।६८
 सत्तासामान्यमेवैकं भावयन्केवलं
 विभुः । परिपूर्णः परानन्दी
 विद्यापूरितद्विभरः अ. पू. ४।६७
 सत्तासामान्यरूपे वा करोषि
 स्थितिमादरात् । तत्किञ्चि-
 द्ब्रह्मैकैव यत्नेनाप्रोषि तत्त्वम् अ. पू. ४।७६

सत्तु व्यापकतयाऽस्ति, तेजो-
 मयी चित् सामर. ९७
 सत्परानन्दरूपोऽस्मि चित्परानन्द-
 मस्यहम् ते. बि. ३।८
 सत्पुण्डरीकमयनं मेघामं वैद्युता-
 म्बरम् ।..चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं
 मुक्तो भवति संसृतेः गो. पू. १।५
 सत्यकामः सत्यसङ्कल्पः (आत्मा)
 सोऽन्वेष्टव्यः [छांदो. ८।१।५+
 सत्यकामोऽगुणो ह्येष बृहद्भामा-
 ऽयमीश्वरः ७।१,३
 सत्यकामो ह जाबालो जाबालां... (मा.)
 सत्यकामो ह जाबालो जाबालां
 मातरमामंत्रयाश्चक्रे ब्रह्मचर्यं
 भवति विवत्स्यामि किं गोत्रो-
 ऽहमस्मीति छांदो. ४।४।१
 सत्यचिद्धनमखण्डमद्वयं सर्वदृश्य-
 रहितं निरामयम् । यत्पदं
 विमलमद्वयं शिवं तत्सदाऽह-
 मिति मौनमाश्रय वराहो. ३।६
 सत्यज्ञानं सात्त्विकम्, धर्मज्ञानं
 राजसम्, तिमिरान्धं तामसम् शारीरको. ९
 सत्यज्ञानानन्दपूर्णलक्षणं तमसः
 परम् । ब्रह्मानन्दं सदा गृह्य-
 न्कथं बध्येत कर्मणा वराहो. २।१६
 सत्यज्ञानानन्दं परिपूर्णं सनातन-
 भेकमेवाद्वितीयं ब्रह्म पैङ्गलो. १।१
 सत्यज्ञानानन्दानन्तस्वरूपं
 (आत्मानमपरोक्षीकृत्य)
 सत्यज्ञाने निबध्यन्ते पुरुषाः पाश-
 बन्धनैः । मद्भावाच्च विमुच्यन्ते
 ज्ञानिनः पाशपञ्चरात् शिवो. १।१३
 सत्यत्वमस्ति चेत्किञ्चिदसत्यं न
 च सम्भवेत् ते. बि. ५।२२
 सत्यत्वेन जगद्भानं संसारस्य
 प्रवर्तकम् २ आत्मो. ४
 सत्यमामा धरेति वै
 सत्यभूयमेव भवति नैनं विद्याः स-
 मनुष्यः हिनस्ति बृह. ५।५।१

सत्यमभवत्, यदिदं किञ्च
 सत्यमवादिषं, तन्मामावीत्
 सत्यमविनाशि । अविनाशि नाम
 देशकालवस्तुनिमित्तेषु विन-
 श्यत्सु यन्नविनश्यतितदविनाशि
 सत्यमस्तिकर्तव्यमकर्तव्यमौदासीन्य-
 नित्यात्मविलापनहोमः
 सत्यानन्दरूपोऽहं चिद्वनानन्द-
 विग्रहः । अहमेव परानन्दः
 सत्यमिति सत्यलोकाः
 सत्यमिति सत्यवचा रायीतरः
 सत्यमीशानं ज्ञानमानन्दमद्वय
 सत्यमुद्धं स्वतस्सिद्धं शुद्धबुद्धमनो-
 दृश्यम् । एकमेवाद्वयं नेह
 नानास्ति किञ्चन
 सत्यमेकं ललिताख्यं वस्तु तद्वितीय-
 मखण्डार्थं परं ब्रह्म
 सत्यमेव जयते, नानृतं; सत्येन
 पन्था विततो देवयानः
 सत्यमेव परंब्रह्म, सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्म
 सत्यमौ सत्यमौ सत्यमोम्
 सत्यवद्भाति तत्सर्वं रज्जुसर्पवदा-
 स्थितम् । तदेतदक्षरं सत्यं
 तद्विज्ञाय विमुच्यते
 सत्यवाक्छुचिरद्रोही...स्थिरमति-
 रानृतवादी गिरिकन्दरेषु वसेत्
 सत्यबाग्ज्ञानवैराग्याभ्यां विशिष्ट-
 देहावशिष्टो वसेत् (यतिः)
 सत्यविज्ञानमात्रोऽहं सन्मात्रा-
 नन्दवानहम्
 सत्यसङ्कल्प आत्मारायः कालत्रया-
 बाधितनिजस्वरूपः
 सत्यसङ्कल्पः सत्यकामः
 सत्यसिद्धयोगो मठः
 सत्यस्य सत्यमनु यत्र युज्यते तत्र
 देवाः सर्वे एकं भवन्ति
 सत्यस्य सत्यम् [बृह. २।१।२०+
 सत्यस्यात्मा विद्युत् आत्मा तेजस
 आत्मेति वा अहमेतमुपास इति

तैत्ति. २।६
 तैत्ति. १।१२
 सर्वसारो. ६
 भावनो. ६
 ते. बि. ६।५९
 गायत्री. २
 तैत्ति. १।५।१
 जा. द. ९।३
 अध्यात्मो. ६३
 बहुचो. ३
 गुण्ड. ३।१।६
 त्रि.म.ना. ३।३
 अ.क्षिरः. ३।१६
 रुद्रह. ३४
 ना. प. ७।२
 ना. प. ६।१
 ते. बि. ३।४।१
 त्रि.म.ना. १।५
 मैत्रा. ७।७
 निर्वाणो. ३
 १ ऐत. ३।८।१
 मैत्रा. ६।३२
 कौ. त. ४।१७

सत्यहविरध्वयुः
 सत्यं च नारायणः
 सत्यं चानृतं च
 [छांदो. १।२।३+७।२।१+७।१
 सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च
 सत्यं ज्ञानमनन्तमानन्दं सर्वो-
 पाधिविनिर्मुक्तं कटकमुकुटा-
 गुपाधिरहितसुवर्णधनवद्विज्ञान-
 चिन्मात्रस्वभावात्मा यदा
 भासते तदा त्वंपदार्थः
 सत्यं ज्ञानमनन्तं च...वेदान्त-
 श्रवणं [जा. द. २।९+
 सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
 [सर्वसारो. ६+ना. च. १।५
 सत्यं ज्ञानमनन्तम्
 सत्यं ज्ञानमनन्तं यत्परं ब्रह्माह-
 मेव तत्
 सत्यं ज्ञानमनन्तं हि यज्ज्ञात्वा-
 ऽमृतमश्नुते
 सत्यं ज्ञानं सच्चिदानन्दरूपं व्याये-
 देवं तन्महो भ्राजमानम्
 सत्यं तदेतत्पण्डिता एव पश्यन्ति
 सत्यं तु पञ्चमे मासे परं ब्रह्म चतुर्थके
 सत्यं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति
 सत्यं भगवो विजिज्ञासे
 सत्यं नाम मनोवाक्कायकर्मभिर्भूत-
 हितयथार्थाभिभाषणम्
 सत्यं परं परं सत्यं सत्येन न
 सुवर्गाहोकाव्यवन्ते कदाचन
 सत्यं प्राणो हंसः शास्ताऽच्युतो
 विष्णुर्नारायणः
 सत्यं प्रियहितं च यत्
 सत्यं ब्रह्म प्रसुहिं सः
 सत्यं ब्रह्मेति सत्यं ह्येव ब्रह्म
 सत्यं रसः स्वादुत्तमो रसानाम्
 सत्यं बद्धं, धर्मं चर, स्वाध्याया-
 न्मा प्रमदः
 सत्यं वदन्त्यनृतमुद्रहन्ति क्षीरं
 पिबन्ति मधु ते पिबन्ति । सोमं

चित्त्यु. ५।१
 ना. च.ता. १।५
 तैत्ति. २।६+
 तैत्ति. १।९।१+
 सर्वसारो. ६
 दर्शनो. १।३२
 तैत्ति. २।१।१
 त्रि.म.ना. ३।३
 गान्धर्वो. १
 बराहो. ३।२
 गान्धर्वो. ४
 शु. र. २।५
 नृसिंहो. ९।९
 मृत्युलां. ३
 छांदो. ७।१६।१
 छांदि. १।१।३
 महाना. १।६।१३
 मैत्रा. ७।७
 भ.गी. १।७।१५
 ते. बि. ६।३।५
 बृह. ५।४।१
 इतिहा. ४४
 तैत्ति. १।९।१।१

पिबन्त्यमृतेन सार्वं मृत्योः पर-
स्तादभूता भवन्ति
सत्यं वदिष्यामि
[तैत्ति. १।१।१+१।१३
सत्यं वाचः प्रतिष्ठा, सत्ये सर्वं प्र-
तिष्ठितं, तस्मात्सत्यं परमं वदन्ति
सत्यं विज्ञानमनन्तं ब्रह्म यस्मिन्नि-
र्द्धारितं च प्रोक्तं च
सत्यं नै चक्षुरक्षिण्युपस्थितो हि
पुरुषः सर्वायेंषु वदति
सत्यं नै तद्रसमापो ज्योती
रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्
सत्यं नै तद्रसमापो ज्योती रसो-
ऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्
सत्यं शाण्डिल्य परं ब्रह्म निष्क्रिय-
मक्षरमिति
सत्यं श्रेष्ठं व्याहृतीनां तथैव
प्रज्ञानं सप्तमं जीवानाम्
सत्यं सत्यं ह्यमृतः सन्वभूव
सत्यं सम्मार्जनं स्मृतम्
सत्यं सुखं परिपूर्णमद्वयं (ब्रह्म)
सत्यं हीत्थं पुरस्ताद्योनि
सत्तमं हीन्नः स हीवाच मामेव
विजानीहि
सत्यं ह्येव ब्रह्म
सत्यः सत्यं पुण्यमासीत् पुण्यो
वा वैबिकं सत्यं सत्त्वमार्ष
सत्यं सत्त्वं सत्पथाय स्वाहा
सत्याः सुखमः संविमुश्चाद्वितीयः
सत्याकूरो दमोद्धवः
स त्यामः सात्त्विको मतः
स त्यामीत्यभिधीयते
सत्यात्तत्र कदाचिन्न प्रमदितव्यं
सत्योद्धनत्रिपुण्ड्राभ्याम्
सत्यात्म प्राणारामं मनवानन्दम्,
शान्तिसमृद्धममृतम्
सत्यादिरूपं शिवमेवंविदानो
विष्णुवादिबुद्ध्या दीयते-
ऽज्ञानसङ्गात्

इतिहा. ७
ऐतरे. शां.
कौलो. शां.
महाना. १७।१
शांडि. २।२
मैत्रा. ६।६
वनदु. १२१
महाना. ११।१०
शांडि. ३।१।२
इतिहा. ४४
गुह्यका. ७४
शिवो. १।२५
नृसिंहो. ९।९
नृसिंहो. ९।६
कौ. व. ३।१
बृह. ५।४।१
पारमा. ५।१
मैत्रे. १।११
कृष्णोप. १६
भ. गी. १८।९
भ. गी. १८।११
भ. जा. २।८
तैत्ति. १।६।४
सि. सि. ३

सत्यानन्दचिदात्मकं सात्त्विकं
मामकं धामोपास्व
सत्यानन्दस्वरूपोऽहं ज्ञानानन्द-
धनोऽस्म्यहम्
सत्यानन्दोऽस्म्यहं सदा
सत्यानृतोपभोगार्थो द्वैतीभावो
महात्मनः
सत्यान्न प्रमदितव्यम् । धर्मान्न
प्रमदितव्यम् । कुशलान्न प्रमदि-
तव्यम् । भूत्यै न प्रमदितव्यम् ।
स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न
प्रमदितव्यम्
सत्यामेवाप्येति यः सत्यामेवास्तमेति
सत्यासत्यादिहीनोऽस्मि सन्मात्रा-
न्नास्म्यहं सदा
सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा
सत्येन तिष्ठासेत्, सत्योऽयमात्मा
सत्येन न सुवर्गालोकाद्व्यवन्ते
कदाचन
सत्येन पन्था विततो देवयानः
सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा
सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्
सत्येन वायुरावाति सत्येनादित्यो
रोचते दिवि
सत्येनापिहिता गुहा
सत्येनैनं तपसा योऽनुपश्यति
सत्येनैनं मनसा साधु पश्यति,
सत्येनैनं मनसा वाचं नयति
सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितं, तस्मात्सत्यं
परमं वदन्ति
सत्ये ह्येव दीक्षा प्रतिष्ठिता
सत्यो जेनातिः सत्यान्तरात्मा
सत्योद्योगः सत्यः सत्कर्मा
सत्यं सत्यं विज्ञानमासीत्सत्यं
सत्याय स्वाहा
सत्यो ज्योतिः सत्त्वं प्राणाः
सत्त्वाधाराः सत्त्वं संज्ञानाः
सत्यः सत्त्वंकाशं ज्योतिषेस्वाहा

इतिहा. १।१
ते. वि. ३।३१
ते. वि. ३।९
मैत्रा. ७।११
तैत्ति. १।११।१
सुबालो. ९।७
मैत्रे. ३।२३
महाना. ११।३
सुबालो. ११।३
महाना. १६।१२
मुण्ड. ३।१।६
मुण्ड. ३।१।५
महाना. १७।१
इतिहा. १७
शेवाय. १।१५
इतिहा. ५०
महाना. १७।१
बृह. १।९।२३
पारमा. ४।१०
पारमा. ५।२

सत्यो नित्यः सर्वसाक्षी महेशो

नित्यानन्दो निर्विकल्पो निराख्यः शरभो. २१

सत्योऽसि सिद्धोऽसि सनातनोऽसि

मुक्तोऽसि मोक्षोऽसि मुदा मृतोऽसि ते. बि. ५।६१

सत्योऽहं गौरहं गौर्यहं सुगहं

यजुः सामाहमथवाङ्मिरसोऽहं अ.शिरः. १।१

सत्रासाहमवसे जनानां पुरुहूत-

मृगिमणं विश्वेदसम् आर्षे. १०।२

स त्रेधा त्मानं व्यकुरुत [बृह. १।२।३+]

स त्रेधा व्यभजतुर्भुवः स्वरिति मैत्रा. ६।३

स त्वमग्निं स्वर्ग्यमच्येधि. प्रब्रूहि तं

स त्वमेव, त्वमेव तत् (ब्रह्म) ग. पू. १।३

सत्त्वमाहो रजस्तमः

सत्त्वप्रधाना प्रकृतिर्मायेति कठो. १।१३

प्रतिपाद्यते

सत्त्वमथास्य पुरुषस्यान्तःशिक्षो- कैव. १।१६

पवीतत्वं ब्राह्मणस्य

सत्त्वमध्ये स्थितोऽच्युतः भ.गी. १७।१

सत्त्वरजस्तमांसि च गुणत्रयम्

सत्त्वरूपपरिप्राप्तचित्तास्ते ज्ञान- सरस्व. ३८

पारगाः । अचित्ता इति

कथ्यन्ते देहान्ते व्योमरूपिणः परब्र. २

सत्त्वशुद्धयेव सत्कर्म्मनिरर्तो

वर्जयत्यसत् भवसं. ४।९

सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः, स्मृति-

रुद्धिर्मे सर्वमन्थीनां विप्रमोक्षः छांदो. ७।२६।२

सत्त्वसमष्टित इन्द्रियपालका-

नस्तजत् पैङ्गलो. १।५

सत्त्वं रजस्तमध्येति गुणानेतान्

प्रचक्षते ना. महो. १६

सत्त्वं वा चक्रेकमासीद्यत्सत्त्व-

मुमयोरनुगोप्ता तत्सत्यं सत्यं पारमा. ४।९

पञ्चाशं सत्योय स्वाहा

सत्त्वं सत्त्ववतामहम् भ.गी. १०।३६

सत्त्वं सत्त्वात्मकं वा रजो रजस

आत्मकस्तमस्तमस आभारः

साकृत्तं निरीश्वरमीश्वराय स्वाहा

सत्त्वं सुखे सञ्जयति पारमा. १०।६

सत्त्वं ज्ञानावरजसम्

म.गी. १४।९

सत्त्वं ज्ञानावरजसम्

भ.गी. १३।२७

सत्त्वगुणगुविश्वेदमीश्वरो मात्मक

जगत् ना. पू. ४।६

सत्त्वं प्रकृतिर्जैर्मुक्तं

भ.गी. १८।३०

स त्वं प्रियान् प्रियरूपाश्च

कामानभिध्यायन्नचिकेतो-

कठो. २।३

ऽत्यसाक्षीः

भ.गी. १४।१०

सत्त्वं भवति भारत

भ.गी. १४।५

सत्त्वं रजस्तम इति

सत्त्वं रजस्तम इति अहङ्कार-

गोपालो. २।२९

श्रतुर्भुजः

सत्त्वं रजस्तमश्चैव न गुणास्तं

भजन्ति वै । यश्च सर्वगतः

साक्षी लोकस्यात्मेति कथ्यते

ना. महो. १३

सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानं

भ.गी. १४।१७

सत्त्वात्सम्प्राप्यते मनः । मनसा

प्राप्यते ह्यात्मा [मैत्रे. १।७+]

मैत्रा. ४।३

सत्त्वादधि महानात्मा महतो-

ऽव्यक्तमुत्तमम्

कठो. ६।७

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य

भ.गी. १७।३

सत्त्वानुबन्धादभ्यासाज्ज्ञानयोगात्

पुनः श्रुतात् । दृष्टश्रुतानुश्रुतानां

स्मरणात्स्मृतिरुच्यते

आयुर्वे. २१

सत्त्वान्तर्वर्तिनो देवाः कर्त्रहङ्कार-

चेतनाः

त्रि. ब्रा. २।७

सत्त्वापत्तिश्चतुर्थी स्यात्ततोऽसं-

क्षित्तिनामिका । पदार्थभावना

षष्ठी सप्तमी तुर्यगा स्मृता

महो. ५।२९

सत्त्वापत्तिस्तुरीया (भूमिका)

वराहो. ४।१

सत्त्वावशेष एवास्ते पञ्चमी

भूमिकां गताः

अध्यप. ३६

सत्त्वेव सोम्येदमम आसीदेक-

मेवाद्वितीयम् (ब्रह्म)

छांदो. ६।२।२

सत्समृद्धं स्वतस्सिद्धं शुद्धं

बुद्धमनोदृशम्

अभ्यासो. ६३

सत्सम्प्रदायस्थं...सद्गुरुमासाध...

स्वकुलानुरूपामभिसक्तकन्यां

विवाह...गार्हस्थ्योचितपञ्च-

विंशतिवत्सरं तीर्त्वा...साधन-
चतुष्टयसम्पन्नः सञ्ज्यस्तुमर्हति ना. प. २।१
[स्वर्ग इति च-]सत्संसर्गः स्वर्गः निरा. १९
स दक्षिणतः स उत्तरतः स छांदो. ७।२५।१
एवेदं सर्वम् प्रश्नो. २।५
सदसचासृतं च यत् भ. गी. ९।१९
सदसचाहमर्जुन मैत्रा. ४।२
सदसत्कलमयैर्हि पाशैः पशुरिव बद्धं
सदसत्सदसद्वापि न किञ्चिद्वस्तु
जायते अ. शां. २२
सदसद्देवहीनोऽस्मि सङ्कल्परहितो-
ऽस्त्यहम् मैत्रे. ३।७
सदसद्योनिजन्मसु भ. गी. १३।२२
सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं
प्रजानाम् मुण्ड. २।२।१
सदसत्पतिमद्भुतं प्रियमिद्रस्य
कान्त्यम् । सनि मेधामयासिषम् महाना. २।८+
[क. मं. १।१८।६+ वा. सं. ३२।१३
[+सा. वे. १।१०।१+ तै. भा. १०।१।४
सदा आनन्दमयोऽयं लोको सामर. ५
वेदविदो यं वदन्ति
सदाचाररतो भूत्वा द्विजो नित्य-
मनन्यधीः ॥ मयि सर्वात्मके
भावो मत्सामीप्यं भजत्ययम् ।
सैव सालोक्यसारूप्यसामीप्या
मुक्तिरिष्यते मुक्तिको. १।२२
सदाचारादखिलदुरितक्षयो भवति त्रि. म. ना. ५।४
सदा चैतन्यरूपोऽस्मि चिदानन्द-
मयोऽस्त्यहम् ते. बिं. ३।४
सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः श्वेताश्व. ४।१७
सदा जगदवस्थायां सुप्तवयोऽव-
विष्टः । आसौच्छासविहीन-
स्तु निश्चितं मुक्त एव सः अमन. २।५८
सदा कर्मावभाविताः भ. गी. ८।६
सदात्मनश्च विज्ञानदग्धाविद्यावि-
वर्जिताः । अमुष्य ब्रह्मभूतत्वा-
वर्जिताः कुत उद्भवः २ आत्मो. २५
सदाविज्ञोऽहमस्मीति प्रत्येकसंबन्धं
ये, न ते संसारिणो भवन्ति दत्तात्रे. १।१

सदादीप्तिरपारासृतवृत्तिः ज्ञानम् मं. ब्रा. २।५
सदादीप्तिराचमनीयम् आत्मपू. १
सदानन्दचिन्मात्रमात्मैवा-
न्यवहार्यं..ब्रह्मात्मैवात्र ह्येव न
विचिकित्स्यमित्यो सत्यं तदेत-
त्पण्डिता एव पश्यन्ति नृसिंहो. ९।९
सदानन्दधना परिपूर्णस्वात्मैक-
रूपा देवता भावनो. ९
सदानन्दं परमानन्दं समं
शाश्वतं सदाशिवं ब्रह्मादि-
वन्दितं योगिध्येयं परमं पदं
चिन्मात्रं गणेशो. ५।६
सदानन्दं परमानन्दं शान्तं शाश्वतं
सदाशिवं ब्रह्मादिवन्दितं योगि-
ध्येयं परमं पदं, यत्र गत्वा न
निवर्तन्ते योगिनः नृ. पू. ५।१६
सदा नादानुसन्धानात् सक्षीणा
वासना भवेत् (तु या)
[ना. बिं. ४९+ यो. शि. ६।७१
सदा बुद्धिमता भाव्यं योगिना
योगसिद्धये १ यो. त. ७५
सदाभ्यासे स्थिरीभूते न विधिर्नैव
च क्रमः अमन. २।५२
सदाऽमनस्कमर्च्यम् [मं. ब्रा. २।५+ आत्मपू. १
सदा योगं समभ्यसेत् अ. ना. २३
सदा रसनया योगी मार्गे न
परिसङ्गमेत् यो. कुं. २।४८
सदा रामोऽहमस्मीति तत्त्वतः
प्रवदन्ति ये । न ते संसारिणो
नूनं राम एव न संशयः रामो. २।९
सदाविचाररूपोऽस्मि निर्विचारो-
ऽस्मि सोऽस्त्यहम् मैत्रे. ३।१०
सदा वेदान्तवाक्यार्थं शृणुयात्सु-
समाहितः ना. प. ६।२४
सदाशिवः शक्त्यात्मा सर्वत्रा-
वस्थितः स्वयण्योतिः शुद्धो
शुद्धो नित्यो निरञ्जनः शान्तः
प्रकाशत इति दत्तो. १।१

(अथ) सदाशिवः संहारकाले

संहारं कृत्वा संहाराक्षं

मुकुलीकरोति

र. जा. ४४

सदाशिवाय विद्यादे सहस्राक्षाय

धीमहि । तन्नः सास्वः प्रचोदयात्

वनदु. १४१

सदाशिवोऽहं, परमप्रकृतिरहम्

अद्वै. भा. १

सदाऽसङ्गस्वरूपोऽस्मि निर्विकारो-

ऽहमव्ययः

ते. बि. ३।६

सदा सच्चिन्मयोऽस्यहम्

मैत्रे. ३।१६

सदासन्तोषो विसर्जनम्

आत्मपू. १

सदा समाधिं कुर्वीत हंसमन्त्र-

मनुस्मरन्

प्र. वि. ६५

सदा साक्षित्वरूपत्वाच्छिव एवास्मि

केवलः । इति धीर्या मुनिश्रेष्ठ

जा. द. १०।५

स समाधिरिहोच्यते

सदा साङ्गद्वेष्टयाऽश्वमेधमन्तं योगं

यजते, स महामखो महायोगः

अवधू. ६

स दिग्भिर्ज्योतिषा भाति च

तपति च

छांदो. ३।१८।६

सदिति प्राणः, तीत्यन्नम्, यमित्य-

सावादित्यः । (तत्सत्यम्)

१ ऐत. १।५।३

सदित्येतत् स युज्यते

भ. गी. १।७।२६

सदित्येवाभिधीयते

भ. गी. १।७।२७

सदृशं चेष्टते स्वस्याः

भ. गी. ३।३३

सदृशं त्रिषु छिन्नेषु सर्वासु च

विभक्तितु । वचनेषु च सर्वेषु

२ प्रणवो. १५

यन्न व्येति तदव्ययम्

राधिको. ५

सदेतद्राधिका गान्धर्वीति

नृसिंहो. ९।६

सदेव पुरस्तात् सिद्धं हि ब्रह्म

सदेव संमः स मुनिसमः स

नागसमः

गणेशो. ५।४

सदेव खोन्येदमम आसीत्

[छां. उ. ६।२।१+]

वेङ्कटो. १।१

स देवानपि गच्छति स ऊर्ज-

मुपजीवति

बृह. १।५।२

स देवानपि यच्छति स ऊर्ज-

मुपजीवति

बृह. १।५।१

स देवानाकर्षयति, स यक्षाना-

कर्षयति, स नागानाकर्षयति,

स महानाकर्षयति

नृ. पू. ५।१३

स देवानां निधनमनिधनम्

ब्रह्मो. १

सदैकरसरूपोऽस्मि सदाचिन्मात्रविग्रहः

ते. बि. ३।७

सदैवात्मा विद्युद्धोऽस्मि

यो. शि. ४।२०

सदैवानुज्ञैकरसो ह्ययमोङ्कारः,

नृसिंहो. ८।५

सदोज्ज्वलोऽविद्यातत्कार्यहीनः

स्वात्मबन्ध-(रहितः)-हरः

[गणेशो. १।४+नृसिंहो. २।८+]

रामो. २।४

सदोपनिषदं विद्यामभ्यसेनमुक्ति-

हेतुकीम्

ना. प. ३।७२

सदोषमपि न त्यजेत्

भ. गी. १।८।४८

सद्गुरुसमीपे सकलविद्यापरिश्रमज्ञो

भूत्वा...

गृही भवेत्

प. हं. प. १

सद्गुरुं चिद्धनं नित्यमानन्दधन-

मव्ययम्

अज्यात्मा. ६१

सद्गुरुं सर्वं सत्सदिति

नृसिंहो. ७।३

सद्भावभावनादाढ्याद्वासना-

लयमश्रुते

अज्यात्मा. १३

सद्भावेन ह्यजं सर्वमुच्छेदस्तेन

नास्ति वै

अ. शां. ५।७

सद्भावे साधुभावे वा

भ. गी. १।७।२६

सद्यःकुमारिकारूपैः पाके सिद्धे

जगद्भावेत्

ते. बि. ६।७९

सद्योजातमुत जहात्येषः

चिन्त्यु. १।४।१

सद्योजातशिशुज्ञानं

अ. पू. ३।१६

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय

वै नमो नमः [महाना. १।०।४+ते. आ. १।०।३।१]

सद्योजातं मही पूषा रमा ब्रह्मा

त्रिवृत्स्वरः

पञ्चम. १

सद्योजाता तु या कन्या भोग-

योग्या भवेज्जगत्

ते. बि. ६।९१

सद्योजातात्पृथिवी

बृ. जा. १।५

सद्योजातादिपञ्चब्रह्ममंत्रैः परिगृह्य

...रेखाः प्रकुर्वीत

का. ब्रह्मो. २

सद्योजातादिपञ्चब्रह्ममंत्रैर्मन्त्रैः

सङ्गृह्य...रेखाः प्रकुर्वीत

जावाल्यु. ६

सद्योजातादिभिर्मन्त्रैर्नमस्कृत्य पुनः

पुनः । प्रदक्षिणत्रयं कृत्वा

शिवरूपमिति स्फुटम्

१ चिन्मो. ८

सद्योजातास्यसंज्ञाः सम्बभूवुः सि. शि. ९
 सद्योजातेन वै पादाश्च सर्वाङ्गः
 प्रणवेन तु [बृ. जा. ३।३२+ ४।३
 सद्योजातेन सदा सम बराहो. ३।९
 सद्युपया माययोत्पादिताः काम-
 क्रोधादयो गुणाः संसारोत्पत्ति-
 प्रयोजका भवन्ति सामर. १०२
 सद्युप परमं ब्रह्म त्रिपरिच्छेद-
 वर्जितम् कठरु. ३०
 सद्युपसद्वा स्थितिर्वापि यस्य
 नास्ति क्षराक्षरम् ते. बि. ५।११
 सद्युपमनिर्वाच्यं ब्रह्म त्रि.म.ना. १।३
 स द्वितीयमैच्छत् बृह. १।४।३
 सद्युत्तमिव सर्वे देवास्तं सेवन्ते त्रि.म.ना. ८।७
 स ध्यातुर्वाग्लो भूत्वा भूरिति
 व्याहृतिर्गायत्रं छन्द ऋग्वेदः ऋतुर्वे. १
 स न हन्तः कामवरं ददातु चिरयु. ११।८
 सनसुजातादिसनातनाद्यैरीड्यो शरभो. २०
 स न दधतिऽयं मुच्यते छांदो. ६।१६।२
 स न साधुना कर्मणा भूयान्, नो
 एवासाधुना कनीयान् बृह. ४।४।२२
 स नः पश्यतिदुर्गाणि विश्वा महाना. ६।१७
 स नः पश्यतिदुर्गाणि विश्वा महाना. ६।६
 स नः सुवः संशिक्षाणि भ.गी. ११।१८
 सनातनत्वं पुरुषो मतो मे
 स नारमदैकः स आत्मानम-
 भिध्यायन् बह्वीः प्रजा ससृजत् मैत्रा. २।६
 स नारायणो भवतीत्युपनिषत् त्रि.म.ना. २।९
 स नारायणो विराट्पुरुषो भवति ना.ड.ता. ३।१
 स नाराशंसीरधीते स ग. शो. ५।४
 स नारमर्षीते ग. शो. २।१
 स निधीनां त्वं निधिपतिः प. हं. प. ११
 स निध्यामर्षसहिष्णुः । स बह्वि-
 मर्षितः प. हं. प. ११
 स नियच्छति मधुकरः श्वेद
 विकर्मकः प. हं. प. १

स निर्गुणः स निरहङ्कारः स
 निर्विकल्पः स निरीहः स
 निर्विकारः... गणेशो. २।४
 स निर्देष्टुमशक्यो यो वेदवाक्यै-
 रान्यतः । यस्य किञ्चिद्बुद्धि-
 नास्ति किञ्चिदन्तः कियन्न च ते. बि. ५।९
 स निश्चयेन योक्तव्यः भ. गी. ६।२३
 स निष्कर्ममार्गीयो भवति सामर. ९८
 स नैव व्यभवत्, स शौद्रं वर्ण-
 मसृजत बृह. १।४।१३
 स नैव व्यभवत्, स विश्वमसृजत बृह. १।४।१२
 स नैव व्यभवच्छ्रेयोरुपमसृजत बृ. ड. १।४।१४
 स नोत्तस्थौ, तं पाणिनापेवं
 बोधयाश्चकार बृह. २।१।१५
 स नो बन्धुर्जनिता स विधाता
 धामानि वेद भुवनानि विश्वा महाना. २।५
 स नो बुद्ध्या शुभया संयुतकु [श्वेता. ४।१+४।१२
 स नो भूतो यो वाऽसृतात्मा
 सुपुष्टिमस्मत्पितरं पवित्रं स
 नोऽस्तु भूत्यैकमलं परायत्वाहा पारमा. ५।९
 स नो सुखं तु दुरितादवघात् सहवै. ९
 स नो सुखोऽस्मायतां पात्व हंसो
 ...क्योर्जीवा जरामशीमहि महाना. १३।९
 स नो हि मायया जन्म युज्यते
 न तु तत्त्वतः ब्रह्मत. २७
 सन्ततं शिलाभिस्तु छम्बत्या-
 कोशसन्निभम् । तस्यान्ते सुषिरं
 सुखं तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् महाना. ९।८
 सन्तमेनं ततो विदुः तैत्ति. २।६
 सन्ति पुत्राः सुबहवो दरिद्राणाम-
 निच्छताम् । नास्ति पुत्रः समृद्धानां
 विचित्रं विविचेष्टितम् भवसं. १।१९
 सन्तिष्ठेन्नियमेन छिन्नोप. १
 सन्तीन्द्रियाणि सन्त्यर्था...योगो
 न च नास्ति रुद्र
 सन्तुष्ट इति कथ्यते
 सन्तुष्टः सततं योगी
 सन्तुष्टो येन केनचित्
 भाषुर्वे. ३
 महो. ४।१६, १७
 भ. गी. १२।१४
 स. गी. १२।१९

सन्ते पर्यासि सयु यन्तु वाजाः कौ. त. २।८
 सन्तीषामृतपानेन ये शान्ता-
 स्मृतिमागताः । आत्मारामा महो. ४।३५
 महात्मानस्ते महापदमागताः
 सन्तीषामोदमधुरा प्रथमोदेति
 भूमिका । भूमिप्रोदितमात्रो-
 ऽन्तरमृताङ्कुरिकेव सा अक्षयुष. ३०
 सन्तोषो नाम यदृच्छालाभ-
 सन्तुष्टिः शांदि. १।२।१
 सन्त्यक्तवासनान्मौनाहते
 नास्त्युत्तमं पदम् मुक्तिको. २।२१
 सन्त्यजेत्सर्वकर्माणि लोकाचारं
 च सर्वशः । कृमिकीटपतङ्गांश्च
 तथा योगी वनस्पतीन् ना. प. ६।४१
 सन्त्यज्य हृदुद्देशानं देवमन्यं
 प्रयन्ति ये । ते रत्नमभिवा-
 ञ्छन्ति त्यक्तहस्तस्थकौस्तुभाः महो. ६।२०
 सन्त्वा सिन्धुमि मन्त्रेण गोमूत्रं
 गोमये क्षिपेत् बृ. जा. ३।९
 सन्दिग्धः सर्वभूतानां वर्णाश्रम-
 विवर्जितः । अन्धवज्रह्वयापि
 मूकवच्च महीं चरेत् ना. प. ४।३६
 सन्दिग्धायामपि भृशं शुभामेव
 समाचर । शुभायां वासना-
 वृद्धौ न दोषाय मरुत्सुत मुक्तिको. २।९
 सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः
 सन्देहस्त्वेव आत्मन इति होत्राच्च
 सन्देहस्ते व्यशीर्यद्यन्मां नाग-
 मिष्य इति छांदो. ५।१५।२
 सन्धां च याँ सन्धे ब्रह्मणैषः
 सन्धिनी तु धामभूषणशय्यासना-
 विमित्रमृत्याविरूपेण घरीता
 सन्धिं कृत्वा तु मनसा चिन्तये-
 द्वात्मनाऽऽत्मनि छांदो. ५।१५।२
 सन्धिं समाधावात्मन्याचरेत्
 सन्धीयते प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे-
 त्नाज्ञाद्येन सुकर्येण लोकेन चित्त. १।३।९
 सन्धुः सन्धुक्षणानां संयोगः
 सन्धधानः पारमा. ४।६

सन्धौ जीवात्मनोरैक्यं सन्ध्यासः
 परिकीर्तितः मैत्रे. २।१७
 सन्धौ सन्धौ मिश्रितानां यदा
 विश्राम्यते मनः । तदा देहो
 गृहं राज्यं निर्दोषा च
 मतिर्भवेत् विश्रामो. ९
 सन्ध्योर्ब्राह्मणः काले वायुमाकृष्य
 यः पिबेत् । त्रिमासात्तस्य
 कल्याणी जायते वाक्सरस्वती शांदि. १।७।४६
 सन्ध्योर्ब्राह्मणकालेऽपि मध्याह्ने
 वाऽथवा सदा । बाह्यं प्राणं
 समाकृष्य पूरयित्वोदरेण च ।
 नासाग्रे नाभिमध्ये च पादा-
 ङ्गुष्ठे च धारयेत् ॥ सर्वरोग-
 विनिर्मुक्तो जीवेद्बर्षशतं नरः जा. द. ६।११
 सन्ध्यं तृतीयं स्वप्नस्थानम्
 सन्ध्याक्रिया मनीयागस्य लक्षणम्
 सन्ध्यामुपास्य कुर्वीत नित्यं देह-
 प्रसाधनम् । स्पृष्टोद्धन्दे च कपिलां
 प्रदद्याच्च गवां हितम् बृह. ४।३।९
 सन्धिधानात्समस्तेषु जन्तुष्वपि च
 सन्ततम् । सूचकत्वाच्च रूपस्य
 सूत्रमित्यभिधीयते पा. म. ३
 सन्नियन्तेन्द्रियग्रामं
 सन्मात्रमहमेव हि शिबो. ७।१२
 सन्मात्रास्स्यहं सदा
 सन्मात्रो नित्यः शुद्धो बुद्धः
 सत्यो मुक्तो निरञ्जनो विमु-
 रव्ययानन्दः परः प्रत्यगेकरसः
 प्रमाणैरेतैरवगतः यो. शि. ५।१०
 सन्मात्रोनिरस्ताविद्यातमोमोहोऽहं
 सन्मूलाः सौम्येमाः सर्वाः प्रजाः
 सदायतनाः सत्प्रतिष्ठाः म. गी. १२।४
 सन्त्यस्तमिति यो ब्रूयात्कण्ठस्थ-
 प्राणवानपि । सारिताः तै. वि. ३।५९
 पितरस्तेन इति वेदानुशासनम् मैत्रे. ३।१२
 सन्त्यस्तसर्वेन्द्रियकर्णोऽनेकजन्मा-
 र्जितपुण्यपुण्यपक्वैवत्यफलो-

ऽखण्डानन्वनिरस्तसर्वकेश-
कृमिलो ब्रह्माहमस्मीति
कृतकृत्यो भवति मं. प्रा. ३।३

संन्यस्तसर्वसङ्कल्पः समः शान्त-
मना मुनिः । संन्यासयोग-
युक्तात्मा ज्ञानवान्मोक्षवान्भव
संन्यस्तं मया संन्यस्तं मया
संन्यस्तं मयेति मन्द्रमध्यम-
तारध्वनिभिस्त्रिवारं त्रिगुणीकृत-
प्रबोधारणं कृत्वा...तत्त्वमस्या-
दिवाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं
कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् प. हं. प. ५

संन्यस्तं मया, संन्यस्तं मया,
संन्यस्तं मयेति त्रिरुक्त्वाऽभयं
सर्वभूतेभ्यो मत्तः प्रवर्तते आरुणि. ३

संन्यस्तं मयेति त्रिवारमभिमन्त्रयेत् १ सं. सो. २।६

संन्यस्तं मयेति त्रिवारमुचरेत् याज्ञव. १

संन्यस्ता यद्यपि महावाक्योपदेशे
नाधिकारिणः [ना.प. ३।१+ १ सं. सो. २।३

संन्यस्याग्निं न पुनरावर्तनं यन्मन्यु-
र्जायामावहेदिति २संन्यासो. १०

संन्यस्याग्निं न पुनरावर्तयन्मृत्युर्ज-
मावहेदित्यध्यात्ममन्त्रान्पठेत् कठरु. ४

संन्यस्याग्निं न पुनरावर्तयेत् ।
यन्मन्युर्जायामावहेदित्य-
ध्यात्ममन्त्राञ्जपेत् कठश्रु. २२

संन्यस्यास्ते सुखं वशी म. गी. ५।१३

संन्यस्याध्यात्मचेतसा म. गी. ३।३०

संन्यासकालेऽप्यलंबुद्विपर्यन्तमधीत्य
सर्वतन्त्रं कटिसूत्रं कौपीनं
मुण्डं वस्त्रं कमण्डलुं सर्वमप्यु-
विश्याद्य जातरूपधरश्चरेत् ना. प. ५।६

संन्यासमेवैराचारभेदः कथं ?
इति चेत्-तत्त्वतस्त्वेक एव
संन्यासः, अज्ञानेनाशक्तिवशा-
त्कर्मलोपश्च त्रैविध्यमेत्य...
चातुर्विध्यमुपागतः ना. प. ५।२

संन्यासयोगयुक्तात्मा म. गी. १।२८

संन्यासयोगायतयः शुद्धचेतनाः मुण्ड. ३।२।६

संन्यासयोगिनो दान्तौ विद्धि
शान्तौ मुनीश्वर
संन्यासस्तु महाबाहो
संन्यासस्य महाबाहो
संन्यासं कर्मणां कृष्ण
संन्यासं कवयो विदुः
संन्यासं पातयेद्यस्तु पतितं न्यास-
येत्तु यः । संन्यासविघ्नकर्ता
च त्रीनेतान्पतितान्विदुः १ सं. सो. २।२
म. गी. ५।२

संन्यासः कर्मयोगश्च
(सः) संन्यासः षड्विधो भवति
कुटीचक-बहूदक-हंस-परम-
हंस-तुरीयातीतावधूतश्चेति १ सं. सो. २।१३

संन्यासः षड्विधो भवति-कुटी-
चको बहूदको हंसः परमहंसः
तुरीयातीतोऽवधूतश्चेति ना. प. ५।५

संन्यासिनं द्विजं दृष्ट्वा स्थानाचलति
भास्करः । एष मे मण्डलं
भित्त्वा परं ब्रह्माधिगच्छति १ सं. सो. २।६

संन्यासिनां पण्डितशास्त्रिणां च
पाण्डित्यमस्तीह परोपदेशे ।
स्वयं न कुर्वन्ति विधिं न
सान्ध्यं भवन्तु लोकाः खलु
सावधानाः भवसं. १।५८

संन्यासिनोऽपि दृश्यन्ते देवस-
न्दूषिताशयाः याज्ञव. ५

संन्यासेन देहत्यागं करोति स
परमहंसपरिव्राजको भवति प. हं. प. ८

संन्यासेन देहत्यागं करोति स
परमहंसो नामेति याज्ञव. ३

संन्यासेनाधिगच्छति म. गी. १८।४९

संन्यासे निश्चयं कृत्वा पुनर्न च
करोति यः । स कुर्यात्कृच्छ्रमात्रं
तु पुनः संन्यस्तुमर्हति १ सं. सो. २।१

संन्यासोपनिषदेषु संन्यासिपटला-
श्रवम् । सत्तासामान्यविभवं
स्वमात्रमिति भावये १ सं. सो. १।१

संन्यासेनैव देहत्यागं करोति स
कृतकृत्यो भवति ना. प. ३।८७

स पञ्चधाऽऽत्मानं प्रविभज्योच्यते
यः प्राणोऽपानः समान उदानो
व्यान इति मैत्रा. २।६

स पञ्चभूतानां रजोऽंशश्चतुर्धा
कृत्वा भागत्रयात्पञ्चवृत्त्यात्मकं
प्राणमसृजत् पैङ्गलो. १।४

स परमहंसः सोऽवधूतः स ब्राह्मणः निरा. ३२

स परमानन्दस्य ब्रह्मणो नाम ब्रह्मेति नृसिंहो. ७।३

स परिब्राह्म सर्वक्रियाकारकनिवर्तकः ना. प. ९।२२

स परेऽक्षरे आत्मनि सम्प्रतिष्ठते प्रश्नो. ४।९

स परंपरीरमति बाधमानां बृहन्मिमाय
जमदग्निदत्ता । आ सूर्यस्य
दुरिता ततानश्रवो देवेष्वसृत्-
मंजुर्यम् [ऋक्सं. ३।३।२२।१+ हयग्री. ९

स पर्येगाच्छुक्रमकायमग्रं मन्त्रा-
विर* शुद्धमपापविद्धम् ईशा. ८

स पश्चात् स पुरस्तात् स दक्षिणतः
स उत्तरतः स एवेद* सर्वम् छांदो. ७।२५।१

स पुत्र-मित्र-कलत्राप्तवन्धादीनि...
संन्यस्य...कटिसूत्रं च कौपीनं
वण्डं वस्त्रं कमण्डलुं सर्वमभ्यु-
विसृज्याथ जातरूपधरश्चरेदा-
त्मानमन्विच्छेत् ना. प. ३।८७

स पुत्रेणैवास्मिँल्लोके प्रतितिष्ठति बृह. १।५।१७

स पुत्रः प्रत्याहाहं ब्रह्माहं यज्ञोऽहं
लोक इति बृह. १।५।१७

स पुनर्द्विविधो बिन्दुः पाण्डरो
लोहितस्तथा । पाण्डरं शुक्ल-
मित्याहुर्लोहिताख्यं महारजः यो. चू. ६०

स पूजितः सन् सुमुखोऽभिभूत्वा
वन्तीमुखोऽभीष्टमनन्तशक्तिः हेरम्बो. १०

स पूर्णः खलु वा अद्धाऽविकलः
सम्पद्यते यज्ञः मैत्रा. १।१

स पूर्ववज्जनयन्तवे धनम् चित्यु. १०।४

स इमे लोका येषु चरन्ति प्राणा
गुहाशया नि- (नि-) हिताः सप्त
सप्त [मुण्ड. २।८+ महाना. ८।२

सप्तकोटियोजनविस्तीर्णोविष्णुलोकः राधोप. १।३.

सप्तकोटिमहामञ्जं जन्मकोटि-
शतप्रदम् ते. वि. ३।७३

सप्त च वै शतानि विंशतिश्च
संवत्सरस्याहोरात्राः ३ ऐत. २।१।२

सप्तजन्मकृतात्पापान्मुच्यते यस्तु
पर्वभिः । कन्यागते यदा सूर्ये
तिष्ठन्ति पितरो गृहे इतिहा. ८८

सप्तद्वीपवती भूमिर्दक्षिणार्थं नाव-
कल्पते तस्माच्छुद्धया यां
काञ्चिद्वां दद्यात्सा दक्षिणाभवति नृ. पू. ५।८

सप्तधातुमयं देहमग्निना रजये-
द्धुवम् । व्याधयस्तस्य नश्यन्ति.. यो. शि. १।५६

सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्मात्
सप्तार्चिषः सप्ति (धा)-धः सप्त
होमाः [मुण्ड. २।१।८+ महाना. ८।२

सप्तभूमिषु जीवन्मुक्ताश्चत्वारः
सप्तमभूम्यां विहरन्द्ब्रह्मविद्वरिष्ठो
भवति वराहो. ४।१

सप्तमं परमं तत्त्वं यो जानाति
स मोक्षमाक् वराहो. ४।१

सप्तमं भूचक्रमं गुष्ठमात्रम्
सप्तमः सूर्यो भवति अमन. १।१३

सप्तमी तुर्यगा स्मृता (ज्ञानभूः)
सप्तमे गूढविज्ञानं परावाचा तथाऽष्टमे
सप्तमे चलनसमर्थो भवति सौभाग्य. ३०

(३४) सप्तमे जम्बूद्वीपः सम्य-
गज्ञानं शिल्पा ना. पू. ता. १।१

सप्तमे धामनि तृतीयमेतस्या एव
पूर्वोक्तायाः कामाद्यं द्विधाधः-
कं मदनकलाद्यं शक्तिबीजं
वाग्भवाद्यं तयोरर्धावशिरस्कं
कृत्वा नन्दिविद्येयम् महो. ५।२५

सप्तमेन तु पिण्डेन दीर्घमायुः
प्रजायते हंसो. ९

सप्तमे मासे जीवेन संयुक्तो भवति
सप्तमे रक्तवर्णो विष्णुरिति
द्वारपालाः गभो. ३

सप्तयुञ्जन्ति रथमेकचक्रम्
[ऋ. मं. १।१६४।२+ अथर्व. ९।९।२+ राधोप. २।१

सप्तयुञ्जन्ति रथमेकचक्रम्
[ऋ. मं. १।१६४।२+ अथर्व. ९।९।२+ चित्यु. १।१८

सप्तयुञ्जन्ति रथमेकचक्रम्
[ऋ. मं. १।१६४।२+ अथर्व. ९।९।२+ तै. भा. ३।११।८

सप्तमः प्रलयेनापि परे लीनस्य योगिनः ।

आ ब्रह्मविद्यनेतृत्वं श्रुतिज्ञानं

च वर्तते

सप्तमोऽपि बुद्धं भवति

सप्तमीणां ध्रुवस्यापि लोका ऊर्ध्व-

रदावली

सप्तमं तु रुद्रोऽपि सप्तमालाधि-

वैवत्सम् । तद्वारणान्महाश्रीः

स्यान्महद्वारोग्यमुत्तमम्

(अथ) सप्तविधस्य वाचि सप्त-

विधं सामोपासीत

सप्तविध इति प्रोक्तः शिवः सर्व-

जगत्पतिः

सप्तशतं पुरुषस्य मार्गाणि

सप्त सागरा जायन्ते पुरुषोत्तमात्

सप्तस्वरमयो नादो लौकिका-

लौकिकात्मकः । ब्रह्मानन्दानु-

सन्वाची येनेदं धार्यते जगत्

सप्त इति प्रोक्तो भ्रातृव्यानवरुणद्वि

सप्तहोता सप्तधा विक्रमः

सप्तात्मानं चतुरात्मानं चतुस्सप्ता-

त्मानमोहकारं (सर्वेश्वरं द्वाद-

शान्ते) तुरीयमानन्दामृतवरुणं

चोदयन्ते

सप्तार्चिषः समिधः सप्त होमाः

सप्तात्मानं चतुरात्मानं मकारं

महागणं नामो

सप्तात्मानं चतुरात्मानं मकारं रुद्रं

भूमध्ये

सप्तात्मानं चतुरात्मानमुकारं

विष्णुं हृदये

सप्तार्चिषः समिधः सप्त जिह्वाः

सप्तास्यासन्नं परिधयः [मुद्रलो. १।६+

[क. मं. १०।९०।१५+

स प्रज्ञानप्रतिगुह्यणीत-विद्वान्

स प्रज्ञापतिरातुष्टुभाभ्यामर्धर्चा-

भ्यामर्धरात्रावकरपयत्

स प्रज्ञापतिरेकः पुष्करपर्णे

सप्तमवत् [क. जा. १।१+

अमन. १।५७

गर्भो. ३

गुह्यका. १६

क. जा. ३१

छांदो. २।८।१

शिवो. १।१४

निरुक्तो. २।१

सि. वि. २

गान्धर्वो. २

बृह. २।२।१

चित्पु. १।१६

नृसिंहो. ३।४

मुण्ड. २।१।८

नृसिंहो. ३।४

नृसिंहो. ३।४

नृसिंहो. ३।४

महाना. ८।२

चित्पु. १।२।३

वा. सं. ३।१।५

सहवै. ९

अव्यक्तो. ६

क. पू. १।१

स प्रणवमधीते, यः प्रणवमधीते

स सर्वमधीते

स प्रणवमेवास्याः पुरोगमकरोत्

स प्रणवया तयैवर्चा हविष्यात्वा-

ऽऽत्मानमात्मन्यग्नौ जुहुयात्

स प्रणवं सर्वं पञ्चमं भवति

स प्रयोजनता तेषां स्वप्ने विप्रति-

पद्यते [वैतथ्य. ७+

स प्रशान्तः सकृज्जोतिः समाधि-

रचलोऽभयः

स प्राणमसृजत, प्राणाच्छ्रद्धां खं

वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियम्

स प्राणस्तदु वाङ्मनः

स प्राणस्य प्राणः

स प्रियाणां त्वं प्रियपतिः

स बाह्यमभ्यन्तरनिश्चलात्मा

ज्ञानौलक्या पश्यति चान्तरात्मा

स बाह्याभ्यन्तरव्यापि निष्कलोऽहं

निरञ्जनः

स बाह्याभ्यन्तरान्भावान् स्थूलान्

सूक्ष्मतरानपि । तुर्यमालम्ब्य

कायान्तस्तिष्ठामि स्तम्भितस्थितिः अ. पू. ३।१३

स बाह्याभ्यन्तरे देहे ह्यथ ऊर्ध्वं च

दिक्षु च । इत आत्मा ततो-

ऽप्यात्मा नास्त्यनात्ममयं जगत्

स बाह्याभ्यन्तरेऽपरिमितद्युतिनिभं

तत्त्वं महाकाशम्

स बाह्याभ्यन्तरे सूर्यनिभं सूर्याकाशम्

स बाह्याभ्यन्तरो ह्यजः

स बिन्दुः सोऽपि पुरुषः शिव-

सूर्येन्दुरूपवान्

स बुद्धिमान्मनुष्येषु

स ब्रह्म, अयमात्मा

स ब्रह्मचारिवृत्तिश्च स्तम्भोऽथ

फलितस्तथा

स ब्रह्मणः पर एता भवति

स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा

स ब्रह्मवित्स लोकवित्स देववित्स

भूतवित्स आत्मवित्स सर्वविविति

नृ. पू. ५।१५

शौनको. १।३

अव्यक्तो. ५

नृ. पू. ३।२

अ. शां. ३२

अद्वैतो. ३७

प्रभो. ६।४

मुण्ड. २।२।२

चित्पु. ७।३

गणेशो. २।१

पैङ्गलो. ४।१२

१ सं. सो. २।२१

अ. पू. ३।१३

महो. ६।१०

मं. ब्रा. ४।१

मं. ब्रा. ४।१

मुण्ड. २।१।२

रामर. ५।८

अ. गी. ४।१८

गणेशो. २।१

मन्त्रिको. ११

मैत्रा. ४।४

अ. गी. ५।२१

बृह. ३।१।१

स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठाम्	मुण्ड. १।१।१
स ब्रह्म स ब्रह्म स ब्रह्म गणेशः	गणेशो. २।४
स ब्रह्म स हरिः स इन्द्रः स कालामिरुद्रः	गान्धर्वो. २
स ब्रह्माणमेव विवेश, स मानसान् समपुत्रानसृजत्	सुबालो. १।३
स ब्रह्मालङ्कारेणालङ्कृतो ब्रह्म विद्वान्ब्रह्मैवाभिप्रैति	कौ. त. १।४
स ब्रह्मा स ईशानः (सेन्द्रः) सोऽश्वरः परमः स्वराट् [महो. १।९+	चतुर्वे. ६
स ब्रह्मा, स मुक्तिः, साऽतिमुक्तिः	बृह. ३।१।६
स ब्रह्मा स विष्णुः स इन्द्रः स शमनः स सूर्यः स चन्द्रः	निरालं. १०
स ब्रह्मा स विष्णुः स रुद्रः स इन्द्रः स सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि	शांडि. ३।१।३
स ब्रह्मा स विष्णुः स शिवः स प्रजापतिः स इन्द्रः सोऽग्निः समभवत्	ग. पू. १।३
स ब्रह्मा स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽश्वरः परमः स्वराट् [कैव. ८+ [कालिको. ६+	ना. पू. ता. ३।१ सूर्यता. १।२
स ब्रह्मा स शिवः....स्वराट् त- स्तान्नश्चतुर्थं पादं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं गच्छति	नृ. पू. १।४
स ब्रह्मा स हरिः सेन्द्रः स काला- मिरुद्रः स चन्द्रमाः स नक्षत्राणि स चराचरात्मकं जगत्	गान्धर्वो. २
स ब्रह्मेति हि विज्ञेय ऋषिर्ब्रह्म- मयो महान्	कौ. त. १।७
स ब्रूयात्प्राणा वसव इदं मे प्रातश्चवनम्	छांदो. ३।१६।३
स ब्रूयाद्यावान् वा अयमाकाश- स्त्वानेषः	छांदो. ८।१।३
स ब्रूयात्प्राणं जरयैतज्जीर्यति, न ध्वज्जात्यं हन्यते	छांदो. ८।१।५
स ब्रह्मवान् युगसन्धिकाले स्वेन रूपेण युगे युगे तेनैव जाय-	

मानः स्वयमेव सौमित्रिरैवाके वंशे जायमानो रक्षांसि सर्वाणि विनिष्पन्नंश्चातुर्वर्ण्यधर्मान्प्रवर्तयति	सङ्कर्षणो. ३
स भाणकरोत्सैव वागभवत्	बृह. १।२।४
स भाणमकरोत्सैववागभवत्(मा.पा.)	बृ. च. १।१।४
सभास्थलं स्मशानमिव...कारागृह- विनिर्मुक्तचोरवत्पुत्राप्तबन्धु- भवस्थलं विहाय दूरतो वसेत् (एवं) स भिक्षुः सौवर्णादीनां नैव परिग्रहेत्	ना. प. ७।१ प. हं. ९
स भूतः स भव्यं जिज्ञासकूत ऋतजारयिष्ठा श्रद्धा सत्यो महस्वान् तपसो वरिष्ठा	महाना. १।७।१३ १ ऐत. ३।७।१
स भूतानामधिपतिः	भवसं. २।५३
स भूतेषु च सर्वात्मा वासुदेवस्तथा स्मृतः	
स भूमिकावानित्युक्तः शेषस्त्वाय इति स्मृतः । विचारनाम्नीमि- तरामागतो योगभूमिकाम्	अव्युप. १३
स भूमिं विश्वतो (सृत्वा) वृत्वा- ऽत्यतिष्ठदशाङ्गुलम् [ऋ. मं. [वा. सं. ३।१।१+श्वेताश्व. ३।१४+	१०।२०।१ चित्त्यु. १३।१ श्वेताश्व. १।१३ चित्त्यु. १३।१
स भूय एवेन्धनयोर्निगृह्यः	बृह. ६।२।१९
स भूतो भ्रियमाणो बिभर्ति	ते. वि. ५।१२
स भो ३ इति प्रतिशुश्राव	कौ. त. ३।९
सम आत्मा न संशयः सम आत्मेति विद्यात्	
समकूपतां यावापृथिवी समकल्पेतां वायुश्चाकाशं च समकल्पन्ता- मापश्च तेजश्च तेषां सङ्कल्प्यै वर्षं सङ्कल्पते	छांदो. ७।३।३ म. गी. ४।२३
सममं प्रविलीयते	जा. द. ५।५
समग्रीवशिरोकायः संवृतास्यः सुनिश्चलः	शांडि. १।५।२
(विद्वान्) समग्रीवशिरोनासाम- हृद्भूमध्ये शशभृद्विम्बं पश्यत् (तद्यथा-) समञ्जनवता पूर्णरवेण (समाहितेन) रथेन यं कामं कामयते तमभ्यभूते...	संहितो. १।६।७

(तथायाः)समज्ञानवता रयेन यं
कामं कामयते तमभ्यश्रुते
एवमेवैतया..

संहितो. ११५

समता सर्वभावेषु याऽसौ सत्यपरा
स्थितिः । तस्यामवस्थितं चित्तं
न भूयो जन्मभागभवेत्

महो. ६१४

समता स्वच्छता सौम्या सममी

भूमिका भवेत्

अ. पू. ५१८५

समतैवावशिष्यते

महो. ६१२, ३

समत्वं योगं उच्यते

अ. गी. २१४८

समदुःखसुखं चोरं

अ. गी. २१५५

समदुःखसुखः क्षमी

अ. गी. १२११३

समदुःखसुखः क्षान्तो हस्तप्राप्तं च
भक्षयेत्

ना. प. ५१४८

समदुःखसुखः स्वस्थः

अ. गी. १४१२४

स मनसा वाचं...अशनायां

सुत्युः...(मा. पा.)

बृह. ११२१४

स मनसा वाचं मिथुनं समभवत्

बृह. ११२१४

स मनुष्याणां परम आनन्दः

बृह. ४१३१३३

स मनुष्यानाकर्षयति सर्वाना-

कर्षयति

नृ. पू. ५११२

समन्ताद्देवताः सर्वाः सिद्धचारण-

पङ्क्त्याः । यन्मूले सर्वतीर्थानि

यन्मध्ये ब्रह्म देवताः ॥ यदग्रे

वैदशास्त्राणि तुलसीं तां

नमाम्यहम्

तुलस्यु. ९

समप्रधानो समसत्त्वो समोजो

तयोः शक्तिरजरा विश्वयोनिः

त्रिपुरो. १४

समबुद्धिर्विशिष्यते

अ. गी. ६१९

समभ्यसेत्तथा ध्यानं घटिका-

षष्टिमेव च

१ यो.त. १०४

समर्घं धनमुद्रत्य महार्घं यः

प्रयच्छति । स वै बार्धुषिको

नाम ब्रह्मवादिषु गर्हितः

इतिहा. ७०

समर्घं बिल्वं च सहस्रनामभि-

र्मभिर्चक्रैर्वरवेण बिल्वैः..

१ बिल्वो. १०

समलं समवर्णं च साभासं च

सदा त्यज

अमन. २१२६

समलोहावकाचनः

ना. प. ३१३५

[अ. गी. ६१८५-१४१२४

समवस्थितमीश्वरम्

अ. गी. १३१२९

समवेतान् कुरुनिति

अ. गी. ११२५

समवेता युयुत्सवः

अ. गी. १११

समस्तपातकोपपातक...समस्त-

प्रापहरणार्थं (गायत्री) संस्मरेत्

गायत्रीर. ९

समस्तभुवनस्याधोभागे जलाकारा-

त्मिका मण्डूकमयेति भुवना-

धारेति विज्ञायते

सीतो. १०

समस्तयातायातवर्ज्यं नैवेद्यम्

भावनो. ८

समस्तवेदशास्त्रेतिहासपुराणानि

समस्तविद्याजालानि ब्रह्मादयः

सुराः सर्वे त्वद्रूपज्ञाना-

न्युक्तिमाहुः

वराहो. १११

समस्तवेदान्तसारसिद्धान्तार्थकले-

वरम् । विकलेवरकैवल्यं राम-

चन्द्रपदं भजे

सर्वसा. शीर्षक

समस्तसाक्षिं तमसः परस्तात्

कैव. ७

समस्तसाक्षिं सदसद्विहीनं प्रयाति

शुद्धं परमात्मरूपम्

कैव. २४

समस्तसाक्षी सर्वात्मा सर्वभूत-

गुहाशयः

अ. वि. १०७

समस्तस्य खलु साम्ना उपासनं साधुं

छांदो. २१११

समस्तस्वरूपविरोधकारिण्यपरि-

च्छिन्नतिरस्कुरिण्याकारा

वैष्णवी महायोगमाया

त्रि.म.ना. ६१५

समस्तयागानां रुद्रः पशुपतिः कर्ता

पा. अ. २

समस्तविषयाणां मनसः स्थैर्येणा-

नुसन्धानं कुसुमम्

भावनो. ८

समस्तं खल्विदं ब्रह्म सर्वमात्मेद-

माततम्

महो. ६११२

समस्तावयवेभ्यस्त्वं पृथक् भूप

व्यवस्थितः

अवसं. २१२९

समस्ता वासनास्त्यक्त्वा निर्विकल्प-

समाधितः । तन्मयत्वादनाद्यन्ते

तदप्यन्तर्विलीयते

अ. पू. ४१६२

समस्ताविद्याण्डव्यापको भवति

त्रि.म.ना. २१६

स महत्तत्त्वाभिमानो स्पष्टा-

स्पष्टवपुर्भवति

पैकुलो. ११६

समहन्त्यन्त सा पृथिव्यभवत्
 स महात्मा सुदुर्लभः
 स महामखौ महायोगः
 समं कायशिरोम्रीवं
 समं पश्यति योऽर्जुन
 समं पश्यन् हि सर्वत्र
 समं सर्वेषु भूतेषु
 समः शत्रौ च मित्रे च
 समः सङ्गविवर्जितः
 समः समरसाभासस्तिष्ठामि
 स्वच्छतां गतः
 समः सर्वेषु भूतेषु
 समः सिद्धावसिद्धौ च
 समागमस्तयोरेव हृदयान्तर्गते सुषौ
 समागादिती३ तत्सायमभवत्
 स मा ज्यैष्ठ्यं* औष्ठ्यं* राज्यमा-
 धिपत्यं गमयत्वहमेवेदं* सर्व-
 मसानीति
 समाधाय स सात्त्विकः
 समाधानचला बुद्धिः
 समाधिकालात्प्रागेव विचिन्स्याति-
 प्रयत्नतः । स्थूलसूक्ष्मक्रमात्सर्वं
 चिदात्मनि विलापयेत्
 समाधिनिर्धू(र्ध्वं) तमलस्य चेतसो
 निवेशितस्यात्मनि यत्सुखं
 भवेत् । न शक्यते वर्णयितुं
 गिरातदा स्वयंतदन्तःकरणेन
 गृह्यते [मैत्रा. ६।३४+
 समाधिमथ कार्याणि मां करोतु
 करोतु वा । हृदयेनात्तसर्वेहो
 युक्त एवोत्तमाशयः
 समाधिमेकेन सममसृतं यान्ति
 योगिनः
 समाधित्य आत्मकाम आत्मकामो
 निष्कामो जीर्णकामो हस्तिनि
 सिद्धे दंष्ट्रे मक्षके नकुले सर्प-
 राक्षसगन्धर्वे मृत्यो रूपाणि
 विदिष्या न विमिति कुतश्चनेति

बृह. १।२।२
 भ. गी. ७।१९
 १ अवधू. ६
 भ. गी. ६।१
 भ. गी. ६।३२
 भ. गी. १३।२९
 भ. गी. १३।२८
 भ. गी. १२।१८
 भ. गी. १२।१८
 भ. गी. १२।१८
 अ. पू. ३।१२
 भ. गी. १८।५४
 भ. गी. ४।२२
 मैत्रा. ७।११
 १ ऐत. १।५।१
 छांदो. ५।२।६
 भ. गी. १७।११
 भ. गी. २।५३
 अक्षयुप. ४८
 भवसं. ३।३१
 मुक्तिको. २।१९
 योगकुं. ३।१४
 सुबालो. १३।२

समाधि सर्वदा कुर्याद्दृढये वाऽयवा
 बहिः
 समाधिः समतावस्था साष्टांगो योग
 उच्यते
 समाधिः संविदुत्पत्तिः परजीवै-
 कतां प्रति
 समाधित्वैकरूपः
 समाधिस्थस्य केशव
 (बय) समाधिः—जीवात्मपर-
 मात्मैक्यावस्थात्रिपुटीरहिता
 परमानन्दरूपा शुद्धचैतन्या-
 स्मिका भवति
 समाधिः समतावस्था जीवात्मपरमा-
 त्मनोः । यदि स्वदेहमुत्सृष्टु-
 मिच्छा चेदुत्सृजेत्स्वयम्
 समाधिः संविदुत्पत्तिः परजीवै-
 कतां प्रति
 समाधौ क्रियमाणे तु विघ्नान्या-
 यान्ति वै बलात्
 समाधौ न विधीयते
 समाधौ परमं ज्योतिरनन्तं
 विश्वतोमुखम्
 समाधौ मृदिततमोविकारस्य
 तदाकाराकारिताखण्डाकार-
 वृत्त्यात्मकसाक्षिचैतन्ये प्रपञ्च-
 लयः सम्पद्यते
 समाधौ मोक्षमाप्नोति त्यक्त्वा
 कर्म शुभाशुभम्
 समान उ एवायं चासौ चोष्णोऽय-
 मुष्णोऽसौ स्वरः
 समानप्राण एकस्तु जीवः स एक
 एव हि । रेचकादित्रयं कुर्याद्दृ-
 चित्तः समाहितः
 समान मज्जापरियाति जागृविः
 समानमशीतयोऽध्यात्मं चाधिदैवतं
 चाजमेव
 समानमेवाप्येति समानमेवास्तमेति
 समानवायुना सह सर्वासु नाडिषु
 रसं व्यापयन्नुत्तररूपेण देहे
 प्रायुश्चरति
 सरस्व. ४९
 १ यो. त. २५
 अ. पू. ५।७५
 शांडि. १।१।२
 भ. गी. २।५४
 शांडि. १।८।४
 १ यो. त. १०७
 जा. द. १०।१
 ते. वि. १।४०
 भ. गी. २।४४
 यो. चू. १०
 मं. प्रा. २।६
 यो. चू. ११०
 छांदो. १।३।२
 व्या. वि. ९९
 चित्तु. १०।४
 १ ऐत. १।३।६
 सुबालो. ९।५
 शांडि. १।४।८

स मानसान्सम पुत्रानसृजत सुबालो. १।३
 समानस्तु द्वयोर्मध्ये गोक्षीर-
 धवलप्रभः । आपण्डर उदानश्च
 व्यानो ह्यचिःसमप्रभः अ. ना. ३८
 समानः सर्वगात्रेषु सर्वव्यापी त्रि. ब्रा. २।८१
 व्यवस्थितः जा. द. ४।२९
 समानः सर्वदेहेषु व्याप्य तिष्ठत्य-
 संशयः जा. द. ४।३१
 समानः सर्वसामीप्यं करोति चिन्त्यु. ११।१२
 मुनिपुङ्गवः गोपालो. ३।१०
 समानसीन आत्मा जनानाम् छांदो. ५।२२।२
 (ॐ) समानात्मने ॐ तत्सद्भुव-
 स्तस्मै समानात्मने नमो नमः श्वेताश्व. ४।७
 समोने तृप्यति मनस्तृप्यति ३ ऐत. १।१।१
 समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नोऽनीशया
 शोचतिमुद्यमानः[मुण्ड. ३।१।२+
 समात्ते वै तत्परिहृतो मेन
 इत्यागस्त्यः अ. ना. ३५
 समानो नाभिदेशे तु उदानः प्रा. हो. ४।१
 कण्ठमाश्रितः क. जा. १३
 समानो मैत्रावरुणः तैत्ति. १।४।६
 समानस्तिग्धान्द्वान्स्थूलान्क्षौम-
 सूत्रेण धारयेत् (रुद्राक्षान्)
 स आ अग्रा प्रविश स्वाहा
 समासक्तं तथा (यथा-यदा-सदा)
 चित्तं जन्तोर्विषयगोचरे (रं) ।
 यदेवं ब्रह्मणि स्यात्तत्को न
 मुच्येत बन्धनात् मैत्रा. ६।३४
 [+शाठ्या. २+भवसं. ३।१५ मैत्रे. १।१२
 समासेनैव कौन्तेय भ. गी. १।८।५०
 समाहिता निस्थतृमा यथाभूतार्थ-
 धर्षिणी । ब्रह्मन्समाधिशब्देन
 परा प्रक्षोच्यते बुधैः अ. पू. १।४८
 समाहि लिङ्गा दृढाः स्थूलाः कण्ठकैः
 समुताः शुभाः (रुद्राक्षाः) क. जा. ११
 समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् मुण्ड. १।२।१२
 समिदमित्समुत्पन्नं धार्यं वै
 प्रजाचारिणां (अस्म्य) क. जा. ५।५

समिद्धमो धूमोऽचिरचिरङ्गारा
 अङ्गारा विस्फुलिङ्गाः बृह. ६।२।१४
 समिधं सौम्याहरोप त्वा नेष्ये
 न सत्यादगाः छांदो. ४।४।५
 समीकरणोऽत्रयनमहण प्रवणोच्छ्वासा
 वायुकार्यप्राणादिविषयाः त्रि. ब्रा. १।४
 स मुक्तः परमेश्वरः महो. ६।८
 स मुक्तः स पूज्यः स योगी स
 परमहंसःसोऽवधूतः स ब्राह्मण इति निरा. ३२
 स मुक्तो भवति, स स्वप्रकाशोभवति गणेशो. ५।८
 स मुक्तो भवति तस्मै स्वात्मानं
 तु ददामि वै गोपालो. २।३६
 स मुक्तोऽहमस्मि गोपालो. २।१४
 स मुखाच्च योनेर्हस्ताभ्यां चाभि-
 मसृजत बृह. १।४।६
 समुदस्ताश्रमितोऽहं प्रविततसुख-
 पूर्णसंविदेवाहम् आ. प्र. ३
 समुदेति परानन्दा या तनुः पारमे-
 श्वरी । मनसैव मनश्छित्त्वा सा
 स्वयं लभ्यते गतिः अ. पू. १।५३
 समुद्धर मनो ब्रह्मन् मातङ्गमिव
 कर्दमात् महो. ५।१३५
 समुद्र एवास्य बन्धुः, समुद्रो योनिः बृह. १।१।३
 समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् भ. गी. २।७०
 समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति भ. गी. १।१२८
 समुद्रवेलेव दुर्निवार्यमस्य मृत्यो-
 रागमनम् मैत्रा. ४।३
 समुद्रस्योत्तरे तीरे द्विविदो नाम
 वानरः । चातुर्यिकं कुर्वन् इन्ति
 लिखित्वा यस्तु पश्यति वनदु. ९८
 समुद्रादर्णवादभि संवत्सरो
 अजायत [महाना. ६।२+अ. सं. १०।१९०।२
 समुद्रादूर्मिर्मधुमाः उदारदुपाः
 शुना समभूतत्वमानः[महाना. ८।८ अ. सं. ४।५६
 [+वा. सं. १७।८९+तै. आ. १०।१३।३
 समुद्रान्सरितः पर्वतान्कतानि मही
 पातालं च...ततो वै सृष्टि-
 मचीकरन् गणेशो. ३।६

समुद्रे अन्तः कवयो विचचक्षते चित्त्यु. ११११
 समूलोन्मूलिते पुण्यपापाख्ये अध्यात्मो. ३९
 कर्मसञ्चये प्रभो. ६१
 समूलो वा एष परिशुष्यति योऽनृतमभिवदति नृ. पू. ३१२
 स मृत्युं तरति स संसारं तरति नृ. पू. ५११०
 सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. २११
 स मृत्युं तरति स पाप्मानं तरति कठो. १११८
 स ब्रह्महत्यां तरति ना. प. ४१४५
 स मृत्युं तरति स पाप्मानं तरति म. गी. ६१४७
 स संसारं तरति १ सं. सो. २१५३
 स मृत्युपाशान्पुरतः प्रणोद्य स माधिनः कठो. २११३
 शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके
 स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु
 [तैत्ति. ११४।१+
 स मे युक्ततमो मतः
 समेच्यामि शिलासाम्यं निर्विकल्प-
 समाधिना १ सं. सो. २१५३
 स मोदते मोदनीयं हि लब्ध्वा
 विवृतं सद्य नचिकेतसं मन्ये कठो. २११३
 समे शुचौ शर्करावह्निवाल्का-
 विवर्जिते शब्दजलाभया-
 दिभिः । मनोनुकूले, न तु
 जलुषीडने गुहानिवाताश्रये
 प्रयोजयेत् [श्वेताश्व. २।१०+ भवसं. ३।२३
 समोऽहं सर्वभूतेषु म. गी. ९।२९
 सम्पत्सुतस्त्रीप्रलये स्वर्गोहाद्वि-
 निर्गता मुण्डितशीर्षका ये ।
 स्वार्चां द्विजैस्ते भुवि कारयन्ति
 भवन्तु लोकाः खलु सावधानाः भवसं. १।५५
 (यो ह वै) सम्पदं वेद स
 हास्यै कामाः पश्यन्ते देवाश्च
 मानुषाश्च, ओत्रं वाव सम्पत्
 सम्पदः परमापदः
 सम्पदे स्वादेत्यभावाज्यस्य हुत्वा
 मन्थे सम्पातमवनयेत्
 सम्पन्नमेवैतत्सन्मिसेव
 सम्परेतोऽस्यात्मा न चिरमिव
 जीविष्यतीति विद्यात् ३ ऐत. २।४।४

सम्पर्कादुदरे न्यस्तः शुक्रविन्दु-
 रचेतनः । स पित्रा केन यत्नेन
 गर्भस्थः केन पालितः शिवो. ७१०६
 सम्पश्यध्वा एव मा प्रमदत छाग. २।४
 सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि म. गी. ३।२०
 सम्पीड्य सीविनीं सूक्ष्मां गुल्फेनैव
 तु सव्यसः । सव्यं दक्षिण-
 गुल्फेन मुक्तासनमुदीरितम् शांडि. १।३।९
 सम्पूजकः पञ्चमहोपपातकैर्युक्तो
 विमुक्तः शिवरूपमेति १ विष्णो. १२
 सम्पूर्ण इव शीतांशुरतिष्ठदमलःशुकः महो. २।२७
 सम्पूर्णकुम्भवदेहं कुम्भयेन्मातरिश्वना त्रि. ब्रा. २।९४
 सम्पूर्णकुम्भवद्वायोर्धारणं कुम्भको
 भवेत् जा. द. ६।१३
 सम्पूर्णहृदयः शून्ये त्वारम्भे योग-
 वान्भवेत् सौ. ल. १०
 सम्पूर्ण परमात्मनि । भिन्नाभिन्नं न
 पश्यन्ति तस्याहं पञ्चमाश्रयः तत्त्वो. ४
 सम्पूर्णानन्दैकबोधो ब्रह्मैवाहमस्मि प. हं. प. ११
 सम्प्रज्ञातसमाधिः स्याद्ध्यान-
 भ्यासप्रकर्षतः मुक्तिको. २।५३
 सम्प्रत्यवसितानां च महापातकिनां
 तथा । ब्राह्म्यानामभिशस्तानां
 संन्यासं नैव कारयेत् १ सं. सो. २।४
 सम्प्रसूतकलत्राणि गृहाण्युग्रा-
 पदामिव महो. ३।७
 सम्प्राप्यैनमृषयोज्ञानतृप्ताः कृता-
 त्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः ।
 ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा
 युक्तात्मानः सर्वमेवापियन्ति मुण्ड. ३।२।५
 सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं म. गी. ६।१३
 सम्बद्धासनमेद्रमङ्गियुगलं कर्णाक्षि-
 नासापुटद्वाराद्यङ्गुलिभिर्नियम्य
 पवनं वक्त्रेण वा पूरितम् । बध्वा
 वक्षसि बह्वयानसहितं मूर्ध्नि
 स्थिरं धारयेदेवं यान्ति विशेष-
 तत्त्वसमतां योगीश्वरास्तन्मनः यो. च. ११४

सम्बन्धे द्रष्टृदृश्यानां मध्ये दृष्टिर्हि
यद्वपुः । द्रष्टृदर्शनदृश्यादि-

वर्जितं तदिदं पदम्

महो. ५।४८

सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्धावा-
भूमी जनयन्देव एकः

श्वेता. २।३

सम्बाहुभ्यां नमति सम्पतत्रैर्धावा
पृथिवी जनयन्देव एकः

त्रि. म. ना. ६।४

[२ शि. सं. २६+

महाना. २।२

सम्बन्धे सिंहेन स एष वीरः

नृसिंहो. ४।३

सम्बन्धे चित्ते प्राज्ञः प्राणायामे
सुखी भवेत्

जा. द. ६।१५

सम्भवः सर्वभूतानां

भ. गी. १४।३

सम्भवामि युगे युगे

भ. गी. ४।८

सम्भवाम्यात्ममायया

भ. गी. ४।६

सम्भवे हेतुफलयोरेषितव्यः

क्रमस्त्वया

अ. शां. १६

सम्भावितस्य चाकीर्तिः

भ. गी. २।३४

सम्भाषणं च चिन्मात्रं यद्यपि-
न्मात्रमेव हि

ते. बि. २।३०

सम्भाषणं सह स्त्रीमिरालापः प्रेक्षणं
तथा । नृत्तं गानं सहासं च

परिवादाश्च वर्जयेत्

ना. प. ६।३८

सम्भूतिः च विनाशं च यस्तद्वेदो-
भयं सह । विनाशेन मृत्युं

तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतममृते

ईशा. १४

सम्भूतेरपवादाश्च सम्भवः प्रति-
विध्यते । को न्वेवं जनयेदिति

कारणं प्रतिषिध्यते

अद्वैत. प्र. २५

सम्भूतैर्वायुसंभ्रावैर्हृदयं तप उच्यते

कुंडिको. २१

सम्भूततेनायक्ष्यसे

चित्त्युप. २।१

सम्भूतं पृषदाज्यम् [चित्त्यु. १२।४+

[अ. मं. १०।९०।८+

पु. सू. ६

वा. सं. ३६।६

सम्भोजनी नाम पिशाचमिक्षा

नेषा पितृन्गच्छति नोत देवान् ।

इहैव सा चरति क्षीणपुण्या

शालान्तरे गौरिच नष्टवत्सा

इतिहा. २२

सम्माननं परां हानिं यागार्हेः

कुर्वते यतः । जनैनावमतौ

योगी योगसिद्धिं च विन्दति

ना. प. ५।४०

सम्मानाद्वाङ्मणो नित्यमुद्विजेत

विषादिव । असूतस्येव चाकाङ्क्षे-

दवमानस्य सर्वदा

ना. प. ३।४१

सम्मायमग्निः सिंचित्वायुषा च

बलेन चायुष्मन्तं करोतमेति

प्रतिहास्मै मरुतः प्राणान्दधति

सहैव. २२

सम्मूढत्वादात्मस्थं प्रभुं भगवन्तं

कारयितारं नापश्यत्

मैत्रा. ३।२

सम्मा सिञ्चन्तु मरुतः समिन्द्रः

सं बृहस्पतिः

ना. प. ४।४१

सम्मोहमौली तृष्णेर्ष्याकुण्डली

तन्द्रीराघवेत्यभिमानाध्यक्षः

मैत्रा. ६।२८

सम्मोहात्सृष्टिविभ्रमः

भ. गी. २।६३

सम्मोहो भयं विषादो निद्रा

तन्द्री प्रमादो व्रणो जराशोकः

छुत्तिपपासा... नास्तिक्यमज्ञानं...

निकृतत्वमुद्धतस्त्वमसमत्वमिति

तामसान्वितः

मैत्रा. ३।५

सम्यगालोकिते रूपे काष्ठपाषाण-

वाससाम् । मनागपि न भेदो-

ऽस्ति कासि सङ्कल्पनोन्मुखः

अ. पू. २।३८

सम्यगालोचनात्सत्याद्वासना

प्रबिलीयते । वासनाविलये

चेतः शममायाति दीपवत्

मुक्तिको. २।१७

सम्यगुपनयनपूर्वकं चतुश्चत्वारिंश-

त्संस्कारसम्पन्नः... सर्वविषा-

भ्यासं कृत्वा... देहत्यागं

करोति स मुक्तः

ना. प. १।१

सम्यग्ज्ञानसमालोकः पुमान् ज्ञेयः

समः स्वयम् । न विभेति न

चाकृत्ते वैवश्यं न च दीनताम्

अ. पू. ५।२

सम्यग्ज्ञानं च वैराग्यं धर्मोऽयं

मिक्षुके मतः

ना. प. ५।४५

सम्यग्ज्ञानावरोधेन नित्यमेक-

समाधिना । साङ्ख्य एवाव-

बुद्धा ये ते साङ्ख्या

योगिनः परे

अ. पू. ५।४९

सम्यग्बन्धत्रयस्थोऽपि लक्ष्यलक्षण-

कारणम् । वेधं समुद्धरेन्नित्यं..

वराहो. ५।५६

संन्यासासनया त्यक्तं मुक्तमि- त्यभिधीयते	मुक्तिको. २।१६
संन्याग्यवसितो हि सः	भ. गी. ९।३०
संन्याग्निमीलिताक्षः किञ्चिदुन्मी- लिताक्षः...परं ब्रह्मावलोकय- स्तद्रूपो भवति (योगी)	अद्वयता. १
संन्याग्न्यासःसंन्यासः । न तु मुण्डितमुण्डः [गुह्यो. २+ संन्याग्निं हास्यै सर्वाणि भूतानि ऋष्टथाय कल्पन्ते	पीतां. २ बृह. ५।१३।३
स य आकाशं ब्रह्मेत्युपास्ते आकाशवतो वै स लोकान्प्रकाश- वतोऽसम्वाधानुरुगायवतो- ऽभिसिद्धयति	छांदो. ७।१२।२
स य आत्मानमेव प्रियमुपास्ते न हास्य प्रियं प्रमायुकं भवति	बृह. १।४।८
स य आत्मानमेव लोकमुपास्ते न हास्य कर्म क्षीयते	बृह. १।४।१५
स य आशां ब्रह्मेत्युपास्ते आश- याऽस्य सर्वे कामाः समृद्धयन्ति	छांदो. ७।१४।२
स य इच्छेत्पुत्रो. अनुब्रवीत् (मा. पा.)	बृ. उ. ६।४।१४
स य इच्छेत्पुत्रो मे शुद्धो जायेत वेदमनुब्रवीत्, सर्वमायुरियादिति	बृह. ६।४।१४
स य इदमविद्वानग्निहोत्रं जुहोति यथाऽङ्गारानपोह्य अस्मनि जुहुयात्तादृक्त्स्यात्	छांदो. ५।२४।१
स य इमौंकील्लोकान् पूर्णान् प्रसिगृह्णीयात् सोऽस्या एत- त्प्रथमं पदमाप्नुयात्	बृह. ५।१४।६
स य इहान्वायत्तमिदमविद्वाने- वैतदुपास्ते पापीयान्भव- त्यार्तिमाच्छेत्त्यवज्रियते	आर्षे. ४।३
स य एतद्ब्रह्मज्ञे प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति	तैत्ति. ३।७,८,९
स य एतदुपास्ते न स पाप्मनो व्यावर्तते	बृह. १।५।२
स य एतदेवममृतं वेद वसूनामेवैको भूत्वाऽग्निनैव मुखेनैव देवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति	छांदो. ३।६।३

स य एतदेवममृतं वेद रुद्राणा- मेवैको भूत्वेन्द्रेणैव मुखेनैव- देवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति	छांदो. ३।७।३
स य एतदेवममृतं वेद साध्याना- मेवैको भूत्वा ब्रह्मणैव मुखेनैव... स य एतदेवममृतं वेद मरुतामेवैको भूत्वा सोमेनैव मुखेन...	छांदो. ३।१०।३ छांदो. ३।९।३
स य एतदेवममृतं वेदादित्या- नामेवैको भूत्वा वरुणेनैव मुखेनैव देवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति	छांदो. ३।८।३
स य एतदेव रूपमभिसंविश- त्येतस्माद्रूपादुदेति	छांदो. ३।६।३
स य एतदेवं विद्वानक्षरं प्रणौ- त्येतदेवाक्षरं स्वरममृत- मभयं प्रविशति	छांदो. १।४।५
स य एतदेवं विद्वानादित्यं ब्रह्मेत्युपास्ते...(मा. पा.)	छांदो. ३।१९।४
स य एतदेवं विद्वान्साधु सामेत्यु- पास्तेऽभ्याशो ह यदेन च साधवो आ च गच्छेयुरप च नमेयुः	छांदो. २।१।४
स य एतदेवं वेदाऽभि ह्येनं सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति	केनो. ४।६
स य एतद्वायत्रं प्राणेषु प्रोतं वेद प्राणी भवति	छांदो. २।११।४
स य एतमेवमुपास्ते आत्मन्वी ह भवत्यात्मन्विनी हास्य प्रजा भवति	बृह. २।१।१३
स य एतमेव उपास्ते; तेजस्वी ह भवति तेजस्विनी हास्य प्रजा भवति	बृह. २।१।४,५
स य एतमेवमुपास्तेऽतिष्ठाः सर्वेषां भूतानां मूर्धा राजा भवति [बृह. २।१।२,३,	६,७,८,९
स य एतमेवमुपास्ते द्वितीयबान्ध भवति नास्माद्रणञ्छिद्यते	बृह. २।१।११
स य एतमेवमुपास्तेऽहरहर्हं सुतः प्रसुतो भवति नास्याञ्जं क्षीयते	बृह. २।१।३
स य एतानेवं पञ्च पुरुषान् स्वर्गस्य द्वारपान्वेद	छांदो. ३।१३।६

स य एतमेवं वायुं दिशां वत्सं वेद	छांदो. ३।११।२	स य एवमेतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतं	
स य एतमेवं विद्वानादित्यं		वेद मिथुनीभवति	छांदो. २।१३।२
ब्रह्मेत्युपास्तेऽभ्याशौ ह यदेन ५		स य एवमेतद्वैराजमृतुषु प्रोतं वेद	
साधवो घोषा आ च गच्छेयुरुप		विराजति प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-	
च निमिद्धेरन्	छांदो. ३।१९।४	वर्चसेन सर्वमायुरेति	छांदो. २।१६।२
स य एतमेवं विद्वानुपास्तेऽपहते		स य एवमेतद्वैरूपं पर्जन्ये प्रोतं	
पापकृत्यां लोकी भवति, सर्व-		वेद विरूपां ५श्च सुरूपां ५श्च	
मायुरेति [छांदो. ४।११।२+ १२।२+१३।२	१२।२+१३।२	पशुतत्ररुन्वे	छांदो. २।१५।२
स य एतमेवं विद्वानुपास्ते	छांदो. १।९।४	स य एवमेतमक्षरसम्मानं चक्षुर्मयं	
स य एतमेवं विद्वान्श्रुत्कलं पादं		श्रोत्रमयं छन्दोमयं मनोमयं	
ब्रह्मणोऽनन्तवानित्युपास्ते-		वाङ्मयमात्मानं वेद अक्षराणां	
ऽनन्तवानस्मिँल्लोके भवति	छांदो. ४।६।४	सायुज्यं सरूपतां सलोकतामश्नुते ३ ऐत. २।१।३	
स य एतमेवं विद्वान्श्रुत्कलं पादं		स य एवमेतमहः सम्मानं चक्षुर्मयं	
ब्रह्मण आयतनवानित्युपास्ते		...आत्मानं वेद ब्रह्मा सायुज्यं	
आयतनवानस्मिँल्लोके भवति	छांदो. ४।८।४	सरूपतां सलोकतामश्नुते	३ ऐत. २।१।३
स य एतमेवं विद्वान्श्रुत्कलं पादं		स य एवमेतमिन्द्रं भूतानामिन्द्रं	
ब्रह्मणः प्रकाशवानित्युपास्ते		वेद विस्वसाहैवास्माल्लोकात्	
प्रकाशवानस्मिँल्लोके भवति	छांदो. ४।५।३	प्रीतीति ह स्माह महिदास	
स य एतां संहितां वेद सन्धीयते		ऐतरेयः	१ ऐत. ३।७।१
प्रजया पशुभिर्यशसा ब्रह्म-		स य एवमेतमुपास्ते रोचिष्णुर्ह	
वर्चसेन स्वर्गेण लोकेन सर्वमा-		भवति	बृह. २।१।९
युरेति [३ ऐत. १।५।४+ १।६।२+१।६।४	१।६।२+१।६।४	स य एवमेता रेवत्यः पशुषु प्रोता	
स य एवं प्राणं वंशमुपवदेत्	३ ऐत. १।४।१	वेद पशुमान्भवति	छांदो. २।१८।२
स य एवमिमा महिम्न एवास्य		स य एवमेतं संवत्सरं समानं	
पश्यन्नुपास्ते महिम्न एवाश्रोति		चक्षुर्मयं श्रोत्रमयं छन्दोमयं	
सर्वमायुरेति वसीयान्भवति	आर्षे. ८।२	मनोमयं वाङ्मयमात्मानं परस्मै	
स य एवमेतत्साम सर्वस्मिन्प्रोतं		शंसति	३ ऐत. २।३।५
वेद सर्व ५ ह भवति	छांदो. २।२१।२	स य एवमेतां संहितां वेद सन्धीयते	
स य एवमेतद्बृहदादित्ये प्रोतं		प्रजया पशुभिर्यशसा...	३ ऐत. १।१।३
वेद तेजस्यन्नादो भवति	छांदो. २।१४।२	[१।२।३+१।५।१,२+ १।६।७	
स य एवमेतद्यज्ञायज्ञीयमङ्गेषु		स य एवमेताः शक्यो लोकेषु	
प्रोतं वेदाङ्गी भवति	छांदो. २।१९।२	प्रोता वेद लोकी भवति	छांदो. २।१७।२
स य एवमेतद्रथन्तरमग्नौ प्रोतं		स य एवमेनमुपास्तेऽतीव सर्वा	
वेद ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भवति	छांदो. २।१२।२	भूतानि तिष्ठति, सर्वमायुरेति	आर्षे. ६।२
स य एवमेतद्वाजनं देवतासु प्रोतं		स य एवंवित् अस्माल्लोकात्प्रेत्य	
वेदेतासामेव देवतानां ५		एतमन्नमयमात्मानमुपसङ्कामति	
सलोकता ५ साष्टिता ५		[तैत्ति. २।८।१+ ३।१०।५	
सायुज्यं गच्छति	छांदो. २।२०।२	स य एवंविद्वानेते आत्मानं ५ स्पृणुते तैत्ति. २।१	

स य एवायं वैहिक आत्मा ३ ऐत. २।३।१
 स य एषोऽणिमा [छांदो. ६।८।७+ १।४+१०।३
 स य एषोऽन्तर्हृदय आकाशः वैत्ति. १।६।१
 स यजुर्मियेजुर्वेदो विष्णुरुद्रास्त्रिष्टु-
 न्दक्षिणाग्निः [नृ. पू. २।१+ नृसिंहो. ३।२
 स यजुषां मण्डलं, स यजुषां लोकः महाना. १०।१
 स यज्जुहोति यद्यजते तेन
 देवानां लोकः बृह. १।४।१६
 स यज्ञः, स मे ददातु प्रजां
 पशून् पुष्टिं यशः चित्त्यु. ७।१
 स यत्करणीयं मन्येत तत्कुर्वीत ३ ऐत. २।४।४
 स यत्कुमारं जन्मनोऽग्नेऽधि-
 भावयत्यात्मानमेव तद्भावयति २ ऐत. ४।३
 स यत्तत्र किञ्चित्पश्यत्यनन्वागत-
 स्तेन भवत्यसङ्गो ह्ययं पुरुषः बृह. ४।३।१५
 स यत्पूर्वोऽस्मात्सर्वस्मात् सर्वान्
 पाप्मन औषत्तस्मात्पुरुषः बृह. १।४।१
 स यत्प्रमाणं कुरुते भ. गी. ३।२।१
 स यत्प्राणो गृत्सोऽपानमदस्तस्मा-
 दृत्समदः १ ऐत. २।१।३
 स यत्र चन्द्रस्तन्मक्षत्राणि यत्र वा
 नक्षत्राणि स चन्द्रमास्ते द्वे
 योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ७
 स यत्र पुरुषस्तत्स्त्री यत्र वा स्त्री
 स पुरुषस्ते द्वे योनिस्तदेकं
 मिथुनम् सावित्र्यु. ९
 स यत्र प्रस्तुयात्तदेतानि जपेदसतो
 मा सद्रमय तमसो मा ज्योति-
 र्गमय मृत्योर्मामृतम् बृह. १।३।२८
 स यत्र प्रस्वपिति, अस्य लोकस्य
 सर्वावतो मात्रामुपादाय स्वयं
 विहृत्य स्वयं निर्माय स्वेन आसा
 स्वेन ज्योतिषा प्रस्वपित्यत्रायं
 पुरुषः स्वयं ज्योतिर्भवति बृह. ४।३।९
 स यत्र यज्ञस्तत्र छन्दांसि, यत्र वा
 छन्दांसि स यज्ञस्ते द्वे योनि-
 स्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ४

स यत्र मनस्तद्वाक्, यत्र वा
 वाक्कन्मनस्ते द्वे योनिस्तदेकं
 मिथुनम् सावित्र्यु. ६
 स यत्र वरुणस्तदापो यत्र वा
 आपस्तद्वरुणस्ते द्वे योनि-
 स्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. २
 स यत्र वायुस्तदाकाशो यत्र वा
 आकाशस्तद्वायुस्ते द्वे योनि-
 स्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ३
 स यत्र स्तनयितुस्तद्विद्युत्, यत्र
 वा विद्युत्तत्र स्तनयितुस्ते द्वे
 योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ५
 स यत्राग्निस्तत्पृथिवी, यत्र वै पृथिवी
 तत्राग्निस्ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. १
 स यत्रादित्यस्तद्यौर्ध्वं वा
 द्यौस्तदादित्यस्ते द्वे योनि-
 स्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ६
 स यत्रायमणिमानं न्येति जरया
 वोपतपता वाऽणिमानं निगच्छति बृह. ४।३।३६
 स यत्रायमात्माऽबल्यं न्येत्य
 सम्मोहमिव न्येत्यथैनमेते
 प्राणा अभिसमायन्ति बृह. ४।४।१
 स यत्रैतत्स्वप्नायाचरति
 ते हास्य लोकाः बृह. २।१।१८
 स यत्रैष चाक्षुषः पुरुषः पराङ्
 पर्यावर्ततेऽथारूपज्ञो भवति बृह. ४।४।१
 स यत्रोपाकृते प्रातरनुवाके पुरा
 परिधानीयाया ब्रह्मा न्यव-
 दति छांदो. ४।१६।२
 स यत्सर्वमोक्षुर्याद्विचयादात्मानं
 सकामेभ्यो नालं स्यात् १ ऐत. १।६।६
 स यत्सर्वं नेति ब्रूयात्, पापिका-
 स्य कीर्तिर्जायेत १ ऐत. ३।६।६
 स यथाकामो भवति तत्कृतुर्भवति,
 यत्कृतुर्भवति तत्कर्म कुरुते,
 यत्कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यते बृह. ४।४।५
 स यथा कुमारो महाराजो वा
 महाब्राह्मणो वातिष्णीमानन्दस्य
 गत्वा क्षयीतैवमेष एतच्छेते बृह. २।१।१९

स यथा तत्र...ऽधराङ्गादौ
प्राप्तायीत-(मा. पा.) छां.उ. ६।१४।१

स यथा तत्र नादा ह्येतत्तात्म्य-
मिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा
तत्त्वमसि श्वेतकेतो छांदो. ६।१६।३

स यथा तत्र प्राङ्मोदकुऽधराङ्गा
प्रत्यङ्गा प्रष्मायीतामिनद्वाक्ष
आनीतोऽमिनद्वाक्षो विसृष्टः छांदो. ६।१४।१

स यथातुरा भिषग्ग्रहणकाले
बाला अपश्यादितगुडादिना
जनन्या वञ्चिता इति नाना-
देवता गुरुकर्मतीर्थनिष्ठाश्च ते
भवन्ति स्वसंवे. ३

स यथा दुन्दुमेर्हन्यमानस्य न
बाह्याच्छब्दान् शक्त्याद्ग्रहणाय
दुन्दुमेस्तु ग्रहणेन दुन्दुभ्या-
घातस्य वा शब्दो गृहीतः [बृह. २।४।७+४।५।८

स यथा प्रचोदयित्रापोऽक्षितो
नेजेऽशरुवीतैवं ह्येष प्राज्ञेनात्म-
नापोऽक्षितो न भूते छाग. ६३

स यथा प्रयोग्य आचरणे युक्त
एवमेवायमस्मिच्छरीरे प्राणो
युक्तः छांदो. ८।१२।३

स यथा महाराजो जानपदान्
गृहीत्वा स्वे जानपदे यथाकामं
परिवर्तते तैवैष एतत्प्राणान्
गृहीत्वा स्वेशरीरे यथाकामं
परिवर्तते बृह. २।१।१८

स यथा मृत्पिण्डे घटानां तन्तौ
पटानां तथैवेति भवति स्वसंवे. १

स यथाऽर्धेऽन्धारेभ्याहितात्
(मा. पा.) बृह. २।४।१०

स यथाऽऽर्धेऽन्धारेभ्याहितात्)
तस्य प्रथमधूमा...विनिश्चर-
न्त्येवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य
निःश्वसितमेतत्तद्वृत्तेदो यजुर्वेदः
सामवेदोऽथर्वणिरस इतिहासः
[बृह. २।४।१०+ ४।५।११

स यथा वीणायै वाद्यमानायै न
बाह्याच्छब्दान्छक्त्याद्ग्रहणाय
वीणायै तु ग्रहणेन वीणावादस्य
वा शब्दो गृहीतः [बृह. २।४।९+ ४।५।१०

स यथा शकुनिः सूत्रेण प्रबद्धो
दिशंदिशं पतित्वाऽन्यत्रायतन-
मलब्ध्वा बन्धनमेवोपश्रयते
एवमेव खलु सोम्य तन्मनो
दिशं दिशं पतित्वाऽन्यत्रायतन-
मलब्ध्वा प्राणमेवोपश्रयते छांदो. ६।८।२

स यथा शकुनिः...बन्धनमेवो-
पाश्रयते (मा. पा.) छांदो. ६।८।२

स यथा शङ्खस्य ध्मायमानस्य न
बाह्याच्छब्दान्छक्त्याद्ग्रहणाय
शङ्खस्य तु ग्रहणेन शङ्खमस्य
वा शब्दो गृहीतः [बृह. २।४।८+४।५।९

स यथाऽहमानमृत्वा लोष्ठो
विष्वंसतैवं (मा. पा.) बृ. उ. १।३।७

स यथा सर्वासामपां समुद्र
एकायनमेव सर्वेषां स्पर्शानां
त्वगेकायनं [बृह. २।४।११+ ४।५।१२

स यथा सुहयः पक्षीशशङ्खसङ्घिदे-
देवमितरान्प्राणान्समस्विदत् छांदो. ५।१।१२

स यथा सैन्धवलिल्य उदके प्रास्त
उदकमेवानुविलीयेत, न हास्य
ग्रहणायैव स्यात् बृह. २।४।१२

स यथा सैन्धवघनोऽनन्तरोबाह्यः
कृत्स्नो रसघन एवैवं वा
अरेऽहमात्मा बृह. ४।५।१३

स यथा सोम्य वयांसि वासो वृक्षं
सम्प्रतिष्ठन्ते, एवं ह वै तत्सर्वं
पर आत्मनि सम्प्रतिष्ठते प्रश्नो. ४।७

स यथेमा नद्यः स्यन्दमानाः
समुद्रायणाः समुद्रं प्राप्यास्तं
गच्छन्ति भिद्येते चासां नामरूपे
समुद्र इत्येवं प्रोच्यते प्रश्नो. ६।५

स यथैकपाद्ग्रजत्रयो वैकेन चक्रेण
वर्तमानो रिष्यत्येवमस्य
यज्ञो रिष्यति छांदो. ४।११।३

(एवं) स यथैतां देवताः सर्वाणि

भूतान्यवन्त्येवः हवैविदः

सर्वाणि भूतान्यवन्ति

बृह. १।५।२०

स यथैषां प्राणानां मध्यमः प्राणः,

एवमेतासां देवतानां वायुः

बृह. १।५।२२

स यथोभयपाद्भजन्तो बोभाभ्यां

चक्राभ्यां वर्तमानः प्रतितिष्ठ-

त्येवमस्य यज्ञः प्रतितिष्ठति

छांदो. ४।१६।५

स यद्वोचं प्राणं प्रपद्य इति, प्राणो

वा इदं सर्वं भूतं यदिदं

किञ्च, तमेव तत्प्रापत्ति

छांदो. ३।१५।४

स यदशिशिषति यत्पिपासति यन्न

रमते ता अस्य दीक्षाः

छांदो. ३।१७।१

स यदा तेजसाऽभिभूतो भवत्यत्रैष

देवः स्वप्नात् पश्यत्यथ तदैत-

स्मिच्छरीरे एतत्सुखं भवति

प्रश्नो. ४।६

स यदा प्रतिबुध्यते

कौ. त. ३।३

स यदा प्रतिबुध्यते तदेतत्सर्व-

मस्मादेवोत्तिष्ठति

नृसिंहो. ७।६

स यदा प्राणेन सह संयुज्यते तदा

पश्यति नद्यो नगराणि बहूनि

विविधानि च

सुबालो. ४।२

स यदा बली भवत्यथोत्थाता

भवति

छांदो. ७।८।१

स यदा मनसा नमस्यति मन्त्रान-

धीयीयेत्यथाधीते

छांदो. ७।३।१

स यदा मृत्युमत्यमुच्यत स वायु-

रभवत्सोऽयं वायुः परेण मृत्यु-

मतिक्रान्तः पवते

बृह. १।३।१३

स यदा विजज्ञावथ इत्वाऽसुरान्नि-

जित्य सर्वेषां भूतानां श्रेष्ठं

स्वाराज्यमाधिपत्यं पर्येति

कौ. त. ४।२०

स यदाऽस्माच्छरीरादुत्क्रामति,

वागस्मात्सर्वाणि नामान्यभि-

विभृजते, वाचा सर्वाणि

नामान्याप्नोति

कौ. त. ३।४

स यदाहासतो मा सद्रमयेति

मृत्युर्वा असत्सदमृतं मृत्योर्मा-

मृतं गमयामृतं मा कुह

बृ. उ. १।३।२८

स यदि तस्य कर्ता भवति (मा.पा.)

छां. उ. ६।१६।२

स यदिदमत्रान्वायत्तं वेदाथ तथैवो-

पास्तेऽत्रैवान्वायत्तो भवति

आर्षे. ४।३

स यदिदमेतस्मिन्नान्वायत्तं वेदाथ

तथोपास्तेऽन्वायत्तो ह्येवास्मिन्

भवति

आर्षे. २।३

स यदिदं सर्वमभिप्रागाद्यदिदं

किञ्च तस्मात्प्रगाथाः

१ ऐत. २।२।३

स यदिदं सर्वमभ्यपवयत यदिदं

किञ्च तस्मात्पावमान्यः

१ ऐत. २।२।४

स यदिदं सर्वं पाप्मनो त्रायत

यदिदं किञ्च तस्मादत्रयः

१ ऐत. २।१।६

स यदि परेण वोपसृतः स्वेन

वाऽर्थेनाभिध्यादरेत् । अभि-

न्याहार्षेणैव विद्यात्

३ ऐत. १।६।४

स यदि पितरं वा मातरं वा भ्रातरं

वा स्वसारं वाऽऽचार्यं वा

ब्राह्मणं वा किञ्चिद्ब्रह्ममिव

प्रत्याहधिकत्वास्त्वित्येवैनमाहुः

छांदो. ७।१५।२

स यदि पितृलोककामो भवति

सङ्कल्पादेवास्य पितरः समु-

त्तिष्ठन्ति, तेन पितृलोकेन

सम्पन्नो महीयते

छांदो. ८।२।१

स यदिमानि भूतानि सर्वाणि

भूतानि पादि तस्मात्पदम्

१ ऐत. २।२।९

स यदि विचिकित्सेत्स णकारं

ब्रवाणीं ञ्णकारां इति

३ ऐत. २।६।२

स यदि क्षियं पश्येत्समृद्धं कर्मेति

विद्यात्

छांदो. ५।२।८

स यदि ह वा अपि मृषा वदति

सत्यं हेवास्योदितं भवति

१ ऐत. १।५।३

स यदेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यो-

ऽर्चत, तस्मादृक्

१ ऐत. २।२।७

स यदेभ्यः सर्वेभ्योऽर्चन्त्योऽर्चत

तस्मादर्धर्चः

१ ऐत. २।२।८

स यदेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः

क्षरति, न चैनमतिक्षरन्ति

१ ऐत. २।२।१०

स यदेवंविदस्मात्प्रोक्तास्तैस्तथैभिरेव

प्राणेः सह पुत्रमाविशति

बृह. १।५।१७

स यदैतत्सर्वमपेक्षते तदैतत्सर्व-
मस्मिन्प्रविशति नृसिंहो. ७६
स यदोत्क्रमिष्यन् भवति, नैनं
घोषः शृणोति [बृह. ५।९।१+ मैत्रा. २।८
स यदैतच्चक्षुषाऽग्रहेष्यदृष्ट्वा
हैवाज्ञमत्रप्स्यत् २ ऐत. ३।५
स यदैतच्छिमेनाग्रहेष्यद्विस्तृत्य
हैवाज्ञमत्रप्स्यत् २ ऐत. ३।९
स यदैतच्छ्रोत्रेणाग्रहेष्यच्छ्रुत्वा
हैवाज्ञमत्रप्स्यत् २ ऐत. ३।६
स यदैतन्त्वचाऽग्रहेष्यत्स्पृष्ट्वा
हैवाज्ञमत्रप्स्यत् २ ऐत. ३।७
स यदैतन्त्राणेनाग्रहेष्यदभिप्राप्य
हैवाज्ञमत्रप्स्यत् २ ऐत. ३।४
स यदैतद्वाचाऽग्रहेष्य-
तुमिव्याहृत्य हैवाज्ञमत्रप्स्यत् २ ऐत. ३।३
स यदैतन्मनसाऽग्रहेष्यद्व्यात्वा
हैवाज्ञमत्रप्स्यत् २ ऐत. ३।८
स यद्यगदः स्यात् पुत्रस्यैवये
पिता वसेत् कौ. त. २।१५
स यद्यदेवासृजत तत्तदनुमधियत् बृह. १।१।५
स यद्यनुब्रूयते तन्नवति निरुक्तो. १
स यद्यनेन किञ्चिदक्षण्या कृतं
भवति तस्मादेनः सर्वस्मात्पुत्रो
सुच्यति बृह. १।५।१७
स यद्येकमात्रमभिध्यायीत स तेनैव
संवेदितस्तूर्णमेव जगत्यामभि-
सम्पद्यते प्रश्नो. ५।३
स यद्येतेषां (स्वप्ने) किञ्चित्
पश्येत्, उपोष्य पायसं
स्थालीपाकं अपयित्वा रात्रि-
सुक्तेन प्रत्युचं हुत्वाऽन्येनाग्नेन
प्राक्षणाभोजयित्वा चरुं स्वयं
प्राप्नीयात् ३ ऐत. २।४।७
स यद्यज्जमसो देवानां भूर्भुवः-
स्वरावीनां सर्वेषां लोकानां च भस्मज्ज. २।५
स यद्यज्जमसो देवानां भूर्भुवः-
स्वरावीनां सर्वेषां लोकानां च तैत्ति. २।१०
स यथायमशरीरः प्रकाशमा-
यथासावावित्य एकमेवविति ३ ऐत. २।३।२

स यथायं पुरुषे । यथासावावित्ये
स एकः [तैत्ति. २।८+३।१०।४
स यश्चित्तं ब्रह्मेत्युपास्ते चित्तान्वै
स लोकान्ध्रुवान्ध्रुवः प्रतिष्ठितान्
प्रतिष्ठितोऽव्यथमानानव्यथ-
मानोऽभिसिद्धयति छांदो. ७।५।३
स यस्तान् पुरुषान्निरुह्य
प्रत्यूह्य (मा. पा.) बृह. ३।९।२६
स यस्तान्पुरुषान्निरुह्य प्रत्यूह्या-
त्यकामत् बृह. ३।९।२६
स यस्तं न विद्यात्कथं कुर्यादथ
विद्वान्कुर्यात् छांदो. २।२४।२
स यः सङ्कल्पं ब्रह्मेत्युपास्ते क्लृप्तान्वै
स लोकान्ध्रुवान्ध्रुवः प्रतिष्ठितान्
प्रतिष्ठितोऽव्यथमानान-
व्यथमानोऽभिसिद्धयति छांदो. ७।४।३
स यः स पाप्मा बृह. १।३।२
स यः स्मरं ब्रह्मेत्युपास्ते यावत्
स्मरस्य गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति छांदो. ७।१३।२
स यः कामयेत महत्प्राप्नुयामि-
त्युदगयनं आपूर्यमाणपक्षस्य
पुण्याहे...पुः सा नक्षत्रेण
मन्थः सजीय जुहोति बृह. ६।३।१
स यः कामयेत महत्प्राप्नुयां (मा.पा.) बृह. ६।३।१
स याति परमां गतिम् भ. गी. ८।१३
स यामिच्छेत्कामयेत मेति... बृह. ६।४।९
स यामेवामुः सावित्रीमन्वाहैवैव
स यस्मा अन्वाहृतस्य प्राणाः
स्नायते बृह. ५।१४।४
स यावतीयं त्रयी विद्या तावद्ध
जयति बृह. ५।१४।५
स यावत्क्षिप्येन्मनस्तावदादित्यं
गच्छति छांदो. ८।६।५
स यावदप्येतेषामेकैकं न प्राप्नो-
त्यकुरुस्तेन एव तावन्मन्यते बृह. १।४।१७
स यावदस्माच्छरीरादनुत्क्रान्तो
भवति सावज्जानाति छांदो. ८।६।४

स यावदादित्य उत्तरत उदेता दक्षिणतोऽस्तमेता	छांदो. ३।१०।४	स योऽर्जं ब्रह्मेत्युपास्तेऽन्नवतो वै स लोकान्पानवतोऽभिसिद्धयति	छांदो. ७।९।२
स यावदादित्यः पश्चादुदेता पुरस्तादस्तमेता	छांदो. ३।९।४	स योऽन्यमात्मनः प्रियं ब्रुवाणं ब्रूयात्प्रियं रोत्स्यतीश्वरः	बृह. १।४।८
स यावदादित्यः पुरस्तादुदेता पश्चादस्तमेता [छांदो.	३।६।४+७।४	स योऽपो ब्रह्मेत्युपास्ते आप्नोति सर्वान्कामां स्तृप्तिमान्भवति	छांदो. ७।१०।२
स यावदादित्यो दक्षिणत उदेतो- त्तरतोऽस्तमेता	छांदो. ३।८।४	स यो बलं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्बलस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति	छांदो. ७।८।२
स यावद्विदं प्राणि तावद्ध जयति	बृह. ५।१४।३	स यो म आयुरमृतमित्युपास्ते सर्वमायुरस्मिँल्लोक एत्याप्नोति	कौ. त. ३।२
स यावदेषु त्रिषुलोकेषु तावद्ध जयति	बृह. ५।१४।१	स यो मनुष्याणां राक्षः समृद्धो भक्त्यन्येषामधिपतिः	बृह. ४।३।३३
स यावद्ध वा इन्द्र एतमात्मानं न विजज्ञेतावदेनमसुरा अभिबभूवुः	कौ. त. ४।२०	स यो मनो ब्रह्मेत्युपास्ते याव- न्मनसो गतं तत्रास्य यथा- कामचारो भवति	छांदो. ७।६।२
स यावन्मनसोगतं तत्रास्य..(मा.पा.)	छां. व. ७।३।२	स यो मां विजानीयान्नास्य केन च कर्मणा लोको मीयते	कौ. त. ३।१
स यावान् ह वै वाजपेयेन अजमानस्य लोको भवति	बृह. ६।४।३	स यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते याव- द्वाचो गतं तत्रास्य यथा- कामचारो भवति	छांदो. ७।२।२
स यां प्रथमामाहुति जुहुयात्तां जुहुयात्प्राणाय स्वादेति प्राण- स्तृप्यति	छांदो. ५।१९।१	स यो विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्ते विज्ञान- वतो वै स लोकाञ्ज्ञानवतो- ऽभिसिद्धयति	छांदो. ७।७।२
स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्	म. गी. ४।१८	स यो ह वै तदच्छायमशरीरम- लोहितं शुभ्रमक्षरं वेदयते यस्तु	
स युक्तः स सुखी नरः	म. गी. ५।२३	सोम्य स सर्वज्ञः सर्वो भवति	प्रभो. ४।१०
स येन यज्ञकृतुना याजयेत्सोऽरण्यं परेत्य शुचौ देशे स्वाध्यायमेवैन- मधीयन्नासीत्	सहस्रै. २१	स यो ह वै तद्गवन्मनुष्येषु प्राणान्तमोक्षारमभिध्यायीत	प्रभो. ५।९
स योगी परमो मतः	म. गी. ६।३२	स योऽस्य प्राक्पुषिः स प्राणस्त- न्पुषुः स आदित्यस्तरोजोऽन्नाद्य- मित्युपासीत	छांदो. ३।१३।१
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं	म. गी. ५।२४	स यो ह वै परमब्रह्मवेद ब्रह्मैवभवति	मुण्ड. ३।२।९
स योगी मयि वर्तते	म. गी. ६।३१	स यो ह वै मनुष्याणां राक्षः समृद्धो भवति.— (मा. पा.)	बृह. ४।३।३३
स योऽत एकैकमुपास्ते न स वेद	बृह. १।४।७	स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म यो वेद वै मुनिः	बृह. ५।२
स योऽतोऽद्भुतोऽगतोऽमतोऽनतो- ऽद्भुतोऽविज्ञातोऽनादिष्टः श्रोता मन्ता ब्रह्मा देष्टा घोष्टा विज्ञाता प्रज्ञाता सर्वेषां भूतानामन्तर- पुरुषः सम आत्मेति विष्वात्	३ ऐत. २।४।८	स यो ह वै सावित्रस्याष्टाक्षरं पदं श्रियाभिषिक्तं तस्मान्नोऽङ्गं वेद श्रिया हेवाभिषिच्यते	नृ. पू. १।३
स यो ध्यानं ब्रह्मेत्युपास्ते याव- द्ध्यानस्य गतं तत्रास्य यथा- कामचारो भवति	छांदो. ७।६।२		
स यो नाम ब्रह्मेत्युपास्ते याव- न्नाम्नो गतं तत्रास्य यथा- कामचारो भवति	छांदो. ७।१।५		

स यो हैतमेवमुपास्ते एतेषां
सर्वेषामात्मा भवति कौ. त. ४।१६।१७

स यो हैतमेवमुपास्ते जिष्णुर्ह
वाऽपराजिष्णुरन्यतस्तज्ज्यायान्
भवति कौ. त. ४।७

स यो हैतमेवमुपास्तेऽतिष्ठाः
सर्वेषां भूतानां मूर्धा भवति कौ. त. ४।२

स यो हैतमेवमुपास्ते तेजस
आत्मा भवति कौ. त. ४।४

स यो हैतमेवमुपास्तेनान्मआत्माभवति कौ. त. ४।९

स यो हैतमेवमुपास्तेऽनस्यात्माभवति कौ. त. ४।३

स यो हैतमेवमुपास्ते पूर्यते प्रजया
पशुभिर्नो एव स्वयं नास्य प्रजा
पुरा कालात्प्रवर्तते कौ. त. ४।६

स यो हैतमेवमुपास्ते प्रतिरूपो
हैवास्य प्रजायामाजायते
नाप्रतिरूपः कौ. त. ४।१०

स यो हैतमेवमुपास्ते प्रजायते
प्रजया पशुभिः कौ. त. ४।१४

स यो हैतमेवमुपास्ते विन्दते
द्वितीयाद्वितीयवान्भवति कौ. त. ४।११

स यो हैतमेवमुपास्ते विषासद्विर्वा
एष भवति कौ. त. ४।८

स यो हैतमेवमुपास्ते सर्वे हास्मा
इदं श्रेष्ठाय यम्यते कौ. त. ४।१५

स यो हैतमेवमुपास्ते नो एव स्वयं
नास्य प्रजा पुरा कालात्सम्मोह-
मेति (कालात्प्रमीयते) कौ. त. ४।१२, १३

स यो हैतं महद्यक्षं प्रथमजं वेद
सत्यं ब्रह्मेति बृह. ५।४।१

स यो हैतानन्तवत् उपास्तेऽन्त-
वन्तः स लोकं जयति बृह. १।५।१३

(अथ) स यो हैताननन्तानु-
पास्तेऽनन्तः स लोकं जयति बृह. १।५।१३

स यो हैतामवरपरां संहितां वेद
स यो हैतां वैवी गीणां वेद श्रुत-
वर्तनो भवति ३ ऐत. २।५।३

स यो हैतौ णकारषकारावनुसंहित-
मृचो वेदं सबलां सप्राणां
संहितां वेदायुष्यमिति विद्यात् ३ ऐत. २।६।१

सरसामस्मि सागरः भ.गी. १०।२४

सरसा सपिष्टान् गन्धार मम
चित्ते रमन्तु स्वाहा महाना. १४।५

सरस्वती कुहूश्चैव सुषुम्नापार्श्वयोः
स्थिते । गान्धारा हस्तिजिह्वा
च इडायाः पृष्ठपार्श्वयोः जा. द. ४।१४

सरस्वती तथा चोर्ध्वगता जिह्वा
तथा मुने । हस्तिजिह्वा तथा
सव्यपादाङ्गुष्ठान्तमिष्यते जा. द. ४।२१

सरस्वती तु या नाडी सा जिह्वान्तं
प्रसर्पति यो. शि. ५।२३

सरस्वती रत्नरूपं च दुर्गा हैमं
लिङ्गं पूजयामास भक्त्या सि. शि. २५

सरस्वत्याः सर्वे वेदा अभवन् गायत्रीर. १

सराणां सप्तकं वापि बिभृयात्
कण्ठदेशतः । मुकुटे कुण्डले
चैव कर्णिकाहारकेऽपि वा क. जा. १८

स रात्रिभिरेवा च पूर्यते अप
च क्षीयते बृह. १।५।१४

स राम इति लोकेषु विद्वद्भिः
प्रकटीकृतः रा. पू. ता. १।३

स रावण इति ख्यातो यद्वा
रावाच रावणः रा. पू. ता. ४।१८

स-रि-ग-म-प-ध-नि-स-संज्ञै-
र्वैराग्यबोधकरैः... परमहंसा-
श्रमेणास्वलितस्वस्वरूपध्यानेन
देहत्यागं करोति समुक्तो भवति ना. प. २।१

सरूपोऽसौ मनोनाशो जीव-
न्मुक्तस्य विद्यते अ. पू. ४।१८

स रौद्रः सामाभिगायति छांदो. २।२४।७

सर्गाणामादिरन्तश्च भ. गी. १०।६३

सर्गादिकाले भगवान् विरिञ्चि-
रुपास्यैनं सर्गसामर्थ्यमाप्नोति ।
तुतोष चित्ते बाह्यवैराग्यं
लब्ध्वा धन्यः सोपास्योपासको
भवति आता ३. पू. २३

सर्गेऽपि नोपजायन्ते
 सर्गे यान्ति परन्तप
 सर्प इति सर्वविदः (उपासते)
 सर्पत्वेन यथा रज्जु रजतत्वेन
 शुक्तिका । विनिर्णीता विमूढेन
 देहत्वेन तथाऽऽत्मता
 सर्पा गन्धर्वाः पितरस्तन्निधनमेत-
 त्साम सर्वस्मिन्प्रोतम्
 सर्पाणामस्मि बासुकिः
 सर्पादौ रज्जुसत्तेव ब्रह्मसत्तैव
 केवलम् । प्रपञ्चाधाररूपेण
 वर्ततेऽतो जगन्नहि
 सर्व आत्मा जायते पुरुषोत्तमात्
 सर्व इन्मामुपयन्ति विश्वतः
 सर्व ऊर्माणः प्रजापतेरात्मनः
 सर्व एते पुण्यलोका भवन्ति
 सर्व एते विष्णुलिङ्गिनः शिखिन
 उपवीतिनः शुद्धचित्ताः...
 पुण्यलोका भवन्ति
 सर्व एव त आयुर्यन्ति
 सर्व एव महारथाः
 सर्व एव विमुच्यन्ते ये नराः
 शिवमाश्रिताः
 सर्वकरणानि मनसि सम्प्रतिष्ठाप्य
 ज्ञानम्
 सर्वकरणोपसंहाराद्वार्यधारणा
 ब्रह्म तुरीयम्
 सर्वकर्ता च योगीन्द्रः स्वतन्त्रो-
 ऽनन्तरूपवान्
 सर्वकर्मकृदप्यहम्
 सर्वकर्मनिराकरणमावाहनम्
 [मं. ब्रा. २।५+
 सर्वकर्मपरित्यागी नित्यतृप्तो
 निराश्रयः । न पुण्येन न पापेन
 नेतरैण च लिप्यते
 सर्वकर्मफलत्यागं [म.गी.१२।११
 सर्वकर्मफलादीनां मनसैव न
 कर्मेणा । निपुणो यः परित्यागी
 सोऽसंख्यत इति स्मृतः

भ. गी. १४।२
 भ. गी. ७।२७
 मुद्रलो. ३।२
 यो. शि. ४।२२
 छांदो. २।२१।१
 भ. गी. १०।२८
 आ. प्र. १३
 सि. वि. २
 बा. मं. २०
 छांदो. २।२२।३
 छांदो. २।२३।१
 शाख्याय. ११
 तैत्ति. २।३
 भ.गी. १।६
 शिवो. १।३२
 अ. शिखो. ३
 अ. शिखो. ३
 यो.शि. १।१५०
 मैत्रे. ३।१५
 अ. पू. १
 अ. पू. ५।९७
 +१८।२
 अ. पू. २।६

सर्वकर्मविनिर्मुक्तः काम-क्रोध-लोभ-
 मोह-मद-मात्सर्यादिकं दृग्वा
 त्रिगुणातीतः...स्थिरमतिर्ना-
 नृतवादी गिरिकन्दरेषु वसेत्
 सर्वकर्माणि मनसा
 सर्वकर्माण्यपि सदा
 सर्वकर्मा सर्वकामः सर्वगन्धः
 सर्वरसः सर्वमिदमभ्यात्तः
 सर्वकारणकार्यात्मा कार्यकारण-
 वर्जितः
 सर्वकारणं परं ब्रह्म
 सर्वकालं हंसं प्रकाशकम्
 सर्वकालाबाधितं ब्रह्म
 सर्वक्षेत्रेषु भारत
 सर्वगं सच्चिदात्मानं ज्ञानचक्षु-
 र्निरीक्षते । अज्ञानचक्षुर्नेक्षेत
 भास्वन्तं भानुमन्भवत्
 सर्वगः सर्वसम्बन्धो गत्यभावात्
 गच्छति । नास्त्यसावाश्रया-
 भावात्सद्रूपत्वादथास्ति च
 सर्वगुह्यतमं भूयः
 सर्वगो ह्येष ईश्वरः क्रियाज्ञानात्मा
 सर्वचिन्तावधिर्गुरुः
 सर्वचिन्तां परित्यज्य चिन्मात्र-
 परमो भव
 सर्वचिन्तां परित्यज्य सावधानेन
 चेतसा । नाद एवानुसन्धेयो
 योगसाम्राज्यमिच्छता
 सर्वचिन्तां समुत्सृज्य सर्वचेष्टा-
 विवर्जितः । नादमेवानुसन्दध्या-
 नादे चित्तं विलीयते
 सर्वजगदात्मत्वेन पश्यंस्त्यक्ताह-
 क्कारो ब्रह्माहमस्मीति चिन्तय-
 त्तिदं सर्वं यदयमात्मेति भावय-
 न्कृतकृत्यो भवति
 सर्वजनविश्वजनशत्रुजनवश्यजन-
 सर्वजनस्य दृशं लं लां श्रीं ह्रीं
 ह्रीं मनः स्तम्भय स्तम्भय

ना. प. ७।२
 भ. गी. ५।१३
 भ.गी. १८।५६
 छांदो. ३।१४।४
 ते. बि. ५।१
 मं. ब्रा. ३।१
 पा. ब्र. ४
 त्रि.म.ना. १।३
 भ. गी. १३।३
 वराहो. २।१८
 महो. २।८
 भ. गी. १८।६
 नृसिंहो. ९।४४
 ते. बि. ५।१
 शांदि. १।७।२०
 वराहो. २।८३
 ना. बि. ४।१
 मं. ब्रा. २।८
 छांदो. ८

सर्वज्ञानी यास्यतीति विद्याद्य-

स्तथाऽधीते

संहितो. १।२

सर्वज्ञवरोच्चाटनीं च सर्वमन्त्रप्रभञ्ज-

नीम् ।...मातङ्गीं मदिरामोदां

वन्दे तां जगदीश्वरीम्

वनदु. २०

सर्वज्ञता हि सर्वत्र भवतीह

महाधियः

अ. शां. ८९

सर्वज्ञत्वं परेशत्वं सर्वसम्पूर्ण-

शक्तिता । अनन्तशक्तिमत्त्वं

च मन्दनुस्मरणाद्भवेत्

यो. शि. ३।२५

सर्वज्ञं महामायं महाविभूति

सर्वज्ञं सर्वगं शान्तं सर्वेषां हृदये

स्थितम् । सुसंवेद्यं गुरुमतात्

सुदुर्बोधमचेतसाम्

यो. शि. ३।२०

सर्वज्ञः पञ्चकृत्यसम्पन्नः सर्वेश्वर

ईशः पशुपतिः

जाबाल्यु. २

सर्वज्ञः सर्वेश्वरः सर्वभूतान्तरात्मा

सर्वभूताधिवासः सर्वभूतनि-

गूढो भूतयोनियोगैकगम्यः

शांडि. २।१।४

सर्वज्ञानविमूढांस्तान्

सर्वज्ञानानिब्याकरणमुदरं(गायत्र्याः)

अ. गी. ३।३२

सर्वज्ञानित्वत्त्यनादिबोधस्वतन्त्र-

नित्वमलुप्तानन्तं षट्कोणशक्तयः

ना.पू.ता. ६।१

सर्वज्ञेशो मायालेशसमन्वितो

व्यष्टिदेशं प्रविश्य तथा

मोहितो जीवत्वमगमत्

पैङ्गलो. १।५

सर्वज्ञो मघोऽप्रमेयोऽनाद्यन्तः

सर्वज्ञोऽसौ भवेत्कामरूपः पवन-

वेगवान्

यो. शि. १।१४८

सर्वतत्त्वमसद्विद्धि इहं भूमा

सदाशिवः

ते. वि. ३।५१

सर्वतज्जेषु गोप्यमहाविद्या भवति

सर्वतः खल्वयं मुखवान्विश्व-

मं. ब्रा. १।४

रूपत्वात्

अव्यक्तो. ३

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षि-

शिरोमुखम् । सर्वतः श्रुति-

मल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति

[अन्ताश्र. ३।१६१

अ. गी. १३।१४

सर्वतः पाणिपादान्ता सर्वतोऽक्षि-

शिरोमुखा । सर्वतः श्रुतिमल्लोके

सर्वमावृत्य तिष्ठति

गुह्यका. ४८

सर्वतः श्रुतिमल्लोके

अ. गी. १३।१४

सर्वतः सम्प्रुतोदके

अ. गी. २।४६

सर्वतः स्वरूपमेवपश्यजीवन्मुक्ति-

मवाप्य प्रारब्धप्रतिभासनाश-

पर्यन्तं चतुर्विधं स्वरूपं ज्ञात्वा

देहपत्तनपर्यन्तं स्वरूपा-

नुसन्धानेन वसेत्

ना. प. ७।३

सर्वतीर्थस्वरूपोऽस्मि परमात्मा-

स्म्यहं शिवः

मैत्रे. ३।१२

सर्वतेजःप्रकाशात्मा नादानन्द-

मयात्मकः

ते. वि. ५।३

सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्

सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्

अ. गी. १३।१४

सर्वतोमुखत्वाद्भृषिहत्वाद्भीषण-

त्वाद्भृत्वात्...मनमादि-

साक्षिणमन्विच्छेत्

नृसिंहो. ७।५

सर्वतो मुखमसर्वतोमुखं नृसिंह-

मनृसिंहं भीषणमभीषणं..

नृसिंहानुष्टुमेव बुबुधिरे

नृसिंहो. ६।१

सर्वतोमुखमित्याह-सर्वतः खल्वयं

मुखवान् विश्वरूपत्वात्

अव्यक्तो. ३

सर्वतोमुखं पञ्चमं स्थानं (जानीयात्)

सर्वतो वितता दृष्टिः प्रत्यग्भूता

नृ. पू. २।३

शनैः शनैः

अमनः. २।६३

सर्वत्र गतास्तोभावाः सर्वत्रनिवृत्ताः

सर्वत्र प्रवृत्ताः

संहितो. २।१

सर्वत्रगमचिन्त्यं च

अ. गी. १३।३

सर्वत्र चतुर्थस्वरा मन्त्रस्वराश्च

प्रस्तावा चतुर्थमन्त्रातिस्वार्थाश्च

स्वराश्च भवन्ति

संहितो. २।२

सर्वत्र जडहीनात्मा सर्वेषा-

मन्तरात्मकः

ते. वि. ७।४४

सर्वत्र नृप्तिरूपोऽहं परावृत-

रसोऽस्म्यहम्

ते. वि. ३।३९

सर्वत्र दानप्रतिग्रहः सौमचार्यपूतो

भवति

संहितो. ५।१

सर्वत्रानिकेतः स्थिरमतिः...कटि-
सूत्रं च कौपीनं वण्डं वस्त्रं
कमण्डलुं सर्वमप्सु विसृज्याथ
जातरूपधरश्चरेदात्मान-

मन्विच्छेत्

ना. प. ३।८७

सर्वत्रनीरसमिह तिष्ठत्यात्मारसंमनः

अ. पू. २।९

सर्वत्र पुण्यापुण्यवर्जितः ज्ञानाज्ञान-

मपि विहाय...प्रणवात्मकत्वेन

देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः

तुरीया. ३

सर्वत्र भानुवन्मुमुक्षूणामाधारः

स्वयंश्रुतिर्ब्रह्माकाशः सर्वदा

विराजते

ना. प. ८।२३

सर्वत्र भावना गन्धः

मं. ब्रा. २।५

सर्वत्र युग्मकूट्या ब्राह्मणानर्चयेत्

ना. प. ४।३९

सर्वत्र रोहपूर्वेष्ववरोहपूर्वाण्यु-

दात्तेष्वनुदात्तान्यभिगीते-

ष्वनभिगीतानि

संहितो. २।१

सर्वत्र वर्तते जाग्रत्स्वप्नं जाग्रति

वर्तते । सुषुप्तं च तुरीयं च

नान्यावस्थासु कुत्रचित्

त्रि. ब्रा. १।२।१०

सर्वत्र विगतस्नेहो यः साक्षिवद्व-

स्थितः । निरिच्छो वर्तते कार्ये

स जीवन्मुक्त उच्यते

महो. २।५१

सर्वत्र विचरेन्मौनी वायुवद्वीत-

कल्मषः । समदुःखसुखः क्षांतो

हस्तप्राप्तं च भक्षयेत्

ना. प. ५।४८

सर्वत्र विनामितप्रणामितेष्वविना-

मितेष्वविनामितान्यप्रणामितानि

संहितो. २।१

सर्वत्र विसर्गोपगृहेष्वविसृष्टान्यनुप-

गृहीतानि

संहितो. २।२

सर्वत्र शुभाशुभयोरनभिस्नेहः [तुरीया.

३+प. हं. ९

सर्वत्र समदर्शनः

अ. गी. ६।२९

सर्वत्र समबुद्धयः

अ. गी. १२।४

सर्वत्र सर्वतः सर्वब्रह्मात्रावलो-

कनम् । सद्भावभावनादाढर्या-

द्वास्त्रनालयमभुते

अभ्यासो. १३

सर्वत्र सुखवानहम्

ते. वि. ३।३८

सर्वत्र शौचं लुपेभु रेफसन्धयः

संहितो. २।१

सर्वत्र ह्रस्वकर्षणेषु दीर्घकर्षणानि

दीर्घकर्षणेषु मन्द्रकर्षणानि

संहितो. २।२

सर्वत्रान्तःपदार्थविवेचने

मनोयुक्ताभ्यास इष्यते

अद्वयता. ६

सर्वत्रावस्थितं शान्तं चिद्ब्रह्मे-

त्यनुभूयते

अ. पू. ५।२१

सर्वत्रावस्थितो देहे

अ. गी. १३।३३

सर्वत्राहमकर्तेति दृढभावनया-

ऽनया । परमासृतनाम्नी सा

समतैवावशिष्यते

महो. ६।२

सर्वथा वर्तमानोऽपि [अ. गी. ६।३१+

१३।२३

सर्वदहनोऽयमात्मेत्याचक्षते

सुबालो. ९।१४

सर्वदा द्वैतरहित आनन्दरूपः

सर्वाधिष्ठानः...परं ब्रह्मानु-

सन्दध्यात्

नृसिंहो. २।८

सर्वदाऽनवच्छिन्नं परं ब्रह्म तस्मा-

ज्जाता परा शक्तिः स्वय-

ञ्जोतिरात्मिका

यो. च. ७।२

सर्वदा पूर्णरूपोऽस्मि नित्यतृप्तो-

ऽस्म्यहं सदा

ते. वि. ३।१५

सर्वदा मनोवाक्कायकर्मभिः सर्व-

संसारमुत्सृज्य प्रपञ्चावाकुलः

स्वरूपानुसन्धानेन भ्रमरकीट-

न्यायेन मुक्तो भवति

ना. प. ५।५२

सर्वदा यमामनन्ति यन्नमस्यन्ति

देवाः स ब्रह्मा स शिवः

सूर्यता. १।२

सर्वदा शुचिरशुचिर्वा पठन्ब्राह्मणः

सलोकतां संमीपतां सरूपतां

सायुज्यतामेति

कलिसं. ५

सर्वदा समरूपोऽस्मि शान्तोऽस्मि

पुरुषोत्तमः

मैत्रे. ३।२४

सर्वदा समस्तेन साम मां प्रति मां

प्रतीति सर्वेण समस्तेन साम

छांदो. २।९।१

सर्वदा सर्वशून्योऽहं सर्वात्मा-

ऽऽनन्दवानहम्

ते. वि. ३।२७

सर्वदा सर्वसोम्येति प्रणवपूर्वकं

कमण्डलुं परिगृह्य...स्वाश्रमा-

चारपरो भवेत्

ना. प. ४।५०

सर्वदा सुलभोऽस्म्यहम्
 सर्वदा राजरूपोऽहं नीरागोऽस्मि
 निरञ्जनः
 सर्वदिव्यदेहमध्ये परमात्मा प्रकाशितः
 विनिर्मुक्तभवसागरः स्वर्गे
 देवमध्ये उत्तमस्वरूपस्य
 बुद्धिप्रकाशः अस्मिन्मध्ये
 मायामोहं परित्यजेत्
 सर्वदुष्टप्रक्षमनं सर्वैश्वर्यफलप्रदम् ।
 आसदेवं महाबोधदायकं
 पावकात्मकम्
 सर्वदृश्यविहीनोऽहं दृग्गो-
 ऽस्म्यहमेव हि
 सर्वदेवमयं ब्रह्म तथा प्रीणाति
 विश्वभुक्
 सर्वदेवमयं शान्तं शान्त्यतीतं
 स्वराद्धिः
 सर्वदेवमयः सर्वप्रपञ्चाधारगर्भितः ।
 सर्वाक्षरमयः कालः सदस-
 त्प्रतिवर्जितः
 सर्वदेवस्य मध्यस्थो हंस एव
 मद्देश्वरः
 सर्वदेवात्मकं रुद्रं नेमस्कुर्यात्
 पृथक्पृथक् । एभिर्मन्त्रपदैरेव
 नमस्यामीशपार्वतीम्
 सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वे देवाः
 शिवात्मकाः
 सर्वदेवात्मा वै स एकः
 सर्वदेशिकवाक्योक्तिर्येन केनापि
 निश्चितम् । इदं जगति
 यद्यसर्वं मिथ्येति निश्चिनु
 सर्वदेवैरेव तृप्तः चतुरूपः
 शिवात्मकः । यथा महाफले
 सर्वे रक्षाः सर्वप्रवर्तकाः
 सर्वदेवेषु लिङ्गधारणं भवति
 सर्वदेवैरहित आनन्दरूपः
 सर्वदेवैर्भूतो जीवः कथं ज्ञानेन
 मुच्यते
 सर्वदेवा सर्वानुभूयम्

मैत्रे. ३।१५

ते. बि. ३।४२

अद्वैतो. ४

पञ्चम. ५

ते. बि. ३।१५

गान्धर्वो. ७

पञ्चम. १५

तुरीयो. ३

त्रि. बि. ६२

रुद्रह. २४

रुद्रह. ४

गणेशो. ४।९

ते. बि. ५।५४

त्रि.जा. १।२।११

लिङ्गोप. २

गणेशो. १।४

यो. बि. १।१६

त्रि. बि. ११०

सर्वद्वन्द्वैर्विनिर्मुक्तो ब्रह्मण्येवाव-

तिष्ठते

सर्वद्वाराणि संयम्य

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्

सर्वधर्मान् परित्यज्य

सर्वधर्मान्परित्यज्य निर्ममो

निरहङ्कारो भूत्वा ब्रह्मेष्टं

शरणमुपगम्य तत्त्वमसि...

इत्यादिमहावाक्यार्थानुभवज्ञाना-

द्ब्रह्मैवास्मीति निश्चित्य निर्वि-

कल्पसमाधिना स्वतन्त्रो यति-

श्चरति स सच्चयासी

सर्वध्यानयोगज्ञानानां यत्फल-

मोक्षारः

सर्वनयनः प्रशस्तान्नमयो भूतात्मा

प्राणमय इन्द्रियात्मा

सर्वनादमयः शिवः

सर्वनिरामयपरिपूर्णोऽहमस्मीति

मुमुक्षूणां मोक्षैकसिद्धिर्भवति

सर्वपरिपूर्णतुरीयातीतब्रह्मभूतो

योगी भवति

सर्वपरिपूर्णं ब्रह्म

सर्वपरिपूर्णान्तचिन्मयस्तम्भाकारं

(ब्रह्म)

सर्वपरिपूर्णो नारायणस्त्वनया

निजया क्रीडति स्वेच्छया सदा

सर्वपरिपूर्णोऽहमेव

सर्वपरोक्षा देवस्य हिता भवति

सर्वपर्वसु यत्नेन ह्येषु सम्पूजये-

च्छिवम्

सर्वपापविशुद्धात्मा परंब्रह्माधि-

गच्छति । मासि मासि

कुशाग्रेण जलविन्दुं च यः पिबेत्

सर्वपापैः प्रमुच्यते

सर्वपूर्णस्वरूपोऽस्मि सच्चिदानन्दलक्षणः

सर्वप्रकाशरूपोऽस्मि

सर्वप्रकाशरूपोऽहं परावरमुखो-

ऽस्म्यहम्

सर्वप्रत्यक्षाऽसुरसंहिता भवति

ना. प. ३।५४

म. गी. ८।१२

म. गी. १४।११

म. गी. १८।६६

निरा. ३२

अ. शिखो. ३

सुबालो. ५।१५

ते. बि. ५।२

आत्मपू. १

मं. ब्रा. २।९

त्रि. म. ना. १।३

त्रि. म. ना. ४।१

त्रि. म. ना. ४।१०

त्रि. म. ना. ८।६

संहितो. १।१

शिवो. ७।७५

योगो. १७

म. गी. १०।३

मैत्रे. ३।१२

मैत्रे. ३।२१

ते. बि. ३।१०

संहितो. १।३

सर्वप्रपञ्चभ्रमवर्जितोऽसि, सर्वेषु

भूतेषु च भासितोऽसि

सर्वप्रयत्नेन कुर्याच्छ्राद्धं महालयम्

सर्वबन्धाः प्रविनश्यन्ति

सर्वभावपद्मातीतं, ज्ञानरूपं

निरञ्जनम्

सर्वभावान्तरस्थाया चैत्यमुक्त-

चिदात्मने । प्रत्यक्चैतन्यरूपाय

महामेव नमोनमः

सर्वभावेन भारत [भ. गी. १५।१९

सर्वभूतस्थमात्मानं

सर्वभूतमसत्सदा

सर्वभूतातिगश्चात्मा

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि

चात्मनि । सम्पद्यन्ब्रह्म परमं

याति नान्येन हेतुना

सर्वभूतस्थमेकं (वै) नारायणं

कारणपुरुषमकारणं परं

ब्रह्म [आ. प्र. १+

सर्वभूतस्थितं देवं सर्वेशं

नित्यमर्चयेत्

सर्वभूतस्थितं यो मां

सर्वभूतहितः शान्तस्त्रिदण्डी

सकमण्डलः । एकारामः

परिब्रज्य भिक्षार्थं भ्रममाविशेत्

सर्वभूतहिते रताः [भ. गी. ५।२५+

सर्वभूतातिगश्चात्मा कोशातीतः

परात्परः

सर्वभूतात्मभूतात्मा

सर्वभूतात्मभूतो हि बासुदेवो

महाबलः

सर्वभूताधिवासं च यद्भूतेषु बसत्यधि

सर्वभूताधिवासः सर्वभूतनिपादो

भूतयोनिर्यौगैकगम्यः

सर्वभूताधिवासोऽहं सर्वम्भापी

स्वराडहम्

सर्वभूतानां माता मेदिनी

ते. बि. ५।६३

इतिहा. ९१

त्रि. म. ना. ५।४

यो. शि. १।७

१ सं. सो. २।२५

+१८।६२

भ. गी. ६।२९

ते. बि. ३।१

२ रुद्रो. ५२

कैव. १०

नारा. ४

ब्र. बि. ७७

भ. गी. ६।३१

ना. प. ३।५५

१२।४

२ रुद्रो. ५२

भ. गी. ५।७

ना. महो. २२

ब्र. बि. २२

शांडि. २।४

ब्र. बि. १०६

महाना. १०।१४

सर्वभूतान्तरस्थाया

नित्यमुक्त-

चिदात्मने । प्रत्यक्चैतन्यरूपाय

महामेव नमोनमः

सर्वभूतान्तरात्माऽहमहमस्मि

सनातनः

सर्वभूतान्तर्वर्ती हंस इति

प्रतिपादनम्

सर्वभूतानि कौन्तेय

सर्वभूतानि चात्मनि

सर्वभूतानि सम्मोहं

सर्वभूताशयस्थितः

सर्वभूतेभ्योऽभयं दत्त्वाऽरण्यं

गत्वा...स्वाच्छरीरादुपलभे-

तैनम् (आत्मानम्)

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न

विजुगुप्सते । यस्तु सर्वाणि

भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति

सर्वभूतेषु चात्मानं ब्रह्म सम्पद्यतेतदा

सर्वभूतेषु येनैकं

सर्वमप्राह्यभावेन हेतुनाजं

प्रकाशते

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थि-

साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके

गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते

सर्वमजीजनत् (दैवी शक्तिर्माया)

सर्वमनुष्टुप् । एतं मन्त्रराजं यः

पश्यति, स पश्यति

सर्वमन्तः परित्यज्य शीतलाशय-

वर्ति यत् । वृत्तिस्थसपि

तच्चित्तमसद्रूपमुदाहृतम्

सर्वमन्त्रान् समुत्सृज्य एतं (अहं

ब्रह्मास्मि) मन्त्रं समभ्यसेत् ।

सद्यो मोक्षमवाप्नोति नात्र

सन्देहमण्वपि

सर्वमन्यत्परित्यज्य समस्ताध्व-

शित्वैतामधीत्य द्विजो गर्भवासा-

द्विमुक्तो विमुच्यते

सर्वमयस्तद्यदेतदिदममयोऽवोमय इति

यथाकारी यथाचारी तथा भवति बृह. ४।४।९

वराहो. २।३३

ब्र. बि. १०९

निर्वाणो. १

भ. गी. ९।७

भ. गी. ६।२९

भ. गी. ७।२७

भ. गी. १०।२०

मैत्रा. ६।८

ईशा. ६

जा. द. १२।१०

भ. गी. १८।२०

अद्वैत. २६

वनदु. १५, २१

बहुचो. १

ग. पु. १।३

अ. पु. ४।५१

ते. बि. ३।७४

अ. शिखो. ३

सर्वमस्तीति नास्तीति निश्चयं

त्यज्य तिष्ठति

सर्वमस्मीत्युपासीत, तद्वत्तम्

सर्वमस्यान्नं भवति य एवमेत-

द्वदितेरदितित्वं वेद

सर्वमस्यान्नं भवति य एवं वेद

सर्वमहोरात्राभ्यामभिपन्नम्

सर्वमाकाशतामेति नित्यमन्त-

मुखस्थितेः

सर्वमात्ममयं जगत्

सर्वमात्मा जानीत

सर्वमात्मानं पश्यति नैनं पाप्मा

तरति

सर्वमात्माऽहमात्माऽस्मि परमात्मा

परात्मकः । नित्यानन्दस्व-

रूपात्मा वैदेही मुक्त एव सः

सर्वमात्मेदमत्राहं किं वाञ्छामि

त्यजामि किम्

सर्वमात्मेदमाततम् । अहमन्य इदं

चान्यदिति भ्रांतिं त्यजानघ

सर्वमात्मेव कौ दृष्टौ भावाभावौ

क वा स्थितौ

सर्वमात्मेव शुद्धात्मा सर्व

चिन्मात्रमद्वयम्

सर्वमायुरस्मिल्लोक एवाप्नोति

सर्वमायुरेति [३ ऐत. १।१।३+

[आर्षे. ४।३+६।२, ३+८।२, ४+

सर्वमायुरेति ज्योर्जीवति महान्

प्रजया पशुभिर्भवति महान्

कीर्त्या.. [छांदो. २।११।२+

सर्वमाबुस्य तिष्ठति

सर्वमित्याकाशे, तत्प्रतिष्ठेत्युपासीत

सर्वमिदमभ्यात्तोऽवाक्यनादरः

सर्वमिदं तत्त्वदितो वहामि

सर्वमिदं प्रशास्ति, यदिदं किञ्च

सर्वमिदं रक्षति (माया) सर्वमिदं

संहरति [नृ. पू. ३।२+

सर्वमिदं शिव एव विजानीहि...

सर्वमु ह्येष रज उपर्युपरि तपेति

ते. बि. ४।३९

छांदो. २।२१।४

बृह. १।२।५

बृह. २।२।४

बृह. ३।१।४

अ. पू. १।३२

ते. बि. ६।४६

मैत्रा. ६।७

बृह. ४।४।२३

ते. बि. ४।६२

अ. पू. २।३

महो. ६।१२

अ. पू. २।३६

ते. बि. ६।३९

कौ. त. ३।२

१।५।१

गोपीचं. ८

२।१२।२।

अ. गी. १३।१४

तैत्ति. ३।१०।३

छां. ३।१४।२, ३

वा. मं. २१

बृह. ५।६।१

ग. पू. २।३

त्रि. ब्रा. १।१

बृह. ५।१४।३

सर्वमु ह्येष रज उपर्युपरि तपेति

सर्वमेकमजं शान्तमनन्तं भुवम-

न्ययम् । पश्यन्भूतार्थचिद्रूपं

शान्त आस्व यथासुखम्

सर्वमेकमिदं शान्तमादिमध्यान्त-

वर्जितम् । भावाभावमजं

सर्वमिति मत्वा सुखी भव

सर्वमेकं परं व्योम को मोक्षः

कस्य बन्धता

सर्वमेतत्सन्दहति एवंविद्यद्यप-

वह्नीव पापं करोति

सर्वमेतद्वत्तं मन्ये

सर्वमेतद्विया त्यक्त्वा यदि तिष्ठसि

निश्चलः । सदाहङ्कारविलये

त्वमेव परमं पदम्

सर्वमेतद्विश्वमधितिष्ठत्येको

गुणांश्च सर्वान्विनियोजयेद्यः

सर्वमेव तत्सम्प्लाय शुद्धः

पूतोऽजरोऽमृतः संभवति

सर्वमेव परित्यज्य महामौनी

भवानघ । निर्वाणवाग्भिर्मेननः

क्षीणचित्तः प्रशान्तधीः

सर्वमोद्धार एव

सर्वमौनफलोऽस्म्यहम्

सर्वयोनिषु कौन्तेय

सर्वरोगनिवृत्तिः स्यान्नाभिमध्ये तु

धारणात्

सर्वलिङ्गं स्थापयति पाणिमन्त्रं

पवित्रम्

सर्वलोकगुरुआस्मि सर्वलोकेऽस्मि

सोऽस्म्यहम्

सर्वलोकमध्ये ब्रह्म द्विधारूपं विचरति

सर्वलोकमहेश्वरम्

सर्वलोकस्तुतिपात्रः सर्वदेशसञ्चार-

शीलः...जीवन्मुक्तो भवति

सर्वलोका आत्मनि ब्रह्मणि मणय

इवोताश्च प्रोताश्चेति

सर्वलोकात्मकः कस्मादनुतिष्ठामि

किं कथम्

गायत्र्यु. २

अङ्ग्युप. ५

अ. पू. ५।६७

अ. पू. २।३७

गायत्र्यु. ९

अ. गी. १०।१४

अ. पू. ५।५४

श्वेताश्व. ५।५

बृह. ५।१४।८

अ. पू. ५।११४

माण्डू. १

मैत्रे. ३।१६

अ. गी. १४।४

जा. व. ६।१४

लिङ्गोप. १

मैत्रे. ३।१

अद्वैतो. १

अ. गी. ५।२९

मं. ब्रा. २।९

सुबालो. १०।१

१ अङ्ग्यु. १२

सर्वलोकानां सृष्टिस्थित्यन्तकृद्भि-
 मुरीशः कथं जीवत्वमगमदिति
 सर्वलोकेषु विहरन्नणिमादिगुणा-
 न्वितः । कदाचित्त्वेच्छया देवो
 भूत्वा स्वर्गे महीयते १ यो. त. १०९
 सर्ववर्णे महादेवि सन्ध्याविद्ये
 सरस्वति महाना. ११६
 सर्ववर्णेषु धारणं कैलाससिद्धिर्भवति
 लिङ्गोप. २
 सर्ववस्तुन्युदासीनभाव-
 (आसनमुच्यते) मासन-
 मुत्तमम् [त्रि. ब्रा. २।२९+
 सर्ववस्तुपरित्यागे शेष आत्मेति
 कथ्यते अ. पू. १।४५
 सर्ववाचोऽवधिर्ब्रह्म सर्वचिन्ता-
 वधिर्गुरुः ते. बि. ५।१
 सर्ववाच्यवस्तु प्रणवात्मकम्
 अ. शिखो. १
 सर्वविघ्नहरश्चायं प्रणवः सर्वदोषहा
 वराहो. ५।७१
 सर्वविघ्नहरो मन्त्रः प्रणवः
 सर्वदोषहा १ यो. त. ६४
 सर्वविद्वारूपोविषयः प्रसरणः (आत्मा)
 आर्षे. ९।२
 सर्वविद्यापाण्डित्यप्रपञ्चं भस्मीकृत्य
 स्वरूपं गोपयित्वा..प्रणवात्मक-
 त्वेन देहत्यागं करोति यः
 सोऽवधूतः तुरीया. ३
 सर्वविषयपराङ्मुखत्वं प्रत्याहारः
 शांदि. १।८।१
 सर्ववेदान्ततृप्तोऽस्मि सर्वदा
 सुखमोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१५
 सर्ववेदवेदान्तानां नारायणपरब्रह्म-
 ण्येव तात्पर्यम् ना. पू. ता. ५।११
 सर्ववेदसं वा पतत्सर्वं
 महाना. १८।१
 सर्ववेदान्तसंलक्ष्यं तद्ब्रह्मेत्य-
 मिधीयते ना. ब. ता. १।९
 सर्ववेद्यः सर्वज्ञः सर्वसिद्धिदः
 सर्वेश्वरः सोऽहम् ना. प. ९।१२
 सर्वव्यापिनमात्मानं क्षीरे सर्पिरि-
 वार्षिणम् [श्वेताश्र. १।१६+ प्रहो. २३
 सर्वव्यापिनमौद्वारं भूत्वा क्षीरो न
 शोषति आगम. २८

सर्वव्यापी स भगवोस्तस्मात्
 श्वेताश्र. ३।११
 सर्वगतः शिवः
 सर्वव्यापी सर्वभूतानां हृदये सन्निविष्टः
 मायावी मायया क्रीडति शांदि. ३।१।३
 सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा
 गोपालो. ३।१९
 [श्वेता. ६।११+
 सर्वव्यापी सोऽचिन्त्यो निर्वर्ण्यश्च
 पुनात्यशुद्धान्यपूतानि १ आत्मी. ३
 सर्वशक्तेर्महेशस्य विलासो हि मनो
 भवेत् । संयमासंयमाभ्यां च
 संसारः शान्तिमन्वगात् महो. ४।८७
 [उपास्य इति च] सर्वशरीरस्थ-
 चैतन्यब्रह्मप्रापको गुरुरुपास्यः निरा. व. २३
 सर्वशरीरिणां जीवस्यैकरूपत्वात् ।
 तस्मान्न जीवो ब्राह्मणः अ. सू. ३
 सर्वशरीरेषु चैतन्यैकतानताभ्यानम्
 मं. ब्रा. १।१
 सर्वशः पृथिवीपते
 म. गी. १।१८
 सर्वशून्यस्वरूपोऽहं सकला-
 गमगोचरः ते. बि. ३।४०
 सर्वश्रुत्युत्तमो मृग्यः सकलोप-
 निषन्मयः ना. प. ८।६
 सर्वसङ्कल्पपरहितः सर्वनादमयः शिवः
 ते. बि. ५।२
 सर्वसङ्कल्पपरहिता सर्वसंज्ञाविव-
 जिता । सैषा चिदधिनाशात्मा
 स्वात्मेत्यादिकृतामिधा महो. ५।१००
 सर्वसङ्कल्पशून्यत्वात्सर्वकार्यवि-
 वर्जनात् । केवलं ब्रह्मात्र-
 त्वात्मास्त्यनात्मेति निश्चिनु ते. बि. ५।१६
 सर्वसङ्कल्पसङ्ख्यासंश्लेषता
 यत्परिग्रहः महो. ५।९
 सर्वसङ्कल्पसङ्ख्यासी
 म. गी. ६।४
 सर्वसङ्कल्पसंशान्तं प्रशान्त-
 चनवासनम् । न किञ्चिद्वा-
 वनाकारं यत्तद्ब्रह्म परं विदुः अ. पू. ५।४८
 सर्वसङ्कल्पहीनात्मा चिन्मात्रो-
 ऽस्मीति सर्वदा ते. बि. ४।४४
 सर्वसङ्कल्पहीनात्मा वैदेही मुक्त
 एव सः । निष्कलात्मानिर्मे-
 लात्मा बुद्धात्मा पुरुषात्मकः ते. बि. ४।६८

सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशारगा

देवताः

भावनो. ४

सर्वसंज्ञनिवृत्तात्मा स मामेति न

संशयः

वराहो. २।३६

सर्वसन्तोषो विसर्जनम्

मं. ब्रा. २।५

सर्वसन्धिस्थ उदानः

शांडि. १।४।७

सर्वसंसारदुःखानां तृष्णैका

वीर्यदुःखदा । अन्तःपुरस्थमपि

या योजयत्यतिसङ्कटे

महो. ३।२५

सर्वसंसारेषु विरक्तो ब्रह्मचारी गृही

बालप्रस्थो वा...तदु तथा

न कुर्यात्

प. हं. प. २

सर्वसंहारसमर्थः परिभवासहः

प्रमुव्याप्तिः...निरस्ताविद्या-

तमोमोहोऽहमेवेति

नृसिंहो. २।८

सर्वसाक्षिणमात्मानं वर्णाश्रमवि-

कृजितम् । ब्रह्मरूपतया

पश्यन्ब्रह्मैव भवति स्वयम्

वराहो. २।१३

सर्वसारं निरालम्बं रहस्यं

वज्रसूचिकम्

मुक्तिको. १।३३

सर्वसिद्धिप्रदा-देव्यो बहिर्दशारगा

देवताः

भावनो. ४

सर्वसौख्यरूपास्यमानो न च सर्व-

सौख्यान्युपास्यति

सुबालो. ५।१५

सर्वसौभाग्यदं नृणां सर्वकर्मफल-

प्रदम् । ...अष्टाक्षरसमायुक्त-

मष्टपत्रान्तरस्थितम्

पञ्चम. ९

(ततः) सर्वसमादन्यो विलक्षण-

अक्षुषः साक्षी

नृसिंहो. २।२

सर्वसमाह्वयविरिक्तोऽहं बालामाद-

प्यहं तनुः । इति यः संविनो

ब्रह्मन् द्वितीयाऽहंकृतिः शुभा

महो. ५।९०

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः

भ. गी. १५।५

सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपम्

भ. गी. ८।९

सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादिश्य-

वर्णं परं कुर्याद्विस्तमस उपरि

विभाति

त्रि.म.ना. ४।३

सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपं

सर्वगमान्वार्यविशेषवेद्यम्

ना. प. ९।१६

सर्वस्य प्रभुमीशानं सर्वस्य

शरणं बृहत्

श्वेता. ३।१७

सर्वस्य प्रणवो ह्यादिर्मध्यमन्त-

स्तथैव च

आगम. २७

सर्वस्य प्रभवाप्ययौ (आत्मा)

ना. प. ८।१७

सर्वस्य मेदोमांसकृदावकीर्णं

शरीरमध्येऽत्यन्तोपहिते

चित्रभित्तिप्रतीकाशे गान्धर्व-

नगरोपमे कदलीगर्भवन्निस्सारे

जलबुद्बुदवच्चञ्चले निस्सृतं

आत्मानं...पश्यन्ति विद्वांसः

सुबालो. ८।१

सर्वस्य वशी सर्वस्येशानः सर्वस्या-

धिपतिः स न साधुना कर्मणा

भूयान्नो एवासाधुना

बृह. ४।४।२२

सर्वस्य वशी सर्वस्येशानः

सर्वमभिक्षिपन्

आर्षे. ९।२

सर्वस्यात्मनः परायणं यमात्थ

बृह. ३।९।१०

सर्वस्यात्मा भवति य एवं वेद

सुबालो. ९।१४

सर्वस्याऽऽत्मा सर्वभुक्

मैत्रा. ७।१

सर्वस्याभिमतं वक्ता चोदितः

पेशलोक्तिमान् । आशयज्ञश्च

भूतानां संसारे नावसीदति

महो. ६।६५

सर्वस्येशानः सर्वस्याऽऽन्तरान्तरः

मैत्रा. ७।१

सर्वस्यैतस्यात्ता भवति

बृह. १।२।५

सर्वस्यैतस्यैव कालस्य विभागविशेषाः

प्रकाशरूपाः कालरूपा भवन्ति

सीतो. ७

सर्व कर्माखिलं पार्थ

भ. गी. ४।३३

सर्व कार्णार्थसंज्ञातं तदभिन्नं

स्वभावतः

पञ्चम. ३१

सर्व कारणबहुः स्वमस्त्वं चानित्य-

मेव च । न चात्मकृतकं तद्वि

तत्र चोत्पद्यते स्वता

आयुर्वे. २४

सर्व किञ्चिद्विदं दृश्यं दृश्यते

य- (चि) जगद्गतम् । चिन्नि-

ष्पन्दांशमात्रं तन्ना (न्यदस्तीति-

भावयन्) न्यतिक्रान्ना शान्तम्

[महो. ४।१०+

अ. पू. १।४७

सर्व खल्विदं ब्रह्म

त्रि. म. ना. १।६

[निगुलं. १।१+

गान्धर्वो. ६

सर्वं स्वस्वदिवं ब्रह्म तज्जलानिति

शान्त उपोसीत

छांदो. ३।१४।१

सर्वं च स्वस्वदिवं ब्रह्म नित्यचिद्धन-

मक्षतम्

महो. ४।११९

सर्वं च न परं शून्यं न परं

नापरात्परम् । अचित्यमप्रबुद्धं

च न सत्यं न परं विदुः

तै. वि. १।११

सर्वं च मयि पश्यति

भ. गी. ६।३०

सर्वं च मे भूयात्

चिन्त्यु. ७।४

सर्वं च सद्रूपमसत्यनाशात्

वराहो. ३।४

सर्वं चाप्यहमेवेति निश्चयो

यो महामते । समादाय

विषादाय न भूयो जायते मतिः

महो. ६।६०

सर्वं चिन्मात्रमद्वयम्

तै. वि. ६।३९

सर्वं चिन्मात्रमेव हि [तै. वि. २।२५,

२७-२९

सर्वं चेदं क्षयिष्णु पश्यामः

मैत्रा. १।५

सर्वं चोदरपोषणस्य नटनं न

श्रेयसः कारणम्

अमन. १।६

सर्वं जगदानुष्टुभ एवोत्पन्नमनुष्टु-

प्रतिष्ठितं प्रतितिष्ठति यश्चैवं वेद

अन्यक्तो. ६

सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति

गणप. ५

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते

गणप. ५

सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति

गणप. ५

सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेभ्यति

गणप. ५

सर्वं जगद्धितं वा एतदक्षरं

प्राजापत्यम्

अ. शिरः. ३।३

सर्वं जनयति प्राणश्वेतोऽन्यपुङ्गवः

पृथक्

आगम. ६

सर्वं जहाति सर्वं शुष्यति

छांदो. ६।११।२

सर्वं ज्ञानप्लवेनैव

भ. गी. ४।३६

सर्वं तद्वन्न गत्वा विन्दतेऽन्न

छांदो. ८।३।२

सर्वं तदभिसमेति

छांदो. ४।१।४

सर्वं तं परादाद्योऽन्यत्रात्मनः

सर्वं वेद

बृह. ४।५।७

सर्वं तं परादाद्योऽन्यत्रात्मनो

ब्रह्म वेद

बृह. २।४।६

सर्वं देवी सृजते विश्वमेतत्

शुद्धका. ५४

सर्वं नश्वरमेव सत्

महो. ३।५३

सर्वं नारायण एव भवतीति विज्ञायते

ना. उ. ता. ३।१

सर्वं पञ्चात्मकं विद्यात्पञ्चब्रह्मात्म-

तत्त्वतः

पञ्चम. २५

(अतः) सर्वं परित्यज्य तत्प्रसक्तं

मनोदण्डं करपात्रं दिगम्बरं

दृष्ट्वा परित्रजेद्भिक्षुः

ना. प. ५।१३

सर्वं पश्यति सर्वः पश्यति

प्रभो. ४।५

सर्वं पाप्मानं तपति

बृह. ४।४।२३

सर्वं पाप्मानं तरति

बृह. ४।४।२३

सर्वं पाहि शतक्रतो स्वाहा

महाना. ७।४

सर्वं पुनानु मामापोऽसतां च

प्रतिग्रहं स्वाहा

महाना. १।१२

सर्वं पूर्वपक्षापरपक्षाभ्यामभिपन्नम्

बृह. ३।१।५

सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मिन् सर्वगं

विश्वतोमुखम् । तस्य मध्य-

गताः सूर्यसोमामिपरमेश्वराः

यो. शि. ६।१०

सर्वं प्रकृतिजैर्गुणैः

भ. गी. ३।५

सर्वं प्रशान्तमजमेकमनादिमभ्यमा-

भास्वरं स्वदनमात्रमवैत्यचिह्नम् ।

सर्वं प्रशान्तमिति शब्द-

मयी च दृष्टिर्वाधार्थमेव हि

मुधैव तदोमितीदम्

महो. ४।९

सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्मेतत्

श्वेताश्व. ३।१२

सर्वं ब्रह्ममयं प्रोक्तं सर्वं ब्रह्ममयं जगत्

तै. वि. ६।३८

सर्वं ब्रह्मेति यस्यान्तर्भाविना सा

हि मुक्तिदा । मेवदृष्टिर्त्रिविधेयं

सर्वथा तां विसर्जयेत्

महो. ५।११३

सर्वं ब्रह्मेति वै ज्ञानादिन्द्रियग्राम-

संयमः । यमोऽयमिति सम्प्रोक्तो-

ऽभ्यसनीयो मुहुर्मुहुः

तै. वि. १।१७

सर्वं ब्रह्मेति सङ्कल्पास्तुहदा-

न्मुच्यते मनः

महो. ४।१२४

सर्वं ब्रह्मैव केवलम्

तै. वि. ६।४

[+६।६५+६।१०५, ६+

यो. शि. ४।१८

सर्वं ब्रह्मैव सततं सर्वं ब्रह्मैव केवलम्

तै. वि. ६।६५

सर्वं ब्रह्मोपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां केनो. शां. पा.

सर्वं भूतमयं चेति त्यक्त्वा

नास्तीति भावयेत्

अमन. १।१७

सर्वं भूतं सव्यं जायमानं च

गणेशो. ३।१

सर्व भृगवङ्गिरोमयं अन्तरैते

त्रयो वेदाः भृगूनङ्गिरसः त्रिताः २ प्रणवो. २१

सर्वं मृत्युनाऽभिपन्नम् बृह. ३।१।३

सर्वं वा अत्तीति तददितेरदितित्वम् बृह. १।२।५

सर्वं वा एतदिन्द्रो यज्जगद्यथैवेति शौनको. २।४

सर्वं वा एष सर्वमभोतीति शौनको. १।५

सर्वं विश्वमिदं नारायणः, य एवं वेद ना.उ.ता. २।५

सर्वं वै तेऽन्नमाप्नुवन्ति, येऽन्नं तैत्ति. २।२।२

ब्रह्मोपासते बह्वचो. १

सर्वं शाक्तमजीजनत् महो. ५।४५

सर्वं शान्तं निरालम्बं व्योमस्थं ते. बि. ६।११, ९

शाश्वतं शिवम्

सर्वं सच्चिन्मयं ततम् [महो. ६।११+ ते. बि. ६।११, ९

सर्वं सच्चिन्मयं विद्धि सर्वं सच्चि-

न्मयं ततम् ते. बि. ६।१

सर्वं सत्यं परं ब्रह्म न चान्यदिति जा. द. १।१०

या मतिः । तच्च सत्यं वरं

प्रोक्तं वेदान्तज्ञानपारगैः

सर्वं सन्त्यज्य दूरेण यच्छिष्टं अ. पु. १।४६

तन्मयो भव ते. बि. ६।३०

सर्वं सन्मात्ररूपत्वासच्चिदानन्द-

मात्रकम्

सर्वं समतया बुद्ध्या यः कृत्वा

वासनाक्षयम् । जहाति निर्ममो

वेदं नैयोऽसौ वासनाक्षयः महो. ६।४४

सर्वं सर्वमयं सर्वे जीवाः सर्वमयाः नृसिंहो. ९।४

सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः भ. गी. १।१४०

सर्वसहाः समलोष्टाश्मकाश्चना

यथोपपन्नचातुर्वर्ण्यमेक्षाचर्य

चरन्त आत्मानं मोक्षयन्त इति आश्रमो. ४

सर्वं सुखं विद्धि सुदुःखनाशात्

सर्वं च सद्रूपमसत्यनाशात् ।

चिद्रूपमेव प्रतिमानयुक्तं तस्मा-

दुःखण्डं मम रूपमेतत् बराहो. ३।४

सर्वं सौभाग्यदं नृणां सर्वकर्म-

फलप्रदम् पं. प्र. ९

सर्वं ह पश्यः पश्यति सर्वमाप्नोति छांदो. ७।२६।२

सर्वं ह वा पश्यति भस्म अस्मजा. १।४

सर्वं हि पश्यन्पश्यति सर्वमाप्नोति

सर्वशः मेत्रा. ७।११

सर्वं हीदं नामानीं सर्वं वाचा-

ऽभिवदति १ ऐत. १।६।१

सर्वं हीदं प्राणेनावृतं सोऽयमाकाशः १ ऐत. १।६।३

प्राणेन ब्रूहत्या विष्टब्धः

सर्वं ह वैवास्मिँल्लोक आयुरेति नैनं बृह. २।१।१०

पुराकालात्प्राणो जहाति

सर्वं ह वैवास्मिँल्लोक आयुरेति नैनं बृह. २।१।१२

पुराकालान्मृत्युरागच्छति नृसिंहो. ७।२

सर्वं ह्ययमात्मा हि सर्वान्तरः रामो. २।१+

सर्वं ह्येतद्ब्रह्म [मां. २+ गणेशो. १।१

[नृ. पू. ४।२+नृसिंहो. १।२+ राघोप. २।२

सर्वं ह्येतद्ब्रह्म आत्मा

सर्वः (सर्वः) सर्वस्य जगतो त्रि. म. १५

विधाता धर्ताहर्तान्ध्ररूपत्वमेति तुरीयो. ३

सर्वाक्षरमयः कालः सदसद्रक्तिवर्जितः

सर्वाक्षरमयः कालः सर्वागममयः

शिवः । सवश्रुत्युत्तमो मृग्यः ना. प. ८।५

सकलोपनिषन्मयः

सर्वाजीवे सर्वसंस्थे ब्रूहन्ते (वहते

अस्मिन्) तस्मिन्हंसो भ्रान्त्यते भवसं. २।४

ब्रह्मचक्रे [श्वेता. १।६+ना. प. ९।५+ ते. बि. ३।५८

सर्वाङ्गजनमसन्मयम्

सर्वाङ्गच्छन्दान्विजानाति, स सुबालो. ४।३

सम्प्रसाद इत्याचक्षते बृह. ४।१।२

सर्वाणि च भूतानि प्रज्ञायते (मा. पा.)

सर्वाणि च भूतानि वाचैव सम्राट् बृह. ४।१।२

प्रज्ञायन्ते; वाग्वै सम्राट् परमं ब्रह्म

सर्वाणि च भूतानि... यदैवज्जरा- छां. उ. ८।१।४

मवाप्नोति (मा. पा.)

सर्वाणि च भूतानि च सर्वे च

कामास्तस्मात्तस्योदयं प्रति छांदो. ३।१९।३

प्रत्यायनं प्रति घोषा उल्लवः

सर्वाणि च भूतानि सर्वे च कामा छांदो. ८।१।४

यदैवज्जरामाप्नोति

सर्वाणि चेन्द्रियाणि सहभूतैर्न अ. शिखो. ३

कारणं कारणानां व्याप्ता कारणं २ प्रणवो. २१

सर्वाणि छन्दांसि नारायणादेव समुत्पद्यन्ते	नारा. १
सर्वाणि जगन्ति नारायणमयानि प्रविभान्ति	त्रि. म. ना. ५।५
सर्वाणि तत्र भूतानि वसन्ति परमात्मनि	भवसं. २।५३
सर्वाणि धर्मशास्त्राणि विस्तारयिष्णुः	सङ्कर्षणो. २
सर्वाणि ब्रुह्यतीति ब्रह्मा	अ. शिखो. २
(एवं) सर्वाणि भूतानि मणौ सूत्र इवात्मनि । स्थिरबुद्धिरसम्भूतो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः	ध्या. वि. ६
सर्वाणि भूतानि रमन्ते सर्वाणि ह वा अस्मिन्भूतानि विशन्ति	बृह. ५।१२।१
सर्वाणि भूतानीत्येव पञ्चमं मुखं तेन मुखेन सर्वाणि भूतान्यस्मि	कौ. त. २।९
सर्वाणि भूतान्यभ्यात्तं यदनेकमेकं नानावर्णं नानारूपं नानाशब्दं नानागन्धं नानारसं नाना- स्पर्शमिति	शौनको. १।५
सर्वाणिभूतान्यस्यैवैतानि सर्वाणि निश्चसितानि	बृह. ४।५।११
(एवं) सर्वाणि भूतान्यापि- पीलिकाभ्यो बृहत्या विष्टब्धा- नीत्येव विद्यात्	१ ऐत. १।६।३
सर्वाणि भौतिकानि कारणे भूतपञ्चके संयोज्य भूमिं जले. क्रमेण विलीयते	पैङ्गलो. ३।३
सर्वाणि रूपाणि विचिन्त्य धीरः नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते	महावा. ३ पारमा. ७।५
[+चिन्त्यु. १२।७+]	
सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्रणव एव प्रवृत्तिष्ठन्ति	शौनको. ४।५
सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्राणमेवाभिसंविशन्ति	छांदो. १।११।५
सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रेष्ठयाय सन्नमन्ते तच्छ्रीत्युपासीत	कौ. त. २।६
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्यन्नमेव प्रतिहरमाणानि जीवन्ति	छांदो. १।११।९

सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्यहरहः प्रपतन्त्यन्नमभिजिघृक्षमाणानि	मैत्रा. ६।१२
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्या- काशादेव जायन्ते	नृ. पू. ३।५ ग. पू. २।९
[त्रि. ता. ५।२२+]	
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्या- काशादेवं समुत्पद्यन्ते	छांदो. १।९।१
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्या- दित्यमुषैः सन्तं गायन्ति	छांदो. १।११।७
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्ये- तदक्षरमन्वायत्तानि	शौनको. १।५
सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रेष्ठयाय सन्नमन्ते तच्छ्रीत्युपासीत	कौ. त. २।६
तत्सामेत्युपासीत	
सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रेष्ठयाया- भ्यर्च्यन्ते तद्यजुरित्युपासीत	कौ. त. २।६ अ. गी. ७।६ अ. गी. ४।२७
सर्वाणीत्युपधारय सर्वाणीन्द्रियकर्माणि	
सर्वाण्डेध्वनन्तलोकाश्चानन्तवैकुण्ठाः सन्तीति सर्वेषां खल्वभिमतम्	त्रि. म. ना. ८।२ बृह. ४।१।२, ३ छांदो. ४।१।२
सर्वाण्येनं भूतान्यभिरक्षन्ति सर्वाण्येनं वामान्यभिसंयन्ति सर्वाण्येवैतानि प्रज्ञानस्य नाम- धेयानि भवन्ति	२ ऐत. ६।२
सर्वातीतपदालम्बी परिपूर्णक- चित्समयः । नोद्वेगी न च तुष्टात्मा संसारे नावसीदति	महो. ६।६।३ ते. वि. ३।१२
सर्वातीतोऽस्म्यहं सदा सर्वात्मकत्वमात्माधारो भवति	आ. पू. १ आ. पू. १
सर्वात्मकत्वं दृश्यविलयो गन्धः (तस्मात्) सर्वात्मकेनाकारेण सर्वात्मकमात्मानमन्विच्छेत्	नृसिंहो. ७।२ कुण्डिको. २६
सर्वात्मकोऽहं सर्वोऽहं सर्वात्मवेदने शुद्धं यदोदेति तवात्मकम् । भातिप्रसूतिदि- क्कालबाह्यं चिद्रूपदेहकम्	महो. ४।४२
सर्वात्मा समरूपात्मा शुद्धात्मा त्वह- मुक्षितः । एकवर्जित एकत्मा सर्वात्मा स्वात्ममात्रकः	ते. वि. ४।३४

सर्वा दिशश्चोर्ध्वमधश्च तिर्यक्
प्रकाशयन्ती भ्राजते गुह्यकाली गुह्यका. ६४
सर्वा दिशो बलिमस्मै हरन्ति छांदो. २।२१।४
सर्वाया सर्वविधा च वृंदावन-
विहारिणी राधिको. ७
सर्वाधारमनाधारमनिरीक्ष्यं भस्मजा. २।९
सर्वाधिग्याधिमेषजम् पं. ब्र. १२
सर्वाधिष्ठानरूपोऽस्मि सर्वदा
चिद्धनोऽस्म्यहम् ते. विं. ३।१३
सर्वाधिष्ठानमद्वन्द्वं परं ब्रह्म
सनातनम् । सविदानन्दरूपं
तदवाङ्मनसगोचरम् [रुद्रह. २६+ अ. पू. ४।२९
सर्वाधिष्ठानमद्वयपरब्रह्मविहार-
मण्डलं...चिद्रूपादित्यमण्डलं
द्वात्रिंशद्ब्रह्मेदैरधिष्ठितम् त्रि.म.ना. ७।८
सर्वाननशिरोमीवः सर्वभूत-
गुहाशयः । सर्वव्यापी स भगवां-
स्तस्मात्सर्वगतः शिवः श्वेताश्व. ३।११
सर्वानपि वैष्णवान्धर्मान्विजृम्भयन्
सर्वानपि पाखण्डाभिचखान सङ्कर्षणो. २
सर्वानिन्द्रियकृतान्पापान्नाशयतीति
तेन नाशी (वरणा) भवति
[जाबालो. २+ रामो. ३।१
सर्वानुग्रहायार्थं तेषां (रुद्राक्षाणां)
नामोच्चारमात्रेण दशगोप्रदानफलं
दर्शनस्पर्शनाभ्यां द्विगुणं फलम् रु. जा. १
सर्वानुग्राहकत्वेन तदस्म्यहं वासुदेवः ब्र. विं. २३
सर्वानन्दमयः परः ते. विं. ५।२
सर्वान्कामान् समभुते तैत्ति. २।५
[विद्वानिति च-] सर्वान्तरस्थ-
स्वसंविद्वपविद्विद्वान् निरा. २५
सर्वान् पार्थ मनोगतान् भ. गी. २।५५
सर्वान्तर्यामिरूपोऽहं सर्वसाक्षित्व-
सङ्गणः ते. विं. ६।६६
सर्वान्तरः स्वयं ज्योतिः सर्वाधि-
पतिरस्म्यहम् अ. वि. १०६
सर्वान्पाप्मान् औषत्समात्पुण्य
जीवति बुद्ध. १।४।१

सर्वान्प्राणानसद्विद्धि सर्वान्भोगा-
नसत्त्विति. ते. विं. ३।५४
सर्वान् बन्धून्वस्थितान् भ. गी. १।२५
सर्वापदां पदं पापा भावा विभव-
भूमयः महो. ३।४
सर्वारम्भपरित्यागी[भ.गी. १२।१६+ १४।२५
सर्वारम्भा हि दोषेण भ. गी. १८।४८
सर्वार्थवासनोन्मुक्ता तृष्णा
मुक्तेति भण्यते महो. ६।५०
सर्वार्थान् विपरीतांश्च भ. गी. १८।३१
सर्वार्थमयं देवं भ. गी. ११।१२
सर्वस्तथा भूतविशेषसंघान् भ. गी. ११।१५
सर्वाः प्रजा ब्राह्मणत्वं नरेन्द्र न
ब्राह्मणत्वात्परमस्ति किञ्चित् इतिहा. १४
सर्वाः प्रजा यत्रैकं भवन्ति चिन्त्यु. ११।२
सर्वाभिलाषविगतः सर्वचिन्ता-
समुत्थितः । सुप्रशान्तः
सकृज्जोतिः समाधिरचलोऽभयः अद्वैत. ३७
सर्वा भूतानि तिष्ठन्ति सर्वमायुरेति
वसीयान्भवति ओष. ६।२
सर्वावस्थाविनिर्मुक्तः सर्वचिन्ता-
विवर्जितः ना. विं. ५१
सर्वावस्थासु साक्षी त्वेक एवावतिष्ठते ना. प. ६।७
सर्वा वृद्धा वायोः, सर्ववृद्धेन्द्रस्यो-
त्सेधपरोक्षवृद्धाऽग्नेः संहितो. १।८
सर्वाशासङ्ख्ये चेतःक्षयो मोक्ष
इतीष्यते अ. पू. २।२३
सर्वाश्च मधुमतीः सर्वाश्च
व्याहृतीः (मा. पा.) बुद्ध. ६।३।६
सर्वाश्चर्यं हि चिन्मात्रं देहं ते. विं. २।३२
सर्वाभ्रयोऽहमेव त्रि.म.ना. ८।६
सर्वासर्वविहीनोऽस्मि सात्त्विको-
ऽस्मि सदाऽस्म्यहम् मैत्रे. ३.६
(स यथा) सर्वासामपाः समुद्र
एकायनं, एवम् सर्वेषां
रसानां जिह्वैकायनम् बुद्ध. ४।५।१५

सर्वासामेव नाडीनामेष बन्धः
 प्रकीर्तितः वराहो. ५।४२
 (एवं) सर्वासां विद्यानां हृदय-
 मेकायनमेव सर्वेषां कर्मणां
 हस्तावेकायनम् बृह. ४।५।१२
 सर्वास्वप्नु पञ्चविधं सामोपासीत
 छांदो. २।४।१
 सर्वा ह्यस्मिन्देवताः शरीरेऽबिस-
 माहिताः प्रा. हो. ४।४
 सर्वा ह्येवेमाः सर्वस्यै वाच
 उपनिषद् इमां त्वेवाचक्षते ३ ऐत. २।५।१
 सर्वा च सावित्रीमन्वाह, सर्वाश्च
 मधुमतीरहमेवेदं सर्वं भूयासं
 भूर्भुवः स्वः स्वाहा बृह. ६।३।६
 सर्वाश्च वेदान् सर्वाश्च यज्ञान्
 सर्वाश्च शब्दान्सर्वाश्च व्युष्टीः
 सर्वाणि च भूतानि स्थावर-
 जङ्गमान्यनुभवेयमिति २ प्रणवो. २
 सर्वाश्च वेदान् साङ्गानपि ब्रह्म
 ब्राह्मणैश्च...सत्यं धर्मेण धर्मं
 तर्पयामि स्वेन तेजसा अ. शिरः. १।१
 सर्वे आनन्दरसा यस्मात्प्रकटिता
 भवन्ति सामर. ३
 सर्वे ऊष्माणोऽप्रस्ता अनिरस्ता
 विवृत्ता वक्तव्याः प्रजापते-
 रात्मानं परिददातीति छांदो. २।२२।५
 सर्वे कामा मनोगता व्यावर्तन्ते
 प. हं. ९
 सर्वे कुर्वन्ति कर्माणि विक्रशाः
 पूर्वकर्मभिः शिवो. ७।१२५
 सर्वेच्छाकलनाशान्तावात्मलाभो-
 द्याभिषः । स पुनः सिद्धि-
 वाञ्छायां कथमर्हत्वचित्ततः वराहो. ३।३०
 सर्वेच्छाजालसंज्ञान्तावात्मलाभो
 भवेन्मुने । स कथं सिद्धि-
 जालाति त्वं वाञ्छत्यचित्तकः अ. पू. ४।८
 सर्वेच्छाः सकलाः शङ्काः सर्वेहाः
 सर्वे निश्चयाः । धिया येन परि-
 त्यक्ताः स जीवन्मुक्त उच्यते अ. पू. ४।८
 सर्वे जीवाश्च स्वस्वरूपं भजन्ते त्रि.म.ना. ३।७

सर्वे जीवाः सुखैर्दुःखैर्मायाजालेन
 वेष्टिताः । तेषां मुक्तिः कथं यो. शि. १।१
 देव कृपया वद शङ्कर
 सर्वे जीवाः सुखैर्दुःखैर्मायाजालेन
 वेष्टिताः । तेषां मुक्तिकरं मार्गं १ यो. त. ४
 मायाजालनिकृन्तनम्
 सर्वे तु शक्तिजालेन रोगा
 नश्यन्ति निश्चयम् योगकुं. १।१८
 सर्वे देवा ऋषयो मुनयः सिद्ध-
 गन्धर्वयक्षरक्षःपिशाचाः सर्वे
 नारायणः ना.पू.ता. ५।६
 सर्वे देवाः शिवात्मकाः रुद्रह. ४
 सर्वे देवाः संविशन्तीति विष्णुः अ. शिखो. ७
 सर्वे धर्मा मृषा स्वप्ने कायस्यान्त-
 निर्दशनात् । संवृतेऽस्मिन्प्रदेशे
 वै भूतानां दर्शनं कुतः अ. शां. ३३
 सर्वे धर्मास्तथा ज्ञानं नैतदुद्धेन
 भाषितम् अ. शां. ९९
 सर्वे धर्माः समाभिजा अजं सान्यं
 विशारदम् अ. शां. ९३
 सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्गाः अ. गी. १।१।३६
 सर्वे नादसमुद्भवाः यो. शि. ३।८
 सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः
 पुरुषादधि महाना. १।८
 सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रिय-
 विवर्जितम् । सर्वस्य प्रभुमीशानं
 सर्वस्य शरणं बृहत् श्वेताश्व. ३।१७
 सर्वेन्द्रियगुणाभासं अ. गी. १।३।५
 सर्वेन्द्रियगुणाभासाः सर्वेन्द्रिय-
 विवर्जिताः अ. वि. १०७
 सर्वेन्द्रियगुणाभासा सर्वेन्द्रिय-
 विवर्जिता । सर्वेषां प्रभुरीशानी
 सर्वेषां शरणं बृहत् गु. का. ४९
 सर्वेन्द्रियविवर्जितम् अ. गी. १।३।५
 सर्वेन्द्रियविहीनोऽस्मि सर्वकर्म-
 कृत्पण्यहम् मैत्रे. १।१५
 सर्वे पाप्मानोऽतो निवर्तन्ते छांदो. २।४।१
 सर्वेऽप्येतै यज्ञविदः अ. गी. ४।६०

सर्वे बन्धाः प्रविनश्यन्ति	त्रि. म. ना. ८।७	सर्वेषामात्मानुसन्धानं विधिरित्येव	ना. प. ७।११
सर्वे ब्रह्म वदिष्यन्ति सम्प्राप्ते		(एवं) सर्वेषामानन्दानामुपस्थ	
तु कलौ युगे । वैदिके नानु-		एकायनं सर्वेषां विसर्गाणां	
तिष्ठन्ति शिरोदरपरायणाः	भवसं. १।५७	पायुरेकायनम् [बृह. २।४।११+	४।५।१२
सर्वेभ्यः पापकृत्तमः	भ. गी. ४।३६	सर्वेषामिन्द्रियाणां गतिरुपरमत्वे	
सर्वेभ्योऽन्तस्थानेभ्यो ध्येयेभ्यः		य आत्मन्येवावस्थीयते	प. हं. ९
प्रदीपवत्प्रकाशयतीति प्रकाशः	अ. शिखो. २	सर्वेषामेव गतीनामव्यक्तं हृदयम्	सुबालो. १३।४
सर्वेभ्यो लोकेभ्यः सर्वे प्राणिनो-		सर्वेषामेव गन्धानां पृथिवी हृदयं	सुबालो. १३।४
ऽभवन्	गायत्रीर. १	सर्वेषामेव पापानां सङ्घाते	
सर्वेभ्यो वेदेभ्यः सर्वे लोका अभवन्	गायत्रीर. १	समुपस्थिते । तारं द्वादशसाहस्र-	
सर्वे मरुद्गणा अजीजनन् (देव्याः)	बह्वचो. १	मभ्यसेच्छेदनं हि तत्	१सं.सो. २।१०३
सर्वे युद्धविशारदाः	भ. गी. १।९	सर्वेषामेव भूतानां महासौभाग्य-	
सर्वे वयमतः परम्	भ. गी. २।१२	दायिनी । महालक्ष्मीमहादेवी..	ना. पू. ता. २।२
सर्वे वाक्यात्मका मन्त्रा वेद-		सर्वेषामेव भूतानां विष्णुरात्मा..	रुद्रह. १३
शास्त्राणि कृत्स्नशः	यो. शि. ३।७	सर्वेषामेव रूपाणां तेजो हृदयम्	सुबालो. १३।४
सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तथा च सि		सर्वेषामेव शब्दानामाकाशं हृदयम्	सुबालो. १३।४
सर्वाणि च यद्वदन्ति		सर्वेषामेव रसानामापो हृदयम्	सुबालो. १३।४
[कठो. २।१५+	गुह्यका. ३९	सर्वेषामेव शर्म भवान्	२ प्रणवो. १९
सर्वे वेदा यत्रैकं भवन्ति	चिन्त्यु. ११।१	सर्वेषामेव सत्त्वानां मृत्युर्हृदयम्	सुबालो. १३।४
सर्वे वेदाः प्रणवादिकास्तं प्रवणं		सर्वेषामेव स्पर्शानां वायुर्हृदयम्	सुबालो. १३।४
तत्त्वान्नोऽङ्गं वेद स आयुर्यशः-	नृ. पू. १।३	सर्वेषामेव त्रीणि शरीराणि वर्तन्ते	यो. चू. ७२
कीर्तिज्ञानैश्वर्यवान्भवति		(एवं) सर्वेषां कर्मणां हस्ता-	
सर्वे वेदाः सर्वे यज्ञा इत्यथ	शौनको. १।५	वेकायनम् [बृह. २।४।११+	४।५।१२
स्वास्विन्द्रमन्वायत्तं		सर्वेषां खलु भूतानामात्मा सत्ये	
(तदनु) सर्वेशमप्रमेयमजं शिवं		प्रतिष्ठितः (मा. पा.)	छां.ड. ६।१७
परमाकाशं निरालम्बमद्वयं...	मं. ब्रा. ३।१	(एवं) सर्वेषां गन्धानां नासिके	
परं ब्रह्म प्राप्नोति	२ रुद्रो. ४४	एकायनम्	बृह. ४।५।१२
सर्वेशः सर्वसाक्षी च	ना. प. ९।१७	सर्वेषां च महीक्षिताम्	भ. गी. १।२५
सर्वेश्वरः सर्वदेवैरुपास्यम्		(तस्मात्) सर्वेषां जीवानामिष्ट-	
सर्वेषणविनिर्मुक्तश्छित्त्वा तं तु	क्षुरिको. २५	विषये...सुखबुद्धि...	त्रि.म.ना. ५।३
न बध्यते		सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिस्तमसः	
(तस्मात्) सर्वेषामधिकारिणा-	त्रि. म. ना. ८।४	परमुच्यते	त्रि.म.ना. ४।३
मनधिकारिणां च भक्तियोग		सर्वेषां दिव्यानां (विद्यानां)	
एव प्रशस्यते		प्रेरयिता ईशानः	वध्वज. १
(एवं) सर्वेषामध्वनां पादा-		सर्वेषां देवानां साष्टितां सालोक्यतां	
वेकायनमेव च सर्वेषां वेदानां	४।५।१२	सायुज्यतां गच्छति	कठश्रु. १३
वागेकायनम् [बृह. २।४।११+		सर्वेषां देवाल्यस्य भस्म शिवाग्निजं	
सर्वेषामपि पापानां प्रायश्चित्तं	तुल्यु. १३	शिवयोगिनाम्	पू. जा. ५।७
नश्येत् हि			

सर्वेषां दोषरत्नानां सुसमुद्रिकया-

ऽनया । दुःखशृङ्खलया नित्य-

मलमस्तु मम स्त्रिया [याज्ञव. १६+ महो. ३।४७

सर्वेषां पुरुषाणामन्तःपुरुषः स

आत्मा स विज्ञेयः

त्रि. ता. ५।१

सर्वेषां पूर्वोक्तब्रह्मयज्ञक्रमं मुक्ति-

क्रममिति ब्रह्मपुत्रः प्रोवाच

पा. ब्र. ५

सर्वेषां प्रणवो बीजं हंसः शक्तिः

प्रकीर्तिता

गुह्यका. ८।१

सर्वेषां प्राणिनां प्रारब्धसञ्चिता-

गामिकर्मसाधर्म्यदर्शनात्कर्मा-

भिप्रेरिताः सन्तो जनाः

क्रियाः कुर्वन्ति

ब. सू. ७

(ॐ) सर्वेषां प्राणिबुद्बुदानां

निरञ्जनाव्यक्तामृतनिधौ

विलयविलासः स्थितिर्विजृम्भते

स्वसंवे. १

सर्वेषां बीजानां हयग्रीवैकाक्षर-

बीजमनुत्तमं मन्त्रराजात्मकं भवति हयग्री. ६

सर्वेषां ब्रह्मादीनां देवर्षीणां

मनुष्याणां मूर्तिरेका

परब्र. ६

सर्वेषां भूतानामन्तरपुरुषः स म

आत्मेति विद्यात्

३ ऐत. २।४।८

सर्वेषां भूतानां मूर्धा भवति

कौ. त. ४।२

सर्वेषां भूतानां मूर्धा राजा भवति

बृह. २।१।२

सर्वेषां भूतानां मूर्धेति वा अहमेत-

मुपास इति

कौ. त. ४।२

(एवं) सर्वेषां रसानां जिह्वै-

कायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२

(एवं) सर्वेषां रूपाणां चक्षु-

रेकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२

सर्वेषां वस्तूनां मुख्यवस्तु भवति

ना. उ. ता. ३।१

सर्वेषां वा एतद्भूतानामाकाशः

परायणम् [नृ. पू. ३।६+ त्रि. ता. ५।२२+ ग. पू. २।९

(एवं) सर्वेषां विसर्गाणां पायु-

रेकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२

(एवं) सर्वेषां वेदानां वागैकायनं

[बृ. उ. २।४।११+ ४।५।१२

(एवं) सर्वेषां शब्दानां श्रोत्र-

मेकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२

८४

सर्वेषां शरीराणां समानगुणाभवन्ति सामर. १०१

(एवं) सर्वेषां सङ्कल्पानां मन

एकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२

सर्वेषां समवायेन सिद्धिः स्या-

द्योगरक्षणा

योगो. ३२

(एवं) सर्वेषां स्पर्शानां

त्वगेकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२

सर्वे स्पर्शा मृत्योरात्मानः

छांदो. २।२२।३

सर्वे स्पर्शा लेशेनानभिनिहिता

वक्तव्या मृत्योरात्मानं

परिहराणीति

छांदो. २।२२।३

सर्वेऽस्मै देवा बलिमावहन्ति

तैत्ति. १।५।३

सर्वे स्वरा इन्द्रस्यात्मानः

छांदो. २।२२।३

सर्वे स्वरा घोषवन्तो बलवन्तो

वक्तव्या इन्द्रे बलं ददानीति

छांदो. २।२२।५

सर्वे होतारो यत्रैकं भवन्ति

चित्त्यु. ११।१

सर्वेषु कालेषु लाभालाभौ समौ

कृत्वा... ध्रुवशीलोऽष्टौ मास्ये-

काकी चरेत् (?)

प. हं. प. ७

सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति

ऊर्ध्वपुं. ६

सर्वेषु भूतेषु गणेशमेकं विज्ञाय तं

मृत्युमुखात् प्रमुच्यते

हेरम्बो. ८

सर्वेषु भूतेष्वेतमेव ब्रह्मेत्याचक्षते

३ ऐत. २।३।४

सर्वेषु वेदेज्वारण्यकमावर्तयेत्

आरुणि. २

सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः

मं. गी. ११।२६

सर्वैरेव (अक्षरैः) स इन्द्रोऽभवत्

अव्यक्तो. ६

सर्वैरेव (अक्षरैः) स विष्णुरभवत्

अव्यक्तो. ६

सर्वोत्कृष्टपरमशुक्तिप्रद्योतमानं

तत्त्वाकाशं भवति

अद्वयता. ४

सर्वोत्कृष्टपरमाद्वितीयप्रद्योतमानं

तत्त्वाकाशं भवति

मं. ब्रा. १।३

सर्वोपनिषदभ्यासं दूरतस्त्यज्य

सादरम् । तेजोविन्दूपनिषद-

मभ्यसेत्सर्वदा मुदा । सकृदभ्यास-

मात्रेण ब्रह्मैव भवति त्वयम् [त्रि. बि. ६।११०, ११

सर्वोपकारी मोक्षी भवति

वृत्तात्रे. १।६

सर्वोपनिषदां मध्ये सारमष्टोत्तरं

शतम् । सकृच्छ्रवणमात्रेण

सर्वाघौघनिकृन्तनम्

मुक्तिको. १।४४

सर्वोपसंहारेण संहारप्रणवः
 सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं स्वात्मानं
 भावयेत्सुधीः
 सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं परं तत्त्वं
 तदुच्यते
 सर्वो योगाग्निना देहो ह्यजडः
 शोकवर्जितः
 सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु
 सर्वोऽपि सर्वहीनोऽसि शान्ता-
 शान्तविवर्जितः
 सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु
 [+महाना. १०।११
 सर्वोऽयस्य मन्थं दधिमधुनो-
 रुपमथ्य ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय स्वाहे-
 त्यग्नावाज्यस्य हुत्वा मन्थे
 सम्पातमवनयेत्
 सलिल एको द्रष्टाऽद्वैतो भवति
 सलिल एवेदं सलिलं वनं भूयस्तेनैव
 मार्गेण जाम्नाय धावति
 सलिलकण इवाम्बुधौ महात्मा
 विगलितवासनमेकतां जगाम
 सलिलमिति लौहित्यकारणं सत्त्वम्
 सलिलात्फेनमभवत्
 सलिलेधारयेच्चित्तं नान्मभसा परिभूयते
 सलिले सैन्धवं यद्वत्साम्यं भवति
 योगतः । तथाऽऽत्ममनसोरेक्यं
 समाधि- (रिति कथ्यते)
 रभिधीयते [सौभाग्य. १८+
 स लोकमागच्छत्यशोकमहिमं
 तस्मिन्वसति शाश्वतीः समाः
 सवतात्सविता
 सवस्तु सोपलम्भं च द्वयं लौकिक-
 मिष्यते । अवस्तु सोपलम्भं च..
 स वा अयमात्माऽनन्तोऽजरो-
 ऽपारो न वारे बाह्यो नांतरः
 स वा अयमात्मा ब्रह्म
 स वा अयमात्मा सर्वेषां भूता-
 नामधिपतिः
 स वा अयं पुरुषः सर्वासु पृथु
 पुरिशयः

तुरीयो. १

कठरु. ४४

अमन. १।११

यो. शि. १।२६

महाना. १०।११

ते. बि. ५।६८

शिव. सं. ३१

छांदो. ५।२।४

बृह. ४।३।३२

सुबालो. ४।४

महो. २।७७

भावनो. ७

गायत्रीर. १

यो. शि. ५।५०

वराहो. २।७५

बृह. ५।१०।१

मैत्रा. ६।७

अ. शां. ८७

आर्षे. ९।२

बृह. ४।४।५

बृह. २।५।१५

बृह. २।५।१८

स वा अयं पुरुषो जायमानः

शरीरमभिसम्पद्यमानः

पाप्मभिः संसृज्यते

स वा ऋषे तृतीयं शंस

स वा ऋषे द्वितीयं शस

स वा एवं प्रवरणीय आत्मका-

मेनेत्याहुर्ब्रह्मादिनः

स वा एष आत्मा परः

स वा एष आत्मा हृदि

स वा एष आत्मेत्यदो वशं नीत

एव सितासितैः कर्मफलैरभि-

भूयमान इव प्रतिशरीरेषु चरति

स वा एष एकस्त्रिधाभूतोऽष्टधैका-

दशधा द्वादशधाऽपरिमितधा

बोद्धूत उद्धूतत्वाद्धूतेषु चरति

प्रतिष्ठा सर्वभूतानामधिपतिर्ब-

भूवेत्यसावात्मान्तर्बहिश्चान्तर्बहिश्च मैत्रा. ४।५

स वा एष एतस्मिन्बुद्धान्ते रत्वा

चरित्वा दृष्टैव पुण्यं च पापं च

पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोन्या

ब्रवति स्वप्नान्तायैव

स वा एष एतस्मिन्सम्प्रसादे रत्वा.. बृह. ४।३।१५

स वा एष एतस्मिन्स्वप्नान्ते रत्वा

चरित्वा दृष्टैव पुण्यं पापं..

स वा एष एतस्मिन्स्वप्ने रत्वा...

स वा एष एतेन दैवेन चक्षुषा

मनसैतान्कामान्पश्यन्नमते

स वा एष एवं पश्यन्नेवं मन्वान

एवं विजानन्नतिवादी भवति

स वा एष एवं पश्यन्नेवं मन्वान

एवं विजानन्नात्मरतिरात्मक्रीड

आत्ममिथुन आत्मानन्दः स

स्वराट् भवति

स वा एष ओमित्येतदात्मा, स

त्रेधाऽऽत्मानं व्यकुर्वत

स वा एष दिव्यः शाकरः शिशु-

मारस्त १ इ य एवं वेदाप

पुनर्भूत्यु जयति

बृह. ४।३।८

१ ऐत. २।३।३

१ ऐत. २।३।२

मैत्रा. ६।७

नृसिंहो. ९।१

छांदो. ८।३।३

मैत्रा. २।१०

बृह. ४।३।१७

बृह. ४।३।१५

बृह. ४।३।३४

बृह. ४।३।१६

छांदो. ८।१२।५

छांदो. ७।१५।४

छांदो. ७।२५।२

मैत्रा. ६।३

सहस्र. २३

स वा एष निरिन्द्रियो विमुक्तो-
ऽस्माहोकात्पैति

बृह. ६।४।१२

स वा एष पञ्चवाऽऽत्मानं प्रवि-
भज्य निहितो गुहायां मनो-
मयः प्राणशरीरो बहुरूपः सत्य-
सङ्कल्प आत्मेति

मैत्रा. २।९

स वा एष पुरुषविध एव

तैत्ति. २।२

स वा एष पुरुषः पञ्चवा पञ्चात्मा

महाना. १७।१४

स वा एष पुरुषोऽनरसमयः

तैत्ति. २।१।१

स वा एष भूतानीन्द्रियाणि
विराजं देवताः कोशाश्च सृष्ट्वा
प्रविश्यामूढो मूढ इव
व्यवहरन्नास्ते

नृसिंहो. ९।५

स वा एष महानज आत्माऽजरो-
ऽमरोऽमृतोऽभयो ब्रह्माभयं वै
ब्रह्माभयं हि वै ब्रह्म भवति

बृह. ४।४।२५

स वा एष महानज आत्माऽन्नादो
वसुदानो विन्दते वसु

बृह. ४।४।२४

स वा एष महानज आत्मा योऽयं
विज्ञानमयः प्राणेषु य एषो-
ऽन्तर्हृदय आकाशस्तस्मिन्ल्लेते

बृह. ४।४।२२

स वा एष यज्ञः प्रादक्षिणोऽनन्त-
दक्षिणः समृद्धतरः

सहस्रै. २१

स वा एष यज्ञः सद्यः प्रतायते
सद्यः सन्तिष्ठते

सहस्रै. १७

स वा एष वाचः परमो विकारः,
यदेतन्महदुक्तम्

१ ऐत. ३।६।३

स वा एष शुद्धः स्थिरोऽचलश्चा-
लेपोऽन्यत्रो निःस्पृहः प्रेक्षकव-
दवस्थितः

मैत्रा. २।११

स वा एष सूक्ष्मोऽमाहोऽदृश्यः
पुरुषसंज्ञो बुद्धिपूर्वमिदंैवावर्तते

मैत्रा. २।५

स वा एषा देवता दूर्नाम दूरं
ह्यस्या सत्युर्दूरं ह वा अस्मा-
न्मृत्युर्भवति

बृह. १।३।९

स वा एषोऽभिभूतः प्राकृतेर्गुणैः

मैत्रा. ३।२

स वा एषोऽस्मद्भवन्तरे तिष्ठन्-
कृतार्थोऽमन्यत

मैत्रा. ३।९

स वाजपेयेनसोऽतिरात्रेणसोभोर्या-
मेण स सर्वैः क्रतुभिर्यजते

ग. शो. ५।३

स वायुना ज्योतिषा भाति च
तपति च, भाति च तपति
च कीर्त्या यशसा ब्रह्मवर्चसेन

छांदो. ३।१८।४

स वायुपूतो भवति, स आदित्यपूतो
भवति। अरोगी भवति।
श्रीमांश्च भवति

मुद्रलो. ५।१

स वायुप्रतिष्ठा, आकाशात्मा
स्वरति स तद्भवति

कौ. त. २।१४

स वायुमिवात्मानं कृत्वाऽभ्यन्तरं
प्राविशत्

मैत्रा. २।६

स वायुः स आकाशस्तदेतदोजश्च
महश्चेत्युपासीत

छांदो. ३।१३।५

स वासुदेवो न यतोऽन्यदस्ति

गो. पू. ४।३

स वां मधु प्रबोचद्वतायन्त्वाष्ट्रं
यदस्त्रावपि कक्ष्यं वामिति

बृह. २।५।१७

सर्विकल्पो निर्विकल्पः समाधि-
द्विविधो हृदि (कुर्यात्)

सरस्व. ४९

सर्विकारमुदाहृतम्

भ. गी. १३।७

सर्विकारस्तथा जीवो निर्विकार-

स्तथा शिवः। कोशास्तस्य

विकारास्ते ह्यवस्थासु प्रवर्तकाः

त्रि. ब्रा. २।१३

स विजायमानः स जनिष्यमाणः

प्रत्यङ्मुखस्तिष्ठति विन्धतोमुखः

महाना. २।१

[+तै.आ.१०।१।३+

सूर्यता. १।३

स विज्ञानो भवति स विज्ञातमेवा-
न्ववक्रामति तं विद्याकर्मणी
सम्पन्नारमेते पूर्वप्रज्ञा च

बृह. ४।४।२

सविता पञ्चात्तात्सविता पुरस्तात्स-

वितोत्तरात्तात्सविताऽधरात्तात्।

सवितानः सुवतु सर्वताति सविता

नोरासतां दीर्घमायुः [सूर्यो.८+ अ.मं.१०।३६।१४

सविता प्रसविता दीप्तो दीपयन्

दीप्यमानः

नृ. पू. २।७

सविता प्राणिनः सूते प्रसूते शक्तिम्

त्रि. ता. १।६

सविता वै देवस्ततो योऽस्य भर्गा-

क्यस्तं चिन्तयामि

मैत्रा. ६।७

सविता अग्रियः प्रसविता अग्रियमेवा-
 मोति । अथो प्रज्ञातयैव प्रतिपदा ५
 छन्दा ५ सि प्रतिपद्यते सहवै. १५
 सवितुरिति सविता, सावित्र-
 मादित्यो वै गायत्रीर. २
 सवितुर्वा योग्यो जीवात्मपरमात्म-
 समुद्रवस्तं प्रकाशशक्तिरूपं
 जीवाक्षरं स्पष्टमापद्यते.. त्रि. ता. १।१४
 स वित्तेनैवा च पूर्यतेऽप च क्षीयते बृह. १।५।१५
 सवित्रा प्रसवेन जुषेत ब्रह्म पूर्णम् श्वेताश्व. २।७
 स विशृङ्ग एवाभवत् शौनको. २।३
 स विश्वकृद्विश्वविदात्मयोनिर्ज्ञः
 कालकालो गुणी सर्वविद्यः ।
 प्रधानक्षेत्रज्ञपतिर्गुणेशः
 संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः श्वेता. ६।१६
 [भवसं. २।४६
 स विश्वकृत् स हि सर्वस्य कर्ता
 तस्य लोकाः स उ लोक एव बृह. ४।४।१३
 स विश्वरूपस्त्रिगुणस्त्रिवर्मा
 प्राणाधिपः सञ्चरति स्वकर्मभिः श्वेताश्व. ५।७
 सविषयं मनो बन्धाय, निर्विषयं
 मुच्यते भवति मं. ब्रा. ९।१
 स विष्णुः स शिवः स ब्रह्मा सेन्द्रः सेन्दुः
 स सूर्यः स वायुः सोऽग्निः स ब्रह्म ग. शो. २।१
 स वैचि वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता
 तमादुरभ्यं पुरुषं महान्तम् श्वेता. ३।१९
 [+ना. प. ९।१४+ भवसं. २।४५
 स वैदेतत्परमं ब्रह्म धाम यत्र विश्वं
 निहितं भाति शुभ्रम् । उपासते
 पुरुषं ये ह्यकामास्ते शुक्रमेत-
 द्दतिवर्तन्ति धीराः मुण्ड. ३।२।१
 (अथ) संवेद्यञ्जायायै हृदय-
 मभिमिश्रेत् कौ. त. २।१०
 स बृहत्कालाकृतिभिः परोऽन्यो
 यस्मात्प्रपञ्चः परिवर्ततेऽयम् ।
 धर्मावहं पापनुदं भगेशं ज्ञात्वा-
 ऽऽत्मस्थममृतं विश्वधाम श्वेता. ६।६
 स वै खलु प्रस्तोता साम प्रस्तौति बृह. १।३।२८
 स वै गणेशः सर्वात्मा विज्ञेयः गणेशो. ४।१०

स वै गौतम तीर्थेनेच्छसींश्च
 इत्युपैम्यहम् (मा. पा.) बृह. ६।२।५
 स वै त्रिविधः—सात्त्विको राजस-
 स्तामसश्चेति । सात्त्विकी ज्ञान-
 शक्तिः, राजसी क्रियाशक्तिः,
 तामसी द्रव्यशक्तिः गणेशो. ४।३
 स वै दैवः प्राणो यः सञ्चरञ्चास-
 ञ्चरञ्च न व्यथते न रिष्यति बृह. १।५।२०
 स वै नैव रेमे तस्मादेकाकी न रमते बृह. १।४।३
 स वै ब्रह्म परमात्मेत्युच्यते हंसो. ४
 स वै बलं बलिनामग्रगण्यः पुण्यः
 शरण्यः सकलस्य जन्तोः ।
 तमेकदन्तं गजं वक्त्रमीशं विज्ञाय
 दुःखान्तमुपैति सद्यः हेरम्बो. ११
 स वै ब्रह्मण आनन्दः गान्धर्वो. ६
 स वै वाचमेव प्रथमामत्यवहत्
 सा यदा मृत्युमत्यमुच्यत बृह. १।३।१२
 स वै वेदिता स्याद्याज्ञवल्क्य वेद
 वा [बृह. ३।९।१०, ११, १२-१७
 स वैष्णवं धाम भित्वा परं ब्रह्म
 प्राप्नोति त्रि. ता. १।१५
 सव्यदक्षिणनाडीस्थो मध्ये चरति
 मारुतः । तिष्ठतः खेचरी मुद्रा
 तस्मिन्स्थाने न संशयः शाण्डि. १।७।४०
 सव्यहस्त आज्यस्थाली
 (शारीर्यज्ञस्य) प्रा. हो. ४।२
 सव्याहृति सप्रणवां गायत्री शिरसा
 सह । त्रिः पठेदायतप्राणः
 प्राणायामः स उच्यते अ. ता. ११
 सव्ये तु शङ्खं विभृयादिति
 ब्रह्मविदो विदुः सुदर्श. ११
 सव्ये दक्षिणगुल्फं तु पृष्ठपार्श्वे
 नियोजयेत् । दक्षिणेऽपि तथा
 सव्यं गोमुखं गोमुखं (गोमुखं)
 यथा [त्रि. ब्रा. २।३६+ शाण्डि. १।३।२
 सव्ये दक्षिणगुल्फं तु पृष्ठपार्श्वे
 नियोजयेत् । दक्षिणेऽपि तथा
 सव्यं गोमुखं तत्प्रचक्षते आ. द. ३।४

सन्धे दले तिष्ठति पद्मयोनिः

स्वरान्वितो दक्षिणपत्रगो हरिः ।

श्रिया समेतः शिवयाऽनुषक्तो

मध्ये दलेऽहं निवसामि नित्यम् १ बिल्बो. ३

सव्योरुदक्षिणे गुल्फे दक्षिणं

दक्षिणेतरे । निदिध्यादृजुकायस्तु

चक्रासनमिदं मतम्

वराहो. ५।१७

स शब्दस्तुमुलोऽभवत्

भ. गी. १।१३

सशरीरं समारोप्य तन्मयत्वं

तथोमिति । त्रिशरीरं त-

मात्मानं परं ब्रह्म विनिश्चिनु

ना. प. ८।८

स शान्तिमधिगच्छति

भ. गी. २।७१

स शान्तिमाप्नोति न कामकामी

भ. गी. २।७०

सशिखं वपनं कृत्वा बहिस्सूत्रं

त्यजेद्बुधः । यदक्षरं परं ब्रह्म

तत्सूत्रमिति धारयेत्

ब्रह्मो. ६

[+ना. प. ३।७८+

परब्र. ७

सशिखान् केशान् निकृत्य

विस्तृत्य यज्ञोपवीती निष्क्रम्य

पुत्रं दृष्ट्वा त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं

सर्वमित्यनुमन्त्रयेत्

कठश्रु. ४

सशिखान् केशान् विस्तृत्य यज्ञोपवीतं भूः स्वाहेत्यप्सु

जुहुयात्

कठरु. ३

स शिखान्केशान् विस्तृत्य यज्ञोपवीतं

छित्त्वा पुत्रं दृष्ट्वा त्वं यज्ञस्त्वं

सर्वमित्यनुमन्त्रयेत्

१ सं. सो. १।२

स शिवः सच्चिदानन्दः सोऽन्वेष्टव्यो

मुमुक्षुभिः

पं. ब्र. ३।५

स शिवः स शिवः स शिवो गणेशः

गणेशो. २।४

स शीतोष्ण-सुखदुःख-मानाव-

मानवर्जितः

प. हं. प. ११

स शुक्रः स्वकया बुद्ध्या न वाक्यं

बहु मन्यते

महो. २।१७

स शुद्धः स शुद्धः स शुद्धो गणेशः

गणेशो. २।४

स शुष्यति स ब्रह्मर्तते तस्मादनृतं

न वदेत्

१ ऐत. ३।६।५

स शौद्रं वर्णमसृजत

बृह. १।४।१३

स षकारं ब्रवाणीऽऽषकाराऽऽ

इति, स षकारमेव ब्रूयात्

३ ऐत. २।१२

स षट्पदो भवति, साम एव षट्पदः म. पू. १।११

स षड्मिर्वर्जितः । षड्भावविकारशून्यः प. हं. प. ११

स षोडशिना यजते, स वाजपेयेन

यजते, सोऽतिरात्रेण यजते,

सोमोर्यामिणेन यजते, सोऽश्वमेधेन

यजते, स सर्वैः क्रतुर्मियजते

नृ. पू. ५।१४

स सकलभोगान् भुङ्क्ते देहं त्यक्त्वा

शिवसायुज्यमेति

का. उद्गो. ५

स सच्चिदानन्दाद्वयचिद्धनः

सम्पूर्णानन्दैकबोधो ब्रह्मैवाह-

मस्मीत्यनवरतं ब्रह्मप्रणवानु-

सन्धानेन यः कृतकृत्यो भवति

स ह परमहंसपरिब्राट्

प. हं. प. ११

स सततं सकलरुद्रमन्त्रजापी

भवति, स सकलभोगान्भुङ्क्ते,

देहं त्यक्त्वा शिवसायुज्यमेति,

न स पुनरावर्तते

का. उद्गो. ५

स सत्याभिसन्धः सत्येनात्मान-

मन्तर्धाय परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति,

स न दह्यतेऽथ मुच्यते

छांदो. ६।१६।२

स सञ्ज्यासी च योगी च

भ. गी. ६।१

स सञ्ज्यासी शिव एव सर्वदेवमयो

भवति

तारोप. ४

स समानः सन्तुभौ लोकावनु-

सञ्चरति

बृह. ३।२।४

स समुद्र एव भवति (मा. पा.)

छां. ब. ३।१।१

स सिसृद्धकायः सन् सृष्टिकर्म

न जज्ञिवान्

मुद्रलो. २।४

स सम्यग्ज्ञानं च लब्ध्वा विष्णु-

सायुज्यमवाप्नोति

वासुदे. १।७

स सर्वकर्मकृत् स ब्राह्मणः

प. हं. प. ११

स सर्वकारणमूलं विराट्स्वरूपोभवति

त्रि. म. ना. २।६

स सर्वज्ञः सर्वमेवाविवेश

प्रभो. ४।११

स सर्वज्ञः सर्ववित् यस्य ज्ञानमयं

तपः । तस्यैषाऽऽहुतिर्दिव्या-

ऽधृतत्वाय कल्पतामिति

३ सञ्ज्यासो. १

स सर्वभयनिर्मुक्तः साक्षाच्छिवमयो भवेत् वज्रपं. ६

स सर्वलोकस्य शुभाशुभस्य तं वै ज्ञात्वा मृत्युमत्येति जन्तुः हेरम्बो. ८

स सर्वविद्वज्जति मां भ. गी. १५।१९

स सर्ववेत्ता भुवनस्य गोप्ता ताभिः प्रजानां निहिता जनानाम् । प्रोक्ता त्वमोता विचितिः क्रमाणां प्रजापतिश्छन्दमयो विगर्भः एका. ९

स सर्ववेदव्रतचर्यासु चरितो भवति पैङ्गलो. ४।२४

स सर्वशः सर्व भवति (मा. पा.) प्रश्नो. ४।१०

स सर्वसम्पत्तिभूतं प्रथमं...महा- विद्येश्वरीविद्यां..त्रिपुरेश्वरी*.. त्रि. ता. २।२

स सर्व चानिकेतः स्थिरमतिरेवं स मिथुः सौवर्णादीनां नैव परिग्रहेत् प. हं. ९

स सर्व* लोकाश्चित्वा ब्रह्म परं प्राप्नोति अव्यक्तो. ५

स सर्वान्वेदानधीतो भवति का. रुद्रो. ५

स सर्वा वाचो विजृम्भयति त्रि. ता. १।१५

स सर्वा* अ लोकानाप्नोति सर्वा* अ कामान्यस्तमात्मान- छांदो. ८।७।१,३

मनुविद्य विजानाति महो. ६।८

[८।१२।६+पैङ्गलो. ४।२४+]

स संसारं तरति, सोऽमृतत्वं च गच्छति, महती श्रियमश्नुते नृ. पू. ३।२

स संस्तुतो देवतदेवसूनुः सुतं भृगोर्वाक्यमुवाच तुष्टः । अवेदि मां भार्गव वक्रतुण्डमनाथनाथं त्रिगुणात्मकं शिवम् ग. पू. ता. १।९

स साक्षी भवति, स एव भवति, स सर्वो भवति गणेशो. ५।८

स सागरां सपर्वतां सप्तद्वीपां वसुन्धरां वत्साम्नः प्रथमं पादं जानीयात् नृ. पू. १।२

स सागरां सप्तद्वीपां सपर्वतां वसुन्धरां वत्साम्नः प्रथमं पादं जानीयात् रायस्पोषस्य दातेति ग. पू. १।१२

स साम भवति, सर्वैर्गायत्री, यजुर्वेदिण्, अनुष्टुप् साम ग. पू. १।११

स सामभिः सामवेदो रुद्रादित्या जगत्याहवनीयः सा साम्न- स्तृतीयो पादो भवति नृ. पू. २।१

स सामभिः सामवेदो रुद्रादित्या जगत्याहवनीयः सा तृतीयः पादो भवति नृसिंहो. ३।२

स सिद्धिसाधनैर्योगैस्तानि साधयति क्रमात् अ. पू. ४।५

स सारः सर्वसाराणां तस्मात्सारो न विद्यते अ. पू. ४।७०

स सार्वभौमवज्रवहाराच्छ्रान्तो- ऽन्तर्भवन् प्रवेष्टुं मार्गमाश्रित्य तिष्ठति पैङ्गलो. २।७

स सूर्यः स चन्द्रः सुरास्ते ते असुराः (परमात्मैव) निरा. १०

स सूर्यः स वायुः सोऽग्निः स ब्रह्म गणेशो. २।१

स सूर्यो भगवान्सहस्रांशुः, तं सूर्यं भगवन्तं सर्वस्वरूपिणं निगमा बहु वर्णयन्ति सूर्यता. १।२

स सोमलोके विभूति- मनुभूय पुनरावर्तते प्रश्नो. ५।४

स सोमः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति । दीक्षायामिति बृह. ३।९।२३

स क्षिय* ससृजे, ता* सृष्ट्वाऽध- उपास्ते बृह. ६।४।२

स क्षियं ससृजे तां सृष्ट्वाऽध उपास्ते...(मा. पा.) बृह. ६।४।२

सत्यमिव मर्त्यः पच्यते सत्य- मिवाजायते पुनः कठो. १।६

स स्वराङ्गवति, तस्य सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति छांदो. ७।२५।२

स स्वर्ग्यो भवति ब्रह्मचारी वेद- मधीत्य वेदोक्ताचरितब्रह्मचर्यो दारानाहृत्य पुत्रानुत्पाद्य तान- नुपाधिभिर्वितत्येष्ट्वा च शक्तितो यज्ञैः कठ. २

स स्वर्लोकं स महर्लोकं स जनो- लोकं, स तपोलोकं, स सत्य-

लोकः स समलोकः स सर्व- लोकः सर्वलोकं जयति	ग. शो. ५।२
स स्वव्यतिरेकेण नान्यद्वष्टा	प. हं. प. ११
स स्वाधीनमायः सर्वज्ञः सृष्टि- स्थितिलयानामादिकर्ता जग- दङ्कुररूपो भवति	पैङ्गलो. १।२
स ह अविदूर एव शवशयित- मात्रेयमच्छावदमुपदर्शयन्नुवाच	छाग. २।१
स य एषोऽणिमैत्रदात्म्यमिदं सर्वम्	छांदो. ६।१२।३
स ह कामप्रभमेव वज्रे, त- हास्मै ददौ	बृह. ४।३।१
स ह कृच्छ्री बभूव त- ह चिरं वसेत्याज्ञापयाञ्चकार	छांदो. ५।३।७
स ह क्षत्ताऽविदमिति प्रत्येयाय	छांदो. ४।१।८
स ह क्षत्ताऽन्विष्य नाविदमिति प्रत्येयाय	छांदो. ४।१।७
स ह गवां स ह सप्तमवरोध दश दश पादा एकैकस्याः वृङ्गयोरावद्धा बभूवुः	बृह. ३।१।१
स ह क्षत्ताऽन्विष्याविदमिति प्रत्येयाय (मा. पा.)	छां. उ. ४।१।८
स ह गायत्रीमेव प्रतिसन्दिदेश	शौनको. १।२
सहजं कर्म कौन्तेय	म. गी. १८।४८
(एवं) सहजानन्दे यदा मनो लीयते तदा शान्तो भवी भवति	मं. ब्रा. २।३
सहजेनामनस्केन मनश्शल्यं वियोजयेत्	अमन. २।८१
स ह तेनैव वज्रेणासुरान् पराभावयन्	शौनको. ४।४
स ह त्रिष्टुभमेव प्रतिसन्वदत्	शौनको. ३।२
स ह द्वादशवर्षं उपेत्य चतुर्विं- शतिवर्षः सर्वान्वेदानधीत्य महामना अनूचानमानी स्तत्र पयाय	छांदो. ६।१।२
स ह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै	शांतिपाठः
स ह नौ यशः । सह नौ ब्रह्म वर्चसम्	तैत्ति. शां. पा.

स ह पञ्चदशाहानि नाशाय हैन- मुपससाद	छांदो. ६।७।२
स ह पुत्रं श्वेतकेतुं प्रजि-(गाय-) घाय याजयेति	कौ. त. १।१
स ह प्रजापतिरीक्षांचक्रे, हन्तास्मै प्रतिष्ठां कल्पयानीति	बृह. ६।४।२
स ह प्रणव उवाच-यदहं सर्वभवानि	शौनको. २।२
स ह प्रणवपर्यन्तदीर्घनिःस्वन- तन्नुना । जहाविन्द्रिय-	अ. पू. ३।१४
तन्मात्रजालं खग इवानिलः	
स ह प्रणवमेवोवाच-पुरोगाय- मेवारभस्मेति	शौनको. ३।२
स ह प्रवाहणो जैवल्लिरुवाच भगवन्तावमेवदतां ब्राह्मणयो- र्वदतोर्वाच- ओष्यामीति	छांदो. १।८।२
स ह प्रातः सज्जिहान उवाच- न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मणपः । नानाहिताभिर्ना- विद्वान् स्वैरी, स्वैरिणी कुतः	छांदो. ५।११।५
स ह प्रातः सज्जिहान उवाच- यद्वतामस्यलमेमहि धनमात्रा- राजासौ यक्षयते सर्वैरात्विज्यै- र्वृणीतेति	छांदो. १।१०।६
स ह प्रातः सभाग उदेयाय त- होवाच मानुषस्य भगवन्नात्म वित्तस्य वरं वृणीथा इति	छांदो. ५।३।६
सहमाना नाम दक्षिणा, राज्ञी नाम प्रतीची, सुभृता नामोदीची, तासां वायुर्वत्सः, स य एवमेवं वायुं दिशां वत्सं वेद न पुत्र- रोद- रोदिति	छांदो. ३।१५।३
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा	म. गी. ३।१०
स ह रक्षांसि यदेवाः सप्तदश	सहवै. २५
स हरिर्वसुजित्तमः	चिन्त्यु. ११।७
स ह वा एतस्य स्वभा न यजुषा न साज्ञामर्थोऽस्ति	सूर्यज्ञा. ३।१
स ह वै देवानां चासुराणां च यज्ञौ प्रस्तावास्ताम्	सहवै. १

- स ह व्याधिनाऽनशितुं दग्ने, त-
माचार्यजायोवाच-ब्रह्मचारि-
भ्रशान, किं नु नाभ्रासीति छांदो. ४।१०।३
- स ह शान्तहृदय एव विरोचनो-
ऽसुराञ्जगाम तेभ्यो हैतामुप-
निषदं प्रोवाचात्मैवेह मह्य्य
आत्मा परिचर्यः... छांदो. ८।८।४
- स ह श्रोभूते गा अभिप्रस्थापया-
ञ्चकार, ता यत्राभिसायं
बभूवुस्तत्राभिमुपसमाधाय गा
उपरुध्य समिधमाधाय पश्चादग्नेः
प्राङ्मुखोपविवेश [छांदो. ४।६।१ + ७।१+८।१]
- स ह षोडशं वर्षशतमजीवत्, प्र ह
षोडशं वर्षशतं जीवति यएवंवेद छांदो. ३।१६।७
- स ह षोडशं वर्षशतं जीवति (मा.पा.) छां.उ. ३।१६।७
- स ह सञ्जिहान एव क्षत्तारमुवाचाङ्गारे
ह सयुग्वानमिव रैक्वमात्थेति
यो नु कथं सयुग्वा रैक्व इति छांदो. ४।१।५
- स ह समित्पाणिश्चित्रं गार्ग्यार्यणि
प्रतिचक्राम उपायानीति कौ. त. १।१
- स ह सम्पादयाञ्चकार प्रक्षयन्ति
मामिमे महाशाळा महाश्रोत्रियाः छांदो. ५।११।३
- स ह सम्पायास्त्वमाशिषमाशिभूता-
भूतमाशिषमाशिराशीराशिरनु-
भूमिः स्वाहा पारमा. ४।५
- स ह सर्वत आवसथान्मापयाञ्चक्रे
छांदो. ४।१।१
- स ह सर्वमेवात्मानमुपसंहृत्य शृङ्ग
एवागूहयत् शौनको. ३।४
- स ह सहस्रं समा ब्रह्मचर्यमभ्युवास
अहसैवाभ्यहन्यन्त अन्यत्तो. २
- स ह स्मयमान उवाच सम्पश्यध्वा
एव मा प्रमदत भ. गी. १।१३
- स ह स्मान्मानन्तेवासिनः समावर्त-
यन्तः स ह स्मैव न समावर्तयति छाग. २।४
- स ह स्माह पाणिना मा मातृदः छांदो. ४।१०।१
- स ह स्मैव्यः कामानागायति बृह. ५।१२।१
- सहस्रकमले शक्तिः शिवेन सह
मोदते । सैवावस्था यदा ज्ञेया.. छांदो. १।१।१३
- सहस्रकलावयवकल्याणं दृष्टमात्रेण
मोक्षदं वेष्टमाददे मुद्रलो. २।२
- सहस्रकृत्वः प्रयुक्तामिष्टोमाप्तो-
र्यामादीनां फलमवाप्नोति सन्ध्यो. २
- सहस्रदलसंख्यातं ब्रह्मरन्ध्रे महा-
पथिम् । आधारं प्रथमं चक्रं
स्त्राविष्टानं द्वितीयकम् यो. चू. ६
- सहस्रधा नैकधा चासमत्र । मया
तत्तमितीदमश्रुते तदन्यथा
सद्यदि मे असद्विदुः वा. मं. १९
- सहस्रपरमा देवी शतमूला
शताङ्गुरा । सर्वं हरतु मे पापं
दूर्वा दुस्स्वप्ननाशिनी महाना. ४।१
- [वनदु. १५५]
- सहस्रपादेकमूर्ध्ना व्याप्तं स एवेद-
मावरीवर्तिभूतम् अ. शिरः. ३।१४
- सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते
सहस्रमेकं व्ययुतं षट्शतं चैव
सर्वदा । उच्चरन्पठितो हंसः
सोऽहमित्यभिधीयते भ. गी. १।१४६
- सहस्रयुगपर्यन्तं अ. वि. ७९
- सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानतः
प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः
[+मैत्रा. ६।८+] भ. गी. ८।१७
- सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्व-
शम्भुवम् । विश्वं नारायणं
देवमक्षरं परमं पदम् प्रमो. १।८
- सहस्रशीर्षं देवं सहस्राक्षं विश्व-
शम्भु (सम्भ) वम् [महो. १।५+ चतुर्वे. २] अश्व्यु. २
- सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् [ऋक्. मं. १०।९०।१+ श्वेता. ३।१४
[+चिन्त्यु. १२।१ सुबालो. १।२+ पु. सू. १+]
- सहस्रसङ्ख्यया जाताः शाखाः
साम्नः परन्तप मुक्तिको. १।१३
- सहस्रं दृष्ट्वास्त एतस्यां वाचि
जनको जनक इति वा उ
जना धावन्तीति कौ. त. ४।१

सहस्रं वा यस्य वै वितानमादधानः

सहस्रं वा आशिषः सहस्रं यस्य

वै सासिकाः सहस्रं सहस्रायस्वाहा पारमा. ४।७

सहस्रं समा आद्यन्तनिहितोङ्कारेण

पदान्यगायत् अव्यक्तो. ३

सहस्राङ्गुरशाखात्म-फल-पल्लव-

शालिनः । अस्य संसारवृक्षस्य

मनोमूर्तामिदं स्थितम् मुक्तिको. २।३७

सहस्रारे जलज्योतिरन्तर्लक्ष्यम्

मं. ब्रा. १।५

सहस्रार्णमतीवात्र मन्त्र एष

प्रदर्शितः । एवमेतां समारूढो

हंसयोगविचक्षणः ॥ न भिद्यते

कर्मचरैः पापकोटिशतैरपि ना. बि. ५

सहस्रं मन्यो अभिमातिमस्मे

रुजन्मृणन्प्रमृणन्प्रेहि शत्रून्

[क्र. मं. १०।८४।३+ वनदु. १०९

स ह स्वेनैव रूपेणादित्यानगच्छत्

अथर्व. ४।३१।३

स ह होतावस्मिच्छरीरे वसतः

शौनको. ४।४

स हान्तत एवात्मानमुपसंहृत्य

कौ. त. ३।४

सावदेवामाहृत्य

शौनको. २।३

स हान्नमित्यभिव्याहृत्य

बृहतीसहस्रं शशंस १ ऐत. २।३।१

स हापश्यत्-सर्व एव न्यूङ्गयन्तो

शौनको. ३।३

मामभिचक्षीरन्निति

स हापश्यदादित्यो वा उद्गीथोऽसौ

शौनको. ४।३

खल्वादित्यो ब्रह्म

स हापश्यन्नैतदजसैवसर्वारूपाण्येव-

शौनको. २।२

मभिचक्षीरन्

छांदो. ८।१०।१

स हाप्राप्यैव देवानेतद्भयं ददर्श

बृह. १।४।२

स हायमीक्षाञ्चक्रे यन्मदन्यन्नास्ति

छांदो. ५।३।४

कस्मान्नु विमेषीति

स हायस्तः पितुरर्धमेयाय

३ ऐत. १।१।१

स हानिपरिहृतो मेने न मेऽस्य

मं. गी. १।१।२६

पुत्रेण समगादिति

छांदो. ८।१४।१

सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः

छांदो. ६।७।४

स हाहं यज्ञसां यज्ञः

स हाशाय हैनमुपससाद त ए ह

यत्किञ्च पप्रच्छ सर्व ए ह प्रतिपेदे

छांदो. ६।७।४

स हि स्वादित्वाऽतिशेषाश्चायाया

आजहार

छांदो. १।१०।५

स हि ज्येष्ठः श्रेष्ठो राजाऽधिपतिः

छांदो. ५।२।६

स हि प्रज्ञानेन सम्पन्नतमो

विज्ञातं वदति

१ ऐत. ३।२।३

स हि सर्वकाममयः पुरुषोऽध्यवसा-

यसङ्कल्पाभिमानलिङ्गो बद्धो-

ऽतस्तद्विपरीतो मुक्तः

मैत्रा. ६।३०

स हि स्वप्नो भूत्वेमं लोकमति-

क्रामति मृत्यो रूपाणि

बृह. ४।३।७

स हिंकारो मघो जायते

छांदो. २।१५।१

स हीदमन्नं धियाधिया जनयते

बृह. १।५।२

स हीदमन्नं पुनः पुनर्जनयते

बृह. १।५।३

स हेभ्यं कुल्माषान् स्वादन्तं विभिक्षे

छांदो. १।१०।२

सहेलं सलीलं वा स्मरणाद्वरदानेषु

चतुरा

गुह्यषोढा. २

सहेश्वरो यशस्वी कल्याणकीर्ति-

र्भवितोरीश्वरो ह तु पुरुषायुषः

प्रेतोरिति ह स्माह

१ ऐत. ३।५।२

स हैतयैव निविदा प्रतिपेदे

बृह. ३।१।१

स हैतावानास यथा स्त्रीपुमा ए सौ

सम्परिष्वक्तौ स इममेवात्मानं

द्वेधा पातयन्ततः पतिश्च पत्नी

चाभवताम्

बृह. १।४।३

स हैतैः सर्वैरस्माच्छरीरादुत्क्रामति

कौ. त. २।१४

स हैनं पप्रच्छ त्वं नु खलु नो

याज्ञवल्क्य ब्रह्मिष्ठोऽसीति

बृह. ३।१।२

स हैव सन्तं न विजानन्ति देवाः

इन्द्रस्यात्मान ए सतथा चरन्तम्

चिरयु. १।१।५

स हैवालं भार्येभ्यो भवति

बृह. १।३।१८

स होता स मुक्तिः साऽतिमुक्तिः

बृह. ३।१।३

स होवाच-आर्तमिवेदं ते विज्ञान-

मपिस्विदेनद्रोदस्योरेव

पर्यायेणोपवन्वीमहि

आर्वे. ४।२

स होवाचकिमेप्रतीवाहोभविष्यतीति

२ प्रणवो. ८

स होवाच किं मेऽन्नं भविष्यतीति

छांदो. ५।२।१

स होवाचकिमे वासो भविष्यतीति

छांदो. ५।२।२

स होवाच—कुरुक्षेत्र एवोपसमेत्थ

ये बालिशस्तानुपाध्वै ते व

इदं प्रवक्ष्यन्तीति

छाग. ३।१

स होवाच—कैषा त्वं ब्रह्मवाग्यदसि

शंसात्मानमिति

अन्यक्तो. २

स होवाच—गार्गि माऽतिप्राक्षी-

र्मा ते मूर्धा व्यपेतत्

बृह. ३।६।१

स होवाच—गार्ग्य उप त्वा यानीति

बृह. २।१।१४

स होवाच—गार्ग्योय एवासावादित्ये

पुरुष एतमेवाहं ब्रह्मोपास इति

बृ. उ. २।१।२

स होवाच—जनको वैदेहोऽभयं

त्वागच्छताद्याज्ञवल्क्य यो नो

भगवन्नभयं वेदयसे

बृह. ४।२।४

स होवाच—जपध्वमानुष्टुभं मंत्रराजं

षट्पदं सषडक्षरम्

ग. पू. १।१०

स होवाच—तपस्यन्तं सिद्धारण्ये

भृगुपुत्रं वृच्छध्वमिति

ग. पू. १।६

स होवाच—तां हि वै पूर्वं नारायणो

यस्मिँल्लोका ओतांश्च प्रोताश्च

तस्य हृत्पद्माज्जातोऽञ्जयोनि-

स्तपस्तस्मा तस्मै ह वरं ददौ

गोपालो. १।१४

स होवाच—त्वामेव जानीयामिति

१ ऐत. २।३।४

स होवाच नारदः...निर्वैरः शान्तो

दान्तः सञ्जयासी परमहंसा-

भ्रमेणास्वलित-स्वस्वरूपध्यानेन

वेदत्यागं करोति स मुक्तो भवति

ना. प. १।१

स होवाच पितरं, तत कस्मै मां

दास्यसीति । द्वितीयं तृतीयं त

होवाच, मृत्यवे त्वा ददामीति

कठो. १।४

स होवाच—प्रजापतिः स यो ह वै

सावित्रस्याष्टाक्षरं पदं श्रिया-

भिषिक्तं तत्साम्नोऽङ्गं वेद

श्रिया देवाऽभिषिच्यते

नृ. पू. १।३

स होवाच प्रतर्दनस्त्वमेव वृणीष्व यं

एवं मनुष्यायहिततमं मन्यस इति

कौ. त. ३।१

स होवाच—बहव इमेऽस्मिन्पुरुषे

कासा जानात्ययाः

छांदो. ४।१०।३

स होवाच—वासाकिये एवैव आदित्ये

पुरुषस्तमेवाहमुपास इति

कौ. उ. ४।२

स होवाच—ब्रह्मपुत्रस्तपस्तेपे सिद्ध-

क्षेत्रे महायशाः

ग. पू. १।६

स होवाच—भगवंतो यदिदं सप्त-

माध्वै यदृचोऽधीध्वै यद्यजूषि

यत्सामानि कस्यायं महिमेति

छाग. १।२

स होवाच भगवान् ब्रह्मा आनन्दं

ब्रह्मणो विद्वान्सन्निदानन्द-

स्वरूपो भवति

ना. उ. ता. १।१

स होवाच भगवान् ब्रह्मा नारायण-

यन्त्रमन्त्रावरणपूजामाचक्षे

ना. पू. ६।१

स होवाच भगवान् उपासनविधिं

व्याचष्टे

ना. पू. ४।११

स होवाच यदिदमिच्छाचिदिच्छा-

चिदीक्ष्यै किं तद्येन ब्राह्मण इति

छाग. १।३

स होवाच—यदेतदस्मिन्मण्डले-

ऽर्चिर्दीप्यते बन्धम्यमाणमिव,

चाक्ष्यमानमिव, जाञ्जल्य-

मानमिव, देदीप्यमानमिव,

लेलिहानं तदेव मे ब्रह्म

आर्षे. ५।२

स होवाच—याज्ञवल्क्यः प्रिया

वतारे नः सती

बृ. उ. २।४।४

स होवाच याज्ञवल्क्यः—सो-

ऽविमुक्त उपास्यः...

जाबालो. २

स होवाचाजातशत्रं काश्यं ब्रह्म

ते ब्रवाणीति

बृह. २।१।१

स होवाचाजातशत्रुः सहस्रमेतस्यां

वाचि दृष्टो जनको जनक इति

वै जना भावन्तीति

बृह. २।१।१

स होवाचेन्द्रो यन्त्रामुद्रीथेनोपाव-

नेष्यन्ते तेनैवते कल्पयिष्यन्तीति

शौनको. ४।२

स होवाचोषस्तश्चाक्रायणो यथा

विभ्रूयादसौ गौरसावश्च इत्येव-

मेवैतद्व्यपदिष्टं भवति

बृह. ३।४।२

स होहं वैतद्भगवन्मनुष्येषु (मा.पा.)

स होनन्नेदिष्टं पस्पर्श, स होनं

प्रथमो विदाश्चकार ब्रह्मेति

प्रश्नो. ५।१

संपूर्णं कुम्भवदेहं कुम्भये-

न्मातरिभवा

केनो. ४।३

त्रि. भा. २।९८

सं मा सिञ्चन्तु मरुतः समिन्द्रः

सं बृहस्पतिः

सहवै. २२

संयमासंयमाभ्यां च संसारः

शान्तिमन्वगात्

महो. ४।८७

संयमाग्निषु जुह्वति

भ. गी. ४।२६

संयुक्तमेकतां याति तथाऽऽत्म-

न्यात्मविन्मुनिः

२ आत्मो. २५

संयुक्तमेतत्क्षरमक्षरं च व्यक्ताव्यक्तं

भरते विश्वमीशः । अनीशश्चात्मा

बध्यते भोक्तृभावाज्ज्ञात्वा देवं

मुच्यते सर्वपाशैः

श्वेता. १।८

[+ भवसं. २।५+

ना. प. ९।७

संयोग एषां न त्वात्मभावादात्मा

ह्यनीशः सुखदुःखहेतोः

ना. प. ९।१

संयोगो योग इत्युक्तो जीवात्म-

परमात्मनोः

भवसं. ३।१३

संवत्सर आत्माऽश्वस्य मेघस्य

बृह. १।१।१

संवत्सरत्रयादूर्ध्वं प्राणायामपरो नरः

त्रि. ब्रा. १०२

संवत्सरत्रयेणाऽपि लयस्थस्यापि

योगिनः । तेजस्तत्त्वस्य सिद्धिः

स्यात्तौयतत्त्वमयो भवेत्

अमन. १।७६

संवत्सरश्च यजमानश्च लोकाः

सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः

मुण्ड. २।१।६

संवत्सरस्य तेजोभूतस्य भूतस्यात्म-

भूतस्य त्वात्माऽसि

कौ. त. १।६

संवत्सरं दीक्षितो भवति संवत्सरा-

देवात्मानं पुनीते

सहवै. १२

संवत्सरं पयसा जुह्वदपपुनर्मृत्युं

जयतीति

बृह. १।५।२

संवत्सरं मज्जो नाभीयात्तद्वतम्

छांदो. २।१९।२

संवत्सरः प्रजननम्

सहवै. २३

संवत्सरात्खल्वेताः प्रजाः प्रजायन्ते

संवत्सरेणेह वै जाता विवर्धन्ते

संवत्सरे प्रत्यस्तं यन्ति

मैत्रा. ६।१५

संवत्सरादादित्यामादित्याचन्द्रमसं

चन्द्रमसौ विधुतं तत्पुरुषो-

ऽमानवः [छांदो. ४।१५।५+

५।१०।२

संवत्सरादेवात्मानं पुनीते

सहवै. १२

संवत्सरो वै प्रजापतिः, तस्यायने

ब्रक्षिणं चोत्तरं च

प्रश्नो. १।९

संवत्सरोऽसावादित्यः

म. ना. १।७।१३

संवर्गोऽसि पाप्मानं मे संवृद्धि

कौ. त. २।७

संवर्चसा पयसा संतनूभिरगन्महि

मनसा स५ शिवेन

सहवै. ५

संवर्तकोऽग्निर्मरुतो विराडेकर्वि-

र्भास्वती स्मृता सा साम्न-

श्चतुर्थः पादो भवति

नृ. पू. २।१

संवादमिममद्भुतम्

भ. गी. १।८।७६

संवादमिममश्रीषं

भ. गी. १।८।७७

संविच्च सदसच्चापि चाहं

विश्वमिदं ध्रुवम्

२ देव्यु. ४

संवित्संरोधनं श्रेयः प्राणादि-

स्पन्दनं वरम्

ब्र. पू. ४।४३

संविद्वपेतं निरय एव मूत्रद्वारेण

निष्क्रान्तम् (शरीरं)

मैत्रे. १।३

संविदा देयम्

तैत्ति. १।११।३

संविदितमनोन्मन्यनुभवः

मं. ब्रा. ३।१

संविद्भूयाश्च तन्मध्ये शक्तिरुद्धा

स्थिता परा । तत्र पूर्णं गिरी

पीठे शक्तिं ध्यात्वा विमुच्यते

योगरा. १८

संविद्वस्तुदशालम्बः सा यस्येह

न विद्यते । सोऽसंविदजडः

प्रोक्तः कुर्वन्कार्यशतान्यपि

ब्र. पू. ४।५८

संविन्मात्रपरोऽस्म्यहम्

१ सं. सो. २।४७

संविन्मात्रमहं महत्

महो. ६।८१

संविन्मात्रस्थितश्चाहमजोऽस्मि

किमतः परम् । व्यतिरिक्तं

जडं सर्वं स्वप्नवच्च विनश्यति

स्कन्दो. ३

संविन्मात्रं परं ब्रह्म तत्त्वमात्रं

विजृम्भते

स्कन्दो. शीर्षके

संविमज्ज्य सुतानर्थं ग्राम्यकामान्

विसृज्य च

कुण्डिको. ३

संविमज्ज्य सुतानर्थं ग्राम्यकामा-

न्विसृज्य च । चरेत् वाममार्गेण

शुचौ देशे परिभ्रमन्

२ सङ्ख्यासौ. ४

संविशत्यात्मनाऽऽत्मानं य एवं वेद

चुषिहो. २।७

संवृत्या जायते सर्वं शाश्वतं
नास्ति तेन वै अ. शां. ५७
संवेद्य वर्जितमनुत्तममाद्यमेकं
संवित्पदं विकलनं कलयन्
महात्मन् । हृद्येव तिष्ठ कलना-
रहितः क्रियां तु कुर्वन्न-
कर्तृपदमेत्य शमोदितश्रीः अ. पू. ४।९१
संवेद्यसम्परित्यागात्प्राणस्पन्दन-
वासने । समूलं नश्यतः क्षिप्रं
मूलच्छेदादिव द्रुमः अ. पू. ४।५४
संवेद्येन हृदाकाशे मनागपि न
लिप्यते । यस्यासावजडा
संवित् जीवन्मुक्तः स कथ्यते अ. पू. ४।५९
संशयात्मा विनश्यति भ. गी. ४।४०
संशये समनुप्राप्ते ब्रह्मनिश्चयमाश्रयेत् ते. बि. ६।१०१
संशान्तदुःखमजडात्मकमेक-
सुप्तमानन्दमन्थरमपेतरजस्तमो
यत् । आकाशकोशतनवो-
ऽतनवो महान्तस्तस्मिन्पदे
गलितचित्तलवा भवन्ति अ. पू. ४।२४
संशान्तसर्वसङ्कल्पः प्रशान्तसकले-
षणः । निर्विकल्पपदं गत्वा
स्वस्थो भव मुनीश्वर महो. ६।८२
संशान्तसर्वसङ्कल्पा या शिलावदव-
स्थितिः । जाग्रज्जिद्राविनिर्मुक्तासा
स्वरूपस्थितिः परा [महो. ५।६+ मैत्रे. २।३०
संशान्त्यति तन्निधनम् छांदो. २।१२।१
संशितं मे ब्रह्म संशितं वीर्यं बलं सहैव. ८
संशितं क्षत्रं मे जिष्णु यस्याह-
मस्मि पुरोहितः सहैव. ८
संसार एव दुःखानां सीमान्त
इति कथ्यते । तन्मध्ये पतिते
पदे सुखमासाद्यते कथम् महो. ६।२६
संसारदुःखानि न मां स्पृशन्ति बराहो. ३।३
संसारदोषदृष्ट्यैव विरक्तिर्जायते
सत्ता । विरक्तस्य तु संसारात्
संशयासः स्यान्न संशयः ना. प. ६।२६
संसारनिवृत्तिर्मात्रेणवृत्तिः कदापि
न जायते त्रि. म. ना. ५।३

संसारपारं मुनयोऽपि यान्ति हेरम्बो. ७
संसारमण्डलं दुःखं पच्यन्ते
यत्र जन्तवः इतिहा. १२
संसारमेव निस्सारं दृष्ट्वा सार-
दिवृक्षया । सन्नयसेद्वन्धनाशाय
परं वैराग्यमाश्रितः [भवसं. १।१+ नार. पे. ३।१५
संसाररात्रिदुस्स्वप्ने शून्ये देहमये
भ्रमे । सर्वमेव पवित्रं तद्दृष्टं
संसृतिविभ्रमम् महो. ६।२२
संसारोऽम्बरमिदं कथमभ्युदितं
मुने । कथं च प्रशमं याति
किं यत्कस्य कदा वद महो. २।१५
संसारोऽम्बरमिदं कथमभ्युदितं
गुरो । कथं प्रशममायाति
यथावत्कथयाशु मे महो. २।३०
संसाराम्बुनिधावस्मिन् वासनाम्बु-
परिप्लुते । ये प्रज्ञानावमारूढास्ते
तीर्णाः पण्डिताः परे महो. ५।१७६
संसारार्णवसञ्जातं सेवितं मम
मानसे । चन्द्रसूर्येतिवेषो दिव्या
ध्वजा मेरुर्हिरण्यः गोपालो. २।२६
संसारितोऽयमानन्दमयो रस
आत्मानमानन्दमयतया प्रपद्यते सामर. १०२
संसारे च गुहावाच्ये मायाज्ञाना-
दिसंज्ञके । निहितं ब्रह्म यो
वेद परमे व्योम्नि संज्ञिते ॥
सोऽश्रुते सकलान्कामान्क्रमेणैव
द्विजोत्तमः कठश्रु. १३
संसारेषु नराधमान् भ. गी. १६।१९
संसिद्धिमपि गच्छेद्विद्यया सह
ज्ञानवान् संहितो. ३।८
संसिद्धिं परमां गताः भ. गी. ८।१५
संसिद्धिं लभते नरः भ. गी. १८।४५
संसिद्धोऽयं जीवसङ्गो मायोपाधि-
भेदेन नानाशरीरभावमाप्नोति सामर. १००
संसिद्धौ कुरुनन्दन भ. गी. ६।४३
संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपाः श्वेताश्व. ३।२
संसृज्य विश्वा भुवनानि गोप्ता बटुको. २२

(अथ) संस्कृतिबन्धमोक्षयो-

विद्याविद्ये चक्षुषी उपसंहृत्य	महावा. १
संस्कारसहितं धार्यम् (भस्म)	बृ. जा. ३।१
संस्तुष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं	
दत्तां वरुणश्च मन्युः	वनदु. ११३
[क्र. मं. १०।८४।७+	अथर्व. ४।३१।७
संस्तभ्य सिंहं स्वसुतान्गुणार्थान्	
संयोज्य शृङ्गेर्यभस्य हत्वा ।	
वश्यां स्फुरन्तीमसतीं निपीड्य	
सम्भक्ष्य सिंहेन स एष वीरः	नृसिंहो. ४।३
संस्तभ्यात्मानमात्मना	भ. गी. ३।४३
संस्थितानि पूर्वाणि दारुपात्राण्यग्नौ	
जुहुयात् (यतेः)	कठरु. २
संहारप्रणवः सृष्टिप्रणवश्चान्त-	
र्बहिश्चोभयात्मकत्वाच्चिविधो	
ब्रह्मप्रणवः	ना. प. ८।१
संहाररूपा रुद्राणी भवति	ना. पू. ता. २।१
संहारो निर्गुणप्रणवः	तुरीयो. १
सं हारमै पश्यते यं कामं कामयते,	
य एवं वेद	बृह. ६।१।४,४
सा कलहंसी सृष्ट्यादौ ब्रह्मणः	
पुत्री सरस्वती	सामर. ९२
सा कारणं कारणकारणाधिपा	
नास्याश्चकश्चिज्जनिता न चाधिपः	गुह्यका. ६८
साकारमनित्यं नित्यं निराकारं	त्रि. म. ना. २।१
साकारस्तु द्विविधः सोपाधिको	
निरुपाधिकश्च	त्रि. म. ना. २।१
साकारः सावयवो निरवयवं	
निराकारम्	त्रि. म. ना. २।१
सा कालपुत्रपदवी सा महावीचि-	
बागुवा । सासिपत्रवनश्रेणी या	
वेदेऽहमिति स्थितिः	ना. प. ३।५०
साकं स एको भूतश्चरति प्रजानां	
तस्मादुच्यत एकः	बटुको. २०
सा काष्ठा सा परा गतिः	कठो. ३।११
सा कुण्डलिनी कण्ठोर्ध्वमागो	
सुप्ता चैद्योगिनां मुक्तये भवति	शाण्डि. १।७।३७

साक्षाच्छक्तिर्भगवतः स्मरणमात्र-	
रूपाविर्भावप्रादुर्भावात्मिका	सीतो. २५
साक्षात् कथयतः स्वयम्	भ. गी. १८।७५
साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म	बृह. ३।४।२, २
साक्षाद्विधिमुखो ह्येष समाधिः	
पारमार्थिकः	मुक्तिको. २।५६
साक्षान्नारायणो देवः परं ब्रह्मा-	
भिधीयते	ना. पू. ता. ५।७
(अहो) साक्षान्नारायणोऽयं	
परं ब्रह्म	सामर. ५४
साक्षाद्ब्रह्म गोपालपुरी भवति	गोपालो. १।१५
साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपो जगन्नाथः	राधोप. ४।१
साक्षाद्ब्रह्मैव, नान्योऽस्तीत्येवं	
ब्रह्मविदां स्थितिः	चराहो. ३।२१
साक्षाद्भूयात्तु मङ्गलम्	शिवो. ७।८०
साक्षिण्येषा केवला निर्गुणा च	गुह्यका. ६९
साक्षिभूते समे स्वच्छे निर्विकल्पे	
चिदात्मनि । निरिच्छं प्रति-	
बिम्बन्ति जगन्ति मुकुरे यथा	महो. ५।५५
साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च	श्वेता. ६।११
[+राधोप. ४।३+ब्रह्मो. १६+	गोपालो. ३।१९
साक्षी सम्पूर्णकेवलः	महो. २।७३
साक्षी स्वप्रकाशः	नृसिंहो. ९।६
साक्ष्यनपेक्षोऽहं निजमहिम्नि	
संस्थोऽहमचलोऽहम्	आ. प्र. ४
साक्ष्यविशेषोऽनन्योऽसुखदुःखो-	
ऽद्वयः परमात्मा	नृसिंहो. ९।७
साक्ष्यहं किञ्चिदप्यत्र न कुर्वे	
नापि कारये	१ अवधू. २५
साक्ष्यहं सर्वदा नित्यश्चिन्मात्रोऽहं	
न संशयः	सर्वसारो. ८
सा गतिलोक एव सः	मैत्रा. ६।२४
सा गौरभवदृषभ इतरस्तां समेवा-	
भवत्	बृह. १।४।४
साग्निका अग्निव्रतधारकाः	
कर्मजडास्तैः सह कदाचित्त-	
द्वर्मात्तापनं न कुर्यात्	सामर. २२

साऽप्र एव सुभिक्षा बभूव तान्प्रति-
गृह्य निदधौ

छांदो. १।१०।५

साङ्ख्य एवावबुद्धा ये ते साङ्ख्या
योगिनः परे

अ. पू. ५।४९

साङ्ख्ययोगी पृथग्बालाः

भ. गी. ५।४

साङ्ख्यं योगं समभ्यस्ये पुरुषं

पञ्चविंशकम्

निरुक्तो. १।७

साङ्ख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि

भ. गी. १८।१३

सा चेदस्मै न दद्यात् काममेना-

मवक्रीणीयात्, सा चेदस्मै
नैव दद्यात्काममेनां यष्टया वा

पाणिना वोपहृत्यातिक्रामेत्

बृह. ६।४।७

सा चेदस्मै दद्यादिन्द्रियेण ते

यशसा यश आदधामीति

बृह. ६।४।८

सा चैवाग्निः, सा च सूर्यः, सा

वायुः, सा च चन्द्रमाः

गुह्यका. ५२

सा जीबन्मुक्तोदेति स्वरूपानन्द-
दायिनी

महो. ४।३८

साज्यं हविरनामयं मोदुमिति शिखां
यज्ञोपवीतं पितरं पुत्रं कलत्रं

कर्म चाभ्ययनं मन्त्रान्तरं
विसृज्यैव परिव्रजत्यात्मवित्

ना. प. ३।७७

सा तु (सुषुप्ता) मूलाधारादारभ्य
ब्रह्मरन्ध्रगामिनी भवति

अद्वयता. २

सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान्

वीरवतोऽकरत्

बृह. ६।४।२८

सात्यकिश्चापराजितः

भ. गी. १।१७

सा त्याज्या सर्वयत्नेन सर्वनाशे-

ऽप्युपस्थिते । स्पष्टव्या सा न

भवेत्तेन सश्वमांसेव पुलकसी

ना. प. ३।५०

सा त्रिविधा व्याप्य तिष्ठति (माया)

सामर. ९८

सात्त्विकत्वात् समष्टित्वात् साक्षि-

त्वाल्लगतामपि । जगत्कर्तुमकर्तुं

वा चान्यथा कर्तुमीशते...

सरस्व. ४०

सात्त्विकमायात्मको विष्णुः

पा. ब्र. २

सात्त्विकराजस-तामस-लक्षणानि

त्रयो गुणाः

शारीरको. ५

सात्त्विकं निर्मलं फलम्

भ. गी. १४।१६

सात्त्विकं परिच्छिद्यते

भ. गी. १७।१७

सात्त्विकांशेन जायन्ते कर्मण्या

द्रव्यसम्पदः । रजस्तमः-

स्वरूपेण भावा यज्जबहिष्कृताः

भवसं. ४।७

सात्त्विकी ज्ञानशक्तिः । राजसी

क्रियाशक्तिः । तामसी द्रव्यशक्तिः

ग. शो. ४।३

सात्त्विकी राजसी चैव

भ. गी. १७।२

सात्त्विकोऽस्मि सदाऽस्म्यहम्

मैत्रे. ३।६

सात्त्विक्या दिशो वायुःसूर्योवरुणो-

ऽश्विनाविति ज्ञानेन्द्रियदेवताः

गणेशो. ४।४

सार्थकार्ष्णद्वयं रामो रमन्ते यत्र

योगिनः

रामर. ५।४

सा देवी त्रिधा भवति, शक्त्यासना

इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिः

साक्षाच्छक्तिरिति

सीतो. ६

साधकः साधयेत्सर्वमिह लोके

परत्र च

सूर्यता. ६।३

साधनचतुष्टयसम्पन्नः सन्न्यस्तुमर्हति

ना. प. २।१

साधनचतुष्टयसम्पन्नः सर्वसंसारोपरि

मनोवाकायकर्मभिर्यथाशानिवृत्तः

ना. प. १।१

साधनचतुष्टयसम्पन्नो यः सन्न्यस्यति

स एव ज्ञानसन्न्यासी

१ सं. सो. २।१३

साधनसम्पन्न एव सन्न्यस्तुमर्हति

१ सं. सो. २।१

साधनं प्रभवेत्पुंसां वैराग्यादि-

चतुष्टयम्

वराहो. २।२

साधयन् वज्रकुम्भानि नव द्वाराणि

बन्धयेत्

ब्र. वि. ७५

साधवो दीनवत्सला एवासते

सामर. ३७

साधिभूताधिदैवं मां

भ. गी. ७।३०

साधियज्ञं च ये विदुः

भ. गी. ७।३०

साधुकारी साधुर्भवति

बृह. ४।४।५

साधुत्वे नियोगं सुलभं पवित्रं

सुलभं सुकरं तद्विष्णुक्षेत्रं

नारदो. १

साधुनैतमुपागादित्येव तदाहुः

छांदो. २।१।२

साधुभिः पूज्यमानोऽस्मिन् पीडय-

मानेऽपि दुर्जनैः । समभावो

भवेद्यस्य स जीबन्मुक्त इष्यते

अज्यात्सो. ४७

साधुरेव स सन्तव्यः

भ. गी. ९।३०

साधुवेशं समाश्रित्य जीवन्ति
बहवो नराः । नरके रौरवे
घोरे कर्मत्यागात्पतन्ति ते
साध्या उत्तरत उद्यन्ति तपन्ति
वर्षन्ति स्तुवन्ति
साधुष्वपि च पापेषु
साध्यानामेव तावदाधिपत्यं
स्वाराज्यं पर्येता
साध्या मनुष्याः पशवो वयांसि ।
प्राणापानौ ब्रीहियवौ तपश्च
सानन्दं निश्चलं चेतस्ततः सुखिल-
मुच्यते । अतीव निर्मलीभूतं
सानन्दं च सुलीनकम्
सा निशा पश्यतो मुनेः
सान्निध्यं विषयाणां यः समर्थो
विकलेन्द्रियः । सुप्तबद्धते
नित्यं स मिश्रमुग्ध उच्यते
सान्नेनोपसमाहिता प्राञ्जालीतयै-
तर्हि वेदानुभवति
सा पुनर्विकृतिं प्राप्य सत्त्वोद्विक्ता-
ऽव्यक्ताख्यावरणशक्तिरासीत्
सा प्रसिद्धाऽतिदुःखाय सुखा-
योच्छेदमागता (वासना-
तन्तुबद्धोऽयं लोको विपरिवर्तते)
साऽब्रवीत्तपसा मां विजिज्ञासस्वेति
साऽब्रवीदज्ञेयं हि तत्सौम्य तैजः ।
यदविज्ञेयं तदव्यक्तम्
साऽब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी
साऽब्रवीद्विभेमि वा एतदेभ्यो
यथौजीयांसो बलीयांस
इमे परामवज्जिति
साऽब्रवीद्विभेमि वा एतदेभ्यो
यथौजीयांसो बलीयांस
इमे परावृतज्जिति
सा ब्रह्मणः पुत्री आप्तयौवनैवास्त
सा ब्रह्मेति होवाच ब्रह्मणो वा
एतद्विजये महीयष्वमिति
सा भक्तिस्त्रिविधैव भवति
सा भावयित्री भावयितव्या भवति

भवसं. १।५४

मैत्रा. ७।४

भ. गी. ६।९

छांदो. ३।१०।४

मुण्ड. २।१।७

अमन. २।९७

भ. गी. २।६९

ना. प. ३।६८

छांदो. ६।७।६

पैङ्गलो. १।२

महो. ५।८७

अव्यक्तो. २

अव्यक्तो. २

देव्यु. १

शौनको. ३।२

शौनको. ४।२

सामर. ९२

केनो. ४।१

सामर. २

२ ऐत. ४।३

साम तु जानीयाथो जानीते सो-

ऽमृतत्वं च गच्छति

सामतो गायत्र्युष्णिग्बृहती त्रिष्टु-

ब्धिपदेति

सामन्तश्चेन्द्रियाक्रान्तेर्मनो मन्ये

विवेकिनः

साम प्राणं प्रपद्ये [प्रवर्ग्या. १+

साम-प्राणो वै साम, प्राणे हीमानि

सर्वाणि भूतानि सम्यञ्चि

सामर्थ्यशक्तिः सर्वसिद्धिप्रदा भवति

सामवेद एवोद्यजुर्वेदो गीः ऋ-

ग्वेदस्यं दुग्धेऽस्मै वाग्दोहम्

सामवेदस्तथा द्यौश्चाहवनीयस्तथैव

च । ईश्वरः परमो देवो

मकारः परिकीर्तितः

सामवेदेनास्तमये महीयते

सामवेदे ह्रस्वोदात्त एकाक्षर उकारः

साम वै स्वः, स हिरण्यगर्भो भवति

सामहंसकूजितैरतिशोभित-

मानन्दमयानन्तशिखरै-

रलङ्कृतं प्रणवाख्यं विमानं

विराजते

सामाथो यः कश्च गेष्णः स स्वरः

सामानि यो वेद स वेद सर्व, यो

मानसं वेद स वेद ब्रह्म

सामानि सन्नाडुसुरन्तरिक्षम्

सामान्येव मधुकृतः, सामवेद एव

पुष्पं, ता असृता आपः

सा माया स्ववशोपाधिः सर्व-

ज्ञत्येश्वरस्य हि । वश्यमायस्व-

मेकत्वं सर्वज्ञत्वं च तस्य तु

सामैवाहं संहितां मन्ये इति

सामैश्विदन्तो विरजश्च बाहुं

हिरण्मयं वेदविदां वरिष्ठम्

सामोत्तरः पक्षः, आदेश आत्मा

साम्न उद्गीथो रसः

साम्नः सहस्रशाखाः स्युः, पञ्च-

शाखा अथर्वणः

नृ. पू. १।५

१ ऐत. ३।४।२

महो. ५।७९

वा. सं. ३।३।१

बृह. ५।१३।३

सौभाग्य. २६

छांदो. १।३।७

म. वि. ६

सूर्यता. १।५

२ प्रणवो. १२

ग. पू. ३।१

त्रि. म. ना. ७।९

१ ऐत. ३।६।४

इतिहा. ९

एका. ७

छांदो. ३।३।१

सरस्व. ३९

३ ऐत. १।५।३

एका. १०

तैत्ति. २।३

छांदो. १।१।१

सीनो. १६

साम्नः सायुज्यं सलोकतां जयति,
य एवमेतत्साम वेद बृह. १.१.२२
साम्नः सायुज्यं सलोकतां
जयति, य एवं वेद बृह. ५.१.३३
साम्नामादित्यो देवतं तदेव ज्योतिः २ प्रणवो. २१
साम्नमेव तद्रसेन साम्नां वीर्येण
साम्नां यज्ञस्य विरिष्टं सन्दधाति छांदो. ४.१.७६
साम्भरा वा दिगम्भरा वा न तेषां
धर्माधर्मौ, न मेध्यामेध्या १ अवधू. ६
साम्भं मामव धृषभारूढं... पशु-
पाशविमोचकं पुरुषं... भस्मजा. २.४
साम्न्येन मधुसूदन भ. गी. ६.३३
साम्राज्यदायिनी नित्यं सर्ववेद-
स्वरूपिणी । महाविद्या जग-
न्माता मुनीनां मोक्षदायिनी ना. पू. ता. २.३
सा यदा मृत्युमत्यमुच्यत सो-
ऽग्निरभवत् बृह. १.३.१२
सायंप्रातस्तु यः सन्ध्यामस्कन्ना-
मुपतिष्ठते । स तथा पाविता
देव्या ब्राह्मणः पूतकिल्बिषः सन्ध्यो. ७
सायं प्राप्तीयात्सोऽयं सायंहोमः
यत्प्रातः सोऽयं प्रातः (होमः) कठश्रु. २१
सायं ये नोपतिष्ठन्ति ब्राह्मण्यं
प्राप्य दुर्लभम् । अब्राह्मणास्तु
तान्विद्याद्यथा शूद्रास्तथैव ते सन्ध्यो. १५
सायं सन्ध्यामुपासीत कृतवीरासनो
द्विजः । कृतोत्थानस्तथा प्रातः
प्राञ्जलिः सुसमाहितः सन्ध्यो. ५
सायं सन्ध्या सरस्वती वृद्धा
कृष्णाङ्गी कृष्णवासिनी गायत्री. ६
सा या दीनतयाऽसम्पूर्णाऽसंलुष्टा-
ऽसंन्यता वाक् सा पुत्र्यपशव्या संहितो. १.३
सा या ब्रह्मणि चित्तिर्या व्यष्टिस्तां
चित्ति जयति तां व्यष्टिं व्यभुते कौ. त. १७
सा या यदा मृत्युमत्यमुच्यत [मा.पा.] बृ. ह. १.३.१२
सारमेव रसं लब्ध्वा... सुखी भवति कठ. २.६

सारस्वतो वा एष देवो न हि
पारमात्मिकः ह योऽभ्यो वा
सर्वं सन्धुषे स्वाहा पारमा. ३.७
सारादपि महासारं शिवोपनिषदं
परम् । अल्पग्रन्थं महार्थं च
प्रवक्ष्यामि जगद्धितम् शिवो. १.८
सार्धत्रिकोटितीर्थेषु स्नात्वा
गृहमुपागतः । स्नोदन्तं कथया-
मास ऋभुं नत्वा महायशाः महो. ३.२
सार्धत्रिकोटितीर्थेषु स्नानपुण्य-
प्रभावतः । प्रादुर्भूतो मनसि मे
विचारः सोऽयमीदृशः महो. ३.३
सार्धसंवत्सरेणापि लयस्थस्यापि
योगिनः । तोयतत्त्वस्य सिद्धिः
स्यात्तोयतत्त्वमयो भवेत् अमन. १.७५
सार्पाद्यं अविष्टाधार्तं सौम्यम् मैत्रा. ६.१४
सार्वकामिकं मोक्षद्वारमुक्क्यं
यजुर्मयं साममयं ब्रह्ममयममृत-
मयं भवति नृ. पू. ५.७
सार्वकामिकं मोक्षद्वारमुद्योगिन
उपदिशन्ति नृ. पू. ५.१
सालज्यं संस्थानमपराजितमायानं
सालम्बस्तु समस्तकर्मातिदूरतया
करचरणादिमूर्तिविशिष्टं कौ. त. १.३
मण्डलाद्यालम्बनं सालंबयोगः त्रि. म. ना. ८.४
सालोक्यादिविभागेन चतुर्धा
मुक्तिरीरिता मुक्तिको. १.१७
सावधानो भव त्वं च ब्राह्मप्राहक-
सङ्गमे । अजस्रमेव सङ्कल्पदशाः
परिहरन्त्यैः अ. पू. ५.१.०३
सावयवत्वाद्ब्रह्ममयमित्यं भवत्येव त्रि. म. ना. २.१
सा वा एषा देवतैतासां देवतानां
पाप्मानं मृत्युमपहत्य यत्रासां
दिशामन्तस्तद्गमयाश्चकार बृह. १.३.१०
सा वा एषा सर्वाणि छंदांसि
सा वाक् संवत्सरं प्रोक्ष्यागत्योवाच
कथमशकत मवृते जीवितुमिति
सा वाक्-सोऽग्निस्तदेतद्ब्रह्मवर्चस-
मन्नाथमित्युपासीत छांदो. ३.१.३.३

(अथ) सावित्री गायत्र्या यजुषा
 प्रोक्ता तथा सर्वमिदं व्याप्तं नृ. पू. ४।३
 सावित्री प्रवेशपूर्वकमप्सु...वेदमातरं
 क्रमाद्व्याहृतिषु त्रिषु प्रविष्टाप्य
 ...ब्रह्माहमस्मीति सत्त्वमस्यादि-
 वाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं
 कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् प. हं. ९
 सावित्रीं प्रणवं यजुर्लक्ष्मीं
 स्त्रीशूद्राय नेच्छन्ति नृ. पू. १।३
 सावित्री लक्ष्मीं यजुः प्रणवं यदि
 जानीयात् स्त्री शूद्रः स मृतो-
 ऽप्यो गच्छति नृ. पू. १।३
 सावित्र्यात्मा पाशुपतं परं
 ब्रह्मावधूतकम् मुक्तिको. १।३७
 सावित्र्याः सरस्वत्यभक्तं गायत्रीर. १
 सा वेत्ति वैद्यं न च तस्यास्तु वेत्ता
 तामाहुरग्न्यां महतीं महीयसीम् गुह्यका. ५।१
 सा वै देवी वाक्यया यथदेव वदति
 तत्तद्वदति बृह. १।५।१८
 सा शक्तिर्वैष्णवा लिता स्यात्स तु
 मुक्तो भवति [शाफिडल्यो. १।७।३७
 सा शिक्षा नीरैः सर्वत्रावस्थितैः
 कार्यं निर्वर्तयेत् कठश्रु. ९
 (अथ) सा शुष्यति द्वितीयां
 जहाति, अथ सा शुष्यति
 तृतीयां जहाति, अथ सा
 शुष्यति सर्वं जहाति, सर्वः शुष्यति छांदो. ६।११।३
 सा चौदशी सषोडशीकं
 पुरमण्यं विभर्ति त्रि. म. ना. १०
 सा सत्यया सा शिवता साऽवस्था
 पारमात्मिकी । सर्वज्ञता
 सा सत्सृष्टिर्न तु यत्र मनः क्षतस् १ सं. सो. २।४६
 सा (सीता) सर्ववैद्यमयी
 सर्ववैद्यमयी स्त्रीतो. ६
 सा (वाक्) संवत्सरं प्रीण्य प्रयैत्यो-
 वाच कथमथाकथं तैमजीविनुमिति छांदो. ५।१।८
 सा साक्षात्पुरुषपादो भवति
 (साकारात्मिका पृथिवी) नृ. पू. १।१
 सा सास्नस्तृतीयः पादो भवति नृ. पू. २।१

सा सान्नः प्रथमः पादो भवति नृ. पू. २।१
 सा सान्नो द्वितीयः पादो भवति नृ. पू. २।१
 सा सृष्टिर्द्विमेधा भवति; एका
 संसिद्धा, अन्या साधनसिद्धा सामर. ६
 साऽस्यै तमात्मानमत्र गतं भावयति २ ऐत. ४।३
 साहङ्गरेण वा पुनः भ. गी. १८।२४
 साऽहं ब्रह्म न संसारी न मत्तोऽन्यः
 कदाचन । यथा फेनतरङ्गादि
 समुद्रादुत्थितं पुनः जा. द. १०।६
 सा हि वाचामग्न्यत्वादसत्तामिव
 शाश्वतीम् । नैरात्मसिद्धात्म-
 दशामुपयातैव शिष्यते १ सं. सो. २।२८
 सा हि सर्वगता संवित् प्राणस्पदेन
 चाल्यते । चित्तैकाग्र्याद्यतो
 ज्ञानमुक्तं समुपजायते मुक्तिको. २।४९
 सा हि सर्वगता संवित् प्राण-
 स्पदेन बोध्यते । संवित्संरोधनं
 श्रेयः प्राणादिस्पन्दनं वरम् अ. पू. ४।४३
 सा हेयमीक्षाश्चक्रे कथं नु माऽऽत्मानं
 एव जनयित्वा सम्भवति बृह. १।४।४
 सा हैषा गयांस्तत्रे, प्राणा वै
 गयास्तत्प्राणास्तत्रे बृह. ५।१४।४
 सा हैषा गायंस्तत्रे प्राणा वै गाया-
 स्तान्प्राणांस्तत्रे उद्यद्गायंस्तत्रे
 तस्माद्गायत्री नाम गायत्र्यु. ३
 सा होवाच गान्धर्वी कथं वा-
 ऽस्मासु जातो गोपालः कथं वा
 ज्जातोऽसौ त्वया मुने कृष्णः गोपालो. १।१३
 सा होवाच नमस्तेऽस्तु याज्ञ-
 वल्क्य यो म एतं व्यवोचो-
 ऽपरस्मै धारयस्वेति बृह. ३।८।५
 सा होवाच-विमेमि वा एत-
 देतेभ्यो यथैतत्परावृत्तमिति शौनको. १।३
 सा होवाच मैत्रेयी-यसु म इयं
 भगो सर्वा पृथिवी विस्तेन पूर्णा
 स्यात्कथं तेनामृता स्यामिति बृह. २।४।२
 सा होवाच-यदूर्ध्वं याज्ञवल्क्य...
 यदूर्ध्वं च भवष भविष्येद्यत्या-
 चक्षते कस्मिंस्तदोतं च प्रोतं चेति बृह. ३।८।६

सा होवाच-यदेष पुराणा उदेष
 मे भागधेयी स्यादिति शौनको. १।३
 सा होव काले भुवनस्य गोप्त्री
 विश्वाधिषा सर्वभूतेषु गूढा ।
 यस्यां मुक्ता ब्रह्मर्षयोऽपि देवा
 ज्ञात्वा तां मृत्युपाशाञ्छिनन्ति गुह्यका. ५८
 सांसारिकक्रियायुक्तं ब्रह्मज्ञो-
 ऽस्मीति वादिनम् । कर्मब्रह्मो-
 भयभ्रष्टं तं त्यजेदन्त्यजं यथा अमन. २।१०१
 सांसिद्धिकी स्वाभाविकी, सहजा
 अकृता च या । प्रकृतिः सेति अ. शां. ९
 विज्ञेया स्वभावं न जहाति या
 सिक्त्वा ततः स्वाभिमुखं च कृत्वा
 लिङ्गेऽर्पयेत्पृष्ठमध्यं दलानाम् १ वित्त्वो. ८
 सितया शर्करयाऽभिषिच्य सर्व-
 जीववधात्पूतो भवति अस्मजा. २।११
 सितासिता च रक्ता च सर्वकाम-
 दुषा विभोः मंत्रिको. ५
 सिद्धत्वासिद्धत्वाभ्यां स्वतन्त्रा-
 स्वतन्त्रत्वेन सैषा वटबीज-
 सामान्यवदनेकवल्गुशक्तिरेकैव नृसिंहो. ९।२
 सिद्धमग्नं यदानीतं ब्राह्मणेन मठं
 प्रति । उपपन्नमिति प्राहुर्मुनयो १ सं. सो. २।७०
 मोक्षकाङ्क्षिणः अ. गी. १८।१३
 सिद्धये सर्वकर्मणाम्
 सिद्धये सर्वभूतादि विश्वाधिष्ठान-
 मद्वयम् । यस्मिन् सिद्धिगताः
 सिद्धास्तत् सिद्धासनमुच्यते ते. बि. १।२६
 सिद्धलक्ष्मी राजलक्ष्मीर्जयलक्ष्मीः
 सरस्वती । श्रीलक्ष्मीर्वर-
 लक्ष्मीश्च प्रसन्ना मम सर्वदा वनदु. ४
 सिद्धविद्यानामासां फलं दक्षिणावत् तारोप. ५
 (ततः) सिद्धस्य कृपया योगी
 भवति, नान्यथा यो. शि. १।५०
 सिद्धं पद्मं तथा सिद्धं भद्रं चेति
 चतुष्टयम् १ यो. व. २९
 सिद्धं हि ब्रह्म न ह्यत्र किञ्चित् भूयते नृसिंहो. ९।६
 सिद्धा अपि विनश्यन्ति जीर्यन्ते
 दानवाश्च महो. ३।५०

सिद्धानां कपिलो मुनिः अ. गी. १०।२६
 सिद्धानां सिद्धलक्ष्मीर्भवति ना. पू. वा. २।१
 सिद्धा नित्या महावीर्या इच्छा-
 रूपाः स्वयोगजाः । चिरकालात् यो. शि. १।१५५
 प्रजायन्ते वासनारहितेषु च
 सिद्धान्तश्रवणं नाम वेदान्तार्थविचारः शां. १।२।१
 सिद्धान्तोऽध्यात्मशास्त्राणां सर्वा-
 पहव एव हि । नाविद्याऽस्तीह अ. पू. ५।११२
 नो माया शान्तं ब्रह्मेदमकुमम्
 सिद्धासने स्थितो योगी मुद्रां
 सन्धाय वैष्णवीम् । शृणुया-
 दक्षिणे कर्णे नादमन्तर्गतं सदा ना. बि. ३।१
 सिद्धा हि ते महाभागा नरा ह्येका-
 न्तिनोऽभवन् । तमोरजोभ्यां ना. महो. ३८
 निर्मुक्ताः प्रवेक्ष्यन्ति च मां मुने
 सिद्धिर्भिलक्ष्येत्सिद्धं जीवन्मुक्तं यो. शि. १।१५९
 तथैव च
 सिद्धिभिः परिहीनं तु नरं बद्धं यो. बि. १।१६०
 तु लक्षयेत्
 सिद्धिमार्गेण लभते, नान्यथा
 पद्मसम्भव । नानामार्गैस्तु यो. शि. १।४
 दुष्प्रापं कैवल्यं परमं पदम् अ. गी. ४।१२
 सिद्धिर्भवति कर्मजा अ. गी. १८।५०
 सिद्धिं प्राप्नोति यथा ब्रह्म अ. गी. १८।४६
 सिद्धिं विन्दति मानवः अ. गी. ३।४
 सिद्धिं समधिगच्छति अ. गी. १६।१४
 सिद्धोऽहं बलवान् सुखी
 सिद्धौ चित्तं न कुर्वीत चञ्चलत्वेन यो. शि. ५।६२
 चेतसः
 सिद्धौदनं त्रिमासं तु जुह्वदमा-
 वनन्यधीः । तावज्जुह्वत्युक्ता-
 न्हि साक्षाद्ब्रह्मणो भवेत् ग. पू. २।१२
 सिद्धयन्ति सिद्धयो यास्तु
 कल्पितास्ताः प्रकीर्तिताः यो. शि. १।१५९
 सिद्धयसिद्धयोर्निर्विकारः अ. गी. १८।२६
 सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा अ. गी. २।४६
 सिद्धानां विनयोऽपि अ. गी. १।१३

सिन्दुरप्रातसङ्काशं रविस्थान-

स्थितं रजः । शशिस्थान-

स्थितं शुक्लं तयोरैक्यं सुदुर्लभम् योगचू. ६१

सिन्दूरवर्णः पुरुषः पुराणः हेरम्बो. ५

सिंहारूढां श्यामकान्तिं शङ्ख-

चक्रधरां हृदा । दुर्गा देवी तथा

व्यायेच्छरचापौ च विभ्रतीम् वनदु. ७

सिंहो वा कुञ्जरो वाऽपि तथाऽन्यो

वा सृगो वने । नवप्राहो

दुराचर्यो विश्वस्तश्च प्रजायते योगो. ७

सीता इति त्रिवर्णात्मा साक्षा-

न्मायामयी भवेत् सीतो. २

सीता भगवती ज्ञेया मूलप्रकृति-

संज्ञिता सीतो. ५

सीतारामौ तन्मयावत्र पृथ्वौ

जातान्याभ्यां सुवनानि द्विसप्त रा. पू. १११

सीदन्ति मम गात्राणि भ. गी. ११२८

सीवनीपार्थसुभयं गुल्फाभ्यां

व्युत्क्रमेण तु । निपीड्यासन-

मैतच्च मुक्तासनमितीरितम् त्रि. ब्रा. २।४६

सीवनीं गुल्फदेशाभ्यां निपीड्य

व्युत्क्रमेण तु । प्रसार्य जानुनो-

हस्तावासनं सिंहलरूपकम् त्रि. ब्रा. २।४४

(पर्व) सुकृतदुष्कृते सर्वाणि च

द्वन्द्वानि कौ. त. १।४

सुखदं संविदः स्वास्थ्यं प्राण-

संरोषनं विदुः अ. पू. ४।४५

सुखदुःखदशाधीरं साम्यान्न प्रो-

द्भरन्ति यम् । निःश्यासा इव

शैलेन्द्रं चित्तं तस्य सप्तं विदुः अ. पू. ४।१२

सुखदुःखदुःखया श्रेयोऽन्तःकर्ता

यदा तदा इष्टविषये बुद्धिः

सुखबुद्धिरनिष्टविषये बुद्धि-

दुःखबुद्धिः सर्वसारो. ५

सुखदुःखमोहसंज्ञं क्षणभूतमिदं

अगत् मैत्रा. ६।१०

सुखदुःखं यथा यत्तु बोद्धव्यं

तच्च बोध्यते आयुर्वे. ४

सुखदुःखादिमोहेषु यथा संसारिणां

स्थितिः ॥ तथा ज्ञानी यदा

तिष्ठेद्वासनावसितस्तदा । तयो-

नास्ति विशेषोऽत्र समा

संसारभावना [यो. शि. १।२२, २३

सुखदुःखे मे त्वयि दधानीति पिता,

सुखदुःखे ते मयि दध इति पुत्रः कौ. त. २।१५

सुखदुःखे समे कृत्वा

सुखमक्षयमश्रुते भ. गी. २।३८

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिप्राप्तमती-

न्द्रियम् । एतत्क्षराक्षरातीत-

मनश्चरमितीर्यते यो. शि. ३।१५

सुखमात्यन्तिकं यत्तत्

सुखमानन्त्यमुत्तमम् भ. गी. ६।२१

सुखमात्रियते नित्यं दुःखं विव्रियते शिवो. ७।११८

सदा । यस्य कस्य च धर्मस्य

ग्रहेण भगवानसौ अ. शां. ८२

सुखमेव लब्ध्वा करोति सुखं त्वेव

विजिज्ञासितव्यमिति छांदो. ७।२३।१

सुखरूपत्वमस्त्येतदानन्दत्वं सदा

मम (निरुपाधिकनित्यं

यत्सुप्तौ सर्वसुखात्परम्) वराहो. ३।१०

सुखरूपः स्वयम्प्रभः (आत्मा)

सुखसङ्गेन बभ्राति जा. व. ५।१३

सुखसंसेवितं स्वप्नं सुजीर्णमित-

भोजनम् । शरीरशुद्धिकृत्वाऽऽदौ भ. गी. १।१६

सुखमासनमास्थितः ॥ प्राणस्य

शोधयेन्मार्गं रेचपूरककुम्भकैः यो. शि. ५।३६

सुखस्थापितसर्वाङ्गः सुस्थिरात्मा

सुनिश्चलः । बाहुदण्डप्रमाणेन

कृतदृष्टिः समभ्यसेत् अमन. २।४९

सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्या-

नन्तरं सुखम् । न नित्यं लभते

दुःखं न नित्यं लभते सुखम् भवसं. १।१०

सुखस्यैकान्तिकस्य च भ. गी. १।४।२७

सुखं त्विदानीं त्रिविधं भ. गी. १।८।३६

सुखं दुःखं न जानाति शीतोष्णे

च न विन्दति । विचारं चेन्द्रि-

याणां च न वेत्ति हि लयं गतः अमन. १।२४

सुखं दुःखं भवोऽभावः
 सुखं बन्धात्प्रमुच्यते
 सुखं भगवो विजिज्ञासे
 सुखं मोहनमात्मनः
 सुखं वा यदि वा दुःखं
 सुखं ह्यवमतः शेते सुखं च प्रति-
 बुध्यते । सुखं चरति लोके-
 ऽस्मिन्नवमन्ता विनश्यति
 सुखादिं दुःखनिधनां प्रतिमुञ्चस्व
 स्वां पुरम्
 सुखाद्यनुभवो यावत्तावत्प्रारब्ध-
 मिष्यते । फलोदयः क्रियापूर्वो
 निष्क्रियो नहि कुत्रचित्
 सुखानां मूर्ध्नि दुःखानि किमेकं
 संश्रयाम्यहम् । (सतोऽसत्तास्थिता
 मूर्ध्नि रम्याणां मूढन्यैरम्यता)
 सुखाभ्युदयिकं चैव नैःश्रेयसिक-
 मेव च । प्रवृत्तं च निवृत्तं च
 द्विविधं कर्म वैदिकम्
 सुखासनवृत्तिश्चरिवासाश्चैव-
 मासननियमो भवति
 सुखासनस्थो दध्नाडाया बहिस्थं
 पवनं समाकृत्य केशमानस्त्राग्रं
 कुम्भयित्वा सव्यनाडयारेचयेत्
 सुखासने समासीनस्तत्त्वाभ्यासं
 समाचरेत् । सदाऽभ्यासेन
 तत्कुर्यात्परतत्त्वप्रकाशनम्
 सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ
 सुखिनः स्याम माधव
 सुखेन ब्रह्मसंस्पर्श
 सुखेनैव भवेद्यस्मिन्नजज्ञं ब्रह्म-
 चिन्तनम् । आसनं तद्वि-
 ज्ञानीयादन्यत्सुखविनाशनम्
 सुखेषु विगतस्पृहः
 सुधीषमणिपुष्पकौ
 सुजीर्णोऽपि सुजीर्णासु विद्वांस्त्रीषु
 न विषसेत् । सुजीर्णैरपि
 कन्यासु सज्जते जीर्णमन्त्रम्
 सुवर्णनिव्यतेजोन्तर्गतः सुदर्शन-
 पुरुषो यथा सूर्यमण्डलान्तर्गतः

म. गी. १०।४

म. गी. ९।३

छांदो. ७।२२।१

म. गी. १८।३९

म. गी. ६।३२

ना. प. ३।४२

अरण्यो. १

अध्यात्मो. ४९

महो. ६।२४

भवसं. ५।६

मं. ब्रा. १।१

शांडि. १।७।१४

अमन. १।१६

म. गी. २।३२

म. गी. १।३७

म. गी. ६।२८

ते. बि. १।२५

म. गी. २।५६

म. गी. १।१६

१ सं. सो. १।९०

सूर्यनारायणोऽमितापदिच्छि-
 त्वाद्वैतपरमानन्दलक्षणतेजो-
 राश्यन्तर्गत आदिनारायण-
 स्तथा सन्दृश्यते
 सुदर्शनपुरुषो महाविष्णुरेव
 सुदर्शनमेवाप्येति यः सुदर्शना-
 मेवास्तेमेति
 सुदर्शनाय विद्महे हेतिराजाय
 धीमहि । तन्नश्नक्तः प्रचोदयात्
 सुदामा नारदो मुनिः
 सुदुर्दर्शमिदं रूपं
 सुपर्णोऽसि गरुमांस्त्रिवृते
 शिरोगायत्रं बभूवुः स्तोम
 आत्मा साम ते तनू वामदेव्यम्
 सुपर्णोऽसि गरुमान्दिवं गच्छ
 सुवः पत ओमी...
 सुपुण्यं पुण्यात्मकं वितानं दाधार
 देवाय स्वाहा
 सुमेरुत्थाय सुस्थन्तं ब्रह्मैकं प्रवि-
 चिन्त्यताम्
 सुभगां त्रिगुणितां मुक्तासुभगां...
 बीजसप्तकमुच्चार्य बृहद्भानु-
 जायामुचरेत्
 सुभूतेन मे सन्तिष्ठस्व ब्रह्मवर्चसेन
 मे सन्तिष्ठस्व
 सुमित्रा न आप ओषधयः सन्तु
 दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुर्योऽस्मा-
 न्नेष्टि यं च वयं द्विष्टमः
 सुमित्रिया न आप ओषधयः
 सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु
 [प्रवर्ग्या. २३+
 सुरभिविद्या अक्षमालाश्रुतिरिव
 परमा सिद्धा सात्त्विकी
 सुरेशः सकलं विभर्ति तस्मै
 सुरेशाय सकलं सुपुण्यं स्वाहा
 सुलभश्चायमत्यन्तं सुज्ञेयश्चाप्त-
 बन्धुवत् । शरीरपद्माकुहरे
 सर्वेषामेव वटपदः
 सुवन्महां पश्यन् विषयवान् ।
 वतन्महत्सुरस्य मायया (१) विष्णु. १।१।०

त्रि. म. ना. ३।४

त्रि. म. ना. ७।४

सुबालो. ९।२

त्रि. म. ना. ७।३०

कृष्णोप. २४

म. गी. ११।५२

गारुडो. १४

गारुडो. १५

पारमा. ६।३

वराहो. २।६४

कालिका. १

महाना. १।६।११

महाना. ६।११

वा. सं. ३।६।३३

शार्दो. २।१

पारमा. ८।१

१ सं. सो. २।१४

सुवरजमादित्याय दिवे स्वाहा महाना. ७।१
 सुवरिति प्रतिष्ठा, द्वे प्रतिष्ठे (भा.पा.) बृह. ५।५।३
 सुवरिति यजूं च, महरिति ब्रह्म तैत्ति. १।५।२
 सुवरिति व्यानः, मह इत्यात्म तैत्ति. १।५।३
 सुवरित्यसौ लोकः, मह इत्यादित्यः तैत्ति. १।५।१
 सुवरित्यादित्यः, मह इति चन्द्रमाः तैत्ति. १।५।२
 सुवरादित्याय दिवे स्वाहा महाना. ७।२
 सुवरादित्याय च दिवे च महते स्वाहा महाना. ७।३
 सुवर्णं कालकूटमिव सभास्थलं
 स्मशानस्थलमिव...कारागृह-
 विनिर्मुक्तचोरवत्पुत्राप्तबन्धुभव-
 स्थलं विहाय दूरतो वसेत् (यतिः) ना. प. ७।१
 सुवर्णं कालकूटमिव सभास्थलं
 स्मशानस्थलमिव...न देवता-
 चैनम् । प्रपञ्चवृत्तिं परित्यज्य
 जीवन्मुक्तो भवेत् (यतिः) १सं. सो. २।७९
 सुवर्णं कौशं रजसा परीवृतम्
 [चित्यु. १।१४+ तै.जा. ३।११।४
 सुवर्णं खादित्वाऽपगिरति (दुःस्वप्ने) ३ ऐत. २।४।७
 सुवर्णं धर्मं परिवेदयेनम्
 [चित्यु. १।११+ तै.जा. ३।११।१
 सुवर्णाज्जायमानस्य सुवर्णत्वं च
 शान्धिलम् । ब्रह्मणो जायमानस्य
 ब्रह्मत्वं च तथा भवेत् यो. शि. ४।७
 सुवेष्टने सुवसनः परिष्कृते परिष्कृत
 एवमेवायमस्मिन्नन्वेष्टनो भवति छांदो. ८।९।१
 सुविभातं सकृद्विभातं पुरतोऽस्मा-
 द्दृष्टव्यमात्सुविभातमद्वयम् नृसिंहो. ९।९
 सुषेवमिषङ्गमसि प्रपश्यन्निस्था
 न कश्चोरणमाचवक्षे वा. मं. ३
 सुशोभनमर्धं नात्सुषुनीचायत-
 मस्पर्ध्वं गोमयादिलिप्तं सर्व-
 रसात्मभिर्वत् कृत्वा तत्र वेदान्त-
 भवणं कुर्वन्योगं समारभेत् शां. १।५।१
 सुशोभनं मर्धं कुर्यात्सुषुमद्गारं
 तु निर्गणम् १ यो. स. ३२
 सुश्लिष्टं सार्विकं प्रोक्तं सुलीनं
 गुणवर्जितम् अमन. २।९३
 सुश्लिष्टं च सुलीनं च विकल्प-
 विवक्षापहम् (मनः) अमन. २।९४

सुषारथिरध्यानिष यन्मनुष्याग्नेयी-
 यतेऽग्नीषुभिर्वाजिन इव ।
 हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे
 मनः.. [१शिवसं. ६+२शि.सं. ५ +वा.सं. ३४।६
 सुषिरं मण्डलं विदुः अ. ना. २७
 सुषिरो ज्ञानजनकः पञ्चस्रोतः-
 समन्वितः शां. १।७।३९
 सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन
 एवानन्दभुक्चेतोमुखः प्राज्ञ-
 स्तृतीयः पादः गणेशो. १।३
 सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन
 एवा- (एका-) नन्दमयो ह्यानन्द-
 भुक्चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयः
 पादः [माण्डू. ९+ नृ. पू. ४।२
 सुषुप्तस्थानश्चतुरात्मा प्राज्ञ ईश्वर-
 श्चतुरूपो मकार एव नृसिंहो. २।६
 सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन
 एवानन्दमयो ह्यानन्दभुक्
 चेतोमुखश्चतुरात्मा प्राज्ञ
 ईश्वरस्तृतीयः पादः नृसिंहो. १।३
 सुषुप्तस्थानः प्राज्ञो मकारस्तृतीया
 मात्रा, मितेरपीतेर्वा; मिनीति
 इ वा इदं सर्वमपीतिश्च भवति माण्डू. ११
 सुषुप्तस्थैर्यमासाद्य तुर्यरूप-
 मुपाययौ । निरानन्दोऽपि
 सानन्दः सप्तास्य बभूव सः अ. पू. ३।१८
 सुषुप्तं च तुरीयं च नान्यावस्थासु
 कुत्रचित् त्रि. जा. १।१०
 सुषुप्तं हृदयस्थं तु तुरीयं मूर्ध्नि
 संस्थितम् ना. प. ५।१३
 सुषुप्तिकाले सकले विलीने तमसा-
 वृते । स्वरूपं महवानन्दं भुङ्क्ते
 विश्वविभजितः वराहो. ५।६२
 सुषुप्तिकाले सकले विलीने तमो-
 मिभूतः सुखरूपमेति कैवल्यो. १।१३
 सुषुप्तिमात्राचतुष्टयं मकारांशं
 तुरीयमात्राचतुष्टयमर्धमात्रांशम् प. हं. प. १०
 सुषुप्तिवद्यश्चरति स्वभावपरि-
 निश्चलः । निर्वाणपदमाश्रित्य
 योगोक्तैक्यमनुते [त्रि.जा. २।१६५+ २ अ. पू. ८

सुषुप्तिसमाध्योर्मनोऽलयाविशेषेऽपि
महदस्त्युभयोर्भेदः

मं. ब्रा. २।६

सुषुप्ते जाग्रतमस्त्वग्रं (आत्मानं)

नृसिंहो. २।१

सुषुप्ते सुषुप्त्यादिचतस्रोऽवस्थाः,

ना. प. ९।७

न त्वेवं तुरीयातीतस्य

सुषुप्तौ सुखमात्राया भेदः

अध्यात्मो. २५

केनावलोकितः

सुषुप्तौ सुषुप्त्यादिचतस्रोऽवस्थाः

प. हं. प. ९

सुषुप्त्यवस्थायां प्राज्ञस्य चातुर्विध्यं

प्राज्ञविश्वः प्राज्ञतैजसः प्राज्ञ-

प्राज्ञः प्राज्ञतुरीय इति

प. हं. प. ९

सुषुप्त्यैव बुद्धिपूर्वं निबोधयति

मैत्रा. २।५

सुषुम्णा पश्चिमे चारे स्थिता

वराहो. ५।२५

नाडी सरस्वती

सुषुम्णा कालभोक्त्री भवति

शांडि. १।४।६

सुषुम्णा तु परे लीना विरजा

ब्रह्मरूपिणी । इडा तिष्ठति

धुरिको. १६

वामेन पिङ्गला दक्षिणेन च

सुषुम्णान्तर्गतं विश्वं तस्मिन्सर्वं

प्रतिष्ठितम् । नानानाडीप्रसवगं

यो. शि. ६।१३

सर्वभूतान्तरात्मनि

सुषुम्णा पिङ्गला तद्वदिडा चैव

सरस्वती । पूषा च वरुणा चैव

हस्तिजिह्वा यशस्विनी ॥

अलम्बुषा कुहूश्चैव विश्वोदरी

तपस्विनी । शङ्खिनी चैव

गान्धारा इति मुख्याश्चतुर्वश

जा. द. ४।७

सुषुम्णा पूर्वभागे मैदान्तं कुहूर्भवति

शांडि. १।४।५

सुषुम्णाष्टपार्श्वयोः सरस्वतीकुहू

शांडि. १।४।६

(१) भवतः

सुषुम्णाया इडा अन्ये दक्षिणे

जा. द. ४।१३

पिङ्गला स्थिता

सुषुम्णायां यदा प्राणः स्थिरो

भवति धीमताम् । सुषुम्णायां

प्रवेशेन चन्द्रसूर्यौ व्यं गतौ ॥

यदा समरसं भावं यो जानाति

स योगवित्

यो. शि. ६।३६

सुषुम्णायां यदा यस्य म्रियते

मनसो रयः । ...म्रियते च तदा

ग्रन्थिः...तेयान्तिपरमां गतिम्

यो. शि. ६।३७

सुषुम्णायां यदा योगी क्षणार्धमपि

तिष्ठति । ...म्रियते च तदा

ग्रन्थिश्चिद्यन्ते सर्वसंशयाः

यो. शि. ६।३८

सुषुम्णायां यदा हंसस्त्वध ऊर्ध्वं

प्रधावति । सुषुम्णायां यदा

प्राणं भ्रामयेद्यो निरन्तरम्...

तदा समरसं भावं यो जानाति

स योगवित्

यो. शि. ६।३५

सुषुम्णायां सदा गोष्ठी यः कश्चि-

त्कुरुते नरः । स मुक्तः सर्व-

पापेभ्यो निःश्रेयसमवाप्नुयात्

यो. शि. ६।४४

सुषुम्णायाः पृष्ठभागे इडा तिष्ठति,

दक्षिणभागे पिङ्गला..

शांडि. १।४।६

सुषुम्णायाः शिवो देव इडाया

देवता हरिः

जा. द. ४।३५

सुषुम्णायाः सन्यभागे इडा तिष्ठति

सुषुम्णायै कुण्डलिन्यै सुधार्यै

चन्द्रमण्डलात् । मनोन्मन्यै

नमस्तुभ्यं महाशक्त्यै चिदात्मने

यो. शि. ६।३

सुषुम्णावज्जनालेन पैतृमानं प्रसेत्तथा

सुषुम्णा शाम्भवी शक्तिः

यो. शि. १।११८

सुषुम्णैव परं तीर्थं सुषुम्णैव परो

जपः । सुषुम्णैव परं ज्ञानं

सुषुम्णैव परा गतिः

यो. शि. ६।४५

सुषुप्ते इयेनाकाशवत्

सुसमो यः परित्यागी सोऽसं-

सक्त इति स्मृतः

अ. पू. २।५

सुसंवेद्यं गुरुमतात्सुदुर्बोधमचैतसाम्

सुसुखं कर्तुमव्ययम्

यो. शि. ३।२०

सुसूक्ष्मः सार्वः सर्वेषामन्तरात्मा

तस्थुस्तस्थुषां जङ्गमो जङ्गमानां

विभुर्विभूनां विभवोद्भवाय स्वाहा पारमा. १।२

सुस्निग्धमधुराहारश्चतुर्थीशवि-

वजितः । मुञ्चते शिवसम्प्रीत्यै

मिताहारीसञ्जयते [यो. च. ४३+ योगकुं. १।३

दं सर्वभूतानां

अ. गी. ५।२९

सुहृन्मित्रार्थदासीन-मध्यस्थ-

द्वेष्यबन्धुषु

भ. गी. ६।९

सुहृष्टः सुहृढः स्वच्छः सुक्रान्तः

सुप्रबोधितः । स्वगुणेनार्जितो

भाति हृदि हृद्यो मनोमणिः

महो. ५।८२

सूक्तं बतावौ चतेति तत्सूक्तमभवत्

१ ऐत. २।२।६

सूक्ष्म इति सूक्ष्मविदः स्थूल

इति च तद्विदः

वैतथ्य. २३

सूक्ष्मतन्मात्राणि भूतानि स्थूली-

कर्तुं सोऽकामयत्

पैङ्गलो. १।४

सूक्ष्मत्वात्कारणत्वाच्च लयनाद्भूतना-

द्वपि । लक्षणात्परमेशस्य लिङ्ग-

मित्यभिधीयते

यो. शि. २।९

सूक्ष्मत्वात्तद्विज्ञेयं

भ. गी. १३।१६

सूक्ष्मभुक् चतुरात्माऽथ तैजसो

भूतराडयम् । हिरण्यगर्भः

स्थूलोऽन्तर्द्वितीयः पाद उच्यते

ना. प. ८।१३

सूक्ष्मं सावित्रं स्वयमादधानः

सावित्ररूपं परमं सुपुण्यं स्वाहा

पारमा. ७।७

सूक्ष्माङ्गं कर्मेन्द्रियाणि प्राणांश्च

ज्ञानेन्द्रियाण्यन्तःकरणचतुष्टयं

चैकीकृत्य...क्रमेण विलीयते

पैङ्गलो. ३।१

सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरं विभाति

[सुण्ड. ३।१।७+

गुह्यका. ३६

सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य मध्ये

विश्वस्य सङ्घीमनेकानाख्याम् ।

विश्वस्य चैकां परिवेष्टयित्रीं

ज्ञात्वा गुह्यां शान्तिमत्यन्तमेति

गुह्यका. ५७

सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य मध्ये

विश्वस्य सङ्घारमनेकरूपम् ।

विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा

शिवं शान्तिमत्यन्तमेति

श्वेताश्व. ४।१४

सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं नित्यं स त्वमेव

त्वमेव सत्

कैव. १६

सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं ज्ञेयं तन्मे मनः

शिवसङ्करूपमस्तु

२शिवसं. १२

सूक्ष्मांशे तत्तैजसः

वराहो. ४।१

सूचनात्सूत्रमित्याहुः सूत्रं नाम

परं पदम् । तत्सूत्रं विदितं येन

स विप्रो वेदपारगः

ब्रह्मो. ७

सूचनात्सूत्रमित्युक्तं सूत्रं नाम

परं पदम् । तत्सूत्रं विदितं येन

स सुमुक्षुः स हि भिक्षुकः

(स विप्रो वेदपारगः) [परब्र. ८+ ना. प. ३।७९

सूचिवद्गुणमादाय ब्रजत्यूर्ध्वं

सुषुम्नया । उद्धाटयेत्कपाटं

तु यथा कुम्भिकया हठात्

ध्या. वि. ६७

सूते त्रिपुरा शक्तिराद्येयं त्रिपुरा

परमेश्वरी । महाकुण्डलिनी देवी.. त्रि. ता. १।६

सूत्रमन्तर्गतं येषां ज्ञानयज्ञोपवीति-

नाम् । ते वै सूत्रविदो लोके ते

च यज्ञोपवीतिनः [ब्रह्मो. १०+ ना. प. ३।८३

सूत्रात्माऽक्षर उच्यते, अक्षरं

परमं ब्रह्म

यो. शि. ३।१६

सूत्रे मणिगणा इव

भ. गी. ७।७

सूदितस्वातिरिक्तारिसूरिनन्दात्म-

भावितम् । सूर्यनारायणाकारं

नौमि चित्सूर्यवैभवम्

सूर्यो. शीर्षकं.

सूयते पुरुषार्थं च तेनैवाधिष्ठितं जगत्

मन्त्रिको. ४

सूयते सचराचरम्

भ. गी. १।१०

सूरिः सुराणां सुरसोऽप्यसुन्दः

समूह देवा वरदाय पित्रे स्वाहा

पारमा. १०।२

सूर्य आत्मा जगतस्तत्स्थुषञ्च-

त्येतदुद्दैनोपेक्षेतोपेक्षेत

१ ऐत. २।४।३

सूर्य आत्माजगतस्तत्स्थुषञ्च [सूर्यो. ३+

३ ऐत. २।४।३

[+सहवै. १७ ऋ. मं. १।११५।१+

वा. सं. ७।४२

[+तै. सं. १।४।४३।१ अथर्व.

१३।२।३५

सूर्यकोटिशुतिरथं नित्योदित-

मधोक्षजम् । हृदयान्धुर-

हासीनं ध्यायेद्वा विष्णुरूपिणम्

त्रि. भा. २।१५३

सूर्यग्रहे महानथां प्रतिभासजिह्वौ

वा जत्वा सिद्धमन्त्रो भवति

गणप. १४

सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति

यत्रामृतः स पुरुषो ह्ययमात्मा

सुण्ड. १।२।११

सूर्यमण्डलमध्येऽथ ह्यकारः

शङ्खमध्यगः

प्र. वि. ७

सूर्यमण्डलमाभाति ह्यकार-

अन्द्रमध्यगः

१ प्रणवो. ७

सूर्यराज्यं षोडशिता (यजति)

मैत्रा. ६।३६

सूर्यश्चक्षुर्वीरः प्राणो व्याक्षमसि-

वैद्यानरः संवत्सर आत्माऽश्वस्य

मेध्यस्य

बृह. १।१।१

सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च

मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् महाना. १।१।४

सूर्यस्त्वं ज्योतिषां पतिः

प्रश्नो. २।९

सूर्यस्यमहणं वत्सप्रत्यक्षयजनं स्मृतम्

ब्र. वि. ९७

सूर्यस्योपासनं कार्यं गच्छेत्सूर्यस्य स्रग्दम् सूर्यता. ६।५

सूर्यनाड्या समाकृत्य वायुमभ्यास-

योगिना । विधिवत्कुम्भकं

कृत्वा रेचयेच्छीतशिमना

यो. शि. १।९।१

सूर्यं ते चक्षुः

चित्त्यु. ४।१

सूर्याचन्द्रमसोरनेन विधिनाऽभ्यासं

अदा तन्वतां शुद्धा नाडिगणा

अवन्ति अग्निनां मासत्रयादुर्ध्वतः शांदि. १।७।१

सूर्याचन्द्रमसोरेक्यं दृढ

इत्यभिधीयते

यो. शि. १।१३३

सूर्याचन्द्रमसोर्योगो जीवात्म-

परमात्मनोः

यो. शि. १।६८

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वम-

कल्पयत् [महाना. ६।३+क्र.मं. १०।१९०।१

सूर्यात्मकत्वं द्वीपः

आत्मपू. १

सूर्यादिसकलभुवनप्रकाशिनी

सीतो. ७

सूर्याद्भवन्ति भूतानि सूर्येण

पाकितानि सु । सूर्ये लयं

प्राप्नुवन्ति यः सूर्यः सोऽहमेव च

सूर्यो. ६

सूर्याग्निः पर्जन्योऽजमात्मा, नमस्त

आदित्य त्वमेव प्रत्यक्षं

कर्मकर्ताऽसि

सूर्यो. ३

सूर्यादौ सन्निभानि भूतानि जायन्ते

सूर्यो. ३

सूर्यान्मयूखाश्च तथैव तस्य ।

प्राणावयौ वै पुनरेव तस्मात्

मैत्रा. ६।३१

सूर्याग्निवाप्येति यः सूर्याग्निवाप्येति

सुबालो. ९।११

सूर्यालोकापरिस्पन्दमान्तौ आव-

हविर्विधा । आकाशजलवायुः

वैराग्याभ्यासयोगावः

शांदि. १।७।५६

सूर्याश्चन्द्रमसो नक्षत्राणि

गणेशो. ३।६

सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो

म आवह [श्रीसू. १३+

क्र. खि. ८७।१३

सूर्ये चित्तसंयमादुवनज्ञानम्

शांदि. १।७।५२

सूर्यं ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा

महाना. १।१।४

सूर्येण रेचयेद्वायुं सरस्वत्यास्तु चालने

योगकुं. १।१६

सूर्येण सयुजोषसः

अहणो. १

सूर्योदये नवखेटस्तृतीये

सूर्यता. ५।१

सूर्यो न तत्र भाति न शशाङ्कोऽपि

न स पुनरावर्तते

ना. पं. ९।२२

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न

लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः ।

एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा

न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः

कठो. ९।११

सूर्यो योनिः कालस्य

मैत्रा. ६।१४

सूर्यो रश्मिभिराददात्यजं

मैत्रा. ६।१३

सूर्योऽस्माद्भूत उदेति

गणेशो. ४।२

सूर्येव सितया विश्वचर्षणिः

पाशेनैव प्रतिवध्नात्यभीकाम्

त्रिपुरो. १३

सृष्टिनिमित्ताय तस्मै परब्रह्मणे

परज्योतिषे स्वाहा

पारमा. १०।४

सृष्टिरूपा सरस्वती भवति

ना. पू. २।१

सृष्टिस्थितिलब्धानामाधिकर्ता

जगदङ्कुररूपो भवति

पैङ्गलो. १।३

सृष्टिस्थितिलब्धादीनां कारणं (सहस्रतु)

पं. ब्र. १३

सृष्टिस्थित्यन्तकरणाद्ब्रह्मविष्णु-

शिवात्मिकाम् । स संज्ञां याति

भगवानेक एव जनार्दनः

अवसं. २।५४

सृष्टेः परित्रिषानि भूतान्येकत्रैकं

द्विधा विधाय...तत्तद्भुवनो-

चित्तगोलकस्थूलशरीराण्यसृजत्

पैङ्गलो. १।४

सृष्ट्या ऋहास्यैतस्या भवति,

य एवं वेद

बृह. १।४।५

संकां स्वर्णमयीं मालां (मा.त्रा.)

कठो. १।१६

संकां च आप्ननेकरूपां गृहाण

कठो. १।१६

सेतयोरभयोर्मन्ये [श.गी. १।१३।१+

१।२६+२।१७

सैनाभ्यास्तु प्रथमभानाप्याय-

शिष्यस्त्रीत्योमिति

सौतको. १।४

सेनानीनामहं स्कन्दः	भ. गी. १०।२४	सैषा क्षयस्य योनिर्यद्ब्रह्म	बृह. १।४।११
सेनान्यो हि तर्ह्यादित्यान-		सैषा गणेशविद्या	गणप. ७
कल्पयस्तरमाज्जागतं.	शौनको. ४।३	सैषा गान्धर्वमयी महाविद्या	गान्धर्वो. २
सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराद्	महो. १।९	सैषा गायत्र्येतस्मिन्स्तुरीये दर्शते	
सेयं देवतेमास्तिस्रो देवता अनेनैव		पदे परो रजसि प्रतिष्ठिता	बृह. ५।१४।४
जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य		सैषा प्रहा नक्षत्रज्योतींषि कला-	
नामरूपे व्याकरोत्	छांदो. ६।३।३	काष्ठादिकालस्वरूपिणी	देव्यु. १२
सेयं देवतैक्ष्ण, हंताहमिमास्तिस्रो		सैषा चतुष्पदां षड्विधा गायत्री	छांदो. ३।१२।५
देवता अनेन जीवेनानुप्रविश्य		सैषा चित्रा सुहृदा बहुकुरा स्वयं	
नामरूपे व्याकरवाणीति	छांदो. ६।३।२	गुणभिन्नाऽङ्कुरेष्वपि गुणभिन्ना	
सेयं षट्कला परा परात्परा परात्परा-		सर्वत्र ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणी	
तीता चित्परा चित्परात्परा		चैतन्यदीप्ता	तृसिंहो. ९।३
चित्परात्परातीता	षोढो. १	सैषा चिदमलाकारा निर्विकल्पा	
सेवनान्मृत्युनाशिनी वैकुण्ठार्चना-		निरास्पदा	महो. ५।१०३
द्विपद्धन्त्री...य एवं वेद् स	तुलस्यु. २	सैषा दशान्नं न निद्यात् प्राणः	
वैष्णवो भवति	ना. प. ६।२४	शरीरमन्नं न परिचक्षीतापो	
सेवादिभिः परितोष्येनं (गुणं)..		ज्योतिरन्नं बहु कुर्वीत	तैत्ति. ३।११
सेवायां पाशुपाल्ये च वाणिज्ये		सैषा देवता प्रतिहारमन्वायत्ता	
कृषिकमेणि । तुल्ये सति परि-	शिवो. ७।११९	तां चेदविद्वान् प्रत्यहरिष्यो	
केशे वरं केशो निमुक्तये	छांदो. १।७।५	मूर्धा ते व्यपतिष्यति	छांदो. १।११।९
सैवर्कत्साम तदुक्तं तद्यजुस्तद्ब्रह्म		सैषा देवता प्रस्तावमन्वायत्ता तां	
सैव कौबेरी (पञ्चमे धामन्युक्ता)		चेदविद्वान् प्रास्तोष्यो मूर्धा	
षष्ठे धामनि व्याचक्षते	त्रि. ता. १।१६	ते व्यपतिष्यति	छांदो. १।११।५
सैव पुरत्रयं शरीरत्रयं व्याप्य		सैषा देवतोद्गीथमन्वायत्ता तां	
बहिरन्तरवभासयन्ती देश-		चेदविद्वानुदगास्यो मूर्धा	
कालवस्त्वन्तरसङ्गान्महा-		ते व्यपतिष्यति	छांदो. १।११।७
त्रिपुरसुन्दरी वै प्रत्यविचतिः	बह्वचो. २	सैषा द्वादशादित्या	१ देव्यु. १२
सैव प्रकृतिरिति गणेश इति प्रधान-		सैषाऽऽनन्दस्य मीमांसा भवति	तैत्ति. २।८
मिति च माया शबलमिति च	गणेशो. ४।२	सैषा परा शक्तिः	बह्वचो. २
सैव सायुज्यमुक्तिः स्याद्ब्रह्मा-		सैषाऽनस्तमिता देवता यद्वायुः	बृह. १।५।२२
नन्वकरी शिवा	मुक्तिको. १।२५	सैषा नास्तमिता देवता	
सैव सा लोक्यसारूप्यसामीप्या		यद्वायुः (मा. पा.)	बृह. १।५।२२
मुक्तिरिष्यते	मुक्तिको. १।२३	सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः	१ देव्यु. १२
सैवात्मा ततोऽन्यदस्यमनात्मा	बह्वचो. २	सैषा प्राणे सर्वाप्तिः, यो वै प्राणः	
सैवावस्था परा ज्ञेया सैव		सा प्रज्ञा, या वा प्रज्ञा स प्राणः	कौ. त. ३।४
निर्बुतिकारिणी	योगकु. १।८६	सैषा ब्रह्मणोऽतिसृष्टिर्यच्छ्रेयसो	
सैवाविद्यारूपेण जीवबन्धभूता		देवानसृजत	बृह. १।४।६
क्रियाशक्तिश्च लीलाशक्तिश्चरति	राधिको. ९	सैषा मार्गवी वारुणी विद्या	तैत्ति. ३।६
सैवैव भगवती त्रिपुरेति व्यापठयते	त्रि. ता. १।१		

सैषा यातुवाना असुरा रक्षांसि	
पिशाचयक्षाः सिद्धाः	१ देव्यु. १२
सैषा (माया) वटबीजसामान्य-	
वदनेकवटशक्तिरेकैव	नृसिंहो. १।२
सैषाऽवरपरा संहिता	३ ऐत. १।६।३
सैषा विद्वतिर्नाम द्वास्तदेतन्नान्दनं	२ ऐत. ३।१२
सैषा विराड्ब्रह्मादी तयेदं सर्वं	
दृष्टं सर्वमस्येदं दृष्टं भवति	छांदो. ४।३।८
सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च	देव्यु. १२
सैषा शास्मवी विद्या कादिविद्येति	
वा हादिविद्येति वा सादि-	
विद्येति वा रहस्यम्	बह्वचो. २
सैषा षोडशी श्रीविद्या पञ्च-	
दशाक्षरी श्रीमहान्निपुरसुन्दरी	बह्वचो. ४
सैषाऽष्टौ वसवः	१ देव्यु. १२
सैषा सत्स्वरजस्तमांसि	१ देव्यु. १२
सैषा ब्रह्मैव विद्या तपति	महाना. १०।१
सैषा स्पर्शोष्मभिर्व्यज्यमाना	
बह्वी नानारूपा भवति	१ ऐत. ३।६।७
सैषा सावित्री विद्यां न किञ्चिदपि	
न कस्मैचित्पशंसयेत्	सूर्यो. ९
सैषैकाक्षरं ब्रह्मब्रह्मणस्तपसोऽग्ने	
प्रादुर्बभूव	२ प्रणवो. ४
सैषैकादश रुद्राः	१ देव्यु. १२
सैषोऽन्नस्य ग्रहो यद्वायुरन्नमायुर्व	
एव यद्वायुः	२ ऐत. ३।१०
सोऽकामयत द्वितीयो म	
आत्मा जायेत	बृह. १।२।४
सोऽकामयत प्रजाः सृजेयेति	सङ्कर्षणो. १
सोऽकामयत बहु स्यां प्रजायेयेति	तैत्ति. २।६
सोऽकामयत भूयसा यज्ञेन	
भूयो यजेथ	बृह. १।२।६
सोऽकामयत मेध्यं म इदं	
स्यादात्मन्यतेन स्यामिति	बृह. १।२।७
सोऽकामो निष्काम आसकामः	
आत्मकामो न तस्य प्राणा	
वत्कामन्त्यत्रैव समवलीयन्ते	
[नृसिंहो.	५।२+५।८

सोऽक्षरः परमः स्वरान् [कैव. १।८+ महाना. १।१३	
[नृ. पू. १।४+महो. १।९+गान्धर्वो. २ +कालिको. ६	
सोऽग्र एव कुमारं जन्मनोऽग्ने-	
ऽधिभावयति	२ ऐत. ४।३
सोऽग्रभुग्विभजंस्तिष्ठन्नाहार-	
मजरः कविः	महाना. १।९
सोऽग्ने भूतानां सृत्युमसृजत्	सुबालो. १।३
सोऽङ्कारेण पत्रकूर्चेन स्तपयित्वा-	
ऽष्टभिर्गन्धैरालिप्य सुमनः-	
स्थले निवेद्याक्षतपुष्पैराराध्य	
प्रत्यक्षमादिक्षान्तैर्वर्णैर्भाविष्येत्	अ. मा. ३
सोऽङ्गिरसमधीते स शाखा	
अधीते स पुराणान्यधीते स	
कल्पानधीते [नृ. पू. ५।१५+	गणेशो. ५।४
सोऽग्निष्टोमेन यजते, स	
सक्थेन यजते	नृ. पू. ५।१४
सोऽर्चित्योऽनिर्वर्ण्यश्च पुनात्य-	
शुद्धान्यपूतानि	आत्मो. ६
सोऽजः शेते मायया स्विदुहायां	
विश्वं न्यस्तं विष्णुरेको विजज्ञे	ग. पू. २।८
सोऽतिगूढं अव्यक्तश्च	मं. ब्रा. २।१
सोऽथर्वणैर्मन्त्रैरथर्वणवेदः	नृ. पू. २।१
सोऽकैर्वित्त्वपत्रैश्च यः कुर्यान्मम	
पूजनम् । मम सान्निध्यमाप्नोति	
प्रमथेः सह मोदते	२ बिल्वो. १८
सोऽद्वय एव पुरुषं समुदृत्यामूर्च्छयत्	२ ऐत. १।३
सोऽधस्ताच्छकटस्य पामानं	
कर्षमाणमुपोपविशे	छांदो. ४।१।८
सोऽध्वर्युः, स मुक्तिः, साऽतिमुक्तिः	बृह. ३।१।४
सोऽनाधृष्यः । स मे वदातु । अना-	
धृष्यश्च भूयासम्	चित्त्यु. ७।३
सोऽनिरुद्धनारायणस्तस्मै	
सृष्टिमुपादिशत्	सुब्रह्मो. २।५
सोऽनिरुद्धः सु ईशानो व्यक्तः	
स सर्वकर्मसु	ना. महो. २८
सोऽनृताभिस्सन्धोऽनृतेनात्मानमंत-	
र्थाय परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति	छांदो. ६।१६।१
सोऽन्तरादन्तरं प्राविशदिस-	
आन्तरं प्राविशत्	अ. शिरः. १।१

सोऽन्तरिक्षं यजुर्भिर्हवीयते स
 सोमलोकं स सोमलोके
 विभूतिमनुभूय पुनरावर्तते प्रश्नो. ५।४
 सोऽन्तवेलायामेतच्चयं प्रतिपद्येत छांदो. ३।१७।६
 सोऽन्ते वैश्वानरो भूत्वा सन्दग्ध्वा
 सर्वाणि भूतानि सुबालो. २।२
 सोऽन्वेष्टव्यः स विजिज्ञासितव्यः
 स सर्वांश्च लोकानान्नोति छांदो. ८।७।१
 सोऽन्वेष्टव्यो मुमुक्षुभिः पञ्चम. ३५
 सोऽपश्यदात्मनाऽऽत्मानं गजरूपधरं
 देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ग. पू. १।३
 सोऽपि प्रणवाख्यः प्रणेता भारूपो
 विगतनिद्रो विजरो विमृत्यु-
 विशोको भवति मैत्रा. ६।२५
 सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान् भ. गी. १।८।७१
 सो पुनरेकैव देवता भवति बृह. १।२।७
 सोऽपोऽभ्यतपत्ताभ्योऽभितप्ताभ्यो
 मूर्तिरजायव २ ऐत. ३।२
 सोऽविमेतस्मादेकाकी विमेति बृह. १।४।२
 सोऽज्वीत् कृन्ध्व आथर्वण इति बृह. ३।७।१
 सोऽज्वीत्-किं मेऽतः स्यादिति शौनको. ३।३
 सोऽज्वीद्वहेकः प्रथममासं वर्तामि
 च भविष्यामि च नान्यः
 कश्चिन्मत्तो व्यतिरिक्त इति अ. शिरः. १।१
 सोऽज्वीद्वरदोऽस्म्यहमिति ग. पू. १।६
 सोऽभयस्यास्य देवस्य विप्रहो
 यन्त्रकल्पना । विना यन्त्रेण
 चेत्पूजा देवता न प्रसीदति रा. पू. १।१३
 सोऽभयं गतो भवति तैत्ति. २।७
 सोऽभिजिज्ञासतं किं मे कुलं
 किं मे कृत्यमिति अव्यक्तो. १
 सोऽभिमानादूर्ध्वमुत्क्रमत इव
 तस्मिन्नुत्क्रामत्यथेतरे सर्वे
 एवोत्क्रामन्तैः प्रश्नो. २।४
 सोऽभिमानो यया निवर्तते सा विद्या सर्वसारो. २
 सोऽमन्यत पृथिवीमपि कथमपां
 जयेयमिति अव्यक्तो. ८
 सोऽमन्यतैतासां प्रतिबोधनाया-
 भ्यन्तरं प्राविशानीति मैत्रा. २।६

सोममज्ये हुताशनः (स्थितः) मैत्रा. ६।३८
 सोमराज्यमुक्थेन (यजति) मैत्रा. ६।३६
 सोमरूपकला सूक्ष्मा विष्णोस्तत्
 परमं पदम् ते. वि. १।५
 सोमसंज्ञोऽयं भूतात्माऽभिसंज्ञो-
 ऽयव्यक्तमुखः मैत्रा. ६।१०
 सोमसूर्यद्वयोर्मध्ये निरालम्बतले
 पुनः । संस्थिता व्योमचक्रे
 सा मुद्रा नाम्ना च खेचरी शांडि. १।७।४२
 सोमसूर्यपुरस्तात् सूक्ष्मः पुरुषः अ. शिरः. ३।३
 सोमसूर्यपूर्वजगदधीतं वा यदक्षरं
 प्राजापत्यं...सूक्ष्मं सूक्ष्मेण
 प्रसति तस्मै महाग्रासाय नमः चतुर्वे. ८
 सोमं पिबन्त्यमृतेन सार्धं मृत्योः
 परस्मादमृता भवन्ति इतिहा. ७
 सोमः पवित्रमत्येति रेभन्
 [महाना. ८।४+
 [+क्र. मं. ९।९६।६+ त्रिसुप. ४
 सोमः शक्त्यमृतमयः शक्तिकरीतनूः तै. आ. १०।१०।१
 सोमः सोमस्य पुरीगाः वृ. जा. २।३
 सोमात्पर्जन्य ओषधयः पृथिव्याम् चित्तु. ३।३
 सोमात्मकः परः प्रोक्तः सदा मुण्ड. ३।१।५
 साक्षी सदाऽच्युतः यो. शि. ५।२९
 सोमात्मिका ओषधीनां प्रभवति सीतो. ७
 सोमान् स्वराणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते महाना. ५।९
 [+क्र. मं. १।१८।१+वा. सं. ३।२८+ तै. आ. १०।११।१
 सोमा पूषणा जनना रयीणां जनना
 विवो जनना पृथिव्याः [लिङ्गोप. १ क्र. मं. ३।४०।१
 [+तै. सं. १।८।२२।५
 सोमाय वासः, रुद्राय गां, वरुणा-
 याऽयं, प्रजापतये पुरुषम् चित्तु. १०।२
 सोमाय स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्ये
 सः स्रवमवनयति बृह. ६।३।३
 सोमाय स्वाहेति मन्त्रेण ततस्तिष्ठ-
 व्रीहिभिः साज्यैर्जुहुयात् भस्मजा. १।२
 सोमायेति शिवं नत्वा ततः प्रक्षाल्य
 तद्भस्मापः पुनन्त्विति पिबेत् भस्मजा. १।५
 सोमा रुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा
 तनूषु भेषजानि धत्तम्
 [क्र. मं. ६।७४।३३+ लिङ्गोप. १+
 अथर्व. ७।४२।२

सोऽमावास्या९ रात्रिमेतया षोडश्या
 कलया सर्वमिदं प्राणभृदनुप्रविश्य
 ततः प्रातर्जायते बृह. १।५।१४
 सोऽमृतत्वाय कल्पते भ. गी. २।१५
 सोमेन मुखेन न वै देवा अभ्रन्ति, न
 पिबन्त्येतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति छांदो. ३।९।१
 सोमेनैव मुखेनैतदेवामृतं
 दृष्ट्वा तृप्यति छांदो. ३।९।३
 सोमोऽत एव योऽहं सर्वेषामधिष्ठाता,
 सर्वेषां च भूतानां पालकः भस्मजा. २।६
 सोमो वेतुं सोमो अर्वन्तमाशुं
 सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति वनदु. ४५,५८,
 [७०,८१+क्र.मं. १।९।१२०+ वा. सं. ३४।२१
 सोमो भूत्वा रसात्मकः भ. गी. १।५।१३
 सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः मुंड. २।१।६
 सोमो राजाऽन्नस्यात्मेति वा
 अहमेतमुपासे कौ. त. ४।३
 सोमो ब्रह्मातिरिच्यते तत्र
 सञ्चायते मनः श्वेताश्व. २।६
 सोमोऽस्मि सकलोऽस्म्यहम् मैत्र. ३।३
 सोमोऽहमेव जनिता स यश्चन्द्रमसो
 देवानां मूर्धुवःस्वरादीनां
 सर्वेषां लोकानां च भस्मजा. २।५
 सोमोऽहं जनिताऽग्नेः भस्मजा. २।५
 सोमोऽहं जनितेन्द्रस्य भस्मजा. २।५
 सोमोऽहं जनिता पृथिव्याः भस्मजा. २।५
 सोमोऽहं जनिता मतीनां भस्मजा. २।५
 सोमोऽहं जनितो विष्णोः भस्मजा. २।५
 सोमोऽहं जनिता सूर्यस्य भस्मजा. २।५
 सोम्य शुक्लेन तैजोमूलमन्विच्छ
 छांदो. ६।८।६
 सोऽयमग्निः परेण मृत्युमतिक्रान्तो
 दीप्यते बृह. १।३।१२
 सोऽयमात्मा चतुष्पात् माण्डू. २
 सोऽयमात्मा चतुष्पाज्जागरित-
 स्थानः स्थूलप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोन-
 विंशतिमुखः स्थूलमुक् चतु-
 रात्मा विद्मो वैश्वानरः
 प्रथमः पादः नृसिंहो. १।३
 सोऽयमात्मा समात्मानमुपासीत सुबालो. ५।१

सोऽयमात्मा... बहिःप्रज्ञः सप्ताङ्गः...
 स्थूलमुखवैश्वानरः प्रथमः पादः
 [गणेशो. १।१+ रामो. २।१
 सोऽयमात्मा चतुष्पाज्जगतः (?)
 स्थानं न बहिःप्रज्ञं नोभयतःप्रज्ञं
 सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः श्रीवि. ता. १।७
 सोऽयमात्मा सर्वतः शरीरैः परिवृतः १ ऐत. ३।५।३
 सोऽयमात्माऽध्यक्षरमोक्षारोऽधिमात्रं
 पादा मात्रा मात्राश्च पादा
 अकार उकार मकार इति माण्डू. ८
 सोऽयमात्मेमात्मानममुष्या
 आत्मने सम्प्रयच्छति १ ऐत. ३।७।३
 सोऽयमितिहासो धन्यः पुण्यः
 पुत्रीयः पशव्य आयुष्यः स्वर्ग्यः इतिहा. १
 सोऽयमुशीनरेषु संवसन्मत्स्येषु
 कुरुपाञ्चालेषु काशीविदेहे-
 ष्विति स हाजातशत्रुं काश्य-
 मेत्योवाच ब्रह्म ते ब्रवाणीति कौत. ४।१
 सोऽयं मनुष्यलोकः पुत्रेणैव
 जय्यो, नान्येन कर्मणा बृह. १।५।१६
 सोऽयं वायुः परेण मृत्यु-
 मतिक्रान्तः पवते बृह. १।३।१३
 सोऽयं विश्वात्मा देवता ग. पू. २।८
 सोऽरण्यं परेत्य द्वादशरात्रं
 पयसाऽग्निहोत्रं जुहुयात् कठरु. २
 सोऽर्चन्नचरत्तस्यार्चत आपोऽज्जायन्त बृह. १।२।१
 सो वा स्वरूपः समदृक् समगो
 विधुदं तुदन् यो विभ्रत्पदं वा
 वियति प्रकाशं बृहते गुहेन
 तं विम्बवन्तं समदं समग्रं स्वाहा पारमा. ८।५
 सोऽविकम्पेन योगेन भ. गी. १०।७
 सोऽविद्याप्रस्थि विकिरतीह सोम्य मुण्ड. २।१।१०
 सोऽविमुक्त उपास्य इति जाबालो. २
 सोऽविमुक्त उपास्योऽयम् रामो. ३।१
 सोऽविमुक्त उपास्यो य एषो-
 ऽनन्तोऽव्यक्त आत्मा सो-
 ऽविमुक्ते प्रतिष्ठित इति जाबालो. २
 सोऽविमुक्तं ज्ञानमाचष्टे यो
 नैतदेवं वेद जाबालो. २

सोऽविमुक्तं ज्ञानमाचष्टे, यो वा
एतदेवं वेद

सोऽविमुक्तः कस्मिन्प्रतिष्ठितः

सोऽवेदं वाव सृष्टिरस्मि

सोऽभुते सर्वान् कामान् सह

ब्रह्मणा विपश्चितेति

सोऽभ्राम्यत्स तपोऽतप्यत तस्य

भ्रान्तस्य तप्तस्य यशो

वीर्यमुदक्रामत्

सोऽप्यन्यसोष्टेति पुनरुत्पादन-

मेवास्य तन्मरणमेवास्यवभृयः

सोऽप्यन्तीमद्विरभ्युभृति । यथा

वायुः पुष्करिणीं समिद्धयति

सर्वतः

सोऽसङ्ग इति सम्प्रोक्तो ब्रह्मा-

स्मीत्येव सर्वदा

सोऽसावादित्यः परेण सृत्युमति-

क्रान्तस्तपति

सोऽसौ चन्द्रः परेण सृत्युमति-

क्रान्तो भाति

सोऽस्तुवत नमो ब्रह्मणे नमो

ब्रह्मणेभ्यः

सोऽस्मादान्तं महाभूमिका-

वच्छरीरान्निषेधमात्रैः प्रक्रम्य...

पुनरिमं लौकं प्रतिपद्यते

सोऽस्या एतत्तृतीयं पदमाप्नुयात्

सोऽस्या एतत्प्रथमं पदमाप्नुयात्

सोऽस्या एतद्वितीयं पदमाप्नुयात्

सोऽस्यायमात्मा पुण्येभ्यः कर्मेभ्यः

प्रतिब्रूयते

सोऽहमवापो विरजो निर्मुक्तो

मुक्तकिल्बिषः

सोऽहमर्कः परं ज्योतिः

सोऽहमस्मि इति भीमहि

चिन्तयेमहि

सोऽहमस्मि स एवाहमस्मि

सोऽहमस्मि सहिष्णुः सोह-

मस्मीति प्राप्ते ज्ञानेन विज्ञाने

ज्ञेये परमात्मनि हृदिसंस्थिते

रामो. ३।४

जाबालो. २

बृह. १।४।५

तैत्ति. २।१।१

बृह. १।२।६

छांदो. ३।१७।५

बृ. च. ६।४।२३

अ. पू. २।४

बृह. १।३।१४

बृह. १।३।१६

ग. पू. १।५

निरुक्तो. २।२

बृह. ५।१४।६

बृह. ५।१४।६

बृह. ५।१४।६

२ ऐत. ४।४

महाना. ५।१९

महाबा. ५

राघोप. २।३

छांदो. ४।११।१

देहे लब्धाशान्तिपदं गते तदा

प्रभामनोबुद्धिशून्यं भवति

सोऽहमस्मीति वा या भाष्यते

सैषा षोडशी श्रीविद्या

सोऽहमस्मीति जानीयाद्विद्वान्

ब्रह्मासृतो भवेत्

सोऽहमस्मीति निश्चित्य यः सदा

वर्तते पुमान् । शब्दैरुच्चावचै-

र्नीर्वाचितोऽपि न लिप्यते

सोऽहमस्मीति प्रथमं सोऽहमस्मि

द्वितीयकम् । तदस्म्यहं तृतीयं

च महावाक्यत्रयं भवेत्

सोऽहमस्मीत्यग्रे व्याहरत्

सोऽहं पृथिवी सोऽहमापः, सोऽहं

तेजः, सोऽहं वायुः, सोऽहं

कालः, सोऽहं दिशः, सोऽह-

मात्मा । मयि सर्वं प्रतिष्ठितम्

सोऽहमिति यावदास्थितिः स

निष्ठा भवति

सोऽहमित्येतद्विधेऽस्मिन्संखारे

किं कामोपभोगैः

सोऽहमेकोऽपि देहारम्भमेद-

वशाद्बहुजीवः

सोऽहमेतमेवं वायुं दिशां बत्सं

वेद मा पुत्रोद५

सोऽहम्भावेत् पूजयेत्

सोऽहम्भावो नमस्कारः

[मं. ब्रा. २।५+

सोऽहं चिन्मात्रमेवेति चिन्तनं

ध्यानमुच्यते [त्रि. ब्रा. २।३१+

सोऽहं नित्यानित्यो व्यक्ताव्यक्तो

ब्रह्मा ब्रह्माहं

सोऽहं ब्रह्म न संसारी न मत्तो-

ऽन्त्यः कदाचन

सोऽहं भगवते विदेहान् वदामि

सोऽहं भगवते सहस्रं वदामि

[बृह. ४।३।१४, १५, १६, १३+

सोऽहं भगवः शोचामि तं मा

भगवान्छोकस्व पारं तारयतु

पैङ्गलो. ४।९

बहुषो. ४

पञ्चम. २३

योगकुं. ३।२०

गुह्यका. ७९

बृह. १।४।१

भस्मजा. २।६

द. मू. १६

मैत्रे. १।२

निरा. ७

छांदो. ३।१५।३

स्कन्दो. १०

आत्मपू. १

२ अथर्व. ४

अ. शिरः. १

जा. द. १०।६

बृह. ४।४।२३

४।४।७

छांदो. ७।१।३

सोऽहं भगवः सत्येनातिवदानीति
 सत्यं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति छांदो. ७।१६।१
 सोऽहं सोऽहमिति प्रोक्तो
 मंत्रयोगः स उच्यते यो.शि. १।१३२
 सोऽह्यमीक्षांचक्रे कथं नु मात्मान
 एव जनयित्वा सम्भवति बृ. च. १।४।४
 सोऽहम् । हौ (हौ) अन्मो भग-
 वते ह्यग्नीवाय सर्ववागीश्वरे-
 श्वराय सर्ववेदमयाय सर्वविद्यां
 मे देहि स्वाहा त्रि.म.ना.७।१०
 सोऽहोऽयं यश्चेतनमात्रः प्रतिपुरुषं
 क्षेत्रज्ञः सङ्कल्पासङ्कल्पाभ्यव
 सायामिमानलिङ्गः प्रजापतिः मैत्रा. ९।५
 सौम्यत्वादेतत्प्रमाणमनेनैव
 प्रतीयते हि काळः मैत्रा. ६।१४
 सौमद्रश्च महाबाहुः भ. गी. १।१८
 सौमद्रो द्रौपदेयाश्च भ. गी. १।६
 सौमदत्तिस्तथैव च भ. गी. १।८
 सौम्यामेवाप्येति यः सौम्या-
 मेवास्तमेति सुबालो. १।४
 सौम्ये आदित्याय ईशान्ये
 नमो महसे.. सूर्यता. ४।१
 सौवर्णं राजते ताञ्च चेति
 सूत्रत्रयम् (भाषायाः) अ. मा. २
 सौवर्णाञ्जुजमप्यगां त्रिणयनां
 सौवर्णमिनीसमिमां... ध्याये-
 द्विन्ध्यनिवासिनी शशिमुखी
 पार्श्वस्थपञ्चाननाम् वनदु. ६
 सौवर्णं राजते ताञ्च धारयेन्मृणमये
 वटे (उत्थाप्य गां प्रयत्नेन
 गायत्र्या मूत्रमाहरेत्) बृ. जा. ३।६
 स्तनयति स प्रतिहार वृद्धाति.. छांदो. २।१५।१
 स्तनयितुरेव सविता, विद्युत्सावित्री,
 स यत्र स्तनयितुस्तद्विद्युत्,
 यत्र वा विद्युत्तत्र स्तनयितुस्तु
 हे योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ५
 स्तनयितुरेवेन्द्रो यज्ञः प्रजापतिरिति
 कर्मः स्तनयितुरित्यनिरिति
 कर्मो यज्ञ इति यज्ञव इति बृ. ३।५।६

स्तनयत्येषाऽस्य तनूः मैत्रा. ६।५
 स्तनं वाऽनुधापयन्त्यथ वत्सं
 जातमाहुरतृणाद इति बृ. १।५।२
 स्तम्भशाखेवेतराण्यनेनोर्ध्वभागभव-
 त्यन्यथाऽधः पतति मैत्रा. ४।३
 स्तम्भिनी मोहिनी वशीकरिणी
 तन्त्रैकसारावयवनगरराजमुख-
 बन्धनबलमुखमकरमुखसिंह-
 मुखजिह्वामुखानि बन्धय बन्धय लाङ्गूलो. ८
 स्तुतोमया वरदा वेदमाता महाना. ११।९
 स्तुवते सततं यस्तु सोऽवतीर्णो
 महीतले । वने वृन्दावने
 क्रीडन्गोपगोपीसुरैः सह कृष्णो. ७
 स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः भ. गी. १।१२।१
 स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न
 भीममुपहत्नुमुग्रम् नृ. पू. २।४
 [ऋ. मं. २।३३।११+अथर्व. १८।१।४०
 स्तूयते मंत्रसंस्तुत्यैरथर्वविदितैर्विभुः मंत्रिको. १३
 स्तूयमानो न तुष्येत (तु)
 निन्दितो न शपेत्परान् [कुंडिको. १२ + कठ. ७
 [२ सञ्ज्यासो. १४+ कठश्रु. २७
 स्तेनः सुरापो गुरुतत्पगामी मित्र-
 धुगेते निष्कृतेर्यान्ति शुद्धिम् शाट्याय. २६
 स्तेनो हिरण्यस्य सुरां पिब* च
 गुरोस्तत्पमावसन्नद्वाहा च छांदो. ५।१०।९
 स्तेयमकार्षीत् परशुमस्मै तपतेति छांदो. ६।१६।१
 स्तोकेनानन्दमायाति स्तोके-
 नायाति खेदताम् महो. ३।२६
 स्तोमतो गायत्रं रथन्तरं बृहद्भद्रं
 राजनमिति १ ऐत. ३।४।२
 स्तोमं महदुरुगायं प्रतिष्ठां दृष्ट्वा
 धृत्या धीरो नचिकेतोऽत्यन्ताक्षीः कठो. २।११
 स्त्रिय-(स अ-) अपानादिविचित्र-
 भोगैः स एव जाग्रत्परितृप्तिमेति कैव. १२
 स्त्रियमहिमित्रं त्यजेत् ना. प. ७।१
 [१ सं. सो. २।७९+
 स्त्रियं त्यक्त्वा जगत्त्यक्तं
 जगत्त्यक्त्वा सुखी भवेत्
 [महो. ३।४८+ याज्ञव. १७

स्त्रियं नपुंसकं...विडालं...

सृष्ट्वा...भस्मस्तानं समाचरेत्

स्त्रियः किमिव शोभनम्

स्त्रिया सह शेते स उद्गीथः

स्त्रियो हि नरकाग्नीनामिन्धनं

चारु दारुणम् [महो. ३।४४+

स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्राः

स्त्री चैव पुरुषश्च प्रजनयतो यो

वा एतां सावित्रीमेवं वेद

स पुनर्मृत्युं जयति

स्त्रीणामवाच्यदेशस्य कृत्रिनाडी-

ग्रणस्य च । अमेदेऽपि मनो

मेदाज्जनः प्रायेण वञ्चयते

स्त्रीपुन्रपुंसकं लैङ्गाः परापरमथापरे

स्त्रीपुंसयोर्वा इद्वैव स्थातुमपेक्षते

तस्मै सर्वैश्वर्यं वदति

स्त्रीप्रज्ञैव तर्हि कात्यायनी

स्त्रीभिर्वा यानैर्वा ज्ञातिभिर्वा

नोपजन्तुः स्मरन्

स्त्रीलिङ्गं भगवत्युमा

स्त्रीशूद्रबालिशदिभ्य उच्छिष्टं न

प्रदापयेत् । यदि दद्यात्प्रमादेन

न तद्वच्छति तान्पितृन्

स्त्रीषु दुष्टेषु बाण्येय

स्थाणुभूतेन लकारेण व्योतिर्लिङ्ग-

मात्मानं धियो बुद्धयः परे

वस्तुनि ध्यानेच्छारहिते निर्वि-

कल्पके प्रचोदयात्परेयेत्

स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म

यथाश्रुतम्

स्थाणुरयमच्छेद्योऽयं योऽसौ सूर्ये

तिष्ठति योऽसौ गोषु तिष्ठति

स्थाणुर्नित्यः सदानन्दः सुतो

ज्ञानमयोऽमलः । आत्माऽहं सर्व-

भूतानां विभुः साक्षी न संशयः सर्वसारो. १०

स्थानजय-(या)-न्यतीति पुनर्जन्म

न विद्यते [प्र. वि. १।१५

स्थातं प्राप्तयसि शाश्वतम्

बृ. जा. ४।७

महो. ३।३९

छांदो. २।१३।१

याज्ञव. १३

भ. गी. ९।३२

सावित्र्यु. ११

ना. प. ४।२९

वैतथ्य. २७

नृ. पू. १।७

बृह. ४।५।१

छांदो. ८।१२।३

रुद्रह. ९

इतिहा. ३६

भ. गी. १।४१

त्रि. ता. १।९

कठो. ५।७

गोपालो. १।१२

सर्वसारो. १०

त्रि. ता. ५।११

भ. गी. १८।६ २

स्थानं वीरासनं चैषां पृथ्वी चैव

प्रदक्षिणाम् । अग्निहोत्रं हुतं

चैषां ये वै सन्ध्यामुपासते

स्थानादपसरणं सुराणां

स्थानानि स्थानिभ्यो यच्छति

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या

स्थोपयित्वा रथोत्तमम्

स्थाध्यासनं गुरोः पूज्यं शिव-

ज्ञानस्य पुस्तकम् । तत्र तिष्ठेत्

प्रतीक्षंस्तदुरोरागमनं क्रमात्

स्थालीपाकस्योपघातं जुहोति

स्थावरस्वरूपवान् भवति,

जङ्गमस्वरूपवान् भवति

स्थावरं जङ्गमं बीजं तैजसं

त्रिषमायुषम् । षडेतानि न

गृहीयाद्यतिर्मूर्खपुरीषवत्

स्थावराणां हिमालयः

स्थितधीर्मुनिरुच्यते

स्थितधीः किं प्रभाषेत

स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा

स्थितप्रज्ञो यतिस्य यः

सदानन्दमभुते

स्थितश्चलति तस्त्वतः

स्थितः किं मूढ एवास्मि

प्रेक्षेऽ(द्योऽ)हं शास्त्रसंज्ञतैः ।

वैराग्यपूर्वमिच्छेति शुभेच्छे-

त्युच्यते बुधैः [महो. ५।२७+

स्थिता देवी च मध्यतः

स्थितिरिच्छाक्रियान्वितम्

स्थितिरिति स्थितिर्विदः सर्वे

चेह तु सर्वदा

स्थितिरित्येनदुपासीत

स्थितिरूपा महालक्ष्मीर्भवति

स्थितिः सदिति चोच्यते

स्थितोऽस्मि गतसन्देहः

स्थित्यन्ते आदिविराट् पुरुषः स्वांश-

मायोपाधिकनारायणमभ्येति

सन्धयो. ९

मैत्रा. १।८

सुबालो. ५।१

भ. गी. १।१३६

भ. गी. १।२४

शिवो. ७।३५

बृह. ६।४।१९

गणेशो. २।२

१ सं. सो. २।९१

भ. गी. १।०।३९

भ. गी. २।५६

भ. गी. २।५४

भ. गी. २।५५

भ. गी. २।५४

अध्यात्मो. ४३

भ. गी. ६।२१

वराहो. ४।३

शिवो. २।५

पञ्चम. ४

वैतथ्य. २८

बृह. ४।२।७

ना. पू. २।१

भ. गी. १।७।२७

भ. गी. १८।७३

त्रि. म. ता. ३।५

स्थित्यन्तेऽण्डविराट् पुरुषः
स्वांशं हिरण्यगर्भमध्येति त्रि.म.ना. ३।४
स्थित्यन्ते त्रिपाद्विभूतिनारायण-
स्येच्छावशान्निमेषो जायते त्रि.म.ना. ३।६
स्थित्यन्ते (विष्णुः) स्वांशं
महाविराट् पुरुषमध्येति त्रि.म.ना. ३।५
स्थित्वाऽसौ वैन्दवस्थाने घ्राणरन्ध्रे
निरोधयेत् योगकुं. ३।८
स्थित्वाऽस्यामन्तकालेऽपि भ. गी. २।७२
स्थिरजङ्गममध्येऽद्वैतं ब्रह्म
प्रकाशितम् अद्वैतो. १
स्थिरबुद्धिरसम्भूतः भ. गी. ५।२०
स्थिरमात्रा दृढं कृत्वा अङ्गुष्ठेन
समाहितः । द्वेगुले तु प्रकुर्वीत.. धुरिको. ६
स्थिरमासनमात्मनः भ. गी. ६।११
स्थिरस्थायी विनिष्कम्पः सदा
योगं समभ्यसेत् अ. ना. २३
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभि-
र्व्यशेम (हि) देव हितं यदायुः नृ. पू. २।११
[+क.मं.१।८९।८+वा.सं.२५।२१ +तै.आ. १।१११
स्थूलत्वात्सूक्ष्मत्वाद्बीजत्वात्
साक्षित्वाच्चाप्नोति ह वा इदं
सर्वमायिश्च भवति नृसिंहो. २।४
स्थूलत्वात्स्थूलभुक्त्वाच्च सूक्ष्मत्वात्
सूक्ष्मभुक्त्वाच्चैक्यादानन्दभोगाच्च नृसिंहो. १।२
स्थूलदेहविहीनात्मा सूक्ष्मदेह-
विवर्जितः । कारणादि-
विहीनात्मा तुरीयादिविवर्जितः तै. विं. ४।७३
स्थूलभुक्चतुरात्माऽथ विश्वो
वैश्वानरः पुमान् ना. प. ८।११
स्थूलभुग्वैश्वानरात्मिकां काम-
पीठालयां मित्रेशनाथात्मिकां
जामदशाधिष्ठायिनीमिच्छा-
शक्त्यात्मिकां कामेश्वरी
प्रथमकूर्वा मस्यन्ते श्रीवि. ता. १।७
(तथा) स्थूलमनाकाशमसं-
स्पृश्यमपाशुषम् [अ.पू.५।७३+ जा. इ. ९।४
स्थूलसूक्ष्मकारणदेहोद्भवपूर्वकं
जीवधरस्वरूपं विविच्य कथ-

यामीति सावधानेनैका-
प्रतया श्रूयताम् वैङ्गलो. २।१
स्थूलसूक्ष्मकारणरूपैर्विश्व-तैजस-
प्राज्ञेश्वरैः सर्वावस्थासु
साक्षी त्वेक एवावतिष्ठते ना. प. ६।७
स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिर्द्वितीया-
ऽन्तरिक्षं स उकारः नृसिंहो. ३।२
स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिर्मात्रा-
मात्राः प्रतिमात्राः कृतवौतानु-
ज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं
चिन्तयन्प्रसेत् नृसिंहो. ३।३
स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभि-
स्तृतीया द्यौः स मकारः नृसिंहो. ३।२
स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिमेदेना-
कारात्पञ्चतुर्विधाः... वराहो. ४।१
स्थूलसूक्ष्मबीजसाक्षिभिर्याऽव-
सानेऽस्य चतुर्थ्यर्धमात्रा
सा सोमलोक ओङ्कारः नृसिंहो. ३।२
स्थूलसूक्ष्मेषु भूतेषु स एव
रसतेजसी वृ. जा. २।२
स्थूलं तर्पयते विश्वं प्रविविक्तं
तु तैजसम् आगम. ४
स्थूलं सूक्ष्मं परं चेति त्रिविधं ब्रह्म-
णो वपुः । स्थूलं शुक्लात्मकं
बिन्दुः सूक्ष्मं पञ्चामिरूपकम् यो. शि. ५।२८
स्थूलं सूक्ष्मं परं चेति त्रिविधं ब्रह्म-
णो वपुः । पञ्चब्रह्ममयं रूपं
स्थूलं वैराजमुच्यते । हिरण्यगर्भं
सूक्ष्मं तु नादं बीजत्रयात्मकम् यो. शि. २।१४
स्थूलानि सूक्ष्माणि बहुनि चैव
रूपाणि देही स्वगुणैर्बुध्नोति ।
क्रियागुणैरात्मगुणैश्च तेषां
संयोगहेतुरपरोऽपि दृष्टः श्वेताश्व. ५।१२
स्थैर्यमात्मविनिग्रहः भ. गी. १३।१८
स्नातको वाऽस्नातको वोत्सन्नाभि-
रनभिको वा यदहरेव विरजे-
त्तदहरेव प्रप्रजेत् ना. प. ३।७७
स्नात्वाऽभसा भस्मना वा शुक्ल-
वस्त्रोपवीतवाच् । दूर्वागर्भस्थितं
पुष्पं शुक्लः शिरसि धारयेत् शिवो. ७।४३

स्नानं कुर्यात्परेच्छया (यतिः) ना. प. ५।१५
 स्नानं कृत्वा शिवतीर्थे च देहं
 सर्वं अस्मोद्धूलनात्पावयित्वा ।
 त्रिपुण्ड्रं धार्य अर्त्सेनात्पातकौ-
 चगिरेर्भस्म प्राहुरत्यर्थमेतत् सि. शि. १३
 स्नानं त्रिपुण्ड्रस्य शिरोललाटवक्ष-
 स्स्कन्धमणिवन्धेषु कूर्पे ।
 नाभिप्रदेशे पार्श्वयोर्गण्डदेशे
 गुदप्रदेशे गुल्फयोश्च क्रमात्स्यात् सि. शि. १४
 स्नानं त्रिषवणं प्रोक्तं बहुदकवन-
 स्थयोः । हंसे तु सङ्कदेव
 स्यात्परहंसे न विद्यते ना. प. ४।२३
 स्नानं दानं (पानं) तथा शौचमद्भिः
 पूताभिराचरेत् । स्तूयमानो
 न तुष्येत निन्दितो न
 शपेत्परान् [कुंडिको. १२+ २सञ्ज्यासो. १४
 स्नानं पानं तथा शौचमद्भिः
 पूताभिराचरेत् । नदीपुलि-
 नशायी स्याद्देवागारेषु वा स्वपेत् कठक. ६
 स्नानं मनोमलत्यागः शौचमिन्द्रिय-
 निग्रहः [मैत्रे. ३।२+ स्कन्दो. ११
 स्नायुंभ्योऽस्थीनि गर्भो. २
 स्नुहिपत्रनिभं शङ्खं सुतीक्ष्णं
 स्निग्धनिर्मलम् । समादाय
 ततस्तेन रोममात्रं समुच्छिन्नेत् योगकुं. २।२९
 स्नेहप्रणयगर्भाणि पेशलान्युचितानि
 च । देशकालोपपन्नानि
 वचनान्यभिभाषते अक्षुप. १०
 स्नेहः स्नेहेन भवति सामर. ९५
 स्नेहो यथा पल्लपिण्डं शान्तमूल-
 मोतं प्रोतमनु व्यासं व्यति-
 षितो व्याप्यते व्यापयते... नृ. पू. २।६
 स्पन्दः फलसम्प्राप्तिस्तस्मादेवं
 निरर्थकम् भवसं. १।४४
 स्पर्शानैन्द्रियसंस्पर्शः स्पर्शो मानस
 एव च । द्विविधः सुखदुःखानां
 वेदनानां प्रवर्तकः आयुर्वे. ४५
 स्पर्शयति सर्वमात्रमा जानीत मैत्रा. ६।७
 स्पर्शयितव्यमेवाप्येति यः
 स्पर्शयितव्यमेवास्तमेति सुबालो. २।५

स्पर्शवान्वायुः स्पर्शवायुभ्यां भिन्नः गोपालो. १।४
 स्पर्शं सर्वमसत्सदा ते. वि. ३।५७
 स्पर्शं रूपं रसं गन्धं कोशाः पञ्च
 मनोभवाः । जाग्रत्स्वप्नसुषु-
 प्यादि मनोमयमितीरितम् ते. वि. ५।१०३
 स्पर्शान् कृत्वा बहिर्बाह्यान् भ. गी. ५।१७
 स्पृहां गोमांसमिव... कारागृह-
 विनिर्मुक्तचोरवत्पुत्राप्तबन्धुभव-
 स्थलं विहाय दूरतो वसेत् ना. प. ७।१
 स्पष्टव्या सा न भव्येन स-
 श्वमांसेव पुत्कसी (अहंता) ना. प. ३।५१
 स्फटिकरजतवर्णं मौक्तिकीमक्ष-
 मालाममृतकलशविद्यां ज्ञान-
 मुद्रां कराग्रे । दधत्तमुरगकक्ष्यं
 चन्द्रचूण्डं त्रिनेत्रं विधृतविधिव-
 भूषं दक्षिणामूर्तिमीडे द. सू. ४
 स्फटिकः प्रतिबिम्बेन यथा नायाति
 रश्मिन् । तज्ज्ञः कर्मफलेना-
 न्तस्तथा नायाति रश्मिन् अ. पू. ५।९८
 स्फुरत्प्रज्वलस्तश्वालापूज्यमादित्य-
 मण्डलम् । ध्यात्वा हृदि स्थितं
 योगी प्राणायामे सुखी भवेत् यो. चू. ९७
 स्फुरत्यात्मभिरामैव चित्तै-
 रब्धीव वीचिभिः अ. पू. २।४१
 स्फुरन्ति हि न भोगाशा
 मृगतृष्णासरस्वपि महो. ३।५६
 स्मरन् मुक्त्वा फलेवरम् स. गी. ८।५
 स्मरन्नारायणं देवं चतुर्बाहुं किरी-
 टिनम् । शुद्धस्फटिकसङ्काशं
 पीतवाससमच्युतम् ॥ धारयेत्
 पञ्च चटिकाः सर्वपापैः प्रमुच्यते १ यो. व. ८९
 स्मराद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे
 भगवान्ब्रवीतु छांदो. ७।१३।२
 स्मरेण वै पुत्रान्विजानाति, स्मरेण
 पशून्, स्मरमुपास्वेति छांदो. ७।१३।१
 स्मरो बाबाकाशाद्भूयस्तस्माद्य-
 दपि बहव आसीरन्नस्मरन्तो
 नैव ते कश्चन शृणुयुः... छांदो. ७।१३।१

स्मरौ वै आकाशाद्भूयान्—(मा.पा.)	छां.उ. ७।१३।१	स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य	म. गी. १८।४६
स्मरणे अनाहताङ्गी	निर्वाणो. ६	स्वकर्मनिरतः सिद्धि	म. गी. १८।४९
स्मृतिभ्रंशाद्दुःखिनाशः	म.गी. २।६३	स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः	म. गी. ११।५०
स्मृतिर्जायते पुरुषोत्तमात्	सि. वि. २	स्वकायं घटमित्युक्तं यथा जीवो	
स्मृतिर्दया क्षान्तिरहिंसा पत्नी		(दीपो) हि तत्पदम् । गुरुवाक्य-	
संयाजः	प्रा. हो. ४।३	समाभिन्ने ब्रह्मज्ञानं प्रकाशते	
स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा	म. गी. १०।३४	(स्फुटीभवेत्) [यो.शि.६।७८+ योगकुं. ३।१६	
स्मृतिलम्बे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः	छांदो. ७।२६।२	स्वकुलानुरूपामभिमतकन्यां	
स्मृतिः सत्सेवनावैश्च धृत्यन्तै-		विवाह्य...साधनचतुष्टय-	
रुपलभ्यते । स्मृत्या स्वभावं		सम्पन्नः सञ्जयस्तुमर्हति	ना. प. २।१
आवानां स्मरन् दुःखात्		स्वगतं च न मे किञ्चिन्न मे	
प्रमुच्यते	आयुर्वे. १९	भेदत्रयं क्वचित्	ते. वि. ३।४७
स्मृतेनापिहिता गुहा, शमेनापि-		स्वगमननिरोधग्रहणं न कुर्यात्	ना. प. ७।१
हिता गुहा	इतिहा. १६	स्वगृहोक्तविधानेन प्रतिष्ठा-	
स्मृत्या स्मारं स्मारेण विज्ञानं		प्याग्निमीजयेत्	बृ. जा. ३।११
विज्ञानेनात्मानं वेदयति	महाना. १७।१३	स्वचित्तविलसंस्थेन नानाविभ्रम-	
स्यातां हिमाद्रिकैलासौ तस्या		कारिणा । बलात्कामपिशाचेन	
देव्यास्तु कुण्डले । स्वर्लोकश्च		विवशः परिभूयते	महो. ३।३४
भुवर्लोकौ देव्या ओष्ठाधरौ मतौ	गुह्यका. १३	स्वचैतन्ये स्वयं स्थास्ये स्वात्मराज्ये	
स्यां न्वहं तेनामृताऽऽहो ३	बृह. ४।५।३	सुखे रमे । स्वात्मसिंहासने	
स्योनापृथिवि(नो) भवा नृक्षरा		स्थित्वा स्वात्मनोऽन्यन्न चिन्तये	ते. वि. ३।२५
निर्वैश्वनी । यच्छा नः शर्म		स्वच्छतोर्जितता सत्ता ह्ययता	
सप्रथाः [महाना. ५।६+	प्रवर्ग्या. १३	सत्यता ज्ञता	१ सं. खो. १।५६
[+त्र. सं. १।२२।१५+वा.सं.	३५।२१+३६।१३	स्वच्छं स्वतःसिद्धमित्याचमनीयम्	भावनो. ८
स्योनेन मे सन्तिष्ठस्व	महाना. १६।११	स्वच्छं विभाति शरदीव खमाग-	
स्वत्यामप्रटाम्बुवत् (ज्ञानं)	शाठ्याय. ३६	तायां चिन्मात्रमेकमजमा-	
स्रष्टुकामो जगद्योनिस्तमोगुण-		द्यमनन्तमन्तः	महो. ५।५३
मधिष्ठाय सूक्ष्मतन्मात्राणि		स्वच्छं निराकारमसङ्गमद्भुतम्	१ वित्को. ११
भूतानि स्थूलीकर्तुं सोऽकामयत	पैङ्गलो. १।४	स्वजनं हि कथं हत्वा	म. गी. १।३७
स्नामे स्नामः परिवृक्णे परिवृक्णः	छांदो. ८।९।१	स्वज्ञोऽपि यत्प्रसादेन ज्ञानं तत्फल-	
क्षुतौ मथा वरदेति विसृज्योदीरणा		माप्नुयात् । सोऽयं हयास्यो	
उत सूर्यस्यावृत्तमसम्पन्नं पुरस्ता-		भगवान्हृदि मे भातु सर्वदा	हयमी. श्रीषेक
द्यस्मात्क्रोशादिति यथार्थमुपतिष्ठते	संख्यो. ३	स्वतः पूर्णः परात्माऽत्र ब्रह्मशब्देन	
सुवेण वा चमसेन वा कंसेन वैता		वर्णितः	शु. र. ३।४
आहृतीर्जुहोति	कौ. त. २।३	स्वतः शिवः पशुपतिः साक्षी	
लोचसा नीयते दाह यथा निम्नोजत-		सर्वस्य सर्वदा	पा. प्र. १३
स्थलम् । देवेन नीयते देहो		स्वव्यतिरिक्तं सर्वं त्यक्त्वा मधुकर-	
तथा कालोपमुक्तिषु	३ आत्मो. १८	वृत्त्याऽऽहारमाहरन्कशीभूत्वा	
क्षीतर्धामपि जाह्नवी	म. गी. १०।३०	मेदीवृद्धिमकुर्वन्निहरेत्	१ सं. खो. १।५९

स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् भ. गी. ११।१९
 स्वतो वा परतो वाऽपि न किञ्चि-
 द्भस्तु जायते । सद्यस्तस्य दस-
 द्वापि न किञ्चिद्भस्तु जायते अ. शां. २२
 स्वदारनिरत ऋतुकालाभिगामी आश्रमो. १
 सदा परदारवर्जी प्राजापत्यः
 स्वदेशमुत्सृज्य ज्ञातचरदेशं
 विहाय विस्मृतपदार्थं पुनः
 प्राप्तहर्ष इव...विहाय
 दूरतो वसेत् ना. प. ७।१
 स्वदेहमरणि कृत्वा प्रणवं चोत्तरा-
 रणिम् । ध्याननिर्मथनाभ्यासा-
 र्हेवं पश्येन्निगूढवत् श्वेताश्व. १।१४
 स्वदेहमलनिर्मोक्षो मृजलाभ्यां
 महामुने । यत्तच्छौचं भवेद्वाह्यं
 मानसं मननं विदुः जा. द. १।२०
 स्वदेहस्य तु मूर्धानं ये प्राप्य परमां
 गतिम् । भूयस्ते न निवर्तन्ते
 परावरविदो जनाः कुण्डिको. २२
 स्वदेहाशुचिगन्धेन न विरज्येत यः
 पुमान् । विरागकारणं तस्य
 किमन्यदुपदिश्यते मुक्तिको. २।६६
 स्वदेहं यो न जानाति तस्य सिद्धिः
 कथं भवेत् । षट्चक्रं षोडशाधारं
 त्रिलक्ष्यं व्योमपेक्षकम् यो. चू. ४
 स्वधर्म एव सर्वं घत्ते मैत्रा. ४।३
 स्वधर्ममपि चावेक्ष्य भ. गी. २।३१
 स्वधर्मे निधनं श्रेयः भ. गी. ३।३५
 स्वप्नाऽहमहमौषधम् भ. गी. ९।१६
 स्वप्नां पितृभ्यः, आशां मनुष्येभ्यः,
 तृणोदकं पशुभ्यः छांदो. २।२२
 स्वप्नेति पितरः (उपासते) शुद्धो. ३।२
 स्वपूर्णात्मातिरेकेण जगज्जीवेश-
 रावयः । न सन्ति नास्ति माया
 च तेभ्यश्चाहं विलक्षणः वराहो. २।११
 स्वपूर्वापकाभ्यां चारविद्याधर्म-
 प्राग्भवमननुस्मरन्त्यकव-
 त्प्राग्भवाचारः...प्रणवात्मकेन
 देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः तुरीया. ३

स्वपौरुषैकसाध्येन स्वेप्सितत्याग-
 रूपिणा । मनःप्रशममात्रेण
 विना नास्ति शुभा गतिः मैत्रो. ४।९०
 स्वप्न इव मिथ्यादर्शनम् (पुण्यापुण्यं) मैत्रा. ४।२४
 स्वप्न इव यः पश्यतीन्द्रियविले मैत्रा. ६।२५
 स्वप्नजगदभ्रजगदितुल्यम् निर्वाणो. ३
 स्वप्नजागरणोपेता जन्तवो जागृति
 गताः । योगिनस्तत्त्वसम्पन्ना
 न जाग्रति न शेरते अमन. २।५९
 स्वप्नजागरिते स्थाने ह्येकमाहुर्मनी-
 षिणः । भेदानां हि समत्वेन
 प्रसिद्धेनैव कर्मणा वैतथ्य. ५
 स्वप्नजाग्रदिति प्रोक्तं जाग्रत्यपि
 परिस्फुरत्..सौषुप्तिः सोच्यते गतिः मैत्रो. ५।१८
 स्वप्नदृक्चित्तदृश्यास्ते न विद्यन्ते
 ततः पृथक् । तथा तद्दृश्यमेवेदं
 स्वप्नदृक्चित्तमिष्यते अ. शां. ६४
 स्वप्नदृक्प्रचरन्स्वप्ने दिक्षु वै दशसु
 स्थितान् । अण्डजान्स्वेदजान्वा-
 ऽपि जीवान्पश्यति यान्सदा अ. शां. ६३
 स्वप्नदृष्टं च यद्भस्तु जागरौ चेज्जग-
 द्भवेत् । नदीवेगो निश्चलश्चेत्
 केनापीदं भवेज्जगत् ते. बि. ६।८८
 स्वप्नदेहो यथाऽप्यस्तस्तथैवायं
 हि देहकः ना. बि. २४
 स्वप्ननिद्रायुतावाधौ प्राज्ञस्त्वस्वप्न-
 निद्रया । न निद्रां नैव च
 स्वप्नं तुयं पश्यन्ति निश्चिताः आगम. १४
 स्वप्नप्राये यथा दृष्टे गन्धर्वनगरं
 यथा । तथा विश्वमिदं
 दृष्टे वेदान्तेषु विचक्षणैः वैतथ्य. ३१
 स्वप्नवृत्तावपि त्वन्तश्चेतसा
 कल्पितं त्वसत् वैतथ्य. ९
 स्वप्नस्थ-राव्यभिक्षाभ्यां प्रबुद्धः
 स्पृशते खलु वराहो. २।५८
 स्वप्नस्थानश्चतुरात्मा तैजसो
 हिरण्यगर्भश्चतुरूप उकार एव नृसिंहो. २।५

स्वप्नस्थानस्तैजस उकारो द्वितीया
मात्रोत्कर्षादुभयत्वाद्बोत्कर्षति ह
वै ज्ञानसन्तति समानश्च भवति

माण्डू. १०

स्वप्नस्थानः सूक्ष्मप्रज्ञः सप्ताङ्ग
एकोनविंशतिमुखः सूक्ष्ममुक्
चतुरात्मा तैजसो हिरण्यगर्भो
द्वितीयः पादः

नृसिंहो. १।३

स्वप्नस्थानेऽनन्तः संज्ञासप्ताङ्ग

एकोनविंशतिमुखः

प्रविभक्तोऽभूत्

श्रीवि. ता. २।१

स्वप्नस्थानोऽन्तःप्रज्ञः सप्ताङ्ग

एकोनविंशतिमुखः प्रविविक्त-

मुक् तैजसो द्वितीयः पादः

माण्डू. ४

[+ रामो. ता. २।२ +

ग.शो. १।२

स्वप्नस्थानो बहिःप्रज्ञः सप्ताङ्ग

एकोनविंशतिमुखः प्रविविक्त-

मुक् तैजसो द्वितीयः पादः

नृ. पू. ४।२

स्वप्नान्त उच्चावचमीयमानो

रूपाणि देवः कुरुते बहूनि

बृह. ४।३।१३

स्वप्नान्तं जागरितान्तं चोभौ

यैनानुपश्यति । महान्तं विभु-

मात्मानं मत्वा धीरो न शोचति

कठो. ४।४

स्वप्नावस्थायां तैजसस्य चातुर्विध्यं

तैजसविद्यस्तैजसतैजसस्तैजस-

प्राज्ञस्तैजसतुरीय इति

प. हं. प. ९

स्वप्ने चावस्तुकः कायः पृथगन्यस्य

दर्शनात् । यथा कायस्तथा

सर्वं चित्तदृश्यमवस्तुकम्

अ. शां. ३६

स्वप्ने चिदंशशून्यत्वं जागरे

विषयग्रहः । स्वप्नजागरणा-

तीता अवस्तत्त्वं विदुर्बुधाः

अमन. २।६०

स्वप्ने जागरितं नास्ति जागरे

स्वप्नता नहि । द्वयमेव लयै

नास्ति लयोऽपि ह्यनयोर्न च

यो. शि. ४।११

स्वप्नेन शरीरमभिग्रहत्याऽसुप्तः

सुप्तानमिवाकशीति

बृह. ४।३।११

स्वप्नेऽपि यो हि युक्तः स्याज्जाग्रतीव

विशेषतः । ईदृक्चैष्टः स्मृतः

भोहो वरिहो ब्रह्मादिनाम्

ना. प. ५।१६

स्वप्ने स जीवः सुखदुःखभोक्ता

स्वमायया कल्पितजीवलोके ।

सुषुप्तिकाले सकले विलीने

तमोभिभूतः सुखरूपमेति

कैव. १३

स्वप्नकाशचिदानन्दं स हंस

इति गीयते

प्र. वि. २१

स्वप्नकाशब्रह्मतत्त्वे शिवशक्ति-

सम्पुटितप्रपञ्चच्छेदनम्

निर्वाणो. ५

स्वप्नकाशमधिष्ठानं स्वयम्भूय

सदात्मना । ब्रह्माण्डमपि

पिण्डाण्डं त्यजतां मलभाण्डवत्

अध्यात्मो. ८

स्वप्नकाशं तमात्मानमप्रकाशः

कथं स्पृशेत्

वराहो. २।९

स्वप्नकाशं विश्वेश्वराभिधं

पातालमधितिष्ठति

भस्मजा. २।१०

स्वप्नकाशः परं ज्योतिः स्वानु-

भूतैकचिन्मयः । तदेव राम-

चन्द्रस्य मनोराशक्षरः स्मृतः

रामो. ५।१

स्वप्नकाशापरोक्षत्वमयमित्युक्तितो

मतम् । अहङ्कारादिदेहान्तं

प्रत्यगात्मेति गीयते

शु. र. ३।७

स्वप्नकाशे निरानन्दे तमो

मूढस्य जायते

आ. प्र. २६

स्वप्नकाशैकसंभिद्धे नास्ति माया

परात्मनि । व्यावहारिकदृष्टयेयं

विद्याविद्या न चान्यथा

पा. प्र. २३

स्वप्नकाशोऽप्यविषयज्ञानत्वाज्ज्ञान-

मेव ह्यन्यत्रान्यत्र विजानाति

नृसिंहो. ९।१

स्वप्नकाशोऽस्मि चिद्धनः

प्र. वि. १०९

स्वप्नं सच्चिदानन्दं भक्त्वा

जानाति चान्ययम्

वासुदे. ८

स्वभावजेन कौन्तेय

भ. गी. १८।६०

स्वभावनियतं कर्म

भ. गी. १८।४७

स्वभावप्रभवैर्गुणैः

भ. गी. १८।४१

स्वभावमेके कवयो वदन्ति कालं

तथाऽन्ये परिमुह्यमानाः ।

देवस्यैव महिमा तु लोके येनेदं

भ्रान्त्यते ब्रह्मचक्रम्

श्वेताश्व. ६।१

स्वभावस्तु प्रवर्तते

भ. गी. ५।१४

स्वभावं भावसङ्गाहमसङ्गातं

पदाक्युतम्

ते. बि. १।७

स्वभावेनामृतो यस्य भावो (भवो)

गच्छति मर्त्यताम् । कृतके-

नामृतस्तस्य कथं स्थास्यति

निश्चलः [अद्वैत. २२+

अ. शां. ८

स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते

अ. गी. ८।३

स्वमसङ्गमुदासीनं परिज्ञाय नभो

यथा । न श्लिष्यते यतिः

किञ्चित्कदाचिद्भावविकर्मभिः

अध्यात्मो. ५१

स्वमात्मनि स्वयं तृप्तः स्वमात्मानं

स्वयं चर । आत्मानमेव मोदस्व

वैदेहीमुक्तिको भव

ते. बि. ४।८१

स्वमानन्दमनुस्मरन् स्वशरीरा-

भिमानदेशविस्मरणं मत्वा...

दूरतो वसेत् (यतिः)

ना. प. ७।१

स्वमायावैभवान्सर्वान्संहृत्य स्वात्मनि

स्थितः । पञ्चब्रह्मात्मकातीतो

भासते स्वस्वतेजसा

पञ्चब्र. १७

स्वमुखेन सदा- (समा-) वेष्य

ब्रह्मरन्ध्रमुखं मुने । सुषुम्नाया

इडा सव्ये दक्षिणे पिङ्गला स्थिता

जा. द. ३।१३

स्वमेव सर्वतः पश्यन्मन्यमानः

स्वमद्वयम् । स्वानन्दमनु-

मुञ्चानो निर्विकल्पो भवास्यहम्

कुण्डिको. २७

स्वयज्योतिर्ब्रह्माकाशः सर्वदा

विराजते परं ब्रह्मत्वात्

ना. प. ८।२४

स्वयज्योतिः प्रकाशः सर्ववेद्यः सर्वज्ञः

सर्वविद्धिः सर्वेश्वरः सोऽहमिति

ना. प. ९।२२

स्वयमनिन्द्रियोऽपि सर्वतः पश्यति

सर्वतः क्षणोति सर्वतो गच्छति

सर्वतश्चाप्येते सर्वगः सर्वगतस्तिष्ठति

बृ. पू. २।८

स्वयमनुभूयत एव देवदेवः

अ- पू. १।५५

स्वयममनस्कमश्रोत्रमपाणिपादं

ज्योतिर्विदितम्

ब्रह्मो. ३

स्वयमवतीर्णो ह्ययमात्मा ब्रह्म

सोऽहमात्मा चतुष्पात्

ग. शां. ५।६

स्वयमादिः सर्वान्तरात्मा देवस्य

स्वयं क्रीडात्मकमवास्तृजत् । अः

स्वयं लोकमवधारमवधारयन्स्वाहा पारमा. ६।१

स्वयमिन्द्रः स्वयं शिवः

अध्यात्मो. २०

स्वयमीश्वरः स्वयम्प्रकाशश्चतुरात्मो-

तानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्पैरोतो

ह्ययमात्मा

नृसिंहो. २।७

स्वयमुचलिते देहे देही नित्य-

समाधिना । निश्चलं तं वि-

जानीयात्समाधिरभिधीयते

सौभाग्य. २२

स्वयमेव कृतं द्वारं रुद्राक्षं

स्यादिहोत्तमम्

रु. जा. १२

स्वयमेव तु सम्पश्येदेहे विन्दुं

च निष्कलम्

अ. बि. ५४

स्वयमेव त्वया ज्ञातं गुरुतश्च पुनः

भुतम् । स्वसङ्कल्पवशाद्ब्रह्मो

निःसङ्कल्पाद्विमुच्यते

महो. २।७०

स्वयमेव परं ब्रह्म पूर्णमद्वयमक्रियम्

अध्यात्मो. २१

स्वयमेव प्रजायन्ते लाभालाभ-

विवर्जिते । योगमार्गे तथैवेदं

सिद्धिजालं प्रवर्तते

यो. बि. १।१५७

स्वयमेव मया पूर्वमभिज्ञातं

विशेषतः । एतदेव हि पृष्टेन

पित्रा मे समुदाहृतम्

महो. २।३२

स्वयमेव सच्चिदानन्दस्वरूपो

भवेन्न किम्

रामर. १।९

स्वयमेव सौमित्रिरैश्वराके वंशे

जायमानो रक्षांसि सर्वाणि वि-

निष्कन्धातुर्वर्ण्यधर्मान्प्रवर्तयति

सङ्कर्षणो. २

स्वयमेव स्वयं भामि स्वयमेव

सदात्मकः । स्वयमेवात्मनि

स्वस्थः स्वयमेव परा गतिः

ते. बि. ३।२२

स्वयमेव स्वयं मुखे स्वयमेव

स्वयं रमे । स्वयमेव स्वयं-

ज्योतिः स्वयमेव स्वयं महः

ते. बि. १।२३

स्वयमेव स्वयं हंसः...स्वात्मानन्दं..

स जीवन्मुक्त उच्यते

ते. बि. ४।३१

स्वयमेवाऽऽत्मानाऽऽत्मानमानन्दं

पदमाप्स्यसि

महो. ६।७८

स्वयमेवाऽऽत्मानाऽऽत्मानं

अ. गी. १०।१५

स्वयमेवात्मनि स्वस्थः स्वयमेव

परा गतिः

ते. बि. ३।२२

स्वयमेवैकवीरोऽपि स्वयमेव प्रभुः

स्मृतः । स्वस्वरूपे स्वयं स्वप्त्ये-

त्स जीवन्मुक्त उच्यते

ते. बि. ४।३२

स्वयम्प्रकाशमनिशं ज्वलति

त्रि. म. ना. ७।७

स्वयम्प्रकाशः स्वयं ब्रह्म भवति

अ. शिखो. ३

स्वयं कल्पिततन्मात्रा जालाभ्य-

न्तरवर्ति च । परां विवशतामेति

शृङ्खलाबद्धसिंहवत्

महो. ५।१२९

स्वयं गुणभिन्नाऽङ्कुरेष्वपि गुणभिन्ना

(माया) सर्वत्र..

नृसिंहो. ९।३

स्वयं चैव प्रवीषि मे

अ. गी. १०।१३

स्वयं ज्योतिर्ब्रह्माकाशः सर्वदा विराजते

ना. प. ८।२३

स्वयं तस्मात्पशुपतिर्बभूव

शरभो. १३

स्वयं दाता स्वयं भोक्ता स्वयं

देवो महेश्वरः । निर्विकल्पं

स्वयं ब्रह्म तस्याहं पञ्चमाश्रयः

२ तत्त्वो. ८

स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः ।

दम्बन्यमाणाः (जङ्गन्यमानाः)

परिचरन्ति मूढा अन्येनेव नीय-

माना यथान्धाः [कठो. २।५+]

मुण्ड. २।८

स्वयं निर्विकल्पमशेषकल्पाधार-

मशेषभूतान्तर्यामित्वेन... देवमा-

हङ्कारादिभिरसंस्पृष्टचेता वर्तते

एवमुक्तलक्षणो यः स एव

ब्राह्मण इति

व. सू. ९

स्वयं प्रकाशिते तत्त्वे तत्क्षणा-

त्तन्मयो भवेत्

अमन. २।५४

स्वयं ब्रह्म न सन्देहः स्वस्मादन्यन्न

किञ्चन । सर्वमात्मैव शुद्धात्मा

सर्वं चिन्मात्रमद्वयम्

ते. बि. ६।३९

स्वयं प्रकाशिते तत्त्वे स्वानन्द-

रवत्क्षणाद्भवेत्

अमन. २।५१

स्वयं ब्रह्मात्मकं विद्धि स्वस्मा-

दन्यन्न किञ्चन

ते. बि. ६।५२

स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णुः स्वयमिन्द्रः

स्वयं शिवः । स्वयं विश्वमिदं

सर्वं स्वस्मादन्यन्न किञ्चन

अध्यात्मो. २०

स्वयं आतं निराधारं ये जानन्ति

मुनिश्चितम् । ते हि विज्ञान-

सम्पन्ना इति मे निश्चिता मतिः

बराहो. २।१०

स्वयंभानः पर एको ज्योतिरेव..

२ रुद्रो. ६२

स्वयं भूत्वा स्वयं भूत्वा स्वयमेवा-

वशिष्यते

कठो. ४६

स्वयं यतः कुतश्च न विमेति

नृ. पू. २।१०

स्वयं विहृत्य स्वयं निर्माय स्वेन

भासा स्वेन ज्योतिषा प्रस्व-

पित्यत्रायं पुरुष स्वयं ज्योतिर्भवति

बृह. ४।३१

स्वयैव सूक्ष्मया बुद्ध्या स्वयं

विज्ञातवान्छुकः

महो. २।१२

स्वयोनानुपशान्तस्य मनसः सत्य-

(गामिनः) कामतः । इन्द्रियाथै-

विमूढस्यानुताः कर्मवशानुगाः

[मैत्रा. ६।३४+]

मैत्रे. १।९

स्वर इति प्रत्यास्वर इत्यमुं तस्माद्वा

एतमिमममुं चोद्रीयमुपासीत

छांदो. १।३।२

स्वरवतां रथन्तरस्य स्तोभानां

स्वरवन्तः प्रयोक्तव्या इति

संहितो. २।४

स्वरस्य का गतिरिति प्राण

इति होवाच

छांदो. १।८।४

स्वरान्वितो दक्षिणपत्रगो हरिः ।

अथ्यासमेतः...

१ बिल्बो. ३

स्वरितलिङ्गविभक्तिवचनानि च

स्वरिति स्वर्गो लोकः स सामवेदः

२ प्रणवो. १६

स्वरित्यस्याः (व्याहृत्याः) शिरः,

नाभिर्भुवो भूः पादाः आदित्यश्चक्षुः

सन्ध्यो. २०

स्वरूपध्यानेन निरालम्बमवलम्ब्य

स्वात्मनिष्ठानुकूलेन सर्वं

विस्मृत्य... प्रणवात्मकत्वेन

देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः

मैत्रा. ६।६

स्वरूपव्याप्तदेहस्य ध्यानं कैवल्य-

सिद्धिदम्

तुरीया. ३

स्वरूपसूर्येऽभ्युदिते स्फुटोक्ते-

गुरोर्मेहावाक्यपदैः प्रबुद्धः

त्रि. प्रा. २।१४८

स्वरूपाज्ञानमानन्दमयकोशः

स्वरूपानुसन्धानब्रह्मप्रणवध्यान-

मार्गेणावहितः सङ्घासेन देह-

शु. र. ३।९

पैङ्गलो. ३।५

त्यागं करोति स परमहंस-
परिव्राजको भवति प. हं. प. ८
स्वरूपानुसन्धानव्यतिरिक्तान्य-
शास्त्राभ्यास उष्ट्रकुक्षुभार-
वद्भयः [ना. प. ५१५+ १ सं.सो. २५९
स्वरूपानुसन्धानं कुर्वन्सर्वमनन्य-
बुद्ध्या स्वस्मिन्नेव मुक्तो भवति ना. प. ९१२१
स्वरूपानुसन्धानेन सर्वप्रपञ्चं
विदित्वा...देहत्यागं करोति
यः सोऽवधूतः तुरीया. ३
स्वरूपावस्थितिर्मुक्तिस्तद्गंशो-
ऽहन्त्ववेदनम् महो. ५१२
स्वरेण सन्धयेद्योगमस्वरं
भावयेत्परम् ब्र. वि. ७
स्वरेण सर्वाणि व्यञ्जनानि
व्याप्तानि एवं सर्वान्का-
मानवाप्नोति संहितो. २१३
स्वरेणसंज्ञेद्योगीस्वरं सन्भावयेत्परम् त्रि. ता. ५१७
स्वर्गकामः प्रतृण्णं उभयकामं
उभयमन्तरेण ३ ऐत. ११३१२
स्वर्गद्वारमपावृतम् भ. गी. २१३२
स्वर्गस्य स्तावं हि सामेति छांदो. ११८५
स्वर्गलोकं गच्छति यस्तथाऽधीते संहितो. १११
स्वर्गं लोकं यजमानायाजमात्मन
आगायानीत्येतां मन्त्रा
व्यायज्ञप्रमत्तः स्तुवीत छांदो. २१२२१२
स्वर्गं वयं लोकं सामाभि-
संस्थापयामः छांदो. ११८५
स्वर्गपिर्गयोरेकं यः शीघ्रं न
प्रसाधयेत् । याति तेनैव
वेदेन स मृतस्तप्यते चिरम् शिवो. ७१२०
स्वर्गलोककथ्यवत्तैऽभ्राह्मिन्ः इतिहा. १९
स्वर्गलोकान् कामानवाप्नुहि कौ. व. २११५
स्वर्गं लोकं न मयं किञ्चनारित कठो. ११२२
स्वर्ग्यं पर्णाशनादिचिचरः पयोधश्च संहितो. ४११
स्वर्गजा रौप्यजा वापि लोहजा
वा शङ्काकिकाम् । नियोज्य
नासिकारन्ध्रं दुग्धसिक्तेन

तन्तुना ॥ ...षण्मासं मथना-
वस्था भावेनैव प्रजायते योगकु. २१४४
स्वर्णाभामन्तुजकरां रामालोकन-
तत्पराम्... रामर. २१९७
स्वर्गो लोको व्योतिषाऽऽवृतः अरुणो. १
स्वर्भूय्योतिर्मयोऽनन्तरूपी
स्वेनैव भासते रा. पू. २११
स्वर्लोकश्च भुवर्लोकौ देव्या
ओष्ठाधरो मतौ गुरुका. १३
स्वल्पमप्यन्तरं कृत्वा जीवात्मपर-
मात्मनोः । यत्तिष्ठति विमू-
ढात्मा भयं तस्यापि भाषितम् यो. जि. ४८
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य भ. गी. २१४७
स्वल्पस्पन्दो द्रव्यनिष्ठो रसो
नाहमचेतनः १ सं. सो. २१९७
स्वल्पाऽपि दीपकलिका बहुलं
नाशयेत्तमः । स्वल्पोऽपि बोधो
निविडं बहुलं नाशयेत्तमः आ. प्र. २९
स्ववर्णाश्रमधर्मेण तपसा गुरुतोष-
णात् । साधनं प्रभवेत्पुंसां
वैराग्याद्विचतुष्टयम् ब्राह्मो. २१२
स्ववपुः कुणपमिव दृश्यते प. हं. ३
स्ववपुः कुणपाकारमिव पश्यन्...
प्रणवात्मकत्वेन देहत्यागं
करोति यः सोऽवधूतः तुरीया. ३
स्ववपुः शवाकारमिव स्पृष्ट्वा...
जातरूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत् ना. प्र. ३१८७
स्ववंशवृद्धिकामः पुत्रमेकमासाद्य
...साधनचतुष्टयसम्पन्नः
सन्नयस्तुमर्हति ना. प. २११
स्वन्यतिरिक्तवस्तुसङ्ग्रहितं स्मरणं
विभूषणम् भावको. ८
स्वन्यतिरिक्तं सर्वमन्तर्बहिरग्र-
मानः कस्यापि बन्धनमकृत्वा
...जातरूपधरश्चरेदात्मान-
मन्विच्छेत् ना. प. ३१८७
स्वन्यतिरिक्तं सर्वं कृत्वं नश्वरमिति
मत्वा विरक्तः पुरुषः सर्वदा
ब्रह्माहमिति व्यवहरेत् ना. प. ६१२

स्वव्यतिरिक्तं सर्वं त्यक्त्वा
 मधुकरवृत्त्याहारमाहरन्कृशो
 भूत्वा मेदोवृद्धिमकुर्वन्नाज्यं
 कविरमिव त्यजेत् ना. प. ७।१

स्वशब्देन भवेत्प्राणः स्वाधिष्ठानं
 तदाश्रयः (म्) [यो. चू. ११+ व्या. वि. ४७

स्वशरीरव्यतिरिक्तं सर्वं त्यक्त्वा
 पटपदवृत्त्या स्थित्वा स्वरूपानु-
 सन्धानं कुर्वन्सर्वमनन्यबुद्ध्या
 स्वस्मिन्नेव मुक्तो भवति ना. प. ९।२१

स्वशरीरं शवमिव हेयमुपगम्य
 काशगृहविनिर्मुक्तचोरवत्
 पुत्राप्तबन्धुभवस्थलं विहाय
 दूरतो वसेत् ना. प. ७।१

स्वशरीरे यज्ञं परिवर्तयामि प्रा. हो. २।३

स्वशरीरे यथाकामं परिवर्तते बृह. २।१।१८

स्वशरीरे स्वयच्छयोतिस्वरूपं
 (पारमार्थिकम्) सर्वसाक्षिणम् ।
 क्षीणदोषाः प्रपश्यन्ति, नेतरे
 माचयाऽऽवृताः अ. पू. ४।३६

[पा. ब्र. ३८+ कद्रह. ४९

स्वशास्त्रानुगतमत्रैरष्टभ्रात्रा-
 न्यष्टदिनेषु ना. प. ४।३९

स्वशिरस्छेदः सुखनिद्रेव मूकी-
 कारणमाननमुद्रेव बाधिर्यं
 महानुपचय इव नावहेलनया
 भवितव्यमेवं दृढवैराग्या-
 द्बोधो भवति महो. ४।२६

स्वसङ्कल्पवशाद्ब्रह्मो निःसङ्कल्पा-
 द्विमुच्यते महो. २।७०

स्वसङ्कल्पे धृत्य याते समतैवावशिष्यते महो. ६।३

स्वसमानाधिकरणशून्यः स्वसमाना-
 धिकशून्यः... शुद्धो देव एको
 नारायणः, न द्वितीयोऽस्ति
 कश्चिद् त्रि. म. नां. १।५

स्वस्तिज्ञानव्यवस्थासु द्वैतिनो
 निश्चिता दृढम् । परस्परं
 विरुध्यन्ते वैरयं न विरुध्यते अत्रैत. १७

स्वसृष्टा वै त्वमस्याचार्यहा वै
 त्वमसि ब्राह्मणहा वै त्वमसीति छांदो. ७।१५।२

स्वस्ति सर्वजीवेभ्य इत्युक्त्वा-
 ऽऽत्मानमनन्यं ध्यायंस्तदूर्ध्व-
 बाहुर्विमुक्तमार्गो भवेत् कठरु. ४

स्वस्थक्रमेणैव चेदात्मभ्रातृं विरजा-
 होमं कृत्वा... तत्त्वमस्यादि-
 नाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं
 कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् प. हं. प. ९

स्वस्थं शान्तं सनिर्वाणमकथ्यं
 सुखमुत्तमम् । अजमजेन
 ज्ञेयेन सर्वज्ञं परिचक्षते अद्वैतो. ४७

स्वस्तिक-गोमुख-पद्म-वीर-सिंह-
 भद्रमुक्तमयूराख्यान्यासनान्यष्टौ शांडि. १।३।१

स्वस्तिकं गोमुखं पद्मं वीरसिंहा-
 सने तथा । भद्रं मुक्तासनं चैव
 मयूरासनमेव च ॥ सुखासन-
 समारुह्य च नवमं मुनिपुङ्गव जा. द. ३।१

स्वस्तिकं नाम-जानूवोरन्तरे सम्य-
 कृत्वा पादतले उभे । ऋजुकायः
 समासीनः स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते शांडि. १।३।१

स्वस्तिकासनमास्थाय समाहित-
 मनास्तथा... जा. द. ६।३२

स्वस्तिको दक्षिणं पादं वामपादं
 तु कुञ्चिताम् । प्राञ्जलीकृत-
 दोर्युग्मं गरुडं हरिवल्लभम् गारुडो. १

स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा
 विसृष्टो वशी । वृषेन्द्रः पुर
 एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः
 [महाना. ५।२+१३।१७+ वनदु. १५४

[ऋ. मं. १०।१५२।२+ अथर्व. १।२१।१

तै. आ. १०।१।९

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः
 पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति न-
 स्ताद्व्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो
 बृहस्पतिर्दधातु [शां. पा. म. ना. ५।३

[+ ऋ. मं. १।८९।६+ वा. वे. २।१२।२५

[+ वा. सं. २५।१९+ तै. आ. १।१।१

स्वस्ति नो मघवा करोतु हन्तु

पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि

[तै. सं. १।४।४१+तै. आ.

स्वस्ति नो मिमीतामग्निना भगः

[+क्र. मं. ५.५.११११

स्वस्ति नः पाराय तमसः परस्तात्

स्वस्ति सर्वजीवेभ्य इत्युक्त्वा

दीक्षामुपेयात्

स्वस्ति सर्वजीवेभ्य इत्युक्त्वा

ऽऽत्मानमनन्यं ध्यायंस्त-

दूर्ध्वबाहुर्विमुक्तमार्गो भवेत्

स्वस्तीत्युक्त्वा महर्विसिद्धसङ्गाः

स्वस्मिन्विलीनं सकलं जगदा-

विर्भावयति (प्रकृतिः)

स्वस्यात्मनि स्वयं रंस्ये स्वात्मन्येव

विलोक्ये । स्वात्मन्येव सुखा-

सीमः स्वात्ममात्रावशेषकः

स्वस्वरूपतया सर्वं वेद स्वानु-

भवेन यः । स धीरः स तु

विज्ञेयः सोऽहं तत्त्वं अभो भव

[अग्राह्यमिति च-] स्वस्वरूप-

व्यतिरिक्तमायामयबुद्धी-

न्द्रियगोचर-जगत्सत्यस्व-

चिन्तनमग्राह्यम्

स्वस्वरूपज्ञः परित्राट् परित्राडे-

काकी चरति भयत्रस्तसारङ्ग-

वत्तिष्ठति

स्वस्वरूपं तु चिन्मात्रं सर्वदा

सर्ववैदित्यात् । नैव देशादि-

सङ्गातो घटवद्बुद्धिगोचरः

स्वस्वरूपं स्वयं भुङ्क्ते नास्ति

भोग्यं पृथक्स्वतः

स्वस्वरूपानुसन्धानानुत्यन्तं सर्व-

साक्षिणम् । मुहूर्तं चिन्तयेन्मां

यः सर्ववन्द्यः प्रमुच्यते

स्वस्वेतरद्वितीयांशैः पञ्चधा

संयोज्य पञ्चीकृतभूतैरनन्त-

कीदृशप्रमाणानि

६५

महानां. ५।९

१०।१।११

महाना.

मुण्ड. २।२६

कठश्रु. २२

कठश्रु. ४

भ. गी. ११।२१

पैङ्गलो. १।२

ते. वि. ३।२४

वराहो. २।३०

निरा. ३१

ना. प. ९।२१

वराहो. २।२४

वराहो. २।२६

वराहो. २।३२

पैङ्गलो. १।४

स्वहृदि चैतन्ये तिष्ठति

त्रिविधं ब्रह्म

परब्रह्मो. ७

स्वस्वं विषयमुद्दिश्य प्रवर्तन्ते

निरन्तरम् । प्रवर्तकत्वं

चाप्यस्य मायया, न स्वभावतः

पा. ब्र. १५

स्वरूपं ध्यायन्पुनः पृथक् प्रणव-

न्याहृतिपूर्वकं... तत्त्वमस्यादि-

वाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं

कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत्

प. हं. प. ५

स्वः ह्यपीतो भवति

छांदो. ६।८।१

स्वः पश्यन्त उत्तरम्

छांदो. ३।१७।७

स्वः स्वादेत्यग्नौ हुत्वा मन्ये

सः स्रवमवनयति

बृह. ६।३।३

स्वः प्रपद्येऽमुनाऽमुनाऽमुना

छांदो. ३।१५।३

स्वाचाप्ते तनुवं पिप्रयत्वात्मभ्यं

च सौभगमायजस्व[म.ना.६।१८

क्र.मं.८।१०।१०

[+अथर्व.६।११०।१+

तै.आ. १०।२।१

स्वातीका गुप्तयो गुप्तिः सत्त्वं

सत्त्वानां(सत्यं सत्यानां)सात्त्वं-

पदं तत्सत्त्वं सत्त्वमासीत् सात्त्वं

सात्त्वं वै सत्त्वमादधानाय स्वाहा

पारमा. ४।८

स्वाज्ञानासुरराट्प्रासस्वज्ञान-

नरकेसरी । प्रतियोगिविनि-

मुक्तं ब्रह्ममात्रं करोतु माम्

अव्यक्तो. शीर्षकं

स्वात्मनि व्योमनि स्वस्ये

जंगदुन्मेषचित्रकृत्

महो. २।६

स्वात्मनिष्ठानुकूलेन सर्वं विस्मृत्य

तुरीयातीतावधूतवेषेणादृत-

निष्ठापरः प्रणवात्मकत्वेन देह-

त्यागं करोति यः सोऽवधूतः

तुरीया. ३

स्वात्मनि स्वपरिस्पन्दैः

स्फुरत्स्वच्छैश्चिदर्णवः

महो. ५।११।७

स्वात्मनैव सदा तुष्टः स्वयं सर्वात्म-

ना स्थितः । निर्धनोऽपि सदा

तुष्टोऽप्यसंहायो महाबलः

९ आत्मो. १६

स्वात्मनैव सदानन्दरूपेणास्मि

स्वलक्षणः

अध्यात्मो. ६७

स्वात्मन्यवस्थितः सत्यः

गङ्गानिभिश्च सुशिक्षितः

जा. द. ५।१

स्वात्मन्यारोपिताशेषाभासवस्तु-

निरासतः । स्वयमेव परं ब्रह्म

पूर्णमद्वयमक्रियम्

अध्यात्मो. २१

स्वात्मन्येवं सदा स्थित्या मनो

नश्यति योगिनः

अध्यात्मो. ४

स्वात्मन्येव स्वयं सर्वं सदा पश्यति

निर्भयः । तदा मुक्तो न मुक्तश्च

बद्धस्यैव विमुक्तता

पा. ब्र. ३६

स्वात्मन्येवावतिष्ठेऽहं तुर्यरूपपदे-

ऽनिशम् । अन्तरेव शशामास्य

क्रमेण प्राणसन्ततिः

अ. पू. ३।१०

स्वात्मबन्धहरः (रहितः)

[रामो. ता. २।४+

गणेशो. १।४

स्वात्ममंत्रं सदा पश्येत्स्वात्म-

मन्त्रं सदाऽभ्यसेत्

ते. वि. ३।५९

स्वात्मयोगैकनिष्ठेषु स्वातन्त्र्यादी-

श्रवप्रियाः । प्रभूताः सिद्धयो

यास्ताः कल्पनारहिताः स्मृताः

यो. शि. १।१५४

स्वात्मप्रकाशरूपं तत् किं शास्त्रेण

प्रकाश्यते

यो. शि. १।५

स्वात्मराज्ये त्वमेवासि स्वयम्भाव-

विवर्जितः

ते. वि. ५।७३

स्वात्मवत्सर्वभूतेषु कायेन मनसा

गिरा । अनुज्ञा या दया सैव

प्रोक्ता वेदान्तवेदिभिः

जा. द. १।१५

स्वात्मसिंहासने स्थित्वा स्वात्मनो-

ऽन्यन्न चिन्तये

ते. वि. ३।२५

स्वात्मानन्दानुभवतरङ्गिण्याः

प्रवाहैरतिमङ्गलं... चिद्रूप-

विलासनिभचिन्मयासनं निराजते

सि. सा. ४।१

स्वात्सानमेवैषा ददाति

नृसिंहो. ७।६

स्वात्मानं च श्रियं ध्यायेदसुत-

प्रावर्तते ततः

[वराहो.

५।३४, ३९

स्वात्प्राणमः सुखासनः

ते. वि. ४।४७

स्वाधिष्ठानं तत्तत्क्रमं मेदूमेव निग-

द्यते । मणिवत्तनुता यत्र

वायुना पूरितं वपुः

ध्या. वि. ४८

स्वाधिष्ठानं द्वितीयं स्यात्तत्

योगरा. ७

स्वाधिष्ठानाह्वयं चक्रं लिङ्गमूले षडक्ष-

के । (कम्) । नाभिदेशे स्थितं

चक्रं दशा(स्त्रं) रं मणिपूरकम्

[यो. शि. १।१७२+

५।८

स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च

भ. गी. ४।२८

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्

तैत्ति. १।१११

स्वाध्यायप्रवचने एवेति

नाको मौद्गल्यः

तैत्ति. १।९।१

स्वाध्याययुक्ता ब्राह्मणाश्चरन्ति

पा. ब्र. ९

स्वाध्याय-शौच-सन्तोष-तपांसि

नियतात्मवान् । कुर्वन्ति

ब्रह्मणि तथा परस्मिन्प्रवर्णं मनः

भवसं. ३।१७

स्वाध्यायसंयमाभ्यां स दृश्यते

पुरुषोत्तमः । तत्प्राप्तिकारणं

राजंस्तदेतदिति पठ्यते

भवसं. ३।६

स्वाध्यायस्तप आर्जवम्

भ. गी. १६।१

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

तैत्ति. १।१११

स्वाध्यायाभ्यसनं चैव

भ. गी. १७।१५

स्वानन्दमयानन्ताचिन्त्यविभव

आत्माऽन्तरात्मा पुरमात्मा

ज्ञानात्मा तुरीयात्मा.. शुद्धो देव

एको नारायणः

त्रि. म. ना. १।५

स्वानन्दानुभवाच्छान्तिरेवैवो-

परतेः फलम्

अध्यात्मो. २८

स्वानुभूतेश्च शास्त्रस्य गुरोश्चैवैक-

वाक्यता । यस्याभ्यासेन

तेनात्मा सततं चावलोक्यते

महो. ४।५

स्वानुभूत्या स्वयं ज्ञात्वा स्वमात्मा-

नमस्त्विदितम् । स सिद्धः...

अध्यात्मो. ६४

स्वानुभूत्यैकमानं च यत्तत्त्वं

तदसौ स्थितः । यदेकं चाप्य-

नेकं च साञ्जनं च निरञ्जनम् ॥

यत्सर्वं चाप्यसर्वं च यत्तत्त्वं

तदसौ स्थितः

अ. पू. ३।२३

स्वान्तर्विजृम्भितभानुमण्डलध्यान-

तत्प्राकाराकारितपरम्परा-

कारितमुक्तिमार्गमाकृतः

परिपक्वो भवति

म. प्रा. २।७

स्वान्तःस्थितः स्वयमेवेति य एवं
वेद स मुक्तो भवति ना. प. १।२०
स्वाभ्यं परस्वरूपं स्याद्वाभ्यं जीवस्य
सर्वदा । प्राक्प्रत्यगात्मनो रूपं
स्वाभ्यं दास्यमिति स्थितिः भवसं. २।५७
स्वायत्तमेकान्तहितं स्वेप्सित-
त्यागवेदनम् । यस्य दुष्करतां
यातं धितं पुरुषकण्टकम् महो. ४।८९
स्वाय लोकाधारिष्टिमिच्छेदेव*
द्वैवन्विदे सर्वाणि भूतान्य-
रिष्टिमिच्छन्ति बृह. १।४।१६
स्वारान्यमतिरात्रेण (यजति)
स्वार्थसंयमात्पुरुषज्ञानम् मैत्रा. ६।३६
स्वार्थे स्वाभाविकेऽर्थे च बहुधा
संस्थितिस्त्वयि शांदि. १।७।५२
स्वालोक्तः शाखदृशा स्वबुद्ध्या
स्वानुभावतः । प्रयच्छति परां
सिद्धिं त्यक्त्वात्मानं मनःपिता मैत्रा. ५।८१
स्वावगम्यो लयः कोऽपि यो
मनोवागगोचरः (जायते वाग-
गोचरः) [वराहो. २।८१+ अमन. २।२२
स्वावबोधकलालापकुशला
दुर्लभा भुवि अमन. २।२३
स्वाविद्यातत्कार्यजातं यद्विद्यापह्वं
गतम् । तद्वसविद्यानिष्पन्नं
रामचन्द्रपदं भजे प्र. वि. शीर्षकं
स्वाविद्याद्वयतत्कार्यापह्वब्रह्मान-
भासुरम् । मन्त्रिकोपनिषद्वेद्यं
रामचन्द्रमहं भजे मन्त्रिको. शीर्षकं
स्वाभ्येष्टेवानुक्रमणं स्वधर्मं
य ए सर्व धर्मे मैत्रा. ४।३

हकारं वियस्वरूपं च समानं
स्फटिकप्रभम् । हज्जामितासा-
कर्णं च पादाङ्गुष्ठानिसंस्थितम् अया. वि. ९७
हकारः परमज्ञः स्वात्तत्पदं चेति
निश्चितम् । सकारो व्यापते
अमृतहकारो हि भवेत्तुभम् यो. च. ८३

स्वाहान्ते जुहुयात्तत्र वर्णदेवाय
पिण्डकान् । आचारावाज्यभागौ
च प्रक्षिपेद्वथाहृतीः सुवीः बृ. जा. ३।१३
स्वाहा स्वधा यच्च वषट्करोति रुद्रः
पशूनां गुह्या निमग्नः एका. व. ५
स्विष्टं सुदुतं यज्ञकतूनां प्रायण*
सुवर्गस्य लोकस्य ज्योति-
स्तस्मादग्निदोत्रं परमं वदन्ति महाना. १७।९
स्वेच्छाचारस्वस्वभावोमोक्षः परं ब्रह्म निर्वाणो. ८
स्वेदजाः क्रिमिक्रीटादयः ना. पू. ता. ५।६
स्वेन भासा स्वेन ज्योतिषा प्रस्वपि-
त्यत्रायंपुरुषः स्वयं ज्योतिर्भवति बृह. ४।३।९
स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते एष
आत्मेति [छांदो. ८।३।४+ मैत्रा. २।२
स्वेनावृतं सर्वमिदं प्रपञ्चं पञ्चात्मकं
पञ्चसु वर्तमानम् । पञ्चीकृता-
नन्तभवप्रपञ्चं पञ्चीकृतस्वा-
वयवैरसंवृतम् ना. प. १।१८
स्वे महिम्नि तिष्ठमानं दृष्ट्वाऽऽवृत्त-
चक्रमिव संसारचक्रमालोकयति मैत्रा. ६।२८
स्वे महिम्नि सदा समासते
तस्मादेनमकारार्थेन परेण
ब्रह्मणैकीकुर्यात् नृसिंहो. ७।६
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः अ. गी. १।८।४५
स्वैरं न विगायेत्तन्महाव्रतम् । न स
मृदबलिष्यते अवधू. ६
स्वैरं स्वैरविहरणं तत्संसारणम् अवधू. ६
स्वौजसा सर्वमावृत्ताति यः पाप्रीया-
समनुपदमाहिंसत्सुपुण्यं
पुण्यात्मकं पुण्यं वितानं
दाधार देवाय स्वाहा पारमा. ६।३

ह

हकारेण तु सूर्यः स्यात्सकारेण-
न्दुदृश्यते । सूर्याचन्द्रमसौ-
रेक्यं इठ इत्यभिधीयते यो. शि. १।१३३
हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत्
पुनः । इंस इंसेत्युं मन्त्रं जीवो
अपति सर्वदा । इंस इंसेति

मन्त्रोऽयं सर्वैर्जीवैश्च ज्ञप्यते
 [व्या. वि. ६१+ यो. शि. १।१३०
 हकारो सकारोमुकारो
 त्रयमेकस्वरूपं भवति हयग्री. ६
 हटेन प्रस्यते जाड्यं सर्वदोष-
 समुद्भवम् । क्षेत्रज्ञः परमात्मा
 च तयोरेक्यं यदा भवेत् ॥
 तदैक्ये साधिते ब्रह्मश्चित्तं
 याति विलीनताम् यो.शि. १।१४
 हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं भ. गी. २।३७
 हत्वाऽपि स इमाल्लोकान् भ. गी. १८।१७
 हत्वाऽर्थकामांस्तु गुरुनिहैव भ. गी. २।५
 हत्वा स्वजनमाहवे भ. गी. १।३१
 हत्वैतानाततायिनः भ. गी. १।३६
 हनिष्याम वा एतद्वो यदेवान्
 पराभावविष्यथ शौनको. १।१
 हनिष्ये चापरानपि भ. गी. १६।१४
 हन्तृकारं मनुष्याः स्वधाकारं
 पितरः (उपजीवन्ति) बृह. ५।८।१
 हन्त चित्तमहत्तायां कैषा विश्वासता
 तव (चित्तमूलं हि संसारः) बराहो. ३।२१
 हन्त त इदं प्रवक्ष्यामि-गुह्यं ब्रह्म
 सनातनम् कठो. ५।६
 हन्तर्हिभवत्येतद्द्वयाख्यास्यामि ते
 व्याचक्षाणस्य तु मे निदिष्यासस्वेति बृह. ४।५।५
 हन्त ते कथयिष्यामि भ. गी. १०।१९
 हन्त तेऽन्या कात्यायन्याऽन्तं
 करवाणि बृह. २।४।१
 हन्ता चेन्मन्यते हन्तुं हतश्चेन्मन्यते
 हतम् । उभौ तौ न विजानीतौ
 नायं हन्ति न हन्यते कठो. २।१९
 हन्ताहमेतद्भगवतो वेदानीति छांदो. १।८।७
 हन्ताहमेतद्भगवतो वेदानीति(मा.पा.) छांदो. १।८।७
 हन्ति पाप्मानं जहाति च य एवं वेद
 हन्तुं स्वजनमुद्यताः बृह. ५।५।३,४
 हन्तेन्द्रियगणा यूयं त्यजताकुलतां
 यनिः । चिदात्मा भगवान्सर्व-
 साक्षित्वेन स्थितोऽस्त्यहम् भ. गी. १।४५
 हन्यान्मुष्टिमिराकाशं क्षुधार्तः
 खण्डयेजुषम् । नाहं ब्रह्मेति

जानाति तस्य मुक्तिर्न जायते पैङ्गलो. ४।२२
 हयग्रीवैकाक्षरजपशीलाज्ञया
 सूर्यादयः स्वतः स्वस्वकर्मणि
 प्रवर्तन्ते हयग्री. ६
 हयो भूत्वा देवानबहत् बृह. १।१।२
 हरन्ति प्रसभं मनः भ. गी. २।६०
 हरमायात्मकेन ह्रीङ्कारेण हृल्लेखाख्या
 भगवती त्रिपुरेति व्यापठयते त्रि. ता. १।१
 हरमुवाच-कुरु हर संहारम् ।
 जगद्धरणाद्धरो भव गणेशो. ३।१३
 हरितस्य नीलस्य पीतस्य लोहितस्य
 श्वेतस्य नाड्यो रुधिरस्य पूर्णाः सुबालो. ४
 हरिहरहिरण्यगर्भस्त्र्यारमप्रमेय-
 मनाद्यन्तं रुद्रभूक्तैरभिषिच्य भस्मजा. २।४
 हरिं हरन्तं पादाभ्यामनुयान्ति
 सुरेश्वराः शरभो. ६
 हरिः हरन्तमनुयन्ति देवा विश्व-
 स्येशानं वृषभं मतीनाम्
 [महाना. १३।११+ चित्त्यु. १५।१
 हरिः पतङ्गः पटरी सुपर्णः चित्त्यु. ११।८
 हरे राम हरे राम राम राम हरे
 हरे । हरे कृष्ण हरे कृष्ण
 कृष्ण कृष्ण हरे हरे कलिसं. २
 हरो वै विलोक्य रुदति
 स्म । रोदनाद्ब्रह्मसंज्ञः गणेशो. ३।१३
 हर्षजोऽकान्तितः कर्ता भ. गी. १८।२७
 हर्षामर्षभयक्रोधकामकार्पण्यदृष्टिभिः
 न परामृश्यते योऽन्तः स जीव-
 न्मुक्त उच्यते महो. २।४४
 हर्षामर्षभयक्रोधकामकार्पण्य-
 दृष्टिभिः । न दृष्यति ग्लायति
 यः परामर्शविवर्जितः महो. ६।४९
 हर्षामर्षभयोद्वेगैः भ. गी. १२।१५
 हविर्गुणा न वक्तव्याः पितरो
 यावदपिताः । तृप्तस्तु पितृभिः
 पश्चाद्भुक्तव्यं शोभनं हविः इतिहा. ८२
 हविर्मेऽजस्रं विलूहति इतिहा. ८५
 हस्त्युल्लसति प्रीत्या क्रीडते मोदते
 तदा । तनोति जीवनं प्रीत्या
 विमोचि श्रवतो भयात् यो. शि. ६।६७

हसन्ति लोकायतिका हसन्ति

कुटिला जनाः सूर्यता. १।१२
 हसौ हयग्रीवस्वरूपो भवति हयग्री. ६
 हस्तप्राप्तं च भक्षयेत् (यतिः) ना. प. ५।४८
 हस्तमेवाप्येति यो हस्तमेवास्तमेति सुबालो. ९।६
 हस्तं हस्तेन सम्पीडय दन्तैर्दन्ता-
 निचूर्ण्य च । अङ्गान्यङ्गैः
 (इवाक्रम्य) समाक्रम्य जये-
 दादौ स्वकं मनः [महो. ९।७५+ सुक्तिको. २।४२
 हस्ताभावाक्रिया न च ते. वि. ५।१९
 हस्ताभ्यां चाग्निमस्तृजत बृह. ६।४।६
 हस्ताभ्यां नद्युत्तरणं न कुर्यान्न ना. प. ५।८+७।१
 (वृक्षारोहणमपि) वृक्षमारोहेत् सुबालो. ५।११
 हस्तावध्यात्मं, आदातव्यमधिभूतं,
 इन्द्रस्तत्राधिदेवतं, नाडी तेषां
 निबन्धनम् कौ. त. ३।५
 हस्तावेवास्यां एकमङ्गमुद्वं, तयोः
 कर्म परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा हस्तिजिह्वा तथा सव्यपादाङ्गुष्ठान्त-
 मिष्येत जा. द. ४।२१
 हस्तिजिह्वाभिभायास्तु वरुणो जा. द. ४।३६
 देवता भवेत्
 हस्ति हिरण्यं दासभार्य क्षेत्राण्या-
 यतत्प्राप्तिं छांदो. ७।२४।२
 हस्तिनि सिंहे वंशे मशके नकुल-
 सर्पराक्षसगन्धर्वे मृत्यो रूपानि
 विदित्वा न विभेति कुतश्चनेति सुबालो. १३।२
 हस्तेन दक्षिणेनैव पीडयेन्नासिकापुटम् त्रि. ब्रा. २।९५
 हस्तौ च दातव्यं च -(मा. पा.) प्रभो. ४।८
 हस्तौ चादानव्यं च प्रभो. ४।८
 हस्तौ चादातव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
 हस्तौ पादावुपर्यं च जिह्वा
 पायुस्तथैव च । कर्मेन्द्रियाणि
 पञ्चैव राजन्नस्मिन्छरीरके भवसं. २।१८
 हस्तौ वै मदाः, स कर्मणाऽतिमाहेण
 गृहीतो हस्ताभ्यां हि कर्मकरोति बृह. ३।२।८
 हस्त्युषभं सहस्रं वदामीति होवाच
 जनको वैदेहः बृह. ४।१।२-७
 हं नमः शिरसि प्रोतं वैव शिबो
 भवेत् हंसषोढो. २

हंमी तृतीयस्याद्यार्थान्त्यं मृत्युं
 चतुर्थस्याद्यार्थान्त्यं साम तु
 जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं
 च गच्छति नृ. पू. १।५
 हंस एव परं वाक्यं हंस एव तु
 वादिकम् । हंस एव परो रुद्रो
 हंस एव परात्परम् ब्र. वि. ६१
 हंसज्योतिरनूपम्यं मध्ये देवं व्यव-
 स्थितम् । दक्षिणामुखमाश्रित्य
 ज्ञानमुद्रां प्रकल्पयेत् ब्र. वि. ६४
 हंसपरमहंसयोरान्तरप्रणवः,
 तुरीयातीतावधूतयोर्ब्रह्म प्रणवः ना. प. ७।१०
 हंसपरमहंसयोर्ध्यानाधिकार-
 स्तुरीयातीतावधूतयोर्न ना. प. ७।९
 हंसपरमहंसयोर्मन्त्रं, तुरीया-
 तीतावधूतयोर्निदिध्यासः ना. प. ७।११
 हंसपरमहंसयोर्मन्त्रान्साचनं, तुरीया-
 तीतावधूतयोः सोऽहम्भावना ना. प. ७।९
 हंसप्रणवयोरभेदः पा. ब्र. ३
 हंसविद्यामिमां लब्ध्वा गुरुशुश्रूषया
 नरः ॥ आत्मानमात्मना साक्षा-
 द्ब्रह्म बुद्ध्वा सुनिश्चलम् । देह-
 जात्यादिसम्बन्धान्चार्णाश्रम-
 समन्विताम् ॥ वेदशास्त्राणि
 चान्यानि पदपांसुमिव त्यजेत् ब्र. वि. २८
 हंसविद्यामृते लोकं नास्ति
 नित्यत्वसाधनम् ब्र. वि. २६
 हंसस्य तपोलोकः परमहंसस्य सत्य-
 लोकः [ना. प. ५।९+ १ सं. सो. २।५९
 हंसस्य प्रार्थनाशिकालाः पा. ब्र. ३
 हंसस्याष्टगृहेष्वष्टकवर्णं परमहंसस्य
 पञ्चगृहेषु करपात्रं फलाहारो
 गोमुखं तुरीयातीतस्याजगरहृत्तिः ना. प. ५।७
 हंस हंस वदेद्वाक्यं प्राणिनां देह-
 माश्रितः । स प्राणापानयो-
 र्मेन्द्रियरजपेत्यभिधीयते ब्र. वि. ७८
 हंसहंसाय विद्यादे सोहं हंसाय
 धीमहि । तन्नो हंसः प्रचोदयात् बृह. १।४९

हंसहंसेति मन्त्रोऽयं सर्वैर्जीवैश्च
जप्यते । गुरुवाक्यात्सुमुम्नायां
विपरीतो भवेज्जपः यो.शि. १।१३१
हंसहंसेति यो ब्रूयाद्वंसो
ब्रह्मा हरिः शिवः ब्र. वि. ३४
हंसहंसेति सदा ध्यायन्सर्वेषु
देहेषु व्याप्य वर्तते हंसो. ४
हंसहंसेत्यमुं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा
[ध्या. वि. ६२+ यो. चू. ३१+ यो. शि. ६।५४
हंसः कं खं गं घं ङं महामुण्ड-
मालाधारिणि महाकालप्रिये
मां रक्ष रक्ष हंसषोढो. २
हंसः चं छं जं झं वं महात्रिपुर-
भैरवि पुस्तकाक्षमालाधारिणि
शत्रुमुखस्तम्भनं कुरु कुरु
स्वाहेति महापद्मे हंसषोढो. २
हंसः टं ठं डं ढं णं डां डीं डं
डाकिनि मां रक्ष रक्ष
स्वाहेत्यनाहते न्यसेतु हंसषोढो. २
हंसः तं थं दं धं नं महामारि
मारहारिणि हुं हुं दारिद्र्यं
हर हर स्वाहा हंसषोढो. २
हंसः परमहंसो भूत्वा स्वरूपातु-
सन्धानेन सर्वप्रपञ्चं विदित्वा
...प्रणवात्मकत्वेन देहत्यागं
करोति यः सोऽवधूतः तुरीया. ३
हंसः पं फं बं भं मं मार्जारि वीरा-
वलि ममालस्यं नाशय नाशय हंसषोढो. २
हंसः यं रं लं वं शं षं सं हं
छन्दोदरि मातर्महामङ्गलप्रिये
मम जाड्यं छेदय छेदय हंसषोढो. २
हंसः शक्तेरधिष्ठानं चराचरमिदं जगत् बराहो. ५।५५
हंसः शिला, प्रणय उपवीतम् परब्र. ६
हंसः शुचिषट्सुरन्तरिक्षसद्गोता कठो. ५।२
वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् नृ. पू. ३।६+
[महानो. ८।६+१२।३+ ब्र. मं. ४।४०।५
[ना. प. ५।४+ ग. प्र. ता. २।९+
हंसा एकवृण्डधराः शिलावर्जिता
यस्योपवीतधारिणः शिक्यकम्

ण्डलुहस्ता ग्रामैकरात्रवासिनो
नगरे तीर्थेषु पञ्चरात्रं वसन्त
एकरात्रद्विरात्रकृच्छ्रां द्वाय-
णादि चरन्त आत्मानं प्रार्थयन्ते आश्रमो. ४
हंसारंभकं ते विरजा भवन्ति व्या. वि. २४
(अथ) हंसा नाम ग्राम एकरात्रं
नगरे पञ्चरात्रं क्षेत्रे सप्तरात्रं
तदुपरि न वसेयुः-गोमयाहा-
रिणो नित्यं चान्द्रायणपरायणा
योगमार्गे मोक्षमेव प्रार्थयन्ते भिक्षुको. ३
(अथ ह) हंससा निशायामतिपेयुः छांदो. ४।१.२
हंसेति वर्णद्वयेनान्तःशिखोपवीतित्वं
निश्चित्य...चतुर्विंशतितत्त्वा-
पादनतन्तुकृत्वं नवतत्त्वमेकमेव परब्र. ५
हंसे तु सकृदेव स्यात्
परमहंसे न विद्यते (ज्ञानं) ना. प. ४।२३
हंसो जटाधारी त्रिपुण्ड्रोर्ध्वपुण्ड्र-
धारी असङ्कल्पमाधुकराज्ञाशी
कौपीनखंडतुंडधारी [ना.प.५।५+ १ सं.सो. २।१३
हंसो भगवाञ्छुचिरप्रतिरूपः चाक्षुषो. २
हंसो भगवाञ्छुचिररूपः प्रतिरूपः अक्षयु. २
हंसो विशोको अजरः पुराणौ
कृतीयमानो अहमस्मि नाम वा. मं. २४
हंसो हंसमभ्युवाद हो होऽयि
भल्लाक्ष भल्लाक्ष जानश्रुतेः
पौत्रायणस्य समं दिवा ज्योति-
राततं तन्मा प्रसाङ्गीः छांदो. ४।१।२
हानिरस्योपजायते भ. गी. २।६५
हानोपादानचेष्टादि व्यानकर्म शांडि. १।४।९
हारे त्वा शूद्र तवैव सह गोभि-
रस्त्विति छांदो. ४।२।३
हास्यनिष्ठीवनास्फोटमुखभाव्य-
विजृम्भणम् । पादप्रसारणं
गीतं न कुर्याद्गुरुसन्निधौ शिवो. ७।१३
हिक्का कासस्तथा श्वासः शिरः-
कर्णाक्षिवेदनाः । भवन्ति
विविधा रोगाः पवनव्यत्यय-
क्रमात् यो. चू. १।१०

हिङ्कार इति त्र्यक्षरं प्रस्तार इति	
त्र्यक्षरं तत्समम्	छांदो. २।१०।१
हितं मितं च भोक्तव्यं स्तोकं	
स्तोकमनेकधा	वराहो. ५।९
हिवा नाम नाड्यो द्वासप्ततिसह-	
स्राणि हृदयात्पुरीततमभि-	
प्रतिष्ठन्ते ताभिः प्रत्यवसृप्य	
पुरीतति शेते (आत्मा)	बृह. २।१।१९
हितानाम हृदयस्य नाड्यो हृदयात्	
पुरीततमभिप्रतन्वन्ति	कौ. त. ४।१९
हिवाहितं मनोरामं वचः शोकावहं	
तु यत् । श्रुत्वाऽपि न शृणोतीव	
बाधिरः स प्रकीर्तितः	ना. प. ३।६७
हित्वा पापमवाप्स्यसि	भ. गी. २।३३
हिस्वेकारं तुरीयस्वरं सर्वादौ	
सूर्याचन्द्रमस्केन कामेश्वर्ये-	
वागस्त्यसंज्ञा	त्रि. ता. १।१६
हिरण्यं पुरुषं ज्योतीरूपं तपन्तम्	चाक्षुषो. ४
हिरण्यं यस्य विभाति सर्वं	
ज्योमान्तरे रश्मिमांशुनाभिः	एका. उ. ८
हिरण्यं वेदविदां वरिष्ठं यमञ्जरे	
ब्रह्मविदः स्तुवन्ति	एका. उ. १०
हिरण्यं सौम्यतनुं स्वभक्ताया-	
भयप्रदम्	गोपालो. २।२३
हिरण्यः पुरुष एकहस्तः सः	बृह. ४।३।११, १२
हिरण्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यो ददर्श	१ ऐत. १।३।१
हिरण्यो अरणी याभ्यां	
निर्मन्थतामश्विनौ	बृह. ६।४।२२
हिरण्येन पात्रेण सत्यस्यापिहितं	
मुखम् । तत्त्वं पूषन्पावृणु सत्य-	
धर्माय वृष्टये [बृह. ५।१५।१+	मैत्रा. ६।३५
हिरण्ये परे कोशे विरजं ब्रह्म	
निष्कलम् । तच्छुभ्रं ज्योतिषां	
ज्योतिस्तथात्मविदो विदुः	मुण्ड. २।२।९
हिरण्यो ह वा अमुष्मिँल्लोके	
सम्भवति	१ ऐत. १।३।१
हिरण्योऽहं शिवरूपमस्मि	
[कैव. २०	+२ बिल्बो. १३
हिरण्यगर्भस्तदाज्ञया सूक्ष्माण्य-	
पालयन्	पैङ्गलो. १।५

हिरण्यगर्भस्त्रिरूप ईश्वरव्यक्त-	
चैतन्यः	नृसिंहो. ९।४
हिरण्यगर्भस्तैजसः सूक्ष्मश्च उकारः	यो. चू. ७५
हिरण्यगर्भः स्थूलोऽन्तर्द्वितीयः	
पाद उच्यते	ना. प. ८।१३
हिरण्यगर्भस्य कारणं परमात्मान-	
मण्डपरिपालकनारायणमभ्येति	त्रि. म. ना. ३।४
हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं	
स (सा) नो बुद्ध्या शुभया	
संयुनक्तु [श्वेताश्व. ३।४+	गुह्यका. ५६
हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानम्	
स नो देवः शुभया स्मृत्या	
संयुनक्तु	महाना. ८।१३
हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानं स	
नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु	श्वेताश्व. ४।१२
हिरण्यगर्भः स्थूलोऽन्तर्द्वितीयः	
पाद उच्यते	ना. प. ८।१४
हिरण्यगर्भादीनहं जायमानान्	
पश्यामि	भस्मजा. २।५
हिरण्यगर्भाधिष्ठितविक्षेपशक्ति-	
तस्तमोद्विक्ताऽहङ्काराभिधा	
स्थूलशक्तिरासीत्	पैङ्गलो. १।३
हिरण्यगर्भो भगवानेष च्छन्दसि	
सुष्ठुतः । सोऽहं योगरतिर्ब्रह्म-	
न्योगशास्त्रेषु शब्दितः	ना. महो. ५८
हिरण्यगर्भो लोकादिश्चतुर्वक्त्रो	
निरुक्तगः । ब्रह्मा सनातनो	
देवो मम ब्रह्मर्यचिन्तकः	ना. महो. ३९
हिरण्यज्योतिर्यश्मिन्मयात्माऽधि-	
क्षयंति भुवनानि विश्वा	सुबालो. २।१
हिरण्यज्योतिः शरीरस्य मध्ये	चिन्त्यु. ११।८
हिरण्यद्वयं द्वौ बभसोऽनसुरि-	
मैहान्तमस्य महिमानमाहुः	छांदो. ४।३।७
हिरण्यबाहुं हिरण्यरूपं हिरण्यवर्णं	
हिरण्यनिधिमद्वैतं... भगवन्तं	
शिवं प्रणम्य मुहुर्मुहुरभ्यर्च्य...	
कृताञ्जलिपुटः पप्रच्छ	भस्मजा. १।१
हिरण्यबाहुं हिरण्यवर्णं हिरण्यरूपं	
पशुपाशविमोचकं पुरुषं कृष्ण-	

पिङ्गलमूर्ध्वरेतं विरूपाक्षं...
 रुद्रसूक्तैरभिषिच्य... भस्मजा. २।४
 हिरण्ययोवेतसोमव्यवसायम् [त्रिसु. ३ महाना. १२।३
 हिरण्यवर्णः शकुनो हृद्यादित्ये
 प्रतिष्ठितः मैत्रा. ६।३४
 हिरण्यवर्णी हरिणीं सुवर्णरजत-
 सज्जाम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं
 रुक्ष्मीं जातवेदो ममावह श्री. सू. १
 [ऋ. खि. ५।८७।१
 हिरण्यवर्णो हिरण्यश्मशुरानखा-
 प्रेभ्यो दीप्यमान इव आपे. ६।२
 हिरण्यशृङ्गं वरुणं प्रपद्ये तीर्थं मे
 देहि याचितः महाना. ५।१५
 (सत्र) हिंसा नाम मनोवाक्या-
 कर्मभिः सर्वभूतेषु सर्वदा
 क्लेशजननम् शां. १।१।३
 दीनाक्षपानवक्त्रः स्यान्नीचशय्या-
 सनो गुरोः । न यथेष्टश्च सन्तिष्ठे-
 स्कलहं च विवर्जयेत् शिवो. ७।१४
 हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेतो वृणीते
 हुतमन्नं समं नयति कठो. २।१
 (समुन्नयति मा. पा.) प्रभो. ३।५
 हुतमहुतं दत्तमदत्तं सर्वमसर्वं
 विश्वमविश्वं कृतमकृतं परमपरं
 परायणं च त्वम् [अशिरः. ३।१+ चतुर्वे. ८
 हुताशनश्चापि हि सर्वभक्षः ...
 हृ इत्येकमक्षरमभिहरन्ति... (मा. पा.) बृ. ह. ५।३।१
 हृत्पदं वेदिकातत्रलिङ्गमोङ्कारमिष्यते शिवो. १।२४
 हृत्पदकर्णिकामध्ये स्थिरदीप-
 निभाकृतिस् । अङ्गुष्ठमात्र-
 मेतलं व्याधेदोङ्कारमीश्वरम् श्या. वि. १९
 हृत्पदमध्ये सर्वं यत्तत्प्रज्ञाने
 प्रतिष्ठितम् आ. प्र. १
 हृत्पुण्डरीकमध्यस्थं चैतन्यज्योति-
 रव्ययम् त्रि. भा. २।१५६
 हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसम-
 प्रभाम् । माशाङ्गुशायरां सोम्यां
 पराशमयदस्वकाम् ॥ त्रिनेत्रां
 रजसनां भक्तकामदुष्टां भजे १ देव्यु. १८

हृत्पुण्डरीकमध्ये तु भावयेत्परमे-
 श्वरम् । साक्षिणं बुद्धिवृत्तस्य
 परमप्रेमगोचरम् मैत्रे. १।१३
 हृत्पुण्डरीकं विरजं विशुद्धं
 विचिन्त्य मध्ये विशदं विशोकम् कै. ६
 हृत्स्थं ज्ञानासिनाऽऽत्मनः भ. गी. ४।४२
 हृदयमन्थिरस्तित्वे छिद्यते ब्रह्म-
 चक्रम् । संशये समनुप्राप्ते
 ब्रह्मनिश्चयमाश्रयेत् ते. वि. ६।१०१
 हृदयमन्थिहीनोऽस्मि हृदया-
 भोजमभ्यगाः मैत्रे. ३।१७
 हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं च यद्वै
 वाङ्माभविष्यन्न धर्मो नाधर्मो
 व्यङ्गापयिष्यत् छांदो. ७।२।१
 हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं चात्रं च रसं
 चेमं च लोकममुं च विज्ञाने-
 नैव विजानाति छांदो. ७।७।१
 हृदयमेव सन्नाडिति होवाच
 बृह. ४।१।७
 हृदयमेवान्ववक्रामति
 बृह. ४।४।१
 हृदयमेवायतनमाकाशः प्रतिष्ठा
 बृह. ४।१।७
 हृदयस्त्वं भूतभव्यः पुराणो हेको
 वीरो वेदगुणैकवेद्यः २ रुद्रो. ६०
 हृदयस्य दश चिह्नद्राणि भवन्ति
 येषु प्राणाः प्रतिष्ठिताः सुबालो. ४।१
 हृदयस्य मध्ये लोहितं मांसपिण्डं,
 यस्मिस्तदहरं पुण्डरीकं कुमुद-
 मिवानेकधा विकसितं सुबालो. ४।१
 हृदयस्य रेतो मनः १ ऐत. १।३।१
 हृदयं कुण्डली भस्म रुद्राक्ष-
 गणदर्शनम् मुक्तिको. १।३७
 हृदयं न हि सत्यं जानाति हृदये
 होव सत्यं प्रतिष्ठितं भवति बृह. ३।९।२३
 हृदयं निरमिद्यत २ ऐत. १।४
 हृदयं निर्मलं कृत्वा चिन्तयित्वा-
 उप्यनामयम् । अहमेव परं
 सर्वमिति पश्येत्परं सुखम् वैङ्गलो. ४।१
 हृदयं यूपः (यज्ञस्य) महाना. १८।१
 हृदयं वै ब्रह्मेति बृह. ४।१।७
 हृदयं ब्रह्मेत्याहणेयः १ ऐत. १।४।१

हृदयं विश्वमस्य
हृदयं वै सन्नाद् परमं ब्रह्म नैन-
हृदयं जहाति
हृदयं वै सन्नाद् सर्वेषां भूताना-
मायतनम्
हृदयं वै सन्नाद् सर्वेषां भूतानां प्रतिष्ठा
हृदयं छष्टकपालानि
हृदयाकाशे महोज्ज्वलाज्ञानरूपा भवति
हृदयात्सम्परित्यज्य सर्ववासन-
पङ्कयः । यस्तिष्ठति गतक्यप्रः
स मुक्तः परमेश्वरः
हृदयात्सर्वमिदं जायते
हृदयादायता तावच्चक्षुष्यस्मिन्
प्रतिष्ठिता । सारणी सा तयो-
र्नाडी द्वयोरेका द्विधा सती
हृदयादिकण्ठपर्यन्तं सस्वनं
नासाभ्यां शनैः पवनमाकृष्य
यथाशक्तिः कुम्भयित्वा इडया
विरेच्य गच्छंस्तिष्ठन्कुर्यात् । तेन
श्लेष्महरं जठराग्निवर्धनं भवति
हृदयादिव स्तोमो हृदयादिव निर्मित
इति हृदये त्वेव रेतः प्रतिष्ठितं
भवति
हृदयाद्दृढं मृत्योः
हृदयानि व्यदारयत्
हृदयान्मनः (निरभिद्यत)
हृदयाम्बुरुहासीनं ध्यायेद्वा
विष्णुरुपिणम्
हृदयेन हि रूपाणि जानाति
हृदयेन हि ब्रह्मा जानाति हृदये
होव ब्रह्मा प्रतिष्ठिता भवति
हृदयेनात्तसर्वेहो मुक्त एवोत्तमाशयः
हृदये व्यज्यते घोषो गर्जत्पर्जन्य-
सज्जिमः । तत्र स्थिता सुरेशान
मह्यमेत्यभिधीयते
हृदये होव रूपाणि प्रतिष्ठितानि
भवन्ति
हृदये होव रेतः प्रतिष्ठितम्

मुण्ड. २।१।४

बृ. च. ४।१।७

बृह. ४।१।७

बृह. ४।१।७

निरुक्तो. २।१

शांडि. १।४।५

महो. ६।८

सुबालो. १।५

मैत्रा. ७।११

शांडि. १।७।१४

बृह. ३।९।२२

चिर्यु. १।५।२

म. गी. १।१९

२ ऐत. १।४

त्रि. ब्रा. १।५३

बृह. ३।९।२०

बृह. ३।९।२१

मुक्तिको. २।१९

यो. वि. ३।४

बृह. ३।९।२०

बृह. ३।९।२२

हृदये होव ब्रह्मा प्रतिष्ठिता भवति
हृदये होव सत्यं प्रतिष्ठितं भवति
हृदये होव सन्नाद् सर्वाणि भूतानि
प्रतिष्ठितानि भवन्ति
हृदयोऽर्धभागे चित्तसंयमात्
महलोकज्ञानम्
हृदाकाशे चिदादित्यः सदा भासति
भासति । नास्तमेति न चोदेति
कथं सन्ध्यामुपास्महे
हृदा पश्यन्ति मनसा मनीषिणः
हृदा मनीषा मनसाऽभिकृता ये तां
विदुरमृतास्ते भवन्ति
हृदा मनीषा मनसाऽभिकृता य एनां
विदुरमृतास्ते भवन्ति
हृदा मनीषी मनसाऽभिकृता य
(एवं एनं-विदुः) एतद्विदु-
रमृतास्ते भवन्ति [कठो. ६।९+
+४।१७+ म. ना. १।११+
हृदासन-नाभि-कण्ठ-सर्वाङ्गानि
स्थानानि
हृदा हृदिस्थं मनसा य एनमेवं
विदुरमृतास्ते भवन्ति
हृदि चित्तस्य संयमात्सर्वलोकज्ञानम्
हृदि दक्षिणाग्निः (शारीर्यज्ञस्य)
हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषेति
उपेन... [बृ. जा. १।२+
हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणाः
प्रतिष्ठिताः । हृदि प्राणः स्थितो
निस्थमपानो गुदमण्डले
हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणे
प्रतिष्ठिताः । हृदयं पुरुषोऽसि
त्वं तिस्रो मात्राः परस्व सः
हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि
प्राणाः प्रतिष्ठिताः । हृदि
प्राणाश्च ज्योतिश्च त्रिबुवस्तत्र
य उद्विदुरिति
हृदि सर्वस्य चिष्ठितम्

बृह. ३।९।२१

बृह. ३।९।२३

बृह. ४।१।७

शांडि. १।७।५२

मैत्रे. २।१४

चिर्यु. १।१।११

गुह्यका. ६०

गुह्यका. ६३

श्वेताश्व. ३।१३

त्रि. म. ना. ६।४

पैङ्गलो. २।३

श्वेताश्व. ४।२०

शांडि. १।७।५२

गर्भो. ११

नृ. पू. १।१

यो. चू. २१

२ ब्रह्मो. ५४

ब्रह्मो. ४

म. गी. ३।१८

हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणाः
प्रतिष्ठिताः । हृदि त्वमसि
यो नित्यं तिस्रो मात्राः परस्तु
सः [अ. शिरः. ३।४+

हृदिस्थाने अष्टदलपद्मं वर्तते
हृदि स्थाने स्थितं पद्मं तस्य
वक्त्रमधोमुखम्

हृदिस्थाने स्थितं पद्मं तच्च पैद्य-
मधोमुखम् । ऊर्ध्वनालमधो
विन्दुस्तस्य मध्ये स्थितं मनः
हृदि शेष आत्मा । अत्रैतदेकशतं
नाडीनां

हृदिन्द्रियाणि मनसा समिदृष्य
ब्रह्मोद्भूतेन प्रतरैत विद्वान्
हृदयेऽर्जुन तिष्ठति

हृद्धारं वायुद्वारं च मूर्ध्नि द्वारमथा-
परम् । मोक्षद्वारं विलं चैव
सुषिरं मण्डलं विदुः

हृदन्तःकरणं ज्ञेयं शिवस्यायनं
परम् । हृत्पद्मं वेदिका तत्र
लिङ्गमोङ्कारमिष्यते

हृद्याकाशमयं कोशमानन्दं परमा-
लम् । स्वं योगश्च ततोऽस्माकं
तैजश्चैवाभिसूर्ययोः

हृद्याकाशस्तेजोमयौऽमृतमयः
पुरुषोऽयमेव सः योऽयमात्मेद-
ममृतमिदं ब्रह्मेदं सर्वम्

हृद्याकाशं परं कोशं दिव्योऽय-
मात्मा स्वपिति । यत्र सुप्तो
न कञ्चन कर्म कामयते

न कञ्चन स्वप्नं पश्यति
हृद्यादित्यमरीचीनां पदं वण्णवतिः
हृदये तिष्ठ फलनारहितः क्रिया तु

हृदयैककर्तृपदमेत्य शमोदितश्रीः

हृदोर्गं मम सूर्य हरिमाणं च
माक्षि [सूर्यता. २।१+

हृदये कर्मधरमभिहरन्त्यस्मै
स्वात्मानं च य एवं वै

बटुको. १८

व्या. वि. ६४

१ यो. त. १३७

२ योगत. ९

प्रभो. ३।६

श्वेताश्व. २।८

म. गी. १८।६१

अ. ना. २७

शिबो. १।२४

मैत्रा. ६।२७

बृह. २।५।१०

सुबालो. ४।४

पा. ब्र. ४

अ. पू. ४।९१

अ. मं. १।५०।११

बृह. ५।३।१

हृषीकेशं तदा वाक्यं

हृष्टरोमा धनञ्जयः

हृष्यामि च पुनः पुनः

हृष्यामि च मुहुर्मुहुः

हे कृष्ण हे यादव हे सखेति

हेतुद्वयं हि चित्तस्य वासना च

समीरणः । तयोर्विनष्ट एकस्मि-

स्तद्वावपि विनश्यति

हेतुनाऽनेन कौन्तेय

हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः

हेतुर्न जायतेऽनादेः फलं चापि

स्वभावतः । आदिर्न विद्यते

यस्य तस्य ह्यादिर्न विद्यते

हेतुस्तु सुखदुःखस्य योगो दृष्ट

अतुर्विवः

हेतुः प्रकृतिरुच्यते

हेतोरादिः फलं येषामादिर्हेतुः

फलस्य च । हेतोः फलस्य

चानादिः कथं तैरुपवर्ण्यते

हेतोरादिः फलं येषामादिर्हेतुः

फलस्य च । तथा जन्म भवेत्तेषां

पुत्राज्जन्म पितुर्यथा

हेतोः किं तु महीकृते

हेमप्रकृत्यामिन्दुस्वप्नान्तमौलिं

शङ्खारिष्टामीनिहस्तां त्रिने-

त्राम् । हेमवज्रस्थां पीतवस्त्रां

प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां

नमामि

(अथ ह) हेममासन्धं प्राण-

मूचुस्त्वं न उद्रायेति, तथेति ।

तेभ्य एव प्राण उद्गायत

हेमभया द्विभुजया सर्वालङ्कृतया

चिता । श्लिष्टः कमलधारिण्या

पुष्टः कोसलजात्मजः

हेरम्बतस्वे परमात्मसारे नो वै

योगाज्ञैव तपोबलेन । नैवायुध-

प्रभावतो महेशि दग्धं पुरा

त्रिपुरं देवयोगात्

अ. गी. १।२१

अ. गी. १।११४

अ. गी. १।८।७७

अ. गी. १।८।७६

अ. गी. १।१४१

योगकुं. १।१

अ. गी. ९।१०

अ. गी. १३।५

अ. शां. २३

आयुर्वे. २

अ. गी. १५।३१

अ. शां. १४

अ. शां. १५

अ. गी. १३।५

वनकु. २

बृह. १।३।७

रा. पू. ४।९

हेरम्बो. ३

हरिण्यो गोपवेषमभ्राभं

कल्पद्रुमाश्रितम्

गो. पू. १५

होता ऋक्षं साममयमुद्राता..

कौ. त. २६

होता भोक्ता हविर्मन्त्रो यज्ञो विष्णुः

प्रजापतिः । सर्वः कश्चित्प्रभुः

साक्षी योऽमुष्मिन्भाति मण्डले

मैत्रा. ६१६

होतृषदत्ताद्यैवापि दुरुद्गीथ-

मनुसमाहरति

छांदो. १५५

होत्रत्विजाऽग्निना वाचा, वाग्वै यज्ञस्य

होता, तद्येयं वाक्स्तोऽयमग्निः स

होता स मुक्तिः साऽतिमुक्तिः

बृह. ३११३

होमशेषं तु निर्वृत्य पूर्णपात्रोदकं

तथा । पूर्णमसीति यजुषा

जलेनान्येन बृंहयेत्

बृ. जा. ३१७

ह्रस्वो दहति पापानि दीर्घः सम्पत्प्रदो

ऽव्ययः । अर्धमात्रा समायुक्तः

प्रणवो मोक्षदायकः

ध्या. वि. १७

(तस्य) ह्यादुनयो विस्फुलिङ्गाः

[छां. उ. ५५१५

बृह. ६१२१०

हियते ह्यवशोऽपि सः

अ. गी. ६१४४

द्विया देयम् । मिया देयम् ।

संविदा देयम्

तैत्ति. ११११३

हीनाम वेदलौकिकमार्गकुतिसत्-

कर्मणि लज्जा

शांडि. ११२११

(श्री-) हीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ ।

अहोरात्रे पार्श्वे । नक्षत्राणि

रूपम् । अश्विनौ व्यात्तस

जिज्ञ्यु. १३३३

[+वा. सं. ३११२२+

तै.आ. ३११३३

ही आनो दित्रो बृहतः पर्वतादा

सरस्वती यजतागन्तु यज्ञम्

सरस्व. ६

ही पद्यावत्यन्नपूर्णं माहेश्वरी स्वाहा

त्रि.म.ना. ७१९

हौं (हसौं) ह्यग्नीवायं नमो

हौं (हसौम्)

त्रि. म. ना. ७१९

हयामि प्रां ब्रह्मणा तूर्तमेतम्

विष्णु. १४१३

अयं कोश आमोदद्वैः पूर्णमात्रो मनोहारिसिद्धान्तवाक्यैः श्रुतीनाम् ।
ददात्वात्मतोषं विपश्चिद्वरेभ्यो यथा हेमकुम्भोऽमरेभ्योऽधृतासः ॥

इत्युपनिषद्वाक्यमहाकोशस्योत्तरार्धः समाप्तः ।

*परिशिष्टम् ।

ॐ

ॐ कारं ज्वलद्रूपं मन्मस्तकम् ॐ क्रतो स्मरं कृतं स्मरं	२ तारो. १ ईशा. १७	ॐ परोरजसे सावदोम् ॐ पृथिवी वान्रमापोऽन्नादाः ॐ भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टा- क्षराणि [बृ. ५।१४।१+	त्रि.म.ना. ७।११ सुबालो. १४।१ गायत्र्यु. १ २ प्रणवो. १८
ॐ खं ब्रह्म खं पुराणं वायुरं खंमिति	बृह. ५।१।१	ॐ भूर्भुवः सुवरिति व्याहृतयः ॐ योऽसाविन्द्रियात्मा गोपाल ॐ तत्सत् भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः	गोपालो. ३।१३ गोपालो. ३।१५ गोपालो. ३।१२
ॐ चत्वारिंशत्संस्कारसम्पन्नः सर्वतो विरक्तः...साधन- चतुष्टयसम्पन्न एव सन्नयस्तुमर्हति	१ सं. सो. २।१	ॐ योऽसावुत्तमपुरुषो गोपाल ॐ तत्सत् ॐ योऽसौ प्रधानात्मा गोपाल ॐ तत्सत्	गोपालो. ३।१३ गोपालो. ३।१५ गोपालो. ३।१२
ॐ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिरुरीय- तुरीयातीतोऽन्तर्यामी	गोपालो. ३।१८	ॐ योऽसौ ब्रह्म परं वै ब्रह्म ॐ तत्सत् ॐ योऽसौ भूतात्मा गोपाल ॐ तत्सत्	गोपालो. ३।१३ गोपालो. ३।१५ गोपालो. ३।१४
ॐ जानश्रुतिर्ह पौत्रायणः श्रद्धा- देवो बहुदायी बहुपाक्य आस	छांदो. ४।१।१	ॐ योऽसौ सर्वभूतात्मा गोपाल ॐ तत्सत्	गोपालो. ३।१७
ॐ तत्सद्ब्रह्मतद्रूपं प्रकृतिपरं गगनाभं ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मै प्राणात्मने नमो नमः	२ तारो. १ गोपालो. ३।२	ॐ यो ह वै श्रीवेङ्कटेश्वरो देवो भगवा- न्भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः ॐ यो ह वै श्रीवेङ्कटेश्वरो देवो भगवान्यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः	व्यङ्कटेशो. ३ व्यङ्कटेशो. ३
ॐ नयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रिय- मवा ज्ञायो नाधमानाः [चाक्षुषो. ५+ क्र. मं. [+ साम. १।३।१९+	म. ना. १६।७ १०।७३।११ तै.आ. ४।४२।३	ॐ यो ह वै श्रीवेङ्कटेश्वरो देवो भगवान्यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः	व्यङ्कटेशो. ३
ॐ देवा ह वै सत्यं लोकमायन् ॐ नमो विश्वरूपाय विश्व- स्थित्यन्तदेवैवे	नृ. षट्च. १ गो. पू. ४।४	ॐ यो ह वै श्रीवेङ्कटेश्वरो देवो भगवान्यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः	व्यङ्कटेशो. ३
ॐ नमोऽस्तु शर्वं शम्भो त्रिनेत्र चारुगात्र	२ शिवो. १	ॐ यो ह वै श्रीवेङ्कटेश्वरो देवो भगवान्यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः	व्यङ्कटेशो. ३
ॐ नित्यं शुद्धं बुद्धं निर्विकल्पं तिरास्यातमनादिनिधनमेकं ...सर्वदाऽनवच्छिन्नं परं ब्रह्म	यो. चू. ७२	ॐ श्रीगुरुः सर्वकारणभूता शक्तिः	भावनो. २
ॐ नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि । तन्नः सिंहः प्रचोदयात्	नृ. पू. ४।३		

अकार उकारमध्ये ब्रह्म परिपूर्ण अद्वैतो. ५
 अग्रावाज्यस्य हुत्वा मन्ये
 सम्पातमवनयेत् छांदो. ५।२।४
 अग्राह्यः सर्वभूतेषु सर्वेन्द्रिय-
 गुणातिगः २ रुद्रो. ४५
 अग्न्यश्च धाम्नां त्वमेव ऋग्भिः
 सुभाण्ड इज्योऽसि विष्णू. ५
 अज त्वन्नाभौ जगदेतद्विचित्रं मध्ये-
 ऽपि यस्मिन्विश्वं भुवनं च त्वमेव २ रुद्रो. ७
 अजस्त्वेको जुषमाणोऽनुशेषे जहा-
 त्येनां भुक्तभोगामजस्त्वम् २ रुद्रो. ४७
 अजां मायां लोहितशुक्लकृष्णां
 बहूनस्माज्जनयन्तीं सरूपाम् २ रुद्रो. ४७
 अजो नित्यः शाश्वतश्च निर्गुणो
 निष्कलस्तथा ना. म. १२
 अणोरणीयान्महतो महीयानात्मा
 गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः वे. सारो. २४
 अतिरात्रामिहोत्रभस्मनाग्नेर्भसित-
 मिदं... प्रणवेनोद्धूलनं कुर्यात् वासु. १६
 अत्याश्रमस्थाः परिमुच्यन्ति धीरा-
 स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् वे. सारो. ३
 अत्याश्रमस्थो हि हिरण्यगर्भः वे. सारो. ५
 अथ परमात्मा नाम यथाक्षर-
 मुपासनीयः आत्मोप. ७
 अथ येनैताः शिरा अनुव्याता
 एष वाव स व्यानः मैत्रा. २।७
 अथान्तरात्मा नाम पृथिव्याप...
 कर्मविशेषणं करोति आत्मोप. २
 अद्वैतं कथितं येन पुरुषोऽमूढो भवति अद्वैतो. ५
 अन्यत्तपन्तु हेतयो घोररूपा भक्तेषु
 त्वं शिवो भव शत्रूनस्माकं जहि. २ रुद्रो. ६९
 अदीनाः स्याम शरदः शतं मयश्च
 शरदः शतात् [प्रवर्ग्या. २४+ वा. सं. ३६।२४
 अयमग्निर्वैश्वानरो योऽयमन्तः पुरुषः वे. पू. ३।७
 अयमेव परा काष्ठा स ब्रह्म स
 शिवः स्वयम् २ देव्यु. ३५
 अयं वाव खरस्य प्रतिनिधिः वे. पू. ४।८
 अरजोऽयमसृतो वै विशोकः २ देव्यु. २७

अवधूतानां परमहंसानां शीतोष्ण-
 सुखदुःखमानावमानसहनं बहु-
 जन्मान्तरेषु योगसिद्धानाम् भक्तियो. १
 अवस्थातीतः पर आत्मा त्वमेव २ रुद्रो. ६६
 अव्यक्तैकाक्षरं पूर्णा सूर्याक्ष्य-
 ध्यात्मकुण्डिका मुक्तिको. १।३६
 अस्मिन्मूर्तिश्चतुर्थी या साऽसृज-
 च्छेषमव्ययम् । स हि सङ्कर्षणः
 प्रोक्तः... अनिरुद्धात्तथा ब्रह्मा
 तन्नाभिकमलोद्भवः । ब्रह्मणः
 सर्वभूतानि चराणि स्थावराणि च ना. म. ६०
 अहमेव वात इव प्रवाभ्यारभमाणा
 भुवनानि विश्वा [२ देव्यु. ६+क्र. मं. १०।१२५।८
 अहमेव स्वयमिदं ददामि
 ज्ञानमैश्वर्यम् (देवी) २ देव्यु. ५
 अहमेवाखिलाराध्या ब्रह्मं
 ध्येयाऽखिलैरपि (देवी) २ देव्यु. ३
 अहं दधामि द्रविणं हविष्मते
 (सुप्राव्ये) सुवीर्याय सुन्वते
 [२ देव्यु. ७+क्र. मं. १०।१२५।२
 अहं विश्वं भुवनं चेतयामि २ देव्यु. ६
 अहं विश्वेभिः (रुद्रेभिः)र्वसुभिः-श्वराभ्यह-
 मादित्यैरुत विश्वदेवैः [२ देव्यु. ६+क्र. मं. १०।१२५।१
 अहं सर्वत्रगो ब्रह्मन् भूत-
 ग्रामान्तरात्मकः ना. म. ३७
 अहं हयशिरा भूत्वा समुद्रे पश्चि-
 मोत्तरे । पिबामि सुदुतं हव्यं
 कव्यं च श्रद्धयाऽन्वितम् ना. म. ४९
 अहं हि जीवसंज्ञातो मयि जीवः
 समाहितः ना. म. ३६
 अहं हि पुरुषो ज्ञेयो निष्क्रियः
 पञ्चविशकः । निर्गुणो निष्कल-
 श्रेव निर्द्वन्द्वो निष्परिग्रहः ना. म. ३३
 अहानि ह्ये भवतु नः शश्व रात्रीः
 प्रतिवीर्यातां [प्रवर्ग्या. ११ वा. सं. ३६।११
 आपो वा इदमासन् सलिलमेव
 आपो हि ह्य भयोभुवः... प्रवर्ग्या. १४
 [वा. सं. ३६।१४+ ना. मं. १०।१५।१

आर्जवं नाम मनोवाङ्मायकर्मणां
विहिताविहितेषु जनेषु...

एकरूपत्वम्

शांडि. १।१।३

आवहन्ती वितन्वाना कुर्वाणा

चौरमात्मनः । वासांसि मम

गावश्चाग्नपाने च सर्वदा ।

तै.आ. ७।१४।१

ततो मे श्रियमावह

वे. सारो. ३१

आश्रमेष्वेवावस्थितस्तपस्वी मुच्यते

वे. पू. ४।८

आह्लादिनी गरीयसीयमन्तरे भूत्वा

राधा कृष्णेनाराधिता

राधाकृष्णमाराधयत्

राधिको. ४

इदं सार्वकामिकं मोक्षद्वारं यद्योगिन

उपदिशन्ति

वेङ्कटो. ३

इन्द्रो विश्वस्य राजति

[प्रवर्ग्या. ८+

वा. सं. ३६।८

ईशानो भगवो भगवान् रुद्रो

महादेवस्त्वमीश्वरः । परं ब्रह्म

परं धाम परः पारः परायणः

२ रुद्रो. ५६

उभयात्मको विराट् प्रणवः

ना. प. ८।१

उत्पन्न एव भवति शरीरं

चैष्टयन् प्रसुः

ना. म. २४

कर्त्तुं वाचं प्रपद्ये [प्रवर्ग्या. १+

वा. सं. ३६।१

कर्त्तुं अक्षरे परमे व्योमन्

यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः ।

यस्तं न वेद किमुचा करिष्यति..

वेङ्कटो. ३

कर्तुं सत्यं नामरूपातिगत्स्वं

२ रुद्रो. ६७

एकमेवाद्वितीयं यदुरोर्वाक्येन

निश्चितम् । एतदेकान्तमित्युक्तं

न मठो न वनान्तरम्

मैत्रे. २।१५

एको रुद्रस्त्वं हि सर्वस्य कर्त्ता..

२ रुद्रो. ५१

एतस्मिन् बाव सर्ववरिष्ठः श्रयते

उत्तमपुरुषः

वे. पू. ३।५

एतत्त्वया न विज्ञेयं रूपवानिति

दृश्यते । इच्छन्मुहूर्ताभ्ययेय-

मीशोऽहं जगतो गुरुः

ना. म. ३४

एतद्वसुतमभयमेतत्परायणमेतद्रुद्रोति

वे. पू. ३।३

एतद्वेषेवाधरं ब्रह्म

वे. सारो. १५

एतद्विराट्कं मनुषुः मज्जलं सत्त्वं

मिन्दुस्वरूपं महाकारस्वरूपं

व्योतिर्मयं विद्धि

२ सारो. १

एनमात्मानं गूढमनुप्रविष्टं

२ देव्यु. ८

एवं विदित्वा परमात्मलिङ्गमस्या-

श्रमस्थाः परिमुच्यन्ति सर्वे

वे. सारो. ४१

एवं स्थित्वा संसृतौ वर्तमानः

संसारीव सुखदुःखादिभोक्ता ।

उन्मत्तमूकबधिरान्धवत्सदा

विभाव्यमानो मूढधीभिर्विमुक्तः

निलेंपो. १३

एष आत्मा तपसाऽऽलोक-

नीयो नान्यैर्धर्मैः..

२ देव्यु. १९

एष आत्माऽपहृत पाप्मा विरजो

विशोको विमृत्युरजिघृत्सो-

ऽपिपासः

२ देव्यु. २५

एष आदित्ये तपति तेजसेद्धः

२ देव्यु. २८

एष एव हि भूतात्मा भूते

भूते व्यवस्थितः

२ देव्यु. १२

एष धाता विधाता च स्वराट्

सम्प्राट् प्रजापतिः

२ देव्यु. १०

एष द्विद्यो देव एकः पुराणः

२ देव्यु. ११

एष देवः शीर्यमाणैर्न शीर्णः

२ देव्यु. २६

एष देवैर्वेदसङ्गैश्च विप्रैरभिष्टुतो-

ऽप्रतर्क्यो हीन्द्रियैश्च

२ देव्यु. २७

एष ब्रह्मैव एवेन्द्र एष सर्वं चराचरम्

२ देव्यु. २५

एष भूतपतिरेव सेतुर्विहरणो...

२ देव्यु. ९

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतंभूतं..

२ देव्यु. ९

एषोऽनन्तश्चेष्टते देहजालैर्यथो-

र्णनाभिः सृजते तन्तुजालम्..

२ देव्यु. २८

एषोऽनन्तो महिमाधार ईशो भूमा..

२ देव्यु. २४

एषोऽन्तरादित्ये ह्यमृतो दृश्यते

हिरण्यमयः पुरुषः शिवः

२ देव्यु. १०

एषोऽन्तर्याम्यमृतः पुराणः सदा

जनानां हृदये सन्निविष्टः

२ देव्यु. ८

एषोऽशरीरो विश्वकर्त्ता गुणेशः

२ देव्यु. २६

एषो हि देवः प्रदिशो नु सर्वः पूर्वो

हि जातः स उ गर्भेऽनन्तः । स

एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्य-

कुलस्तिष्ठति विश्वतोमुखः

श्रुतिर. ४.

ओङ्कारः प्रणवो व्यापी ह्यनन्तो-

ऽनन्तविक्रमः । तारं सूक्ष्मं

वैद्युतरत्नं, शुद्धं सर्वशरीरगम्

२ रुद्रो. १५

ओदनं तव भूतेश ब्रह्माक्षत्रं जगत्तथा २ रुद्रो. ५३
 कया त्वं न ऊत्यामि प्रमन्दसे
 वृषन् [प्रवर्ग्या. ७+ वा. सं. ३६।७
 कयान्निश्चित्रं वा भुवद्वती सदावृधः
 सखा । कया शचिष्ठया वृता
 [प्रवर्ग्या. ४+वा. सं. ३६।४ ऋ. मं. ४।३१।१
 कविः प्रधानो रसवर्जोऽयमात्मा २ देव्यु. २४
 कस्त्वा सत्यो मदानां म० हिष्ठो
 मरसदन्वसः । टडा(ह्रु)चिद्वारुजे.. प्रवर्ग्या. ५
 [वा. सं. ३६।५+ ऋ.मं. ४।३१।२
 कस्त्वां वेदं भूतगर्भविहीनं वेदैर्विश्वं
 यत्र लीलं त्वयीशे २ रुद्रो. ७६
 कः सोऽभिध्येयोऽयं यः प्राणाख्यः
 मैत्रा. १।१
 कामक्रोधौ लोभमोहौ मदश्च मात्सर्यं
 च त्यज्यते येन योगी निलेपो. १
 कालाग्निरुद्रमैत्रेयीसुबालक्षुरिमन्त्रिका
 मुक्तिको. १।३२
 कृतं चाकृतमेते च परमं च परायणम्
 २ रुद्रो. ४३
 खल्वियं ब्रह्मविद्या सर्वा सर्वोपनि..
 वै. पू. ३।४
 खे वायुः प्रलयं याति ना. म. १९
 गर्भो नारायणो हंसो बिन्दुर्नाद-
 मुक्तिको. १।३१
 शिरः शिखा सहवै. १२
 गायत्रिया एवात्मानं पुनीते
 मुक्तिको. १।३१
 गुरुपवेशाद्विदित्वात्मतत्त्वाः शिवस्वरूपं
 सहवै. १२
 प्रभजन्ति सन्तः चिदम्बरो. ५
 गृहेषु गूढः परपारपारः २ देव्यु. १५
 गोपालतपनं कृष्णं याज्ञवल्क्यं
 मुक्तिको. १।३८
 वराहकम्
 चक्षुषश्चक्षुः श्रोत्र एष (व) त्वमीश
 २ रुद्रो. ५७
 मनसो मनो बुद्धबोद्धा त्वमेव
 वा. सं. ३६।१
 चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये [प्रवर्ग्या. १+
 चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्च-
 भिरेव च । हूयते च पुनर्द्वाभ्यां
 विष्णू. ११
 तुभ्यं होत्रात्मने नमः
 चित्तमेव हि संसारस्तत्प्रयत्नेन
 शोषयेत् । यच्चित्तस्तदधीनं च
 वे. सारो. ४५
 स एवात्याभमी भवेत्
 वेङ्कटो. ३
 छन्दोसि वै पत्राणि
 जगत्प्रतिष्ठा देवैर्बुधिव्यष्टु
 ना. म. १८
 प्रलीयते

जलस्य चलनादेव यथा चलति
 भास्करः । तथैष सर्वभूतेषु
 २ देव्यु. १३
 तद्धर्मैर्नैव लिप्यते
 (भगवन् !) जीवलोका अविद्या
 संवृता भवान्मोक्षो निमज्ज्योन्मज्ज्य
 चिदम्बरो. १
 कुतश्चिद्विश्रामं न यान्ति
 ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासं
 [प्रवर्ग्या. १९+ वा. सं. ३६।१९
 ज्ञात्वा हि देवं शुद्धभावैरुपास्यमुपास्य
 धीराः परिमुच्यन्ति पाशान् ।
 महेश्वरं वै प्रणवार्थरूपं... वे. सारो. ४
 तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुचरत्
 [प्रवर्ग्या. २४+ वा. सं. ३६।२३
 तच्छास्त्रं शास्त्रितं चेति द्विविधं
 पौरुषं स्मृतम् मुक्तिको. २।१९
 तत्त एवाष्टाक्षरेण वा इमानि भूतानि
 जायन्ते, अष्टाक्षरेणैव जातानि
 जीवन्ति, अष्टाक्षरं प्रयन्त्यभि-
 संविशन्ति वेङ्कटो. २
 ततो वै तान्ब्रह्मिष्ठानवदतोऽवदन्
 कटमु. १३
 तत्पुरुषस्य विवाहे महादेवस्य
 धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् वे. सारो. ४०
 तथाऽश्चराद्विवाः सौम्य भावाः
 प्रजायन्ते मुण्ड. २।१।१
 तद्यथेदमक्षरमोमित्यक्षरम् ।
 तत्परमित्यक्षरं गुह्यम् संज्यो. २०
 तपसा प्राप्यते सत्त्वं... वे. पू. ४।८
 तमो वा इदमेक आसीत्तस्मात्परेणो-
 वितः । विषमत्वं प्रयात्येतद्वै
 रजसो रूपम् वे. पू. ५।१
 तस्मा अरं गमाम वो.. प्रवर्ग्या. १६
 [वा. सं. ३६।१६+ ऋ. मं. १०।१।६
 तस्माद्यजमानश्चित्तैतान्मनीना-
 त्मानमभिध्यायेत् मैत्रा. ३।१
 तवावयवसम्भूतैर्व्याप्तं सर्वमिदं जगत् २ रुद्रो. ४८
 तस्य वा पतस्य यज्ञस्य द्वावनप्यायौ
 यदात्माशुचिर्द्वेषः सदासिदैवतानि सहवै. १९
 तानुषयोऽर्थमावन् सहवै. १९
 तिलेषु तैले... एवं प्रोक्तं त्वय्यद्वितीयं.. २ रुद्रो. ५९

तुरीयमिदं सततोदितं गुणैर्गुणा-
तीतं विप्रुषं दिव्यधाम २ देव्यु. २३
तेजः खल्वीरितं विषमं तं प्रयात्येत-
द्वै सत्त्वस्य रूपम् २ पू. ५।१
ते निलायमचरन् , तेऽनु प्रविशुः
कूष्माण्डानि सहैवै. ११
त्वत्तो जातं जगच्छम्भो स्थितं
त्वय्येव... २ रुद्रो. ४६
त्वमश्वमेधो वरार्थिनां वरदोऽसि त्वम् विष्णु. १०
त्वमाशिषं द्रविणं देहि शम्भो २ रुद्रो. ७१
त्वमेव शौरसि मातरिश्वाऽसि
धर्मोऽसि होता पोता हन्ता विष्णु. ४
त्वयाधृतं लोकमिदं समग्रं को वा
हीनं चेतते त्वद्विहीनः २ रुद्रो. ५१
त्वं देवेषु प्रथितो नामतस्त्वेकः... २ रुद्रो. ७३
त्वं न दिवा नैव रात्रिस्त्वमीशः २ रुद्रो. ६३
त्वं नो माता त्वं पिता चोपनेता
माता बंधुः परमो वै गुरुस्त्वम् २ रुद्रो. ७२
त्वामीदृशं गूढमनुप्रविष्टं सहैव
सन्तं न विजानन्ति देवाः २ रुद्रो. ७८
दक्षिणाशरभस्कदं महानारायणाढ्यम् मुक्तिको. १।३४
दुर्मित्रिणास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्नेष्टि
यं च वयं द्विष्मः प्रवर्ग्या. २३
दत्ते ह्ये मा मित्रस्य मा चक्षुषा
सर्वाणि भूतानि समीक्षतां प्रवर्ग्या. १८
देवकार्यादपि...पितृकार्यविशिष्यते ना. म. ४७
देयं राक्ष्यं देयं शिरो न विचार्यैषा
मुद्रा खेचरी देया भवति वेङ्कटो. ३
देवानां च पितॄणां च पिता ना. म. ४८
देवानां महस्तोमफलप्रदा, अमृतेन
तृप्तिं जनयन्ती देवानामग्ने... सीतो. ७
देवासुरैस्त्वं पुरो मृदगर्भो भूतानां
त्वं महिमा गर्भरूपः २ रुद्रो. ७५
देवी त्वस्तिरस्तु नः त्वस्तिर्मानुषेभ्यः
[अ. वि. १०।१९१।५+ सहैवै. २५
देवी देवालयः प्रोक्तः मैथ्यु. २।२

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्ति-
रोषधयः शान्तिः [प्रवर्ग्या. १७+ वा. सं. ३६।१७
द्वादशाक्षरा वै जगती वेङ्कटो. ३
द्विर्द्वादशेभ्यस्तत्त्वेभ्यः ख्यातो
यः पञ्चविंशकः ना. म. १३
धृत्वा ज्योतिर्निधिं महात्मनो... वे. सारो. १८
न कर्मणा न प्रजया शिवं पूज्या-
मृतस्त्वमाप्नुयुः वे. सारो. २
न च जीवं विना ब्रह्मन् वायव-
श्चेष्टयन्त्युत म. ना. २५
न जानन्ति सर्वे हृदा भासमानं २ देव्यु. १६
न तत्र सूर्यो भाति न चेदं चन्द्र-
तारकम् । नेमा विद्युतो भान्ति .. श्रुतिर. ३
न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न
तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते निर्लेपो. ११
न दृश्यश्चक्षुषा योऽसौ न स्पृश्यः
स्पर्शनेन हि ना. म. १०
नमस्ते अस्तु भगवन्नस्तु यतः त्वः
समीदसे [प्रवर्ग्या. २१+ वा. सं. ३६।२१
नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते
स्तनयित्तवे [प्रवर्ग्या. २१+ वा. सं. ३६।२१
नमस्ते हरसे शोचिषे नम अस्त्वमये ।
[प्रवर्ग्या. २०+ वा. सं. ३६।२०
नमः श्रीवेङ्कटेशाय शुद्धज्ञान-
स्वरूपिणे । वासुदेवाय शान्ताय
श्रीनिवासाय मङ्गलम् वेङ्कटो. ३
न योगयुक्तोऽपि न चाबधूतः परं
भावं नयति शिवमक्तस्य लोके भक्तियो. ६
न शैवमन्त्रादपरोऽस्ति मन्त्रो
भस्मस्नानं नित्यतृप्तिर्हृदन्तः ।
रुद्राक्षाणां धारणं रुद्रमन्त्रः
प्रकीर्तनीयो गुरुमूर्तौ प्रणामः भक्तियो. ३
न विना धातुसङ्घातं शरीरं
भवति कश्चित् ना. म. २४
न सांख्यरायं प्रविदाम् बालाः...
त्वं नो गतिः परमं चासि शम्भो २ रुद्रो. ५७

नान्ये जानन्ति तव भक्त्या विहीना ह्यजातं त्वामीशं शरणं प्रपन्नाः	२ रुद्रो. ७९
नारायणः—क एवाहं कस्त्वमेवासीति। तस्माद्भगवतो नारायणस्य क इति मुख्यं नाम, तथैव क इति ब्रह्मणश्च नामासीत्	वेङ्कटो. १
नारायणादिजनको ह्यर्यम्णो वरुणस्य हि	२ रुद्रो. ४३
नासौ कलङ्कमाप्नोति हेम पङ्क- गतं यथा	अ. पू. १।३९
नास्ति तस्मात्परतरः पुरुषाद्वै सनातनात्	ना. म. २०
नित्यं हि नास्ति जगति भूतं स्थावरजङ्गमम् । ऋते तमेकं पुरुषं वासुदेवं सनातनम्	ना. म. २१
निर्गुणो गुणभुक्चैव गुणक्षष्टा गुणाधिकः	ना. म. १७
निर्वाणं सर्वधर्माणानिवृत्तिः परमास्पृता	ना. म. ५६
नेत्रं ऋणा नृणव इत्सुमानो यमस्य लोके अधिरञ्जुराद्य	सहवै. ५
नेह नानाऽस्ति किञ्चिद्वै त्वदधिष्ठितमेव हि	२ रुद्रो. ४९
नोपर्यासीत् जुगुप्सेतानृतात् पतिः पशूनां पशवो वयं च	सहवै. १२ २ रुद्रो. ५८
परो दिवा (ऽहं) परेणा पृथिव्यां सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः	२ देव्यु. ७
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् (प्रवर्या. २४+	वा. सं. ३६।२४
पावको अरुमभ्यं शिवो भव (प्रवर्या. २०+	वा. सं. ३६।२०
पुराविदः कवयो ये मनीषिणो ज्ञात्वाऽध्येने निष्प्रकम्पा महेशम् । तरन्ति शोकं च पृथक्पृथक्जनाः...	२ देव्यु. २१ वेङ्कटो. ३
पुरुष एवेह सर्वः...	

पुष्पहासं चरमं त्वमेव वौषट् वषट्कारस्त्वामाहुरस्यमखेषु प्राशितारम्	विष्णु. २
पृथिवी वायुराकाशमापो ज्योतिश्च पञ्चमम् । ते समेता महात्मानः शरीरमिति संज्ञितम् । तदा- विशति यो ब्रह्मन्नदृश्यो लघुविक्रमः	ना. म. २२, २३ वै. पू. ३।६
प्रजापतिर्वा एकोऽमे तिष्ठन् प्रसन्नात्माऽऽत्मनि स्थित्वा सुखमव्ययमभ्युते	वै. सारो. ४६
प्रद्युम्नाद्योऽनिरुद्धस्तु सोऽहङ्कारः स ईश्वरः	ना. म. ३० २ देव्यु. १७
प्रभाऽस्मीह देवीं शशीसूर्यकक्षे.. बाह्यात्माऽन्तरात्मा परमात्मा चेति ब्रह्मणः कोशोऽसि मेवया पिहितः	आत्मोप. ४ वै. सारो. ३०
ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठा त्वं क्षान्ति- रार्जवमेव च	२ रुद्रो. ५३
ब्रह्मा सनातनो देवो मम बह्वर्थचिन्तकः	ना. म. ३९ २ रुद्रो. ४२
ब्रह्मैव त्वं त्रिधोर्ध्वस्त्वं गतिस्त्वं.. भस्मालेपः सर्वगात्रेषु नित्यं रुद्राक्षाणां धारणं लिङ्गपूजा । पञ्चाक्षर्याः सञ्जपन्ति त्वस्य रुद्राध्यायः पञ्चकृत्यं न चान्यत्	निलेपो. २
भावप्राप्तो ह्यनीडात्मा भावा- भावकरः शिवः	२ देव्यु. १८
भाव्यो गुरुः शिव एव प्रधानः परात्परः श्रुतिसन्दोहवेद्यः	भक्तियौ. ४
मुनो वायवेऽन्तरिक्षाय स्वाहा भूतमामक्षरिरेषु नयत्यसु न नशान्यहम्	महानां. ७।२ ना. म. ३७ अ. वि. ७
मकारे संस्थितो रुद्रः मत्तः सर्वं सम्भवति जगत्स्थावर- जङ्गमम् । अक्षरं च क्षरं चैव..	ना. म. ३१
मनो हि परमं भूतं तदव्यक्तं प्रलीयते । अव्यक्तं पुरुषे..	ना. म. १९
मया सृष्टः पुरा ब्रह्मा मां यक्षमसृजत् स्वयम्... मत्पुत्रत्वं च कल्पादौ	

लीलामूर्ते रुद्रसंज्ञस्य शम्भोरक्ष्युत्पन्नो
 बीजकोशो पुराणः । रुद्राक्षाख्यः
 सर्वदेवविजुष्टो यस्मिञ्जुष्टे
 सर्वसंसारमुक्तिः चिदम्बरो. ७

लिङ्गं सत्यं निष्कलं ब्रह्मरूपं धार्य
 पूज्यं हृदये ज्योतिराद्यम् ।
 सत्तामात्रं वाङ्मनोतीतमेतत्
 पञ्चात्मकं भासते येन मुक्तः
 निर्लेपो. ३

विमुक्तो विशुद्धाद्वैतभावमाश्रित्य
 न द्रष्टा नाद्रष्टा न श्रोता
 नाश्रोता न वक्ता नावक्ता न
 कर्ता नाकर्ता नाभिमानो
 नानावमानः सोऽवधूतः भक्तियो. १

विश्वभूत विश्वं त्वमेव विश्वगोप्ताऽसि
 पवित्रमसि विष्णू. ८

वेदा मद्धस्ताश्चन्द्रार्कानला मन्त्रेन्द्राः
 वेदपर्वतजालोत्थमन्त्रैः २ तारो. १

कूपोऽयमेव हि २ देव्यु. ३७

वेदशास्त्रपुराणानि पर्यवस्यन्ति
 शङ्करे । तावत्तेषां समभ्यासो
 यावत्तद्भक्तिसम्भवः चिदम्बरो. ११

वेदान्तसारसर्वस्वं यो जानाति स
 ईश्वरः वे. सारो. ५५

व्यष्टिस्वरूपः प्रणवस्तदेतत्संसेवमानो
 न पुनर्भवे स्यात् चिदम्बरो. ९

शकटमिवाचेतनमिदं शरीरं
 शब्दस्पर्शादयो ह्यर्था अनर्था इव ते.. वे. पू. ३१४

शम्भुः साक्षादद्वयात्मा स एव
 रहस्यमेतन्न विदन्ति लोकाः चिदम्बरो. १०

शरीरमिदं मैथुनादेवोद्भूतं...
 शरीरमेतद्वद्विदित्वा चिदम्बरं
 जियामीशं विदित्वा । मृत्युं तीर्त्वा
 सर्वपापं विहृत्य शिवे परब्रह्मणि
 वा...तेजः चिदम्बरो. १२

शरीरं मे विचर्षणं जिह्वा मे मधु-
 मत्तमा । कर्णाभ्यां मूत्रं विभ्रुवम् वे. सारो. २९

शं न इन्द्रा पूषणा वाजसातो
 शमिन्ना सोमा सुविताय शं योः
 [प्रवर्ग्या. ११+ वा. सं. ३६११ अ. मं.

शं नः कनिकददेवः पर्जन्यो प्रवर्ग्या. १०

शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः प्रवर्ग्या. २२

शाश्वतश्च स्थिर ईशः स्वतन्त्रः
 स्वमहिम्नि तिष्ठत्यनेनेदं शरीरं
 चेतनवत्प्रतिष्ठापितम् वे. पू. ३१५

शांतिरेव शांतिः सा मा शांतिरेधि प्रवर्ग्या. १७

शिवद्रोही शिवभक्तैर्विनिन्द्यः शिव-
 प्रसादे च पराङ्मुखेन । दात्रोस्त-
 स्मिन्मदमात्सर्यं पतामियुञ्जीत
 भगवान्नीलकण्ठः निर्लेपो. १२

शिवध्याने शिवपूजाप्रसङ्गे
 रुद्राक्षाणां धारणे भस्म धार्यम् निर्लेपो. ११

शिवः प्राणः शिवभक्तस्य सेवा
 शिवप्रसङ्गे मतिरस्य सर्वदा ।
 शिवप्रसादस्य धृतिर्निरन्तरं
 शिवादन्यदेवविचिन्तनं न भक्तियो. २

शिवे भक्तिर्जायते पुण्यलेशान्नक्ति-
 मूलं सर्वसंसारमुक्तेः चिदम्बरो. ५

शिवो हि कर्ता जगतामनादिर्न
 जानते यं श्रुतयोऽपि सम्यक् चिदम्बरो. ३

स एव काले भुवनस्य मध्ये विश्वस्य
 स्रष्टारमनेकरूपम् । विश्वस्यैकं
 परिवेष्टितारं ज्ञात्वा शिवं
 शांतिमत्यन्तमेति श्रुतिर. १०

स एव दहराकाशमादित्यरूपः
 शरीरमित्थं रथीकृत्य स्वयं
 रथिको भूतैवमेव पिण्डब्रह्माण्ड-
 रथरथिको बभूव वे. पू. ३१९०

स एव पञ्चाशान्नं विभज्य निहितो
 गुहायां मनोमयोऽशरीरो
 भारूपः सत्यसङ्कल्प आत्मा
 दिव्यशरीरः अविच्छेदस इति वे. पू. ३१८

स एव शुद्धः पूनः ज्ञान्तो प्राणो-
 ऽनिसामात्मा नो ज्ञेयः वे. पू. ३१५

स ओङ्कारो महादेवः स विष्णुः स
 च शारकः । नातः परं जगज्जाति
 यस्य भासा निरन्तरम् चिदम्बरो. १३

स जीवः परिसंख्यातः शेषः
 सङ्कर्षणः प्रभुः ना. म. २५
 सदानन्दं परमानन्दं... परमपदं
 वेङ्कटेशाल्यं वैष्णवं यद्वत्वा
 न निवर्तन्ते योगिनः वेङ्कटो. ५
 स प्रजापतिरेकः पुष्करपणं समभव-
 ङ्गवतोऽस्यान्तर्मेनसि कामः
 समवर्तत इदं सृजेयमिति वेङ्कटो. १
 समप्रीवशिरःकायः संवृतास्यः
 सुनिश्चलः वराहो. ५।३२
 स यः सायं प्राप्नीयात्सोऽस्य
 सायं होमः कठश्रु. २१
 सर्वमोङ्कार एव [माण्डू. १+
 [+नृसिंहो. १।२+ नृ. पू. २।२+४।२
 सर्वाननशिरोप्रीवः सर्वभूतगुहाशयः रामो. २।१
 स वा एष आत्मेहात्मनिवसितानि श्रुतिर. ८
 तैः कर्मफलैः परिभूयमान इव
 क्षीरि वा विचरति वै. पू. ३।११
 स वा एष शुद्धः स्थिरो चलसा-
 लेपोऽव्यग्रो प्रेक्षकवदवस्थितः वै. पू. ३।१२
 स वा एषोऽभिभूतः परकृतैर्गुणैरि-
 त्येषाभिभूतत्वात्सम्भूदः प्रयातः

सम्भूदत्वादात्मानं प्रभुं भगवन्तं
 कारयितारं नापश्यत् वै. पू. ४।२
 स वा एषोऽस्य हृदन्तरे
 तिष्ठन्नकृतार्थो मन्यते वै. पू. ३।९
 स वा योऽयं हृद्यन्तःपुरुषो
 भगवान् वेङ्कटेशः रीयो
 वासुदेवात्मा वै. पू. ३।१०
 स विश्वकृद्विश्वविदात्मयोनिर्गः.. निर्लेपो. १२
 स सोमः स सत्यं स विष्णुः
 स रुद्रः स देवः स सर्वम् वेङ्कटो. ५
 सहस्रबाहो सहस्रमूर्ते सहस्रास्य
 सहस्रसम्भव विश्वं त्वामाहुः विष्णू. १
 सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः... श्रुतिर. ९
 सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु
 सोऽहं ममेदमित्येवं मन्यमानो
 निबद्धो ह्यात्मनाऽऽत्मानं
 जानन्नेत्र खचरः कृतस्वानुचरैः
 पथैरभिभूयमानः परिभ्रमति वै. पू. ४।२
 स्वधर्म एव सर्वं धत्ते वै. पू. ४।८
 स्थविर हिरण्यगर्भं नारायण...
 स्वयम्भूर्भूतादिर्महाभूतोऽसि विष्णू. ७

इति परिशिष्टं समाप्तम् ।